होमियोपैथिक

मेटेरिया मेडिका

(रेपर्टरी सहित)

HOMOEOPATHIC MATERIA MEDICA

(With Repertory)

जिसमें

सभी औषधियों के चारित्रिक एवं सांकेतिक
लक्षण वर्णित हैं

[चिकित्सा एवं रोग-निदान के दृष्टिकोण से]

रचयिता

डॉ० विलियम बोरिक, एम० डी०

प्रकाशक :—

मेडिकल पुस्तक भवन,

गोलादीनानाथ, वाराणसी-१

★

★

नवम् संस्करण

★

मूल्य—५५·०० रुपये मात्र

मुद्रक—

बैजनाथ प्रसाद

कल्पना प्रेस,

रामकटोरा रोड, वाराणसी।

प्रकाशकीय आमुख

प्रस्तुत पुस्तक का नवम् संस्करण पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। डॉ॰ विलियम बोरिक लिखित "होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका" होमियोपैथिक चिकित्सा विज्ञान का विश्वविख्यात प्रामाणिक ग्रन्थ माना गया है। यह पुस्तक अंग्रेजी भाषा में तो उपलब्ध थी, किन्तु हिन्दी भाषा-भाषी प्रेमियों के लिए इसका सर्वथा अभाव था। यद्यपि, इतने बड़े अंग्रेजी ग्रन्थ का सही-सही हिन्दी अनुवाद कराकर मुद्रण कराना एक बहुत कठिन कार्य था, फिर भी सभी कठिनाइयों के रहते हुए हम अपने प्रयास में सफल हुए। मूल लेखक की मौलिकता कहीं भी नष्ट न हो, इसका ध्यान रखते हुए बड़ी सतर्कता के साथ, यथासम्भव शब्दशः अनुवाद किया गया है। साथ ही भाषा को इतना सरल एवं बोधगम्य बनाया गया है कि पाठकों को समझने में तनिक भी कठिनाई न हो।

मेटेरिया मेडिका भाग के बाद रेपर्टरी भाग लिखा गया है जिसके मुद्रण में भी बड़ी सावधानी बरती गई है। मूल लेखक के भावों में किसी तरह भी परिवर्तन न आये, इसलिए कई किस्म के टाइप लगाये गये हैं, जिससे विभिन्न रोगों के लक्षण, भेद एवं महत्व स्पष्ट हो सकें। इस प्रकार पुस्तक को सर्वाङ्ग सुन्दर एवं उपादेय बनाने की पूरी चेष्टा की गई है। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि पाठकगण प्रस्तुत पुस्तक की उपादेयता स्वीकार करेंगे तथा इससे लाभ उठायेंगे और तभी हम लोग अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे।

पिछले संस्करण की भाषा सम्बन्धी एवं अन्यान्य जो भी त्रुटियाँ थीं, उनका सुधार कर नवीन संस्करण सामने प्रस्तुत है।

आशा है हमारे पाठकगण पूर्व की भाँति इस संस्करण को अपनाकर अपना सहयोग प्रदान करते हुए हमें प्रोत्साहित करेंगे।

—प्रकाशक

भूमिका

इस पुस्तक में होमियोपैथिक प्रणाली की सभी औषधियों के विख्यात और परीक्षित लक्षणविशेष लिखे गये हैं, इसके अतिरिक्त बहुत-से कम महत्ववाले लक्षण भी दिये गये हैं। इन सभी से उचित और लाभदायक औषधि के निर्णय में सहायता मिलेगी। सभी नयी औषधियाँ और चिकित्सा-अनुभव के सभी महत्वपूर्ण विचार जो अब तक प्रयोग से प्रकाश में आये हैं, दे दिये गये हैं। इस उपस्थित संक्षिप्त पुस्तक में अधिक से अधिक परीक्षित और विश्वसनीय लक्षण-ज्ञान कम-से-कम जगह में दिये गये हैं।

मैंने होमियोपैथिक प्रणाली की प्रत्येक औषधि के सभी लक्षण थोड़े ही में दिये हैं और साथ में चिकित्सा के व्यवहार में आयी हुई उन सब औषधियों का सुझाव भी दिया है जिनका अब तक कोई सिद्धीकरण नहीं हुआ है। इस प्रकार उनकी भी परीक्षा का अवसर मिलेगा ताकि भविष्य में चिकित्सक अपना अनुभव क्षेत्र विस्तृत कर सकें और औषधि-विज्ञान की उन्नति करें।

मुझे मालूम है, औषधियों की संख्या बढ़ाने के बारे में मतभेद है; खासकर ऐसी औषधियों की जो अव्यवहृत जान पड़ती हैं या भ्रमात्मक हैं; परन्तु एक लेखक को कोई ऐसी औषधि छोड़नी नहीं चाहिए जो विश्वसनीय रूप से प्रयोग में आ चुकी हो।

हमारी मेटेरिया मेडिका में उन सभी पदार्थों का वर्णन होना चाहिए जिनकी सिद्धि हो चुकी है और जो लाभ के साथ प्रयोग किये जा चुके हैं, अतः अब यह पाठकों पर निर्भर है कि वे स्वयं इन विचारों की सत्यता और विश्वसनीयता का निर्णय कर लें। इस विषय के सिलसिले में मैं उस विख्यात वैज्ञानिक और होमियोपैथी के विद्वान् डॉ० कान्स्टैन्टाइन हेरिंग का कथन उद्धृत करना आवश्यक समझता हूँ जो कि इस मत के थे कि उन सभी पदार्थों का होमियोपैथी में व्यवहार करना चाहिए जो शरीर में कुछ न कुछ प्रतिक्रिया

उत्पन्न करें ताकि उनको हम लक्षण के ... ...प में चिकित्सा-क्षेत्र में उपयोगी बना सकें। "होमियोपैथी केवल बहुपक्षीय ... हो न..., बल्कि सर्वपक्षीय है।" वह संसार ... ...या क्रिया की ...न करती है, चाहे वे भोज्य पदार्थ हों, पेय हों, चटनी-अचार हों, औषधि हों या ...। वह उन सभी के प्रभाव का अध्ययन स्वस्थ प्राणी पर, रोगी पर, जानवर ...र पौधों पर करती है। वह पॉल के इस ...ीन कथन को कि "सभी चीजों को ...द्ध कर लो" (Prove all things) एक नया रूप देती है जो सर्वव्यापी ... विश्व-क्रियात्मक है। सटीक शरीर-विज्ञान और रोग-निदान की उन्नति के साथ-... व्यर्थ विचारों का धीरे-धीरे लो... हो जायगा।

इसके अतिरिक्त बहुत-सी अपूर्ण सिद्ध की हुई औषधियों के ...ण लक्षणों के बजाय रोगों के नामों का भी प्रयोग करना आवश्यक हुआ है, जबकि ...मियोपैथी में केवल लक्षण-समूह ही जानना लाभदायक होता है।

यहाँ भी हमारे पथ-प्रदर्शक श्री हेरिंग हैं जो इस निर्णय-विधि का ...पनी Guiding Symptom नामक पुस्तक में पूर्ण रूप से प्रयोग करते हैं।

उन्होंने कहा है कि वे रोगों के नामों का व्यवहार किसी औषधि के निर्णय के लिए नहीं करते, वरन् केवल यह दिखाने के लिए करते हैं कि अमुक रोग को अच्छा करने में कितनी भिन्न-भिन्न औषधियों का प्रयोग करना होता है। इसी कारण मैंने लक्षण-समूह विचार और चिकित्सा-सूची में रोग के नामों का व्यवहार किया है, क्योंकि यह पुस्तक प्रतिदिन के व्यवहार के लिए है और इसमें चिकित्सा और औषधि-निर्णय के सभी साधनों का प्रयोग करना आवश्यक है।

"वास्तव में हमें ठीक औषधि के चुनने में सभी तरीकों के व्यवहार की आवश्यकता है"—सरल समानता, सरल लक्षण समूहों से औषधि का पता लगाना और इसके बाद सबसे ऊँचे स्तर पर रोगग्रस्त शरीर के अतिरिक्त परिवर्तनों की अवस्था से समानता और यह मेरा दावा है कि तब भी हम होमियोपैथिक प्रणाली के क्षेत्र के अन्दर हैं, जो कि विस्तृत और उन्नतिशील विज्ञान है।

मात्रा के विषय में कुछ कहना आवश्यक जान पड़ता है। जो मात्रायें इस पुस्तक में दी गयी हैं, वे केवल सुझाव हैं, जो उल्लंघनीय भी हैं। इस सम्बन्ध

ों के सिद्धान्त को अपनाया है और उसी में मैंने पहले के होमियोपैथी के विशेषज्ञ ... साथ में अपने और दूसरे चिकित्सकों के अनुसार मात्रा एवं शक्ति का सुझाव ...या है, ... त्सकों के अनुभवों को भी जोड़ा है। प्रत्येक शिक्षक स ...मात्रा के सुझाव का आग्रह किया करते हैं, ... कम चिकित्सा का आरम्भ करते समय।

यह पुस्तक किसी भी ...र से केवल एक निबन्ध-पुस्तक नहीं है और न इसको ऐसा समझना चा...। इसमें सभी होमियोपैथिक औषधियों ... पूरा और सटीक वर्णन ...र व्यवहार के सुझाव दिये गये हैं, जहाँ तक कि इस पुस्तक की सीमा में सम्भव हो सका है। यह पुस्तक अन्य बड़े ग्रन्थों का पूरक है और यदि अप... विस्तृत लक्षणों की मुख्य और प्रधान बातों को शीघ्रता से स्मरण करने के लिए काम में लायी जाये और बड़ी पुस्तकों तथा सिद्धिकरण की भूमिका मात्र में लाई जाये तो इसका ध्येय सफल होगा और यह विद्यार्थी और चिकित्सक के लिए लाभदायक सिद्ध होगी। ऐसी अवस्था में भी यह पुस्तक मैं अपने चिकित्सक भाइयों के प्रोत्साहन के लिए प्रस्तुत करता हूँ।

सैनफ्रैन्सिस्को, जून १९२७

—विलियम बोरिक, एम० डी०

औषधि-सूची

रेपर्टरी-सूची

प्रथम खण्ड

होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका

एबीज कैनेडेन्सिस : पाइनस कैनेडेन्सिस

(Abies Canadensis : Pinus Canadensis)

(Hemlock Spruce)

एबीज कैन से श्लेष्मिक झिल्लियाँ प्रभावित होती है। इसमें आमाशय संबंधी लक्षण स्पष्ट रूप से पाये जाते हैं। अतिसार की हालत पैदा हो जाती है। विचित्र वस्तुएँ खाने की इच्छा होती है और सर्दी का बोध होता है जो इसकी विशेषता है; खासकर उन स्त्रियों में जिनके गर्भाशय खिसक गये हों और जब कि सम्भवतः पोषण की कमी से और दुर्बलता के कारण ऐसा हुआ हो। श्वास और हृदय-क्रिया कष्टदायक हो जाती है। हर समय लेटे रहना चाहे। चर्म ठंडा और सिकुड़ा, हाथ ठंडे, शिथिलता अधिक। दाहिना फुफ्फुस और जिगर छोटा और कड़ा मालूम पड़ता है। सुजाक का पुराना स्राव।

सिर—हलकापन मालूम होता है, आंशिक नशीलापन, चिड़चिड़ापन।

आमाशय—जिगर की सुस्ती के साथ मरभुखे की तरह खाये। **कुतरन, भूख उदरार्द्ध में भारी दुर्बलता**। भूख की ज्यादती, मांस, चटनी, गाजर, शलजम, लोकाट और मोटे अन्न के लिए ललचाये। **हजम कर सकने की शक्ति से अधिक खाने की प्रवृत्ति**। अफारे के कारण हृदय की गति में बाधा पड़े। दायें कंधे के जोड़ में दर्द और कोष्ठबद्धता जिसमें मलमार्ग में जलन भी हो।

स्त्री—गर्भाशय का खिसक जाना, उसके तलदेश में कच्चापन, जो दाब से कम हो। शिथिलता; हर घड़ी लेटे रहना चाहे। सोचती है कि गर्भाशय कोमल और दुर्बल हो गया है।

ज्वर—कँपकपी मानो खून बरफ का पानी हो गया है (एकोन) शीत पीठ में नीचे उतरे। कंधों के बीच में ठंडे पानी का संवेदन (एमोन म्यूर), चर्म नमदार और चिपचिपा, रात में पसीना हो (चाइना)।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

एबीज नाइग्रा
(Abies Nigra)
(Black Spruce)

उन रोगों में शक्तिशाली और बलवान दवा है जहाँ इसके आमाशय सम्बन्धी विशेष लक्षण मार्गदर्शक हों। प्रायः अधिकांश लक्षण आमाशय विकारों के साथ प्रकट होते हैं। वृद्धों की मन्दाग्नि जिसके साथ हृदय की गतिविधि सम्बन्धी लक्षण भी हों। अधिक चाय या तम्बाकू पीने के बाद आये उपद्रव। विष्टब्धता। बाहरी छिद्रों में दर्द।

सिर—गरम, गाल लाल, उत्साहहीन, दिन में मन गिरा रहे, रात में जागे, विचार शक्तिहीनता।

आमाशय—आमाशय पीड़ा जो भोजन के बाद हो, ढोंके का संवेदन, जो कष्ट दे। मानो कड़ा, उबला हुआ अण्डा पेट में दिल की तरफ के भाग में अटका हो; आमाशय के ऊपर लगातार घुटन, गाँठें पड़ गई हों, सुबह को भूख एकदम गायब हो; मगर दोपहर को और रात में बहुत भूख लगे। साँस दुर्गन्धित, उद्गार।

छाती—कष्टदायक संवेदन, मानो कोई चीज सीने में अटकी हो जिसको खाँसकर निकालना चाहे; फुफ्फुस सिकुड़े हों; दबे हों, पूरे तौर पर न खुलें। खाँसने से रोग बढ़े, खाँसी के बाद जल हिचकी; गले में घुटन की संवेदना, उल्टी साँस, लेटने से बढ़े, दिल में तेज, कटन के साथ दर्द। दिल की क्रिया धीमी और भारी, दिल की गति तीव्र (टैकीकार्डिया)। अनियमित, तीव्र नाड़ी (ब्रैडिकार्डिया)।

पीठ—पिठासे में दर्द, वात दर्द और हड्डों में टीस।

नींद—रात में जागे और भूख लगे; बुरे सपने, अशांत रहे।

ज्वर—ठंडक और गरमी बारी-बारी, जीर्ण सविराम ज्वर, पेट की पीड़ा के साथ।

घटना-बढ़ना—खाने के बाद रोग बढ़े।

सम्बन्ध में तुलना कीजिये : (पेट में ढोंका—चाइना, ब्रायो०, पल्सेटिला), अन्य औषधियाँ - थुजा, सैब्राइना, (पीड़ाजनक पाचन), कपरेसस, नक्स वोम और कैली कार्ब भी।

मात्रा—१-३० शक्ति।

एब्रोटेनम
(Abrotanum)
(Southernwood)

सूखण्डी रोग की अति लाभदायक दवा, खासकर नीचे के अंगों का सूखना, जब कि भूख भी अच्छी हो। रोग द्वारा स्थान-परिवर्तन। गठिया जो अतिसार

दब जाने के बाद आये। लक्षण दब जाने का बुरा असर, खासकर सन्धिवात प्रकृति के लोगों में। क्षय वाला अंत्रावरण झिल्ली प्रदाह; पानी वाली प्लुरिसी; और ऐसे विकार जिनमें पानी आया हो। छाती में पीब या पानी आने के बाद, जब आपरेशन हुआ हो और अब वहाँ गड़न की अनुभूति शेष रह गई हो। गठिया में आराम आने के बाद खूनी बवासीर के कष्ट में वृद्धि होना। लड़कों की नकसीर और अण्डकोष में पानी उतर आना।

इन्फ्लुएंजा के बाद रही बहुत कष्टदायी और कमजोरी (कैली फास)

मन--क्षुब्ध, चिड़चिड़ापन, उत्सुक, उदासीन।

चेहरा--झुर्रियाँ पड़ा हुआ, ठंडा, सूखा, पीला, तेजहीन, आँखों की चारों तरफ नीले चक्र; काले तिल और दुबलापन; नकसीर, चेहरे के खून की नलियों में रसौलो।

आमाशय--चिकना स्वाद; भूख अच्छी तो भी दुबलापन बढ़ता जाये। पाखाने में अनपचा भोजन निकले; आमाशय में दर्द; रात में अधिक हो, कटन, कुतरन के साथ दर्द, मालूम पड़े कि आमाशय पानी में तैर रहा है, ठंडा लगे; परेशान करनेवाली भूख और कराहना, बदहजमी और साथ में अधिक बदबूदार रस की कै होना।

पेट--पेट में कड़े गोले; तनाव; दस्त और कब्ज बारी-बारी से आये। खूनी बवासीर, घड़ी-घड़ी मलत्याग की इच्छा; खूनी मल जो वातपीड़ा के कम होते ही अधिक हो। कृमि रोग; नाभि से रसस्राव; आँतें नीचे को डूबती जान पड़ें।

श्वास-क्रिया--कच्चापन, रुकावट, अतिसार के बाद आई सूखी खाँसी। सीने के आरपार दर्द, दिल प्रदेश में अधिक तीव्र।

पीठ--गर्दन इतनी कमजोर कि सिर न उठा सके, पीठ लँगड़ी कमजोर, वेदनापूर्ण। कटि प्रदेश में पीड़ा जो शुक्र-रज्जु तक फैले। त्रिकास्थि में दर्द। खून बवासीर के साथ।

हाथ-पाँव--कंधे, बाँह, कलाई और टखनों में दर्द, अँगुलियों और पैरों में चुभन और ठण्ढापन। टाँगें बहुत क्षीण, जोड़ कड़े और लंगड़े। हाथ-पैरों में कष्टपूर्ण सिकुड़ाव (एमोनिया म्यूर)।

चर्म--चेहरे पर दाने; उन्हें दबायें तो चर्म का रंग बैगनी हो जाये। चर्म ढीला और फूला हुआ; फोड़ा; बाल झड़ना; खाजदार; तना हुआ।

घटना-बढ़ना--ठंडी हवा, स्राव दबने से बढ़े; हरकत से कम होना।

सम्बन्ध--तुलना कीजिए : स्क्रोफुलेरिया, ब्रायोनिया, स्टेलेरिया बेंजोइक एसिड गठिया में, आयोडिन, नेट्रम म्यूर सुखण्डी रोग में।

मात्रा--३ से ३० शक्ति।

एबसिन्थियम
(Absinthium)
(Common Wormwood)

इस औषधि से मृगी के आक्रमण का पूर्ण चित्र उपस्थित हो जाता है। आक्रमण से पहले स्नायविक झटके आते हैं। आकस्मिक और तीक्ष्ण चक्कर, प्रलाप, दृष्टिभ्रम, अचेतनता के साथ स्नायविक उत्तेजना और अनिद्रा, मस्तिष्क में उत्तेजना, मूर्च्छा वायु और बाल आक्षेप सभी इस औषधि के प्रभाव क्षेत्र में आते हैं। कुकुरमुत्ता विष का दुष्परिणाम। कम्प वात। बालकों में स्नायविकता, घबराहट और अनिद्रा।

मन—दृष्टिभ्रम, भयानक काल्पनिक दृष्टि। चौर्योन्माद। स्मरण शक्ति-हीनता, तत्कालीन घटनाओं का भूलना, किसी से कुछ वास्ता नहीं रखना चाहता; पाशविक प्रवृत्ति।

सिर—चक्कर आये, पीछे गिरने की प्रवृत्ति। आम गड़बड़। सिर नीचे रखना चाहे, पुतलियाँ असम रूप से फैली हुई, चेहरा नीला, चेहरा फड़के, धीमी मस्तक पीड़ा (जेलसी; पिक ए)

मुँह—जबड़े जकड़े हुए; जीभ काटे, जीभ काँपे मानो चढ़ी और फूल गई हो, बाहर निकली हुई।

गला—जला हुआ मालूम हो, जैसे गोला रखा है।

पेट—मिलती, उबकाई, डकार, कमर और आमाशय क्षेत्र पर तनाव, वायुगोल शूल।

मूत्र—हर घड़ी वेग बना रहे। तेज गंध, गहरा पीला रंग (कैली फास)।

जननेन्द्रिय—दाहिने डिम्बकोष में भाला गड़ने जैसा दर्द, अनैच्छिक वीर्यस्राव, इसके साथ इन्द्रियों की दुर्बलता और ढीलापन। समय से पहले रजोनिवृत्ति।

सीना—सीने पर जैसे वजन रखा है। अनियमित, कोलाहलमयी हृदयगति जो पीठ में सुनाई दे।

हाथ-पैर—अंगों में पीड़ा, लकवे के लक्षण।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए—एल्कोहल, **आर्टीमिसिया, हाइड्रोसियानिक एसिड, सिना, सिक्युटा।**

मात्रा—१—५ शक्ति।

एकालिफा इण्डिका
(Acalypha Indica)
(Indian Nettle-इण्डियन नेटल)

इसका प्रधान प्रभाव अन्नवहा प्रणाली और श्वासयन्त्र पर पड़ता है। वह औषधि तपेदिक की आरम्भिक अवस्था में उपयोगी है जबकि कड़ी, खरखरी खाँसी हो, खूनी बलगम आता हो, धमनी रक्तस्राव, बिना ज्वर के सुबह को अधिक कमजोरी, जो धीरे-धीरे कम हो ज्यों-ज्यों दिन चढ़े। दुबलापन उन्नतिशील। रक्तस्राव सुबह को अधिक हो।

सीना—खाँसी सूखी, कड़ी, बाद में मुँह से खून गिरे, जो सुबह को और रात में अधिक हो। सीने में लगातार और तेज दर्द। सुबह को थोड़ा और चमकदार लाल खून; तीसरे पहर काला और थक्केदार; नाड़ी कोमल और मुलायम; गलकोष, अन्ननली और आमाशय में जलन।

पेट—आँतों में जलन, फड़फड़ाहट के साथ दस्त हो और आवाज के साथ हवा खुले। मरोड़ गड़गड़ाहट के साथ अफारा और ऐंठन, गुदाद्वार से रक्तस्राव। सुबह कष्ट अधिक।

चर्म—कामलारोग, खाज और घेरेदार फोड़े ऐसी सूजन।

घटना-बढ़ना—सुबह को रोग बढ़े।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये-मिलिफो, फास, एसेटिक ए, कैली नाइट्रि।

मात्रा—३—६ शक्ति।

एसेटानिलिडियम
(Acetanilidum)
(Antifebrinum-ऐण्टिफेब्रिनम)

दिल की चाल, श्वास-क्रिया और रक्तचाप को मन्द करता है। शरीर-ताप घटाता है। नील रोग और पतनावस्था। असह्य ठण्ढक, लाल रक्तकणों को नष्ट करता है। पीलापन।

सिर—बढ़ा हुआ लगे, नैतिक पतन। गशी आए।

आँखें—पुतली का पीलापन, दृष्टि सीमा संकीर्ण, रक्तनलिकाओं का संकुचन, चक्षुतारा का प्रसारण।

दिल—दुर्बल, अनियमित गति, साथ में श्लैष्मिक झिल्ली नीली, ओजोमेह, पैर और टखने का शोथ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये—ऐण्टिपाइरिन।

मात्रा--१-३ ग्रेन की मात्रा में कई तरह के सिरदर्दों और स्नायुशूल में, वेदना-रोधक और तापहारक कार्य के लिए प्रयोग किया जाता है। होमियोपैथी लक्षण निदान पर ३ शक्ति प्रयोग करें।

एसेटिक एसिड
(Acetic Acid)
(Glacial Acetic Acid– ग्लेशियल एसेटिक एसिड)

यह दवा प्रबल रक्तहीनता पैदा करती है, साथ में शोथ के कुछ लक्षण, बहुत कमजोरी, अक्सर गशी, साँस की तंगी, दिल की कमजोरी, कै, अधिक पेशाब और पसीना, किसी भाग से अधिक रक्तस्राव, दुबले, पीले शरीर वालों में खासकर उपयोगी है। जिनकी पेशियाँ ढीली हो गई हों। **शारीरिक क्षय और दुर्बलता। एसेटिक एसिड शरीर के किसी भाग में एल्युमिनस (अंडे की सफेदी जैसा तत्व) और फाइब्रिनस (रेशेदार तत्व) के अधिक जमा होने को गला देता है।** कौशिक विद्रधि में, खाने और लगाने के काम आता है (डब्लू, ओवेन्स) सुजाक विष दोष जब कि जोड़ों पर गोल गाँठें पड़ जायें। आतशक के घाव। १X को पानी में घोलकर लगाने से मुलायम होकर मवाद बनने लगेगी।

मन—चिड़चिड़ापन, व्यावसायिक चिन्ता।

सिर—स्नायविक सिर दर्द, निद्राकारी औषधियों के दुरुपयोग से, आधा सिर दर्द। प्रलाप के साथ सिर में रक्त दौड़े। **कनपटी की रक्त नलिकायें** फूली हों; जीभ की जड़ में आर-पार दर्द।

चेहरा—**पीला, मोम जैसा, मुरझाया हुआ,** आँखें धँसी हुई, नीले घेर। चमकदार लाल, पसीने से तर, होंठ पर कैंसर, गाल गरम और लाल, बायें जबड़े की नोक में टीस।

आमाशय—**लार बहना, पेट में खमीर बने।** तेज जलन, प्यास, ठंडी चीजें पीना दुःखदाई। कुछ भी खाने पर कै हो। उदरोर्द्ध प्रदेश कोमल। जलन के साथ दर्द; जैसे घाव हो। आमाशय में कैंसर। खट्टी डकार और कै, मुँह में जलता पानी आना और अधिक लार बहना। अम्लाधिक्य और आमाशय शूल। **सीने और आमाशय में तेज जलन और दर्द, बाद में खाल ठंडी पड़े और माथे पर तेज पसीना आये।** आमाशय में मालूम होता है कि बहुत-सा सिरका पीया है।

पेट—मालूम देता है कि पेट भीतर को धँसा जा रहा है। अक्सर पानी ऐसा दस्त जो सुबह को बढ़े। फूलना, तनाव, जलोदर। आँतों से रक्त प्रवाह।

पेशाब—अधिक मात्रा में, पीला पेशाब। मधुमेह, बहुत प्यास और कमजोरी के साथ। (फास ए)।

स्त्री-रोग—अधिक मासिक स्राव। प्रसव के बाद रक्त प्रवाह। गर्भावस्था में कै; स्राव दूषित, पारदर्शी; स्तन अधिक दूध से भरे और तने हुए। दूध खराब और नीला, खट्टा; स्तनपान करानेवाली माताओं में खून की कमी।

श्वास-यन्त्र—रुक्ष; सीत्कार वाली साँस, कठिन साँस, साँस भीतर खींचने पर खाँसी हो। झिल्ली वाली क्रूप। कण्ठनली और वायु नलिकाओं में छरछराहट। गले में झिल्ली अत्यधिक वायुनली स्राव। दूषित गल प्रदाह। (कुल्ली करायें)।

पीठ—पीठ में पीड़ा जो केवल पेट के बल लेटने से ही कम हो।

अंग—दुबलापन, पैर और टाँगों का शोथ।

चर्म—पीला मोम जैसा, शोथग्रस्त, जलता, सूखा गरम या पसीने से भीगा हुआ। शरीर की खाल का स्पर्श-ज्ञान घट जाता है। जन्तुओं के डंक मारने और काटने में लाभदायक है। नस फूलना। शीताद रोग (स्कर्वी)।
सर्वांग शोथ खराश, मोच आना।

बुखार—यक्ष्मा-ज्वर, भिगोने वाला रात्रि-पसीना के साथ। बायें गाल पर लाल धब्बे। ज्वर में प्यास न हो, ताप की भड़कन, पसीना अधिक और ठण्डा।

सम्बन्ध—एसेटिक एसिड सभी बेहोशी लाने वाली भापों को प्रभावहीन बनाता है, डब्बों में भरे मांस के जहरीले असर को मारता है।

तुलना कीजिए—एमोनियम एसिटेट (अधिक चीनी वाला पेशाब, मरीज पसीने से तर हो), बेनजोइन ओडेरीफेरम—स्पाइस उड (रात्रि पसीना), आर्स, चाइना, डिजि, लियाट्रिस (दिल और गुर्दों की बीमारी में आया सर्वाङ्ग शोथ, जलोदर, जीर्ण अतिसार)।

मात्रा—३—३० शक्ति, काली खाँसी के सिवा दूसरे रोगों में घड़ी-घड़ी दोहराना नहीं चाहिए।

एकोनाइटम नैपेलस
(Aconitum Napellus)
(Monkshood)

भय और बेचैनी की हालत, मानसिक और शारीरिक चिन्ता व कष्ट, शारीरिक और मानसिक बेचैनी, डर, एकोनाइट के खास लक्षण हैं।

ज्वर के साथ किसी रोग का तीव्र, अकस्मात् और कठोर आक्रमण इस दवा की आवश्यकता बताता है। स्पर्श से घृणा। एकाएक भारी निर्बलता। रोग

और खींचन जो सूखे, ठंडे मौसम से पैदा हों, ठंडी बाहरी हवा से पसीना रुकने से और वे रोग जो बहुत गरम मौसम से पैदा हों, खासकर आँतों और आमाशय सम्बन्धी गड़बड़ी इत्यादि। प्रदाह और प्रदाहपूर्ण ज्वर की पहली दवा। रक्ताम्बु स्रावी झिल्ली और पेशिक तन्तु का रोगग्रस्त होना। आन्तरिक भाग में जलन। चुनचुनाहट, ठण्डापन और स्पर्शज्ञान की कमी। इन्फ्लुएंजा। धमनियों में तनाव, मन में आवेग और शरीर सम्बन्धी खींचना आम पाई जाती है। एकोनाइट देने के समय याद रखिए कि एकोनाइट केवल क्रिया सम्बन्धी गड़बड़ी पैदा करता है, इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि वह तान्तविक परिवर्तन भी कर सकता है। इसका प्रभाव अल्पकालीन है और इसमें कोई सामयिकता नहीं पायी जाती। इसका क्षेत्र किसी तीव्र रोग के आरम्भ में है। जब लक्षणों में कोई परिवर्तन आ जाये तो इसे जारी नहीं रखना चाहिए। रक्ताधिक्य की अवस्था में; रस संचयता के पहले। इन्फ्लुएन्जा (इन्फ्लुएन्ज़ीन)।

मन—थोड़े से थोड़े रोग में भी बहुत डर, चिन्ता, आकुलता, घबराहट पायी जाती है। सन्निपात में प्रायः चेतना के साथ दुःख, चिन्ता, डर, बकना-झकना सभी की विशेषता रहती है, परन्तु बेहोशी नहीं आती। भविष्य की चिन्ता और डर, मौत से डरना; और यह विश्वास करना कि जल्दी ही मर जायगा; दिन तक बता देता है। भविष्य का, भीड़ और सड़क पार करने का डर। बेचैन, करवटें बदलना। चौंकने की प्रवृत्ति; कल्पना तीव्र, दिव्य दृष्टि। दर्द सहन न हो, पागल बना दे। संगीत सहन न हो, उसको दुःखी बना दे। (ऐम्ब्रा)। सोचता है कि उसके सभी विचार आमाशय में से आते हैं; जैसे शरीर के अंग अधिक मोटे हैं। सोचता है अभी जो हुआ है, वह स्वप्नमात्र था।

सिर—भरापन; भारी, टपकन, गरम; जैसे फट पड़ेगा, जलन ऊपर-नीचे होने का संवेदन। सिर में दबाव (हेडेरा, हेलिक्स); जलन के साथ सिर दर्द; मानो भेजे में पानी खौल रहा हो (इण्डिगो); चक्कर जो उठने से बढ़े (नक्स, ओपि) और चाँद पर ऐसा मालूम हो जैसे बाल खींचे जा रहे हों या खड़े हो गये हों। रात में भयानक प्रलाप।

आँखें—लाल, सूजी हुई। गरम और सूखी मालूम पड़ें; जैसे उनमें बालू पड़ा हो। पलक सूजे हुए, कड़े लाल। रोशनी से बचना चाहे, सूखी ठंडी हवा लगने से बहुत पानी बहे; बर्फ का प्रतिबिम्ब पड़ने से आये उपद्रव; किसी खपची या दूसरी बाहरी चीज को निकालने के बाद की हालतें।

कान—आवाज असह्य; संगीत असह्य। बाहरी कान गरम, लाल, सूजे हुए; दर्द करें। कान दर्द (कैमो)। जैसे बायें कान में पानी की बूँद हो—ऐसा संवेदन।

नाक—गंध असह्य। नाक की जड़ में दर्द। सर्दी जुकाम, छींक अधिक, नथनों में थरथराहट, चमकदार, लाल रक्त प्रवाह। श्लैष्मिक झिल्ली सूखी, नाक बन्द, सूखी या थोड़ा पानी ऐसा स्राव।

चेहरा—लाल, गरम, भरभराया, सूजा, फूला,। एक गाल गरम दूसरा पीला (कैमो, इपिका)। उठने पर लाल चेहरा मुर्दे जैसा पीला हो जाये या चक्कर आये। गालों में सिहरावन और स्पर्शज्ञान शून्यता, स्नायुशूल खासकर बायीं तरफ का इसके साथ में बेचैनी, सिहरावन और सुन्नपन। जबड़ों में दर्द।

मुँह—सुन्न, सूखा, टपकन। जबान सूजी, सिरों में टपकन। दाँत ठंडक सहन न करें। निचला जबड़ा हिलाया करे जैसे कुछ चबा रहा हो। मसूड़े गरम और सूजे हुए! जबान पर सफेद मैल (एंटिमक्रूडम)।

गला—लाल, सूखा, संकुचित, सुन्न, गडन, जलन, डंक लगने जैसा दर्द। तालुमूल सूजे हुए और सूखे।

पेट—कै हो, इसके साथ डर, गरमी, पसीना और पेशाब अधिक। ठंडे पानी की प्यास। पानी के सिवाय सभी चीजों का स्वाद कड़वा। घोर प्यास। पीता है, कै कर देता है और कहता है कि मर जायगा। पित्त की, श्लेष्मा की और खून मिली हरी-सी कै। साँस की तंगी से आमाशय में दाब। खून की कै करना। पेट से गले तक जलन।

पेट—गरम, तना, फूला हुआ, छूना असह्य। आंत्रशूल जो किसी करवट कम न हो। गर्म शोरबा पीने के बाद पाकाशय के लक्षणों में कमी। नाभि प्रदेश में जलन।

मलान्त्र—गुदा में रात को खाज और चिलकन के साथ दर्द हो। घड़ी-घड़ी ऐंठन के साथ थोड़ा-थोड़ा मल निकले, हरा, महीन कटी हुई हरियाली की तरह। लाल पेशाब के साथ सफेद मल। हैजे का दस्त, पतनावस्था, चिन्ता, बेचैनी के साथ। खूनी बवासीर (हैमामेलिस) बच्चों के पानी जैसे दस्त। वे चिल्लाते हैं और शिकायत करते हैं, बेचैन और सो न पायें।

पेशाब—थोड़ा, गरम लाल, कष्टदायक। मूत्राशय की गरदन पर जलन और ऐंठन। मूत्रमार्ग में जलन। पेशाब न हो, खूनी पेशाब। पेशाब करने के पहले चिन्तित रहना। पेशाब रुक जाना, साथ में बेचैनी और चीखना और लिंग को पकड़ना। गुर्दा प्रदेश कोमल। अधिक पेशाब होना, इसके साथ पसीना अधिक हो और अतिसार।

पुरुष—लिंग के सिर पर सरसराहट। फोतों में कचट-दर्द, अण्ड कड़े, सूजे हुए। अक्सर उत्तेजित होना और वीर्यस्खलन होना। कष्टदायक उत्तेजना।

स्त्री—योनि सूखी, गरम, कोमल। मासिकस्राव मात्रा में अधिक, साथ में नकसीर या बहुत देर में हो और बहुत दिनों तक जारी रहे। मासिक रक्त दिखाई पड़ते ही घबराहट आये। डर या ठण्डक से दब गया हो। डिम्बाशय में रक्ताधिक्य और दर्द। गर्भाशय में तेज दर्द। प्रसवान्तक वेदना, डर और बेचैनी के साथ।

श्वास-यन्त्र—बायें सीने में लगातार दाब जरा-सा हिलने से श्वास-कष्ट। खड़खड़ाती, सूखी, सुरसुरादार काली खाँसी, तेज आवाज के साथ और कठिनता से साँस लेना। बच्चा जब भी खाँसता है, गला पकड़ लेता है। भीतर खींची हुई हवा बहुत असह्य। साँस कम गहरी। स्वरनली कोमल। सीने के आरपार चिलकन। खाँसी सूखी, छोटी, कड़ी; रात में और आधी रात के बाद बढ़े; फुफ्फुस में गरमी लगना। खखारने में खून ऊपर आवे। खाँसने के बाद सीने में चुनचुनाहट।

दिल—तेज धड़कन, दिल की बीमारी, बायें कंधे में दर्द के साथ सीने में चिलकन दर्द, धड़कन के साथ उत्सुकता, गर्मी और अंगुलियों के सिरों में चुनचुनाहट। नाड़ी भरी हुई, कड़ी, खिंचा-सा उछलती हुई, कभी-कभी रुकती चाल। बैठने में कनपटी और गर्दन की धमनी की गति सुनाई दे।

पीठ—सुन्न, कड़ी, वेदना पूर्ण रेंगने और चुनचुनाहट; मानो कुचली गई हो। गर्दन की जड़ में कड़ापन; कंधों में कुचले जाने जैसा दर्द।

अंग—सुन्न और चुनचुनाहट; गोली लगने की तरह का दर्द, बर्फ-सी ठंडक और हाथ-पैर का सुन्न होना। बायीं बाँह के नीचे तक दर्द उतरे (कैक्टस, क्रोटैल, कैल्मिया, टैबैकम)। हाथ गरम और पैर ठण्ढे। जोड़ों का वातिक प्रदाह, रात में कष्ट बढ़े, लाल चमकदार सूजन। अति कोमल, कूल्हे और जाँघ के जोड़ लंगड़े मालूम हों खास कर लेटने के बाद। घुटने लड़खड़ायें, पैर पीछे को मुड़ने की प्रवृत्ति (एस्क्यूलस) सभी जोड़ों की नसें कमजोर और ढीली। जोड़ों में बिना दर्द कड़कड़ाहट। दोनों हाथों पर चमकदार लाल उभरन। जाँघों के ऊपर पानी की बूँदें टपकती जान पड़ें।

नींद—दुःस्वप्न। रात को बकना। उत्सुक स्वप्न। अनिद्रा, बेचैनी और बिस्तर में करवटें बदलना (३० शक्ति का प्रयोग करें) नींद में चौंकना। लम्बे स्वप्न, सोने में व्यग्रता, बूढ़ों को नींद न आना।

चर्म—लाल, गरम-सूजा हुआ; सूखा, लाल फुन्सियाँ। शीतला जैसे दाने। चुनचुनी, सुरसुरी और पीठ में गगनी और रेंगन नीचे की तरफ। शीत मात्रा की उत्तेजक औषधियों से कम हो।

ज्वर—शीतावस्था विशेष है। ठंडा पसीना और चेहरा बर्फ-सा ठंडा। ठंडक और गरमी बारी-बारी से। बिस्तर में जाने के बाद सर्दी लगे। ठंडी लहरें उसके

शरीर से गुजरती हैं। प्यास और बेचैनी साथ रहती है। कपड़ा हटाने और छूने से सर्दी लगे। सूखी, गरमी, लाल चेहरा। अति लाभदायक ज्वरनाशक दवा है। जबकि मानसिक कष्ट और बेचैनी इत्यादि साथ हों। इससे सभी लक्षणों में कमी हो जाती है।

घटना-बढ़ना—खुली हवा में कम; गरम कमरे में शाम को और रात में बढ़ना; रोगग्रस्त करवट लेटने से, संगीत से, धूम्रपान से, सूखी ठंडी हवा से बढ़ना। अधिक मात्रा में सिरका पीने से इस औषधि का विष नष्ट हो जाता है।

सम्बन्ध—तेजाबी पदार्थ, शराब, कॉफी, लेमोनेड और खट्टे फल इस औषधि की क्रिया को प्रभावित करते हैं। मलेरिया, मंद ज्वर, क्षय ज्वर, रक्त-विष दोष और स्थानान्तरित प्रदाह में प्रयोग नहीं होता। अकसर इसके बाद सल्फर दिया जाता है।

तुलना कीजिये—कैमोमिला और कॉफिया से घोर पीड़ा और अनिद्रा में। एग्नोस्टिस और स्पाईरैन्थस ज्वर और सूजन में एकोन की तरह काम करते हैं।

पूरक—कॉफिया, सल्फर। सल्फर को 'जीर्ण एकोन' समझना चाहिये। अक्सर एकोन के शुरू किये काम को सल्फर पूरा करता है।

तुलना—बेलाडो, कैमो, कॉफिया, फेरम फास।

एकोनिटाइन—सीसे जैसा भारीपन, आँख के घेरे के स्नायु विशेष में दर्द। बर्फ जैसा ठंडक ऊपर को रेंगे। जलातंक के लक्षण कानों में टुनटुनाहट की आवाज 3x; टुनटुनाहट की संवेदना।

एकोनाइटम लाइकोटोनम—ग्रेट यलो उल्फसबेन-ग्रन्थियों में सूजन; जिस करवट लेटे वह पसीने से तर हो जाता है। सूअर का माँस खाने के बाद आई अतिसार की शिकायत। नाक, आँख, गुदा, योनि में खाज। नाक की खाल चिटकी हुई, रक्त जैसा स्वाद।

एकोनाइटम कैमेरम—चक्कर आये और कानों में गूँज के साथ सिर दर्द। अकड़न के लक्षण। जबान, होठ और चेहरे पर सुरसुरी।

एकोनाइटम फेरोक्स—इण्डियन एकोनाइट—एकोनाइटम नैपेलस से अधिक उग्र है। यह अधिक मूत्रवर्धक और कम ज्वरनाशक है। यह हृदय रोग सम्बन्धी श्वास कष्ट, नाड़ीशूल तीव्र और गठिया में लाभदायक सिद्ध हुई है। श्वास-कष्ट जिसमें बैठना आवश्यक हो। तीव्र श्वास (श्वास पेशियों का लकवा, दम घुटने के अनुभव के साथ चिन्ता। ऐसा दमा जो हृत्पेशियों के प्रदाह के कारण हृदय में रक्त की अधिक मात्रा आ जाने से हो।), क्वेबको (हृदय सम्बन्धी श्वास-कष्ट); एकीरैन्थस—मैक्सिको की एक दवा—ज्वर में एकोनाइट की तरह है, मगर विस्तृत क्षेत्र वाली दवा है जो आंत्र ज्वर

और सविराम ज्वरों में भी लाभदायक है, पेरीवत, विख्यात पसीना लानेवाली 6X प्रयोग करें। एरैन्थिस हिम्नैलिस—विण्टर एकोन सूर्यचक्र पर काम करती है और ऊपर की तरफ प्रभाव डालती है जिससे श्वास कष्ट होता है, गर्दन और उसके साथ सिर के पिछले भाग में दर्द।

मात्रा—ज्ञानेन्द्रियों के रोग पर ६ शक्ति और प्रदाह की दशा में १-३ शक्ति। तीव्र रोग में जल्दी-जल्दी दोहराना चाहिये। एकोनाइट तेज काम करने वाली दवा है। स्नायुशूल में जड़ का टिंचर बनाकर प्रयोग करना चाहिए, एक बूँद की मात्रा (विषैली) या फिर ३० शक्ति; जैसी मरीज की आवश्यकता हो।

एक्टिया स्पाइकाटा
(Actea Spicata)
(Baneberry)

यह गठिया-वात की औषधि है, खासकर छोटे जोड़ों की गठिया। फटन, चुन-चुनाहट के साथ दर्द इसकी विशेषता है। कलाई का वात रोग। सारे शरीर और खास-कर जिगर और गुर्दा प्रदेश में टपकन। दिल की नाड़ियों में झटके आना। छूने और हरकत से दर्द बढ़े।

सिर—डरा हुआ आसानी से चौंके। चित्त छिन्न। कॉफी पीने से सिर में खून दौड़े। चक्कर आये, फाड़ने जैसे सिर दर्द जो खुली हवा में कम हो, सिर के अन्दर थरथराहट, चाँद से आँखों की पलकों के बीच तक पीड़ा, माथे में गरमी, बाँयी तरफ के माथे की उभरन में ऐसा दर्द जैसे हड्डी कुचली गई हो। सिर की खाल पर खुजली और गरमी बारी-बारी से आये। नाक का सिरा लाल; जुकाम, नाक बंद।

चेहरा—ऊपर जबड़े से तेज दर्द जो दाँतों से कनपटी तक जबड़ों की हड्डी से होकर दौड़े, चेहरे और सिर पर पसीना आये।

आमाशय—उदरोर्द्ध-प्रदेश में फाड़ने, भाला चुभने की तरह दर्द कै के साथ। आमाशय में और उदरोर्द्ध में ऐंठन श्वासकष्ट के साथ, जैसे दम घुटेगा। खाने के बाद एकाएक सुस्ती।

पेट—आक्षेप के साथ खिंचाव। तलपेट में चुभने के साथ दर्द और तनाव।

साँस यन्त्र—छोटा, क्रम-भ्रष्ट साँस जो रात में लेटने पर बढ़े। प्रबल दाब। ठण्डी हवा लगने से साँस फूले।

अंग—कमर में फटने की तरह दर्द। छोटे जोड़ों में, कलाई, अंगुलियों, टखनों और पैर की अंगुलियों में वात दर्द। थोड़ी थकान से जोड़ों में सूजन आए।

कलाई सूजी हुई, लाल, हिलाने से कष्ट हो। हाथों में लकवे जैसी कमजोरी। बाहों में लंगड़ापन। घुटनों में दर्द। खाने या बात करने के बाद बहुत थकान आए, सुस्ती।

सम्बन्ध—तुलना—सिमिस, कॉलोफा, लेडम।

मात्रा—३ शक्ति।

एडोनिस वरनैलिस
(Adonis Vernalis)
(Pheasant's Eye)

गठियावात रोग, इन्फ्लुएञ्जा या गुर्दे की बीमारी के बाद आयी दिल की बीमारी की दवा जबकि दिल की पेशियों में चर्बी जमा होने लगे। नाड़ी क्रम को ठीक करने और दिल की संकुचन शक्ति को बढ़ाने के लिये उपयोगी है। पेशाब अधिक लाता है; अतः दिल की खराबी से आए शोथ रोग में बहुत लाभदायक है। जीवन शक्ति की कमी, दिल की कमजोरी, नाड़ी धीमी, कमजोर। छाती में पानी आना। जलोदर। सर्वांग शोथ।

सिर—हलका लगे, अगले भाग में आरपार दर्द, जो पश्चात्-मस्तक से होकर कनपटियों से घूमकर आँखों तक हो। उठने पर सिर को जल्दी से घुमाने पर या लेटने पर चक्कर आये। कर्णनाद। सिर की खाल कसी हुई मालूम दे। आँखें फैली हुई।

मुँह—चिकना। जबान मैली, पीली, कोमल, जली मालूम पड़े।

दिल—बायें कोप और धमनी से खून का उलटे वापस लौटने का रोग। जीर्ण बृहत् धमनी प्रदाह। चर्बीले हृद्वेष्ट का प्रभाव। वातिक हृद्अन्तर्वेष्ट-झिल्ली प्रदाह (कौल्मिया) हृदय संक्रान्त, पीड़ा, धड़कन, लघु श्वास। शिराओं में रक्त संचय। हृत्पिण्ड सम्बन्धी दमा (क्वेब्रैको) वसामय हृदय-वेष्ट का प्रदाह, असम, गति, असंकुचन और चक्कर। नाड़ी तीव्र क्रमहीन।

आमाशय—भारी वजन। कुतरन भूख। उदरोर्द्ध में दुर्बलता। घर के बाहर अच्छा लगे।

पेशाब—पेशाब पर तेल ऐसी पतली झिल्ली। मात्रा में थोड़ा, अंडे की सफेदी की तरह पदार्थ वाला।

साँस-यन्त्र—लम्बी साँस लेने की लगातार इच्छा। सीने पर बोझ ऐसा लगे।

नींद—बेचैनी, भयानक स्वप्न।

अंग—गरदन की जड़ में टीस। रीढ़ कड़ी और टीस। शोथ।

सम्बन्ध—एडोनिस हृदय के लिए पौष्टिक और मूत्रवर्धक है। चौथाई ग्रेन रोज या १ x शक्ति बुकनी धमनी चाप को बढ़ाती है।

हृदय चाप को बढ़ाती है जिससे शिराओं का भारीपन कम हो जाता है। डिजी-टैलिस की जगह अच्छा काम करनेवाली दवा है और कोई कुप्रभाव नहीं लाती।

तुलना कीजिए—डिजिटै०, क्रैटेग, कनवेल, स्ट्रोफैन्थस।

मात्रा—अरिष्ट की ५ से १० बूँद तक।

एड्रीनैलिन
(Adrenalin)
(An Internal Secretion of Superarenal Gland)

मूत्रपिण्डोपरि ग्रन्थि के गुद्दी वाले भाग का तात्त्विक पदार्थ अथवा एड्रीनैलिन या एपिनेफ्रिन (बाहरी भाग का स्राव अभी अलग नहीं किया गया है), शारीरिक क्रिया ठीक करने के लिए रासायनिक हरकारे की तरह काम में लाया जाता है। वास्तव में स्नैहिक नाड़ी मण्डल की क्रिया के लिए इसकी उपस्थिति आवश्यक है। शरीर के किसी भाग पर एड्रीनैलिन की क्रिया का यही मतलब है कि वह स्नायु जाल के सिरों को उत्तेजित करती है। १:१००० घोल का श्लैष्मिक झिल्ली पर ऊपरी व्यवहार करने से तुरन्त रक्त स्वल्पता हो जाती है जो उस भाग का अस्थिर लाल उधड़न और रक्तहीनता से सिद्ध है। इस दवा को आँख की पुतली पर बूँद बूँद टपकाने से कुछ घण्टों के लिए सफेद पर्दा पीला हो जाता है। इसका प्रभाव तात्कालिक है परन्तु स्वयमेव ही मिट जाता है। कारण यह है कि आक्सीजन की क्रिया वहाँ बहुत फुर्ती से होती है। यदि बार-बार न डाली जाय तो यह कोई हानि नहीं करती। परीक्षणों में इस औषधि ने पशुओं में मेदमय अर्बुद और हृदयावरण संबंधी रोग उत्पन्न किये हैं। इस दवा का विशेष प्रभाव धमनियों, हृदय, वृक्क-शिखर और रक्तवहा नाड़ियों में तनाव और फैलाव लाने वाले स्नायुजाल पर है।

एड्रीनैलीन का मुख्य कार्यक्षेत्र स्नायुमंडल के छोर हैं, जिससे धमनी के सिरों में संकुचन होता है और परिणामस्वरूप रक्तचाप बढ़ जाता है। यह प्रभाव विशेषकर पेट और आँतों में देखा गया है, गर्भाशय और चर्म में कुछ कम और भेजे व फुफ्फुस में पूर्णतः नहीं। इसके अतिरिक्त यह नाड़ी को शिथिल बनाती है। दिल की चाल को बल देती है। (दिल के पट्ठों में सिकुड़ाव अधिक लाती है), इस तरह यह डिज के समान है। ग्रन्थियों की क्रिया में तेजी आती है; मधुमेह, श्वास-केन्द्रों की शिथिलता, आँखों और गर्भाशय के पट्ठों में सिकुड़ाव लाती है और आमाशय, आँतों तथा मूत्राशय के पट्ठों को ढीला करती है।

उपयोग—इसका औषधि के रूप में मुख्य उपयोग इसके रक्तवाहिनियों

में संकीर्णता लाने के गुण पर निर्भर है; अतः यह अति बलवान और तात्कालिक संकोचक तथा रक्तस्रावरोधक है, और शरीर के किसी भाग की क्षुद्र रक्त नलिकाओं के रक्तस्राव को रोकने में अमूल्य है; जहाँ कि बाहरी प्रयोग संभव है—जैसे नाक, कान, मुँह, गला, स्वरनली, पेट, गुदा, गर्भाशय, मूत्राशय। ऐसे सभी रक्तस्राव में हितकर है जो दोषयुक्त रक्त के जमने के कारण न उत्पन्न हुए हों। पूर्ण रक्त स्वल्पता। ऊपरी प्रयोग, १:१००००; तथा १:१०००, का सोल्यूशन छिड़कना या रुई तर करके आँख, नाक, गला, स्वरनली के बिना खून बहाये आपरेशन के लिए प्रयोग किया जाता है।

छलनी की तरह छेद वाले और जातुकारक नासूरों की रक्ताधिक्य अवस्था में और मौसमी इन्फ्लुएंजा ज्वर में कुनकुना एड्रीनैलीन क्लोराइड सोल्यूशन १:५००० के छिड़काव से लाभ होते देखा गया है। यहाँ पर हीपर १x की भी तुलना कीजिए जिसमें मवाद उत्पन्न होकर बहना शुरू हो जाता है। त्वचा पर बैगनी रंग के दाग पड़ने में १:१००० शक्ति का इन्जेक्शन दिया जाता है। बाहरी प्रयोग में यह दवा स्नायु-प्रदाह, स्नायु-शूल, परवर्तित दर्द, गठिया, वातरोग में मलहम के रूप में, १–२ मिनिम (१:१०००) सोल्यूशन स्नायु भाग के आरम्भिक छोर से चर्म के पास जहाँ तक वह पहुँच सके, मलना चाहिए (एच. जी. कार्लटन)।

औषधि के रूप में एड्रीनैलीन का प्रयोग तीव्र फुफ्फुस प्रदाह, दमा, गिल्हड़ जिसमें आँखें बाहर निकल आई हों, ओजोमेह (एडीसन द्वारा उल्लिखित वृक्क रोग), धमनी का कड़ापन, जीर्ण बृहत धमनी प्रदाह, अप्राकृतिक रक्तस्राव की प्रवृत्ति, मौसमी इन्फ्लूएञ्जा, दाने, तीव्र जुलपित्ती इत्यादि रोगों में किया गया है। डाक्टर पी० जूसेट की रिपोर्ट है कि होमियोपैथिक प्रणाली से तीव्र अथवा जीर्ण घुटन की अनुभूति और बृहत्-धमनी-प्रदाह में लाभ हुआ है, जब कि एड्रीनैलीन लघु मात्रा में खिलाया गया। वक्षस्थलीय संकुचन और बेचैनी इस दवा के प्रयोग का मुख्य लक्षण था। इस दवा से चक्कर, मिचली और कै पैदा हो जाती है।

आमाशय दर्द—प्रबल आघात या दवा से आई बेहोशी की हालत में हृदयगति रुकने का खतरा, क्योंकि इससे रक्त नलिकाओं के प्रभावित होने से रक्तचाप तेजी से बढ़ता है।

मात्रा—होमियोपैथिक रीति से १–५ बूँद (१:१००० शक्ति का घोल, क्लोराइड के रूप में) पानी में मिलाकर दें। आन्तरिक व्यवहार ५–३० बूँद १:१००० शक्ति के घोल का।

सावधानी—ओषजन आकर्षण प्रवृति के कारण इस दवा के तत्व पानी मिला घोल और हलके तेजाबी घोल आसानी से छिन्न हो जाते हैं, इसलिये इसके घोल को

रोशनी और हवा से बचाना चाहिए। इसको घड़ी-घड़ी दोहराना नहीं चाहिये क्योंकि इसका असर दिल और धमनी के लिए हानिकारक है।

होमियोपैथिक प्रयोग के लिए २x—६x की शक्ति में।

एसक्यूलस हिप्पोकेस्टैनम
(Aesculus Hippocastanum)
(Horse Chestnut)

इस दवा का मुख्य प्रभाव निचली आँतों पर पड़ता है। खूनी बवासीर। शिराओं में अधिक रक्त संचित हो जाता है, साथ में बिना कब्ज के पीठ पीड़ा होती है। दर्द अधिक, रक्तस्राव कम। मंद संचार, बैगनी रंग का शिरा-प्रसारण। पाचन-क्रिया, हृदय और आँतें इत्यादि की क्रिया मन्द पड़ जाती है। जिगर और उसकी शिरायें मंद पड़ जाती हैं। उनमें रक्ताधिक्य हो जाता है। पीठ-पीड़ा होने लगती है और किसी काम-काज योग्य नहीं रह जाता। सभी जगह उड़ते हुए दर्द। अंग जैसे भरे हुए हैं—ऐसा बोध हो। श्लैष्मिक झिल्लियां सूखी और फूली हुई। गले की तकलीफ के साथ अर्श।

सिर—उदास और चिड़चिड़ा। बुद्धि मन्द, व्यग्र, सिर दर्द जैसे जुकाम हुआ हो। माथे में दाब, मिचली के साथ, फिर दाहिनी कोख में चिलक। सिर के पिछले भाग से अगले भाग तक और सिर की खाल में कुचले जाने जैसा संवेदन, जो सुबह को अधिक हो। माथे के आरपार दायीं से बाइं तरफ स्नायुशूल की चिलक, फिर पेट के ऊपरी भाग में उड़ता हुआ दर्द। बैठने और टहलने से चक्कर आये।

आँखें—भारी और गरम, इसके साथ आँसू गिरें, रक्त-नलिकायें फैल जाएं। आँख के ढेले दर्द करें।

नाक—सूखी, भीतर खींची हुई हवा ठण्डी लगे और नाक के नथने उसे सहन न करें। नाक बहना और छींक आना। नाक की जड़ में दाब। नासास्थि के ऊपर की झिल्ली फूली हुई और थुलथुली जो जिगर की खराबी से हो।

मुँह—जैसे गर्म पानी से जल गया हो। कसैला स्वाद, लार बहना। जीभ पर मोटी मैल, जली हुई मालूम पड़े।

गला—गरम, सूखा, कच्चा निगलने पर कानों में चिलक। गलकोष प्रदाह जिसका सम्बन्ध जिगर में रक्त संचय से हो। गलकोष की शिरायें तनी और ऐंठी हुई। गला भीतर खींची हुई हवा को सहन न करे, ऐसा लगे कि गला छिल गया है या घुट रहा है। दोपहर बाद निगलने पर जलन हो जैसे वहाँ अंगारा रखा है। दुबले, पित्त प्रकृति वाले मरीजों में गलकोष प्रदाह की आरम्भिक अवस्था। रेशेदार, मीठा श्लेष्मा खखारना।

आमाशय—पत्थर जैसा बोझ। कुतरन, टीस के साथ दर्द जो खाने के तीन घण्टे बाद प्रकट हो। जिगर में कोमलपन और भरापन।

पेट जिगर और पेट के गढ़े में धीमी टीस। नाभि पर दर्द। कामला रोग, तलपेट और वस्ति प्रदेश में थरथराहट।

मलान्त्र—सूखी, टीस पड़े। **छोटी खपचियों से भरी मालूम हो।** गुदा में **कच्चापन**, दर्द। मल-त्याग के बाद बहुत दर्द, काँच निकले। खूनी **बवासीर** जिसमें तेज दर्द ऊपर को जाये, खूनी और बादी बवासीर जो रजनिवृत्तिकाल में अधिक हो। बड़ा, कड़ा, सूखा मल। श्लैष्मिक झिल्ली सूजी मालूम हो जो रास्ते को रोक दे। गोल और फीते की शक्ल वाले कीड़ों से उत्तेजना हो। जिनको बाहर निकालने में यह दवा सहायक होती है। **गुदा में जलन** और ठण्डक जो पीठ में ऊपर नीचे लगे।

मूत्र—बार-बार, थोड़ा, गहरे रंग का, कीचड़ जैसा, गरम। गुर्दों में दर्द, खासकर बायीं तरफ और मूत्र नलिका में।

पुरुष—मलत्याग के समय मूत्राशय ग्रन्थि (प्रोस्टेट) से रस निकले।

स्त्री—**भगसन्धि के पीछे लगातार** थरथराहट। प्रदर, साथ में पीठ का लँगड़ापन, त्रिकास्थि और छोटी आँतों के निचले आधे भाग के जोड़ के आर-पार दर्द। प्रदरस्राव गहरा पीला, चिपचिपा, छीलने वाला जो मासिक धर्म के बाद अधिक हो।

सीना—सिकुड़ा मालूम हो। दिल की क्रिया भरी और भारी। हर जगह नाड़ी संवेदन मालूम हो। स्वरयन्त्रप्रदाह, **जिगर विकार** से खाँसी आवे। सीने में गरमी मालूम हो। खूनी बवासीर के रोगियों में दिल के आर-पार दर्द।

अंग—अंगों में टीस और कच्चापन, बायीं रीढ़ की हड्डी में कंधों के पास जो बाँहों के नीचे तक झपटे, अंगुलियों के सिरे सुन्न।

पीठ—गरदन में लँगड़ापन, कन्धों के डैनों के बीच टीस। रीढ़ कमजोर। पीठ और टाँगें जवाब दे दें। **पीठ पीड़ा जो त्रिकास्थि और** कटि-प्रदेश तक **प्रभावित करे**; टहलने और झुकने से बढ़े। टहलने पर पैर मुड़े। तलवे कच्चे लगें, थके और सूजे हों। हाथ और पैर फूल जायें और धोने के बाद लाल हो जायें और भरापन-सा लगे।

ज्वर—तीसरे पहर चार बजे सर्दी लगे। पीठ के ऊपर-नीचे सर्दी चले। सात बजे शाम से बारह बजे रात तक ज्वर। शाम का बुखार, चर्म गरम और सूखा। ज्वर के समय पसीना अधिक और गर्म आये।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—सुबह को जागने पर, किसी हरकत से, टहलने पर, मलत्याग से, खाने के बाद, तीसरे पहर, खड़ा होने से।

घटना–ठंढी, खुली हवा में।

सम्बन्ध-एस्कुलस ग्लेब्रा—ओहिओ ब्युकेई—(सरलांत्र प्रदाह)। अर्श बहुत दर्द वाला, गहरे बैंगनी रंग का बाहर हुए मस्से, इसके साथ कब्ज, चक्कर और जिगर में रक्ताधिक्य। आवाज भारी, गले में गुदगुदी, दृष्टि दुर्बल, हलका पक्षाघात। फाइटो (गला सूखा, प्रायः तीव्र रोगों में काम आता है)।

नेगंडियम अमरिकैनम—बॉक्स एल्डर–सरलांत्र में रक्त संचय हो, कष्टदायक अर्श २–२ घण्टे बाद अरिष्ट की १०-१० बूँद।

तुलना कीजिये—एलो, कौलिसोन०, नक्स, सल्फर।

मात्रा—टिंचर से ३ शक्ति तक।

एथिओप्स मरक्युरियेलिस-मिनरैलिस

(Aethiops Mercurialis-Mineralis)

(सल्फर और क्विकसिल्वर या ब्लैक सल्फाइड मरकरी)

यह दवा कण्ठमाला रोगों में, नेत्र प्रदाह, कर्णस्राव, दर्द और खुजली वाले चर्म रोगों में और पैदाइशी आतशक में लाभदायक है।

चर्म—दाने, जो मधुमक्खी के छत्ते की तरह हों, कण्ठमाला, विसर्पिका और अकौता।

मात्रा—नीचे की शक्ति, खासकर दूसरी दशांशी।

सम्बन्ध—एथिओप्स ऐण्टिमोनैलिस—(हाइड्रैरजाइरम स्टिबिआटो सल्फ्युरेटम)—अक्सर ऊपर की दवा से गण्डमालिक चर्म दानों में ग्रन्थि-सूजन, कर्णस्राव, कण्ठमालिक नेत्र रोग, पुतली के घाव में यह दवा अधिक प्रभावकारी है। (तीसरी शक्ति की बुकनी)।

तुलना कीजिए—कैल्के०, सिल०, सोरिन०।

एथूजा सिनैपियम

(Aethusa Cynapium)

(Fool's Parsley)

इसके विशेष लक्षण मस्तिष्क और स्नायुमण्डल से सम्बन्धित हैं जो आमिक-आमाशयिक उपद्रव से उत्पन्न हुए हों। बाल रोग में घोर सन्ताप, चिल्लाना, बेचैनी और असंतोष इस दवा की तरफ बहुधा संकेत करते हैं और जो दाँत निकलने के काल में या गर्मी के मौसम के कारण आये हों अर्थात् अतिसार के साथ दूध हजम

न कर सकने का लक्षण स्पष्ट रूप से विद्यमान हो, और रक्त-संचार दुर्बल हो। सभी लक्षण तेजी से शुरू हों।

मन—बेचैन, उत्सुक, चिल्लाये। चूहे, बिल्ली, कुत्ते इत्यादि के स्वप्न देखता है। अचेत, प्रलाप करे। **विचारशक्तिहीन; ध्यान छिन्न**। दिमागी कमजोरी। जड़बुद्धि; उत्तेजना व चिड़चिड़ापन बारी-बारी आए।

सिर—बँधा हुआ या बांक में जकड़ा हुआ मालूम पड़े। **पिछले भाग का दर्द** जो रीढ़ की हड्डी तक उतरे, दाब से और लेटने से कम हो। हवा खुलने पर और मल त्याग से सिर के लक्षण कम हों **(सैंग्विन०)**। **बाल खिंचे मालूम दें**। निद्रालुता और धड़कन के साथ सिर में चक्कर। **चक्कर बन्द होने के बाद सिर गरम हो जाय**।

आँखें—आलोकातंक. **मेबोमियन ग्रन्थि की सूजन**। सो जाने के बाद आँखों का घूमना। **आँखें नीचे की तरफ खिची हुईं**। पुतली फैली हुई।

कान—**बन्द मालूम हों**। मानो कानों से कोई गरम चीज निकल रही हो। सिसकारने की आवाज।

नाक—अधिक, गाढ़ी, श्लेष्मा के साथ बन्द मालूम पड़े। सिर पर **दाद के दाने निकलें**। अकसर छींकने की असफल चेष्टा।

चेहरा—**फूला हुआ**, लाल धब्बे, मुर्दे जैसा। व्याकुल, कष्टमय भाव, **नाक की नसें दिखाई पड़ें**।

मुँह—मुखव्रण। जीभ लम्बी जान पड़े। गले में जलन और दाने, निगलना कठिन।

आमाशय—**दूध असह्य**। पीते ही कै करे या बड़े-बड़े थक्के निकलें। कै करने के बाद भूख लगे। **खाने के करीब एक घंटे बाद अनपचे अन्न की कै**। सफेद, झागदार कै। **खाना देखते ही मिचली हो**। पेट का **कष्टमय संकुचन**। **पसीना और बहुत कमजोरी के साथ कै**, साथ में व्याकुलता, बाद में नींद। आमाशय उल्टा हुआ मालूम हो और साथ में सीने के ऊपरी भाग में जलन हो। आमाशय में फाड़ने की तरह का दर्द जो गलनली तक जाये।

पेट—आँतों में टीस के साथ भीतरी और बाहरी ठंडक। शूल के बाद कै, चक्कर और कमजोरी। तनाव, **हवा से भरा हुआ** और स्पर्शकातर। नाभि के चारों तरफ बुलबुले उठने ऐसा संवेदन।

मल—**अनपचा, पतला, हरियाली लिए**, फिर उदरशूल; मरोड़ के साथ और इसके बाद दस्त होना और निद्रालुता। बाल-हैजा, शरीर ठंडा, लसीला, बुद्धिहीन, आँखें स्थिर और पुतलियाँ फैली हुई। **कठोर कब्ज, मानो आँतों की क्रिया बन्द हो गई है**। बुढ़ापे में हैजे के लक्षण।

मूत्र—मूत्राशय के कटने के साथ दर्द, बड़ी-बड़ी पेशाब लगे; गुर्दों में दर्द।

स्त्री—कामेन्द्रिय में कांचने जैसा दर्द। दाने गरमी से खुजलायें। पानी ऐसा मासिक स्राव, स्तन ग्रन्थियों की सूजन और उसमें बरछी लगने जैसा दर्द।

सांस-क्रिया—कठिन घुटन हो, उत्सुक सांस, ऐंठन ऐसी रुकावट, कष्ट से रोगी बोल नहीं सकता।

दिल—प्रबल धड़कन, साथ में चक्कर, दर्द और बेचैनी। नाड़ी तेज, कड़ी और छोटी।

पीठ और अंग—खड़े होने और सिर उठाने की शक्ति का अभाव, पीठ वांक में अकड़ा मालूम पड़े। पिटास में टीस। निचले अंग में कमजोरी, अंगुलियां और अंगूठे मुड़े हों। हाथ-पैर ठिठुरे हों। सख्त झटके। आँखों का नीचे की तरफ ऐंचापन।

चर्म—चलने में जाँघों का चर्म छिले। पसीना जल्दी निकले। शरीर पर ठंडा और लसीला पसीना। लसिका ग्रन्थि सूजी हुई। जोड़ों के चारों तरफ खाजवाले दाने। साथ ही खाल सूखी और सिकुड़ी हुई। काला दाग। पूर्ण, सर्वांग शोथ।

ज्वर—गरमी अधिक, प्यास गायब। ठंडा पसीना अधिक आये। पसीना आने पर शरीर ढँके रहना आवश्यक।

नींद—तेज चिहुँकन से नींद में बाधा पड़े, ठंडा पसीना। कै या मलत्याग के बाद ऊँघना। बच्चा इतना सुस्त हो गया हो कि तुरन्त सो जाये।

घटना-बढ़ना—३ से ४ बजे सुबह, शाम को, गरमी से, गरमी के दिनों में रोग बढ़े। खुली हवा या सोहबत में कम हो।

तुलना कीजिये—ऐथामेन्था (सिर में गड़बड़ी, चक्कर जो लेटने से कम हो, कड़वा स्वाद और लार। हाथ-पैर बरफ से ठंडे); ऐण्टीमनी कैल्क, आर्स, सिक्यूटा। पूरक : कैल्क०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

एगेरिकस मसकेरियस

(Agaricus Muscarius)

(टौडस्टूल-बग एगेरिक)

इस छत्रकाकार पदार्थ में कई तरह के विषाक्त योग होते हैं। जिनमें से मसकेरिन प्रसिद्ध है। इसके विष का असर तुरन्त नहीं होता। साधारणतः १२—१४ घण्टों के बाद आरम्भिक आक्रमण होता है। इस विष का कोई शामक नहीं है, इलाज केवल

लक्षणों पर निर्भर करता है। (श्नीडर)। एगेरिकस मस्तिष्क में नशा लाने का काम करता है जो कि एलकोहल से भी अधिक चक्कर और प्रलाप पैदा करता है। इसके बाद गहरी गशी आती है और साथ में स्नायु की परावर्तित क्रिया मन्द पड़ जाती है।

झटका, फड़कन, कम्प और खुजली इस विष के स्पष्ट लक्षण हैं। आरम्भिक क्षय रोग; इसका सम्बन्ध क्षय से है, रक्तहीनता, ताण्डव रोग जो सोते में बन्द हो जाता है। इस पदार्थ के लक्षण चिन्ह में कई तरह के स्नायुशूल, खिंचाव और स्नायविक चर्मरोग उपस्थित होते हैं। दिमाग में रक्त संचित होने की अपेक्षा कई तरह के दिमागी जोश पाये जाते हैं। जैसे सन्निपात, मद्पान के रोग इत्यादि; सर्वांग लकवा। संवेदन मानो बरफ जैसी ठंडी सूइयाँ चुभोई जा रही हैं। दाब और ठंडी हवा असह्य। नीचे की ओर चलने वाला तेज दर्द। इसके लक्षण आड़े-तिरछे प्रकट होते हैं जैसे दाहिनी बाँह और बायीं टाँग में। पीड़ा के साथ ठंढक, ठिठुरन और चुनचुनाहट का संवेदन होता है।

मन—गाता है, बातचीत करता है मगर सवाल का जवाब नहीं देता। अधिक बकवाद करना, काम करने से घृणा। लापरवाही। निडर। सन्निपात में गाने, चिल्लाने, बड़बड़ाने, कवितामयी भविष्यवाणी की विशेषता होती है। रोग आक्षेपपूर्ण जम्हाई से शुरू होता है।

परीक्षणों के समय मस्तिष्क-उत्तेजना के चार चरण स्पष्ट हुए :—

१. थोड़ी उत्तेजना—प्रफुल्लता की वृद्धि, साहस, बकवादीपन, कल्पना की उड़ान।

२. अधिक गहरा नशा—मानसिक उत्तेजना अधिक हो गई और समझ में न आने वाली बातें करना, असाधारण प्रसन्नता और खिन्नता बारी-बारी से आये। वस्तुओं के पारस्परिक माप का ज्ञान लोप हो जाय, लम्बे कदम भरे और छोटी चीजों को कूद कर पार करना, मानों वे पेड़ के मोटे तने हों, छोटा सुराख भी बड़ा भयानक गढ़ा मालूम पड़ना, एक चम्मच पानी झील-सा लगना। शारीरिक शक्ति बढ़ जाय, भारी वजन भी उठा सकता है, साथ में अंग फड़कना।

३. तीसरा चरण—भयानक प्रलाप, चीखना, चिल्लाना, अपने को हानि पहुँचाना चाहता है इत्यादि।

४. चौथा चरण—मानसिक मंदता, सुस्ती, लापरवाही, विचारशक्ति छिन्नता, काम से घृणा इत्यादि। हम इसमें बेलाडोना का तीव्र मस्तिष्क प्रदाह नहीं पाते, लेकिन केवल साधारण स्नायु उत्तेजना आती है; जैसा कि मदपान, सन्निपात में पायी जाती है या ज्वर के साथ के सन्निपात में, इत्यादि।

सिर--सूरज की रोशनी से और टहलने से चक्कर आये। सिर लगातार हिलता रहे। पीछे गिरना मानो पिछले भाग में बोझ भरा हुआ है। आर-पार दर्द, कील गाड़ने ऐसा। (**काफिया, इग्नेशिया**) मन्द सिर दर्द जो देर तक डेस्क पर काम करने से आये। बरफ ऐसा ठंडक जैसे बरफ की सूइयाँ चुभ रहीं हों या खपच्ची गड़ रही हो। बरफ ऐसी ठंडक के साथ स्नायुशूल, सिर को गरम कपड़े से लपेटना चाहे (**सिलिका**)। नकसीर या गाढ़ी श्लेष्मा स्राव के साथ सिर दर्द।

आँखें--पढ़ना कठिन मानो अक्षर चलते-फिरते हों या तैरते हों। दोहरी चीज देखना (**जेल्स**) नजर धुँधली। देर तक नजर से काम लेने के बाद पेशियों में झटके आना। ढेले और पलकों में फड़कन (**कोडाल**)। किनारे लाल, खाज, जलन और चिपके। भीतरी कोने गहरे लाल।

कान—जलन और खाज मानो ठिठुर गये हों। कानों के आसपास की पेशियों में फड़कन और आवाज सुनाई देना।

नाक—नाक के स्नायविक रोग, खाज भीतर और बाहर। खाँसने के बाद तथा-न्युजी छींक, असहिष्णुता, पनीला, सादा स्राव। भीतर कोने बहुत लाल। दूषित, गहरा, खूनी स्राव। वृद्ध लोगों को नकसीर। नाक और मुँह में छरछराहट।

चेहरा—चेहरे की पेशियाँ तनी हुई जान पड़ें, फड़कें, खाज और जलन। गालों में खपच्ची चुभने ऐसी कोंचन और फटन के साथ दर्द। स्नायुशूल मानो ठण्डी सूइयाँ स्नायु में चुभाई जा रही हों या बरफ के नोकीले टुकड़े उनको छू रहे हों।

मुँह—होठों पर तीव्र वेदना और जलन। होठों पर दाद, फड़कन, मीठा स्वाद। तालु पर चकत्ते। जीभ में खपच्ची ऐसी गड़न। हर समय प्यासा। काँपती जबान (**लैक०**)। सफेद जबान।

गला—कर्ण नलिका से कान तक चिलक। संकुचित मालूम पड़े। छोटे, ठोस गोले ऊपर आवें। गलकोष खाँसने से सूखा, निगलना कठिन। गले में खुरखुराहट; एक स्वर न गा सके।

आमाशय—खाली उद्गार, सेब का स्वाद। स्नायविक गड़बड़ी, आक्षेप के साथ हिचकी। अप्राकृतिक भूख। अफारा; निर्गन्ध हवा अधिक खुले। भोजन के करीब तीन घण्टे बाद जलन जो धीमे दाब में बदल जाये। आमाशय में **गड़बड़ी, जिगर प्रदेश में तेज दर्द के साथ।**

उदर—प्लीहा (**सीयानोथस**), जिगर में गड़न के साथ दर्द। बायीं तरफ की छोटी पसलियों में चिलक। अधिक दूषित वायु स्खलन के साथ अतिसार। बदबूदार मल।

पेशाब—मूत्रमार्ग में कड़क। एकाएक तेजी से पेशाब लगे। कभी-कभी पेशाब हो।

स्त्री—अतिरज, समय के पहले कामेन्द्रिय और पीठ में खाज, फटन और दाब के साथ दर्द। आक्षेपिक कष्टरजः। तेज दर्द जो नीचे चले। खासकर रजोनिवृत्ति के बाद। कामोत्तेजना। स्तन घुण्डियाँ खुजलायें; जलें। प्रसव और मैथुन के बाद आयें कष्ट। बहुत खाज के साथ प्रदर स्राव।

श्वास-इन्द्रियाँ—खाँसी के कड़े हमले जो इच्छा-शक्ति के जोर से रोके जा सकें, खाने से बढ़ें, खाँसने के साथ-साथ सिर में दर्द हो। रात के समय सो जाने के बाद तशन्नुजी खाँसी, साथ में श्लेष्मा को छोटी गोलियाँ निकलें। रुका हुआ कठिन श्वास। खाँसी छींक में खत्म हो।

दिल—चाल अक्रमिक, कोलाहलमयी धड़कन, तम्बाकू सेवन के बाद बढ़े। नाड़ी सविराम और क्रमिक। दिल संकुचित मानो वक्षोदर तंग हो गया हो। चेहरे की लाली के साथ धड़कन।

पीठ—छूने से मेरुदण्ड में दर्द, कटि भाग में अधिक। कटिवात, खुली हवा में बढ़े। पीठ में कड़क। गर्दन की पेशियों में फड़कन।

अंग—कड़े, चूतड़ पर दर्द। वात रोग हरकत से कम। कटि भाग से कमजोरी। चाल अनिश्चित। कम्प। पैर और अँगुलियों में खाज मानो ठिठुर गई हों। पैर के तलवों में ऐंठन। पिण्डली की लम्बी हड्डी में दर्द। स्तम्भ और स्नायुशूल। निचले अंगों में लकवा, बाँहों में खींचन के साथ दर्द। टाँगों का एक पर एक रहने से सुन्न होना। बायीं बाँह में लकवा-दर्द, बाद में धड़कन। पिण्डली में फाड़ने की तरह का दर्द।

चर्म—जलन, खाज, लाली, सूजन, मानो पाला मारे हो। कड़े दाने मक्खी काटने जैसे। असह्य खाज और जलन के साथ घमौरी। बिवाई फटना। हृदय-स्नायु सम्बन्धी शोथ, लाल चकत्ते। ठंढा चर्म और शिरायें उभरी हुई। गोल, लाल चकत्ते। रसदार और बिना रस के साथ।

नींद—जम्हाई लेने का तशन्नुजी हमला। तेज खाज और जलन से बेचैनी। सो जाने पर चिहुँकता है, काँप उठता है और अक्सर जाग जाता है। स्पष्ट स्वप्न।

दिन में ऊँघना। जम्हाई आना और बाद में अनिच्छित हँसी।

ज्वर—ठंढी हवा असह्य। शाम को गरमी के तीव्र हमले। पसीना अधिक। जलने वाले चकत्ते।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : खुली ठंडी हवा खाने के बाद, मैथुन के बाद। ठण्डे मौसम में, बिजली-तूफान के पहले। रीढ़ के मोहरों पर दाब पड़ने से, इससे अनायास हँसी आवे। घटना : धीरे-धीरे इधर-उधर टहलना।

सम्बन्ध–तुलना कीजिए : मस्केराइन, ऐगेरिकस का क्षारोद (स्राव पर अधिक शक्तिशाली है, नेत्रजल-स्राव, लार, जिगर स्राव इत्यादि को बढ़ाता है, लेकिन गुर्दों के स्राव को कम करता है, सम्भवतः स्नायविक प्रभाव के कारण, इन सब यन्त्रों के स्राव सम्बन्धी स्नायु-संधि के रेशों को उत्तेजित करता है, इसी कारण से लार बहना, आँखों से आँसू बहना और अधिक पसीना होना पाया जाता है।) एट्रोपिन, मसकेराइन का ठीक उल्टा है। पिलोकार्पिन की तरह काम करता है। **एमानिटा वरनस**--स्प्रिंग मशरूम---एक प्रकार का एगर फैलायडस-डेथ-कप कार्यवाही तत्व फैलिन है, मस्केरीन की तरह तेज है। एमानीटा फैलायड्स (डेथकप-डेडली एगैरिक) यह जहर अलब्यूमेन को विषाक्त बनाता है। यह जहर साँप के जहर, हैजे तथा डिफ्थीरिया के कीटाणुओं के जहर से मिलता-जुलता है। यह रक्त के लाल कणों पर काम करता है और उनको घोल देता है। इसी से रक्त पाचन नलिकाओं के रास्ते से निकलने लगता है और सारे शरीर का रक्त बाहर निकल जाता है। इस विष की मात्रा कम होती है और इसका बुरा असर कुछ लोगों पर केवल इसके प्रयोग वाले नमूनों को छूने ही से या रेणुओं के साँस लेने ही से पड़ जाता है। यह विष धीरे-धीरे असर करता है। विष के प्रवेश के समय से १२-२० घण्टे तक कोई बुरा प्रभाव प्रतीत नहीं होता, लेकिन दूसरे या तीसरे दिन गशी और झटके आने लगते हैं और फिर चक्कर के साथ तेज हैजे के लक्षण दुर्बलता के साथ शुरू होते हैं और मृत्यु हो जाती है। मृत्यु होने से पहले रोगी को ऊँघ, गफलत और आक्षेप आते हैं। जिगर, दिल और गुर्दों पर चर्बी आ जाती है, फुफ्फुस और उनकी थैली से और चर्म से रक्तस्राव होने लगता है। (डा० जे० शियर)। कै और अतिसार। लगातार मल-त्यागने की इच्छा, बिना पाकाशय, उदर या गुर्दा दर्द के। ठण्ढे पानी की प्रबल प्यास, सूखा चर्म। सुस्त मगर दिमागी तौर पर स्वस्थ। धीरे से तेज और तेज से धीरे साँस लेने का तीव्र परिवर्तन। घोर पतनावस्था, पेशाब दबना

(लेकिन बिना हाथ-पैर ठंढे हुए या ऐंठन के।) एगैरिक एमेट (तीव्र चक्कर, ठंढे पानी से सभी लक्षण कम हों। बरफ के ठंढे पानी की प्रबल इच्छा, आमाशय वेदना, ठंडा पसीना, कै मालूम हो मानो आमाशय धागे के सहारे लटक रहा हो)। टैमस (बिवाई फटना और चकत्ते)। सिमिसि, कैन इण्डि, हायोसिस, टैरेन०।

विषनाशक—एबसिंथि, कॉफि, कैम्फर।

मात्रा— ३ से ३० शक्ति और २००। चर्म रोग और मस्तिष्क विकार में नीचे की शक्ति दीजिये।

एगेव अमेरिकाना
(Agave Americana)
(Century Plant)

आमाशय में दर्द और सुजाक की पीड़ाजनक लिंगोत्तेजना में काम आता है। पीड़ाजनक मूत्र। जलातंक। शीताद, चेहरा पीला, मसूढ़े फूले हुए और उनसे रक्तस्राव हो। टाँगों पर गहरे बैंगनी रंग के चकत्ते, जो सूजे हुए पीड़ाजनक और कड़े हों। मूत्र कम, कब्ज।

सम्बन्ध.—तुलना; एनहैलोनियम, लाइसिन, लैक०।

मात्रा - टिंचर।

एग्नस कैस्टस
(Agnus Castus)
(The Chaste Tree)

ऐग्नस का प्रबल आक्रमण-केन्द्र जननेन्द्रियाँ हैं। यह कामशील को दुर्बल करता है जिनसे मानसिक और स्नायविक दुर्बलता हो जाती है। यह विशेषता स्त्री-पुरुष दोनों में पाई जाती है, लेकिन पुरुष में अधिक स्पष्ट है। अपरिमित इंद्रियचालन के कारण असामयिक बुढ़ापा। बार-बार सुजाक होने का इतिहास। मोंच और कचट में यह दवा बहुत लाभदायक है। कुतरन के साथ सभी भागों में, खासकर आंखों में। वात प्रकृतिवाले नवयुवकों में अधिक तम्बाकू पीने से दिल की चाल का बढ़ जाना।

मन—कामुकता। मृत्यु का भय। खिन्न और साथ में जल्द मृत्यु का भय। आत्मविस्मृत। भूलने वाला, उत्साहहीन। गंधभ्रम—मछली, कस्तूरी। स्नायविक विषाद और क्रुदन।

आँखें-पुतली फैली हुई (बेल०), आँखों के आस-पास खाज, प्रकाशातंक।

नाक—मछली या कस्तूरी की गंध का भ्रम। उभरे भाग में टीस जो दाब से कम हो।

उदर—तिल्ली सूजी हुई, वेदनापूर्ण। मल मुलायम पीछे हटे, कष्ट से निकले। मलाशय में गहरे दरार। मिचली, ऐसी संवेदना के साथ मानो आंतें नीचे की तरफ दब रही हों, उनको नीचे से सहारा देना चाहे।

पुरुष-जननेन्द्रिय—मूत्रमार्ग से पीला स्राव, लिंगोत्तेजना न हो; नामर्दी, जननेन्द्रिय ठंढी। ढीली। इच्छा रहित (सेलेन० कोन० सेबैल०)। बिना उत्तेजना के वीर्यपात, परन्तु मात्रा में कम। काँखने पर प्रोस्टेट रस स्राव। जीर्ण सुजाक, अण्डकोष ठंढे, सूजे हुए, कड़े वेदनापूर्ण।

स्त्री-जननेन्द्रिय—मासिक स्राव बहुत कम। मैथुन से अति घृणा। कामेन्द्रिय का ढीलापन, प्रदर रोग के साथ। प्रसव के बाद स्तनों में दूध की कमी। शोकग्रस्त। खिन्न। बाँझपन। पीले धब्बेवाला प्रदर, पारदर्शी स्राव, हिस्टीरिया की धड़कन और नकसीर।

तुलना कीजिये-सेलेनियम, फास, कैम्फर, लाइको।

मात्रा--एक से छः शक्ति तक।

एग्रैफिस नूटन्स
(Agraphis Nutans)
(Bluebell, ब्ल्यूबेल)

सर्वांग में ढीलापन और ठंढी हवा से जुकाम होने की सम्भावना। नजले की हालत, नाक बन्द। **गलग्रन्थि शोथ, बहरापन**। तालुमूल बढ़ना। अतिसार। जो ठंढ से आये। ठंढी हवा से सर्दी लगे। गले और कान के रोग जिनमें श्लैष्मिक स्राव अधिक हो। बचपन का गूँगापन जिसका बहरापन से कोई सम्बन्ध न हो।

तुलनीय—हाइड्रैस्टिस, कैल्के॰ फा, सल्फ आयो, कैल्के॰ आयो।

मात्रा—३ शक्ति। टिंचर की एक मात्रा (डा॰ कूपर)

एलैन्थस ग्लैण्डुलोसा
(Ailanthus Glandulosa)
(Chinese Sumach–चाइनीस सुमाक)

यह दवा, अपने विचित्र चर्म-लक्षणों से स्पष्ट करती है कि यह रक्त के विविध यौगिकों को तितर-बितर कर देती है और इस तरह ऐसी हालतें पैदा करती है जो हलके बुखारों, धीरे-धीरे दाने निकलने वाले रोगों, डिफ्थीरिया, टॉसिलों की सूजन और स्ट्रेप्टोकोक्कस नामी जीवाणुओं की संक्रामकता के सदृश होती है। **रक्तस्राव** की प्रवणता; त्वचा का रंग **धूसर या बैंगनी**। **चेहरे का रंग भी महागनी नामी** लकड़ी जैसा हो जाता है। चेहरा गरम, मैला, गन्दा। गला फूला हुआ, उसका रंग भी काला या नीला बैंगनी हो जाता है। अर्द्ध चेतनता, प्रलाप करना, नाड़ी दुर्बल, सर्वगति-राहित्य और पतनावस्था। लक्षण आरक्त ज्वर से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं। अतिसार, पेचिस और बहुत कमजोरी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसके सभी लक्षणों में **जीवनी शक्ति का** ह्रास विशेष रूप से पाया जाता है। धूसर वर्ण; विवर्णता;

तन्द्रा; अरिष्ट लक्षण; श्लैष्मिक झिल्लियों से रक्त गिरे और घायल। (लैक०, आर्स०)।

सिर—तन्द्रा और आहें भरना। मन छिन्न, गड़बड़ी के साथ। सिर दर्द, अग्रभाग का, ऊँघने के साथ। निष्क्रिय रक्त संचय। सिर दर्द, इसके साथ सुर्ख, फैली हुई आँखें, रोशनी असह्य। चेहरा धुँधला। नाक से पतला, मात्रा में अधिक खूनी स्राव।

गला—सूजा, शोथमय, मैला, लाल। भीतरी और बाहरी सूजन। अधिक सूखा, खुरखुरा छिलन ऐसा, बन्द ऐसा संवेदन। गरदन कोमल और सूजी हुई। फटी, कड़ी आवाज। जबान सूखी और कत्थई रंग की, दाँतों पर मैल। निगलने में दर्द जो कानों तक जाये।

साँस-यन्त्र—तेज साँस, हृद्‌चाल अक्रमिक। सूखी, कड़ी खाँसी। फुफ्फुस वेदना-पूर्ण और थके हुए।

नींद—ऊँघ, बेचैन। गहरी अशान्ति, सोकर ताजगी न मिले।

चर्म—घमौरी, लाल चकत्ते, वार्षिक आक्रमण। बड़े छाले जिनमें गहरे रंग का रस भरा हो। असमान चकत्तेदार सुर्ख दाने, जो दाब से गायब हो जायँ। चर्म ठण्ढा। गले के पट्ठों का पक्षाघात।

सम्बन्ध—प्रतिविष—रस०, नक्स०।

तुलनीय—एमोन कार्ब, बैप्ट०, आर्निका, म्यूर ए, लैके०, रस०।

शक्ति—१ से ६ शक्ति तक।

एलैट्रिस फैरिनोसा
(Aletris Farinosa)
(Stargrass)

इस दवा में रक्तहीन, ढीली अवस्था चित्रित होती है; खासकर स्त्री जननेन्द्रिय में। रोगिणी हर समय थकी रहती है और गर्भाशय खिसकने, प्रदर, गुद कष्ट इत्यादि से पीड़ित रहती है। स्पष्ट रक्तहीनता, हरित पाण्डु की रोगी लड़कियाँ और गर्भवती स्त्रियाँ।

मन—अशक्ति और तेज दुर्बलता; भ्रांत भावना। मन को केन्द्रित नहीं कर सकती। चक्कर के साथ गशी।

मुँह—अधिक झागदार लार।

आमाशय—भोजन से घृणा। थोड़ा भोजन भी कष्ट देता है। गशी के दौरे, दौरे, चक्कर के साथ। गर्भावस्था में कै होना, स्नायविक अजीर्ण। वायुशूल।

गुद—मल से टसी [illegible] की अवस्था। मल बड़ा, कड़ा, कष्टमय निर्गमन, अधिक दर्द के साथ।

स्त्री—समय से पहले और अधिक मासिक स्राव के साथ में प्रसव जैसा पीड़ा (बेल० कैमो० कैली कार्ब, प्लेट) रुका हुआ और थोड़ा स्राव (सेनसियो)। गर्भाशय भारी मालूम हो। गर्भाशय निर्गमन और दाहिने पृष्ठ में दर्द। कमजोरी और रक्तहीनता के कारण प्रदर रोग। गर्भपात का प्रवृत्ति। गर्भावस्था में पेशियों में दर्द।

तुलना—हेलोनि, हाइड्रै, टेनेसेट चाइना।

मात्रा—टिंचर से ३ शक्ति।

एलफाल्फा
(Alfalfa)
(Medicago Sativa, California Clover)

स्नेह स्नायु पर प्रभाव के कारण एलफाल्फा का पोषण क्रिया पर अच्छा प्रभाव पड़ता है जैसा कि भूख और पाचन-क्रिया की वृद्धि से विदित होता है। परिणाम यह होता है कि मानसिक और शारीरिक शक्ति बढ़ जाती है और शरीर का वजन बढ़ जाता है। इसके चिकित्सा क्षेत्र में पोषणहीनता के सभी रोग सम्मिलित हैं, जैसे स्नायुदौर्बल्य, अन्तर कोष्ठ सम्बन्धी नीलापन, स्नायविकता, अनिद्रा, [illegible] अजीर्ण इत्यादि। यह चर्बी बढ़ाने का काम करता है; तन्तुनाश को रोकता है। स्तनों में दूध की कमी ठीक करता है। स्तन्यकाल में दूध के गुण और मात्रा को बढ़ाता है। इसके मूत्र सम्बन्धी प्रभाव से यह विदित है कि यह बहुमूत्र में और पेशाब में फास्फेट जाने के रोग में लाभदायक है और यह भी [illegible] जाता है कि यह दवा मूत्राशय के उस क्षोभ को शांत करती है जो प्रोस्टेट ग्रन्थि के बढ़ जाने से आया हो। यह दवा गठियावात की प्रवणता को भी दूर करती है।

मन—यह मानसिक प्रफुल्लता उत्पन्न करती है यानी सर्वकुशलता की भावना; प्रफुल्ल चित्त। सुस्ती, ऊँघाई, बुद्धिहीनता (जेल्स०); खिन्न और जड़, चिड़चिड़ा शाम को अधिक।

सिर—पिछले भाग में, आँखों में और उनके ऊपर भारीपन; शाम को अधिक। सिर के बायीं तरफ दर्द। घोर सिर पीड़ा।

कान—मध्यनलिका रात को बन्द (कैली म्यूर); सुबह के समय खुली मालूम पड़े।

आमाशय—बढ़ी हुई प्यास। भूख, दुर्बलता, लेकिन भूख अधिक हो जाती है। अकसर बार-बार खाना पड़ता है, यहाँ तक कि साधारण भोजन के समय का

इन्तजार न कर सके। दिन के पहले भाग में भूख लगे (सल्फ)। भोजन में दोष निकाले। मीठी चीज की अधिक इच्छा।

उदर—तनाव के साथ अफारा। जगह बदलने वाली वायु। खाने के कुछ घंटे बाद बृहदन्त्र के मार्ग में दर्द हो, घड़ी-घड़ी, ढीला, पीला दर्द के साथ मल और साथ में अफारे की जलन। जीर्ण उपान्त्र प्रदाह।

मूत्र—गुर्दे कार्यहीन, घड़ी-घड़ी पेशाब का वेग हो, बहुमूत्र (**फास० ऐसिड**)। पेशाब में अधिक मूत्र-क्षार, नील सत, फासफेट निकलना।

नींद— साधारण से अच्छी नींद, खासकर प्रातःकाल; इस दवा से शान्त, स्वस्थ और प्रफुल्लित नींद आती है।

संबन्ध—तुलना कीजिये : ऐवेना सैट०, डिपोडियम पंक्ट, जेल्स०, हाइड्रै०, कैल० फास, फास० ए, जिकम।

मात्रा—दिन में कई बार ५-१० बूँद टिंचर देने से उत्तम लाभ होता है। शक्ति बढ़ने तक इलाज जारी रखिये।

एलियम सेपा
(Allium Cepa)
(Red Onion)

यह दवा जुकाम का पूर्ण चित्र उपस्थित करती है। **तेजाबी मवाद नाक से बहे**—और स्वरयन्त्र के लक्षण। आँखों से कोमल स्राव। गाने वालों की सर्दी; **गरम कमरे में कष्ट बढ़े** और शाम के लगभग, खुली हवा में आराम मिले। बलगमी मिजाज वाले रोगी को विशेषकर लाभदायक; **नम, ठंढे मौसम में जुकाम।** अंग विच्छेदन या स्नायु आघात के बाद महीन धागे की तरह स्नायुशूल। स्नायुजाल का पुराना प्रदाह जो चोट के कारण आया हो। नाक, मुँह, गला, मूत्राशय और चर्म में जलन। शरीर के भिन्न-भिन्न भागों पर जलन व गर्मी का सवेदन।

सिर—नजले का सिर दर्द, अधिकतर माथे में शाम के लगभग गरम कमरे **में बढ़े**। चेहरे में धागे जैसा दर्द। मासिक काल में सिर दर्द रुक जाये, स्राव अन्त होने पर फिर शुरू हो।

आँखें—लाल। **अधिक जलन वाला और छरछराने** वाला जल-स्राव। **प्रकाश असह्य**, आँखें लाल और **पनीला**, मात्रा में अधिक कोमल स्राव, खुली हवा में कम, पलकों में जलन।

कान—कान दर्द, कान-कंठ मध्य नली में चिलक।

नाक—छींकना खासकर गरम कमरे में। **अधिक पनीला, तेजाबी स्राव।** जड़

में ठोके ऐसा संवेदन। मौसमी इन्फ्लुएंजा (सैबाड० साइलीसिया, सोरि०)। जुकाम बहे, उसके साथ सिरदर्द, खाँसी और गला बैठना। अर्बुद।

आमाशय--पेट्ट। पाकाशय द्वार क्षेत्र में दर्द। प्यास, डकार, मिचली।

उदर--गड़गड़ाहट, बदबूदार हवा खुले। बायें तलपेट में दर्द। बैठने और हिलने-डोलने से शूल।

मलाशय—अतिसार बदबूदार हवा के साथ। मलाशय में चिल्कन, गुदा में खाज और दरारें। मलाशय में तेज जलन।

मूत्र—मूत्राशय और मूत्रमार्ग में कमजोरी की संवेदना। जुकाम के साथ अधिक मूत्रस्राव। मूत्रमार्ग में अधिक दाब और जलन के साथ लाल मूत्र निकलना।

साँस-यन्त्र—आवाज बैठ जाये। ठंडी हवा भीतर खींचने पर कड़ी खांसी हो। स्वरनली में गुदगुदी। स्वरनली में फट जाने या खुल जाने का संवेदन। सीने के बीच में दाब से साँस कष्टदायक। स्वर-यन्त्र क्षेत्र में सिकुड़न ऐसा संवेदन। दर्द कान तक जाये।

अंग--जोड़ लँगड़े। एड़ी पर घाव। नाखून के आस-पास अंगुलियों पर दर्द वाले रोग। टुण्ठ का स्नायुशूल। पैर भींगने का बुरा प्रभाव। अंग, खास कर बाँहें दर्दीली और थकी मालूम पड़ें।

नींद--सिर दर्द और ऊँघने के साथ जम्हाई लेना। गहरी नींद में मुँह फाड़ना। स्वप्न; २ बजे सुबह जाग पड़ना।

घटना-बढ़ना-शाम को या गरम कमरे में अधिक। खुली हवा में या ठंडे कमरे में कम।

संबंध—तुलना : जेल्स०, युफ्रे०, कैली हाइड०, एकोन, इपिका।

पूरक--फासफारस, थुजा, पल्स०।

प्रतिषेधक--आर्निका, कैमो०, वेरेट्रम।

मात्रा—३ शक्ति।

एलियम सैटिवम

(Allium Sativum)

(Garlic)

आँतों की श्लैष्मिक झिल्ली पर सीधे असर डालता है। परिणामस्वरूप वमन होने लगता है। वृहदन्त्र का प्रदाह। रक्तवाहिनी नलिकाओं को फैलाता है। धमनी तनाव इस पदार्थ के टिंचर की २०-५० बूँद के प्रयोग से ३०-४५ मिनट के बाद घटने लगता है।

उद्‌भेद प्रकृति वालों के लिए अनुकूल है, खासकर जिन्हें मन्दाग्नि और नजले की शिकायत भी हो। अमीराना जिन्दगी बसर करने वालों के लिए भी हितकर है। ऐसे रोगी जो पीने की अपेक्षा खाते अधिक हैं; खासकर मांस। कमर और जांघ की पेशियों में दर्द। फुफ्फुसी या क्षय रोग।

इस दवा के व्यवहार से खाँसी और बलगम कम हो जाता है, ताप उतर जाता है, वजन बढ़ता है और नींद ठीक आने लगती है। रक्त थूकना।

सिर--भारी, कनपटियों में फड़कन, नजले के कारण बहरापन।

मुँह-भोजन के बाद और रात में मीठी लार अधिक आए। जबान पर या गले में बाल ऐसा संवेदन।

आमाशय—अधिक भूख। जलन-डकार। भोजन में जरा भी परिवर्तन कष्ट पैदा करता है। मलबन्ध और उसके साथ आँतों में हलका दर्द जो लगातार होता रहे। जबान पीली, लाल ऊभरी हुई।

साँस-यन्त्र--वायु नलिकाओं में बलगम की लगातार खड़खड़ाहट। सुबह बिस्तर छोड़ने के बाद खाँसी आये और बलगम निकले जो चिमड़ा हो और कष्ट से निकले। ठंडी हवा असह्य। वायुनलिकाएँ फैली हों और साथ में दुर्गन्धित बलगम। सीने में चमकन-दर्द।

स्त्री--स्तन फूले हुए और वेदनापूर्ण। मासिक काल में योनि, स्तनों और योनि मुण्डी पर दाने निकलें।

सम्बंध--एलियम सैट०, डॉ० टेस्टे के अनुसार, ब्रायोनिया-कुटुम्ब की दवा है जिसमें लाइको०, नक्स, कौलि सि०, डिजिटै० और इग्नेशिया सम्मिलित हैं जो कि सभी मांसाहारी प्राणियों पर गहरा प्रभाव डालते हैं और मुश्किल से शाकाहारियों पर। इसलिए इन दवाओं का प्रभाव विशेषकर मांसाहारियों पर ही होता है, ऐसे रोगियों की अपेक्षा जो शुद्ध शाकाहारी हैं।

तुलना—कैप्सिकम, आर्सेनिक, कैली नाइट।

पूरक—आर्सेनिक।

प्रतिविष--लाइकोपोड।

मात्रा—३ से ६ शक्ति। तपेदिक में ४·६ ग्राम की एक खुराक जबकि साधारण सूजने की हालत हो, रोज विभाजित मात्रा में।

एलनस
(Alnus)
(Red Alder)

चर्म रोग, ग्रन्थि बढ़ने और पाकाशय रस की कमी से आये अनपच रोग की औषधि है। यह पोषण क्रिया को उत्तेजित करती है; इसलिए कण्ठमाला रोग, ग्रंथि बढ़ने इत्यादि पर लाभदायक काम करती है। मुँह और गले की श्लैष्मिक झिल्ली के घाव। अंगुलियों पर दानों की भरमार। ये दाने पपड़ीदार हों, दुर्गंधित हों, पाचन-रस-स्राव की कमी से बदहजमी।

स्त्री—प्रदर जिसके स्राव से गर्भाशय की ग्रीवा छिल जाए; रक्त आसानी से गिरे। पीठ से विटपास्थि तक जलन के साथ दर्द, मासिक धर्म में रुकावट।

चर्म—जीर्ण विसर्पिका। हन्वधोवर्ति लाला ग्रन्थि का बढ़ना। अकौता, खाज-दाने। रक्तस्रावी शीताद। आंक विष। ऊपरी प्रयोग भी।

मात्रा—टिंचर ३ शक्ति।

एलो
(Aloe)
(Socotrine Aloes)

अधिक औषधि प्रयोग के बाद जब औषधि और रोग के लक्षण मिश्रित हो गय हों ऐसी अवस्था में शारीरिक क्रिया को फिर से संतुलित करने के लिए अति उत्तम औषधि है। रक्त संचित होने के सर्वाधिक लक्षण इसी दवा में पाये जाते हैं और चिकित्सा की दृष्टि से निदान सम्बंधी प्रथम और गौण लक्षण भी अन्य किसी दवा में इतने नहीं पाये जाते। निठल्ला जीवन बिताने के कुपरिणाम। कफ प्रकृति वालों और वहमी तबीयत वालों के लिए खासकर हितकर है। मलांत्र के लक्षण ही इसके व्यवहार का निर्देश देते हैं; हारे-थके व्यक्ति, वृद्ध, कफ प्रकृतिवाले, बियर के पुराने पियक्कड़, अपने ऊपर झुँझलाने और कमर दर्द के दौरे बारी-बारी से हों। अन्दर, बाहर गरमी लगे। फेफड़ों के क्षेत्र में इसके शुद्ध रस से आराम पहुँचा है।

सिर—सिर दर्द और कटिवात बारी-बारी से हों जबकि आँत और गर्भाशय के रोग भी मौजूद हों। मानसिक परिश्रम से उदासीनता। आँखों के भारीपन के साथ जो आधी बन्द हों माथे के ऊपर दर्द। मलत्याग के बाद सिर दर्द। धीमा दाब दर्द, जो गरमी से बढ़े।

आँखें—माथे के दर्द में सिकोड़े रहे। आँखों के सामने टिमटिमाहट। हर चीज पीली दिखाई देने के साथ आँखें लाल हों। घेरे की गहराई में दर्द।

चेहरा—होंठ अधिक लाल प्रतीत हों।

कान—चबाते समय कड़कड़ाहट। एकाएक धड़ाका और धक्का बायें कान में। किसी पहले धातु के फटे गोले की टनटनाहट का शब्द सिर में।

नाक—सिर ठण्डा। सुबह जागने पर खून गिरे। खुरण्ड से भरी हो।

मुँह—स्वाद कड़वा, खट्टा। स्वादहीन डकार। होंठ सूखे, चिटके।

गला—चिमड़े श्लेष्मा के मोटे ढोंके। गलकोष की नसें फैली हुईं। सूखा खुर-खुर संवेदन।

आमाशय—मांस से घृणा। रसदार चीजों की इच्छा। खाने के बाद बादी। गुदा में धुकधुकी और कामोत्तेजना। सिर दर्द के साथ मिचली। गलत कदम पड़ने पर गट्ठे में दर्द।

उदर—नाभि की चारों तरफ दर्द जो दाब से बढ़े। जिगर प्रदेश में भरापन, दाहिनी तरफ की पसली के नीचे दर्द। उदर भरा, भारी गरम और फूला हुआ मालूम पड़े। नाभि की चारों तरफ टपक के साथ दर्द, कमजोरी जैसे अभी पतला पाखाना होगा। अधिक वायु संचयता, नीचे की तरफ दबाव जिससे सबसे नीचे वाली आँतों में कष्ट हो। भगसन्धि और नितम्बास्थि के बीच गुल्ली ऐसा संवेदन, साथ में मलत्याग की इच्छा। मलत्याग के पहले और बाद में शूल। अधिक जलनदार वायु खुले।

मलान्त्र—मलाशय में लगातार नीचे की तरफ धँसकर ऐसा संवेदन हो, खून बहना, छरछराहट, गरम, ठंढे पीने से कम हो। मलद्वार संकोचक पेशियों में शक्तिहीनता और दुर्बलता का संवेदन। मलाशय में अविश्वास की भावना, विशेषतः वायु खुलने के समय। अनिश्चितता : वायु के साथ मल न निकल पड़े। मलत्याग बिना परिश्रम, बेमालूम। ढोंकेदार, पनीला मल। लपसी ऐसा मल और साथ में मलत्याग के बाद मलाशय में छरछराहट। मलत्याग के बाद मूत्राशय के दर्द के साथ अधिक मात्रा में श्लेष्मा निकले। खूनी बवासीर; मस्से अंगूर के गुच्छे की तरह बाहर निकले हों, बहुत कोमल और पीड़ाजनक, ठण्डे पानी से कष्ट कम हो। मलद्वार और मलाशय में जलन। कब्ज और साथ में आमाशय के निचले भाग में भारी दाब। बियर पीने से दस्त हो।

मूत्र—वृद्धावस्था में मूत्र न रुके, धँसन संवेदन और प्रोस्टेट ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई हों। थोड़ा और रंगदार।

स्त्री—मलाशय में नीचे को दाब, जो खड़े होने और मासिक काल में बढ़े। गर्भाशय भारी मालूम पड़े जिसकी वजह से अधिक चल-फिर न सके। कमर में

प्रसव ऐसा दर्द टाँगों के नीचे तक उतरे। जीवन संधिकाल में रक्त बहना। मासिक धर्म समय से बहुत पहले और मात्रा में बहुत अधिक।

श्वास यन्त्र—जाड़े की खाँसी, खाज के साथ। जिगर में सीने तक चिलकन के साथ कष्टदायक साँस।

पीठ पिठासे में दर्द, हिलने से बढ़े। त्रिकास्थि के आरपार चिलक। कटि-वात। सिर दर्द और बवासीर बारी-बारी से हों।

अंग—सभी अंगों में लँगड़ापन। जोड़ में खींच के साथ दर्द। टहलने से तलवों में दर्द।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : प्रातःकाल गरमी में, गरम सेंक से, सूखे गरम मौसम में, खाने पर खाने या पीने से। घटना : ठंढी, खुली हवा में।

सम्बन्ध—पूरक : सल्फर।

तुलना कीजिए : कैलो ब्राइक्रो, लाइको०, एलियम सैट०।

शामक—ओपियम, सल्फ।

मात्रा—६ शक्ति और उससे ऊँची। गुदा लक्षण में ३ शक्ति की कुछ मात्रा, फिर प्रतीक्षा कीजिए।

एल्स्टोनिया स्कोलैरिस
(Alstonia Scholaris)
(Dita Bark)

मलेरिया की बीमारियाँ, साथ में अतिसार, पेचिश, रक्त की कमी और मंद पाचन इस औषधि की ओर संकेत करते हैं। विशेषता है : पेट में भारी दुर्बलता; जैसे प्राण निकल जायेंगे। निर्बल बनाने वाले ज्वरों के बाद शक्तिदायक है।

उदर—आँतों में घोर मरोड़ाहट और ऐंठन। निचली आँतों में गरमी और छरछराहट। प्रसवकालीन अतिसार, रक्तमय मल, पेचिश, खराब पानी और मलेरिया का अतिसार। दर्द रहित पनीला मल (एसिड फास०)। खाना खाते ही अतिसार।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एल्स्टोनिया कोन्सट्रिक्टा की तरह काम करती है, आस्ट्रेलिया की कड़वी छाल या देशी कुनैन की तरह। डिटेन (कार्यवाही मूल तत्व, समय की पाबंदी को तोड़ती है—अर्थात् जो रोग बँधे समय पर आते हैं—उनकी प्रवणता को नष्ट करती है। कुनैन की तरह, लेकिन बिना उसके बुरे असर के)। सिनकोना (अतिसार, जीर्ण मंदाग्नि और कमजोरी में समान है।), हाइड्रेस्टिस, फेर० सिट०, एट चिन०।

मात्रा—टिंचर से ३ शक्ति। स्थानीय प्रयोग घाव और आमवात में।

एलुमेन
(Alumen)
(Common Potash Alum)

आँतों के लक्षण इसके व्यवहार का संकेत करते हैं। कठोर कब्ज, अधिक ज्वर में अधिक रक्तस्राव; शरीर के सभी भागों की पेशियों की पक्षाघात जैसी दुर्बलता। कड़ा पड़ने की प्रवृत्ति भी स्पष्ट होती है, तन्तु निर्माण की मन्द अवस्था में सहायता मिलती है। जबान, मलाशय, गर्भाशय इत्यादि के तन्तुओं का कड़ा पड़ना, कड़े तल वाले घाव। वृद्धों के लिए लाभदायक है, विशेषकर साँस नलिका समूह के नजले में। सूखापन और सिकुड़न का संवेदन। मानसिक कार्यहीनता, निगलना कठिन, खासकर तरल पदार्थ। कड़ापन आने की प्रवृत्ति, जबान पर कठिन अर्बुद।

सिर—जलन के साथ दर्द जैसे चाँद पर बोझ रखा हो जो हाथ की दाब से कम हो। आमाशय के गड्ढे में कमजोरी के साथ चक्कर। बाल झड़ना।

गला—ढीला। श्लैष्मिक झिल्ली लाल और सूजी हुई। खाँसी। गले में गुद-गुदी। गले के जुकाम की प्रवृत्ति। कंठमूल बढ़े हुए और कड़े। जलन, दर्द भोजन नली तक, पूर्ण। आवाज बैठना, जुकाम होते ही गला खराब हो जाता है। भोजन नली का सिकुड़ना।

दिल—दाहिनी करवट लेटने पर धड़कन।

मलाशय—अति कठोर कब्ज। कई दिनों तक मल त्यागने की इच्छा न हो। मल त्यागने की असफल इच्छा। मल-स्खलन में अक्षमता। मल के संगमरमर ऐसे ढोंक निकलें, लेकिन मलाशय तब भी भरा हुआ मालूम हो। मल-त्याग के बाद गुदा में खुजली हो। मल त्यागने के बाद बहुत देर तक दर्द और गड़न होती रहे, खूनी बवासीर। पीला मल बच्चों की तरह। आँतों से रक्त प्रवाह।

स्त्री—गर्भाशय की गरदन और स्तनों के कड़ा होने की प्रवृत्ति (कार्बो० एन०, कोन०)। जीर्ण, पीला योनि स्राव। पुराना सुजाक जिसमें पीला मवाद गिरे और मूत्र के साथ-साथ छोटी-छोटी गाँठें बन जायँ। योनि में छोटे, सफेद छाले (कौल०) मासिक स्राव पनीला।

साँस यन्त्र—रुधिर थूके, सीने की अधिक कमजोरी, श्लेष्मा थूकना कठिन। वृद्ध लोगों में डोरी ऐसा बलगम सुबह को अधिक निकले। दमा रोग।

चर्म—कड़े तल वाले घाव। कड़ी ग्रन्थियाँ और कैंसर इत्यादि में विचारणीय। नसें सिकुड़ जाती हैं और उनमें से खून निकलता है। जीर्ण सूजन के कारण कड़ा-पन। ग्रन्थियाँ सूजती हैं और कड़ी पड़ जाती हैं। बाल झड़ना। अण्डकोष और लिंग के पिछले भाग पर अकौता।

अंग—सभी पेशियों की कमजोरी, खासकर बाँहों और टाँगों की, अंगों की चारों तरफ सिकुड़न।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सिरदर्द के सिवाय सभी लक्षण ठंढक से : सिर दर्द ठंढक से कम हो।

मात्रा—१ से ३० शक्ति तक। बहुत ऊँची शक्तियाँ लाभदायक सिद्ध हुई हैं। दस ग्रेन फिटकिरी की बुकनी जबान पर रखने से दमा का हमला रुकने के बारे में सुना जाता है।

एलुमिना
(Alumina)
(Oxide of Aluminum—Argilla)

इस पदार्थ की एक विशेषता श्लैष्मिक झिल्ली और चर्म का सूखापन और पेशियों का आंशिक पक्षाघात है। वृद्ध लोग जिनमें जीवन ताप की कमी हो या अवस्था के पहले बुढ़ापा आया हो और साथ मे कमजोरी हो। शरीर क्रिया मन्द, भारीपन, ठिठुरन और लड़खड़ाना और इस दवा की कब्ज-विशेष। दुबले-पतले और वात प्रकृति वालों में जुकाम और डकार आने की प्रवणता। कोमल बच्चे जो नकली भोजन से पले हुए हों।

मन—मन उत्साहहीनता, तर्कहीन होने का भय। खुद को पहचानने में गड़बड़ी। जल्दबाज, उतावला। समय धीरे-धीरे बीतता है। परिवर्तनशील भाव। दिन चढ़ने के साथ-साथ रोग में कमी आए। खून या चाकू देखकर आत्महत्या करने की प्रवृत्ति।

सिर—चिलकन, जलन के साथ दर्द। चक्कर के साथ, सुबह को अधिक लेकिन भोजन से कम हो। माथे में दाब जैसे ईंट कसके पड़ने हो। बिना आँखें खोले टहल न सके। कब्ज के साथ थरथराहट का सिर दर्द। मिचली के साथ चक्कर जो नाश्ता करने के बाद कम हो। बाल झड़ना, सिर की खाल खुजाये और सुन्न।

आँख—सब चीजें पीली दिखाई दें। आँखें ठंढी मालूम पड़ें। पलक भारी, जलें, दर्द करें, मोटी हों, सुबह को अधिक, जीर्ण श्वेत पटल प्रदाह। ऊपरी पलक का पक्षाघात, वक्र दृष्टि।

कान—भिनभिनाहट, गर्जन। कर्ण नली ठसी मालूम हो।

नाक--नाक की जड़ पर दर्द। सूँघने की शक्ति कम। बहने वाला जुकाम। सिर चिटका, नथुने छरछराये, लाल, छूने से कष्ट बढ़े; मोटे, पीले श्लेष्मा की पपड़ी। मोटे दाद ऐसी लाल। सूखा, क्षीणता जनित पीनस।

चेहरा--मालूम पड़े जैसे अण्डे की सफेदी जैसी कोई चीज उस पर सूख गई है। रक्तभरी फुन्सियाँ और दाने। निचले जबड़े की फड़कन। खाने के बाद चेहरे पर खून संचार बढ़ जाए।

मुँह--छरछराहट। दुर्गन्ध आये। दाँतों पर कड़ी मैल की पपड़ी, मसूढ़ों में छरछराहट, खून निकले। मुँह खोलने या चबाने पर जबड़ों में खींचन दर्द।

गला – सूखा, छरछराहट। भोजन नीचे उतरे, भोजन निगलने का छेद सिकुड़ा मालूम पड़े, जैसे वहाँ खपच्ची या गुल्ली कसी हो। उत्तेजित और ढीला गला। सूखा और चिकना दिखाई दे। दुबले लोगों में गला बैठना। पिछले भाग से मोटा, चिमड़ा श्लेष्मा गिरे। बराबर गला साफ करता रहे।

आमाशय--असाधारण चीजों के खाने की प्रबल इच्छा जैसे खड़िया, कोयला, सूखा खाना, चाय की पत्ती। गला जलना, सिकुड़ा लगे। मांस से घृणा (ग्रेफा०, आर्नि०, पल्स०) इच्छा न हो, केवल छोटा-छोटा कौर निगल सके। भोजन-नली के छेद का सिकुड़ना।

उदर--पेण्टरों जैसा शूल। दोनों पुट्ठों में कामेन्द्रिय की तरफ दाब। उदर की बाईं तरफ से रोग।

मल-कड़ा, सूखा गठीला मल-वेग न हो। मलाशय छरछराये, सूखा, सूजा खून बहे। गुदा में जलन, खाज। मुलायम मल भी कष्ट से निकले। बहुत काँखना पड़े। कब्ज बालकों का; (कौलिस०, सोरे० पैरफ०) और वृद्ध का मलाशय कार्यहीनता से, और घर में बैठे रहने वाली स्त्रियों का। पेशाब करते समय मल निकल आये। मलवेग बहुत, पहले मरोड़ हो और फिर मलत्याग के समय काँखना पड़े।

मूत्र--मूत्राशय की पेशियाँ काम न करें, मलत्याग के समय पेशाब करने के लिए काँखना पड़े। गुर्दों में दर्द, मानसिक गड़बड़ी के साथ। वृद्ध लोगों में घड़ी-घड़ी पेशाब मालूम हो। कष्ट से पेशाब शुरू हो।

पुरुष--अधिक काम इच्छा। मल त्याग के समय काँखने पर अनिच्छित धातु गिरे। ग्रन्थि रस स्राव।

स्त्री--मासिक धर्म समय से बहुत पहले, अल्पकालीन, मात्रा में थोड़ा, पीला, बाद में बहुत शिथिलता आये (कार्बो एन०, कॉकु०)। प्रदर: तीखा, मात्रा में अधिक, पारदर्शी, रस्सी जैसा लम्बा, जलन के साथ, दिन में अधिक और मासिक धर्म के बाद। ठंढे पानी से लक्षण में कमी।

श्वास-यन्त्र—सुबह जागते ही खाँसी हो। स्वरभंग, आवाज बन्द; स्वर-नली में गुदगुदी, साँस लेने में सायँ-सायँ, खड़खड़ाहट की आवाज। सुवह को बातचीत करने या खाने पर खाँसी। सीना सिकुड़ा मालूम पड़े। अँचार खाने से आयी खाँसी। सीने का कष्ट बात करने से बढ़े।

पीठ—चिलक। कुतरन के साथ दर्द, मानो गरम लोहा रखा हो। रीढ़ के रास्ते में दर्द, पक्षाघात जैसी कमजोरी के साथ।

अंग—बाहों और अंगुलियों में दर्द, मानों गरम लोहा गड़ रहा हो। बाँहें अशक्त मालूम हों। टाँगें सोती मालूम हों, खासकर एक पर एक रखकर बैठने के बाद। टहलने पर लड़खड़ाना। एड़ी ठिठुरी मालूम हो। तलवे कोमल, कदम रखने पर मुलायम और सूजे लगें। कंधे और ऊपरी बाँह में दर्द। अंगुलियों के नाखून के नीचे कुतरन। नाखून भुरभुरे। केवल आँखें खोलकर या दिन में ही टहल सके। रीढ़ की क्षीणता और निचले अंगों का पक्षाघात।

नींद—बेचैन, उत्सुक और मिले-जुले, गिचपिच सपने। सुबह को ऊँघना।

चर्म—पपड़ीदार, सूखा दाद ऐसा। नाखून भुरभुरे। बिस्तर की गरमी शुरू होते ही असह्य खाज आए। इतना खुजाए की खून बहे। फिर दर्द करे। अंगुलियों की खाल भुरभुरी।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : एक ही समय पर, तीसरे पहर, आलू खाने से, सुबह को जगाने पर, गरम कमरे में। घटना : खुली हवा में, ठंढे पानी से नहाना, शाम को, तीसरे दिन, तर मौसम में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए एलूमिनियम क्लोराइडम (गति शक्ति-रहित रोग में पीड़ा। पानी में निचली शक्ति के चूर्ण देने चाहिए स्लैक, सिलिका, सल्फो-कैलसाइट आफ एलुमिना ३ x (गुदा खाज, बवासीर, कब्ज, अफारा), सिकेलि, लेथिर, प्लम्बम, एलुमिना। एसीटेट सोल्यूशन। बाहरी प्रयोग, सड़े घाव और चर्म संक्रांति के लिए। गर्भाशय की कार्यहीनता से रक्तस्राव को रोकता है। कोरण्ड रक्त प्रवाह कई अंगों से; २-३ प्र० श० सोल्यूशन। गल ग्रन्थि (टांसिल) १०% सोल्यूशन से धोने पर रक्त प्रवाह को रोकता है।

पूरक—ब्रायोनिया।

शामक—इपिकाक, कैमोमिला।

मात्रा—६ से ३० और उससे ऊँची शक्ति। प्रभाव मंद गति से होता है।

एलुमिना सिलिकेटा
(Alumina Silicata)
(Andalasit rock—Alumina 60, Silicae 37 parts)

सिकुड़न इस दवा का विशेष सर्वव्यापी लक्षण है। छिद्रों के मुँह का सिकुड़ना। शैरिक तनाव। कमजोरी खासकर रीढ़ में। टीस और जलन रीढ़ में। सभी अंगों में सुरसुरी, ठिठुरन, दर्द व्यापक लक्षण है। मिरगी जैसे झटके। दर्द के समय ठंडापन।

सिर—मस्तिष्क में रक्त संचय। चमड़ी का खिचना। सिर में दर्द गरम से कम, पसीना हो। आँखों में दर्द, झिलमिलाहट। अकसर जुकाम होते रहे, नाक की सूजन और घाव।

साँस-यंत्र—सीने की नजला, दर्द, कच्चापन। सीने में बहुत कमजोरी। चिलकन। आक्षेपिक खाँसी; पीप जैसा, चिमड़ा बलगम।

अंग—भारीपन, झटके आएँ, सुन्न होना, टीस और दर्द।

चर्म—स्नायुमार्ग में सुरसुरी, शिरा भरी और तनी मालूम दे। छूने और दाब से दर्द करे।

घटना-बढ़ना—ठंडी हवा, खाने के बाद, खड़ा होने से **बढ़ना-घटना**—सेंकना, उपवास, बिस्तर में आराम करने पर।

मात्रा—ऊँची शक्ति।

एम्ब्रा ग्रीसिया
(Ambra Grisea)
(Ambergis-Amorbid socretion of the whale)

उत्तेजनीय स्नायविक बालकों और इकहरे शरीर तथा वात प्रकृति वाले रोगियों के लिए उपयोगी है। अत्यंत घबराये हुए; अत्यंत असहिष्णु व्यक्ति। सवेरे समस्त शरीर बाह्यतः संज्ञाहीन हो जाता है और दुर्बलता आती है। स्नायविक, पित्त प्रकृति। पतली, दुर्बल स्त्रियाँ। गुल्म-वायु से पीड़ित व्यक्तियों या ऐसे रोगियों के लिए उपयोगी है जो तशन्नुजी खाँसी, खाली डकार के साथ रीढ़ की उत्तेजना के रोगी हों। उन रोगियों के लिए भी जो अवस्था से या अधिक परिश्रम से कमजोर हो गये हों; जो रक्तहीन और अनिद्राग्रस्त हों। उन वृद्ध लोगों की प्रथम दवा है जिनकी शारीरिक क्रियायें बिगड़ गई हों जिनका कोई एक अंग जैसे अँगुलियाँ, बाजू आदि कमजोर पड़ गया हो, ठण्ढे हों या संज्ञाहीन हों। एक बगली बीमारी इस दवा का

संकेत करती है। संगीत से रोग बढ़ता है। खुली हवा में चलने-फिरने पर रक्त में गरमी आ जाती है और टपकन आने लगती है।

मन—लोगों का भय, अकेले रहना चाहे। दूसरों के सामने कुछ न कर सके। बहुत लज्जालु, लाज से चेहरा लाल हो जाये। संगीत सुनकर रो दे। नीरस; जीवन से घृणा। विचित्र भ्रम। लज्जालु। जीवन से उकताया हुआ बेचैन, उत्तेजित, बकवादी। समय धीरे-धीरे गुजरे। सोचना कष्टदायक, सुबह के समय, वृद्ध में। अप्रिय विषयों पर सोचते रहना।

सिर—मंद बुद्धि। चक्कर, साथ में सिर और आमाशय में कमजोरी। सिर के अगले भाग पर दाब, साथ में मानसिक खिन्नता। मस्तिष्क के ऊपर को ओर आधे भाग में फटने जैसा दर्द। बुढ़ापे का चक्कर। सिर में खून दौड़ना, संगीत सुनते समय अधिक। कम सुनना। नकसीर, खासकर सुबह को दाँतों से अधिक खून बहना। बाल गिरना।

पेट—खाली डकार, साथ में तेज, आक्षेपिक खाँसी। तेजाबी डकार, गला जले। आधी रात के बाद आमाशय और उदर में तनाव। उदर में ठंडक का संवेदन।

मूत्र—मूत्राशय और मलान्त्र में साथ-साथ दर्द। मूत्रमार्ग और गुदा छिद्र में जलन। मूत्रमार्ग में ऐसा लगे मानो कुछ बूँद निकलती हों। पेशाब मार्ग में पेशाब करते समय जलन और खाज। पेशाब करते ही समय गँदला हो, बादामी तलछट जमे।

स्त्री—प्रबल मैथुन इच्छा। योनि के बाह्य भाग पर खुजली छरछराहट और सूजन के साथ। मासिक धर्म समय से बहुत पहले। अधिक नीलापन लिए प्रदर। रात में अधिक। जरा-सी तुच्छ दुर्घटना पर मासिक काल के बीच वाले समय में रक्त प्रवाह।

पुरुष—अण्डकोष की कामोत्तेजक खाज। कामेन्द्रिय का बाहरी टपटक, भीतरी जलन। बिना काम इच्छा के घोर लिंगोत्थान।

साँस यन्त्र—वायु-डकार के साथ खाँसी। स्नायविक; आक्षेपिक खाँसी, साथ में आवाज फटी और डकार जो सुबह जागने पर, लोगों की उपस्थिति में बढ़े। गले, स्वरनली, कण्ठनली में गुदगुदी, सीने पर दाब, खाँसने से दम फूले। खोखली तशन्नुजी खाँसी जैसे कुत्ता भोंकता है। खाँसी सीने की गहराई से उठे। बलगम खखारते समय गला रुके।

दिल—धड़कन, साथ में सीने पर दाब मानो उसमें लोंदा अटका हो या जैसे सीना रुका हो। नाड़ी चलती मालूम हो। पीले चेहरे के साथ खुली हवा में दिल धड़के।

नींद—पीड़ा के कारण सो न सके, उठ बैठना पड़े, उत्सुक सपने। नींद में शरीर का ठण्डापन और अंग फड़कें।

चर्म—खाज और झुरझुराहट, खासकर कामेन्द्रिय के चारों तरफ। चर्म की ठिठुरन, बाहों का "सो जाना।"

अंग—हाथों और अँगुलियों में ऐंठन, किसी चीज को पकड़ने से बढ़े। टाँगों में ऐंठन।

घटना-बढ़ना—बढ़े: संगीत से, अपरिचित लोगों के सामने, किसी असाधारण घटना से, सुबह को, गरम कमरे में। घटे: धीमी हरकत से, खुली हवा में, रोग वाली बगल लेटने से, ठण्ढी चीज पीने से।

सम्बन्ध—अम्बर से मत गड़बड़ कीजिए। सक्कीनम क्यू० वी०। मासकस लाभ के साथ बाद में दिया जा सकता है।

तुलना कीजिये: ओलियम सक्किनम (हिचकी), सुम्बुल कैस्टर, एसाफ०, क्रोकस, लिलियम।

मात्रा—२ से ३ शक्ति, लाभ के साथ दोहराई जा सकती है।

एम्ब्रोजिया

(Ambrosia)

(Rag-Weed)

मौसमी फ्लू, आँखों से पानी जाना और पलकों की असह्य खाज की दवा। कुछ प्रकार की कुकुर-खाँसी। पूरा साँस मार्ग रुका हुआ। कई तरह के अतिसार; खासकर गरमी के मौसम का पेचिश भी।

नाक—पानी ऐसा नाक बहे, छींक नकसीर। सिर और नाक में कसाव, कण्ठनली और साँसनलिका समूह में उत्तेजना, साथ में दमा के हमले (एरेल० यूकेलि०)। साँय-साँय आवाज वाली खाँसी।

आँखें—झुरझुरायें और जलें। आँसू आएँ।

सम्बन्ध—तुलना: मौसमी फ्लू में: सैबाडि, बीथिया, सक्किन, एसिड, आर्स आयो, अरुण्डो।

मात्रा—टिंचर से ३ शक्ति तक, नकसीर के हमले में और बाद को पानी में १० बूंद मिलाकर। मौसमी फ्लू में ऊँची शक्ति।

एमोनियेकम डोरेमा
(Ammon, Dorema)
(Gum Ammoniac)

वृद्ध और दुर्बलकाय व्यक्तियों की दवा खासकर जीर्ण वायुनली -भुज-प्रदाह (ब्रोंकाइटिस) में; चिड़चिड़ापन, ठण्ढक असह्य। गरदन और अन्ननली में जलन और खुर्चन का संवेदन।

सिर—अगले भाग की रक्त-नलिकाओं के बंद होने से नजले का सिर-दर्द।

आँखें—निगाह धुँधली। तारे और चिनगारियाँ आँखों के आगे तैरें। पढ़ने से जल्द थकें।

गला—गला सूखा, ताजी हवा भीतर खींचने से कष्ट हो। गला भरा हुआ, जलन, खरखरी। खाने के बाद ही मानो कोई चीज अन्न-नली के मुँह में अँटक गयी हो; निगलना पड़े।

साँस-यन्त्र—कठिन साँस; वायुनलिका समूह का जीर्ण नजला; पीब जैसा और थोड़ा बलगम निकलना, ठंढे मौसम से बढ़े। श्लेष्मा चिमड़ा और कड़ा। दिल की धड़कन मजबूत, आमाशय तक जाये। वृद्ध के सीने में खड़खड़ाहट।

सम्बन्ध—शामक—ब्रायो०, आर्निका।

तुलना—सेनेगा, टार्ट इमेट०, बैलसम पेरू।

मात्रा—३ विचूर्ण शक्ति।

एमोनियम बेंजोइकम
(Ammon. Benz..)
(Benzoate of Ammonia)

साइलाल मूत्र (अलब्यूमेन) की दवाओं में से एक है; खासकर गठिया के रोगी में। गठिया, जोड़ों में विकार जमा हो। वृद्ध को पेशाब स्वतः हो।

सिर—भारी, जड़।

चेहरा—फूला, पलक सूजी। जबान के नीचे अर्बुद जैसी सूजन।

मूत्र—धुएँ जैसा, थोड़ा, अंडे की सफेदी जैसी और गाढ़ी तलछट।

पीठ—त्रिकास्थि के आरपार दर्द, मल त्यागने की तीव्र इच्छा। दाहिने गुर्दे के क्षेत्र में कोमलता; दर्द।

सम्बन्ध—तुलना : टेरिबिन्थि०, बेन्ज० ऐसि०, एमोनिया साल्ट, कॉस्टि०।

सांडलाल मूत्र (अलब्यूमेन) रोग में तुलना कीजिए; कैल्मिया, हेलोन, मर्क कार, बर्बे० कैन्थ० ।

मात्रा—दूसरी विचूर्ण शक्ति ।

एमोनियम ब्रोमेटम
(Ammon. Brom.)
(ब्रोमाइड ऑफ अमोनिया)

जीर्ण स्वर यन्त्र सम्बन्धी और गलकोष सम्बन्धी प्रदाह, स्नायविक सिर दर्द और मोटापन । सिर में, सीने और टाँगों आदि में घुटन के साथ दर्द । अंगुलियों के नाखूनों के नीचे उत्तेजना, उनको दाँतों से काटने ही से आराम मिले ।

सिर—वृहत् मस्तिष्क में रक्त संचय । कानों के पास सिर की चारों तरफ फीता कसा हुआ जैसा मालूम पड़े । छींक, गाढ़ा श्लेष्मा निकले ।

आँखें—पलक के किनारे लाल और सूजे हुए नेत्रच्छद ग्रंथि भी । आँखों के ढेले बड़े मालूम पड़ें और उनके चारों तरफ दर्द जो सिर तक हो ।

गला—मुँह में खरखराहट । गले में गुदगुदी, साथ में सूखी आक्षेपिक खाँसी की प्रवृत्ति, खासकर रात में । मुख गह्वर में जलन । सफेद, चेपदार बलगम । वक्ताओं का पुराना नजला ।

साँस-यन्त्र—एकाएक छोटी खाँसी, गला घुटना । कंठ-नली और वायु-नलिका समूह में गुदगुदी । खाँसी से तीन बजे सबेरे जाग उठे । दम घुटना मालूम दे, लगातार खाँसी, रात को लेटते समय, फुफ्फुस में तेज दर्द । कुकुर खाँसी-सूखी, आक्षेपिक खाँसी लेटने पर ।

सम्बन्ध—हायोस०, कॉन०, आर्जे० नाईट०, कैली बाइक्रोम ।

मात्रा—पहली शक्ति ।

एमोनियम कार्ब
(Ammonium Carb)
(कार्बोनेट आफ एमोनिया)

इस औषधि में ऐसी अवस्थाएँ मिलती हैं जैसी हम लोग अक्सर उन मोटी स्त्रियों में पाते हैं जो सदा थकी और घबराई हुई मालूम पड़ती हैं । उन्हें जुकाम आसानी से हो जाता है, मासिक धर्म के पहले हैजे जैसे लक्षण हो जाया करें । जो परिश्रमहीन जीवन बिताती हैं, औषधि से देर में प्रभावित होती हैं और

सूँघने की बोतल का अक्सर प्रयोग करने की प्रवृत्ति होती है। अक्सर और मात्रा में अधिक मासिक धर्म। साँस यन्त्र की श्लैष्मिक झिल्ली खासतौर पर रोगग्रस्त होती है। मोटे रोगी जिनका दिल कमजोर हो, साँय-साँय की आवाज, दम घुटने जैसा लगे। ठंडी हवा असह्य। पानी से बहुत घृणा, छूना न सहन करें। सांघातिक आरक्त ज्वर, साथ में ऊँघना, ग्रन्थि सूजन, गला, गहरा लाल प्रदाहित, कम उभरे हुए दाने। ऐसा रक्त-दोष जो रक्त की स्वाभाविक प्रक्रिया के दूषित हो जाने का परिणाम हो। सभी अंगों में भारीपन। शारीरिक सफाई पर ध्यान न दे। विविध भागों की, ग्रन्थियों इत्यादि की सूजन। तेजाबी स्राव। थोड़े से परिश्रम से ही निढाल होना।

मन—भुलक्कड़, बदमिजाज, आँधी के समय खिन्नचित्त। गन्दा और दूसरों के बात करने का बहुत प्रभाव पड़े। रोये, बेसमझ।

सिर—माथे में थरथराहट, दाब से और गरम कमरे में कम हो। सिर में धक्के।

आँखें-रोशनी से घृणा के साथ आँखों में जलन। नजर का बारीक काम करने से आई कमजोरी (नेट्रम म्यूर)। दुर्बल या क्षीण अथवा वेदनादायक दृष्टि। वेदनापूर्ण किनारे।

कान—कम सुने। दाँत कटकटाने के समय कानों, आँखों और नाक में झटके आएँ।

नाक—तेजाबी, गरम पानी गिरे। जीर्ण जुकाम के साथ रात में नाक बन्द होना। नाक से साँस न ले सके। बच्चों का नाक से बोलना। नहाने के बाद और खाने के बाद नकसीर बहना। पीनस रोग, नाक से खूनी श्लेष्मा छिनकना। नाक का सिरा सूजा हो।

चेहरा—मुँह के आसपास मोटा दाद। मासिक काल में फुन्सियाँ और दाने। मुँह के किनारे पके, चिपके, जले।

मुँह-मुँह और गले का अधिक सूखापन। दाँत दर्द। दाँत पर दाँत दबाने से सिर, आँखों और कानों में से झटका आये। जबान पर दाने। स्वाद खट्टा, कसैला। चबाने पर जबड़े चुरचुरायें।

गला—तालुमूल और गरदन-ग्रन्थियों का बढ़ना। गले के नीचे तक जलन, दर्द। तालुमूल में सड़न-घाव की प्रवृत्ति। रोहिणी रोग जब नाक ऊपर की तरफ बन्द हो।

आमाशय—गढ़े पर दर्द, साथ में गला जलना, मिचली, लार गिरे और सर्दी लगे। अधिक भूख लेकिन जल्दी ही संतुष्ट हो जाये। वायु, मंदाग्नि।

उदर—उदर में आवाज और दर्द । अफरा, आँत उतरना, मल कष्टदायक, कड़ा, गठीला, खूनी बवासीर, मासिक काल में बढ़े । गुदा में खाज । मल-त्याग के बाद अर्शावलियाँ बाहर आ जाएँ । लेटने से कम हो ।

मूत्र—घड़ी-घड़ी पेशाब की इच्छा हो, रात में बिना इच्छा निकले । मूत्राशय में कुथन । पेशाब सफेद, बालू ऐसा, खूनी, अधिक गँदला और दुर्गन्धित ।

पुरुष—अंडकोष और शुक्र-रज्जु की खाज और पीड़ा । लिंगोत्तेजना, बिना इच्छा धातु-स्राव ।

स्त्री—योनि के बाहर खाज, सूजन, जलन । प्रदर : स्राव जलन लाये, तेजाबी, पनीला । मैथुन से घृणा । मासिक धर्म अधिक बार, अधिक मात्रा में, समय से पहले, बहुत अधिक, थक्केदार, काला, कष्टरज और कष्टदायक मल साथ में । थकान खासकर जाँघों की, जम्हाई और सर्दी लगे ।

साँस यन्त्र—आवाज भारी । करीब ३ बजे रोज सुबह को खाँसी आये । साथ में लघु साँस, धड़कन, सीने में जलन, ऊपर चढ़ते समय कष्ट बढ़े । सीने में थकान मालूम हो । वायुस्फीति । साँस लेने में बहुत दाब, परिश्रम से कष्ट बढ़े और गरम कमरे में घुसते ही या कुछ कदम ऊपर चढ़ने के बाद कष्ट बढ़े । दुर्बलता से आया धीमा फुफ्फुस प्रदाह । परिश्रम के साथ में आवाज करने वाली साँस, बुलबुले उठने जैसी आवाज । जाड़े का नजला, साथ में चिकना श्लेष्मा और खून से टुकड़े निकलें । फुफ्फुस शोथ ।

दिल—सुनाई देने वाली धड़कन, डर के साथ ठंढा पसीना, आँखों से पानी, बोल न सके, जोर से साँस लेना और हाथों का काँपना । दिल कमजोर, कष्टदायक साँस और धड़कन के साथ जाग उठे ।

अङ्ग—जोड़ों में फटन, जो बिस्तर की गरमी से कम हो, हाथ-पाँव फैलाना चाहे; अंग खुजलाने की प्रवृत्ति । हाथ नीले और ठण्ढे, शिरायें तनी हुई । बाँह नीचे लटकाने से अंगुलियाँ फूलें । नखव्रण जिसका दर्द गहराई से उठे । पिंडली और तलवों में ऐंठन । पैर के अंगूठों में दर्द और सूजन । नखव्रण की प्रारम्भिक अवस्था । एड़ी खड़े होने पर दर्द करे । टखनों और पैर की हड्डी में फटन, बिस्तर की गरमी से कम हो ।

नींद—दिन में नींद लगे । नींद में गला रुककर जाग उठे ।

चर्म—तेज खाज और जलते हुए फफोले । लाल दाने । घमौरी । जीर्ण आरक्त-ज्वर । जीवन शक्ति की कमी से दाने अच्छी तरह न उभरें । वृद्ध का विसर्प रोग, मस्तिष्क लक्षण के साथ । अंगों के मोड़ों में, टाँगों में, गुदा और कामेन्द्रिय में अकौता ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—शाम को; ठण्डे तर मौसम में, तर प्रयोग से, धोने से, ३-४ बजे सुबह, मासिकधर्म के दिनों में। **घटना**—दर्द वाली करवट और पेट के बल लेटने से, सूखे मौसम में।

सम्बन्ध—विरोध : लैकेसिस। एक ही प्रभाव।
शामक : आर्निका, कैम्फर।
तुलना : रस०, म्युरियेटिक एसिड, टारटर एमेट।

लकड़ी के कोयले के विष पर लाभदायक है।

मात्रा—नीचे की शक्ति रखने से खराब हो जाती है। ६ शक्ति साधारण प्रयोग के लिए उत्तम है।

एमोनियम कास्टिकम

(Ammonium Causticum)

(Hydrate of Ammonia—Ammonia water)

यह बहुत शक्तिवान हृदय उत्तेजक है। अतः मूर्च्छा और रक्तसंचार में आधी बाधा, रक्त प्रवाह, साँप-काटना, क्लोरोफार्म के नशे में सुँघाया जा सकता है।

श्लैष्मिक झिल्ली के शोथ और घाव जो इस शक्तिवान दवा से उत्पन्न होते हैं, ये ही लक्षण इसके व्यवहार का आधार प्रस्तुत करते हैं। इसलिए गलनली में जलन के साथ झिल्ली वाली काली खाँसी में उपयोगी है। क्षणिक श्वास-रोध (कॉस्टिकम देखिये)।

साँस-यन्त्र—कष्टदायक साँस। बलगम जमा होना, लगातार खाँसी के साथ। आवाज बन्द होना। गले में जलन; कच्चापन। टेंटुआ में झटके, दम घुटने के साथ, रोगी साँस के लिए हाँफता है। गहरी साँस लेने से गलनली में दर्द। गलनली और गले में खुरचन और जलन। घाँटी सफेद श्लेष्मा से ढँकी हो। नाक की झिल्ली का प्रदाह, साथ में तेजाबी जलन वाला स्राव।

अंग—अति शिथिलता और पेशियों की कमजोरी। कंधों का वात दर्द। चर्म गरम और सूखा।

मात्रा—१ से ३ शक्ति। ५ से १० बूँद पानी में अच्छी तरह घोल कर।

एमोनियम आयोडेटम

(Ammon. Iod.)

(Iodide of Ammoniac)

उस समय आवश्यक होता है जब आयोडीन ने स्वरयन्त्रप्रदाह और वायुनलीभुजप्रदाह, नजलेवाले फुफ्फुस प्रदाह, फुफ्फुस शोथ में केवल आंशिक लाभ दिया हो।

सिर—धीमा सिर दर्द, खासकर युवा लोगों में; चेहरा बुद्धिहीन, भारी चक्कर। कान के विकारजनित चक्कर।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण।

तुलना कीजिए—**एमोन टारटे॰** (जुकाम के बाद सूखी कड़ी खाँसी)।

एमोनियम म्यूरियेटिकम
(Ammon. Mur.)
(Sal. Ammonia)

इस दवा से शिथिलता की ऐसी अवस्था उत्पन्न होती है जो आंत्रिक ज्वर विकार के लगभग होती है। सभी श्लैष्मिक स्राव अधिक हो जाते हैं और रुक जाते हैं। यह खासकर मोटे और सुस्त स्वभाव वाले रोगियों के लिए उपयोगी है जो साँस-यन्त्र सम्बन्धी रोगों से पीड़ित हों। खाँसी जो नजला और जिगर रोग से सम्बन्धित हो। अकस्मिक रक्त-संचार की प्रवृत्ति, खून बराबर उथल-पुथल होता रहे, टपकन इत्यादि। बहुत से लक्षण खाँसी और अधिक **चमकदार बलगम** के साथ दीख पड़ते हैं। इसके कष्ट बढ़ने का समय शरीर के रोगी भाग के अनुसार होता है, जैसे सिर और सीने के लक्षण सुबह को, उदर लक्षण तीसरे पहर और अंग पीड़ा, चर्म और ज्वर लक्षण शाम को बढ़ते हैं **'खौलने'** का संवेदन।

मन—खिन्न भयभीत मानो आंतरिक शोक से। चीखने की इच्छा हो। मगर चीख न सके। शोक का असर।

सिर—खाज और गंज के साथ बाल झड़ना। भरा और दबा मालूम दे, सुबह को कष्ट अधिक हो।

आँख—आँखों के आगे कुहरा, मोतियाबिन्द के आरम्भ में दृष्टि भ्रम। कोषिक मोतियाबिंद।

नाक—तेजाबी, गरम पानी का स्राव, होठों में छीलने वाला, खुलकर निकले। छींक आना। छूने से दुखे, नथुनों में घाव जैसा दर्द। **सूँघने की अक्षमता**। रुकी हुई, भरी हुई जान पड़े; छिनकने की लगातार और बेकार कोशिश। खुजली।

चेहरा—प्रदाहिक पीड़ा। मुँह और होंठ छरछरायें खाल उधड़े।

गला—गलसुओं में थरथराहट तालु-मूल सूजन, कठिनता से निगल सके। घांटी के पीछे दर्दीला स्थान, खाने में कम हो। लेसदार बलगम के साथ भीतरी और बाहर गले की सूजन। कफ इतना कड़ा कि खखारा न जाये। तालु-मूल प्रदाह। गलनली की रुकावट।

आमाशय—लेमोनेड की प्यास, खाना ऊपर आवे, कड़वी लार आए, मिचली। पेट में कुतरन। खाने के बाद ही उदर पीड़ा, आमाशय का कर्कट रोग।

उदर—तिल्ली में चिलक, खासकर सुबह, कठिन साँस के साथ। नाभि की चारों तरफ दर्द। गर्भकाल में उदर लक्षण उपस्थित हों, जिगर में रक्त-संचय की पुरानी शिकायत। उदर के चारों तरफ अधिक चर्बी का जमा होना, अधिक हवा खुलना। पुट्ठों में खींचन।

मलान्त्र—खाज और खूनी बवासीर; दाने निकलने के साथ लरलराहट। कड़ा, भुरभुरा या चमकदार श्लेष्मा से ढँका हुआ। मूलाधार में बींधन। हरा श्लैष्मिक मल और कब्ज बारी-बारी से। मल त्याग के समय और उसके बाद मलान्त्र में जलन और कड़क। प्रदर दबने के बाद आया खूनी बवासीर।

स्त्री—मासिक धर्म बहुत पहले, बहुत खुलकर, गहरा थक्केदार, रात में बढ़े। गर्भकाल में ऐसा दर्द मानो उदर की बायीं तरफ मोच आ गई हो। आमातिसार, मल हरियालीदार और नाभि-पीड़ा मासिक काल में। अण्डे की सफेदी की तरह प्रदर (ऐलम, बोरैक्स, कैल्के० फास०), नाभि दर्द के साथ। पेशाब करने के बाद कत्थई, चिकना प्रदर स्राव।

साँस-यन्त्र—आवाज भारी और स्वरनली में जलन। सूखी कड़ी, खरखरी खाँसी, चित्त लेटने से या दाहिनी तरफ लेटने से बढ़े। सीने में चिलक। तीसरे पहर ढीली खाँसी, साथ में अधिक बलगम और श्लेष्मा की खड़खड़ाहट। सीने में दाह। सीने की छोटी जगहों में जलन। बलगम थोड़ा निकले। अधिक लार बहने के साथ खाँसी।

पीठ—कन्धों के बीच में बर्फ जैसी ठण्डक, गरम चीज ओढ़ने से भी कम न हो, बाद में खुजली। बैठने पर पिठासे की हड्डी में कसाट-दर्द। बैठने पर पीठ में दर्द मानों बाँक में कसी हो।

अंग—अंगुलियों के सिरों में दर्द जैसे वहाँ घाव है। हाथ और पैर की अंगुलियों के सिरों में तेज चिलकन और फटन। एड़ी में घाव जैसा दर्द। घुटने में सिकुड़न। गृध्रसी जो बैठने से बढ़े, लेटने से कम हो। कटे (ठुण्ट) अंगों में स्नायुशूल। पैर का दुर्गन्धित पसीना। मासिक काल में पैरों में दर्द।

चर्म—खाज, अक्सर शाम को। कई जगहों पर छाले, घोर जलन, ठण्डी चीज लगाने से कम हो।

ज्वर—शाम को लेटने पर और जगाने पर बिना प्यास। हथेली और पैर के तलवों में गरमी लगना। ज्वर का दूसरा दर्जा। मन्द ज्वर। अस्वास्थ्यकर जलवायु के कारण आया मन्द ज्वर। सबसे नीचे की शक्ति दें।

घटना-बढ़ना—घटना: खुली हवा में। बढ़ना: सिर और सीने के लक्षण शाम को, उदर लक्षण तीसरे पहर।

सम्बन्ध— शामक: कॉफिया, नक्स, कॉस्ट० । तुलना : कैल्केरिया०, सेनेगा, कॉस्टिक ।

मात्रा—३ से ६ शक्ति ।

एमोनियम फासफोरिकम
(Ammon. Phos.)
(Phosphate of Ammonia)

पुराने गठिया रोग की दवा है। मूत्राम्ल दोष; वायु नलिका समूह में और हाथ की अंगुलियों के जोड़ों और पिछले भाग पर गाँठ बनने में भी उपयोगी है। चेहरे का पक्षाघात, कन्धों के जोड़ में दर्द । सीने के आरपार कसापन। अंगों का भारीपन, लड़खड़ाना; चलने में असावधान। हवा लगने से ठंडक आए।

सिर– नाक और आँखों से अधिक स्राव के साथ छींकें आना; केवल सुबह।

साँस-यन्त्र –गहरी, खरखरी खाँसी और हरा बलगम ।

मूत्र–गुलाबी तलछट ।

मात्रा--३ दशमलव शक्ति ।

एमोनियम पिक्रेटम
(Ammon. Pic.)
(Pictrate of Ammonia)

मलेरिया ज्वर, स्नायुशूल और पित्तज-सिरदर्द के नाम से पुकारे जाने वाले दर्द की औषधि। सिर के पिछले भाग में और गोस्तनाकार प्रवर्द्धन में पीड़ा। कुकर खाँसी।

सिर—सिर के पिछले भाग को दाहिना तरफ का सामयिक स्नायुशूल, जो कान, चक्षुकोटर और जबड़े तक जाता है। उठने पर चक्कर आये। सामयिक पित्तौ, सिर दर्द (सैंग्विनेरिया)

मात्रा—३ विचूर्ण।

एमोनियम वैलेरियेनिकम
(Ammon. Valer.)
(Valerianate of Ammonia)

स्नायविक, मूर्च्छा प्रकृति के लोगों की औषधि जो स्नायविक सिर दर्द और

अनिद्रा से ग्रस्त हों, प्रबल स्नायविक उत्तेजना बनी रहती है।

दिल—हृदय प्रदेश में दर्द। कार्य सम्बन्धी गड़बड़ी, तेज धड़कन।

मात्रा—निचली शक्ति।

एम्पेलोप्सिस
(Ampelopsis)
(Vriginia Creeper)

गुर्दा—वृक्क विकार से आया शोथ, हाइड्रोसील और गण्डमाला रोगी के जीर्ण स्वर-भंग को इस दवा से लाभ हुआ है। हैजे के लक्षण। प्रायः ६ बजे शाम को रोग बढ़ना। पुतली फैली हुई। बायीं पसली में दर्द और कोमलता। केहुनी के जोड़ दर्द करें, पीठ दर्द से सभी अंग पीड़ित। कै करना, ऐंठन के साथ दस्त। उदर में गड़गड़ाहट।

मात्रा—२ से ३ शक्ति।

एमिग्डैलस परसिका
(Amygdalus Persica)
(Peach Tree)

कई तरह के वमन की एक अति अमूल्य औषधि है। गर्भावस्था का वमन। आँखों की उत्तेजना। मूत्ररोध, रक्तमूत्र।

मूत्राशय से रक्तस्राव।

बच्चों के आमाशय की उत्तेजना, किसी प्रकार का भोजन भी न सहन हो। सूँघने और स्वाद की शक्ति मिट जाए। आमाशय और आंत्र उत्तेजना जबकि जबान लम्बी और नोकीली हो; सिर और किनारे लाल हों। लगातार मिचली और कै।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एमिग्डे० एमारा—कड़वा बादाम, (तालुमूल के आरपार दर्द, गला गहरे रंग का, निगलना कठिन, कै, सीना दर्द के साथ खाँसी)।

मात्रा—ताजा काढ़ा या मूल टिंचर।

एमिल नाइट्रोसम
(Amyl Nitrosum)
(Amyl Nitrite)

यह दवा सूँघने से बड़ी तेजी से सभी धमनियों और कौषिक नलिकाओं को फैलाती है, जिससे चेहरा लाल हो जाता है, गरम हो जाता है और सिर में थरथराहट होती है। सतह की धमनियों में खून अधिक जमा होना, दिल की धड़कन और ऐसी ही दूसरी हालतें इस दवा से जल्दी ही ठीक हो जाती हैं, खासकर चेहरे की लाली और ऐसी ही रजोनिवृत्तिकाल की असुविधायें। **हिचकी और जम्हाई।** अक्सर कुछ समय के लिए मिर्गी के फिट को ठीक करती है। सामुद्रिक मिचली।

सिर—आकुलता, मानो कुछ हो न जाये, **ताजी हवा चाहिए।** **सिर और चेहरे में खून बढ़ना,** संवेदन जैसे खून चर्म में से बाहर निकल पड़ेगा। गरमी और लाली के साथ। रजोनिवृत्तिकाल में खून चेहरे में दौड़ना, बाद में पसीना। कानों में रक्त संचयता। थरथराहट।

गला—सिकुड़न, कालर कसा लगे।

सीना—छोटी साँस और दमा ऐसा मालूम पड़े। सीना जैसे भरा हुआ है और दर्द, दम घोटने वाली खाँसी। दिल के ऊपर सीना में व्याकुलता। **दिल की तेज चाल।** दिल के चारों तरफ दर्द और सिकुड़न। जरा भी हरकत से उत्तेजना और फड़फड़ाहट।

स्त्री—प्रसवान्तक वेदना, रक्त प्रवाह, चेहरा लाल। जीवन-सन्धि कालीन सिर दर्द और गरमी की लहरें। उत्सुकता और धड़कन के साथ।

ज्वर—अधिक गरम लहरें, कभी-कभी इसके बाद चर्म का ठंढापन और लेसदार खूब पसीना बहना। सारे शरीर में थरथराहट। इन्फ्लुएञ्जा के बाद असाधारण पसीना बहना।

अंग—लगातार घण्टों तक फैलाये रहना। हाथ शिरायें फूली हुई; अंगुलियों के सिरों में नाड़ी-संवेदन।

सम्बन्ध—तुलना-ग्लोनोइन, लैके० : प्रतिषेधक : कैक्टस, स्ट्रिक्निया, अखरोट।

मात्रा—३ शक्ति।

उपशम के लिए सभी हालतों में जहाँ रक्त नलिकाओं में आक्षेप (सिकुड़न) हो जैसे दिल का शूल, मिर्गी का हमला, अर्धकपाली दर्द, ठण्ढक और पीलापन इत्यादि के साथ दमा, क्लोरोफार्म, दम-घुटने में **एमिल नाइट्रेट के सूँघने से** तुरन्त लाभ होता है। इसके लिए मूल औषधि २-५ बूँद रूमाल पर डालकर सूँघना चाहिए।

एनाकार्डियम
(Anacardium)
(Marking nut)

एनाकार्डियम का रोगी अधिकांशतः स्नायविक दुर्बलता के लोगों में पाया जाता है। ऐसे लोग स्नायविक बदहजमी से पीड़ित रहते हैं और उन्हें भोजन करने से आराम मिलता है, स्मरणशक्ति कमजोर, निरुत्साहित और चिड़चिड़ापन, सूँघने, देखने और सुनने की शक्ति कम होना। आतशक रोग वाले अक्सर ऐसे लक्षणों से पीड़ित रहते हैं। लक्षणों का रुक-रुक कर उठना। विद्यार्थी में परीक्षा का भय। ज्ञान इन्द्रियाँ दुर्बल, काम करने से घृणा, अपने में भरोसा कम होना। कसम खाने और कोसने की प्रबल इच्छा। शरीर के कई भागों में गुल्ली ठूँसी हुई मालूम हो—आँखें, मलाशय, मूत्राशय आदि। फीता भी कसा हुआ मालूम हो। पेट में खालीपन, भोजन करने से कुछ देर के लिए आराम मिले। यह इस दवा की खास पहचान है जो अक्सर आजमायी गयी है। इसके चर्म लक्षण रसटॉक्स की तरह हैं, यह दवा सिरपेंचे के जहर का बहुमूल्य तोड़ है।

मन—विचार स्थिर। भ्रम समझता है कि उसमें दो व्यक्ति या दो इच्छा-शक्तियाँ साथ-साथ काम कर रही हैं। टहलने में घबराहट, मानो उसका पीछा किया जा रहा है। घोर चिन्ता और रोगग्रस्त होने की शंका; बहुत तेज भाषा का प्रयोग करने की प्रवृत्ति; स्मरण शक्ति दुर्बल। मानसिक अनुपस्थिति, जल्दी क्रोधित होना।। डाह करना, बुराई करने पर तैयार। अपने ऊपर और दूसरों में भरोसा की कमी। शुबहा करना (हायोस०)। सूक्ष्मदर्शी, बहुत दूर की आवाज या मरे लोगों की आवाज सुनता है। वृद्धि लोगों की मानसिक क्षीणता। सभी नैतिक बन्धन लोप होना।

सिर—चक्कर। दाब के साथ दर्द, जैसे गुल्ली ठुकी हो, मानसिक परिश्रम से कुछ बढ़े—माथे में, सिर के पिछले भाग में, कनपटियों में चाँद पर। भोजन करते समय कम रहे। चमड़ी पर खाज और छोटी फुन्सियाँ।

आँखें—घेरे के उपरी भाग में गुल्ली ठूँसी जैसा चाप। धुँधलापन। चीजें बहुत दूर दिखाई दें।

कान—कानों में गुल्ली जैसा चाप। कम सुनना।

नाक—अकसर छींकना। सूँघने की शक्ति छिन्न होना। धड़कन के साथ जुकाम, नाक बहना, खासकर वृद्ध में।

चेहरा—आँखों की चारो तरफ नीले घेरे। चेहरा पीला।

मुँह—दर्द भरे छाले; दुर्गन्ध। जबान सूजी लगे, बोलने और हिलाने में

रुकावट। मुँह में अधिक लार। होंठों के चारों तरफ काली मिर्च ऐसी परपराहट।

आमाशय—पाचन शक्ति दुर्बल, भारीपन और तनाव के साथ। **आमाशय में खालीपन का बोध।** डकार, मिचली, कै। **भोजन करना, एनाकार्डियम के अजीर्ण को कम करता है।** खाते या पीते समय गला घुटता-सा लगे। खाना और पीना जल्दी निगले।

उदर—**आँतों में गुल्ली ठूँसी मालूम हो।** गड़गड़ाहट, चुटकी काटे जाने जैसा बोध।

मलान्त्र—आँतें कार्य न करें। **असफल इच्छा। मलान्त्र शक्तिहीन मानो गुल्ली ठोंक कर बंद कर दिया गया हो,** गुदा की पेशियाँ सिकुड़ी हों, ढीला मल भी कठिनाई से निकले। **गुदा में खाज, मलाशय से रस निकले।** मलत्याग काल में रक्त प्रवाह। दर्दीला बवासीर।

पुरुष—कामोत्तेजक खाज, कामेच्छा अधिक, बिना स्वप्न धातुक्षीणता। मलत्याग के समय ग्रन्थि रस-स्खलन।

स्त्री—प्रदर दर्द; और खाज के साथ। मासिक धर्म कम।

साँस यंत्र—सीने में गुल्ली ऐसी दाब, सीने पर दाब, आंतरिक गरमी और चिन्ता के साथ, खुली हवा में भाग जाये। बच्चों को बात करने से; क्रोध करने के बाद; खाने के बाद खाँसी हो फिर कै के साथ सिर के पिछले भाग में दर्द हो।

दिल—धड़कन, साथ में स्मरण शक्ति दुर्बल। वृद्धों का जुकाम। दिल में चिलक। दोहरी चिलकन के साथ हृदय पीड़ा।

पीठ—कंधों में धीमा दाब जैसा बोझ रखा है। गरदन की जड़ में कड़ापन।

अंग—अंगूठे में स्नायुशूल। पक्षाघात जैसी दुर्बलता। घुटने बेदम लगें या पट्टी बँधी मालूम पड़े। पिण्डली में ऐंठन। नितम्ब पेशियों में गुल्ली कसी है ऐसा संवेदन। हाथ की हथेली पर मस्से। अंगुलियाँ सूजी हुई और जल भरे दाने निकलें।

नींद—कई रातों तक अनिद्रा का आक्रमण। व्याकुल स्वप्न।

चर्म—बहुत खुजली वाला अकौता, मानसिक उत्तेजना के साथ जल दानें, सूजन, जुलपित्ती, ओकविष (सिरपेंचे) के जहर की तरह चर्मरोग (जेरोफिल, ग्रिण्डेलिया, क्रोटन)। सादी घमौरी, स्नायविक अकौता हाथों पर मांसांकुर। अगले बाजू पर घाव।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: गरम पानी लगाने से। घटना: खाने से–करवट लेटने पर, मलने से।

सम्बन्ध-शामक: ग्रिण्डेलि, कॉफिया, जुगलैंस, रस, यूकिलैप्टस।

तुलना कीजिए: एनाकार्डियम ओक्सिडेण्टल (केशूनट) (विसर्प रोग, मवाद भरे दाने चेहरे पर छाले) संवेदनहीन कोढ़, मस्से, मांसाकुर, घाव, पैर के तलवों के चर्म का चिटकना। (रस०, साइप्रिपेड, चेलिडोनियम, जेरोफिल, प्लैटिना बाद में अच्छा काम करता है।) सिरियस सरपेण्टाइना (कसम खाना)।

मात्रा—६ से २०० शक्ति।

एनागैलिस
(Anagallis)
(Sacarlet Primpernel)

चर्म पर स्पष्ट प्रभाव और टपकन, सभी जगह बहुत खाज। खपची निकालने में सहायता देता है। जलांतक रोग और शोथ रोग की पुरानी औषधि है। मांस को मुलायम करने की और मस्सों को नष्ट करने की शक्ति रखती है।

सिर—अति प्रफुल्ल। आँखों के ऊपरी भाग में दर्द, साथ में उदर में गड़गड़ाहट और डकार आना, कॉफी पीने से कम हो। सिर दर्द। चेहरे की पेशियों में दर्द।

अंग—संधिवात और गठिया दर्द। कंधों और बाँहों में दर्द। अंगुलियों और अंगूठों के गद्दी में ऐंठन।

मूत्र—मूत्रमार्ग में थोड़ी बहुत उत्तेजना, जो मैथुन की प्रवृत्ति जगाये। मूत्र-स्खलन काल में मूत्र मार्ग में जलन, लिंग के मुँह का चिपकना। मूत्रधार कई और निकलने के पहले दबाना पड़े।

चर्म—खुजलीदार 'सूखे' चोंकर जैसे 'दाने', खासकर हाथों और अंगुलियों पर; हथेली खासकर रोगग्रस्त। छत्तेदार दाने। जोड़ों पर घाव और सूजन।

सम्बन्ध— एनागैलिस में सैपोनिन होता है।

तुलना कीजिए—साइक्लैमेन, प्रिमुला ओबकान।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

एनाथेरम
(Anatherum)
(Cu-cus An East Indian Grass)

एक उच्च कोटि की चर्म औषधि।

कई स्थानों की दर्द भरी सूजन, जो पक जाये। ग्रन्थि प्रदाह।

सिर—दर्द; मस्तिष्क में जैसे नोकीला तीर चुभ रहा है; तीसरे पहर बढ़े। खाल पर दाद, घाव, रसौली। पलकों के किनारे पर मस्से। नाक के सिर पर फुन्सियाँ, गुल्म। जबान पर दरार, किनारे फटे हों। अधिक लार बहना।

मूत्र—गँदला, गाढ़ा श्लेष्मा मिला हो। लगातार इच्छा। मूत्राशय जरा भी मूत्र रोक न सके। अनिश्चित स्राव। मूत्राशय प्रदाह।

कामेन्द्रिय—उपदंश जैसे घाव। जरायु ग्रीवा पर कठिन अर्बुद जैसी सूजन। स्तन सूजे, कड़े; घुण्डी की खाल उधड़े।

चर्म—गन्दा; टेढ़े-मेढ़े नाखून। दुर्गन्धित पैर का पसीना। फोड़े, फुन्सियाँ घाव। विसर्प रोग। तीव्र खुजली, मोटा दाद।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : स्टैफिसेग्रिया, मर्क, थुजा।

मात्रा—३ शक्ति।

एन्हैलोनियम
(Anhalonium)
(Mescal Button)

मेस्कल की प्रबल नशीली मदिरा है जो पलके फुयेर्टे से उतारी जाती है। पलके मैक्सिको में एगेवे अमेरिकाना से बनती है जो उस स्थान में मैग्वे नाम से पुकारी जाती है और मैक्सिको का राष्ट्रीय पेय है। इण्डियन इसको पेयोट कहकर पुकारते हैं। यह दिल को दुर्बल बनाती है और पागल कर देती है। इसका विशेष प्रभाव सुनने वाली स्नायु पर पड़ता है, क्योंकि यह हर एक पियानो के स्वर को धुन का केन्द्र बना देती है जो एक रंग के चक्र से घिरा मालूम होता है और संगीत की मात्रा से थिरकता रहता है।

यह ऐसा नशा उत्पन्न करता है कि अनोखे मानसिक चित्र आते हैं, अति सुन्दर और परिवर्तन और बढ़ी हुई शारीरिक योग्यता। राक्षस और दूसरी भयानक आकृतियाँ भी दिखाई देती हैं। दिल के लिए शक्ति और साँसयंत्र को उत्तेजित करने वाला, मूर्च्छा और अनिद्रा, बौद्धिक धुँधलापन, प्रलाप, अधकपारी, दृष्टि-भ्रम, रंगीन, चमकीले आभास के साथ की दवा। चालन स्नायु यन्त्र का असहयोग। अति पैशिक मन्दता, घुटने की चक्की अति प्रतिक्षेपिक। नीचे के अंगों का लकवा।

मन—समय पहचानने का विचार नष्ट हो जाए। उच्चारण कठिन। असन्तोष और क्रोध। आलसी।

सिर—दृष्टि की गड़बड़ी के साथ सिर दर्द। विचित्र भयानक, चमकीले, चलते-फिरते आभास दीख पड़ना। ताल देने से प्रभावित होना। पुतलियाँ फैली हुईं। चक्कर, मन थका हो, रंग-विरंगी वस्तुएँ देखना, मामूली आवाज की प्रबल गूँज।

मात्रा—मूल अरिष्ट।

सम्बन्ध—एगवे से तुलना कीजिए। ऐन्हैलोनियम का नशा कैनाबिस इण्डिका और ओएनैन्थे की तरह होता है।

एनेमोप्सिस कैलिफोर्निका (**Anemopsis Califo.**)

(Yerba Mansa—Household Herb)

श्लैष्मिक झिल्ली की औषधि है। नासिका झिल्ली के जीर्ण प्रदाह के साथ अधिक ढीलापन और स्राव। नजले की दवाओं की प्रमुख औषधि, जबकि सिर और गला भरा हुआ मालूम हो। कटन, छिलन, मोंच में लाभदायक, मूत्रवर्द्धक और मलेरिया में उपयोगी। अभी सिद्ध नहीं की गई है। लेकिन अधिक श्लैष्मिक स्राव या पनीले स्राव में लाभदायक पाई गई है। नाक और गले का नजला, अतिसार और मूत्रमार्ग की पीड़ा। दिल की बीमारी में भी अच्छी कही जाती है, शान्त करने के लिए जबकि बहुत उत्तेजना हो। अफरा, पाचन-क्रिया बढ़ाती है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : पीपर मेथ०।

मात्रा—मूल अरिष्ट का भीतरी प्रयोग और बाहरी छिड़काव।

ऐंगस्टुरा वेरा (**Angustura Vera**)

(Bark of Galipea Cusparia

वात और पक्षाघात दोष—टहलने में बहुत कठिनाई, सभी जोड़ों का चटकना।

काफी पीने की प्रबल इच्छा : इसकी बड़ी विशेषता है। लम्बी हड्डियों का सड़न। पक्षाघात। ताण्डव रोग। पेशियों और जोड़ों की जकड़न। असाधारण असहिष्णुता।

मुख्य कार्यक्षेत्र : रीढ़ की चालक स्नायु और श्लैष्मिक झिल्ली।

सिर—अति असहिष्णुता। सिर दर्द के साथ चेहरे की गरमी। चेहरे की पेशियों में खींचन। जबड़े खोलते समय कनपटी की पेशियों में दर्द, जबड़ों के हिलाने में दर्द,

चबाने की पेशियों में दर्द; मानो बहुत अधिक चबाया हो। गंडास्थि प्रवर्द्धन में ऐंठन के साथ दर्द।

आमाशय—कड़वा स्वाद। कहवा पीने की प्रबल इच्छा। नाभि से सीने की हड्डी में दर्द जाये। पाकाशय की दुर्बलता से आयी मन्दाग्नि। डकार, खाँसी के साथ (ऐम्ब्रा)

उदर—आन्त्र शूल के साथ अतिसार। ढीले मल के साथ कुन्थन। जीर्ण अतिसार, कमजोरी और दुबलापन के साथ। गुदा में जलन।

पीठ—पीठ में खुजली। ग्रीवा सम्बन्धित अस्थियों में दर्द। गरदन में खींचन। रीढ़, गरदन की जड़ में और त्रिकास्थि में दर्द, जो दाब से बढ़े। पीठ के ऊपर नीचे फड़कन, झटकन; पीछे झुकता है।

अंग—पेशियों और जोड़ों में कड़ापन और तनाव। टहलने पर अङ्गों में दर्द। बाँहें थकी और भारी। लम्बी अस्थियों का सड़ना। अंगुलियों में ठंडापन, घुटनों में दर्द। जोड़ों का चुरचुराना।

चर्म—सड़न, बहुत दर्दीले घाव जो अस्थि पर आक्रमण करें।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : नक्स, रूटा, मर्क०, ब्रूसिया–नक्स वोमिका या ऐंगस्टुरा फाल्सा० की छाल (चेतनता के साथ ताण्डव रोग) आवाज से और तरल पदार्थ से बढ़े। निचले अंग शक्तिहीन, जरा भी छूने से बढ़े, छुए जाने के भय से ही रो दे। टाँगों का दर्द। झटके। घुटनों में ऐंठन के साथ दर्द। पक्षाघात में अङ्गों की अकड़न। पथरी निकलने में दर्द के लिए हितकर।

मात्रा—६ शक्ति।

एनिलिनम (**Anilinum**)

(Coal Tar Product—Amidobenzene)

स्पष्ट चक्कर और सर दर्द, चेहरा बैगनी रङ्ग का। लिंग और अण्डकोष में दर्द, सूजन के साथ। मूत्रमार्ग के अर्बुद। घोर रक्तहीनता और साथ में चर्म का रङ्ग बिगड़ा हो, नीले होंठ, अक्षुधा, आमाशय में गड़बड़ी। चर्म सूजन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : आर्सेनिक; एण्टिपाइरिन।

—:o:—

एन्थेमिस नोबिलिस (**Anthemis Nobilis**)

(Roman Chamomile)

यह दवा मामूली कैमोमिला की तरह है। आमाशयिक गड़बड़ी, ठंडक के साथ। ठंडी हवा और ठंडी वस्तुएँ असह्य।

साँस-क्रिया—नाक बहना, अधिक नेत्र जल स्राव, छींक और नाक से स्वच्छ पानी बहने के साथ। घर के अन्दर रोग बढ़े। गले की सिकुड़न और कच्चापन। खाँसी, गुदगुदी गरम कमरे में बढ़े।

उदर—जिगर प्रदेश में टीस, उदर के भीतर मरोड़। ठंडक जो टाँगों तक हो। गुदा की खुजली, सफेद लपसी जैसा मल।

मूत्र—मूत्राशय फैला हुआ हो। शुक्र-रज्जु में दर्द, जो कि भरा मालूम दे। जैसे नसें सिकुड़ गई हों। घड़ी-घड़ी पेशाब मालूम हो।

चर्म—तलवों में खाज जैसे बेवाई फटी हो। रोयें खड़े हों।

मात्रा—३ शक्ति का प्रयोग कीजिए।

एन्थ्रासिनम (Anthracinum)

(Anthrex Poison)

यह बीज-औषधि पालतू जानवरों की तिल्ली की महामारी में बहुत बड़ी औषधि सिद्ध हुई है। रोगग्रस्त प्रदाह, जहरबाद और कठिन घाव। पीब वाले घाव। फुन्सियाँ और फुन्सी की तरह के चर्म-रोग। मुँहासे में घोर जलन। सौत्रिक-तन्तु का कड़ा पड़ना, फोड़े, गिल्टी और संयोजक तन्तु के सभी प्रदाह। जिनमें पीब केन्द्रित हो।

तन्तु—रक्त प्रदाह, काला गाढ़ा, तारकोल की तरह, तेजी से सड़े, किसी शरीर छिद्र में से। ग्रंथि सूजे, सौत्रिक-तन्तु शोथग्रस्थ और कड़े। गन्दगी के उपद्रव। गलने-सड़ने वाले घाव और असह्य जलन। विसर्प, काले और नीले छाले। शवच्छेदन घाव। कीड़ों-मकोड़ों का डंक मार जाना। दुर्गन्ध सूँघने का बुरा परिणाम। गलित कर्णमूल प्रदाह। फुन्सियों का ताँता। सड़न। दूषित स्राव।

सम्बन्ध—आर्सेनिक समान है और उसके बाद प्रायः यह दवा दी जाती है।

तुलना कीजिए—पाइरो०, लैके०, क्रोटेलस, हिप्पोजोइन, एचिनेशिया।

साइलीसिया इसके पश्चात् अच्छी दवा है। कारबंकल के इलाज में पैगम्बर इसैयाह का नुस्खा राजा हेजेकिया के कारबंकल के लिए दिया गया था, याद रखिए। एक अंजीर का गुद्दा पुल्टिस पर रखकर बाँधिए।

मात्रा—१० शक्ति। टैरण्टुला क्युबेन्सिस

एन्थ्राकोकैली (Anthrako kali)

(Anthracite Coal Dissolved in Boiling Caustic Potash)

चर्म रोग जैसे सूखी खुजली, तीव्र खाज, जीर्ण मोटा दाद चिटकन और घाव में लाभदायक है। गोल स्तनाकार दाने जिनमें रस भरने की प्रवृत्ति हो; खासकर

अण्डकोष पर, हाथों जंघास्थि, कन्धों और पैर के ऊपरी उभरे भाग पर। घोर प्यास। जीर्ण गठियावात। पित्त के हमले, पित्त का वमन करना, उदर फूलना।

मात्रा—निम्नशक्ति विचूर्ण।

एण्टिमोनियम आर्सेनिकोजम (**Antimonium Arsenicosum**)

(Arsenite of Antimony)

वायुकोषों का फैलाव, घोर श्वासावरोध और खाँसी। अधिक श्लैष्मिक स्राव में लाभदायक पाया गया है। खाने और लेटने से कष्ट बढ़ना। नजले वाला फुफ्फुस प्रदाह, जो इन्फ्लुएंजा से मिला-जुला हो। हृद्वेष्ट प्रदाह और हृद्पिण्ड सम्बन्धी दौर्बल्य। फुफ्फुसावरक झिल्ली प्रदाह। प्लूरिसी खासकर बायीं तरफ का, साथ में रस स्राव और हृद्वेष्ट का प्रदाह, जिसमें पानी आए। दुर्बलता का संवेदन। आँखों की सूजन और चेहरे का शोथ।

मात्रा—३ विचूर्ण।

एण्टिमोनियम क्रूडम (**Antim. Crud.**)

(Black Sulphide of Antimony)

होमियोपैथिक प्रयोग के लिए मानसिक लक्षण और पाकाशय क्षेत्र के लक्षण इस औषधि का निर्णय कराते हैं। **अधिक जोश और घबराहट,** साथ में जबान पर **मोटा सफेद मैल,** चिड़चिड़ापन इस औषधि के अनेक लक्षणों की ओर संकेत करते हैं। सभी लक्षण गरमी से और ठण्डे पानी में नहाने से बढ़ते हैं। सूर्य की गरमी सहन न हो; मोटापे की प्रवृत्ति। दर्द का अभाव जहाँ उसका होना सोचा जा सकता है, संधिवात और पाकाशय लक्षण के साथ।

मन—अपने भाग्य पर बहुत चिन्तित। क्रुद्ध, विरोधी काम करे, जो कुछ भी किया जाये सन्तोषजनक न हो। अपने ही ऊपर कुपित, बोलना न चाहे। चिड़चिड़ा, बिना कारण खीज। बच्चा छूआ जाना या देखा जाना पसन्द न करे। जरा भी ध्यान देने से क्रोधित हो। भावुक।

सिर—चाँद में टीस अधिक, चढ़ने से, नहाने से, पेट की गड़बड़ी से, खास कर मिश्री खाने से या तेजाबी शराब पीने से बढ़े। दांतों का दब जाना। माथे में भारीपन, साथ में चक्कर, मिचली, नकसीर। सिर-दर्द और बहुत बाल झड़े।

आँखें—मन्द, धँसी हुई, लाल, खुजली हो, सूजी हुई, पलकें चिपकें। किनारे कच्चे, चिटकें, जीर्ण पलक-सूजन। पपोटों और कनीनिका पर दाने।

नाक—नथुने चिटके हुए और पपड़ीदार। नथनों का अकौता, कच्चापन, चिटकन, भूसी छूटना।

चेहरा—फुन्सियाँ, दाने, चेहरे पर रस भरे दाने। गाल और ठुड्डी पर पीले, पपड़ीदार दाने। भूरा और मांसहीन।

मुँह—मुँह के कोने चिटके हुए। सूखे होंठ। नमकीन लार। अधिक चिकना श्लेष्मा। जबान पर सफेद, मोटा मैल, जैसे चूना पोता हो। मसूढ़े दाँत से अलग हों, आसानी से खून बहे। खोखले दाँतों में दर्द। तालु का कच्चापन बहुत श्लेष्मा के साथ। घाव। पीठी का स्वाद। तृषाहीनता। मुँह के आस-पास थोड़े दिन का पुराना अकौता।

गला—पिछले भाग से अधिक गाढ़ा पीला श्लेष्मा खुली हवा में खखारना। स्वरनली प्रदाह। अधिक प्रयोग से आवाज भारी।

पेट—अक्षुधा—तेजाबी चीजें और अचार खाने की इच्छा। शाम को और रात में प्यास। जो कुछ खाया हो उसी की डकार आये और गला जलना, मिचली, कै। दूध पिलाने पर बच्चा फटे थक्कों की कै करे, फिर दूध न पिये और रुष्ट हो। पाकाशयिक और आंत्रिक रोग, रोटी, खीर, तेजाबी भोजन, खट्टी शराब, ठंढे पानी से नहाने से, अधिक गरम होने से, गरमी के दिनों में कष्ट बढ़े। लगातार डकार आना। पेट और आँत की तकलीफ, गठिया रोग से अदल-बदल कर हो। मीठी लार। खाने के बाद पेट फूलना।

मल—गुदा के रोग तथा खाज। (सल्फो-कैल्के०; ऐल्यूमि०)। वृद्ध में खासकर कब्ज और दस्त बारी-बारी से। अतिसार जो तेजाबी भोजन करने, खट्टी शराब, स्नान करने, अधिक गरम होने के बाद हो और उसमें आम आये। श्लैष्मिक बवासीर, श्लेष्मा बराबर रसा करे। सख्त गाँठदार पाखाना जिसके साथ पानी जैसा पतला मल भी आए। सरलान्त्र-प्रदाह। केवल श्लेष्मा ही गिरे।

मूत्र—अक्सर बार-बार हो; जलन और पीठ दर्द के साथ। गँदला और दुर्गन्धित।

पुरुष—जननेंद्रिय के आस-पास और अण्डकोष पर दाने। नपुन्सकता। लिंग और अण्डकोष की क्षीणता।

स्त्री—उत्तेजित, जननेन्द्रिय-भाग खुजलाये। मासिक धर्म के पहले दाँत दर्द। मासिक धर्म समय से बहुत पहले और अधिक मात्रा में। ठंढे पानी से नहाने पर मासिक धर्म दब जाए। साथ में पेड़ू में और डिम्बकोष क्षेत्र में कोमलता। प्रदर पनीला, तीखा, गाँठदार।

श्वास-यन्त्र—खाँसी जो गरम कमरे में आने पर बढ़े इसके साथ सीने में जलन।

सीने में खाज हो और दम घुटे। अधिक गर्मी के कारण बोलना बन्द। आवाज कड़ी और असमान।

पीठ—गरदन एवं पीठ में खुजली तथा दर्द।

अंग—पेशियों में फड़कन। बाँहों में झटके। अंगुलियों के जोड़ों में दर्द। नाखून भुरभुरे, बेढंगे बढ़ें। हाथों और तलवों में काँटेदार मस्से। लिखते समय हाथों में दुर्बलता और कम्प, बाद में दुर्गन्धित वायु खुले। पैर बहुत कोमल काँटेदार चकत्तों से भरे हों। प्रदाहित घट्टा एड़ी में दर्द।

चर्म—अकौता आमाशयिक विकार के साथ। दाने, फुन्सियाँ, रस भरे या छाले जैसे दाने, ठंढे पानी से नहाने के बाद। मोटी, कड़ी, शहद के रंग की पपड़ी। शीतपित्त, छोटी माता ऐसी फरन। बिस्तर की गरमी से खुजली हो। चर्म सूखा। मस्से (थुजा; सैबाइना; कॉस्टि०)। सूखी सड़न। पपड़ीदार, पीबभरे दाने, जलन और खुजली के साथ। रात में कष्ट अधिक हो।

नींद—वृद्ध लोगों में लगातार ऊँघाई।

ज्वर—गरम कमरे में भी सर्दी लगे। सविरामिक अरुचि, मिचली, कै, डकार, मैलवाली जबान, दस्त के साथ। गरम पसीना।

घटना-बढ़ना—बढ़े : शाम को, गरमी से, तेजाबी वस्तु के प्रयोग से, पानी से और नहाने से। गीली पुल्टिस से। घटे : खुली हवा में। आराम करने से। नमदार गरमी से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये—एन्टिमोनियम क्लोराइडम। बटर आफ एण्टिमनी (कैन्सर की एक दवा)। श्लैष्मिक झिल्ली का नष्ट होना। छिलना। चर्म गन्दा और चुचुका हुआ। घोर शिथिलता। मात्रा-विचूर्ण तीसरी शक्ति)

एण्टिमोन० आयोडेट०—गर्भाशय का फैल जाना, तर दमा, फुफ्फुस और वायु-नलिका समूह प्रदाह, शक्तिहीनता और क्षुधाहीनता, चर्म का पीलापन, पसीनादार, मन्द, ऊँघता हुआ। सीने का मन्द और जीर्ण नजला, जो कि सिर से नीचे की तरफ वायु नलिका समूह तक आकर बढ़े। कड़ी कुकुर खाँसी के रूप में बदल कर जमा हो जाये जिसमें साँय-साँय की आवाज स्पष्ट हो, बलगम ऊपर न उठा सके, खासकर वृद्ध और दुर्बल रोगियों (बैकमीस्टर) में। फुफ्फुस प्रदाह में धीरे और देर में पके।

तुलना कीजिये—करमेस मिनरल—स्टिबियाट सल्फ, रूब, (वायु नलिका समूह प्रदाह) पल्स, इपिकाक, सल्फ, भी।

पूरक—सल्फ।

क्रियानाशक—हीपर।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

एण्टिमोनियस सल्फ्युरेटम औरेटम (Antim. Suph. Aur.)

(Golden Sulphuret of Antimony)

कई तरह के नाम और वायुनलिका के जीर्ण प्रदाह की एक अनोखी दवा। मुंहासे। आंशिक या पूर्ण अन्धापन।

नाक और गला—नहाने से नकसीर आये। नाक और गले से अधिक स्राव। खुरखुरापन और खुर्चन जैसा लगे, सूँघने की शक्तिहीनता। तीखा स्वाद।

श्वास यन्त्र—स्वरनली में गुदगुदी। वायुनलिका में भरापन और अधिक श्लेष्मा, साँस-क्रिया कष्टदायक, वायुनली में दाब, सिकुड़न के साथ। वायुनलिका और स्वरनली में चिमड़ा श्लेष्मा। सूखी, कड़ी खाँसी। बाँयें फुफ्फुस के ऊपरी खण्ड की सिकुड़न। जाड़े की खाँसी। रोगी सारे शरीर से पीड़ित। फुफ्फुस प्रदाह जबकि कफ कड़ा हो और पतला होकर बहना शुरू न हुआ हो।

चर्म—मुँहासे (रस भरे), हाथ और पैर पर खुजली।

मात्रा—२ या ३ विचूर्ण।

एण्टिमोनियम टारटेरिकम (Antim. Tar.)

(Tartar Emetic, Tartrate of Antimony and Potash)

बहुत-से लक्षण एण्टिमोनियम क्रूडम के समान हैं, लेकिन बहुत-से लक्षण इसके खास हैं। चिकित्सा में इसका प्रयोग श्वास-रोग में होता है जबकि बलगम निकलने के साथ श्लेष्मा की घरघराहट एक सांकेतिक लक्षण हो। बहुत ऊंघाई, कमजोरी और पसीना, इस दवा की विशेषता है और यह लक्षण-समूह इस दवा के निदान में कम या अधिक पाया जाना आवश्यक है। शराब पीने वालों में और गठिया रोगी के आमाशय विकार। हैजा मॉरबस। नाड़ियों में ठण्डक का संवेदन। (ऐसा वर्म जो खीस्टोजमा नामी) जीवाणुओं के कारण आया हो (Bitharziasis)। एंटिमोनियम टार्ट कठिन मूत्रस्राव, पेशाब रुकना, पेशाब में खून, पेशाब में एल्बुमिन आना, मूत्रमार्ग प्रदाह, मलाशय में जलन, आमाशय विकार आदि रोगों में समलक्षणी है। एंटिमटार्ट शरीर की रक्षा करने वाले तत्वों को आक्सीजन पहुँचाकर अप्रत्यक्ष रूप से रक्षक जीवाणुओं को सबल बनाता है।

बिल्हारजियासिस-खीस्टोजमा नामक जीवाणुओं की संक्रमकता को दूर करने के लिए दिये गए इन्जेक्शनों के कुप्रभाव को भी यह दूर करता है। पेशियों में ठंडक, सिकुड़न और दर्द।

सारे शरीर में कम्प, घोर शिथिलता और मूर्च्छा। कटिवात। कपकपी, सिकुड़न और पैशिक पीड़ा। लिंगाग्र भाग पर मस्से।

मन और सिर—चक्कर और ऊँघाई बारी-बारी से। घोर निराशा। अकेले रहने में भय। बड़बड़ाये और तन्द्रा, चक्कर आये और मंद बुद्धि। माथे पर चारों तरफ फीता कसा जैसा मालूम दे। पीला और सिकुड़ा चेहरा। सिर दर्द जैसे फीते से कसा हो (नाइट्रि० एसि०)

ज़बान—लाल किनारों के साथ मोटी, सफेद लेई जैसी पुती हो। लाल और सूखी, खासकर बीच में। भूरी।

चेहरा—ठंढा, नीला, पीला, ठंढे पसीने से तर। ठुड्डी और निचले जबड़े लगातार हिलें।

आमाशय—तरल पदार्थ कष्ट से निगला जाये। सिवाय दाहिनी करवट लेटने के हर दशा में कै हो। मिचली, ओकाई और कै; खासकर खाना खाने के बाद। मृत्यु जैसी मूर्च्छा और शिथिलता के साथ। ठंडे पानी की प्यास, पानी थोड़ा और घड़ी-घड़ी पीये। सेब, फल और तीखी चीज खाने की इच्छा। मिचली भय पैदा करती है। निम्न प्रदेश में दाब के साथ चीख; जम्हाई, आँखों से पानी आए और कै होना।

उदर—आन्त्रिपक शूल, अधिक वायु-स्खलन। उदर में दाब, खासकर आगे झुकने पर। कठिन हैजा। विस्फोटक रोग का अतिसार।

मूत्र—पेशाब करते समय और बाद में मूत्र मार्ग में जलन। अन्तिम बूँद खूनी और मूत्राशय में दर्द। पेशाब बहुत बार लगना। मूत्राशय और मूत्र मार्ग का नजला। पेशाब की नली का सिकुड़ाव। अंडकोष की सूजन।

श्वास-यन्त्र—आवाज फटी हुई। श्लेष्मा बहुत खड़खड़ाये मगर बहुत कम निकले। सीने में मखमली संवेदन। सीने में जलन जो गले तक उठे। तेज, छोटी, कष्टदायक साँस; जान पड़े कि साँस रुक जायेगी, उठ बैठना पड़े। वृद्ध लोगों की वायुस्फीति। खाँसना और मुँह बाना साथ-साथ। वायु नलिकायें श्लेष्मा से लदी हों। खाने से खाँसी उठे, सीने और स्वरनली में दर्द के साथ। फुफ्फुस का शोथ और लकवा गिरने की सम्भावना। अधिक धड़कन, साथ में कष्टदायक गरम संवेदन। नाड़ी तेज, कमजोर काँपती हुई। खाँसी के साथ चक्कर। साँस कष्ट, डकार से कम हो। खाँसी और साँस कष्ट दाहिनी करवट लेटने से कम हो—(बेडियागा का उलटा)।

पीठ—त्रिकास्थि और कमर प्रदेश में तेज दर्द जो जरा भी हिलने की कोशिश से बढ़े और ठण्ढा, चिपचिपा पसीना आए, डकार आये। रीढ़ की आखिरी निचली हड्डी पर भारी बोझ जैसा मालूम हो जो बराबर नीचे को खींचता रहे। पेशियों का फड़कना, अंगों में कम्पन।

चर्म—जल भरे दाने निकलना, जो नीले निशान डालें। चेचक। मस्से।

ज्वर—ठंढापन, कम्पन, सर्दी। घोर गरमी। अधिक पसीना आये। ठंडा, चिपचिपा पसीना, बहुत मूर्च्छा के साथ। सविराम ज्वर बहुत सुस्ती के साथ।

नींद—बहुत ऊँघना। नींद आने पर बिजली ऐसे झटके। सभी रोगों के साथ न रोक सकने वाली नींद।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम को, रात में लेटने पर, गरमी से, तर, ठंढे मौसमी, सभी खट्टी चीजों से और दूध से। घटना : सीधा बैठने से, डकार आने और बलगम निकलने से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : पल्स; सीपिया।

तुलना कीजिए—कैली सल्फ, इपिकाक।

मात्रा—२ से ६ विचूर्ण। निचली शक्ति से कभी-कभी रोग बढ़ता है।

ऐन्टिपाइरिन (Antipyrine)

(Phenazone—A Coal-tar Derivative)

एण्टिपाइरिन उन दवाओं में से एक है जो खून में सफेद कण बढ़ाती है। अर्गोटिन, सैलसिलेट्स और ट्यूबरकुलीन तुल्य है। खासकर खून की नलियों के तनाव के केन्द्र पर काम करती है, चर्म की पतली खून की नलियों को फैलाती है। इसमें चर्म पर घिरे हुए खून जमा हुए, धब्बे और सूजन पैदा हो जाते हैं। अधिक मात्रा में खिलाने से बहुत पसीना बहना, चक्कर, चर्म का नीलापन और ऊँघाई, पेशाब में एल्बुमेन और खून आता है। कई तरह के लाल धब्बे।

मन—पागल हो जाने का भय, स्नायविक चिन्ता; देखने और सुनने का भ्रम।

सिर—थरथराहट के साथ सिर दर्द, सिकुड़न-संवेदन। गरमी की लपटें। सिर दर्द के साथ कानों के नीचे तक दर्द।

आँखें—पपोटे फूले हुए। सफेद पर्दा लाल और फूला हुआ, आँसू आये, लाल धब्बे (एपिस)।

कान—दर्द और भिनभिनाहट। घंटा बजने की आवाज सुनाई पड़े।

चेहरा—शोथ और फूलना। लाल और सूजा हुआ।

मुँह—होठों की सूजन। मुँह और मसूढ़ों की जलन। जबान और होठों पर घाव, फफोले और गोल फुड़िया। गाल में छोटी गाँठ। जबान सूखी हुई। खून मिली लार। निचले जबड़े में दर्द।

गला—निगलने पर दर्द। दुर्गन्धित बलगम। घाव, सफेद नकली झिल्ली। जलन का संवेदन।

पेट—मिचली और कै, जलन और दर्द।

मूत्र—थोड़ा; लिंग चर्म काला।

स्त्री—योनि में जलन और खुजली। मासिक स्राव दबा हुआ। प्रदर स्राव पानी जैसा।

श्वास-यन्त्र—बहने वाला जुकाम। नाक की श्लैष्मिक झिल्ली सूजी हुई। नथने के अगले भाग में मन्द टीस। स्वरनाश। कठिन साँस। साँस कष्ट से ले जो पुराने हृत्पेशी प्रदाह से फेफड़ों में रक्ताधिक्य का उपद्रव हो।

दिल—मूर्च्छा और धड़कन रुकने ऐसा संवेदन। सारे शरीर में थरथराहट। तेज, कमजोर, असमान नाड़ी।

स्नायु—मिर्गी। सिकुड़न, कम्पन और ऐंठन, रेंगन और ठिठुरन। सर्वाङ्ग शिथिलता।

चर्म—जगह-जगह पर लाल चकत्ते, अकौता लाल। तीव्र खुजली। जुलपित्ती तेजी से उभरे और गायब हो जाये, आन्तरिक ठंढक के साथ। स्नायुशूल और शोथ। लिंग के चर्म पर काले धब्बे, कभी-कभी शोथ के साथ।

मात्रा—२ दशमलवीय शक्ति।

एपिस मेलिफिका (Apis Mellifica)

(The Honey Bee)

सौत्रिक—गोल तन्तुओं पर काम करती है जिससे चर्म और श्लैष्मिक झिल्ली का शोथ हो जाता है। शहद की मक्खी के काटने का विचित्र असर इस दवा के रोग पर प्रयोग करने का अचूक संकेत देता है। शरीर में जगह-जगह सूजन या फूलन, शोथ, लाल गुलाबी रंग, डङ्क मारने जैसा दर्द, झुरझुराहट, गरमी और छूना सहन न होना और तीसरे पहर रोग का बढ़ना इसके आम मार्गदर्शक लक्षणों में कुछ हैं। सर्वाङ्ग शोथ, गुर्दों की तीव्र सूजन और दूसरे सान्द्र-विधान तन्तु का शोथ एपिस के कुछ खास लक्षण हैं। खासतौर से बाहरी भागों पर चर्म पर, अन्दरूनी अङ्गों के ऊपरी आवरणों पर, जल-झिल्लियों पर काम करती है। यह दवा जल भरी सूजन पैदा करती है, मस्तिष्क, दिल, फुफ्फुस की झिल्ली इत्यादि में यह दवा पानी (मवाद) लाती है। छुआ जाना असह्य और आम दुखन वर्णनीय लक्षण हैं। सिकुड़न का संवेदन। शरीर के भीतरी अङ्गों में सख्ती आती है और कभी-कभी यह मालूम पड़ता है कि वहाँ से कुछ तोड़ा जा रहा है। अधिक शिथिलता।

मन—उदासीनता, लापरवाही, अचेतनता। बेढब; चीजें हाथ से जल्द गिरा देता है। मूर्च्छा, साथ में तेज चिल्लाना और चिहूँकना। मूर्च्छा और उन्माद का दौरा बारी-

बारी से आये। मरने का संवेदन। निस्तेज, साफ-साफ सोच न सके। डाह। अशान्त, खुश करना कठिन। एकाएक तेज, तीखी चीख मारे। कराहे, ईर्ष्यालु, भयभीत, क्रोधी, चिढ़े, शोकग्रस्त। पढ़ने या अध्ययन करने में चित्त न जमे।

सिर—सारा मस्तिष्क बहुत थका मालूम पड़े। चक्कर छींक के साथ लेटने या आँख बन्द करने से बढ़े। गरमी, थरथराहट, तनाव के साथ दर्द जो दाब से कम हो; हिलने से बढ़े। अचानक छुरी लगने जैसा दर्द, सिर के पिछले भाग की संज्ञाहीनता; भारीपन, जैसे धक्के लगते हों जो गरदन तक बढ़े, (दाब से कम) साथ में कामोत्तेजना। सिर तकिये में गड़ा देता है और चीखता है।

आँखें—पलक सूजे, लाल शोथमय, बाहर को मुड़े हों, प्रदाहित जलें और डङ्क लगने जैसा दर्द। पुतली चमकीली लाल, फूली। गरम पानी बहे। रोशनी असह्य। अचानक कोंचन दर्द; पानी भर आए; शोथ; तेज दर्द। आँखों का पीवदार प्रदाह। कनीनिका प्रदाह के साथ में चक्षु-पटल का बाहर निकलना। अंजनहारी; उनके बार-बार होने को रोकती है।

कान—बाहरी कान, लाल, सूजा, दर्दीला, डंक लगने जैसा दर्द।

नाक—सिर का ठढापन। लाल, सूजी, फूली, तेज दर्द।

चेहरा—फूला, लाल, कोंचन दर्द के साथ। मोम जैसा पीला, शोथमयी। विसर्प रोग साथ में जलनदार शोथ दाहिने से बायें तरफ बढ़े।

मुँह—जीभ गहरी लाल सूजी हुई, दर्दीली, कच्ची; छालेदार। मुँह और गले में जलन जैसे गरम पानी से जला हो। जीभ जली मालूम हो; गरम, लाल, काँपती। मसूढ़े फूले। होंठ फूले खासकर ऊपर का। मुँह और गले की झिल्ली चमकीली मानो वार्निश पोती हो। लाल-चमकीला, फूला विसर्प जैसा जीभ का कैन्सर।

गला—सिकुड़ा, डंक लगने जैसा दर्द। घाँटी फूली, थैली जैसी। गला भीतर और बाहर से फूला हुआ; तालुमूल फूले, थुलथुले अंगार जैसे लाल। तालुमूल पर घाव। चर्म झिल्ली के चारों ओर अंगारे जैसी लाली। गले में मछली के काँटे जैसा संवेदना।

आमाशय—दर्द मालूम हो। तृषाहीनता। भोजन की कै। दूध पीने की प्रबल इच्छा (रस०)

उदर—दबाव पड़ने और छींकते समय दुखन हो जैसे कुचला गया था। अति कोमलता। जलोदर। आँतों की झिल्ली की सूजन। दाहिनी जाँघ में सूजन।

मल—प्रत्येक बार हिलने पर अनिच्छित मल निकले। गुदा छरछराये जैसा कच्ची हो; गुदा खुली मालूम पड़े। खूनी, बिना दर्द। खूनी बवासीर, चुभन दर्द गुदा के साथ। प्रसव के बाद। पनीला दस्त पीला, बाल हैजा की तरह। बिना मल

त्यागने के मूत्र न निकले। गहरा, दुर्गन्धित, खाने से बढ़े। कब्ज मालूम पड़े कि काँखने में कोई चीज टूट जायेगी।

मूत्र—पेशाब करते समय जलन और दर्द। दबा हुआ, कास्ट (Cast) से भरपूर। बार-बार हो, अनिच्छित, दर्द और रुक-रुक कर बूँद-बूँद हो; थोड़ा गहरे रङ्ग का अपने आप, अनजाने में हो जाये। आखिरी बूँद जलन और चुभन के साथ।

स्त्री—योनि के किनारों में शोथ, ठंडे पानी से आराम। पीड़ायुक्त और दंशवेध जैसा दर्द। पीण्डिका (डिम्बाशय) प्रदाह, दाहिने डिम्बाशय में अधिक। मासिक-स्राव दबा हुआ, मस्तिष्क और सिर के लक्षणों के साथ, खासकर युवतियों में। पीड़ा-युक्त मासिक स्राव, तीव्र डिम्बाशय दर्द के साथ। गर्भाशय से रक्तप्रवाह, इसके साथ उदर में भारीपन, मूर्च्छा, डंक लगने जैसा दर्द। कसाव का संवेदन। मानो मासिक-स्राव शुरू होगा। डिम्बाशय में अर्बुद, गर्भाशय प्रदाह जैसे दर्द के साथ। उदर और गर्भाशय क्षेत्र में अति कोमलपन।

श्वास-यन्त्र—स्वरभंग। साँस की चाल तेज और कठिनता से आए। स्वरनली का शोथ. जान पड़े कि अब साँस न आवेगी। दम घुटे, छोटी खाँसी, सीने के ऊपरी भाग में दाब। वक्षोदक।

अंग—शोथयुक्त। घुटनों के अस्थि आवरणों में पानी आए। गल्का के शुरू में। घुटना सूजा हुआ, चमकदार, कोमल, पीड़ायुक्त, चुभन, दर्द के साथ। पैर सूजे हुए और कड़े। बहुत बड़े जान पड़ें। पीठ और अङ्गों में वातपीड़ा। थकान, कुचले जाने की संवेदना। हाथों और अंगुलियों के सिरों का सुन्नपन, अति खुजली के साथ। शोथ की सूजन।

चर्म—बींधन के बाद सूजन, पीड़ा, कोमल। विसर्प कोमलता और सूजन के साथ, गुलाबी रङ्ग। कारबंकल जलन और बींधन दर्द के साथ। (आर्स०; एन्थ्रासि०)। एकाएक सारा शरीर फूल जाना।

नींद—घोर ऊँघाई। फिक्र और परिश्रम से भरे स्वप्न। चीखना और चिहुँकना, एकाएक नींद में।

ज्वर—तीसरे पहर कपकपी, प्यास के साथ, हिलने और गरमी से बढ़े। बाहरी गरमी, गला दबने जैसे संवेदन के साथ। पसीना, नींद आने जैसा लगे। अक्सर पसीना हो और जल्दी सूख जाय, बुखार के हमले के बाद सोना। पसीना होने के बाद जुलपित्ती, कम्प।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : गरमी किसी भी रूप में; छूने से; दाब से; तीसरे पहर के कुछ बाद, बन्द और गरम कमरे में, दाहिनी तरफ। घटना : खुली हवा में; ओढ़ना हटाने पर; ठंढे स्नान।

सम्बन्ध—पूरक : नैट्रम म्यूर । 'जीर्ण' एपिस; बैराइटा कार्ब भी अगर अलका व रक्तवाहिनियाँ भी रोगग्रस्त हों । विरोधी । रस० ।

तुलना कीजिए : एपियम विरस (शरीर में संचित हुए मलों से आत्म: उपद्रवः पीब आना); जिंकम, कैन्थरिस, वेस्पा, लैकेसिस ।

मात्रा—अरिष्ट से ३० शक्ति तक । शोथ विकार में निचली शक्ति । कभी-कभी असर धीमा होता है इसलिए कई दिन असर के लिए प्रतीक्षा चाहिए और तब पेशाब बढ़ जाता है । एपियम विरस—६ विचूर्ण ।

एपियम ग्रेविओलेन्स (Apium Grave.)

(कॉमन सेलेरी)

इसमें तीव्र निद्राकारक तत्व होता है । पेशाब की कठिन रुकावट के साथ टपक, सिर दर्द और गल-जलन; गला, चेहरा और हाथों का सूजन । गरदन और त्रिकास्थि की पेशियों में वात दर्द । बढ़ने वाले दर्द । सेब खाने की इच्छा । कष्टरज: तेज, दर्द के साथ, जो टाँगें मोड़ने से कम हो ।

सिर—उदास, शक्तिशाली अस्थिरता का भाव, सोने के कारण नींद न आवे । सिर दर्द, खाने से कम । आँखों के ढेले धँसे मालूम हों । आँखों में खुजली । बाँयीं आँख के भीतरी किनारे में खुजली और चुभन ।

उदर—दर्दीला; तेज गड़न दर्द जैसे मल निकलने वाला है, दस्त, बायें कोख-प्रदेश में तेज दर्द जो दाहिनी तरफ जाए । दर्द के साथ-साथ मिचली भी बढ़े ।

स्त्री—दोनों डिम्बाशयों में तेज दर्द, जो बाँईं तरफ झुकने से, बाँईं तरफ लेटने से, टाँग मोड़कर लेटने से कम हो । स्तन घुण्डी कोमल ।

श्वास-यन्त्र—गुदगुदी के साथ सूखी खाँसी । सीने के ऊपरी भाग पर घोर सिकुड़न, साथ में लेटने पर पीठ में से खींचन मालूम हो । गला सूजा हुआ, साँस में कष्ट ।

चर्म—खाज वाले चकत्ते, जलन, रेंगने जैसा संवेदन । स्रवित होते हुए घाव में से अधिक स्राव । जुलपित्ती, कम्प के साथ ।

नींद—बिना ताजगी के नींद लगना । १-३ बजे सुबह जाग जाये । खाने से सोने में कोई मदद न मिले । नींद न आने से थकावट न हो ।

मात्रा—१ से ३० शक्ति ।

एपोसाइनम ऐण्ड्रोसिमिफोलियम (Apocynum Andros.)

डॉगबेन

इस औषधि के वास्तविक लक्षण इसके बहुत ऊँचे दरजे की दवा होने की ओर संकेत करते हैं। इसमें दर्द घूमते-फिरते रहते हैं, बहुत तनाव और खींचन के साथ। सभी चीजों का स्वाद और उनकी महक शहद जैसी लगे। कृमि। कम्प और शिथिलता। सूजन जैसी संवेदना।

अंग—सभी जोड़ों में दर्द। पैर के तलवों और अंगुलियों में दर्द। हाथ-पैर की सूजन। अधिक पसीना, साथ में तलवों में बहुत गरमी। पैर की अंगुलियों में टपक के साथ दर्द। तलवों में ऐंठन। तलवों की तेज जलन। (सल्फर)।

मात्रा—अरिष्ट और पहली शक्ति।

एपोसाइनम कैनाबिनम (Apocynum Can.)

(इण्डियन हेम्प)

श्लैष्मिक और रक्त-रस झिल्ली के स्राव को बढ़ाती है और सौत्रिक तन्तु पर काम करती है, जिसकी वजह से शोथ और जल संचय हो जाता है और चर्म पर पसीजन होने लगता है। तीव्र मस्तक शोथ। नाड़ी की चाल का कम होना इसका प्रधान लक्षण है। जल संचय रोग, पेट में पानी जमा होना, पूर्ण शरीर का शोथ और वक्षोदक रोग तथा मूत्र रोग खासकर उसका दबना और बूँद-बूँद टपकना। गुर्दों की बीमारी में पेशाब से ऐल्बुमेन गिरने के रोग में। पाचन रोग, साथ में मिचली, कै, ऊँघाई, कष्टदायक साँस, इन सब दोषों में यह दवा अक्सर उपयोगी होगी जब कि शोथ रोग में बहुत प्यास और पाकाशयिक उत्तेजना की प्रधानता हो। दिल की चाल अक्रमिक। बाएँ हृद्कोष और त्रिदन्त के ठीक तरह न बन्द होने के कारण खून का लौट जाना। मद्यपान का बुरा परिणाम। मूत्र संकोचन, पेशियों का ढीलापन।

मन—अचम्भित, मन गिरा हुआ।

नाक—बहुत देर तक लगातार छींकें आती रहें (सैम्बुकस)। पुराना नजला जिसमें सिर में तीव्र भारीपन और नाक बन्द रहे, क्षीण स्मरण-शक्ति। मन्द सिर दर्द। जुकाम आसानी से हो, नथुने आसानी से सूजें और रुक जायें।

पेट—मिचली के साथ ऊँघाई। टहलने पर प्यास लगे। बहुत वमन होना। खाना या पानी तुरन्त निकल जाये, धीमा, भारी, रोगग्रस्त भाव। सीने और उदर के ऊपर सामने वाले भाग में दाब, साँस रुकने का भय (लोबे० इन्फ)। पेट में भारी कमजोरी का संवेदन। उदर फूला हुआ। जलोदर।

मल—पनीला, हवा मिला, गुदा में कच्चेपन के साथ खाने से बढ़े। मालूम हो जैसे सिकुड़ने वाली पेशी खुली है और मल बाहर हो रहा है।

मूत्र—मूत्राशय फूला हुआ। गँदला, गरम मूत्र गाढ़े श्लेष्मा और जलन के साथ पेशाब करने के बाद दर्द, बाहर निकालने की शक्ति कम हो। बूँद बूँद चूना। धार रुकना या बहुत कम आये। गुर्दों के विकार से आया शोथ।

स्त्री—अधिक मासिक स्राव, पेट फूलने के साथ। असाधारण रक्तस्राव उसके साथ मिचली और मूर्च्छा, जीवन संधिकाल में रक्तस्राव। बड़े थक्कों में खून निकले।

श्वास-यंत्र—छोटी सूखी खाँसी। सांस छोटा, असन्तोषजनक। आहें भरना। पेट के ऊपरी भाग और सीने पर दबाव।

दिल—त्रिकपाट से खून उल्टा बहना, दिल की गति तेज, निर्बल एवं अक्रमिक। धमनी का चाप कम, गरदन की रक्त-नली का फड़कना। शरीर नाली और आमशोथ।

नींद—बहुत बेचैनी और थोड़ी नींद।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ठंढे मौसम में, ठंढी चीज पीने से, ओढ़ना हटाने पर।

सम्बन्ध—साइमैरिन, एपोसाइन० का उत्तेजक तत्व है, (नाड़ी गति को कम करता है और रक्तचाप को बढ़ाता है) स्ट्रोफैन्थस (घोर हृदय मंदता, तीव्र आमाशय विकार के साथ); एरैलिया हिस्पाइडा—वाइल्ड एल्डर (एक बहुमूल्य पेशाब बढ़ाने वाली दवा, खोखले भागों के शोथ में लाभदायक है, चाहे वह जिगर या गुर्दों की हों, कब्जियत के साथ। मूत्ररोग खासकर शोथ के साथ (स्कडर की राय है कि ५ से ३० बूँद मीठी टारटार की क्रीम में देना चाहिए; घोलकर।) एपिस, आर्सेनिक, डिजिटै०, लिवो०।

मात्रा—अरिष्ट (१० बूँद दिन में तीन बार) और तीव्र मदपान रोग में ४ औंस पानी में काढ़े का १ ड्राम।

एमोमॉर्फिया (Apomorphia)

(एल्कैलोयड फ्राम डीकम्पोजिशन ऑफ मॉरफिन बाइ हाइड्रोक्लोरिक एसिड)

इस पदार्थ की मुख्य शक्ति इसके तीव्र और तुरन्त कै उत्पन्न करने में है जो इसके होमियोपैथिक प्रयोग में प्रबल सांकेतिक लक्षण हो जाता है। वमन से पूर्व मिचली, सुस्ती, अधिक पसीना, लार, श्लेष्मा और आँसू निकलता है। वमन के साथ फुफ्फुस प्रदाह। मदपान के रोग के साथ लगातार मिचली, कब्ज, अनिद्रा।

सिर और पेट—चक्कर। पुतलियाँ फैली हुईं। मिचली और वमन। वमन करने की प्रबल उत्तेजना। सारे शरीर पर और खासकर सिर में गरमी लगना। खाली

मिचली और सिर दर्द, कलेजा जलना, कंधों के डैनों के बीच में दर्द। गर्भावस्था की कै। सामुद्रिक यात्रा के रोग।

असम चिकित्सा प्रयोग—एक ग्रेन का सोलहवाँ भाग हाइपोडर्मिक इन्जेक्शन ५ से १५ मिनट के अन्दर किसी प्रत्यक्ष के उपद्रव के बिना, प्रौढ़ व्यक्ति में वमन लाता है। अफीम के विष में इसका प्रयोग न करें। एप मॉर्फ० का हाइपोडेर्मिकैली इन्जेक्शन, १ ग्रेन का ३० वाँ भाग या उससे कम नींद लाने की अच्छी दवा है। प्रलाप की अवस्था में भी अच्छा काम करती है। आधे घण्टे के अन्दर नींद आ जाती है।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

एक्विलेजिया (Aquilegia)

(कोलम्बाइन)

हिस्टीरिया की औषधि। गुल्मवायु और मूर्च्छा जो सिर दर्द के साथ आये। स्त्रियाँ जो रजनिवृत्ति काल के समीप हों उनको हरे पदार्थ की कै, खासकर सुबह को। अनिद्रा। शरीर का स्नायविक कम्प, रोशनी और शोरगुल असह्य। युवा लड़कियों में कष्टदायक मासिक स्राव।

स्त्री—मासिकधर्म थोड़ा, साथ में धीमा दर्द, रात में दबाव, जो कटि प्रदेश की दाहिनी तरफ बढ़े।

मात्रा—पहली शक्ति।

एरैगैलस लैम्बर्टी (Aragallus Lam.)

(व्हाइट लोको वीड—रैटल वीड)

खासकर स्नायविक मण्डल पर काम करती है। एक चकित, मानसिक खिन्नता उत्पन्न करती है। शारीरिक असहयोग और लकवे के लक्षण। मति शक्ति रहित। सुबह की थकावट।

मन—घोर अवसन्नता, शाम और सुबह अधिक। अध्ययन न कर सके। नाराज, चिड़चिड़ा, बेचैन। चकित मानसिक गड़बड़ी और उदासीनता। अकेले रहना चाहे। चित्त न जमा सके, चित्त अनवस्थित। आकांक्षाहीन। लिखने में विकृत अभिव्यक्ति। अशान्त और बेकार घूमना। टहलते समय में ध्यान एकाग्र करना पड़े।

सिर—द्वि-दृष्टि। आँखों में जलन, निचले दाँत का चिटकना।

गला—टीस । भरा मालूम हो । मिचली के साथ दर्द । गलकोष गहरे रंग का, सूजा हुआ, चमकीला ।

श्वास-यन्त्र—सीने के अगले पंजर में बोझ जैसा । चोंड़ फीते से बँधा लगे । ऊपरी हड्डी में दर्द, दबाव ।

अंग—अङ्गों में कमजोरी । बाँयें जंघ-स्नायु की गृध्रसी । टहलते समय टाँग के अगले भाग की पेशियों में ऐंठन ।

सम्बन्ध-तुलना कीजिए—ऐरिस्ट्रोलोकिया और ओक्सिट्रोपिस—लोको बीज की दो किस्में; पैराइटा भी ।

मात्रा—६ और २०० शक्ति ।

एरेलिया रेसिमोसा (Aralia Racemosa)

(अमेरिकन स्पाइकनार्ड)

यह दमा की उन हालतों की दवा है, जहाँ लेटने से खाँसी बढ़े । सोते में पसीने से शरीर भीग जाये । हवा असह्य । दस्त, काँच निकलना । मलाशय में टीस- जो ऊपर को उठे, जिस करवट लेटे उसी करवट रोग बढ़े ।

श्वास-यन्त्र—सूखी खाँसी पहली नींद के बाद उठे; करीब आधी रात में । रात में लेटने पर दमा, अप्लेष्मिक खाँसी के साथ, पहली नींद के बाद बढ़े, गले में गुद-गुदी के साथ । सीने में कसापन । मालूम पड़े जैसे कोई विजातीय पदार्थ गले में अँटका हो । बसंत के मौसम में कसापन बढ़े ।

मौसमी फ्लू—बार-बार छींकना । छाती की हड्डी के पीछे कच्चापन और जलन । जरा-सी हवा लगते ही छींक आवे, नाक से खून बहे । जिससे नथुनों में खुजली और जलन पैदा हो, नमकीन तीखे स्वाद का स्राव ।

स्त्री—मासिक स्राव का दब जाना । प्रदर अति दुर्गन्धित, तीखा, दाब दर्द के साथ । प्रसव स्राव दबा हुआ, और पेट फूले ।

घटना-बढ़ना—करीब ११ बजे रात को बढ़ना (खाँसी) ।

सम्बन्ध तुलना कीजिए : पेक्टेन—स्कैलप (दमा । खाँसी का तंगी । सीने में सिकुड़न, खासकर दाहिनी तरफ । दमा के पहले के जुकाम और गले व छाती में जलन । अधिक चिमड़ा, झागदार बलगम निकलने पर हमला खतम हो । रात को अधिक) आर्स०, आयोड० नेफथलीन, सेपा, रोजा, सबाडिला, सिन० ।

मात्रा—अरिष्ट से तीन शक्ति तक ।

अरेनिया डियाडिमा (Aranea Diad.)
(पापल-क्रास स्पाइडर)

सभी मकड़ी के विष स्नायुमण्डल पर बहुत गहरा असर करते हैं (टेरेण्टुला, माइगेल आदि देखिए)।

एरेनिया के सभी लक्षणों की विशेषता है : सामयिकता और ठंढक और तरी की असहनशीलता। यह दवा मलेरिया विष से जल्द प्रभावित होने वाले लोगों को लाभदायक है, यहाँ हर तरह की नमी शीत को उत्तेजना देती है। रोगी हड्डी तक ठंढक महसूस करता है। ठंढक किसी चीज से भी कम न हो। जान पड़े कि शरीर के अङ्ग बड़े और भारी हो गये हैं। रात को जागने पर मालूम होता है कि हाथ मामूली से दूने हो गये हैं। तिल्ली सूजी हुई। ऐसे व्यक्ति जिनके शरीर में जलीयांश अधिक हो। तरी और ठंढक असह्य। ताजे पानी की झील या नदी इत्यादि के पास, या नम-दार ठंढी जगहों में न रह सकें। (नेट०, सल्फ०, थुजा०)।

सिर—चेहरे की दाहिनी त्रिकोण स्नायु में दर्द, सतह से नीचे की तरफ। चकराया हुआ। खुली हवा में, धूम्रपान से कमी आए। आँखों में गरमी और झिमझिमाहट, नम मौसम से अधिक। दाँतों में रात को लेटते ही एकाएक तेज दर्द।

स्त्री—मासिक धर्म बहुत पहले और बहुत अधिक। उदर फलना। कटि उदर स्नायुशूल।

सीना—पसलियों के बीच की स्नायु से, रीढ़ में अन्त होनेवाली स्नायु तक दर्द जाय। फुफ्फुस से चमकदार लाल खून निकले। (मिलोफोलि०, फेरम फास)।

आमाशय—थोड़ा भी खाने से ऐंठन हो, ऊपरी भाग दाब से दुखे।

उदर—तिल्ली का बढ़ना। शूल एक ही समय उठे। निचले भाग में पत्थर जैसा भारीपन। अतिसार। बाँहें और टाँगें सुन्न मालूम पड़ें।

अंग—हाथों पैरों में अस्थि-पीड़ा। एड़ी की हड्डी में दर्द। सूजन और सुन्न की संवेदना।

नींद—बेचैनी। जागता रहे, मानो हाथ और अगली बाँह सूजी हुई और भारी है।

ज्वर—ठंढक, साथ में लम्बी हड्डियों में दर्द, उदर में पत्थर जैसे भारीपन का संवेदन, प्रतिदिन एक ही समय आये। गनगनाहट रात और दिन, बरसात में हमेशा अधिक हो।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : नम मौसम, तीसरे पहर के कुछ बाद और आधी रात।
घटना—तम्बाकू पीने से।

सम्बन्ध—टेला एरैनियेरम-स्पाइडर्स वेब—हृदय रोग सम्बन्धी अनिद्रा, पेशियों की शक्ति बढ़ी हुई। ज्वरावस्था में स्नायविक उत्तेजना। सूखा दमा, सताने वाली खाँसी, सामयिक सिर दर्द, बहुत स्नायविक उत्तेजना के साथ। हटी सविराम ज्वर। तुरत धमनी मण्डल पर काम करता है, नाड़ी भरी, मजबूत दबने वाली नाड़ी की गति को धीमा करता है। छिपे हुए सामयिक रोग, क्षय ज्वर ग्रस्त और दुर्बल रोगी। लक्षण एकाएक आये, अंग ठंढे। चिपचिपे हो जाते हैं जब कि हाथ, पैर स्थिर हालत में ठिठुरे रहें। लगातार ठण्डक।

एरैनिया सिनेसिया—ग्रे-स्पाइडर-पलकों के नीचे लगातार फड़कन, अनिद्रा। गरम कमरे में कष्ट। हेलो०; सिड्रन; आर्सेनिक०।

मात्रा—अरिष्ट से ३० वीं शक्ति तक।

एरब्युटस ऐण्ड्रैक्ने (Arbutus Andra.)

(स्ट्राबेरी ट्री)

अकौता की दवा जब कि वह गठिया और वात से सम्बन्धित हो। जोड़ों का, सूजन, खासकर बड़े जोड़ों की। मूत्र बहुत साफ हो। कटिवात। लक्षण चर्म से जोड़ों में चले जायँ। फफोलेदार फुन्सी के लक्षण।

सम्बन्ध—ऐरब्युटिन; लीडम; ब्रायोनिया; कैल्मिया।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

एरेका (Areca)

(बेटल नट)

आँतों में कृमि हो जाने के लिए लाभदायक है। इसकी क्षारोद, एरेकोलिन हाइड्रोब्रोम, पुतली को सिकोड़ती है। एसेरिन से तीव्र मगर उससे कम समय तक रहने वाला प्रभाव। धुन्ध रोग में लाभदायक है। पिलो कारपिन की तरह लार का स्राव बढ़ाती है। दिल की चाल को बढ़ाती है और आँतों की सिकुड़न में सहायता देती है।

आर्जेमान मेक्सिकाना (Argemone Mexicana)

(प्रिकली पॉपी)

आँतों का शूल; स्नायुमण्डल और पेशियों में दर्द; नींद का अभाव। वात-रोग जो पेशाब में अण्डे की सफेदी वाले रोग से सम्बन्धित हो, (डी० मैकफार्लेन)।

सिर—आँखों और कनपटियों में थरथराहट का दर्द। सिर गरम। गला बहुत सूखा, निगलने में दर्द।

पेट—रोगग्रस्त मालूम हो, कै जैसा लगे। आमाशय के गड्ढे में ऐंठन। भूख न लगे। डकार और हवा खुलना।

मूत्र—थोड़ा हो। रंग बदला हुआ।

स्त्री—मासिक धर्म दबा हो। कमजोरी के साथ; काम इच्छा कम।

अंग—बायाँ घुटना तना और दर्दीला। पैर सूजे हों।

घटना-बढ़ना—दोपहर के समय रोग बढ़े (कमजोरी)।

मात्रा—६ शक्ति। ताजा रस घाव और मस्सों पर लगाया जाता है।

आरजेण्टम मेटालिकम (Argen. Met.)
(सिल्वर)

अंग का दुबलापन, धीरे-धीरे सूखते जाना, ताजी हवा की इच्छा, दम फूलना, बढ़ जाने की संवेदना और बायीं तरफ का दर्द इसकी विशेषता है। मुख्य कार्य क्षेत्र बोलने के यन्त्र और उनके यौगिकों पर, हड्डियों पर, उपास्थि, बंधनी पर केन्द्रित है। इन भागों में खून की छोटी नलिकायें बन्द हो जाती हैं या सूख जाती हैं और नासूर पैदा हो जाता है। यह विकार धीरे-धीरे आता है, मगर बढ़ता है। स्वरनली भी इस औषधि का मुख्य प्रभाव क्षेत्र है।

मानसिक—जल्दबाज, समय धीरे धीरे बीतता है, चिन्ताग्रस्त।

सिर—बायीं तरफ धीमा, आक्षेपिक स्नायुशूल जो धीरे-धीरे बढ़े और एकाएक बन्द हो। सिर की खाल छूना सहन न करे। बहते हुए पानी को देखकर सिर में चक्कर आये और ऐसा मालूम दे कि नशे में है। सिर खाली; खोखला मालूम दे। पपोटे लाल और मोटे। शिथिलता पैदा करने वाला जुकाम, छींक के साथ। चेहरे की हड्डी में दर्द। बायीं आँख और आगे के उभरन (शख) में दर्द।

गला—कच्चा, भूरा, लुआबदार श्लेष्मा से भरा हुआ। खाँसने में गले में पीड़ा हो। सुबह को बलगम अधिक और सरलता से निकले।

श्वास-यन्त्र—आवाज भारी। स्वर लोप। खाँसने में कच्चापन। दर्द। रोजगारी गवैयों की आवाज बिल्कुल बन्द होना। स्वरनली दर्दीली और कच्ची लगे। बलगम आसानी से निकले; पकाई हुई मांडी की तरह। वक्षोस्थि के ऊपरी गुदा के पास कच्चापन। बोलने से कष्ट बढ़ना। हँसने से खाँसी आना। दोपहर के समय यक्ष्मा ज्वर। जोर से पढ़ने पर बार-बार खखारा करे और गला साफ किया करे। सीने की

बहुत कमजोरी; बायीं तरफ अधिक । आवाज कभी धीमी, कभी तेज । बायीं तरफ की निचली पसली में दर्द ।

पीठ—पीठ में दर्द, झुककर चले, सीने पर दबाव के साथ ।

मूत्र—दिन में अधिक बार । पेशाब अधिक, गँदला, मीठी गन्ध वाला । बार-बार पेशाब होना । बहुमूत्र ।

अंग—जोड़ों का वात दर्द, खासकर केहुनी और घुटनों में । टाँगें कमजोर और काँपें, सीढ़ी के नीचे उतरने पर बढ़े । अंगुलियों का अनिच्छित खिन्चाव, अगली बाँह का आंशिक लकवा, लेखकों के हाथ का ऐंठन । टखनों की सूजन ।

पुरुष—फोतों के कुचले जाने की तरह दर्द । बिना कामोत्तेजना के धातु निकलना । बार-बार जलन के साथ पेशाब होना ।

स्त्री—डिम्बाशय बड़े मालूम पड़े । धँसन दर्द । बच्चेदानी का बाहर निकलना । योनि ग्रीवा छिली हुई स्पंज की तरह नरम । प्रदर बदबूदार छीलन वाला । बच्चेदानी के कठिन अर्बुद में आराम देती है । बायें डिम्बाशय में दर्द । वयसन्धिकालीन रक्त-स्राव । आमाशय भर में दर्द, झटका लगाने से बढ़े । गर्भाशय रोग जोड़ों और अङ्गों में दर्द के साथ ।

घटना-बढ़ना—बढ़े : छूने से, दोपहर के निकट । घटे : खुली हवा में, खाँसी रात में लेटते समय (हायोसिया० का उलटा) ।

सम्बन्ध—क्रियानाशक । मर्क०, पल्स ।

तुलना कीजिये—सेलिनि०, एल्यूमि०, प्लाटिनम मेटा०, स्टैनम, ऐम्पेलोप्सिस (गण्डमालिक मरीजों में आवाज बैठने की पुरानी शिकायत) ।

मात्रा—६ विचूर्ण और ऊँची शक्ति । अधिक दोहराना नहीं चाहिये ।

आरजेण्टम नाइट्रिक (Argentum Nit.)

(नाइट्रेट ऑफ सिल्वर)

इस दवा के स्नायविक प्रभाव बहुत स्पष्ट और महत्वपूर्ण हैं । मस्तिष्क और मेरुदण्ड में बहुत से लक्षण उत्पन्न होते हैं । जो इसके सम-चिकित्सा प्रणाली से इन्हीं अङ्गों में उपयोग की तरफ संकेत करते हैं । असहयोग के लक्षण; मन और शरीर में हर जगह नियन्त्रण और संतुलन का अभाव । अङ्गों में कम्प । श्लैष्मिक झिल्लियों में क्षोभ आता है, जिससे गले में घोर सूजन हो जाती है और आमाशय तथा आँतों पर सोजिश अपना मुख्य लक्षण है । बहुत प्रबल चिह्न हैं : मीठी चीज खाने की प्रबल इच्छा, खपची ऐसा दर्द, और प्रदाहग्रस्त श्लैष्मिक झिल्ली से गाढ़ा पीब जैसा स्राव अधिक मात्रा में निकलना । ऐसा महसूस होना कि अङ्ग फैल रहे हैं ।

ज्ञानेन्द्रियों के काम में अन्तर आ जाना भी महत्वपूर्ण लक्षण है। यह दवा उन व्यक्तियों को विशेषतः अनुकूल आती है जिनका शरीर मुरझाया हुआ और सूखा हुआ हो—विशेषतः जबकि असाधारण या बहुत दिनों तक लगातार मानसिक श्रम करने का इतिहास भी मौजूद हो। सिर के लक्षण इस औषधि के निर्णय में सहायक होते हैं। दर्द धीरे-धीरे घटते-बढ़ते हैं। उदर में अफरा आना और समय से पहले वृद्ध दिखाई देना। स्नायविक रोगियों में जोर से डकार आना। उदर के ऊपरी भाग के रोग, असाधारण मानसिक परिश्रम से पैदा हुए हों। पैरों के निचले अङ्गों का लकवा; टाँग की हड्डी की गुद्दी के प्रदाह और मस्तिष्क तथा मेरुदण्ड का कड़ापन। गरम असह्य। एकाएक चुटकी काटने जैसा लगे। (डजियन)। लाल रक्तकणों को नष्ट करता है। जिससे रक्तहीनता हो जाती है।

मन—सोचता है कि उसकी समझने की शक्ति अवश्य नष्ट हो जायगी। भयभीत और घबराया हुआ। खिड़की में से बाहर कूदने की प्रेरणा। बेसुध-सा और कम्प। शोकग्रस्त, घोर रोगग्रस्त होने का भय। समय धीरे-धीरे बीतता मालूम पड़े (कैना० इण्डि०)। स्मरणशक्ति दुर्बल। प्रत्यक्ष ज्ञान के दोष। प्रेरणा; सभी काम जल्दी करना चाहे (लिलियम०)। विचित्र मानसिक प्रेरणा; भय, आकुलता, छिपे हुए तथा विवेकहीन प्रेरणायें।

सिर—सिर दर्द के साथ ठंढक और कम्पन। भावात्मक वेग अर्धकपाली में रोग पैदा करें। फैलने का संवेदन। दिमागी कमजोरी, आम कमजोरी और कंप। मानसिक परिश्रम और नाचने से आधा सिर दर्द। चक्कर, कानों में भिनभिनाहट, स्नायविक दोष के साथ। आगे के उभार में टीस और उसी तरफ की आँख में फैलाव का संवेदन। छेदने की तरह का दर्द। कस के बाँधने और दाब से कम हो। चमड़ी का खुजलाना। अर्धकपाली। सिर की हड्डियाँ जैसे अलग की जा रही हैं।

आँखें—भीतरी कोने सूजे हुए और लाल। आँखों के सामने धब्बे। धुँधलापन। गरम कमरे में रोशनी असह्य। आँख सूजना। पुतली का बहुत सूजना। आँख दुखनी आये और उसमें पीब जैसा मवाद आये। पलकों के किनारों का जीर्ण घाव, दर्दीला, मोटा सूजा। एक जगह नजर न जमा सके। सीने-पिरोने से आँख पर जोर पड़ना, गरम कमरे में कष्ट बढ़े। टीस, नजर की थकान जो बन्द करने या दाब से कम हो। पलकों की पेशियों की दुर्बलता ठीक करने में लाभदायक। पलकों की पेशियों का बेकाम होना। तीव्र रोहा। पुतली धुँधली। पुतली पर घाव।

नाक—सूँघने की शक्तिहीनता। खुजली, नथनों को अलग करने वाले पर्दे में घाव। जुकाम, कँपकँपी, नेत्र जल प्रवाह और सिर दर्द के साथ।

चेहरा—मुरझाया हुआ, वृद्ध जैसा पीला और नीला। वृद्ध दिखाई दे, हड्डियों पर चमड़ा खिंचा हो।

मुँह—मसूढ़े कोमल और म्लान बहे। जबान पर उभार अधिक हो, किनारे लाल और दर्दीले। अच्छे दाँतों में दर्द। स्वाद कसैला, स्याही की तरह। गहरे घाव।

गला—गले और मुँह में अधिक, गाढ़ा श्लेष्मा खखारने को मजबूर करे। कच्चा, खुरखुराहट और दर्दीला। निगलते समय गले में खपच्ची जैसा लगे। गला गहरा लाल। धूम्रपान वालों का नजला, साथ में बाल जैसा गले में जान पड़े। गला घुटता मालूम हो।

आमाशय—अनेक आमाशय रोगों में डकार आना। मिचली, उद्गार, चमकीले श्लेष्मा की कै। अफरा, गढ़े में दर्दीदी फूलन। पेट पर दर्दीला स्थान जो उदर भर में फैले। कुतरन, घाव करने वाला दर्द, जलन और संकुचन। डकार लेने की असफल चेष्टा। मिठाई खाने की प्रबल इच्छा। मद्यपायी का आमाशय प्रदाह। बाँयीं पसली के नीचे दर्द। जैसे घाव हो गया है। पेट में कम्प और थरथराहट। घोर तनाव। आमाशय में घाव। फैलने वाले दर्द के साथ। पनीर और नमक खाने की इच्छा।

उदर—शूल, अधिक अफरा के साथ। पेट की बायीं तरफ दर्द जैसे घाव हो गया है। छोटी पसली के नीचे।

मल—पनीला, आवाजदार, वायु मिला, हरा पालक के पत्तों की कतरन जैसा, रेशेदार, श्लेष्मा और उदर का अधिक तनाव, अति दुर्गन्धित। खाने या पीने के बाद ही दस्त हो। तरल पदार्थ सीधे शरीर में से बाहर निकल जाए। मिठाई खाने के बाद। किसी उत्तेजना के बाद, वायु के साथ। गुदा में खुजली।

मूत्र—रात दिन बिना मालूम हुए पेशाब बहा करे। मूत्रमार्ग सूजा हुआ, दर्द, जलन, खुजली के साथ, खपच्ची गड़ने जैसा दर्द। पेशाब थोड़ा और गहरे रंग का। पेशाब करने के बाद कुछ बूँद टपकना। धार फटी हुई। सुजाक की प्राथमिक अवस्था, अधिक स्राव और घोर कटन, पीड़ा, खूनी पेशाब।

पुरुष—नपुंसकता। मैथुन की चेष्टा, पर उत्तेजना न हो। कैन्सर की तरह घाव। इच्छा कम। कामेन्द्रिय चुचुकी। मैथुन कष्टदायक।

स्त्री—मासिक-धर्म से पहले आमाशयिक शूल। सीने की पेशियों में तेज झटके। रात में मैथुन की इच्छा। वयःसंधिकाल में स्नायविक उत्तेजना। अधिक प्रदर स्राव, योनि की गरदन छिलने के साथ। आसानी से खून बहे। गर्भाशय-रक्त-स्राव, मासिक काल के दो हफ्ते पहले। बायें डिम्बाशय का दर्दीला रोग।

श्वास-यन्त्र—ऊँचे स्वर में बोलने से खाँसी उठे। जीर्ण स्वरभंग। दम घुटन खाँसी, मानो गले में बाल रखा है। साँस कष्ट। सीना जैसे चारों तरफ से बँधा हुआ है। धड़कन, नाड़ी अक्रमिक और सविरामिक, दाहिनी तरफ लेटने से बढ़े (एक्युमेन) सीने पर दर्दीले चकत्ते। दिल शूल, रात में अधिक हो। कमरे में बहुत से लोग हों तो रोगी का साँस घुटने लगे।

पीठ—अधिक दर्द। मेरुदण्ड स्पर्शकातर, रात्रि पीड़ा के साथ। (आक्जैलि० एसिड)। निचले अंगों का पक्षाघात। मेरुदण्ड के पिछले भाग का कड़ापन।

अंग—आँखें बन्द करके न चल सके। कम्प, व्यापक दुर्बलता के साथ। पक्षाघात, मानसिक और उदर लक्षणों के साथ। पिंडलियों का तनाव। पिंडलियों में खास तरह पर कमजोरी। टहलना और खड़ा होना असम्भव; लड़खड़ाकर चले खासकर जब उसको कोई न देख रहा हो। बाँहों का सुन्नपन। रोहिणी रोग के बाद का पक्षाघात (जेल्सी० के बाद)

चर्म—बादामी, तना हुआ, कड़ा। चर्म में खींच, मकड़ी के जाले की तरह या सूखे निकले पदार्थ की तरह, चुचुका, सूखा। बेमेल चकत्ते।

नींद—कल्पना की उड़ान से अनिद्रा; साँस इत्यादि और कामोत्तेजना के भयानक स्वप्न, ऊँघाई, तन्द्रा।

ज्वर—मिचली के साथ शीत ओढ़ना हटाने पर, मगर ओढ़ने से दम घुटे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: किसी प्रकार की गरमी, रात में ठण्ढे भोजन से, मिठाई से, खाने के बाद, मासिक काल में, उत्तेजना से, बायीं तरफ।

घटना—डकार आने से, ताजी हवा से, ठंडक से, दाब से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक: नैट्रम म्यूर।

तुलना कीजिए—आर्स०, मर्क०, फास०, पल्सेटिला, आर्जेण्टम० सियानेट्रम (हृदय शूल, दमा गले का आक्षेप)। आर्जेण्टम आयोडेटम (गले के रोग, आवाज बैठी हुई; ग्रन्थि विकार)। पोटारगल (सुजाक, तीव्र अवस्था के बाद, २ प्र० श० घोल; गर्मी रोग के श्लैष्मिक चकत्ते, गर्मी के कोमल घाव, आतशकी दाने, १० प्र० श० घोल दिन में दो बार लगाना; नवजात शिशु की आँख आना १० प्र० श० घोल की २ बूँद) आर्जेण्ट० फॉस० (शोथ रोग में पेशाब बढ़ाने की उत्तम औषधि) आर्जेण्ट० ऑक्साइड० (अधिक मासिक स्राव और दस्त के बाद रक्तहीनता)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

उत्तम विधि पानी १ : ६ शक्ति का घोल; उसमें २ या ३ बूँद की मात्रा। यह पानी में घोली हुई दवा निचली विचूर्ण शक्ति से अच्छी होती है। जब तक कि ताजा न बना हो, वह जल्द ही आक्साइड में परिवर्तित हो जाता है।

एरिस्टोलोचिया मिल्होमेन्स (Aristolochia Milhomens)

(ब्रेजिलियन स्नेक रूट)

कई जगहों में सुई गड़ने जैसा दर्द। एड़ी में दर्द, गुदा में जलन और अकसर खुजलाहट। आमाशय और उदर में अफरा। पीठ और अंगों में दर्द। टाँगों की

अँकड़न। एड़ी की मोटी नस में दर्द। गुल्फ-सन्धि की भारी अगर [illegible], और सूजन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एरिस्टोलोचिया सर्पेण्टेरिया —[illegible] (आँत मार्ग के लक्षण, अत्यधिक दस्त, उदर वायु। अकसर अजीर्ण। [illegible] रक्त-संचयता। उदर में तनाव और कठिन दर्द। प्युइजन ओक (रसटॉक्स), [illegible] की तरह लक्षण)।

मात्रा—निचली शक्ति।

आर्निका (Arnica)

(लेओपर्ड सकाबेन)

शरीर में ऐसी अवस्था उत्पन्न करती है जैसी चोट से, गिरने से, मार [illegible] से, और रगड़ आने से पैदा होती है। कानों में टनटनाहट। पीब या गंदगी आना। रक्त के विषैलेपन की अवस्था में, पीब के विष को दूर करती है। संन्यास-रोग [illegible], भरा चेहरा।

यह औषधि खासकर ऐसे रोगों में लाभदायक है जो किसी आघात के कारण उत्पन्न हुए हैं, चाहे वे कितने ही दिनों के हों। आघात जनित परिणाम। किसी अंग का अति व्यवहार, और थकना। आर्निका मस्तिष्क में प्रदाह प्रवृत्ति रखता है। अधिक खून वालों में अच्छा काम देता है, कम रक्त वालों में मन्द काम करता है जब कि शोथ वाले रोगियों में साँस की तंगी भी हो। पेशी बलवर्धक। शोक, चिन्ता या एकाएक आर्थिक हानि का पता चलने से आये उपद्रव। शरीर और अङ्ग पीट जाने जैसा दर्द करें, जोड़ मानो मोच खा गये हों। बिस्तर बहुत कड़ा मालूम पड़े। खून पर स्पष्ट प्रभाव। शिरामण्डल पर असर करता है और खून के बहाव को रोकता है। खून जमा होने से आया काला दाग और खून अधिक बहना। खून नलियों का ढीलापन, काले और नीले धब्बे। रक्त-स्राव की प्रवृत्ति, मन्द ज्वर की अवस्थायें। तन्तु नष्ट होने की प्रवृत्ति, पीब आना, फोड़े जो न पकें। दर्दीलापन, लंगड़ापन, चोटीलापन मालूम हो। पेशी और संधि तन्तुओं का वात रोग, खासकर पीठ और गरदन का, तम्बाकू से घृणा। इन्फ्लुएन्ज़ा। समवरोधन निर्माण, (खून जमना या छिछड़ा बनना)। रक्तार्बुद।

मन—छुए जाने से या किसी के पास आने का भय। अचेतनता, जवाब ठीक दें, मगर फिर मूर्च्छा आये। उदासीनता, लगातार किसी काम के करने में असमर्थ, चिन्ताग्रस्त, चित्त विभ्रम। स्नायविकता, दर्द सहन न कर सके। सारा शरीर क्षुब्ध। कहता है कि उसको कोई तकलीफ नहीं है। अकेले रहना चाहे। बड़ी जगह में अकेले जाने का भय। मानसिक परिश्रम या आघात के बाद।

सिर—गरम-शरीर ठण्डा, उलझन में मस्तिष्क कोमलग्राही, तेज, चुटकी काटने जैसा दर्द। चमड़ी सिकुड़ी लगे। माथे पर ठंडे धब्बे। जीर्ण चक्कर, चीजें चक्कर खाती मालूम पड़ें। खासकर टहलने पर।

आँखें—आघातजनित द्वि-दृष्टि, पेशिक पक्षाघात, चक्षुपट-रक्त प्रवाह। बारीक काम करने के बाद आँखों में चोटीला दर्द। आँखें खोले रखे। बन्द करने पर चक्कर आये। दृश्य या सिनेमा इत्यादि देखने पर आँखें थकी मालूम पड़ें।

कान—सिर में खून दौड़ने से कानों में आवाजें सुनाई दें। कानों में और उनकी चारों तरफ चमकन। कानों से खून बहे। दिमाग पर चोट आने से कम सुनाई दे। कानों की उपास्थि में रगड़ लगने जैसा दर्द।

नाक—खाँसी के आक्रमण के पश्चात् खून बहना, गहरा पतला खून। नाक छुर-छुराये, ठण्ढी।

मुँह—दुर्गन्धित साँस। सूखा और प्यास। कड़वा स्वाद (कोलोसिं०), खराब अण्डों जैसा स्वाद। दाँत निकलवाने के बाद मसूढ़ों में दर्द। (सीपिया)। जबड़े की सुराख में मवाद भरना।

चेहरा—मुरझाया हुआ, बहुत लाल। होंठों में गरमी। चेहरे पर दाद।

आमाशय—सिरका पीने की इच्छा। दूध और मांस से घृणा। अधिक भूख। रक्त का वमन। खाते समय पेट में दर्द। अरुचि, मगर अधिक भोजन करना। कष्टदायक वायु ऊपर-नीचे चले। पत्थर जैसा दबाव। प्रतीत हो कि आमाशय रीढ़ से टकरा रहा है। दूषित वमन।

उदर—नकली पसली के नीचे चिलक। तनाव, दूषित वायुस्खलन। आर-पार तीव्र कोंचन।

मल—अतिसार में अधिक काँखना। कूँथन। दूषित, बादामी, खूनी, सड़ा हुआ, अनिश्चित। बादामी, खमीर की तरह दिखाई दे। प्रत्येक मलत्याग के बाद लेटना पड़े। क्षयरोग का दस्त, बायीं करवट लेटने से बढ़े। पेचिश के साथ।

मूत्र—अधिक परिश्रम के बाद रुक जाना। गहरी, चटकीली लाल तलछट मूत्राशयिक कूंथन, दर्दीले पेशाब के साथ।

स्त्री—प्रसव के बाद तीव्र वेदना। यांत्रिक आघात के कारण गर्भाशय से रक्तस्राव। घुण्डी दर्दीली। चोट से आया स्तन प्रदाह। मालूम पड़े पेट में बच्चा टेढ़ा पड़ा है।

श्वास-यंत्र—दिल की खराबी से खाँसी; सुरसुरी, जो रात के समय, सोने से, परिश्रम से बढ़े। तीव्र वायुमूल प्रदाह, मुलायम तालु और घाँटी की सूजन। निमोनिया और फेफड़े पर लकवा गिरने का खतरा। आवाज अधिक बोलने से बैठे। कच्चापन,

दर्द सुबह को बढ़े। रोने और विलाप करने से आई खाँसी। कंठनली के निचले भाग में गुदगुदी से आयी सूखी खाँसी। खूनी बलगम। खून थूकने के साथ श्वास-कष्ट। सीने की सभी हड्डियाँ और उपास्थियाँ दर्द करें। तेज, आक्षेपिक खाँसी चेहरे की दाद के साथ। काली खाँसी, बच्चा खाँसने से पहले चिल्ला उठे। पार्श्ववेदना (रैनन०; सिमिसिफ्यूगा)।

दिल—हृद्शूल, खासकर बाँयीं केहुनी में तेज दर्द। दिल में चिलकन। नाड़ी धीमी और क्रमहीन। हृद्रोग सम्बन्धित शोथ और घोर कष्टदायक साँस। अङ्ग अकड़े हुए जैसे चोट आयी हो। दिल पर चर्बी जमा होना और बढ़ना।

अंग—छोटे जोड़ों का गठिया। छूये जाने या किसी के पास आने से भय। पीठ और अङ्गों में दर्द, जैसे कुचले गये हों या मार पड़ी हो। मोच खाने और उखड़ने की संवेदना। अगली बाँह का मृत्यु तुल्य ठंडापन। वस्तिशूल के कारण सीधी न चल सके। वात दर्द नीचे से ऊपर को उठे। (लीडम)।

चर्म—काला और नीला। खुजली, जलन, छोटे दाने अनेक छोटी फुन्सियाँ (इकथियोल; सिलिका)। काले दाग। बिस्तर घाव बोबिनीन ऊपर से लगाना)। कड़े मुँहासे जो क्रम से उभरे हों।

नींद—अधिक थकने पर अनिद्रा और बेचैनी। मृत्युतुल्य ऊँघाई, गरम सिर के साथ जागे। स्वप्न : अङ्ग-अङ्ग के, कौतुहलपूर्ण और भयानक। रात्रि भय। नींद में अनिच्छित मलस्खलन।

ज्वर—आंत्रिक ज्वर की तरह के ज्वर लक्षण। सारे शरीर में कम्पन। सारा शरीर ठंडा परन्तु सिर में गरमी और लाली। आंतरिक गरमी, पाँव और हाथ ठंडे। रात में खट्टा पसीना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : जरा भी छूने से, हरकत, आराम, शराब, तर ठंडक से। घटना : लेटने से या सिर नीचा करने के साथ।

सम्बन्ध—क्रियानाशक—कैफ।

विटेक्स ट्रिफोलिया—इण्डियन आर्निका—मोच और दर्द, कब्जों में दर्द, जोड़ों में दर्द, उदर में दर्द, फोते में दर्द।

पूरक—एकोना०, इपीकाक।

तुलना कीजिये—एकोना०, बैप्टि०, बेलिस०, हैमामे०, रस०, हाइपेरिकम।

मात्रा—१ से ३० शक्ति। बाहरी प्रयोग के लिए अरिष्ट, लेकिन कभी गरम करके न लगाया जाये या जब त्वचा छिल गई हो।

आर्सेनिक एल्बम (Arsenicum Alb.)

(आर्सेनियस एसिड)—आर्सेनिक ट्राइआक्साइड)

सभी अंगों और तन्तुओं पर घोर शक्तिशाली प्रभाव करने वाली औषधि। इसके केवल साधारण लक्षण ही इसके लाभदायक प्रयोग में सहायता देते हैं। इनमें सर्व-व्यापक कमजोरी, शिथलता, बेचैनी, रात में रोग बढ़ना बहुत प्रभावशाली लक्षण हैं। जरा-से परिश्रम पर घोर शिथिलता आना और इनके साथ रेशों की उत्तेजना। यह उत्तेजनापूर्ण दुर्बलता इसकी विशेषता बताती है। जलन वाले दर्द। न बुझने वाली प्यास। गरमी से कम न होने वाली जलन। समुद्र-तटीय रोग। (नैट्र० म्यूर०; एक्वा मेरिना०) फल खाने का बुरा असर; खासकर रसदार फल। जीवन के अन्तिम काल में शान्ति और आराम देता है, जबकि ऊंची शक्ति में दिया जाये। भय, चिहुँकन और चिन्ता। हरे स्राव। बालकों का कालाजार (डा० नीटबी)। मद्यपान रोग, दुर्गन्ध विकार; डंक-विष, शवच्छेदन के समय आये घाव, तम्बाकू चबाने, सड़े भोजन या मांस का बुरा असर। स्राव बदबूदार। हर साल पैदा होने वाली बीमारियाँ। इन सभी अवस्थाओं में आर्से० पर विचार करना चाहिए। रक्तहीनता और दुर्बलता। नष्टात्मक परिवर्तन। पोषण की कमी से धीरे-धीरे दुर्बल होना। रक्त-रस की आलोक-निवर्तन संख्या कम करता है। (चाइना और फेरम फास भी)। मारात्मक अवस्था में शरीर का पालन-पोषण करता है। चाहे रोग कहीं भी हो। मलेरिया विष से पीड़ित शरीर। रक्त-विष संक्रमणता और जीवन शक्ति की कमी।

मन—घोर सन्ताप और बेचैनी। बराबर जगह बदला करे। भय, मौत का, अकेले छोड़ दिए जाने का। घोर भय और ठंडा पसीना। सोचता है कि दवा लेना बेकार है। आत्महत्या की प्रवृत्ति। देखने और सूँघने का भ्रम। निराशा उसको जगह-जगह घुमाती है। कृपण, डाही, खुदगर्ज; कायर। सर्व संवेदनीयता अधिक (हीपर०)। कोई अव्यवस्था और मानसिक गड़बड़ी सहन न करे।

सिर—दर्द ठंढक से कम हो, परन्तु दूसरे लक्षण बढ़ें। बँधे समय पर जलन आये, बेचैनी के साथ दर्द और ठंडा चर्म। अर्धकपाली, चाँद पर बरफ जैसी ठंढक और बहुत कमजोरी के साथ। खुली हवा में सिर उत्तेजित। शराबी की बकवास। कोसता और चिल्लाता रहे, दुष्ट। सिर बराबर हिलता रहे। खोपड़ी की खाल पर असह्य खुजली, मंज के चकत्ते। सिर खुरदरा, मैला। सूखी पपड़ी वाला। रात में जलन और खुजली हो, रूसी झड़े। खाल बहुत उत्तेजित; बाल ब्रश से झाड़ नहीं सकता।

आँख—आँखों में जलन, तीक्ष्ण आँसू। पलक लाल, घाव वाले पपड़ीदार उभरे हुए। दानेदार। आँखों के चारों तरफ शोथ। बाहरी सूजन अधिक दर्द के साथ;

जलनदार, गरम, तीक्ष्ण पानी बहे; पुतली पर घाव। प्रकाश असह्य, बाहरी सेंक से कम; पलकों का स्नायुशूल; जलन, दर्द के साथ।

कान—भीतरी चर्म कच्चा और वहाँ जलन हो। पतला तीक्ष्ण, दुर्गन्धित मवाद कान से बहे। दर्द के समय कानों में गर्जन।

नाक—पतला, तेजाबी, पनीला स्राव। नाक बन्द लगे। छींक बिना आराम। मौसमी फ्लू और जुकाम, जो खुली हवा में बढ़े, मकान के अन्दर आराम मिले। जलन और रक्तस्राव। नाक पर मुँहासे। चर्म का यक्ष्मा।

चेहरा—सूजा, पीला, धुँधला, रोगग्रस्त, मुरझाया हुआ, ठंडा पसीनेदार (एसेटि० एसिड)। कष्टमय भाव। फरन, सूई गड़ने जैसा दर्द जलन। होंठ काले, गहरे लाल; क्रोधी; गालों पर घेरेदार लाली।

मुँह—अस्वस्थ मसूढ़ों से खून बहना। मुँह में घाव, सूखापन और जलन के साथ। होंठ का कैंसर। जबान सूखी, साफ और लाल। जबान में चुभन और जलन के साथ दर्द। घावदार, नीला रंग। खूनी लार। दाँतों का स्नायुशूल, लम्बे और दर्दीले, आधी रात के बाद कष्ट बढ़े; सेंकने से कमी आये। कसैला स्वाद। मुँह में जलती लार आये।

गला—सूजा, शोथमय, सिकुड़ा; जलन, निगल न सके। रोहिणी जैसी झिल्ली, जो सूखी और सिकुड़ी हुई दिखाई दे।

आमाशय—खाने को देखना या उसकी गन्ध भी सहन न कर सके। बहुत प्यास; अधिक पानी पीना मगर थोड़ा-थोड़ा करके। खाने या पीने के बाद मिचली; उबाल। पेट के तल में बेचैनी। जलन, दर्द। कॉफी और तेजाबी चीज की इच्छा। गला जले, तेजाबी और कड़वी चीजें डकार में ऊपर आवें, जो गला छीलती मालूम दें। बहुत लम्बी डकार। वमन : भोजन, पित्त, हरा श्लेष्मा या कत्थई, काला, खून मिला। आमाशय अति स्पर्शकातर, कच्चा जैसे फाड़ा या तोड़ा जा रहा है। जरा भी खाने या पीने से आमाशय शूल हो। सिरका, तेजाबी चीजों से, मलाई की बरफ से, बरफ का पानी, तम्बाकू से भी। अनपच। आमाशय विकार के साथ घोर भय और दम घुटना, बेहोशी, बरफ जैसी ठंडक, घोर शिथिलता भी। अरिष्ट लक्षण। निगली हुई चीज गले की नाली में अँटकी हुई मालूम पड़े, जो बन्द मालूम दे; जैसे कोई चीज नीचे न उतरेगी। वनस्पति भोजन, खरबूजा, रसदार फल खाने का बुरा प्रभाव। दूध की प्रबल इच्छा।

उदर—कुतरन, आग के अंगारों की तरह जलन-दर्द जो सेंकने से कम हो। जिगर और तिल्ली बढ़ी हुई और दर्दीली। जलोदर और सर्वांग शोथ। उदर सूजा हुआ और दर्दीला। खाँसने पर उदर में घाव जैसा दर्द।

मलान्त्र—मलान्त्र का दर्द; काँच निकलना। कूँथन। मलान्त्र और गुदा में जलन, दर्द।

मल—छोटा, दुर्गन्धित, गहरे रंग का, बहुत शिथिलता के साथ। रात में खाने और पीने के बाद अधिक, आमाशय की ठंडक से, अधिक मद्यपान से, बासी दूषित मांस खाने से भी। पेचिश, गहरे रंग का, खूनी, बहुत दुर्गन्धि मल। हैजा, घोर कष्ट, शिथिलता, जलन, प्यास, शरीर बरफ जैसा ठंडा (वेरैट्रम०)। बवासीर आग जैसी जले सेंकने से कम हो। गुदा के चारों तरफ चमड़ी छिल जाना।

मूत्र—थोड़ा, जलता हुआ, अनिच्छित। मूत्राशय को जैसे लकवा मार गया हो। एल्बूमेन मिला। कौशिक झिल्लियाँ; रेशों के छोटे कण गोल टुकड़े। मवाद और सूजन एवं खारिश हो। पेशाब करने के बाद उदर में कमजोरी। ब्राइट का रोग (ओजोमेह)। मधुमेह।

स्त्री—मासिक-धर्म बहुत अधिक और बहुत जल्दी। डिम्बाशय क्षेत्र में जलन। प्रदर : तेजाबी, जलनदार दुर्गन्धित, पतला। दर्द जैसा लाल गरम तार लगने से हो, जरा से परिश्रम से बढ़े, बहुत थकावट हो, गरम कमरे में कम। अधिक स्राव। वस्ति में कड़क के साथ दर्द जो जाँघों तक बढ़े।

श्वास-यन्त्र—लेट न सके, दम घुटने का भय। वायुनलियाँ सिकुड़ी हुई। दमा, आधी रात को अधिक। सीने में जलन। दम घोटनेवाला नजला। खाँसी आधी रात के बाद और चित् लेटने से बढ़े। बलगम थोड़ा, झागदार। दाहिने फुफ्फुस के ऊपरी तिहाई भाग के आर-पार भाला गड़ने जैसा दर्द। साँस में सायँ-सायँ की आवाज। खूनी थूक, कंधों के बीच में दर्द के साथ, सभी जगह जलन। सूखी खाँसी, गन्धक के धुएँ जैसी; पीने के बाद।

दिल—धड़कन, दर्द, कष्टदायक साँस, मूर्छा। तम्बाकू पीने और चबाने वालों के दिल की तेजी। नाड़ी सवेरे अधिक तेज (सल्फ०)। फैलना। नील रोग। चर्बी जमा होना, शूल, पीठ और सिर की जड़ में दर्द के साथ।

पीठ—पिठासे में कमजोरी। कंधों में खींचन। पीठ में जलन और दर्द (ऑक्जेलिकम एसिडम)।

अंग—कम्पन, फड़कन, झटके आना, कमजोरी, भारीपन, असुविधा। पिंडली में ऐंठन। पैरों की सूजन। गृध्रसी। जलन के साथ दर्द। प्रान्तस्थ नाड़ी-मंडल की सूजन। शूल। मधुमेह। सड़न। एड़ी पर घाव (सेपा, तेमियम)। क्षीणता के साथ निचले अंगों का पक्षाघात।

चर्म—खुजली, जलन, सूजन, शोथ, फरन, दाने—सूखे, खुरदरे, पपड़ीदार, ठंडक से और खुजलाने से बढ़े। सांघातिक दाने। गन्दे, बदबूदार स्राव वाले घाव। कैन्सर। जहरीले घाव। जुलपित्ती, जलन और बेचैनी के साथ। अपरस (सोरि-

थासिस)। कठिन अर्बुद। शरीर का बरफ ऐसा ठंडापन। चर्म का कैन्सर रोग। सड़न; प्रदाह।

नींद—आराम से न सो सके, उत्सुक, अशान्त। सिर को तकिए से उठाये रहे। नींद से दम घुटने के हमले। हाथों को सिर पर रखकर सोता है। स्वप्न, चिन्ता और भय से भरे हों। ऊँघाई, निद्रा-रोग।

ज्वर—ऊँचा ताप। बँधे समय पर आनेवाला ज्वर जो कमजोरी लिये हो। गन्दगी से आया ज्वर। सविराम ज्वर। अपूर्ण हमले; स्पष्ट शिथिलता के साथ मौसमी फ्लू। ठण्डा पसीना। आंत्रिक ज्वर, कुछ समय के बाद, (अक्सर रस० के बाद)। पूर्ण शिथिलता। प्रलाप; आधी रात के बाद अधिक। बहुत बेचैनी। करीब ३ बजे सुबह बहुत गरमी लगे। दाँत पर मैल।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तर मौसम, आधी रात के बाद, ठण्डक से, ठण्डी चीज पीने या खाने से। समुद्र तट। दाहिनी तरफ। घटना : गरमी से, सिर ऊँचा करने से, गरम चीज पीने से।

पूरक—रस०, कार्बो०, फास०, थुजा०, सिकेलि०, जस्ता विष का क्रियानाशक।

क्रियानाशक—ओपियम, कार्बो०, चायना, हीपर, नक्स। रासायनिक क्रियानाशक चारकोल; हाइड्रेटेड पर-ऑक्साइड ऑफ आयरन, लाइम वाटर।

तुलना कीजिए—आर्सेनिक स्टिबेटम ३x (बच्चों का सीना प्रदाह, बेचैनी, प्यास एवं शिथिलता के साथ, ढीली श्लैष्मिक खाँसी, तेज साँस, घुरघुराहट की आवाज) सेनक्रिस कॉर्टोरेट्रिक्स; आयोड०; फास्फो०, चायना, वेरेट्रम एल्बम, कार्बो०, कैली फास०। एपिलोबियम (आंत्रिक ज्वर का दुष्ट दस्त) ह्वांगनान०। एटॉक्सिल०—सोडियम आननियेट ३x, निद्रा रोग; नेत्र क्षीणता); लेविको वाटर (मिश्रण आर्स० आयरन और कॉपर ऑफ साउथ टाइरोल) जीर्ण और दूषित चर्म रोग, झटके, कण्ठमालीय और रक्तहीन बच्चों के आक्षेप। पोषण समीकरण में सहायता देता है और पोषण को बढ़ाता है। कमजोरी और चर्म रोग, खासकर ऊँची शक्ति के प्रयोग के बाद, जहाँ औषधि का लाभ रुक गया हो। मात्रा दस बूँद छोटे गिलास में गरम पानी के साथ, दिन में ३ बार; भोजन के बाद (बरनेट) सरकोलैक्टिक एसिड (कड़ी कै के साथ इन्फ्लुएन्जा)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति। कभी-कभी उच्चतम शक्ति से सर्वोत्तम लाभ होता है। नीचे की शक्ति आमाशयिक, आंत्रिक और गुर्दों की बीमारियों में; और ऊँची शक्ति स्नायु शूल, स्नायु रोग और चर्म रोग में। लेकिन अगर ऊपरी शरीर के रोग में आवश्यकता है तो २x या ३x का विचूर्ण दीजिए। दोहराना लाभदायक है।

आर्सेनिकम ब्रोमेटम (Arsenicum Bromatum)

(ब्रोमाइड ऑफ आर्सेनिक)

खुजली नाशक (एण्टिसोरिक) और उपदंश नाशक (एण्टिसिफिलिटिक) सिद्ध हुई। विसर्पिका दाने, उपदंशज मस्से, ग्रन्थि-अर्बुद और कड़ापन, कर्कट रोग, उरु-स्तम्भ और कठोर सविरामिक ज्वर और मधुमेह सभी इस औषधि से प्रभावित होते हैं।

चेहरा—मुँहासे, नाक पर अधिक फरन के साथ, वसन्त के मौसम में बढ़ना। युवक के मुँहासे।

मात्रा—अरिष्ट, २ से ४ बूँद, रोज पानी में। मधुमेह में, ३ बूँद एक गिलास पानी में, दिन में तीन बार।

आर्सेनिकम हाइड्रोजेनिसेटम (Arsen. Hydro.)

(आर्सेनिउरेटेड हाइड्रोजन)

इस दवा में आर्सेनिक का साधारण प्रभाव अधिक शक्तिमान बन गया है। रक्त-हीनता, आकुलता, नैराश्य। खून का पेशाब, व्यापक रक्तछिन्नता के साथ श्लैष्मिक झिल्लियों से रक्तस्राव। पेशाब दबा हुआ। बाद में कै हो। लिंगमुण्ड का पर्दा और लिंग मुण्ड दानों से भरा हुआ। गोल, छिछले घाव। पतनावस्था। ठंडक; शीतलता। आकस्मिक दौर्बल्य और मिचली। चर्म गहरा कत्थई हो जाये।

सिर—सीढ़ी से ऊपर जाने पर चक्कर। आँखें धँसी हुई, चारों तरफ चौड़े नीले घेरे। घोर छींक। नाक ठंडी; गरम कपड़े से शरीर लपेट कर रखना चाहे।

मुँह—जबान बढ़ी हुई, गहरे टेढ़े-मेढ़े घाव, गुठलीदार सूजन। मुँह गरम और सूखा, प्यास कम।

मात्रा—३ शक्ति।

आर्सेनिकम आयोडेटम (Arsen. Iod.)

(आयोडाइड ऑफ आर्सेनिक)

निरन्तर क्षोभ और त्वचा को छीलने वाले स्रावों में इस दवा को विशेषता देनी चाहिए। स्राव उस झिल्ली को उत्तेजित कर देता है जहाँ से वह निकलता है और जिस पर होकर बहता है। स्राव बदबूदार पनीला हो सकता है और वह श्लैष्मिक झिल्ली हमेशा लाल और सूजी होती है, तथा जलती है। इन्फ्लुएन्जा, मौसमी फ्लू।

पुराना नजला। कान के मध्य का जुकाम। नाक के भीतरी तन्तुओं की सूजन। कम्बु-कर्णी नली का फूल जाना और बहरापन। हृद्वेष्ट का प्रदाह, दिल पर चर्बी जमा होना। नाड़ी झटकेदार। जीर्ण बृहद् धमनी प्रदाह। होठों पर कैंसर, स्तन में मवाद पड़ने के बाद।

मालूम पड़ता है कि आर्स० आयोडे० में हमको क्षय रोग के लक्षणों से अधिक मिलती-जुलती औषधि प्राप्त हुई है। क्षय रोग की प्रारम्भिक क्षुब्ध अवस्था में जब कि ताप तीसरे पहर बढ़ता हो तब भी आर्स०, आयोडे० बहुत गुणकारी है। यह घोर शिथिलता में, तीव्र नाड़ी, घड़ी-घड़ी ज्वर और पसीना, दुबलापन की प्रवृत्ति में सांकेतिक होता है। जीर्ण फुफ्फुस प्रदाह, फुफ्फुस में घाव के साथ। क्षय ज्वर, दौर्बल्य, रात्रि-पसीना।

इस औषधि को क्षय रोग के पानी जैसे उस पतले अतिसार में याद रखना चाहिए जहाँ खरीखरी खाँसी में पीब जैसा बलगम निकलता हो और हृदय-दौर्बल्य, दुबलापन और सर्वशक्तिहीनता हो, इसके साथ अच्छी भूख भी हो। दुबलापन। मासिक धर्म का रुकना, रक्तहीनता और साँस कष्ट के साथ, सभी रोगों में याद रखना चाहिए। जीर्ण फुफ्फुस प्रदाह जब कि नासूर बनने वाले हों। बहुत दुबलापन। धमनी का कड़ा पड़ना, दिल की पेशियों के तन्तु का क्षय और वृद्धावस्था का हृदय रोग। रक्त विष का भय (पाइरोजेन; मिथिल ब्लू)।

सिर—चक्कर, कम्पन के साथ, खासकर वृद्धावस्था में।

नाक—पतला, पनीला, उत्तेजक, छिलन पैदा करने वाला स्राव, नथुने के अगले व पिछले भाग से, छींकना। मौसमी फ्लू। नाक की उत्तेजना और सुरसुराहट, बराबर छींकना चाहे। पोलैनिन। जीर्ण नजला, सूजन, अधिक गाढ़ा, पीला स्राव; घाव, झिल्ली छिली हुई, दर्दीला : छींकने से रोग बढ़े।

गला—गलकोष में जलन। तालुमूल सूजे हुए। गले से होंठ तक झिल्ली मोटी। साँस दुर्गन्धित, ग्रन्थि विकार। रोहिणी रोग। जीर्ण, थैलीदार गलकोष प्रदाह।

आँख और कान—कण्ठमालीय नेत्र प्रदाह, चर्म प्रदाह, जिसमें बदबूदार छीलने वाला स्राव हो। कान के पर्दे का मोटा पड़ना। जलता, तेजाबी, जुकाम स्राव।

आमाशय—दर्द और तेजाबी पानी मुँह से ऊपर आना। भोजन करने के एक घन्टे बाद कै करना। कष्टदायक मिचली। उदर के अगले और ऊपरी भाग में दर्द। प्रचण्ड प्यास, पीते ही कै हो।

श्वास-यन्त्र—छोटी, कड़ी सूखी खाँसी, बन्द नाक के साथ। पानी वाला फुफ्फुसावरण प्रदाह। जीर्ण वायु नलिका प्रदाह (ब्रांकाइटिस)। फुफ्फुसीय क्षयरोग। फुफ्फुस प्रदाह जो साफ न हुआ हो। इन्फ्लुएञ्जा के आक्रमण के बाद वायुनलिका समूह और फुफ्फुस प्रदाह। सूखी खाँसी, कठिन बलगम। स्वरलोप।

चर्म—ज्वर और पसीना बार-बार। भिगो देने वाला रात्रि पसीना। नाड़ी तेज, धीमी, कमजोर, अक्रमिक। कँपकँपाहट, ठंडक सहन न हो।

चर्म—सूखा, छिलकेदार, खुजलीदार। बड़े खुरण्टों में अधिक चर्म उधड़ना जिसके नीचे लाल, कच्ची तर जगह हो। चमड़े की सख्ती। ग्रंथियों का बढ़ना। कण्ठमाला। गर्मी रोग की गिल्टी (बाघी)। कमजोर करने वाला रात पसीना। दाढ़ी का एक्जिमा, पनीला रसने वाला स्राव, खुजली जो धोने से बढ़े। शोथ। अपरस। मुँहासे कड़े, गुठलीदार, तल भाग कड़ा और मुँह पर पीला दाना।

सम्बन्ध—तुलना। ट्यूबक्युलिनम, एण्टिमोन०; आयोड०। मौसमी फ्लू में तुलना कीजिये; एरालिया०, नैफ्थैलिन, रोजा, सैंग्वि, नाइट्रि०।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण। ताजा तैयार करना चाहिए और रोशनी से बचना चाहिए। कुछ दिनों तक प्रयोग करना चाहिए। क्षय रोग के इलाज में प्रायः ४x से शुरू करना अच्छा समझा जाता है और फिर धीरे-धीरे नीचे के २x विचूर्ण का ५ ग्रेन, दिन में ३ बार।

आर्सेनिकम मेटालिकम (Arsen. Met.)

(मेटैलिक आर्सेनिक)

दबे हुए गर्मी रोग को उभारता है। सामयिकता बहुत स्पष्ट रहती है, लक्षण हर दूसरे, तीसरे हफ्ते उठते हैं। कमजोरी। शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में सूजने जैसा मालूम देना।

सिर—उत्साहहीन, स्मरण शक्ति कमजोर। अकेले रहना चाहे। काल्पनिक-दृष्टि से भयभीत, चिल्ला उठे। सिर बड़ा मालूम दे। बायीं तरफ का सिर-दर्द जो आँखों और कानों तक बढ़े। झुकने और लेटने से सिर-दर्द बढ़े। माथे का शोथ।

चेहरा—लाल, खुजली हो, जलन हो, फूला हुआ। आँखें फूलीं और पनीली, जुकाम। आँखें कमजोर, दिन में गैस की रोशनी खराब लगे।

मुँह—जबान पर सफेद मैल, दाँतों का निशान पड़े। बहुत कच्चापन और घाव।

उदर—जिगर का दर्द, कन्धों से होकर रीढ़ तक जाये। तिल्ली में दर्द पुट्ठों तक नीचे उतरे। छाती का दर्द कटि-प्रदेश और तिल्ली तक। दस्त जलता पानीदार जो दर्द कम करे।

मात्रा—६ शक्ति।

आर्सेनिकम सल्फ्यूरेटम फ्लेवम (**Arsen. Sulph. Flavum**)

(Yellow Sulphuret of Arsenic—Orpiment)

सीने में भीतर से बाहर की तरफ सूई जैसी चुभन, माथे पर भी, दाहिनी तरफ। कान के पीछे गड़न। कठिन साँस। जननेन्द्रिय के आस-पास का चमड़ा झिल्ली जैसा। श्वेत कुष्ठ और गर्मी रोग के दाने। गृध्रसी और घुटनों के चारों तरफ दर्द।

सम्बन्ध—आर्सेनिक सल्फ० रूब्र० (इन्फ्लुएञ्जा, प्रचण्ड जुकामी लक्षण के साथ, अधिक शिथिलता और ऊँचा ताप, दूषित स्राव। विचर्चिका, मुँहासे और गृध्रसी। आग के आगे भी सर्दी लगे। अनेक भागों में खुजली। रौद्रत्वक।

मात्रा—३ विचूर्ण।

आर्टिमिसिया वलगेरिस (**Arte. Vul.**)

(Mugwort)

मिरगी रोग, बालक और बालिकाओं के वयस्ककाल की शारीरिक अकड़न में लाभदायक समझी जाती है। आँखों के आघात में बाहरी और भीतरी प्रयोग। छोटी मिरगी। बिना सुरसुरी के मिर्गी का आक्रमण, डर जाने के या किसी उत्तेजना या हस्तमैथुन के बाद मिरगी आना। फिट के कई झटके; एक के बाद दूसरा। सोते-सोते उठकर चल दे। रात में उठता है और काम करता है, सुबह को कुछ याद नहीं रहता। (कैलां फॉस)।

सिर—झटकों से पीछे की तरफ खिंचा हुआ। मुँह बायीं तरफ खिंचा हुआ। मांस्तिष्क-रक्तसंचयता।

आँखें—रङ्गीन रोशनी से चक्कर आये। देखने में धुँधलापन और दर्द, मलने से कम, अधिक प्रयोग से बढ़े।

स्त्री—बहुत मासिक स्राव। गर्भाशय की घोर सिकुड़न। मासिककाल में झटके।

ज्वर—अधिक पसीना, लेहसुन की महक का।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एब्सिंथ०; सिना; साइक्यूटा।

मात्रा—१ से ३ शक्ति। शराब के साथ सेवन करने से अधिक लाभदायक है।

ऐरम ड्रैकॉण्टियम (Arum Dracon.)

(Green Dragon)

दर्द, कच्चापन और कोमलता के साथ गलकोष प्रदाह की दवा ।

सिर—भारी; चमकन का दर्द कानों में, दाहिने कान के पीछे टीस ।

गला—सूखा दर्दीला, निगलने से कष्ट बढ़े । कच्चा और कोमल, बराबर साफ करता रहे । खरखरी, क्रूप खाँसी गला बैठने के साथ ।

मूत्र—पेशाब करने की प्रबल इच्छा । जले और कड़के ।

श्वास-यन्त्र—आवाज भारी स्वरनली में बहुत बलगम । रात में दम फूलना । बलगम गाढ़ा भारी ।

सम्बन्ध—एरम इटैलिकम । (दिमाग कमजोर, पिछले भाग में दर्द के साथ) । एरम मैकुलेटम (श्लैष्मिक झिल्ली की सूजन और प्रदाह, और जख्म) नासिका उत्तेजित अर्बुद के साथ ।

मात्रा—पहली शक्ति ।

एरम ट्रिफाइलम (Arum Triph.)

(जैक-इन-दी-पुलपिट)

एरम मैकुलेटम, इटैलिकम ड्रैकॉण्टयम, सभी ट्रिफाइलम की तरह प्रभाव रखते हैं । सभी में एक उत्तेजनीय विष होता । जिससे श्लैष्मिक सतहों की सूजन और तन्तुओं का नष्ट होना पैदा होता है । एरम के कार्य की विशेषता है : तेजाबीपन ।

सिर—तकिए में सिर गाड़ता है । बहुत गरम कपड़े पहनने से तथा गरम कॉफी पीने से सिर दर्द ।

आँखें—ऊपरी पलकों का कम्प; खासकर बायीं तरफ ।

नाक—नथनों में छरछराहट । तीखा छीलने वाला स्राव । कच्चे घाव कर दे । नाक बन्द मुँह से सांस लेना पड़े । नाक कुरेदे । जुकाम, पनीला, खून की लकीर वाला । नाक बिलकुल बन्द तीखे, अधिक स्राव के साथ । मौसमी फ्लू नाक की जड़ पर दर्द के साथ । नाक की दाहिनी तरफ कड़ी पपड़ी । चेहरा दरारदार मालूम पड़े जैसे ठण्डी हवा लगी हो, गरम मालूम दे । बराबर नाक खुजलाया करे यहाँ तक कि खून बहने लगे ।

मुँह—तालु और स्वाद क्षेत्र में कच्चापन । होंठ और मुलायम तालु में दर्द और जलन । होंठ चिटके हुए और जलें । मुँह के किनारे चिटके हुए और दर्दीले । जबान लाल, दर्दीला, सारा मुँह कच्चा लगे । होंठों को नोचे यहाँ तक कि खून बहे । लार अधिक तीखी; छीलन वाली ।

गला—निचले जबड़ों की ग्रन्थियों की सूजन। सिकुड़ा और सूजा जलन, कच्चा। लगातार खखारना। आवाज भारी। अधिक बलगम। फुफ्फुस दर्द करे। गल प्रदाह। आवाज अनिश्चित, अनियंत्रित। बातचीत करने, गाने से कष्ट बढ़े।

चर्म—लाल दाने, सारी सतह कच्ची और चर्मदल घने।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : उत्तर पश्चिम हवा से, लेटने पर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एमोन० कार्ब०, एलैंथस, एलियम सिपा।

क्रियानाशक—बटर मिल्क (सरपेटा दूध), ऐसेटि० एसिड, पल्से०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

एरण्डो (Arundo)

(रीड)

नजले की औषधि है। मौसमी फ्लू।

सिर—खुजली; बाल झड़ना, बालों की जड़ दर्दीली। फुन्सियाँ सिर के पीछे जड़ में दर्द, दाहिनी आँख क्षेत्र तक बढ़े। सिर के बगल में गहराई तक दर्द।

कान—कर्ण नली में जलन और खुजली। कानों के पीछे अकौता।

नाक—मौसमी फ्लू, तालु और आँख की पुतली की जलन और खाज से शुरू हो। नथनों और तालु में बहुव्यापक खुजली (वाइथिया ०)। जुकाम, सूँघने की शक्ति जाती रहती है (नैट० म्यूर०)। छींकना, नथुनों का खुजलाना।

मुँह—जलन और खुजली, मसूढ़ों से खून बहना। मुँह की दरारों में घाव और खाल उधड़ना। जबान पर दरारें।

आमाशय—पेट में ठंढक। तीखी चीज की इच्छा।

उदर—किसी जीवित जीव के चलने का संवेदन। वस्ति-प्रदेश में अफरा।

मल—हरा। गुदा में जलन। दूध पीते बच्चों का अतिसार। (कैमो०, कैल्केरिया फास)।

मूत्र—जलन। लाल तलछट। (लाइको ०)।

पुरुष—आलिंगन के बाद वीर्य की नाड़ियों में दर्द।

स्त्री—मासिक-धर्म बहुत पहले और अधिक। चेहरे से कन्धों और योनिक्षेत्र तक स्नायु-शूल। मैथुन इच्छा, योनि खाज के साथ।

श्वास-यन्त्र—साँस-कष्ट; खाँसी, नीला बलगम। स्तन घुण्डी में जलन के साथ दर्द।

अंग—खुजली, जलन, हाथ-पैर में शोथ। तलवे में जलन और सूजन। पैर से अधिक, दुर्गन्धित पसीना।

चर्म—अकौता, खुजली और रेंगन खासकर सीने पर और ऊपरी अंग पर। अंगुलियों और एड़ी पर दरारें।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ऐन्थौक्सैंटम – स्वीट वर्नल ग्रास (मौसमी फ्लू और जुकाम की लोकप्रिय औषधि है)। लोलियम, सेपा, सैबाडि०, सिलिका।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

एसाफिटिडा (Asafoetida)

(गम ऑफ दी स्टिन्कासैंड)

इस औषधि के बहुत स्पष्ट लक्षण हैं। इस दवा के निर्णय में इसके उन सम्बन्धों को ध्यान में रखना चाहिए जो हिस्टीरिया और वहम के रोगियों में हैं। इन ऊपरी लक्षणों के अलावा यह औषधि गहरे घाव, हड्डी की सड़न खासकर गरमी (आतशक) के मरीजों में लाभदायक पाई गयी है। यहाँ पर घोर क्षोभ, थरथराहट और रात्रि-पीड़ा इस औषधि की तरफ संकेत करते हैं।

सिर—चिड़चिड़ापन। अपने कष्टों की शिकायत करती है। कोमलग्राही। भवों के ऊपर छेदन जैसा दर्द। भीतर से बाहर की तरफ दाब के साथ दर्द।

आँखें—घेरों का स्नायुशूल, दबाव और आराम से कम हो। उपतारा और भीतरी भाग का प्रदाह और रात में छेदन, टपकन दर्द के साथ। बायें अगले उभरन के नीचे चिलकन। आँखों के अन्दर और चारों तरफ छेद होने की तरह दर्द। गर्मी रोग सम्बन्धी उपतारा प्रदाह। पुतली पर छिछले घाव, गड़न के साथ दर्द जो रात में अधिक हो।

कान—बदबूदार कर्ण स्राव, कर्णास्थि (चुचुकाकार) में छेद होने जैसे दर्द के साथ। चुचुकाकार अस्थि रोग माथे की बगल में दर्द के साथ, बाहर ढकेलने ऐसा संवेदन हो। बदबूदार पीब जैसा स्राव।

नाक—उपदंशीय पीनस रोग, उसके साथ बदबूदार पीब जैसा स्राव। नाक की हड्डियों का सड़ना। (आरम०)।

गला—गुल्म वायु। गले की तरफ गोल उठकर आये। संवेदन मानो निगलने की क्रिया उल्टी हो गयी है और गलकोष पैर से गले की तरफ उठा आ रहा है।

आमाशय—डकार ऊपर आने में बहुत कष्ट हो। अफरा और डकार में पानी ऊपर आना। वायु-मूर्च्छा। अधिक तनाव। खालीपन और कमजोरी का संवेदन, आमाशय और उदर में तनाव तथा चोटीलापन के साथ। तेज डकार। आमाशय के गढ़े में टपकन। प्रचण्ड आमाशय शूल, प्रदाह, पेट में और उसके ऊपरी मेहराव में कटन और जलन। वायु की गड़बड़ी जो बाद में तेज आवाज के साथ डकार से कठिनाई से बाहर निकले।

स्त्री—बिना गर्भ वाली स्त्री के स्तन दूध से फूले हों। अति कोमलग्राह्यता के साथ दूध की खराबी।

मलान्त्र—तनाव, ऐंठन भूख के साथ। कठोर कब्ज, मूलाधार में दर्द जैसे कोई कुन्द चीज बाहर ढकेली जा रही हो। अतिसार जिसमें अत्यन्त दुर्गन्धित मल निकले, अफरा और कै हो।

सीना—तनाव : मानो फुफ्फुस पूरी तरह से नहीं फैल रहे हैं। धड़कन जो थरथराहट की तरह हो।

हड्डियाँ—भाला गड़ने की तरह दर्द और हड्डियों के नासूर। अस्थिवेष्ट की दर्दीली सूजी और बढ़ी हुई घाव जो हड्डी तक जाये, पतला, खूनी मवाद।

चर्म—खुजली, खुजलाने से अच्छी हो, घाव जिनके किनारे दर्द करें। दबे हुए चर्म लक्षण स्नायविक विकार पैदा करें।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में, छूने से, बायीं तरफ, आराम के समय, सेंकने से। घटना : खुली हवा में, हरकत से, दाब से।

सम्बन्ध—शामक : चायना, मर्क०।

तुलना कीजिये : मस्कस; चायना, मर्क०, आरम मेटा०।

मात्रा—२ से ६ शक्ति तक।

एसारम यूरोपम (**Asarum Europum**)
(यूरोपियम स्नेक रूट)

स्नायविक रोग और अशक्ति जिसके साथ अधिक स्नायविक उत्तेजना हो। रेशमी या सूती कपड़ों या कागज की कड़क असह्य। पेशियों में दर्द और झटके आना। स्नायविक बहरापन और दुर्बल दृष्टि। किसी उत्तेजना से आयी गनगनी। मालूम पड़े कि शरीर के भाग आपस में टकरा रहे हैं या जैसे सट रहे हैं। तनाव और सिकुड़न की संवेदना। सदा ठण्ढक लगे।

मन—विचारलोप, माथे में खींचन दाब के साथ। केवल कल्पना ही संज्ञा से बढ़े।

सिर—दाब के साथ दर्द। टटरी (चाँद) पर घाव; बाल दर्दीले (चायना)। जुकाम, छींक के साथ।

आँखें—कड़ी लगें, ठण्ढी लगें। ठण्डी हवा में या पानी में अच्छी रहें; सूरज की रोशनी में या तेज हवा में कष्ट दें। चीरा लगवाने के बाद चमकन का-सा दर्द। धुँधलापन, देखने में कष्ट।

कान—जैसे बन्द कर दिये गये हों। नजला और साथ में बहरापन। बाहरी कान में गरमी, आवाजें सुने।

आमाशय – भूख न लगे; अफरा, डकार और कै। सुरासार वाले पदार्थ पीने की इच्छा। बीड़ी, सिगरेट आदि कड़वी लगे। मिचली खाने पर बढ़े। साफ जबान। बहुत कमजोर। ठण्डा, पनीला थूक जमा होना।

मलान्त्र—बिना महँक के पीले श्लेष्मा (आम) की लड़ियाँ निकलें। चिमड़ा श्लेष्मा का दस्त। अनपचा मल। काँच निकलना।

स्त्री—मासिक-धर्म बहुत पहले, देर तक जारी रहे, काला। पिठासे में तेज दर्द, चिमड़ा, पीला प्रदर।

श्वास-यन्त्र—स्नायविक, बार-बार, थोड़ी-थोड़ी खाँसी उठे। छोटी साँस।

पीठ – गरदन की जड़ की पेशियों में लकवा का-सा दर्द। कमजोरी के साथ लड़खड़ाना।

ज्वर – कँपकँपी, किसी एक अङ्ग का बरफ जैसा ठण्डा हो जाना। आसानी से पसीना बहे।

घटना-बढ़ना – बढ़ना : ठण्डे, सूखे मौसम में तेज एवं महीन आवाज से। घटना : धोने से, तर, भींगे मौसम में।

सम्बन्ध—एसारम कैनाडेन्सिस—वाइल्ड जिंजर। सर्दी लगने के बाद मासिक धर्म रुकना और आमाशयिक-आंत्रशूल। जुकाम का दब जाना।

तुलना कीजिये—इपीकाक, खासकर दस्त में, साइली, नक्स, चायना।
मात्रा—२ से ६ शक्ति।

ऐस्क्लेपियस सिरियाका (Asclep. Syri.)
(सिल्क वीड)

स्नायुमण्डल और मूत्र-यन्त्रों पर खास तौर से काम करती है। शोथ रोग जो जिगर, गुर्दा, दिल, आरक्त-ज्वर के बाद की अवस्था से सम्बन्धित हो। यह दवा पसीना लाती है और पेशाब की मात्रा बढ़ाती है। बड़े जोड़ों का तीव्र दर्द। गर्भाशय-दर्द रुक-रुक कर, चाप के साथ।

सिर—मालूम पड़े कि कोई नोंकीली चीज एक कनपटी से दूसरी तक पार कर दी गई है। माथे के आर-पार सिकुड़न। स्नायविक सिर-दर्द, पसीना दबने पर, बाद में पेशाब अधिक हो और बढ़ा हुआ विशिष्ट घनत्व। शरीर में दूषित पदार्थ के जमा होने से उत्पन्न हुआ सिर दर्द।

तुलना कीजिए—एस्क्लेपियस विन्सेटाक्सिकम—स्वैलो वार्ट—साइनैनकम—(आमाशयिक-आंत्रिक उत्तेजना, कै और दस्त पैदा करती है, शोथ रोग, मधुमेह, अधिक प्यास, अधिक पेशाब आने में लाभदायक है)।

मात्रा—अरिष्ट।

ऐस्क्लेपियस ट्यूबरोसा (Asclep. Tub.)
(प्ल्युरिसी-रूट)

इसका सीने की पेशियों पर बहुत स्पष्ट प्रभाव है और उसकी पुष्टि भी की गयी है। आमाशय और आँतों में वायु संचयता के साथ पुराना सिर दर्द। अनपच रोग। वायुनलिका समूह का प्रदाह और फुफ्फुसावरण प्रदाह इसके कार्य-क्षेत्र में आते हैं। सर्दी और आवाज में भारीपन। इन्फ्लुएञ्जा, फुफ्फुसावरण प्रदाह दर्द के साथ।

श्वास यन्त्र—श्वास कष्टदायक, खासकर बायें फुफ्फुस के निचले भाग में। सूखी खाँसी, गला सिकुड़े, सिर और उदर में पीड़ा पैदा करे। सीने में दर्द, बायीं स्तन घुण्डी से नीचे की तरफ झपटे। साधारण मल साफ करनेवाली दवा है। खासकर पसीना बनानेवाली ग्रन्थियों पर काम करती है। सीने के लक्षण आगे झुकने पर कम होते हैं। गले के पास की पसलियों के बीच की जगह कोमल। कन्धों के बीच कोंचन का-सा दर्द। नजले के साथ दर्द और पीला, लेसदार स्राव।

आमाशय—भरा हुआ, दाब, भारीपन। खाने के बाद अफरा। तम्बाकू असह्य।

मलान्त्र—सारे शरीर मे वातपीड़ा के साथ नजलेवाली पेचिश। मल सड़े अण्डे जैसा बदबूदार।

अङ्ग—वातग्रस्त जोड़ों मे झुकाने पर ऐसा संवेदन हो जैसे बन्धन टूट रहा है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एस्क्लेपियस—स्वाम्प मिल्क वीड-जीर्ण आमाशय प्रदाह और प्रदर (श्वास-कष्ट के साथ शोथ रोग)। पेरीप्लोका ग्रीसा—एस्क्लेपियेड समूह में से एक—दिल-शक्तिवर्द्धक, रक्तसंचार और श्वास क्रिया केन्द्र पर काम करती है, श्वास की गति को नाड़ी की गति से असमान अनुपात में बढ़ाती है)। ब्रायोनिया, डल्का०।

मात्रा—अरिष्ट और पहली शक्ति।

एसिमिना ट्रिलोबा (Asimina Triloba)
(अमेरिकन पैपॉ)

अरुण ज्वर की तरह बहुत-से लक्षण पैदा करती है। गला बैठना, ज्वर, कै, अरुण चर्म दाने, तालुमूल और निचले जबड़े की ग्रन्थियों का बढ़ना, इनके साथ अतिसार। गले की छत लाल, सूजी हुई। चेहरा सूजा हुआ, बरफ की तरह ठण्डा। ठण्डी चीज की इच्छा, आवाज फटी हुई। सुस्त, ऊँघाई, चिड़चिड़ापन। मुँहासे, शाम के समय कपड़ा उतारने पर खुजली।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैप्सिकम; बेलाडोना।

एसपैरागस ऑफिसिनैलिस (Asparagus offi.)

(कॉमन गार्डेन ऐसपैरागस)

मूत्रस्खलन क्रिया पर इसका तात्कालिक प्रभाव विख्यात है। यह दवा शोथ के साथ कमजोरी और दिल की मन्दता उत्पन्न करती है। वात दर्द। खासकर बायें कन्धे और दिल-क्षेत्र में।

सिर—असमंजस ग्रस्त। जुकाम अधिक पतले स्राव के साथ। माथे और नाक की जड़ में टीस। जगह बदलने वाला सुबह का सिर दर्द, आँखों के सामने काले धब्बों के साथ। गला खुरदरा मालूम दे, अधिक चिमड़ा श्लेष्मा खखार के साथ।

मूत्र—बार-बार तीखी चिलकन, मूत्र मार्ग के मुँह में जलन विचित्र गन्ध के साथ। मूत्राशय प्रदाह; पीब, श्लेष्मा और ऐंठन के साथ। अश्मरी।

दिल—धड़कना, सीना घुटने के साथ। नाड़ी रुक-रुक कर चले, दुर्बल। बायें कन्धे और दिल के क्षेत्र में दर्द, इसके साथ मूत्राशय सम्बन्धी रोग भी हो। साँस लेने में बहुत दाब मालूम पड़े। उरस्तोय।

अंग—पीठ में वात दर्द, खासकर कन्धों में और अंगों के आस-पास। बायें कन्धों के डैने के क्षेत्र में हँसली के नीचे और बाँह के नीचे तक दर्द, इसके साथ मन्द नाड़ी।

सम्बन्ध—शामक : एकोन, एपिस।

तुलना कीजिए—ऐल्थिया—मार्शमैलो—(एसपैरेजिन रहता है, मूत्राशय, गला और वायु नलिका समूह क्षुब्ध); फाइसैलिस, ऐल्युकेंगी, डिजिटैलिस, सारसास, स्पाइजेलिया।

मात्रा—६ शक्ति।

एस्पिडोस्पर्मा (Aspidosperma)

(क्वेबरैको)

फुफ्फुस का डिजिटैलिस है (हेल)। श्वास-यन्त्रों के केन्द्रों को उत्तेजित करता है। फुफ्फुसिया धमनी में समावरोधन निर्माण। मूत्राशय-विकार संबंधी श्वासकष्ट। यह श्वास यन्त्र केन्द्रों को उत्तेजित करके रक्त में ओषजन की मात्रा को बढ़ाती है। परिश्रम के समय 'दम फूलना' इसका सांकेतिक लक्षण है। हृत्पिण्ड सम्बन्धी दमा रोग।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : कोका, आर्सेनिक, कॉफिया; कैटेल्पा (कठिन श्वास)।

मात्रा—पहला विचूर्ण या अरिष्ट ऐसिडोसपरमिन हाइड्रोक्लोराइड १x विचूर्ण की एक ग्रेन। कई खुराक एक-एक घण्टे पर।

एस्टैकस फ्लुविआटिलिस (Astacus Flu.)

(क्राफिश)

चर्म लक्षण अति महत्त्वपूर्ण हैं। जुलपित्ती।

चर्म—सारे शरीर में जुलपित्ती। खुजली। लसिका ग्रन्थि के बढ़ जाने के साथ तर दाद। विसर्प और जिगर रोग। जुलपित्ती के साथ। ग्रीवा सम्बन्धी ग्रन्थियों की सूजन। कामला रोग।

ज्वर—भीतरी कँपकँपी, हवा असह्य, जो ऊपर से कपड़ा हटाने से बढ़े, सिर दर्द के साथ तेज बुखार।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : बोम्बिक्स—केटर पिलर—सारे शरीर में खुजली। (जुलपित्ती)। एपिस, रस०, नैट्र म्यूर, होमरस।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

ऐस्टेरियस रूबेन्स (Asterias Rub.)

(रेड स्टारफिस)

प्रमेह विषय प्रवणता की एक औषधि। थुलथुला, कफ प्रवृत्ति, फूला हुआ, लाल चेहरा के साथ। कोंचन का-सा दर्द। स्नायविक व्यथा, स्नायुशूल, ताण्डव रोग, मूर्च्छा, सभी इस दवा के कार्यक्षेत्र में आते हैं। स्तनों के कैंसर में प्रयोग की गयी है, और सड़न रोग (कैन्सर) में यह औषधि निःसन्देह लाभकारी है। स्त्री-पुरुषों की काम उत्तेजना।

सिर—बात काटना पसन्द नहीं करता। मस्तिष्क में झटके, थरथराहट, सिर में गरमी मानो हवा से घिरा हो।

चेहरा—लाल। नाक के दोनों तरफ दाने, ठुड्डी और मुँह पर भी। जवानी के समय दाने निकलने की सम्भावना।

स्त्री—मासिक धर्म दिखाई देते ही शूल और दूसरे कष्ट समाप्त हो जाते हैं। स्तन सूजे हुए और दर्दयुक्त; बायें स्तन में अधिक कष्ट। तेज दर्द के साथ घाव होना जो गले की हड्डी तक जाये। बायीं बाँह से नीचे अंगुली तक दर्द जो हिलने से बढ़े। कामोत्तेजना, स्नायविक क्षोभ के साथ। स्तनों का कड़ापन जैसे गुठलियाँ हों। धीमी टीस, स्नायविक दर्द इसी क्षेत्र में। (कोनियम)।

सीना—स्तन सूजे हुए, कड़े। बायें स्तन और बाँह का स्नायुशूल (ब्रोम)। गले की हँसली के नीचे और दिल के क्षेत्र की पेशियों में दर्द। बायाँ स्तन भीतर की तरफ खिंचा मालूम पड़े, और दर्द। दर्द बाँह के भीतरी भाग में छोटी अंगुली तक जाये। बायें हाथ और अंगुलियों की ठिठुरन। स्तन के सड़न (कैन्सर), घाव की अवस्था में भी हितकर है। तीव्र कोंचन दर्द। काँख की ग्रंथियाँ सूजी हुईं और गुठलीदार।

स्नायु मण्डल—लड़खड़ाकर चले। पेशियाँ इच्छा के अनुसार काम न करें। मिर्गी आना और इसके दौरे से पहले सारे शरीर में फड़कन।

मल—कब्ज। असफल इच्छा। जैतून के फल की तरह मल। अतिसार पनीला कत्थई, पिचकारी जैसा तेज, पतली धार।

चर्म—कड़ा और खस्ता। खाज वाले चकत्ते। दूषित स्राव वाले घाव। मुँहासे। अपरस और दाद, बायीं बाँह और सीने पर अधिक। काँख की ग्रन्थि का बढ़ना, रात में और तर मौसम में कष्ट।

सम्बन्ध—शामक : प्लम्बम, जिंकम।

तुलना कीजिए— कोनियम, कार्बो, कोन्डुरैंगो।

विरुद्ध—नक्स, कॉफिया।

घटना-बढ़ना —बढ़ना : कॉफी, रात, ठंडा, तर मौसम, बायीं तरफ।

मात्रा —६ शक्ति।

एस्ट्रैगैलस मोलिसिम (**Astragalus Moli.**)

(परपुल, ऊली लोको-वीड

जानवरों पर इसका वही प्रभाव पड़ता है जो मनुष्य पर सुरासार, तम्बाकू और अफीम से पड़ता है। पहला चरण—दृष्टिभ्रम या पागलपन का जिसमें जानवर उछ-लता-कूदता है और विचित्र छलाँगें मारता है। इस वनस्पति का स्वाद लेकर वह और दूसरा भोजन पसन्द नहीं करता। दूसरे चरण में—दुबलापन आता है। आँखें बैठ जाती हैं। बुद्धि मन्द, बिना चमक के बाल, चाल धीमी और कुछ महीनों के बाद उपवास की तरह से मर जाता है (यू० एस० खेती विभाग) चाल में गड़बड़ी। पक्षाघातिक विकार। पेशियों की पारस्परिक सहकारिता नष्ट।

सिर- दाहिनी कनपटी और ऊपरी जबड़े में भारीपन। बायीं आँख की भौं पर दर्द, चेहरे की हड्डियाँ दर्दीली। चक्कर आये कनपटी में दाब दर्द। जबड़े की हड्डी में दर्द और दाब।

पेट—कमजोरी और खालीपन। गलकोष और आमाशय में जलन।

अंग—दाहिने पैर में एड़ी से अँगुलियों तक थरथराहट। बाईं पिंडली बरफ जैसी ठंडी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: एरैगैलस लैम्बर्टी-ह्वाइट-लोकोवीड रैटिलवीड: बेराइटा, आक्सिट्रोपिस।

मात्रा—६ शक्ति।

ऑरम मेटालिकम (Aurum Metallicum)

(मेटैलिक गोल्ड)

यदि इस दवा को प्रभाव दिखाने का अवसर दिया जाये तो ऑरम मेटालिकम शरीर में रक्त, ग्रन्थि और हड्डी पर आक्रमण करके ऐसी अवस्थाएँ उत्पन्न करता है जो पारा और उपदंश संक्रमण से मिलती-जुलती होती है, और इन बातों ने ऑरम मेटा० को एक विख्यात औषधि बना दिया है। उपदंश पीड़ित रोगी की तरह इससे भी घोर मानसिक मंदता हो जाती है। निराश, शोकग्रस्त और आत्महत्या करने की प्रबल इच्छा। अपने को नष्ट करने के सभी अवसर खोजे जाते हैं। हड्डियों पर कड़ी गुठलियाँ निकलना; हड्डियों का सड़ना, रात के समय हड्डियों में दर्द खासकर सिर की; नाक की और तालु की हड्डियों में। कंठमालीय रोगियों की ग्रंथियों का बढ़ना। धड़कन और रक्ताधिक्य। अकसर हृदय के रोग के साथ जलोदर भी आता है। अकसर उपदंश के दूसरे चरण में पारे के दुरुपयोग में काम आती है। सोने का प्रयोग उपदंश और कंठमालिक व्याधिनाशक के रूप में अति प्राचीन है, परन्तु पुरानी औषधि प्रणाली (एलोपैथी) वाले इसको भूल बैठे थे और अब यह होमियोपैथी में फिर से खोज निकाली गई है और वैज्ञानिक स्तर पर रख दी गई है, अतः अब यह कभी नहीं खो सकती। जब कंठमालिक बुनियाद पर उपदंश आ जमता है तो इससे अति कठोर और घातक अवस्था पैदा हो जाती है जिसके लिए सोना ही विशेष तौर पर लाभदायक होता है। मानसिक रुकावट। पुराना पीनस। अति कामोत्तेजना। धमनी का कड़ापन। ऊँचा रक्तचाप; हर रात को सोने की हड्डियों के पीछे दर्द। फुफ्फुस धमनी-मंडल और मस्तिष्क का कड़ा पड़ना। दुर्बल बालक, उत्साहहीन, निर्जीव, स्मरण शक्ति मन्द।

मन—आत्मग्लानि, अपने को निकृष्ट समझने की प्रबल भावना। घोर नैराश्य; रक्तचापाधिक्य के साथ जीवन से घृणा और आत्महत्या की धारणा। आत्महत्या करने की ही बातचीत करता है। मृत्यु का भय। जरा भी विरोध पर खिन्नता और अति क्रोधित होकर भड़क उठना। मानव आतंक। पागलपन। बिना जबाब का इन्तजार

किये तेजी से सवाल करते जाना। कोई काम काफी तेजी से न कर सके। अति असहिष्णु (स्टैफि०) : आवाज से, घबड़ाहट से; कौतूहल से।

सिर—सिर में प्रचण्ड पीड़ा, रात में अधिक, बाहर की दाब के साथ, सिर में गरजन, चक्कर। मस्तिष्क से माथे तक फटन। हड्डियों में दर्द जो चेहरे तक बढ़े। सिर में रक्ताधिक्य। खाल पर फुन्सियाँ।

आँखें—रोशनी घोर असह्य। आँखों की चारों तरफ और ढेले में दर्द। द्वि-दृष्टि; चीजों का ऊपरी आधा भाग न दिखाई पड़े। तनी मालूम दें। आग ऐसी चीजें। आँखों की चारों तरफ की हड्डी में तेज दर्द। (एसाफि०) सांतर कनीनिका प्रदाह। पुतली पर रक्त नलिकायें दिखाई देना। दर्द बाहर से भीतर की तरफ जाये। भीतर की तरफ गड़न से दर्द। नाखूने के साथ रोहा।

कान—आभ्यन्तरिक कर्ण की क्षुद्र अस्थियों का और चुचुकाकार अस्थि का सड़ना। अरुण-ज्वर के बाद हठीला, दूषित, दुर्गन्धित स्राव। बाहरी छेद मवाद से भरा हो। जीर्ण स्नायविक बहरापन। उपदंश रोग के कारण आये कान के रोग।

नाक—फटी हुई घायल, दर्दीली, सूजी, रुकी हुई। नाक की सूजन, सड़ना, दूषित स्राव, पीप-सा, खूनी। नाक में छेदन-दर्द, रात में अधिक। नाक में सड़ी महँक। अति संवेदनीय; गंध सहन न हो (कार्बोलिक एसिड)। नाक और मुँह से भयंकर दुर्गन्ध निकलना। नाक का सिरा गाँठदार।

मुँह—लड़कियों के वयःसंधिकाल में दुर्गन्ध आये, मुँह का स्वाद कड़वा या सड़ा हुआ। मसूड़े पके हुए।

चेहरा—गंडास्थि युगलक प्रवर्द्धन में फटन। जबड़े की अन्य हड्डियाँ सूजी हुईं।

गला—निगलने पर गड़न, ग्रन्थियों में दर्द। तालु का सड़ना।

आमाशय—भूख और प्यास अधिक होना, जी मिचलाने के साथ। उदर के सामने वाले और ऊपरी भाग की सूजन। पेट में जलन और गरम डकार।

उदर—दाहिना कोखा गरम और दर्दीला। वायु न सरे। वंक्षणीय की सूजन और पकन।

मूत्र—गँदला, क्रीम निकले दूध की तरह, गाढ़ी तलछट के साथ पेशाब का रुकना।

मलाशय—कब्ज, मल कड़ा और गठीला। रात का अतिसार और इसके साथ मलान्त्र में जलन।

पुरुष—फोतों की सूजन और दर्द, फोतों का जीर्ण कड़ापन। घोर तेजी। बालकों के फोतों की क्षीणता। अण्डकोष में पानी उतरना।

स्त्री—योनि की अति उत्तेजनीयता। गर्भाशय का बढ़ जाना और बाहर निकलना। बाँझपन, कष्टपूर्ण आक्षेप।

दिल—ऐसा संवेदन हो कि दो या तीन सेकण्ड के लिए रुक गया हो और फिर एकदम से भड़क उठे और साथ में पेट के अगले ऊपरी भाग में क्षीणता का बोध। धड़कन। नाड़ी की चाल तीव्र, दुर्बल, अक्रमिक। दिल का बढ़ना। रक्त-चाप ऊँचा होना। दिल के पर्दे की बीमारी जो अपकर्ष जैसी हो। (आरम ३०)।

श्वास-यन्त्र—रात में साँस की तेजी, घड़ी-घड़ी गहरी साँस ले, सीना और पंजर में चिलक।

हड्डियाँ—खोपड़ी की हड्डियों में दर्द, खाल के नीचे ढोंके, हड्डियों का बढ़ना और रात में दर्द होना। हलक, तालु और जबड़ों की हड्डियों का सड़ना। रोगग्रस्त हड्डी का दर्दीलापन, खुली हवा में कम, रात में अधिक।

अंग—शरीर का सारा खून सिर से निचले अंगों में दौड़े। निचले अङ्गों का शोथ। गरमी मानो शिराओं में खून खौल रहा हो। जोड़ों में पक्षाघातिक कटन दर्द। घुटने कमजोर।

नींद—अनिद्रा। सोते में जोर-जोर से सिसकना ! भयानक स्वप्न।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ठंढे मौसम में, ठंडक लगते समय। बहुत-से रोग जाड़े ही में उठते हैं, सूरज डूबने से निकलने तक।

संबंध तुलना कीजिये : आरम आर्स० (जीर्ण बृहद् धमनी प्रदाह; चर्म की टीबी, उपदंशीय सिर दर्द में क्षय रोग, रक्तहीनता और हरा कामला रोग, इससे भूख बढ़ती है।) आरम ब्रोम० (स्नायु दौर्बल्य इसके साथ अर्द्धकपाली दर्द, रात्रि में भयानक सपने, हृदय कपाट रोग।) आरम म्यूर—प्रदर; पीला, तेजाबी स्राव, जलन के साथ, हृदय लक्षण, ग्रन्थि रोग, जबान और जननेन्द्रिय पर मस्से, स्नायु-मण्डल का कड़ा पड़ना और पानी आना। अनेक भागों का कड़ापन। सुषुम्ना नाड़ी का असाधारण रूप से फैलना। दूसरा विचूर्ण। आरम म्यूर—(प्रमेह विष की दवा है। इससे दबे हुए स्राव फिर से निकलने लगते हैं। वयःसंधिकालीन गर्भाशय से रक्त प्रवाह। अग्रच्छिद्रा रोग। माथे की बायीं तरफ चमकन दर्द। थकावट, सभी कामों से घृणा। पेट में खींचन संवेदना। कैन्सर, जबान चमड़े जैसी कड़ी, जिह्वा प्रदाह के बाद कड़ापन।)

आरम म्यूर-केलि—डबल क्लोराइड—ऑफ पोटैशियम ऐण्ड गोल्ड—गर्भाशय के कड़ापन, और रक्त-प्रवाह में लाभदायक है।

आरम आयोडेटम—हृद्वेष्ट का जीर्ण प्रदाह, कपाट विषयक रोग, धमनी का कड़ापन, पीनस रोग, चर्म क्षय, अस्थि प्रदाह, डिम्ब शोथ, गर्भाशय अर्बुद, आदि

ऐसी बाधायें हैं जिनमें यह शक्तिशाली औषधि लाभदायक होती है। वृद्धावस्था में पक्षाघातिक अवस्था। आरम सल्फ (कम्पवात, बराबर सिर हिलाया करे, स्तन से रोग, सूजन दर्द, घुण्डी चिटकी हुई और भाला लगने जैसे दर्द के साथ)।

इसके अतिरिक्त एसाफीटि० (कान और नाक की हड्डियों का सड़ना।) सिफिलीन, कैली आयोड, हीपर०, मर्क; मेजे०, नाइट्रि० ऐसि०; फास्फ०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

३० शक्ति खासकर रक्त-चापाधिक्य में।

आरम म्यूरियेटिकम नैट्रानेटम (Aurum Mur. Nat.)

(सोडियम क्लोऑरेट)

इस औषधि का स्त्री-जननेन्द्रियों पर बहुत स्पष्ट प्रभाव होता है और इसी पर इसका चिकित्सा सम्बन्धी प्रयोग निर्भर है। गर्भाशय अर्बुद पर इसका प्रभाव सभी औषधियों से बढ़कर है। (बर्नेट) उपदंशीय अपरस। निचले जबड़े की हड्डी और झिल्ली की सूजन। अण्डकोष की सूजन। स्नायविक विकार से रक्त चापाधिक्य। धमनी का कड़ापन, उपदंशीय उरुस्तंभ।

जबान—जलन, चिलकन और कड़ापन। छोटे-बड़े जोड़ों के पुराने दर्द। जिगर का कड़ापन और बढ़ना। भीतरी गुर्दा प्रदाह।

स्त्री—गर्भाशय मुँह की सख्ती। युवा बालिका की धड़कन। उदर में ठंडापन। जीर्ण गर्भाशय प्रदाह और बाहर निकलना। गर्भाशय की गरदन और योनि का पकन-घाव। पुराना प्रदर रोग। योनि के साथ डिम्बाशय कड़े। जरायु का अल्प फैलाव। गर्भाशय का कड़ा पड़ना।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण।

एवेना सैटाइवा (Avena Sativa)

(कामन ओट)

मस्तिष्क और स्नायुमण्डल पर इस औषधि का श्रेष्ठ प्रभाव पड़ता है और उनकी पोषण-क्रिया बढ़ती है।

स्नायविक थकान, कामेन्द्रिय की दुर्बलता, अफीम खाने की आदत में इस दवा की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है। दुर्बल करने वाले रोगों में शक्ति बढ़ाने की उत्तम दवा है। बूढ़ों के स्नायविक कम्प, ताण्डव रोग, वात कम्प, मिर्गी रोग। रोहिणी के बाद आया पक्षाघात, हृदय का वात दर्द। सर्दी। तीव्र जुकाम (२० बूँद

गरम पानी में कई बार)। मद्यपान रोग। अनिद्रा खासकर मद्यपान वालों को। अफीम खाने का बुरा असर। स्त्री रोग की अनेक स्नायविक स्थितियाँ।

मन—किसी एक विषय पर मन न जमा सके।

सिर—मासिक धर्म के समय स्नायविक सिर दर्द, जिसमें चाँद पर और सिर के पिछले भाग में दर्द, जलन हो। पेशाब में चूना जाये।

स्त्री—नष्टरजः। कष्टरजः, इसके साथ में रक्तसंचार दुर्बल।

पुरुष—वीर्य स्राव, अधिक मैथुन के बाद आयी नपुंसकता।

अंग—अंग का सुन्नपन मानो पक्षाघात हो गया हो। हाथों की शक्तिक्षीणता।

संबंध—तुलना कीजिए : एलफैल्फा (एवेना की तरह बलवर्द्धक-पेशाब थोड़ा और दबा हुआ)।

मात्रा—अरिष्ट की १० से २० बूँद की एक खुराक, जहाँ तक हो सके गरम पानी के साथ।

अजाडिरैक्टा इण्डिका (Azadirachta Indi.)

(मारगोसा बार्क)

इस दवा से तीसरे पहर ज्वर और शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में वात दर्द पैदा होता है। सीने के पंजर और पसलियों में, पीठ और कन्धों में, अंगों में दर्द। हाथों में, खासकर हथेलियों और हाथ-पैर की अंगुलियों में गरमी, चुभन, टीस।

सिर—भुलक्कड़, उठने में चक्कर, सिर दर्द, खोपड़ी की चाल कोमल, आँखों में जलन, दाहिनी आँख के ढेले में दर्द।

सिर—थोड़ी गनगनी, तीसरे पहर आनेवाला ज्वर, चेहरा, हाथ-पैर बहुत गरम, शरीर के ऊपरी भाग में बहुत पसीना।

संबंध—तुलना कीजिए : सेड्रोन, नैट्रम म्यूर, आर्सेनिक।

बैसिलिनम (Bacillinum)

(ए मसेरेशन आफ टिपिकल ट्यूबरक्युलस लंग इण्ट्रोड्यूस्ड बाई डॉ० बर्नेट)

तपेदिक के इलाज में इसका सफलता के साथ प्रयोग किया गया है, इसका अच्छा असर बलगम पर देखा गया है और जो कम हो जाता है और उसमें वायु की मात्रा अधिक होकर मवाद कम होता है। कई प्रकार की बिना तपेदिक वाली बीमारियों में भी जो पुरानी हैं, इस दवा का सफल प्रयोग किया गया है, खासकर

जब वायु-नलिका समूह रोगग्रस्त हो और साँस में कष्ट हो। श्वास-यन्त्र से मवाद जाना। रोगी कम बलगम थूकता है।

बैसिलिनम वृद्ध लोगों के फुफ्फुस रोग में खास तौर पर सांकेतिक है, जब कि पुराने नजले के लक्षण साँस-यन्त्र में कम रक्त की अवस्था के साथ, रात में दम घुटने के हमले और कष्टदायक खाँसी भी हो। दम घोंटने वाला दमा। क्षय रोग सम्बन्धी मस्तिष्क प्रदाह। दाँत पर जमी मैल (पपड़ी) छुड़ाने में सहायता देता है। जुकाम का बार-बार हमला।

सिर—चिड़चिड़ा, सुस्त। तेज, गहरा सिर दर्द, जैसे किसी बन्धन में हो। सिर का दाद। पलकों पर अकौता।

उदर—उदर पीड़ा। पुट्ठे की ग्रन्थियाँ बढ़ी हों, मध्य आन्त्र का क्षय रोग। नाश्ते से पहले एकाएक दस्त का हमला। कठोर कब्ज और दुर्गन्धित वायुस्खलन।

श्वास-यंत्र—घुटन। नजले के कारण श्वास-कष्ट। तर दमा, बलगम का फुद-फुदाना और पीब जैसा गन्दा बलगम निकलना।

नोट—वायुनलिका प्रदाहिक, रोगियों के बलगम में विषैले जीवाणु मिले रहते हैं। इसलिए बैसिलिनम स्पष्ट रूप से सांकेतिक होता है। (कारटियर) अक्सर फुफ्फुस में संचित रक्त को कम करता है और क्षय रोग की दूसरी दवाओं के लिए रास्ता साफ करता है।

चर्म—दाद, भूसी छूटने का चर्म रोग। पलकों पर अकौता। गरदन की ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई और कोमल।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में और तड़के, ठण्ढी हवा से।

संबंध—एण्टिमोन०, आयोड, लैके०, आर्सेनिक; आयोड, मायो सोटिस, लेविको ५-१० बूँद सहायक दवा के रूप में जहाँ बहुत कमजोरी हो। (वरनेट)। पूरक : कैल्के० फास, कैली कार्ब।

तुलना कीजिए—इसका असर ठीक काख साहब के ट्युबरकुलिनम की तरह है। दोनों तपेदिक की प्रवणता में लाभदायक होती हैं जब कि अभी तपेदिक न बना हो। ग्रन्थियों, जोड़ों, चर्म और हड्डियों के क्षय रोग के शुरू में। सोराइनम इसकी जीर्ण सम औषधि है। बेसिलिन टेस्टियम (खासकर शरीर के निचले भाग की टी० बी० में काम करती है।)

मात्रा—मात्रा पर विचार बहुत जरूरी है। ३० शक्ति के नीचे नहीं देना चाहिए और न अधिक बार दोहराना चाहिए। हफ्ते में एक खुराक परिवर्तन लाने के लिए काफी है। इसका असर तेज होता है और अच्छा प्रभाव जल्द दिखाई देना चाहिये, नहीं तो दोहराने की कोई जरूरत नहीं है।

बैडियागा (Badiaga)

(फ्रेश वाटर स्पंज)

पेशियों और बन्धनियों की दुखन, जो हरकत से और कपड़े की रगड़ से बढ़े; ठण्डक असह्य। ग्रन्थियाँ सूजी हुई। बाघी, गुलाबी दाने।

सिर—बढ़ा हुआ और भारी मालूम पड़े। माथे और कनपटी में दर्द, आँखों के ढेलों तक बढ़े, तीसरे पहर अधिक हो। आँखों के नीचे नीलापन। रूसी झड़ना। खोपड़ी की खाल दर्दीली, सूखी, पपड़ीदार। जुकाम, छींक, पनीला स्राव। दमा रोग ऐसी साँस और दम घोंटने वाली खाँसी के साथ इन्फ्लुएंजा। थोड़ी आवाज भी मालूम पड़े।

आँख—बायीं ऊपरी पलक में फड़कन, ढेले कोमल, ढेलों में टीस। ढेलों में रुक-रुक कर दर्द ३ बजे तीसरे पहर उठे।

श्वास-यंत्र—खाँसी, तीसरे पहर बढ़े, गरम कमरे में कम। श्लेष्मा मुँह और नाक में से जो बाहर जा पड़े। काली खाँसी, गाढ़ा, पीला बलगम, झटके से निकले। मौसमी फ्लू, दम फूलने के साथ। सीने में फुफ्फुसावरण प्रदाह ऐसी चिलक, गरदन और पीठ में भी।

आमाशय—मुँह गरम। अधिक प्यास। पेट के गड्ढे में कोंचन दर्द जो सीना और कन्धे की हड्डी तक बढ़े।

स्त्री—जरायु से रक्तस्राव, रात में अधिक, इसके साथ सिर बहुत बड़ा मालूम पड़े (आर्स०)। स्तनों का सड़ना (कैंसर) (ऐस्टरियस, कोन०, कार्बो० ऐनि०, प्लम्बम आयोड)।

दिल—दिल के क्षेत्र में अवर्णनीय कष्ट जैसा लगे, दर्द और कच्चापन के साथ उड़ती हुई चिलक सभी जगह।

चर्म—छूने में पीड़ा हो। सिकुड़न, दरारें।

पीठ—गरदन की जड़ और कन्धों के डैनों में चिलकन, पीठासे, कमर, चूतड़ और निचले अंगों में दर्द। बहुत अकड़ी गरदन। पेशियाँ और चमड़ा दर्दीला मानो चोट खाये हों।

घटना-बढ़ना—ठण्डक से बढ़े, गरमी से कम हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : मर्क; (सामान मगर उल्टा घटना-बढ़ना) स्पांजिया, कैली हाइड्रो, फाइटोलैक्का; कोनियम।

पूरक—सल्फर, मर्क० आयोड०।

मात्रा—पहली से छठीं शक्ति।

बैलसेनम पेरूवियेनम (Balsamum Peruvianum)

(पेरुवियन बालसैम फ्राम माइरोक्सिलोन पेरियरी)

वायुनलिका के नजले में लाभदायक है, जब कि बलगम अधिक और पीब जैसा निकले। कमजोरी, यक्ष्मा (टी० बी०) ज्वर।

नाक—मात्रा में अधिक, गाढ़ा स्राव। अकौता, घाव के साथ। जीर्ण, पीब जैसा नाक का नजला।

पेट—भोजन और श्लेष्मा की कै। आमाशय का नजला।

सीना—वायुनलिका समूह प्रदाह (ब्रांकाइटिस) और क्षय रोग जिसमें गाढ़ा, क्रीम जैसे रंग का बलगम अधिक निकले। सीने में तेज खड़खड़ाहट (काली सल्फ, एण्टिम टार्ट)। तर खाँसी। क्षय ज्वर और रात पसीना साथ में क्षोभजनक खाँसी और थोड़ा बलगम निकले।

मूत्र—थोड़ा अधिक श्लेष्मा जैसा तलछट। मूत्राशय का नजला। चिमाफि०।

सम्बन्ध—बैलसेमम टोलुटैनम—दि बालसैम ऑफ माइरोक्सिलोन टोलुइफेरा (जीर्ण वायुनलिका प्रदाह, अधिक बलगम के साथ) ओलियम कैरियोफाइलम—आयल ऑफ क्लोव—अधिक मात्रा में पीबवाले बलगम के साथ—३ से ५ बूँद या कैप्सूल में दें।

मात्रा—पहली शक्ति। क्षय ज्वर ६x।

गैरहोमियोपैथिक प्रयोग : कठिन घाव की कच्ची जगह को बल देता है। सूखी खुजली, स्तन घुण्डी फटी हुई, खाज में, घाव को भरता है दुर्गन्ध को दूर करता है। श्वास रोग में फुहारे से १ प्र० श० शोल्यूशन सुरासार या ईथर में बनाकर (स्प्रे)। जीर्ण वायु नलिका प्रदाह में बलगम निकलने के लिये खिलाया जाता है। मात्रा ५ से १५ बूँद गोंद में घोल या अण्डे में घोट कर इमलशन बनाकर दें।

बैप्टिसिया (Baptisia)

(वाइल्ड इण्डिगो)

इस दवा के लक्षणों में कमजोरी पायी जाती है। यह मन्द ज्वर पैदा करती है, रक्त का दूषित होना, मलेरिया विष, घोर पतनावस्था भी इसमें पायी जाती है। अवर्णनीय विकार की अनुभूति। घोर पेशिक पीड़ा और सड़ाव के लक्षण सदा मौजूद रहते हैं। सभी स्राव घृणित होते हैं—साँस, मल, मूत्र, पसीना इत्यादि। महामारी के रूप में फैला हुआ—इन्फ्लुएञ्जा। बालकों की आँतों का जीर्ण विषैलापन और साथ में दूषित मल और डकार।

नीची शक्ति में बैप्टिसिया ऐसे जीवाणु उत्पन्न करती है जो ज्वर के जीवाणुओं को नष्ट करते हैं। इस तरह यह दवा शरीर में मोह ज्वर के विष को रोकने की शक्ति पैदा करती है। आन्त्रिक ज्वर फैलाने वाले रोगी। आन्त्रिक ज्वर नाश करने का टीका लगवाने के बाद आये उपद्रवों के लिए हितकर है। सविराम नाड़ी, खासकर वृद्ध में।

मन—उन्मत्त, विचरण भाव। विचार-शक्तिहीनता। मानसिक गड़बड़ी। विचार गड़बड़। अपना शरीर बँट जाने का भ्रम। सोचता है कि उसका शरीर टूट गया है या बिखर गया है और बिस्तर पर करवटें बदला करता है तथा अपने को जोड़ने की चेष्टा करता है (काजूपुटम)। प्रलाप, चित्त-भ्रम, बुदबुदाना। पूर्ण उदासीनता। बातें करते-करते सो जाता है। शोकग्रस्त, अचैतन्यता के साथ।

सिर—चक्कर, नाक की जड़ पर दाब। माथे का चमड़ा कसा मालूम हो, सिर के पीछे की तरफ खिंचाव प्रतीत हो। बहुत कड़ा मालूम पड़े, भारी; सुन्न। आँखों के ढेलों का दर्दीलापन। मस्तिष्क दर्दीला लगे। अचैतन्यता, बात करते-करते सो जाये। आंत्रिक ज्वर की अवस्था के आरम्भ में आया बहरापन। पलकें भारी।

चेहरा—मतिमंद चेहरा। गहरा लाल। नाक की जड़ में दर्द। जबड़े की पेशियाँ तनी हुई।

मुँह—स्वाद फीका, कड़वा। दाँत और मसूढ़े दर्दीले; घाव वाले। साँस दुर्गन्धित। जबान जली मालूम पड़े। पीली, कत्थई, किनारे लाल और चमकदार। बीच में सूखी और कत्थई, किनारे सूखे और चमकदार; सतह चिटकी और दर्दीली। केवल तरल पदार्थ निगल सके। जरा भी कड़ी चीज गला घोट दे।

गला—तालुमूल और मुलायम तालु गहरा लाल। घुटन आये; गलनली का सिकुड़न (कैजूपुटम) ठोस भोजन निगलने में बड़ी कठिनाई। बिना दर्द का गला-प्रदाह और बदबूदार स्राव। दिल के छिद्र की सिकुड़न।

आमाशय—केवल तरल पदार्थ निगल सके, गलनली के आक्षेप से कै हो जाय। आमाशयिक ज्वर। अरुचि। पानी की बराबर इच्छा। आमाशय में भारी दुर्बलता। कौड़ी प्रदेश में दर्द। कड़ी चीज रखी मालूम पड़े। (एबीज निग०) बियर से सभी लक्षण बढ़ें (कैलो ब्राइक्रो०) हृदय छिद्र की आक्षेपिक सिकुड़न तथा पेट और आँतों का घाव।

उदर—दाहिना बाजू स्पष्ट रूप से रोगग्रस्त होता है। तनाव और गड़गड़ाहट, जैसे प्रदाह आया हो। पित्ताशय क्षेत्र के ऊपर दर्द दस्त के साथ। मल बहुत बदबूदार, पतला, काला, खून मिला। जिगर प्रदेश में दर्द। वृद्ध लोगों की पेचिश।

स्त्री—मानसिक शोक-ग्रस्तता, शोकाक्रमण दौर्बल्य, मंदज्वर; रात्रि जागरण के कारण गर्भपात का भय। मासिक-धर्म समय से बहुत पहले, बहुत अधिक। प्रसव स्राव तीखा, दूषित। प्रसव ज्वर।

श्वास-यन्त्र—फुफ्फुस दबे हुए मालूम पड़ें साँस लेने में कष्ट, खिड़कियाँ खोले। डरावने सपनों और दम घुटने के डर से सोने से डरता है। सोने में सिकुड़न।

पीठ और अंग—गरदन थकी हो। कड़ापन और दर्द, बाँहों ओर पैरों में टीस और तनाव। त्रिकास्थि, कटि-भाग और टाँगों में दर्द। चोटीलापन और छिलन। शय्यागत।

नींद—अनिद्रा और बेचैनी। बिखरे टुकड़ों के भयंकर स्वप्न। बिस्तर पर शरीर बिखरा मालूम पड़े, अपने को इकट्ठा न कर सके। प्रश्न का उत्तर देते-देते सो जाये।

चर्म—सारे शरीर और अंगों पर लाल धब्बे। चर्म में जलन और गरमी (आर्सेनिक)। सड़े घाव, अचैतन्यता, मंद प्रलाप शिथिलता के साथ।

ज्वर—कपकपी, और सारे शरीर के चोटीलापन के साथ वात दर्द। शरीर गरम कभी-कभी कपकपी। लगभग ११ बजे दिन के कपकपाहट। मंद ज्वर। मोह ज्वर। जहाजी बुखार।

घटना-बढ़ना—तुलना कीजिए: ब्रायोनिया और आर्सेनिक के लाभ को सम्पन्न करने के लिए। एलैन्थस से केवल दर्द की अधिकता का अन्तर है। बैप्टिसिया कम दर्दीला है। रस०, म्यूरियेट० ऐसिड, आर्सेनिक, ब्रायोनिया, आर्निका, एचीनिशिया, पाइरोजन। बैप्टिस्टा कनफ्यूजिया (दाहिने जबड़े में दर्द और बायें मोखे में दाब, जिससे साँस कष्ट बढ़े और उठ खड़े होने को मजबूर हो)।

मात्रा—अरिष्ट से १२ शक्ति तक। प्रायः अल्पकालीन प्रभाव।

बैरोस्मा क्रेनाटा (Barosma Cro.)

(बूचू)

जननेन्द्रियों तथा मूत्र-यन्त्र-मण्डल पर इसका विशेष प्रभाव होता है, दूषित मवाद का स्राव। मूत्राशय उत्तेजित, मूत्राशय का नजला, मूत्र-ग्रन्थि (प्रोस्टेट) रोग। पथरी। प्रदर।

सम्बन्ध-तुलना कीजिए: कोपेवा, थुजा, पोपुलस, चिमैफि०, डिओस्मा देखिये।

मात्रा—अरिष्ट या पत्तियों की चाय।

बैराइटा एसेटिका (Baryta Acet.)

(एसिटेट ऑफ बेरियम)

पक्षाघात उत्पन्न करता है, जो निचले अङ्गों से ऊपर को बढ़ता है, वृद्ध लोगों की खाज।

मन—भुलक्कड़, अधिक आगा-पीछा करना। आत्मनिर्भरता की कमी।

चेहरा—चेहरे पर मकड़ी के जाले जैसा संवेदन।

अङ्ग—बायें पैर में नीचे तक खींचन दर्द; जलन, चिलिक के साथ रेंगन। पक्षाघात। पेशियों और जोड़ों में कटिवात और वात पीड़ा।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण, दोहराना चाहिए।

बैराइटा कार्ब (Baryta Carb)

(कार्बोनेट ऑफ बैराइटा)

बचपन और बुढ़ापे में विशेष सांकेतिक। यह दवा गण्डमालिक बच्चों की सहायता करती है; खासकर यदि वे शारीरिक और मानसिक क्षेत्र में पिछड़े हों, उनकी बढ़ोत्तरी और उन्नति रुकी हो। आँखों में कण्ठमालिक प्रदाह, उदर फूला हुआ। जुकाम जल्दी-जल्दी हो और सदा तालुमूल सूजे रहें। मसूढ़ों से खून बहे। वृद्ध लोगों के रोग, जब छिन्नता आने लगी हो—हृदय सम्बन्धी और मस्तिष्क सम्बन्धी—जिनकी मूल ग्रन्थियाँ फूल गई हों या अंड कड़े पड़ गये हों, सर्दी असह्य हो, दूषित पैर का पसीना, बहुत कमजोरी और थकावट, बैठना, लेटना या किसी चीज के सहारे ओठंगना पड़े। अजनबी लोगों से मिलने में घबरायें। गले के भीतर गिरनेवाला नजला, इसके साथ अक्सर नकसीर बहना। अक्सर उन युवकों के अनपच रोग में लाभदायक है जिन्होंने हस्त-मैथुन किया हो। यह शरीर के ग्रन्थि-निर्माण को प्रभावित करता है और सर्वांग छिन्नता में लाभदायक है, खासकर धमनी के पर्दों पर, धमन्यार्बुद और बुढ़ापे की कमजोरी में। बैराइटा हृदय-पट के लिए विष है जो हृदय की पेशियों और धमनियों को प्रभावित करता है। धमनी-अर्बुद। रक्तनलियाँ मुलायम और छिन्न होती हैं और तन जाती हैं, मांस-अर्बुद हो जाते हैं, फट जाता है और मूर्च्छा रोग हो जाता है।

मन—स्मरण शक्ति मिट जाती है। मानसिक दुर्बलता। अस्थिर, आत्म-निर्भरताहीन। बुढ़ापे के मानसिक विषाद। मानसिक गड़बड़ी। लज्जा। अनजाने लोगों से घबराये। बालबुद्धि; तुच्छ बातों पर दुःखी।

सिर—चक्कर, चिलकन, धूप में खड़े होने से सिर के भीतर तक कष्ट बढ़े। मस्तिष्क ढीला मालूम हो। बाल झड़ें। कौतूहल। वसार्बुद।

आँख—पुतली बारी-बारी से फैले और सिकुड़े। रोशनी असह्य। आँख के सामने जाला। मोतियाबिन्द (कैल्के०, फास०, सिली०)।

कान—कम सुनना। कड़कड़ाहट की आवाज। कानों के चारों तरफ की ग्रन्थियाँ सूजी हुई और दर्दीली। नाक छिनकने पर आवाज गूँजना।

नाक—सूखी, छींक आना, जुकाम, ऊपरी होंठ और नाक की सूजन के साथ। नाक में धुआँ ऐसा मालूम पड़े। गाढ़ा पीला श्लेष्मा निकले। अकसर खून बहे। नथनों की दीवारों में पपड़ी जमे।

चेहरा—पीला फूला हुआ, मकड़ी का जाला तना ऐसा लगे (एलुमिना) ऊपरी होंठ सूजा हुआ।

मुँह—जागने पर मुँह सूखा हो। मसूढ़ों से खून बहे, दाँतों से हटे हुए हों। मासिकधर्म के पहले दाँत दर्द। मुँह छालों से भरा हो, दूषित स्वाद। जबान का लकवा जबान के सिरे पर कड़कन, जलन दर्द प्रातःकाल लार बहे। भोजन अन्दर आते ही अन्न की नाली के मुँह पर झटके आएँ।

गला—कान की निचली ग्रन्थियों और तालुमूल की सूजन। सर्दी जल्द हो, चिलकन और चुभन दर्द के साथ। तालुमूल प्रदाह। जुकाम होते ही तालुमूल पके। तालुमूल सूजे हुए। शिराएँ सूजी हुईं। निगलते समय कड़कन का दर्द, खाली निगलने से अधिक हो। गलकोष में गुल्ली ऐसा संवेदन केवल तरल पदार्थ ही निगल सके। गले में भोजन उतरते ही झटका आये जिससे गला दबे और साँस रुके। (मर्क०, कारो०, ग्रैफाइट०)। आवाज के अधिक प्रयोग से आया रोग। तालुमूल, गला कोष या स्वरनली में गड़न का दर्द।

आमाशय—लार आये, हिचकी, डकार, जो पत्थर ऐसे दाब को कम करे। भूख मगर खाने से इनकार। भोजन करने के बाद ही दर्द और भारीपन आये, कौड़ी में कोमलपन के साथ (कैली कार्ब)। गरम भोजन करने से रोग बढ़े। वृद्ध में आमाशयिक दौर्बल्य, साथ में और भी कोई कठिन दोष।

उदर—कड़ा, तना और फूला हुआ। शूल हो। मध्यान्त्र ग्रन्थियों का बढ़ना। भोजन निगलते ही दर्द हो। भूख के साथ पुराना शूल, परन्तु भोजन से अरुचि हो।

मलांत्र—कब्ज, कड़े, गठीले मल के साथ। पेशाब करते समय बवासीर निकले। मलान्त्र में रेंगन। गुदा टपके।

मूत्र—जब कभी रोगी पेशाब करता है; बवासीर बाहर निकल आती है। पेशाब लगना। पेशाब करते समय मूत्रमार्ग में जलन।

पुरुष—इच्छा घटे और समय से पहले नामर्दी आये। मूत्रग्रन्थि का बढ़ना। अण्डकोष बढ़े।

स्त्री—मासिक धर्म से पहले पेट और पिठासे में दर्द। मासिक स्राव।

श्वास-यंत्र—सूखी, दम घोटने वाली खाँसी, खासकर वृद्ध में। बलगम भरा हो, मगर बाहर निकलने की शक्ति न हो, मौसम बदलने पर बढ़े (सेनेगा) जैसे स्वरनली में धुआँ भरा हो, ऐसा मालूम पड़े। जीर्ण स्वर लोप। सीने में खिलकन, जो साँस भीतर खींचने में बढ़े। फुफ्फुस धुएँ से भरे लगें।

दिल—धड़कन और दिल में कष्ट, धमन्यार्बुद (लाइको०)। दिल की गति को पहले बढ़ाती है; रक्तचाप अधिक हो जाता है, रक्त-नलियाँ सिकुड़ती हैं। बायें करवट लेटने से धड़कन बढ़े, खासकर उसपर सोचने से। नाड़ी भरी और कड़ी। पैर का पसीना दबने से दिल के लक्षण उभरें।

पीठ—सिर के पिछले भाग की जड़ में ग्रन्थियों की सूजन। गरदन पर चर्बीले फोड़े। कंधों के डैनों के बीच में चोटीला दर्द। त्रिकास्थि में तनाव। रीढ़ कमजोर।

अङ्ग—काँख की ग्रन्थियों में दर्द। ठंडे, लसीले पैर (कैल्के०)। दुर्गन्धित पैरों का पसीना। अंगों का सुन्न होना। घुटने से अण्डकोष तक ठिठुरने लगे, बैठने पर लुप्त हो। पैर की अंगुलियाँ और तलवे दर्दीले, टहलने से तलवे में दर्द। जोड़ों में दर्द, निचले अंगों में जलन, पीड़ा।

नींद—सोते समय में बात-चीत करना, बार-बार जागे; बहुत गरम मालूम हो। सोते में फड़कन।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : लक्षणों को सोचने से, धोने से, दर्दीली करवट लेटने से। घटना : खुली हवा में टहलने पर।

संबंध—तुलना : डिजि०, रेडियम, एरेगै। ऑक्टीड्राप; टेस्टैबा०।

पूरक : डल्का०; साइलीशिया; सोरिन०।

बेमेल : कैल्के०।

विषैली मात्रा का शामक : एप्सम सॉल्ट।

मात्रा—३ से ३० शक्ति, आखिरी शक्ति तालुमूल प्रदाह की सम्भावना हटाने के लिए। बैराइटा मन्द गति से काम करती है, दोहराना ठीक है।

बैराइटा आयोडेटा (Baryta Iod.)

(आयोडाइड ऑफ बैराइटा)

लसिकावाहिनियों पर काम करती है, रक्त में सफेद कणों की अधिकता। तालु-मूल प्रदाह। ग्रन्थियाँ कड़ी, खासकर तालुमूल और स्तन की। कण्ठमालिक नेत्र प्रदाह, गरदन की ग्रन्थियों की सूजन के साथ और बौनापन।

संबंध—तुलना कीजिए : एकोन लाइकोटोनम (ग्रीवा, काँख और स्तन ग्रंथियों की सूजन), लैपिस; कोन०, मर्क० आयोड०, कार्बो० ऐनि०।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण।

बैराइटा म्यूरियेटिका (Baryta Mur.)
(बैरियम क्लोराइड)

वृद्धों तथा शारीरिक और मानसिक दृष्टि से अविकसित व्यक्तियों के कष्टों में बैराइटा के भिन्न-भिन्न लवणों की आवश्यकता होती है। इस अवस्था में धमनी का ऐसा कड़ापन आना जो उपर्युक्त ढङ्ग का हो। बूढ़े लोगों का सिर दर्द मगर बिना चरम सीमा पर पहुँचे; जबकि इसका कारण मस्तिष्क में रक्त की कमी हो। चक्कर और कानों में आवाजें आना। निचली आँतों पर भी काम करती है, खासकर मलान्त्र पर, पेशियों और जोड़ों पर। अधिक चलने जैसा कड़ापन और कमजोरी। सफेद रक्त कण बढ़ें। अधिक तनाव और रक्त-नलियों का अपकर्ष। नाड़ी की गति में तनाव। धमनी का कड़ापन (प्लम्ब, सिकेलि)।

इस औषधि को खाते ही दिल के छेदों में कड़ापन और सिकुड़न तथा पेट की कौड़ी प्रदेश में कोमलपन आता है, जो कि बार-बार सत्य सिद्ध हुआ है, इसके अतिरिक्त इसका प्रयोग धमनी अर्बुद और जीर्ण तालुमूल की वृद्धि में भी होता है : स्त्रियों में और पुरुषों में अत्यधिक कामोन्माद। अकड़न। सभी तरह का पागलपन जब कि काम इच्छा अधिक हो। शरीर को बर्फ जैसी ठंडक, पक्षाघात के साथ। मस्तिष्क और रीढ़ का अपकर्ष। पेशियों की ऐच्छिक शक्ति नष्ट हो जाती है; मगर पूर्ण चेतना बनी रहती है इन्फ्लुएञ्जा और गले में झिल्ली आने के प्रदाह के बाद आंशिक पक्षाघात। सुबह को सुस्ती, खासकर टाँगों में कमजोरी, पेशियों के तनाव के साथ। बच्चे जो मुँह खोले रहते हैं और नाक से बोलते हैं। मंदबुद्धि दिखाई दें और ऊँचे सुनें।

नाक—सनसनाहट, भनभनाहट। चबाने, निगलने और छींकने पर आवाजें सुनाई दें। कान-दर्द ठंडा पानी धीरे-धीरे पीते समय कम रहे। कान की ग्रन्थि सूजी हुई। घृणित स्राव। नाक छिनकने से कान के निचले भाग में हवा भरे।

गला—निगलना कठिन। तालुमूल बढ़े हुए। गलकोष और गलकर्णनली का आंशिक लकवा, छींकने और आवाजों के साथ। नलियाँ बहुत अधिक खुली मालूम पड़ें।

श्वास-यन्त्र—वृद्ध लोगों के वायुनलिका समूह रोग, इसके साथ दिल का बढ़ जाना। यह दवा बलगम बाहर निकालती है। अधिक श्लेष्मा जमा होना और लड़खड़ाना और कष्ट से निकालना। फुफ्फुस की धमनी का कड़ापन, इसलिए दमा रोग और धमनी के तनाव को कम करती है।

आमाशय—पेट के अगले ऊपरी भाग का सुन्न होना इस दवा का पुराने रोगों में एक सांकेतिक लक्षण है। मिचली और कै। गरमी की संवेदना जो सिर में चढ़े।

मूत्र—यूरिक एसिड का अधिक होना; क्लोराइड का कम पड़ना।

उदर—थरथराहट (सेलिसि०)। क्लोम प्रणाली का कड़ापन, उदर का अर्बुद। वंक्षणीय ग्रन्थि की सूजन। मलान्त्र में खिंचाव का-सा दर्द।

सम्बन्ध—अंगों के कड़ा पड़ने में, खासकर रीढ़ की डोरी, जिगर और दिल में तुलना कीजिए: प्लम्बम मेट० और प्लम्बम आयोड०। आरम मेट० भी। (जो कि कड़ापन में और दूसरी दवाओं से अधिक लाभ करेगी। कई जगहों का कड़ापन, वज्र-पात जैसी पीड़ा, कम्प; अंगुलियों का फैलाना)।

मात्रा—३ विचूर्ण, दोहराना अच्छा है।

बेलाडोना (Belladonna)

(डेडली नाइटशेड)

बेलाडोना स्नायुमण्डल के सभी भागों पर काम करता है, वहाँ रक्त संचय करता है, प्रचण्ड उत्तेजना लाता है; ज्ञानेन्द्रियों की क्रियाओं में उलट-फेर करता है। फड़कन, अकड़न और दर्द भी आता है। इसका स्पष्ट कार्य रक्त-वहा नाड़ी-मण्डल, चर्म और ग्रंथियों पर भी होता है। बेलाडोना में सदा गरम, लाल चर्म, लाल चेहरा, चमकती आँखें, गर्दन की बड़ी रग में फड़कन आती है। उत्तेजित मानसिक अवस्था। सभी इन्द्रियाँ उत्तेजित, अशांत। निद्रा; अङ्ग फड़कना व कड़ापन, मुँह का और गले का सूखापन, पानी से घृणा के साथ स्नायविक शूल जो तेजी से उठे और गायब हो जाये, आदि लक्षण हैं (आविसटोपिस)। गरमी, लाली, थरथराहट और जलन। बच्चों की बड़ी दवा मिर्गी का दौरा और फिर मिचली तथा कै। अरुण-ज्वर पाये जाते हैं यह उसका प्रतिषेधक भी है। यहाँ ३० शक्ति का प्रयोग कीजिये। बहिः निस्सृत चक्षुगोलक तथा हृदयस्पन्दन के साथ गलगण्ड। वायुयान चालकों का 'वायु-रोग' इसके लक्षणों से मिलता-जुलता है। उन्हें यह रोग रोकने के लिए दीजिए। प्यास, चिन्ता या भय, इनमें नहीं पाया जाता। बेलाडोना में तीव्रतापूर्वक और एकाएक आक्रमण पाया जाता है। चुल्लिकाधार की विषैली अवस्था में १x प्रयोग करना चाहिए (बीब)।

मन—रोगी अपनी ही दुनिया में रहता है, भूत-प्रेत से घिरा हुआ, चारों तरफ के वातावरण की वास्तविकता से अनभिज्ञ जब कि आँखों का पर्दा वास्तविक चीजें ग्रहण नहीं कर सकता। काल्पनिक वस्तुओं के झुण्ड उसके चारों तरफ घूमते-फिरते हैं। रोगी केवल इन्हीं दृश्यों और विलक्षण भ्रमों के संसार में विचरता रहता है। दृष्टि-भ्रम, भयानक देव, भयानक रूप देखता है। प्रलाप। डरावन आभास। प्रचण्ड, क्रोधित, दाँतों से काटता है, मारता है; भाग निकलना चाहता है। अचेतनता। बात-चीत करना पसन्द न करे।

सिर—चक्कर, इसके साथ पीछे या बायीं बगल गिरना। जरा भी छूये जाने से बहुत संवेदनायें। बहुत थरथराहट और गरमी। धड़कन सिर में गूँज, साँस की तंगी के साथ। दर्द, भरापन खासकर माथे में; कनपटी और गर्दन के पिछले भाग में भी। नजले का स्राव दबने से आया सिर का दर्द। एकाएक चीख मारे। दर्द, जो रोशनी, आवाज, धक्के, लेटने से और तीसरे पहर बढ़े; दाब से और ओठंगकर लेटने से कम हो। तकिये में सिर गड़ाये, पीछे खिला हुआ और करवटें बदले। बराबर कराहना। बाल टूटें, सूखे और झड़ें। सिर दर्द दाहिनी तरफ और लेटे समय अधिक। बाल कटवाने से आया बुरा असर; सिर दर्द; जुकाम इत्यादि।

चेहरा—लाल, नीलिमायुक्त, लाल, गरम सूजा हुआ, चमकीला, चेहरे की पेशियों में झटके आएँ। ऊपरी होंठ की सूजन। चेहरे का स्नायुशूल, पेशी फड़कन और लाली के साथ।

आँखें—लेटने पर गहराई तक थरथराहट। पुतली फैली हुई (ऐग्नस)। आँखें सूजी हुई और बाहर उभरी मालूम पड़ें, घूरना, चमकीली; पुतली का सफेद भाग लाल, सूखी, जलन, रोशनी असह्य, आँखों में तेज चिलकन। आँखों के ढेले बाहर निकलें। दृष्टिभ्रम, चमकीली चीजें दिखाई दें। द्विदृष्टि ऐंचापन, पलकों की अकड़न। मालूम पड़े कि आँखें आधी बन्द हैं। पलक सूजी हुईं। तलदेश में रक्त संचित हो।

कान—बीच और बाहरी कान में फटन दर्द। भिनभिनाहट की आवाजें। पर्दा बाहर को उठा हुआ। काम ग्रन्थियाँ सूजी हुईं। तेज स्वर असह्य। सुनने की शक्ति बहुत तेज। बिचले कान का प्रदाह। कान पीड़ा से प्रलाप हो। बच्चा सोने में चिल्ला उठता है। कान की गहराई में टपकन और चोट पड़ने की तरह का दर्द हो; दिल की धड़कन के साथ-साथ हो। कान के भीतर का रक्तार्बुद। कर्ण-गलनली का तीव्र और अर्द्ध तीव्र रोग। कानों में अपनी ही आवाज गूँजना।

नाक—काल्पनिक महँक आये। नाक के सिर पर टपकन। लाल और सूजी हुई। नकसीर, उसके साथ चेहरा लाल। जुकाम, खून मिली श्लेष्मा।

मुँह—सूखा, दाँतों में टपकन के साथ। मसूढ़ों का फूलना। जबान के किनारे लाल। गोल, सूजी हुई जबान। दाँत पीसना। जबान सूखी हुई और दर्दीली। हकलाना।

गला—सूखा, पालिश किया ऐसा। सुर्ख, सूजन (जनसंग) लाल, दाहिनी तरफ अधिक। तालुमूल बढ़े हुए। गले में घुटन मालूम पड़े। निगलने में कठिनाई, तरल पदार्थों का निगलना कठिन। ढोंके ऐसा संवेदन। गला का छिद्र सूखा, सिकुड़ा मालूम दे। गले में आक्षेप। बराबर निगलते रहना चाहे। खुचन। निगलने की पेशियाँ बहुत उत्तेजित। श्लैष्मिक झिल्लियों का बढ़ना।

आमाशय—अरुचि । दूध और मांस से घृणा । कौड़ी प्रदेश मे आक्षेपिक दर्द । सिकुड़न, दर्द रीढ़ तक दौड़े । मिचली और कै । ठंडे पानी की तीव्र प्यास । आमाशय में झटके । खाली मिचली । तरल पदार्थ से आतंकित । आक्षेपिक हिचकी । तरल पदार्थ पीने का भय । कै, किसी तरह न रुके ।

उदर—तना, गरम । बड़ी आड़ी-तिरछी आँत गद्दी की तरह ऊपर उठा दो । कोमल सूजा हुआ । दर्द जैसे हाथ से कस के पकड़ा हो, झटका, दाब से कष्ट बढ़े । आरपार । कटन दर्द, बायीं तरफ चिलकन, जो खाँसते, छींकते, छूते समय बढ़े । खून। असह्य, बिस्तर का कपड़ा भी स्पर्श किया जाना सहन न हो (लैकेसिस) ।

मल—पतला, हरा, मरोड़ के साथ, खड़िया की तरह टोंक । मल-त्यागने के समय कम्पन । मलान्त्र में चुभन दर्द, आक्षेपिक सिकुड़न, एकाएक रुकना । बवासीर, पीठ दर्द के साथ । काँच निकलना (इग्नेशिया, पोडोफा०)

मूत्र—रुकना । तरुण संक्रामकता, मूत्राशय में कोड़े रेंगने ऐसा संवेदन । पेशाब थोड़ा, अधिक कूँथन के साथ, गहरा, गन्दला, चूना अधिक मिला हो । मूत्राशय बहुत कोमल । बिना इरादा, रुक-रुक कर बूँद गिरे । अक्सर और अधिक मात्रा में हो । खून का पेशाब जब रोग का कोई कारण न मिले । मूत्र-ग्रन्थि का बढ़ना ।

पुरुष—अण्ड कड़े, ऊपर खिंचे और सूजे हुए । रात में जननेन्द्रिय पर पसीना आये । प्रोस्टेट ग्रन्थि से रस बहना । इच्छा की कमी ।

स्त्री—कोमल, नीचे धँसना । मानो पेट की सभी चीजें योनि की राह बाहर निकल जायेंगी । योनि का सूखापन और गरम लगना । कमर की चारों तरफ खींच । त्रिकास्थि में दर्द । मासिक धर्म अधिक मात्रा मे हो, खून गहरा लाल, समय से पहले । रक्त-प्रवाह गरम । कटि के आरपार दर्द । मासिक स्राव और प्रसवात स्राव दुर्गन्धित और गरम । प्रसव वेदना एकाएक उठे और गायब हो जाए । स्तन प्रदाह मे दर्द टपकन, लाली, धुण्डी सुर्खी की लकीरें जो चारों तरफ फैलें । स्तन भारी लगें, कड़े और लाल हों; स्तनों का अर्बुद, लेटने पर दर्द बढ़े । अत्यन्त दुर्गन्धित रक्त प्रवाह, गरम खून गिरना । प्रसवान्तक स्राव की कमी ।

श्वास-यन्त्र—नाक, गला, स्वरनली, कंठनली सभी का सूख जाना । गुदगुदीदार छोटी सूखी खाँसी, रात में अधिक । स्वर-नली दर्दीली । साँस कष्टदायक, तेज असमान (कोकेन ओपियम) बिना दर्द के गला बैठना । खाँसी और बायीं कमर में दर्द । काली खाँसी, खाँसने के पहले आमाशय में दर्द, इसके साथ खून थूके । खाँसते समय सीने में चिलकन । स्वर नली बहुत दर्दीली मानो कोई बाहरी चीज अटक गई हो, खाँसी के साथ । तेज महीन आवाज । हर साँस में कराहना ।

दिल—तीव्र धड़कन, सिर में गूँजे, साथ में कठिन साँस। जरा से परिश्रम पर दिल धड़कना। शरीर भर में थरथराहट। नाड़ी की दोहरी चाल। दिल बहुत बड़ा मालूम दे। तेज मगर कमजोर नब्ज।

अंग—अङ्गों में गोली लगने की तरह का दर्द। जोड़ सूजे हुए, लाल, चमकीले लाल, लाल लकीरें चारों तरफ फैलें। लड़खड़ाती चाल। जगह बदलने वाला वात दर्द। प्रसव के बाद जंघा शिरा का प्रदाह। अंग में झटके। अकड़न। अनिच्छित लँगड़ाना।

पीठ—गरदन कड़ी, तनी। गरदन की ग्रन्थियों को सूजन। गरदन की जड़ में दर्द; मानो टूट जायगी। गोहरों पर जरा भी दाब असह्य, यह दर्द पैदा करे। कटि-वात, कमर और काँधों में दर्द।

चर्म—सूखा और गरम, सूजा हुआ, कोमलग्राही, अङ्गारे ऐसा गरम, चिकना, अरुण ज्वर की तरह लाल, एकाएक फैले। रश्मि; चेहरे पर दाने। ग्रंथियाँ सूजी हुई, कोमल और लाल। फोड़े। मवाद के बाद आया कड़ापन। विसर्प।

ज्वर—तीव्र ज्वर की अवस्था मगर ताप के अनुसार रक्त विष का अभाव। जलन, तीखा, भाप निकलना, गर्मी। पैर बरफ जैसे ठण्डे। सतह की रक्त नलियाँ तनी हों। केवल सिर सूजा शेष शरीर पर पसीना आए। ज्वर बिना प्यास के।

नींद—बेचैन, चिल्ला उठना, दाँत पीसना। रक्तनलियों की धड़कन से जागा करे, नींद न आवे। सोते में चिल्ला उठता है। अनिद्रा, औंघाई के साथ। आँख बन्द करते ही या नींद आते ही चिहुँक उठे। हाथों को सिर के नीचे करके सोना (आर्स, प्लैटी)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: छूने से झटका, आवाज, बाहरी हवा, तीसरे पहर, लेटने पर। घटना: ओठँगने पर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: सैम्बिसोबी-ओफिसिनैलिस २x–६x, रोजेसिया कुटुम्ब की दवा है (मासिक रज मात्रा में अधिक और अधिक देर तक आने वाला खासकर स्नायविक रोगियों में, सिर और अङ्गों में रक्त संचित होने के लक्षणों के साथ। वयःसन्धिकाल में स्वतः रक्तस्राव। जीर्ण जरायु प्रदाह। फुफ्फुस से रक्त स्राव। नसों का फूलना और घाव। मण्ड्रागोरा - मैनड्रेक (प्राचीन लोगों की नशे की एक वस्तु) बेचैन, उत्तेजित और शारीरिक दौर्बल्य, सोने की इच्छा। चायना और अफेनिया की तरह सामयिकता नष्ट करता है। मिर्गी रोग और जल-भय रोग में लाभदायक है; सेटोनिया भी (ए० ई० लेविन)।

हायोस०—(ज्वर कम मगर घबड़ाहट अधिक)। स्ट्रेमो० (उससे अधिक स्नायविक उत्तेजना, अति जोश; (होइजिया-मैक्सिको की एक वनस्पति, बेलाडोना

की तरह काम करती है; ज्वर, लाल दाने, चेचक, पित्ती इत्यादि में लाभदायक। तेज ज्वर जिसमें दाने निकलें; गला और मुँह सूखा, लाल चेहरा, सूजी आँखें, प्रलाप। अकसर बेला० के बाद कैल्के० की आवश्यकता होती है। एट्रॉपिया: यह बेलाडोना का क्षार है (गले का बहुत सूखापन; निगलना प्रायः असम्भव। जीर्ण आमाशय रोग, तेज दर्द और खाये हुए भोजन की कै। प्रदाह सभी प्रकार के दृष्टि भ्रम। सभी चीजें बड़ी मालूम पड़ें) प्लैटिना इसका उल्टा है। हाइपोक्लोराइड्रिया: तेजाबी पानी मुँह में आना। सभी चीजों पर सोचता रहे (विचारग्रस्त, पढ़ते समय अक्षर आपस में गिचपिचा जायें, द्वि-दृष्टि, सभी चीजें लम्बी दिखाई दें। कम्बुकर्णी नली और कर्णपटह में रक्त संचयता। क्लोम ग्रंथि से आकर्षण है। आमाशय की अम्लता; आमाशय शूल के हमले, डिम्बाशय में स्नायुशूल।

गैर होम्योपैथिक प्रयोग—एट्रोपिया और उसके दूसरे लवण आँखों के रोग में व्यवहार किए जाते हैं, जैसे पुतली को फैलाने के लिए और दृष्टिपेशियों को सुन्न करने के लिये।

आंतरिक या सूई द्वारा प्रयोग करने से यह अफीम के विष को मारता है। फाइ-सॉस्टिग्मा और प्रुसिक एसिड। मादक विष और कुकुरमुत्ता विष मारने के लिए। गुर्दों का शूल एक ग्रेन का १/२०० पिचकारी द्वारा।

आंत्रिक रुकावट में जिसमें जान जाने का भय हो। एक मिलिग्राम या उससे अधिक, चर्म के नीचे इन्जेक्शन देना चाहिए।

१/६० ग्रेन—सूई द्वारा तपेदिक के रात-पसीना में।

१/२० ग्रेन—दर्द नाशक १ ग्रेन अफीम का तोड़ है।

स्थानीय सुन्नता लाने के लिए; अड़चन की हालत में और स्राव जैसे दूध इत्यादि सुखाने के लिए उपयोगी है। सूई द्वारा तपेदिक के रात पसीना में १/६० ग्रेन।

मात्रा—एट्रोपिया सल्फ १/२०० से १/६० ग्रेन तक।

बेलाडोना के शामक—कैम्फ०, कॉफिया, ओपियम, एकोन०।

पूरक : कैल्के०। बेलाडोना (चूना मिला रहता है), खासकर अर्द्ध जीर्ण और वंशागत रोगों में।

बेमेल—एसेटि० एसिड।

मात्रा—१-३० शक्ति और ऊँची। तीव्र रोग में दोहराना आवश्यक।

बेलिस पेरेनिस (Bellis Per.)

(डेसी)

यह रक्त-नलिकाओं के रेशों पर कार्य करती है। तीव्र पेशी पीड़ा। लँगड़ापन जैसे मोच आयी हो। शिरा में रक्त-संचय होना जो यान्त्रिक कारणों (चोट) से हो।

गहराई में स्थित तन्तुओं की चोट में, और बड़ी चीरफाड़ के बाद आये उपद्रवों में उपयोगी है। स्नायु में चोट का असर, तेज दर्द और ठंडे पानी से नहाना असह्य। गठिया के बाद अङ्गों में कमजोरी। पेड़ू के अङ्गों में चोट, अधिक हस्तमैथुन का असर हटाने के लिए इस औषधि की आवश्यकता होती है, मोच और कुचले जाने की बहुत अच्छी औषधि है। ठंडी चीज खाने या पीने से आए रोग जबकि शरीर गरम हो, और ठंडी हवा से रोग होना। जन्म दाग पर बाहरी प्रयोग। मुँहासे, शरीर भर पर फुड़ियाँ। पेड़ू प्रदेश में कुचल जाने जैसा मालूम होना। रक्तस्राव, रक्तरोध, सूजन सभी इस औषधि के क्षेत्र में आते हैं। वातरोग लक्षण। रक्तस्राव को दूषित नहीं करती। "यह वृद्ध श्रमिकों खासकर मालियों की उत्तम दवा है" (बरनेट)।

सिर—वृद्ध लोगों के सिर में चक्कर। सिर की जड़ से चाँद तक दर्द। माथा सिकुड़ा मालूम दे। कुचल जाने जैसी पीड़ा। सिर की खाल की चारों तरफ और पीठ पर खुजली, गरम पानी से नहाने से बिस्तर की गरमी से कम हो।

स्त्री—स्तन और गर्भाशय भरे मालूम हों। गर्भावस्था में नसों का फूलना। गर्भावस्था में चल-फिर न सके। उदर पेशियों में निर्बलतापन। गर्भाशय चोटीला मानों दबोचा जा रहा है।

नींद—बहुत तड़के जाग जाना और फिर नींद न आना।

उदर—उदर की दीवार और गर्भाशय का दर्दीलापन। तिल्ली में चिलकन, कष्ट बढ़ना। पीला, बिना दर्द का अतिसार; मल दुर्गन्धित, रात में अधिक हो। उदर फूला हुआ। गड़गड़ाहट।

चर्म—फोड़िया। काला दाग, सूजन, छूना असह्य। चोट लगने से शिरा-रक्त-सञ्चय होना। नसों का फूलना, चोटीला दर्द के साथ। स्राव और सूजन। मुँहासे।

अङ्ग—जोड़ कष्टदायक, पेशी पीड़ा। जाँघों के भीतरी मोड़ की जगह पर और पीठ में खुजली। जाँघ के अगले भाग में नीचे तक दर्द। कलाई सिकुड़ी हो जैसे लचकदार फीता उसके जोड़ पर कस कर बँधा हो बहुत दर्द वाली मोच।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : आर्निका, आर्सेनिक, स्टैफिसे०। हैमामेलिस, ब्रायोनिया, वैनेडियम (अपकर्ष)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बायीं तरफ, गरम स्नान और बिस्तर की गरमी, आँधी से पहले, ठण्डी हवा से।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति तक।

:—०—:

बेन्जीनम (Benzenum)

(बेन्जोल, सी ६, एच ६)

बेन्जोल के परीक्षण में जो विशेषता देखी गई वह इसका रक्त-सञ्चार पर प्रभाव । । मनुष्य पर परीक्षणों में इससे लाल रक्तकोष कम हो गये और श्वेत कोष बढ़ गए आर० एफ० रैबे० एम० डी०) ।

यह रक्त में श्वेत कण की अधिकता में गुणकारी हो सकता है । आँख के लक्षण आश्चर्यजनक हैं । दृष्टिभ्रम—मिर्गी की तरह हमले, अचेतनता और सुन्न ।

सिर—बिस्तर और फर्श पर गिरने का भय । नीचे से ऊपर की तरफ चलनेवाला दर्द । थका हुआ और घबराया हुआ । माथे से नाक की जड़ तक दर्द । चक्कर आवे । सिर में दाब जैसा प्रतीत हो । दाहिनी तरफ का सिर दर्द ।

आँखें—काल्पनिक दृष्टि-भ्रम । आँखें खुली रहें । पलकों का फड़कना; प्रकाश असह्य, चीजें धुँधली दिखाई दें । आँखों और पलकों में टीस । पुतली का फैलना । प्रकाश की प्रतिक्रिया नहीं होती, खासकर दिन को ।

नाक—अधिक पतला जुकाम । खासकर तीसरे पहर जोर-जोर से छींकें ।

पुरुष—दाहिने अण्ड की सूजन । अण्ड में तीव्र दर्द । अण्डकोष का बहुत खुजलाना । अधिक पेशाब ।

अंग—अंगों में भारीपन, टाँगें ठण्डी, घुटने में अधिक झटके । दर्द नीचे से ऊपर तक चढ़े ।

चर्म—छोटी माता जैसे दाने । जिस करवट लेटा हो उसके दूसरी करवट पर पसीना आए । । सारी पीठ में खुजली ।

घटना-बढ़ना—रात में; दाहिनी तरफ अधिक ।

मात्रा—६ शक्ति ।

सम्बन्ध-तुलना कीजिए—बेंजिन-पेट्रोलियम ईथर-बेन्जीन (बेन्जोल) की तरह उतना शुद्ध पदार्थ नहीं है । यह वही है मगर इसमें हाइड्रोकार्बन मिला है । इसका विशेष प्रभाव स्नायुमण्डल और रक्त पर है । शारीरिक दुर्बलता, ऐंठन, घुटने में झटके अधिक आना, मिचली, वमन, चक्कर, अङ्गों का भारीपन और ठंडापन । पलक और जबान में झटके आना); बेन्जिन डाइनाइट्रिकम डी० एन० बी० । काला मूत्र । बेन्जिन नाइट्रिकम मिर्बेन (गहरा काला खून, कठिनता से जमे । मस्तिष्क की शिराओं में रक्ताधिक्य और शरीर भर में शिराओं का रक्त से भर जाना । मुँह में जलन । होंठ, जिह्वा, चर्म, नाखून, आँखों की पुतली नीली । चर्म ठंडा, नाड़ी छोटी, कमजोर, साँस धीमा और अक्रमिक, अचेतनता-मूर्च्छा, निद्रा के लक्षण । आँखों का उनके खड़ी रेखा में ऊपर-नीचे, घूमना, पुतली फैली हुई । आँखों की अस्थिरता ।

साँस बहुत धीमा, कष्टदायक, आहें भरना (ट्रिनाइट्रोटोल्यून) (टी० एन० टी०) ट्रोटाइल—घोर विस्फोटक है जो नाइट्रेटिंग टोल्यून द्वारा बनता है—कोलतार बनाते समय निकलता है।

जब चर्म या बाल टी० एन० टी० से स्पर्श द्वारा प्रभावित किया जाता है, तो चर्म पीला नारंगी रङ्ग का हो जाता है जो हफ्तों तक वैसा ही रहता है। घातक रक्त-हीनता और कामला। यह दवा घातक कामला रोग पैदा करती है।

मात्रा—६ शक्ति।

बेञ्जोइकम एसिडम (Benzoic Acid)

(बेञ्जोइक एसिड)

इस दवा की विशेषता मूत्र की गंध और उसके रङ्ग से सम्बन्धित है। शरीर के तन्तु-परिवर्तन पर स्पष्ट काम करती है। यह यूरिक एसिड रोग को उत्पन्न और अच्छा करता है, साथ में मूत्र का रङ्ग गहरा और अति दुर्गन्धित, गठिया लक्षण। गुर्दों की अक्षमता। बच्चा गोद में ही रहना चाहे, लेटना न चाहे। दर्द तेजी से जगह बदले। प्रमेह विष नाशक। गठिया और दमा-ग्रस्त व्यक्तियों के लिए हितकर है।

मन—बीती हुई अप्रिय बातों पर विचार करता है। लिखने में शब्द छूट जायें। उदास।

सिर—चक्कर, बगल में गिरने की सम्भावना। कनपटी, धमनियों में टपकन, जिससे कानों के चारों तरफ फूलन हो। निगलते समय आवाज आये। जिह्वा का घाव। कानों के पीछे सूजन (कैप्सि०) माथे पर ठंडा पसीना। मुँह में काँटा गड़ने जैसा दर्द। घुटन जैसी रुकावट। बसार्बुद।

नाक—भिचली झिल्ली में खुजली। हड्डियों में दर्द।

चेहरा—ताँबे के रङ्ग के धब्बे। लाल छोटे छालों के साथ। गालों पर गोल लाली।

आमाशय—खाते समय पसीना आए, आमाशय में दाब, ढोके ऐसा संवेदन।

उदर—नाभि के चारों तरफ कटन। जिगर प्रदेश में कड़कन।

मलान्त्र—कड़कन और सिकुड़न मालूम पड़े। गुदा में खुजलीदार सिकुड़न। गुदा के चारों तरफ खुजलीदार और पनीले उभार।

मल—झागदार, दूषित, तरल, हलके रङ्ग का साबुन के झाग की तरह, वायु मिश्रित।

मूत्र—घृणित दुर्गन्ध, रङ्ग-बदला करे, कत्थई, तेजाबी। अनिच्छित मूत्र स्राव। वृद्ध लोगों का दुर्गन्धित मूत्र। यूरिक एसिड अधिक। सूजाक दबने के बाद मसाने के स्राव। मूत्राशय प्रदाह।

श्वास यंत्र—सबेरे गला बैठना। दमा की खाँसी, रात में अधिक, दाहिने करवट लेटने से बढ़े। सीना बहुत कोमल। दिल के क्षेत्र में दर्द। हरा बलगम।

पीठ—रीढ़ की हड्डी पर दाब। त्रिकास्थि में ठंढक। गुर्दों के क्षेत्र में धीमा दर्द, शराब पीने से कष्ट बढ़े।

अंग—अंग-सञ्चालन से जोड़ चुरचुरायें। चिलकन के साथ फटन। एड़ी की नस में दर्द, गठियावात, गाँठें दर्दीली। गठिया दोष संचयता। वात गण्ड, कलाई की सूजन। घुटनों में दर्द और सूजन। पैर के अँगूठों की सूजन, पैर के अँगूठों में फटन, दर्द।

ज्वर—हाथ-पैर, पीठ, घुटने ठंढे। शीत लगे। ठंडा पसीना। जागने पर आन्तरिक गरमी।

चर्म—लाल चकत्ते, खुजलीदार।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—खुली हवा में, ओढ़ना हटाने पर।

सम्बन्ध—गठिया में काल्चिकम के असफल होने पर। सुजाक में कोपिया के असफल होने पर।

तुलना—नाइट्रि एमोन बेन्ज, सैबीना, ट्रोपोलम-दुर्गन्धित मूत्र।

शामक : कोपेवा।

असमान : ब्रायोनिया।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

—:०:—

बरबेरिस एक्विफोलियम (Berberis Aquif.)

(माउण्टेन ग्रेप)

चर्मरोग का, जीर्ण नजले की और उपदंश के दूसरे चरण की दवा है। जिगर का मन्द पड़ना, सुस्ती और अङ्ग रचना में पूर्ण परिवर्तन आना। यह दवा ग्रन्थि क्रिया को बढ़ाती है और पोषण को सबल बनाती है।

सिर—कानों के ठीक ऊपर फीता कसा जैसा बन्धन प्रतीत हो। पित्तज सिर दर्द। गंज। खुरंडदार अकौता।

चेहरा—मुँहासे। चकत्ते और दाने। यह दवा रङ्ग साफ करती है।

आमाशय—जिह्वा पर मोटी मैल, पीली, कत्थई, छालेदार मालूम हो। आमाशय में जलन। खाने के बाद मिचली और भूख।

मूत्र—कड़क, ऐंठन, दर्द, गाढ़ा श्लेष्मा और चमकदार लाल, चिकनी तलछट।

चर्म—दानेदार, सूखा, खुरदरा, भूसीदार। सिर की खाल पर दाने जो चेहरे और गरदन तक बढ़ें। स्तन का अर्बुद दर्द के साथ। अपरस। मुँहासे। सूखा अकौता। तीव्र खुजली। ग्रन्थि का कड़ा पड़ना।

सम्बंध—कार्बोलिक एसिड, यूओनाइम्स एट्रोपरप्युरिया, बर्ब०, वल्गै०, हाइड्रै०।

मात्रा—अरिष्ट अधिक मात्रा में।

—: o :—

बरबेरिस वलगैरिस (Berberis Vulg.)

(बारबेरी)

लक्षणों में तेजी से परिवर्तन आना, दर्द जगह और रूप बदला करे। क्रमशः प्यास और प्यास का न लगना; भूख और अरुचि बारी-बारी से आये। यकृत-शिरा, मण्डल पर अधिक काम करती है जिससे पेडू में रक्त-संचय होता है और बवासीर आती है।

यकृत और वातरोग खासकर मूत्र, बवासीर और मासिक-धर्म सम्बन्धी विकार के साथ। गठिया के पुराने रोगी में गुर्दों के आसपास का दर्द अधिक स्पष्ट रहता है, इसलिए इसका प्रयोग मूत्र-पिण्ड सम्बन्धी और मूत्राशय रोग में, पथरी रोग और मूत्राशय के नजले में होता है। यह दवा गुर्दों पर सूजन और पेशाब में खून की शिकायत लाती है। दर्द सारे शरीर में मालूम हो सकता है और यह दर्द पिठासे से प्रारम्भ होता है। इसका काम यकृत पर भी देखा गया है जिससे पित्त स्राव बढ़ता है। प्रायः जोड़ों की सूजन में काम आती है, जब कि मूत्र सम्बन्धी रोग भी हो। चलते-फिरते, एक स्थान से प्रारम्भ होकर फैलने वाला दर्द। रीढ़ उत्तजित। बरबेरिस के सभी दर्द एक जगह से उठकर फैलने वाले होते हैं। दाब से अधिक नहीं होते; मगर कई स्थितियों में बढ़ते हैं, खासकर खड़े होने और व्यायाम करने से।

सिर—निस्तेज, उदासीन, विरक्त। फूलने की संवेदना। मालूम पड़े जैसे बड़ा होता जा रहा हो। चक्कर, मूर्च्छा के आक्रमणों के साथ। अग्रभाग का दर्द। पीठ और सिर की जड़ में सर्दी। दिल के ऊपरी भाग के अङ्ग में फटन दर्द और गठिया का कड़ापन। सारे सिर की खाल पर कसी टोपी के दाब की संवेदना।

नाक—सूखे, बायें नथने का जिद्दी नजला। नथनों में रेंगन।

चेहरा—पीला, रोगी जैसा। गाल बैठें और आँखें भी। नीले चक्र।

मुँह—चमकीलापन। लार की कमी। चमकीली, झागदार लार, रूई ऐसी (नक्स मासकाट) जिह्वा जली हुई प्रतीत पड़े, छाले पड़े हों।

पेट—जलपान के पूर्व मिचली। गला जलना।

उदर—पित्ताशय क्षेत्र में चिलकन जो दाब से बढ़े और आमाशय तक फैले। कोष्ठबद्धता और पीला चेहरा, इसके साथ पित्ताशय का नजला। गुर्दों के अगले भाग में चिलकन दर्द जो जिगर, तिल्ली, पेट, पुट्ठों, त्रिकास्थिवंधनी तक बढ़े। छोटी आँतों के निचले भाग में गहराई तक गड़न।

मल—हर घड़ी मल त्यागने की इच्छा। अतिसार, बिना दर्द, मल मटियाले रङ्ग का, जला हुआ मूत्र-सा, गुदा और विटप में कड़कन। गुदा के चारों तरफ फटन। मलद्वार का नासूर।

मूत्र—जलन, दर्द। मालूम पड़े कि कुछ बूँदें पेशाब करने के बाद रह गई हैं। गाढ़ी श्लेष्मा और गहरा लाल, मैदे जैसी तलछट वाला मूत्र। गुर्दों में जैसे बुलबुले आते हों। मूत्राशय प्रदेश में दर्द। पेशाब करते समय आँतों और कटि-प्रदेश में दर्द।

पुरुष—अण्ड और शुक्र नाड़ियों में स्नायुशूल। अण्ड में कड़क, जलन, चिलकन, अण्डकोष और लिंगमुण्ड में भी।

स्त्री—कामेन्द्रिय में चुटकी काटने जैसी सिकुड़न; योनि में झटका, सिकुड़न, कोमलपन। योनि में जलन और चोटीलापन। काम इच्छा की कमी, मैथुन के समय काटन दर्द। मासिक-स्राव कम, रंगभूरा के साथ दर्द। गुर्दों के दर्द और गनगनाहट के साथ। जाँघों तक उतरे। प्रदर : भूरा, श्लेष्मा, मूत्र कष्ट के साथ। डिम्बाशय और योनि का स्नायुशूल।

श्वास-यन्त्र—आवाज भारी, स्वरनली में अर्बुद। वक्षस्थल और हृत्पिण्ड में फटन; चिलक।

पीठ—पीठ और गरदन में चिलकन का-सा दर्द, साँस लेने में बढ़ जाय। गुर्दा प्रदेश में गड़न का-सा दर्द जो वहाँ से बढ़कर कटि और कमर तक फैले। टेढ़ुरता, चोटीला संवेदना। गुर्दों से मूत्राशय में चिलक। फटन, कड़कन तनाव के साथ। उठना कठिन। कटि, चूतड़, सभी अङ्ग रोगग्रस्त, सुन्नपन के साथ। कटिवात (रस०- टार्ट, एसे०)। प्रपादास्थि और करभास्थि मोचीली जान पड़े। कटि प्रदेश में चीरफाड़ के बाद आया दर्द। दर्दीलापन, तीव्र दर्द के साथ, जो काम सम्बन्धी स्नायु के रास्ते से मूत्राशय तक जाय, घड़ी-घड़ी पेशाब लगे।

अंग—कंधों में वातिक पक्षाघातिक दर्द, बाहों, हाथों, अँगुलियों, टाँगों और पैरों में भी। अँगुलियों के नाखूनों के नीचे स्नायुशूल, अँगुलियों के जोड़ों में सूजन के साथ। जाँघों की बाहरी तरफ ठंडापन। एड़ी दर्द करे जैसे वहाँ घाव हो। पैर के तलवे की ऊपरी हड्डियों में कड़कन मानों खड़े होने पर कील गड़ रही हो। पैर की गद्दी में, कदम रखते समय दर्द। कुछ दूर टहलने पर पैरों से बहुत थकावट और लँगड़ापन आये।

चर्म—चपटे मस्से, खुजली, जलन और गड़न, खुजलाने से अधिक हो; ठंढी चीज से कम हो। सारे शरीर पर जल-दाने। हाथ और मलद्वार पर अकौता। अकौता प्रदाह के बाद घेरेदार बदरंग चकत्ते।

ज्वर—कहीं-कहीं ठंडापन मानों ठंडा पानी छिड़का गया हो। पीठ के निचले भागों में विशेषतः चूतड़ और जाँघों में गरमी लगना।

घटना-बढ़ना—घटना: अङ्ग संचालन खड़े होने पर मूत्र रोग आरम्भ होता है या अधिक होता है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: इपोमिया—कौनबोलवुलस ड्यु रेटिनस—मोर्निङ्ग ग्लोरी—झुकने पर बायीं तरफ की कटिपेशियों में दर्द। गुदा रोग, पीठ पीड़ा के साथ। उदर में अधिक वायु सञ्चय हो। दाहिने कन्धे के ऊपर टीस, गुर्दा शूल, पेडू और अङ्गों में टीस। एलो, लाइकोपोडि०. नक्स०, सार्स पै० जैन्थोरिया आरबोरिया (गुर्दों में तीव्र दर्द, मूत्राशय प्रदाह और पथरी रोग। मूत्र नलिका से मूत्राशय और अण्ड तक दर्द, पिठास का दर्द जो जरा भी ठंडक से उठे।) जैन्थोरिजा एपिफोलिया—जब एलो रूट—इसमें बरबेरिन होता है। आमाशय और आँतों का फैल जाना, ढीलापन, तिल्ली का बढ़ना।

क्रियानाशक—कैम्फर, बेला।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

बीटा वलगैरिस (Beta Vulg.)

(बीटा रूट)

सर्दी की पुरानी दशाओं और क्षय रोग पर प्रभाव डालता है। बीटैनम हाइड्रोक्लोरिकम का लवण जो बीट रूट (चुकन्दर की जड़ से तैयार किया जाता है), तपेदिक के रोगियों के लिए अधिक उपयोगी है। बच्चों पर इस औषधि का शीघ्र प्रभाव पड़ता है। २x से ऊँची शक्ति का विचूर्ण प्रयोग करें।

बीटोनिका (Betonica)

(बिटोनी ऊड)

कई स्थानों में दर्द पैदा करती है।

सिर—दाहिनी कनपटी में चिलकन। एक जगह ध्यान न जमा सके।

उदर—उदर, जिगर प्रदेश, आड़ी-तीरछी आँत, पित्तकोष, दाहिने पुट्ठे, और शुक्र नाड़ियों में दर्द।

अंग—दोनों कलाई से जोड़ों के पीछे चमकन, दर्द। कलाई झूल जाय। चूतड़ और जाँघ के पिछले भाग से टाँग के नीचे तक दर्द जैसे उन्हें लकवा मार गया हो।

बिस्मथम (Bismuthum)

(प्रेसिपिटेटेड सब नाइट्रेट ऑफ बिस्मथ)

अन्नवहा नली की उत्तेजना और नजले वाला प्रदाह, इस दवा का मुख्य कार्यक्षेत्र है।

मन—अकेले रहना असह्य। लोगों के साथ रहना चाहे। अपनी हालतों की शिकायत किया करे। मानसिक संताप। असन्तुष्ट।

सिर—सिर दर्द और आमाशयशूल बारी-बारी से। स्नायुशूल, मानो खाल चिमटी से उधेड़ी जा रही हो। चेहरा और दाँत भी रोगग्रस्त हों, खाने से कष्ट बढ़े, ठंडक से कम, सिर और आमाशयशूल बारी-बारी हो। दाहिनी आँख के घेरे के ऊपर कटन व दाब जो कनपटी तक जाये। कनपटी में दाब, हरकत से बढ़े। भारीपन के साथ।

मुँह—मसूढ़े सूजे हुए। दाँत दर्द, मुँह में शीतल जल रखने से कम हो (कॉफिया)। जिह्वा श्वेत। सूजी हुई। काले सड़े जैसे उभरन, जबान के [illegible] पर और किनारों पर। लाल अधिक, दाँत ढीले। ठंढी चीज की प्यास।

पेट—वमन आक्षेपिक घुटन और दर्द के साथ। पानी पेट में पहुँचते ही वमन हो जाए। पीने के बाद डकार। सभी तरल चीजें वमन हो जायें। जलन, बोझ ऐसा मालूम पड़े। कई दिनों तक खाते रहने के बाद सब वमन कर दे। पाचन मन्द। दुर्गन्धित डकार। आमाशयशूल, आमाशय से रीढ़ तक दर्द। आमाशय प्रदाह। ठंडी चीज पीने से कम; लेकिन आमाशय भरने से वमन हो जाय।

जिह्वा पर श्वेत मैल, मीठा कसैला स्वाद। आमाशय में विचित्र दर्द, पीछे को मुड़ना पड़े। एक जगह बोझ ऐसा दाब और जलन, ऐंठन और मुँह से पानी बारी-बारी।

मल—बिना दर्द वाला अतिसार; अधिक प्यास, प्रायः पेशाब हो और वमन के साथ। उदर के निचले भाग में चुटकी काटने जैसी चुभन, गड़गड़ाहट के साथ।

श्वास-यंत्र—पेट के मेहराब के बीच में चुभन जो तिरछे सीने से पार हो। शूल, दिल के चारों तरफ दर्द, बाईं बाँह से अँगुलियों तक फैले।

अंग—हाथों और पैरों में ऐंठन। कलाई में फटन। पक्षाघातिक कमजोरी खासकर दाहिनी बाँह में। अँगुलियों के सिरों में नाखूनों के नीचे फटन दर्द (बर्ब०) जंघास्थि

के पास और पेट के पीछे जोड़ों के पास तथा पैर से जोड़ों के पास छिलन-खुजली। अंग बढ़े।

नींद—कामातुर स्वप्नों के कारण बेचैनी। सुबह को निद्रालुता, या खाने के कुछ घंटों बाद।

सम्बन्ध—क्रियाा नाशक : नक्स०, कैप्सिकम, कैल्के०।

तुलना कीजिए—एण्टीमनी; आर्स०, बेलाडोना, क्रियोजोट।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

ब्लैटा अमेरिकाना (Blatta Am.)

(कॉकरोच)

जलोदर। कई तरह के शोथ। पीला चेहरा। घोर थकावट। पेशाब करने पर मूत्रमार्ग में दर्द। ऊपर जाने से थकावट।

मात्रा—६ शक्ति।

ब्लैडा ओरियन्टैलिस (Blatta Orient.)

(इण्डियन कॉकरोच)

दमा की दवा। खासकर जब वायुनलिका प्रदाह भी साथ में हो। आर्सेनिक के बाद यदि लाभ न हो। वायुनलिका प्रदाह और तपेदिक में, जब साँस कष्ट के साथ खाँसी हो। मोटे-तगड़े रोगियों में अच्छा लाभ करती है। अधिक मवादी श्लेष्मा।

मात्रा—आक्रमण के समय सबसे नीची शक्ति दें। आक्रमण के पश्चात् खाँसी रह जाने के बाद कुछ ऊँची शक्ति दें। लाभ होते ही बन्द कर दीजिए ताकि रोग न बढ़े।

बोलेटस लैरिसिस (Boletus Lari)

(ह्वाइट एगैरिक)

चौथिया ज्वर। हलका पसीना। बिना लाभ के। तपेदिक में रात-पसीना।

सिर—हलका और खोखला जान पड़े, माथे की गहराई तक दर्द के साथ जिह्वा पर मोटी पीली मैल, दाँत दरारेदार। लगातार मिचली।

ज्वर—रीढ़ में कपकपी, प्रायः तमतमाहट के साथ। कपकपी के समय जम्हाई आना और अँगड़ाई लेना। कंधों, जोड़ों और पिठासे में तीव्र टीस। रात में बहुत पसीना, क्षय, कंप और ज्वर के साथ।

चर्म—गरम और सूखा, विशेषकर हथेली। कंधों के डैनों और अगली बाहों में अधिक खुजली।

सम्बन्ध तुलना कीजिए : एगेरिसिन, पौलिपोरस ऑफिसिनेल का क्रियात्मक मौलिक अंश (तपेदिक के और अन्य दुर्बल करनेवाले पसीनों में ⅙ से ½ ग्रेन की मात्रा में, ताण्डव रोग में भी, फुफ्फुस वायु स्फीति के साथ दिल के फैलने में, दिल में चर्बी आने में, अधिक पसीना और अरुणिमा) बोलेटस लुइडस (तपेदिक वाली जुलपित्ती; कौड़ी में तीव्र दर्द) बोलेटस सैटेनस पेचिश, कै, अति दुर्बलता, ठंडे हाथ-पैर, अंगों और चेहरे की अकड़न।

मात्रा—पहली शक्ति।

बोरिकम एसिडम (Boricum Acidum)

(बोरैसिक एसिड)

संक्रामकता नाशक है, क्योंकि यह प्रदाह और सड़न को रोकता है।

मूत्र नलियों के क्षेत्र में दर्द, प्रायः पेशाब लगना। ठंडापन (हेलोडर्म.) मधुमेह: जिह्वा सूखी, लाल, फटी हुई। ठंडी लार।

चर्म—अनेक प्रकार के लाल चकत्ते, अरुणिमा, निचले भाग और ऊपरी अंगों पर। आँखों के चारों तरफ शोथ। चर्म उधड़ना, अकौता, आँखों की चारों तरफ के तन्तुओं का शोथ।

स्त्री—वयसंधिकालीन समतमाहट (लैके०, एमाइल नाइट्रेट)। योनि ठंडी; मानो बरफ भरी हो। बार-बार मूत्रस्खलन, जलन और कूँथन के साथ।

मात्रा—२ शक्ति।

गैर-होमियोपैथिक व्यवहार—५ ग्रेन की एक खुराक दिन में ६ बार दें। बोरैसिक एसिड का सोल्यूशन सूई द्वारा जीर्ण मूत्राशय प्रदाह में या एक चाय का चम्मच भर एक गिलास दूध में पी लिया जाय। बोरो-ग्लाइसेराइड १:४० शक्ति के सोल्यूशन में शक्तिशाली कीटाणु नाशक है।

बिलनी—१५ ग्रेन १ औंस पानी में लगाने के लिए। पकती जगहों पर पाउडर छिड़कने के काम में। मूत्राशय प्रदाह में धुलाई करने के लिए।

बोरैक्स (Borax)

(बोरेट ऑफ सोडियम)

आमाशयिक—आन्त्रिक उत्तेजना। लार बहना, मिचली वमन, उदर शूल, दस्त, पतनावस्था, मूत्र में अण्ड-श्वेत और मसाने में आक्षेप; प्रलाप, दृष्टि परिवर्तन, खूनी मूत्र, चर्म पर दाने सभी लक्षण अधिक मात्रा के प्रयोग करने से देखे गये हैं।

सभी रोगों में नीचे की ओर जाने से भय। होमियोपैथिक प्रयोग के लिए विचित्र स्नायविक लक्षण ध्यान देने योग्य हैं और प्रायः विशेष कर बच्चों के इलाज में इनकी पुष्टि भी हुई है। मिर्गी रोग में अति लाभदायक। श्लैष्मिक झिल्ली पर चकत्ते।

मन—अति आकुलता, खासकर नीचे जाने से, जैसे झूले में लिटाना। नीचे उतारना, लिटाना आदि। नीचे उतारते समय चेहरा घबराया लगे, लेटाये जाने पर चिहुँकना और हाथों को ऊपर उठाना; जैसे गिर जाने का भय हो। अति स्नायविकता, भयभीत। अचानक आवाज असह्य। बन्दूक की आवाज से चाहे वह दूर ही हो, बहुत डरना। बिजली कड़कने का डर।

सिर—टीस, मिचली और शरीर कम्प के साथ। बाल, किनारों पर उलझे, अलग न किये जा सके। (विन्का मिन०)।

आँखें—पलकें भीतर झुकी हों (पड़बाल)। चमकदार लहरें दिखाई देना। पलक सूजे हुए, आँखों के ढेलों से रगड़ खाये। पलकों का भीतर की तरफ मुड़ना।

कान—जरा-सी आवाज भी असह्य। बड़ी आवाज से उतना उत्तेजित न हो।

नाक—युवा स्त्रियों की नाक लाल (नैटम कार्ब०)। लाल और चमकदार सूजन, थरथराहट और खींचन के साथ। सिरा सूजा हुआ और घाव वाला। सूखी खुरंड।

चेहरा—पीला, मटमैला, दुःखमय, सूजा। नाक और होंठों पर मोती जैसे दाने। मकड़ी के जाले जैसा।

मुँह—मुँह में श्वेत, चपटे घाव। श्वेत चकत्तेदार वृद्धि। कोमल, गरम खाने और छूने से घाव में खून बहे। दर्दीला मसूढ़ा, सूजन। दूध पीते समय रोना, कड़वा स्वाद (ब्राइ०, पल्स, क्यूप्रम०) तहखाने की मिट्टी जैसा स्वाद।

पेट और उदर—खाने के बाद पेट फूलना, वमन। आमशय, शूल जो गर्भाशय रोग से सम्बन्धित हो। दर्द मानो दस्त होगा।

मल—बदबूदार ढीला, चिकना, बच्चों का मल। दुर्गन्धित दस्त, शूल के बाद, श्लैष्मिक मल, मुखक्षत के साथ।

मूत्र—गरम छिद्र के मुँह में कड़क। तीखी महक। बच्चा पेशाब करने से डरे, चिल्लाये (सारसापे०)। बिछौने पर छोटे, लाल कण लगें।

स्त्री—बार-बार डकार के साथ प्रसव वेदना। दूध की अधिकता (कैल्के० कोन० बेल०)। एक स्तन से दूध पिलाते समय दूसरे स्तन में दर्द। अंडे की सफेदी ऐसा प्रदर, गरम पानी बहने लगे। मासिक-धर्म समय से बहुत पहले, मात्रा में अधिक, पेट में ऐंठन, मिचली, दर्द के साथ जो पिठासे तक जाये। झिल्लीदार कष्टरजः। बाँझपन। गर्भाधान सरल करती है। योनिलिंगिका में खींचन, कड़कन के साथ। योनिपिण्ड की अति खुजली और अकौता।

श्वास-यंत्र—तीव्र, कड़ी खाँसी, बलगम मटीला स्वाद और बदबूदार। सीने में चिलकन, साँस भीतर खींचने और खाँसने पर। कसैला स्वाद इसके साथ खाँसी-साँस बदबूदार। पार्श्व वेदना, दाहिनी तरफ सीने में अधिक। लेटने पर साँस रुके, उछल कर उठने और साँस लेने पर मजबूर जिससे दाहिनी तरफ दर्द हो। सीढ़ी चढ़ने में साँस फूले।

अंग—हाथों पर मकड़ी के जाले ऐसा लगे। अंगुलियों के जोड़ों के ऊपर और हाथों में खुजली। अंगूठों के सिर पर थरथराहट दर्द। पैर के तलवों में चिलकन। एड़ी में दर्द। पैर के अंगूठों में जलन, दर्द। गद्दी सूजी हुई। पैर और हाथों की अंगुलियों पर अकौता, नाखून झड़े।

चर्म—अपरस, चेहरे पर विसर्प रोग। अंगुलियों के जोड़ों के पीछे खुजली। अस्वस्थ चर्म, जरा भी कटने पर पके। दाद (रस०) विसर्प-प्रदाह सूजन और तनाव के साथ। खुजली खुली हवा में कम। व्यवसायी दाने अंगुलियों और हाथों पर; खुजली, गड़न। बालों के सिर उलझ जायें।

नींद—कामातुर स्वप्न। गरमी के कारण नींद न आवे, खासकर हाथ में। सोते-सोते चिल्ला उठे, मानो डर गया हो (बेला०)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : उतरना, आवाज, धूम्रपान, गरम मौसम, मासिकधर्म के बाद।

घटना—दाब, शाम, ठंडा मौसम।

सम्बन्ध—एसेटिक एसिड, सिरका, शराब बेमेल है।

शामक—कैमो०, कॉफिया।

तुलना—कैल्के०, ब्रायोनि०, सैनिक्युला; सल्फ्यु० एसिड।

मात्रा—१ से ३ विचूर्ण। चर्म रोग में कई सप्ताह जारी रखिये। बाहरी प्रयोग योनि पिण्ड में खाज। मटर के बराबर सोहागा मुँह में रखने से आवाज तुरन्त ठीक हो जाती है; जो एकाएक सर्दी से बैठ गई हो, और करीब एक घण्टे रखने से आवाज और साफ तथा सुरीली हो जाती है।

बोथ्रोप्स लेन्सिओलेटस (Bothrops Lanc.)

(एली वाइपर)

इसका विष खून को जमाने (गाढ़ा करने) वाला होता है। (लैकेसिस भी०) इन दवाओं में इमको समवरोधन निर्माण के लक्षण मिलने चाहिये, समवरोधन क्रिया जैसे : अर्द्धाङ्ग पक्षाघात, स्वरलोप, बोलने में असमर्थ। (लिन्न० जे० बोयड)।

छिन्न-भिन्न स्वास्थ्य शरीर से खून गिरने की प्रबणता; विषैली दशा। घोर सुस्ती और मन्दता। शरीर के सभी छेदों से रक्तस्राव, काले, धब्बे। आधे शरीर का

पक्षाघात, आवाज बन्द होने के साथ। बोल न सके, पर जबान ठीक रहे। स्नायविक कम्प। दाहिने पैर के अँगूठे में दर्द। लक्षण तिरछे जायें। फुफ्फुस-रक्त-सञ्चय।

आँख—अन्धापन आंशिक या पूर्ण। तारे में रक्त के प्रवेश से आया अन्धापन। आँखों में खून उतर आना, दिन में अन्धापन, सूरज निकलने के बाद रास्त न देख सके, पुतली में खून उतर आये।

चेहरा—सूजा और फूला हुआ जैसे नशे में है।

गला—लाल, सूखा, सिकुड़ा हुआ, निगलना कठिन, तरल पदार्थ नीचे न उतरे।

पेट—उदर के सामने ऊपरी भाग में कष्ट। काली कै। रक्त का प्रबल वमन। फूलना और खूनी मल।

चर्म—सूजा हुआ, लाल, ठंडा, रक्ताधिक्य के साथ। सड़न, लसिका ग्रन्थियाँ सूखी हुई, मुख क्षत। मारात्मक लक्षण।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: दाहिनी तरफ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये: टौक्सिकोफिस—मोकैसिन स्नेक—इस साँप द्वारा काटे जाने के बाद हर साल ज्वर और पीड़ा आती है और कभी-कभी पहले लक्षण मिल जाते हैं और वे अपना जगह बदलकर प्रकट होते हैं। डसने के बाद चर्म का अति सूखापन। शोथ और सामयिक स्नायुशूल। दर्द एक जगह से दूसरी जगह जाये। दूसरे साँपों के काटने पर ध्यान दीजिये, विशेषतः लैकेसिस पर।

ट्रैकिनस—स्टिंग फिश (असह्य पीड़ा, सूजन, तीव्र रक्त-दोष, सड़न)।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

बोटुलिनम (Botulinum)

(टॉक्सिन ऑफ बैसिलस बोटुलिनम)

टिन में बन्द की हुई पालक के विष ने ऐसे ही लक्षण उत्पन्न किये थे जैसे जीभ, होठों और गले के आंशिक पक्षाघात में पाये जाते हैं।

आँखों के लक्षण; पलक लकवे से गिरे के गिरे रहें, द्वि-दृष्टि, धुँधलापन। निगलने और साँस लेने में कष्ट, खाना गले में अटकने का संवेदन, टहलने में कमजोरी और सँभल कर न चल सके, लड़खड़ाहट, चक्कर, आवाज भारी। आमाशय में ऐंठन। भावहीन चेहरा, चेहरे की पेशियों की कमजोरी से कठिन कोष्ठबद्धता।

मात्रा—ऊँची शक्ति।

बोविस्टा (Bovista)

(पफ बाल)

चर्म पर विशेष प्रभाव पड़ता है, जिससे ऐसे दाने पैदा होते हैं जो अकौता की तरह होते हैं। यह दवा रक्त-सञ्चार को प्रभावित करती है जिससे रक्तस्राव की सम्भावना होती है। सुस्ती और थकावट अधिक आती है। हकलाने वाले बच्चे, वृद्ध, कुमारियों की धड़कन की शिकायत के साथ; और अकौता वाले रोगी के लिए विशेष हितकर है। स्नायविक प्रदाह में सुन्नता और ठिठुरन अवस्था। लकड़ी के कोयले के धुँए से दम घुटना।

मन—बढ़ जाने का संवेदन (आर्जे० नाइट्रिक०)। भद्दा। सभी चीजें हाथों से गिर जावें। उत्तेजित।

सिर—संवेदन मानो सिर बढ़ रहा है, खासकर पिछला भाग। सिर दर्द: जिसमें यह प्रतीत हो कि सिर फैल गया है। प्रातःकाल खुली हवा में, लेटने से कष्ट बढ़े। नाक-स्राव तागे ऐसा लम्बा, चिमड़ा। मस्तिष्क में धीमा चोटीला दर्द। हकलाना (स्ट्रैमो०, मर्क०)। सिर की खाल खुजलाए, गरमी से बढ़े, उत्तेजित।

चेहरा—नाक और मुँह के चारों तरफ रूसी और पपड़ी छूटना। होंठ चिटके। नाक और मसूढ़ों से खून बहना। गाल और होंठ सूजे हुए। मुँहासे, गरमी के दिनों में अधिक; श्रृङ्गार सामग्री वगैरह लगाने के कारण।

आमाशय—बरफ का ढोका भरा मालूम हो। कसा कपड़ा कमर पर न सहा जाये।

स्त्री—मासिक धर्म के पहले और बीच में अतिसार। मासिक-धर्म बहुत पहले और अधिक, रात में बढ़े। कामातुरता। प्रदर : गाढ़ा, तीखा, चिमड़ा, हरियाले रङ्ग का; मासिक धर्म के बाद अधिक। कमर पर तङ्ग कपड़ा सहन न हो (लैके०)। एक मासिक धर्म और दूसरे के बीच वाले समय में भी खून दिखाई दे। मासिक धर्म के बीच पेडू में छरछराहट हो। अधिक रक्तस्राव। डिम्बाशय की रसौली।

उदर—शूल, लाल पेशाब के साथ; खाने से कम हो। दोहरा होना पड़े। नाभि के चारों तरफ दर्द। बिटप क्षेत्र से चिलकन जो गुदा और कामेन्द्रिय की तरफ जाये। वृद्धों का जीर्ण अतिसार; रात में और भोर में बढ़े।

अंग—सभी जोड़ों में बहुत कमजोरी। हाथ अस्थिर, चीजें गिर जायें। हाथों और पैरों में कमजोरी। काँखों में पसीना, प्याज की महँक वाला। गुदास्थि में असह्य खुजली। हाथों के पीछे तर अकौता। टाँगों और पैरों की खुजली। हड्डी टूटने के बाद जोड़ों में शोथ।

चर्म—कुन्द चीजों के निरन्तर व्यवहार से चर्म पर पड़े निशान। उत्तेजित होने पर शीतपित्त निकले। इसके साथ गठिया वात जैसा लँगड़ापन, धड़कन और दस्त (डल्का०)। गरम होने पर खुजली आए। तर अकौता मोटी पपड़ी। गुदा में खाज। सुबह जागने पर जुलपित्ती, जो नहाने से अधिक हो। रौद्रत्वक।

संबंध—बोविस्टा तारकोल से बनी दवा लगने के विष को मारता है। गैस से दम घुटना। पुरानी जुलपित्ती में रस० टॉ० के पश्चात्।

तुलना कीजिए: कैल्के, रस०; सीपिया, साइक्यूटा।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

ब्रैकीग्लोटिस (Brachyglottis)

(पूका-पूका)

फड़फड़ाने का संवेदन (कैलेडियम)। गुर्दा और मूत्राशय लक्षण प्रधान हैं। सांडलाल मूत्र के लक्षण उत्पन्न करता है। कान और नथनों में खुजली। पेशाब में अल्ब्युमेन जाने का रोग। सीने की घुटन। लेखकों के हाथ की अकड़न।

उदर—जान पड़े कि कोई चीज लुढ़क रही है। डिम्ब प्रदेश में फड़फड़ाहट।

मूत्र—मूत्राशय की गरदन पर दाब; पेशाब मालूम पड़े। मूत्राशय में पानी की छलकन ऐसी अनुभूति। मूत्र मार्ग में चोटीलापन, मानो मूत्र नहीं रुकेगा। पेशाब में श्लेष्मा के कण और झिल्ली, अण्डलाल और कास्ट (निर्मोक) खारिज हों।

अंग—अंगुलियों में अकड़न, अंगूठे और कलाई लिखते समय अकड़ जायें। चोटीलापन कलाई की जोड़ से बाँह की हड्डी तक बढ़े।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये: एपिस, हेलोनियस, मर्क० कर०, प्लम्ब०।

ब्रोमियम (Bromium)

(ब्रोमाइन)

साँस के रोगों में इसका बहुत स्पष्ट प्रभाव देखा गया है, खासकर स्वरनली और कंठ-नली में। इसका प्रभाव खासकर कण्ठमालिक बालकों में देखा गया है जिनकी ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई हों। गोरे रंग के लोगों में विशेषकर हितकर है। कान-ग्रन्थि और गले की अगली ग्रन्थि, घेघा बढ़ा हो। आक्षेपिक हमलों की प्रवणता। बायीं तरफ का कर्णमूल प्रदाह। दम घुटने ऐसा संवेदन। तेजाबी स्राव, अधिक पसीना और बहुत कमजोरी। अधिक गरम होने से आए रोग। ग्रन्थियों में रस-संचयता की प्रवृत्ति; वे कड़ी हो जायें। परन्तु पीब नहीं आती।

मन—भ्रम कि बहुत-से अनजान लोग उसे पीछे से देख रहे हैं अगर वह घूमेगी तो उनको अवश्य देख सकेगी। झगड़ालू।

सिर—बायीं तरफ का आधा सीसी का दर्द, जो सिर झुकने से बढ़े, खासकर दूध पीने के बाद। सिर दर्द, सूरज की गरमी या तेज हरकत से बढ़े। आँखों के आर-पार तेज दर्द। पानी की धारा पार करते समय चक्कर आवे।

नाक—जुकाम, नाक छिली ऐसे झरझराहट। दाहिना नथना बन्द। नाक की जड़ में दबाव, गुदगुदी, कड़कन; मानो मकड़ी का जाला हो। नथनों का पंखे की तरह (लाइको)। नकसीर आने से सीना का कष्ट कम हो।

गला—शाम को कच्चा लगे, स्वरभंग के साथ। निगलने में तालुमूल दर्द करें, गहरे लाल। रक्त नलियों की जाली दीख पड़े। साँस खींचते समय कंठनली में गुदगुदी। गरम होने से गला बैठना, आवाज भारी।

आमाशय और उदर—जबान से पेट तक जलन। पत्थर जैसा भारीपन। आमाशय शूल, खाने से कम हो। पेट फूलना, दर्दीला बवासीर, काले मल के साथ।

श्वास-यन्त्र—काली खाँसी (लगातार १० दिन तक दवा देते जाइए)। सूखी खाँसी; गला बैठने के साथ और सीने की हड्डी के पीछे जलन, दर्द। आक्षेपिक खाँसी। स्वर नली में बलगम खड़खड़ाने और दम घुटने के साथ। स्वर भंग। ज्वर के लक्षण अन्त होने के बाद आयी क्रूप खाँसी। कठिन और दर्दीली साँस। सीने में तीव्र ऐंठन। सीने के दर्द ऊपर को जायें। साँस भीतर खींचने पर ठंडक लगे। हर एक साँस में खाँसी उठे। स्वर-नली सम्बन्धी रोहिणी; झिल्ली स्वर-नली से शुरू हो और ऊपर को फैले। घुटन, दमा रोग, फुफ्फुस में हवा लेना कठिन (क्लोरम, बाहर फेंकने में)। समुद्र पर कम हो; समुद्र यात्री स्थल पर आते ही रोगग्रस्त हों। कसरत करने से दिल का बढ़ना (रस०)। वायुनलिका समूह प्रदाह, अधिक कठिन साँस के साथ। वायुनलिकायें धूएँ से भरी मालूम पड़ें।

पुरुष—अण्डकोष की सूजन। कड़ापन, दर्द के साथ, ठेस से कष्ट अधिक हो।

स्त्री—डिम्ब की सूजन। मासिक धर्म बहुत पतले, बहुत अधिक, रेशेदार। मासिक-धर्म के पहले उदासी। स्तन में अर्बुद चिलकन का-सा दर्द, बायीं तरफ अधिक। बाँह के जोड़ से स्तन तक चिलकन। बायें स्तन में चुभन का दर्द जो दबाव से बढ़े।

नींद—स्वप्न और व्याकुलता से भरी हो। सोते समय झटके आयें। विचित्र कल्पनायें और भ्रम। रात में सोना कठिन, सुबह के समय काफी न सो सके, जगाने पर कम्प और कमजोरी।

चर्म—मुँहासे, दाने, रस दाने। बाहों और चेहरे पर फुन्सियाँ। ग्रंथियाँ कड़ी

पत्थर जैसी, खासकर निचले जबड़ों और गले पर। कड़ा घेघा। (स्पांजिया) सड़न।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम से आधी रात तक गरम कमरे में बैठने पर; गरम तर मौसम में, आराम के समय और बायीं करवट लेटने पर। घटना : किसी हरकत से, व्यायाम, समुद्र पर।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : एकोन० कार्बो० कैम्फ० नमक ब्रोमि० के प्रभाव को रोकता है।

तुलना कीजिये : कोनियम, स्पांजिया, आयोड०, एस्टिरि० आर्जे० नाइट्रि०, ब्रोमि०, खाते समय दूध से परहेज कीजिये। हाइड्रोब्रोमिक एसिड, गला सूखा और खुरखुरा, कण्ठ-नली और सीने में घुटन, चेहरे और गरदन पर गरम लहरें, थरथराहट के साथ सनसनाहट की आवाज, अति स्नायविक उत्तेजना के साथ। (हाउटन) चक्कर, धड़कन, बाहें भारी, मानो अंग उसके शरीर के नहीं हैं। गरदन की गण्ड पर विशेष प्रभावकारी मात्रा २० बूँद।

मात्रा—१ से ३ शक्ति। ताजी बनाना चाहिए चूँकि यह जल्दी खराब होती है।

ब्रायोनिया (Bryonia)

(वाइल्ड हॉप्स)

सभी रक्ताम्बु-सम्बन्धी झिल्लियों पर और उसके भीतर के कोष्ठ पर असर करती है। सभी पेशियों में टीस। इसका दर्द साधारण तौर पर फटन, चिलकन का होता है, किसी हरकत से बहुत तीव्र हो, शरीर के किसी भाग में, मगर खासकर सीने में, दाब से बढ़े। श्लैष्मिक झिल्लियाँ सब सूखीं। ब्रायोनिया का रोगी चिड़चिड़ा होता है, सिर उठाने से चक्कर आता है, दाब वाला सिर दर्द, होंठ सूखे। पपड़ीदार, घोर प्यास, कड़वा स्वाद, पेट के सामने का ऊपरी भाग स्पर्शकातर और पेट में पत्थर जैसा मालूम पड़े। मल बड़ा, सूखा कड़ा। सूखी खाँसी। वात दर्द और सूजन। स्नैहिक कला और रक्ताम्बु झिल्लियों का शोथ।

ब्रायोनिया—खासकर बलिष्ठ काय, सांवले रंग के रोगियों पर असर करती है, जिनमें दुबला और चिड़चिड़ा होने की प्रवृत्ति हो। यह दाहिनी तरफ आक्रमण करती है। शाम की खुली हवा, जाड़ों के बाद गरम मौसम में इसका प्रभाव अधिक देखा गया है।

बच्चे गोद में लिया जाना या उठाया जाना पसन्द नहीं करते। शारीरिक कमजोरी, पूर्ण उदासीनता। रोग धीरे-धीरे बढ़ता है।

मन—अधिक चिड़चिड़ापन, हर बात पर मिजाज बिगड़ जाए। प्रलाप करे। घर जाना चाहे, कामकाज की बात करे।

सिर—चक्कर, मिचली, उठाने में मूर्च्छा, मतिभ्रम। फटने फाड़ने जैसा सिर दर्द, मानो सभी चीजें बाहर निकल जायेंगी। जैसे भीतर से हथौड़ा मारा जा रहा हो, हरकत से, आँखें खोलने से बढ़े। सिर दर्द पिछले भाग में जम जाये। जबड़ा हड्डी की तरफ खिंचे। सिर दर्द, हरकत से बढ़े, आँखों की पलक तक हिलने से बढ़े। अगले भाग का सिर दर्द, अगले छिद्र सभी पीड़ित।

नाक—मासिक धर्म शुरू होने के समय अकसर नाक से खून जाना। सुबह को भी, सिर दर्द कम करे। माथे में चिलक और टीस के साथ। जुकाम नाक के सिरे की सूजन, छूने पर मालूम पड़े कि वहाँ जख्म हो जायगा।

कान—कान की खराबी से आनेवाला चक्कर। (आरम०, नेट्रम०, सैले०, सिलि०, चिनि०)। गरजन, भनभनाहट।

आँख—दाब, कुचलन, टीस, दर्द। धुँधलापन। हिलाने या छूने से कष्ट हो।

मुँह—होंठ झुलसे हुए, सूखे फटे हुए। मुँह, गला, जबान का सूखापन, अधिक प्यास के साथ। जबान पर हलका पीला, गहरा कत्थई मैल। आमाशय विकार में मोटी सफेद मैल। कड़वा स्वाद (नक्स० कोलो०)। देर से धूम्रपान करने वालों के निचले होंठ में जलन। होंठ सूजे हुए; सूखे, काले, चिटके।

गला—सूखा, निगलने में कष्ट, छिला, सिकुड़ा हुआ (बेला०)। स्वरनली और गलकोष में चिमड़ा श्लेष्मा, बहुत खखारने पर निकले, गरम कमरे में आने पर अधिक कष्ट हो।

आमाशय—सोकर उठने पर मिचली और मूर्च्छा आयें। प्रचण्ड भूख, विरसता। अधिक पानी की प्यास। खाते ही पित्त और पानी की कै। गरम चीज पीने से कै बढ़े, वैसे ही कै हो। आमाशय छूआ जाना सहन न करे। खाने के बाद पेट में पत्थर जैसा बोझ मालूम दे। खाँसते समय आमाशय में चोट पड़े। गरमी के दिनों में अपचन। छूआ जाना सहन न करे।

उदर—जिगर प्रदेश सूजा हुआ, चोटीला, तना हुआ। जलन, दर्द, चिलक, दाब साँस लेने, खाँसने से बढ़े। उदर की दीवारों का कोमलपन।

मल—कब्ज, मल कड़ा, सूखा, जलन जैसा, बहुत बड़ा मालूम पड़े। मल कत्थई, गाढ़ा, खूनी, सुबह को अधिक कष्टकर। हिलने से, गरमी में, गरम होने पर, ठंडी चीज पीने से, गरम पड़ने पर कष्ट बढ़े।

मूत्र—लाल, कत्थई, बियर की तरह, कम, गरम।

स्त्री—मासिक धर्म समय से बहुत पहले, मात्रा में अधिक। हरकत से अधिक हो, टाँगों में फटन दर्द के साथ। मासिक स्राव की जगह नकसीर आये; नष्ट रजः या सिरदर्द के साथ; जैसे सिर फट जाएगा। गहरी साँस लेने पर डिम्बाशय में कड़कन का-सा दर्द; छूने में अति उत्तेजनीय। दाहिने डिम्बाशय में फटने जैसा दर्द जो जाँघ तक जाये (लिलियम० क्रोक०)। प्रसव ज्वर। मासिक काल में स्तन पीड़ा। स्तन गरम और दर्दीला, कड़ा। स्तन का घाव। डिम्बाशय प्रदाह, शूल। मासिक-धर्म के बीच वाले समय का दर्द उदर और पेड़ू के अधिक चोटीलापन के साथ (हैमा०)।

श्वास-यंत्र—स्वरनली और कंठ-नली में चोटीलापन। आवाज बैठ जाये जो खुली हवा में अधिक कष्ट दे। कण्ठ-नली के ऊपरी भाग की उत्तेजना से सूखी खाँसी आये। रात में खाँसी आये जिसके कारण उठकर बैठना पड़े। खाने के बाद या पीने पर बढ़े, कै के साथ, और सीने में चिलकन के साथ और मोर्चा के रंग का बलगम। घड़ी-घड़ी लम्बी साँस लेता रहे। फुफ्फुस को फैलाना पड़े। कठिन तीव्र साँस, प्रत्येक हरकत से बढ़े। सीने में चिलक के कारण। खाँसी इस भावना के साथ कि सीना टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा, सिर को छाती की हड्डी पर गड़ाता है; सीने को सहारा देना जरूरी। झिलीदार, जलदार फुफ्फुसप्रदाह। बलगम ईंट के रंग जैसा, चिमड़ा, लुआब जैसे गोले। ठण्ड-नली में चिमड़ा बलगम जो बहुत खखारने पर निकले। गरम कमरे में आने पर खाँसी ज्यादा उठती है (नैट्र० कार्ब०) सीना हड्डी के नीचे भारीपन जो दाहिने कंधे की तरफ जाये। गरम कमरे में जाने पर खाँसी बढ़े। दिल प्रदेश में चिलकन, हृदय शूल (अरिष्ट दीजिये)।

पीठ—गरदन की जड़ में दर्दीला कड़ापन। पिठासे में चिलक और कड़ापन हो और अचानक मौसम बदलने से कष्ट बढ़े।

अंग घुटने दर्दीले और कड़े। पैरों की गरम सूजन। चिलकन और फटने के साथ जोड़ लाल, सूजे, गरम, जरा-सा हिलने पर कष्ट बढ़े। सभी जगह दाब से दर्द करे। बायीं बाँह और टाँग बराबर हिलाया करे (हेलेबो०)।

चर्म—पीला, हलका पीला, सूजा हुआ, शोथ, गरम, दर्द हो, सिर पर पपड़ीदार तर दाद। बाल चिकने हो जायें।

नींद—औंघाई। नींद आने पर चौंकना। प्रलापक सन्निपात; कामकाज और पढ़ी हुई चीजों की बकवास करना।

ज्वर—नाड़ी भरी, कड़ी, तनी, तीव्र। बाहरी ठंडक के साथ शीत लगे। सूखी खाँसी, चिलकन। आन्तरिक गरमी। जरा भी परिश्रम से खट्टा पसीना आये। थोड़ा-सा परिश्रम करने से ही अधिक पसीना हो। वात और आन्त्रिक ज्वर। आमाशय जिगर सम्बन्धी शिकायतों के साथ।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** गरमी, कोई भी हरकत, सुबह, भोजन करना, गरम मौसम, परिश्रम, छूना। बैठ नहीं सकती, मूर्च्छा आये और बीमार होती है। **घटना :** दर्दीले करवट लेटने से, दाब, आराम ठण्डी चीजों से।

सम्बन्ध—पूरक उपास, जब ब्रायोनिया काम न करे। रस०, एलुमिना, इले-सिन्नम० मैक्सिको की एक दवा—(जुकामी लक्षण के साथ, ज्वर, पाकाशयिक और आन्त्रिक ज्वर के लक्षण)।

क्रियानाशक—एकोना०, कैमो०, नक्स०।

तुलना कीजिये—एसक्लेपि०, टियुब०, कैली म्यूर०, टीलिया।

मात्रा—१ से १२ शक्ति।

ब्यूफो (Bufo)

(प्वायजन ऑफ दी टोड)

स्नायुमण्डल और चर्म पर काम करती है। गर्भाशय लक्षण स्पष्ट है। किसी तरह की गन्दगी से आया लसिकावाहिनी ग्रंथि-प्रदाह। कम्पवात के लक्षण। गठिया वात के लक्षण अधिक महत्वपूर्ण हैं।

नीच प्रवृत्तियों को उत्तेजित करती है। मदिरापान की इच्छा बढ़ाती और नपुंसकता लाती है।

मन्द बुद्धिवाले बालकों के लिए लाभदायक। समय से पहले आया बुढ़ापा। मिर्गी के लक्षण। रात को सोते में आक्रमण। काम सम्बन्धी विकार भी इसके क्षेत्र में आते हैं। अंगुलियों में चोट। दर्द लकीरों की तरह आये जो बाँह के ऊपर चढ़े।

मन—स्वास्थ्य की चिन्ता। शोकग्रस्त बेचैन। दाँतों से काटने की प्रवृत्ति। गुर्राना, अधीर, उत्तेजित, विवेकहीन। एकान्त की इच्छा। दुर्बल।

सिर—गरम भाप सिर चढ़ती जान पड़े। मस्तिष्क सुन्न। चेहरा पसीने से तर; नकसीर, चेहरा लाल और सिर के साथ। नकसीर के बाद आराम मिले।

आँखें—चमकदार चीजें देखना सहन न हो। आँखों पर छोटे-छोटे छाले।

कान—संगीत असह्य (एम्ब्रा०)। थोड़ी आवाज भी कष्ट दे।

दिल—बहुत बड़ा मालूम पड़े। धड़कन। दिल पर सिकुड़न मालूम दे।

स्त्री—मासिक स्राव समय से बहुत पहले और अधिक, थक्केदार; खून मिला स्राव आए, पनीला प्रदर। मिर्गी के साथ कामोत्तेजना। मासिक के समय मिर्गी। स्तनों की ग्रंथियाँ कड़ी। स्तन के कैन्सर में कष्ट कम करता है। डिम्ब और गर्भाशय में जलन। गर्भाशय के मुँह पर घाव। दुर्गन्धित; खून मिला स्राव। दर्द टाँगों तक जाये। खून मिला दूध। पाँव की नसें सूजी हुईं। गर्भाशय का अर्बुद।

पुरुष—अनिच्छित वीर्यस्खलन; नामर्दी स्खलन बहुत जल्दी; मैथुन करते समय अकड़न आए। बाघी। लिंग छूआ करे (हायोस०, जिंक०)। हस्तक्रिया का दुष्परिणाम।

अंग—कमर में दर्द, अङ्गों का सुन्न पड़ना, ऐंठन, लड़खड़ाकर चलना, जोड़ों में गुल्ली ठोंकी हो ऐसा मालूम दे। हड्डियों की सूजन।

चर्म—नखव्रण, बाँह के ऊपर तक दर्द। चर्म पर सुन्न चकत्ते। दाने, जरा-सी चोट लगने से पके। बिम्बिका रोग। गोल फोड़े जो फूटने पर कच्चा स्थान रह जाये जिनसे खुजलीदार पंछा बहे। हथेली और तलवों पर छाले। खुजली और जलन। कारबंकल।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : बैराइटा कार्बो०, एस्टेरियस, सैलेमैण्ड। (मिर्गी और मस्तिष्क का मुलायम पड़ना।)

क्रियानाशक : लैकेसिस; सेनेगा।

पूरक : सैलेमैण्ड्रा।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : गरम कमरे में, जागने पर। **घटना** : नहाने से या ठंडी हवा से, पैर गरम पानी में रखने से।

मात्रा—६ शक्ति और उससे ऊँची।

ब्युटिरिक एसिड (Butyric Acid)

(ए वोलैटाइल एसिड ऑबटेण्ड चीफली फ्रॉम बटर)

सिर—तुच्छ बातों से परेशान, आत्महत्या का उद्वेग, लगातार भय और क्षोभ की अवस्था। सिर दर्द। तुच्छ बातें भी परेशान कर दें। सीढ़ी चढ़ते समय या तेज हरकत से बढ़े। धीमा सिर दर्द।

आमाशय—भूख कम। आमाशय और आँतों में अधिक वायु। आमाशय के गड्ढे में ऐंठन; रात को अधिक। आमाशय भारी और भरा हुआ मालूम पड़े। नाभि के नीचे उदर में मरोड़। अनियमित मल त्याग। मल त्यागने में दर्द और कूँथन हो।

पीठ—पिठासे में थकावट और धीमा दर्द, टहलने से बढ़े। टखनों में दर्द और उसके ऊपर टाँग के पीछे। पीठ के नीचे और अङ्गों में दर्द।

नींद—गहरी अनिद्रा, गम्भीर स्वप्न।

चर्म—जरा-सी मेहनत करते ही पसीना आए। अधिक पसीना, पैरों पर पसीना, दुर्गन्धित। हाथ की उँगलियों के नाखून का झड़ना।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : रात में, तेज टहलना, सीढ़ी से ऊपर जाना।

मात्रा—३ शक्ति।

कैक्टस ग्रेण्डिफ्लोरस (Cactus Grand.)

(नाइट-ब्लूमिंग सेरियस)

गोल पेशी रेशों पर काम करती है; परिणामस्वरूप वहाँ सिकुड़न आती है। दिल और धमनी तुरन्त कैक्टस से प्रभावित होती है जिससे एक खास तरह की सिकुड़न पैदा होती है; जैसे वहाँ लोहे के तार बँधे हुए हों। यह संवेदन कई जगहों में पाया जाता है जैसे गल-नली, मूत्राशय इत्यादि। मानसिक लक्षण दिल की बीमारी के सदृश होते हैं, शोक, चिन्ता। रक्त-स्राव; सिकुड़न, सामयिकता, ऐंठन के साथ दर्द। सारा शरीर पिंजरे में बन्द मालूम होता है जैसे उसकी तारें मरोड़ी जा रही हों। शिरार्बुद और दिल कमजोर। रक्त संचयता और रक्त का असमान विभाजन। जल्दी थक्के बनाने में सहायता देती है। दिल के लक्षणों के साथ दूषित घेघा। कैक्टस का रोगी नाड़ीहीन. हाँफता और शिथिल होता है।

मन—उदास, कुढ़ता है; शोकग्रस्त, चिड़चिड़ा। मौत का डर। दर्द से चीखना। आतुर।

सिर—दिन के भोजन के समय बिना भोजन किये गुजर जाने से सिर-दर्द आए (आर्स०, लैके०, लाइको०)। चाँद पर बोझ ऐसा संवेदन। दाहिनी तरफ टपकन। रक्त-संचित होने से आधा सिर दर्द, सिर में जाने वाली रक्त नलिकायें तनी हुईं। जान पड़े कि सिर बाँक से कसा है। कानों में टपकन। निगाह धुँधली। दाहिनी तरफ के चेहरे का स्नायुशूल, सिकुड़न, दर्द, रोज एक ही समय उठे (सिड्रन)।

नाक—नाक से रक्तस्राव। बहता जुकाम।

गला—गलनली की सिकुड़न। जबान सूखी जैसे जल गई है, भोजन नीचे उतारने के लिए अधिक पानी की आवश्यकता हो। गले में घुटन, हृदशूल में गरदन की नाड़ियों में फड़कन।

आमाशय—सिकुड़न, टपकन या भारीपन। खून की कै।

मल—कड़ा, काला मल। सुबह को पतला दस्त। बवासीरी मस्से सूजे हुए और दर्दीले। गुदा में भारीपन जैसा लगे। मलेरिया ज्वर में और दिल के रोग के साथ आँतों से रक्तस्राव।

मूत्र—मूत्राशय की गरदन की सिकुड़न जिससे पेशाब रुके। मूत्राशय से रक्त-स्राव। मूत्रमार्ग में खून के थक्के आएँ। लगातार पेशाब बहना।

स्त्री—गर्भाशय प्रदेश और डिम्बाशय में सिकुड़न। कष्टदायक मासिक स्राव, गर्भाशय और डिम्बाशय में टपकन के साथ। योनि शूल। मासिक-धर्म समय से पहले, काला; तारकोल जैसा; (कॉकु०; मैग० कार्ब०)। लेटने से घटे। इसके साथ में दिल के लक्षण भी आएँ।

सीना—साँस की तंगी जैसे सीने पर बोझ रखा है। सीने में घुटन जैसे बँधा हुआ है जिससे सांस लेने में रुकावट हो। सीने के मेहराबी पर्दे का सूजन। दिल सिकुड़ा जान पड़े जैसे लोहे की तारों से कसा हो। हृद्शूल, धड़कन, दर्द बायीं बाँह के नीचे तक लपके। मुँह से खून आना, खिंचावट तेज खाँसी के साथ। उदर और सीने के बीच की मेहराबदार पेशी का प्रदाह साँस की तंगी के साथ।

दिल—दिल की झिल्लियों की सूजन दोहरे पर्दे के ठीक काम न करने के कारण, तेज और अधिक चाल के साथ दिल की अक्षमता की आरम्भिक अवस्था में उत्तम काम करती है। धमनी के कड़ापन से दिल की कमजोरी। तम्बाकू पीने वालों के दिल की बीमारी। प्रचण्ड धड़कन जो बाईं करवट लेटने से या मासिक धर्म के निकट आने से बढ़े। हृद्शूल, श्वासरोध ठंडा पसीना और लोहे के तारों से जकड़न के स्वाभाविक सवेदन के साथ। दिल के शिखर भाग में दर्द, जो बायीं बाँह में झटके। धड़कन, उसके साथ चक्कर; साँस कष्ट और अफरा। दिल में संकुचन, बहुत तीव्र दर्द, चिलकन, नाड़ी धीमी, अक्रमिक, तीव्र दुर्बल। हृदयवेष्ट से बुदबुदाहट की आवाज निकलना, अधिक झटकन, दिल के ऊपरी भाग में मन्दता, क्षुद्रगह्वर का बढ़ना। रक्तचाप की कमी।

अंग—हाथों और पैरों का शोथ। हाथ मुलायम, पैर बढ़े हुए। बायीं बाँह सुन्न। हाथ बर्फ से ठण्ढे। पैर अशान्त।

नींद—शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में टपक की संवेदना के कारण अनिद्रा, भयानक स्वप्न।

ज्वर—प्रत्येक दिन एक ही समय ज्वर आना। पीठ में ठंडक और हाथ बर्फ से ठंडे। सविराम ज्वर, दौरा करीब दोपहर के समय (११ बजे), ज्वर की सर्दी, गरमी, पसीना आदि अपूर्ण, रक्तस्राव के साथ। ठंढक की प्रधानता ठण्डा पसीना कष्ट के साथ, लगातार नारमल से नीचे ताप रहना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दोपहर के लगभग, बायीं करवट लेटने से, ऊपर चढ़ने से, ११ बजे दिन और ११ बजे रात। घटना : खुली हवा में।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : एकोन०, कैम्फोर०, चायना।

तुलना : डिजिटैलि०, स्पाइजी०, कॉन वैलेरि०, कौलमया०, नाजा, मैगनोल।

मात्रा—अरिष्ट (फूलों से बना हुआ उत्तम होता है) से ३ शक्ति। ऊँची शक्ति स्नायविक धड़कन में।

कैडमियम सल्फ (Cad. Sulph)

(केडमिक सल्फेट)

रोग तत्व निदान हमको ऐसे लक्षण देते हैं जो कोई निकृष्ट रोगों से मिलते-जुलते हैं, जैसे हैजा, पीला ज्वर, जहाँ की शिथिलता, कै, घोर पतनावस्था के साथ रोगी मृत्यु की तरफ दौड़ता है। आमाशयिक लक्षण महत्वपूर्ण हैं। कर्कट रोग, लगातार कै। इसका आक्रमण खासकर पेट पर होता है। रोगी को चुपचाप रहना पड़ता है। आग के पास भी कपकपी और ठण्डक लगती है।

मन और सिर—अचेत, चक्कर, जैसे कमरा और चारपाई तेजी से घूम रहे हैं। सिर में धमक। सिर में गरमी।

नाक—पीनस रोग। जड़ में कसाव। नाक बन्द; अर्बुद। नाक की हड्डियों का सड़ना। नाक पर फुड़िया। नथने पके।

आँखें—कनीनिका का धुंधला पड़ना। आँखों के चारों तरफ नीले घेरे। एक पुतली फैली हो। रतौंधी।

चेहरे—मुँह का टेढ़ा पड़ना। जबड़ों का कम्प। चेहरे का लकवा बायीं तरफ अधिक।

मुँह—निगलना कठिन। गलनली सिकुड़ी हुई। (बैप्टिशिया०)। नमकीन डकार। घोर मिचली; दर्द और ठंडक के साथ। श्लैष्मिक झिल्ली पर तारदार, दूषित मल आये।

गला—गलक्षत, लगातार गुदगुदी, घुटन, ओकाई और मिचली जो गहरे साँस से बढ़े; कपकपी; टीस।

आमाशय—दाब से तलपेट में दुःख हो। प्रचंड मिचली, उबकाई। काली कै। श्लेष्मा, हरी चिकनी, खून मिली कै करना, घोर शिथिलता और आमाशय पर कोमलपन के साथ। आमाशय में जलन और कटन दर्द। कैंसर रोग, यह दवा लगातार कै में सहायक है। कॉफी चूर्ण जैसी कै।

उदर—चोटीला, कोमल, फूला हुआ। जिगर प्रदेश चोटीला। ठण्डा। मल में काला निकृष्ट जमा हुआ थक्केदार खून आए। उदर में दर्द, कै के साथ कोमलपन और तनाव।

मल—खूनी, काला और बदबूदार। लुआबदार, हलका पीला, हरा मल अर्द्ध तरल, पेशाब रुकने साथ।

मूत्र—मूत्र मार्ग में कच्चापन और दर्द मूत्र में खून और मवाद मिला हो।

दिल—धड़कन, सीने में संकुचन के साथ।

ज्वर—बर्फ जैसी ठण्डक (कैम्फो०, वेरेट्र०, हेलोडर्मा०) पीला ज्वर (क्रोटेलस, कार्बो०)।

चर्म—गीला, पीला, फीका, बदरंग, चिटका। खुजली, खुजलाने से कम। पीलापन लिए, भूरे चकत्ते, नाक और गालों पर हलके पीले धब्बे, धूप लगने से, हवा में बढ़े। बेवाई फटना।

नींद—नींद आते ही साँस रुके। दम घुटते ही जाग पड़े। फिर सोने से डरे। लगातार अनिद्रा।

घटना-बढ़ना–बढ़ना : टहलना या बोझ लेना जाना, सोने के बाद, खुली हवा से, उत्तेजक चीजों के व्यवहार से। घटना : भोजन करना और आराम।

सम्बन्ध–तुलना कीजिये : कैडमियम ऑक्साइड—कैड० ब्रोम–पेट में जलन, दर्द और कै। कैडमियम नोडैट० (केवल दिन में गुदा और मलाशय में खुजली, कब्ज, मलत्याग की बार-बार इच्छा; कुथन, उदर फूलना) जिंक०; आर्से०, कार्बो०, बैराइटा०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

कैहिन्का (Cahinca)

(ब्रैजालियन प्लैंट-चिओकोका)

यह दवा शोथ रोग में लाभदायक पाई गयी है। इसके मूत्र सम्बन्धी लक्षण बहुत स्पष्ट हैं। पेशाब में अलब्यूमन (ओज) गिरना और रात को लेटते ही श्वासरोध; जलोदर और सर्वांग शोथ, सूखे चर्म के साथ।

मूत्र—पेशाब करने की लगातार इच्छा। सफर करने में बहुत मूत्र। जलता पेशाब, मूत्र मार्ग में जलन, दर्द खासकर ग्रंथि-प्रदेश में।

पुरुष—अण्ड और वीर्य नाड़ियों का भीतर को सिकुड़ना। दर्द जो तीखी गंध वाले पेशाब करते समय बढ़े।

पीठ—गुर्दा प्रदेश में दर्द, पीठ पर कम। आम थकावट।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : एपोसिनम, आर्से०, कॉफिया (वानस्पतिक सादृश्यता और थकावट दूर करने में भी)।

मात्रा—३ शक्ति और उससे नीचे की।

कैजूपुटम (Cajuputum)

(कैजू पुट ऑयल)

लौंग के तेल की तरह काम करता है। पेट में वायु संचित होना और जीभ के रोगों की दवा है। बढ़ जाने या लम्बा होने की संवेदना। पसीना अधिक लाती है। स्थान विकल्पशील गठिया। बिना सूजन वाले स्नायुशूल। स्नायविक साँस-कष्ट।

सिर—बहुत बड़ा मालूम पड़े। मानो अपने को सम्भाल न सकेगा। (बैप्टिसिया)।

मुँह—लगातार गला घुटने की संवेदना। गलनली की आक्षेपिक सिकुड़न। ठोस पदार्थ निगलने में घुटन पड़े। जबान सूजी लगे, जैसे पूरा मुँह भरा हो।

पेट—जरा-सी उत्तेजना पर हिचकी।

आमाशय—वायुशूल, तनाव (टेरेबिन्थ)। आँतों का स्नायविक तनाव। पेशाब, बिल्ली के पेशाब की तरह महके। आक्षेपिक हैजा।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : करीब ५ बजे सुबह, रात में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : बोविस्टा०, नक्स मॉस०, एसाफि०, इग्नी०, बैप्टी०।

मात्रा—१ से ३ शक्ति। तेल की ५ बूँद।

कैलेडियम सेगुइनस (Cladium Seg.)

(अमेरिकन ऐरम)

यह दवा जननेन्द्रियों पर स्पष्ट असर करती है और इस भाग की खुजली किसी एक अङ्ग का ठंडापन और लेटने की इच्छा; बायीं तरफ लेटने से रोग बढ़ना। जरा-सी आवाज भी जगा दे। हरकत से भय। तम्बाकू पीने की इच्छा को मिटाती है। तम्बाकू पीने वालों के दिल की खराबी। दमा रोग।

सिर—तम्बाकू पीने वालों का सिर दर्द और अन्य मानसिक अवस्थायें। अति भूलने वाला, कोई घटना भी याद न रहे। कंधों में दर्द, आँखों में और माथे पर दाब के साथ व्याकुल बनाने वाला सिर दर्द, आवाज सहन न हो, कानों में टपकन।

आमाशय—आमाशय के मुँह में कुतरन, जिससे गहरी साँस और डकार न ले सके। डकार। आमाशय सूखे भोजन से भरा मालूम पड़े, फड़फड़ाहट का संवेदन। तीखी कै, प्यासहीन और केवल गरम चीज पीना सहन न हो। आहें भरे।

पुरुष—तीव्र खाज। लिंग-मुण्ड बहुत लाल। लिंग बड़ा मालूम हो, फूला हुआ। ढीला, पसीनेदार, अंडकोष की खाल मोटी, अर्ध निद्रा में लिंगोत्तेजना, मगर पूरा जागने पर शान्त हो जाए। नपुंसकता। मैथुनोत्तेजना के समय ढीलापन; आलिंगन से न कामाग्नि जागे और न वीर्यस्खलन हो।

स्त्री—योनि-ग्रीवा में तीव्र खाज (ऐम्ब्रा०; क्रियोजो० में) और योनि देश में खाज गर्भावस्था में, (हाइड्रोजन-पर-ऑक्साइड १ : १२ शक्ति का बाहरी प्रयोग)। मैथुन इच्छा। रात में गर्भाशय में ऐंठन, दर्द।

चर्म—मीठा पसीना, जिस पर मक्खी लगें। जन्तु के काटने पर बहुत जलन और खाज। खाज के दाने और दमा बारी-बारी से। जलन संवेदना और विसर्पिका प्रदाह।

श्वास-यन्त्र—स्वर नली सिकुड़ी लगे। साँस रुके। नजले वाला दमा, जल्दी बलगम न निकले, रोगी सोने जाने से डरे।

घटना-बढ़ना—घटना : पसीने के बाद, दिन में सोने के बाद। बढ़ना : हरकत से।

सम्बन्ध—बेमेल : ऐरम ट्रिफा०। पूरक : नाइट्रिक-एसिड। तुलना कीजिये : कैप्सिक०, फास; कास्टि०, सेलेनि०, लाइको०, इक्षुगंधा० (काम सम्बन्धी दुर्बलता, वीर्यस्खलन, प्रोस्टेट ग्रन्थि की वृद्धि)।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

कैल्केरिया एसेटि० (Calc Ace.)

(एसिटेट ऑफ लाइम)

श्लैष्मिक झिल्ली के प्रदाह में जहाँ झिल्ली स्राव प्रधान हो, इस औषधि ने उत्तम लाभ पहुँचाया है, इसके अतिरिक्त इस औषधि की क्रिया और प्रयोग इस कार्बोनेट की तरह होता है। कर्कट दर्द।

सिर—खुली हवा में चक्कर आना। पढ़ते समय बुद्धि मंद। अर्ध-कपाली, सिर में बहुत ठंडक और खट्टे स्वाद के साथ।

स्त्री—कष्टदायक झिल्लीदार मासिक-धर्म (बोरैक्स)।

श्वास-यन्त्र—खड़खड़ाती साँस, बाहर निकलना। ढीली खाँसी, वायुनलिकाओं के टुकड़ों के बड़े थक्कों के साथ बलगम गिरे। कष्टदायक साँस, कन्धों को पीछे की तरफ झुकाने से आराम मिले। सीने में उत्सुक रुकावट का संवेदन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए—ब्रोमि० बोरैक्स; और खुले कर्कट में तीव्र कोंचन दर्द के लिए कैल्के०, आक्जैलि०।

मात्रा—३ विचूर्ण।

कैल्केरिया आर्सेनिका (Calc. Ars.)

(आर्सेनाइट ऑफ लाइम)

मिर्गी रोग, हमले के पहले सिर में खून दौड़े, दिल प्रदेश में हमले का आभास मालूम पड़े। हवा में उड़ने का संवेदन। मोटी औरतों की वयः सन्धिकाल के समय की शिकायतें। जीर्ण मलेरिया। बच्चों का जिगर और तिल्ली बढ़ना। गुर्दा-प्रदाह, गुर्दा-

प्रदेश में बहुत उत्तेजना। शराब पीने वालों के शराब पीना छोड़ने के बाद आए रोग (कार्बन; सल्फ)। वयःसंधिकाल में मोटी औरतों की विविध शिकायतें, जरा भी उत्तेजना पर दिल धड़कना। साँस कष्ट दुर्बल दिल के साथ। शीत। सांडलाल मूत्र। शोथ। तिल्ली और मध्यांत्र ग्रन्थि के रोग। रक्त में लाल कण आएँ और रंजक पित्त की कमी।

मन—गुस्सा, चिन्ता। संगत की इच्छा। गड़बड़ी, भ्रम। घोर उदासी।

सिर—चक्कर के साथ सिर में तेजी से खून दौड़ना। सिर में दर्द, दर्दीली करवट लेटने से कमी। साप्ताहिक सिर दर्द। सुन्नपन के साथ सिर दर्द, अक्सर कानों के चारों तरफ।

आमाशय—आमाशय के आस-पास तनाव। बच्चों का जिगर और तिल्ली बढ़ना। क्लोम ग्रंथि रोग, क्लोम कर्कट की तीव्र पीड़ा को शांत करती है। डकार में पानी आना और दिल की धड़कन।

मूत्र—गुर्दा प्रदेश दाब सहन न करे। सांडलाल (ओजोमेइ) मूत्र; प्रत्येक घंटे मूत्र त्याग करे।

दिल—हृद्-प्रदेश में सिकुड़न और दर्द, दम घुटना, धड़कन, दाब; थरथराहट और दर्द पीठ में जो बाँहों तक उतरे।

स्त्री—बदबूदार, खून मिला प्रदर। गर्भाशय का कर्कट, गर्भाशय और योनि में जलन-दर्द।

पीठ—गरदन की जड़ के पास दर्द और कड़ापन। घोर पीठ-पीड़ा, थरथराहट, बिस्तर से उठ भागे।

अंग—निचले अङ्गों का लंगड़ापन और थकावट।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : जरा भी जोर पड़ने पर।

मात्रा—३ विचूर्ण।

कैल्केरिया कार्बोनिका (Calcarea Carb.)

(कार्बोनेट ऑफ लाइम)

यह हैनिमैन की विख्यात खाज-दोष नाशक दवा है। शरीर-रचना सम्बन्धी रोगों के लिए परम हितकर औषधि है। इसका मुख्य क्रिया क्षेत्र विकास केन्द्र है, इसका मुख्य प्रभाव पोषणहीनता है। ग्रंथियों, चर्म और हड्डियों पर इस दवा का खास असर है। स्थानीय या सर्वाङ्ग पसीना। वृद्धि। ग्रंथि-सूजन, गण्डमाला और बालशोष रोग की अवस्था में कैल्केरिया लाभ करती है। आरम्भिक क्षय रोग (आर्से०, आयोड०, ट्यूबरकुलिन०)। गुदगुदीदार खाँसी, सीने की जगह जलन वाले दर्द,

मिचली, तेजाबी हालत और चर्बीली चीजों से घृणा आदि सभी इसके कार्य क्षेत्र में आते हैं। जल्दी ही साँस फूले। अधिक काम करने से मानसिक और शारीरिक थकावट। पेशियों की गहराई में बने फोड़े; गुल्म, अर्बुद। बलगम और गल-ग्रंथियों की कार्यहीनता, खून का जल्द जमना, (स्ट्रोनटियम) हड्डियों की तन्तुमय सफेद झिल्ली को उत्तेजित करती है। यह रक्तस्राव रोकती है और कदाचित् जिलेटिन की सुई को यही शक्ति देती है।

अच्छे होने पर फिर आसानी से लौट आता है। गण्डमालिक रोगी जिनको जुकाम जल्द होता है श्लैष्मिक स्राव अधिक जाता है। बच्चे जो बहुत मोटे होते जाते हैं, पेट बड़ा, सिर बड़ा, पीला शरीर, खड़िया ऐसी त्वचा। वादी, बलगमी प्रकृति, पानी में काम करने से बीमार पड़ना। ठण्डक असह्य, पसीना आंशिक। बच्चा अण्डा, मिट्टी और दूसरी न पचने वाली चीजें खाना चाहे। उसे ठण्डा चोपदार और खट्टी गन्ध वाला पसीना आता है। अतिसार प्रवणता। कैल्केरिया का रोगी मोटा, गोरा, थुलथुला होता है।

मन—सशक्त; लगभग शाम को रोग बढ़े। विवेकहीन होने, दुर्भाग्य और छूत की बीमारियों का भय। भूलना; बुद्धिभ्रष्ट; उत्साहहीन। आकुलता, धड़कन के साथ। हठीलापन, जरा-सा मानसिक परिश्रम सिर गरम कर दे। काम या परिश्रम करना न चाहे।

सिर—सिर की चाँद पर बोझ जैसा लगे। सिर दर्द हाथ और पैर ठंढे। ऊपर चढ़ने और सिर घुमाने में चक्कर। भारी बोझ उठाने से या इसके साथ मानसिक परिश्रम से सिर दर्द, मिचली के साथ। सिर गरम और भारी मालूम दे; चेहरा पीला। सिर के अन्दर और सिर पर बरफ जैसी ठण्डक, खासकर दाहिनी तरफ। तालु खुला हुआ, सिर बड़ा, अधिक पसीना, तकिया भींगे। खोपड़ी की खाल की खाज। जागने पर सिर खुजलाये।

आँखें—रोशनी असह्य। खुली हवा में और सुबह को पानी बहे। पुतली पर दाग और घाव। ठण्डक लगने से अश्रुनलिकायें बन्द हो जायें। आँखें जल्दी थकें। दूर की चीजें ठीक दीख पड़ें। पलकों की खुजली, सूजन, भूसी छूटे। पुतली का जीर्ण प्रसार। मोतियाबिन्द। नजर का धुँधलापन। जाला; धुन्ध। अश्रुनलिकाओं का नासूर, गण्डमालिक नेत्र प्रदाह।

कान—कानों में थरथराहट, पटपटाहट, चिलकन, टपकन दर्द मानो कोई चीज बाहर की तरफ आयेगी। पानी में काम करने से आया बहरापन, अर्बुद जिससे आसानी से रक्तस्राव हो। गण्डिमालिक प्रदाह। बदबूदार, श्लैष्मिक स्राव और ग्रन्थि वृद्धि। सुनने की गड़बड़ी, कम सुनना। कानों पर और उनके पीछे दाने निकलना। कड़क की आवाज। कान और गरदन प्रदेश ठंडक सहन न करें।

नाक—सूखी, नथुने चोटीले, घाव वाले। नाक बन्द, बदबूदार पीला स्राव। दुर्गन्ध निकलना। अर्बुद, जड़ की सूजन। नकसीर बहना। जुकाम। हर मौसम बदलने पर जुकाम होना। जुकामी लक्षण, भूख के साथ, आन्त्र-शूल और जुकाम बारी-बारी से।

चेहरा—ऊपरी होंठ की सूजन। पीला, आँखें धँसी हुईं, नीले घेरे। पपड़ीदार दाद, खुजली, धोने से जलन। जबड़े की ग्रंथि सूजी हुई। घेघा। दाढ़ी के बालों में खुजली। दाहिने मस्तिष्क छिद्र में से निचले जबड़े से होकर कान तक दर्द।

मुँह—लगातार खट्टा स्वाद। मुँह खट्टे पानी से भरा हो। रात में जबान सूखी। मसूढ़ों से खून बहे। दाँत देर में, कष्ट के साथ निकलें। दाँत पीड़ा हवा लगने या ठंडी और गरम चीज से बढ़े। मुँह से घृणित दुर्गन्ध आए। जबान के सिरे पर जलन के कोई गरम चीज पेट में आने से कष्ट बढ़े।

गला—तालुमूल और जबड़े की ग्रन्थि की सूजन। निगलने में चिलक। श्लेष्मा खखारना। निगलना कठिन। घेघा। कर्णमूल का नासूर।

पेट—मांस, उबली चीजों से घृणा, न पचनेवाली चीजों जैसे, खड़िया, कोयला, पेन्सिल इत्यादि, अण्डों, नमकीन चीज और मिठाई की चाह। दूध असह्य। बार-बार खट्टी डकार, खट्टी कै। चर्बीली चीजों से अनिच्छा। अधिक काम करने पर भूख मिट जाए। गला जलना और तेज आवाज के साथ डकार आना। आमाशय में ऐंठन, दाब से या ठण्डे पानी से बढ़े। प्रचण्ड भूख। आमाशय के गढ़े पर सूजन, मानो कटोरा उलट कर रखा हो। गरम भोजन से घृणा। छूने से कौड़ी-प्रदेश में दर्द। प्यास, ठंडा पानी पीना चाहे। खाते समय रोग बढ़े। अम्ल की अधिकता। (फॉस०)।

उदर—जरा-सी दाब भी असह्य। झुकने पर जिगर प्रदेश में दर्द। उदर में कटन। फूला हुआ। अफरा वंक्षणीय और मध्यान्तर त्वक्-ग्रन्थि सूजी और दर्दीली। कमर पर तंग वस्त्र सहन न हो। कड़ापन के साथ अफरा। पित्त-पथरी-शूल। उदर में चर्बी बढ़ना। नाभि प्रदेश में आँत उतरना। कम्प, कमजोरी, मोच जैसी। बच्चे देर में चलना सीखें।

मल—मलान्त्र में रेंगन और सिकुड़न। बड़ा और कड़ा मल (ब्रायो०)। सफेद, पनीला, खट्टा। काँच निकलना, जलन। बवासीर में सुई गड़ने जैसा दर्द। अनपचे भोजन का दस्त, मल दुर्गन्धित, अति भूख के साथ। बच्चों का दस्त। कब्ज, पहला मल कड़ा बाद में लेई जैसा, फिर पनीला।

मूत्र—गहरा रङ्ग, बादामी, खट्टा, दुर्गन्धित, बहुत मात्रा में, सफेद तलछट के साथ, खून मिला। मूत्राशय उत्तेजित। बहुमूत्र। (३० शक्ति और ट्युबरकुलिनम १ एम का प्रयोग करें)।

पुरुष—बार-बार धातु-स्खलन। इच्छा बढ़ी हुई। शीघ्रपतन। मैथुन के बाद कमजोरी और चिड़चिड़ापन।

स्त्री—मासिकधर्म के पहले सिर दर्द, आन्त्र शूल, शीत और प्रदर। गर्भाशय में कटन दर्द, मासिककाल में अधिक। मासिक-धर्म समय से बहुत पहले हो, बहुत अधिक, बहुत देर तक जारी रहे, चक्कर आए। दाँत दर्द हो ठंडे नम पैर के साथ। जरा-सी उत्तेजना से सभी लक्षण वापस आवें। गर्भाशय आसानी से खसक जाया करे। प्रदर दूध जैसा (सिपिया)। मासिक धर्म के पहले और बाद में जननेन्द्रिय में जलन और खुजली, विशेषतः छोटी बालिकाओं में, मैथुन-इच्छा अधिक, गर्भाधान सरल। स्तन गरम, सूजे हुए, मासिक-धर्म के पहले स्तन सूजे और कोमल। दूध अधिक, बच्चा को पसन्द न हो। कम दूध निकलना, फूले हुए स्तनों के साथ, वादी वाली औरतों में जननेन्द्रिय के बाहरी भाग पर अधिक पसीना। अधिक मासिक स्राव के साथ बाँझपन। गर्भाशय का अर्बुद।

श्वास-यन्त्र—गुदगुदीदार खाँसी, रात को कष्ट दे, सुबह को सूखा और अधिक बलगम सरलता से निकले। पियानो बजाते समय या भोजन करने से खाँसी आवे। लगातार उत्तेजनीय खाँसी, दीवारों पर संखिया मिला कागज चिपकवाने के कारण (क्लाक) घोर साँस कष्ट। बिना दर्द के स्वर-भंग, सुबह को अधिक। केवल दिन ही में बलगम गिरे, गाढ़ा पीला खट्टा श्लेष्मा। खून मिला बलगम, सीने में खट्टापन के साथ। दम घुटने के हमले, कसाव, जलन, चोटीलापन सीने में, ऊपर चढ़ने से बढ़े या जरा भी ऊपर जाने से। बैठ जाना आवश्यक है। सीने में आगे से पीछे की तरफ तेज दर्द। सीना छूना, टंकार या दाब सहन न करे। ताजा हवा का बहुत इच्छुक। कम, नमकीन (लाइको०)।

दिल—रात को और भोजन के बाद धड़कन हो। ठंडक के साथ धड़कन, सीने में अशान्त घुटन के साथ चर्म रोग दबने पर।

पीठ—मोच खाने जैसा दर्द, कठिनता से उठ सके, शक्ति से अधिक बोझ उठाने के कारण आयी मोच। कन्धों के डैनों के बीच दर्द, साँस रुके। कटि प्रदेश में वात दर्द; पिठासे में कमजोरी। रीढ़ की हड्डी का टेढ़ा पड़ना। गरदन की जड़ कड़ी और तनी हुई। गुर्दा का शूल।

अंग—भीगने के बाद ऐसी वात पीड़ा। तेज चुभन, मानो वे अंग उखाड़े या ऐंठे जा रहे हों। ठंडे, नम पैर; मानो भीगे मोजे पहने हो। घुटने ठण्डे। पिण्डलियों में ऐंठन या पैर पर खट्टा-पसीना। अंगों की कमजोरी। जोड़ों खासकर घुटनों की सूजन। तलवों का जलना। हाथों पर पसीना। जोड़ों पर गाँठें। तलवों में कच्चापन। रात में पैर ठंडे और मुर्दार हों। पुरानी मोच। पेशियों में फाड़ने जैसा दर्द।

नींद—झुण्ड के झुण्ड विचार आने से नींद न आवे। आँख खोलते ही भयानक, अलौकिक दृश्य देखना। जरा-सी आवाज पर चिहुँकना, डरती है कि पागल हो जाऊँगी। तीसरे पर ऊँघ आना। रात में कई बार जागना। **जरा-सी नींद आने पर वही पहले के दुःखद विचार आ जाते हैं और जगा देते हैं।** रात्रि को भयानक सपने आएँ (कैली फॉस०)। स्वप्न में मुर्दे दिखाई दें।

ज्वर—२ बजे। तीसरे पहर शीत जो आमाशय प्रदेश से शुरू हो। पसीने के साथ ज्वर। नाड़ी भरी हुई और तेज। पसीना और गरमी। आंशिक पसीना। **रात्रि पसीना, खासकर सिर, गरदन और पीठ पर।** ज्वर। मासिक धर्म में रात्रि के समय गरमी लगे, अशांत निद्रा के साथ। **बच्चों के सिर पर अधिक पसीना आए, जिससे तकिया भीगे।**

चर्म—अस्वस्थ, जल्दी घाव बने, चुचुका। छोटे घाव भी जल्दी न भरें। ग्रंथियाँ सूजी हुई। जुलपित्ती, ठण्डी हवा में कम। चेहरे पर, हाथों पर मस्से। काला दाग। बिवाई फटना। फुन्सियाँ।

घटना-बढ़ना : बढ़ना—परिश्रम, मानसिक या शारीरिक, ऊपर चढ़ना; ठंडक, किसी भी रूप में, पानी, स्नान, नम हवा, तर मौसम। पूर्णिमा को खड़े होने से। **घटना :** सूखी आबहवा, दर्द वाली करवट लेटने पर छींकने से (सिर और गरदन की जड़ का दर्द)।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कैम्फो०, इपिका०, नाइट्रि० एसिड, नक्स०।

पूरक : बेला० रस०; लाइको०, साइलीशिया।

कैल्केरि, सल्फर के बाद लाभदायक है, जहाँ पुतली फैली रहे। जब स्कूली लड़कियों में पल्सेटिला असफल रहा हो।

असमान—ब्रायो; सल्फर कभी कैल्के० के बाद नहीं देना चाहिये।

तुलना कीजिए : एक्वा कैल्केरि० :-लाइम वाटर-(३ चाय के चम्मच के बराबर दूध में), (केंचवे में इन्जेक्शन द्वारा); और **कैल्के०, कॉस्टि०-स्लेक्ड लाइम**-(पीठ, एड़ी, जबड़े गालों की हड्डियों का दर्द, और इन्फ्लुएञ्जा के लक्षणों पर), **कैल्के० ब्रोमि०**; (गर्भाशय से प्रदाहिक विकारों को निकालता है। ढीले रेशों वाले बच्चे, स्नायविक और उत्तेजित, चिड़चिड़े, आमाशयिक और मस्तिष्क सम्बन्धी उत्तेजना वाले। मस्तिष्क रोग की प्रवृत्ति। अनिद्रा और मस्तिष्क प्रदाह। १x विचूर्ण दीजिये)। (सल्फर से अन्तर है गरमी से रोग बढ़ना, गरम पैर इत्यादि)।

कैल्केरिया कैल्सिनाटा—कैल्सिण्ड औयस्टर शेल मस्सों की दवा। ३ विचूर्ण में प्रयोग करें। **कैल्केरिया ओवोरम-ओवा टोस्टा—रोस्टेड एगशेल्स** –(**पीठ दर्द और प्रदर**। मालूम पड़े कि पीठ दो भागों में टूट गयी है, थकावट मालूम पड़े। कर्कट के कष्ट में भी लाभदायक है)।

कैल्केरिया०, लैक्टिक० (रक्तहीनता, असाधारण रक्तप्रवाह की प्रवृत्ति, शुलपित्ती जहाँ खून के प्राकृतिक रूप से जमने की शक्ति कम हो जाये। पलकों के, हाथों और होठों के शोथ के साथ स्नायविक सिर दर्द, १५ ग्रेन दिन में ३ बार, लेकिन नीचे की शक्तियाँ भी अकसर उतना ही लाभदायक होती हैं)।

कैल्केरिया० लैक्टो-फास्फो०—(कै जो बार-बार हो, और अर्धकपाली में ५ ग्रेन दिन में तीन बार)।

कैल्के० म्यूर०—कैल्शियम क्लोरेटम—रैडेमैकर्स का लिकर—(१ भाग में २ भाग डिस्टिल्ड पानी में इसकी १५ बूँद आधे प्याले पानी में मिला कर पीजिए, दिन में ५ बार। फुड़िया। तर गंज। आमाशय दर्द के साथ सभी खाना और पीना कै कर देना। खुजलीदार, पीला फुन्सियाँ, ग्रंथि सूजन, स्नायविक गलशोथ। फुफ्फुसावरण प्रदाह, रक्तस्राव। बच्चों का अकौता)।

कैल्केरिया०, पिक्रेटा—(छोटे रक्तस्रावी कोषों का प्रदाह, घड़ी-घड़ी होने वाली या पुरानी फुन्सियों की एक अति महत्त्वपूर्ण दवा, खासकर जब वे ऐसे भाग पर हों जो पेशी तन्तुओं के पतले परत से ढँके हों जैसे नरहर की हड्डी, त्रिकास्थि, कान की नली, वहिस्त्वकीय कौषिक। छिलके छूटना जो सूखे हों और भूसी जमा हो, अंजनहारी, जलनदार छाले। ३x प्रयोग करें।

तुलना कीजिए : कैल्केरिया के साथ भी लाइको०, साइलीशिया, पल्सेटि०, कैमोमि०।

मात्रा—३ विचूर्ण। ३० और ऊँची शक्ति। वृद्ध लोगों में अधिक न दोहरावें।

कैल्केरिया फ्लोरिका (Calcarea Flu.)

(फ्लोराइड ऑफ लाइम)

कड़ी पत्थर जैसी कड़ी ग्रंन्थियाँ, शिराओं के फैल जाने और बढ़ जाने तथा हड्डियों के हीनपोषण की शक्तिशाली दवा है। स्तनों में कड़ी गाँठें। घेघा। पैदाइशी खान्दानी गर्मी रोग। कड़ापन जिसके पकने का भय हो। बहुत से मोतियाबिन्द के रोगियों को निस्सन्देह लाभ हुआ है। पैदाइशी गर्मी रोग जिससे मुँह में और गले में घाव हों, हड्डियों का नासूर और मुरदापन, इनके साथ छेद होने जैसा दर्द। धमनी का कड़ापन, संन्यास रोग का भय। क्षयरोग। चीरफाड़ के बाद लाभदायक है और चिपकने की प्रवृत्ति कम करती है।

मन—बहुत उदास, आर्थिक विनाश की अकारण चिन्ता।

सिर—सिर में चुरचुराने की आवाज। नवजात शिशु के रक्त गुल्म। खोपड़ी पर कड़ी गुठलियाँ। खोपड़ी पर कड़े किनारे वाले घाव।

आँखें—आँखों के सामने पतिंगे और अग्निस्फुलिंग दिखाई दें। कनीनिका पर धब्बे, आँख उठना, मोतियाबिन्द, कंठमाला छालेदार नेत्र प्रदाह। स्नायु जाल की रसौली।

कान—कान के पर्दों पर चूना जमा होना, शंखास्थि के पास कान के भीतर की छोटी हड्डियों में कड़ापन; पीब। बहरापन, गरजन, टपकन के साथ। बिचले कान से जीर्ण पीब स्राव।

नाक—कम बहे, जुकाम, सूखा जुकाम, पीनस। नजला, स्राव अधिक, बदबूदार गाढ़ा; हरियालीदार, गाँठदार पीला। नाक झिल्ली का क्षीणताजनित प्रदाह। प्रदाह और पपड़ी अधिक हो।

चेहरा—गालों पर कड़ी सूजन, दर्द या दाँत दर्द के साथ, जबड़ों की हड्डी पर कड़ी सूजन।

मुँह—मसूढ़ों की फुन्सियाँ जबड़ों पर कड़ी सूजन के साथ। जीभ चिटकी दिखाई दे, दर्द या बिना दर्द के। जीभ पर कड़ी पपड़ी, सूजन के बाद कड़ापन। दाँतों का अप्राकृतिक ढीलापन, दर्द के साथ या बिना दर्द। दाँत अपने गड्ढों में ढीले हों। दाँत दर्द अगर भोजन से छू जाए।

गला—कौषिक गल क्षत, तालुमूल के दरारों में श्लेष्मा की गुठलियाँ जमा होती रहें। गले में जलन और दर्द, जो गरम चीज पीने से कम हो, ठंडी चीज से बढ़े। तालुमूल (टॉन्सिल) की वृद्धि। घाटी का ढीलापन, स्वर-नली में गुदगुदी।

आमाशय—बच्चों की कै। अनपच की कै। हिचकी (कैलेपु०, सल्फ्यु० एसिड)। पेट फूलना। उन छोटे बच्चों में जिन पर शिक्षा का अधिक भार पड़ता है, भोजन करने के बाद मिचली और कष्टमय कमजोरी आना। तरह-तरह की चटपटी चीजें खाने की इच्छा; थकावट और दिमागी कमजोरी के कारण तीव्र अजीर्ण और पेट फूलना।

मल और गुदा—गठिया रोगों में अतिसार। गुदा की खुजली। गुदा में और आँतों के निचले अन्त के पास अति कष्टदायक दरार। खूनी बवासीर। गुदा में महीन कृमि सरकने ऐसी खुजली। अक्सर आंतरिक या अन्धी बवासीर, पीठ दर्द के साथ जो प्रायः नीचे की तरफ त्रिकास्थि तक हो और कब्ज। निचली आँतों में अधिक वायु। गर्भावस्था में यह कष्ट अधिक हो।

पुरुष—अण्डकोष में पानी आना, अण्ड का कड़ापन।

श्वास-यन्त्र—आवाज भारी। क्रूप खाँसी। पीली खाँसी। गुठलीदार बलगम निकले; लेटने पर गुदगुदी और उत्तेजना के साथ, आक्षेपिक खाँसी। कैल्के० फ्लोर० दिल की थैली के झिल्लीदार स्तर की रेशेदार संचयता को साफ करता है और उस थैली की रचना को स्वाभाविक बनाता है।

रक्त-संचालन यन्त्र—रक्त नली के अर्बुद की मुख्य दवा, जो रक्त-नलियों को फैला देती है। **शिराओं में गाँठ पड़ना और बढ़ना।** धमनी अर्बुद। दिल के किवाड़ों की बीमारियाँ; जब तपेदिक के विष ने दिल और रक्त-नलियों पर आक्रमण किया हो तो लाभदायक है।

गरदन और पीठ—जीर्ण कटिवात जो हरकत से अङ्ग में बढ़े और लगातार हरकत से कम हो। हड्डियों के गुल्म। शोषग्रस्त **बच्चों का जांघ की हड्डी का बढ़ना।** पीठ के निचले भाग में जलन के साथ दर्द।

अंग—कलाई की पीठ के ऊपर कड़ी गुठलियाँ। कड़ी रसौली। घुटने के जोड़ के स्नेहकला की पुरानी सूजन।

नींद—स्पष्ट स्वप्न, निकटवर्ती भयसूचक। सोने के बाद जो हलका न हो।

चर्म—चर्म का रंग स्पष्ट रूप से सफेद दिखाई दे। किसी घाव के पुराने निशान पर आया कष्ट। चीरफाड़ के बाद आया चिपकाव। खुरण्ट और चिटकन। हथेली में या कहीं भी कड़े चमड़े में दरारें। गुदा में दरारें। कड़े किनारों वाले घाव। गल्का। सुस्त, नासूरी घाव। गाढ़ा, पीला मवाद। कड़े उभरे किनारों वाले घाव, चारों तरफ की खाल बैंगनी, सूजी हुई। स्तन की कड़ी ग्रन्थियाँ। **सूजन या कड़े उभार** जो जोड़ों के कौषिक और पेशी वेस्ट कारी तन्तु बन्धन में स्थापित हों या पेशियों को बाँधनेवाले रेशों में आई सख्ती।

घटना बढ़ना—**बढ़ना** : आराम से या मौसम बदलने के साथ। **घटना** : गरमी में या सेंकने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : **कोनि०, लैपिस, बेराइटा म्यूर०, हैक्ला०, रस०, कैकोडिलेट आफ सोडा** (अर्बुद)।

कैल्केरिया सल्फ—स्टिबियाटा (रक्तप्रदाह को रोकता और गर्भाशय की रसौली का शोषण करता है)।

मैंगिफेरा इण्डिका : (नस-गाँठें)।

मात्रा—३ से १२ विचूर्ण। एक "जीर्ण" औषधि है। अपना पूरा प्रभाव स्पष्ट करने के लिए कुछ समय लेती है। अधिक बार दोहराना नहीं चाहिए।

कैल्केरिया आयोडेटा (Calcarea Iod.)

(आयोडाइड ऑफ कैल्शियम)

कण्ठमाला सम्बन्धी रोगों में खासकर ग्रन्थियों और तालुमूल इत्यादि के बढ़ने में इस औषधि ने लाभ पहुँचाकर नाम पैदा किया है। युवा होने पर गलग्रन्थि का बढ़ना। थुलथुले बच्चों को हितकर है जब कि उन्हें जुकाम बार-बार होता रहता हो।

सभी स्राव मात्रा में अधिक और पीले होने लगें। नाक और गले की ग्रन्थियों का फूलना। गर्भाशय के अर्बुद। क्रूप खाँसी।

सिर—ठंडी हवा के प्रतिकूल सवारी करने से आया सिर दर्द। सिर में हल्कापन। नजला, नाक की जड़ में अधिक कष्ट, छींक आना, संवेदनीयता कम। नाक और कान में अर्बुद।

गला—बढ़े हुए तालुमूल में छोटे-छोटे खोखले, लाल गढ़े हों।

श्वास-यन्त्र—जीर्ण खाँसी। छाती में दर्द, साँस लेने में कष्ट, उपदंश और अधिक पारा के प्रयोग के बाद (ग्रावोगल) यक्ष्मा ज्वर, हरा दुर्गन्धित बलगम। क्रूप खाँसी। फुफ्फुस प्रदाह।

चर्म—सुस्त घाव। धमनी गांठ के साथ। पसीना सरल। ताँबे के रंग के और रसदार दाने, दाद, बालकों के सिर पर तर दाद, ग्रन्थि सूजन, पिटकन, बाल झड़ना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एग्रैफिग० ब्लूबेल (गलग्रन्थि) और तालुमूल का बढ़ना)। यहाँ सल्फ० आयोड०, एग्रैसिफ और कैल्क० आयोड, के बाद अच्छा काम करता है। एकोन० लाइकोटोनम (ग्रन्थि की सूजन, लसिकाओं की वृद्धि और खून में श्वेतकण बढ़ जाना)।

तुलना कीजिए इनसे भी : कैल्के, फ्लोर०, सिलि०, मर्क०, आयोड०।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण।

कैल्केरिया फॉस्फोरिका (Calcarea phos.)

(फास्फेट ऑफ लाइम)

तन्तु औषधियों में से एक बहुत महत्वपूर्ण दवा है, जबकि इसके बहुत से लक्षण **कैल्केरिया** कार्ब के समान हैं। दोनों में बहुत से अन्तर भी हैं जो इसके खास लक्षण हैं। इसका विशेष क्षेत्र दाँत देर में निकलना और दाँत निकलने के समय के अन्य उपद्रव हैं। हड्डियों की बीमारियाँ, टूटी हड्डी का न जुड़ना, तीव्र के बाद और जीर्ण क्षयकर रोग के बाद आयी एनीमिया। **रक्तहीन बच्चे जो चिड़चिड़े, थुलथुले ठंडे हाथ-पैरवाले, मन्द पाचन, क्षीण शक्तिवाले हों।** इसका विशेष प्रभाव वहाँ होता है जहाँ हड्डियाँ जोड़ बनाती हैं। इसके सभी लक्षण मौसम बदलने के समय बढ़ते हैं। **रेंगना और सुन्न होना** इसके मुख्य संवेदन हैं। पसीना होने की प्रवृत्ति और ग्रन्थि का बढ़ना ऐसे लक्षण हैं जो इसमें और कल्के० कार्ब० में पाये जाते हैं। कण्ठमाला, नवयुवतियों की रक्तहीनता और फेफड़ा का क्षय रोग।

मन—चिड़चिड़ापन, भुलक्कड़, शोक और चिढ़ने के बाद (इग्नै, फॉस० एसिड)। सदा कहीं दूसरी जगह जाना चाहे।

सिर—सिर दर्द खोपड़ी की हड्डियों के जोड़ों के पास मौसम बदलने से बढ़े, स्कूली बच्चों के वयःसन्धिकाल का सिर दर्द, बच्चों के चन्दिया का जोड़ देर तक खुला रहे। क्रेनियल अस्थियाँ मुलायम और पतली। कान की खराबियाँ अफरा के साथ सिर दर्द। सिर गरम, बालों की जड़ में तेज दर्द।

आँख—नासूर होने के बाद आया धुँधलापन (जाला)।

मुँह—तालुमूल सूजे हुए। बिना दर्द के मुँह न खोल सके। दाँत निकलने के काल में रोग। दाँत देर में निकलें। दाँतों का तेजी से सड़ना। नाक और गले के बीच में स्पंज ऐसे तन्तु गुल्म।

आमाशय—बच्चे बराबर दूध पीना चाहें मगर आसानी से कै कर दें। सूअर का मांस या दूसरा भुना हुआ नमकीन माँस खाने की प्रबल इच्छा, बहुत अफरा। प्यास के साथ अधिक भूख, खट्टी डकार आकर अफरा कुछ देर के लिए हो जाये। गला जलना। बच्चे जल्दी कै करें।

उदर—प्रत्येक बार खाने की कोशिश करने पर उदर शूल। धँसा हुआ और ढीला। नाभि के चारों तरफ शूल, संताप, जलन।

मल—कड़े मल के बाद खून गिरना। अतिसार जो रसदार या खट्टे फल खाने के बाद या दाँत निकलने के समय आए। हरा, चिकना, गरम, छरछराकर, अनपचा दुर्गन्धित वायु-स्खलन के साथ दस्त। गुदा में नासूर और छाती के रोग बारी-बारी से पलटें।

पेशाब—अधिक होना, कमजोरी के साथ। कोई चीज उठाने से या नाक छिनकने पर गुर्दा प्रदेश में दर्द।

स्त्री—बालिकाओं में समय से बहुत पहले, अधिक और चमकदार, लाल मासिक स्राव। अगर देर में हो तो गहरा कभी-कभी पहले चमकदार, फिर गहरा रङ्ग का, तीव्र कमर दर्द के साथ। दूध पिलाने के काल में, कामोत्तेजना प्रबल। प्रबल मैथुन इच्छा, गर्भाशय प्रदेश में टीसन, दाब या कमजोरी के साथ (प्लाटिन०)। बहुत दिनों तक दूध पिलाने से आए उपद्रव, अण्डे की सफेदी जैसा प्रदर। सुबह को अधिक होना। बच्चा स्तन का तिरस्कार करे, दूध नमकीन लगे। दुर्बल स्त्रियों का गर्भाशय बाहर निकलना।

श्वास-यन्त्र—अनैच्छिक आहें भरना। छाती में चोटीलापन। दम घोंटने वाली खाँसी, लेट जाने से कम हो। स्वरभंग। निचले बायें फुफ्फुस के आरपार दर्द।

गरदन और पीठ—हवा लगने से वात दर्द सिर के कड़ापन और मन्दता के साथ। त्रिकास्थि के जोड़ों में टूट जाने जैसा चोटीलापन (एस्क्‌०; हीप०)।

अंग—कड़ापन और दर्द, ठंडक, सुन्न संवेदन के साथ मौसम बदलने के समय। रेंगन और ठंढापन। चूतड़, पीठ और अङ्ग सुन्न। जोड़ों और हड्डियों में दर्द। सीढ़ी चढ़ने में रुकावट।

सम्बन्ध—पूरक : रूटा, हीपर०।

तुलना कीजिए : कैल्के हाइपोफॉसपोरोसा। (लगातार फोड़ों की वजह से जब दुर्बलता हो जाय तो शरीर में अधिक मात्रा में फासफोरस देने के लिए इस दवा को उससे अच्छा समझना चाहिए। १ और २ दशमलव विचूर्ण दीजिए। भूख न लगना, तीव्र कमजोरी, रात पसीना। मुँहासे—चर्म पीला, फाका, हाथ-पैर ठण्डे। तपेदिक के दस्त और खाँसी में तेज दर्द। आँतों का क्षय रोग। फुफ्फुस से खून निकलना; हृद्-शूल, दमा, धमनी रोग। शिरायें डोरी की तरह उभरी हों। भोजन करने के २ घण्टे बाद दर्द का हमला, (एक प्याला दूध पीने या हलका भोजन करने से कम हो)। चिरैन्थस (बुद्धि दाँत निकलने का असर)। कैल्केरिया रिनैलिस–लैपिस रिनैलिस—(जोड़ों पर गठिया की गाँठें) पायोरिया; दाँतों का क्रमशः मुरदा होते जाना। दाँत पर चूना जमा होने को कम करता है। पेशाब में रेत आना। और गुर्दा पथरी। कांशिओलिन—मीटर परलैरम—मदर ऑफ पर्ल (अस्थि-प्रदाह—हड्डियों के रोग पर इसका विस्तृत प्रभाव है, खासकर जब बढ़नेवाले सिरों पर रोग का आक्रमण हो)। पेटेशिया, साइलीशिया, सोरि०; सल्फ०।

घटना-बढ़ना-बढ़ना : नमी लगने से, ठण्डा मौसम, बरफ गलने के दिनों में। **घटना :** गरमी के मौसम में, गरम। सूखा मौसम।

मात्रा—१ से ३ विचूर्ण। ऊँची शक्तियाँ अक्सर अधिक लाभदायक।

कैल्केरिया सिलिकेटा (Calcarea Sil.)

सिलिकेट ऑफ लाइम)

एक गहरी दीर्घकालीन औषधि जो ऐसे रोगों में लाभदायक है जो धीरे-धीरे आते हैं और बहुत दिनों में अपनी चरम सीमा पर पहुँचते हैं। पित्त प्रकृति नेट्रम सल्फ०) ठण्डक असह्य। रोगी कमजोर, दुबला, ठंडा और शीतकातर, लेकिन बहुत गरम होने से रोग बढ़े। साधारण तौर पर असहिष्णु। बच्चों की क्षीणता।

मन—शून्यचित्त, चिड़चिड़ा, अनिश्चित; आत्मविश्वास का अभाव। भयभीत।

सिर—चक्कर, सिर ठण्डा, खासकर चाँद पर, नाक और उसके पिछले भाग का नजला। गाढ़ा, पीला, कड़ी खुरंट वाला स्राव। पुतलियों में रसस्राव।

आमाशय—ठण्डक का संवेदन, खासकर खाली रहने पर। तलपेट में कमजोरी जैसा लगे। घोर प्यास। भोजन के बाद तनाव और फूलन। कै और डकार।

स्त्री—गर्भाशय भारी; बाहर को खसका हुआ। प्रदर, दर्दीला और क्रमहीन मासिक-धर्म। दो मासिक काल के बीच में भी रक्तस्राव।

श्वास-यंत्र—ठंडी हवा असह्य। कष्टदायक साँस। वायु मार्ग की जीर्ण उत्तेजना। अधिक पीला, हरा श्लेष्मा। खाँसी, उसके साथ ठंडक, कमजोरी, दुबलापन, उत्तेजनीयता और चिड़चिड़ापन, ठंडी हवा से कष्ट बढ़े। छाती की दीवार में दर्द।

चर्म—खुजली, जलन, ठंडक और नीलापन, अति कोमलता। छोटे दाने, काले तिल। खुजली के दाने।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : आर्सेनिक०, ट्यूबरकुलिन०, बैराइटा कार्ब०, आयोड०।

मात्रा—सभी शक्तियाँ, नीची से ऊँची तक।

कैल्केरिया सल्फ (Calcarea Sulph.)

(सल्फेट ऑफ लाइम-प्लास्टर आँफ पेरिस)

अकौता और सुस्ती से आई ग्रन्थि सूजन। कौषिक अर्बुद। सूत्रमय अर्बुद। पतन अवस्थायें। इस औषधि के कार्यक्षेत्र में आती हैं। जब मवाद निकलने का रास्ता हो जाये। श्लैष्मिक स्राव पीला, गाढ़ा, गाँठदार, चर्म का टीबी।

सिर—बच्चों के सिर का गंज जब पीब-सा हो या पीला पीब के ऊपर पपड़ी हो।

आँखें—आँखों की सूजन, गाढ़े, पीला रस स्राव के साथ। केवल आधा भाग दिखाई दे। पुतली धुँधली। नवजात शिशु की आँख दुखनी आए।

कान—बहरापन और मध्य कान से रस-स्राव, कभी-कभी खून मिला। कान के चारों तरफ फुन्सियाँ।

नाक—जुकाम,गाढ़ा, हल्का, पीला, पीब-सा स्राव; अक्सर खून की धारी वाला, एक नथने से स्राव। पिछले भाग से हल्का पीला स्राव। नाक के किनारे छरछराये हुए।

चेहरे—चेहरे पर दाने और रस भरी फुन्सियाँ। दाद।

मुँह—होठों के भीतर छरछराहट। जबान मोटी, सूखी मिट्टी की तरह। खट्टा, साबुन, तीखा स्वाद। जड़ पर पीला मैल।

गला—गल क्षत के अन्तिम चरण जैसा घाव, पीला स्राव। तालुमूल प्रदाह की पकन अवस्था जब घाव से मवाद निकलता हो।

उदर—जिगर में दर्द, पेड्डू की दाहिनी तरफ, बाद में कमजोरी आए, मिचली और पेट दर्द हो।

मल—दूषित अतिसार, खून मिला मल। चीनी खाने के बाद या मौसम बदलने के समय दस्त होना। मवाद की तरह चिकना स्राव, आँतों से। भगन्दर रोग में गुदा के चारों तरफ दर्दीले नासूर।

स्त्री—मासिक-धर्म देर में हो, देर तक जारी रहे, सिर दर्द, अधिक कमजोरी और भड़कन के साथ।

श्वास-यन्त्र—दूषित, खूनी बलगम और यक्ष्मा ज्वर के साथ खाँसी। फुफ्फुस में या उनके परदों में मवाद पड़ना। मवादो खूनी बलगम। नजला गाढ़ा, गाँठदार, सफेद पीले या मवादी स्राव।

अंग—पैर के तलवों की जलन, खाज।

ज्वर—यक्ष्मा ज्वर, जो पीब बनने से आया हो। खाँसी और तलवों की जलन के साथ।

चर्म—कटन, घाव, छिलन इत्यादि अवस्था, मवादी। घाव जल्दी अच्छा न हो। पीला मवाद, खुरंड या स्राव। चर्म रोग पीली पपड़ी के साथ। बाल के नीचे बिना रस के दाने, खुजलाने से खून बहे। बच्चों का सूखा अकौता।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : होपर०; साइलिसिया।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण। वृक्क रोग में १२ शक्ति अधिक लाभदायक।

कैलेण्डुला आफिसिनैलिस (Calendula Off.)

(Marigold)

बाहरी प्रयोग से घाव भरने के लिए अति चमत्कारी औषधि है। खुले घाव। वे स्थान जो जल्दी न भरें; अन्य घाव इत्यादि सभी के लिए लाभदायक है। तेजी से घाव भरता है। दाँत उखाड़ने के बाद खून बहने को रोकता है। बहरापन, नजले की हालतें। स्नायु अर्बुद। विसर्प रोग की जन्मजात प्रवृत्ति। आघात की अपेक्षा पीड़ा कहीं अधिक। सर्दी होने की प्रबल सम्भावना खासकर तर मौसम में। सन्यासाक्रमण के बाद पक्षाघात। कर्कट रोग में अधिक उपयोगी। स्थानीय स्राव को बढ़ाने की प्रबल शक्ति रखता है और तेजाबी स्राव को स्वस्थ और सरल बनाने में सहायता देता है। ठंडे हाथ।

सिर—अति घबराया हुआ, आसानी से डरना, फटने की तरह सिर दर्द मस्तिष्क पर बोझ। कान के नीचे की ग्रन्थि सूजी हुई, छूने से दर्द हो। गरदन की दाहिनी तरफ दर्द। सिर की खाल के घाव फटे हुए।

आँखें—आँखों की चोट जो पकने वाली हो, चीरा लगने के बाद की अवस्थाएँ। आँसू थैलों से स्राव जो सुजाक का उपद्रव हो।

कान—बहरापन तर वातावरण में बढ़े और अकौता। ट्रेन में और दूर की आवाज अच्छी तरह सुनाई देना।

नाक—एक नथुने का जुकाम, अधिक हरा स्राव।

पेट—बच्चे को स्तन से दूध पीते ही फिर भूख लगे। राक्षसी भूख। **रोमांच के साथ गला जलना**। सीने में मिचली, कमजोरी की अनुभूति। कौड़ी में तनाव।

श्वास-यन्त्र—हरे बलगम के साथ खाँसी। स्वरभंग इसके साथ जंघा के घेरे में तनाव।

स्त्री—योनि के बाहरी मुँह पर मस्से। मासिक धर्म रुकना। गर्भाशय के मुँह का जीर्ण प्रदाह। गर्भाशय का बढ़ना; वस्ति में भारीपन और जैसे भरा हुआ है। जंघासों में तनाव और खोंचना। एकाएक हिलने से दर्द। गर्भाशय का मुँह साधारण स्थान से नीचे हो। अधिक मासिक स्राव।

चर्म—पीला, चुचुका। स्वस्थ मांसाकुर को बढ़ाता है और मवाद बनना कम करता है। सड़ा घाव, बदगोश्त और उभरे किनारे। सतह पर की जलन और झुलसन। विसर्प रोग (बाहर भी लगाइये)।

ज्वर—ठण्डक, **खुली हवा असह्य**; पीठ में शीत, बदन छूने में गरम लगे। शाम को गरमी।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : तर मौसम में, भारी, बादल वाला मौसम।

सम्बन्ध—तुलना : हैमामेलि०; हाइपेरिक०, सिम्फा०, आर्नि० :

बहरापन में तुलना कीजिये : फेर० पिक०, कैलि आयोडे०, कैल्के०, मेग० का०, ग्रैफा०।

क्रियानाशक : चेलिडोन०, रियूमे०।

पूरक : हीपर०।

मात्रा : बाहरी प्रयोग। **कैलेण्डुला (मेरीगोल्ड)** को पानी में मिलाकर सभी घाव पर लगाइये, अति उत्तम रोपक (घाव भरने की दवा) है। प्रदर रोग में इन्जेक्शन लगाएँ, खाने के लिए, अरिष्ट से ३ शक्ति तक। आग से जले, घाव; चिटकन, रगड़ इत्यादि पर कैलेण्डुला मरहम का प्रयोग कीजिये।

कैलोट्रोपिस (Calotropis)

(मदार वाक)

उपदंश रोग में पारे के प्रयोग के बाद इस दवा का व्यवहार अति लाभदायक सिद्ध हुआ है, इसके अतिरिक्त पीलपाँव; कोढ़ और तरुण पेचिश में भी लाभदायक है। फुफ्फुस सम्बन्धी तपेदिक। क्षय रोग।

चर्म में रक्त संचय बढ़ाती है; पसीना बढ़ाने में शक्तिशाली है। उपदंश रोग की दूसरी अवस्था में, जब पारे का प्रयोग किया गया हो, मगर अधिक प्रयोग करना हानिकारक होने की सम्भावना हो, तब यह जल्द शरीर को ठीक करती है, घाव को भरती है, चर्म के चकत्ते गायब करके रोगी को चंगा बनाती है। उपदंश रोग की प्राथमिक रक्तहीनता। आमाशय में गरमी मालूम होना : इसका अच्छा सांकेतिक लक्षण है। मोटापा यह दवा कम करती है और पेशियों को कड़ी और ठोस बनाती है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : मर्क०, पोटैसि० आयोडे०, बर्बे० एक्वि०, सारसापै०, इपिकाक।

मात्रा—अरिष्ट एक से पाँच बूँद, दिन में २ बार।

कैल्था पेलसट्रिस (Caltha. Pal.)

(काउस्लिप)

उदर में दर्द, कै, सिर दर्द, कान गूँजना, कष्टदायक पेशाब, अतिसार। सर्वाङ्ग शोथ।

चर्म—अण्डकार फोड़े। बिम्बिका जिसके चारों तरफ से घेरा हो। अधिक खाज। चेहरा बहुत सूजा हुआ, खासकर आँखों के चारों तरफ। जाँघों पर खाजदार दाने। रसदार दाने। गर्भाशय का कैन्सर रोग।

मात्रा—अरिष्ट।

कैम्फोरा (Camphora)

(कैम्फोरा)

हैनीमैन कहते हैं, "इस औषधि का प्रभाव बड़ा भ्रमकारी है और इनकी छानबीन एक स्वस्थ प्राणी में भी करना कठिन है। क्योंकि इसका प्रारम्भिक प्रभाव दूसरी दवाओं की अपेक्षा अधिक परिवर्तनशील होता है और शरीर की अन्य बड़ी प्रतिक्रियाओं में घुल-मिल जाया करता है। इस कारण यह मालूम करना अक्सर कठिन हो जाता है कि कौन-सी प्रतिक्रिया और कौन-सा प्रभाव कैम्फर के प्रारम्भिक प्रभाव के कारण आया है।

पतनावस्था का चित्रण करता है। सारा शरीर बर्फ-सा ठण्डा, एकाएक शक्ति-हीनता, नाड़ी छोटी और कमजोर। चीरा लगने बाद, अगर शरीर का ताप साधारण से बहुत कम हो जाए, रक्त-चाप कम हो जाए तो १x कैम्फर की ३ खुराक, १५-१५ मिनट पर दें। यह अवस्था हैजे में मिलती है और ऐसी अवस्थाओं में कैम्फर ने यश पाया है। जुकाम की पहली अवस्था, शीत और छींक के साथ। शरीर की ऐंठन और घोर अशान्ति। जोड़ों का चुरचुराना। मिर्गी की तरह झटके। कैम्फर का पेशियों और उनके बाँधने वाले तन्तुओं से सीधा सम्बन्ध है। ठण्डे मौसम की स्थानीय वात पीड़ा में हितकर है। शिराओं का तनाव। हृदय को तत्काल बल देने के लिए कैम्फर अति उत्तम औषधि है। चीनी में एक-एक मात्रा ५, ५ मिनट पर दीजिए।

यह कैम्फर का विशेष लक्षण है कि रोगी शरीर की बर्फ जैसी ठण्डक की अवस्था के समय भी कपड़ा ओढ़ना नहीं चाहता। प्रबल झटके या सदमे की मुख्य दवा। दर्द के बारे में सोचने से वह कम रहे। ठंडक और छूने से अति कातर। छोटी चेचक का कुप्रभाव। घोर आक्षेप, भ्रांत मन और गुल्म वायु उत्तेजना के साथ। अकड़न, निरन्तर झटके। उन बच्चों के लिए विशेष लाभदायक है जो चिड़चिड़े स्वभाव वाले हों, दुर्बलकाय हों और गौर वर्णवाले हों।

सिर—चक्कर, अचेतनता की प्रवृत्ति, उसे ऐसा लगे कि वह मर जायगा। इन्फ्लुएन्जा, सिर दर्द, नजले की हालत के साथ छींक आना इत्यादि। लघु मस्तिष्क में दर्द जैसे मार पड़ रही हो। ठंडा पसीना। नाक ठण्डी और सिकुड़ी हुई। जीभ ठंडी, मोटी, काँपे। कनपटी और आँखों के गड्ढों में सूई गड़ने जैसा दर्द। सिर सतापपूर्ण। पिछले भाग में नाड़ी के साथ-साथ टपकन।

आँखें—स्थिर, घूरती पुतलियाँ फैली हुईं। ऐसा मालूम दे कि सभी चीजें बहुत चमकीली और जगमगाती हैं।

नाक—बन्द, छींकें आए। एकाएक मौसम बदलने पर नाक बहने लगे। ठंडी, चुचुकी, लगातार नकसीर, खासकर रोमांच के साथ।

चेहरा—पीला, दुबला, उत्सुक, विकृत हल्का नीला, ठंडा। ठंडा पसीना।

आमाशय—पेट में गढ़े में दाब, दर्द। ठण्डापन, बाद में जलन।

मल—काला सा, अनैच्छिक। हैजा; पिंडली में ऐंठन, शरीर बेचैन, घोर दुर्बलता, पतनावस्था, मुँह और जबान ठण्डी।

मूत्र—जलन मूत्रघात, मूत्राशय की गरदन में कूँथन के साथ। पेशाब रुके, लेकिन पेशाब की थैली भरी हो।

पुरुष—मैथुन इच्छा बढ़ी हुई सुजाक का बाँझपन। अनैच्छिक लिंगोत्तेजना: रात्रि वीर्य-स्खलन।

श्वास-यन्त्र—छाती में कष्ट। दम घुटे। दमा। तीव्र, सूखी, कड़ी खाँसी। धड़कन। ठंडी साँस रुके।

नींद—अनिद्रा, ठंडे अंग के साथ। पेशी कंप और अति बेचैनी।

अंग—कन्धों के बीच में वात पीड़ा। हरकत कठिन। सुन्न होना, झुनझुनी, ठण्डापन। जोड़ों का कड़कना: पिंडली में ऐंठन। पैर बर्फ जैसे ठण्डे, मोच जैसा दर्द।

ज्वर—नब्ज छोटी, दुर्बल, धीमी। सारे शरीर का बर्फ सा ठण्डा पसीना। रक्त संचयता के कारण गनगनी। जबान ठण्डी, मोटी, काँपती हुई।

चर्म—ठण्डा, पीला, नीला, लाल। ओढ़ना न चाहे। (सिकेल)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: हरकत, रात में, स्पर्श, ठण्डी हवा। घटना। हल्की गरमी।

सम्बन्ध—कैम्फर, प्रायः सभी वनस्पति औषधियों तथा तम्बाकू, अफीम, कृमि-नाशक दवाओं के उपद्रव का शामक है और उनके कुप्रभाव को शान्त करता है। लाका एकुटैंगुला (सारा शरीर बरफ जैसा ठण्डा, बेचैनी और उत्सुकता के साथ, जलन, प्यास)। कैम्फारिक एसिड—(पेशाब निकालने वाली नली के व्यवहार से आया ज्वर, मूत्राशय प्रदाह, १५ ग्रेन दिन में ३ बार, रात-पसीना रोकने के लिए भी)।

विषम: कैलि नाइट्रिकम पूरक: कैन्थरिस।

क्रियानाशक: ओपियम, नाइट्रि० स्पिरिटस डलसिस, फास०।

तुलना कीजिये: कार्बो० वेज०, आर्स, वेरेट्रम०।

मात्रा—अरिष्ट बूँद की खुराक, घड़ी-घड़ी दोहराना या स्पिरिट आफ कैम्फर को सूँघना। शक्तियाँ भी वैसे ही लाभ करती हैं।

कैम्फोरा मोनो-ब्रोमेटा (Camphora Mono-Bromata:)

(मोनो ब्रोमाइड ऑफ कैम्फर)

स्नायविक उत्तेजना मार्गदर्शक लक्षण है। दूध न उतरना। रात में धातुस्खलता। पीड़ाजनक लिंगोत्तेजना। कंप वात। बाल हैजा और शरीर अकड़न। कुनैन की क्रिया को बढ़ाता है और उसे दीर्घकालिक करता है।

मन—दिशाएँ उल्टी मालूम हों, जैसे उत्तर, दक्खिन लगे और पूरब, पश्चिम लगे। हिस्टीरिया, रोना-हंसना और बारी-बारी मोह मूर्च्छा की तरह अवस्था।

मात्रा—२ विचूर्ण।

कैनचालागुआ (Canchalagua)

(एरिथ्रिया वेनस्टा-सेनटौरी)

इसका अधिक विस्तृत प्रयोग ज्वरनाशक और जिगर को शक्ति देने की दवा के रूप में होता है (जेन्शियाना), मलेरियानाशक और संक्रामतानाशक। गरम देशों में तीव्र सविराम ज्वर में लाभदायक है, इन्फ्लुएञ्जा में भी, शरीर भर में कुचले जाने ऐसा चोटीलापन। भिन्न-भिन्न स्थानों से और उनके ऊपर पानी की बूँदें टपकतीं मालूम पड़ें।

सिर—रक्ताधिक्य। खाल कसी मालूम पड़े, सिर बँधा हुआ लगे; आँखों में जलन, कानों में भिनभिनाहट।

ज्वर—शरीर भर में शीत, रात के समय बिस्तर में अधिक हो। प्रशान्त सागर के किनारे की ठंडी तिजारती हवा असह्य। सर्वांग पीड़ा, कुचलन जैसी। मिचली और उबकाई।

चर्म—धोबिनों के चर्म की तरह सिकुड़ा हुआ। सिर की खाल कसी मालूम दे। मानो रबर के फीते से बँधी हुई हो।

मात्रा—अरिष्ट बूँदों की मात्रा में। ताजे पौधे से बनाना चाहिए। सूखे में इसके औषधि-गुण चले जाते हैं।

कैनाबिस इण्डिका (Cannabis Ind.)

(हशिश)

मन की उच्च शक्तियों को दबाती है और कल्पना शक्ति को बिना निम्न-कोटि की प्रवृत्तियों को उत्तेजित किए हुए अधिक प्रोत्साहित करती है। मन और इन्द्रियों को अति ऊँची अवस्था में उठा देती है जहाँ पर सभी एन्द्रिक ज्ञान और विचार-धाराएँ, सभी संवेदनाएँ और भाव अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती हैं।

दो व्यक्तित्व, देखने में एक दूसरे व्यक्ति के नियन्त्रण में जाहिर हो लेकिन उसका स्वाभाविक व्यक्तित्व उसे ऐसे कामों के करने से रोके जो उसको दूसरा अंतरिम व्यक्ति करने के लिए आदेश देता है। जाहिर तौर पर दोनों व्यक्तित्व एक दूसरे से स्वतन्त्र रूप में काम नहीं कर सकते। एक दूसरे को रोकता जाता है एक ड्राम की मात्रा का प्रभाव, (लेखक डॉ० एल्बर्ट श्नीडर)।

प्रयोक्ता सदा यह समझता है कि वह क्षणिक स्वप्नग्रसित व्यक्ति से पृथक् व्यक्ति है और विवेक से सोच सकता है।

अति विचित्र भ्रम और कल्पनाएँ, दूरी और समय के विस्तृत होने का भ्रम प्रबल रहता है। समय, दूरी और स्थान का विचार ही लोप हो जाता है। अति

प्रसन्न, सन्तुष्ट, कोई चिन्ता नहीं रहती। विचारों की भीड़ लगी हो। अनेक स्नायविक कष्टों में शान्ति प्रदान करती है, जैसे मिर्गी, पागलपन, मनोभ्रंश, सन्निपात, स्नायविक उत्तेजना। नेत्र और हृदय रोग के साथ घेघा। शरीर का कड़ापन, अकड़न।

मन—अधिक बोलना, घोर उत्साही। समय बहुत लम्बा मालूम पड़े; एक पल एक युग के बराबर मालूम दे; थोड़ी दूर भी कोसों की दूरी मालूम दे। बराबर सिद्धान्त ही की चर्चा करे। उत्सुक, उदास, पागल हो जाने का बराबर भय रहना। पागलपन, सदा हिलता रहे। बहुत भुलक्कड़; पूरा वाक्य खतम न कर सके। प्रसन्न चित्त, विचारों में डूबा रहे। अनियन्त्रित हँसी। शराबी का बकवास। काल्पनिक दृष्टि। भावात्मक उत्तेजना, शीघ्रता से भावों में परिवर्तन। अपने को न पहचाने, जीर्ण चक्कर मानो बहा जा रहा हो।

सिर—मालूम दे कि चाँद खुल और बन्द हो रही हो और खोपड़ी उठाई जा रही हो। मस्तिष्क में झटके (एलो० कोका०)। मूत्रक्षार विकार जनित सिर दर्द। कान में टपकन और बोझ। अफरा के साथ सिर दर्द। सिर का अनैच्छिक हिलना। असाधारण उत्तेजना और बकवास के बाद अर्धकपारी का हमला।

आँखें—स्थिर। पढ़ते समय अक्षर गिचपिचा जायें। भ्रमात्मक दृष्टि। बिना डर के भूत-प्रेत देखना।

कान—टपकन, भिनभिनाहट, टनटनाहट। खौलते पानी जैसी आवाज सुने। शोरगुल घोर असह्य।

चेहरा—बहुत निद्रालु और बुद्धिहीन भाव। होंठ चिपके हों। सोते में दाँत पीसना। मुँह और होंठ सूखे। लार गाढ़ी, झागदार, चमकीली।

पेट—भूख बढ़ना। दिल के छेद में दर्द, दाब से कम हो। अफरा। आमाशय के दक्षिणांश में झटके। उदर की नाड़ियों में तनाव की संवेदना, मानो फट जायेंगी।

गुदा—मलाशय में ऐसा लगे मानो गेंद पर बैठा हो।

मूत्र—मूत्र में चिकना श्लेष्मा अधिक हो। काँखना पड़े, बूँद-बूँद टपकना, कुछ देर बैठे रहने पर मूत्र निकले। मूत्र मार्ग में जलन और कड़क। दाहिने गुर्दे के आस-पास धीमा दर्द।

पुरुष—मैथुन के बाद पीठ पीड़ा। लिङ्ग मुण्ड से सफेद, चमकीला श्लेष्मा गिरे। कामोन्माद। कामोत्तेजना देर तक बनी रहे। सुजाक में लिंगोत्थान। शरीर के निचले जोड़ में या गुदा के पास सूजन की संवेदना, मानो गेंद पर बैठा हो।

स्त्री—मासिक-धर्म अधिक, गहरे रंग का, दर्दीला, बिना थक्के का। मासिक काल में पीठ में दर्द। गर्भाशय का शूल, अति स्नायविक उत्तेजना और अनिद्रा के साथ। बाँझपन (बोरैक्स)। दर्दीला मासिक-स्राव मैथुन इच्छा के साथ।

श्वास-यन्त्र—तर दमा। पसीना छूटे और साँस में तंगी, गहरा साँस ले।

दिल—धड़कन से जाग उठे। कोंचन दर्द; बहुत दाब के साथ। नाड़ी बहुत धीमी (डिजि०, कैल्मिया०, एपोसाइन०)।

अंग—कन्धों के आर-पार और रीढ़ में दर्द, झुकना पड़े, सीधा न टहल सके। हाथों और बाहों में और घुटनों से नीचे तक थरथराहट। निचले अंगों का सम्पूर्ण पक्षाघात। तलवों और पिण्डली में दर्द। घुटनों और टखनों में तेज दर्द। थोड़ा टहलने पर ही बहुत थकावट प्रतीत हो।

नींद—औंघाई बहुत, मगर नींद न आवे। कठिन और जल्द अच्छी न होने वाली अनिद्रा। शरीर का अकड़न। मुर्दों का सपना देखना; भविष्यवाणी करना। भयानक स्वप्न।

घटना-बढ़ना—बढ़ना; सुबह कॉफी से; मदिरा से और तम्बाकू से, दाहिनी करवट लेटने से। घटना : ताजी हवा से; ठण्डे पानी से, आराम से।

सम्बन्ध—बेलाडो०, हायोसा०, स्ट्रैमोनि०, लैकेसि०, एगैरिक०, एन्हैलोन (समय की भावना असाधारण, कम समय को अधिक समझना, मिनट घण्टे मालूम पड़ें, इत्यादि)।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

कैनाबिस सैटाइवा (Cannabis Sat.)

(हेम्प)

खासकर मूत्रेन्द्रिय, जननेन्द्रिय और श्वासेन्द्रिय को प्रभावित करती प्रतीत होती है। पानी गिरने ऐसा संवेदन इसका खास लक्षण है। बहुत थकावट, मानो बहुत परिश्रम किया हो, भोजन करने के बाद थकावट। निगलने से गला घुटना, वस्तुएँ गलत रास्ते से नीचे उतरें। हकलाना। विचार और बोलने में गड़बड़ाना। डाँवाडोल। बोली बोलने में हिचकिचाना, जल्दीबाजी से बोले, जो समझ में न आवे।

सिर—दूध से भय। चक्कर, सिर पर पानी टपकता मालूम हो। नाक की जड़ पर दाब।

आँखें—पुतली का धुँधलापन। स्नायविक विकार, अधिक मद्यपान और तम्बाकू के सेवन से आया मोतियाबिन्द। रोगी समझे कि वह जल्दी अन्धा होने जा रहा है। कुहर ऐसा दिखाई पड़े। आँखों के पिछले भाग से आगे की तरफ दाब। सुजाक-जनित नेत्र प्रदाह। ढेलों में दर्द। कण्ठमालिक नेत्र रोग। (सल्फ०, कैल्के०)।

मूत्र—पेशाब रुकना और कठिन कब्ज के साथ। दर्द के साथ पेशाब लगे। धार फटी हो। मूत्रमार्ग में चिलकन। सूजन जैसा लगे, छूने से चोटीलापन। पेशाब करते समय जलन, मूत्राशय तक जाये। बहुत जलता पेशाब; पेशाब की संकुचन जैसी

पेशी का आक्षेप के साथ बन्द होना। तरुण सुजाक, मूत्र-मार्ग अति कोमल। टाँगें फैलाकर चले। अण्डों में खींचन। मूत्रमार्ग में टेढ़ा-मेढ़ा दर्द। मैथुन-इच्छा प्रबल। मूत्र मार्ग में मांसाकुर का बढ़ना। (युक्लिप्टस) मुण्ड का पर्दा सिकुड़ना, मवाद और श्लेष्मा से मूत्रमार्ग का बन्द हो जाना।

स्त्री—मासिक धर्म का रुकना, जब शारीरिक शक्तियों से बहुत काम लिया गया हो, कब्ज भी साथ-साथ।

श्वास-यन्त्र—साँस लेने में कष्ट और धड़कन, खड़ा होना पड़े। सीना पर बोझ, खड़खड़ाती, साँय-साँय करने वाली सांस। खाँसी में हरा चिमड़ा, खूनी बलगम निकले।

दिल—मालूम पड़े कि दिल से बूँदें टपक रही हैं। धड़कन के साथ दर्दीला चोटें और खींच। दिल के पट्ठों का प्रदाह।

नींद—भयानक स्वप्न। सुबह को अधिक थकावट। दिन में नींद आना।

अंग—मोच के बाद अंगुलियों में खींचन आए। सीढ़ियाँ चढ़ने पर चपनी का खिसकना। सीढ़ियाँ चढ़ने पर पैरों में भारीपन पक्षाघात जैसी फटन दर्द। पैर की गद्दी और अंगुलियों की गद्दी के रोग।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : लेटने से सीढ़ी पर चढ़ने से।

क्रियानाशक—कैम्फर, नीबू का रस।

तुलना कीजिए—हेडिसेरम—ब्राजीलियन बरडोक—(सुजाक और लिंग की सूजन) : कैन्थे०, एसि०, कोपेवा०, थुजा०, कलि नाइट्रि०।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति। इकलाने में ३० शक्ति।

कैन्थरिस (Cantharis)

(स्पेनिश फ्लाई)

यह शक्तिशाली दवा जीवन क्रिया में भयानक गड़बड़ पैदा करती है, खासकर मूत्र और जननेन्द्रियों में उनकी क्रिया को विपरीत करती है और घोर प्रदाह उत्पन्न करती है जिससे भयानक प्रलाप होता है और जल-भय के लक्षण बढ़ते हैं (एनागैलिस)। प्रसवान्तक अकड़न। आमाशय और सारी आँतों में घोर सूजन पैदा करती है; खासकर निचले भाग में। सभी भागों की अति कोमलता। लगातार असह्य उपदाह। कच्चापन, जलन, दर्द। रक्तस्राव। पेशाब करने की असह्य लगातार इच्छा इसका मुख्य लक्षण है। आमाशय, जिगर और पाकाशय के रोग जो कॉफी पीने से बढ़ते हों। गर्भावस्था में आमाशयिक विकार। दर्द और कष्ट के साथ पेशाब निकलना, अन्य लक्षणों के साथ। श्लैष्मिक झिल्ली के स्राव को बढ़ाती है, चिमड़ा

श्लेष्मा। कैंथरिस मूत्राशय, गुर्दों, डिम्बों, दिमाग के पर्दों, फेफड़ों के पर्दों और दिल के पुट्ठों के पर्दों में जो प्रदाह पैदा करता है इसके साथ मूत्राशय का क्षोभ भी शामिल रहता है। गुर्दे की सोजिश जिसमें खून मिला पेशाब आए। सारे गुर्दे में कटन और जलन के भयानक दौरे पड़े और दर्द के साथ पेशाब का वेग; खून मिला पेशाब : बूँद-बूँद पेशाब हो।

मन—भयानक प्रलाप। आकुल, अशान्त; क्रोध में अन्त हो। चिल्लाना, भौंकना, जो स्वरनली छूने से या पानी पीने से बढ़े। बराबर कोई न कोई काम करने की इच्छा हो, मगर कुछ कर न सके। तीव्र पागलपन, प्रायः कामातुरता से सम्बन्धित काम इच्छा प्रबल। क्रोध, भौंकने चिल्लाने के दौरे। अकस्मात् अचेतनता लाल चेहरे के साथ।

सिर—मस्तिष्क में जलन। ऐसी संवेदना जैसे मस्तिष्क में पानी खौल रहा हो। चक्कर, खुली हवा में अधिक हो।

आँख—सब चीजें पीली दीख पड़ना (सैण्टोना०) धधकती, चमकती, घूरती आँखों में जलन।

कान—मालूम पड़े कि कानों से तेज हवा या गरम साधारण हवा बाहर निकल रही है। कानों के आस-पास की हड्डी में दर्द (कैप्सिकम)।

चेहरा—पीला, दुःखी, मुर्दे जैसा। चेहरे पर खुजली वाले छाले जो छूने से जलें। चेहरे पर विसर्प रोग, जलन के साथ; काटने वाली गरमी मूत्र लक्षण के साथ। गरम और लाल।

गला—जिह्वा पर छाले भरे हों, रोयेंदार, किनारे लाल। मुँह गलकोष और गले में जलन; मुँह में छाले। तरल पदार्थ निगलने में बहुत कठिनाई। बहुत चिमड़ा लेसदार श्लेष्मा (कैलिबाइक्रो०)। स्वरनली छूने से कड़े झटके और गले की सूजन, जैसे आग जलती हो। घुटन, चकत्तेदार घाव (हाइड्रो० म्यु० नाइट्रि० एसि) झुलसने जैसा लगे। बहुत गरम भोजन खाने के बाद जला-सा लगे।

सीना—फुफ्फुसावरण प्रदाह स्राव शुरू होते ही। घोर साँस कष्ट, धड़कन, अकसर सूखी खाँसी। मूर्च्छा की प्रवृत्ति। छोटी परेशानी करने वाली खाँसी, खून की लकीर वाला चिमड़ा बलगम। जलन-दर्द।

आमाशय—गले, आमाशय और अन्ननली के मुँह में जलन मालूम दे (कार्ब०) सभी चीज से घृणा, पीना, खाना, तम्बाकू। सभी तरल पदार्थ से घृणा इसके साथ जलन, प्यास। अति उत्तेजनीय, घोर जलन। खून की लकीर वाली झिल्ली की कै, घोर ओकाई। कॉफी पीने से रोग बढ़े। जरा-सी कॉफी पीने से ही मूत्राशय का दर्द बढ़े; और वह कै हो जाये। न बुझने वाली प्यास।

मल—कम्प के साथ जलन। पेचिश, आँव जैसा मल, जैसा आँतों पर खराश पड़ने से आए। खून मिला मल, जलन और कूँथन के साथ। मलत्याग के बाद कपकपी।

मूत्र—असह्य इच्छा और कूँथन। असह्य कूँथन; चाप। पेशाब करने से पहले, करते समय और बाद में कटन। पेशाब जलता हुआ; बूँद-बूँद टपके। बराबर पेशाब लगता रहे। पेशाब में झिल्ली के टुकड़े जैसे पानी में चोकर घोल दिया हो, खारिज हो। जेली की तरह, पेशाब रेशेदार।

पुरुष—काम इच्छा अधिक, कसाव, लिंगोत्थान। लिंग मुण्ड में दर्द। (प्रूनस, पैरीरा)। सूजाक में अनैच्छिक लिंगोत्थान।

स्त्री—आँवनाल का न निकलना (सिपि०) इसके साथ मूत्रकृच्छ्र, मस्से। मरे भ्रूण, झिल्ली इत्यादि को बाहर निकालता है। अत्यधिक कामोन्माद (प्लैटि०, हायोसा०, लैके०, स्ट्रेमोनि०)। प्रसव सम्बन्धी गर्भाशय प्रदाह, मूत्रमार्ग की सूजन के साथ। मासिक-धर्म बहुत पहिले और अधिक, योनि घुण्डी की काली सूजन। काम-उत्तेजना के साथ। गर्भाशय से लगातार स्राव, गलत कदम पड़ने से बढ़े। डिम्बाशय में जलन, दर्द, कोमल। गुदास्थि छिद्र में दर्द; कोंचन, फटन।

श्वास-यन्त्र—आवाज धीमी। कमजोरी का बोध। सीने में चिलक। (ब्रायो०, कैलि० कार्ब०, स्क्विल्ला) प्लुरिसी जिसमें पानी आया हो।

दिल—धड़कन, नाड़ी कमजोर, क्रमिक, मूर्च्छा की सम्भावना। दिल की पेशियों का प्रदाह जिसमें पानी आया हो।

पीठ—कमर में दर्द लगातार पेशाब लगा रहे।

अंग—अंगों में फरन। तलवों में दर्द जैसे घाव बना हो। कदम न रख सके।

चर्म—विषैला चर्म प्रदाह, अण्डाकार उभरन। अधिक पसीने के बाद अण्डकोष और लिंग के आस-पास अकौता का दूसरा चरण। सड़न की प्रवृत्ति। चोकरदार छिलकों के साथ चर्म दाने। रस भरे दाने जलन और खुजली के साथ। धूप छाले; झुलसना, कच्चापन और छरछराहट के साथ जो ठण्डे प्रयोग से कम हों, बाद में सूजन आये। विसर्प रोग, रस भरे दानों वाला, अधिक बेचैनी के साथ। रात में तलवे जलें।

ज्वर—हाथ और पैर ठण्डे। ठण्डा पसीना। तलवे जलें। शीत मानो ठण्डा पानी शरीर पर गिराया जा रहा हो।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : छूने से या पास आने से, पेशाब करने से या ठंडा पानी या कॉफी पीने से घटना : मालिश से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कोना०, कैम्फ०, पल्से०।

तुलना कीजिए। केनथरिडिन—(वृक्कक्षय) कैन्थरिडिन का तत्कालीन प्रभाव रक्त की महीन नलियों को उत्तेजित करना होता है, जिससे पोषक रस का स्राव सरल हो जाता है। यह प्रभाव गुर्दों की रक्त-नलिकाओं पर अधिक देखा गया है। वृक्कक्षय के साथ-साथ रक्तशर्करा की वृद्धि महत्वपूर्ण लक्षण है।) वेसिकेरिया—(मूत्रयन्त्र और गुर्दों की औषधि, गुर्दे की नाली के साथ-साथ और मूत्राशय में जलन की अनुभूति और उसके साथ घड़ी-घड़ी पेशाब होना, प्रायः कष्ट के साथ बूँद-बूँद पेशाब होना। मूत्राशय प्रदाह और उत्तेजना। अरिष्ट ५—१० बूँद की मात्रा में)। फुसिना–शराब में मिलावट देने का रंग (गुर्दों के बाहरी भाग का प्रदाह, पेशाब में अण्डे की सफेदी जैसे पदार्थ (अलब्यूमेन) का जाना, गहरा लाल पेशाब; अतिसार जिसमें मल लाल रंग का और अधिक मात्रा में तथा जोर से निकले, तेज उदर दर्द के साथ)। एण्ड्रासेस लैक्टिया (मूत्र रोग, मूत्र अधिक करने वाला, शोथ)। एपिस, आर्से०, मर्क० कार०।

पूरक : कैम्फर।

मात्रा—६ से ३० शक्ति। खुराक दोहराना ठीक होता है। बाहरी प्रयोग आग से जलने और अकौता में १x और २x पानी में या मलहम के रूप में।

कैप्सिकम (Capsicum)

(सेनी पेपर)

ढीले रेशेवालों, दुर्बलकाय व्यक्तियों और स्वाभाविक ताप की कमी वालों पर इसका प्रभाव खासकर देखा गया है। उनमें प्रतिक्रिया शक्ति की कमी रहती है। ऐसे लोग मोटे, सुस्त, शारीरिक परिश्रम असह्य। यह श्लैष्मिक झिल्ली पर असर करती है जिससे वहाँ घुटन की संवेदना होती है। कनपटी की हड्डी की सूजन, जलन-दर्द और सर्वत्र शीत। बूढ़े लोग जिनकी जीवनी शक्ति खतम हो चुकी हो, खासकर मानसिक काम करने से और गरीबी का जीवन बिताने से। चौंधियाई आँखें, जिन पर रोशनी का असर न हो। बाहरी हवा जरा भी सहन न हो। प्रत्येक सूजन में पकन की विशेष प्रवृत्ति, मदपान वालों की दुर्बल पाचनक्रिया तथा शरीर शिथिल। मांसपेशिक वेदना, पेशियों में टीस और झटके।

मन – बहुत चिड़चिड़ापन। परिवार से दूर रहने के दिनों में परिवार की याद बेचैन बनाए, इसके साथ अनिद्रा और आत्महत्या की प्रवृत्ति के साथ। अकेले रहना चाहे। चिड़चिड़ापन। मदपायियों का सन्निपात।

सिर—फटन-सा सिर दर्द; खाँसने से बढ़े। चेहरा गरम। गाल लाल। चेहरा लाल, गरम ठंडा (एसाफेटि०)।

कान—कानों में जलन और चुभन। कानों के पीछे सूजन और दर्द। कान की चुचुकाकार हड्डी की सूजन। चुचुकाकार हड्डी कोमल। छूने से बहुत चोटीलापन और कोमलपन (ओनोस्मोडि०)। कान की सूजन और हड्डी का रोग पकने से पहले।

गला—गले में गरम लगना। कम्बुकर्णी नली की मन्द सूजन, बहुत दर्द के साथ। गले से कानों तक दर्द और सूखापन, धूम्रपान और मदपान वालों का गला बैठना, गले में छरछराहट। जलन, घुटन निगलते समय। काग और तालु की सूजन सूजा हुआ और ढीला।

मुँह—होठों का दाद। (मूल अरिष्ट की एक बूँद लगाइये)। मुँह आना, मुँह से दूषित दुर्गन्ध निकलना।

आमाशय—जबान के सिर पर जलन। पाचनक्रिया की कमजोरी से आया अनपच रोग। बहुत हवा जमा हो, खासकर कमजोर लोगों में। उत्तेजित करने वाले पदार्थ की अधिक इच्छा। कै, पेट के गड्ढे में कमजोरी मालूम दे। अधिक प्यास लेकिन पानी पीने से कपकपी लगे।

मल· खून मिला श्लेष्मा, बहुत जलन और ऐंठन के साथ, पाखाने के बाद दर्द पीठ तक जाये। मल त्यागने के बाद प्यास लगे और सर्दी से काँपे। खूनी बवासीर, गुदा में चोटीलापन के साथ। मलत्याग काल में गुदा में चुभन।

मूत्र—दर्द के साथ बूँद-बूँद पेशाब हो, घड़ी-घड़ी प्रायः असफल चेष्टा। छिद्र के मुँह में जलन। पहले बूँद-बूँद टपके, तब छलके, मूत्राशय की गरदन एकाएक सिकुड़े। छिद्र के मुँह का उल्टा होना।

पुरुष—अण्डकोष का ठण्डापन, इसके साथ नपुंसकता, अंड क्षय। अंडों की सुन्नता, मुलायम और बहुत छोटे हो जाएँ। सूजाक। अनैच्छिक पीड़ाजनक लिंगोत्थान, मूत्र ग्रन्थि में अति जलन, दर्द।

स्त्री—वयःसन्धिकालीन रोग, जीभ के सिरे में जलन के साथ। (लैथाइरस०)। मासिक धर्मान्तकाल के निकट गर्भाशय से रक्त-प्रवाह, मिचली के साथ। बायें डिम्ब प्रदेश में गड़न मालूम हो।

श्वास-यन्त्र—सोने में घुटन; साँस रोके। आवाज भारी। दिल के शिखर भाग में दर्द या पसली क्षेत्र में, जो छूने से बढ़े। सूखी, परेशान करने वाली खाँसी, फुफ्फुस से घृणित वायु निकले। साँस कष्ट मालूम पड़े कि सीना और सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। धड़ाके वाली खाँसी। फुफ्फुस के सड़न की सम्भावना। खाँसने पर मूत्राशय, टाँगों, कान इत्यादि दूर की जगहों में दर्द।

अंग—चूतड़ से पैरों तक दर्द। गृध्रसी जो पीछे झुकने में और खाँसने से बढ़े। घुटनों में खींचन, दर्द।

ज्वर—ठंडापन, बदमिजाजी के साथ। पानी पीने के बाद कम्प। शीत पीठ से शुरू हो, गरमी से कम। पीछे की तरफ कोई गरम चीज रखना चाहे। शीत के पहले प्यास।

घटना-बढ़ना—घटना : खाते समय, गरमी से। बढ़ना : खुली हवा, कपड़ा हटाने से, बाहरी हवा से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : सिना, कैलेडि०।

तुलना कीजिये : पल्से०, लाइको०; बेला०, सेंटोरिया (खून की लहरें दौड़ना, परिजनों में लौटने के लिए उतावला, सविराम ज्वर)।

मात्रा—३ से ६ शक्ति। मदात्यय में अरिष्ट की एक ड्राम की मात्रा दूध या नारंगी के छिलके के रस में।

कार्बो एनिमेलिस (Carbo An.)

(एनिमल चारकोल)

विशेषतः उपयोगी है उन व्यक्तियों को जो कण्ठमाला के रोगी हों, या जिनके शरीर में रक्त की अधिकता हो, उन बूढ़ों और रोग द्वारा कमजोर हुए व्यक्तियों के लिए भी उपयोगी है जिनका रक्त-संचार और जीवनीशक्ति क्षीण है। ग्रन्थियाँ सख्त; शिरायें तनी हुईं; चर्म नीला। फुफ्फुसावरण प्रदाह के बाद चिलक बाकी रहे। कोई चीज उठाने के बाद जल्दी मोच आए। दूध पिलाने वाली स्त्रियों की कमजोरी। घाव और सड़ाव। इसके सभी स्राव दूषित होते हैं। स्थानीय रक्तसंचयता बिना गरमी।

मन—अकेले रहना चाहे, दुःखी; विचार मग्न। बातचीत न करना चाहे। रात में चिन्ता, रक्त में गरमी के साथ।

सिर—सिर में दर्द मानो टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिया हो। ध्यान-छिन्नता के साथ सिर में खून दौड़ना। ऐसा लगे जैसे आँखों के ऊपर कोई चीज रक्खी हो जिसकी वजह से ऊपर न देख सके। गाल और होंठ नीले। चक्कर के बाद नकसीर। नाक सूजी हुई, सिरा नीला, सिरे पर छोटे गुल्म। सुनने में गड़बड़ी। आवाज आने की दिशा न बता सके।

आमाशय—भोजन करने से रोगी थके। कमजोरी, खालीपन। पेट में जलन और ऐंठन। पाचनशक्ति दुर्बल। अफरा। गली-सड़ी वस्तु खाने से विषाक्रमण। चर्बीले भोजन से घृणा। मुँह में खट्टा पानी आये। कलेजा जलना।

स्त्री—गर्भावस्था की कै, रात में अधिक। प्रसवान्तक स्राव घृणित (क्रियोजो०; रसट०, सिकेल०)। मासिक धर्म बहुत पहले, घड़ी-घड़ी, देर तक रहे, बाद में बहुत

कान—कानों में जलन और चुभन। कानों के पीछे सूजन और दर्द। कान की चुचुकाकार हड्डी की सूजन। चुचुकाकार हड्डी कोमल। छूने से बहुत चोटीलापन और कोमलपन (ओनोस्मोडि०)। कान की सूजन और हड्डी का रोग पकने से पहले।

गला—गले में गरम लगना। कम्बुकर्णी नली की मन्द सूजन, बहुत दर्द के साथ। गले से कानों तक दर्द और सूखापन, धूम्रपान और मदपान वालों का गला बैठना, गले में छुरछुराहट। जलन, घुटन निगलते समय। काग और तालु की सूजन सूजा हुआ और ढीला।

मुँह—होठों का दाद। (मूल अरिष्ट की एक बूँद लगाइये)। मुँह आना, मुँह से दूषित दुर्गन्ध निकलना।

आमाशय—जबान के सिर पर जलन। पाचनक्रिया की कमजोरी से आया अनपच रोग। बहुत हवा जमा हो, खासकर कमजोर लोगों में। उत्तेजित करने वाले पदार्थ की अधिक इच्छा। कै, पेट के गड्ढे में कमजोरी मालूम दे। अधिक प्यास लेकिन पानी पीने से कपकपी लगे।

मल · खून मिला श्लेष्मा, बहुत जलन और ऐंठन के साथ, पाखाने के बाद दर्द पीठ तक जाये। मल त्यागने के बाद प्यास लगे और सर्दी से कांपे। खूनी बवासीर, गुदा में चोटीलापन के साथ। मलत्याग काल में गुदा में चुभन।

मूत्र—दर्द के साथ बूँद-बूँद पेशाब हो, घड़ी-घड़ी प्रायः असफल चेष्टा। छिद्र के मुँह में जलन। पहले बूँद-बूँद टपके, तब छलके, मूत्राशय की गरदन एकाएक सिकुड़े। छिद्र के मुँह का उल्टा होना।

पुरुष—अण्डकोष का ठण्डापन, इसके साथ नपुंसकता, अंड क्षय। अंडों की सुन्नता, मुलायम और बहुत छोटे हो जाएँ। सूजाक। अनैच्छिक पीड़ाजनक लिंगोत्थान, मूत्र ग्रन्थि में अति जलन, दर्द।

स्त्री—वयःसन्धिकालीन रोग, जीभ के सिरे में जलन के साथ। (लैथाइरस०)। मासिक धर्मान्तकाल के निकट गर्भाशय से रक्त-प्रवाह, मिचली के साथ। बायें डिम्ब प्रदेश में गड़न मालूम हो।

श्वास-यन्त्र—सोने में घुटन; साँस रोके। आवाज भारी। दिल के शिखर भाग में दर्द या पसली क्षेत्र में, जो छूने से बढ़े। सूखी, परेशान करने वाली खाँसी, फुफ्फुस से घृणित वायु निकले। साँस कष्ट मालूम पड़े कि सीना और सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे। धड़ाके वाली खाँसी। फुफ्फुस के सड़न की सम्भावना। खाँसने पर मूत्राशय, टाँगों, कान इत्यादि दूर की जगहों में दर्द।

अंग—चूतड़ से पैरों तक दर्द। गृध्रसी जो पीछे झुकने में और खाँसने से बढ़े। घुटनों में खींचन, दर्द।

ज्वर—ठंडापन, बदमिजाजी के साथ। पानी पीने के बाद कम्प। शीत पीठ से शुरू हो, गरमी से कम। पीछे की तरफ कोई गरम चीज रखना चाहे। शीत के पहले प्यास।

घटना-बढ़ना—घटना : खाते समय, गरमी से। बढ़ना : खुली हवा, कपड़ा हटाने से, बाहरी हवा से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : सिना, कैलेडि०।

तुलना कीजिये : पल्से०, लाइको०; बेला०, ऐंटोरिया (खून की लहरें दौड़ना, परिजनों में लौटने के लिए उतावला, सविराम ज्वर)।

मात्रा—३ से ६ शक्ति। मदात्यय में अरिष्ट की एक ड्राम की मात्रा दूध या नारंगी के छिलके के रस में।

कार्बो एनिमेलिस (Carbo An.)

(एनिमल चारकोल)

विशेषतः उपयोगी है उन व्यक्तियों को जो कण्ठमाला के रोगी हों, या जिनके शरीर में रक्त की अधिकता हो, उन बूढ़ों और रोग द्वारा कमजोर हुए व्यक्तियों के लिए भी उपयोगी है जिनका रक्त-संचार और जीवनीशक्ति क्षीण है। ग्रन्थियाँ सख्त; शिरायें तनी हुई; चर्म नीला। फुफ्फुसावरण प्रदाह के बाद चिलक बाकी रहे। कोई चीज उठाने के बाद जल्दी मोच आए। दूध पिलाने वाली स्त्रियों की कमजोरी। घाव और सड़ाव। इसके सभी स्राव दूषित होते हैं। स्थानीय रक्तसंचयता बिना गरमी।

मन—अकेले रहना चाहे, दुःखी; विचार मग्न। बातचीत न करना चाहे। रात में चिन्ता, रक्त में गरमी के साथ।

सिर—सिर में दर्द मानो टुकड़े-टुकड़े उड़ा दिया हो। ध्यान-छिन्नता के साथ सिर में खून दौड़ना। ऐसा लगे जैसे आँखों के ऊपर कोई चीज रक्खी हो जिसकी वजह से ऊपर न देख सके। गाल और होंठ नीले। चक्कर के बाद नकसीर। नाक सूजी हुई, सिरा नीला, सिरे पर छोटे गुल्म। सुनने में गड़बड़ी। आवाज आने की दिशा न बता सके।

आमाशय—भोजन करने से रोगी थके। कमजोरी, खालीपन। पेट में जलन और ऐंठन। पाचनशक्ति दुर्बल। अफरा। गली-सड़ी वस्तु खाने से विषाक्रमण। चर्बीले भोजन से घृणा। मुँह में खट्टा पानी आये। कलेजा जलना।

स्त्री—गर्भावस्था की कै, रात में अधिक। प्रसवान्तक स्राव घृणित (क्रियोजो०; रसट०, सिकेल०)। मासिक धर्म बहुत पहले, घड़ी-घड़ी, देर तक रहे, बाद में बहुत

थकावट, इतनी कमजोरी कि बोलना कठिन हो (कॉकु)। केवल सुबह को स्राव हो (बोरैक्स, सीपिया) योनि और उसके होठों में जलन। स्तनों में चमकन, दर्दीली पकन, खासकर दाहिने में। गर्भाशय का कर्कट रोग, जाँघों के नीचे तक जलन दर्द।

श्वास-यन्त्र—फुफ्फुसावरण प्रदाह, जो टायफायड जैसा हो; सूई गड़ने जैसा दर्द जो प्लूरिसी ठीक होने के बाद रह गया हो। फुफ्फुस में घाव, सीने में ठंडापन के साथ। खाँसी जिसमें हरे से रंग की पीब आये।

चर्म—स्पंज की तरह नरम घाव, ताँबे के रङ्ग के दाने। मुँहासे। बेवाई, शाम को अधिक कष्ट, बिस्तर में और ठंडक से बढ़े। वृद्ध लोगों के हाथ और चेहरे पर मस्से, जिसके साथ हाथ-पैर नीले हों। गरदन, काँख, पुट्ठों और स्तनों की ग्रन्थियाँ सख्त, सूजी हुई दर्दीली, कोंचन दर्द, कटन, जलन (कोनि०, मर्क०, आयोड०, फ्लैव०)। दरारें, जलन, कच्चापन, नमदार बाघी।

अंग—त्रिक भाग में दर्द, छूने से जलन। टखने आसानी से मुड़ जायें। जोर पड़ने और भारी चीज उठाने पर बहुत कमजोरी। जोड़ कमजोर। जल्दी बदरंग होना। रात में कूल्हों के जोड़ों में दर्द। **रात पसीना** दुर्गन्धित और अधिक, कलाई में दर्द।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दाढ़ी बनाने के बाद, रक्त और वीर्यादि रसों की क्षीणता के बाद।

सम्बन्ध—कार्बन कुटुम्ब की सभी औषधियों में घृणित स्राव और दुर्गन्ध होती है। सभी चर्म पर असर करती हैं। जिससे खाल उधड़न और खराश पैदा होती है। ग्रन्थियों का बढ़ना, नजले की हालत, अफरा, दम घुटना।

कार्बन टेट्राक्लोराइड जिगर में अपकर्ष लाती है (फास्फो०, आर्स०, क्लोरो फा०)। पैर और हाथों की हड्डियों के बीच वाली पेशियों में लकवा। चनूनों के इलाज में आश्चर्यजनक सफलता। देखिए थाइसॉल (सम्बन्ध)।

पूरक : कैल्के० फॉस०।

क्रियानाशक : आर्स०, नक्स।

तुलना : बड़ियागा, सीपिया, सल्फर, प्लम्बम०, आयोड।

मात्रा—१ से ३० शक्ति। ३ विचूर्ण कान के अर्बुद में फूँकने के लिए।

कार्बो वेजिटेबिलिस (Carbo V.)

(वेजिटेबल कार्बन)

तात्विक छिन्नता और अपूर्ण ओषिजनीकरण इस दवा का प्रधान संकेत है। कार्बो के रोगी की विशेषता यह है वह मोटा और सुस्त होता है और उसके सभी

रोग जीर्ण होने की प्रवृत्ति रखते हैं। जान पड़ता है कि रक्त महीन नलिकाओं में सड़ गया है, जिससे नीलापन, ठण्डक और रक्तगुल्म हो जाता है। शरीर नीला पड़ जाता है और बरफ ऐसा ठण्डा होता है। रोग उत्पन्न करने वाले कीटाणुओं को आक्रमण करने का इस जीवन-हीन रक्त पर अच्छा अवसर मिल जाता है और रक्त में विष दोष और आंत्रिक ज्वर विकार पैदा हो जाते हैं।

रसों की क्षीणता से, अधिक या अन्धाधुन्ध औषध खाने से किसी अन्य रोग के बाद जीवन शक्ति का घट जाना। उन बूढ़ों की दवा है जिनके शरीर में खून की अधिकता है, हैजे की पतनावस्था में, आंत्रिक ज्वर में कार्बोवेज, के प्रयोग का अच्छा अवसर मिलता है। रोगी प्रायः जीवनहीन लगता है, लेकिन सिर गरम रहता है। ठण्डक : ठंडी साँस, नाड़ी चलती न लगे, साँस कष्टदायक और हवा की अधिक आवश्यकता, पंखे झलवाना चाहे, सभी खिड़कियाँ खोलना आवश्यक। यह सब कार्बोवेज के विशेष चिह्न हैं। रोगी सरलता से अचेत हो; थका हुआ हो, ताजी हवा का अधिक इच्छुक। किसी श्लैष्मिक झिल्ली से रक्तप्रवाह। घोर दुर्बल इतना कमजोर कि तुरन्त मर जायगा। वे लोग जो पिछली बीमारी से पूरी तौर पर अच्छे न हुए हों। बोझ ऐसा संवेदना, जैसे सिर के पिछले भाग मे, आँखों और पलकों पर, कानों के आगे, आमाशय में या शरीर के अन्य स्थान में, इसके साथ शरीर के किसी भी स्थान में सड़न की अवस्था और जलन। रक्त संचार में आम रुकावट, चर्म का नीलापन, अंग ठंडे।

मन—अन्धेरे से घृणा। भूत-प्रेत का भय। एकाएक स्मरण शक्ति का लोप होना।

सिर—किसी असाधारण क्रिया के पीड़ा। बाल दर्दीले लगें, आसानी से झड़े। बिस्तर की गर्मी से खोपड़ी चर्म खुजलाए। हैट सिर पर बोझ ऐसा भारी लगे। सिर भारी मालूम दे, सिकुड़ा लगे। मिचली और सिर में टनटनाहट के साथ चक्कर। माथे और चेहरे पर दाने।

चेहरा—फूला हुआ। नीला, पीला, मुर्दे जैसा, ठंडे पसीने से तर, नीला (क्युप्रम०, ओपियम)। चितकबरे गाल, नाक लाल।

आँखें—काले तैरते हुए धब्बे दिखाई देना। कमजोरी। जलन। पेशी पीड़ा।

कान—कर्ण-प्रवाह जो शिशुओं की छोटी माता या आरक्त ज्वर के बाद आया हो। कान सूखे। कर्ण-स्रावी ग्रन्थि की दूषित बनावट, साथ में झिल्ली का उखड़ना।

नाक—नकसीर के रोजाना दौरे, पीले चेहरे के साथ। जोर पड़ने से रक्त-स्राव, पीला चेहरा, नाक का सिरा लाल और छिलकेदार, नथनों के चारों तरफ खुजली। नाक की नसों में सिकुड़न। नथनों के किनारों पर दाने। खाँसी के साथ नाक बहना; खासकर गरम, नम मौसम में छींकने की असफल चेष्टा।

मुँह—सफेद या बादामी मैल जबान पर; घावों से भरी हुई। दाँतों से चबा न सके। मसूड़े पीछे हटे हुए और खून बहे। दाँत साफ करते समय मसूढ़ों से खून गिरे। मसूढ़ों से पीब आये।

आमाशय – डकार, भारीपन, अफरा हुआ और औंघाई, वायु से तना हो, दर्द के साथ, लेटने से कष्ट बढ़े। खाने और पीने से डकार आए। डकार आने से कुछ कम हो। तीखी, खट्टी डकार। पानी ऊपर आना, साँस फूलना। अफरा के कारण। सुबह की मिचली। पेट में जलन, पीठ और रीढ़ की हड्डी तक बढ़े। सिकुड़न दर्द सीने तक बढ़े, उदर फूलने के साथ। पेट में गर्भी की-सी निर्बलता। खालीपन जो खाने से कम न हो। ऐंठन दर्द रोगी को दोहरा होने के लिए मजबूर कर दे। खाने के आधा घण्टे बाद कष्ट बढ़े। कौड़ी क्षेत्र में उत्तेजना। मन्द पाचन-क्रिया पचने से पहले ही सड़ जाये। स्तन पान कराने वाली स्त्रियों का आमाशय शूल इसके साथ अधिक अफरा, खट्टी तीखी डकार। दूध मांस और स्निग्ध चीजों से घृणा करना। सादा से सादा भोजन भी कष्ट दे। कौड़ी प्रदेश अति कोमल।

उदर—दर्द मानो भारी बोझ उठाया हो, गाड़ी की सवारी से उदर शूल, अति दुर्गन्धित वायुस्खलन, कसा कपड़ा कमर या उदर पर सहन न हो, आँतों के नासूर के साथ वाले रोग। उदर बहुत तना हो, हवा खुलने से कम। वायुशूल। जिगर में दर्द।

आमाशय और मल वायु गरम, तर, घृणित। मलान्त्र में खुजली, कुतरन, जलन। मलान्त्र से तीखा, छिलन, रस टपके। दुर्गन्धित, चमकीला रस टपके। रात में विटप सन्धि, खाज पैदा करने वाला रस टपके। मलान्त्र से खून आये। गुदा में जलन वाली नस गाँठें (मर्क०, सल्फ०)। वृद्ध लोगों का दर्दीला दस्त। अक्सर अनैच्छिक, मुर्दे की-सी महक का पाखाना, बाद में जलन। सफेद, गुदा में दरारें। नीलपन लिए, जलन के साथ बवासीर, पाखाना के बाद दर्द।

पुरुष—मलत्याग काल में प्रोस्टेट ग्रन्थि रस स्राव। जंघाओं में अण्ड-कोष के पास खुजली और पसीना।

स्त्री—समय के पहले और अधिक मात्रा में मासिक स्राव। पीला खून। योनि घुण्डी सूजी, चिपटे घाव, बाहरी योनि पर नसों की गाँठें। मासिकधर्म के पहले प्रदर, गाढ़ा, हरियालीदार, दूधिया, छीलने वाला (क्रियोजो०), मासिककाल में हा और पैरों के तलवों में जलन।

श्वासयन्त्र—खाँसी जिसके साथ स्वरयन्त्र में खुजली हो। आक्षेपिक कास जि गला घुटे और कै के साथ कुकुर खाँसी, खासकर शुरू में। गहरी, रूखी आवाज, भी जोर पड़ने से जवाब दे जाये। आवाज भारी, शाम को बढ़े, बात करने से, शाम को, साँस रुके, सीने में छरछराहट, कच्चापन। सीने में श्लेष्मा का साँय-साँय करना

और खड़खड़ाना। कभी-कभी देर तक खाँसी के हमले। सीने में जलन के साथ, खाँसी, शाम को खुली हवा में खाने और बोलने के साथ बढ़े। आक्षेपिक खाँसी; नीला चेहरा बदबूदार बलगम, उपेक्षित फुफ्फुस प्रदाह। ठंडा साँस, पंखा झलवाना आवश्यक। फुफ्फुस से रक्त-स्राव। वृद्ध लोगों का दमा रोग, नीला चेहरा।

अंग—भारी, कड़े, लकवा ऐसी सुन्नता; अंग सो जाय। पेशियाँ शक्तिहीन, जोड़ कमजोर। नड़हर की हड्डी में दर्द। तलवों में ऐंठन, पैर ठिठुरे और पसीनेदार। घुटनों से नीचे तक ठंडक। पैर की अंगुलियाँ लाल, सूजी हुई। हड्डियों में जलन दर्द, अगों में भी।

ज्वर—ठंडक लगे उसके साथ प्यास। शीघ्र अग्र बाहों से शुरू हो। कई स्थानों में जलन। भोजन करने पर पसीना। क्षय ज्वर, कमजोर करने वाला पसीना।

चर्म—नीला ठंडा, काले धब्बे। तनाव पर नीले रंग की शिरायें उभरना। खुजलाना, शाम को बिस्तर की गरमी से बढ़े। तर चर्म गरम पसीना। वृद्धावस्था की सड़न पैर की अंगुलियों से शुरू हो। बिस्तर-घाव खून सरलता से बहे। बालों का गिरना, शारीरिक दुर्बलता के कारण। दूषित घाव, जलन-रोग। पनीला बदबूदार रस-स्राव, किनारों के सड़ने की सम्भावना। धूम्र रोग। नस-गाँठ घाव, जहरबाद (आर्स०, एन्थ्राक्सि०)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: शाम, रात और खुली हवा, ठंडक, चर्बीला भोजन, मक्खन, काफी, दूध, गरम तर मौसम, मदिरा।

घटना: डकार से, पंखा झलने से, ठंडक से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक: स्पिरिट नाइटर कैम्फ०, एम्ब्रा०, आर्सेनिकम०।

तुलना कीजिए: कार्बोनियम—लैम्प ब्लेक—(ऐंठन जबान से शुरू होकर साँस नली और अंगों तक नीचे उतरे। चुनचुनाहट) लाइको०, आर्स०, चायना।

पूरक—कैली कार्ब०, ड्रोसे०।

मात्रा—१ से ३ विचूर्ण पेट की गड़बड़ी के लिए। ३० शक्ति और उससे ऊँची जीर्ण अवस्थाओं में और पतनावस्था में।

कार्बोलिकम एसिडम (Carbolic Acid)

(फेनॉल-कार्बोलिक एसिड)

[illegible] एसिड एक शक्तिवान उत्तेजक और अचैतन्यकारक है। एक मन्द, नाशकारी दवा है। अचैतन्यता, संवेदनहीनता, चालन शक्ति का लोप को, मन्द साँस और श्वास यन्त्रों की कार्यहीनता से मृत्यु। इसका केन्द्रीय स्नायु-मण्डल पर होता है। सूँघने की क्षमता बढ़ जाती है।

शारीरिक और मानसिक मन्दता, पढ़ने से अनिच्छा, सिर में फीता कसने ऐसा दर्द। सूँघने की शक्ति बहुत तेज हो, यह इस औषधि का प्रबल सांकेतिक लक्षण है। आमाशय के लक्षण महत्त्वपूर्ण हैं। वेदना प्रचण्ड होती है, तेजी से आती है और लुप्त हो जाती है। शारीरिक परिश्रम से किसी भाग में नासूर बन जाता है। सड़े घाव (बैप्टि०)। अरुण-ज्वर, आन्तरिक तन्तु विनाश की प्रबल सम्भावना के साथ दुर्गन्ध। आक्षेपिक खाँसी। सन्धि प्रदाह। (मात्रा देखिए।)

सिर—मानसिक काम से अनिच्छा। कसाव, मानो रबर के फीते से कसा हुआ है (जेलसि०, मेहोनिया०)। दाहिनी आँख के घेरे पर स्नायुशूल। सिर दर्द, हरी चाय पीने से या तम्बाकू पीते समय कम हो।

नाक—सूँघने की शक्ति तीव्र, सड़े स्राव। पीनस रोग; सड़ाव पपड़ी और घाव के साथ। इन्फ्लुएञ्जा और उसकी कमजोरी।

गला—होठों और गालों की भीतरी तरफ हुआ घाव। काग सुकड़ा। मुँह से आमाशय तक जलन, तालुमूल लाल और निगलना कठिन। गन्दा और सफेद। सड़ा स्राव। मल से ढँके हुए, निगलना लगभग असम्भव। रोहिणी रोग, दुर्गन्धित साँस, तरल पदार्थ निगलने से ऊपर आवे, दर्द, कम हो (बैप्टि०), चेहरा धुँधला, लाल मुँह और नाक के पास सफेद। जीवन शक्ति का तीव्र पतन।

आमाशय—भूख गायब। उत्तेजक वस्तुओं और तम्बाकू की इच्छा। लगातार डकार; मिचली, कै, गहरे हरे पदार्थ की। गरमी, भोजन नली में ऊपर उठे। आमाशय और उदर में वायु-सञ्चय। अकसर उदर के किसी एक भाग मे वायु-संचयता, दर्द। (सल्फो-कार्बोनेट ऑफ सोड़ा)। उफानी, अजीर्ण, बुरा स्वाद और साँस के साथ।

मल--कब्ज, अति घृणित साँस के साथ। खूनी, आँत के छिलकों की तरह। अति कूँथन। दस्त, मल पतला; काला, सड़ा हुआ।

मूत्र—लगभग काला। मधुमेह। वृद्ध लोगों में मूत्राशय की उत्तेजना रात में कई बार पेशाब लगना; कदाचित् मूत्र ग्रंथि सम्बन्धी (१ x का प्रयोग करें)।

स्त्री—स्राव सदा घृणित (नाइट्रिक ऐसे०; नक्स; सिपिया)। योनि घुण्डी आसपास खूनी मवाद भरे दाने। कमर के आरपार तीव्र पीड़ा, जाँघों के नीचे खींचन। बाँयें अण्ड में दर्द; खुली हवा में टहलने पर बढ़े। योनि के मुँह का ग सड़ा; तीखा स्राव। बच्चों में प्रदर रोग (कैना० सैटाइ०, मर्क०, पल्से सिपिय प्रसव ज्वर, बदबूदार स्राव के साथ। उत्तेजक प्रदर स्राव, जलन करे (क्रियोजो०)।

अंग—टाँगों के अगले भाग में ऐंठन। टाँग की लम्बी ह डी में टहलते समय खींचन। टाँग की लम्बी हड्डी के अगले सन्धि प्रदाह।

चर्म—खाजदार छाले, जलन-दर्द के साथ। जलने के बाद घाव बनने की संभावना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : क्राइसोरोबिन (खोपड़ी की खाल पर दाद में ऊपर से लगाने के लिए ५–१० प्र० श० ग्लीसरीन और एल्कोहल में। बराबर भाग में)। आर्से०, क्रियोजोट०, कार्बो०, गुआनो० (सिर के चारों तरफ फीता कसा ऐसा सिर दर्द; नथनों में खुजली, पीठ, जाँघों, जननेन्द्रिय पर भी खुजली। मौसमी फ्लू की तरह लक्षण)।

क्रियानाशक—एल्कोहल, सिरका, चाक, आयोडिन। नमक पानी में घोलकर।

विषम—ग्लीसरीन और वनस्पति तेल।

मात्रा—३ से ३० शक्ति। डॉ० गुडनो के अनुसार सन्धिप्रदाह में फेनॉल अति शुद्ध होना चाहिए। क्रिस्टल का घोल (२५ प्र० श०); पानी और ग्लसरीन बराबर-बराबर भागों में, मात्रा १० बूँद; अच्छी तरह पानी में मिलाकर, दिन में ३ बार। (बार्टलेट)।

कार्बोनियम हाइड्रोजेनिसेटम (Carbone. Hyd.)

(कार्ब्युरेटेड हाइड्रोजेन)

इसके लक्षण संन्यास रोग से मिलते-जुलते हैं। दाँती लगने ऐसा आक्षेप। हनुस्तभ; अनैच्छिक मल-मूत्र स्राव।

मन—बुद्धिहीनता का असाधारण संवेदन। सभी विचार एक क्षण में आन्तरिक शीशे में से दीख पड़ते मालूम होते हैं।

आँखें—पलकें आधी खुली। पुतली का इधर-उदर हिलना। पुतलियों पर प्रकाश की प्रतिक्रिया न हो।

कार्बोनियम ऑक्सिजेनिसेटम (Carbon. Oxyg.)

(कार्बोनस ऑक्साइड)

भैंसिया दाद, बिम्बिका रोग, और हनुस्तम्भ इस पदार्थ से उत्पन्न होते हैं। ठंडापन; औंघाई, अचेतनता स्पष्ट रूप से प्रतीत होती है। चक्कर।

सिर—बृहद् मस्तिष्क प्रदाह, दृष्टि भ्रम; सुनने और छूने का भ्रम। चक्कर में घूमने की प्रवृत्ति। जबड़े जोर से जकड़े हों। हनुस्तम्भ। सिर का भारीपन। कनपटी में धमक, दर्द। कानों में गर्जन।

आँखें—दृष्टि नाड़ी की कार्यहीनता, अर्द्धदृष्टि, पुतली की विकृत प्रतिक्रिया। दृष्टि पुप्रदाह और क्षीणता। सफेद भाग के नीचे के स्तर और चक्षुपट का रक्तस्राव।

चर्म—सुन्न। स्नायु मार्ग पर छाले पड़ना। भैंसिया दाद, विम्बिका रोग छोटे और बड़े छाले। हाथ बर्फीले ठंडे।

नींद—गहरी। दीर्घकालीन, कई दिनों तक, निद्रालुता।

मात्रा—पहली शक्ति।

कार्बोनियम सल्फ्युरेटम (Carbon. Sulph.)

(एल्कोहॉल सल्फ्युरिस-बाइसल्फाइड ऑफ कार्बन)

इस मूल का प्रभाव बहुत गहरा और विनाशकारी होता है और लाक्षणिक दृष्टि से इसका कार्य-क्षेत्र अति विस्तृत है। उन रोगियों के लिए लाभदायक है जिनका स्वास्थ्य मद्यपान से टूट गया है। उत्तेजित रोगी, ठंडक से कष्ट बढ़े, पेशियाँ नष्ट हो गई हों, चर्म और श्लैष्मिक झिल्ली संवेदनाहीन हों। आँखों के लिए विशेष आकर्षण। जीर्णवात रोग, कोलमग्राही और ठण्डा स्वाभाविक ताप की कमी। बराबर ४-६ सप्ताह तक दस्त आएँ। स्नायविक केन्द्रों में रक्ताधिक्य के साथ पक्षाघात। क्षय अवस्था। अंगों के संज्ञा सम्बन्धी विकार।

नपुंसकता, गृध्रसी, इस औषधि के कार्य क्षेत्र की सीमा में आते हैं। जीर्ण सीसा-विष के उपद्रव। बाहों; हाथों, पैरों की संवेदन-शक्ति का मंद पड़ना। प्रांतस्थ स्नायु प्रदाह।

मन—चिड़चिड़ापन, आकुल, असहनशील, मूर्च्छा। मन की सुस्ती। दृष्टि और श्रवण भ्रम। परिवर्तनशील भाव। मनोभ्रन्श और उत्तेजना बारी-बारी से।

सिर—सिर-दर्द और चक्कर। कसी टोपी जैसी पीड़ा। कान बन्द लगें। सिर में आवाजें। होंठों के घाव, मुँह और जबान सुन्न।

आँखें—निकट-दृष्टि, क्षीण दृष्टि, रङ्ग न पहचान सके, दृष्टि नाड़ी की क्षीणता, लाल और हरा रङ्ग न पहचान सके। केवल सफेद रङ्ग ही पहचान पाये। दृष्टि नाड़ी स्नायु प्रदाह जो क्षीणता की ओर जा रहा हो। रक्त नलिकाओं में रक्ताधिक्यता। चित्रपट में रक्त संचयता, दृष्टि ताल का पीलापन। धुँधलापन। मन्द दृष्टि। रङ्ग पहचाने।

कान—श्रवण शक्ति मन्द। भिनभिनाहट और टनटनाहट। सिर चकराना जो कान की खराबी से हो।

उदर—दर्द उसके साथ सूजन जो जगह बदले जैसे-अफ पन और गड़गड़ाहट के साथ तनाव।

पुरुष—इच्छालोप, अंग क्षीण। अकसर और

अंग—हाथों की पीठ पर दाद। चोटीले; कुचले अंग, बाँह और साथ सुन्न। अंगों में ऐंठन के साथ चमकन दर्द। अंगुलियाँ सूजी हुईं, तनी, कड़ी सुन्न। चाल स्थिर, लड़खड़ाना; अन्धेरे में अधिक हो। पाँव सुन्न, गृध्रसी। उड़ते दर्द, सामयिक आक्रमण, टिकाऊ। निचले अंगों में दर्द, ऐंठन और सुरसुरी के साथ। स्नायु-प्रदाह।

नींद—आकुल, उत्तेजनीय स्वप्न के साथ सुबह को गहरी नींद।

चर्म—संज्ञाहीन, जलन, खुजली, घाव छोटे घाव, सड़ें। कर्कट रोग के बढ़ने को रोकने के लिए लाभदायक। फोड़िया। बहुत खुजली के साथ जीर्ण चर्म-रोग।

घटना-बढ़ना—घटना : खुली हवा में। बढ़ना : नाश्ते के बाद, नहाने पर, गरम, तर मौसम में उत्तेजनीयता।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए। पोटैसि० जैण्टेट–(उसी तरह का प्रभाव। मस्तिष्क की ऊपरी धरा पर काम करती है, स्मरण शक्ति का लोप होना, रक्त का विच्छृङ्खल होना, नपुंसकता और बाँझपन); ट्यूबरकुलिन०, रेडियम, कार्बो०, सल्फ०, कास्टि०, सैलिसिलिक एसिड, सिनको०।

आँखों के लक्षणों में तुलना कीजिए : बेनजिन०, डाइनाइट्रिक। थाइरॉयडिन (धीरे-धीरे कम दिखाई देना और काले धब्बे दिखाई देना)।

मात्रा—पहली शक्ति। चेहरा स्नायुशूल और गृध्रसी शूल में ऊपरी प्रयोग।

कार्डुअस मैरियेनस (Card. Mar.)

(सेंट मेरीका थिसिल)

इस दवा का कार्यक्षेत्र जिगर और उसके शिरामण्डल में केन्द्रित है। जिससे चोटीलापन, दर्द, कामला रोग हो जाता है। रक्तवाही नाड़ी मण्डल से विशेष सम्बन्ध है। मदिरा, विशेषकर बियर के अति व्यवहार से रोग उत्पन्न होना। नस की गाँठें और घाव। खान में काम करने वालों के दमा सम्बन्धी रोग। शोथ जो जिगर की बीमारियों का उपद्रव हो या वस्ति में अधिक रक्त संचित होने और जिगर की किसी बीमारी से सम्बन्धित हो। शरीर में चीनी के परिवर्तन की गड़बड़ी। इन्फ्लुएन्जा जब जिगर भी रोगग्रस्त हो। कमजोरी रक्त-स्राव, खासकर जिगर रोग सम्बन्धी।

मन—निराश, भूलना, लापरवाह।

सिर—भौंहों के ऊपर सिकुड़न ऐसा लगे। बुद्धि मन्द, सिर भारी; बुद्धिहीन, जबान गन्दी। चक्कर, आगे गिरने की प्रवृत्ति। आँखों में जलन और दाब। नकसीर

आमाशय—कड़वा स्वाद, नमकीन माँस से घृणा। भूख कम, जबान रोयेंदार, मिचली, हरा, तेजाबी पानी कै करना। आमाशय के बायें भाग में चिलक; तिल्ली के पास (सियानोथस) पित्त पथरी, जिगर के बढ़ने के साथ।

उदर—जिगर प्रदेश में दर्द। बायाँ पिण्ड बहुत कोमल। भरापन और चोटीलापन, तर चर्म के साथ। कब्ज, जिसमें मल कड़ा, कठिन, गठीला हो, और यह अतिसार के साथ अदल-बदलकर आए। मल चमकीला पीला। पित्ताशय की सूजन, दर्दीली कोमलता के साथ। जिगर में रक्ताधिक्य, कामला रोग के साथ। जिगर का कड़ापन जलोदर के साथ।

मलान्त्र—खूनी बवासीर, काँच निकलना, मलान्त्र और गुदा में जलन, दर्द, कड़ा और गठीला, दुर्गन्धित मल। मलान्त्र के कर्कट रोग के कारण अधिक दस्त आना। १० बूँद की खुराक (वैप्लर)।

मूत्र—धुँधला, सोनहला रंग का।

सीना—दाहिनी निचली पसली और अगले भाग में चिलकन का-सा दर्द, हरकत, टहलने इत्यादि से बढ़े। दमा का साँस। सीने में दर्द, कन्धों, पीठ, कमर और उदर तक जाये, पेशाब लगे।

चर्म—रात में लेटने पर खुजली। नस-गाँठों का घाव (**क्लिमैटिस विटैल्बा॰**)। सीनास्थि के निचले भाग पर फरन।

अंग—उरु संधि में दर्द, चूतड़ों से होकर जाँघों के नीचे तक जाये। झुकने से बढ़े। उठने में कठिनाई। पैरों में कमजोरी खासकर बैठने के बाद।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : **कार्ड॰ बेनेडिक्टस** (आँखों पर प्रबल प्रभाव और कई जगहों में सकुचन की संवेदना, आमाशय के लक्षण उसी तरह) **चेलिडोनि॰, चियोनैन्थ॰, मर्क॰; पोडोफा॰, ब्रायो॰, एलो॰**।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

कार्ल्सबैड (Carlsbad)

(दी वाटर्स ऑफ दी स्प्रूडल स्प्रिंग्स)

जिगर के प्रभाव के लिए विख्यात है, और मोटापन, मधुमेह, संधिवात की चिकित्सा के लिए। होमियोपैथिक शक्ति की मात्रा में सभी भागों की कमजोरी, कब्ज, ठण्डक जल्दी लगने में लाभदायक है। सामयिकता, २ से ४ हफ्ते के बाद आक्रमण का दोहराना। (ऑक्जैलिक एसिड, सल्फर)। शरीर भर में गरमी की लपटें। कई जगहों में खुजली।

मन—घरेलू कर्तव्यों के पालन करने में हतोत्साह और आकुल।

सिर—पीड़ा, कनपटी की शिराओं की सूजन के साथ। (सैंगु०)। हरकत से। खुली हवा में कम।

चेहरा—पीला, मैला, लाल और गरम, गण्डास्थि युगलक प्रवर्द्धन क्षेत्र में दर्द मालूम पड़े कि उस पर मकड़ी के जाले तने हैं।

आमाशय—जबान पर सफेद मैल। मुँह से दुर्गन्ध आए। रोएँदार संवेदन। नमकीन या खट्टा स्वाद। हिचकी और जम्हाई। गला जलना (कार्बो०)।

मूत्र—धार कमजोर और मन्द, पेड़ू दबाने ही से निकले।

मलान्त्र—मल रुका रहे। मल सुस्त। बहुत पेड़ू दबाने पर निकले। गुदा और मलद्वार में जलन। खूनी बवासीर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : नेट्र० सल्फ०, नक्स०।

मात्रा—निचली शक्ति।

कैस्कारा सैग्राडा (Cascara Sagrada)

(सैक्रेड बार्क)

कब्ज के लिए शामक औषधि है। (गैर होमियोपैथिक प्रणाली के अनुसार)। इसके तरल घनसार की १५ बूँदें आँतों को शक्ति देती हैं, लेकिन इसका कार्यक्षेत्र इससे भी विस्तृत है, जैसा इस द्रव का सावधानी से सिद्धिकरण करने से स्पष्ट होगा। जीर्ण अनपच, जिगर की सख्ती और कामला रोग। बवासीर और कब्ज। आमाशय सम्बन्धी सिर दर्द। चौड़ी फूली जबान, दूषित साँस।

मूत्र—इन्तजार करना पड़ता है कि पेशाब उतरे; फिर पेशाब बूँद-बूँद टपके।

अंग—पेशिक और संधिवात कठिन कब्ज के साथ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : हाइड्रै०, नक्स०, रैमनस कैलिफोर्निका (कब्ज के लिए अरिष्ट देना चाहिए, पेट फूलने, एपेण्डिसाइटिस और खासकर वात दर्द के लिए भी)।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

कैस्कैरिल्ला (Cascarilla)

(स्वीट बार्क)

पाचन-प्रणाली पर काम करती है, कब्ज। तम्बाकू की गन्धक से घृणा। कै करने की प्रबल इच्छा।

आमाशय—खाने के बाद भूख लगना। गरम चीज पीने की इच्छा। मिचली और कै। पेट में धक्का लगने जैसा दर्द। दाब शूल।

मलान्त्र—कब्ज, कड़ा मल, श्लेष्मा से ढँका (ग्रैफा०)। मल के साथ चटक लाल खून आए। दस्त और कड़ा गाँठदार मल। बारी-बारी, पीठ दर्द, सुस्ती के साथ, चुभन के बाद। मलान्त्र में ऊपर की तरफ कुतरन दर्द।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

कार्सिनोसिन (Carcinosin)

(ए नोसोड फ्रॉम कार्सिनोमा)

यह दावा किया जाता है कि कार्सिनोसिन उन सभी दशाओं में लाभदायक होती है जहाँ कर्कट विष की पहले कभी सम्भावना पायी जाये या कर्कट रोग के लक्षण उपस्थित हों (जे. एच. क्लार्क० एम० डी०)। स्तनों का कर्कट रोग, बहुत दर्द और ग्रन्थियों की सख्ती के साथ, गर्भाशय का कर्कट, इस औषधि से बहुत दूषित स्राव, रक्त प्रवाह और दर्द कम हो जाता है। अनपच, पेट और आँतों में अफरा। वात-पीड़ा, कर्कटीय धातु विकार।

तुलना कीजिए : ब्यूफो०, कोनियम०, फाइटो०, ऐण्टीरियस।

मात्रा—३० और २०० शक्ति, रात में रोज एक खुराक या और देर तक।

— :o: —

कैस्टेनिया वेस्का (Castanea Vesca)

(चेस्टनट लीव्स)

काली खाँसी की लाभदायक दवा, खासकर शुरू में। सूखी, टनकनवाली काली खाँसी। गरम चीज पीने की इच्छा। तेज प्यास। अरुचि। अतिसार। गाढ़ा पेशाब।

कटिवात, पीठ कमजोर, सीधी न कर सके।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : परटुसिन—काली खाँसी (जब कम हो-होकर लक्षण वापस आवें)। ड्रोसे०, मिफाइटिस, नैफ्थैली०; एमोन०, ब्रोमि०।

मात्रा—अरिष्ट।

कैस्टर इक्वि (Castor Equi)

(रुडिमेंटरी थम्ब-नेल ऑफ दी हॉर्स)

चर्म और अन्तरात्वक् के मोटा पड़ने में असाधारण काम करती है। जीभ पर अपरस। डॉ० हेरिंग और उनके शिष्यों के सिद्धिकरण से यह स्पष्ट हो गया है कि यह औषधि स्तन-घुण्डियों के चिटकने और घाव के लिए बहुत लाभदायक है।

विशेषकर स्त्री-जननेन्द्रियों पर काम करती है। नाखून और हड्डियों पर भी काम करती है, दाहिनी नड़हर की हड्डी और त्रिकास्थि में दर्द। माथे और स्तनों पर मस्से। हाथ की खाल का चिटकना।

सीना—स्तन-घुण्डियाँ चिटकी, दर्दीली, अति कोमल। स्तनों की सूजन। स्तनों में तीव्र खुजली, स्तन-चक्र लाल।

तुलना कीजिए—ग्रैफाइटिस, हिप्पोमे०, कैस्के०, ऑक्जेलि०।

मात्रा—६ से १२ शक्ति।

कैस्टोरियम (Castoreum)

(दी बीवर)

हिस्टीरिया की विख्यात औषधि। पतनावस्था स्पष्ट। मूर्च्छा के लक्षण। दिन में अन्धापन, रोशनी सहन न हो। वात प्रकृति वाली स्त्रियाँ जो पूरे तौर पर स्वस्थ न हों, बराबर चिड़चिड़ापन रहे और कमजोरी लाने वाला पसीना बहे। कमजोरी लाने वाली बीमारियों के बाद ऐंठन के लक्षण। हर घड़ी जम्हाई लेना, बेचैन नींद, भयानक स्वप्न और चिहुँकन।

जबान—फूली हुई। बीच में मटर बराबर गोल उभरन। बीच से जड़ की हड्डी तक खींचन।

स्त्री—कष्टरजः खून बूँद-बूँद कूँथन के साथ टपके। दर्द जाँघों के बीच से शुरू हो। मासिक-धर्म का रुकना, दर्द, पेट फूलने के साथ।

ज्वर—शीत प्रधान। पीठ में बर्फीली ठंडक के साथ शीत।

सम्बन्ध - **तुलना कीजिए** : ऐम्ब्रा०; मॉसकस, म्यूर० एसिड, वैलेरियाना।

क्रियानाशक—कॉल्चि०।

मात्रा अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

कैटारिया नेपेटा (Cataria Nepeta)

(कैटनिप)

बच्चों की दवा, शूल के लिए। इसके अतिरिक्त स्नायविक सिर दर्द और मूर्च्छा, उदर विकार, दर्द, जंघास्थि मुलायम, शरीर की ऐंठन। चिल्लाना। **कैमोमिला और मैग्नेशि० फास०** की तरह।

मात्रा—५ से १० बूँद अरिष्ट की।

कॉलोफाइलम (Caulophyllum)

(ब्लूकोहोश)

यह स्त्रियों की औषधि है। गर्भाशय के पेशी तन्तुओं की असाधारण अवस्था। प्रसव में जब पीड़ा मन्द हो और रोगिणी शिथिल और भयभीत हो। इसके अतिरिक्त इस औषधि का विशेष आकर्षण छोटे जोड़ों से है। मुँह के बारीक छाले। (खाने और लगाने के लिए)।

आमाशय—हृदय में दर्द, आमाशय में झटके। मन्दाग्नि ऐंठन आने के लक्षणों के साथ।

स्त्री—गर्भाशय के मुँह की असाधारण सख्ती (बेला०, जेल्स०, वेरेट्रम विरिड)। आक्षेपिक और प्रचण्ड पीड़ा जो सभी तरह तेजी से फैले। कम्प, तो भी शिशु आगे नहीं सरकता। झूठा दर्द। असली प्रसव वेदना को जगाती है और प्रसव में प्रगति देती है। प्रसव के बाद दर्द। प्रदर, माथे पर चकत्तों के साथ। गर्भाशय की कमजोरी से हर बार गर्भपात होना। (हेलोनि०, पल्से०, सेबा०)। गर्भाशय की गरदन में सूई गड़ने जैसी चुभन। पीड़ाजनक मासिक स्राव, दर्द शरीर के दूसरे भागों में झटके। प्रसवान्तक स्राव देर तक जारी रहे, बहुत ढीलापन। मासिक धर्म और प्रदर दोनों अधिक मात्रा में हों।

चर्म—मासिक-धर्म और गर्भाशय की खराबी से स्त्रियों के चर्म का रंग खराब हो जाय।

अंग—तीव्र खींचन, छोटे जोड़ों, हाथ-पैर की अँगुलियों और टखनों इत्यादि में जगह बदलने वाला दर्द। कलाई में टीस। मुट्ठी बाँधने पर फटन, दर्द। जगह बदलने वाला दर्द; मिनटों में जगह बदले।

सम्बन्ध—विषम—कॉफिया०।

तुलना कीजिये : वायोला ओडोरेटा (कलाई और उसके नीचे की संधियों में वात पीड़ा); सिमिसिफ्यु०, सीपिया, पल्से०, जेल्सी०।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

कॉस्टिकम (Caust.)

(हैनीमैन का टिंकचुरा एक्रिस साइनी कैली)

इस दवा के मुख्य लक्षण छोटे-बड़े जोड़ों की पुरानी पीड़ा (आमवात) और लकवे में पाये जाते हैं जब कि पेशियों और तन्तुओं में फाड़ने या खींचन की तरह दर्द हो। साथ में जोड़ों के आस-पास टेढ़ापन हो, प्रगतिशील पैशिक शक्तिहीनता, नसों का सिकुड़ना : बुद्धि शक्तिहीन लोग। वायु मार्ग की नजले की हालत और

श्यामवर्ण वाले, कड़े रेशे के लोगों से अधिक सम्बन्धित है। रात में बेचैनी, जोड़ों और हड्डियों में फटन दर्द, मूर्च्छा के साथ। यह शक्तिहीनता बढ़ती जाती है और हमारे सामने पक्षाघात की अवस्था उत्पन्न होती दिखाई देती है। स्थानीय पक्षाघात स्वर-यन्त्र, निगलने वाली पेशियों, जीभ, मूत्राशय और विविध अंगों का। बच्चे देर में चलना सीखें। कॉस्टिकम के रोगी का चर्म मैला सफेद, मटियाला-बादामी, मस्सेदार होता है; खासकर चेहरे पर। रोग चिन्ता इत्यादि के कारण दुबलापन बहुत दिनों तक बीमारी के कारण आए उपद्रव। जलन, कच्चापन और चोटीलापन विशेष चिह्न हैं।

मन—बच्चा अकेले सोने न जाना चाहे। जरा-से में चिल्लाने लगे। दुःखी, आशाहीन। अति सहानुभूतिपूर्ण। बहुत दिनों के पुराने शोक के कारण कोई रोग उत्पन्न हो जाना, अकस्मात् भावावेश। अपने रोगों पर विचार करने से बढ़े; खासकर बवासीर।

स्त्री—माथे और भेजे के बीच में खालीपन मालूम दे। दाहिने शंख भाग में दर्द।

चेहरा—दाहिनी तरफ का पक्षाघात। मस्से। चेहरों की हड्डियों में दर्द। दाँतों में नासूर। जबड़ों में दर्द, मुँह खोलने में कष्ट।

आँखें—मोतियाबिन्द जो चालक स्नायु जाल की खराबी से आया हो। पलकों की सूजन। घाव। आँखों के सामने चिनगारियाँ और काले धब्बे दिखाई दें। ऊपरी पलक का लकवा (जेल्से०), धुँधलापन मानो आँखों के सामने झिल्ली हो। ठंडक लगने के कारण आँखों की पेशियों का लकवा।

कान—टनक, गरज, धुकधुकी बहरापन के साथ, शब्द और कदम की आवाज कानों में गूँजे; मध्य कान में जीर्ण नजला, कान में मैल जमा होना।

नाक—जुकाम, साथ में गला बैठना। पपड़ीदार नाक। नथने पके। दाने व मस्से।

मुँह—चबाने से गालों के भीतर कष्ट जायें। जीभ का लकवा, बोली साफ न निकले। निचले जबड़े के जोड़ में वात दर्द। मसूढ़ों से खून बहे।

आमाशय—चरबी जैसा स्वाद। मीठी चीज से घृणा मालूम पड़े कि आमाशय में चूना बुझाया जा रहा हो। ताजा मांस खाने से रोग बढ़े, भुना मांस रुचिकर हो। मालूम पड़े कि गले में गोला उठ रहा है। तेजाबी अनपच।

मल—मुलायम और छोटा, परों की कलम जैसा (फास०)। कड़ा, चिमड़ा श्लेष्मा युक्त चरबी की तरह चमके, छोटे आकार का; बहुत काँखने पर या केवल खड़े होने से निकले। तीव्र खुजली। मलांत्र का आंशिक लकवा। मलांत्र दर्दीला और जले। भगन्दर और बड़ी बवासीर।

मूत्र—खाँसने या नाक छिनकने पर अनैच्छिक स्खलन (पल्से०)। धीरे बहे। कभी-कभी रुक जाये। रात में पहली नींद में अनैच्छिक रूप से निकल जाये या जरी-सी उत्तेजना से चीड़-फाड़ के बाद रुक जाये। मूत्र उतर रहा है, यह पता ही न चले।

स्त्री—प्रसव के समय गर्भाशय सुस्त हो जाये। मासिक धर्म रात में रुक जाये, केवल दिन ही में बहे (साइक्ले०, पल्से०)। रात में प्रदर स्राव, अधिक कमजोरी के साथ (नैट्र० म्यूर०)। मासिक धर्म देर में (कोनि०, ग्रैफा०, पल्से०)।

श्वास-यन्त्र—सोने में दर्द के साथ भारी आवाज स्वरलोप। स्वर-यन्त्र दर्दीला। सीना कच्चा, दर्दीलापन के साथ खाँसी। बलगम थोड़ा निकले, उसे भी निगलना पड़े। खाँसी के साथ कटि पीड़ा, खासकर बायीं तरफ; शाम को पीड़ा बढ़े, ठण्डा पानी पीने से कम हो। बिस्तर की गरमी से बढ़े, श्वास-नली में नीचे की तरफ दर्दीली लकीर। सीने की हड्डी के नीचे बलगम जमा हो जो खाँसने से न उठे। धड़-कन के साथ सीने में दर्द। रात में लेट न सके। आवाज गूँजे। अपनी ही आवाज कानों में गूँजे और कष्ट हो। गाने वालों और वक्ताओं की आवाज बिगड़ जाए (रायल)।

पीठ—कन्धों के बीच में तनाव। गरदन की जड़ में मीठा दर्द।

अंग—सुन्न होने के साथ बायीं तरफ की गृध्रसी। किसी एक भाग का लकवा। हाथों और बाँहों में धीमा फटन दर्द। भारीपन और कमजोरी। जोड़ों में फटन। अगली बाँह और हाथों की पेशियों की अस्थिरता। सुन्नता, हाथों का संज्ञाहीन होना। नसों का सिकुड़ना। टखने कमजोर। बिना कष्ट के चल न सके। अंगों में वातिक फटन, गरमी से कम, खास कर बिस्तर की गरमी से। जोड़ों में जलन। चलना देर में सीखे। चलने में लड़खड़ाना, आसानी से गिरना। रात में टाँगें अशान्त, घुटने में सुरसुराहट और तनाव, खोखले भाग में कड़ापन। पैर के ऊपरी भाग पर खुजली।

चर्म—चर्म की परतों में, कानों के पीछे, जांघों के बीच में दर्द। मस्से बढ़े। अँगुलियों के सिरों पर और नाक पर चपटे मस्से, खून जल्दी बहे। पुराने जले स्थान जल्दी अच्छे न हों, चलने का बुरा असर। जले स्थान दर्द करें। पुराने घाव फिर से ताजे हों, दाँत निकलते समय खाज की सम्भावना।

नींद—बहुत ऊँघना, कष्ट से जगा रहे। रात में नींद न आना सूखी गरमी और अशान्ति के साथ।

सम्बन्ध—बैसेल के डा० वैग्नर की ध्यानपूर्ण छानबीन के अनुसार कॉस्टिकम का प्रभाव एमोन० के समान है। कॉस्टिकम ४x। कॉस्टिकम में और फास्फोरस में असमानता है! जीर्ण वायुनलिका प्रदाह में कॉस्टिकम के बाद डिफ्थेरोटाक्सिक अच्छा काम करता है।

क्रियानाशक—सीसा विष से आया लकवा। **पूरक**-कार्बो०, पेट्रोसेलि०।

तुलना कीजिए : रस०, आर्सेनि०, एमोन०, फास० (चेहरे का लकवा)।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना**; सूखी ठण्डी हवा, साफ अच्छे मौसम में ठण्डी हवा, गाड़ी की हरकत से। **घटना :** तर भींगे मौसम में, सेंक से। बिस्तर की गरमी से।

मात्रा—३ से ३० शक्ति। पुराने रोगों में और खासकर लकवा की अवस्थाओं में ऊँची शक्ति हफ्ते में एक या दो बार।

सियानोथस (Ceanothus)

(न्यु जेरसी टी)

यह औषधि झिल्ली से विशेष सम्बन्ध रखती मालूम पड़ती है। मलेरिया ज्वर से तिल्ली बढ़ना। साधारणतः बायीं तरफ की दवा। रक्तहीन रोगी, जहाँ जिगर और तिल्ली में दोष हो। जीर्ण वायुनलिका प्रदाह, अधिक बलगम के साथ। रक्त चापाधिक्य स्पष्ट; जो शक्तिहीन कर दे। तीव्र रक्तप्रवाहरोधक, खून के जमने को कम करता है।

उदर—तिल्ली का बहुत बढ़ जाना। तिल्ली-प्रदाह, सारी बायीं तरफ पीड़ा। बायें कोखे की गहराई में दर्द, तिल्ली का बढ़ना। रक्त में सफेद कण की अधिकता। तीव्र साँस कष्ट। मासिक-धर्म अधिक, पीला कमजोर करनेवाला प्रदाह। बाईं तरफ लेट न सके। जिगर और पीठ में दर्द।

मलांत्र—अतिसार, उदर और गुदा में धँसन का-सा दर्द।

मूत्र—लगातार, पेशाब लगना, हरा, झागदार, पित्त और चीनी मिला।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : टिनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया (जीर्ण ज्वर और तिल्ली बढ़ने के साथ की हिन्दुओं की एक दवा)। पोलिम्निया युवेडेंलिया वियर्स फूट—(तीव्र तिल्ली का दर्द, बायें कोखे के आसपास कोमलपन के साथ तिल्ली बढ़ी हुई, जड़ैया के साथ तिल्ली का बढ़ना। रक्तवाहिनी, नाड़ी की पैशिक दुर्बलता, थुलथुली, कड़ी नाड़ियाँ। ग्रन्थियाँ बढ़ी हुईं, सभी मुँह बन्द ग्रन्थियों को प्रभावित करती है)। सियानोथस थ्राइसिफ्लोरस-कैलिफोर्निया लिलैक-(गलकोष प्रदाह, तालुमूल प्रदाह, नासिका का जुकाम, रोहिणी। आंतरिक प्रयोग अरिष्ट की कुल्ली करना)।

तुलना : बार्बेरि०, माइरिका, सीड्रन एगैरिक०, (तिल्ली)।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** हरकत, बायीं करवट लेटने से।

मात्रा—पहली शक्ति। बाहरी प्रयोग, बालों को बढ़ाने के लिए।

सीड्रन (Cedron)

(रैटेलस्नेक बीन)

सामयिकता इस औषधि की अति स्पष्ट विशेषता है। अनूप देश या तर, गरम, दलदलवाले प्रदेशों में खासकर लाभदायक है। यह औषधि मलेरिया सम्बन्धी व्याधियों में, खासकर स्नायुशूल की दिशा में लाभदायक सिद्ध हुई है। भोगविलास प्रवृत्ति के लोगों के लिए, स्नायविक प्रवृत्ति के लोगों के लिए विशेषकर उपयोगी सिद्ध हुई है। साँप के या कीड़ों के काटने पर विष हरने की शक्ति रखती है। शुद्ध बीज का अरिष्ट घाव पर रगड़ा जाता है। पागलपन।

सिर—एक कनपटी से दूसरी कनपटी तक आँखों के आर-पार दर्द। चेहरे के पूरे दाहिनी तरफ दर्द, लगभग नौ बजे हो। माथे के आर-पार दर्द के कारण विवेक भ्रष्ट हो जाये। काली वस्तु पर काम करने से दर्द अधिक हो। सिनकोना के प्रयोग के कारण कानों में आयी गर्जन। सारा शरीर सिर दर्द के कारण सुन्न हो जाये।

आँखें—बाईं आँख के ऊपर चुभन दर्द। आँखों के चारो तरफ फैलने वाले दर्द के साथ, नाक में तेज चमक के साथ, आँख के ढेले में तेज दर्द। जलन पैदा करने वाला पानी बहे। आँखों के खोखले भाग का सामयिक स्नायुशूल। उपतारा प्रदाह, काले पर्दे का प्रदाह।

अंग—जोड़ों में कोचन दर्द, हाथों और पैरों में अधिक। दाहिने अंगूठे की गद्दी में दर्द जो घुटने तक बढ़े। कटि दद्रु, फैलने वाले दर्द के साथ। घुटने के जोड़ का शोथ।

ज्वर—शाम के लगभग शीत आए, तब माथे का दर्द हो जो पार्श्व कपालास्थि क्षेत्र तक बढ़े। लाल आँखें। आँखों की खुजली के साथ, अंगों में फटन दर्द, सुन्नता के साथ गरमी लगना।

सम्बन्ध-क्रियानाशक—लैके०। तुलना कीजिए : आर्से०, चायना०।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

सेनक्रिस कॉण्ट्रॉरट्रिक्स (Cenchris Cont.)

(कॉपरहेड स्नेक)

दूसरे सर्पों के विष की तरह यह भी शरीर पर प्रबल प्रभाव डालता है। आर्सेनिक की तरह इसमें साँसकष्ट, मानसिक और शारीरिक अशान्ति, थोड़े पानी की प्यास, कपड़ा ढीला करने की आवश्यकता, लैकेसिस की तरह आती है। भाव की परिवर्तन-शीलता, सजीव स्वप्न। एक अद्भुत शक्ति-प्रद और गहराई तक काम करने वाली

औषधि। पुरुष और स्त्रियों दोनों में मैथुन इच्छा का अधिक होना। ओटँगने की असफल चेष्टा। दाहिना डिम्बाशय क्षेत्र दर्दीला।

सिर—भूलना, चित्तछिन्नता, परिवर्तनशील भाव। बायें अगले उभरे भाग और दाँत की बाईं तरफ टीस दर्द। आँखों के चारों तरफ सूजन, आँखों में टीस और खुजली।

दिल—फैला मालूम हो, पूरा सीना दिल से भरा मालूम पड़े। मानो वह उदर में गिर गया हो, तेज चिलकन, बायीं स्कंधास्थि के नीचे फड़फड़ाहट।

नींद—भयानक स्वप्न और बहुत साफ, कामवासनायुक्त।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : दाब से लेटने से, तीसरे पहर और रात में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : **आर्से०, लैकेसिस०, क्लोथो आर्किटैन्स**—पफ एडर—बहुत-सी अवस्थाओं में जहाँ प्रबल सूजन विशिष्ट रूप से उपस्थित हो इस औषधि का विस्तृत कार्यक्षेत्र होना चाहिए। (जॉन० एच० क्लार्क, एम० डी)।

मात्रा—६ शक्ति।

सोरियस बोनप्लैनडिआई (Cereus Bon.)

(ए नाइट ब्लूमिंग सेरियम)

मन—काम करने की प्रबल इच्छा, कोई लाभदायक काम करना चाहे।

सिर—सिर के पिछले भाग का दर्द और वह दर्द जो आँखों के ढेलों और खोखले भाग में से होकर आरपार हो, (सिड्रन, ओनोस०)।

मस्तिष्क के आरपार बायें से दाहिने को आरपार दर्द। दाहिने गाल की हड्डी से होता हुआ कनपटी तक दर्द।

सीना—दिल में आक्षेपिक दर्द, मालूम पड़े कि दिल अटक गया हो। दिल से होकर सीने में दर्द, उस दर्द के साथ जो तिल्ली की तरफ बढ़े। सीने की बायीं तरफ की पेशियों में और बायीं तरफ की निचली तिल्ली में दर्द। दिल पर भारी बोझ जैसा संवेदन और चुभन दर्द। दिल का बढ़ना। कष्टप्रद, साँस, आहें भरे जैसे सीना दबा हो।

चर्म—खुजली। (डोलिकस, सल्फर)।

अंग—गरदन, पीठ, कन्धों में दर्द, बाँहों, हाथों, अँगुलियों तक नीचे उतरे। घुटनों और नीचे अंगों के जोड़ों में दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैक्टस०, स्पाइजेलिया, कैल्मिया०, सेरियस०, सरपेन्टाइनस। (बहुत चिड़चिड़ापन, कसम खाने की प्रवृत्ति, घोर क्रोध और चरित्र-हीनता। बोली में गड़बड़ी, लिखने में आखिरी शब्दांश छोड़ देता है जैसे पक्षाघात

मार गया हो। दिल में दर्द और जननेन्द्रियों का सिकुड़ना। धातुक्षीणता और बाद में अण्डकोषों का दर्द)।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

सेरियम औक्जैलिकम (Cerium Oxalicum)

(औक्जेलेट ऑफ सेरियम)

ऐंठन के बदले कै आना और आक्षेपिक खाँसी इस दवा के प्रभाव क्षेत्र में आते हैं। गर्भावस्था और आधे पचे भोजन की कै। काली खाँसी, ऐंठन और रक्त प्रवाह के साथ। मोटी, थुलथुली स्त्रियों का कष्टप्रद मासिक स्राव। खून जारी होने पर कष्ट कम हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: इनग्लुविन—(बत्तख के द्वितीय पेट से बना हुआ)। गर्भावस्था की कै, आमाशयिक स्नायु दौर्बल्य। बच्चों की कै और दस्त। ३ विचूर्ण। एमिग्डैल०, लैक्टिक एसि०, इपिकाक।

मात्रा—पहला विचूर्ण।

कैमोमिला (Chamomilla)

(जर्मन कैमोमाइल)

इसके मुख्य सांकेतिक लक्षण मानसिक और संवेग क्षेत्र हैं जो कई प्रकार की बीमारियों में इस औषधि की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। विशेषकर बच्चों के रोग में बहुधा उपयोगी होती है। जहाँ चिड़चिड़ापन, अशान्ति, शूल इस औषधि के सांकेतिक लक्षण उपस्थित हों। कोमल, नम्र, शान्त प्रकृति, सुस्त और कब्ज इस औषधि की विपरीत अवस्था दर्शाती है। कैमोमिला में स्नायविकता, चिड़चिड़ापन, प्यास, गरमी, सुन्न होना उपस्थित है। कॉफी और नींद लानेवाली औषधियों के दुरुपयोग के कारण अति स्नायविकता। सुन्नपन से सम्बन्धित असह्य पीड़ा। रात-पसीना।

मन—कराहे; बेचैन। बच्चा बहुत-सी चीजें माँगता है। जिनका वह फिर बहिष्कार करता है। करुणामयी सिसकन क्योंकि बच्चा जो वस्तु माँगता है उसे नहीं मिल रही है। बच्चा उसी समय चुप होता है जब उसको गोद से लेकर इधर-उधर घुमाया जाये और थपथपाया जाये। अधीर, किसी के बात करने को या रुकावट डालने को सहन न करे। प्रत्येक पीड़ा से अति उत्तेजित, सदा शिकायत किया करे। बदला लेना चाहे; कटकटाना, क्रोध और चिढ़ने से रोग उत्पन्न होना। मानसिक शान्ति कैमोमिला के विरुद्ध अवस्था विदित करती है।

सिर—आधे मस्तिष्क में कड़क के साथ सिर दर्द। सिर को पीछे झुकाने की प्रवृत्ति। माथे और चाँद पर गरम चमकीला पसीना।

कान—कानों में टनटनाहट। चोटीलापन के साथ कान दर्द, सूजन और जलन जो रोगी को पागल बना दे। फटन दर्द। कान बन्द मालूम दे।

आँखें—पलकों में तीव्र गड़न। पीली, रक्तहीन। पलकों का आक्षेप।

नाक—सभी गन्ध असह्य। जुकाम, नींद न आवे।

चेहरा—एक गाल लाल और गरम, दूसरा पीला और ठण्ढा। जबड़ों में चिलक, भीतरी कान और दाँतों तक बढ़े। गरम चीज पीने के बाद दाँत दर्द करें। काफी पीने से, और रात के समय कष्ट बढ़े। पागल बना दे। जीभ और चेहरे की पेशियों में झटका। दाँत निकलते समय बालकों के कष्ट, (कैल्के० फास०, टेरेबिंथ०)।

गला—कर्णमूल और हन्वधोवर्ती लाला ग्रन्थि की सूजन। संकुचन और दर्द। गुल्ली कसा जैसा।

मुँह—दाँत दर्द, अगर कोई गरम चीज खाई जाये, कॉफी से, गर्भावस्था में रात को लार बहती है।

पेट—डकार, दूषित। कॉफी पीने से मिचली आये। खाने या पीने के बाद पसीना होना। गरम चीज पीने से घृणा। जबान पीली, कड़वा स्वाद। पित्त की कै। तेजाबी पानी गले में आना, भोजन ऊपर आना। कड़वी पित्त की कै। पत्थर के दाब ऐसा पाकाशयिक शूल (ब्रायो०, एबिस नाइग्रा०)।

उदर—फूला, तना हुआ। नाभि प्रदेश में चमोकन और पिठासे में दर्द। वायु-शूल, क्रोध के बाद, लाल गाल और गरम पसीना के साथ। जिगर शूल। तीव्र पाकाशय शूल। (कैलि बाइक्रो० जीर्ण)।

मल—गरम, हरा, पानी-सा, दूषित, चिकना शूल के साथ। छिल्केदार, सफेद और पीला अण्डा और पालक की कतरन की तरह। गुदा का चोटीलापन। दाँत निकलने के समय दस्त। बवासीर, दर्दीले दरारों के साथ।

स्त्री—गर्भाशय से रक्त प्रवाह। प्रसव जैसा दर्द के साथ बहुत अधिक थक्केदार काला खून निकले। प्रसव दर्द रुक-रुक कर तेज हो, ऊपर की तरफ बढ़े (जेल्से०) रोगी दर्द सहन न करे। (कॉलचि०, कॉस्टिकम, जेल्से०, हायोस०, पल्सं०)। स्तन घुण्डी सूजी हुई, छुई न जाय। बच्चे के कुच कोमल। पीला, तेजाबी प्रदर। (आर्स०, सीपि०, सल्फ०)।

श्वास यंत्र—आवाज का भारीपन, खखारना; स्वर-यन्त्र का कच्चापन। उत्तेजनीय सूखी, गुदगुदीदार खाँसी, सीने में कसाव, दम घुटना। दिन में कड़वे बलगम के साथ। बच्चे की छाती में श्लेष्मा का खड़खड़ाना।

पीठ—कमर और कटि में असह्य दर्द। कटिवात। गरदन की पेशियों का तनाव।

अंग—तीव्र वात दर्द, रात में बिस्तर भिगो दे, इधर-उधर टहलने को बाध्य। रात में तलवों का जलना ((सल्फर) तीसरे पहर टखने अवश हो जायें। प्रत्येक रात में पैरों की पक्षाघातिक कार्यहीनता; उन पर न चल सके।

नींद—कराहने के साथ औंघाई, नींद में रोना, चिल्लाना, उत्सुक, भयानक स्वप्न, आधी खुली आँखें।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : गरम, क्रोध, खुली हवा, तेज हवा, रात के समय। घटना : गोद में टहलने के बाद; गरम, तर मौसम में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : साइप्रीपेड, एन्थेमिस, एकोनाइट; पल्से० काफिया०, बेलाडोना, स्टैफिस०; इग्नैसि, बच्चों की बीमारी में और कुनैन के दुरुपयोग के बाद बेलाडोना के बाद अच्छा काम करती है। रुबस विलोसस—ब्लैक बेरी—(बचपन का दस्त, मल पनीला और मटियाले रंग का)।

मारक—कैम्फो०, नक्स, पल्से०।

पूरक—बेल, मैग० कार्ब।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

—:o:—

चैपारो एमारगोसो (Chaparro Amargoso)

गोट बुश

जीर्ण दस्त। जिगर के ऊपर कोमलपन। मल त्याग से दर्द कम, श्लेष्मा अधिक। पेचिश। शक्तिवर्द्धक और काल निरोधक का काम करती है।

तुलना कीजिए—कैली कार्ब०, क्यूप्र०, आर्से०, कैप्सि०।

मात्रा—३ शक्ति।

चेलिडोनियम मेजस (Chelido.)

(सेलैण्डाइन)

जिगर की मशहूर दवा है। जिगर की खराबी के जो अनेक उपद्रव आते हैं—यह उनमें से अधिकांश के लिए उपयोगी है। कामला और खासकर दाहिनी स्कंधास्थि के निम्न कोण के नीचे लगातार दर्द इस औषधि का सुनिश्चित संकेत है। किसी एक अंग में लकवे की-सी खींच और लँगड़ाहट, प्रबल सर्वव्यापी आलस्य और निश्चेष्टता। मौसम बदलने के समय रोग उत्पन्न हो या बढ़े। पानी-सा स्राव। अंड-कोष में पानी आना। गर्भावस्था में पित्त विकार।

सिर—गरदन की जड़ से सिर के पिछले भाग तक बर्फीली ठंडक, ऐसा ऐसा भारीपन मालूम हो। भारी, आलसी, निद्रालुता विशिष्ट लक्षण हैं। इसके साथ सारा शरीर सुन्न, चक्कर आये, सिर चकराये और उसके साथ जिगर की कोई खराबी; आगे गिरने की प्रवृत्ति। दाहिनी तरफ का सिर दर्द जो कानों के पीछे; नीचे और कन्धों के डैनों तक उतरे। दाहिनी आँख के ऊपर स्नायुशूल, जो दाहिने गाल की हड्डी और दाहिने कान तक हो, आँसू अधिक गिरें। ऐसा सिर दर्द होने से पहले जिगर में दर्द हो।

नाक—नथनों में फड़फड़ाहट (लाइको०)।

आँखें—सफेद भाग का मैला पीलारंग। ऊपर देखने पर चोटीलापन। आँसू छलक पड़ें। इसके साथ आँसू ज्यादा आए। दाहिनी आँख के घेरे का स्नायुशूल आँसू अधिक आए। पुतली सिकुड़ी हुई यह दर्द दाब से कम हो।

चेहरा—पीला, नाक और गला अधिक। चुचुकी खाल।

पेट—जबान पीली, दाँतों के निशान के साथ, बड़ी; ढीली (मर्क०, हाइड्रे०)। स्वाद कड़वा, चिपचिपा। मुँह से दुर्गन्ध आए। गरम खाना और पीना पसन्द करे। मिचली, कै, बहुत गरम पानी पीने से कम हो, दर्द आमाशय से होकर पीठ में और दाहिने कन्धे के डैने तक हो। आमाशयिक शूल। खाने पर कुछ देर के लिए कम हो, खासकर जब जिगर लक्षण भी साथ हों।

उदर—जिगर और पित्ताशय विकार के कारण कामला रोग। पित्ताशय शूल, तनाव। सन्धान और आन्त्रिक मन्दता। बार-बार डोरी जैसी कसावट। जिगर बढ़ा हुआ। पित्त पथरी रोग (बरबेरिस०)।

मूत्र—मात्रा में अधिक; झागदार, पीला पेशाब, बियर की तरह (चेनोपो०) गहरा, गँदला।

मल—कब्ज, मल कड़ा, गोल, भेड़ की लेंड़ी जैसा गहरा पीला, चिकना, लेईदार, मटियाला रंग पानी में तैरे। दस्त और कब्ज बारी-बारी से। गुदा में जलन और खाज (रटेनिया०, सल्फर)।

स्त्री—मासिकधर्म बहुत देर में और बहुत अधिक।

श्वास-यन्त्र—बहुत छोटी और तेज साँस, गहरी साँस लेने पर दर्द। कष्टदायक साँस। छोटी शिथिल करने वाली खाँसी, स्वर-यन्त्र में दर्द पड़ने जैसा संवेदन जो खाँसने से न हटे। कुकुरखाँसी, आक्षेपिक खाँसी, ढीला, खड़खड़ाता, बलगम कष्ट से निकले। साँस कष्ट के साथ, सीने व कन्धे की दाहिनी तरफ दर्द। खाँसते समय मुँह से श्लेष्मा के छोटे टुकड़े उड़ें। तीसरे पहर आवाज भारी होना। सीने में सिकुड़न।

पीठ—गरदन की जड़ में दर्द। गरदन कड़ी, सिर बायीं तरफ खिंचा हो। दाहिनी स्कंधास्थि के भीतर और निचले कोण के नीचे स्थाई दर्द। बायीं स्कंधास्थि के निचले कोण में दर्द।

अंग—बाहों, कन्धों, हाथों, अँगुलियों के सिरों में दर्द। अंगुलियों के सिरे बर्फ से ठंडे, कलाई चोटीली, हथेली की हड्डियों की फटन। सारा मांस छूने में दर्द करे। कटि और जाँघों में दर्द, एड़ियों में असह्य दर्द जैसे बहुत तंग जूते से कट गये हों, दाहिनी तरफ अधिक सुन्न हो। निचले अंगों का आंशिक लकवा, पेशियों में सख्ती के साथ।

चर्म—चर्म की सूखी गरमी, खुजली, पीलापन। दर्दीले, लाल दाने और छोटी फुन्सियाँ। पुराने फैलने वाले, घृणित घाव। चुचुका चर्म। मटियाला, ठण्डा लसीला।

घटना-बढ़ना - बढ़ना : दाहिनी तरफ, हरकत, छूना, मौसम बदलते समय, भोर में। घटना : भोजन के बाद, दाब से।

सम्बन्ध—चेलिडोनिन—सभी जगह की चिकनी पेशियों में झटके, आंत्रशूल, गर्भाशयिक शूल, वायु नलिका समूह में झटके, दिल की चाल बढ़ना इत्यादि बोल्डो-बोल्डोआ फ्रोग्रेन्स-(मूत्राशय का ढीला होना, पित्ताशय प्रदाह, और पित्त-पथरी। कड़वा स्वाद, भूख न लगे, कब्ज, वहम, सुस्ती, जिगर में रक्ताधिक्य, जिगर और आमाशय में जलन, बोझ। पीड़ाजनक जिगर रोग। मलेरिया के बाद जिगर में गड़बड़ी)। ऐलेम्युई गाँउटेरिया गुर्दों और मूत्राशय में पथरी, चूर्णित छिलके की थोड़ी मात्रा पानी में या अरिष्ट की ५ बूँद। रौद्रत्वक।

अक्सर सल्फर इस औषधि का काम पूरा करती है।

पूरक—लाइको०, ब्रायोनिया०।

क्रियानाशक—कैमोमिला।

तुलना कीजिए : नक्स०, सल्फर, ब्रायो०, लाइको०, ओपियम, पोडोफा०; सैंग्विने०, आर्से०।

मात्रा—अरिष्ट और नीची शक्तियाँ।

:—०—:

चेनोपोडियम एन्थेलमिण्टिकम (Chenop. Anth.)

(जेरूसलम ओक)

स्कन्धास्थि का दर्द खास लक्षण है। संन्यास के लक्षण, दाहिनी तरफ का लकवा और वाक्रोध। साँस में आवाज होना (ओपियम)। एकाएक चक्कर। कान के विकार से सिर चकराना। सुनने वाली स्नायु का रोग (नेट० सैलिसिलि०)। गोल और छोटे चनूनों के लिए चेनोपोडियम का तेल हितकर है।

कान—सुनने की स्नायुओं का मन्द होना। ऊँची आवाज अच्छी सुनाई दे। मनुष्य की आवाज न सुनाई दे, मगर दूसरी आवाजें सहन न हों; जैसे सड़क में गाड़ी इत्यादि की आवाज और धीमी आवाजें भी। कानों में भिनभिनाहट। तालु-मूल का बढ़ना। चक्कर जिसका कान की खराबी से सम्बन्ध हो।

पीठ—दाहिने कन्धे के कोण के बीच में रीढ़ के पास और सीने के आर-पार तेज दर्द।

मूत्र—अधिक, पीला, झागदार पेशाब, मूत्राशय में छरछराहट के साथ। पीला तलछट (चेलिडो०)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ओपियम, चायना, चेलिडो०।

मात्रा—३ शक्ति। चेनोपोडियम का तेल कृमि के लिए, १० बूँद प्रति २ घंटा; ३ खुराक। कार्बन टेट्राक्लोराइड भी।

चेनोपोडि-ग्लासि-एफिस (Chenopodi-glauci-aphis)

(प्लांट-लाइस फ्रॉम चेनोपोडियम)

उस पौधे के बहुत-से गुण लेता है जिस पर यह कीड़ा रहता है।

सिर—दुःखी, टीस, हरकत से बढ़े। मस्तिष्क इधर-उधर छलके। जुकाम, नथनों में जलन, कटन के साथ। कानों में तोप दगने की आवाज। पीला चेहरा। दाहिनी आँख के घेरे में स्नायुशूल, अधिक आँसू के साथ। दाँत दर्द जो शरीर में गरम पसीना होने पर कम हो (कैमोमिला), दाँत दर्द, कान, कनपटी और गाल की हड्डी तक बढ़े (प्लैण्टगो)।

पेट—रोटी और मांस की भूख न हो। जबान के सिरे पर दाने। श्लेष्मा अधिक। बहुत घड़घड़ाहट और असफल मलत्याग इच्छा के साथ शूल।

मल—कड़ा और गठीला। गुर्दा में जलन और दर्दीला कूँथन के साथ और मलाशय व मूत्राशय में दाब के साथ सुबह को दस्त।

मूत्र—लिंग-मुंड में कामोन्माद। मूत्रमार्ग में जलन। घड़ी-घड़ी पेशाब लगाना, मात्रा अधिक, झागदार।

पीठ—बायें कन्धे के डैने के निचले भीतरी कोण में दर्द, जो सीने में उतरे।

ज्वर—सारे शरीर में कम्प हथेली जले, गरम पसीना बिस्तर में रहने पर।

संबंध तुलना कीजिए—नैट०, सल्फ०, नक्स०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

चेलोन (Chelone)

(स्नेक हेड)

जिगर की एक औषधि, साथ में जिगर की बायीं तरफ की गोलाई में दर्द या चोटीलापन जो नीचे की तरफ बढ़े। मलेरिया जो सर्दी के साथ न आये; परन्तु उसमें समय की बहुत बड़ी पाबन्दी पाई जाये। बाहरी भाग का छरछराहट; मानो चमड़ा उघड़ गया हो, दुर्बलता। सविराम ज्वर के बाद बेचैनी। जिगर की सुस्ती के साथ अनपच रोग। कामला रोग। गोल कृमि; केंचुए। यह उन सभी तरह के कीड़ों का शत्रु है जो मानव-शरीर में उत्पन्न हो सकते हैं।

मात्रा —अरिष्ट, १ से ५ बूँद की एक खुराक।

चिमाफिला अम्बेलाटा (Chimaphila Umb.)

(पिप्सीसेवा)

गुर्दों, जननेन्द्रिय और मूत्रमार्ग पर विशेष काम करती है, लसीकावाहिनी और उदर की बिचली झिल्ली और स्तन को भी प्रभावित करती है। ऐसी नवयुवतियाँ जिनके शरीर में खून की बहुलता हो और मूत्रकृच्छ्र से पीड़ित हों। बड़े स्तनों वाली स्त्रियाँ। जिगर और गुर्दों का शोथ, पुराने शराबी। आरम्भिक और क्रमशः बढ़ने वाला मोतियाबिंद।

उन औषधियों में से एक है जिनके सिद्धिकरण के लक्षण इसको मूत्राशय रोग खासकर उसके नजले, तीव्र और जीर्ण में, लाभकारी बताते हैं। पेशाब कम मात्रा में उतरे और उसमें रस्सी जैसा लम्बा पीब जैसा, बलगमी मवाद अधिक आये। मूत्राशय की ग्रन्थियों (प्रोस्टेट) का बढ़ना।

सिर—माथे के बायें अगले उभार में दर्द। रोशनी के चारों तरफ चक्र। पलकों का खुजलाना। बायीं आँख में कोंचन दर्द, आँसुओं के साथ।

मुँह—दाँत दर्द, खाने और जोर पड़ने से बढ़े, ठण्डे पानी से कम हो। दर्द, मानो दाँत धीरे-धीरे खींचा जा रहा हो।

मूत्र—पेशाब गदला, बदबूदार, रस्सीदार या खूनी श्लेष्मा मिला और अधिक तलछट जमा हो। पेशाब करते समय जलन और छरछराहट हो और बाद में कूँथन हो। पेशाब थोड़ा। बहाव शुरू होने के पहले काँखना पड़े। मूत्रमार्ग ग्रन्थि का तीव्र प्रदाह, पेशाब रुकना, विटप स्थान में गेंद जैसा अटका लगे (कैना० इण्डि०)। गुर्दों के क्षेत्र में फड़फड़ाहट। पेशाब में चीनी। पैर फैला कर खड़े हुए और आगे को झुके बिना पेशाब न हो।

स्त्री—योनि-ओष्ठ प्रदाह, सूजन। योनि में दर्द। गरम लहरें। स्तनों में दर्दीले अर्बुद, जब कि अभी घाव बने न हों, दूध बहुत अधिक निकले। स्तनों की तीव्र सिकुड़न। बहुत बड़े स्तनों वाली स्त्रियाँ, स्तनों में अर्बुद; ग्रन्थियाँ, तेज दर्द के साथ।

पुरुष—मूत्राशय की गरदन से लिंग के मुँह तक छरछराहट। ग्रन्थि रस (प्रोस्टेट) स्खलन। मूत्र मार्ग की (प्रोस्टेट) ग्रंथियों का बढ़ना और क्षोभ।

चर्म—कंठमालिक घाव। ग्रंथियों का बढ़ना।

अंग—बायें घुटने के चारों तरफ फीता कसा जैसा लगे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—नम मौसम में, ठंडे पत्थर या फर्श पर बैठने से; बायीं तरफ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : चिमाफिला मैकुलाटा (घोर कुतरन भूख, तेज ज्वर, आँखों में सूजन मालूम हो)। युवा उर्सी, लीडम०, एपिगोआ।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

चिनिनम आर्सेनिकोसम (Chininum Arsenicosum)

(आर्सेनाइट ऑफ क्विनाइन)

इस द्रव्य के सिद्धिकरण में जो सर्वव्यापी आलस्य और शिथिलता उत्पन्न होती है उसका प्रयोग होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार शक्ति स्फूर्तिदायक औषधि की तरह किया गया है और अक्सर इसका लाभ तीव्र और तात्कालिक हुआ है। रोगिणी में अति शिथिलता के साथ, वे अवस्थाएँ जो जल्दी ठीक न हों; विशेषकर मलेरिया के लक्षण, स्नायुशूल इत्यादि में हितकारी हुई है। दमा रोग जो सामयिक रूप से बढ़े, साथ में घोर शिथिलता हो। बर्फीला चर्म। सूर्यचक्र पर दाब और उसके साथ रीढ़ का कोमलपन।

सिर—थकावट मालूम दे। सिर बहुत बड़ा मालूम दे। थरथराहट। घोर चिन्ता, घोर उत्तेजना। चक्कर, ऊपर देखने से बढ़े। धीमा, भारी सिर दर्द; अगले व पिछले भाग में चुभन दर्द सिर में ऊपर उठे।

आँखें—तेज प्रकाश असह्य और आँख के घेरे में झटके, आँसू, काले धब्बे उड़ते दिखाई दें, इनके साथ आँख में दर्द हो और आँसू आएँ।

मुँह—जबान पर मोटी रोयेंदार मैल; पीला, चिकना मैल। कड़वा स्वाद, अरुचि।

पेट—तेजाबी अवस्था का बारी-बारी कम और अधिक होना। अम्लपित्ताधिक्य (रोबिनिया; आर्जेण्टम नाइट्रिकम, आरेक्सिन टैनेट। पानी की प्यास, लेकिन पीने से नुकसान हो। अक्षुधा। अण्डे खाने से दस्त हों।

दिल—धड़कन। ऐसा लगे कि दिल रुक गया हो। दम घुटने के हमले, सामयिक आक्रमण। खुली हवा की आवश्यकता। ऊपर चढ़ने से दम फूले, साँस लेने में कष्ट, तीव्र रोग के बाद दिल की दुर्बलता। दिल की पेशियों का कमजोर पड़ना।

नींद—स्नायविक कारणों से नींद न आना (५ या ६ शक्ति की एक ही खुराक)।

अंग—अंग दुर्बल। हाथ-पैर, घुटने और दूसरे अंगों का ठंडापन। फटन दर्द।

ज्वर—लगातार, कमजोरी के साथ। शरीर क्षीण।

संबंध–तुलना कीजिये : चिनिनम आर्सेनि०, फेरम सिट्रिकम भी उस वृद्ध के प्रदाह में लाभदायक है जिसमें खून की कमी हो; खून की कमी वाली स्त्रियों का अम्लपित्त व मन्दाग्नि। श्लैष्मिक झिल्लियों से घातक रक्तस्राव। चिनिन०, एसिड म्यूरियेटिकम० (आँखों की चारों तरफ तेज स्नायुशूल, शीत के साथ, एल्कोहल और तम्बाकू बिलकुल सहन न हो, पतनावस्था और बेचैनी)। एनोथेरा (अनैच्छिक दस्त, स्नायु-दौर्बल्य के साथ। मस्तिष्क आवरणों का आरम्भिक शोथ)। मैक्रोजेमिया स्पाइरैलिस बीमारी के बाद बहुत कमजोरी; शिथिलता)।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण।

चिनिनम सल्फ्युरिकम (Chininum Sulph.)

(सल्फेट ऑफ क्विनाइन)

चिनिनम सल्फ की ऊँची शक्ति की एक खुराक अक्सर दबे हुए मलेरिया को उभार देती है। मलेरिया के ऊपर इसके अचूक प्रभाव के अतिरिक्त होमियोपैथिक पद्धति से यह दवा उन सब अवस्थाओं में विचारणीय है जहाँ सामयिकता और रीढ़ की कोमलता स्पष्ट रूप से उपस्थित रहती है। तीव्र संधिवात रोग। कई-कई जोड़ों का संधिवात। मलान्त्र की खाज और रक्ताधिक्य। जीर्ण आभ्यन्तरिक गुर्दा प्रदाह के लक्षण। आँखों के ढेले के पिछले भाग का स्नायु प्रदाह एकाएक आये। अन्धापन के साथ। रक्तनलिका का पतलापन। हिचकी।

रक्त—लाल रुधिर कणिकाओं का तात्कालिक और तीव्र गति से घटना और हीमोग्लोबीन की कमी पड़ना, साथ में क्लोराइड पदार्थ का शरीर से अधिक मात्रा में बाहर निकलना। अनेक मींगींवाली श्वेत कणिकाओं के बढ़ने की प्रवृत्ति।

सिर—चक्कर और टपक के साथ माथे और कनपटियों में दर्द जो धीरे-धीरे दोपहर तक बढ़े और जिसका मूल आधार मलेरिया हो। बायीं तरफ अधिक हो। सड़क में गिर जाये। खड़ा न रह सके। आंशिक या पूर्ण अंधापन।

कान—तीव्र टनटनाहट, भिनभिनाहट, गरजन, बहरेपन के साथ।

चेहरा—स्नायुशूल, आँख के नीचे से शुरू होकर उसके चारों तरफ और भीतर बढ़े। दर्द सामयिकक्रम से बढ़े, दाब से कम हो।

रीढ़—रीढ़ में कशेरुका अति क्षोभपूर्ण; दाब से दर्द। अन्तिम ग्रीवास्थि उत्तेजित। दर्द सिर और गरदन तक बढ़े।

मूत्र—खून मिला, गँदला, चिकना, बिना रंग, चिकनी तलछट। पेशाब में यूरिया और फासफोरिक एसिड अल्प मात्रा में आए, परन्तु मूत्रक्षार और क्लोराइड अधिक मात्रा में आएँ। इसके साथ शरीर का ताप नार्मल से भी कम रहे। स्रावाधिक्य। एल्बूमेन मिश्रित।

चर्म—खुजली, लाल चकत्ते, जुलपित्ती, पीलिया रोग, छाले पड़ना, फुन्सियाँ, धूम्ररोग। अति कोमल। झुर्रीदार।

ज्वर—रोग ३ बजे शाम को, जड़ैया। शीत के समय शरीर की कई शिराओं की दर्दीली सूजन। गरम कमरे में भी कम्प। बेचैनी। नार्मल से कम ताप।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : चायना, सैलिसिलिक एसिड (बहरापन, टनटनाहट) आर्से०, यूपेटो०, मेथिलीन ब्लू०। कैम्फर मोनो-ब्रोमाइड (कहते हैं कि क्विनाइन के असर को बढ़ाता है और टिकाऊ करता है); बैजा, (ईस्ट इण्डियन दवा) क्वाथ, सविराम ज्वर में अचूक बताते हैं; चौथिया किस्म का, टपकन सिर दर्द, लाल आँखें, भरभराया चेहरा। जिगर और तिल्ली बढ़ी हुई। शोथ। पैम्बोटैनो भी, (सविराम और गर्म देशों के ज्वर की मैक्सिको वालों की दवा।)

क्रियानाशक—पैरथेनम; नैट्र० म्यूर०; लैके०; आर्निका माण्टेना, पल्स०।

मात्रा—१ से ६ विचूर्ण; ३० और उससे ऊँची शक्ति।

चियानैन्थस (Chionanthus)

(फ्रिंज-ट्री)

यह औषधि कई प्रकार के सिर दर्दों में जैसे स्नायुविकार जनित बँधे समय पर आने वाले, मासिक धर्म सम्बन्धी और पित्तज सिर दर्दों में प्रायः उपयोगी सिद्ध हुई है। कुछ बूँदों की मात्रा में कुछ हफ्तों तक सेवन करने पर अक्सर पुरानी सिर-पीड़ा का क्रम टूट जायगा। माथे का दर्द, खासकर आँखों के ऊपर। आँखों के ढेले बहुत दर्दीले, नाक की जड़ पर दाब के साथ। जिगर विकार। कामला रोग। तिल्ली बढ़ी हुई (सियानोथ०)। मासिक धर्म रुक जाने से आया कामला रोग। जिगर की एक मुख्य औषधि। पित्तपथरी (बरबेरिस वल्गैरिस, कोलेस्टे०, कैल्के०)। मधुमेह। आक्षेपिक उदर पीड़ा

सिर—अशान्त, उदासीन। धीमा माथा दर्द, नाक की जड़ पर, आँखों पर, कनपटियों के आरपार झुकने से; हरकत से, झटकन से बढ़े। पीली आँखें।

जबान—चौड़ी, मोटे पीले रोयें के साथ।

मुँह—सूखा, जो पानी पीने से कम न हो; अधिक लार के साथ।

उदर और जिगर—नाभि प्रदेश में टीस; चुभन। मालूम पड़े कि आँतों की चारों तरफ डोरी बाँधी हुई है जो एकाएक खींच ली जाती है और फिर धीरे-धीरे ढीली की जाती है। चोटीलापन, कामला रोग व कब्ज के साथ। मिट्टी के रंग का मल, मुलायम, पीला और लेईदार। जबान पर मोटा मैल। भूख न होना। पित्तशूल। जिगर प्रदेश कोमल। क्लोम सम्बन्धी रोग और अन्य ग्रन्थि-बिकार।

मूत्र—पेशाब अधिक; गुरुत्वभार अधिक, घड़ी-घड़ी लगना, पित्त और चीनी मिला हुआ। गहरे रंग का।

चर्म—पीला, नमदार। मटियाला, हरा, खुजली।

सम्बन्ध—सिन्कोना, सियोनोथ, चेलिडो०, कार्डुअस, पोडोफाइलम, लेप्टैण्ड्रा।

मात्रा—अरिष्ट और पहली शक्ति।

क्लोरैलम (Chloralum)

(क्लोरल हाइड्रेट)

यह पदार्थ घन मात्रा में एक शक्तिशाली नींद लाने वाली और दिल की गति को बन्द करने वाली वस्तु है। यह चर्म पर विशिष्ट प्रभाव रखती है, लाल चकत्ते, काले दाग इत्यादि पैदा करती है, और यह प्रभाव सफलता के साथ होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार काम में लाया गया है, खासकर शीतपित्त में भावनात्मक उत्तेजना, दृष्टि भ्रम, बच्चों के भयानक स्वप्न, पैशिक शिथिलता में।

सिर—सुबह का सिर दर्द, माथे में अधिक, पिछले भाग में भी, हरकत से बढ़े, खुली हवा से कम हो। मन्द मस्तिष्क रक्त संचयता (३० शक्ति का प्रयोग करें)। मालूम पड़े कि गरम फीता एक कनपटी से दूसरी कनपटी तक बँधा हो। भ्रमात्मक आवाजें सुनाई दें।

आँखें—आँखें खूनी लाल और जल भरी। रोशनी के चक्र, काले धब्बे दिखाई दें। आँखें बन्द करने पर या रात में दृष्टिभ्रम। धुँधलापन। नेत्र प्रदाह, आँखों और पलकों में जलन, ढेले बहुत बड़े मालूम हों, सब चीजें सफेद दिखाई दें।

चर्म—चेचक जैसे लाल चकत्ते, शुलपित्ती; मदपान से या गरम चीज पीने से बढ़े। मदपान से सभी जगह के लाल चकत्ते बढ़ें, धड़कन के साथ, फैलने और सिकुड़ने वाली नसों में दर्द पैदा हो। अति खुजली। शरीर की सतह पत्थर जैसी

ठंडी। ठंढक लगने से भूसी छूटे, गरम से कम। धूम्र रोग। (फॉस०; क्रोटेलस होरिडुए)।

श्वास-यन्त्र—सीने पर बोझ और कसाव के साथ अति कष्टदायक साँस। अनिद्रा के साथ दमा रोग।

नींद—अनिद्रा, दृष्टिभ्रम, भयानक स्वप्न, निद्रालुता।

घटना-बढ़ना-बढ़ना—गरम चीज पीने से, स्फूर्तिदायक चीज के खाने से, रात के समय।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : एमोनियम कार्बोनिकम, एट्रोपि०, डिजिटेलिस, मस्कस।

तुलना कीजिये—बेला०, ओपियम, एपिस०, वेरोनाल—(एक खतरनाक पदार्थ जो यूरिया पर एल्कोहल के योग से बनता है और जिसमें एल्कोहल के तत्व रहते हैं। एल्कोहल की तरह नशा करता है। लड़खड़ाना, खड़ा न हो सके (डॉ० वारने)। (मिले-जुले लाल चकत्ते, ऊपरी खाल का प्रदाह, लिंगमुण्ड और पर्दे की खुजली, कलाई और अंगुलियों के बीच के जोड़ों में से पहले भाग के ऊपरी खाल पर लाल गोल घेरेदार चकत्ते)। लुमिनाल (अधकपारी में चर्म लक्षण के साथ अनिद्रा, सुस्ती, महामारी के रूप में फैले हुए मस्तिष्क आवरण प्रदाह रोग की तरह)। डॉ० रॉयल)।

मात्रा—शीतपित्त में पहला विचूर्ण इसके अतिरिक्त ऊँची शक्ति। पैरों पर गन्दा बदबूदार पसीना आने में बाहरी प्रयोग के लिए १ प्र० श० घोल से धोइये। मूल दवा ५ से २० ग्रेन। सावधानी से प्रयोग करें।

क्लोरोफारमम (Chloroformum)
(क्लोरोफार्म)

सर्व अचैतन्यकारक, आक्षेप निवारक। पेशियों का पूरी तरह से ढीला होना। कमजोर, तेज नाड़ी छिछला; खर्राटेदार साँस। अकड़न। गुर्दा या पित्त सम्बन्धी शूल, आमाशय शूल।

डॉ० डी० मैकफरलैन द्वारा ६ शक्ति के प्रयोग से मालूम किये हुए लक्षण।

बहुत कमजोरी, खासकर दाहिना तरफ। घुटनों से नीचे के अंग बहुत थके हुए। पूरे चेहरे और सीने पर बहुत पसीना, निद्रालुता, चक्कर; सूखे होंठ और गला, रात में सूखी गुदगुदीदार खाँसी। पेट में वायु, भोजन वापस आये, पेट में चोटीलापन, कचट, दिल के चारों तरफ चिलकन। दाहिनी तरफ सीने में लम्बी साँस लेने से तेज दर्द, परिश्रम से दम फूले।

सिर- प्रलाप, जहाँ उत्तेजना और हिंसा की प्रधानता हो। सिर कन्धों की तरफ नीचे को खिंचा हो, आँखें तेजी से खुलें और बन्द हों, पुतली सिकुड़ी हो, चेहरे का, पेशियों और अंगों का तेज आक्षेप।

संबंध—ईथर : चीरफाड़ के बाद फुफ्फुस प्रदाह (प्रोफेसर बियर)। स्पिरिटस ऐथेरिस कम्पोजिटस--(हॉफमैन्स एनोडाइन)—पेट का फूलना, हृदय शूल। मात्रा—५ बूँद से १ ड्राम (पानी में)।

मात्रा—ऊँची शक्ति या ६ ठी। क्लोरोफार्म के कारण आए अस्थि-भग्न की दवा फास्फोरस है।

क्लोरम (Chlorum)

(क्लोरीन गैस इन वाटर)

इस पदार्थ का स्पष्ट प्रभाव साँस-यन्त्र पर होता है जिसमें साँस-नली में झटका आता है। यह इस औषधि का प्रधान लक्षण है : दमा साँस-यन्त्र के झटके को कम करने के लिए उपयोगी। सड़न में भीतरी और बाहरी प्रयोग।

मन—पागल होने का डर। स्मरण शक्ति की छिन्नता, खासकर नामों के लिए।

साँस-यन्त्र—नथने जैसे धुएँ से भरे हों, कालिखदार। तेज छिलने वाले रस के फलकने के साथ जुकाम, जिसमें नाक का भीतरी भाग और किनारों की चारों तरफ छरछराहट हो। दम घुटने के साथ सिकुडन। टेंटुआ में झटका आना। उपजिह्वा, स्वर-यन्त्र और वायु-नलिका समूह में उत्तेजना; कच्चापन। नम हवा से स्वर-भंग। स्वर-यन्त्रों के एकाएक झटका में दम घुटना, आँखें बाहर निकली हुई, घूरती, चेहरा नीला, ठंडा पसीना, नाड़ी छोटी। साँस भीतर खींचने में कोई रुकावट न हो, मगर बाहर निकालने में रुकावट मालूम पड़े। लाल चेहरा। लम्बी, तेज, सीटी जैसी बलगम की आवाज। जीभ बहुत सूखी हुई।

मात्रा—पूरी शक्ति का क्लोरीन जल बनाने के लिए ताजा बनाना चाहिये। ४ से ६ शक्ति।

कोलेस्टेरिनम (Cholesterinum)

यह दवा पित्ताशय और दूसरी नलियों की ऊपरी झिल्ली से निकाली जाती है।

जिगर के कर्कट रोग के लिए। कठिन जिगर रक्त संचयता; पहलुओं में जलन, दर्द, टहलते समय पहलू को दबाये रहे, इतना दर्द हो। निगाह का धुँधलापन। कामला, पित्तपथरी। शरीर पर कोलेस्टेरिनम का, लेसिथिन का उल्टा प्रभाव पड़ता है। दोनों ही अर्बुद के बढ़ने में महत्वपूर्ण भाग लेते हैं। पित्तपथरी और अनिद्रा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : टारोकोलेट ऑफ सोडा, होमियोपैथी में डॉ० आई. पी० टेशियर ने जिगर रोग के सम्बन्ध में पित्त और उसके अन्य लवण पर रोचक

विचार प्रकट करते हुए इस प्रभाव को जानने के लिए कई प्रमुख वैज्ञानिकों की छानबीन का विश्लेषण किया है और वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि टारोकोलेट ऑफ सोडा होमियोपैथी में कई प्रकार के रक्त की लाल कणिका के अभाव में लाभदायक है। यह भी कहा जाता है कि इस औषधि की रोग उत्पादन क्षमता और विष इसके मूल्यवान होने को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं और साथ में यह भी उल्लेखनीय है कि यह तिल्ली की अति वृद्धि और गण्डरोग में भी लाभदायक है। वे हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि यह औषधि साँसकष्ट उत्पन्न करती है, ऐसी श्वासकृच्छ्रता जो हृत्पेशियों की खराबी से फेफड़ों में अधिक रक्तसंचित होने का परिणाम हो। तीव्र फुफ्फुस शोथ, दिल की धड़कन का अति तीव्र होना इससे आरोग्य शास्त्र और चिकित्सा क्षेत्र में छानबीन करने का अच्छा और रोचक अवसर मिलता है और इससे अति गम्भीर निष्कर्ष पर पहुँचने की सम्भावना है।

मात्रा—३ विचूर्ण।

क्रोमिकम एसिडम (Cromicum Acidum)

(क्रोमिक एसिड)

गल झिल्ली प्रदाह, नाक के पिछले भाग का अर्बुद और जबान का कैन्सर आदि सभी रोगों में इस औषधि से लाभ हुआ है। खून मिला दुर्गन्धित प्रसव स्राव। लक्षण तेजी से आवे और गायब हों, और निश्चित समय पर आवें। बदबूदार स्राव।

नाक—नाक में घाव और खुरण्ड। बदबूदार दुर्गन्ध। छिलन दर्द। जीर्ण पीनस। (ऑरम मेटा०)।

गला—झिल्ली प्रदाह, गले में खराश। चिमड़ा श्लेष्मा, निगलने की प्रवृत्ति, खखारने से कष्ट बढ़े। नाक के पिछले भाग का अर्बुद।

अंग—कानों में असुविधा। स्कंधास्थि और गरदन के पीछे दर्द। घुटनों और पैर की गद्दी में दर्द। चलने से तलवों में खींचन पड़े।

मल—पानी-सा, घड़ी-घड़ी, अधिक, मिचली और चक्कर के साथ। बवासीर, भीतरी और खूनी। पिठासे में कमजोरी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: कैलि० बाइ क्रोमिकम, रसटॉ०, क्रोमियम सल्फेट०, कम्पवात, घेघा, मूत्र ग्रन्थि (प्रोस्टेट) का अति बढ़ना। लिंग मुंड पर दाद। गरदन टेढ़ी। आँखों के ढेले का बाहर निकलना, फुफ्फुस—पाकाशयिक स्नायु के कार्य को मन्द करती है जिससे दिल की तीव्र धड़कन कम होती है। स्नायु दुर्बलता में स्नायु को शक्ति देती है। रेशेदार अर्बुद। बाल लकवा। मात्रा बड़ों को ३ से ५ बूँद खाने के बाद और सोते समय।

मात्रा—होमियोपैथिक रीति से—३ से ५ विचूर्ण ।

क्राइसैरोबिनम (Chrysarobinum)

(गोवा पाउडर—एण्डिरा एरैरोबा)

चर्म पर अधिक उत्तेजना लाता है और चर्म रोग पर सफलता के साथ प्रयोग किया जाता है, खासकर दाद, अपरस, भैंसिया दाद, मुँहासे में । रसदार दाने या खाल उधड़ने में जिसमें दुर्गन्धित स्राव और खुरण्ड हो और जो पास-पास होकर एक दूसरे से मिल जाने वाले हों, देखने में एक ही बड़ा चकत्ता दिखाई दे (बर्नस्टीन) । जाँघ, टाँगों और कान पर तीव्र खुजली । सूखा पपड़ीदार चर्म रोग खासकर आँखों और कानों के चारों तरफ, खुरण्ड, नीचे मवाद । (मेजेरि०) ।

आँखें—पलकों का प्रदाह, आँख आना; कनीनिका प्रदाह । घोर प्रकाशांतक दृष्टि नाड़ी का क्षोभ ।

कान—कानों के पीछे अकौता । घृणित खुरण्डदार अवस्था मोटी पपड़ी होने की सम्भावना; सारा कान और उसके चारों तरफ के स्थान पर एक बड़ा खुरण्ड मालूम पड़े ।

संबंध—क्राइसैरोबिनम में क्राइसोफेन रहता है जो तेजी से ओषजन के प्रभाव से क्राइसोफेनिक एसिड में परिवर्तित हो जाता है । यही रूबर्ब और सेना में भी रहता है ।

मात्रा—बाहर से मलहम के रूप में एक औंस बैसलीन में ४–८ ग्रेन, आन्तरिक व्यवहार में ३ से ६ शक्ति । बाहरी प्रयोग सावधानी से करना चाहिए, क्योंकि यह प्रदाह उत्पन्न करता है ।

सिक्यूटा विरोसा (Cicuta Virosa)

(वाटर हेमलोक)

इस द्रव का स्नायुमंडल पर प्रभाव है जिससे आक्षेपिक लक्षण पैदा होते हैं जैसे हिचकी, हनुस्तम्भ, धनुष्टंकार और अकड़न रोग इस औषधि के चिकित्सा में प्रयोग करने का संकेत करते हैं, खासकर जब इस दवा के व्यक्तिगत लक्षण भी उपस्थित हों । लक्षण ये हैं : सिर, गरदन और रीढ़ का पीछे की तरफ झुकाव, रोगी की साधारण दशा उग्र होती है, चेहरा भयंकर टेढ़ा-मेढ़ा हो । तीव्र, विचित्र इच्छायें । आन्तरिक शीत । कराहना और गुर्राना । मूर्खता से काम करता है । चर्म पर दर्शनीय प्रभाव ।

मन—प्रलाप, रोगी गाए, नीचे और हास्यास्पद हरकतें करे। सभी चीजें अनजान और भयंकर दिखाई दें। वर्त्तमान को भूतकाल से मिलाकर गड़बड़ कर दे, बालकों जैसा स्वभाव। मूर्ख। शोक-ग्रस्त, उदासीनता के साथ विश्वासहीन। मिर्गी, कराहना, भुनभुनाना। स्पष्ट सपने।

सिर—एक तरफ को झुका या घूमा हुआ। मस्तिष्क-मेरुमज्जा का प्रदाह। गरदन की पेशियाँ सिकुड़ी हुईं। आमाशय शूल के साथ चक्कर और पेशियों के झटके। सिर में एकाएक प्रचण्ड झटके। चीजों को लगातार घूरा करे। मस्तिष्क में आघात के कारण अकड़न, सिर पर मोटी, पीली खुरण्ड। हवा खुलने से सिर के लक्षण कम हों।

आँखें पढ़ते समय अक्षर लोप हो जायें। पुतली फैली हुई; संवेदनहीन वक्र दृष्टि। चीजें पीछे हटें, निकट आयें और एक की दो दिखाई दें। सिर झुकाने पर पुतली ऊपर पलक के भीतर चली जाये। बरफ देखने का बुरा असर, आँखों और उनकी नसों में झटका आए। दिमाग पर आघात से ऐंचापन, सामयिक आक्षेप।

कान—कष्ट से सुनाई देना। एकाएक धमाके का शब्द खासकर निगलने पर। कानों से रक्त-प्रवाह।

चेहरा—दाने गिचपिचा जायें और मोटी पीली पपड़ी जम जाये, चेहरे और सिर पर, मुँह के किनारों पर और ठुड्ढी पर जलन दर्द के साथ। लाल चेहरा। हनुस्तम्भ, दाँत पीसने की प्रवृत्ति।

गला—सूखा। मानो चमक रहा हो। अन्न-नली मुँह के झटके, निगल न सके। हड्डी के नोकीले टुकड़ों के निगलने से अन्न-नली के मुँह पर बुरा असर।

आमाशय—प्यास, जलन, दाब; हिचकी। आमाशय के गड्ढे में थरथराहट जैसे यह भाग मुट्ठी के आकार का ऊपर को उठा हो। अप्राकृतिक चीजें कोयला; खाने की इच्छा (एल्युमिना, कैल्के०) अनपच असंवेदनीयता के साथ मुँह में झाग।

उदर—अफरा चिन्ता और चिड़चिड़ापन के साथ। गड़गड़ाहट। तना और दर्दीला। शूल अकड़न के साथ।

मलाशय—सुबह का दस्त, पेशाब करने की प्रबल इच्छा। गुदा में खाज।

श्वास-यंत्र—सीना कसा लगे, साँस न ले सके। सीने की पेशियों में झटके। सीने में गरमी।

पीठ और अंग—गरदन की जड़ में झटके और ऐंठन तथा सिर का झटके के साथ पीछे की तरफ खिंचना। टेढ़े अंग सीधे न हो सकें और सीधे अंग झुक न सकें। पीठ पीछे को धनुष की तरह झुकी हो। रीढ़ की आखिरी हड्डी में झटके, फटन—खासकर मासिक काल में।

चर्म—अकौता बिना खाज। स्राव कड़े, नीबू के रंग का खुरण्ड जम जाये। दबे हुए चर्म रोग से मस्तिष्क रोग उत्पन्न हों। उभरे हुए दाने, मटर जैसे। पुराना दाद।

घटना-बढ़ना-बढ़ना—छूने से, बाहरी हवा से, धक्के से, धूम्रपान से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक—ओपियम; आर्नि०।

तुलना कीजिये—सिक्युटा मैकुलाटा—वाटर हेमलॉक—उसी तरह का प्रभाव, जिनमें से प्रमुख है : अचेत होकर गिरना, धनुष्टंकार अथवा क्षणिक विक्षेप। शरीर पसीने से भींगा हो। मिर्गी और धनुष्टंकार में विचारणीय अरिष्ट और नीचे की शक्तियाँ। एसिड हाइड्रोसियानिकम, ड्रोसे०, कोनियममैकु०, इनैन्थि क्रोकेटा, स्ट्रीकनिया; बेलाडोना।

मात्रा—६ से २०० शक्ति।

सिमेक्स एकैन्थिया (Cimex—Acanthia)

(बेडबग)

थकावट और अंगड़ाई के साथ सविराम ज्वर में सेवन योग्य। नसें बहुत छोटी मालूम पड़ें। (एमोनियम म्यूरियेटिकम)। सिकुड़ने वाली नसें रोग-ग्रस्त बाहों की नसें खिंची मालूम पड़ें। अंगड़ाई लेना।

सिर—मदपान से तीव्र सिर दर्द आना। अति क्रोध, शीत की अवस्था के आरम्भ में उत्तेजित। सभी चीजें चीर-फाड़ डाले। दाहिने अग्रभाग की हड्डी के नीचे दर्द।

स्त्री—योनि के ऊपर की तरफ बायें डिम्बाशय तक झपटन दर्द।

ज्वर—सारे शरीर में शीत। घुटनों पर ठण्डी हवा बहती मालूम पड़े। सभी जोड़ों में दर्द, मानों नसें छोटी हो गई हों, खासकर घुटनों की। शीत लेटने से बढ़े। विज्वर अवस्था में प्यास, लेकिन शीत की अवस्था में कम, गरम अवस्था में और भी कम तथा पसीना की अवस्था में जरा भी प्यास न हो। चिपचिपा, घृणित पसीना।

आँतें—कब्ज, मल सूखा; छोटी गोलियाँ (ओपियम, प्लम्बम मेटालिकम, थुजा, आक्सिडेण्टालिस) और कड़ा। मलाशय में घाव।

मात्रा—६ से २००।

सिमिसिफ्यूगा रेसीमोसा (एक्टिया रेसीमोसा)

(Cimicifuga Recemosa (Actea Racemosa)

(ब्लैक-स्नेक-रूट)

मस्तिष्क मेरुमज्जा और पेशी मण्डल पर इसका विस्तृत प्रभाव है और गर्भाशय व डिम्बाशयों पर भी। खासकर वातपीड़ित स्नायविक रोगियों के लिए, साथ में डिम्बाशय की उत्तेजना, गर्भाशय में ऐंठन और भारी अंग। पेशियों में ऐंठन दर्द, आरम्भ में स्नायविक उत्पात से जो किसी भी भाग में उत्पन्न हो, इसकी विशेषता है। घबराहट और दर्द इसके संकेत हैं। दर्द बिजली की तरह कभी यहाँ कभी वहाँ लपकते हैं। अधकपारी। कोखे के यन्त्रों में लक्षण दर्शनीय है। "यही नाड़ी की गति और झटकों को कम करती है, पीड़ा को मन्द करती है और उत्तेजना को घटाती है।"

मानसिक—रोगिणी अपने को बादल से घिरी महसूस करती है। घोर उदासी, निकट भविष्य में शोकमयी घटना होने के स्वप्न के साथ। बन्द गाड़ी में सवारी करने से भय लगे। बाहर जाने को कूद न पड़े। लगातार बातें करना। चूहा की भ्रम दृष्टि। मदात्यय। अपने को घायल करना चाहे। स्नायुशूल गायब होते ही पागलपन आए।

सिर—मस्तिष्क में जंगली भावनाएँ। मानसिक चिन्ता, परिश्रम या गर्भाशय रोग की प्रतिक्रिया के कारण तेज चिलकन और थरथराहट का दर्द। सिर में मस्तिष्क बढ़ा हुआ मालूम दे। बाहर को दाब वाला दर्द। कानों में टनटनाहट। कान जरा भी आवाज सहन न करें।

आँख—कष्टदायक दृष्टि, पेड़ू पीड़ा से सम्बन्धित। कृत्रिम रोशनी असह्य। आँखों में गहराई तक थरथराहट और चमकन का दर्द। कानों की तीव्र पीड़ा। आँखों से चाँद तक दर्द।

आमाशय—रीढ़ और गरदन पर दाब पड़ने के कारण मिचली और कै। कौड़ी में कम (सिपिया, सल्फर, कुतरने जैसा दर्द)। जीभ नोकीली और काँपती।

स्त्री—मासिक-धर्म का रुकना। (विशेषतः मैक्रोटिन) का प्रयोग करें। डिम्ब क्षेत्र में दर्द, ऊपर को और नीचे की जाँघों के अगले भाग में मासिक-धर्म के ठीक पहले दर्द। मासिक-धर्म अधिक, गहरा, जमा हुआ, थक्केदार। पीठ दर्द, स्नायविकता के साथ, अक्रमिक। डिम्बाशय का स्नायुशूल। पेड़ू के आर पार दर्द एक कटि से दूसरी तक। प्रसवांतक पीड़ा अति क्षोभ और असह्य दर्द के साथ। स्तन के निचले भाग में पीड़ा; बायीं तरफ अधिक। युवा स्त्रियों के चेहरे पर धब्बे।

श्वास-यन्त्र—गले में गुदगुदी। सूखी छोटी खाँसी, बात करने से और रात में बढ़े। खाँसी जब बलगम कम हो, आक्षेपिक सूखी, पैशिक चोटीलापन और स्नायविक उत्तेजना के साथ।

दिल—अक्रमिक, धीमी, काँपती नाड़ी। कम्प क्रिया। हृद् शूल, बायीं बाँह का सुन्न होना, बगल से बँधी मालूम पड़े। दिल की गति एकाएक रुक जाये, दम घुटने की सम्भावना। बायीं तरफ के स्तन का दर्द।

पीठ—रीढ़ अति कोमल, खासकर ऊपरी भाग। गरदन और पीठ में कड़ापन और सिकुड़न। पसलियों के बीच का वात रोग, पीठ और गरदन की पेशियों में वात पीडा। कटि व त्रिकास्थि क्षेत्र में दर्द, जाँघों के नीचे चूतड़ों से होकर। पीठ में चिलक।

अंग—असुविधा, बेचैनी, अगों में टीस; पेशियों में चोटीलापन। वात दर्द जो पेशियों के मध्य भाग पर आक्रमण करे। खासकर बड़ी पेशियों के। अकड़न युक्त चाल, वात दर्द के साथ। अंगों में झटके। जाँघ से एड़ी तक की पेशी में तनाव। निचले अंगों में भारीपन। भारी, टीस, खींचन दर्द।

नींद—अनिद्रा। दाँत निकलने के समय बच्चों का मस्तिष्क उत्तेजित।

चर्म—लगाने और खाने की आइवी-विष दोष में।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: सुबह ठंडक (सिवाय सिर दर्द), मासिककाल में, जितना स्राव हो उतना ही कष्ट बढ़े।

घटना—सेंक देना, भोजन करना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: रैमनस केलिफोर्निका (पेशी दर्द, कटिवात; पार्श्व-वेदना, तीव्र वात दर्द। डेरिस पिन्नाटा (वात आधारित स्नायविक सिरदर्द) एरिस्टोलोचिया मिलहोमेन्सा (जाँघ-एड़ी वृहत् पेशी में दर्द, मधुमेह) कॉलोफाइलम, पल्से०, लिलियम टिग्रिनम, एगैरिकस मस्केरियस, मैक्रोटिन (खासकर कटिवात के लिए)।

मात्रा—पहली से ३० शक्ति, ३ शक्ति अधिक व्यवहार होती है।

सिना (Cina)

(वर्म सीड)

यह बाल औषधि है—बड़े, मोटे, गुलाबी रंग के, कंठमालिक प्रवृत्ति के और बहुत-से लक्षण जो आँतों की उत्तेजना से सम्बन्धित हों जैसे पेट के केंचुए और उसके साथ के अन्य रोग। मिजाज में चिड़चिड़ापन, चिल्लाना और हाथ-पैर जोर से पटकना सभी इस क्षेत्र में आते हैं। सिना का रोगी भूखा, क्रुद्ध, भद्दा होता है और झुलाया जाना पसन्द करता है। झटके के साथ दर्द। चर्म छूना सहन न करे।

मन—बदमिजाज। बच्चा बहुत क्रुध, छूआ जाना, चिढ़ाया जाना या गोद में उठाया जाना पसन्द नहीं करता, बहुत-सी चीजें चाहता है, मगर देने पर बहिष्कार कर देता है। घोर कुढ़न; मानो कोई बड़ा अपराध किया हो।

सिर—सिर दर्द, उदर दर्द बारी-बारी से। झुकने से कम हो (मेजेरियम) आँखों के प्रयोग से आया सिर दर्द।

आँखें—पुतली फैली हुई। चीजें पीली देखना। हस्तमैथुन से आँखों की कमजोरी। उदर में उत्तेजना के कारण ऐंचापन। आँखों पर जोर पड़ना, खासकर जब दूरदृष्टि आंचलिक हो भौंह की पेशियों में टपकन।

कान—कानों में खुजली और खोदने जैसा दर्द।

नाक— हर घड़ी नाक खुजलाना, रगड़ना और चुटकी काटना चाहे, नथुनों में अंगुली दे यहाँ तक के खून निकलने लगे।

चेहरा—गालों के चमकदार लाल धब्बे। पीला, गरम; आँखों के चारों तरफ काले चक्र। ठंडा पसीना। मुँह के आस-पास। सफेदी और नीलापन। सोने में दाँत पीसना। चेहरे और हाथों की ऐंठन, फड़कन।

पेट—खाना खाने के बाद ही फिर भूख लगे। भूखा, खोदन, कुतरन संवेदन। कौड़ी दर्द, सुबह उठते ही और खाने से पहले बढ़े। खाने या पीने के बाद ही कै और दस्त। साफ जबान के साथ कै। बहुत-सी, भिन्न-भिन्न प्रकार की चीजें खाने की इच्छा प्रबल।

उदर—नाभि के आस-पास ऐंठन दर्द (स्पाइजे०)। फूला और कड़ा उदर।

मल—सफेद श्लेष्मा, अन्न के छोटे छिलकों की तरह, फिर चुटकी काटने जैसा शूल। गुदा में खाज (टियुक्रियम मेरम वेरम)। केंचुए (सैबाडिला, नैपथालिन, नैट्र० फास)।

मूत्र—गँदला, सफेद, रखने से दूधिया हो जाये। रात मे अनैच्छिक।

स्त्री—रजस्वला होने के पहले गर्भाशय से रक्तस्राव।

साँस-यन्त्र—सुबह को दम घुटने वाली खाँसी। काली खाँसी : तीव्र; रह-रह कर सुरसुरीदार खाँसी के हमले जैसे गले के नीचे से पैदा हो। खाँसी झटके में अन्त हो। खाँसी इतनी तेज कि आँखों से पानी निकलने और सीने की हड्डी में दर्द हो। ऐसा मालूम हो कि कोई चीज फाड़ कर अलग कर दी गयी है। वसन्त और पतझड़ के मौसम में उठे। खाँसी के बाद कफ निगलना पड़े। खाँसने के बाद गले से पेट तक गड़गड़ाहट। बच्चा खाँसी आने के डर से बोलने, हिलने-डोलने से भी डरे। खाँसने के बाद कराहना, चिन्तित, हवा के लिए बेचैनी; साँस रुके और पीला पड़ जाये।

अंग—अंगों का फड़कना और झटका आना, टेढ़ापन, कम्प, लकवा जैसे झटके, रोगी एकाएक कूद पड़ता है, मानों दर्द से। बच्चा बाहों को इधर-उधर हिलाता है।

रात में अकड़न। दाहिने हाथ की अंगुलियों को एकाएक भीतर की तरफ झटकना। बच्चा झटके से टाँग फैलाता है। बायाँ पैर लगातार झटके की अवस्था में।

नींद—बच्चा सोते में हाथों, पेट और घुटनों के बल हो जाये। बच्चों के भयानक स्वप्न, चिल्लाना, चीखना, डर से जाग उठना। जम्हाई लेते समय कष्ट होता है। सोने में चीखना और बातचीत करता है। दांत पीसना।

ज्वर—हलकी सर्दी। अधिक ज्वर, जबान साफ। अधिक भूख, शूल पीड़ा, कपकपाहट, प्यास के साथ। माथे, नाक और हाथों पर ठण्डा पसीना। सिना के ज्वर में चेहरा ठण्डा और गरम रहता है।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : किसी चीज पर टकटकी लगाकर देखना, केंचुओं से, रात के समय, धूप में, गरमी के मौसम में।

सम्बन्ध—**तुलना कीजिए : सेण्टोनाइन**—अक्सर केंचुओं के विकार में इससे अच्छा काम होता है, लक्षण सिना की तरह होते हैं, जैसे "झटके के साथ दर्द" जो सिना में होता है। दृष्टिभ्रम, पीली नजर, चेहरा बैगनी, रोशनी का संवेदन न हो, रंग में कोई अन्तर न मालूम पड़े। पेशाब गहरे केसरिया रंग का। झटके और फड़कन, जीर्ण पाकाशयिक और आंत्रिक रोग कभी-कभी **सेण्टोनाइन** की स्थूल मात्रा से अच्छे हो जाते हैं (डाइलके) **हेलमिण्टोकोर्टीस** वर्ममॉस (आन्त्रिक केंचुओं पर, खासकर महीन कृमियों पर अति शक्तिवान काम करती है)। **टियुक्रियम०, इग्नेशिया एमेरा, कैमो०, स्पाइजेलिया०।**

क्रियानाशक : कैम्फो०, कप्सिकम एनम।

मात्रा—३ शक्ति। स्नायविक चिड़चिड़े बच्चों के लिए ३० और २०० शक्ति अच्छी है। सैण्टोनाइन की पहली शक्ति (सावधानी से) और ३ विचूर्ण।

सिन्कोना आफिसिनैलिस (Cinchona off.)

(पेरुवियन बार्क—चाइना)

ऐसी दुर्बलता जो रसों—रक्त, वीर्यादि के अधिक स्राव का परिणाम हो, इसके साथ स्नायविक क्षोभ। लक्षणों का निश्चित समय पर पलटना या प्रकट होना विशेषता है। बाहरी हवा असह्य। तीव्र रोगों की आरम्भिक दशाओं में बहुत कम प्रयुक्त होती है। छोटे जोड़ों का पुराना दर्द। जीर्ण मवादी मूत्र पिण्ड आवरण प्रदाह। शल्य-क्रिया के बाद वायु पीड़ा, वायु स्खलन से आराम न मिले।

मन—भावहीन, उदासीन, आज्ञा पालन न करना, निराश। मन में विचारों के झुण्ड, नींद न लगना। दूसरों की आत्मा को कष्ट देना। एकाएक रोना और करवटें बदलना।

सिर--मानो कपाल फट जायगा। मानो मस्तिष्क इधर-उधर झूल रहा हो और खोपड़ी से टकराता हो, जिससे बहुत दर्द हो (सल्फर, सल्फ्युरिक एसिड)। सिर और गरदन की मुख्य धमनी में घोर थरथराहट। चाँद में आक्षेपिक दर्द और उसके परिणामस्वरूप दोनों बगल में चोटीलापन। रक्तस्राव के बाद या अधिक मैथुन या जीवन-रस के अधिक निकलने के कारण चेहरा रक्ताधिक्य से लाल। दाब से या गरम कमरे में कष्ट कम। खाल उत्तेजित, बाल झड़ने से अधिक हो। खुली हवा में दर्द बढ़े, एक कनपटी से दूसरी तक। स्पर्श से, हवा के झोंके से, झुकने से बढ़े। टहलते समय चक्कर आवे।

आँखें--चारों तरफ आसमानी रंग के घेरे। खोखली आँखें। सफेद भाग का पीलापन। काले धब्बे, तेज चमकदार, भ्रमात्मक वस्तुएँ देखना, रक्तहीन पटल; रतौंधी। आँखों के सामने धब्बे। रोशनी असह्य। ढेलों का टेढ़ापन। सविराम स्नायुशूल। आँखों में दाब। कष्टप्रद दृष्टि, जलता जल-स्राव।

कान—कानों में टनटनाहट। बाहरी कान छूने में कोमल। सुनने की क्रिया मन्द, शोर असह्य। ललरी लाल और सूजी हुई।

नाक—रुका हुआ जुकाम। नाक से खून सरलता से बहे, खासकर उठने पर। जुकाम, छींकना, पानी-सा स्राव। घोर सूखी छींक। नाक पर पसीना।

चेहरा—मटियाला चेहरा। चेहरा फूला, लाल।

मुँह—दाँत दर्द, दाँतों को एक दूसरे से कस कर दबाने से कम हो और सेंकने से। जबान पर मोटा, मैला मैल। सिरा जले, बाद में लार बहे। कड़वा स्वाद। खाना अधिक नमकीन लगे।

पेट—कोमल, ठंडा। अनपच खाने की कै। पाचन मन्द। खाने के बाद बोझ। चाय का बुरा असर। भूख बिना इच्छा। स्वाद का अभाव। कौड़ी प्रदेश के आर-पार चुभन दर्द। दूध से अरुचि। खाने की इच्छा, मगर बिना पचे धरा रहे। बादी, कड़वा पानी डकार में ऊपर आवे या खाना मुँह में आवे जिससे कष्ट कम न हो, फल खाने से बढ़े। हिचकी। अफरा हरकत से कम हो।

उदर—अधिक वायुशूल, दोहरा होने से कम। तनाव अधिक। दाहिने कोखे में दर्द। पित्त-पथरी शूल (ट्रायमफेटा सेमिट्रिलोबा)। जिगर और तिल्ली सूजे और बढ़े हुए। कामला रोग। पेट और उदर की आन्तरिक ठंडक। आमाशय पाकाशय जुकाम।

मल—अनपचा, झागदार, पीला, बिना दर्द, रात में खाने के बाद, गरम मौसम में, फल से, दूध बियर से बढ़े। अधिक कमजोरी लाने वाला मल, बहुत हवा के साथ। मुलायम होने पर भी कष्ट से निकले (एल्यूमिना प्लैंटिन०)।

पुरुष—उत्तेजित, मैथुन के विचार। बहुत वीर्यस्खलन, बहुत कमजोरी के साथ। अण्ड प्रदाह।

स्त्री—मासिक धर्म समय से पहले। काले थक्के और उदर तनाव। दर्द के साथ अधिक स्राव। इच्छा अधिक। खून मिला और प्रदर। साधारण मासिकस्राव की जगह पर बहता मालूम पड़े। पेड़ू में दर्द, भारीपन।

श्वास-यन्त्र—इन्फ्लुएञ्जा, कमजोरी के साथ। सिर नीचे करके साँस न ले सके। परिश्रम के साथ धीमी साँस, लगातार दम घुटना। दम घुटने वाला जुकाम, सीने में खड़खड़ाहट, तीव्र कड़ी खाँसी, हर एक भोजन के बाद। फुफ्फुस से रक्त-स्राव। कष्टदायक साँस, बायें फुफ्फुस में दर्द। दमा रोग, तर मौसम में बढ़े।

दिल—अक्रमिक गति, पहले कमजोर, तेज चाल, फिर मजबूत कड़ी चोटें। दम घुटने के हमले, मूर्च्छा-रक्तहीनता, शोथ।

पीठ—गुर्दों के आर-पार तेज दर्द हरकत से और रात में बढ़े। चाकू जैसा दर्द पीठ के आर-पार (डॉ० मैकफरलेन)।

अंग—अंगों और घुटनों में मोच जैसा दर्द, जरा भी छूने से बढ़े। कड़ा दाब कम करे। अङ्गों के चारों तरफ डोरी कसी ऐसी मालूम पड़े। जोड़ सूजे हुए अति उत्तेजित, खुली हवा से भय। बहुत कमजोरी, कम्प, सुन्न होना। परिश्रम से घृणा, छूने से उत्तेजना। जोड़ों में थकावट, सुबह और बैठने से अधिक हो।

चर्म—छूने से अति उत्तेजित, लेकिन कड़े दाब से कम हो। ठंडापन, पसीना अधिक। एक हाथ बरफ जैसा ठंडा, दूसरा गरम। शरीर शोथ। (आर्सेनिकएल्बम, एबीस नाइग्रा)। चर्म प्रदाह, विसर्प रोग। ग्रन्थियों का कड़ा पड़ना; कण्ठमालिक नाक-स्राव और हड्डी का सड़ना।

नींद—औंघाई। नींद के बाद जी भारी रहे। बराबर नशे जैसा। बहुत सबेरे जाग जाये। देर तक नींद न आए। व्याकुल, भयानक स्वप्न, जागने पर ध्यान छिन्नता, स्वप्न का भय जा न सके और उद्विग्नता बनी रहे। बच्चों का खासकर; खुर्राटे लेना।

ज्वर—सविराम, हमले का समय मालूम रहे, हर हफ्ते लौटे। सभी अवस्थायें स्पष्ट विदित हों। सर्दी अकसर दोपहर के पहले, सीने से शुरू हो, जड़ैया के पहले प्यास, थोड़े पानी की, घड़ी-घड़ी। कमजोर करने वाला रात पसीना। जरा-से परिश्रम के बाद अधिक पसीना बहे, खासकर शरीर की दाहिनी तरफ से। फ्लू, पानी-सा स्राव, कनपटियों में दर्द।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : जरा भी छूने पर। हवा का झोंका, पारी देकर एक दिन के बाद दूसरे दिन, जीवन-रस के निकल जाने से; रात में, खाने के बाद, पीछे झुकने पर। **घटना :** आगे झुकने पर, दोहरा होने पर।

सम्बन्ध–क्रियानाशक : आर्निका, आर्सेनिक एल्बम, नक्स०, इपीकाक।

तुलना कीजिये : क्विनिडीन (दौरे के साथ दिल की तेज धड़कन, अलिंद कम्पन। दिल की गति मन्द पड़ना और अलिंद-निलय में रक्त प्रवाह बन्द होना। मात्रा ½ ग्रेन अरिष्ट पानी में)। सेफालेन्थस—बटन बुश—(सविराम ज्वर गले में खराश, वात रोग लक्षण, स्वप्न)। आर्सेनिक एल्बम, सीड्रन०, नैट्रम सल्फ०, साइडोनिया वल्गैरिस—क्विन्स—(कामेन्द्रिय और पेट को मजबूत करने वाला समझा जाता है।)

पूरक – फेरम०, कल्के०, फॉस०।

मात्रा—अरिष्ट से ३० शक्ति।

सिनेरेरिया (Cineraria)

(डस्टी मिलर)

मोतियबिन्द और आँख के शीशा (लेन्स) के धुँधलापन को अच्छा करने में प्रसिद्ध। बाहरी प्रयोग में आती है, आँख में एक बूँद दिन में ४ या ५ बार छोड़ना। यह क्रम कई महीनों तक जारी रहना चाहिए। आघात की अवस्थाओं में अति लाभदायक है। मोतियाबिन्द में तुलना कीजिए : फाँसफोरस, कैनाबिस सैटाइवा, कैटेनस ऑक्सिडेन टैलिस, कॉस्टिकम, नैफ्थेलीन, लीडम पाल, नैट्रम म्यूरियेटिकम, साइलीशिया।

सिनाबेरिस-मरक्युरियस सलफ्युरेटस रूबर

(Cinnabaris-Merc. Sulph. Rub.)

(मरक्यूरिक सल्फाइड)

कुछ प्रकार के नेत्रशूल और, उपदंश सम्बन्धी घाव के लिए यह दवा अति लाभदायक है। रात में नींद न आना।

सिर—सिर में रक्ताधिक्य; चेहरा बैंगनी-सा।

आँखें—अश्रु नलिका से आँखों की चारों तरफ कनपटी तक भीतरी किनारों से भौहों से होकर कान तक दर्द; घेरों की हड्डियों में तेज चमकन खासकर भीतरी किनारे से बाहरी किनारे तक हड्डी में। पूरी आँख लाल। पलक में रोहे, किनारे और पलक लाल।

नाक—दाब, संवेदना मानो भारी ऐनक धरी हो। जड़ के आसपास दर्द, दोनों तरफ हड्डी के अन्दर तक आये। (ऑरमेटालिकम, कैलिहाइड्रियाडिकम)।

गला—पिछले छिद्रों से रस्सी जैसा लम्बा श्लेष्मा गले में आवे। मुँह और गला का सूखापन, कुल्ली करनी पड़े। मुँह और गले में चटक लाल घाव।

पुरुष—लिंग का अगला चर्म सूजा हुआ, उस पर मस्से जिनमें से खून निकले, अण्डकोष बढ़े हुए, बाघी लाल, उपदंशीय घाव। उपदंशीय चर्म रोग; झिल्लीदार और जल भरे दाने।

स्त्री—प्रदर। योनि में बोझ जैसा।

अंग—केहुनी के नीचे की तरफ दर्द हाथ में भी। लम्बी हड्डियों में दर्द जब ताप कम हो, जोड़ों का ठंडापन।

चर्म—बहुत लाल घाव। पिंडली पर हड्डी के गुल्म। बाघी। मस्सों में से खून सरलता से बहे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दाहिनी तरफ लेटने से (मालूम पड़े कि शरीर के भीतर के सभी यन्त्र उसी तरफ खिंचे जा रहे हैं।)

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : हीपर सलफ्युरिस, कैल्केरियम, नाइट्रिकम एसिड, थुजा०, सीपिया।

क्रियानाशक—हीपर सल्फ्युरिस, कैल्केरियम, सल्फर।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

सिनामोनम (Cinamonum)

(सिनामोन)

कर्कट रोग जहाँ दर्द और दुर्गन्ध हो। अति उत्तम, जब चर्म सुरक्षित हो। इसका रक्त स्राव में प्रयोग अनेक बार सफल सिद्ध हुआ। नकसीर। आँतों से, मुँह से खून जाना। कमर पर जरा-सा जोर पड़ना या कदम गलत पड़ना अधिक गहरा लाल खून शुरू करता है। **प्रसव के बाद का रक्तस्राव।** वादी और दस्त। दुर्बल रोगी जिसका रक्त संचार मन्द हो।

स्त्री—गहरी कमजोरी का बोध। मासिक-धर्म समय से पहले, मात्रा में अधिक, दीर्घकालीन, गहरा लाल। निद्रालुता। किसी चीज की इच्छा न हो। अंगुलियाँ फूली मालूम पड़ें। गर्भाशय से रक्तस्राव अधिक बोझ उठाने से, प्रसूतिकावस्था में मासिक-स्रावाधिक्य।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : इपिकाकुआन्हा, साइलीशिया, ट्रिलियम पेण्डु।

क्रियानाशक—एकोन०।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति। कर्कट रोग के लिए गाढ़ा काढ़ा एक दिन में ८ छटाँक। **आँयल आँफ सिनामोन** पानी में उबाल कर उत्तम स्थानीय कीटाणुनाशक है। बाहरी प्रयोग—३-४ बूँद डेढ़ सेर पानी में मिलाकर धुला लेना जब कभी कीटाणुनाशक की आवश्यकता हो। हिचकी के लिए ३ बूँद पानी में।

सिस्टस कैनाडेन्सिस (Cistus can.)

(रॉक रोज)

यह गहराई तक पहुँच कर काम करने वाली खाजनाशक औषधि है जो ग्रन्थि विकार पर विसर्पिका रोग में और जीर्ण सूजन पर काम करती है जब रोगी ठंडक से अति कातर हो। कई भागों में ठण्डक की संवेदना। कण्ठमालिक नेत्र प्रदाह। विषयुक्त घाव, कटन, बढ़ते घाव। गरदन की ग्रंथियों के कठिन रोग। सिस्टस को नाक के नथुनों से आकर्षण है, पहिले भाग के जुकाम को दूर करता है। नाक से आवाज करना।

चेहरा—खुजली, जलन और दाहिनी तरफ के गाल की उभरी हड्डी पर खुरण्ड। चर्म की टीबी, हड्डी का नासूर, कैंसर का खुला घाव जिससे खून गिरता हो। नाक का सिरा दर्दीला।

मुँह—शीताद-ग्रस्त, मसूढ़ों का फूलना। मुँह ठण्डा लगे, सड़ा दूषित साँस। मसूढ़ों का सड़ना (मर्कुरियस कोरोसाइवस, कास्टिकम, स्टैफिसेग्रिया, क्रियोजोटम) जीभ बाहर निकालने में दुखे।

कान—पानी-सा स्राव, बदबूदार मवाद भी। कान पर और उसके चारों तरफ खुरण्ड, छेद के बाहरी भाग तक बढ़े।

गला—स्पंज ऐसा लगे, बहुत सूखा और ठण्डी हवा रोग-ग्रस्त स्थान पर लगाने से दर्द हो। साँस, जबान और गला ठण्डा लगे। गला और तालुमूल सूजे हुए। एक छोटी-सी सूखी जगह गले के भीतर, पानी की घड़ी-घड़ी घूँट भरना पड़े। श्लेष्मा खखारना। गले की ग्रन्थियों की सूजन और पीब। गरदन सूजन से सिर एक तरफ खिंचा रहे। जरा-सी ठण्डी हवा में साँस लेने से गले में खराश हो, गले में गरमी और खुजली।

आमाशय—खाने से पहले और पीछे आमाशय में ठंडापन। पूरे उदर में ठंडापन। पनीर खाने की इच्छा।

मल—कॉफी पीने या फल खाने के बाद दस्त, पतला पीला, तीव्र, सुबह को अधिक।

सीना—सीने में ठण्डापन। गरदन कड़ी गाँठों से भरी हो। स्तन का कड़ापन। फुफ्फुस से रक्त-प्रवाह।

अङ्ग—कलाई में दर्द, जैसे मोच आई हो। अंगुलियों के सिरे ठण्डी हवा सहन न करें, हाथों पर दाद, अकौता। ठण्डे पैर। निचले अंगों पर, कड़ी सूजन के घेरे के साथ उपदंशीय घाव। सफेद सूजन।

नींद—गले की ठण्डक के कारण सो न सके।

स्त्री—स्तन कड़े और सूजे हुए। ठंडी हवा असह्य। दुर्गन्धित प्रदर।

साँस-यन्त्र—दमा रोग, लेटने पर सुरसुरी के बाद (साँस नली का तंग होना मालूम हो)।

चर्म—शरीर भर में खुजली। छोटे, दर्द भरे दाने, चर्म का क्षय, **ग्रंथियाँ सूजी हुईं और कड़ी**। पारायुक्त उपदंश घाव। हाथों की खाल कड़ी, मोटी, सूखी, चिटकी, दरारेदार। सूजे हुए हाथों और बाँहों की खुजली, सारे शरीर में खुजली, नींद न आवे। अधकपारी।

घटना-बढ़ना–बढ़ना : जरा-सी ठण्डी हवा लगने से; मानसिक परिश्रम से, उत्तेजना से। घटना : खाने के बाद।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : रसटॉक्स, सीपिया।

तुलना कीजिए : कोनियम मैकुलेटम, कार्बो एनिमेलिस, कैल्केरिया कार्बोनिकम, आर्जेण्टम नाइट्रिकम।

मात्रा—१ से ३० शक्ति। बाहरी प्रयोग में दूषित स्राव को रोकने के लिए धोना चाहिए।

सिट्रस वल्गेरिस (Citrus Vulgrais)

(बिटर ऑरेंज)

मिचली, कै और चक्कर, सिर दर्द उसके साथ चेहरे का स्नायुशूल, खासकर दाहिनी तरफ का। सीने में दाब। घड़ी-घड़ी न रोके जाने वाली जम्हाई। अशान्त नींद।

सम्बन्ध–सिटरस डेसुमाना—ग्रेप फूट–(कानों में टनटनाहट, सिर में आवाजें, और कानों में टनटनाहट। कनपटी प्रदेश में दाब की संवेदना)। ऑरेण्टियम-आरेंज (स्नायुशूल और चर्म लक्षण। हाथों की खुजली, लाली और सूजन। वृद्ध के रोग, ठंडक और शीत के साथ। पकाई हुई सूखी नारंगी के छिलके आँतों को अन्य प्रकार के सेलूलोज या ऐगार की तरह उत्तेजित करते हैं। पित्त अधिक मात्रा में घण्टों तक निकलता रहता है। यह पित्त सारक है और वामक है)। तुलना कीजिये : सिटरस लिमोनम। (शीताद रोग, गले में खराश और कर्कट पीड़ा; अधिक मासिक-स्राव को रोकती है)। साइट्रिक एसिड (शीताद रोग, जीर्ण वात पीड़ा और रक्तस्राव में उपयोगी, सब तरह के शोथ में साइट्रिक एसिड और नीबू के रस से लाभ होता है, एक बड़ा चम्मच हर ३-४ घण्टे पर। जबान के कर्कट रोग का दर्द। बाहरी प्रयोग और कुल्ली करने के लिए लाभदायक, एक ड्राम को ८ औंस पानी में मिलाकर साधारणतः कर्कट दर्द के लिए अक्सर लाभदायक है।

क्लीमैटिस एरेक्टा (Clematis Erecta)

(वार्जिन्स बावर)

कण्ठमाला, गठियावात, सूजाक और आतशक के रोगियों के लिए हितकर है। खासकर चर्म, ग्रन्थि और जनन-मूत्रेन्द्रिय, खासकर अण्डकोष पर काम करती है। नींद की अशांति और भिन्न-भिन्न भागों के स्नायुशूल की औषधि। इसमें बहुत-से दर्द पसीना आने से कम होते हैं। पेशियाँ ढीली या फड़कें। बहुत दुबलापन। बहुत नींद आना। शरीर में दूर-दूर पर नाड़ी फड़के।

सिर—कनपटियों में छेदन दर्द। विचार छिन्नता, खुली हवा में कम। पिछले भाग के बालों की जड़ में दाने, तर, रसदार, उत्तेजित, खुजलीदार।

आँखें—आँखों में गरमी और हवा असह्य, बन्द करनी पड़े। पलकों का जीर्ण प्रदाह मीबोमियन ग्रन्थि के दर्द और सूजन के साथ। उपतारा प्रदाह, ठण्डक असह्य। आँखों के आगे काले धब्बे उड़ें। छाले वाला चक्षु प्रदाह, शीशे पर दाग, आँखें सूजी और उभरी हुईं।

चेहरा—चेहरे और नाक पर सफेद छाले; मानो धूप से जल गई हो। जबड़े की ग्रन्थि की सूजन, कड़ी, गाँठदार, टपकन, छूने से कष्ट बढ़े। चेहरे की दाहिनी तरफ दर्द। आँख, कान, कनपटी तक। मुँह में ठण्डा पानी रखने से कम।

दाँत—दर्द रात को और तम्बाकू से बढ़े। दाँत लम्बे जान पड़ें।

आमाशय—खाने के बाद सभी अङ्गों में थकावट और धमनियों में टपकन।

पुरुष—क्षुद्रान्त्र के निम्नांश से अण्डकोष तक स्नायुशूल। अण्डकोष कड़े और चोटीले। अण्डकोष की सूजन (अण्डप्रदाह)। केवल दाहिना आधा भाग। सुजाक दबने से रोग उत्पन्न होना। घोर लिंगोत्थान, मूत्र नली में कड़क के साथ। अंडकोष झूल जाये या ऊपर को सिकुड़े हों। साथ में शुक्र नाड़ियों में दर्द; दाहिनी तरफ अधिक।

मूत्रेन्द्रिय—पेशाब करने के कुछ देर बाद मूत्र मार्ग में छरछराहट। घड़ी-घड़ी, थोड़ा-थोड़ा पेशाब, लिंग के सिरे पर जलन। रुक-रुक कर पेशाब होना। मूत्र मार्ग सिकुड़ा जान पड़े। मूत्र बूँद-बूँद टपके। सारा पेशाब एक बार न निकाल सके, पेशाब करने के बाद बूँद-बूँद टपके। रात में दर्द बढ़े, वीर्यनाड़ियों में दर्द। मूत्र-मार्ग का सिकुड़ना शुरू हो।

चर्म—लाली, जलन, रसदार दाने, भूसीदार पपड़ी। अति खाज, ठण्डे पानी से धोने से, चेहरे और हाथों पर, सिर के पिछले भाग की खाल पर कष्ट अधिक।

ग्रन्थियाँ गरम, दर्द वाली, सूजी हुईं, जघा की ग्रन्थियाँ अधिक रोगग्रस्त। ग्रन्थियों का कड़ा पड़ना, स्तन में गाँठें। नसों में गाँठ पड़ना।

घटना-बढ़ना—घटना : खुली हवा में। बढ़ना—रात में, बिस्तर की गरमी से, (ठण्डे पानी से धोना, अमावस्या को प्रति मास रोग बढ़ना)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए—क्लिमेटिस विटैल्बा (नस गाँठ के बाद)। साइलीशिया, स्टैफिसेग्रिया, पेट्रोलियम, ओलिएण्डर, सार्सापैरिला, कैन्थेरिस, फाँसफोरिकम एसिड। पल्सेटिला।

क्रियानाशक : ब्रायोनिया, कैम्फर।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

कोबाल्टम (Cobaltum Metallicum)

(दी मेटल—कोबाल्ट)

मेरुदण्ड की स्नायु दुर्बलता की अवस्था में उपयोगी है। जननेन्द्रियों के रोग थकावट, उत्तेजना, अस्थि दर्द, सुबह को अधिक।

मन—सभी मानसिक उत्तेजना कष्ट बढ़ाती है। मानसिक भाव परिवर्तनशील।

सिर—दर्द, सिर आगे झुकने पर बढ़े। बालों की जड़ों में खोपड़ी और दाढ़ी पर खुजली।

दाँत—बहुत लम्बे जान पड़ें। दाँतों में दर्द। जबान के आर-पार दरारें। सफेद मैल (एण्टिमोनियम क्रूडम)।

उदर—जिगर में चुभन। तिल्ली में दर्द।

मलान्त्र—गुदा से बराबर खून टपका करे, मल के साथ खून न बहे।

पुरुष—दाहिने अण्ड में दर्द पेशाब करने से कम। बिना लिंगोत्तेजना के धातु-स्खलन। नपुंसकता। पिठासे में दर्द और पैर कमजोर। कामातुर। मूत्रनली के सिरे पर दर्द, हरियाला स्राव, कामेन्द्रिय और उदर पर कत्थई धब्बे।

पीठ—पीठ और त्रिकोण अस्थि में दर्द, बैठे रहने से बढ़े। कम हो। खड़ा होने या लेटने से। वीर्य-स्खलन के बाद टाँगों में कमजोरी और पीठ में दर्द।

अंग—कलाई के जोड़ों में टीस। जिगर से जाँघों में चुभन दर्द। घुटने कमजोर। अंगों में कम्प। पैरों में चुनचुनाहट। पैर में पसीना अधिकतर अंगुलियों के बीच में।

नींद—अप्रफुल्लित, कामातुर स्वप्न से अशांत।

चर्म—सूखा और दानेदार। चूतड़ प्रदेश में, ठुड्डी पर लाल दाने। खोपड़ी के भाग पर दाने निकलना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: कैनाबिस इण्डिका, सीपिया, जिकम मेटा०, ऐगनस कैस्टस, सीलेनियम।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

कोका-एरिथ्रोक्सिलोन-कोका (Coca-Erythroxylon Coca)

(दी डिवाइन प्लैट आफ दी इंकास-वट दी स्पेनिश प्रीस्टस डीनाउन्सड् इट ऐज "अन डिलूसियो डेल डेमोनिओ")

पहाड़ियों पर चढ़ने वालों की औषधि है। पहाड़ पर चढ़ने के समय अनेक रोगों के लिए उपयोगी; जैसे दिल धड़कना, कष्टदायक साँस, उत्सुकता और अनिद्रा। शारीरिक और मानसिक परिश्रम से स्नायुशक्ति क्षीणता। दाँतों का सड़ना। स्वर-लोप—आवाज का काम पड़ने के समय से २ घण्टे पहले ५-६ बूँद हर आधे घण्टे पर दीजिए। रात में अनजाने में पेशाब करना वायुस्फीति। (क्वेब्रैको)।

मन—उदास, शर्मीला, जब आराम से लेट कर बैठा हो या जब मित्रों के साथ हो तो कष्ट बढ़े। चिड़चिड़ापन, अकेले रहना पसन्द करे जहाँ कोई न जाने। अच्छे बुरे की पहचान न हो।

सिर—पहाड़ पर चढ़ने पर बेहोशी आना। पिछले भाग से झटके शुरू होना चक्कर के साथ। कानों में शोर सुनाई देना। पहले रोशनी की चमक की संवेदना उसके साथ चक्कर के साथ सिर दर्द। माथा के चारों तरफ फीता कसा ऐसा लगे। दोहरी चीजें दिखाई देना। जबान रोयेंदार। बहुत ऊँचाई पर जाने से आया सिर दर्द। कानों में टनटनाहट हो।

आमाशय—मुँह में काली मिर्च ऐसा संवेदन। मद्यपान और तम्बाकू की इच्छा, बहुत देर तक पेट भरा मालूम हो। वायु रुकना, आवाज और वेग के साथ उठना, मानो कंठनली को फोड़ देगी। पेट की वायु से तनाव, सिवाय मीठी चीज के और किसी चीज की भूख न रहे।

दिल—धड़कन, दिल की कमजोरी और साँस कष्ट के साथ।

पुरुष—मधुमेह नपुंसकता के साथ (फॉसफोरिक एसिड)

श्वास-यन्त्र—छोटे चमकीले श्लेष्मा के टुकड़े खखारना। स्वर-यंत्र की कमजोरी। गला बैठना, बात करने से बढ़ना। साँस फूलना, खासकर वृद्ध कसरती लोगों में और शराब पीने वालों में। मुँह में खून आना; आक्षेपिक दमा।

नींद—कहीं भी चैन न पड़े, पर नींद लगने जैसा रहे। दाँत निकलने के समय में स्नायविकता और रात में बेचैनी।

घटना-बढ़ना—घटना : शराब से, घोड़े की सवारी से, खुली हवा में, तेज चाल से। बढ़ना : ऊँची चढ़ाई से।

क्रियानाशक—जेलसिमियम।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

कोकेना (Cocaina)

(ऐन एलकेलॉयड फ्रॉम एरीथ्रौक्सिलोन कोका)

स्थानीय सुन्नता उत्पन्न करने के अतिरिक्त कोकेन के और भी होमियोपैथिक उपयोग हैं, गो कि इसके लक्षण केवल चिकित्सा द्वारा प्राप्त किये गये हैं।

ऐसी संवेदना कि छोटी विजातीय वस्तुएँ या कीड़े चर्म के नीचे हों।

मन—बकवादी। सदा कोई बड़ा काम करने की इच्छा, बड़ी ताकत के काम करने में हाथ बटाना चाहे। मस्तिष्क की तीव्र व्यस्तता। भयानक कष्टदायक दृष्टि भ्रम, खटमल और कीड़े, मकोड़े देखना और अनुभव करना। नैतिक विचार कुंठित। अपनी सूरत से लापरवाह। सोचता है कि लोग उसके लिए बुरी बातें करते हैं। सुनाई देने का भ्रम, विवेकहीन, डाह करे। अनिद्रा।

सिर—थरथराहट और फटन संवेदन। पुतली फैली हुई। सुनने की शक्ति अधिक होना। सिर में आवाजें और गरज।

आँख—धुन्ध रोग, अधिक तनाव, मन्द संवेदनीयता। आँखें स्थिर; भावशून्य।

गला—सूखा; जले, कलबलाहट, सिकुड़न, निगलने की पेशियों का लकवा। बोलना कष्टप्रद।

पेट—ठोस पदार्थ खाने की भूख न हो। मिठाई खाना चाहे। आँतों और पेट से रक्तस्राव।

स्नायुमण्डल—ताण्डव रोग, कम्प। मदपान करने वाले के झटके और वृद्ध का कम्प। स्थानीय ज्ञानवाही नाड़ी का लकवा। हाथों और अग्र बाहों में चुन-चुनाहट।

नींद—अशान्त, लेटने पर घण्टों तक नींद न आवे।

ज्वर—घोर पीलेपन के साथ ठण्डक।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : स्टोवेन (पीड़ानाशक है रक्त-वाहिनियों को फैलाता है) अक्सर चर्म या दाँतों में कोकेन की सूई लगा लेने के दुष्प्रभाव को नाश करती है। बूँद-बूँद की मात्रा नाइट्रोग्लीसरीन १ प्र० श० सोल्यूशन।

मात्रा—निचली शक्ति। बाहर लगाने के लिए श्लैष्मिक झिल्ली पर २–४ प्रतिशत।

कोक्सिनेला सेप्टेमपंकटाटा (Coccin. Sep.)

(लेडी बग)

इस दवा को दाँत, मसूढ़ों इत्यादि के स्नायुशूल में याद रखना चाहिए। अधिक लार की वजह से नींद टूट जाए। काग बहुत लम्बा जान पड़े। जलातंक रोग का लक्षण, किसी चमकीली चीज से रोग बढ़े।

सिर—माथे में दाहिनी आँख के ऊपर दर्द, जो छूने से बढ़े; चबाने वाले दाँत से माथे तक दर्द। कनपटी और सिर के पिछले भाग में टीस। चेहरे में खून दौड़ना। टपकन, दाँत दर्द, दाँत और मुँह में ठंडापन (सिस्टस०)। अगले भाग का सामयिक स्नायुशूल। हमले के समय आँखें न खोल सके। चमकीली वस्तु से दर्द बढ़े, सोने से कम हो।

आमाशय—हिचक और आमाशय में जलन।

पीठ—गुदा और कमर प्रदेश में दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैन्थेरिस०, मैगनेशिया, कार्बो०।

मात्रा—३ शक्ति।

कॉक्युलस (Cocculus)

(इण्डियन कोकल)

बहुत से आक्षेपिक और आंशिक लकवे के रोग कॉक्युलस के प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत हैं, खासकर वे जो शरीर के आधे भाग पर आक्रमण करें। प्रधान मस्तिष्क को प्रभावित करती है, रीढ़ से आने वाले आक्षेप के दौरों को अच्छा नहीं करती (ए० ई० हिन्सडेले)। अङ्गों को और जड़ की वेदनापूर्ण अकड़न, धनुस्तम्भ रात को पहरा देने के बहुत से बुरे प्रभावों को दूर करती है। यह हलके रङ्ग के बालों वाली स्त्रियों से विशेष आकर्षण रखती है। खासकर गर्भावस्था में, जब अधिक मिचली और पीठ में दर्द हो। अविवाहिता और सन्तानहीन औरतें कोमलग्राही और प्रेमलोलुप लड़कियाँ इत्यादि। इसके सभी लक्षण गाड़ी की सवारी से या जहाजी यात्रा से बढ़ते हैं, इसलिए समुद्र यात्रा रोग में उपयोगी है। अङ्गों में खोखलापन; या

खालीपन की अनुभूति; मानो वे सो गये हैं। इतना दुर्बल अपने को समझता है कि जोर से बात भी नहीं करता।

मन—कठोर मन्द और मूर्ख। समय बहुत ही जल्द बीतता मालूम पड़े। विचार मग्न। गाने की इच्छा रोकी न जाए। समझने में देर लगे। मस्तिष्क सुन्न। घोर उदासी। बात का खंडन सहन न करे। जल्दी-जल्दी बोले। दूसरों के स्वास्थ्य के प्रति अति उत्सुक।

सिर—चक्कर, मिचली, खासकर सवारी के समय और बैठने पर। सिर में खालीपन की संवेदना। सिर के पीछे और गरदन की जड़ में दर्द, सिर के पिछले भाग के बल लेटने पर बढ़े। गाड़ी की सवारी से आया सिर दर्द, सिर के पिछले भाग के बल न लेट सके। पुतली सिकुड़ी हुई। खुलने और बन्द होने का संवेदन खासकर पिछले भाग में। सिर में कम्प। आँखों में दर्द।

चेहरा—चेहरे के स्नायु का लकवा। निचले जबड़े की चबाने वाली पेशी में ऐंठन; दर्द मुँह खोलने से बढ़े। तीसरे पहर चेहरे में दर्द।

आमाशय—मोटर गाड़ी, किश्ती इत्यादि की सवारी में मिचली जो चलती हुई किश्ती को देखकर, ठण्डा लगने से या जुकाम होने से बढ़े। गशी और कै के साथ मिचली। खाने, पीने, तम्बाकू से घृणा। कसैला स्वाद। पेशियों के लकवा के कारण निगलना रुक जाये। गला सूखा। समुद्र यात्रा की बीमारी (रीसोर्सिन 1x)। खाने के समय और बाद में ऐंठन। हिचकी और दौरे के साथ जम्हाई। भूख गायब ठंडी चीज पीने की इच्छा, खासकर बियर। संवेदना पेट में मानो बहुत देर से खाना नहीं खाया है यहाँ तक कि भूख गायब हो जाये। खाने की गन्ध सहन न हो (कॉल्चिकम)।

उदर—हवा से तना हुआ, हिलने से ऐसा लगे कि उसमें नोंकदार पत्थर भरे हों, करवट लेटने से कम हो। उदर घेरे में दर्द, जैसे कोई चीज बाहर को ठेली जा रही हो। उदरपेशियाँ कमजोर, ऐसा मालूम हो कि हार्निया आन्त्र नीचे को उतर आवेगी।

स्त्री—कष्टदायक मासिक स्राव, अधिक काले रक्त के साथ। बहुत पतले, थक्केदार रक्त, दौरे के साथ शूल। गर्भाशय प्रदेश में दर्दीला दाब, बाद में बवासीर। घृणित फलकने वाला प्रदर, दो मासिक काल के बीच में बहुत कमजोर, बात भी कष्ट से करे। मासिक काल में बहुत कमजोरी, खड़ी न हो सके।

साँस-यन्त्र—सीने में खालीपन और ऐंठन। साँस कष्टदायक मानो साँसनली सिकुड़ गई है और धुएँ से भरी हो। साँसनली के ऊपर के भाग में घुटन जिससे साँस रुके और खाँसी आवे।

पीठ—सिर हिलाने से गरदन के मोहरे चुरचुरायें। पिठासे में लकवा दर्द। कन्धों और बाहों में कुचलन ऐसा दर्द। कन्धों के डैनों और गर्दन की जड़ में दाब। कन्धे हिलाने से कड़ापन मालूम दे।

अंग—लँगड़ापन, झुकने से बढ़े। अङ्गों में कम्प और दर्द। बाहें सो जायें। एक तरफ का लकवा, सोने के बाद बढ़े। हाथ बारी-बारी ठण्डे और गरम हों, सुन्न और ठण्डा पसीना। पहले एक में फिर दूसरे में। सुन्न और अस्थिर हरकत से घुटने चुरचुरायें। निचले अंग बहुत कमजोर। घुटनों की प्रदाहिक सूजन। घोर दर्दीला लकवा। खींचन। अंग सीधे हों, मोड़ने से दर्द करें।

नींद—दौरे के साथ जम्हाई। तन्द्रा। लगातार औंघाई। नींद न आने के बाद, रात को पहरा देने या रोगी की तीमारदारी करने के बाद।

ज्वर—शीत, वायुशूल, मिचली, चक्कर, निचले अंगों की ठण्डक और सिर में गरमी के साथ। सर्वांग पसीना। मन्द ज्वर का स्नायविक रूप। पसीना और चर्म की गरमी के साथ शीत।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : खाने से, नींद के अभाव से, खुली हवा, धूम्रपान, सवारी, तैरना, छूना, आवाज, झटका, तीसरे पहर। मासिक काल, भावात्मक कौतूहल के बाद।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कॉफी, नक्स०।

तुलना कीजिये : पिक्रोटॉक्सिन - ऐल्केलॉयड ऑफ कॉक्युलस—(लेटे रहने के बाद खड़ा होते ही सुबह के समय मिर्गी के दौरे, आँत उतरना, कम्प, रात पसीना) सिम्फोरिकारपस (गर्भावस्था की मिचली, कै), पेट्रोलि०, पल्से०, इग्नेसि०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

कॉक्कस कैक्टाइ (Coccus Cacti)

(कॉकिनियल)

इस औषधि के लक्षणों का चिकित्सा सम्बन्धी प्रयोग इसको दौरे वाले रोगों में और कुकुर खाँसी, मूत्राशय के नजले, गुर्दों के आक्षेपिक दर्द और आँतों की ऐंठन में उपयोगी बनाता है। मूत्ररोध, शोथ, जलोदर।

मन—बहुत सबेरे या तीसरे पहर शोकग्रस्त रहना।

सिर—पिछले भाग के निचले अंश में दुखन, जो सोने के बाद और परिश्रम से बढ़े। सिर दर्द, चित् लेटने से बढ़े, सिर ऊँचा करने से कम हो। सुबह दाहिनी आँख के ऊपर दर्द, पलक और ढेले के बीच में किसी बाहरी चीज का संवेदन। आँखों में कोयले, किरकिरी पड़ने से आया कष्ट।

श्वास-यन्त्र—बढ़े हुए काग से बराबर खखारना, जुकाम, गले के भीतरी भाग की सूजन के साथ। गाढ़ा, लसीला श्लेष्मा जमा होना जो बहुत कष्ट से निकले। स्वर-यन्त्र में गुदगुदी। स्वर-यन्त्र के पीछे रोटी के टुकड़े अटकने का संवेदन, बराबर निगलना पड़े। दाँत में ब्रश करने से खाँसी उठे। मुँह का भीतरी भाग बहुत कोमल। दम घुटने वाली खाँसी, टहलना शुरू करते ही बढ़े, चिमड़ा, सफेद श्लेष्मा के साथ जो साँस रोक दे। सुबह की आक्षेपिक खाँसी। जिसके आखिर में कड़े लेसदार बलगम की कै हो। जीर्ण वायुनली भुजप्रदाह जो पथरी रोग से मिला हो, अधिक मात्रा में अण्डे की सफेदी ऐसा चिमड़ा श्लेष्मा थूके। हवा के विपरीत टहलने से साँस रुके।

दिल—संवेदन मानो कोई चीज दिल की तरफ दब रही हो।

मूत्र—पेशाब लगना, ईंट की लाली ऐसा तलछट। मूत्र पथरी, खून का पेशाब, मूत्राम्ल, गुर्दों से मूत्राशय तक कोंचन दर्द। गहरे रंग का, गाढ़ा पेशाब, दर्दीला कष्टदायक पेशाब।

स्त्री—मासिक-धर्म बहुत पहले, अधिक, काला और गाढ़ा, काले थक्के, कष्ट के साथ। सविराम मासिक स्राव, केवल शाम को और रात में। पेशाब करते समय बड़े थक्के निकलें। भगोष्ठ सूजे हों।

घटना-बढ़ना – बढ़ना : बायीं तरफ, सोने के बाद छूने से, कपड़े की दाब से, दाँत में ब्रश करने से लघुतम परिश्रम से। घटना : टहलने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : कैन्थ०, कैक्ट०, सार्स०।

कॉचलियारिया आर्मोरेसिया (Cochlearia Armo.)
(हॉर्स-रैडिश)

इस पदार्थ से सिर की अगली हड्डी और छिद्र, अस्थिमय गह्वर और लार की ग्रन्थियाँ खासतौर पर प्रभावित होती हैं। फूलने का संवेदन। जीवनी (प्रतिरोध) शक्तियों को बढ़ाती है। मसूढ़े फूलने में और गलक्षत में कुल्ली करने के काम में आती है। फटी आवाज और मुख गह्वर का ढीलापन। सुजाक में आन्तरिक उपयोग। पेट की कमजोरी में चटनी के रूप में लाभदायक है। नीबू या सन्तरे के रस में इसकी जड़ का काढ़ा, शोथ रोग में लाभदायक है। जिससे पेशाब अधिक होता है। लगाने से बालों की भूसी छूटना ठीक होती है।

सिर—सोचना कठिन। आकुलता, दर्द से व्याकुल होना, दाब, छेदन दर्द मानो अगली हड्डियाँ टूट कर गिर जायेंगी। घोर सिर दर्द कै के साथ। सुनाई कम देना।

आँखें—वेदनापूर्ण कंठमाला सम्बन्धी विकार, आँखों में चोट लगने से आई सूजन, कम देखना और मोतियाबिन्द। जल-स्राव।

आमाशय—पीठ की तरफ दर्द; रीढ़ की मोहरों पर दाब पड़ने से बढ़ना। डकार और ऐंठन। दर्द के साथ शूल। घोर ऐंठन पेट से शुरू होकर दोनों बगल से होकर पीठ में जाये : नाभि के चारों तरफ ऐंठन।

पीठ—पीठ में दर्द जैसे उदर से होकर पीठ को पार करके पिछासे में हवा फँसी हो।

साँस-यन्त्र—सूखी, कड़ी खाँसी, स्वर-यन्त्र की खाँसी, इंफ्लुएञ्जा के बाद की खाँसी, सूखी या ढीली लेटने से बढ़े। सीना छूने से दर्द करे। आवाज भारी, दमा, सोथ। गला खुरखुरा और फटा मालूम हो।

मूत्रेन्द्रिय पेशाब करने के पहले, बीच में और बाद को लिंग मुण्ड में जलन और कटन। घड़ी-घड़ी पेशाव होना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम को और रात में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए। कैनाबिस इण्डिका, सिनैपिस०, कैप्सि०।

मात्रा—पहली से ३० शक्ति।

कोडीनम (Codeinum)

(ऐन एल्केलॉयड फ्रॉम ओपियम)

सारे शरीर में कम्प। बाँह और निचले अंगों की अनैच्छिक फड़कन। खुजली, गरम लगने के साथ, सुन्नपन और चुटकी काटना। मधुमेह।

सिर—पिछले भाग से गरदन के पीछे तक दर्द। स्नायुशूल के बाद चेहरे और सिर की खाल पर दर्द।

आँखें—पलकों का अनैच्छिक फड़कना (एगैरिकस०)।

आमाशय—आमाशय के गड्ढों में आक्षेपिक दर्द। डकार, कड़वी चीजें पीने की इच्छा के साथ अधिक प्यास।

साँस-यन्त्र—थोड़ी-थोड़ी और क्षोभजनक खाँसी रात में बढ़े। अधिक घृणित बलगम। तपेदिक की रात-खाँसी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : ओपियम, एगैरिकस, हायासियामस नाइगर, एमोनियम कार्बोनिकम, ब्रोमियम।

मात्रा—एक ग्रेन के चौथाई भाग की खुराक, ३ विचूर्ण तक।

कॉफिया क्रूडा (Coffea cruda)

(अनरोस्टेड कॉफी)

सभी अंगों की संचालन क्रिया को उत्तेजित करती है, स्नायविक और रक्त-परिवहन क्रिया को बढ़ाती है। बूढ़े लोगों के कॉफी पीने से यूरिक एसिड बढ़ता है और इससे गुर्दों में उत्तेजना होती है, पेशियाँ और जोड़ दर्द करने लगते हैं; चूँकि वृद्ध लोग कॉफी और चाय पीने से सरलता से उत्तेजित हो जाते हैं; इसलिए उन लोगों को इसका सेवन कम करना चाहिए या सावधानी से। अति स्नायविक उत्तेजना और बेचैनी। प्रचण्ड उत्तेजना इस दवा की विशेषता है। अनेक भागों में स्नायुशूल; हमेशा बहुत स्नायविक उत्तेजना और दर्द की असह्यता के साथ, निराश कर दे। शरीर और मन की असाधारण तीव्रता। अकस्मात् उत्तेजना, अचम्भा, हर्ष इत्यादि का दुष्प्रभाव। स्नायविक धड़कन। कॉफिया खासकर लम्बे, पतले, झुके हुए गहरे रङ्ग के, जिन्हें स्वभाव से ही हैजे जैसी तकलीफ आती है और जो शरीर से हृष्टपुष्ट हों। चर्म अति उत्तेजित।

मन—प्रसन्नता, समझने की शक्ति सरल, चिड़चिड़ापन, उत्तेजित, इन्द्रियाँ तीव्र : प्रभावित जल्दी होना, खासकर प्रसन्न करने वाले विषयों से। विचारों की अधिकता, तुरन्त काम करने पर तत्पर। बेचैनी से करवटें बदलना (एकोनाइट)।

सिर—कसा, दर्द, आवाज, गन्ध और सुलाने वाली मादक दवाओं से बढ़े। मालूम पड़े कि मस्तिष्क फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा, मानो सिर में कील ठोकी जा रही हो। खुली हवा में अधिक हो। आवाज सहन न हो।

चेहरा—सूखी गरमी, लाल गालों के साथ। चेहरे का लकवा जो धड़, कान, माथे और सिर की खाल तक बढ़े।

मुँह—दाँत दर्द, बर्फीला पानी मुँह में रखने से कुछ देर के लिए कम हो (मैंगनम इसके विरुद्ध है)। जल्दी से भोजन करना और पीना। कोमल स्वाद।

आमाशय—अधिक भूख। कसा कपड़ा सहन न हो। शराब पीने के बाद।

स्त्री—मासिक धर्म समय से बहुत पहले और देर तक जारी रहे। कष्टप्रद मासिक स्राव, बड़े, काले खून के थक्के। योनि और उसकी घुन्डी अति उत्तेजित। काम जगानेवाली खुजली।

नींद—जागते रहना, बराबर हिलते रहना। ३ बजे सुबह तक सोना, इसके बाद केवल झपकी लेना। चिहुँक कर जाग उठना, नींद स्वप्नों के कारण अशान्त। मानसिक तीव्रता के कारण नींद न आना, स्नायविक उत्तेजना के साथ विचारों की धारा का प्रवाह। गुदा खाज के कारण नींद अशान्त।

श्वास-यन्त्र—छोटी, सूखी, छोटी मात्रा वाली खाँसी स्नायविक बच्चों में।

दिल—तीव्र, क्रमहीन धड़कन खासकर अति प्रसन्नता या चकित होने की अवस्था में। तेज, कसी हुई नाड़ी और पेशाब दबना।

अंग—जाँघों का स्नायुशूल, हरकत से, तीसरे पहर और रात के समय बढ़े; दाब से कम हो।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : अति मानसिक आवेग (प्रसन्नता), दर्द दूर करने वाली दवाइयाँ, तेज गन्ध, आवाज, खुली हवा, ठंडक, रात में। घटना : सेंकना, लेटने से, मुँह में बरफ रखने से।

सम्बन्ध—बेमेल : कैम्फर, कॉक्कुलस। पूरक : एकोनाइट।

तुलना कीजिये : कॉफिया टास्टा (भूनने से कुछ विटामिन बढ़ जाते हैं) (पी० टी० मैटी) जिन कबूतरों को, पालिस किये चावल खिलाने से दूषित पोषण के कारण स्नायुप्रदाह और लकवा आया, उन्हें जब ५ प्रतिशत कॉफी का काढ़ा अन्य खाद्यों के साथ दिया गया तो इससे उनके सारे विकार, मिट गये। बिना भुनी हुई कॉफी बेकार थी। कैफान (एक रवादार एल्केलॉयड) दिल को शक्ति देने वाला और पेशाब बढ़ाने वाला काम करता है। दिल की कमजोरी से आया शोथ। दिल की पेशियों का कमजोर पड़ना, फुफ्फुस प्रदाह और दूसरी छूत की बीमारी, दिल की कमजोरी। रक्तचाप बढ़ाती है, नाड़ी की गति अधिक करती है, दिल की मांसपेशियों को उत्तेजित करती है, इसलिए अधिक कमजोरी और रुक जाने के भय से दिल को सहारा देती है। साँस केन्द्र को, स्नायुमण्डल को शक्ति देती है और पेशाब को बढ़ाती है। रक्तवाहिनी के तनाव को ठीक करने के लिए अति उत्तम है। तीव्र फुफ्फुस शोथ। बाहु का दर्द और दूसरे स्नायुशूल जो रात में बढ़ते हैं। जूसेट साहेब कैफीन और दुग्धशर्करा बराबर भाग में उपयोग करते हैं। ३ ग्रेन कई खूराक करके हर दूसरे दिन इन्जेक्शन के रूप में ½ ग्रेन। दाँत सड़ने से तीव्र स्नायुशूल चेहरे में। एकोनाइट०; कैमोमिला, नक्स०, साइप्रिपीडियम, कैफीन और वे पौधे जिनमें ये पाई जाती है, जैसे कोला, थिया इत्यादि।

बहुत-से विषों को विशेषकर दर्द हरने वाली दवाओं के विष को मारने के लिए काली, गाढ़ी कॉफी, अधिक गरम पीना अनिवार्य है। घोर पतनावस्था में मलाशय से गरम कॉफी चढ़ाना।

क्रियानाशक —नक्सवोमिका, टैबेकम।

मात्रा—३ से २०० शक्ति।

— —

कॉलचिकम (Colchicum)

(मीडो सैफ्रॉन)

विशेषकर मांसपेशी, तन्तु, हड्डियों की झिल्ली और जोड़ों के स्निग्ध रस की झिल्ली को प्रभावित करती है। सन्धित्वक् को अच्छा करने की विशेष शक्ति रखती है, यह उपर्युक्त भागों की जीर्ण रोगी अवस्था में अधिक लाभदायक भाग मालूम होती है। उपर्युक्त भाग लाल, गरम, सूजे होते हैं। फटन दर्द, शाम को रात में, छूने से बढ़ते हैं। पैर की अँगुलियाँ जमीन पर रखने से बहुत कष्ट हो। सदा अधिक शिथिलता रहती है। आन्तरिक ठण्डक, पतनावस्था की प्रवृत्ति। रात को पहरा देने और देर तक अध्ययन करने का दुष्प्रभाव। आधे शरीर में बिजली जैसे झटके। पसीना दबने का बुरा असर। चुहियों का स्वप्न देखना।

सिर—सिर दर्द खासकर अगले भाग का और कनपटी का मगर पिछले भाग और गरदन की जड़ तक भी, तीसरे पहर और शाम को बढ़ना।

आँखें—पुतली असमान नाप की, बाईं पुतली सिकुड़ी हुई। देखने की शक्ति में भी अन्तर हो। खुली हवा में अधिक पानी बहे। घोर फटन दर्द। बढ़ने के बाद धुँधलापन। आँखों के आगे धब्बे।

कान—कानों में खुजली, दाहिनी तरफ के कान के छेद के बाहरी भाग में हड्डी के उभार के नीचे तेज चमकन दर्द हो।

चेहरा—हिलाने से चेहरे की पेशियों में दर्द। चुनचुनाहट और शोथमय सूजन, गाल लाल, गरम, पसीजे। दर्द से बहुत चिड़चिड़ा (कैमोमिला)।

आमाशय—सूखा मुँह, जबान जले, मसूढ़े और दाँत दर्द करें। प्यास, आमाशय में दर्द और बादी। भोजन की गन्ध से मिचली, गशी की हालत तक पैदा हो, खासकर मछली के गन्ध से। अधिक लार बहे। श्लेष्मा, पित्त और भोजन की कै, हरकत से बढ़े, पेट में बहुत ठंडक। अनेक चीजें खाना चाहे, मगर गन्ध लेते ही घृणा हो और जी मिचलाये। गठिया, पाकाशय शूल। पेट या उदर में जलन या बर्फीली ठडक। झाग उठने वाली या मादक वस्तुयें पीने की इच्छा। आड़ी भोजन नली के दर्द।

उदर—उदर में तनाव वायु से, टाँगें न फैला सके। गड़गड़ाहट। जिगर में दर्द अन्धान्त्र पुच्छ और ऊपर उठने वाली नली बहुत तनी हो। भरापन और लगातार गड़गड़ाहट। जलोदर।

मल—दर्द के साथ हो, थोड़ा, चमकीला, लुआबदार, ऐसा दर्द मानो गुदा फट जायेगी, काँच निकलने के साथ। जाड़े के दिनों में पेचिश। मल में अधिक मात्रा में सफेद रेशेदार टुकड़े निकलें। असफल चेष्टा, गुदा में मल मालूम हो, मगर उसको निकाल न सके।

स्त्री—जननेन्द्रिय की खुजली। मासिक काल के बाद जाँघों में ठण्डक। योनि घुण्डी और लिंगिका में सूजन का संवेदन।

मूत्र—गहरे रंग का, कम या बिलकुल न उतरे, खून मिला, कत्थई, काला, स्याही की तरह, सड़े हुए खून के थक्के, एल्बूमेन, चीनी मिला हुआ।

दिल—दिल के क्षेत्र में आकुलता। धड़कन न जान पड़े। दिल की खोल की सूजन, घोर पीड़ा, दाब और साँस कष्ट के साथ, नाड़ी पतली, धीमी। दिल की आवाज कमजोर होती जाये, नाड़ी की चाप धीमी हो।

अङ्ग—बायीं बाँह के नीचे तक तेज दर्द। गरमी के दिनों में अङ्गों में फटन, ठण्डे मौसम में गड़न। हाथों और कलाई में आलपीन, सूई ऐसी गड़न, उँगलियाँ सुन्न। जाँघों में आगे दर्द। दाहिनी पैर के तलवे में संवेदन-हीनता। अंग लँगड़े, कमजोर, चुनचुनाये। शाम को और गरम मौसम में दर्द बढ़े। जोड़ कड़े और हरारत, जगह बदलने वाला वात दर्द, रात को अधिक हो। पैर के अँगूठे की सूजन, एड़ी में गठिया, उसको छूना या हिलाना सहन न हो। अँगुलियों के नाखूनों में में चुनचुनाहट। घुटने आपस में टकरायें, चलना कठिन, टाँगों और पैरों की शोथ-मय सूजन।

पीठ—कटि प्रदेश और पैरों की त्रिकास्थि में टीस। कमर के आरपार धीमा दर्द। पीठ दर्द, आराम और दाब से कम हो।

चर्म—चेहरे पर चकत्तेदार दाने। फटन। पीठ, सीना और पेट पर गुलाबी धब्बे। जुलपित्ती।

घटना-बढ़ना · बढ़ना : सूरज डूबने से उदय होने तक, हरकत, नींद के अभाव से, शाम को खाने की महँक से, मानसिक परिश्रम से। घटना : झुकने पर।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : थुजा०, कम्फा०; कॉकुलस०, नक्स०, पल्से०। तुलना कीजिये : कॉलचिसिन (आन्त्र प्रदाह, रेशेदार झिल्ली के साथ दाहिने हाथ का दौरे के साथ झटका, वात ज्वर, गठिया दिल के अन्दर और कपाट का प्रदाह; फुफ्फुसावरण प्रदाह, जोड़ों की सूजन, आकार भ्रष्ट, आरम्भिक अवस्था तीव्र वात पीड़ा, ३x विचूर्ण)। कार्बोवेजिटेबिलिस, आर्निका, लिलियम, आर्सेनिक, वेरेट्रम वि०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

कॉलिन्सोनिया कैनाडेन्सिस (Collinsonia Can.)

(स्टोन-रूट)

वस्ति-गह्वर और जिगर की शिराओं में रक्त-संचयता जिससे बवासीर और कब्ज हो, खासकर स्त्रियों में। धमनी चाप मन्द, मांशपेशी तन्तुओं का ढीलापन। जीर्ण

नाशक, आमाशय और गलकोष प्रदाह, जो जिगर की शिरा सम्बन्धी रुकावट की वजह से हो। दिल के रोग से आया शोथ। गर्भकाल में योनि खाज बवासीर के साथ। बच्चों का कब्ज मलान्त्र रोगी में शल्य क्रिया के पहले विशेष लाभकारी समझी जाती है। बोझ और सिकुड़न का संवेदन। शिरा रक्त संचय।

सिर—मन्द पीड़ा, जो बवासीर दबने से आयी हो। जीर्ण, पीली मैलवाली जबान। कड़वा स्वाद (कोलोसि०, ब्रायो०)।

मलाशय—गुदा में तेज खपच्चियों जैसा संवेदन। संकुचन, संवेदन। मलाशय का मुँह भरा मालूम हो। सूखा मल। बहुत कठोर कब्ज, बवासीर बाहर निकली हो। गुदा और तलपेट में टीस। गर्भ काल में कब्ज (नक्स) दर्द भरी खूनी बवासीर। कूँथन के साथ पेचिश। कब्ज और दस्त बारी-बारी से और अधिक अफरा। मलद्वार की खाज (टियुक्रियम; रैटानहिया)।

स्त्री—कष्टप्रद मासिक स्राव, घुण्डी खाज, गर्भाशय बाहर निकलना, जननेन्द्रिय की सूजन और गहरी लाली, बैठने पर दर्द। झिल्लीदार कष्टदायक मासिक स्राव, कब्ज के साथ योनि खाज। मासिक धर्म के बाद जाँघों में ठण्डक। योनि घुण्डी और होठों में फूलने का संवेदन।

श्वास-यन्त्र—अधिक बोलने से खाँसी उठना; "गला बैठा" स्वर-यन्त्र में तीव्र पीड़ा। आवाज भारी। कष्टदायक सूखी खाँसी।

दिल—धड़कन तेज मगर कमजोर। शोथ। जब दिल के लक्षण कम हों तब बवासीर या मासिक-स्राव उत्पन्न हो। सीना दर्द और बवासीर बारी-बारी से आए। दाब, गशी और साँस कष्ट। (एकोनाइट फेरॉक्स)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : जरा भी मानसिक उद्वेग या उत्तेजना से, ठण्डक से। घटना : गरमी से जो अँतड़ियों की निष्क्रियता से आई हो।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : नक्स।

तुलना कीजिये : एस्कुलस०, एलोज, हैमामेलिस, लाइकोपस, निगंडो, सल्फर, नक्स०।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति। ऊँची शक्ति अगर दिल की स्वाभाविक रचना सम्बन्धी रोग हो।

कोलोसिंथिस (Colocynthis)

(बिटर क्युकम्बर)

अक्सर मौसम बदलने के संक्रांति काल में काम आती है जब हवा ठंडी हो, मगर सूर्य की गरमी रक्त गरम करने के लिए पर्याप्त हो।

अपने बहुत-से लक्षण उदर और सिर में उत्पन्न करता है जिससे घोर स्नायुशूल हो जाता है। यह खासकर उन लोगों के लिए लाभदायक है जो चिड़चिड़े स्वभाव के हैं और सरलता से क्रोधित हो जाते हैं और उसका दुष्परिणाम। अधिक मासिक धर्म और घर में बैठी रहने वाली स्त्रियाँ। मोटापे की प्रवृत्ति। स्नायुशूल सदा दाब से कम होते हैं। पेशियों की ऐंठन, फड़कन और छोटा पड़ना। सिकुड़न और संकुचन। मूत्र छिद्र के मुँह पर शल्य क्रिया के बाद आए मूत्राशय के झटके (आक्षेप), (हाइपेरिकम)। पसीने की गन्ध पेशाब जैसी (बर्बेरिस० नाइट्रि० एसिड०)। उदर में इतनी पीड़ा कि रोगी झुककर दोहरा हो जाये, यह इसका विशिष्ट संकेत है। संवेदनायें: कटन, ऐंठन, पसीने, सिकुड़न, कुचलन। मानों लोहे के तारों से बँधा हुआ हो।

मन—अति चिड़चिड़ापन। प्रश्न करने पर क्रोधित हो। रुष्ट होने पर संताप करे। उत्तेजना के साथ क्रोध (कैमा०, ब्रायो०, नक्स०)।

मस्तिष्क—सिर को बायीं तरफ घुमाने से चक्कर आये। कटन, दर्द, मिचली के के साथ। दर्द। दाब से और गरमी से कम खोपड़ी की चमड़ी के दर्द के साथ। जलन के साथ दर्द, खोदने, फटने और फाड़ने की तरह का दर्द। अग्र भाग का दर्द जो झुकने, चित्त लेटने और हिलने से बढ़े।

आँखें—तेज, छेद होने की तरह का दर्द, दाब से कम हो। झुकने पर पलकें गिर जाने की संवेदना। आँखों का गठिया रोग। धुन्ध रोग बनने के पहले ढेलों में तीव्र दर्द।

चेहरा—चेहरे में चीरने-फाड़ने और गोली की तरह का दर्द और सूजन; बायीं तरफ अधिक पीड़ा। जिसे दाब से आराम मिले। (चाइना)। आवाज की प्रतिध्वनि सुनाई दे। स्नायुशूल। दाँत बहुत लम्बे जान पड़ें।

आमाशय—बहुत कड़वा स्वाद। जबान बालू ऐसी खुरदरी। जली-सी मालूम पड़े। बहुत ललचाकर खाये, पेट में ऐसा संवेदन जैसे वहाँ कोई चीज रखी है और वह वहाँ से नहीं हटेगी। दर्द खींचन जैसा।

उदर—उदर में घोर कष्टदायक कटन दर्द जिससे रोगी झुक के दोहरा हो जाये और पेट दबा ले। ऐसा संवेदन जैसे पेट में पत्थर पिसे जा रहे हों और वह फट जायगा। आँखें कुचली जान पड़ें। आन्त्रशूल, पिंडलियों में ऐंठन के साथ। उदर में कटन, खासकर क्रोध के बाद। दौरा घबराहट और गालों में ठंडक के साथ होता है जो तलपेट से उठता है। नाभि के नीचे छोटी-सी जगह में दर्द,। पेचिश: मल हर बार थोड़ा भी खाना खाने से या पीने से शुरू हो। लुआबदार मल। गन्दी महक। तनाव।

स्त्री---डिम्ब कोष में छेद होने की तरह दर्द। बहुत बेचैनी के साथ; घुटनों को मोड़कर दोहरा होना पड़े। डिम्बाशय या चौड़े बन्धनों में; गोल, छोटे, रसगुल्म। उदर को दबाकर सहारा देना चाहे। धँसन; ऐंठन रोगी को दोहरा होने को बाध्य करे। (ओपियम)।

मूत्र—मलत्याग के समय मूत्र मार्ग में जलन। ताजे अण्डे की सफेदी की तरह रस मूत्राशय से निकलता है। लेसदार (फॉस्फोरिक एसिड)। सड़ा थोड़ी मात्रा में, घड़ी-घड़ी लगना। लिंग के छेद में खुजली। लाल कड़े दाने, बरतन में चिपकें। मूत्राशय में ऐंठन, पेशाब करने पर पूरे उदर में दर्द।

अंग—पेशियों का सिकुड़ना। सभी अङ्ग परस्पर खिंच आयें। दाहिनी तरफ की कंध-त्रिकोणदार अस्थि में दर्द (गुयेको)। कटि में ऐंठन दर्द वाली करवट लेटने, कटि से घुटने तक दर्द। कटि जोड़ का एकाएक सरकना, जोड़ों का कड़ापन और नसों का छोटा हो जाना। बायीं तरफ खींचन, फटन, दाब और सेंकने से कम, हलकी हरकत से बढ़े। पेशियों का सिकुड़ना। दाहिनी जाँघ के नीचे तक दर्द। पेशियाँ और नसें बहुत छोटी लगें, दर्द के साथ सुन्न होना (नैफेलियन), बायें घुटने के जोड़ में दर्द।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : क्रोध और ग्लानि से। घटना। दोहरा होने से, कड़ी दाब, सेंकना, सिर आगे झुकाकर लेटने से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कॉफिया, स्टैफिसैग्रिया, कैमो०, कोलोसिंथ, क्रियानाशक : सीसे के विष का उत्तम तोड़ है। (रॉयेल)।

तुलना कीजिए : लोबेलिया एरिनस (उदर में घोर ऐंठन दर्द) डिपोडियम पंक्टेटम (छटपटाना, मरते साँप की तरह ऐंठन, कठोर अनिद्रा)। डायस्कोरिया, कैमोमिला, कॉकुल०, मर्क०, प्लम्ब०, मैग्नेशिया फास०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

कोमोक्लेडियम डेण्टाटा (Comocladia Dentata)

(गुवाओ)

आँखों और चर्म के लक्षण प्रमुख हैं। अस्थि गह्वर के रोग। त्रिकास्थि निचली छोटी आँतों और उदर का दर्द। थरथराहट के साथ जो गरमी से बढ़े। जाङ और टखनों में दर्द।

आँखें—स्नायुशूल और ऐसा प्रतीत होना जैसे आँखें बड़ी हो गई हैं और बाहर निकल आ रही हैं - खासकर दाईं आँख। गरम स्टोव के पास होने से बढ़े, मालूम पड़े कि बाहर को निकली आ रही हैं। रोशनी टिमटिमाहट; केवल बायीं आँख

से दिखाई पड़े। धुन्ध रोग, भरापन, ढेले बहुत बड़े मालूम पड़े। आँखें हिलाने से कष्ट बढ़े।

चेहरा—फूला हुआ और आँख बाहर उभरी हुई।

चर्म—खुजलाए; लाल और दानेदार। सब जगह लाली, अरुण ज्वर की तरह। विसर्प रोग, गहरे घाव, बड़े किनारे। कोढ़। चर्म पर लाल धारियाँ (इयुफोर्बियम)। एक्जीमा (छालेदार) धड़, हाथ पैरों का। छालेदार एक्जीमा।

सीना—बायीं स्तनग्रंथि में तीव्र पीड़ा। दाहिनी तरफ सीने से दर्द जो बाँह और अंगुलियों तक उतरे। जिसके साथ बायें स्तन के नीचे दर्द हो जो बायें कन्धे के जोड़ में से पार हो जाये।

घटना-बढ़ना—**घटना** : खुली हवा से खुजलाना, हरकत से। **बढ़ना** : छूना, सेंकना आराम, रात में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रस०, ऐनाकार्डियम, इयुफोर्बियम।

मात्रा—१ से ३० शक्ति।

कानडियुरैंगो (Condurango)

(कॉण्डर प्लैण्ट)

पाचन-क्रिया को शक्तिशाली बनाती है, इसलिए साधारण स्वास्थ्य को बढ़ाती है। उस आमाशय शूल को कम करती है जिसके साथ आमाशय का कैंसर भी हो। पाचन-ग्रन्थियों के स्राव को ठीक करती है। नसों की गाँठों के घाव। चर्म का टीबी।

इस औषधि का सांकेतिक लक्षण मुँह के किनारों की दर्दीली चिटकन आमाशय का पुराना नजला। उपदंश और कर्कट रोग। अर्बुद, गलनली की सिकुड़न। मूलतत्व (कोण्डुरैंगिन) उरुस्तंभ उत्पन्न करता है।

आमाशय—आमाशय की दर्दीली बीमारियाँ, घाव। खाना, कै करना, और कड़ापन, बराबर जलन-दर्द। गलनली का सिकुड़ जाना। इसके साथ सीना अस्थि के पीछे जलन दर्द के साथ, जहाँ खाना फँसा मालूम पड़े। खाना, कै करना और बायें कोख का कड़ापन, लगातार जलन पीड़ा के साथ।

चर्म—श्लैष्मिक छिद्रों के आस-पास दरारें पड़ना। होंठ और गुदा का कैंसर। कर्कट रोग की पकन अवस्था जब दरारें बनना शुरू हो गया हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : एस्टेरियस, कोनियम मैकु०, हाईड्रैस्टिस कैनाडेन्सिस; आर्सेनिक एल्बम।

मात्रा—अरिष्ट या छाल, भोजन के बाद पानी में पाँच ग्रेन। अर्बुद में ३० शक्ति।

कोनियम (Conium)

(पॉयजन हेमलॉक)

एक प्राचीन औषधि जो प्लैटो के उस अत्युत्तम वर्णन से विख्यात हो गयी है कि सुकरात की हत्या करने के लिए यह इस्तेमाल की गयी थी। यह विष ऐसा पक्षाघात पैदा करता है जो ऊपर की ओर चलता है। उसमें साँस घुटने से मौत हो जाती है। इसके परीक्षणों के समय कठिन चाल, कम्प चलते-चलते सहसा कमजोरी आना और अंगों में वेदनापूर्ण शक्ति आना आदि अनेक लक्षण पैदा हुए और इन सब उपद्रवों के लिए कोनियम शानदार दवा है। ऐसी अवस्था प्रायः वृद्ध लोगों में पाई जाती है। यही खास वातावरण है जहाँ कोनियम को अपना कार्यक्षेत्र मिलता है। दुर्बलता, व्याधिशंका (वहम), मूत्र रोग, स्मरण शक्ति क्षीणता, कामशक्ति दौर्बल्य सभी के अनुरूप है। जीवन संधिकाल की बाधायें, वृद्ध, अविवाहित स्त्री या पुरुष। अर्बुद का उत्पन्न होना। सारे शरीर के कुचलने जैसा संवेदन जैसा मार पड़ी हो। सुबह बिस्तर में बहुत कमजोरी। मानसिक और शारीरिक दुर्बलता; कम्प और धड़कन। कर्कट रोग की सम्भावना। धमनी का कड़ापन। सीने की हड्डियों के नासूर। ग्रन्थियों का बढ़ जाना। यह ग्रन्थि-मण्डल पर काम करती है। उनमें रक्ताधिक्य और कड़ापन उत्पन्न करती है, उनके आकार में कण्ठमालिक और कर्कटीय बाधाओं जैसे विकार पैदा कर देती है। इंफ्लु-एंजा के बाद शक्तिप्रद है। अनिद्रा जो कई स्थानों के स्नायुप्रदाह के कारण आई हो।

मन—उत्तेजना के कारण उदासी। उदास, डरपोक, समाज से घृणा और अकेले रहने से भय। व्यवसाय और अध्ययन में मन न लगे; किसी चीज से रुचि न हो। स्मरणशक्ति, दुर्बल मानसिक परिश्रम न सहन कर सके।

सिर—लेटने पर, बिस्तर पर करवट बदलने पर, सिर को बगल में घुमाने पर या आँखों के घुमाने पर चक्कर आए। जो सिर हिलाने से, जरा-सी आवाज से या दूसरों से बातचीत करने से बढ़े, खासकर बायीं तरफ। फिर दर्द, जो मूर्च्छित कर दे। मिचली और श्लेष्मा की कै के साथ और ऐसा लगे कि सिर के अन्दर खोपड़ी के नीचे कोई बाहरी चीज रखी है। चाँद पर झुलसा जैसा मालूम हो। कसापन मानो दोनों ओर दबाई गयी हो। खाने के बाद बढ़े (जेल्सेमियम, एट्रोपीन)। आधे सिर का दर्द जैसे कुचला जा रहा है। सुबह उठने पर पिछले भाग में धीमा दर्द।

आँखें—आलोकातङ्क और अधिक जलस्राव। कनीनिका पर रसदार दाने। धुँधलापन, कृत्रिम रोशनी से अधिक हो। आँखें बन्द करने से पसीना निकले। नेत्र पेशियों का लकवा (कास्टिकम)। ऊपरी झिल्ली के प्रदाह में, जैसे जलन के छाले या पुतली प्रदाह। छोटे से छोटा घाव या छिल जाना भी घोर आलोकातङ्क उत्पन्न करे।

कान—दोषयुक्त सुनाई पड़ना, खून के रङ्ग का स्राव।

नाक—सरल रक्तस्राव, छरछराये। अर्बुद।

पेट—जबान की जड़ में दुखन। घोर मिचली, कलेजा जले और तेजाबी पानी ऊपर आना, बिस्तर में जाने से कष्ट बढ़े। पेट का दर्दीला झटका। खाने से कम हो और खाना खाने के कुछ घण्टों बाद बढ़ना, तेजाबीपन, जलन वक्षास्थि की बराबरी में।

उदर—जिगर में और उसकी चारों तरफ पीड़ा; जीर्ण पांडुरोग और दाहिने कोख में दर्द। उत्तेजित, कुचलन, सूजन दर्द। दर्दीला कसाव।

मल—बार-बार वेग हो, मल कड़ा, कूँथन के साथ, प्रत्येक मलत्याग के बाद कम्प और दुर्बलता (बैराइटा कार्ब, आर्सेनिक, आर्जेण्टम नाइट्रिकम)। मलत्याग से खाल में, गुदा में गरमी और जलन हो।

मूत्र—स्खलन में बहुत कष्ट। बहे और फिर रुके (लेडम)। अक्रमिक स्राव (क्लेमैटिस)। वृद्ध में बूँद-बूँद टपके (कोपेवा)।

पुरुष—मैथुन की इच्छा बढ़ना, शक्ति की कमी। मैथुन के परिणामस्वरूप स्नायु उत्तेजना, दुर्बल लिंगोत्थान। काम इच्छा के दमन के दुष्प्रभाव। अण्ड बढ़े हुए और कड़े।

स्त्री—कष्टप्रद मासिक-धर्म, जांघों में खींचन दर्द के साथ। स्तन ढीले और सिकुड़े हुए, कड़े, छूने से पीड़ा। घुन्डी में चिलकन। हाथों में स्तन कस के दबाना चाहे। मासिक स्राव देर में और थोड़ा-सा, भग उत्तेजित। मासिक काल के पहले और दौरान में स्तन बढ़ जायँ और दर्द करें। (कैल्केरिया कार्ब, लैक कैनाइनम) मासिक काल के पहले शरीर पर दाने निकलें। योनि घुण्डी के चारों तरफ खुजली। गर्भाधान शीघ्र। गर्भाशय की गरदन और मुँह का कड़ापन। डिम्ब शोथ, बढ़े हुए, कड़े, दर्द। काम इच्छा के दमन या मासिक धर्म के दबने से या अधिक मैथुन से बाधा उत्पन्न होना। मूत्रत्याग के बाद प्रदर।

साँस-यन्त्र—सूखी खाँसी लगातार उठे; बार-बार थोड़ी-थोड़ी खाँसी हो। शाम को और रात में बढ़े। स्वरयन्त्र में एक सूखी जगह के कारण पैदा हो। सीने और गले में खुजली के साथ, लेटने पर बोलने या हँसने पर और गर्भावस्था में देर तक खांसने के बाद ही बलगम निकले। जरा-सा परिश्रम करने पर दम फूले। कष्टदायक सांस, सीने में सिकुड़न और दर्द।

पीठ—कन्धे के बीच के उभार में दर्द। रीढ़ की चोट और धक्कों बुरा असर। त्रिकास्थि का दर्द। पिठासे और त्रिक प्रदेश में धीमा दर्द।

हाथ-पैर—भारी, थके, कर्महीन, कम्प, हाथ अस्थिर, हाथ और पैर की अंगुलियाँ सुन्न, पैशिक दुर्बलता, खासकर नीचे के अङ्गों की हाथों से पसीना आए, कुर्सी पर पैर रखकर बैठने से दर्द हो।

चर्म—काँख की ग्रन्थि में दर्द। बाँह के नीचे तक सुन्न होना। कुचले जाने के बाद कड़ापन। चर्म पीला, रसदाने, अंगुलियों के नाखून पीले। ग्रन्थियाँ बड़ी और कड़ी। मध्यान्त्र त्वक ग्रन्थि भी। ग्रन्थियों में तेज दर्द, जो जगह बदले। अर्बुद, कोंचन दर्द, रात में अधिक। पुराने घाव, जिनसे बदबूदार स्राव हो। नींद लगते ही या आँखें बन्द करने से पसीना निकले। रात और सुबह को पसीना निकलना, दुर्गन्धित, चर्म में सुरसुराहट।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : लेटने पर, बिस्तर में करवट लेने से या उठने से अविवाहित अवस्था, मासिक-धर्म के पहले या दौरान में, जुकाम होने से पहले, शारीरिक या मानसिक परिश्रम से। घटना : व्रत रखने से, अँधेरे में अङ्ग लटकाने से, हरकत, दाब।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : स्किरिनम - कैंसर बीजविष (कर्कट दोष, बढ़ी हुई ग्रन्थियाँ, स्तन, कर्कट, केंचुए)। बैराइटा कार्ब, हाइड्रास्टिस आयोडम, कैली फास०, हायोसियामस, कुरारी।

मात्रा—ऊँची शक्तियों में अति उत्तम, देर-देर में देना खासकर किसी बढ़ने वाली दशा में अधिक पक्षाघात की अवस्थाओं में, इत्यादि। इसके अतिरिक्त ६ से ३० शक्ति।

कानवैलेरिया मेजेलिस (Convallaria Majalis)

(लिली ऑफ दी वैली)

हृदय-विकार की एक औषधि है। हृदय की क्रिया को बल देती है, उसकी गति को अधिक नियमित करती है। यह उस समय लाभकारी है जब क्षुद्र हृद् गह्वर अधिक तना और फैला हो, और जब हृदय के फैलने और सिकुड़ने का क्रम ठीक न हो और जब शिराओं में रक्त सचार शिथिल पड़ जाए। कष्टदायक-साँस, शोथ, स्नायुक्षीणता की संभावना। सर्वाङ्ग शोथ।

मन और सिर—बुद्धि मन्द। मामूली बात पर दुःखी हो जाए। धीमा सिर दर्द जो चढ़ने या खखारने से बढ़े। सिर की खाल उत्तेजित। चिड़चिड़ापन, मूर्च्छा वायु के लक्षण।।

चेहरा—नाक और होठों पर जल-गुल्म, कच्चापन और सुरसुराहट। नकसीर, लगभग १ इन्च का चौकोर भूरा काल्पनिक धब्बा देखना।

मुँह—सुबह को दाँत किटकिटाना। कसैला स्वाद। जीभ दर्दीली और झुलसी मालूम हो, भारी और मैल की मोटी तह।

गला—साँस भीतर खींचने से पिछले भाग में कच्चेपन की संवेदना।

उदर—स्पर्शकातर। कपड़ा बहुत कसा लगे। गहरी साँस लेने से गड़गड़ाहट और दर्द। बच्चे की मुट्ठी की तरह उदर में हरकत।

मूत्र-यन्त्र—मूत्राशय में टीस, तना मालूम पड़े। घड़ी-घड़ी पेशाब लगे, बदबूदार, थोड़ा पेशाब।

स्त्री—गर्भाशय क्षेत्र में अति पीड़ा और साथ में धड़कन। कटित्रिकास्थि जोड़ में दर्द, जो टाँग तक नीचे उतरे। मूत्र छिद्र और योनि मुँह में खाज।

साँस-यन्त्र—फेफड़ों में रक्त संचय हो। लेटने या बैठने में साँस-कष्ट। टहलने में साँस-कष्ट बढ़े। गले में गरम लगे।

दिल—मालूम पड़े कि सारे सीने भर में धड़कन हो रही है। दिल की झिल्लीदार खोल का प्रदाह, लेटने पर घोर साँस-कष्ट। ऐसा मालूम हो कि दिल की गति रुक गई है, फिर एकाएक शुरू हो जाये। जरा-सा परिश्रम करने से धड़कन हो। ताम्बूल के अपव्यवहार से आया हृद्विकार, खासकर सिगरेट पीने से। हृदय-शूल। नाड़ी अति तीव्र और अक्रमिक।

पीठ और हाथ-पैर—कटि प्रदेश में दर्द और टीस, टाँगों में टीस, पैर के अँगूठे में। हाथों का काँपना। कलाई और टखनों में टीस।

ज्वर—पीठ में रीढ़ के नीचे शीत, बाद में ज्वर आये, कम पसीना। शीत अवस्था में प्यास और सिर दर्द हो। ज्वर के समय साँस कष्ट।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : डिजिटैलिस; क्रैटेगस, लिलियम, एडोनिस (केवल यान्त्रिक दोष के कारण दिल की धीमी गति)।

घटना-बढ़ना—घटना : खुली हवा में। बढ़ना : गरम कमरे में।

मात्रा—३ शक्ति और दिल की रुकावट के लक्षण में अरिष्ट; १ से १५ बूँद तक।

कोपेवा (Copaiva)

(बैलसैम ऑफ कोपेवा)

श्लैष्मिक झिल्लियों पर इसका शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है, खासकर मूत्रमार्ग की श्लैष्मिक झिल्ली पर; साँस-यन्त्र पर, चर्म पर, जहाँ कि यह स्पष्ट रूप से जुलपित्ती का रूप ग्रहण करता है। जुकाम और नजला।

सिर—अति उत्तेजना, पिछले भाग में दर्द। माथे में धीमा दर्द; पीछे तक जाये और फिर वापस माथे तक आए; टपकन के साथ। दाहिनी तरफ और हरकत से अधिक हो। खोपड़ी की खाल कोमल। तीखा आवाज असह्य।

नाक—बन्द होने की संवेदना के साथ नथनों में कच्चापन और छरछराहट, पिछले भाग का सूखापन। नथनों से मात्रा अधिक, सादा, दूषित-स्राव जो रात के समय गले में गिरे। जलन और सूखापन, नासास्थि पर पपड़ी। साँस मार्ग के ऊपरी भाग का नजला।

आमाशय—खाना अधिक नमकीन लगे। पाकाशयिक विकार मासिक काल में या शीतपित्त रोग के बाद और आँतों में हवा, पाखाना मालूम हो और दर्द के साथ कष्ट से निकले।

मूत्र-यन्त्र—जलन, दाब, दर्द के साथ बूँद-बूँद टपके। पेशाब रुकना, इसके साथ मूत्राशय, गुदा और मलाशय भी दर्द करे। मूत्राशय का नजला, मूत्रकृच्छ्र लिंगमुण्ड की सूजन। लगातार पेशाब लगना। पेशाब में बनफशे के फूल की महँक। हरियाली, धुँधला रंग, विचित्र तीखी महँक।

मलाशय—श्लेष्मिक वृहद्दान्त्र प्रदाह। मल श्लेष्मा से लिपटा हो, शूल और शीत के साथ। गुदा में बवासीर के कारण जलन और खाज।

पुरुष—अण्ड स्पर्शकातर और सूजे हुए।

स्त्री—योनि घुण्डी और गुदा में खुजली, दूषित-स्राव के साथ। अधिक तेज गन्ध का मासिक स्राव, दर्द कटि अस्थि तक फैले, मिचली के साथ।

साँस-यन्त्र—खाँसी अधिक, भूरा, पीव जैसा बलगम के साथ। स्वर-यन्त्र, कण्ठ-नली और वायुनलिका समूह में गुदगुदी। वायुनलिका समूह पर, नजला, इसके साथ स्राव अधिक हरा, बदबूदार।

चर्म—जुलपित्ती उसके साथ ज्वर और कब्ज। अरुण चकत्ते। विसर्प, सूजन खासकर उदर की चारों तरफ। गोल, घेरेदार बीच में उभरे और किनारों पर पतले चकत्ते, खुजली के साथ, चितकबरे। बच्चों में जीर्ण जुलपित्ती। छालोंवाला विस्फोट।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : बेलाडोना, मर्क्युरियस सोल्यू०।

तुलना कीजिए : सैण्टैलम—(गुर्दों में टीस); केनाबिस०, केन्थेरिस, बैरोस्मा क्युबेबा, एपिस, वेस्पा, एरिजे०, सिनेसियो, सीपिया।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

—: ० :—

कोरैलियम (Corallium)

(रेड कोरल)

कोरल (मूँगे) के सिद्धिकरण में नाक का जुकाम, नकसीर और नथुनों में घाव तक हो गया है। कुकुर खाँसी और दौरे वाली खाँसियों में इसका याद रखना चाहिए खासकर जब खाँसी का आक्रमण बहुत तेज खाँसी से आरम्भ हो, और एक के बाद दूसरा आक्रमण इतना शीघ्र हो कि सब लगातार मालूम दें। अक्सर हमले से पहले साँस घुटता है और बाद में शिथिलता आती है। खाने के बाद चेहरा लाल हो। रोगी का चेहरा बैगनी हो जाए। प्रचण्ड आक्रमण यहाँ तक कि खून का बलगम आ आए। मालूम पड़े कि ठण्डी हवा की लहर भेजे और वायु-नलियों में से बह रही है। बिना ओढ़े अति ठण्डक और ओढ़ने पर अति गरम लगे। कृत्रिम गरमी से कष्ट कम हो।

सिर—बहुत बड़ा मालूम दे, घोर पीड़ा मानो भेजे की हड्डियाँ सब अलग-अलग हो रही हैं, झुकने से बढ़े। आँखें गरम और दर्दीली। गहराई तक अगले भाग का दर्द, आँखों के ढेलों के पीछे तीव्र पीड़ा। ठण्डी हवा में साँस लेने से सिर दर्द अधिक हो।

नाक—धुँआ, प्याज इत्यादि की गन्ध मालूम दे। नथनों में दर्द भरे घाव। पिछले भाग में नजला टपके। पिछले भाग से अधिक श्लैष्मिक स्राव, हवा ठंडी लगें। सूखा जुकाम, नाक बन्द और घाव वाली। नकसीर।

मुँह—खाना लकड़ी के बुरादे के स्वाद का लगे। रोटी सूखी घास के स्वाद की मालूम पड़े। बियर मीठी जान पड़े। बायीं तरफ के निचले जबड़े के हिलाने में दर्द। हो। नमक खाना चाहे।

श्वास-यंत्र—अधिक श्लेष्मा खखारना। गला अधिक स्पर्शकातर, खास कर हवा से। नाक का नजला अधिक। भीतर खींची हुई हवा ठण्डी लगे। (सिस्टस कैनाडेन्सिस) पिछले भाग से अधिक श्लेष्मा निकले। सूखी, आक्षेपिक, दम घोटनेवाली खाँसी, बहुत तेज खाँसी, बार-बार उठे, कुत्ता भौंकने जैसी आवाज निकले। हवा मार्गों की अति उत्तेजना के साथ खाँसी, साँस भीतर खींचने पर ठंडा लगे। हिस्टीरिया में लगातार खाँसी उठे। कुकुर-खाँसी के बाद दम घुटना और बहुत शिथिल पड़ना।

पुरुष—लिंग-मुण्ड और पर्दे के भीतरी भाग पर घाव। पीला रस। स्खलन और दुर्बल मैथुन शक्ति। जननेन्द्रिय पर अधिक पसीना।

चर्म—लाल, चपटे घाव। मूँगे के रङ्ग के, फिर गहरे लाल रङ्ग के धब्बे जो ताँबे के रङ्ग के हो जायें। हथेली और पैर के तलवे पर अपरस।

घटना-बढ़ना—खुली हवा में और गरम कमरे से ठंडे कमरे में जाने पर कष्ट बढ़े।

सम्बन्ध—पूरक : सल्फर।

तुलना कीजिए : बेलाडोना, ड्रोसेरा, मेफाइटिस, कॉस्टिकम।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

कोरलोरहिज़ा (Corallorhiza)

(काली रूट)

यक्ष्मा ज्वर, ६ बजे सुबह से १० बजे सुबह के बीच में और आधी रात तक रहे। अति स्नायविक और अशांत हथेलियों और तलवों में जलन, बिना प्यास, सर्दी लगे या पसीना आए। केवल हल्के-से-हल्का ओढ़ना सहन करे।

कोर्नस सरसिनाटा (Cornus Circinata)

(राउण्ड लीवड डॉगऊड)

जीर्ण मलेरिया; जिगर प्रदाह, कामला रोग। बहुत कमजोरी। आमाशय में दर्द, और उदर फूला हुआ। रस भरे उद्भेद जो जिगर की किसी पुरानी बीमारी से सम्बन्धित हों या मुँह में छाले बनें।

मुँह—जबान मसूढ़ों और मुँह में घाव, सफेद दाने। मुँह में, गले और आमाशय में जलन।

मल—ढीला, हवा के साथ आये; गहरा मल, खाने के तुरन्त बाद हो। मलद्वार में जलन गहरा, पित्त वाला, बदबूदार दस्त, और मटियाला चेहरा।

चर्म—शिशुओं के चेहरे का छालेदार एक्जिमा जबकि उनका मुँह भी आया हुआ हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कॉर्नस आलटरनिफोलिया—स्वाम्प वालनट—(दुर्बल और थका, अशान्त निद्रा, ज्वर, बेचैनी, अकौता, चर्म चिटका, सीने में ठंड लगे, जैसे उसमें बरफ भरी हो !) कॉरनस फ्लोरिडा (जीर्ण मलेरिया, अनपच और कष्टदायक गला जलना, शरीर रस स्खलन के कारण दुर्बलता और रात पसीना, बाँह, सीना और धड़ में स्नायु पीड़ा और दो टुकड़े में टूटा हुआ मालूम दे, तन्द्रा के साथ सविराम ज्वर, अपने को ठंडक लगे मगर शरीर छूने में गरम लगे, बीच-बीच में अति शिथिलता, शरीर भर में लसीला पसीना। शीत से पहले तन्द्रा; गरमी का संबंध तन्द्रा से हो। कुनैन के बाद सिर दर्द।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

कोरिडैलिस (Corydalis)

(टरकी-पी)

उपदंशज उपद्रव। मुँह और गले में घाव। स्पष्ट धातुविकारी कर्कट रोग। गुम्मड़ और रात पीड़ा। जीर्ण रोग, दौर्बल्य। जबान साफ, चौड़ी और भरी, तन्तु ढीले, मुलायम ठण्डे। आमाशय प्रदाह (हाइड्रैस्टिस)।

चर्म—वृद्ध लोगों के चेहरे पर सूखे, पपड़ीदार चकत्ते। लसिका ग्रन्थि सूजी हुई।

सम्बन्ध—नाइट्रिक एसिड, कैली आयोडेटम, फ्लोरिक एसिड।

मात्रा—अरिष्ट २० बूँद, दिन में ३ बार।

कॉटिलेडन (Cotyledon)

(पेनिवार्ट)

दिल पर स्पष्ट प्रभाव, सीने में दबाव, गले में भरापन। मिर्गी। पेशियों और रेशेदार तन्तुओं में मन्द पीड़ा। गृध्रसी। सीने से होकर स्कंधास्थि तक स्पष्ट पीड़ा। स्वर-यन्त्र और गलनली का नजला। जोड़ शिथिल।

मन—चित्त खिन्न गड़बड़ी। जागने के कुछ देर बाद बोल न सके। चाँद पर दाब, दर्द। आवेग दमन से रोग होना। मालूम पड़े कि शरीर का कोई अंग अनुपस्थित है।

स्तन—बायीं स्तन-घुण्डी के नीचे दर्द और दाहिने स्तन में टीस। बायें स्तन क्षेत्र से होकर स्कंधास्थि में दर्द आये। स्कंधास्थि के कोणों में दर्द। भारी, फटन ऐसी संवेदना जैसे दिल में रुकावट हो रही हो। गला घुटे। साँस कष्टदायक।

अंग—पीठ और जाँघों में टीस। चर्म उत्तेजित, पैजामे की रगड़ से तीव्र चुभन हो। टाँगें और बाहें भारी और वेदनापूर्ण जान पड़ें।

तुलना कीजिए : एम्ब्राग्रिसिया, एसाफिटिडा, हेपाटिका, इग्नेशिया, लैकेसिस।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

क्रेटेगस (Crataegus)

(हॉथर्न बेरीज)

यह दवा चक्कर पैदा करती है, नाड़ी मंद करती है; वायु की चाह बढ़ाती और रक्तचाप को कम करती है। दिल की पेशियों पर काम करती है और दिल को शक्ति देती है। दिल के भीतर की झिल्ली पर कोई प्रभाव नहीं रखती।

हृद्पेशी का प्रदाह। हृदय अपनी मरम्मत न कर सके। अक्रमिक, असंतुलन। हृदय का क्रम भ्रष्ट होना। मुख्य धमनी रोगियों की अनिद्रा। रक्तहीनता, सर्वाङ्ग शोथ चर्म पर ठण्डा लगे। अत्यन्त स्नायविक और चिड़चिड़ा इसके साथ सिर के पश्चात् भाग और गर्दन में दर्द भी हो। बुद्धि कुण्ठित, दिल के पर्दे में क्षोभ और नाक बहे। बदमिजाज रोगियों के लिए शामक है जिन्हें हृद्रोग भी हो।

पुराना हृद्रोग जिसके साथ घोर दुर्बलता हो; घोर दौर्बल्य; बहुत धीमी और क्रम-भ्रष्ट हृदय गति। सर्वाङ्ग शोथ। अति उत्तेजित सिर के पीछे और गरदन में दर्द के साथ मोती-झरा ज्वर में पतनावस्था। आँतों से रक्त-प्रवाह; हाथ-पैर ठण्डे, रक्तहीन नाड़ी और साँस अक्रमिक। सीने की बायीं तरफ इसकी हड्डी के नीचे दाब की दर्दीली संवेदना। दिल के गतिहीन होने के साथ अनपच और स्नायु शिथिलता। वातपीड़ा के बाद हृदय विकार के शुरू में। धमनी का कड़ापन, धमनी में जमे हुए चूने को घुला देती है।

सिर—सशंक; निराश।

मूत्र—मधुमेह खासकर बच्चों में।

दिल—हृदय शोथ रोगजनित हृदय का अपकर्ष, अर्थात् तेल बन जाना। मुख्य धमनी रोग। जरा-से परिश्रम पर घोर साँस-कष्ट, बिना नाड़ी गति तीव्रता के हृदय क्षेत्र में बायीं हँसली के नीचे दर्द। हृदय पेशियाँ ढीली और खाँसी। दिल का फैलना, पहला धड़कन कमजोर। नाड़ी तेज, क्रमहीन, मन्द; सविरामिक। ढकनों में चुरचुराहट, हृदयशूल। ऊपरी शीत, हाथों और पैरों की अँगुलियाँ नीली। परिश्रम और उत्तेजना से सभी कष्टों में वृद्धि। संक्रामक रोगों में हृदय को सहायता देती है।

चर्म—अधिक पसीना। चर्म स्फोट।

नींद—धामनिक विकारियों की अनिद्रा।

घटना बढ़ना—बढ़ना : गरम कमरे में। **घटना :** ताजी हवा, शान्ति, आराम।

सम्बन्ध—स्ट्रोफेंथस, डिजिटेलिस, आईबेरिस, नाजा, कैक्टस।

मात्रा—तरल घन सार या अरिष्ट, १ से १५ बूँद। अच्छे लाभ के लिए कुछ दिनों तक व्यवहार करना चाहिए।

क्रोकस सैटाइवा (Crocus Sativa)

(सैफ्रन)

प्रायः काले और तारदार रक्त प्रवाहों में लाभदायक है। कई स्थानों में चुन-चुनाहट। पेशियों में खिंचाव रोग और गुल्म वायु व्याधि। अक्सर संवेदनाओं और मानसिक दशाओं में घोर परिवर्तन। क्रोध के बाद हिंसा की भावना, बाद में

पश्चाताप। हँसने का पागलपन। निद्रालुता और सुस्ती, शारीरिक परीश्रम से कम रहे।

मन—डाँवाडोल सुखकर उन्माद, गाता है और हँसता है। प्रसन्नता की जगह खिन्नता आ जाती है, प्रसन्न; स्नेह युक्त, फिर क्रुद्ध। एकाएक हँसी आए। सुने हुए गानों की अच्छी स्मरण शक्ति (लाइकोपोडियम)।

सिर—टपकन; वयःसन्धि-काल में, मासिक काल में बढ़ना।

आँखें—बिजली की चिनगारियाँ दिखाई देना। आँखों को पोंछना आवश्यक मानो उनमें पानी या श्लेष्मा भरा हो। आँखों में अधिक रोने के बाद की संवेदना। ऐसा मालूम हो कि वह अधिक शक्ति के चश्मों में से देखती रही हैं। धुन्ध; कोहरा, पुतलियाँ फैली हुईं और उनकी प्रतिक्रिया मन्द। पलक भारी। पलकों का स्नायुशूल, आँखों से चाँद तक दर्द। मालूम हो कि ठण्डी हवा आँखों में से दौड़ रही है। फ्लोरिक एसिड, सिफिलिनम। कष्टप्रद दृष्टि और चमक लगना। धुन्ध दृष्टि का भय, शीशे की धमनी में तन्तुमय उपादानों के कारण रुकावट।

नाक—नकसीर। काला तारदार खून। काले खून की डोरी नाक से लटकती रहे।

उदर—जिगर की रुकावट के कारण कठोर कब्ज। बच्चों का कब्ज। गुदा में रेंगन और कड़कन। उदर, आमाशय इत्यादि में कोई जीवित वस्तु के चलने की संवेदना, खासकर बायीं तरफ (कैलेण्डुला)। उदर फूला हुआ भारी।

स्त्री—गर्भपात का भय, खासकर जब रक्तस्राव काला और तारदार हो। जननेन्द्रिय में रक्त संचयता। मासिक रक्त काला, चिमड़ा, बहुधा और अधिक; काला और तारदार। गर्भाशय से रक्तस्राव थक्केदार लम्बी रस्सी की तरह; जरा भी हिलने से अधिक हो। बायें स्तन में झटके के साथ दर्द मानो डोरी बाँधकर पीछे की तरफ खींची जा रही हो (क्रोटोन, टिग्लियम)। उछलना ऐसा मानो दाहिने स्तन में कोई जीवित वस्तु हो।

साँस-यन्त्र—साँय-साँय खाँसी, झागदार बलगम जिसमें महीन तागे ऐसी वस्तुयें मिली हों, लेटने पर बढ़े। साँस दुर्गन्धित। हिस्टीरिया के रोगियों का कौवा बढ़ा मालूम पड़े।

पीठ—एकाएक पीठ में ठण्डा लगे मानो ठण्डा पानी पीछे से फेंक दिया गया हो। हाथ-पाँव बरफ की तरह ठण्डे।

अंग—किसी एक पेशी समूह का एकाएक आक्षेप, पेशियों में खिंचाव आए और हिस्टीरिया और भाव परिवर्त्तन। ऊपरी सभी अंग सो जायँ। कटि संधि। घुटनों में कड़कड़ाहट। टाँगों और घुटनों में कमजोरी। टखनों और तलवे में दर्द।

घटना-बढ़वा—बढ़ना : लेटने पर, गरम मौसम में, गरम कमरे में, सुबह को उपवास करने से, जलपान से पहले, घूर कर किसी चीज को देखने के बाद। घटना : खुली हवा में।

सम्बन्ध—क्रियानाशक, ओपियम, वेलाडोना।

तुलना : इपिकाक, ट्रिलिया, प्लैटिना, चायना, सैबाइना।

मात्रा—अरिष्ट से ३० शक्ति।

क्रोटैलस हॉरिडस (Crotalus Horridus)

(रैटल स्नेक)

ऐसा माना जाता है कि सभी सर्प-विष रासायनिक दृष्टिकोण से सोडा और कुछ दूसरे लवण से सियानाइड हाइड्रेट होते हैं। ये सभी लवण प्राकृतिक रूप से एल्कोहल में घुल जाते हैं; इसलिए यह पदार्थ इन सभी का क्रियानाशक है। अत्यधिक पोषण शक्ति रखता है बुढ़ापे की पोषण बाधायें।

मन्द दूषित अवस्थायें। साधारण, रक्त ध्वंसीकरण, रक्त-प्रवाह और पीला रोग। क्रोटैलिन का रक्त जमने का इन्जेक्शन रक्त के जमने की गति को कम करता है। मिर्गी रोग में औसत क्रम, सामान्य अवस्था से कहीं अधिक होता है। रक्त की दूषित अवस्था, रक्त प्रवाह (काला तरल पदार्थ जो नहीं जमता) कारबंकल कठिन अरुण ज्वर, पीला ज्वर, प्लेग, हैजा सभी इस औषधि के उपयोग का मौका देते हैं। रक्त प्रवाह की प्रवृत्ति में शामक है। लक्षणों के साथ ही सो जाता है। अधिकतर दाहिने भाग में लक्षण आते हैं।

मन—रुदन भाव, प्रत्यक्ष ज्ञान और स्मरण शक्ति का धुँधलापन, उतावलापन। बकवादी, बचने की इच्छा के साथ। उदासीन। मस्तिष्कक्षीणता का भ्रम।

सिर—चक्कर आना उसके साथ दुर्बलता और कम्प। पिछले भाग में धीमा दर्द, विशेषतः दाहिनी आँख में। सिर दर्द बायीं तरफ लेटने पर दिल की पीड़ा के साथ। सिर दर्द, झटका लगने के भय से अँगुलियों के बल चलें।

आँखें—रोशनी असह्य, खासकर लैम्प की रोशनी। आँखें पीली। दृष्टि भ्रम, नीला रंग। पलकों का स्नायुशूल। फटने, छेद होने की तरह दर्द, मानो आँखों की चारों तरफ काट दिया गया हो। आँखों के भीतर के रक्तप्रवाह को सुखाने के लिए, जल भाग में; लेकिन खासकर अप्रदाहिक चक्षुपट रक्तप्रवाह के लिए। दोहरी वस्तु देखना।

कान—कान की खराबी से सिर में चक्कर आए। खून पसीजना। दाहिने कान का बन्द होना मालूम पड़े।

नाक—नकसीर, खून काला और रस्सी जैसा लम्बा। चर्म पुष्पिका या उपदंश के बाद पीनस रोग।

चेहरा—मुँहासे। होंठ सूजे हुए और सुन्न। सीसे के रंग जैसा और पीला चेहरा। दाँत पड़ना।

मुँह—जबान छोटी और लाल, मगर अपने को सूजी लगे। जबान अंगारे जैसी लाल, बीच में सूखी, चिकनी और चमकीली। साँस दुर्गन्धित। मुँह लार से भर जाये। जबान बाहर निकालने पर दाहिनी तरफ झुके। रात में दाँत पीसना। जबान का कर्कट, रक्त प्रवाह के साथ।

गला—सूखा, गहरा लाल। अन्ननली में ऐंठन, कोई ठोस चीज न निगल सके। घुटन। सड़न, बहुत सूजन के साथ।

आमाशय—कपड़ा सहन न हो। कोई चीज आमाशय में न रह सके, घोर कै भोजन की, पित्त की कै, खून मिली कै। मासिक धर्म के बाद हर समय मिचली और हर समय कै। बिना हरी वस्तु का कै किये दाहिनी तरफ न लेट सके। काली या पीसी हुई कॉफी के रंग की कै। आमाशय का कर्कट, खून या चिकने श्लेष्मा की कै के साथ। कौड़ी के नीचे कम्पन, थरथराहट की संवेदना। कौड़ी पर कपड़ा सहन न हो। आमाशय में दुर्बलता, गशी की संवेदना, आमाशय में घाव। दुर्बलताजनित अजीर्ण पुराने मदपान के कारण आमाशय का पुराना प्रदाह। भूखा, उत्तेजक वस्तुओं और चीनी की इच्छा, मांस से घृणा।

उदर—तना गरम और कोमल। जिगर में दर्द।

मल—काला, पतला; घृणित; पिसी काँसी की तरह। और रक्त स्राव, खून काला, पतला, न जमने वाला। खड़े होने या टहलने पर मलान्त्र से खून रसे।

स्त्री—दीर्घकालीन मासिक-धर्म। कष्टप्रद मासिक स्राव, दर्द जाँघों के नीचे तक बढ़े, दिल प्रदेश में टीस के साथ। गर्भाशय से रक्त स्राव; आमाशय में कमजोरी के साथ। प्रसव ज्वर, दूषित स्राव। प्रसव के बाद जंघाशिरा का प्रदाह। मालूम पड़े कि गर्भाशय बाहर होकर गिर जायगा। गर्भाशय बन्धन और नसों में दर्दीली खींच। पैर स्थिर न रखे।

मूत्र—गहरा खूनी मूत्र। कास्ट खारिज हों। गुर्दे सूजे हुए। एल्बुमिन युक्त, गहरे रङ्ग का, थोड़ा (मर्कुरियस कोरोसाइवस)।

दिल—गति धीमी, नाड़ी काँपती हुई चले। धड़कन; खासकर मासिक काल में। दिल में थरथराहट।

श्वास-यन्त्र—खूनी बलगम के साथ खाँसी। स्वर-यन्त्र में एक सूखा स्थान में गुदगुदी।

अंग—हाथ काँपें, सूजे हुए। निचले अंग आसानी से सुन्न हो जायें। दाहिनी तरफ का लकवा।

ज्वर—रक्तस्राविक सड़न या प्रवृत्ति वाला सांघातिक ज्वर। मन्द पित्त स्वल्प विराम ज्वर। पीला ज्वर। रक्तमयी पसीना। मस्तिष्क-मेरुमज्जा प्रदाह ज्वर (साइक्यूटा, क्युप्रम० एसिटैनिलिडियम)।

चर्म—सूजन और बदरंग होना, चर्म तना और अनेक प्रकार के रंग वाला, तीव्र पीड़ा के साथ छालेदार मटियाला। सारे शरीर का पीला पड़ना। आधे दाहिनी भाग में शरीर के चर्म की अति सहिष्णुता। त्वचा पर बैंगनी दाग पड़ना। शरीर के सभी भाग से रक्तस्राव। खून, पसीना, बेवाई फटना, अंगुलबेड़ा। शवच्छेद घाव। रस दाने। जन्तु डसन। माता का टीका लगवाने के बाद निकले दाने। माता का टीका लगवाने का बुरा असर। लसिकावाहिनियों का प्रदाह और फोड़े। जहरबाद, और स्फोटक चारों तरफ बैंगनी रंग का, चकत्तेदार और शोथमय। विषव्रण। दर्द जो दाब से कम हो।

नींद—मुर्दों के स्वप्न। नींद में चिहुँकना। जम्हाई लेना। जागते समय गला घुटने की संवेदना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दाहिनी बरफ, खुली हवा, शाम और सुबह; बसन्त ऋतु में, गरमी के मौसम के आते ही, हर साल, जागने पर, तर और भींगा, झटका।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : बोथ्रोप्स नाजा (अधिक स्नायविकता) लैकेसिस (बायीं तरफ लक्षण अधिक) इलैप्स (कान प्रदाह और दाहिने फुफ्फुस के रोग में उत्तम है) कोटैलस कैसेबेला (मृत्यु का विचार और स्वप्न। स्वर यन्त्र का लकवा, अर्ध चेतना और कष्टप्रद साँस। एक चुम्बक की अवस्था उत्पन्न हो जाती है, आँखों के चारों तरफ कटन संवेदना)। (बंगेरस क्रेट—मेरुमज्जा प्रदाह)।

क्रियानाशक—लैकेसिस, एल्कोहल, प्रतिबिम्बित गरमी, कपूर।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

क्रोटन टिग्लियम (Croton Tiglium)

(क्रोटन ऑयल सीड)

दस्त, गरमी के मौसम की शिकायतें और चर्म रोगों की मूल्यवान औषधि। उपद्रव बारी-बारी हो सकते हैं। शरीर भर में कसापन। यह रसविष मारने की दवाओं में से एक है जैसा इसके विस्तृत और प्रबल चर्म तथा श्लैष्मिक झिल्ली सम्बन्धी प्रभाव से विदित होता है, जहाँ यह उत्तेजना और प्रदाह उत्पन्न करती है

और साथ में रसदानें और श्लैष्मिक स्राव भी रहता है। चेहरे के चर्म और बाहरी जननेन्द्रिय पर विशेष प्रभाव रखती है। गलनली में जलन।

सिर—माथे के दाब के साथ दर्द खासकर आँखों के घेरे में।

आँखें—पलकों में रोहे; पलक पर दानें। लाली और कच्चापन, पीछे की तरफ खींची मालूम पड़ें। चारों ओर दाने। दाहिनी आँख के घेरे के ऊपर तनाव-पीड़ा।

मल—अधिक पानी-सा मल, तेज इच्छा के साथ; मल सदा जोर से निकले और आँतों में गड़गड़ाहट, जरा भी पीने से अधिक हो या खाते समय मल त्यागने की लगातार इच्छा; तेजी से निकलना। आँतों में छुलकन।

मूत्र—रात को पेशाब झागदार, गहरा नारंगी रङ्ग का; रखने पर गँदला हो, सतह पर चिकने टुकड़े तैरते हों, दिन का पेशाब पीला हो और सफेद तलछट।

सीना—बायें सीने से पीठ तक खींच के साथ दर्द। (दमा, खाँसी के साथ, सीना फैला न सके। दूध पिलाने वाली स्त्रियों को बच्चे के दूध चूसने पर घुण्डी के पीछे की तरफ दर्द हो। स्तन सूजे हुए। तकिया पर सिर रखते ही खाँसी आये। उठना पड़े। गहरी साँस न ले पाए।

चर्म—कच्ची खाल से कसा मालूम पड़े घोर खुजली मगर खुजलाने से दर्द हो। दानेदार फरन, खासकर चेहरे और जननेन्द्रिय पर भयानक खुजली और बाद में जलन के साथ। रसदाने, मिले जुले रस स्राव। दानेदार विसर्पिका, बहुत खाज। मोटा दाद, चुभन, फरन में गड़न दर्द।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : जरा-सा खाने या पीने से, गरमी के मौसम में, छूने से, रात और सुबह को, धोने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : मोमोर्डिका कैरेन्शिया—हेयरी मोरडिका स्पष्ट तीव्र गुण है, शूल, मिचली, कै, हैजे के लक्षण, उदर तरल पदार्थ से भरा मालूम पड़े जो तेजी से निकले, पतला, पानी-सा पीला। अधिक प्यास। रसटॉक्स, एनैगैलिस, एनैकार्डियम, सीपिया।

क्रियानाशक : एन्टिम टार्ट०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

क्युबेबा (Cubeba)

(क्युबेब्स)

साधारण तौर पर श्लैष्मिक झिल्लियाँ, मगर खास तौर पर मूत्र मार्ग की झिल्लियाँ इस दवा से प्रभावित होती हैं। स्नायविक कारण से घड़ी-घड़ी पेशाब करना। छोटी लड़कियों का प्रदर।

मूत्र—मूत्रमार्ग प्रदाह, श्लैष्मिक स्राव, खासकर औरतों में। पेशाब करने के बाद कटन, रुकावट के साथ। खून का पेशाब, मूत्र ग्रन्थि प्रदाह, गाढ़ा पीला स्राव। मूत्राशय प्रदाह।

श्वास-यन्त्र—नाक और गले का नजला, दूषित गंध और स्राव के साथ। नाक के भीतरी भाग से गले में श्लेष्मा टपके। गले का कच्चापन और आवाज भर्राई हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : क्युकरबिटा, कोपेवा पाइपर, मेथाइस्टिकम सैंडल।

मात्रा—२ और ३ शक्ति।

कुकुरविटा पेपो (Cucurbita pepo)

(पम्पकिन सीड)

खाने के बाद तुरन्त प्रचंड मिचली। गर्भावस्था की कै। समुद्री बीमारी और केंचुआ निकालने की अति उत्तम और बहुत कम हानि वाली औषधि है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : फिलिक्स, क्युप्रम आक्स० निग०।

मात्रा—अरिष्ट : बीज, केंचुआ की मूल्यवान औषधि है। बीजों को भून लीजिये और बाहरी छिलका मुलायम होने पर छील डालिए तब भीतर का हरा गूदा उपयोग कीजिए। बीज की एक छटांक मात्रा जिसमें से आधी छटांक गूदी निकले। मलाई में मिलाकर खीर की तरह खाई जा सकती है। १२ घण्टे उपवास करने के बाद सुबह को खाइये और दो घण्टे बाद रेंड़ी का तेल पीजिए।

कुकुरबिटा सिट्रूलस (Cucurbita Citrulles)

(सीड्स ऑफ वाटर मैलन)

दर्द के साथ मूत्रस्खलन के लिए काढ़ा बनाकर जब रुकावट-सी मालूम पड़े और पीठ में दर्द हो।

क्युफिया (Cuphea)

(फ्लक्स वीड)

अनपचे खाने की कै। शिशु हैजा, अधिक तेजाबी हालत, अकसर, हरा, पानी-सा, तेजाबी मल। कूँथन और अधिक दर्द। तेज ज्वर, बेचैनी और अनिद्रा। कठोर कब्ज।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : इथूजा कोटो-पारा-कोटो बार्क—(आंत्रिक जुकाम, जीर्ण, अधिक, कमजोरी वाला दस्त और पेचिश। क्षय रोग और जीर्ण दस्त में शिथिलता लाने वाला पसीना)। टाइफा लैटिफोलिया-कैट-टेल फ्लैग (दस्त, पेचिश, शिशु हैजा। अरिष्ट और १ शक्ति)।

मात्रा—अरिष्ट ।

क्युप्रम एसेटिकम (Cuprum Aceticum)

(एसिटेट ऑफ कॉपर)

कफवात ज्वर, साथ में जलन और खाल उधड़ना, आक्षेपिक खाँसी, चिमड़ा श्लेष्मा, दम घुटने का भय। प्रसव वेदना जो देर तक चले। जीर्ण खुजली और कोढ़।

सिर—माथे में तेज टपकन और कोंचन दर्द। बायीं तरफ की भौं में पीड़ा। मस्तिष्क खाली जान पड़े। मुँह बाने और रोने की प्रवृत्ति। अचेत हो जाता है, ऊँची छत के कमरे में सिर घूमे। जबान बराबर बाहर-भीतर किया करे। (लैकेसिस)। स्नायुशूल, सिर में भारीपन के साथ, जलन, कड़क, कोंचन, कनपटी और माथे में।

चेहरा—अचेत मुर्दे जैसा चेहरा। गाल की हड्डी में, ऊपरी जबड़े में और दाहिने कान में स्नायुशूल। चबाने से, दाब से और सेंकने से कम।

आमाशय—आमाशय और उदर में घोर आक्षेपिक दर्द। चिकना, कत्थई दस्त। घोर कूँथन। हैजा।

श्वाँस-यन्त्र—उत्तेजित होने पर हृदयशूल के हमले। तीव्र आक्षेपिक खाँसी। छोटा, कठिन साँस। सीने की आक्षेपिक सिकुड़न। कष्टदायक साँस।

चर्म—कोढ़ ऐसे स्फोट, बिना खाज, शरीर भर पर, कई नाप के चकत्ते में।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : मासिक आवेग, छूना। घटना : चबाना, दाब, रात में रोगी के करवट लेटने पर, सेंकना।

सम्बन्ध—क्युप्रम मेटालिकम की तरह काम करती है लेकिन उससे अधिक तेज है।

मात्रा—३ से ६ विचूर्ण।

क्युप्रम आर्सेनिटम (Cuprum Arsenitum)

(आर्सेनाइट ऑफ कापर-शिल्स ग्रीन)

गुर्दों की कार्यमन्दता के कारण आए लक्षणों की औषधि, कई प्रकार के आंत्ररोग, शिशु और घातक हैजा, आन्त्र मलाशय शोथ, दस्त, पेचिश। इन्फ्लुएंजा और

थान्त्रिक ज्वर आमाशयिक-आंत्रिक विकार। मूत्र सम्बन्धी अकड़न मस्तिष्क शोथ के कारण सिर पीड़ा, चक्कर, अचेतना। गर्भावस्था में गुर्दा-प्रदाह। अकड़न, फिट के पहले आमाशय-आंत्रिक लक्षण। लड़कियों का हरा पाण्डु। वायुनलिका समूह का दमा और साथ में वायु कोषों का फैल जाना। पीबयुक्त हृद् अन्तर्वेष्ट-झिल्ली प्रदाह (रायल)। पीड़ाजनक वायु-संधि रोग, आन्त्रच्युति। प्रलाप और दिल धड़कन।

मुँह—जबान पर मोटा मैल, गन्दा, कत्थई, सफेद, कसैला स्वाद, प्यास। सूखा मुँह।

दिल—मलों के दूषित निस्सरण के कारण हृदय की चाल का बदल जाना।

उदर—आमाशय आन्त्र प्रदाह। घोर उदर पीड़ा। क्षय रोग में दस्त। हैजा (आर्सेनिक०, बैराइटा कैम्फ०) गड़गड़ाहट और तेज कटन दर्द। गहरे रङ्ग का तरल मल।

पीठ—कठोर लंगड़ापन। कटि प्रदेश में और बायें कन्धे के डैने के निचले भाग में दर्द, सीना कसा मालूम पड़े।

मूत्र—गुर्दों की क्रिया मन्द और मूत्रक्षार विकार। लहसुन की गन्ध। मधुमेह। गुरुत्वभार बढ़ा हुआ, मात्रा अधिक, एसीटोन और डायसेटिक तेजाब मिला हुआ।

पुरुष—अन्डकोष पर पसीना, बराबर नम और तर रहे। अण्डकोष पर फुड़िया। मूत्रमार्ग से सफेद मवादी स्राव, मूत्रमार्ग में कड़कन और जलन, मूत्र ग्रंथियों में दर्द, लिंग में दर्द।

हाथ-पाँव-पिण्डलियों में ऐंठन, आधी रात के बाद अधिक हो, केवल बिस्तर छोड़कर खड़े होने से कम हो। घाव; सड़न।

चर्म—बर्फीली ठंडक। पसीना, जब कि चर्म सूखा रहे। सविराम प्रवृत्ति का। ठंडक लसीला पसीना। चेहरे और पुट्ठों में मुँहासे और दाने, घाव। उपदंश के घाव ऐसे मालूम दें। सड़न घाव जहरबाद।

मात्रा—३ विचूर्ण।

क्युप्रम मेटेलिकम (Cuprum Metallicum)

(कॉपर)

आक्षेप, ऐंठन। अकड़न, हाथ और पैर की अंगुलियों से शुरू हो। तीव्र, सिकुड़न वाला और सविरामिक दर्द, कुछ विशेष प्रकार के क्युप्रम के लक्षण हैं, इसलिए इसके चिकित्सा क्षेत्र में बलवत् संकोचन और क्षणिक अकड़न और ढीलापन, आक्षेप

और मिर्गी के दौरे सभी आते हैं। भय के कारण पुट्ठों में खिंचाव आना। सभी औषधियों से अधिक मिचली। मिर्गी में सांकेतिक लक्षण। घुटनों से शुरू होता है और कौड़ी तक चढ़ता है। फिर अचेतन झाग बहना और गिर जाना। लक्षण सामयिक प्रवृत्ति रखते हैं, और कई लक्षण साथ-साथ रहते हैं। रोग बायीं तरफ से शुरू हो (लैकेसिस) केंचुआ। (कोलायडल क्युप्रम ३ x)।

जहाँ चर्म पर दाने उत्पन्न होते हैं जैसे अरुण ज्वर में ऐसे लक्षण पैदा हो सकते हैं जैसे अधिक कै, गशी, अकड़न जो इस औषधि के कार्यक्षेत्र में आते हैं। दर्द हरकत और स्पर्श से बढ़ते हैं।

सिर—स्थिर विचार, दुष्ट, कुढ़े। ऐसे शब्द बोलता है जो वह बोलना नहीं चाहता। भयभीत, सिर जैसे खाली है। सिर पर बैंगनी, लाल सूजन अकड़न के साथ। मस्तिष्क में और आँखों को घुमाने पर कुचले जाने जैसा दर्द। मस्तिष्क के पर्दों का प्रदाह। मालूम पड़े सिर पर पानी उड़ेला जा रहा हो। बहुत से रोगों के साथ-साथ चक्कर भी रहता है, सिर आगे सीने पर गिर जाता है।

आँखें—आँखों के ऊपर टीस, स्थिर, चमकीली; धँसी हुई, जगमगाती, ऊपर को उठी हुई। ऐंचा। आँखें बन्द रहने के साथ। तेजी से आँख घुमाना।

चेहरा—विकृत, पीला-नीला-सा होंठ नीले। जबड़ों का सिकुड़ना, मुँह झाग के साथ।

नाक—नाक में घोर संचयता का संवेदन (मेलिलोटस)।

मुँह—अधिक कसैला, चिकना स्वाद, लार बहने के साथ। जबान का साँप की तरह, बराबर बाहर-भीतर होना (लैकेसिस)। जबान का लकवा। हकलाना।

आमाशय—झटके के साथ हिचकी। मिचली। कै, बरफ का पानी पीने से कम हो, शूल, दस्त, झटके के साथ। तीखा। कसैला स्वाद (रसटक्स)। पीने से तरल पदार्थ गड़गड़ाहट की आवाज के साथ नीचे उतरता है। ठण्डी चीज पीना चाहे।

उदर—तना हुआ; गरम छूने से कोमल। सिकुड़ा हुआ। उदर का स्नायुशूल। शूल प्रचण्ड और सविरामिक। आँत का परस्पर उलझ जाना।

मल—काला, दर्द के साथ, खून मिला, ऐंठन और कमजोरी के साथ। हैजा, उदर में और पिण्डली में ऐंठन के साथ।

स्त्री—मासिक धर्म बहुत देर से हो, देर तक जारी रहे। ऐंठन सीने तक बढ़े, मासिक धर्म के पहले, पीछे या दबने से। पैर का पसीना दबने से भी (साइलीशिया) खून में उबाल आना; धड़कन। लड़कियों का हरा पाण्डु। प्रसवांतक पीड़ा।

दिल—हृदय शूल। मन्द नाड़ी या कड़ी, भारी और तेज। धड़कन, उत्सुकता और दर्द। चर्बीलापन (फाइटोलैक्का)।

श्वास-यन्त्र—खाँसी में गड़गड़ाहट की आवाज होती है, ठण्डा पसीने से कम हो। दम घुटने के हमले, ३ बजे सुबह अधिक हो (एमोनियम कार्बो०)। सीने में झटके और सिकुड़न, आक्षेपिक दमा और आक्षेपिक कै बारी-बारी से। कुकुर खाँसी, पानी पीने से कम हो, कै और झटके के साथ और बैगनी चेहरा। टेंटुआ में आक्षेप। साँस-कष्ट, कौड़ी में अशान्ति। मासिक-धर्म के पहले आक्षेपिक साँस-कष्ट। हृदयशूल, दमा लक्षण और ऐंठन के साथ। (क्लार्क)

अङ्ग—पेशियों में झटके। हाथों में ठण्डक। हथेलियों में ऐंठन। अंगों में बहुत कमजोरी। पिण्डलियों और तलवों में ऐंठन। मिर्गी, सुरसुरी घुटनों से शुरू हो। अँगूठे मुड़े हुए। क्षणिक खिंचाव हाथ और पैर की अँगुलियों में शुरू हो।

चर्म—नीला, संगमर्मर ऐसा दर्द। घाव, खाज, धब्बे और दाने जोड़ों की तह में। जीर्ण खुजली और कोढ़ (ह्यूज)।

नींद—गहरी, शरीर में झटके के साथ सोते में। उदर में लगातार गड़गड़ाहट।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : मासिक-धर्म के पहले, कै करने से, स्पर्श से।

घटना : पसीना के समय, ठण्डा पानी पीने से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : बेलाडोना, हीपर, कैम्फोरा। ताम्बा, डल्कामारा, स्टैफिसैग्रिया, कोनियम आदि कुछ अन्य वनस्पतियों में भी पाया जाता है। किंग-क्रैब में भी (लिम्युलस)।

पूरक—कैल्केरिया।

तुलना कीजिए—क्युप्रम, सल्फ्युरिकम, (चाँद पर जलन, लगातार आक्षेपिक खाँसी, रात में अधिक, जबान और होंठ नीले, स्थानीय प्रयोग के लिए क्युप्रमस-ल्फ्यु०, १–३ प्र० श० घोल, बिना चीरने योग्य मांसार्बुद में)। कोलस टेरेपिना (झिल्लियों में और पैरों में ऐंठन, वात पीड़ा, ऐंठन के साथ)। प्लम्बम मेटा०, नक्स०, वेरेट्रम०, क्युप्रम ऑक्सिडेटम निग्रम, १ x (सभी प्रकार के केंचुए, फीता केंचुआ और अन्य कृमियों में, जोफी साहब के ६० साल के अनुभव के अनुसार।)

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

क्यूरारे-उरारी (Curare-Woorari)

(ऐरो पॉयजन)

बिना संवेदनीयता या चेतनता नष्ट किये हुए पेशियों का लकवा। साँस यन्त्र की पेशियों का लकवा। परावर्तित क्रिया की मन्दता। बुढ़ापे की कमजोरी (बैराइटा०)। और रस क्षीणता के कारण। शरीर अकड़ना। स्नायविक दौर्बल्य। हनुस्तम्भ। चालक

पेशियों के बाद मधुमेह। ऐड्रिनैलिन का स्राव कुरारे से कम हो जाता है। जिगर के कड़ा पड़ने के कारण पित्त की कै। मधुमेह ४ शक्ति (डा० बार्कहार्ड)।

मन—अनिश्चयता, स्वयं न सोचना चाहे और न काम करना चाहे।

सिर—सारे शरीर में कोंचन दर्द। सिर पीछे की तरफ खिंचा हो। बाल झड़ना। मस्तिष्क तरल पदार्थ से भरा मालूम हो।

आँखें—दाहिने आँख के ऊपर तेज अकड़न दर्द। काले धब्बे दिखाई देना। दाहिनी आँज का पलक लकवा से बन्द हो जाये।

कान—आवाजें असह्य; कान दर्द। कोंचन दर्द कानों से शुरू होकर टाँगों तक जाये। कानों की ललरी की सूजन।

नाक—पीनस रोग। नाक पर छोटी गुटिकाएँ, मवाद का घृणित ढोंका।

चेहरा—चेहरा और गाल के गड्ढों में लकवा। मुँह और जबान खिंची। चेहरा लाल। जीभ और मुँह दाहिनी तरफ खिंचा हो।

स्त्री—कष्टदायक मासिक स्राव। मासिक धर्म बहुत पहले, मासिक काल में शूल। सिर दर्द, गुदा दर्द। प्रदर गाढ़ा, मवादी, घृणित।

श्वास-यन्त्र—सो जाने पर साँस-यन्त्र के लकवाग्रस्त होने का भय। छोटी साँस। छोटी, सूखी खाँसी जो कै लाये, फिर गशी आए। दाब से सीने में दर्द। अति कष्टदायक कठिन-साँस।

अंग—रीढ़ के ऊपर-नीचे थकान दर्द। बाँहें कमजोर, भारी। अँगुलियों को न उठा सके। पियानो बजानेवालों की अँगुलियों और हाथों में कमजोरी। टाँगें काँपें, चलने से जवाब दे दें। दुर्बलता, पक्षाघात। अकड़न। मस्सों के बढ़ने में सहायता देता है। परावर्तित क्रिया का मन्द या लोप होना।

चर्म—कोढ़। मैला चर्म। फुन्सियाँ। नाक पर छोटे गोल अर्बुद। ताँबे के रंग के धब्बे। खुजली।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : नमी, ठण्डा मौसम, ठण्डी हवा, २ बजे सुबह, दाहिनी तरफ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सिस्टिसिन (क्रियाशील स्नायु का लकवा); कोनिथम, कास्टिकम, क्रोटैलस, नक्स०। कुरेरो स्ट्रिकनीन का क्रियानाशक है।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

साइक्लैमैन (Cyclamen)

(सो-ब्रेड)

अधिक मात्रा में घोर ओकाई और कै होती है। पाचन-क्रिया की गड़बड़ी, अधिक नमकीन लार के साथ। रक्तहीनता और हरा रोग बाधाएँ। गर्भाशय के रोग।

पाकाशय-आन्त्रिक और जननेन्द्रिय मूत्र रोग ग्रस्त जिससे रक्तहीनता और कई तरह के परावर्तित रोग पैदा हों। अनिद्रा, उदासी और आलस : रात के समय सोते में खाँसी बिना जगाये, खासकर बच्चों में। (कैमोमिला, नाइट्रिक एसिड)।

सिर—अन्तर ध्वनि का प्रचण्ड भय। धर्मपालन की भूलों पर घोर सन्ताप। उदासी, अलग रहने की प्रबल इच्छा। सुबह को टीस, आँखों के सामने टिम-टिमाहट के साथ, कान में खुजली के साथ छींके आना। चक्कर, सब चीजें चक्कर खायें, कमरे में कम, खुली हवा में अधिक। एक ओर का सिर दर्द। अक्सर छींकना, कानों में खुजली के साथ।

आँखें—धुँधलापन, जागने पर अधिक, आँखों के सामने धब्बे के साथ कई रंग की टिमटिमाहट। केन्द्रित ऐंचापन। अगणित तारे देखना। दो चीजें देखना। पाकाशय विकार सम्बन्धी देखने की गड़बड़ी।

पेट—नमकीन स्वाद, हिचकी की तरह डकार, चर्बीली वस्तु खाने से बढ़े। प्रत्येक कॉफी के प्याले से दस्त हो, हिचकी। कुछ कौर खाने के बाद पूर्ण तृप्ति। मांस से घृणा खासकर सूअर के मांस से। लेमोनड पीने की इच्छा। सारे दिन प्यास न लगे।

मलाशय—गुदा और शरीर संधि स्थान क्षेत्र में दर्द, मानो कोई स्थान पक रहा हो, टहलने या बैठने पर कष्ट बढ़े

स्त्री—मासिक-धर्म अधिक, काला, झिल्लीदार, थक्केदार, समय के बहुत पहले, पीठ से विटपदेश तक प्रसवान्तक पीड़ा के साथ। चलने-फिरने से स्राव कम। अध-कपारी और अन्धापन या आँखों के सामने जलते धब्बों के साथ मासिक-धर्म की असामयिकता। गर्भावस्था में हिचकी। प्रसव के बाद स्राव, धँसन शूल के साथ, खून फलकने के बाद पीड़ा कम। मासिक धर्म के बाद स्तनों की सूजन और दूधिया स्राव।

अंग—उन स्थानों में दर्द जहाँ हड्डी चर्म के ठीक नीचे हो। एड़ी में जलन, चोटीला दर्द। दाहिने हाथ के अँगूठे और अंगुली की ऐंठन की तरह सिकुड़ना। अस्थिवेष्ट में दर्द। बेवाई फटना।

चर्म—युवा स्त्रियों के मुँहासे; योनि खाज, खुजलाने से और मासिक धर्म के दिखाई पड़ने से कम हो।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : खुली हवा, शाम को, बैठने से, खड़े होने से और ठंडे पानी से। घटना : मासिक-धर्म से, इधर-उधर चलने-फिरने फिरने से, मालिश से, गरम कमरे में, लेमोनेड से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : एब्राग्रिसिया, पल्सेटिला०, सिनकोना, फेरम फॉस, साइट्रस वल्गैरिस, चिनिनम आर्सेनि० ।

मात्रा—३ शक्ति ।

साइप्रिपेडियम (Cypripedium)

(यलो लेडीज स्लिपर)

चर्म लक्षण रस-विष दोष से मिलते हैं जिसको यह औषधि उत्तम रूप से नाश करती है । बच्चों में स्नायविकता, दाँत निकलने के कारण और आँतों के रोग से । गठिया के बाद दुर्बलता । जीर्ण दौर्बल्यजनक दस्त के कारण मस्तिष्क शोथ लक्षण । अनिद्रा । छोटे बच्चों में मस्तिष्क की असाधरण उत्तेजना के कारण अति मस्तिष्क संवेदनीयता ।

सिर—बच्चा रात में चिल्ला उठे, जाग जाता है और हँसने और बोलने लगता है । बूढ़े लोगों का वयःसंधिकालीन सिर दर्द ।

सम्बन्ध—अरिष्ट से ६ शक्ति तक । ओक विष के लिए अरिष्ट की ६–बूँद की एक खुराक, बाहर के लिए भी ।

डाफ्ने इण्डिका (Daphne Indica)

(स्पर्ज लारेल)

निम्न तन्तुओं पर, मांसपेशियों पर, हड्डी और चर्म पर काम करती है । शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में एकाएक बिजली जैसे झटके । तम्बाकू की प्रबल इच्छा । पेट में जलन । शरीर के अंग अलग-अलग हुए जान पड़ें (बैप्टिशिया) साँस, मूत्र, पसीना दुर्गन्धित ।

सिर—जान पड़े की भेजा फट जायगा, मानो सिर शरीर से अलग है । सिर में गरमी, खासकर चाँद पर । जबान पर एक ही तरफ मैल । दुर्गन्धित, गरम लार ।

मूत्र—गाढ़ा, गँदला, पीला सड़े अण्डों की तरह ।

अंग—दाहिने पैर के अंगूठे में सूजन, दर्द । दर्द उदर की तरफ और दिल में झपटे । जाँघों और घुटनों में वात पीड़ा । चूतड़ में ठण्डापन । लपकन दर्द तेजी से जगह बदले, ठण्डी हवा से बढ़े ।

नींद—सोने से पूर्ण असमर्थता, कभी-कभी हड्डियों की टीस के कारण । भयानक स्वप्न के साथ । बिल्ली के स्वप्न, काली बिल्लियाँ । शीत और चर्म पसीजने के साथ सोते में चिहुँकना ।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : ब्रायो०, रस० ।

तुलना कीजिए : फ्लोरिक एसिड०, आरम मेटालि०, मेजेरियम, स्टेफिसैग्रियाँ ।

मात्रा—१ से ६ शक्ति ।

डिजिटैलिस (Digitalis)

(फॉक्सग्लोव)

सभी रोगों में काम आती है जहाँ मूल कारण हृदय दोष हो, जहाँ नाड़ी कमजोर, **क्रमभ्रष्ट, सविरामिक,** असाधारण मन्द और शरीर के बाहरी और भीतरी भागों में शोथ हो। **हृदय की पेशियों की कमजोरी और फैल जाना।** इसका बहुत बड़ा संकेत रक्त-यातायात की संतुलन-हीनता है और खासकर जब हृदय के ऊपरी खाने मांसपेशिक कम्प शुरू हो जाए। ओठँगने पर नाड़ी मन्द लेकिन बैठते ही क्रमहीन और दोहरी चाल। दिल के अलिंद में फड़फड़ाहट और मांसपेशी का कंपन, वात ज्वर के बाद। दिल में रुकावट, नाड़ी बहुत धीमी। दिल के अन्य यांत्रिक रोग, जैसे बहुत कमजोरी और शक्तिक्षीणता, गशी, चर्म का ठंडापन, क्रमहीन साँस, दिल की उत्तेजनीयता और नेत्र रोग तम्बाकू के सेवन के बाद। **जिगर के** कड़ापन और रोगात्मक वृद्धि के कारण कामला रोग, अक्सर डिजिटैलिस की पुकार करते हैं। हृदय रोग के साथ कामला रोग। मूर्च्छित मानो मर रहा हो। चेहरे का रंग **नीला।** हृदय पेशियों की **कार्यहीनता** जब संकुचन शक्ति कम हो जाये। हृदय पेशियों को सबल बनाती है, संकुचन चाप बढ़ाती है और उसका समय लम्बा करती है। जरा-सा जोर पड़ने से शिथिलता आए। पतनावस्था।

मन—निराश, भयभीत, आकुल भविष्य के लिए। ज्ञानेंद्रियों की मन्दता। सभी झटके पेट के अगले ऊपरी भाग में लगते हैं। विषण्णता, धीमी, सुस्त नाड़ी के साथ आलस्य।

सिर—टहलते समय और उठते ही चक्कर हृदय या जिगर रोग में। अगले भाग में तेज, चुभन दर्द जो नाक के भीतर तक बढ़े, ठंडा पानी पीने से या मलाई की बरफ खाने से। सिर का भारीपन, ऐसा लगे कि पीछे की तरफ गिर जायेगा। चेहरे का नीलापन। सिर में गड़बड़ी, भरापन और आवाजें। झपकी के समय पटपटाहट की आवाज। जबान और होंठ नीले।

आँखें—पलकों का नीलापन। काली वस्तुएँ जैसे मक्खी, आँखों के आगे दिखाई दें। हरे रंग का प्रत्यक्ष ज्ञान परिवर्तित हो। वस्तुयें हरी और पीली दिखाई दें। पुतली का फैलाना, पलक के किनारे लाल, सूजन, सुबह चिपकें। नेत्रपट का अलग होना। धुँधलापन, असमान पुतलियाँ; द्वि-दृष्टि

आमाशय—लगातार लार भरे रहने के साथ मीठा स्वाद। घोर मिचली कै करने से कम हो। गशी, पेट में बहुत कमजोरी। पेट में जलन; गलकोष तक बढ़े। ठंडे पानी या मलाई की बरफ खाने के बाद माथे में तेज दर्द नाक तक बढ़े। हरकत से गशी और कै। असुविधा, जरा-सा खाना खाने से या केवल देखने या सूँघने से। पेट के ऊपरी अगले भाग में कोमलपन, अधिक लार बहे। खाने में असम्बन्धित, पेट में स्नायुशूल।

उदर—बाईं तरफ दर्द, नीचे उतरनेवाली आड़ी मल नली में और नकली पसली में होना जान पड़े। तीव्र उदर पीड़ा, उदर की बड़ी रक्तधमनी में टपकन और कौड़ी की सिकुड़न। जिगर बढ़ा हुआ, दर्दीला चोटीला।

मल—सफेद खड़िया की तरह, राख ऐसा, लेईदार मल। कामला रोग में दस्त।

मूत्र—लगातार इच्छा, बूँद-बूँद, गहरा, गरम, जलता, मूत्राशय की गरदन में तेज कटन या टपकन दर्द के साथ, जैसे मूत्रमार्ग में कोई तिनका डाला और निकाला जा रहा हो, रात में अधिक हो। पेशाब दबना। एमोनिया की महक और गँदला। मूत्रमार्ग प्रदाह, लिंग पटल संकुचन, पेशाब रुकना। मूत्र-स्खलन के बाद भी भारीपन। सिकुड़न और जलन जैसे मार्ग बहुत छोटा हो गया हो। ईंट-बुकनी जैसी तलछट।

स्त्री—मासिक-धर्म के पहले पीठ और उदर में प्रसव ऐसा दर्द। गर्भाशयिक रक्त प्रवाह।

पुरुष—प्रत्येक रात में वीर्यस्खलन, मैथुन के बाद जननेन्द्रिय में घोर दुर्बलता के साथ। अण्डकोष वृद्धि, थैली का ब्लैडर की तरह बढ़ना। प्रमेह, लिंग-मुण्ड की सूजन (मर्कुरियस०)। पटल के शोथ के साथ। जननेन्द्रिय में जल आना (सल्फर), मूत्र-ग्रंथि का बढ़ना।

श्वास-यन्त्र—लम्बी साँस लेने की इच्छा। साँस अक्रमिक, कठिन गहरी आहें भरना। सीने में कच्चापन, दर्द के साथ खाँसी। मीठा बलगम। बूढ़ों का फुफ्फुस प्रदाह। सीने में बहुत कमजोरी। कष्टदायक साँस, लगातार लम्बी साँस लेने की इच्छा, फुफ्फुस दबे जान पड़ें। जीर्ण वायु-नलिका समूह का प्रदाह, फुफ्फुस का मंद रक्त संचार, खूनी बलगम हृदय की पेशियों की कमजोरी के कारण। बात करना सहन न करे। दिल की कमजोरी के साथ। खून मिला बलगम।

दिल—जरा भी हिलने से घोर धड़कन पैदा होती है और ऐसा लगता है कि जरा और हिले पर दिल की गति रुक जायगी (विपरीत : जेल्सीमियम), अकसर दिल में चिलकन : अक्रमिक गति खासकर ढकनों के रोग में। बहुत धीमी नाड़ी। रुक-रुककर चले, कमजोर गति। नीला रोग। असमान नाड़ी, चाल बदला करे।

एकाएक ऐसा लगे की दिल रुक गया। नाड़ी कमजोर और जरा-सी हरकत से तेज हो। दिल की खोलवाली झिल्ली का प्रदाह, अधिक पानी-सा स्राव। दिल फैला, थका, क्रमभ्रष्ट, धीमी और कमजोर नाड़ी के साथ पेशियों का ढीलापन फैलने के साथ। ज्वर के बाद दिल की क्रमहीनता। दिल का शोथ।

अंग—पैरों में सूजन। अंगुलियाँ सरलता से सुन्न हो जायें। हाथों और पैरों का ठण्डापन। जोड़ों में वात दर्द। जोड़ों की सफेद चमकदार सूजन। पेशियाँ कमजोर। रात में अंगुलियों की सूजन, टाँगों में ऐसा लगे कि लाल तपता हुआ तार एकाएक उनमें से घुसा दिया गया है (डजियन)।

नींद – सोते में घबराकर चौंक पड़े कि वह बहुत ऊँचाई पर से गिर रहा है। लगातार निद्रालुता।

ज्वर—गरमी की एकाएक लहर, बाद में घोर स्नायु दुर्बलता।

चर्म—अरुणिमा, गहरे लाल, पीठ में अधिक, छोटी माता जैसी। पलकों, कानों, होंठों और जबान पर नीली उभरी शिरायें। शोथ। खाज और पीलापन।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सोने; बैठने पर भोजन और संगीत के बाद। घटना : खाली पेट, खुली हवा में।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कैम्फोर, सर्पेण्टेरिया। बेमेल : चायना।

तुलना कीजिये – नेरियम ओडोरम (हृदय पर के प्रभाव के लिए डिजिटैलिस की तरह), मगर स्ट्रिक्निया की तरह मेरुदण्ड पर भी काम करती है। झटके अधिकतर ऊपरी भाग में। धड़कन, कमजोर दिल इससे शक्तिवान होगा। (हनुस्तम्भ), ऐडोनिया, क्रेटेगस (एक सच्चा हृदय शक्तिवर्द्धक) कैल्मिया : स्पाइजेलिया; लिया-ट्रिस स्पाइकेटा। और भी तुलना कीजिए : डिडिटॉक्सिनम (डिजिटैलिस को क्लोरोफार्म में मिलाकर जिनमें पीली आँखें अधिक स्पष्ट होती हैं और कष्टदायक मिचली, शैम्पेन से या गैस वाले पानी से रोग बढ़े), नाइट्रि-स्पिरिटस-डलसिस डिजिटैलिस के प्रभाव को अधिक करती है। इक्थियोटॉक्सिन—ईल सीरम—(प्रयोग से मालूम होता है कि सीरम में और वाइपेरा के विषय में बहुत समानता है। इस अवस्था में सांकेतिक होता है जब दिल का सिकुड़ना फैलना कम हो जाये, ढकनों का काम क्रमानुसार न हो, अलिन्द के मांसपेशिक कम्पन के कारण नाड़ी क्रमहीन। हृदय में रक्तचाप की मन्दता, धीमी, तेज, अक्रमिक नाड़ी, साँस कष्ट और थोड़ा पेशाब। जिगर बढ़ा हुआ, साँस कष्ट, मूत्र में ऐल्बुमिन जाना। शोथ न हो) कानवैलेरिया (चक्कर और पाचन दोष के साथ हृदय रोग) क्विनिडिन—आइसोमेरिक मेथॉक्सिल योग—(अलिंदकम्पन की अवस्था साधारण क्रम उत्पन्न करती है। अकसर डिजिटैलिस के बाद उसकी सहायता करती है। ३ ग्रेन की मात्रा में दो खुराक, हर तीन घण्टे पर

यदि सिन्कोनिज्म के लक्षण न पैदा हों, तो प्रत्येक खुराक ६ ग्रेन की दिन में ४ बार। सी० हारलैन वेल्स), दौरे के साथ हृदय की गति में तीव्रता। कम से कम कुछ दिन के लिए हृदय गति को साधारण करती है, ढकनों के दोष में लाभकारी है।

मात्रा—होमियोपैथिक लक्षण संकेत की अवस्था में ३ से ३० शक्ति प्रभावित सिद्ध होगी, मगर शान्तिप्रद प्रभाव के लिए स्थूल मात्रा में उपयोग करना आवश्यक है। इसके लिए ताजे पौधे से अरिष्ट बनाकर ५ से २० बूँद की मात्रा में देना चाहिए। जब हृदय को शक्ति देने की आवश्यकता हो या १½ प्र० श० का काढ़ा। मात्रा ½ से १ औंस तक पेशाब बढ़ाने के लिए। अरिष्ट चीनी या रोटी पर दिया जा सकता है और उसके देने से पहले या बाद २० मिनट तक कोई तरल वस्तु नहीं देनी चाहिए। पत्तियों की बुकनी ½ से २ ग्रेन तक कोष के अन्दर रखकर। डिजिटौक्सिन १/२५० ग्रेन। डिजिटैलिस का कोई भी योग दिया जाये मगर जब नाड़ी की गति ८० चोटें हो जाये और प्रायः साधारण हृदय गति हो जाये उस समय मात्रा कम कर देनी चाहिये। ऐसी अवस्था में अगर मूत्र की मात्रा एकाएक कम हो जाये तो मात्रा को आधा या उससे भी कम कर देना अच्छा नियम है।

डायस्कोरिया विलोसा (*Dioscorea Villosa*)

(वाइल्ड यैम)

कई तरह के दर्द के लिए, खासकर शूल और उदर व पेड़ू के तीव्र पीड़ाजनक रोग के लिए यह औषधि वर्णन में सर्वोच्च स्थान रखती है। मन्द पाचन-क्रिया के लोग, चाय पीनेवालों को अधिक अफरा। पित्तपथरी शूल।

मन—चीजों को गलत नाम से पुकारता है।

सिर—दोनों कनपटियों में धीमा दर्द, दाब से कम, लेकिन बाद में बढ़े। सिर में भनभनाहट।

पेट—सुबह को मुँह सूखा और कड़वा; जबान पर मैल, प्यास न हो। अधिक मात्रा में दूषित वायु की डकार। पेट का स्नायुशूल। **तलपेट में धँसव। मुँह में पानी। सीना-अस्थि से होकर बाहों तक दर्द।** खट्टी, कड़वी डकार के साथ **हिचकी**। कौड़ी प्रदेश में तेज दर्द, सीधा खड़ा होने से कम हो।

उदर—तेजी से दर्द दूसरे भाग से चला जाये; **दूर-दूर के स्थानों में जाये जैसे हाथ और पैर की अँगुलियों में।** अधिक हवा खुलने के साथ गड़गड़ाहट। तलपेट में चुभन, कटन और साथ में पेट तथा छोटी आँतों में सविराम फटन। शूल, इधर-उधर टहलने पर कम हो, दर्द उदर से पीठ, सीना, बाहों में फैले; आगे झुकने से और लेटे रहने से अधिक हो। जिगर से तेज दर्द दाहिने स्तन घुण्डी तक झपटे। पित्त-

कोष से सीने, पीठ और बाहों में दर्द जाए। वृक्क शूल, हाथ-पाँव तक दर्द फैल जाये। पाखाना तेजी से लगे।

दिल—हृदय शूल; वक्षास्थि के पीछे बाहों में, कठिन श्वास, हृदय गति मन्द। खासकर अफरा के साथ सीने के आर-पार दर्द और कसापन।

मलाशय—जिगर में चिलकन दर्द के साथ बवासीर, मस्से अंगूर या लाल मकोय के गुच्छों की तरह दिखाई दें, मलत्याग के बाद बाहर निकलें और गुदा में दर्द हो। दस्त (सुबह को अधिक) पीला, बाद में थकावट, मानो वायु और मल गरम है।

पुरुष—जननेन्द्रिय का ढीलापन और ठंडापन। वृक्क प्रदेश से अण्डकोषों में दर्द झपटे। अण्डकोष और विटप देश पर तेज गन्ध वाला पसीना। नींद में धातु स्खलन या काम-दुर्बलता से, घुटनों में कमजोरी के साथ।

स्त्री—गर्भाशय शूल, दर्द गर्भाशय से चारों तरफ फैले। स्पष्ट स्वप्न।

श्वास-यन्त्र—वक्षास्थि भर में कसावट मालूम पड़े। साँस लेने पर सीना पूरा-पूरा फूलता मालूम न दे। लघु साँस।

अंग—पीठ में लँगड़ापन, झुकने से बढ़े। जोड़ों में टीस और तनाव। अधिक स्नायुशूल, दर्द जाँघ के नीचे झपटे, दाहिनी तरफ अधिक, पूर्ण शान्त रहने से कम रहे। अंगुलबेड़ा, शुरू में, जब कोचन हो। नाखून भुरभुरे। हाथ, पैर की अँगुलियों के मोड़ों में ऐंठन।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** शाम और रात में लेटने पर और घुटने मोड़ कर दोहरा होने से। **घटना :** सीधा खड़ा होने से, खुली हवा में, हरकत से, दाब से।

सम्बन्ध—**क्रियानाशक :** कैमोमिला, कैम्फोरा।

तुलना कीजिए : कोलोसिंथ (घटने-बढ़ने में अन्तर है।) नक्स०, कैमोमिला, ब्रायोनिया।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

डिओस्मा लिंकैरिस (Diosma Lincaris)

(बूकू-केप ऑफ गुडहोप से प्राप्त)

रोग-तत्व के अनुसार यह औंघाई, स्नायविक, अनिद्रा, रात पसीना उत्पन्न करती है। चंचल पीड़ा, बदमिजाजी के साथ, रुदन इच्छा या रोगभय। घोर चक्कर। सिर दर्द, मुख्यतः अगले भाग में फैलकर पीछे जाये। आँखें चमकीली, जलस्राव या खुजली के साथ, वे अवस्थायें जो एक प्रकार की बुद्धिहीनता के साथ आएँ। ऊँचा सुनना या कान के चापाधिक्य के कारण शोर सुनाई देना। मटियाला चेहरा, बिखरे हुए लाल दाने। मिचली, दुर्गन्धित साँस खालीपन के संवेदना के साथ। आध्मान

संवेदन; तिल्ली में गड़न दर्द के साथ। उदर में दर्दीलापन विटप दाब के साथ–कपड़े की दाब भी असह्य हो जाती है, गहरे रंग का खूनी पेशाब। अक्सर पीला दस्त, रात में अधिक। मासिक स्राव अधिक, आभासित, कभी-कभी बहुत अधिक खाने के बाद ऐंठन दर्द। हाथों में गरमी या ठंडक का संवेदन अंगुलियों में ऐंठन की हरकत, टाँगों में कमजोरी, बैठने से कम हो।

चिकित्सा के सम्बन्ध में यह तत्व मस्तिष्क रोग में जहाँ बुद्धिमन्द या मूर्च्छा भी हो, लाभदायक होना चाहिए। अकड़न या मिर्गी के दौरे, मूर्च्छा वायु रोग में, जिगर प्रदाह में (ढीलापन या चुचुकन), खूनी पेशाब में जहाँ डिम्बाशय का गर्भाशय विकार हो।

तिल्ली प्रदाह में जहाँ यह सियानोथस से अधिक लाभदायक है। स्नायविक या एकान्तवासी लोगों में मानसिक व्याधियाँ, खासकर जहाँ मृत्यु-भय बराबर बना रहे या कामवासना या आत्महत्या के हमले हों। पाकाशय शूल। पाकाशय-आन्त्रिक प्रदाह, अकस्मात भय, टाँगों में कम्प और कमजोरी के साथ। (डॉ० सी० लियल ला रॉटा)।

डिफ्थेरिनम (Diphtherinum)

(पोटेंण्टाइज्ड डिफ्थेरिटिक वाइरस)

ऐसे रोगियों के लिए अनुकूल है जिनमें साँस-यन्त्र के नजले की प्रवृत्ति है। कण्ठमालिक व्यक्ति। झिल्ली प्रदाह, स्वरयन्त्र झिल्ली प्रदाह, झिल्ली प्रदाह के बाद लकवा। आरम्भ से ही भयानक अवस्था। ग्रन्थियाँ सूजी हुई, जिह्वा लाल और सूजी हुई, साँस और स्राव घृणित। रोगग्रस्त झिल्लियाँ मोटी गहरे रङ्ग की। नकसीर; घोर शिथिलता। निगलने में कष्ट न हो, मगर तरल पदार्थ कै हो जाये या नाक की राह वापस आये।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : डिफथेरोटॉक्सिन (कैहिस) (जीर्ण वायुनलिका समूह प्रदाह खड़खड़ाहट के साथ। कारटियर के सुझाओं के अनुसार वृद्ध लोगों के पक्षाघातिक प्रकार की वायुनली-भुज प्रदाह में या फ्लू, ज्वर के बाद दूषित वायुनली भुज प्रदाह में)।

मात्रा—३०, २०० या सी० एम० शक्ति। अकसर दोहराना नहीं चाहिए।

डोलिकोस पुरियन्स (Dolichos puriens-Mucuna)

(काउहेज)

दाहिनी तरफ की दवा जब जिगर और चर्म लक्षण स्पष्ट हों। शरीर भर में बिना दानों के तीव्र खुजली। स्नायविक उत्तेजना अधिक। वृद्धावस्था की खुजली। बवासीर के दोष।

गला—गले में दर्द, निगलने से बढ़े, जबड़े दाहिने कोण के नीचे मानो कोई खपच्ची ऊपर से नीचे कसी है। मसूड़ों का दर्द नींद में रुकावट करे।

उदर—पैर भींगने से उदर शूल हो। अत्यन्त खुजली के साथ कब्ज, उदर फूले। सफेद मल। जिगर की सूजन। जलन के साथ बवासीर।

चर्म—अत्यन्त खुजली, बिना सूजन या दानों के; कन्धों के आर-पार अधिक, केहुनी के पास, घुटनों पर, और बाल वाले स्थान पर। कामला रोग। पीले धब्बे, रात में खासकर खुजली। मोटा दाद (आर्सेनिक)

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में, खुजलाने पर, दाहिनी तरफ।

संबंध—तुलना कीजिए : रसटॉक्स; बेलाडोना हीपर, नाइट्रिक एसिड, फैगोपाइरम।

मात्रा—६ शक्ति। बवासीर में अरिष्ट, बूँदों की मात्रा में।

डॉरिफोरा (Doryphora)

(कोलोरैडो पोटैटो-बग)

इस पदार्थ के कार्य का केन्द्र मूत्रेन्द्रियों में जान पड़ता है और इसीलिए इसका उपयोग सुजाक और जीर्ण सुजाकी स्राव में होता है। मूत्र-मार्ग प्रदाह बच्चों में किसी स्थानीय उत्तेजना के कारण और जीर्ण स्राव में होता है। अंगों, हाथ-पैरों में घोर कम्प। पतनावस्था। शरीर सूजन। जलन की संवेदना।

मूत्र—कठिन मूत्र-स्खलन। मूत्र मार्ग सूजा हुआ, मूत्र-स्खलन के समय कोंचन दर्द। पीठ और कमर में दर्द। हाथ-पैरों में कम्प।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : स्ट्रैमोनियम।

तुलना कीजिए—एगेरिकस०, एपिसमेलिफिका, कैन्थेरिस, लैकेसिस, कोकेन।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

डुबोइसिया (Duboisia)

(सनडिउ)

विशेष रूप से साँस यन्त्रों पर काम करती है और हैनीमैन ने हूप खाँसी की इसे मुख्य औषधि बताया था। ड्रोसेरा क्षय रोग के आक्रमण को रोकने की शारीरिक शक्ति को कम करती है। इसलिए उसको बढ़ाने के लिए उपयोग में लाना चाहिये। (डॉ० टेलर) स्वर-यन्त्र के क्षय रोग में इससे लाभ होता है। फुफ्फुस का तपेदिक।

खाँसी में खाने की कै, पाकाशयिक उत्तेजना और अधिक बलगम के साथ। कटि-संधि के आप-पास दर्द। क्षयग्रस्त ग्रंथियाँ।

सिर—खुली हवा में टहलते समय चक्कर आना और बायीं तरफ गिरने की सम्भावना। चेहरे की बायीं तरफ का ठंडापन और दाहिने आधे भाग में गड़न, दर्द और सूखी गरमी।

पेट—मिचली। तेजाबी वस्तु से घृणा और कष्ट बढ़ना।

श्वास-यन्त्र—आक्षेपिक, सूखी उत्तेजनीय खाँसी कुकुर खाँसी की तरह, एक के बाद दूसरा दौरा जल्दी-जल्दी आवे, मुश्किल से साँस ले सके, दम घुटे, खाँसी, बहुत गहरी और आवाज भर्राई हुई, आधी रात के बाद बढ़े, पीला बलगम नाक से और मुँह से खून निकले, ओकाई। गहरी, फटी खाँसी, आवाज फटी-फटी, स्वर-यन्त्र प्रदाह। गले के भीतर और कोमल तालु में खुरखुराहट, खुरचन की संवेदना। ऐसा लगे कि गले में रोटी के टुकड़े अटके हैं या स्वर-यन्त्र में भरे हुए हों। स्वर-यन्त्र का क्षय रोग, तीव्र दुबलापन। बच्चों में कष्टदायक खाँसी, दिन भर बिलकुल न उठे, मगर रात में तकिये पर सिर रखते ही शुरू हो। पादरी लोगों का गला बैठना, गले के भीतर गहराई में खुरखुराहट, खुर्चन, सूखापन के साथ, आवाज भारी, गहरी बिना स्वर के, खड़-खड़ाती बोलने में जोर पड़े। बोलने से दमा का हमला, प्रत्येक शब्द बोलने से गले में सिकुड़न हो।

अंग—उरु-संधि उर्वस्थि और जाँघों में लकवा दर्द। पैरों के जोड़ों में तनाव। सभी अंग लँगड़े मालूम पड़ें। बिस्तर बहुत कड़ा लगे।

ज्वर—आन्तरिक शीत, कम्प, चेहरा गरम, हाथ ठण्डे, बिना प्यास। सदा बहुत ठण्डक लगे बिस्तर में भी।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : आधी रात के बाद, लेटने पर, बिस्तर की गरमी से, पीने से, हँसने से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कैम्फोरा।

तुलना—कीजिए : क्लोरोफार्म (पानी में २ प्र० श० घोल २-४ बूँद दौरे के बाद कुकुर खाँसी के लिए अक्सीर समझी जाती है) ओवेबेन केरिसा शिम्परी की पत्तियों से निकला हुआ नीर विष (साँस में झटके, कुकुर खाँसी आरम्भिक अवस्था में जल्द अच्छी होती है और उसके दौरे में देर लगती है और स्वास्थ्य जल्दी ठीक होता है)।

चेलिडोनियम, कोरैलियम, कुप्रम, कैस्टेनिया, आर्जेटम, मेनिएन्थस।

मात्रा—१ से १२ शक्ति।

ड्रोसेरा (Drosera)

(कार्कउड एल्म)

विशेषकर स्नायुमण्डल, आँख ऊपरी साँस मार्ग पर काम करती है। गलकोष प्रदाह में काला तारदार श्लेष्मा की अवस्था में हितकर बताई गई है। यह पुतली को फैलाती है; मुँह को सुखाती है, पसीना रोकती है, सिर दर्द और ओकाई पैदा करती है। आँखों पर यह एट्रोपिया की अपेक्षा तेजी से असर करती है, पुतली फैलाने में अधिक शक्तिशाली है।

आँखों के आगे लाल धब्बे तैरते दीख पड़ते हैं। खाली जगह में पैर रखने की संवेदना। पीले चेहरे के साथ चक्कर आना जो पाकाशयिक विकारी न हो। अरुण ज्वर, कम्पवात। वहिःनिःसृत चक्षु गोलक तथा हृत्स्पन्दन के साथ गलगण्ड में आराम देती है।

मन—अन्यमनस्क, असम्बद्ध, मतिहीन और निरर्थक, स्मृति मन्द।

सिर—आँख आना, तीव्र और जीर्ण, पुतली का फैल जाना। संविधान का लकवा। चक्षुपट में रक्त संचयता, संविधानिक क्रिया की दुर्बलता के साथ, तलदेश लाल, रक्त नलिकाएँ भरी और रुकी हुईं, पुतली फैली हुई, धुँधलापन के साथ। आँख के ऊपर दर्द, उनके और भौं के बीच में।

श्वास-यन्त्र—स्वर-यन्त्र सूखा, आवाज भारी। उच्चारण कठिन। सूखी खाँसी, दबी साँस के साथ।

अंग—अङ्ग शक्तिहीन, लड़खड़ाना, मालूम पड़े कि खाली जगह में पैर पड़ गया हो। कम्प, सुन्नपन, कमजोरी।

सम्बन्ध—इससे मस्कैरिन से विरोध है। डुबोइसिन सल्फेट १–१०० ग्रेन पागलपन में शांतिप्रद है। दिन में २–४ मिलिग्राम। हिस्टीरियायुक्त मिर्गी। पागलों की शारीरिक अशान्ति। एट्रोपिया की जगह पर काम में लाई गयी है। मात्रा २–१० ग्रेन सूई द्वारा।

क्रियानाशक : मार्फिया, पिलौकार्पस।

तुलना कीजिए : बेलाडोना० स्ट्रैमोनियम, हायोसायमस।

मात्रा—३ से १२ शक्ति।

डल्कामारा (Dulcamara)

(बिटर स्वीट)

गरमी के मौसम का अन्तिम काल जब दिन में गरमी रहे और रात में ठंडा रहे, डल्कामारा के प्रभाव के अनुकूल समय है और यह उन औषधियों में से एक है जो

तर मौसम के परिणाम में उपयोगी होती है, भीगने के बाद आया जुकाम, खासकर दस्त होना। इसका विशेष सम्बन्ध चर्म, ग्रन्थियों और पाचन यन्त्रों से है, श्लैष्मिक झिल्लियाँ अधिक स्राविक हों जब कि चर्म कर्महीन हो। वात व्याधियाँ जो नमी से उत्पन्न हों, प्रत्येक ठण्डक के आक्रमण से बढ़ती हैं और हिलने-डोलने से कुछ आराम मिलता है। ठण्डी, तर जमीन पर बैठने का दुष्प्रभाव। बर्फीली ठण्डक। एक बगल झटका, बोली बन्द के साथ। किसी एक भाग का लकवा। रक्त संचित, सिर दर्द, स्नायुशूल और सूजी नाक के साथ। वे लोग जो नम जगह में रहते या काम करते हैं (नैट्रमसल्फ्युरिकम)। हाथों, बाहों या चेहरे पर मासिक काल के लगभग दाने।

सिर—मानसिक गड़बड़ी। पिछले भाग का दर्द जो गरदन की जगह से उठे। बातचीत करने से सिर दर्द कम हो। माँगी हुई चीज अस्वीकार करना। ठण्डे मौसम में सिर के पिछले भाग में शीत, भारी टीस। खाल पर दर्द। पपड़ीदार फरन, मोटा कत्थई खुरण्ड, खुजलाने पर खून बहे। सिर में भिनभिनाहट।

नाक—सूखा जुकाम। नाक का पूर्ण रूप से बन्द होना। पानी बरसने पर भारी जान पड़े। मोटा, पीला श्लेष्मा, खूनी खुरण्ड। अधिक स्राव, नाक को गरम रखना चाहे, जरा-सी ठंडक से नाक बन्द हो जाये। नवजात बच्चे का जुकाम।

आँखें—जब भी जुकाम होता है वह आँखों में ठहरता है। गाढ़ा, पीला स्राव रोहेदार पलक। फ्लू, अधिक पानी-सा स्राव, खुली हवा में अधिक।

कान—कान दर्द, भिनभिनाहट, चिलक, कर्णमूल सूजन। बिचले कान का जुकाम (मर्कुरियस डल्कामारा, कैली म्यूर)।

चेहरा—गालों से फटन जो कान, आँख का घेरा और जबड़ों तक बढ़े, पहले इन भागों का ठण्डापन और कुकुर भूख। चेहरे और गालों पर प्रायः तर फरन।

मुँह—लार चिमड़ी साबुन जैसी। सूखी, खुरदरी जबान, गले में खुरदरी छिलन जो तर मौसम में सर्दी लगने से हो। होठों पर घाव। चेहरे का स्नायुशूल, जरा-सा ठण्डक लगने से बढ़े।

पेट—सफेद, चिमड़े श्लैष्मिक की कै। भोजन से घृणा। ठंडी चीज पीने की प्यास, जलन। गला में जलन। भोजन की इच्छा के साथ मिचली। कै करते समय शीत।

उदर—ठण्डक से शूल। नाभि प्रदेश में तुरत काम करती है। नाभि के आस-पास कटन दर्द। पुट्ठे की ग्रन्थियों में सूजन। (मर्क्युरियस)।

मल—हरा, पानी-सा चिकना, खूनी; श्लैष्मिक मल, खासकर गरमी के दिनों में, जब मौसम एकाएक ठंडा हो जाये, तरी से ठंडा मौसम और चर्म फरन दबने से।

मूत्र—शीत के समय पेशाब करना आवश्यक। रुकावट, दर्दीला पेशाब। सर्दी लगने से मूत्राशय का नजला। मूत्र की तलछट गाढ़ी, श्लैष्मिक, मवादी। ठण्डे पानी में नंगे पैर चलने पर मूत्रावरोध।

स्त्री—ठंडक या तरी में मासिक धर्म का रुकना। मासिक-धर्म दिखाई देने के पहले, शरीर पर दाने निकलते हैं, या काम-उत्तेजना होती है। कष्टदायक मासिक-धर्म, शरीर भर पर चकत्ते, स्तन भरे और दर्दीले, कोमल, ठण्डक असह्य।

साँस-यन्त्र—खाँसी ठण्डे, तर मौसम में अधिक हो, बलगम सरल, स्वर-यन्त्र में गुदगुदी। खाँसी, फटी, दौरे वाली। कुकुर खाँसी अधिक श्लेष्मा के साथ। जाड़े की खाँसी, सूखी, कष्टदायक। साँस कष्ट के साथ दमा। ढीली, खड़खड़ी खाँसी; तर मौसम में अधिक। देर तक खाँसना पड़े। बलगम निकालने के लिए। परिश्रम के बाद खाँसी।

पीठ—गरदन तनी। पिठासे में दर्द जैसे देर तक झुका हो; ठण्डा लगे और तर मौसम से भींगने पर गरदन और कन्धों के आर-पार तनाव और लँगड़ापन।

अङ्ग—पक्षाघात, लकवाग्रस्त अंग बरफ की तरह ठन्डा मालूम हो। हाथों पर मस्से। हथेलियों पर पसीना। नरहर की हड्डी में दर्द, वात दर्द और दस्त बारी-बारी से। तीव्र चर्म रोग के लक्षण।

चर्म—ग्रन्थिप्रदाह: तीव्र खुजली, ठण्डे, तर मौसम में सदा अधिक हो। मोटा दाद, दूषित अण्डाकार स्फोट। ठण्डक से ग्रन्थियों की सूजन और कड़ापन। रसदार दाने। उत्तेजनीय रक्तस्राविक घाव। छोटी फुन्सियाँ। लाल चकत्ते, जुलपित्ती, ठंड लगने से या पेट की तेजाबी अवस्था से उत्पन्न हो। चेहरे पर, जननेन्द्रिय और हाथों इत्यादि पर तर फरन। मस्से बड़े, चिकने, बहरे। हथेली पर। सर्वाङ्ग शोथ। मोटी, पीली कत्थई खुरण्ड, खुजलाने से खून बहे।

ज्वर—शरीर भर में सूखी जलन-गरमी। शाम के लगभग सर्दी, पीठ में अधिक। बरफीली ठण्डक, दर्द के साथ। सूखी गरम और चर्म में जलन, सर्दी, प्यास के साथ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: रात में साधारणतया ठंडक से तर बरसाती मौसम में। घटना—इधर-उधर टहलने; बाहरी गरमी से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक: कैम्फार, क्युप्रम।

पूरक—बेराइटा कार्ब।

बेमेल—बेलाडोना, लैकेसिस।

तुलना कीजिए: **पिम्पिनली**—(बिबरनेल)—साँस-यन्त्र की श्लैष्मिक झिल्लियाँ बाहरी हवा सहन न करें, सिर के पीछे और गरदन की जड़ में दर्द और ठण्डक। सारा शरीर कमजोर, सिर में भारीपन और औंघाई, कटिवात और गरदन में तनाव,

गरदन की जड़ से कन्धों तक दर्द, गनगनी। रसटक्स, सिमिसिफ्युगा, कैल्केरिया कार्ब, पल्से०, ब्रायो०, नेट्रम सल्फ्युरिकम।

मात्रा—२ से ३० शक्ति।

एचिनेसिया (Echinacea Ruebeckia)

(पर्पुल कोन—फ्लावर)

हम इस औषधि के रक्त-दोष निवारण प्रभाव के लिए सर्वोत्तम ग्रहण सिद्धान्त के ऋणी हैं। तीव्र स्वर-संक्रमण। रक्त-दोष के लक्षण, सब प्रकार की दूषित अवस्थायें। मोतीझरा ज्वर का अतिसार। सुजाक। फुड़िया। विसर्प और घृणित घाव। गलित घाव। वहिःनिःसृत चक्षुगोलक तथा हृद्स्पन्दन लक्षण के साथ गलगण्ड। पूरी मात्रा में और ५-१० बूँद गलग्रन्थि में इन्जेक्शन लगाना। जीर्ण और अर्ध जीर्ण रोगी में सांघातिक कर्कट रोग की अन्तिम अवस्था, दर्द कम करने के लिए। पशु विष संक्रमण। मस्तिष्क मेरुदण्ड झिल्ली प्रदाह। प्रसव सम्बन्धी संक्रमण। थकावट। बवासीर। रसदाने। उपान्त्र पर काम करती है इसलिए उपान्त्र प्रदाह में लाभदायक है, लेकिन याद रखिये कि इससे मवाद बनता है और जीर्ण उपान्त्र प्रदाह की मवादी अवस्था में वह इससे जल्दी ही फट जायगी। लसिका वाहिनियों का प्रदाह, कुचलन; चोट। साँप काटना और साधारण जन्तु-दंश और डसन। घृणित स्राव, दुबलापन और कमजोरी के साथ।

सिर—गड़बड़ी, उदासी। चेहरे में, गरदन तक खून दौड़ने के साथ सामयिक टीस, चक्कर और घोर पतनावस्था।

नाक—दुर्गन्धित स्राव, झिल्लियों का बढ़ना, बाहर निकलना। पिछले भाग का जुकाम, घाव, घृणित स्राव। नाक भरी मालूम दे। दाहिना नथना कच्चा और खून बहना।

मुँह—चिपटे घाव, मसूढ़े पीछे हटे हुए और खून बहना, किनारे की ओर होंठ फटना, जबान सूखी और फूली हुई, चकत्ते जैसे घाव, मैली, कत्थई। जबान, गला, होंठ में टपक, दिल के आसपास भय के साथ (एकोनाइट)। जबान पर सफेद मैल, किनारे लाल। लार बहना बढ़ाती है।

गला—तालुमूल बैंगनी या काले रंग का, भूरा स्राव जो नाक के पिछले भाग और वायु मार्ग तक बढ़े। घाव वाला गला प्रदाह।

पेट—खट्टी डकार और गला जलना। मिचली, लेटने से कम।

सीना—सीना और सीना पंजर के नीचे ढोका संवेदना के कारण दर्द, वक्ष पेशियों में दर्द (एरिस्टीलोचिया)।

पेशाब—एल्ब्यूमेन भरा, थोड़ा, अकसर अनैच्छिक।

स्त्री – प्रसव सम्बन्धी रक्त-दोष, स्राव दबे, उदर कोमल और दबा हुआ, घृणित काटने वाला प्रदर।

अंग—अंगों में टीस और सुस्ती सारे शरीर में।

चर्म—बार-बार फुन्सियाँ निकलना। जहरबाद। तन्तु डसन और विषैले पौधों से चर्म उत्तेजना। लसिकावाहिनी का बढ़ना। नरहर की हड्डी के पुराने घाव। गलित घाव।

ज्वर—मिचली के साथ गनगनी। सारी पीठ पर गरम लहरें। मलेरिया ज्वर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : सेनक्रिस, कोण्टोरट्रिक्स; बोथ्रोप्स; आर्सेनिक; लैकेसिस; बैप्टि०; रस०; सिस्टस, हीपर; कैलेण्डुला।

मात्रा—अरिष्ट १ से १० बूँद हर दो घण्टे पर और इसमें अधिक मात्रा भी। बाहरी, स्थानीय प्रयोग, साफ करने और कीटाणुनाशक के काम के लिए।

इलैप्स कोरैलिनस (Elaps Corallinus)

(कोरैल स्नेक)

अन्य सर्प-विषों के समान। काले स्राव स्पष्ट रूप से विदित होते हैं। ठण्डी चीजें हानिकारक। मीठा मक्खन निकाला दूध पीने की इच्छा। मिचली और कै। क्षय रोग सम्बन्धी शिथिल करने वाला दस्त। पेट में तेजाबी हालत, मूर्च्छा जैसी संवेदना। पेट में एकाएक दर्द। गल-नली में झटके, गल-कोष सिकुड़ा हुआ, खाना और पीना एकाएक रुक जाये फिर भारी चीज की तरह पेट में गिरे। झटकों के बाद आंशिक लकवा। पेट में ठण्डापन। फल और बरफ का पानी ठण्डी हालत में पेट में पड़ा रहे। दाहिनी तरफ का लकवा। झूला की तरह हिलना आवश्यक। वात प्रवृत्ति। कान, नाक और गले का लक्षण विशेष ध्यान देने योग्य।

मन—उदास, किसी दूसरे को बात करते सुनने की कल्पना। अकेले रहने का भय। पानी बरसने का भय। बोल सके मगर बोली न समझे। गशी का भय।

सिर—तीव्र सिर दर्द, माथे से पिछले भाग तक बढ़े; पहले एक आँख फिर दूसरी आँख पर। कानों में दर्द। चक्कर, आगे गिरने की सम्भावना। माथे में बोझ और दर्द। सिर में भरापन।

आँख—प्रकाश से घृणा, पढ़ते समय अक्षर एक दूसरे में मिल जायें। आँखों के आगे पर्दा जैसा। पलकों में जलन। सुबह को आँखों के चारो ओर फूलन। आँखों के आगे आग का धब्बा दिखाई दे।

कान—मैल काला, कड़ा, ऊँचा सुनाई देने के साथ या पानी-सा, हरियाली वाला घृणित स्राव; भिनभिनाहट और सुनने का भ्रम। एकाएक रात को बहरापन का हमला, गरजन और पटपटाहट के साथ; निगलने पर कानों में चुरचुराहट। कानों में असह्य खुजली।

नाक—नाक का जीर्ण जुकाम, घृणित गंध और हरी पपड़ी के साथ। पीनस रोग, पीला-हरा स्राव। श्लैष्मिक झिल्ली चुचकी, नथुने ठसे और श्लेष्मा सूखा। निगलने पर नाक से कान तक दर्द। नाक का ऊपरी भाग बन्द। नाक से खून बहना। नाक की जड़ में दर्द। नाक के आसपास फरन।

गला—गल-नली की पिछली दीवार पर मोटी, अति घृणित सूखी, हरी, पीली खुरण्ड और अति दुर्गन्धित साँस। गलनली में झटके के साथ सिकुड़न, पतली चीज भी रुक जाये।

सीना—पीने के बाद सीने में ठंडापन। फुफ्फुस से रक्तस्राव, काला स्याही जैसा और पानी-सा, दाहिने फुफ्फुस के सिर पर चिलकन। झुकने से मूर्च्छा। ऊपर चढ़ने से साँस में कष्ट। हथेली और अंगुलियों की खाल उधड़ना। फुफ्फुस के आरपार तीव्र पीड़ा के साथ खाँसी, दाहिनी तरफ अधिक और काला, खूनी बलगम। गलकोष में स्पंज धरा जैसा मालूम हो।

पेट—ठण्डा लगे। ऐसा मालूम दे कि भोजन निगलते ही कार्क निकालने वाले पेंच की तरह हो गया हो। मीठे, मक्खन निकाले दूध पीने की इच्छा। हर कौर के बाद तेजाबीपन।

स्त्री—कष्टप्रद मासिक धर्म, काले खून के साथ। दो मासिक काल के बीच वाले समय में काला खून बहना। योनि घुण्डी और योनि की खाज।

नींद—मरे हुए लोगों का स्वप्न देखना।

चर्म—बगल का चर्म और ग्रन्थियाँ रोगग्रस्त, दाद के साथ खुजली। अंगुलियों के सिरों की खाल उघड़े। काँखों में खुजली वाली फरन।

अंग—पैर बरफ जैसे ठंडे। पैरों पर रस भरे दाने। हाथ, बाँह सूज कर नीले रंग के हो जायें। घुटनों के जोड़ मोच खाये जैसे लगें। नाखूनों के नीचे चुभन।

ज्वर—सारे शरीर पर ठण्डा पसीना। मोती झरा ज्वर जब घाव तन्तुओं के भीतर तक पहुँच कर उनको नष्ट करने लगे और काला खून निकलने लगे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना; फल खाने से, ठण्डी चीज पीने से, तर मौसम में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : किनो-टेरोजार्पस से (थूक से और आँतों से खून जाना)। युक्लिपटस रोस्ट्रेटा (दाहिने कान से घृणित, काला स्राव) क्रोटैलस, एलुमेन, कार्बोबेज, आर्सेनिक, लैकेसिस।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

एलैटेरियम-एक्बैलियम (Elaterium Ecbalium)

(स्क्विरटिंग क्युकम्बर)

यह प्रचण्ड दस्त और कै की एक अमूल्य औषधि है खासकर जब यह दोनों अधिक मात्रा में पानी जैसे हों। यह शोथ रोग के कुछ प्रकारों में अति लाभदायक दवा है। अधिक जम्हाई और अँगड़ाई। बेरी-बेरी, हैजे के लक्षण, मलेरिया के दब जाने के कारण जुलपित्ती और मानसिक विकार। रात के समय घर से बाहर इधर-उधर घूमने की प्रबल इच्छा, तर मौसम के प्रभाव।

पेट—बहुत कमजोरी के साथ मिचली और कै। आँतों में चुभन दर्द।

मल—पनीला, अधिक तेजी से। छरछराहट वाला दस्त, झागदार गहरा हरा, उदर में कटन के साथ।

अंग—हाथ की अंगुलियों और अंगूठों में, घुटनों में, पैर की अंगुलियों में और भीतरी भाग में तीखा दर्द। पैर के अँगूठों में गठिया जैसा दर्द। दर्द अङ्गों के नीचे तक बढ़े; सन्धि में दर्द, दस्त के साथ। जोड़ों में गाँठें और सूजन।

चर्म—तेज दर्द, बींधन, जलन। शोथमयी। सविराम ज्वर के दब जाने से जुल-पित्ती उभरना। नारंगी का चर्म।

ज्वर—जम्हाई और अँगड़ाई के साथ शीत, जो पूरे शीत काल तक रहे। अंगों में दर्द जो अंगुलियों तक लपके। शीत ज्वर, छरछराहट वाले दस्त के साथ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तर जमीन की ठंडक लगने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ब्रायो०, क्रोटन०, गैम्बोजिया।

मात्रा—३ से ३० शक्ति। शोथ रोग में जलस्राव बढ़ाने के लिए, एलैटेरिन ½ ग्रेन। केवल कष्ट कम करता है।

इओसिन (Eosin)

कर्कट रोग, अनेक प्रकार के सन्धि प्रदाह की दवा। डा० बी० सी० उडबरी ने शक्तिनिर्माण सिद्ध किया। लक्षणों का संक्षिप्त विवरण :—

जलन—हाथों और पैरों के नीचे और तलवों में।

खुजली और लाली घुटनों की टोपी में।

लाली—हथेलियों में।

लाली, जलन और सुन्न होना जबान का।

अधिक लम्बे होने की विचित्र संवेदना और चक्कर आने की संभावना।

जलन—शरीर के अनेक भागों के चर्म में।

खुजलाने पर जगह बदलना, खुजलाने से कम।

मात्रा—२ दशमलवीय शक्ति (१ प्र० श० सोल्यूशन)

एपिजिया रेपेंस (Epigea Repens)

(ट्रेलिंग क्षारबुटस)

मूत्रकृच्छ्र के साथ जीर्ण मूत्राशय प्रदाह, मूत्र स्खलन के बाद कूँथन; श्लैष्मिक मवाद, और यूरिक अम्ल की तलछट, पथरी, मूत्र-नलिकाओं में पथरी। पेशाब में कत्थई रंग का महीन बालू। पेशाब करते समय मूत्राशय की गरदन में जलन और पेशाब करने के बाद कूँथन। मूत्र-पिण्ड के आवरण का प्रदाह, पेशाब रुकना। आँतों में कड़कड़ाहट और गड़गड़ाहट।

सम्बन्ध-तुलना कीजिए : इयुबा, चिमाफिला, लाइकोपोडियम, पेरीरा। एपिजिया में आरब्युटिन होता है और फॉरमिक एसिड भी।

मात्रा—अरिष्ट की ५ बूँद हर तीन घण्टे पर।

एपिफेगस-ओरोबैंशे (Epiphegus-Orobanche)

(बीच ड्राप)

अस्वस्थ स्नायु; दौर्बल्यग्रस्त और स्नायविक सिर दर्द, खासकर स्त्रियों में जो अत्यधिक परिश्रम, बाजार करने इत्यादि से पैदा हो। जबान पर पीला मैल, कड़वा स्वाद। भोजन के बाद औंघाई। ढीला मल। जरायु की अल्प वृद्धि, कष्टप्रद मासिक धर्म और रक्त-संचयता के साथ।

सिर—बाहर के भीतर की तरफ कनपटियों में दाब दर्द, बायीं तरफ अधिक। लसिका लार, थूकने की लगातार इच्छा। अस्वस्थ सिर दर्द जो मामूली कामों के अतिरिक्त अन्य काम करने से पैदा हो। शारीरिक या मानसिक थकावट के कारण सिर दर्द जिसके पहले भूख लगे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : खुली हवा में काम करने से घटना : सोने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : आइरिस; मेलिलोटस; सैंग्विनेरिया, फेगस—बीच नट्स—(सिर दर्द और लार बहना, मुँह का सूजना, पानी से भय)।

मात्रा—१ से ३० शक्ति।

इक्विसेटम (Equisetum)

(स्काउरिंग रश)

मूत्राशय पर मुख्य प्रभाव । अनेक बार मूत्रस्खलन और मूत्रकृच्छ्र की औषधि ।

मूत्र—मूत्राशय में अधिक टीस और भरापन का संवेदन, मूत्र-स्खलन से कम न हो । घड़ी-घड़ी तीव्र पीड़ा के साथ पेशाब लगना जो पेशाब खतम होते-होते उठे । पेशाब बूँद-बूँद टपके । पेशाब करते समय मूत्राशय में तेज जलन, कटन, दर्द ।

बच्चों में, पेशाब करते समय स्वप्न या रात्रि-भय के साथ पेशाब रुकना । वृद्ध स्त्रियों में अनैच्छिक मलत्याग के साथ भी पेशाब रुकना । पेशाब में अधिक श्लेष्मा । मूत्र में ऐल्बुमेन । अनैच्छिक मूत्र-स्खलन ।

गुर्दे—दाहिने गुर्दे में गहराई तक जो उदर से निचले भाग तक बढ़े और साथ में तेज पेशाब लगे । दाहिना कटि प्रदेश दर्दीला ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दाहिनी तरफ, हरकत, दाब, स्पर्श, बैठना, घटना : तीसरे पहर लेटने से ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : हाइडरैंजिया, फेरम फॉस, एपिस मेलिफिका, कैंथेरिस, लिनैरिया, चिमाफिला अम्बेलाटा । एक्विसेटम में विशेष मात्रा में सिलिका होती है ।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति । चाय के चम्मच के बराबर काढ़ा या अरिष्ट गरम पानी में घोलकर मूत्र मार्ग के कष्ट, पथरी, मूत्रकृच्छ्र को कम करने में लाभदायक होता है, इसके अतिरिक्त फुफ्फुस प्रदाह के स्राव और शोथ को घटाने के लिए भी ।

एरेक्थाइटेस (Erechthites)

(फायर वीड)

एक रक्त प्रवाहक औषधि । चमकीले खून की नकसीर । किसी भाग से रक्तस्राव, खासकर फुफ्फुस से सदा रक्त संचालन की उत्तेजना के साथ । गरमी और ठण्डक के दौरे । थोड़ा पेशाब, अंगों का शोथ ।

चर्म—रसटक्स विष आक्रमण की तरह लक्षण ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एरिजेरन, मिलेफोलियम; हेमामेलिस, रसटॉक्स ।

मात्रा—अरिष्ट । ओक विष के लिए बाहरी प्रयोग ।

एरिजेरन-लेप्टिलॉन कैनाडेंसे
(Erigeron Leptilon Candense)
(फ्ली वेन)

इस औषधि से रक्तस्राव उत्पन्न होते हैं और अच्छे होते हैं। मूत्राशय से लगातार रक्तस्राव। दर्दीले मूत्र-स्खलन के साथ गर्भाशय से रक्तस्राव। अधिक चटक लाल खून। बायें डिम्बाशय और कूल्हा में दर्द। जीर्ण सुजाक, मूत्र-स्खलन में जलन के साथ जीर्ण सुजाक। पेट का तनाव।

स्त्री—गर्भाशय से अप्राकृतिक रक्त स्राव, साथ में मलाशय और मूत्राशय में उत्तेजना और गर्भाशय का बाहर निकलना। चमदार लाल खून। अतिरजः, अधिक प्रदर, खूनी प्रसव स्राव जरा सी हरकत से शुरू हो, फलक कर निकले, दो मासिक-धर्म के बीच में मूत्र-यन्त्र की उत्तेजना के साथ प्रदर। गर्भिणी स्त्री जिनका गर्भाशय कमजोर हो, जरा-से परिश्रम पर खूनी स्राव। खून बवासीर, मासिक धर्म की जगह नकसीर (ब्रायो०)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बायीं तरफ।

सम्बन्ध—टेरेबिन्थिना इसके समान है।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति। एरिजेरन का तेल १x पेट के तनाव के लिए; आंतरिक व्यवहार। तेल का एक ड्राम एक अण्डे के और एक पाइण्ड दूध के साथ मिलाकर एनिमा देने से घोर पेट तनाव कम होगा।

एरियोडिक्टयोन (Eriodictyon)
(एर्बा सैण्टा)

दमा और वायु-नलिका समूह के रोगों की औषधि। श्वास-नलीय क्षय रोग, रात पसीना और दुबलापन। दमा, बगलम निकलने से कम हो। इन्फ्लुएंजा के बाद खाँसी। फुफ्फुस की थैलियों में रसस्राव को सुखाने में मदद देती है। भूख कम, पाचन दुर्बल। कुकुर खाँसी।

सिर—चक्कर, नशा जैसा मालूम हो। दाब बाहर की तरफ, कनपटियों में अधिक। कानों में दर्द। जुकाम। गले में जलन। सुबह को मुँह में दुर्गन्ध। चक्कर और छींक के साथ जुकाम।

श्वास-यन्त्र—आवाज के साथ साँस, दमा के साथ जुकाम और श्लैष्मिक स्राव। दाहिने फुफ्फुस का धीमा दर्द। गले में जलन। जीर्ण श्वास नलिका प्रदाह; श्वास नलिका क्षय रोग, साथ में अधिक, आसानी से निकलने वाला स्राव जिससे कुछ आराम मिले।

पुरुष—अण्डकोषों में चोटीलापन, खींच, दाब सहन न कर सके, हल्के सहारे से अच्छा रहे।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ग्रिडेलिया, एरैलिया रेसिमोसा, युकैलिपटस; इपिकाक।

मात्रा—अरिष्ट २ से २० बूँद की मात्रा और शक्तियाँ भी।

एरिंजियम ऐक्वैटिकम (Eryngium Aquaticum)

(बटन स्नेक रूट)

मूत्र रोग की दवा। मूत्रकृच्छ्र इत्यादि, अधिक स्नायविक कामोत्तेजना के साथ गाढ़ा पीला श्लेष्मा का स्राव। इन्फ्लुएंजा। पसीने में मूत्र के अम्ल का निकलना, शाम को मूत्र की महँक का पसीना हो।

श्वास-यन्त्र—रुकावट की संवेदना के साथ खाँसी। गले और स्वर-यन्त्र में कड़क।

मूत्र—मूत्राशय और गर्भाशय की कूँथन। कठिन और घड़ी-घड़ी पेशाब लगना। विटप देश के पीछे दर्द। आक्षेपिक रुकावट। वृक्कशूल (पैरीरा, एसिड, कैल्केरिया) गुर्दों की सूजन; पीठ में धीमा दर्द के साथ, जो मूत्र मार्ग और अंगों तक नीचे उतरे। उत्तेजनीय मूत्राशय जो मूत्र-ग्रन्थियों के बढ़ने या गर्भाशय के दाब से उत्पन्न हो।

पुरुष—ग्रन्थि रस का निकलना, जरा-सी वजह से। बिना लिंगोत्तेजना के वीर्य निकलना अति सुस्ती के साथ (डायस्कोरिया विलोसा, कैनाबिस०, फासफोरिक एसिड)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कोनियम, डायस्कोरिया०, ओसिमम०, क्लेमैटिस इरेक्टा।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

एसकौल्जिया कौलिफोर्निका (Eschscholtzia Californica)

(कैलिफोर्निया पॉपी)

जानवरों पर प्रयोग करने से यह मालूम हुआ कि इसका असर मॉरफिन से अधिक होता है जो इस पौधे में पाई जाती है। इससे सर्व कमजोरी पैदा होती है। निद्रालुता, साँस तेज, अंगों का पूर्ण लकवा। रक्त-संचालन क्रिया का धीमा पड़ना।

नींद लाने वाली औषधि जो और कोई नुकसान नहीं करती। अरिष्ट ही व्यवहार करें।

युकैलिप्टस ग्लोब्युलस (Eucalyptus Globulus)

(ब्लु गम-ट्री)

युकैलिप्टस एक शक्तिशाली कीटाणुनाशक और निम्न प्रकार के जीवधारी कीड़ों को नाश करनेवाली है, एक शक्ति-वर्द्धक स्राव निस्सारक और उत्तम पसीना लानेवाली है। कमजोर करनेवाली मंदाग्नि, पाकाशयिक और आंत्रिक नजला। एक ऐसी औषधि जो जुकामी अवस्थाओं पर, मलेरिया और आँतों के विकार पर स्पष्ट रूप से प्रभाव रखती है। इन्फ्लुएन्जा। बार-बार वापस आने वाला ज्वर। पेशाब बढ़ाती है और मूत्र क्षार को अधिक करती है। रक्त-स्राव, आन्तरिक और स्थानीय (हैमामेलिस) आन्त्रिक ज्वर। शिथिलता और रक्त-दोष के लक्षण। वायु मार्ग की श्लैष्मिक झिल्ली के विकार, प्रजनन-मूत्र यन्त्रों के रोग, पाकाशयिक आन्त्रिक मार्ग के विकार। खाने के कई घण्टों के बाद पेट और ऊपरी आँतों में दर्द के साथ पाकाशयिक आंत्रिक उत्तेजना।

सिर—प्रफुल्लता। व्यायाम की इच्छा। धीमा, रक्ताधिक्यजनित और दर्द। जुकाम, गले में खारिश। आँखों का तीव्र दर्द और जलन।

नाक—ठसापन का संवेदन, पतला, पानी-सा जुकाम, नाक बहना बन्द न हो, नाक के पुल के आर-पार कसावट। जीर्ण जुकाम, मवादी और घृणित स्राव। बहु-छिद्रास्थि और अग्र छिद्र के विकार।

गला—ढीलापन, मुँह और गले की घाव वाली अवस्था। जलन, भरापन, गले में लगातार बलगम की संवेदना। बढ़ा हुआ और घाववाला तालुमूल और सूजा गला (अरिष्ट का स्थानीय प्रयोग करें)।

पेट—मन्द पाचन। अधिक घृणित वायु। कौड़ी धमनी में टपकन के साथ धड़कन और कार्यहीनता का संवेदन। कौड़ी प्रदेश में और ऊपरी उदर में दर्द, खाने से कम। पेट का कठिन रोग, खून और खट्टे पानी की कै के साथ।

उदर—तीव्र दस्त। आँतों में टीस और दस्त की सम्भावना के साथ। पेचिश, गुदा में गरमी के साथ, कूँथन, रक्त-स्राव। दस्त—पतला मल, पानी-सा, तेज दर्द के बाद। मोतीझरा ज्वर का दस्त।

मूत्र—तीव्र गुर्दा प्रदाह, इन्फ्लुएन्जा के बीच में गड़बड़ी करे। खून का पेशाब। गुर्दों की पकन-सूजन। पेशाब में मवाद हो और क्षार कम हो। मूत्राशय में स्खलन शक्ति की कमी। जलन और कूँथन, मूत्राशय का जुकाम, अधिक पेशाब होना, मूत्रमार्ग में जलन। जहरबाद। आक्षेपिक पेशाब, नली की सिकुड़न, सूजाक।

श्वास-यन्त्र—अधिक साँस कष्ट और दिल की धड़कन के साथ दमा रोग। तर दमा। बलगम सफेद, गाढ़ा। वृद्ध लोगों का वायु नलिका प्रदाह। वायु नलिकाओं

से अधिक स्राव (बैल्सम पेरूवियेनम)। घृणित श्लैष्मिक मवाद। स्राव की अधिकता। उत्तेजनीय खाँसी। सूखे बच्चों की कुकुर खाँसी। वायु-नलिका प्रदाह की दूषित अवस्था, उनका फैलना और वायुस्फीति।

स्त्री—तीखा, घृणित प्रदर। मूत्रमार्ग के मुँह पर घाव।

अंग—वात दर्द, रात में अधिक या टहलने और कोई चीज उठाकर ले जाने से। तना, थका संवेदन। चुभन संवेदन, बाद में दर्दीली टीस। कलाई और अँगुलियों के बीच की हड्डी की जोड़ों में और पैर के तलवों के ऊपर वाले भाग की हड्डियों पर कड़ी गुठलियाँ।

चर्म—ग्रन्थियों का बढ़ना और जोड़ों पर गुठलियाँ। घृणित और मन्द घाव। दाद जैसी फरन।

ज्वर—तापाधिक्य। लगातार और आन्त्रिक ज्वर। अरुण ज्वर, रक्षक और स्वास्थ्यप्रद स्रावों की दूषित प्रवृत्ति, ऊँचा ताप, तेज लेकिन कमजोर नाड़ी। अरिष्ट का व्यवहार करें।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : **आयल ऑफ युकैलिप्टस**—विचित्र स्पष्ट शारीरिक शिथिलता उत्पन्न करती है, किसी हरकत की इच्छा न होना, कोई मानसिक कार्य विशेष न कर सके, पढ़ना इत्यादि। दूसरे टर्पेस की तरह इसका उड़ने वाले तेल में पानी की हवा और सूर्य की रोशनी में हाइड्रोजन-ऑक्साइड में परिवर्तित करने और ओषजन को ओजोन में परिवर्तित करने का गुण होता है, यही इसके गन्ध हरण और कीटाणुनाशक गुणों का कारण बताया जाता है (मैरेल)। लगाने या बाहरी उपयोग में जुकामी व्याधि में जब खास कर पकन अवस्था उपस्थित हो। **युकैलिप्टस टेरेटिकोरिस** (मासिक कालीन खाँसी और शिथिलता)। **युकैलिप्टोल** (कुनैन से बढ़कर स्वस्थ शरीर का ताप कम करती है, गुर्दों पर टेरेबिथ की तरह काम करती है) **एनाकार्डियम औरियेण्टेलि, हाइड्रैस्टि०, कैलि सल्फ**। **युकैलिप्टस स्ट्रिकनाइन** के बुरे असर को मारता है। **एञ्जोफोरा**—रेड गम (पेचिश, दर्द, कूँथन, चेहरे के बल पर लेटने कम, कठोर कब्ज) **युकैलिप्टस रीसट्राटा काइनो**।

मात्रा—अरिष्ट की १ बूँद से २० बूँद और नीचे की शक्तियाँ। ऑयल ऑफ युकैलिप्टस ५ बूँद की खुराक में।

युजेनिया जैम्बोस (Eugenia Jambos)

(रोज ऐपल)

युजेनिया एल्कोहल की तरह नशा पैदा करती है। सभी चीजें बड़ी और सुन्दर दिखाई देती हैं, कौतूहल जल्द ही उदासी में बदल जाता है। मुँहासे सादे और

कड़े। दानों के चारों तरफ कुछ दूर तक दर्द हो। गुलाबी मुँहासे। मिचली, धूम्रपान से कम। काले मस्से।

सिर—सिर दर्द जैसे कोई तख्ता दाहिनी तरफ रक्खा हो, बकवादी। गरमी। जल आँखों से बहना।

अंग—तलवों में हर रात को ऐंठन (कूप्रम मेटा० जिंजिबर)। पैर की अंगुलियों से पास खुजली और उनके बीच में दरारें। नाखूनों से चर्म का पीछे हटना, मवाद बहना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : युजेनिया चेकन-माइर्टस चेकन—(जीर्ण वायु नलिका प्रदाह); ऐंटिम टार्ट, बर्बेरिस, एक्वि फोलियम।

युओनाइमस एट्रोपरप्यूरिया
(Euonymus atropurpurea)
(बाहू—वर्निङ्ग बुश)

साँवले रङ्ग वाली स्त्रियाँ इस दवा से जल्द प्रभावित होती हैं, इससे सिर दर्द, मानसिक गड़बड़ी, जिगर और गुर्दा प्रदेश में बहुत कष्ट पैदा हो जाता है; मूत्र में ऐल्ब्युमिन आना; अधकपारी। जिगर में बन्द रक्ताधिक्य और कार्यमन्दता, पेट और आँतों की जीर्ण जुकामी अवस्थायें। कमजोर दिल। जीर्ण वात रोग और गठिया।

मन—मानसिक गड़बड़ी, आशाहीन, चिड़चिड़ापन, स्मरण शक्तिहीनता, जाने हुए नाम भी याद न कर सके।

सिर—अगले भाग में भारीपन, दर्द। चोटीलापन, थकावट, सिर चर्म में कुचलन ऐसी संवेदना। दाहिनी आँख पर दर्द जो सिर से होकर पीछे को जाये, पित्त का सिर दर्द, जबान मैलदार, स्वाद खराब, कब्ज, चक्कर, धुँधलापन और अन-पच, मूत्र के ऐल्बुमिनाधिक्य से सम्बन्धित हो। भौं के ऊपर सिर दर्द।

पेट—मुँह सूखा, लसीला स्वाद, प्यास, पेट में भारीपन और असुविधा।

उदर—वादी भरा और दर्द। गुदा में दर्द और जलन। बवासीर और तेज पीठ दर्द के साथ कब्ज। दस्त, बदलने वाला मल अधिक, खूनी। नाभि क्षेत्र में दर्द।

मूत्र—पेशाब थोड़ा, गहरा रङ्ग, अधिक क्षारीय तेजी से बहे।

पीठ—कन्धों के बीच में और गुर्दों व तिल्ली के आसपास धीमा दर्द, कटि प्रदेश में दर्द, लेटने से कम हो।

अंग—सभी जोड़ों में दर्द खासकर टखनों में। पैर सूजे हुए और थके मालूम पड़ें।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—ठंडी हवा के झोंके से और दाब से कम हो। शाम को बढ़े।

संबंध—युओनाइमस युरोपिया—स्पिंडल-ट्री (जिगर विकार, पित्ताक्रमण, कटि वात, पाकाशयिक विकार, साथ में पेशाब में ऐल्बुमेन अधिक जाना। गालों की हड्डियों, जबान में, लिंग में, मूत्राशय तक कटन दर्द)। पोलोफाइम; एमोनियम प्रिकेटम, चेलिडोनियम मेजस, युओनाइमिन १x विचूर्ण (मूत्र में अंडे की सफेदी ऐसी वस्तु का जाना)।

मात्रा—अरिष्ट और नीची शक्तियाँ

युपैटोरियम एरोमेटिकम (Eupatorium Aromaticum)

(पूल-रूट)

प्रचण्ड स्नायविक उत्तेजना, बेचैनी और रोगग्रस्त जागरण, मूर्च्छा वायु और ताण्डव रोग। मन्द ज्वर, घोर बेचैनी के साथ। चिमटे घाव वाले रोग। स्तन घुण्डी दर्दीली, बच्चों का मुँह दर्दीला, पित्त की कै करना, दर्द, सिर दर्द और ज्वर।

सम्बन्ध—लैपसाना कमुनिस—निपिल वर्ट—स्तन-घुण्डी की पीड़ा और बवासीर में लाभदायक; हायोसायमस, केनाडेन्सिस, पैसिफ्लोरा इन्कार्नेटा, हाइड्रैस्टिस, म्युरेक्स परपुरिया।

मात्रा—अरिष्ट बाहर लगाने के लिए मुँह की छरछराहट और स्तनघुण्डी के दर्द में। आन्तरिक व्यवहार के लिए अरिष्ट से ३ शक्ति।

युपैटोरियम परफोलियेटम (Eupatorium Perfoliatum)

(थॉरोवर्ट)

ज्वर विकारों में जैसे मलेरिया और इन्फ्लुएंजा में यह औषधि इतनी तेजी से तत्काल शरीर और पेशियों की पीड़ा को दूर करती है कि इनका नाम ही "बोन सेट" पड़ गया है। युपैटोरियम का मुख्य कार्य-क्षेत्र पाकाशय जिगर यन्त्रों पर और वायु नलिका की श्लैष्मिक झिल्लियों पर है। यह औषधि रोगकारी दूषित वाष्प के जिलों में, नदियों के किनारे, दलदल इत्यादि में और ऐसी जगहों में जहाँ हड्डी पीड़ा की अधिक सम्भावना हो, एक ईश्वरीय उपहार है। जीर्ण पित्त सम्बन्धी सविरामिक ज्वर में शरीर विकार। अधिक मदपान के कारण शारीरिक क्षीणता। शरीर के सभी यन्त्रों

का काम न करना। अस्थि पीड़ा, सर्वाङ्गिक और तीव्र। चोटीलापन। सामयिकता स्पष्ट (आर्सेनिक, चाइना, सीड्रन)।

सिर—थरथराहट दर्द। मालूम पड़े कि सीसे की भारी टोपी पूरे सिर पर कस कर दबा दी गयी है। चक्कर बायीं तरफ गिरने जैसा लगे। पित्त की कै। चाँद और पीठ में दर्द और आँखों के ढेलों में चोटीलापन। सामयिक सिर दर्द, हर तीसरे और सातवें दिन आए। लेटने पर कनपटियों में दर्द, बोझ जैसा लगे।

मुँह—किनारों में फटन, जबान पर पीला मैल, प्यास।

पेट—जबान पीली। कड़वा स्वाद। जिगर प्रदेश चोटीला। प्यास अधिक। कै और ओकाई पित्त की, हरी, पतली, एक बार में कई बाव। पहले प्यास फिर कै। हिचकी (सल्फ्यु० एसिड, हाइड्रोसियानिक एसिड)। कसा कपड़ा न पहन सके।

मल—बार-बार, हरा, पानी-सा। मरोड़। जिगर पीड़ा के साथ कब्ज।

श्वास-यन्त्र—छींक के साथ जुकाम। गला बैठना और खाँसी, सीने में दर्द इन्फ्लुएन्जा। जीर्ण, ढीली खाँसी, सीना चोटीला, रात में अधिक। हाथ और घुटनों के बल उकड़ू होने से खाँसी में कमी।

ज्वर—पसीने से सिर दर्द छोड़कर सभी लक्षणों में कमी। ७ से ६ बजे सुबह को सर्दी, पहले प्यास और हड्डियों में अधिक टीस। सर्दी या गरम अवस्था के बाद मिचली, पित्त की कै, थरथराहट सिर दर्द। अति अधिक प्यास लगने के कारण जाना जाता है कि कम्प आवेगा।

अंग—पीठ में टीस दर्द। अंगों की हड्डियों में टीस और मांस में चोटीलापन। बाहों और कलाई में टीस। अंगूठों में सूजन। गठिया दर्द और जोड़ों पर हड्डी गुल्म, सिर दर्द सम्बन्धित। शोथमयी सूजन।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : निश्चित काल पर। घटना : बात-चीत करने से, हाथों और घुटनों के बल उकड़ूँ होने पर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए। ब्रायोनिया, सीपिया, नैट्रम-म्यूर०, चेलिडोनियम। नाइक्टैन्थेस आर्बर—ट्रिस्टिस (पित्त ज्वर, प्रचण्ड प्यास, सर्दी के अन्त में पित्त की कै, बच्चों के कब्ज में भी)।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

युपैटोरियम परप्युरियम (Eupatorium Purpureum)

(क्वीन ऑफ दी मीडो)

सांडलाल मूत्र; मधुमेह, कष्टकर मूत्र स्राव, उत्तेजित मूत्राशय, मूत्र-ग्रंथि का बढ़ना, यह सभी इस दवा के कार्य क्षेत्र में आते हैं। गुर्दों के साथ उत्तम काम

करती है। गनगनी और पीड़ा ऊपर को उठते हैं। नपुंसकता और बाँझपन। गृह-व्याधि।

सिर—चक्कर के साथ बायीं तरफ का सिर दर्द। बायें कन्धे से सिर के पिछले भाग तक दर्द। पुराना सिर दर्द सुबह से शुरू हो, तीसरे पहर और शाम को अधिक हो, ठण्डी हवा से बढ़े।

मूत्राशय—गुर्दों में गहरा धीमा दर्द। पेशाब करने पर मूत्राशय और मूत्र मार्ग में जलन। मात्रा कम, दूधिया। पेशाब रुकना। खून का पेशाब। लगातार इच्छा, मूत्राशय मन्द लगे। कष्टदायक पेशाब। स्त्रियों के मूत्राशय में उत्तेजना। बहुमूत्र।

पीठ—वजन और भारीपन कमर और पीठ में।

स्त्री—बायीं तरफ के डिम्बाशय के चारों तरफ दर्द। गर्भपात का भय। योनि का बाहरी भाग भींगा जान पड़े।

ज्वर—सर्दी के समय प्यास न हो, मगर माथे में टीस हो। गनगनी पीठ से शुरू हो। घोर कम्प, ठण्डक उसकी अपेक्षा कम हो। अस्थि-पीड़ा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये—सेनेसिओ, कैनेबिस सैट०, हेलोनियस, फास० एसिड, टिटिकम एफिजिया।

मात्रा—पहली शक्ति।

युफोर्बिया लैथाइरिस (Euphorbia Lathyris)

(गोफर-प्लैण्ट, कैपर स्पज)

इसका ताजा दुधिया रस चर्म पर लगाने में बहुत तेजाबी होता है और इसका फल दस्तावर और जहरीला होता है। रस से चर्म पर लाली, खाज, दाने और कभी-कभी सड़न तक होती है। इसलिए यह सभी लक्षण इस औषधि का विसर्प रोग, ओक विष, इत्यादि में उपयोग करने योग्य संकेत करते हैं। वात पीड़ा जो आराम के समय हो। पक्षाघात, जोड़ों में कमजोरी।

मन—सन्निपात दृष्टि-भ्रम। गशी, अचेतना।

आँखें—पलकों के शोथ के कारण लगभग बन्द-सी हों।

नाक—नाक का बाहरी भाग सूजा हुआ। श्लैष्मिक झिल्ली घाव के साथ-साथ अति उत्तेजना और शोथमयी।

चेहरा—पहले गालों पर स्वस्थ गुलाबी चमक, बाद में मुर्दे जैसा पीला। माथे पर ठंडे पसीने की बूँद। लाल फूला और कहीं-कहीं पके मवादी चकत्ते। लाल चकत्तों का चर्म रोग, चेहरे से शुरू होकर बालों वाली जगहों तक बढ़े और तब सारे शरीर में

फैल जाये, इस क्रिया में लगभग आठ दिन लगें। फरन, चमकीली, खुरदरी; शोथ-मयी; जलन और कड़क के साथ, छूने और ठंडी हवा से बढ़े, बन्द कमरे में और मीठा तेल लगाने से कम। महीन चोकर की तरह भूसी छूटना। मकड़ी के जाले जैसा सवेदना। चेहरे में छूने पर गड़न, कड़क, जलन पैदा हो।

मुँह—जबान पर मैल, चिकना, तीखा स्वाद। साँस ठण्डी, भुकसाइन गंध।

पेट—मिचली और कै अधिक मात्रा में साफ पानी की, जिसमें सफेद चमकीले ढोंके मिले हों।

मल—अधिक मात्रा के प्रयोग से तेज दस्त और कम मात्रा के प्रयोग से केवल ढीला मल, बाद में कई हफ्तों तक कठोर कब्ज होना। सफेद चमकदार श्लेष्मा का मल, बाद में खून मिला।

मूत्र—अधिक मात्रा में।

पुरुष—अंडकोष की सूजन जिससे गहरे तीखे घाव हो जायें; उसमें घोर खुजली और जलन हो, उस भाग को धोने के लिए छूने से कष्ट बढ़े।

सांस-यन्त्र—श्वास कष्ट। साँस ठंडी, असह्य दुर्गन्ध खाँसी पहले ठोंकने वाली जैसे गंधक का धुँआँ अन्दर जाये, बाद में कुकुर खाँसी की तरह दौरा वाली खाँसी जो क्रमिक रूप से आवे, दस्त और कै में अन्त हो, बीच के समय में नींद अधिक आवे।

दिल—कमजोरी और फड़फड़ाती क्रिया। नाड़ी १२०, भरी उछलती, कुछ-कुछ क्रमभ्रष्ट।

नींद—रात में बेचैनी। नींद में विघ्न, उत्सुक स्वप्न।

ज्वर—तापाधिक्य। शरीर घोर पसीना से भींगा हो, माथा पर पसीने की बूँदें दीख पड़ें, बाद में माथे पर ठंडा, लसीला पसीना।

चर्म—लाल, चकत्ते, बिना ढँके भाग से शुरू हों, चेहरे पर और सारे शरीर पर फैले, चमकीला, खुरदरा, शोथमयी, जलन और अकड़न के साथ। महीन चोकर ऐसी भूसी छूटना; ठीक लाल चकत्ते के बाद हो। चर्म पर फरन, खुरदरा, पपड़ीदार; गड़न-वाली और जलन हो, खुजलाने पर गहरे दरारेदार घाव हों, पके स्थान लाल रहें।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : छूना और ठण्डी हवा। घटना : बन्द कमरा में और मीठा तेल लगाना।

सम्बन्ध—क्रिया नष्ट होती है रसटॉक्स से (चर्म लक्षण) वेरेट्रम एल्बम, (कै, ओकाई, खाँसी, गशी)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

यूफोर्बियम (Euphorbium)

(स्पर्ज--दी रेसनस जूस आफ युफोर्बिया रेसिनिफेरा)

चर्म और श्लैष्मिक झिल्ली का उत्तेजक। हड्डियों में जलन। अङ्गों में दर्द और जोड़ों में लकवा जैसी कमजोरी। साँस-यन्त्र और चर्म के लक्षण विशिष्ट। प्रचण्ड जलन, दर्द। कर्कट में दर्द। सभी चीजें अपने साधारण माप से बड़ी दीख पड़ें।

सिर—तीव्र उन्माद। घोर दाब, सिर दर्द।

चेहरा—विसर्प, पीले छाले। गालों में जलन, बायीं तरफ अधिक। आँखें सूजी हुई और सुबह को चिपकें। गालों पर सूजन। नाक की खुजली और छिद्र के पिछले भाग से श्लैष्मिक स्राव।

पेट—अधिक भूख। अधिक नमकीन लार। जल हिचकी। ठण्डी चीजों की प्यास।

उदर—धँसा, दौरे वाला वायुशूल। मल झागदार; अधिक मटियाला। खोखला मालूम पड़े।

श्वासयन्त्र—दबा हुआ साँस, मानो सीना पूरा साँस लेने लायक चौड़ा नहीं है। आक्षेपिक, सूखी खाँसी, रातदिन, दमा के साथ। प्रचण्ड बहता जुकाम, जलन और खाँसी के साथ। लगातार खाँसी, पेट के गड्ढे से सीने के बगल तक, चिलिक के साथ। काली खाँसी, सूखी खोखली खाँसी। सीने में गरम संवेदना मानो गरम निगला गया हो।

अंग—लकवा का दर्द जोड़ और रीढ़ की अन्तिम अस्थि में।

चर्म—विसर्पी सूजन खासकर गालों में। कटन, चुभन, लाल, सूजन। रस-दानेदार विसर्प। जहरबाद; पुराना, मन्द सुस्त घाव, कटन; कोंचन दर्द के साथ। पुराना मन्द घाव, दानेदार, सड़न, (इचिनेसिया, सिकेल कोर्नुटम)। घाव वाला कर्कट रोग और चर्म का उपत्वक प्रदाह।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : युफोर्बिया एमिगडेलोयडस—उड स्पर्ज—(हड्डीदार खोखलों) में दर्द, गंधक का भ्रम, चूहों की गंध मालूम पड़े। स्वाद की संवेदना मन्द हो। दस्त; कठिन मलत्याग, दर्दीला गुदा, झटकन के साथ)।

युफोर्बिया कोरोलाटा—लार्ज फ्लावरिंग स्पर्ज—एलोपैथी की एक पसीना लाने वाली, कफ छाँटने वाली और पाखाना लाने वाली दवा जो पाकाशयिक-आन्त्रिक व्याधि में दी जाती थी जब कि भयंकर मिचली भी साथ में हो। खाने की कै, पानी और श्लेष्मा भी निकले और मल भी अधिक हो। कुछ समय रुक-रुक कर आक्रमण हो। पेट में पंजा गड़ाने जैसा संवेदन, ठण्ढा (वेरेट्रम एल्ब)।

युफोर्बिया मार्जिनाटा—स्नो ऑन दी माउण्टेन—(इसके फूलों का शहद जहरीला होता है जैसा इसके गरम, तेजाबी स्वाद से मालूम होता है। दुधिया रस वैसे ही चर्म लक्षण उत्पन्न करता है जैसा **रस-टॉक्स** में है।)

युफोर्बिया पिलुलिफेरा—पिलबेयरिंग स्पर्ज—(तर दमा, हृदय सम्बन्धी साँस-कष्ट; फ्लू और वायुनलिका प्रदाह। मूत्र मार्ग प्रदाह, पेशाब करने से बहुत दर्द और अधिक इच्छा। तेजाबी प्रदर, जरा-हिलने पर अधिक हो। लू लगने से या चोट के कारण रक्त प्रवाह)।

तुलना कीजिए : सोरैलिया—ए कोलम्बियन प्लैण्ट—(कर्कट का दर्द; घाव। घृणित प्रदर। योनि खाज। गर्भाशयिक गुल्म) **क्रोटोन, जैट्रोफा, कॉलचिकम**।

क्रियानाशक—**कैम्फो॰, ओपियम**।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

युफ्रैसिया (Euphrasia)

(आइब्राइट)

विशेषतः पुतली की झिल्ली में सूजन उत्पन्न करने का असर रखती है जिसके कारण जलस्राव अधिक होता है। रोगी खुली हवा में अच्छा रहे। श्लैष्मिक झिल्ली का जुकाम; खासकर आँख और नाक की। अधिक तीखा जलस्राव आँखों से और सरल जुकामी स्राव नाक से, शाम को अधिक हो। घृणित श्लेष्मा खखारना।

सिर—आँखों में चकाचौंध से साथ फटन, सिर दर्द। **जुकामी सिर दर्द**, आँखों और नाक से अधिक स्राव के साथ।

नाक—**अधिक बहने वाला जुकाम**, घोर खाँसी और अधिक बलगम के साथ।

आँखें—**जुकामी** नेत्र प्रदाह, तीखा स्राव। **हर घड़ी पानी बहा करे**। तेजाबी पानी निकलना, सरल नाक बहना (**सीपिया** का उल्टा, स्राव गाढ़ा और तीक्ष्ण। **मर्क**—पतला और तेजाबी) पलकों की जलन और सूजन। आँखें झपकाने की प्रवृत्ति। तीक्ष्ण स्राव सरलता से बहे। पतली श्लेष्मा, हटाने के लिए झपकाना अनिवार्य, आँखों में दाब। पुतली पर छोटे छाले। शीशे का धुँधलापन। उपतारा की वात पीड़ा। कार्यहीनता से पलक का नीचे गिरना (**जेलसिमियम, कास्टिकम**)।

चेहरा—गालों की लाली और जलन। ऊपरी होंठ कड़ा।

पेट—श्लेष्मा खखारते समय कै होना। धूम्रपान से मिचली और कड़वापन।

मलाशय—पेचिश। काँच निकलना। बैठने में गुदा में दाब। कब्ज।

स्त्री—मासिक-धर्म **दर्दीला**, केवल एक घण्टे या एक दिन तक बहे, देर में, थोड़ा अल्पकालीन। **नेत्र रोग के साथ मासिक-धर्म का रुकना**।

पुरुष—जननेन्द्रियों की आक्षेपिक सिकुड़न, विटपास्थि के ऊपर दाब के साथ। श्लैष्मिक बद और सुजाकी अर्बुद। **मूत्रग्रन्थि प्रदाह**। रात में मूत्राशय की उत्तेजना, पेशाब टपकना।

श्वास-यन्त्र—खुली हवा में टहलने से घड़ी-घड़ी जम्हाई आना। अधिक खाँसी और बलगम के साथ। सुबह के समय नाक से अधिक श्लेष्मा छिनकना। इंफ्लुएंजा। सुबह गला साफ करते समय गला रुके। केवल दिन में ही कुकुर खाँसी, आँखों से अधिक पानी के साथ।

चर्म—छोटी चेचक का पहला चरण, आँखों के लक्षण दर्शनीय। बाहरी आघात के परिणाम।

नींद—खुली हवा में टहलने पर जम्हाई आना। दिन में निद्रालुता।

ज्वर—गनगनाहट और ठण्डक। पसीना, अधिकतर सीने पर, रात में सोने की अवस्था में।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम को, घर के अन्दर, सेंकने से, दक्षिण हवा से, रोशनी से। **घटना** : कॉफी से, अँधेरे में।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : **कैम्फोरा आफिसिनेलिस, पल्सेटिला**।

तुलना कीजिए : पारा हाइड्रोफाइलम-बर फ्लावर—(आँखों की जुकामी सूजन, गरम जल स्राव खुजली के साथ, पलक सूजे हुए, धीमा सिर दर्द; और ओक विष के प्रभाव को दूर करने के लिए भी) **एलियम सिपा, आर्सेनिक एल्बम, जेल-सिमिमम, कैली हाइड्रियोडिकम, सैबाडिला**।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

यूपियन (Eupion)

(ऊड-टार डिस्टिलेशन)

स्पष्ट स्त्री रोग लक्षण और सिर दर्द। गर्भाशय के **खाँसने की एक औषधि**। पीठ में दर्द, बाद में सरल प्रदर। मासिक-धर्म समय से बहुत पहले और अधिक मात्रा में। **जरा-से परिश्रम पर अधिक पसीना निकले**। घृणित स्वप्न। ऐसी संवेदना कि सारा शरीर आव जेली का बना हुआ है।

सिर—चक्कर, बिस्तर में उठ बैठने पर सभी चीजें घूम जायें। चाँद पर गरमी; चाँद से चिलकन, अंगों में होते हुए उदर और कामेन्द्रियों तक नीचे उतरे। सिर पर चोटीले, दर्दीले, छोटे स्थान। माथे में दर्दीला टपकन।

स्त्री—**दाहिने डिम्ब में जलन। स्राव प्रदर**। जीर्ण **काललनल या डिम्ब प्रणाली** सम्बन्धी रोग। गर्भाशय का झुकना। मासिक-धर्म समय से **बहुत पहले और अधिक**

मात्रा में। मासिक काल में चिड़चिड़ापन और बात करने से घृणा; सीने और दिल में जलन और चिलकन। मासिक-धर्म के बाद पीला प्रदर, तीव्र पीठ पीड़ा के साथ। जब पीठ का दर्द रुक जाता है तब प्रदर स्राव जोर से निकलता है। पेशाब करते समय योनि के होठों के बीच चोटीला दर्द। योनि-घुण्डी की तीव्र खुजली, होंठ सूखे हुए।

अंग—पिण्डलियों में ऐंठन, रात में अधिक।

पीठ—त्रिकास्थि में दर्द, मानो टूटी हो। तीव्र पीठ दर्द, किसी चीज पर सहारे के लिए ओठँगना पड़े। दर्द कोखों तक बढ़े।

सम्बन्ध—क्रियोजोट, ग्रैफाइटिस, लैकेसिस।

मात्रा—३ शक्ति।

फैबियाना इम्ब्रिकाटा (**Fabiana Imbricata**)

(पिचि)

दक्षिणी अमेरिका की एक झाड़ी जो दक्षिणी कैलिफोर्निया में उत्पन्न होती है। यह बहुत मूत्रवर्द्धक है। इसमें शक्तिदायक और पित्तदोष निवारक गुण हैं, जिसका व्यवहार नाक के जुकाम, कामला रोग और अनपच्च रोग में किया जाता है और पित्त-वृद्धि के लिए भी उपयोगी है (एल्बर्ट श्नीडर)। यूरिक एसिड बाधाओं में, मूत्राशय प्रदाह में, सुजाक में, मूत्र-ग्रन्थि प्रदाह में, मूत्र कष्ट में, मूत्र मार्ग के मुँह की सूजन और मूत्र ग्रन्थि में पीब आने की अवस्थाओं में, सूजाक के बाद मूत्र यन्त्र के रोगों में, पित्त विकार और जिगर रोग में। मूत्र मार्ग के मुँह पर कूँथन और पेशाब करने के बाद जलन। कटन पैदा करने वाला पेशाब और पथरी रोग।

मात्रा—अरिष्ट की १० से २० बूँद।

फैगोपाइरम (**Fagopyrum**)

(बक-ह्वीट)

इसका प्रभाव चर्म पर खुजली पैदा करने वाला अति महत्वपूर्ण है। धमनों में स्पष्ट टपकन। बहता जुकाम। घृणित मांस वृद्धि। खुजलीदार, लाल चकत्ते। बुढ़ापे की खुजली। नाक के पिछले भाग का नजला, सूखा खुरंड, पिछले छिद्र भाग का दानेदार दिखाई देना, साथ में खुजली।

सिर—अध्ययन करने या याद रखने में असमर्थ। उदास और चिड़चिड़ा। आँख और कान खुजलाना। दर्द, सिर की गहराई में, ऊपर की तरफ दाब के साथ। आँख और कान के चारों तरफ खुजली। सिर गरम, पीछे मोड़ने पर कम, गरदन थकी हुई, कनपटियों में दर्द। फटन दर्द। मस्तिष्क रक्त संचयता।

नाक—छरछराती, लाल सूजी हुई। बहता जुकाम, छींक के साथ, बाद में सूखापन और पपड़ी।

आँख—खुजली और चिलकन, सूजन, गरमी और छरछराहट।

गला—छरछराना और छिलन जैसा संवेदन, नीचे कण्ठ तक। घाँटी बढ़ी हुई; तालुमूल सूजे हुए।

पेट—जलती, गरम, तेजाबी, पानी-सी वस्तु जल हिचकी में ऊपर उठे; कॉफी से कम हो। सुबह को बुरा स्वाद। गर्भकाल की कठोर मिचली। लार बहना।

दिल—दिल के चारों तरफ दर्द, पीठ के बल लेटने से कम, बायें कन्धे और बाँह तक बढ़े। सोने के बाद सभी धमनियों में टपकन। दाब के साथ दिल धड़कना। नाड़ी क्रमहीन, सविरामिक, तेज। सीने में हलकापन।

स्त्री—योनि घुन्डी की तीव्र खुजली, पीले प्रदर के साथ, आराम से बढ़े। दाहिने डिम्बाशय में जलन।

अंग—गरदन की पेशियों में कड़ापन और चोटीला संवेदन तथा साथ में ऐसा मालूम पड़े कि गरदन की जड़ को न सम्हाल सकेगी। अँगुलियों में दर्द के साथ कन्धों में दर्द। बाँहों और टाँगों में तीव्र खुजली, शाम को लगभग अधिक हो। सुन्नता और चुभन। बाँहों और टाँगों में रेंगन दर्द।

चर्म—खुजली, ठण्डे पानी से धोने से कम हो; खुजलाने, छूने या सोने को जाने पर अधिक हो। छरछराते, लाल चकत्ते। बिना मुँह वाली फुन्सियाँ। घुटनों, केहुनियों और बाल वाली जगहों में खुजली। हाथों में खुजली, गहराई तक। ऊपरी खाल पर रसदाने, फुन्सियाँ और शोथमयी सूजन। चर्म गरम सूजन।

घटना-बढ़ना—घटना : ठण्डा पानी; कॉफी। बढ़ना : तीसरे पहर, धूप में खुजलाने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : डालिकोस, बीविस्टा, अरटिकायूरेन्स।

मात्रा—३ शक्ति १२ x।

फैल टौरी (Fel Tauri)

(ऑक्स गॉल)

ग्रहणी कला के स्राव को बढ़ाती है; चर्बी को पचाती है और आँतों की वमन क्रिया को बढ़ाती है। पित्त को तरल करती है और पित्त-स्राव को ठीक करके पेट साफ करती है। पाचन क्रिया मन्द, दस्त और गरदन की जड़ में दर्द आदि इसके मुख्य लक्षणों में से हैं। पित्त-नलिका की रुकावट। पित्त-पथरी। कामला रोग।

पेट—डकार, पेट में गड़गड़ाहट और कौड़ी प्रदेश में भी। घोर आंत्र दमन क्रिया। भोजन करने के बाद सोने की प्रवृत्ति।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: मर्क्युरियस डलसिस, कोमेस्टरीन (पित्त-पथरी रोग में); चाइना। कैलुकुलोबिली पित्तपथरी का चूर्ण १०-१२x (पित्त-पथरी)।

मात्रा—नीचे के विचूर्ण। विशुद्ध ऑक्स-गॉल १० ग्रेन।

फेरम आयोडेटम (Ferrum Iodatum)

(आयोडाइन ऑफ आयरन)

कण्ठमालिक रोग, ग्रन्थि वृद्धि और अर्बुद इस औषधि की पुकार करते हैं। फुन्सियों की अधिकता। चर्म फरन के बाद तीव्र गुदा प्रदाह। गर्भाशय का खिसकना। शरीर दुबला। रक्तहीनता। मासिक-धर्म दब जाने के कारण बहिःनिसृति चक्षुगोलक तथा हृद-स्पन्दन के साथ गलगण्ड। जीवन-रस के अधिक स्खलन के कारण कमजोरी। गालों पर चर्मदल।

पेट—खाना ऊपर की तरफ गले में ढकेल आवे मानो निगला ही नहीं गया था।

उदर—थोड़ा भोजन करने पर भी भारीपन, कसा लगे, मानो वह आगे को झुक न सकेगा।

गला—गड़न, खपच्ची जैसी कोई चीज गड़े। आवाज भारी।

श्वास-यन्त्र—जुकाम, नाक, गल-नली और स्वर नली से श्लेष्मा बहे। सीना पंजर के नीचे दाब, नाक की कण्डमालिक सूजन। सीना दाब जैसा जान पड़े। खाँसने में खून आवे।

मूत्र—गहरे रंग का पेशाब। मीठी मँहक। मूत्र-मार्ग और मलाशय में रेंगने जैसा संवेदन हो; मानो मूत्र नौगह्वर के पास रुक गया है। पेशाब रोकने से कष्ट। रक्तहीन बच्चों में पेशाब का न रुकना।

स्त्री—बैठने पर ऐसा लगे कि कोई चीज योनि में ऊपर को दब रही है। अधिक धँसन संवेदन, गर्भाशय का पीछे मुड़ कर बाहर निकलना। और छिद्र में खुजली।

मात्रा—३ विचूर्ण। प्रभाव अल्पकालीन।

फेरम मैगनेटिकम (Ferrum Megneticum)

(लोडस्टोन)

आंत्र मार्ग के लक्षण स्पष्ट हैं। गरदन की जड़ में दर्द। लकवे जैसी कमजोरी। हाथों पर छोटे मस्से।

पेट—खाना खाते समय पेट में वादी, बाद में सुस्ती आये, चुप रहना और गरम होना, कौड़ी प्रदेश में दर्द, खासकर साँस लेने में।

उदर—उदर में रेंगन और गड़गड़ाहट। वादी के साथ ढीला मल, वादी बायीं तरफ अधिक और टाँगों में खींचन। अक्सर अधिक दुर्गन्धित हवा खुलना।

मात्रा—३ शक्ति।

फेरम मेटालिकम (**Ferrum Metallicum**)

(आयरन)

दुर्बल रक्तहीन और पीले शरीर वाले युवक, मगर देखने में रक्ताधिक्य लगे और जल्दी ही चेहरा लाल हो उठे, ठण्डे हाथ-पैर, अति असहिष्णुता, किसी परिश्रम के काम से कष्ट बढ़े। ऐसे लोगों के लिए अधिक लाभदायक औषधि है जिनके चर्म का रङ्ग पीला हो; श्लैष्मिक झिल्लियाँ रक्तहीन लगें, चेहरा हल्के रङ्ग का, बीच में कभी-कभी लाल हो जाया करे। चेहरे, सीने, सिर, फुफ्फुस आदि में खून दौड़ जाये। शरीर में खून कहीं अधिक, कहीं कम। नकली रक्ताधिक्य। पेशियाँ ढीली और थुलथुली।

मन—चिड़चिड़ापन। थोड़ी आवाज भी असह्य हो। जरा-से विरोध पर भड़क उठे। अविश्वसनीयता। रक्तधातु।

सिर—बहता पानी देखकर चक्कर आना। चुभन सिर दर्द। मासिक-धर्म के पहले कानों में टनटनाहट ठोंकने वाला, टपकन वाला प्रादाहिक सिर दर्द, ठण्डे अंगों के साथ। दर्द दाँतों तक बढ़े। सिर के पीछे दर्द, गरदन में गरज के साथ। सिर की खाल दर्दीली। बालों को नोचा करे।

आँखें—पानी-सा स्राव; मन्द, लाल, प्रकाश असह्य, अक्षर गिचपिचा जायें।

चेहरा—आग ऐसा लाल और जरा-सा भी दर्द असह्य या परिश्रम पर भर-भरा जाये। लाल भाग सफेद हो जाये, रक्तहीन और फूल जाये।

नाक—श्लैष्मिक झिल्ली ढीली, थुलथुली, रक्तहीन, पीली।

मुँह—दाँतों में दर्द, बरफ जैसे ठण्डे पानी से कम हो। मटियाला, चिपचिपा, सड़े अण्डों जैसा स्वाद।

पेट—अति भूख या भूख एकदम गायब। खट्टी चीजों से घृणा। खाने की कोशिश से दस्त हो। मुँह में भरा खाना थूके (फास्फोरस)। खाने के बाद ही उसकी डकार, बिना मिचली। खाने के बाद मिचली और कै। खाना खाते ही कै हो; आधी रात के बाद कै होना। अण्डे न पचें। खाने के बाद पेट में तनाव और दाब। पेट में गरमी और जलन। उदर की दीवारें चोटीली। अफरा के साथ अजीर्ण रोग।

मल—रात में अनपचा मल त्यागना या खाते और पीते समय, बिना दर्द। व्यर्थ इच्छा, मल कड़ा, बाद में पीठ दर्द या मालाशय में ऐंठन हो। काँच निकलना, गुदा में खुजली, खासकर छोटे बच्चों में।

मूत्र—अनैच्छिक स्राव; दिन में अधिक। मूत्र मार्ग में गुदगुदी जो मूत्राशय तक बढ़े।

स्त्री—मासिक-धर्म एक या दो दिन तक रुक जाये, फिर बढ़े। गर्भाशय से लम्बे टुकड़े निकलें। वे स्त्रियाँ जो कमजोर, कोमल, चिड़चिड़ी होती हैं; लेकिन जिनका चेहरा लाल है। मासिक धर्म समय से बहुत पहले, मात्रा में अधिक और ज्यादा दिन तक जारी रहे, पीला, पानी-सा। योनि उत्तेजनीय, गर्भपात की प्रवृत्ति। योनि का बाहर निकलना।

श्वास-यन्त्र—सीना दबा, कठिन साँस। खून सीने में दौड़े। आवाज का भारीपन। सूखी; दौरे वाली खाँसी। खून थूकना (मिलिफोलियम) खाँसी में दर्द के साथ।

दिल—धड़कन, हिलने से बढ़े। दाब की संवेदना। रक्तहीन गनगनाहट। नाड़ी भरी, मगर मुलायम और कोमल, छोटी और कमजोर भी। दिल से एकाएक रक्त नलियों में घुस आए, और तुरन्त वापस लौट जाये, जिससे ऊपरी सतह रक्तहीन रङ्ग की हो जाय।

अंग—कंधों का वात रोग। जीवन रस के अधिक निकल जाने के कारण आया शोथ रोग। कटिवात, धीरे-धीरे टहलने से कम। कमर के जोड़ों में, जंघास्थि, पैर के तलवों और एड़ी में दर्द।

चर्म—पीला, जल्दी भरभरा उठे, दबाने से गड्ढा पड़ जाये।

ज्वर—हाथों-पैरों में ठण्डक; सिर और चेहरा गरम। चार बजे सुबह शीत। हथेलियों और तलवों में गरमी। अधिक कमजोर करने वाला पसीना।

घटना-बढ़ना—घटना : धीरे-धीरे इधर-उधर टहलना। उठने के बाद कम। बढ़ना : पसीना निकलने के समय, शान्त बैठने के समय। ठण्डे पानी से नहाने पर या अधिक गरम होने पर बढ़ना। आधी रात को रोग बढ़े।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : आर्सेनिक, हीपर।

पूरक—चायना, एलुमिना; हैमामेलिस।

तुलना कीजिए : रूमेक्स (साँस और पाँचन यन्त्र पर वैसा ही प्रभाव रखती है और इसमें भी लोहा होता है)।

फेरमएसेटिकम—(तीव्र रोगों में क्षारीय मूत्र। दाहिने कंधे के डैनों में दर्द। नकसीर; खासकर दुबले, पीले, कमजोर बच्चे जो तेजी से बढ़ते हैं और जल्दी ही थक जाते हैं, पैर की नसों का सिकुड़ना और घाव होना, अधिक, हरा, मवादी, बलगम, दमा, शांत बैठने और लेटने से बढ़े, तपेदिक, लगातार खाँसी, खाने के बाद उसी की कै होना, खून जाना।

फेरम-आर्सेनिकम—(जिगर और तिल्ली का बढ़ना, ज्वर के साथ; अनपची मल, पेशाब में एल्बुमेन जाना । सरल और कठोर रक्तहीनता और हरा पीलिया रोग । चर्म सूखा । अकौता; अपरस, चर्मदल । ३x विचूर्ण का व्यवहार करें ।

फेरम-ब्रोमेटम—(चमकीला, काटने वाला प्रदर, गर्भाशय भारी और बाहर निकला; सिर की खाल ठिठुरी लगे) ।

फेरम सियानेटम (चिड़चिड़ा; दुर्बलता और अति उत्तेजना के साथ स्नायु विकार, खासकर सामयिक प्रवृत्ति के, मिरगी रोग, हृदय पीड़ा, मिचली, वादी, कब्ज और दस्त बारी-बारी, ताण्डव रोग के साथ) । फेरम मैग्नेटिकम (हाथों पर छोटे मस्से) ।

फेरम-म्यूरियेटिकम—(रुका हुआ मासिक-धर्म, वयःसन्धिकाल में धातु क्षीणता या अधिक मूत्र-स्खलन की प्रवृत्ति । बहुत गहरे रङ्ग का पानी-सा मल, झिल्ली प्रदाह, स्फोटक विसर्प रोग । मूत्र-पिंड आवरण का प्रदाह, मुँह से गहरे रङ्ग का थक्केदार खून गिरना, पीड़ामय मैथुन, दाहिने कन्धे में दर्द । दाहिनी केहुनी में दर्द, ऐंठन की स्पष्ट प्रवृत्ति और गालों पर गोल, लाल चकत्ते, पेशाब में चमकदार दाने । रक्त-हीनता ३x । भोजन के बाद दें । अरिष्ट की १–५ बूँदें, दिन में तीन बार रोज, जीर्ण सांतर वृक्क प्रदाह) ।

फेरम-सल्फ्यूरिकम—(पानी-सा पीड़ाहीन मल, अतिरजः, सिर में खून दौड़ने के साथ दो मासिक-धर्म के बीच वाले समय में दाब, थरथराहट । गलगण्ड । स्नायु की प्रचण्ड उत्तेजना । पित्ताशय में दर्द, दाँत, तेजाबी हालत, मुँह में खाने की डकार) ।

फेरम-परनाइट्रिकम—(लाल चेहरे के साथ खाँसी) । फेरम टारटैरिकम (हृदयशूल, पेट के हृद्-छिद्र पर गरमी) ।

फेरम-प्राटॉक्सोलेटम—(रक्तहीनता) १x विचूर्ण का प्रयोग करें । विशेष तुलना कीजिये –ग्रैफाइटिस, मैंगेनम एसेटिकम, क्युप्रम ।

मात्रा—दुर्बलता की अवस्था में जहाँ रक्त में हेमैटिन कम है, बड़ी मात्रा में देना चाहिए । रक्ताधिक्य, रक्त स्राव की अवस्थाओं में इस औषधि का लघु मात्रा में उपयोग दर्शित करती है । २ से ६ शक्ति ।

फेरम फॉस्फोरिकम (**Ferrum Phosphoricum**)

(फास्फेट ऑफ आयरन)

ज्वर की अवस्थाओं के आरम्भ में यह औषधि एकोनाइट और बेलाडोना की तीव्र क्रिया और जेलसिमियम की मन्द क्रिया के बीच वाली औषधि है । फेरम फॉस

का आदर्श रोगी इतना अधिक खून वाला, तगड़ा नहीं होता, वरन् स्नायविक, उत्तेजित, रक्तहीन लेकिन नकली रक्ताधिक्य और फेरम की तरह जल्द खून दौड़ जाना। शिथिलता स्पष्ट रहती है, चेहरा **जेलसिमियम** से अधिक चंचल रहता है। शरीर की तरह की लाली उतनी अधिक झावरी नहीं होती जितनी **जेलसिमियम** में होती है। नाड़ी कोमल और प्रवाहिक, एकोनाइट की-सी उत्सुकता और बेचैनी नहीं होती। सीना-रोग की सम्भावना। छोटे बच्चों के वायुनलिका समूह का प्रदाह। तपेदिक की प्रचण्डता में उत्तम और विचित्र शक्तिशाली, शान्तिप्रद औषधि। यह ग्रावोगल के ओसजनिक प्रवृत्ति के अधिक अनुकूल है। प्रदाह ज्वर ग्रस्त, दुर्बल तपेदिक का रोगी।

सभी ज्वर विकार और प्रदाहिक अवस्थाओं की पहली दवा, इससे पहले कि स्राव आरम्भ हो, खासकर साँस यन्त्र के नजले की अवस्था में। **फेरम फॉस** ३x रक्त रंजक पित्त को बढ़ाता है। फीके रङ्गवाले रक्तहीन रोगियों के लिए घोर प्रादाहिक अवस्था में। रक्त प्रवाह चटक लाल किसी शरीर छिद्र से।

सिर—स्पर्श, ठंडक, आवाज झटका असह्य। सिर में खून दौड़ना। सूर्य की गरमी का बुरा प्रभाव। थरथराहट। सिर दर्द ठंडक से कम।

आँखें—लाल, सूजी हुई जलन संवेदन। पलकों के नीचे बालू जैसी संवेदना। उपतारा और चित्रपट का प्रदाह, धुँधलापन के साथ।

कान—आवाजें आएँ। थरथराहट कर्ण प्रदाह का पहला चरण। कान का पर्दा लाल और सूजा हुआ, तीव्र प्रदाह में जब **बेलाडोना** काम न करे। मवाद बनने से रोकता है।

नाक—सिर के जुकाम का पहला चरण। जुकामी प्रवृत्ति। **नकसीर**, चमकदार; लाल खून।

चेहरा—सुर्ख, गाल गरम और कोमल। रक्तमयी रङ्ग। चेहरा का स्नायुशूल, सिर हिलाने या झुकाने से अधिक हो।

गला—मुँह गरम, तालु लाल, सूजे हुए। घाव वाला गला प्रदाह। तालुमूल लाल और सूजे हुए। गल-कर्ण नली सूजी। गाने वाली का गला प्रदाह, अर्धतीव्र स्वर-नली प्रदाह, गला लाल सूजा हुआ (२x) गले और नाक के चीरा लगवाने के बाद खून रोकने और दर्द कम करने के लिए हितकर है। झिल्ली प्रदाह का पहला चरण रक्ताधिक्य, रक्तपूर्ण शरीर वालों की जीभ के नीचे छोटा अर्बुद।

पेट—मांस और दूध से घृणा। उत्तेजनाजनक वस्तुओं से प्रेम। अनपचे खाने का कै। चमकदार लाल खून की खट्टी डकार।

उदर—आँतों का झिल्ली के प्रदाह की पहली अवस्था। बवासीर। मल पानी-सा खून मिला अनपचा। पेचिश का पहला चरण, अधिक रक्त-स्राव के साथ।

मूत्र—प्रत्येक खाँसी के साथ मूत्र छटक पड़े। पेशाब न रोक सकना। मूत्राशय की गरदन में उत्तेजना। अनेक बार मूत्र-स्खलन। दिन के समय अनेक बार पेशाब होना।

स्त्री—हर तीन हफ्ते पर मासिक धर्म, धँसन संवेदन और चाँद पर दर्द के साथ। योनि शूल। योनि सूखी और गरम।

साँस-यन्त्र—सभी प्रदाह रोगों का पहला चरण। फुफ्फुस में रक्ताधिक्य। खून थूकना। छोटी, गुदगुदीदार, दर्दीली खाँसी। काली खाँसी। बड़ी सूखी खाँसी, सीने में चोटीलापन के साथ। आवाज भारी। फुफ्फुस प्रदाह में स्वच्छ खून का बलगम (मिलिफोलियम)। खांसी रात में ठीक रहे।

दिल—धड़कन, नाड़ी तेज। हृदय रोग का पहला चरण। छोटी, तेज, मुलायम नाड़ी।

अंग—गरदन कड़ी; तनी। जोड़ों का वात रोग। पीठ में चटकन। कन्धों में वात पीड़ा, दर्द सीना और कलाई तक बढ़े। गल्का। हथेली गरम। हाथ सूजे हुए और दर्दीले।

नींद—बेचैनी और अनिद्रा। उत्सुक स्वप्न। रक्तहीन व्यक्ति का रात पसीना।

ज्वर—रोज १ बजे तीसरे पहर सर्दी। सभी जुकामी और प्रदाह ज्वर, पहला चरण।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में, और ४, ६ बजे सुबह, छूना, झटका हिलना; दाहिनी तरफ। घटना : ठंडे प्रयोग से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : (ओसजनिक प्रवृत्ति, एकोनाइट, चाइना, आर्सेनिक, ग्रैफाइटिस, पेट्रोलियम,) फेरम पाइरोफास (शरीर से अधिक रक्तस्खलन के कारण मस्तिष्क प्रदाह और सिर दर्द), प्रपादास्थि पर हड्डी की गाँठें। एकोनाइट, जेलसिमियम, चाइना।

मात्रा—३ से १२ शक्ति।

फेरम पिक्रिकम (**Ferrum Picricum**)

(पिक्रेट ऑफ आयरन)

यह अन्य औषधियों के प्रभावों को पूरा करने के लिए उत्तम औषधि मानी जाती है। अधिक परिश्रम करने पर शरीर के किसी यन्त्र की कार्यहीनता की अवस्था में, जैसे अधिक भाषण इत्यादि देने पर आवाज बैठना, इस औषधि की विशेष रूप से आवश्यक होती है। यह औषधि काले बाल वाले, रक्ताधिक्य और कोमल जिगर वाले रोगी में अधिक लाभ करती है। मस्से, उपत्वक स्फोटक, पीले रङ्ग वाले दाने।

बुढ़ापे में मूत्र ग्रन्थि का ढीला पड़ जाना। नकसीर बहना। गठिया के कारण जीर्ण बहरापन और टनटनाहट की आवाज, कान का छेद सूखा। नकली धुन्ध रोग।

कान—मासिक काल के पहले बहरापन। कानों में पटपटाना और धीमी बोली, रक्तवहा नाड़ी सम्बन्धी बहरापन। दाँतों का स्नायुशूल जो कानों और आँखों तक फैले। कानों में भनभनाहट; टेलीग्राफ की तरह टनटनाहट।

पेट—अनपच। रोयेंदार जबान, खाने से सिर दर्द, खासकर पित्ताधिक्य गहरे रंग के बाल वाले लोगों में।

मूत्र—पूरे मूत्रमार्ग में दर्द। रात में कई बार पेशाब लगना, मलाशय में भरापन और दाब के साथ। मूत्राशय की गरदन और लिंग में गड़न (बैरोस्मा)। पेशाब रुकना।

अंग—गरदन की दाहिनी तरफ और दाहिनी बाँह के नीचे तक दर्द। कम्पवात, आँखों तक फैले। हाथों पर मस्से।

मात्रा—२ और ३ विचूर्ण।

फिकस रेलिजियोसा (Ficus Religiosa)

(ऐशवाथया)

यह ईस्ट इण्डीज की औषधि कई तरह के रक्त प्रवाहों को उत्पन्न और अच्छा करती है। खून थूकना इत्यादि। खून का पेशाब।

सिर—उदास, चुप रहना, चाँद में जलन, चक्कर और धीमा सिर दर्द।

साँस-यन्त्र—कठिन साँस, खून की कै के साथ खाँसी। नाड़ी बहुत कमजोर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एकालिफा इण्डिका, मिलिफोलियम, थ्लैस्पि वर्सा मस्टोरिस, इपिकाक।

मात्रा—पहली शक्ति।

:—०—:

फिलिक्स मास (Filix Mas)

(मेलफर्न)

कृमि लक्षण की औषधि, खासकर कब्ज। केंचुआ। निद्रालुता के लक्षण। लसिका ग्रन्थियों का मन्द प्रदाह। (ताजी जड़ कुचल कर)। युवा रोगियों में फुफ्फुसीय क्षय रोग, बिना ज्वर, घाव सीमित, जो पहले गण्डमाला रोग समझा जाता है।

आँखें—अंधापन, एक आँख का धुँधलापन।

पेट—फूला हुआ, कुतरन दर्द मिठाई खाने से बढ़े। दस्त कै के साथ। कृमि-शूल, नाक खुजली के साथ, चेहरा नीला, आँखों के चारों तरफ नीले घेरे। बिना दर्द की हिचकी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एस्पिडियम एल्हैमेण्टिकम–पन्ना–३ (खुराक–२ ग्राम की प्रत्येक खुराक, दो खुराकें आधा घण्टे के भीतर, बिना कुछ खाये, एक गिलास दूध में। कष्ट के बिना केंचुआ बाहर निकालने के लिए), सिना, ग्रैनेटम, काउसो।

मात्रा—१–३ शक्ति। केंचुआ निकालने के लिए, एक पूरी खुराक ½ से एक ड्राम तक ओलियोरेसिन की, खाली पेट।

— :o: —

फ्लोरिकम एसिडम (Fluoricum Acidum)

(हाइड्रोफ्लोरिक एसिड)

विशेषकर उन जीर्ण रोगों के लिए लाभदायक है जो उपदंश रोग अथवा पारा के प्रयोग पर निर्धारित हैं। भौंहों के बीच का भाग फूला हो। खासकर निम्न तन्तुओं पर काम करती है और गहरी नाशकारी अवस्थाओं में, बिस्तर घाव में, स्राव साधारण; मोटी, सिकुड़ी नसें और पकन में सांकेतिक होती है। रोगी तेजी से चलने-फिरने को बाध्य होता है। बुढ़ापे के रोग या बुढ़ापे के पहले ही वैसी अवस्था होने पर, साथ में कमजोर, तनी रक्तनलियाँ। मदपान करने वालों का जिगर खराब। घेघा (डॉ० बोक्स)। (केली फ्लोराइड ने कुत्तों में घेघा उत्पन्न किया) दाँतों का समय से पहले सड़ना। रात-ज्वर के पुराने रोगी, ऐसा ज्वर जो बँधे समय पर हो।

मन—जिनसे अधिक प्रेम था उनकी लापरवाही, जिम्मेदारी न समझ सके, हुल्लसित। मानसिक प्रफुल्लता और खुशी।

सिर—बाल झड़ना। चर्म पर पपड़ीदार घाव। सिर के बगल में भीतर से बाहर की तरफ दाब। लघु और चुचुकदार अस्थि का सड़ना। अधिक स्राव के साथ, सेंकने से बढ़े। (साइलीसिया; ठंडक से बढ़े)। किसी स्थान की हड्डी का बढ़ना।

आँखें—ऐसा लगे कि आँखों में से हवा बह रही है। अश्रुनलिका का नासूर। भीतरी किनारों का अति खुजलाना।

नाक—नाक का जीर्ण जुकाम, बिचली झिल्ली के घाव के साथ, नाक बन्द और माथे में धीमा भारी दर्द।

मुँह—दाँतों का नासूर लगातार खूनी नमकीन स्राव के साथ। गले का उप-दंशीय घाव जो ठंडक से उत्तेजित हो। दाँत गरम लगे। ऊपरी जबड़ों के दाँतों और हड्डी के रोग।

पेट—पेट में भारीपन और वजन जैसा। खाने के पहले पेट में गरमी। खट्टी डकार। कॉफी से घृणा; स्वादिष्ट भोजन की इच्छा। कपड़ा कस कर पहनने से पेट-कष्ट कम हो। बहुत मसालेदार खाना खाने की इच्छा। ठण्डे पानी की इच्छा, भूखा। गरम चीज पीने से दस्त हो।

उदर—जिगर का चोटीलापन। डकार और वायु स्खलन।

मल—पित्त का दस्त, कॉफी से घृणा।

पुरुष—मूत्रमार्ग में जलन। मैथुन इच्छा और उत्तेजना अधिक, रात में सोते ही लिंगोत्थान। अण्डकोष की सूजन।

मूत्र—थोड़ा गहरे रंग का। जलोदर में इसके प्रयोग से पेशाब बढ़ता है जिससे लाभ होता है।

स्त्री—मासिक-धर्म अधिक, अकसर देर तक जारी रहे। गर्भाशय और उसके मुँह का घाव। अधिक कटने वाला (तीक्ष्ण) प्रदर। प्रचण्ड मैथुन इच्छा।

श्वास-यन्त्र—सीना पर दाव, कठिन साँस, कष्ट अधिक। वक्षोदक रोग।

अंग—अँगुलियों की जोड़ों की सूजन। नाखूनों के नीचे खपच्ची ऐसी गड़न। नाखूनों का झड़ना। खासकर बड़ी हड्डियों का सड़ना और पीप आना। गुदास्थि में दर्द। जंघास्थि पर घाव।

चर्म—शिराओं का गठीलापन। तिल उगना। घाव, लाल किनारे और छाले। शय्याक्षत : सेंकने से कष्ट बढ़े। उपदंशीय घाव। घाव के पुराने निशानों में खुजली। ऐसा लगे कि चर्म के पसीना छिद्रों में से जलती भाप निकल रही हो। शरीर के छिद्रों में और भिन्न स्थानों में, खुजली, जो गरमी से अधिक हो। नाखूनों का तेजी से बढ़ना। अस्थि-आवरण फोड़े। अधिक घृणित खट्टा पसीना। उपदंशीय अर्बुद। वृद्ध, दुर्बल शरीर में अंगों का शोथ। शिरा और महीन रक्तवाहिनी नलिकाओं का ढीला-पन। तन्तु फूले हुए।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सेंकना, सुबह गरम चीज पीना। घटना : ठंडक, टहलने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : थियोसिनैमिनम (पुराने घाव के निशानों पर चिलकन, रुकना गुल्म) कैल्केरिया, फ्लोरिकम सीलिका।

पूरक—सिलिका।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

फॉरमैलिन (**Formalin**)

(फॉरमैल्डिहाइड गैस का ३५ प्र० श० जल-मिश्रण)

यह एक शक्तिशाली, विसंक्रामक और गन्धनाशक प्रबल विष है। कीटाणुओं की उपज को रोकता है और प्रायः सभी उत्पन्न करने वाले जीवाणुओं को मार डालता है। इसमें यह विचित्र गुण देखा गया है कि यह अति घातक अर्बुद के भीतर प्रवेश करके विषैले जीवाणुओं और पदार्थों को नष्ट कर देता है मगर स्वस्थ तन्तुओं पर कोई बुरा प्रभाव नहीं डालता। यदि २० प्र० श० फॉर्मेल्डिहाइड सोल्यूशन में कपड़े की गोली तर करके कुछ घण्टे कहीं लगाया जाये तो उस स्थान पर एक प्रकार की सड़न जमा हो जायेगी जिसको बिना खुरचे फिर दुबारा दवा नहीं लगाई जा सकती नहीं तो वह चर्बी कड़ी हो जायेगी।

गरम पानी में फॉर्मेलिन को मिलाकर भाप का प्रयोग करने से कुकुर-खाँसी, तपेदिक, वायुनलिका के ऊपरी भाग के नजले में लाभ होता है।

मन—भूल। चिन्ता। अचेत।

सिर—जुकाम, आँखों से पानी बहे, चक्कर।

मुँह—मुँह में अधिक लार होना।

पेट—खाना पेट में गेंद जैसा मालूम हो। मुँह और पेट में जलन।

उदर—बहुत तेज पाखाना मालूम होना, पानी-सा मल।

मूत्र—पेशाब रुकना या कम होना, पेशाब में ऐल्बुमेन जाना।

साँस-यन्त्र—कष्टदायक साँस, बालकों की कण्ठनली का आक्षेप। कुकुर-खाँसी।

ज्वर—दोपहर के पहले शीत, बाद में दीर्घ ज्वर। पूरे आक्रमण काल में अस्थि पीड़ा। ज्वर काल में भूल जाता है कि वह कहाँ है।

चर्म—चर्म को चमड़े की तरह नोचना, सिकुड़न पपड़ी छूटना। घाव की जगहों के आस-पास अकौता निकलना। नम पसीना शरीर के दाहिने ऊपरी भाग पर अधिक स्पष्ट।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : एमोनिया-वाटर।

तुलना कीजिए : एमोनिया फारमैल्डिहाइड, व्यावसायिक नाम साइसटोजेन। (मात्रा, ५ से ७ ग्रेन दिन में २–४ बार, गरम पानी में घोल कर, खाने के बाद मूत्राशय, गुर्दों और मूत्र नलिका में पेशाब का सड़ना रोकती है। गदला खून साफ और सरल हो जाता है। चूने की अधिकता घुल जाती है और दूषित जीवाणुओं का बढ़ना रुक जाता है)। इसके अतिरिक्त युरोट्रोपिन (एक पेशाब बढ़ाने वाली और यूरिक तेजाब को घोलने वाली दवा, सड़न से मूत्राशय को कम करती है। २ से ५

ग्रेन अच्छी तरह पानी में मिलाकर। प्रयोग के बाद सदा मस्तिष्क मेरुमज्जा रस में जाहिर होती है और इसलिए मस्तिष्क प्रदाह में उपयोग करने की सलाह दी जाती है)।

मात्रा—गरम पानी में भाप के रूप में जब साँस-यन्त्र बाधायें हों। १ प्र० श० फुहारा; नहीं तो ३x शक्ति।

फॉर्मिका रूफा (**Formica Rufa**)

(क्रश्ड लिव ऐण्ट्स)

सन्धि प्रदाह की औषधि। गठिया और सन्धि वात रोग, हरकत से दर्द बढ़े, दाब से कम हो। दाहिनी तरफ अधिक रोगग्रस्त। जीर्ण गठिया और जोड़ों में तनाव। तीव्र गठिया विष आक्रमण; खासकर जब स्नायुशूल का रूप धारण करे। तपेदिक। कर्कट रोग और वृक्क रोग, जीर्ण गुदा प्रदाह। अधिक बोझ उठाने से रोग उत्पन्न होना। संन्यास रोग। अर्बुद बनने से रोकने का काम स्पष्ट रूप से करती है।

सिर—चक्कर। बायें कान में पटपटाहट के साथ सिर दर्द। मस्तिष्क बहुत बड़ा और भारी जान पड़े। माथे में पानी का बुलबुला फटता जान पड़े। शाम को विस्मृति। प्रफुल्लित। जुकाम और बन्द जैसा नाक में। वातपीड़ित उपतारा प्रदाह। नाक का अर्बुद।

कान—टनटनाहट और भिनभिनाहट। बायें कान में पटपटाहट के साथ सिर दर्द। कानों के चारों तरफ का भाग सूजा मालूम दे। अर्बुद।

पेट—हृदय के किनारे का पेट वाला भाग बराबर दबा जान पड़े और वहाँ जलन हो। सिर दर्द के साथ मिचली और पीली; कड़वी श्लेष्मा की कै। दर्द पेट से सिर की चाँद पर जगह बदले। हवा न खुले।

उदर और मल—सुबह के समय कष्ट के साथ थोड़ी-सी हवा खुले, बाद में मलाशय में दस्त जैसी संवेदना। मलत्याग के पहले आँतों में दर्द, कँपकँपी के साथ। गुदा में रुकावट। मलत्याग के पहले नाभि के चारों तरफ खींचन दर्द।

मूत्र—खून मिला, एल्ब्यूमेन मिला, तेजी से लगे; यूरेट अधिक मात्रा में।

श्वास-यन्त्र—सूखे; दर्दीले गले के साथ रुक्षता, खांसी रात में अधिक हो, माथे में टीस और गले में संकुचन दर्द के साथ, फुफ्फुसावरणीय प्रदाह की तरह दर्द।

जननेन्द्रिय—धातु क्षीणता, कमजोरी। मैथुन में अशक्त।

अंग—वात पीड़ा, तने हुए और सिकुड़े जोड़। पेशियाँ अपने लगाव से खिंची और उखड़ी मालूम दें। निचले अंगों की कमजोरी। शरीर के निचले भाग का लकवा।

कटि पीड़ा। वात पीड़ा एकाएक बेचैनी के साथ आक्रमण करे। पसीने से कष्ट कम न हो। आधी रात के बाद और मालिश से आराम मिले।

चर्म—लाली, खुजलाना, जलन। जुलपित्ती। जोड़ों के चारों तरफ गिल्टियाँ (एमोनिया फॉस०)। बिना कष्ट कम किये अधिक पसीना हो।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना**: ठण्डक और पानी से धोने से, तरी, बरफ-तूफान से पहले। **घटना**: सेंकना, दाब, मालिश। बाल झड़ना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: फॉर्मिक एसिड, (जीर्ण मेरुदण्ड पीड़ा)। पेशी दर्द और चोटीलापन। गठिया और जोड़ों का वात रोग जो एकाएक आक्रमण करे। दर्द प्रायः दाहिनी तरफ अधिक हो या हरकत से और दाब से कम हो। आँखों से कम दिखाई देना। पेशियों की ताकत बढ़ाती है और थकान दूर करती है। मामूली टहलने में अपने को अधिक बलशाली और चुस्ती पाता है। पेशाब बढ़ने का प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है और शरीर के दूषित पदार्थ अच्छी तरह बाहर निकलते हैं, खासकर मूत्रक्षार। कम्प। तपेदिक, जीर्ण गुर्दा-प्रदाह, और कर्कट रोग, वृक्क रोग इत्यादि सभी की फॉर्मिक एसिड के ३ और ४ शक्ति के इन्जेक्शन द्वारा लाभ के साथ चिकित्सा की गई है। नस में खिंचाव, अर्बुद, जुकाम की चिकित्सा के लिए डॉ० जे० एच० क्लार्क आदेश देते हैं कि फॉर्मिक एसिड का १ या २ औंस घोल बनाना चाहिये जिसमें शुद्ध फॉर्मिक एसिड और डिस्टिल्ड पानी १ और ११ के अनुपात में हों। इस सोल्युशन का एक चाय चम्मच, एक बड़े चम्मच पानी में मिलाकर भोजन करने के बाद दिन में १ या २ बार पीना चाहिये। (बर्फीले तूफान के पहले कण्डराकला, सिर, गरदन और कंधों की पेशियों में दर्द) रसटॉक्स (डल्कामारा, अॉरटिका और जुनिपेरस में फॉरमिक एसिड होता है), ऊड एल्कोहल, अब किसी अन्य पीने की चीज में मिलाकर पीया जाता है जो आजकल के मदपान वर्जित दिनों में सभी लोग व्यवहार करते हैं, शरीर से जल्द बाहर नहीं निकलता और धीरे-धीरे फॉरमिक एसिड में परिवर्तित हो जाता है कि मस्तिष्क पर आक्रमण करके मृत्यु व अन्धापन का कारण होता है।

डॉ० साइलवेस्ट्रोविक्ज, हेरिंग रिसर्च लैबोरेटरी, हैनिमैन कॉलेज, फिलैडेल्फिया फॉर्मिक एसिड के बारे में अपना अनुभव इस प्रकार लिखते हैं:—

फॉर्मिक एसिड का चिकित्सा द्वारा सबसे उत्तम क्षेत्र है अनियमित गठिया। इस विवरण में यह सभी बीमारियाँ सम्मिलित हैं, जैसे:—पेशियों की गड़बड़ी, पेशी प्रदाह, अस्थि, आवरण का गूँधे मैदे के रूप में परिवर्तित होना, पेशियों के तन्तुमय बन्धन में परिवर्तन जैसा स्नायुजाल की सिकुड़न विशेष हो जाता है, चर्म रोग जैसे अकौता, खुजली, बाल झड़ना, गुदा रोग जैसे नया और जीर्ण गुदा प्रदाह। इन रोगों

में फॉर्मिक एसिड १२x और ३०x, इन्जेक्शन के लिए १० सी० सी० २ या ४ हफ्ते पर, अक्सर प्रथम इन्जेक्शन लगाने के बाद ८ से १२ दिन तक रोग वृद्धि होती है।

तीव्र वात ज्वर और तीव्र सुजाकजनित संधि प्रदाह में फॉर्मिक एसिड ६x, हर ६ दिन पर १ सी० सी०, कभी-कभी १२x, स्नायविक रोगियों में, अति उत्तम प्रभाव दिखाता है और दर्द इत्यादि तुरन्त गायब हो जाता है और फिर नहीं होता।

जीर्ण सन्धि-प्रदाह के विशेष वर्णन की आवश्यकता है। फिलैडेल्फिया के हैनिमैन मेडिकल कॉलेज के अन्तर्गत हेरिंग रिसर्च लैबोरेटरी में फॉर्मिक एसिड द्वारा सन्धि प्रदाह के अनेक रोगियों की चिकित्सा के जो प्रयोग किये गये उनमें यह विदित हुआ कि यह औषधि जोड़ों के बन्धनों, कोषों और हड्डी के सिरों पर काम करती है। ऐसे रोग में इस औषधि से तात्कालिक लाभ होता है।

रोगों का भावी फल अधिकतर उनके कारण तत्व की जानकारी पर निर्भर करता है। चिकित्सा के दृष्टिकोण से गठिया विकार सम्बन्धी जीर्ण सन्धि प्रदाह के रोग इस औषधि के लिए उत्तम अवसर देते हैं। तीव्र वात ज्वर के बाद जीर्ण संधिप्रदाह में भी उत्तम लाभ होता है जो कि अक्सर स्नायु विकारी लक्षणों के दर्द किसी-किसी भाग में जल्दी अच्छे नहीं होते। अन्त में आघात संबंधी जीर्ण सन्धिप्रदाह फॉर्मिका एसिड से अच्छे हो जाते हैं। इस अवस्था में फॉर्मिक एसिड ६x, १२x या ३०x की अपेक्षा जो पहले लिखी अवस्थाओं में लाभकारी हैं जल्द फायदा करती हैं। साधारण तौर पर जोड़ों के तनाव में कमी होना औषधि से लाभ दर्शित करता है। तब ३-६ महीने के समय में दर्द और सूजन धीरे-धीरे गायब हो जाती है।

फॉर्मिक एसिड की चिकित्सा जीर्ण सन्धि-प्रदाह में उतनी लाभदायक नहीं होती जब जोड़ों की सतह पर आकार परिवर्तन क्रिया आरम्भ हो गई हो। इस प्रकार की क्रिया आरम्भ में बिलकुल अच्छी तरह रोकी जा सकती है और आगे बढ़ी अवस्थाओं में भी अक्सर लाभ होता है। लेकिन ऐसा हो सकता है कि यह लाभ अल्पकालीन हो। ऐसा खासकर उन रोगों में होता है जब गलत कहा जाने वाला सन्धि-प्रदाहिक आकार परिवर्तन हो जिसमें बन्धन और कोष की सूजन बढ़ती है।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

फ्रैगेरिया (**Fragaria**)

(ऊड स्ट्रॉबेरी)

यह औषधि पाचन और मध्यान्त्रत्वक् ग्रन्थि पर काम करती है। पथरी बनने से रोकती है, दाँतों पर जमी मैल को साफ करती है और गठिया के आक्रमण को रोकती है। फल में ठण्डा करने का गुण होता है। झड़बेर (स्टॉबेरी) स्नायविक प्रकृति के

लोगों में विष का काम करता है जैसे जुलपित्ती के दाने (स्ट्रॉबेरी एनैफाइलैक्सिस), ऐसी अवस्था में ऊँची शक्ति का फ्रैगेरिया देना चाहिए।

बेवाई फटना, गरमी के मौसम में अधिक। स्तन स्राव की कमी। केश नाश, स्प्रुस (संग्रहणी)।

मुँह—जीभ सूजी हुई। स्ट्राबेरी जीभ।

चर्म—जुलपित्ती, काली लकीरों के छोटे दाग और विसर्प रोग। सारे शरीर की सूजन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : एपिस०; कैल्केरिया०।

फ्रैन्सिसिया (Fanciscea)

(मैनाका)

पेशियों का पुराना तनाव। सुजाक जनित वात रोग। उपदंश और वात पीड़ा, शरीर पर बहुत गरमी, बहुत टीस, पसीना से कम हो। सिर के पीछे और रीढ़ में दर्द, सिर के चारों तरफ फीता कसा जैसा। हृदयशूल, वात दर्द के साथ। पैरों और टाँगों के निचले भाग में वात दर्द। पेशाब में मूत्रक्षार आए।

मात्रा—अरिष्ट या तरल तत्व १० से ६० बूँद तक।

फ्रैक्सिनस अमेरिकाना (Fraxinus Americana)

(ह्वाइट ऐश)

गर्भाशय का बढ़ना। मूत्रमय अर्बुद, कैन्सर, जरायु की अल्पवृद्धि और बाहर निकलना। गर्भाशयिक। अर्बुद, धँसन संवेदन के साथ होठों पर ज्वर-घाव। पैरों में ऐंठन। ठंडा रेंगन और गरम लपटें। बच्चों का अकौता।

सिर—सिर के पीछे थरथराहट के साथ दर्द। स्नायविक बेचैनी के साथ उदासी, उत्सुकता। चाँद पर गरम स्थान।

स्त्री—गर्भाशय बढ़ा और खुला हुआ। पानी-सा तीखा प्रदर। सूत्रमय अर्बुद धँसन संवेदना के साथ, पैर में रेंगन, तीसरे पहर और रात में अधिक। कष्टरजः।

उदर—बायें वंक्षणीय क्षेत्र में कोमलपन, धँसन दर्द, जाँघ तक बढ़े।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : फ्रैक्सिनस एक्सेलसियर—युरोपियन ऐश—(गठिया, वातपीड़ा। ऐश के पत्ती को उबाल कर काढ़ा के रूप में। रैडमैकर)। गैलेगा-ओफ्सिनैलिस—(पीठ दर्द; कमजोरी; रक्तहीनता और पोषण की कमी। दूध

पिलाने वाली माताओं के दूध की मात्रा बढ़ाती है और दूध को गुणवान करती है; भूख भी बढ़ाती है), एपिफेगस, सीपिया; लिलियम० ।

मात्रा—१० से १५ बूँद अरिष्ट, दिन में तीन बार ।

फ्युलिगो लिग्नी (Fuligo Ligni)

(सूट)

ग्रन्थि मण्डल पर काम करती है, श्लैष्मिक झिल्ली के कठिन घाव, ऊपरी खाल पर दाद, अकौता पर । मुँह की श्लैष्मिक झिल्ली की जीर्ण उत्तेजना, योनि घुण्डी की तीव्र खाज, गर्भाशय से रक्त स्राव कर्कट खासकर अण्डकोष का । चिमनी साफ करने वालों का कर्कट रोग, अन्तस्त्वक कर्कट, अति रक्तस्राव के साथ गर्भाशयिक कर्कट । उदासी, आत्महत्या के विचार ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : क्रियोजोट ।

मात्रा—६ विचूर्ण ।

—: ० :—

फ्युकस वेसिक्युलोसस (Fucus Vesiculosus)

(सी केल्प)

मोटापन की औषधि और विषहीन घेघा, और वहिःनिसृत चक्षुगोलक तथा हृद्स्पन्दन के गलगण्ड भी । पाचन अच्छा होता है और वादी कम हो जाती है । कठोर कब्ज, माथा लोहे के छल्ले से कसा मालूम दे । मोटे रोगियों में गल-ग्रन्थि का बढ़ना ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : फाइटोलक्का, थाइरॉयडीन, बैडियागा, आयोडम ।

मात्रा—अरिष्ट, ५ से ६० बूँद, दिन में तीन बार भोजन से पहले ।

— :०: —

फ्युशिना (Fuchsina)

(शराब में मेल मिलाने का एक रंग)

कानों पर लाली पैदा करती है, मुँह का रङ्ग गहरा बदरङ्ग, लाल, मसूढ़े सूजे हुए, जलन और लार बहना, गहरे लाल रङ्ग का पेशाब, एल्ब्युमेन मिला और हल्के लाल रङ्ग का अधिक मल, उदर पीड़ा के साथ । गुर्दों के ऊपरी भाग का तेल बन जाना (अपकर्ष) । एल्ब्युमेन मिश्रित मूत्र के साथ गुर्दों के शिखर भाग के प्रदाह के लिए लाभदायक ।

मात्रा—६ से ३० शक्ति ।

गैलेन्थस निवालिस (Galanthus Nivalis)

(स्नो-ड्राम)

डॉ० ए० ह्विटिंग वैन्कोवर ने सिद्ध किया।

गशी, डूबने की संवेदना। चोटीला, सूखा गला धीमे सिर दर्द के साथ। अर्ध चेतनता और सोते में चिन्तित रहना। दिल कमजोर और दिल बैठे जैसा लगे। मानो वह गिर जायगी। नाड़ी क्रमभंग, तेज, असमान, तीव्र धड़कन। हृदय के सिर पर चुरचुराहट। चिकित्सा के विचार से हृत्कपाट में रक्त वापस लौटना और उस कमी के पूरा न होने की अवस्था में लाभदायक है। हृत्पिण्ड के पट्टों की सूजन। और साथ के कपाटों का ठीक काम न करना।

मात्रा—१ से ५ शक्ति।

गैलियम एपैरिन (Galium Aparine)

(गूजा ग्रास)

गैलियम मूत्रयन्त्रों पर काम करती, पेशाब बढ़ाती है और शोथ, पथरी तथा मूत्र रेणु में लाभदायक है। मूत्रकृच्छ्र और मूत्राशय प्रदाह। कर्कट की क्षय क्रिया को रोकती है या परिवर्तित करती है। गलित घाव और जबान के कठिन अर्बुद पर इस औषधि का लाभ चिकित्सा द्वारा पुष्ट किया गया है। पुराने चर्म रोग और शीतादि रोग। घाव वाली सतह पर स्वस्थ अंकुर उत्पन्न करने में सहायता देती है।

मात्रा—तरल अर्क, आधा ड्राम की एक खुराक या तो पानी के एक प्याले में या दूध में, दिन में तीन बार।

गैलिकम एसिडम (Gallicum Acidum)

(गैलिक एसिड)

तपेदिक में इस दवा को याद रखना चाहिए। यह दवा दूषित रक्तस्राव को रोकती है, पेट की क्रिया को ठीक करती है और भूख बढ़ाती है। मन्द रक्त-स्राव जब नाड़ी धीमी और रक्तनलिकायें ढीली हों; चर्म ठण्डा। रक्तमूत्र। प्रचण्ड रक्तस्राव की प्रवृत्ति। चर्म में खाज। मुँह में पानी आना।

मन—रात में प्रचण्ड प्रलापक सन्निपात, बहुत बेचैनी, बिस्तर से कूद पड़े, पसीना बहे, अकेले रहने से भय, असभ्य, सबको गाली दे।

सिर—सिर के पीछे और गरदन में दर्द। गाढ़ा, तारदार नाक स्राव। पलकों में जलन के साथ प्रकाशान्तक।

साँस-यन्त्र—फुफ्फुस में दर्द, फुफ्फुस से रक्तस्राव, बलगम अधिक। सुबह को गले में अधिक बलगम आये। रात में गला सूखे।

मूत्र—गुर्दों में दर्द, मूत्रनलिकाओं से मूत्राशय तक कष्ट बढ़े। मूत्राशय में धीमा दर्द, ठीक विटपप्रदेश के ऊपर। पेशाब गाढ़ा, क्रीम जैसे रंग का श्लेष्मा से भरा हो।

मलाशय—मल अधिक, गुदा सिकुड़ी लगे। मलत्याग के बाद गशी जैसी लगे। जीर्ण आमातिसार।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : आर्से०, आयोडम, फॉस्फोरस।

मात्रा—पहला विचूर्ण और शुद्ध तेजाब २–५ ग्रेन की मात्रा में।

गैम्बोजिया (Gambogia)

(गम्मी गुट्टी)

होमियोपैथी में इस औषधि का उपयोग केवल पाचन-प्रणाली पर सीमित है। यह क्रोटन के समान दस्त पैदा करती है। इसके रोग-उत्पत्ति विचार में यह विदित होता है कि इसका तीव्र प्रभाव स्पष्ट रूप से पाकाशयिक-आंत्रिक मार्ग पर पड़ता है।

सिर—भारी मन्द और सुस्ती, और निद्रालुता के साथ। आँखों में जलन और खुजली, पलक चिपक जायें, छींक आये।

पाकाशयिक-आंत्रिक लक्षण—दाँतों के किनारों पर ठंडक मालूम दे। पेट में बहुत उत्तेजनीयता, जबान और गले में जलन, कड़क और सूखापन। खाने के बाद पेट में दर्द। कौड़ी में कोमलता। मल-त्याग के बाद उदर में बादी से तनाव और दर्द। गड़गड़ाहट और गर्जन। गोलाकार मल के रुकने के साथ पेचिश और पिठासे में दर्द। दस्त पित्त मिश्रित। मल तेजी से, एकाएक बाहर निकले। मल त्याग के बाद कूँथन और गुदा में जलन। क्षुद्रांत्र तथा अंधांत्र क्षेत्र में दाब असह्य। गरमी के दिनों में अधिक, पानी-सा पतला दस्त, खासकर वृद्ध लोगों में। रीढ़ की अन्तिम अस्थि में दर्द।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम के समय और रात में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : क्रोटनटिग०, एलोज०, पोडोफाइलम।

मात्रा—३ से ३० शक्ति फुफ्फुस के तपेदिक रोग में, डॉ० एब्रैम्स के मतानुसार, गैम्बोज को सीने पर पोतना अक्सीर चीज है और आरम्भिक अवस्था का लक्षण कुछ हफ्तों में ठीक हो जाता है।

गौल्थेरिया (Gaultheria)

(विण्टरग्रीन)

प्रादाहिक वात दर्द, पार्श्व वेदना, जांघिक स्नायुशूल, और अन्य स्नायुशूल सभी इस औषधि के प्रभाव क्षेत्र में आते हैं। मूत्राशय और मूत्र-ग्रन्थि की उत्तेजना; असाधारण मैथुन इच्छा। गुर्दों की सूजन।

सिर—सिर और चेहरे का स्नायुशूल।

पेट—तीव्र पाकाशय प्रदाह, कौड़ी में तीव्र पीड़ा; दीर्घकालीन कै। प्रचण्ड भूख, पेट की उत्तेजना शिथिल होने पर भी। स्नायविकता से आया पाकाशय प्रदाह (तेल के १x ५ बूँद दीजिये)।

चर्म—गड़न और जलन। तीव्र, चकत्तेदार, ठण्डे पानी से नहाने से बढ़े, ओलिव तेल से और ठण्डी हवा लगने से कम।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : स्पाइरिया, गौल्थेरिया में आरबूटिन होती है। सैलिसिलिक एसिड मेथिलियम सेलिसिलिकम (एक नकली गौल्थेरिया तैल वात पीड़ा के लिए खासकर जब सैलिसिलेट्स का व्यवहार नहीं हो सकता। अति योनि खाज शुक्रनाड़ी-प्रदाह में बाहरी प्रयोग। जलने पर कैन्थेरिस के बाद।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

जेल्सेमियम (Gelsemium)

(एलो जैस्मिन)

अपना कार्यक्षेत्र स्नायुमण्डल पर केन्द्रित करती है जिससे कई तरह के चालक पक्षाघात उत्पन्न हो जाते हैं। सर्वाङ्ग शिथिलता। चक्कर, औंघाई, मन्दता, कम्प। नाड़ी मन्द, थकान, मानसिक उदासीनता, आँखों, गले, सीने, स्वर-नली; मूत्र-पेशी; अङ्गों के सिरों के पेशी समूह का पक्षाघात। पैशिक निर्बलता। सम्पूर्ण ढीलापन और शिथिलता। पेशियों में असहयोग। सूर्य की गरमी में सर्वमन्दता। मौसमी परिवर्तन सहन न हो, ठण्डक और तरी अनेक व्याधियाँ फिर से उत्पन्न करें। बच्चे में गिरने का भयदायी या पालने को पकड़ ले। रक्त-संचार मन्द। सिंगार बनाने वालों के स्नायु रोग। इन्फ्लुएंजा। छोटी चेचक। रौद्रत्वक।

मन—चुप रहने की इच्छा, अकेले रहना चाहे। मन्द, सुस्त, अशान्त। "समझने का काहिल।" अपने रोग से लापरवाह। पूर्णतः भयहीन। नींद आने पर बकना, सन्निपातिक। आवेगिक; भय इत्यादि से शारीरिक व्याधि उत्पन्न हो। गिरने से, भय से या उत्तेजनीय खबर के दुष्प्रभाव से। स्टेज भय। बच्चा चिहुँक कर दाई को पकड़ ले और ऐसा चिल्लाये मानो गिर जाने से डरता हो। (बोरैक्स)।

सिर—सिर के पिछले भाग में फैलनेवाला चक्कर। सिर का भारीपन, चारो तरफ फीता कसा जैसा लगे और पिछले भाग का सिर दर्द। धीमा, भारीपन के साथ सिर-दर्द, आँखों का भारीपन, चोटीलापन, दबाने से और सिर को उठाकर लेटने से कम हो। कनपटियों में दर्द, कानों के अन्दर तक और नाक के किनारों और ठुड्ढी तक बढ़े। गरदन और कन्धों के पेशिक चोटीलापन के साथ सिर दर्द। सिर दर्द के पहले अन्धापन आये, बहुत पेशाब होने से कम हो। सिर की खाल छूई न जा सके। नींद आने पर बड़बड़ाये। सिर को तकिये पर ऊँचा उठवाना।

आँख—ऊपरी पलकों का कार्यहीन होकर झूल जाना, पलक भारी। कठिनता से खोल सके। दोहरी चाल दिखाई देना। देखने में गड़बड़ी, पेशिक यन्त्र की खराबी से। ठीक शक्ति का चश्मा लगाने पर भी देखने में धुँधलापन और असुविधा को अच्छा करती है। धुँधलापन धुएँ जैसा। (साइक्लैमिन, फॉसफोरस, दृष्टि मन्द। आँख फैली हों मगर प्रकाश सहन न हो। आँखों के घेरे का स्नायुशूल, पेशियों की सिकुड़न और फड़कन के साथ। आँखों के घेरे के पीछे चोटीला दर्द। एक पुतली फैली, दूसरी सिकुड़ी हुई। गहरी सूजन और नेत्र जल का धुँधलापन। जलयुक्त सूजन। अंडलाली मूत्र सम्बन्धी चित्रपट प्रदाह। चक्षु का अपने स्थान से अलग होना, धुँधलापन, तीव्र प्रदाह। गशी सम्बन्धी धुँधलापन।

नाक—छींक आना, नाक की जड़ में भारीपन। नथुने सूखे। बिचली हड्डी की सूजन। पानी-सा तेजाबी स्राव। तीव्र जुकाम, धीमा सिर दर्द और ज्वर के साथ।

चेहरा—गरम; भारी, लाल, विचाराहीन (बेंप्टिशिया, ओपियम)। चेहरे का स्नायुशूल। चेहरे का रंग धुँधला, चक्कर और कम दिखाई देने के साथ। चेहरे की पेशियाँ सिकुड़ी हुईं, खासकर मुँह के आस-पास। ठुड्डी का पकड़ना। निचला जबड़ा नीचे गिरा हुआ।

मुँह—सड़ा स्वाद और दुर्गन्ध। जिह्वा का सुन्न होना, मोटी, मैली, पीली, काँपती हुई, सुन्न।

गला—निगलने में कठिनता, खासकर गरम चीजों के। मुलायम तालु और गल-नासिक छिद्र में खुजली और गुदगुदी। मस्तक चालक पेशी में, कर्णमूल के पीछे दर्द। तालुमूल सूजे हुए। गले में खुरखुरापन और जलन। झिल्ली प्रदाह के कारण वाला पक्षाघात, तालुमूल प्रदाह, कानों में चुभन। गले में ढोका जैसा मालूम हो जो निगला न जा सके। स्वर लोप। निगलने से कान में दर्द हो (हीपर, नक्स०)। निगलना कठिन। गले से कान तक दर्द।

पेट—नियमित रूप से जेल्सीमियम के रोगी को प्यास नहीं लगती। हिचकी, शाम को बढ़े। पेट के गड्ढे में खालीपन और कमजोरी मालूम हो या भारी बोझ जैसा दाब।

मल—आवेगजनित उत्तेजना से दस्त होना, डर, बुरी खबर। (फॉसफोरिक एसिड)। बिना दर्द या अनैच्छिक मल-स्खलन। हल्का पीला (कैल्के०) चाय जैसा हरा। मलाशय और मूत्र-पेशी का आंशिक पक्षाघात।

मूत्र—अधिक साफ रंग का पानी-सा पेशाब, सर्दी और कम्प के साथ। मूत्र-कृच्छ्र। मूत्राशय का आंशिक पक्षाघात, धार रुक-रुक कर बहे (क्लिमैटिस) पेशाब रुक जाना।

स्त्री—गर्भाशय के मुँह का कड़ापन (बेलाडोना), योनि में आक्षेपिक झटका। मिथ्या प्रसव दर्द, पीठ के ऊपर की तरफ उठे। कष्टप्रद मासिक-धर्म, बहाव थोड़ा, मासिक-धर्म देर से हो। दर्द पीठ और कटि प्रदेश तक बढ़े, मासिक काल में स्वर-भंग और स्वरयंत्र प्रदाह। ऐसा लगे मानो गर्भाशय निचोड़ा जा रहा हो। (कैमोमिला, नक्स वो०; आस्टिलैगो)।

पुरुष—धातुक्षीणता बिना लिंगोत्थान। जननेन्द्रिय ठंडी और ढीली (फासफोरिक एसिड)। अण्डकोष पर पसीना हो। सुजाक का पहला चरण, स्राव थोड़ा, कड़ापन आने का भय, दर्द कम, गरमी अधिक, लिंग के मुँह पर कड़क।

श्वास-यन्त्र - साँस का धीमापन, अधिक शिथिलता के साथ। सीना पर कसावट। सूखी खाँसी, सीना दर्द और बहते जुकाम के साथ। टेटुआ में झटका। स्वरलोप, तीव्र वायुनलिका प्रदाह, साँस तेज, फुफ्फुस और वक्षोदर मध्यस्थ पेशी में आक्षेप।

दिल--ऐसी भावना कि चलते-फिरते या हिलते रहना आवश्यक है, नहीं तो हृदय की गति रुक जायगी। नाड़ी-धीमी (डिजिटैलिस परपुरिया, कैल्मिया लैटिफोलिया, एपोसाइनम, कैनाबिनस)। धड़कन, नाड़ी मुलायम, कमजोर, भरी, बहती हुई। नाड़ी शान्त रहने से धीमी मगर हिलते ही तेज हो जाये। वृद्धावस्था की कमजोरी, धीमी नाड़ी।

पीठ—मंद, भारी दर्द। पूरे पेशिकामंडल का ढीलापन। सुस्ती, पेशियाँ चोटीली जान पड़ें। थोड़ा परिश्रम अधिक थकाव पैदा करे। गरदन में दर्द, खासकर ऊपरी सिर हिलानेवाली पेशियों में। कटि प्रदेश और त्रिकास्थि क्षेत्र में धीमी टीस, जो ऊपर को बढ़े। पीठ, चूतड़, निचले अंगों की पेशियों में दर्द प्रायः पुराना।

अंग—पेशियों की नियन्त्रण शक्ति का अभाव। अगली बाहों की पेशियों में ऐंठन। व्यावसायिक स्नायु रोग। लेखकों के हाथ की ऐंठन। सभी अंगों का तीव्र कम्पन और कमजोरी। मूर्च्छा वायु। झटका। जरा-से परिश्रम से थकावट।

नींद—पूरी नींद न आवे। सो जाने पर बकना। अधिक थकावट के बाद निद्रा या अनियंत्रित विचारधारा से तम्बाकू पीने से। जम्हाई लेना। स्नायविक उत्तेजना से आई अनिद्रा (कॉफिया)

ज्वर—इतना काँपना कि किसी से पकड़ाये रखना चाहे। नाड़ी धीमी, भरी, मुलायम दबने वाली। पीठ के ऊपर-नीचे सर्दी। गरम और पसीने की अवस्था दीर्घ-कालीन और थकाने वाली। शीतहीन-जड़ैया, बहुत पेशिक चोटीलापन, अधिक शिथिलता और तीव्र सिर दर्द। स्नायविक शीत। पित्त सम्बन्धी स्वल्प-विराम ज्वर, गशी, चक्कर, अचेतनता, बिना प्यास, पतनावस्था, शीत बिना प्यास, रीढ़ भर में लहर की तरह त्रिकास्थि से सिर की जड़ तक ऊपर चढ़े।

चर्म—गरम, सूखा, खुजली, पित्त की तरह फरन। विसर्प रोग। छोटी माता, जुकामी लक्षण, दोनों के ऊपर आने में सहायक। स्थान-विकल्पशीलता, लाल चकत्तों के साथ। अरुण ज्वर, गशी और लाल चेहरे के साथ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : नम मौसम में, कोहरा, बिजली तूफान के पहले; आवेग या उत्तेजना, बुरी खबर, तम्बाकू पीना, अपनी बीमारी पर सोचने से, १० बजे सुबह। घटना : आगे झुकने से, अधिक पेशाब होने से, खुली हवा में, लगतार हरकत से, उत्तेजनाजनक वस्तु पीने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : इग्नेशिया (सिगार बनाने वालों का पाकाशयिक विकार); इपिकाक, एकोनाइट, बेलाडोना, सिमिसिफ्यूगा, मैग० फास०। (जेल्सेमियम में कुछ मैग० फॉस होता है) क्युलेक्स (कान में भरापन के साथ नाक छिनकने पर चक्कर आना)।

क्रियानाशक : चायना; कॉफिया, डिजिटेलिस। सभी लक्षण, जहाँ जेल्सेमियम लाभदायक होता है मदमिश्रित वस्तु पीने से लाभ होता है।

मात्रा—अरिष्ट से ६० शक्ति, १ से ३ अधिक लाभदायक होती हैं।

जेन्शियाना लूटिया (Gentiana Lutea)

(एलो जेन्शियन)

पेट के लक्षण स्पष्ट हैं। शक्ति बढ़ाने का काम करती है, भूख बढ़ाती है।

सिर—चक्कर, उठाने से या हिलने से अधिक हो, खुली हवा में कम। अगले भाग का सिर दर्द, भोजन करने से और खुली हवा में कम। मस्तिष्क ढीला जान पड़े, सिर कोमल। आँखों में टीस।

गला—सूखा। गाढ़ी लार।

पेट—तेजाबी पानी ऊपर आना, प्रचंड भूख, मिचली, बोझ और टीस पेट में। पेट में वादी भरना और तनाव (पीथोस०)। शूल और नाभि प्रदेश छूने में कोमल। वायु संचयता।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : जेन्शियाना क्विन्के फ्लोरा (सविरामिक ज्वर, मन्दाग्नि, शिशु हैजा, कमजोरी) जेन्शियाना क्रुसियाटा (पेट के ऊपर लिखे लक्षणों के साथ गले के भी लक्षण रहना, निगलने में कष्ट, सिर दर्द के साथ चक्कर, आँखों में भीतर की तरह दाब; गले, सिर और उदर में सिकुड़न। उदर में तनाव, भारीपन और कसावट। पूरे शरीर पर मक्खी चलने जैसी रेंगन) हाइड्रैस्टिस, नक्स०।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

जिरैनियम मैकुलेटम (Geranium Maculatum)

(क्रेन्सबिल)

पुराने सिर दर्द की शिकायत। अधिक रक्त प्रवाह, फुफ्फुस से और दूसरी जगहों से खून की कै (पेट में घाव होना)। कमजोर करने वाले दूषित घाव। गरमी के मौसम की बीमारियाँ।

सिर—द्वि-दृष्टि के साथ चक्कर, आंखें बन्द करने से कम। पलकों के लकवे के कारण उनका नीचे ही गिरे रहना और पुतली का फैलना, रोज होने वाला सिर दर्द।

मुँह—सूखा। जबान का सिर जले। गलकोष प्रदाह।

पेट—जुकामी पाकाशय प्रदाह, अधिक स्राव के साथ, घाव होने और मन्द रक्त स्राव की सम्भावना। पाकाशय-घाव में कै होने को कम करती है।

मल—लगातार पखाना लगा रहे, मगर कुछ देर तक कुछ न निकले। दूषित श्लेष्मा के साथ जीर्ण दस्त। कब्ज।

स्त्री—अधिक मासिक-धर्म। प्रसव के बाद खून बहना। स्तन घुण्डी की वेदना (यूपेटोरियम एरोमैटिक)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : जिरैनिन १x (बुड्ढे लोगों का लगातार खखारना और थूकना।), इरोडियम-हेम्लोक स्टॉरक्स बिल-रूस की एक सार्वजनिक रक्तस्राव रोकने की दवा और खासकर गर्भाशयिक रक्त-स्राव और अधिक मासिक रक्तस्राव के लिए) हाइड्रैस्टिनिन; सिन्कोना; सैबाइना।

मात्रा—अरिष्ट का आधा ड्राम पाकाशय घाव में। अरिष्ट से ३ शक्ति साधारण नियम। बाहरी प्रयोग के लिए घाव पर, यह विकारी झिल्ली नष्ट करती है।

गेटिसबर्ग वाटर (Gettysburg Water)

गले और पिछले छिद्रों से रेशेदार श्लेष्मा गिरे। कच्चापन। गरदन की पेशियाँ कड़ी। जोड़ कमजोर। चीजों को उठा न सके। नसें कड़ी। अर्ध तीव्र गठिया

अवस्था। भाप से उड़ाकर बचे हुए द्रव्य का ६ दशमलव तक का विचूर्ण। अर्ध मन्द और जीर्ण वात रोग में लाभदायक। सफेद, मैलवाली जबान। गहरे रङ्ग का पेशाब और लाल बालू की तरह तलछट। कड़ापन की संवेदना, हरकत से अधिक। खासकर कटि-क्षेत्र और चूतड़ों, कन्धों और कलाई के जोड़ों में। चुप, शान्त रहने से न मालूम पड़े। सुबह को अधिक देर तक एक ही आसन से न रह सके। हिलाने से पेशाब में कड़ापन। बंधनों में दर्द, आराम से कम हो।

सम्बन्ध—लाइकोपोडियम; फास्फोरस; रसटक्स; पल्सेटिला; मगर घटने-बढ़ने के विचार में अन्तर है।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : हरकत से पेशियों में कड़ापन। घटना : अराम से (पेशियों के बंधनों और कड़ापन में)।

मात्रा—निम्न विचूर्ण शक्तियाँ। ३० मात्रा भी।

जिन्सेंग (Ginseng)

(एरेलिया क्विनकेफोलिया—वाइल्ड जिन्सेंग-पैनेक्स)

उत्सर्जन ग्रन्थियों को उत्तेजित करने वाली मानी जाती है, खासकर लार ग्रन्थियों को। मेरुदण्ड के निचले भाग पर काम करती है। कटिवात, जांघिक स्नायुशूल (गृध्रसी) और वात दर्द। पश्चाघातिक कमजोरी। हिचकी। चर्म लक्षण, गरदन और छाती पर खुजलीदार दाने।

सिर—चक्कर, आँखों के सामने भूरे धब्बे के साथ, आधे सिर का दर्द, कनपटियों का दर्द, पलक खोलना कठिन, वस्तुएँ दोहरी दीख पड़ें।

गला—तालुमूल प्रदाह, ठीक बेलाडोना की तरह, मगर गहरे रङ्ग के लोगों में।

उदर—तना हुआ, दर्दीला, गड़गड़ाहट। दाहिनी तरफ दर्द। क्षुद्रांत्र क्षेत्र में तेज गड़गड़ाहट। अन्धान्त्र आवरक झिल्ली का प्रदाह।

पुरुष—अक्सर धातु क्षीणता के बाद वात दर्द। जननेन्द्रिय की कमजोरी, मूत्रमार्ग के सिरे पर कामोत्तेजना। अण्डकोष में दाब।

अंग—हाथ सूजे मालूम दें। चर्म कसा लगे। सिकुड़न। पीठ और मेरुदण्ड में ठण्डक। पिठासे और जाँघों में चोटीला दर्द, प्रत्येक रात में निचले अङ्गों से अँगुलियों तक गड़न। हाथ की अँगुलियों के सिरों में जलन, जाँघों के ऊपरी भीतरी भाग में फरन। कड़े सिकुड़े जोड़। निचले अङ्गों का भारीपन। जोड़ों का चुरचुराना, पीठ में तनाव।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : एरेलिया कोका, हेडेरा-आइवी-मानसिक उदासी और चर्म उत्तेजना गन पाउडर से प्रभाव रहित होता है।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

ग्लोनोइन (Glonoine)

जीएल०-ग्लिसरीन, ओ-ऑक्सीजन, एन-नाइट्रोजन (नाइट्रो-ग्लिसरिन) स्पिरिटस ग्लिसेरिनस नाइट्रेट)

हाल के जर्मन परीक्षण, अमेरिका के मूल परीक्षणों और चिकित्सा सम्बन्धी संकेतों की पुष्टि करते हैं। अनेक स्नायु बाधाओं को स्पष्ट रूप से विदित करती है। अधिक सुस्ती, काम करने को मन न चाहे, फिर प्रादाहिक सिर लक्षण उत्पन्न होना। ६ शक्ति से भी सारे शरीर में खुजली और बाद में दाने उभरें और फुन्सियाँ हों, प्रचण्ड भूख भी।

प्रादाहिक सिर दर्द और अति गरमी या ठंडक से मस्तिष्क में रक्ताधिक्य के लिए एक बड़ी औषधि। अन्तर करोटि सम्बन्धी, वयःसन्धि-काल के रोग या मासिक-धर्म के दब जाने से रोग उत्पन्न होने की अवस्था में उपयुक्त औषधि। खुली आग के सामने बैठने के कारण बच्चों का बीमार पड़ना। **सिर और दिल में रक्त की लहर की तरह दौड़ जाना।** एकाएक रक्त संचार क्रिया के भ्रष्ट होने की प्रवृत्ति। मस्तिष्क रक्ताधिक्य सम्बन्धी घोर आक्षेप के आक्रमण। सारे शरीर में नाड़ी धड़कन। टपकन दर्द। स्थान भ्रम। दुबले लोगों में जांघिक स्नायुशूल (गृध्रसी), जिनका अंग चुचुका हो; सामुद्रिक यात्राकालीन बीमारी।

सिर—मानसिक गड़बड़ी, चक्कर के साथ। लू लगने का असर, सिर पर गरमी, जैसा टाइप बैठाने वालों में या गैस और बिजली की रोशनी के नीचे काम करने वालों को प्रायः होता है। **सिर भारी, मगर तकिए पर न रख सके। सिर के पास कोई गरमी सहन न हो।** आक्षेपिक स्नायुशूल सिर और चेहरे का। अति चिड़चिड़ापन। लेटने के बाद उठने पर चक्कर आए। मस्तिष्क रक्ताधिक्य। सिर अति बड़ा जान पड़े, मानो खोपड़ी भेजे के लिए बहुत बड़ी है। आधे सिर का दर्द, जो सूर्य के साथ बढ़े और घटे। सिर के धक्के, नाड़ी के क्रम के साथ। मासिक-धर्म की जगह सिर दर्द। गर्भिणी स्त्रियों के सिर में रक्त दौड़ना। संन्यास रोग का भय। मस्तिष्क प्रदाह।

आँख—सभी चीजों का आधा भाग उजाला और आधा भाग अन्धेरा दीखना। अक्षर छोटे जान पड़ें। आँखों के आगे चिनगारी।

मुँह—टपकन के साथ दाँत दर्द।

कान—थरथराहट, दिल की प्रत्येक धड़कन कानों में सुनाई दे, भरापन।

चेहरा—रक्तमय, गरम, लाल, पीला, पसीजा, नाक की जड़ में दर्द, चेहरे का दर्द। झबरा चेहरा।

गला—गरदन भारी मालूम दे। कालर खोलना पड़े। गला घुटे और कानों के पास सूजन हो।

पेट—रक्तहीन, मन्द रक्तसंचार वाले लोगों का पाकाशय शूल। मिचली और कै। पेट के गढ़े में गशी, कुतरन और खालीपन मालूम पड़े। अप्राकृतिक भूख।

उदर—खुजलीवाली, दर्दवाली बवासीर। मल त्यागने के पहले और बाद में। उदर में बींधन के साथ कब्ज। दस्त, मल अधिक, काला, गाँठदार मल।

स्त्री—मासिक-धर्म देर में या एकाएक रुकना, सिर में रक्ताधिक्य के साथ वयःसंधिकालीन जोर का स्राव।

दिल—सश्रम क्रिया। फड़फड़ाहट। साँसकष्ट के साथ धड़कन। पहाड़ों के ऊपर न चढ़ सके। किसी भी परिश्रम से दिल में रक्त दौड़ जाये और गशी आवे। पूरे शरीर में, अँगुलियों के सिरों तक थरथराहट।

अंग—पूरे शरीर में खुजली, अङ्गों में अधिक। बायीं द्विशिर-पेशी में दर्द। सभी अङ्गों में खींच, दर्द। पीठ में दर्द।

घटना-बढ़ना—घटना : ब्राण्डी से। बढ़ना : धूप में, सूर्य की किरणों से, गैस की रोशनी से, खुली आग, झटका, झुकना, बाल काटने से, आड़ू खाना, उत्तेजक वस्तुयें, लेटना ६ बजे सुबह से दोपहर तक, बायीं तरफ।

सम्बन्ध—क्रियानाशक—एकोनाइट।

तुलना कीजिए : एमिल नाइट्रोसम, बेलाडाना, ओपियम, स्ट्रैमोनियम, वेरेट्रम विरिडि।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

शान्तिप्रद प्रभाव (स्थूल मात्रा) के लिए हृदय शूल, दमा, हृदय गति का रुकना इत्यादि, शारीरिक स्थूल मात्रा में १ : १०० बूँद देना चाहिए। इस अवस्था में यह उत्तम तत्कालीन फलप्रद औषधि है। इसके प्रयोग की अवस्था है : छोटी, सुरसुरी नाड़ी, पीला पड़ना, धामनिक झटकन, मस्तिष्क रक्तहीनता, पतनावस्था, कमजोर हृदय, गशी, दोहरी चोट की नाड़ी चक्कर, उन सब लक्षणों का उल्टा जो होमियोपैथिक व्यवहार के लक्षणों में मिलता है। जीर्ण सांतर गुर्दा के प्रदाह में धमनी चाप कम करने के लिए अकसर व्यवहार की जाती है।

ग्लीसरीनम (Glycerinum)

(ग्लीसरीन)

होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार प्रयोग करने पर सुरक्षा मात्रा में शक्तिवान बनाकर ग्लीसरीन का प्रभाव गहरा और दीर्घकालीन होता है, तन्तुओं को बनाता है, इसलिये सुखण्डी रोग, कमजोरी, मानसिक और शारीरिक, मधुमेह इत्यादि में उत्तम लाभ करती है। मूल प्रभाव में यह पोषण क्रिया को छिन्न करती है और गौण प्रभाव में पोषण क्रिया को बढ़ाती है (डॉ० विलियम बी० ग्रिग्स)।

सिर—भरा जान पड़े, थरथराहट, मानसिक गड़बड़ी। मासिक-धर्म होने से दो दिन पहले तीव्र सिर दर्द। कनपटियाँ भरी जान पड़ें।

नाक—ऊपरी मार्ग बन्द, छींक, कटन जुकाम। श्लेष्मिक झिल्ली में रेंगन। पिछले भाग से स्राव।

सीना—ठोंकने वाली खाँसी, कमजोरी के साथ। सीना भरा मालूम दे। जुकामी फुफ्फुस प्रदाह।

आमाशय—गैस अधिक बनना, पेट और गले में जलन।

मूत्र—अधिक और बार-बार पेशाब होना। घनत्व अधिक और चीनी मधुमेह।

स्त्री—गर्भाशय में धँसन, भारीपन के साथ। अधिक दीर्घकालीन मासिक-धर्म। सर्वाङ्ग की शिथिलता।

अंग—सविरामिक वात पीड़ा। पैर दर्द वाले और गरम, बड़े मालूम पड़ें।

तुलना कीजिये : लैक्टिक एसिड, जेल्सेमियम, कैल्के०।

मात्रा—३० और उससे ऊँची शक्ति। शुद्ध ग्लीसरीन चाय के चम्मच के नाप से, कठोर रक्तहीनता में नीबू के रस में मिलाकर।

नैफेलियम (Gnaphalium)

(कड-वीस)—ओल्ड बैलसम)

जांघिक स्नायुशूल की निर्विवाद औषधि, जब दर्द के साथ उस भाग में सुन्नता भी हो। वात पीड़ा और प्रातः दस्त हो। अनेक बार पेशाब करना।

चेहरा—दोनों तरफ की ऊपरी जबड़ा की हड्डी में सविराम दर्द।

उदर—वायु की आवाजें शूल, कई जगहों में उदर पीड़ा। मूत्र ग्रंथि में उत्तेजना। शिशु हैजा का पहला चरण, कै और दस्त।

स्त्री—कोखों में भारीपन और भरापन। कष्टप्रद मासिक धर्म; कम और पीड़ाजनक मासिक धर्म।

पीठ—निचले, कटि-प्रदेश में जीर्ण पीड़ा; पीठ के बल आराम करने से कम। पीठ के निचले भाग में सुन्नता और पेड़ू में भारीपन के साथ कटिवात।

अंग—बिस्तर में, टाँगों, पिण्डली और पैर में ऐंठन। टखनों के जोड़ों और टाँगों में वात दर्द। कटि जांघिक स्नायु में तीव्र दर्द, पीड़ा और सुन्नता बारी-बारी से। पिण्डली और पैर में अकसर दर्द, पैर के अंगूठों में गठिया दर्द। पैर ऊपर उठाने व खींचने से कम, जाँघों को पेट पर मोड़ने से, गठिया रोग का दूषित पदार्थ जमा होना (एमोनियम, बेन्जोयिकम)। घुटनों के अगले भाग का स्नायुशूल

(स्टैफिट०) । जोड़ों में दर्द मानो चिकनाई की कमी है । पीठ और गरदन की जीर्ण पैशिक वातपीड़ा ।

तुलना कीजिये : जैन्थकजाइलम, कैमोमिला, पल्सेटिला ।

मात्रा—३ से ३० शक्ति ।

गोलोण्ड्रिना (Golondrina)

(युफोर्बिया पोलीकार्पा)

सर्प विष की मारक । इसके व्यवहार से सर्प विष क्षमता शरीर में उत्पन्न हो जाती है और इसलिए प्रतिषेधक है (इण्डिगो) ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : दी इयूफोर्बिया बंश । इयुफोर्बिया प्रोस्टाटा-(इण्डियन लोगों में जहरीले कीड़ों और साँप काटने पर, खासकर रैटल् सर्प के डँसने पर अचूक औषधि के रूप में व्यवहार होती है) । फ्लूमेरिया सेलिनस (टिंचर आन्तरिक और बाहरी प्रयोग); हर १५ मिनट पर सर्प के लिए (डा० कोरिया), सीड्रन । माइकेनिया गुवाचो, ब्रेजिल की एक सर्प विष औषधि । सेलैजिनेला (दूध में घोलकर, लगाने और खाने के लिए, साँप और मकड़ी के विष) आयोडियम, अरिष्ट रैटल् सर्प के काटने पर लगाना और एक बूँद की मात्रा में हर १० मिनट पर खिलाना । जिम्नेमा साइलवेस्टर (कड़वी वस्तु का स्वाद नष्ट करेगा; स्वाद संवेदना परावर्तित होती है । बुकी हुई जड़ सर्प डँसने पर); रिसाइरिचियम—ब्लू आइड ग्रास—१०-१५ बूँद मात्रा में अरिष्ट की (रैटल सर्प डँसने पर) ।

गॉसिपियम (Gossypium)

(काटन-प्लैण्ट)

एक शक्तिवान मासिक स्राव प्रवाहक, यदि स्थूल मात्रा में प्रयोग किया जाय । होमियोपैथिक दृष्टि से इसमें बहुत-सी परावर्तित अवस्थायें मिलती हैं जो गर्भाशय की गड़बड़ी और गर्भावस्था पर निर्धारण है । गॉसिपियम उस अवस्था में लाभदायक होगा जब मासिक स्राव निकलना मालूम दे, मगर न निकले । लम्बे कदवाली, रक्तहीन, रोगिणी, स्नायविक गनगनी वाली ।

सिर—गरदन के पास दर्द और सिर में स्नायविकता के साथ पीछे मुड़ने की प्रवृत्ति ।

आमाशय—मिचली, नाश्ते के पहले कै की सम्भावना । मासिक काल के लगभग पेट के गड्ढे में असुविधा के साथ भूख न लगना ।

स्त्री—योनि घुण्डी की सूजन और खुजली। डिम्बाशय में सविरामिक पीड़ा। खेड़ी का रुकना। काँखों की ग्रन्थि की सूजन के साथ स्तन का अर्बुद। गर्भिणी की मिचली; गर्भाशय क्षेत्र की उत्तेजनीयता के साथ मासिक-धर्म का दबना। अधिक पानी-सा स्राव। पीठ में दर्द, भारीपन और पेडू में खींचन। गर्भाशय का उलटना और तन्तुमय अर्बुद, पाकाशयिक दर्द और कमजोरी के साथ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ताजी हरी जड़ से औषधि बनाने पर अगरट की तरह काम करती है। लिलियम, सिमिसिफ्यूगा, सैबाइना।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति तक।

ग्रेनैटम (Granatum)

(पोमग्रैनेट)

कृमि नाशक, लम्बे केंचुए निकालने के लिए और होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार नीचे लिखे लक्षणों में हितकर है। मिचली और चक्कर के साथ लार बहना। गले के झटके।

सिर—खाली मालूम देना। आँखें धँसी हुईं, पुतली फैली हुई, देखने में कमजोर, चक्कर लगातार।

आमाशय—लगातार भूख। पाचन-क्रिया दुर्बल। दुबलापन। रात में कै होना।

उदर—पेट और उदर में दर्द, नाभि के पास अधिक (कॉकुलस इण्डिका, नक्स मॉस्केटा, प्लम्बम मेट०)। असफल मल-त्याग इच्छा। गुदा खाज। योनि प्रदेश में धँसन, मानो आँत उतरेगी। नाभि का आंत्र उतरने की तरह फूलना।

सीना—दाब, आहें भरना। कन्धों के बीच में दर्द, कपड़े से भी कष्ट हो।

चर्म—हथेलियों में खुजली। मालूम पड़े कि दाने निकलने वाले हैं। चेहरा पीला।

अङ्ग—कन्धों की चारों तरफ दर्द, मानो भारी बोझ उठाया गया हो। सभी अँगुलियों, जोड़ों में दर्द। घुटने के जोड़ में फटन। झटकन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : पेलेटिराइन (इसी का एक अंश है—एक कृमि-नाशक, खासकर लम्बे केंचुए), सिना, काउसी।

मात्रा—१ से २ शक्ति।

ग्रैफाइटिस (Graphites)

(ब्लैड लेड)—प्लमबैगो

अन्य कार्बनों की तरह यह औषधि भी शक्तिवान खाजनाशक है, लेकिन खासकर उन रोगियों में अधिक काम करती है जो कुछ तगड़े, साफ रङ्ग के होते हैं, जिनको चर्म रोग और कब्ज अधिक होता है, मोटी शीत वाली और कब्ज वाली स्त्रियाँ, जिनको मासिक-धर्म देर में शुरू हुआ हो और जुकाम जल्द होता हो। बच्चे जो ढीठ हों, तंग करें, बिगड़ने पर हँसें। भीतरी रोगों के चर्म रोग अवस्था उभारने की क्रिया उत्पन्न करती है। विसर्प रोग की प्रवृत्ति को नाश करती है। चेहरे की लाली के साथ रक्तहीनता। मोटापन। जननेन्द्रिय सूजी हुई। फलकने वाला प्रदर रोग। पपड़ी तन्तु को शरीर ही में सुखाना। तन्तुओं की सख्ती। आमाशय छिद्र का कर्कट रोग। पाकाशय के साथ।

मन—चिहुँकने की प्रबल प्रवृत्ति। काम करने के लिए बैठने पर अशान्त रहना। काम करने की इच्छा न रहना। भयभीत, उदासी, अनिश्चितता।

सिर—सुर्खीला चेहरा और नकसीर, पेट में तनाव और वादी संचयता के साथ सिर में खून दौड़ना। सुबह जागने पर सिर दर्द, अधिकतर एक ही तरफ, कै की सम्भावना के साथ। माथे पर मकड़ी के जाले जैसा लगे। ठिठुरा और चुस्त। सिर की एक तरफ वात दर्द जो दाँत और गरदन तक बढ़े। चाँद पर जलन। बाल वाले खोपड़ी के भाग पर दाने, खुजली वाले, उनमें से दुर्गन्ध निकले। कड़ापन की अवस्था।

आँख—आँख आना, कृत्रिम प्रकाश असह्य। पलक लाल और सूजे हुए। पलकों की सूजन। पलकों का सूखापन। पलकों पर अकौता, दरारें पड़ें।

नाक—भीतरी भाग का सूखापन। खाते समय कानों में चुरचुराहट। कानों के पीछे नमी और फरन। शोर में अच्छा सुनाई दे। ऊँचा सुनना। कानों में फुफुकार। कानों में बन्दूक के धड़ाके की गरजन। कानों के पर्दे पर पतली, सफेद पपड़ीदार झिल्ली, जैसे खाल उघड़ी हो। कानों और उनके पीछे दरारें।

नाक—छिनकने पर छरछराहट, भीतरी दर्द। सूँघने की शक्ति अति तीव्र, फूल की गन्ध सहन न हो। नथुनों में खुरण्ड और दरारें।

चेहरा—चेहरे पर मकड़ी के जाले मालूम पड़ें। नाक का अकौता खुजलीदार दाने। मुँह और ठुड्डी के चारों तरफ नम अकौता। विसर्प रोग, जलन चुभन।

मुँह—सड़ी दुर्गन्ध। साँस पेशाब की तरह गन्ध करे। जबान पर छाले जिनमें जलन हो। लार बढ़े। खट्टी डकार।

आमाशय—मांस से घृणा। मिठाई से मिचली आवे। गरम चीज पीना असह्य, प्रत्येक बार खाने के बाद मिचली और कै होना। मासिक-काल में मिचली हो। पेट में दाब। आमाशय के जलन से भूख लगे। कठिन डकार, पेट में दबोच जैसा दर्द, पाकाशय शूल। वादी भरना। खाने से कुछ देर के लिए पेट का दर्द कम हो जाये, या गरम चीज, खासकर दूध पीने से और लेटने से भी।

उदर—उदर में मिचली जैसा मालूम पड़े। उदर में भरापन और कड़ापन जैसे वादी में फँसी हो, कपड़ा ढीला करना पड़े, नाभि में दर्दीला दाब। उदर में गड़-गड़ाहट। कोखे का भाग कोमल, सूजा हुआ। जिस करवट लेटे उसके दूसरी तरफ तरफ वादी का दर्द। जीर्ण दस्त, मल बादामी; पतला, अनपचा, घृणित। शूल के बाद अति दुर्गन्धित वायु-स्खलन।

मल—कब्ज, बड़ा कठिन, गठीला मल, श्लेष्मा के रेशे मिलते हों। जलन वाली बवासीर। काँच निकलना; दस्त, बादामी पतला मल, जिसमें अनपची चीजें मिली हों, अति घृणित दुर्गन्ध। दर्द वाला, गड़न वाला, खुजलीदार गुदा। ढोकेदार मल श्लेष्मा के रेशे मिले हों। मलाशय की नसें फूली और मोटी हों, गुदा की दरारें (रेटानहिया, पियोनिया, आफिसि०)।

मूत्र—गँदला, तलछटदार। खट्टी गन्ध।

स्त्री—कब्ज के साथ देर में मासिक धर्म हो, पीला और कम, कौड़ी में फटन दर्द और उसके पहले खुजली हो। आवाज भारी, जुकाम, खाँसी, पसीना और सुबह की बीमारी मासिक-धर्म के बीच में। प्रदर : पतला, पीला, मात्रा में अधिक, सफेद, काटने वाला, पीठ में बहुत कमजोरी के साथ। स्तन सूजे हुए और कड़े। डिम्बाशय, गर्भाशय और स्तनों का पकना। स्तन घुण्डी दर्द वाली, चिटकी और छालेदार। मैथुन से निश्चित रूप से घृणा।

पुरुष—मैथुन सम्बन्धी दुर्बलता, इच्छा अधिक, मैथुन से घृणा, बहुत जल्दी वीर्य स्खलन या वीर्य स्खलन न हो, जननेन्द्रिय पर दाद वाले दाने।

श्वास-यन्त्र—सीने में दाब, आक्षेपिक दमा, दम घुटने के हमले सोते से जगा दें, कुछ खाना आवश्यक। सीने के बीच दर्द, खाँसी के साथ, खुर्चन और चोटीला-पन। चर्म रोग के साथ जीर्ण आवाज फटन। स्वर-यन्त्र का नियन्त्रण असम्भव, आवाज फटी हो, गाने या बोलने से पहले।

अङ्ग—गरदन की जड़ में दर्द, कन्धों, पीठ और अङ्गों में भी। रीढ़ की हड्डी का दर्द। बहुत कमजोरी के साथ पिठासे में दर्द। जाँघों के बीच में छिलन। बायाँ हाथ सुन्न, बाहें सो जायें, अँगुलियों के नाखून मोटे, काले, भुरभुरे, गर्भाशय सूजा हुआ (सोरिनम, फ्लोरिक एसिड)। निचले अङ्गों का शोथ। पैर की अँगुलियों के नाखून छोटे। पैर की अँगुलियों का कड़ापन और सिकुड़न। नाखून चुरचुरे और

भुरभुरे। नाखून रूपहीन, दर्दीले, चोटीले, मोटे और छोटे। अँगुलियों के सिर पर दरारें या चिटकन। पैरों से घृणित पसीना निकलना।

चर्म—खुरदरा, कड़ा अकौता के हमले से बचा हुआ भाग का लगातार सूखापन। कोर्म अर्बुद और सूत्रमय अर्बुद का प्राथमिक चरण। दाने और मुँहासे। चर्म फटना, जिसमें से चिपचिपा रस निकले। अङ्गों के जोड़ों में कच्चापन, पुट्ठों में, गरदन में, कानों के पीछे सभी जगह कच्चापन। अस्वस्थ चर्म, छोटी चोट भी पके। घाव जिसमें से चिपचिपा रस, पतला, चिकना रस निकले। ग्रंथियों की सूजन और पकना। गठिया हड्डी का गुल्म। स्तन घुण्डियों में, मुँह, पैर की अंगुलियों के बीच में और गुदा में चिटकन। चेहरे का फूलना। विसर्प रोग, जलन और गड़न दर्द। पैरों की सूजन। मांसांकुर। जीर्ण विषैले ओक का रोग।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सेंकन, रात में, मासिक-धर्म के दौरान में और उसके बाद। घटना : अँधेरे में, कपड़ा लपेटने से।

सम्बन्ध—पूरक : आर्जेण्टम नाइट्रि० (बाद की अच्छी औषधि, पाकाशयिक विकार में), कॉस्टिकम०, हीपर०, लाइको०, आर्सेनिक, ट्युबरकुलाइनम।

तुलना कीजियें : पेट्रोलि०; सीपिया; सल्फर, फ्लोरिक एसिड। कब्ज, श्लेष्मा से ढँका हुआ मल और पाकाशयिक वादी के लक्षण और अन्तर पर पेट्रोलि० और लाइको० ऐसी औषधियों पर भी ध्यान रखना चाहिए। (रॉबे)।

क्रियानाशक : नक्स०, एकोना०, आर्सै०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति। लगाने के लिए मलहम के रूप में स्तन घुण्डी की चिटकन में।

ग्रैटियोला (Gratiola)

(हेज हिसाप)

खास तौर पर पाकाशयिक आंत्रिक प्रणाली पर काम करती है। जीर्ण नजले की अवस्थायें; प्रदर और प्रमेह। कठिन घाव। अति घमण्ड को दबाने के कारण मानसिक खराबियों में लाभदायक है। खासकर स्त्रियों के लिए लाभदायक है। स्त्रियों में नक्स के लक्षणों में काम आती है।

सिर—पुराना सिर दर्द। दृष्टिहीनता के साथ रक्त दौड़ना। ऐसा लगे कि भेजा सिकुड़ रहा है और सिर छोटा होता जा रहा है। माथे में कसापन, खाल में सिकुड़न। आँखें सूखी, जलन। निकट दृष्टि।

पेट—खाते समय और बाद में चक्कर आए, खाने के बाद भूख और खालीपन। अजीर्ण, अधिक अफरा के साथ। रात्रि भोजन के बाद और रात में ऐंठन तथा शूल। उदर फूला हुआ और कब्ज के साथ। तरल पदार्थ निगलने में कष्ट।

मल—दस्त, हरा; झागदार पानी, बाद में गुदा में जलन, तेजी से निकले; बिना दर्द। गठिया और तेजाबीपन के साथ कब्ज। व्याधि शंका के साथ बवासीर। मलाशय सिकुड़ा हुआ।

नींद—अनिद्रा।

स्त्री—अधिक मैथुन की इच्छा। मासिक-धर्म अधिक, समय के पहले, देर तक जारी रहे। प्रदर।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : अधिक पानी पीने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : डिजिटेलिस, इयुफ्रेशिया, टैबेकम, कैमोमिला, एमोनियम पिक्रे०, नक्स वोमिका।।

मात्रा—२ से ३ शक्ति।

ग्रिण्डेलिया (Grindelia)

(रोजिन-ऊड)

दोनों, ग्रिंडेलिया रोबस्टा और ग्रिंडेलिया स्क्वैरोसा नीचे लिखे लक्षणों के लिए व्यवहार किए जाते हैं। इनके नाम व लक्षणों में कोई अन्तर नहीं है, गोकि ग्रिंडेलिया स्क्वैरोसा को गुर्दा लक्षण, बाँयें कोनों में धीमा दर्द और भारीपन, जीर्ण मलेरिया, पाकाशयिक दर्द जो गुर्दों के रक्ताधिक्य से सम्बन्धित हो, इन सब अवस्थाओं के लाभ के लिए श्रेय दिया जाता है। लकवा उत्पन्न करती है जो निम्न अंग से शुरू हो। इसका काम हृदय पर भी होता है, पहले यह उसकी गति को तेज करती है और बाद में मन्द करती है।

सूखे जुकाम में, फुफ्फुसीय-पाकाशयिक, हृदय-फुफ्फुस नाड़ी मंडल पर काम करती है। (पकन और मवादी अवस्था में टार्ट एमेटिक)। पाकाशयिकफुफ्फुसीय नाड़ी मंडल में आंशिक लकवा उत्पन्न करती है, जिससे साँस लेना रुकता है। सोने के बाद दम घुटना। दमे की हालत, जीर्ण वायुनलिका प्रदाह। वायुनलिका स्राव जिसमें चिमड़ा बलगम निकले जो जल्दी अलग न हो। रक्तचाप बढ़ाती है। पाकाशय घाव की मिचली और ओकाई। मूत्र में चीनी। रस-विष का सफल शामक, खाने और लगाने में। जलन, छाले, योनि स्राव, और दाद के लिए भी। अम्लपित्ताधिक्य, जब साथ में दमा, और दूसरे स्नायविक लक्षण भी हों। पाकाशयिक श्लैष्मिक झिल्ली में रक्ताधिक्य, कठिन साँस के साथ।

सिर—भरा मालूम हो जैसे कुनैन खायी हो। आँखों के ढेलों में दर्द जो मस्तिष्क में पीछे की तरफ दौड़े, आँखें हिलाने से बढ़े। पुतली फैली हुई। आँखों की सूजन, पीब और उपतारा प्रदाह के साथ।

साँस-यन्त्र—वायुनलिका प्रदाह वाले रोगियों को साँस के साथ साँय-साँय करने और कष्ट की उत्तम औषधि। खुरखुराहट, झागदार बलगम निकलने से कष्ट कम हो, जो कठिनता से निकले। फुफ्फुसीय रक्तसंचार यन्त्र पर काम करती है। अधिक चिमड़ा बलगम जो निकलने से कष्ट कम हो, दमा रोग। नींद आने पर साँस रुकना, चिहुँक कर जाग उठे और हाँफने लगे। साँस लेने के लिए बैठ जाना पड़े। लेटने पर साँस न ले सके। रुक-रुक कर साँस लेना।

तिल्ली—तिल्ली प्रदेश में कटन दर्द जो चूतड़ों तक बढ़े। तिल्ली बढ़ी हुई (सियानोथस, कारडुअस)।

चर्म—लाल छत्ते की तरह चर्म फरन, तीव्र जलन और खुजली के साथ। सूखे और जल भरे दाने। भैंसिया दाद। खुजली और जलन; ओक विष (पानी में धोने के लिए)। सूजे, बैगनी रङ्ग के चमड़े के साथ घाव।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : टार्टर एमेटिक; एरियोडिक्टियाना, लैके०, सैंग्विनेरिया।

मात्रा—अरिष्ट का १ से १५ बूँद की मात्रा में नीचे की शक्ति में भी।

गुआको (Guaco)

(मिकानिया, कलाइम्बिक हेम्प वीड)

स्नायु-मंडल और स्त्री जननेन्द्रियों पर काम करती है। बिच्छू और साँप के विष का नाशक (गोलोण्ड्रीना) हैजा। वातनाड़ियों का पक्षाघात, उपदंश। कर्कट। बहरापन। जबान भारी, हिलाने में कठिनाई। रीढ़ की उत्तेजना। रीढ़ के लक्षण अधिक दर्शनीय और पुष्टि किए हुए। बियर के पीने वालों को सन्यास रोग होने का भय। पिठासे और कमर में टीस के साथ दस्त और पेचिश।

सिर—दर्द लाल चेहरा। जबान हिलाने से भारीपन और कठिनाई पड़े।

गला—स्वर-नली और भोजन नली सिकुड़ी हो, निगलना कठिन। जबान भारी, हिलाने में कठिनाई।

स्त्री—प्रसव स्राव अधिक, छींकने वाला, सड़ा, कमजोरी वाला। रात में खुजली और कड़कन मानों रोगी भाग से आग बाहर निकल रही हो।

मूत्र—अधिक, गंदला, फॉस्फेट मिला। मूत्राशय क्षेत्र के ऊपर दर्द।

पीठ—कन्धों के डैनों के बीच में दर्द, जो अग्र बाँह तक बढ़े। कन्धों की जड़ में जलन। रीढ़ की हड्डी भर में दर्द, झुकने से बढ़े। चूतड़ और पिठासे में थकावट।

अंग—असच्छादनी पेशी, कन्धों, केहुनी, बाँह और अंगुलियों में दर्द। उरुसंधि के आस-पास दर्द। टाँगें भारी। टखनों, जोड़ों और तलवों में दर्द। निचले अंगों का पक्षाघात।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : हरकत से।

संबंध—तुलना कीजिए : आक्जैलिक, एसिड, लैथाइरस, कॉस्टि०।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

गुयेकम (Guaiacum)

(रेजिन ऑफ लिग्नम वाइटे)

सौत्रिक तन्तु पर मुख्यतः का करती है और विशेषतः सन्धि प्रदाह की प्रवृत्ति वालों के लिए, वात पीड़ा और तालुमूल प्रदाह वालों के लिए उपयोगी है। उपदंश का दूसरा दर्जा। तीव्र वात रोग में अधिक लाभदायक है। **अबाध दुर्गन्धित स्राव सारे शरीर से दुर्गन्ध आये।** फोड़ों में मवाद लाने में सहायक है। स्थानीय गरमी असह्य और रोग का बढ़ना। अङ्ग का सिकुड़ना, कड़ापन, कार्यहीनता। फैलाने को बाध्य हो।

मन—भूलना; विचारहीन, घूरना; बात देर में समझे।

सिर—**सिर और चेहरे में गठिया दर्द जो गर्दन तक बढ़े।** खोपड़ी में फटने की तरह दर्द, जो ठंडे, नम मौसम में बढ़े। फूला मालूम हो और रक्त नलिकायें तनी हों। बायें कान में दर्द। अक्सर चिलकन में अन्त हो, खासकर सिर में।

आँखें—पुतली फैली हुई। पपोटे बहुत छोटे जान पड़ें। आँखों के चारों तरफ दाने।

गला—गठिया के कारण गला बिगड़ जाना और इसके साथ गल-पेशियों की दुर्बलता। गला सूखा, जला, सूजा हुआ, कानों की तरफ चिलक। तीव्र तालुमूल प्रदाह। उपदंशीय गलक्षत।

आमाशय—रोयेंदार जबान। **सेब और दूसरे फलों की इच्छा।** दूध से घृणा। आमशय में जलन। उदरोर्द्ध प्रदेश में सिकुड़न।

उदर—आँतों में उफान। आँतों में वायु की अधिकता। अतिसार, शिशु हैजा।

मूत्र—पेशाब करने के बाद तेज चिलक। लगातार इच्छा।

साँस-यन्त्र—दम घुटे। सूखी, कड़ी खाँसी। खाँसी के बाद दुर्गन्धित साँस। प्लुरिसी का दर्द। पसलियों के हिलने से सीने में दर्द, जब तक बलगम निकलना शुरू न हो, गहरा साँस न ले सके।

स्त्री—वात रोगी का डिम्बाशय प्रदाह। अनियमित मासिक धर्म और कष्टदायक और उत्तेजित मूत्राशय।

पीठ—सिर में गरदन तक दर्द। गरदन के पिछले भाग में टीस। कड़ी गरदन और वेदनापूर्ण कंधे। कंधास्थि के बीच से सिर के पिछले भाग तक चिलक। कंधास्थियों के बीच में दर्द।

अंग—कन्धों, बाँहों और हाथों में वात पीड़ा। बढ़ता हुआ दर्द (फास्फो० एसिड)। नितम्बों में चुभन और कटिवात। छोटे जोड़ों में चीरने-फाड़ने की तरह का दर्द जिसमें सिकुड़ाव आए। अङ्गों में सख्ती, हिला न सके। गुल्फ पीड़ा टाँगों के ऊपर तक बढ़े, जिससे लंगड़ापन हो। जोड़ सूजे हुए, दर्द भरे, दाब तथा गरमी और बाद में सिकुड़न। पीड़ित भाग में गरमी लगना।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : हरकत से, गरमी से, ठण्डा तर मौसम, दाब, छूना, ६ बजे शाम से ४ बजे सुबह तक। **घटना** : बाहरी दाब से।

सम्बन्ध—गुयेआकॉल (सुजाक के कारण आया शुक्र रज्जु प्रदाह में लगाने के लिए ३० भाग वैसलीन में २ भाग)।

क्रियानाशक : नक्स, सिपिया के बाद अच्छा काम करती है।

तुलना कीजिए—मर्करी; कॉस्टि०, रस०; मेजेरि०; रोडोडे०।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

—:०:—

गुआरिया (Guarea)

(बालऊड)

आँखों के लक्षण परीक्षित हैं। अर्जुन रोग और अनपच इससे अच्छे हुए हैं। गेरू की तरह लाल रङ्ग का चर्म टीबी।

आँखें—चक्षु प्रदाह, सूजन। ढेलों में चीरने-फाड़ने की तरह का दर्द, तनाव, जैसा बाहर ढकेली जा रही हों। चीजें धुँधली दिखाई दें, उल्टी दिखाई दें। आँखों के लक्षण और कम सुनाई देना बारी-बारी से हो। अधिक आँसू बहना।

सिर—ऐसा लगे कि मस्तिष्क आगे गिर रहा है; सिर पर जैसे चोट पड़ी हो।

साँस-यन्त्र—खाँसी के साथ पसीना, और सीने में दर्द और कसाव से स्वर-यन्त्र उत्तेजित।

मात्रा—अरिष्ट।

गिम्नोक्लेडस (Gymnocladus)

(अमेरिकन कॉफी ट्री)

गलक्षत, मुँह का भीतरी भाग गहरा नीला लाल और चेहरे का विसर्प अधिक मोटा लक्षण है। शीतपित्त। गरमी और शांति की इच्छा। सिर दर्द, माथे, कनपटियों और आँखों पर थरथराहट, जबान पर नीली-सी सफेद मैल के साथ। आँखों में जलन।

चेहरा—चेहरे पर मक्खियाँ रेंगती मालूम पड़ें। विसर्प रोग। दाँतों की अति कोमलता।

गला—क्षतग्रस्त, मुँह के भीतरी भाग और तालुमूल की गहरी नीलक के साथ लाली। गड़न के साथ दर्द। गले में श्लेष्मा और खरखरी। सूखी खाँसी के साथ गुदगुदी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लैक्नैन्थिस; लैकेसि०; एलैन्थ; रस०।

मात्रा—नीचे की शक्तियाँ।

हेमाटॉक्सिलोन (Haematoxylon)

(लॉगऊड)

सिकुड़न की संवेदना अधिक मोटा लक्षण है। ऐसा लगे मानो सीने के आर-पार छड़ रखा हुआ है। हृदय शूल।

सिर – सिकुड़ा मालूम पड़े, भारी, गरम। पपोटे भारी।

आमाशय—उदर से गले तक दर्द जैसे खोदा जा रहा है जिससे दाब के साथ हृदय प्रदेश में दर्द हो। आन्त्र शूल, तनाव। गड़गड़ाहट और अतिसार। फूला, दर्दीला।

सीना—सिकुड़न जो कौड़ी तक जाये। सीने आर-पार छड़ रखा हुआ लगे। दाब के साथ दिल में आक्षेपिक दर्द। दिल के क्षेत्र में बहुत दर्द, धड़कन।

स्त्री—तलपेट में दर्द, साथ में चिकना, सफेद प्रदर। मासिक काल में कमजोरी और नीचे के रुख दबाव के साथ दर्द।

तुलना कीजिये : कैक्टस; कोलोसि०; नाजा।

मात्रा—३ शक्ति।

हैमामेलिस विर्जिनिका (Hamamelis Verginica)

(विच-हैजेल)

शिरा में रक्ताधिक्य, रक्तस्राव, नसों का फूल जाना और बवासीर, और इसके साथ रोगग्रत भाग में कुचल जाने की-सी पीड़ा, यह सब इस औषधि के प्रभाव के मुख्य क्षेत्र हैं। शिराओं की परतों पर काम करती है जिससे ढीलापन होकर रक्ताधिक्य हो जाता है। किसी भाग में मन्द रक्तस्राव। खुले, वेदनापूर्ण घाव में अति मूल्यवान; जब कि अधिक खून निकलने से कमजोरी आयी हो। चीरफाड़ के बाद मार्फिया से अधिक लाभदायक है (हेलमथ)।

सिर—अपने योग्य अपना सत्कार करना चाहे। एक कनपटी से दूसरी कनपटी तक गोला लगने जैसा संवेदन। भरापन; बाद में नकसीर। शंखास्थि के ऊपर ठिठुरन।

आँखें—दर्द के साथ कमजोरी, आँखों में पीड़ा; खूनी लाली, रक्त जैसी लाल, नाड़ियाँ प्रदाहित और उभरी हुई। आँखों के भीतरी भाग की रक्तनलिकाओं के रक्त-प्रदाह को दूर करती है। आँखें बाहर को ठेली मालूम पड़ें।

नाक—नाक से अधिक खून निकले, बहाव मन्द, न जमने वाला खून, नाक की ऊपर सेतु अस्थि में कड़ापन। नाक से दुर्गन्ध आये।

गला—श्लैष्मिक झिल्ली तनी हुई और नीली-सी। गले की नसों का गँठीलापन।

आमाशय—जबान जली मालूम दे। प्यास। किनारों पर छाले। काला खून थूकना। आमाशय में थरथराहट और दर्द।

मल—गुदा में कच्चापन और वेदना। बवासीर, अधिक रक्तस्राव, दर्द के साथ। पेचिश, मलाशय में टपक।

मूत्र—खून का पेशाब, इच्छा अधिक।

स्त्री—डिम्बाशय में रक्ताधिक्य और स्नायुशूल, सन्तापपूर्ण अनुभूति, मासिकधर्म की जगह नाक से खून गिरे। गर्भाशयिक रक्तस्राव, पीठ में पीड़ा। मासिक रक्त गहरा, मात्रा में अधिक, उदर में चोटीलापन के साथ। गर्भाशय से अधिक रक्तस्राव जो दो मासिक-काल के बीच वाले समय में हो। मासिक कालों के बीच वाला दर्द (जैस० डब्लू० वार्ड) योनि अति कोमल। अधिक प्रदर। घुण्डी खाज। प्रसव के बाद टाँग का तरुण शोथ जो रक्त-संचार में बाधा पड़ने का परिणाम हो। बवासीर और स्तन घुण्डी दर्द। गर्भाशय से रक्त-स्राव हो, मन्द बहाव। योनि शूल, डिम्बाशय प्रदाह, सारे उदर में चोटीलापन। प्रसव के बाद जंघाशिरा का प्रदाह।

पुरुष—शुक्र रज्जु में दर्द जो अण्डकोष में उतरे। अण्ड नसों का मोटा हो जाना। अण्डों में दर्द। अण्ड प्रदाह। अण्ड बढ़े हुए, गरम और वेदनापूर्ण। शुक्र-रज्जु-क्षय।

श्वास-यन्त्र—रक्त थूके, गुदगुदीदार खाँसी। सीना वेदनापूर्ण और सिकुड़ा लगे।

पीठ—मेरुदण्ड के साथ ऊपरी कशेरुकाओं से दर्द। कटि और तलपेट क्षेत्र में तीव्र दर्द जो टाँगों तक उतरे।

अंग—टाँगों और बाहों में थकावट लगे। पेशियों और जोड़ों में तीव्र वेदना, नसों का फूलना। पीठ और नितम्ब में शीत लगे, जो टाँगों तक उतरे। पैर की वृहत नाड़ी में शूल।

चर्म—नीलाभ, बेवाई। शिरा प्रदाह। धूम्र रोग। शिरार्बुद और घाव, तीव्र पीड़ा। जल जाना। काला दाग। आघातजनित सूजन (आर्निका०)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : गरम नम हवा।

सम्बन्ध—बवासीर में तुलना कीजिये : कैल्के०, फ्लोर०, एलो। शिराबुंद में म्यूरियेटकम ऐसिड, मैंगिफेरा इण्डिका।

तुलना : आर्निका, कैलेंडु०, ट्रिलियम, बेलिस, सल्फुरिक ऐसिड, पल्से०।

क्रियानाशक : आर्निका।

पूरक : फेरम फॉस।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति। परिस्रुत घनसार लगाने के लिए।

हेडेओमा (Hedeoma)

(पेनिरायल)

स्त्री-लक्षण अधिक महत्वपूर्ण। अफरा के साथ आते हैं; बहुधा स्नायविक गड़बड़ी के साथ लक्षण आते हैं। मूत्र में लाल बालू। मूत्र-नलिका में दर्द। आन्त्र शूल। ओक विष क्रियानाशक (ग्रिडेलिया)।

सिर—सुबह के समय सुस्ती, भारीपन। दर्द जैसे कट गया हो। दुर्बल, मूर्च्छामयी, लेटने से आराम।

आमाशय—आमाशय प्रदाह। आमाशय में कुछ भी पहुँचने से दर्द हो। जबान पर पतला, सफेद मैल। मिचली।

उदर—तना हुआ, सन्तापपूर्ण कोमल।

मूत्र—घड़ी-घड़ी इच्छा, कटन, दर्द। बायें गुर्दे की नाली में दर्द। गुर्दों से मूत्राशय तक घसीटने जैसी पीड़ा। बायें गुर्दे पर मन्द जलन, दर्द। मूत्राशय की गरदन पर जलन और उत्तेजना जिससे बराबर पेशाब लगे और कुछ मिनटों में अधिक पेशाब न रुक सके, पेशाब करने का कष्ट हो।

स्त्री—नीचे की ओर दबाव के साथ दर्द। अधिक पीठ दर्द के साथ, जरा-सा हिलने से कष्ट बढ़े। प्रदर, जलन और स्राव के साथ। डिम्बाशय में रक्ताधिक्य और दर्द, आक्षेपिक धँसन, संकुचन।

अंग—हाथ के अँगूठों के जोड़ों में दर्द। दर्द, ठण्डापन और पक्षाघात जैसी अवस्था। फरकन, झटका, चोटीलापन। गुल्फ, देशीय सुदृढ़ कण्डरा दर्दीली, मानो मोच खा गई हो और सूजन, टहलना पीड़ाजनक।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : मेन्था-पिपरेटा; सिपिया; लिलियम, ओसिमम; (यूरिक एसिड प्रबलता, गुर्दे की नाली में दर्द) हेडरा, हेलिक्स—कॉमन आईवी (प्रलापक सन्निपात और जीर्ण आक्षेप। जीर्ण मस्तक शोथ, नाक से श्लेष्मा का स्राव, मस्तिष्क मेरुमज्जा प्रदाह, मोतियाबिन्द। रक्तनलिका पर काम करती है, अधिक मासिक स्राव)। ग्लेकोमा हेडेरेसिया-ग्राउण्ड आईवी-(बवासीर के साथ गुदा उत्तेजित और रक्त स्राव, अतिसार। गुदा में कच्चापन और दर्द। खाँसी के साथ स्वर-नली और गल-नली की उत्तेजना। चिबुक निम्नस्थ सूजन)।

मात्रा—पहली शक्ति।

हेक्ला लावा (Hecla Lava)

(लावा स्कोरिये फ्रॉम मौण्ट हेक्ला)

जबड़ों पर स्पष्ट प्रभाव। बढ़ी हुई अस्थि, मसूढ़ों का फोड़ा, दाँत निकलने में कठिनाई आने में अधिक उपयोगी है। अस्थि गुल्म, हड्डी का सड़ना इत्यादि। अस्थि-प्रदाह, अस्थिवेष्ट प्रदाह, सम्मिलित हड्डी का कैंसर, बालशोष। साधारण अर्बुद। हड्डी सड़ना। जबड़ों की चीरफाड़ के बाद हड्डी का सड़ना और छेद करने वाले घाव।

चेहरा—नाक की हड्डी का सड़ना। कीड़ा खाये दाँतों का और दाँत निकलवाने के बाद चेहरे का स्नायुशूल। जबड़ों के आसपास सूजन के साथ दाँत दर्द। मसूढ़ों के घाव। जबड़े की हड्डी का बढ़ना। गर्दन की ग्रन्थियों का बढ़ना और पकना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सिलिका, मर्क्यूरियस, फासफोरस, कॉंचि, ओलिनम—मदर ऑफपर्ल—(हड्डी का लम्बा भाग रोगग्रस्त, स्पर्श अति असह्य); ऐम्फिसबोयेना—स्नेललाइक लिजर्ड—(जबड़े की हड्डियों से अधिक सम्बन्ध, हवा और नमी से रोग बढ़ना); स्लैग—(रोगग्रस्त भाग में अति खुजली)।

मात्रा—नीचे की शक्ति।

हेलिबोरस (Halleborus)

(स्नो-रोज)

यह दवा ज्ञानेन्द्रियों में क्षीणता की अवस्था पैदा करती है। देखना, सुनना और स्वाद सभी अपूर्ण हो जाते हैं और सर्वाङ्ग पैशिक दुर्बलता आती है, जो पूर्ण रूप से पक्षाघात में परिवर्तित हो जाये और साथ में शोथ आता है। इसलिए यह औषधि जीवन ताप की कमी और घातक रोगों में लाभदायक है। ४ बजे शाम से ८ बजे रात तक इसके लक्षणों के अधिक होने का विशेष लक्षण है (लाइको०) भारी कमजोरी का संवेदन। मस्तिष्क विषादमय पागलपन।

मन—जवाब देने में धीमा। विचारहीन, आँखें पथराई हुईं। अनैच्छिक आहें भरना। पूर्ण अचेतनता। होठों और कपड़ों को नोचना।

सिर—माथे में झुर्रियाँ। ठण्डा पसीना। बुद्धिहीन बनाने वाला सिर दर्द। रात-दिन सिर इधर-उधर घुमाता रहे, कराहना, चीख उठना। सिर तकिये में गड़ाना, हाथों से सिर पीटना। पिछले भाग में धीमा दर्द, भीतर पानी छलकने के संवेदन के साथ। सिर दर्द का अन्त कै में हो।

आँखें—ढेले का ऊपर को चढ़ना, ऐंचापन, विचारहीन चेहरा। पुतलियाँ फैली हुईं। पूरी खुली आँखें, धँसी हुईं, रतौंधी।

नाक—मैले सूखे नथुने। नाक रगड़ना। सूँघने की शक्ति कम होना, नाक नोकीली।

चेहरा—पीला, मुरझाया हुआ। ठण्डा पसीना। झुर्रियोंदार। बायीं तरफ का स्नायुशूल, इतनी कोमलता कि चबा न सके।

मुँह—मुँह से भयानक दुर्गन्ध आए। होंठ सूखे और चिटके हुए। जबान लाल और सूखी। निचले जबड़े का लटक जाना। अनायास होठों को नोचना। दाँत पीसना। चबाने जैसी हरकत। गोकि अचेत हो मगर ललचाकर ठण्डा पानी पिये। बच्चा ललचाकर दूध पिये, भोजन से घृणा। मुँह से लार बहना। किनारे दर्दीले।

उदर—गड़गड़ाहट मानो उदर में पानी भरा हो। फूला हुआ, स्पर्श पीड़ाजनक।

मल—जेली की तरह, सफेद श्लेष्मा, अनैच्छिक।

मूत्र—रुक जाये, कम, गहरा, पिसी कॉफी जैसी तलछट। बराबर लगना। बच्चा पेशाब न कर सके। मूत्राशय खूब तना हुआ।

साँस-यन्त्र—बराबर आहें भरना। क्रमहीन साँस। सीना सिकुड़ा हुआ, साँस लेने के लिए हाँफे। वक्षोदक रोग (मर्क्युरियस सल्फुरिकस)।

अंग—एक ही बाँह और टाँग की अनैच्छिक हरकत। अंग भारी और वेदना पूर्ण। अंगों का फैलना। हाथ के अंगूठे हथेली में मुड़े हों (क्यूप्रम)। हाथ और पैर की अंगुलियों के बीच में रस दाने।

नींद—सोते में एकाएक चीखना। गशी, निद्रा। जल्दी नींद न खुले। पूरी तरह से जाग न सके।

चर्म—पीली, शोथमयी, खुजलीदार। चर्म पर धूमिल चकत्ते। एकाएक जल भरी फूलन, चर्म पर। बाल और नाखून झड़ना। स्नायविक विकार जिसमें प्रदाहहीन, चक्राकार सूजन आए।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम से सुबह तक, कपड़ा हटाने पर।

सम्बन्ध—**हेलिबोर०, फेटिडस या पोलिम्निया**—बियर्स फुट-खासकर तिल्ली पर काम करती है; (**सियानोथस**)। मलाशय और जांघ वृहत् स्नायु पर भी। तिल्ली का दर्द जंघास्थि, गरदन और सिर तक बढ़ता है जो बायीं तरफ और शाम को अधिक कष्ट देता है। जीर्ण मलेरिया, तिल्ली बढ़ना, गर्भाशय ढीला, ग्रन्थि का बढ़ना; बाल और नाखून झड़ना, चर्म उघड़ना)। **हेलिबोरस ओरिण्टैलिस** (लार बहना)।

क्रियानाशक—**कैम्फोरा, सिंकोना**।

तुलना कीजिए : जल जाने का खतरा, **ट्युबरकु०, एपिस, जिंकम०, ओपियम, सिन्को०, सिकूटा, आइडोफार्म**।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

हेलियांथस (Helianthus)

(सनफ्लावर)

सविराम ज्वर के पुराने रोगी। जुकाम, नजला, नकसीर और नाक में मोटा खुरण्ड। बायें घुटने में वात दर्द। कै करना, काला मल, मुँह और गलकोष में रक्ताधिक्य और सूखापन, चर्म की लाली और गरमी। लक्षण गरमी से बढ़ते हैं और कै करने से कम होते हैं। प्लीहा की खास औषधि है। आमाशय पर विशेष प्रभाव, जब मिचली और कै के साथ हो। मल काला (लैप्टैण्ड्रा)। मुँह सूखा। आर्निका और कैलण्डुला की तरह लगाने से घाव भरनेवाली।

हेलोडर्मा (Heloderma)

(गिला मॉन्स्टर)

इसके डंक का असर सुन्नमयी पक्षाघात होता है जैसा कम्पवात या उरुस्तंभ में होता है। टंकार संबंधी अवस्था नहीं होती। वह विपरीत अवस्था है जो गौण रूप से हाइड्रोसियानिक एसिड या स्ट्रिकनिनम में पायी जाती है। इस पदार्थ का अलौकिक प्रभाव चूहे की आँखों पर पाया गया है। आँखों के ढेले स्पष्ट हो जाते हैं और शीशे पर धुँधलापन छा जाता है, ढेलों के पिछले भाग में रक्तचाप अधिक होने के कारण ढेले बाहर निकले मालूम पड़ते हैं (बॉयड)। होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार इसका प्रयोग उन रोगों में किया जाता है जिनमें अधिक ठंडक हो—"ध्रुवदेशीय" ठंडक। सिर के पिछले भाग से पैरों तक ठण्डी लहरें। इन लहरों का ऊपर की तरफ चढ़ना।

सिर—अधिक उदासी। ऐसा प्रतीत हो कि वह दाहिने तरफ को गिर पड़ेगा। सिर के चारों तरफ जैसे ठंडा फीता बँधा है। मस्तिष्क में ठंडा दबाव। पपोटे भारी। दर्द दाहिने कान से शुरू होकर सिर के पिछले भाग से घूमकर बायें कान तक जाये।

चेहरा—ठंडक की रेंगन मानो चेहरे पर पेशियाँ तनी हुई हैं।

मुँह—जबान ठंडी, कोमल और सूखी। अधिक प्यास। निगलना कठिन; साँस ठण्डा।

सीना—फुफ्फुस और हृदय में ठंडापन। हृदय गति मन्द।

पीठ—कंधों के आरपार ठण्डक। रीढ़ की हड्डी में गरमी मालूम पड़े।

अंग—सुन्नपन और कम्प। हाथों पर नीले दाग। ठंडापन। ऐसा लगे मानो स्पंज पर टहल रहा हो और पैर सूजे हुए। लड़खड़ाती चाल। मुर्गे की चाल। चलते समय साधारण से अधिक ऊपर पैर उठाता है और एड़ी को पटक कर रखता है। पैर बरफ जैसे ठंडे या जलते हों। फैलाने से पेशियों और अंग का कष्ट कम होता है।

ज्वर—आन्तरिक ठंडक जैसे मुर्दा है। शरीर के चारों तरफ ठंडे घेरे। ठंडी लहरें (एबीज कैने०, एकोन०) ठंडे स्थान। 'ध्रुवदेशीय' ठंडक। ताप नारमल ९६ अंश से भी कम (कैम्फो०)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लैसर्टा-ग्रीन लिजर्ड-(उद्भेद जीभ के नीचे छालेदार दाने। मानसिक तेजी। निगलना कठिन। मुँह में थूक भरा रहना। मिचली, पेट में अधिक दाब) कैम्फोरा, लैकेसिस।

मात्रा—३० शक्ति।

हेलोनियस—कैमइलिरियम (Helonias-Chamaelirium)

(यूनिकॉर्न रूट)

त्रिकास्थि और वस्तिगह्वर में कमजोरी का संवेदन, धँसन और बोझ, अधिक सुस्ती और शिथिलता के साथ—ये सब इस औषधि के उत्तम सांकेतिक लक्षण हैं। गर्भ जैसी चेतना, थकी, पीठ दर्द वाली महिलायें। वृम्ब की कमजोरी बच्चेदानी खसकने की प्रवृत्ति में और उसके अन्य स्थानान्तरण में दर्शित होती है। अकसर मासिक दबा रहता है और गुर्दों में रक्ताधिक्य रहता है। मालूम पड़ता है कि मासिक-कालीन रुधिर अपने प्राकृतिक मार्ग से न निकल कर गुर्दे में जमा हो गया। इन सबके साथ घोर विषाद भी होता है। रोगी को अपना मन दूसरी तरफ लगाने के लिए कुछ न कुछ करना आवश्यक होता है। उन औरतों के लिए इसे याद रखिए जिनकी बच्चेदानी खिसकी रहती है, सुखी जीवन और निठल्ली रहती हैं (जब ध्यान दूसरी तरफ बँटा रहता है या जब डाक्टर आता है तब ठीक रहती हैं।) या उनके लिए जो कड़े परिश्रम से थक गयी हैं, थकी, पेशियों पर अधिक परिश्रम पड़ा हो, वे जलती हों, और उनमें टीस होती है, नींद नहीं आती। मधुमेह और मूत्रमेह। गुर्दों में बराबर टीस और कोमलता।

मन—घोर चिन्ताग्रस्त। रोगिणी किसी काम में लगी रहने से अच्छी रहती है, जब ध्यान दूसरी तरफ रहता है, जब कुछ किया करती है। चिड़चिड़ी, जरा-सा विरोध सहन नहीं करती।

सिर—चाँद पर जलन। मानसिक परिश्रम से सिर दर्द कम रहे।

पीठ—पीठ में दर्द और बोझ, थकान एवं कमजोरी। कटि क्षेत्र के आरपार टीस और जलन, लगातार जलन से गुर्दा का स्थान ऊपर ही से बताया जा सकता है। कटि प्रदेश में छेद होने जैसा दर्द जो टाँगों तक उतरे। अधिक सुस्ती, परिश्रम से कम।

स्त्री—त्रिकास्थि क्षेत्र में खींचन, गर्भाशय खसकने के साथ, खासकर गर्भ गिरने के बाद। योनि घुण्डी खाज। गर्भपात के बाद पीठ दर्द (कैलि कार्बोनिकम)। गर्भाशय में बोझ और पीड़ा। गर्भ की चेतना। मासिक-धर्म, जल्दी-जल्दी, अधिक मात्रा में। प्रदर। स्तन सूजे हुए घुण्डियाँ वेदनापूर्ण और कोमल। जननेन्द्रिय गरम, लाल, सूजी हुई, जलन हो, तीव्र खाज। गर्भावस्था में पेशाब के साथ एल्बुमेन जाना। मासिक स्राव बन्द हो जाने की आयु की तकलीफ। कमजोर।

मूत्र—एल्बुमिन मिला (ओजोमेह), चूने आएँ, मात्रा में अधिक, साफ चीनी मिला। मधुमेह।

अंग—पिण्ड पर जैसे ठण्डी हवा लगती मालूम हो। बैठने पर पैर सुन्न हों।

घटना-बढ़ना—घटना : कुछ करते समय (मानसिक क्रिया)। बढ़ना : हरकत, स्पर्श।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ऐग्रिमोनिया—कॉकलबर। दर्द गुर्दा, अनपच और मासिक कष्ट, वायुपथ की श्लैष्मिक झिल्ली से अधिक बलगम निकलना और मूत्राशय का नजला। अधिक बलगम के साथ खाँसी और पेशाब निकल पड़ना। (अरिष्ट १ से १० बूँद।) एलेट्रिस, लिलियम, पल्से०, सेनोसियो, स्टैनम।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

हीपर सल्फ्युरिस कैल्केरियम
(Hepar Sulphuris Calcareum)
(हैनीमैन्स कैल्शियम सल्फाइड)

खास तौर पर कण्ठमालिक और लसिका वाहिनी दोष वालों के लिए उपयोगी है जिनको चर्म उद्भेद और ग्रन्थि सूजन की प्रवृत्ति होती है। अस्वस्थ चर्म। गोरे शरीर वाले जो स्वभाव से सुस्त हों और जिनकी पेशियाँ दुर्बल हों। सभी संवेदन असह्य। पसीना निकलने पर भी रोगी कम्बल अपने ऊपर खींचता है। स्थानीय रूप में इस औषधि का साँस सम्बन्धी श्लैष्मिक झिल्लियों से अधिक आकर्षण है जिससे अधिक जुकामी सूजन, अधिक स्राव होता है और पसीना सरलता से होता है। पारा के दुरुपयोग के बाद। विषैले नासूर, मवाद पड़ने के साथ। मवाद बनने की प्रवृत्ति विशेष महत्वपूर्ण है और चिकित्सा में एक अच्छी सांकेतिक अवस्था सिद्ध हुई है। पुराने घाव के चारों तरफ नये दाने पैदा होकर घाव फैलता जाता है। शीत प्रबुद्ध असहिष्णुता। खपची गड़ने जैसा दर्द; खट्टी और तीखी चीजों की इच्छा इसकी विशेषता है। किसी भाग पर हवा बहती मालूम पड़े। रात में जिस करवट लेटता है उसमें असह्य पीड़ा होती है और वह करवट बदलने को बाध्य होता है। रौद्रत्वक (बृहत् मात्रा आवश्यक) उपदंश रोग। जब इस रोग की विशेष औषधियाँ अधिक खायी हों।

मन—रात और शाम को मानसिक कष्ट बढ़े; आत्महत्या के विचार के साथ। छोटे-से-छोटा कारण उत्तेजित कर देता है। निराश और चिन्तित। उग्र। जल्द बोलना।

सिर—सिर दर्द और चक्कर जो सिर हिलाने या घोड़े की सवारी करने से बढ़े। हर सुबह को दाहिनी कनपटी में और नाक की जड़ में छेद होने जैसा दर्द। खोपड़ी की खाल उत्तेजनीय और दर्दीली। तर गंज, जिसमें खुजली और जलन हो। सिर पर ठण्डा पसीना।

आँखें—पुतली पर घाव। उपतारा प्रदाह, भीतरी भाग में मवाद। मवादी चक्षु प्रदाह, जब कि उपतारे पर सूजन अधिक हो। अधिक स्राव, स्पर्श और हवा असह्य हो। आँखें और पपोटे लाल और सूजे हुए। आँखों में ऐसा दर्द मानो पीछे की तरफ सिर में खिंची जा रही हों। गढ़े की ऊपरी हड्डी में छेदन दर्द। ढेले स्पर्श सहन न करें। सभी चीजें लाल और बहुत बड़ी दिखाई दें। पढ़ने से निगाह धुँधला पड़ जाये। आँखों के आगे चमकदार घेरे। चक्षु गोलक के सामने के भाग में मवाद आना।

कान—कानों पर उनके पीछे खुरण्ड। कानों से घृणित मवाद बहना। कानों में भिनभिनाहट और थरथराहट, ऊँचा सुनाई देने के साथ। अरुण ज्वर के बाद आया बहरापन। कान की भीतरी नली और बाहरी भाग में रस दाने। चुचुकाकार कोष का प्रदाह।

नाक—वेदनापूर्ण, घावदार। नथनों में दर्द, नजला। ठण्डी, सूखी हवा में जब भी जाता है, तभी छींक आती है, बाद में गाढ़ा, दुर्गन्धित स्राव निकलता है। जभी ठण्डी हवा में जाता है, नाक बन्द हो जाती है। बासी पनीर की गन्ध इन्फ्लुएञ्जा। (हीपर १x से अक्सर स्राव शुरू हो जायगा और जकड़े हुए जुकाम को स्राव बढ़ाकर निकालेगा)।

चेहरा—पीला। निचले होंठ का निचला भाग चिटका हुआ। रसदानों के साथ विसर्प रोग, काँटा गड़ने जैसा दर्द के साथ। दाहिनी तरफ का स्नायुशूल जो पतली लकीर में कनपटी, कान, नासा पक्ष और होंठ तक जाये। चेहरे की हड्डियों में दर्द, खासकर छूने पर। मुँह के किनारों में घाव। मुँह खोलने पर जबड़ों में गोली लगने जैसा दर्द।

मुँह—अधिक लार बहना। मसूढ़े और मुँह छूने से दर्द करे और सरलता से खून बहे।

गला—निगलते समय गले में डाट जैसा संवेदन और खपची जैसी गड़न। गलशुण्डिका, जो पकने के निकट हो। निगलते समय गले में चुभन जो कानों तक बढ़े। श्लेष्मा खखारना।

आमाशय—तेजाबी वस्तु, मदिरा, तीखी वस्तु की प्रबल इच्छा। घी, तेल आदि से बनी चीजों से घृणा। बार-बार डकार आना, बिना स्वाद या गन्ध के आमाशय में अफरा, कपड़ा ढीला करना पड़े। आमाशय में जलन। जरा भी खाने से आमाशय में भारीपन और दाब।

उदर—टहलने, खाँसने, साँस लेने या छूने से जिगर प्रदेश में सूई गड़ने जैसा दर्द (ब्रायो०, मर्क०) जिगर प्रदाह, जिगर का घाव, उदर तना हुआ, कड़ा, जीर्ण उदर रोग।

मल—मटियाला, नरम। खट्टा, सफेद, अनपचा, दुर्गन्धित, मुलायम मल भी न निकाल सके।

मूत्र—धीरे-धीरे उतरे, बिना तेजी के, सीधी धार गिरे; बूँद-बूँद टपके, मूत्राशय कमजोर। मालूम हो कि कुछ अंश रह गया है। मूत्र पर चिकनी गोलियाँ। वृद्ध लोगों का मूत्र कष्ट (फासफो०, सल्फर, कोपेवा)।

पुरुष—दाद, स्पर्श सहन न हो; यों ही रक्त गिरने लगे। लिंग के अग्रभागीय चर्म पर घाव, उपदंश के घाव की तरह (नाइट्रिक एसिड)। बिना मैथुन विचार के लिंगोत्थान और वीर्य-स्खलन। लिंग बन्धन; सुपारी और अण्डकोष पर खुजली। वक्षणीय ग्रंथि का पकना। दुर्गन्ध के साथ आतशकी मस्से। जननेन्द्रियों पर, पुट्ठों और जाँघों के बीच में छरछराहट। कठिन आतशक, "जल्द अच्छा न हो।"

स्त्री—गर्भाशय से खून बहना। योनि-घुण्डी और स्तन-घुण्डी की खुजली, जो मासिककाल में बढ़े। मासिक-धर्म देर में और कम। योनि होठों का घाव, जो अधिक असहिष्णु हो। अति दुर्गन्धित प्रदर। सड़ी पनीर जैसा दुर्गन्ध। (सैनिकुला)। वय:सन्धिकाल में अधिक पसीना। (टिलिया; जंबोरैंडी)।

श्वास-यन्त्र—सूखी, ठंडी हवा लगने से स्वरहीनता और खाँसी। गला बैठ जाता है। इसके साथ स्वर लोप। टहलने में कष्टदायक खाँसी। जब कभी शरीर का कोई भाग ठंडा हो जाता है या कपड़ा हट जाता है या कोई ठण्डी चीज खाता है तभी खाँसी आने लगती है। क्रुप खाँसी, ढीला, खड़खड़ाता बलगम, सुबह को अधिक निकले। दम घोटने वाली खाँसी। खड़खड़ाती खाँसी जिसमें बलगम, घड़घड़ाये; काँ, काँ की आवाज हो; दमकशी के दौरे, उठना पड़े और सिर झुकाये। तर दमा जिसमें बड़ी घबड़ाहट हो और सनसनाहट के साथ-साथ आए, दमा जो सूखी ठंडी हवा में बढ़े, नमी से कम हो। दिल की धड़कन।

अंग—हाथ की अंगुलियों के जोड़ सूजे हुए। सरलता से जोड़ उखड़ जाने की प्रवृत्ति। पैर के अंगूठे के नाखून जरा-सा दबाव भी सहन न करें।

चर्म—घाव, ग्रंथियाँ बहुत कोमल। फोड़े में मवाद पड़ने और फैलने की प्रवृत्ति। जवानी के मुँहासे काँटा गड़ने जैसे दर्द के साथ। पीव आए। सरलता से खून बहे। रक्त संचार में रुकावट पड़ने से आधा स्नायुशूल और शोथ। अस्वस्थ चर्म, जरा-सी चोट पक जाये। चिटका चर्म, हाथ और पैर पर गहरी दरारें। जिससे खूनी मवाद बहे और उससे सड़ी पनीर जैसी बू आए। स्पर्श सहन न करे। जलन, चुभन, सरलता से खून स्राव। रात-दिन पसीना निकले फिर भी कोई आराम न मिले। ठंडे घाव अति कोमल। कपड़ा हटाना सहन न हो। गरम कपड़ों में लिपटा रहना चाहे। रोग ग्रस्त भाग में चुभन, गड़न। सड़े घाव के चारों तरफ छोटे

दाने। जरा-सा स्पर्श सहन न हो। जीर्ण और बार-बार होने वाली जुलपित्ती। चेचक। विसर्पिका दाद। निरन्तर शरीर से दुर्गन्ध निकलती रहे।

ज्वर—खुली हवा में या जरा-सी बाहरी, हवा लगने से शीत लगे। रात में सूखी गरमी। पसीना अधिक खट्टा, चिपचिपा, दुर्गन्धित।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सूखी, ठंडी हवा से, ठंढी हवा, जरा-सी बाहरी हवा से, पारा के प्रयोग से, स्पर्श, दर्दवाली करवट लेटने से। **घटना** : तर मौसम में, सिर लपेटने से, सेंकने से, खाने के बाद।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : बेलाडोना, कैमो०, सिलिका।

तुलना कीजिये : एकोनाइट, स्पान्जिया, स्टैफिसैग्रिया, साइलिशिया, सल्फर, कैल्के० सल्फ० माइरिस्टिका। हीपर, मर्करी के बुरे असर को नष्ट करती है। आयोडिन, पोटास, कॉडलिवर ऑयल। ईथर के कमजोरी लाने वाले असर को दूर करती है।

मात्रा—१ से २०० शक्ति। ऊँची शक्ति। फोड़े में पीब पड़ने को रोक सकती है, निचली शक्ति उसे पैदा करती है। अगर फोड़े को पकाना हो तो २x दीजिए।

हिपाटिका (Hepatica)

(लीवर वोर्ट)

गले में नजला, बलगम मात्रा में अधिक और पानी-सा पतला इसके साथ आवाज बिगड़ी हुई, गले में उत्तेजना और गुदगुदी। खुर्चन और रूखापन। बलगम निकलने में सरलता करती है। चिमड़ा, गाढ़ा, लेसदार बलगम बराबर खखारने को बाध्य करता है। नथनों में छरछराहट। गले के पास उपजिह्वा पर ऐसा संवेदन मानो भोजन के टुकड़े अटके हों। बलगम मीठा, मात्रा में अधिक और चिकना।

मात्रा—२ शक्ति।

हेराक्लियम ब्रैंका उरसिना

(Heracleum–Branca Ursina)

(हॉगवीड)

मेरुदण्ड को शक्ति देने के लिए लाभदायक बतायी गई है। मिर्गी रोग में अफरा के साथ, गठिया और चर्म लक्षण।

सिर—टीस, औंघाई के साथ, खुली हवा में कष्ट बढ़े, सिर को कपड़े से लपेटने से कम हो। सिर पर अधिक चर्बीदार पसीना और अधिक तीव्र खुजली। खोपड़ी पर तर एक्जिमा। पुराना सिर दर्द।

आमाशय—दर्द और कै की प्रवृत्ति। जल हिचकी और स्वाद कड़वा। भूख लगे पर खाया न जाये। उदर और प्लीहा पीड़ा।

मात्रा—३ शक्ति।

हिप्पोमेन्स (Hippomanes)

(ए मेकोनियम डिपाजिट आउट ऑफ दी एम्बिओटिक फ्लूइड टेकेन फ्रॉम दी कोल्ट)

ग्रीक लेखकों की विख्यात कामोत्तेजक औषधि।

आमाशय—पेट में बरफीली ठंडक।

पुरुष—मैथुन इच्छा बढ़ जाती है। मूत्र ग्रंथि (प्रोस्टेट) की सख्ती और अंडों में खिंचाव के साथ दर्द।

अंग—कलाई में प्रचण्ड पीड़ा। कलाई का लकवा। कलाई में मोच जैसी संवेदना। हाथ और अंगुलियों में बहुत कमजोरी। पैर के जोड़ों, घुटनों और तलवों की कमजोरी। ताण्डव रोग। तेजी से अंग बढ़ना। अधिक कमजोरी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए ; कास्टिकम।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

हिप्पोजेइनियम (Hippozaenium)

(ग्लैंडेरीन-मैलीन-फारसाइन)

यह शक्तिशाली बीज औषधि जो डॉ० जे० ज़े० गार्थ विल्किन्सन की निकाली हुई है और इसमें ऐसे लक्षण पाये जाते हैं जो क्षय रोग, उपदंश और कैंसर रोग में विशेष रूप से पाये जाते हैं; पीनस रोग, कंठ-मालिक सूजन, रक्त विष दोष, विसर्प रोग में लाभदायक सिद्ध होने की आशा है। नाक का पुराना श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाह; पानी जैसा स्राव।

नाक—लाल, सूजी हुई। नजला, पीनस, घाव। स्राव तेजाबी, छीलने वाला, खून मिला, दुर्गन्धित। नथनों पर क्षय घाव। अगले छिद्र और गलकोष में दाने और घाव।

चेहरा—सभी ग्रन्थियाँ सूजी हुई, वेदनापूर्ण घाव।

श्वास-यन्त्र—आवाज फटी-फटी। वायुनलिका समूह का दमा। आवाज के साथ साँस लेना, छोटा, क्रमभ्रष्ट। अजीर्ण के साथ खाँसी। बलगम अधिक। दम घुटने की सम्भावना। वृद्ध लोगों का वायुनलिका प्रदाह जहाँ अधिक कफ जमा होने से दम घुटने की अधिक सम्भावना हो। क्षय रोग।

चर्म—लसिकावाहिनी ग्रन्थियाँ सूजी हुई । जोड़ों की सूजन । बाजू की हड्डी पर गाँठ । घातक विसर्प रोग । रस दाने और फोड़े । घाव । गल्लिका रोग । अकौता ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : म्यूको-टॉक्सिन (काही द्वारा माइक्रोकॉक्कस कैटारैलिस के साथ तैयार किया हुआ । फ्रीडलैंडर्स बैसिलस निमोनिया का और माइक्रोकॉक्कस टेट्राजीनियस—बच्चों और बुड्ढे लोगों के तीव्र और जीर्ण श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाह के लिए); आरम मेटा०, कैलिबाई क्रोमिकम, सोरिनम, बैसिलिनम ।

मात्रा—३० शक्ति ।

हिप्युरिक एसिड (Hippuric Acid)

(डॉ० विलियम बी० ग्रिग्स का सिद्ध किया हुआ)

इसका मुख्य कार्य आँखों और नासा गलकोष के बाहरी तन्तुओं पर, जोड़ों की ऊपरी सतह पर, जिगर और श्लैष्मिक झिल्लियों पर होता है । दाहिनी तरफ खासकर रोग द्वारा प्रभावित, सर्व पैशिक पीड़ा ।

सिर—दाहिनी आँख के ऊपर दर्द, धीमा, लगातार, गरम कमरे में अधिक । पपोटे सूजे हुए और प्रदाहित ।

गला—छरछराहट; कच्चापन, सूखा, निगलना कठिन, दुर्गन्ध, लेसदार स्राव, गले के चारों तरफ के सभी तन्तुओं का मोटा पड़ जाना और उनमें पानी आ जाना ।

आमाशय—तेजाबी पानी ऊपर आना । पेट के गढ़े में जैसे गाँठ पड़ी है । जिगर पर चोटीलापन और दाब ।

स्त्री—तीन हफ्ते तक मासिक स्राव जारी रहे । जिसमें पैशिक और सन्धि पीड़ा पूर्ण रूप से अच्छी रहे ।

अंग—पीठ दर्द जो कटि प्रदेश तक उतरे । कंधों और अंगों में दर्द और जोड़ों की वेदनापूर्ण सूजन । जाँघ के बीच में दर्द जो पिछले भाग से दाहिनी टाँग के नीचे तक लपके । जोड़ों में थकावट, रोमकूपों का उभर जाना ।

चर्म—खुजली, जलन, सीने पर दाने जो सिकुड़न पैदा करे ।

सम्बन्ध—बेन्जोइक एसिड का प्रभाव इसके समान मालूम होता है ।

मात्रा—नीचे की शक्तियाँ ।

ह्वोआंग नैन—स्ट्रिकनोस गॉल्थेरियाना
(Hoang Nan-Strychnos Gaultheriana)
(ट्रॉफिकल बाइण्ड-वीड)

शिथिलता चक्कर के साथ, हाथों और पैरों में सुन्नता और झुनझुनी, निचले जबड़े का अनैच्छिक ·चालन। दाने और फुन्सियाँ, उपदंश का तीसरा चरण और पक्षाघात। अकौता, खुजली पुराने घाव, कोढ़, ग्रन्थियों का कैंसर :और साँप काटना। कैन्स में दुर्गन्ध और रक्तस्राव कम करता है और घाव भरने लगता है। आर्सेनिक के बाद अच्छा काम करता है।

मात्रा—अरिष्ट की ५ बूँद। आवश्यकता पर २० बूँद तक।

ह्वोमेरस (Homarus)
(डाइजेस्टिव फ्लुइड ऑफ लिव लोब्सटर)

अनपच रोग, गल क्षत और सिर दर्द का सम्मिलन इस औषधि से ठीक हो सकता है। कनपटियों का दर्द, आँखों में कड़वाहट के साथ। गल-प्रादाहिक कच्चा, जलन, चिमड़ी श्लेष्मा के साथ। आमाशय और उदर में दर्द, जो खाने से कम हो। डकार आना। सारे शरीर में शीत और दर्द। चर्म खुजली।

घटना-बढ़ता—बढ़ना : दूध से, सोने के बाद। घटना : हरकत से, खाने के बाद।

तुलना : सीपिया; ऐस्टेरियस; ऐस्टैकस; एथूजा।

मात्रा—६ शक्ति।

हुरा ब्रेजिलियेन्सिस (Hura Braziliensis)
(अस्साकू)

कोढ़ रोग में तब काम आती है जब त्वचा कच्ची खाल से कसी मालूम पड़े। तने हुए दाने, अँगूठों के नाखूनों से नीचे खपच्ची जैसी संवेदना। माथे की खाल कस के खिंची मालूम पड़े। गरदन कड़ी, पीठ में दर्द। हाथ की अँगुलियों के सिरे में थरथराहट। सभी हड्डियों के जबड़े इत्यादि की हड्डियों के उभरे भागों पर खुजलीदार दाने।

सम्बन्ध - तुलना कीजिए : कैलोट्रोपिस या मैडूरा ऐल्बम—कोढ़; नीलाभ और सड़न वाले क्षय घाव; चर्म का मोटा पड़ना)।

मात्रा—६ शक्ति।

हाइड्रैञ्जिया (Hydrangea)

(सेवन-बार्क्स)

शर्कराश्मरी रोग (मूत्र से बालू कण आना) की औषधि है। पेशाब में अधिक सफेद कणदार लवणों की तलछट। पथरी का दर्द; वृक्कशूल, खूनी पेशाब। वृक्क नलिकाओं पर काम करती है। कटि-प्रदेश में दर्द। चक्कर। सीने पर दाब।

मूत्र—मूत्रमार्ग में जलन और बड़ी-बड़ी इच्छा। मूत्रस्खलन कठिनता से आरम्भ हो। भारी, श्लैष्मिक तलछट। जंघाओं में तेज पीड़ा, खासकर बायीं तरफ। अधिक प्यास, उदर रोग और प्रोस्टेट बढ़ने के साथ (फेरम पिक्रिकम, सैबाल सेरुलेटा)। बालूमय तलछट। मूत्रमार्ग का सिकुड़ जाना। ढोंकेदार लवण की अधिक तलछट।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लाइकोपोडि०, चिमाफिला अम्बेलाटा, बरबेरिस; पैरीराब्रावा; इयुवा उर्सी, सैबाल सेरुलेटा, ऑक्सिडेण्ड्रन, जिअम-वाटर ऐवेन्स—(उदर की गहराई से तीव्र झटकन दर्द, जो मूत्रमार्ग तक जाये। मूत्राशय के रोग, लिंग पीड़ा के साथ, खाने से बढ़े, श्लैष्मिक झिल्ली का ढीलापन, अधिक और दूषित स्राव के साथ; पाचन और समीकरण अपूर्ण)। पॉलिकट्रिकम—हेयरकैप मॉस—(डॉ० ए० एम० कुशिंग के अनुसार मूल अरिष्ट में या काढ़ा के रूप में बढ़ी हुई प्रोस्टेट–मूत्र-ग्रन्थि प्रदाह में)।

मात्रा—अरिष्ट।

हाइड्रैस्टिस (Hydrastis)

(गोल्डेन सील)

विशेषकर श्लैष्मिक झिल्लियों पर काम करती है जिनको यह ढीला करके गाढ़ा, पीला, रेशेदार स्राव उत्पन्न करती है। नजले की अवस्था किसी भाग में भी हो सकती है। गला, पेट, गर्भाशय, मूत्रमार्ग—किसी भी स्थान में हो परन्तु इस औषधि का विशेष प्रकार का श्लैष्मिक स्राव होना सदा आवश्यक है। हाइड्रैस्टिस वृद्धों, सरलता से थकने वाले लोगों में, धातु विकारी व्यक्तियों में जिनमें अधिक कमजोरी हो, खासकर अच्छा काम करती है। मस्तिष्क सम्बन्धी प्रभाव स्पष्ट रहते हैं; अपनी सूझ-बूझ को तेज समझे, विचार-शक्ति सूक्ष्म, चेहरे से मानसिक भाव स्पष्ट रूप से दर्शित हो। दुर्बल पेशियों, मन्द पाचन-क्रिया, कठोर कब्ज। कटिवात। दुबलापन और शिथिलता। इसका प्रभाव जिगर पर दर्शनीय है। कर्कट रोग और उसकी अवस्था, घाव बनने से पहले, जब केवल दर्द ही मुख्य लक्षण हो। युवा अवस्था और गर्भावस्था की कण्ठमाला। छोटी चेचक, खाने और लगाने का। चेचक पर हाइ-ड्रैस्टिस का प्रभाव उसके भयंकर रूप को कम करने, पीड़ा इत्यादि के कष्ट को कम

करने, उसके रोग के भोग-काल को घटाने, उसके घातक परिणाम को रोकने और खतरा कम करने के लिए अद्वितीय है। (जे० जे० गार्थ विल्किन्सन)।

मन—उदास, मरना निश्चित समझे और मरने की इच्छा करे।

सिर—सिर के अगले भाग में दबाव के साथ दर्द, खासकर जब कब्ज से सम्बन्धित हो। खोपड़ी और गरदन की मांसपेशियों में वेदना (सिमिसिफ्युगा)। माथे पर बालों के किनारे-किनारे अकौता। जुकाम के बाद गढ़ों की सूजन।

कान—गर्जन। मवादी, श्लैष्मिक स्राव ; बहरापन। कर्ण-गल-नली का नजला, तीखी आवाज के साथ।

न.क—पिछले छिद्रों से गले में गाढ़ा, चिमड़ा स्राव टपके (नजला)। पानी-सा छीलनेवाला स्राव। पीनस रोग। नाक के नथुनों के बीच की पतली हड्डी पर घाव। हर घड़ी नाक साफ करना चाहे।

मुँह—काली मिरिच जैसा स्वाद : जबान सफेद, सूजी हुई। बड़ी, थुलथुली, चिकनी, दाँतों के निशान दिखाई दें (मर्कुरियस)। मानो झुलस गई हो। मुँह आना। जबान के घाव, किनारों की तरफ दरारें।

गला—गलकोष प्रदाह। कच्चापन, गड़न, छिलन संवेदन। पीला, चिमड़ा श्लेष्मा खखारना (कैलिबाइ क्रोमिकम)। नाक के पिछले भाग से श्लेष्मा टपकने से बच्चा सहसा जाग उठे। युवाकाल और गर्भावस्था का घेघा रोग।

आमाशय—प्रायः लगातार पेट में चोटीलापन। पाचन-क्रिया दुर्बल। कड़वा स्वाद। कड़ी नोक वाली चीज के गड़ने जैसा दर्द। जैसे प्राण निकल जायेंगे ऐसी कमजोरी। कौड़ी में टपकन। रोटी या सब्जी न खा सके। स्नायविक दुर्बलता से आई मन्दाग्नि। घाव और कर्कट। आमाशय प्रदाह।

उदर—आमाशय-पाकाशय सम्बन्धी नजला। जिगर मन्द। कोमल। कामला रोग। पित्त पथरी। दाईं जाँघ में घसीटने जैसा मन्द दर्द; उसके साथ दाएँ अण्ड में कटने जैसी अनुभूति।

पीठ—मन्द, भारी, घसीटने जैसा दर्द और कड़ापन खासकर कटि-क्षेत्र के आर-पार घसीटने जैसा। उठने के लिए बाहों का सहारा लेना पड़े।

मलान्त्र—गुदा बाहर निकली हुई। कब्ज, उसके साथ आमाशय में भारी दुर्बलता; जैसे प्राण चले जायेंगे—इसके साथ मन्द-मन्द सिर दर्द। मल-त्याग-काल में मलान्त्र में तीखा दर्द। पाखाना होने के बाद देर तक मार्ग में पीड़ा रहे (नाइट्रिक एसिड)। बवासीर; जरा-से स्राव से शिथिल होना। सिकुड़न और आक्षेप।

मूत्र—पुराने सुजाक का स्राव। पेशाब से सड़ी दुर्गन्ध आये।

पुरुष—सुजाक का दूसरा चरण, स्राव गाढ़ा पीला।

स्त्री—योनि के मुँह का तन्तु क्षय और चमड़ी उधड़ना। प्रदर जो मासिक-धर्म के बाद अधिक हो। (बोविस्टा; कैल्के० कार्ब) तेजाबी, छिलन पैदा करने वाला, छिलड़ेदार, चिमड़ा। अधिक मासिक-धर्म-स्राव। योनि घुण्डी की तीव्र खाज, अधिक प्रदर स्राव के साथ (कैल्के० कार्ब, क्रियोजोट, सीपिया)। मैथुन इच्छा अधिक। स्तनों का अर्बुद; घुण्डियाँ सिकुड़ी हुईं।

साँस-यन्त्र—सीना कच्चा, वेदनापूर्ण, जले। सूखी, कर्कश खाँसी। वायुनलिका का नजला, पिछला चरण। वृद्धों और घोर थके लोगों का ब्रांकाइटिस, गाढ़े, पीले, चिमड़े बलगम के साथ। अक्सर गशी के हमले, इसके साथ-साथ सारे शरीर पर ठण्डा पसीना। बायीं तरफ लेटने से दम घुटे। सीने से कन्धे तक दर्द।

चर्म—लाल चकत्ते जैसे दाने। चर्म टीबी, घाव, कर्कट दोष। अधिक पसीना आने, अस्वस्थ चर्म की प्रवृत्ति (हीपर)।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : सल्फ।

गलक्षत में अधिक क्लोरेट ऑफ पोटाश व्यवहार के बाद।

तुलना कीजिए : जैन्थोरिजा एपिफोलिया; कैलिबाइक्रोमिकम; कोनियम, आर्सेनिक आयोडेटम, फाइटो, गैलियम (कर्कट; जबान पर अर्बुद नोकदार), एस्टेरियस, स्टैनम, पल्से०। मैंजागिटा भी (दस्त, सुजाक, सुजाक का पुराना स्राव, प्रदर, नजले की अवस्था); हाइड्रैस्टिनम म्यूरि०–म्यूरियेट ऑफ हाइड्रैस्टिया। (लगाने के लिए, सफेद चकत्तेदार मुखक्षत, घाव, घाव के साथ गलप्रदाह, पीनस इत्यादि। आन्तरिक व्यवहार, २ दशमलवीय विचूर्ण। गर्भाशयिक रक्त प्रवाह को रोकता है और रक्तवाहिनी नलियों को संकुचित करता है, गर्भाशय के रक्त प्रवाह, खासकर कैंसर के कारण, रक्तस्राव, आमाशय के फैलने में, और जीर्ण अजीर्ण रोग में।) हाइड्रैस्टिन सल्फ १x (आंत्रज्वर में रक्तस्राव) मैरुबियम–होर हाउण्ड– (श्लैष्मिक झिल्ली को शक्तिदायक, खासकर स्वरनली और वायुनलिका के प्रदाह में जीर्ण, ब्रांकाइटिस, अजीर्ण और जिगर रोग, सर्दी और खाँसी)।

मात्रा—अरिष्ट से ३० शक्ति तक। लगाने के लिए बिना रङ्ग वाला हाइड्रैस्टिस, मूल अरिष्ट या तरल घनसार।

हाइड्रोकोटाइल (**Hydrocotyle**)

(इण्डियन पेनीवॉर्ट)

उन रोगों में लाभदायक है जहाँ सांतर प्रदाह और कोष संख्या वृद्धि की अवस्था पाई जाती है। संयोजक तन्तुओं की अति वृद्धि और कड़ापन। कोढ़ रोग और चर्म टीबी रोग में, जहाँ घाव न बने हों यह औषधि विख्यात है। चर्म लक्षण अति

महत्वपूर्ण हैं। गर्भाशय के घाव में अति लाभदायक है। सीधा खड़ा होने में कठिनाई। अधिक पसीना। योनि ग्रीवा का कर्कट दर्द।

चेहरा—बायीं तरफ के गाल की अस्थि और आँखों के घेरों के क्षेत्र में दर्द।

स्त्री—योनि की तीव्र खाज। मूत्राशय की गरदन की सूजन। **योनि के अन्दर गरमी। गर्भाशय का दानेदार घाव।** अधिक प्रदर। डिम्ब प्रदेश में धीमा दर्द। योनि ग्रीवा की लाली।

चर्म—सूखे दाने। ऊपरी खाल का अधिक मोटापन और झिल्ली छूटना। धड़, हाथ-पैरों, हथेली और तन्तुओं पर चक्रदार विचर्चिका। सीने पर दाने। गोल चकत्ते, जिनके किनारे उभरे हुए हों **असह्य खाज, खासकर तलवों में।** अधिक पसीना। उपदंशीय रोग। मुँहासे। कोढ़। फीलपाँव (आर्सेनिक)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : **एलेइस**—साउथ अमेरिकन पाम—(चर्म काठिन्य रोग, फीलपाँव, कोढ़, चर्म का मोटा पड़ना, खुजली और कड़ापन। सुन्नपन); **हुरा, ट्राइकनोस ग्रॉल्थेरिया** (साँप का काटना, घाव और साधारण चर्म रोग), **होआंग नान। टैरेक्टोजेन्सज** के बीजों से बना हुआ **चॉलमूगरा तैल, हाइड्रैस्टिस, आर्सेनिक; आरममेट०; सीपिया।**

मत्रा—१ से ६ शक्ति।

हाइड्रोसियानिक एसिड (Hydrocyanic Acid)
(प्रूसिक एसिड)

संसार भर में सबसे प्रबल विष। इसका प्रभाव ऐंठन और पक्षाघात में दर्शित होता है। स्वरयंत्र में आक्षेपिक संकुचन, दम घुटना, सीने में दर्द और कसापन; दिल धड़कन, नाड़ी कमजोर, क्रमभ्रष्ट। कौड़ी प्रदेश में असाधारण दुर्बलता की संवेदना। मूर्च्छा वायु सम्बन्धी और मृगी रोग सम्बन्धी विक्षेप। नील रोग। किसी फुफ्फुसीय दोष के कारण पतनावस्था न कि हृदय रोग से शरीर का कड़ा पड़ना (अपस्मार)। हैजा पतनावस्था (**आर्सेनिक, वेरेट्रम एल्बम**)। ठण्डापन। अकड़न (टिटनस) सम्बन्धी निद्रालुता।

मन—अचेत, भयंकर प्रलापक सन्निपात। काल्पनिक दुःखों का भय, सभी चीजों से **भयभीत;** घोड़े, माल गाड़ियाँ गिरते मकान इत्यादि से।

सिर—तीव्र सिर दर्द जो बुद्धि नष्ट कर दे। मस्तिष्क जलता मालूम पड़े। पुतलियाँ गतिहीन या फैली हुई। आँख के घेरे के ऊपरी भाग में स्नायुशूल और उसी तरफ का चेहरा आरक्त।

चेहरा—जबड़े कसकर जकड़े। मुँह से झाग आए। पीले, नीले-से होंठ।

आमाशय—जबान ठण्डी। कोई-चीज जो पी जाये, गड़गड़ाहट के साथ गले में से होकर आमाशय में उतरे। आमाशयिक शूल, पेट खाली रहने से अधिक हो। आमाशय के गढ़े में बहुत दुर्बलता की संवेदना। हृदय प्रदेश में टपकन दर्द।

साँस-क्रिया—आवाज वाली, क्षोभपूर्ण साँस क्रिया। सूखी आक्षेपिक, दम घोटने वाली खाँसी। कुकुर खाँसी, फुफ्फुस का पक्षाघात (एसपिडॉस पर्मा शरीर का नीला पड़ना। फुफ्फुस की शिराओं में रक्ताधिक्य।)

दिल—तीव्र धड़कन। नाड़ी दुर्बल; क्रमभ्रष्ट। हाथ-पैर ठण्डे। पानी में प्रचण्ड कष्टदायक पीड़ा। हृदय शूल (स्पाइजेलिया, आक्जैलिक एसिड)।

नींद—जम्हाई, कम्प, औंघाई। साफ स्वप्न।

सम्बन्ध—क्रियानाशक। एमोनियम कार्ब, कैम्फोरा, ओपियम।

तुलना कीजिए: साइक्यूटाविरोसा, ओऐनैन्थेक्रोकाटा, कैम्फोरा, लोरोसिरेसस।

मात्रा—६ और ऊँची शक्ति।

हाइड्रोफोबिनम (Hydrophobinum)

(लाइसिन-सैलाइवा ऑफ रैबिड डॉग)

खासकर स्नायु-मण्डल पर प्रभाव डालती है। हड्डियों में वेदना। असाधारण मैथुन इच्छा के कारण आये रोग। विक्षेप जो तेज चकाचौंध पैदा करने वाले प्रकाश से या बहते पानी को देखने से पैदा हो।

सिर—मिरगी, जलातंक, पागल होने का भय। आवेग और बुरी खबर से रोग अधिक हो और तरल पदार्थ के केवल विचार से। सभी इन्द्रियों की उत्तेजना। जीर्ण सिर-दर्द। माथे में छेद होने जैसा दर्द हो।

मुँह—बराबर थूकते रहना, थूक चिमड़ा गाढ़ा। गलक्षत, बराबर निगलते रहना चाहे जो कठिन हो, पानी निगलते समय गला घुटे। मुँह में झाग।

पुरुष—कामातुर, अनैच्छिक लिंगोत्तेजना, अक्सर धातु क्षीणता के साथ मैथुन के समय वीर्यपात न हो। अण्डे सिकुड़ना। अधिक मैथुन इच्छा से रोग उत्पन्न होना।

स्त्री—गर्भाशय असहिष्णु गर्भ की चेतनता (हेलोनि०)। खसका जान पड़े। योनि असहिष्णु, मैथुन पीड़ाजनक (बरबेरिस)। गर्भाशय का अपनी जगह से हट जाना।

श्वास-यन्त्र—आवाज का सुर बदले। कुछ देर के लिए साँस क्रिया स्थगित हो जाये। श्वास नली का सिकुड़ना।

मल—बहते पानी की आवाज सुनने या देखने पर पाखाना मालूम हो। आँतों में दर्द के साथ अधिक, पानी-सा पतला मल, शाम को अधिक। बहता पानी देखकर बार-बार पेशाब लगता रहे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बहता पानी सुन या देखकर या पानी उड़ेलते समय या केवल तरल पदार्थ का ख्याल करके, चकाचौंध वाला प्रकाश या उसका प्रतिबिम्ब, सूर्य की गरमी, झुकना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : **जेन्थियम स्पिनोजम कॉकल** (जलातंक रोग की अक्सीर औषधि कही जाती है और स्त्रियों के जीर्ण मूत्राशय प्रदाह के लिए विचारणीय है)। **कैन्थे, बेलाडोना, स्ट्रैमो०, लैके०** नेट्रम म्यूर।

मात्रा—३० शक्ति।

हायोसियामस (Hyoscyamus)

(हेनबेन)

स्नायुमण्डल में घोर उथल-पुथल पैदा करती है। ऐसा मालूम पड़े कि किसी पैशाचिक शक्ति ने मस्तिष्क पर धावा बोल दिया है और उसकी साधारण क्रिया को छिन्न-भिन्न कर दिया है। यह दवा झगड़ालू और अश्लीलतापूर्ण पागलपन का पूर्ण चित्र उपस्थित करती है। भाव और बात-चीत में वीभत्सता और अश्लीलता, अधिक बकवादी और रह-रह कर नंगी हो जाए तथा जननेन्द्रिय प्रदर्शित करे। ईर्ष्यालु। विष दिए जाने का भय, इत्यादि। इसके लक्षणों में कमजोरी और स्नायविक उत्तेजना भी आती है, इसलिए गशी के साथ आंत्र ज्वर और अन्य संक्रमणों में हितकर है। कम्प, दुर्बलता और मोटी नसों का फड़कना। पेशी ऐंठन या कम्प। अकड़न, फड़कन, आक्षेप प्रायः प्रलापक सन्निपात क साथ। प्रदाहहीन मस्तिष्क उपद्रव। **विषाक्त आमाशय प्रदाह।**

मन—अधिक सन्देह करना। बकवादी, अश्लील, कामातुर, पागल, शरीर का कपड़ा हटाना, ईर्ष्यालु, मूर्ख। अधिक हुल्लसित, सभी बातों पर हँसना। प्रलापक सन्निपात, भाग जाने की चेष्टा करे। बड़बड़ाये, बेहोशी, **बिछावन नोचते रहना, गहरी गशी।**

सिर—हलका और गड़बड़ाया हुआ। सिर में चक्कर आये जैसे नशे में है। मस्तिष्क ढीला लगे, इधर-उधर लुढ़के। मस्तिष्क प्रदाह, अचेतनता के साथ सिर आगे-पीछे हिलाए।

आँखें—पुतली फैली हुई, चमकीली, टकटकी, बँधी हुई। आँखें खुली हों, लेकिन ध्यान न दे, नीचे गिरी निस्तेज और पथराई हुई। पलकों का आक्षेप के साथ बन्द होना। दोहरी चीज देखना। सभी चीजों के किनारे रंगीन दिखाई दें।

मुँह—जबान सूखी, लाल, चिटकी, कड़ी और स्थिर, कष्ट से बाहर निकले, वाणी बिगड़ी हुई। मुँह पर झाग आए। दाँतों पर मैल, निचला जबड़ा लटका हुआ।

गला—चुभन के साथ सूखा। संकुचन। तरल पदार्थ निगला न जाए। कान बढ़ा हुआ।

आमाशय—हिचकी, खाली कड़वी डकार। मिचली, साथ में चक्कर। कै होना साथ में अकड़न, खून की कै, तीव्र ऐंठन, जो कै करने से कम हो। पेट में जलन, कोड़ी प्रदेश कोमल। क्षोभजनक, भोजन के बाद आये उपद्रव।

उदर—आंत्र शूल, मानो उदर फट जायगा। तनाव शूल उसके साथ कै, डकार, हिचकी और चीख मारे। उदर पर लाल धब्बे।

मल—अतिसार, शूल के साथ अनैच्छिक; मानसिक उत्तेजना से या सोने में अधिक हो। प्रसवकाल में अतिसार। अनैच्छिक मलत्याग।

मूत्र—अनैच्छिक मूत्र स्खलन : मूत्राशय पक्षाघातग्रस्त। पेशाब की इच्छा न हो (कॉस्टि०)।

पुरुष—नपुंसक। कामातुर; जननेन्द्रिय प्रदर्शित करे; ज्वरावस्था में लिंग से खेले।

स्त्री—मासिक धर्म के पहले मूर्च्छावायु सम्बन्धी अकड़न। प्रबल कामोत्तेजना। मासिक काल में विक्षेप, स्वतः मूत्र हो और पसीना आए। प्रसव स्राव का दबना। गर्भिणी स्त्री की अकड़न, प्रसूती का पागलपन।

सीना—दम घुटने के दौरे। अकड़न आगे दोहरा होने को बाध्य। रात में सूखी, आक्षेपिक खाँसी; लेटने से बढ़े; उठ बैठने से कम हो; गले में खुजली होकर आए, मानो काग बढ़ा हो गया हो। थूक थूकना।

अंग—बिस्तर नोचना; हाथों से खेलना; चीजें उठाने को हाथ बढ़ाना। मिरगी के दौरे और बाद को गहरी नींद। झटका और अकड़न। पिण्डली और पैर की अंगुलियों में खींचन आना। बच्चा बिना जगे सिसकियाँ लेता है और चिल्लाता है।

नींद—तीव्र अनिद्रा। तन्द्रा आक्षेप के साथ। चिहुँक कर उठ बैठे, गशी।

स्नायु—तीव्र बेचैनी; सभी पेशियाँ फड़कें, ओढ़ना न चाहे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में, मासिक काल से, खाने के बाद, लेटते समय। घटना। झुकने से

सम्बन्ध—क्रियानाशक : बेला०, कैम्फो० ।

तुलना कीजिए : बेलाडो०, स्ट्रामो०, एगैरिक०, जेल्से० ।

हायोसि० हाइड्रोब्रोम—स्कोपोकैलैमाइन हाइड्रोब्रोमाइड (कम्पवात, बंधनियों की सख्ती और उनकी क्रमहीन फड़कन । अनिद्रा और स्नायविक उत्तेजना । क्षय रोग में सूखी खाँसी । मूत्रक्षार विकार और तीव्र स्नायविक शिथिलता । प्रबल उपघात की औषधि । ३ और ४ दशमलव विचूर्ण का व्यवहार करें । स्थूल मात्रा (१–२०० ग्रेन) पागलपन और ताण्डव रोग तथा अनिद्रा में दें, स्कोपोलो (जापानी बेलाडोना)—रासायनिक रूप से हायोसीन की तरह है । हर्षपूर्ण प्रलाप, होंठ चाटना और मुँह चपचपाना, अनिद्रा, बिस्तर से उठ भागने की चेष्टा, बिल्लियाँ देखता है, बाल नोचता है, काल्पनिक अग्नि के सामने हाथ सेंकता है ।

मात्रा – ६ से २०० शक्ति ।

हाइपेरिकम (Hypericum)

(सेंट जॉन्स-वॉर्ट)

स्नायु में चोट लगने की बड़ी औषधि खासकर हाथ की अंगुलियों, पैर की अंगुलियों और नाखूनों में । अंगुलियों का कुचला जाना, खासकर सिरों का । तीव्र वेदना इस औषधि का सांकेतिक लक्षण है । हनुस्तम्भ को रोकती है । कील आदि गड़ने से बने घाव । शल्य-क्रिया के बाद की पीड़ा को कम करती है । शल्यक्रिया के बाद मॉर्फिया का काम करती है (हेल्मथ) । हर चोट के बाद अकड़न आना । मलान्त्र पर विशेष काम करती है, बवासीर । गुदास्थि शूल । मौसम परिवर्तन काल में या तूफान से पहले दमा के हमले जो अधिक बलगम निकलने से कम हो । जानवरों के काटने के बाद आए स्नायु क्षत । ताण्डव रोग । स्नायु प्रदाह; टपक; जलन; सुन्न होना । लगातार तन्द्रा ।

मन—मालूम हो कि हवा में ऊँचाई तक उठाया जा रहा है या यह चिंता कि बहुत ऊपर से गिर जायगा । लिखने में गलती करना । धक्का लगने का बुरा असर । विषादग्रस्त ।

सिर—भारी, मालूम हो कि बर्फीले ठंडे हाथ से छुआ गया है । चाँद पर थरथराहट; बन्द कमरे में अधिक । मस्तिष्क दबा जान पड़े । चेहरे की दाहिनी तरफ टीस । मानसिक कमजोरी और स्नायु दुर्बलता । चेहरे का स्नायुशूल जैसे खींचन पड़ रही हो या फट रहा हो, साथ में उदासी । सिर बड़ा जान पड़े—किसी हद तक बढ़ा हुआ मालूम दे । खोपड़ी टूटने पर, हड्डी के टुकड़े । मस्तिष्क जीवित जान पड़े । आँखों और कानों में दर्द । बाल झड़ना ।

आमाशय—शराब पीने की इच्छा। प्यास, मिचली। जबान की जड़ पर सफेद मैल, अगला सिरा साफ। पेट में गोला ऐसा मालूम दे (एबीस नाइग्रा; ब्रायो०)

मलान्त्र—मल त्याग की इच्छा; सूखा मल, दबाव के साथ दर्द। खूनी बवासीर, इसके साथ दर्द, खून बहना और कोमलपन।

पीठ—गरदन की जड़ में दर्द। त्रिकास्थि पर दाब। रीढ़ पर चोट लगने के बाद आए उपद्रव। गिरने पर रीढ़ की अन्तिम निचली हड्डी में आई चोट। ऐसा दर्द जो रीढ़ में ऊपर की तरफ चढ़कर अङ्गों तक नीचे उतरे। पेशियों के झटके आएँ और फड़कन हो।

अंग—कंधों में भाला गड़ने जैसा दर्द। बाँह की पिछली बड़ी हड्डी में दाब। पिण्डलियों में ऐंठन। पैर और हाथ की अंगुलियों में दर्द, खासकर सिरों में। हाथ और पैर में रेंगन। ऊपरी और निचले अङ्गों में भाला गड़ने जैसा दर्द। स्नायुप्रदाह; टपकन, जलन के साथ दर्द, सुन्न होना और चर्म रेशम-सा नर्म, चिकना; जोड़ अशांत। जोड़ों की कार्यहीनता। ताण्डव रोग (फाइजास्टिग्मा, कैल्मिब्रोमे०)। आघातजनित स्नायुशूल और स्नायु प्रदाह।

श्वास-यन्त्र—दमा जो कोहरे के समय बढ़े और अधिक पसीना निकलने से कम हो।

चर्म—प्रबल पसीना, सिर की खाल पर पसीना; सुबह को सोने के बाद अधिक, चोट लगने के बाद बाल झड़ना; हाथों और चेहरे का अकौता, तीव्र खाज; दाने चर्म के नीचे मालूम पड़ें। छाले जो चर्म के नाड़ी के साथ बनें। मुँह के पुराने घाव जब वे अति कोमल हों। कील आदि गड़ने से बने घाव जब खून अधिक बहने से शिथिलता भी आयी हो।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ठंडक में, तरी, कोहरा के समय, बन्द कमरे में, जरा-सी बाहरी हवा से, छूने से। घटना : सिर पीछे झुकाने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लीडम पैलस्टर (छेद वाले घाव और जानवर का काटना); आर्निका, स्टैफिसेग्रिया, कैलेण्डुला, कॉफिया।

क्रियानाशक—आर्सेनिक, कैमोमिला।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

आइबेरिस (Iberis)

(बिटर कैंडीटफ्ट)

स्नायविक उत्तेजना की अवस्था। हृदय पर गहरा प्रभाव है। हृदय रोग पर उत्तम प्रभाव, लाभदायक। हृदय के ढकनों की उत्तेजना में, जबकि उसकी पेशियाँ

ढीली पड़ जायें और मोटी हो जायें। इन्फ्लुएंजा के बाद हृदय दौर्बल्य। जिगर प्रदेश भरा हुआ। वेदनापूर्ण। सफेद मल।

मन—उदास; आहें भरे, भयभीत; काँपे। चिड़चिड़ा।

सिर—चक्कर आए और हृदय की चारों तरफ दर्द। जब तक भोजन न कर ले तब तक बराबर गाढ़ा, रेशेदार श्लेष्मा खखारता रहे। गरम, भरभरा चेहरा। चक्कर, मानो सिर का पिछला भाग चारों ओर घूम रहा हो; आँखें बाहर को ढकेली जा रही हों।

दिल—हृदय गति की चेतनता। बायीं तरफ शरीर घुमाने पर हृद् प्रसार के समय दोनों खानों में से ढकनों पर सूई गड़ने जैसा दर्द। धड़कन उसके साथ सिर में चक्कर आये और गला घुटे। हृदय क्षेत्र में सूई गड़ने जैसा दर्द। नाड़ी भरी, क्रम-भ्रष्ट, सविरामिक। जरा-से हिलने या गरम कमरे में कष्ट बढ़े। हृदय पर बोझ और दाब की संवेदना, कभी-कभी तेज चुभन के साथ। शोथ; हृदय बढ़ने के साथ। जरा-सा परिश्रम पर या हँसने से या खाँसने से तीव्र धड़कन हो। हृदय के आरपार भाला लगने जैसा दर्द। हृदय सम्बन्धी काठिन्य। दिल का फैलना। लगभग २ बजे रात को, धड़कन के साथ जाग उठे, गला और साँस नली बलगम से भर जाय। खाँसी से चेहरा लाल हो जाये। तेज धड़कन।

अंग—बायें बाजू और हाथ में झनझनाहट और सुन्नपन। सारे शरीर में पीड़ा, लँगड़ापन और कम्प।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : लेटने से; बायीं तरफ, हरकत, मेहनत, गरम कमरा।

सम्बन्ध—तुलना : कैक्टस, डिजिटेलिस, एमिलनस, नाइट्रोसम, बेलाडोना।

मात्रा—अरिष्ट और पहली शक्ति।

इकथियोलम (Ichthyolum)

(ए कॉम्बिनेशन ऑफ सल्फोनेटेड हाइड्रोकार्बन, ए फॉसिल प्रॉडक्ट ऑफ काम्प्लेक्स स्ट्रक्चर फाउण्ड इन टाइरोल; सपोज्ड टु बी फिश डिपॉजिट्स, कण्टेन्स १० प्रतिशत सल्फर)।

चर्म, श्लैष्मिक झिल्ली, गुर्दों पर इसका महत्त्वपूर्ण प्रभाव है। यह शक्तिवान परजीवी नाशक है, लाली, दर्द और प्रदाह, तनाव को कम करती है। बुड्ढों की जाड़ों के दिनों की खाँसी के लिए शानदार दवा है। अनेक जोड़ों का प्रदाह। जीर्ण वात रोग। मूत्राम्लार प्रवणता। जीर्ण शीतपित्त। क्षयरोग पोषण बढ़ाती है। मद-पान रोग जब पेट में कोई चीज न पचे।

मन—चिड़चिड़ा और उदास। एकाग्रता की कमी।

सिर—धीमा दर्द, ठंडक, दाब से कम। माथे और आँखों के घेरे के ऊपर का धीमा दर्द, जो आँखें हिलाने से, ठंडी हवा से बढ़े, सेंकने से कम हो।

चेहरा—चर्म सूखा और खुजली हो। ठुड्ढी पर मुँहासे।

गला—क्षुब्ध, कानों में दर्द, चोटीला, सूखा, खखारने और बलगम के साथ।

आँखें—जलन, लाल, ताप परिवर्तन से बढ़े।

नाक—सरल जुकाम, कसापन, भीतरी भाग में वेदनापूर्ण। छींकने की प्रबल इच्छा।

आमाशय—अप्रिय स्वाद, जलन की अनुभूति, अधिक प्यास। मिचली। भूख अधिक।

उदर—मल मुलायम ढीला, आकारहीन। नाभि और बायीं तरफ तलपेट में मरोड़। भोर में दस्त।

मूत्र–अधिक और बार-बार। मूत्र मार्ग के छिद्र में जलन। मूत्रक्षार की तलछट।

स्त्री—निचले उदर में भरापन। मासिक काल में मिचली।

श्वास-यन्त्र—जुकामी, सूखी, कष्टप्रद खाँसी। वायुनलिका प्रसार और क्षय रोग। ब्रांकाइटिस। खासकर बुड्ढों में।

चर्म—गरमी और उत्तेजना, खुजली। पपड़ीदार और खाजदार अकौता। फोड़ों के झुण्ड। गर्भावस्था में तीव्र योनि खाज। अपरस, मुँहासे, लाल दाने, विसर्पिका।

अंग—दाहिने कन्धे और दाहिने तरफ से निचले अंग में लँगड़ापन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : हीपर, कैल्के०, सिलिका, सल्फ०, आर्सेनिक, पेट्रोलियम।

मात्रा—नीचे की शक्ति।

लगाने के लिए यह औषधि २०–५० प्र० श० लैनोलिन में मिलाकर मलहम के रूप में उपयोग में लाई जाती है, जीर्ण अकौता और लाल दाने, मुँहासे और गठिया-ग्रस्त जोड़। बेवाई फटना, सूखी खुजली। मूत्राशय मुखग्रन्थि (प्रोस्टेट) विकार में, जो वृद्धावस्था में होती है, स्राव-स्खलन के लिए; बत्ती के रूप में।

इग्नेशिया (**Ignatia**)

(सेंट इग्नेशिअस बीन)

सभी ज्ञानेन्द्रियों में प्रबल संवेदनीयता उत्पन्न करती है और क्षणिक संकोचन की प्रवृत्ति। मानसिक आवेग की प्रधानता रहती है और क्रियाओं के पारस्परिक सहयोग में बाधा पड़ जाती है। अतः यह गुल्म वायु की एक प्रधान औषधि है।

यह खासकर स्नायविक प्रवृत्ति में लाभदायक है—वे महिलायें जो अति कोमल प्रवृत्ति की हों, कुशाग्रबुद्धि; सरलता से भड़क उठें, गहरे रंग की, नरम स्वभाव की, निरीक्षण में तीव्र तुरन्त कार्य सम्पन्न करने वाली, मानसिक और शारीरिक अवस्था तेजी से विपरीत दिशा में बदले; सजग, विरोधाभास; स्नायविक; सशंक, अकड़ा हुआ और काँपता रोगी, जो प्रबल मानसिक या शारीरिक कष्ट से पीड़ित हो और साथ-साथ, कॉफी पीने से कष्ट बढ़े। इस औषधि के ऊपरी लक्षण और उनकी तीव्र परिवर्तनशीलता अधिक विशेषता रखती है। शोक और चिन्ता का बुरा असर। तम्बाकू और कॉफी सहन न हो। छोटे सीमित स्थान में दर्द (आक्जैलिकम एसिड) प्लेग। हिचकी और हिस्टीरिया की कै।

मन—परिवर्तनशील भाव, अन्तरावलोकी; कुढ़ते रहना। उदास, दुःखी, रोये, अपना दुःख दूसरों से न कहना। आहें भरे; सिसकना। आघात; शोकाक्रमण और निराशा के बाद की स्थिति।

सिर—खोखला, भारी मालूम पड़े, झुकने से अधिक या ऐसा सिर दर्द मानो कील ठोंकी जा रही हो। नाक की जड़ पर ऐंठन के साथ दर्द। क्रोध या शोक के बाद रक्ताधिक्यजनित सिर दर्द, धूम्रपान से या तम्बाकू सूँघने से अधिक हो; सिर आगे को झुकाए।

आँख—दृष्टि कष्ट; पलकों का अकड़ना और आँखों के आस-पास स्नायुशूल के साथ (नेट्रम म्यूर) इधर-उधर जगमगाहट।

चेहरा—चेहरे और होठों की पेशियों का फड़कना। आराम की अवस्था में रंग बदलना।

मुँह - खट्टा स्वाद। गालों के भीतरी भाग को काट ले। बराबर थूक भरा रहे। दाँत दर्द जो कॉफी पीने से या धूम्रपान से बढ़े।

गला—गले में जैसे गाँठ रखी है जो निगली न जा सके। गला रुकने की सम्भावना, गले में वायुगोला (योषापस्मार)। गलक्षत; गड़न, जब निगल न रहा हो, ठोस पदार्थ खाने से कम। निगलने में गड़न-चिलकन। जो कानों तक बढ़े (हीपर०)। तालुमूल प्रदाह, सूजन, छोटे-छोटे घाव। क्षुद्र गह्वरीय तालुमूल प्रदाह।

आमाशय—खट्टी डकार। आमाशय में असाधारण दुर्बलता का संवेदन, अधिक वायु, हिचकी, आमाशय में मरोड़, जरा भी स्पर्श से बढ़े। साधारण भोजन से घृणा, न पच सकने वाली बहुत तरह की चीजें खाना चाहे। तेजाबी वस्तु खाने की इच्छा। आमाशय में भारी कमजोरी जो लम्बी साँस लेने से कम हो।

उदर—आँतों में गड़गड़ाहट। उदर से ऊपरी भाग में कमजोरी। उदर में थरथराहट (एलो सँगुनेरिया) एक या दोनों तरफ शूल।

मलान्त्र—मलान्त्र के ऊपर की तरफ खुजली और सूई गड़ने जैसा दर्द। काँच निकलना। मल मुश्किल से उतरे, मल त्यागने के बाद गुदा में दर्दीला संकोचन। खाँसने से बवासीर में दर्द हो। भय के कारण दस्त आना। गुदा में मलाशय के ऊपर तक दर्द। रक्तस्राव दर्द जो ढीले मल के समय अधिक हो। किसी तेज वस्तु का भीतर से बाहर की तरफ दबाव।

मूत्र—अधिक, पानी जैसा (फॉस०एसिड)।

श्वास-यन्त्र—सूखी, आक्षेपिक खाँसी, जल्दी-जल्दी दौरे पड़ें। टेंटुए में झटका। (कैल्के०)। स्नायविक खाँसी। खाँसने से खाँसी और अधिक हो। बहुत आहें भरना। खोखली आक्षेपिक खाँसी शाम को अधिक होना, बलगम कम निकले, गले में दर्द।

स्त्री—मासिक-धर्म काला, मात्रा में बहुत अधिक या बहुत कम। मासिक काल में अधिक सुस्ती, साथ में पेट और आमाशय में दर्द। मैथुन से विरक्त। शोक से मासिक-स्राव समय से बहुत पहले आए, मात्रा में कम।

अंग—अंगों में झटके आयें। गुल्फ देशीय सुदृढ़ कण्डरा और पिण्डली में दर्द। तलवों में दर्द, जैसे वहाँ घाव हो।

नींद—बहुत हल्की। नींद आते ही अंगों में झटके आयें। शोक, चिन्ता से अनिद्रा, साथ में बाहों का खुजलाना और अधिक जम्हाई आना। देर तक स्वप्न देखना जिससे कष्ट हो।

ज्वर—शीत, प्यास के साथ, बाहरी गरमी से कम न हो। ज्वर की अवस्था में खुजली, सारे शरीर पर जुलपित्ती।

चर्म—खुजली, जुलपित्ती। बाहरी हवा असह्य। चर्म छिल जाये, खासकर योनि और मुँह के चारों तरफ।

घटना-बढ़ना-बढ़ना : सुबह को, खुली हवा में, खाने के बाद, कॉफी से, धूम्र-पान से, तरल पदार्थ से, बाहरी गरमी से। घटना : खाते समय आसन बदलने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए ; जिंकम, कैली फॉस०, सीपिया, सिमिसिफ्यु०, पैनेसिया आरवेन्सिस-पुअर मैंस मरकरी-(आमाशय क्षेत्र में क्षोभ, साथ में भूख, लेकिन भोजन से घृणा)।

पूरक : नैट्र० म्यूर।

असमान : कॉफिया; नक्स०, टैबेकम।

क्रियानाशक : पल्से०, कैमो; कॉक्कस०।

मात्रा—६ से २०० शक्ति।

इलीसियम (Illicium)

(एनिसे)

अफरा की अवस्था में याद रखना चाहिए। 'त्रैमासिक शूल' के नाम से पुकारी जाने वाली अवस्था, खासकर यदि वह नियम से एक ही समय पर हो, उदर में अधिक गड़गड़ाहट। एक लक्षण याद रखने योग्य है—तीसरी पसली के क्षेत्र में दर्द, लगभग १ या २ इञ्च वक्षास्थि से प्रायः दाहिनी तरफ, लेकिन कभी-कभी बायीं तरफ भी। अक्सर इसी दर्द के साथ बार-बार खाँसी। पुराने मद्यपानियों का पीब वाला कण्ठनली और आमाशयिक नजला। जीर्ण दमा के रोगी। कै, मिरगी के समान आक्षेप, जिनमें रोगी जबान काटे।

नाक—होंठ के नीचे तेज चिलक। तीव्र नजला। भीतरी निचले होंठ में जलन और सुन्न होना।

साँस-यन्त्र—साँस कष्ट। तीसरी पसली के बीच के जोड़ की उपास्थि के पास दर्द। खाँसी जिसमें पीब जैसा बलगम आये। धड़कन के साथ खून थूकना।

इलेक्स एक्विफोलियम (Ilex Aquifolium)

(अमेरिकन हॉली)

सविराम ज्वर। आँखों के लक्षण महत्त्वपूर्ण हैं, तिल्ली दर्द। जाड़े में सभी लक्षण कम रहें।

आँखें—चक्षु पटल में जल संचित, प्रदाह के परिणामस्वरूप स्वस्थ चक्षुकनीनिका या श्वेत-पटल का बाहर की तरफ निकल आना, रात में नेत्र-घेरों में जलन, आँखों का गठिया सम्बन्धी प्रदाह, केश-झड़ना।

सम्बन्ध—इलेक्स पैरागुवाएन्सिस यर्बा मेट—(लगातार कौड़ी में दर्द, मुँह कण्ठनली का सूखापन, भूख न लगना, मुँह में पानी भरना, स्नायविक उदासी, निरन्तर दौर्बल्य। औंघाई, काम करने की अक्षमता, पेशाब कम होना, सिर दर्द और योनि खाज। अधकपारी। गुर्दा शूल। लू लगने की रोकने वाली औषधि कही जाती है, क्योंकि यह रक्त संचार की लाभदायक शक्तिवर्द्धक औषधि है, इस प्रकार पसीना मूत्र को भी अधिक करती है)। इलेक्स वोमिटोरिया या उपन—(वमनकारक गुण, शक्तिदायक और पाचनवर्द्धक गुण, अनिद्रा के प्रभाव से रहित है। इसमें एक तीव्र द्रव्य रहता है जो पेशाब बढ़ाने का काम करता है—गुर्दा प्रदाह और गठिया में काम आती है)। इलेक्स कैसीव—(क्रिसमस बेरी टी)—उत्तम मूत्रल और चाय की जगह पर व्यवहार योग्य है।

इण्डिगो (Indigo)

(इन्डिगो -डाई-स्टफ)

स्नायुमण्डल पर महत्वपूर्ण प्रभाव है, अतः उस मिरगी में विशेष लाभदायक है जिसमें उदासी अधिक हो। उत्तेजित और काम में लगे रहने की इच्छा। स्नायु दौर्बल्य और मूर्च्छा वायु। शुद्ध नील महीन पीस कर घाव पर रखने से साँप और मकड़ी के विष को नाश करता है (कैलि परमैंगनेट; गोलोन्ड्रिना; सीड्रन)। गल-नली की सिकुड़न, नील रंग (क्युप्रम)।

सिर—चक्कर और मिचली के साथ अकड़न। माथे में चारों तरफ फीता बँधा जैसा मालूम पड़े। सारे सिर में ऊपर-नीचे होने का संवेदन। ऐसा लगे कि मस्तिष्क जम गया है। उदास, रात को चिल्लाए। चाँद पर से बाल खिंचते जान पड़ें। सिर जमा हुआ मालूम पड़े।

नाक—अधिक छींकना और खून बहना।

कान—दाब और गर्जन।

आमाशय—कसैला स्वाद। डकार। फूलना लार अधिक। आमाशय से सिर तक गरमी की लहरें उठना।

मलान्त्र—मलान्त्र का गिरना। रात में तीव्र गुदा खाज के कारण जाग जाना।

मूत्र—लगातार मूत्र त्याग की इच्छा। गदला। मूत्राशय का नजला।

अंग—गृध्रसी। जाँघ के मध्य भाग से घुटने तक दर्द। (घुटने के जोड़ में छेद होने जैसा दर्द) जो टहलने से कम हो। प्रत्येक भोजन के बाद अंगों का दर्द बढ़े।

स्नायु—उस हिस्टीरिया में हितकर है जहाँ दर्द की प्रधानता हो। स्नायविक उत्तेजना। मिरगी रोग, उदर से सिर तक गरम लहरें उठें, चक्कर के साथ दौरा शुरू हो। कंधों के बीच वेदनापूर्ण स्थान से मिरगी का आभास शुरू हो। केंचुओं के कारण झटके आना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : आराम और बैठने के समय। घटना : दाब मालिश, हरकत।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : क्युप्रम; ईस्ट्रस कैमेली; मिरगी की एक इण्डियन औषधि।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

इंडियम (Indium)

(दी मेटल-इण्डियम)

सिर दर्द और अधकपारी । धातु की क्षीणता, पीठ दर्द ।

सिर—मल त्यागने के समय काँखने पर सिर दर्द हो । मल त्यागने के समय सिर दर्द, जैसे सिर फट जायेगा । मिचली, कमजोरी, अनिद्रा के साथ कनपटियों और माथे में दर्द । लगभग ११ बजे दिन में पेट में भारी कमजोरी । छींक के तीव्र आक्रमण । कामोन्माद ।

चेहरा—वेदनापूर्ण पीब वाले दाने । मुँह के किनारे चिटके हुए और वेदनापूर्ण (कॉण्डुरेंगो) ।

पुरुष—थोड़ी देर रक्खे रहने पर पेशाब से भयानक दुर्गन्ध निकले । जल्दी-जल्दी धातु स्राव । मैथुन शक्ति कम । अण्ड कोमल वीर्य नाड़ी के साथ-साथ खींचन और दर्द ।

गला—काग बढ़ा हुआ, घावयुक्त, गलकोष के पीछे मोटा चिमड़ा श्लेष्मा । शाम को कष्ट बढ़ना ।

अंग—गरदन और कन्धों में कड़ापन । दर्द खासकर बायीं बाँह में । टाँगें अशांत और थकी हुई । पैर की अंगुलियों में खुजली (एगैरि०) ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सेलेनियम, टिटैनियम (पुरुष कामेन्द्रिय) ।

मात्रा—६ से २०० शक्ति ।

—

इण्डोल (Indol)

(ए क्रिस्टैलाइन कम्पाउण्ड डेरिवेबल फ्रॉम इण्डिगो, बट आल्सो ए प्रॉडक्ट ऑफ प्युट्रिफैक्शन ऑफ प्रोटीड्स) ।

इस औषधि का मुख्य प्रभाव इण्डिकेन को निकालना होता है । शारीरिक अव्यवस्था से आया विषैलापन ।

तुलना कीजिए : स्कैटॉल :

लगातार सोते रहने की इच्छा; मंद बुद्धि; असंतुष्ट, भयंकर भ्रम और स्नायविकता हाथों की अंगुलियाँ और पैर बराबर हिला करें । आँतों में सड़न ।

सिर—तीसरे पहर धीमा दर्द, पिछले भाग और अगले भाग का सिर दर्द । आँखों पर मन्द संवेदन । आँखों के ढेले गरम और हिलाने पर दर्द करें । सिर दर्द के साथ पुतली फैली हुई ।

पेट—अफरा । पूरा भोजन करने के बाद भी भूख मालूम पड़े । प्यास अधिक । कब्ज ।

अंग—निचले अंग थके और चोटीले। पैर जले। घुटनों के जोड़ दर्दीले।
नींद—अनिद्रा। बराबर स्वप्न देखना।
मात्रा—६ शक्ति।

इंसुलिन (Insulin)

(ऐन एक्टिव प्रिंसिपल फ्रॉम दी पैंक्रियस ह्विच एफेक्ट्स सुगर मेटाबोलिज्म)

मधुमेह की चिकित्सा में इन्सुलिन के व्यवहार के अतिरिक्त जिससे कि यह औषधि शरीर के कार्बोहाइड्रेट का ओषजनीकरण करके जिगर के ग्लाइकोजेन की मात्रा उचित रूप से स्थापित करती है, डॉ० विलियम, एफ० बेकर ने इस औषधि का होमियोपैथी के सिद्धान्त के अनुसार भी प्रयोग किया है और इसका व्यवहार मुँहासे, कारबंकल, अयनिका साथ में खुजाने वाला अकौता में करने के लिए कहा है। गठिया वाले रोगियों में अल्पकालीन मधुमेह के साथ जब चर्म लक्षण भी हों, दिन में तीन बार भोजन के बाद दीजिए। यह औषधि कठोर चर्म उत्तेजना, फुड़िया, नस-वृद्धि घाव, साथ में अनेक बार पेशाब आने की अवस्था में सांकेतिक होती है।

मात्रा—३x से ३०x तक।

इन्यूला (Inula)

(स्कैबवार्ट)

श्लैष्मिक झिल्ली की औषधि। पेड़ू के भाग के यन्त्रों में नीचे की ओर दबाव का संवेदन और वायु नलिका समूह के लक्षण विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। सीने की हड्डियों के नीचे की पीड़ा। मधुमेह।

सिर—झुकने पर चक्कर आये; माथे और कनपटियों में खाने के बाद थरथराहट और दबाव।

साँस-यन्त्र—सूखी खाँसी, रात में और लेटने पर अधिक हो, स्वरनली वेदनापूर्ण। जीर्ण ब्रांकाइटिस; खाँसी, अधिक गाढ़ा बलगम; सुस्ती और मन्द पाचन। सीना पंजर के पीछे चिलकन। कष्टदायक खाँसी। जिसमें बलगम अधिक सरलता से साथ निकले। लगातार व्यवहार से क्षय सम्बन्धी स्वर यन्त्र प्रदाह में कष्ट कम करती है।

स्त्री—मासिक धर्म समय से बहुत पहले और पीड़ाजनक। प्रसव की तरह दर्द, पाखाना लगे; जननेन्द्रिय में खींचन, तीव्र सिर दर्द के साथ। मासिक काल में टाँगों

में खुजली, ठंडक के मारे दाँत कटकटाना। उदर में जैसे कोई चीज हरकत कर रही है। जननेन्द्रिय में सूई गड़ने जैसा दर्द।

मलान्त्र—भीतर से मलान्त्र की तरफ दाब, मानो कोई चीज बाहर निकल रही है।

मूत्र—बार-बार पेशाब लगना, बूँद-बूँद टपके। बनफशाई गन्ध। (टेरेबि०)।

अङ्ग—दाहिने कन्धे और कलाई में दर्द, बायीं हथेली में चीरने-फाड़ने की तरह दर्द, अंगुलियाँ मोड़ न सके, निचले अंगों, पैरों और टखनों में दर्द।

संबंध—तुलना कीजिए : क्रोकस, इग्नेसिया, आरम ट्रैकोन्टियम (तर खाँसी, जो रात में लेटने पर अधिक हो)।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

आयडोफार्मम (Iodoformum)

(आयडोफॉर्म)

क्षयग्रस्त मस्तिष्क आवरण प्रदाह की चिकित्सा करते समय औषधि को नहीं भूलना चाहिए, खिलाने के लिए भी और सिर में लगाने के लिए भी (वेसिलिनम) क्षणायु पुटित अवस्थायें। बच्चों का जीर्ण और अर्धजीर्ण अतिसार।

सिर—तीव्र स्नायविक पीड़ा। सिर भारी लगे, मानों तकिये से उठाया न जायेगा। पिछले भाग में खुजली। मस्तिष्क आवरण प्रदाह। आहें भरने और चिल्लाने से नींद में बाधा पड़े। अति निद्रालुता।

आँखें—पुतलियाँ फैली हुईं, असमान सिकुड़न, प्रदाह की संवेदनीयता मन्द। द्वि-दृष्टि। आँखों के पिछले भाग में स्नायुप्रदाह के कारण क्रमशः मन्द होती हुई दृष्टि, आँखों के मध्य भाग से सामने काले लोप हो जाने वाले धब्बे। चक्षु-बिम्ब की आंशिक क्षीणता।

सीना—दाहिने फुफ्फुस के शिखर पर दर्द। सीने पर बोझ जैसा, मानो दम घुटेगा। सोने जाने के समय खाँसी और साँय-साँय की आवाज। बायीं तरफ सीने में दर्द। मानो कोई हाथ से दिल के निचले भाग को जकड़े हुए है। मुँह से खून आना। दम जैसा साँस लेना।

उदर—नौकाकृति उदर। जीर्ण अतिसार, साथ में क्षय रोग की शंका। उदर तना हुआ, मध्यांत्र ग्रन्थि बढ़ी हुई। शिशु अतिसार। जीर्ण अतिसार, चिड़चिड़ापन के साथ हरा, पानी-सा, अनपचा मल।

अंग—टाँगों में कमजोरी, आँखें बन्द करके खड़ा होकर चल न सके। ऊपर चढ़ते समय घुटनों में कमजोरी आए।

मात्रा—२ विचूर्ण। जबान के पीछे ३ ग्रेन रखने से दमा का साँस कम होगा।

आयोडम (Iodum)

दूषित समीकरण। अधिक भूख के साथ दुबलापन, भूख और अधिक प्यास। खाने के बाद लक्षणों में कमी आए। घोर कमजोरी, जरा-से परिश्रम से पसीना छूटे। आयोडम का रोगी बहुत दुबला-पतला, गहरे रंग का, लसिका वाहिनी ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई, अधिक भूख लगे मगर फिर भी दुबला होता जाए। क्षय रोग का भेद।

सभी ग्रन्थि-यन्त्र, साँस-यन्त्र, रक्त संचार यन्त्र प्रभावित रहते हैं, सभी क्षीण हो जाते हैं। यह दवा सीसा-विष के उपद्रव का शमन करती है। कम्प। आयोडीन के रोगी को ठण्डी हवा की घोर इच्छा रहती है।

(आयोडीन)

जीर्ण प्रदाह का तीव्र प्रकोप। सन्धि प्रदाह और सन्धियों के आकार में विकृति आना। संयोजक तन्तु पर स्पष्ट काम करती है। प्लेग। घेघा। रक्तवाहिनी की असाधारण संकीर्णता, क्षुद्र रक्त-नलिकाओं में रक्ताधिक्य, जिसके बाद शोथ, काले दाग, रक्त-स्राव, पोषण बाधायें इसके प्रधान लक्षण हैं। मन्द-प्रतिक्रिया, अतः अनेक अवस्थाओं में जीर्ण होने की प्रवृत्ति। श्लैष्मिक झिल्लियों का तीव्र नजला, दुबलापन जो तेजी से आया हो, अच्छी भूख रहने पर भी ग्रन्थि क्षीणता आए। अनेक क्षयकर-रोग और कण्ठमालिक रोग इस औषधि की आवश्यकता दर्शाते हैं। साँस-यन्त्र के तीव्र रोग। आयोडीन गरम होती है, इसलिए ठण्डा वातावरण आवश्यक होता है। फुफ्फुस प्रदाह जो तेजी से बढ़े। ऊपर जाने में कमजोरी और साँस फूलना। ग्रन्थि वृद्धि। ग्रन्थि सूजन और खड़खड़-सर्प डँसने में अरिष्ट का उपयोग खाने और लगाने के लिए।

मन—चुप रहने के समय चिन्ता सतायें। वर्तमान की चिन्ता और उदासी, भविष्य से कोई सम्बन्ध न हो। एकाएक दौड़ते और कोई अत्याचार करने का आवेग। भूलना। कोई न कोई काम करते रहना चाहे। लोगों से भय, सबसे घृणा, विषाद-ग्रस्त। अत्याचार की प्रवृत्ति।

सिर—थरथराहट, खून दौड़ना और कसा फीता जैसा जान पड़ना। चक्कर, झुकने से और गरम कमरे में अधिक हो। वृद्ध लोगों का जीर्ण प्रदाह। सिर दर्द जो अधिक रक्तसंचित होने से हो। (फॉस०)।

आँखें—आँसू क्षीण; अधिक। आँखों में दर्द। पुतलियाँ फैली हुई। बराबर आँखें हिलाते रहना। तीव्र अश्रु-कोष प्रदाह।

नाक—छींकना। अचानक तीव्र इन्फ्लुएंजा। सूखा जुकाम जो खुली हवा में बहे, इसके अतिरिक्त बहता गरम जुकाम और चर्म का गरम रहना। नाक की जड़ और अग्र भाग का दर्द। नाक बन्द हो। घाव बनने की सम्भावना। सूँघने की शक्ति लोप होना। तीव्र नाक-रक्ताधिक्य जो रक्त-चापाधिक्य से सम्बन्धित हो।

मुँह—मसूढ़े ढीले और खून बहे। गन्दे घाव और लार अधिक, बदबूदार लार बहना। जबान पर मोटा मैल। अति दुर्गन्ध निकले।

गला—स्वरयन्त्र संकुचित जान पड़े। कम्बुकर्णी नली से सम्बन्धित बहरापन। चुल्लिका-ग्रन्थि का बढ़ना। घेघा, साथ में सिकुड़न की संवेदना। जबड़े के नीचे की ग्रन्थि की सूजन। कान की सूजन।

आमाशय—आमाशय में थरथराहट। प्रबल भूख और अधिक प्यास। वायु डकार मानो खाने का प्रत्येक कण हवा में परिवर्तित हो गया है। अगर भोजन न करे तो बहुत उत्सुक और चिन्तित रहे (सिना, सल्फ०) फिर खूब भोजन किये जाये और भूख लगे तो भी दुबला होता जाये (एब्रोटेनम)।

उदर—जिगर और तिल्ली बढ़ी हुई और वेदनापूर्ण। कामला रोग। मध्यान्त्र ग्रन्थि का बढ़ना। क्लोम विषयक रोग। उदर में कटन के साथ दर्द।

मल—अति मल त्यागने पर रक्तस्राव। अतिसार : सफेदी के लिए; झागदार चर्बीला मल; व्यर्थ काँखने के साथ कब्ज। ठण्डा दूध पीने से कम हो। कब्ज और अतिसार बारी-बारी (एण्टिम क्रूड)।

मूत्र—बार-बार और अधिक, गहरा, पीला, हरा (बोविस्टा) गाढ़ा, तीखा और सतह पर झिल्लियाँ तैरें।

पुरुष—अंड कड़े। सूजे हुए और कड़े। हाइड्रोसील और उसके साथ अंड-क्षीणता। कामाग्नि लोप।

स्त्री—मासिक काल में बहुत कमजोरी (एलुमिना, कार्बोएनिमेलिस, काकुलस इण्डिका, हैमेटॉक्स) मासिक-धर्म क्रमभ्रष्ट गर्भाशयिक रक्तस्राव। डिम्बाशय प्रदाह (एपिस, बेला, लैके०) डिम्बाशय से गर्भाशय तक पच्चर ठोंके जा रहे हैं ऐसा दर्द। स्तनों का सिकुड़ना। स्तनों के चर्म में कड़ी गुठलियाँ। तेजाबी प्रदर, गाढ़ा, चिकना; कपड़ा खा ले। दाहिने डिम्बाशय में पच्चर ठोंकने जैसा दर्द।

श्वास यन्त्र—आवाज फटी हुई, कच्चापन और गुदगुदी, जिससे सूखी खाँसी उठे। स्वर-यन्त्र में दर्द। स्वरयन्त्र प्रदाह और दर्दीला खुरखुरापन, खाँसने से कष्ट बढ़े। बच्चा खाँसते समय गला पकड़ ले। अधिक ताप के साथ; दाहिनी तरफ का फुफ्फुस-प्रदाह। सीना फैलाने में कठिनाई, खूनी, बलगम, आन्तरिक सूखी गरमी, बाहरी ठण्डक। हृदय क्रिया तीव्र। फुफ्फुस-प्रदाह। फेफड़ों का सख्त हो जाना, इसके साथ लगातार तेज बुखार। भारी तकलीफ होने पर भी दर्द होना, सेंकने से कष्ट अधिक हो, ठंडी हवा की प्रबल इच्छा। काले बाल और आँखों वाले कण्ठमालिक बच्चों की क्रूप खाँसी (ब्रोमियम इसके विपरीत) साँस भीतर खींचना कठिन। स्वर-यन्त्र में गुदगुदी के कारण सुबह की सूखी खाँसी। काली खाँसी की तरह खाँसी आना, साँस में कठिनाई, साँय-साँय करना। ठंडक नीचे की तरफ उतरे, सिरे से गले और वायु-

नलिकाओं तक। सीने में बहुत कमजोरी। जरा-से परिश्रम से धड़कन हो। पानी वाली प्लूरिसी। सीने भर पर गुदगुदी। काली खाँसी, कमरे के अन्दर, गरम, तर मौसम में और पीठ के बल लेटने पर बढ़ती है।

दिल—दिल दबोचा हुआ-सा मालूम पड़े। हृद्‌पेशी प्रदाह, दिल के चारों तरफ दर्दीली दाब। लोहे के हाथों से जकड़ा हुआ मालूम पड़े (कैक्टस)। इसके बाद कमजोरी और गशी जैसी हालत। जरा-से परिश्रम से दिल धड़कना। दिल की तेज चाल।

अंग—जोड़ सूजे हुए और वेदनापूर्ण। रात में हड्डियों में दर्द। सफेद सूजन। सूजाक के कारण आयी वातपीड़ा, गरदन की जड़ और ऊपरी अङ्गों का वात रोग। हाथ और पैर ठण्डे। पैर में तीखा पसीना आये। बड़ी धमनी मण्डल में धुकधुकाहट, वात पीड़ा, जोड़ों में रात्रि-पीड़ा, संकुचन संवेदना।

चर्म—गरम, सूखा, पीला, सिकुड़ा हुआ। ग्रन्थियाँ बढ़ी हुई। अस्थि गुल्म। हृदयरोग जनित सर्वाङ्ग शोथ।

ज्वर—सारे शरीर में गरम लपटें उठें। ज्वर स्पष्ट, बेचैनी, गाल लाल, मन्दता। अधिक पसीना।

घटना बढ़ना—**घटना**: चुप रहने से, गरम कमरे में, दाहिनी तरफ। **बढ़ना**: खुली हवा में इधर-उधर टहलने से।

सम्बन्ध—थाट्रेन। आयोड०, रोग उत्पत्ति विचार से कार्बोलिक एसिड के समान है।

क्रियानाशक—हीपर सल्फ, ग्रैटियोला।

पूरक—लाइकोपोडियम; बैडियागा।

तुलना: ब्रोमियम; हीपर, मर्क्युरियस; फास्फो०; एब्रोटेनम, नैट्रम म्यूर; सैनिक्युला, ट्युबरकुलिनम।

मात्रा—स्थूल औषधि के पूर्ण घोल की आवश्यकता हो सकती है। ३ से ३० शक्ति। पोटाश आयोडाइड का आयोडीन मिला घोल (३२ ग्रेन पोटाश और ४ ग्रेन आयोडीन को १ औंस पानी में मिलाकर, १० बूँद की मात्रा में दिन में ३ बार) देने से मरे हुए केंचुए निकलते हैं।

बाहरी प्रयोग के लिए यह औषधि सबसे अधिक शक्तिवान, सबसे कम हानिकारक और सफलता से प्रयोग में लायी जाने वाली कीटाणु विष नाशक औषधि है। घाव को साफ और संक्रामणहीन रखने का आदर्श साधन है। कीड़े, मकोड़े, सर्प इत्यादि का डंक मारना या दंश। गोली लगने के घाव और मिश्रित मोच, हड्डी टूटना, चर्म क्षीणता के साथ, सभी अवस्थाओं के लिए उत्तम है। चर्म को कीटाणु रहित करने के लिए उपयोगी है।

मुँह—मसूढ़े ढीले और खून बहे। गन्दे घाव और लार अधिक, बदबूदार लार बहना। जबान पर मोटा मैल। अति दुर्गन्ध निकले।

गला—स्वरयन्त्र संकुचित जान पड़े। कम्बुकर्णी नली से सम्बन्धित बहरापन। चुल्लिका-ग्रन्थि का बढ़ना। घेघा, साथ में सिकुड़न की संवेदना। जबड़े के नीचे की ग्रन्थि की सूजन। कान की सूजन।

आमाशय—आमाशय में थरथराहट। प्रबल भूख और अधिक प्यास। वायु डकार मानो खाने का प्रत्येक कण हवा में परिवर्तित हो गया है। अगर भोजन न करे तो बहुत उत्सुक और चिन्तित रहे (सिना, सल्फ०) फिर खूब भोजन किये जाये और भूख लगे तो भी दुबला होता जाये (एब्रोटेनम)।

उदर—जिगर और तिल्ली बढ़ी हुई और वेदनापूर्ण। कामला रोग। मध्यान्त्र ग्रन्थि का बढ़ना। क्लोम विषयक रोग। उदर में कटन के साथ दर्द।

मल—अति मल त्यागने पर रक्तस्राव। अतिसार : सफेदी के लिए; झागदार चर्बीला मल; व्यर्थ काँखने के साथ कब्ज। ठण्डा दूध पीने से कम हो। कब्ज और अतिसार बारी-बारी (एण्टिम क्रूड)।

मूत्र—बार-बार और अधिक, गहरा, पीला, हरा (बोविस्टा) गाढ़ा, तीखा और सतह पर झिल्लियाँ तैरें।

पुरुष—अंड कड़े। सूजे हुए और कड़े। हाइड्रोसील और उसके साथ अंड-क्षीणता। कामाग्नि लोप।

स्त्री—मासिक काल में बहुत कमजोरी (एलुमिना, कार्बोएनिमेलिस, काकुलस इण्डिका, हैमेटॉक्स) मासिक-धर्म क्रमभ्रष्ट गर्भाशायक रक्तस्राव। डिम्बाशय प्रदाह (एपिस, बेला, लैके०) डिम्बाशय से गर्भाशय तक पच्चर ठोंके जा रहे हैं ऐसा दर्द। स्तनों का सिकुड़वा। स्तनों के चर्म में कड़ी गुठलियाँ। तेजाबी प्रदर, गाढ़ा, चिकना; कपड़ा खा ले। दाहिने डिम्बाशय में पच्चर ठोंकने जैसा दर्द।

श्वास यन्त्र—आवाज फटी हुई, कच्चापन और गुदगुदी, जिससे सूखी खाँसी उठे। स्वर-यन्त्र में दर्द। स्वरयन्त्र प्रदाह और दर्दीला खुरखुरापन, खाँसने से कष्ट बढ़े। बच्चा खाँसते समय गला पकड़ ले। अधिक ताप के साथ; दाहिनी तरफ का फुफ्फुस-प्रदाह। सीना फैलाने में कठिनाई, खुली, बलगम, आन्तरिक सूखी गरमी, बाहरी ठण्डक। हृदय क्रिया तीव्र। फुफ्फुस-प्रदाह। फेफड़ों का सख्त हो जाना, इसके साथ लगातार तेज बुखार। भारी तकलीफ होने पर भी दर्द होना, सेंकने से कष्ट अधिक हो, ठंडी हवा की प्रबल इच्छा। काले बाल और आँखों वाले कण्ठमालिक बच्चों की क्रूप खाँसी (ब्रोमियम इसके विपरीत) साँस भीतर खींचना कठिन। स्वर-यन्त्र में गुदगुदी के कारण सुबह की सूखी खाँसी। काली खाँसी की तरह खाँसी आना, साँस में कठिनाई, साँय-साँय करना। ठंडक नीचे की तरफ उतरे, सिरे से गले और वायु-

नलिकाओं तक। सीने में बहुत कमजोरी। जरा-से परिश्रम से धड़कन हो। पानी वाली प्लूरिसी। सीने भर पर गुदगुदी। काली खाँसी, कमरे के अन्दर, गरम, तर मौसम में और पीठ के बल लेटने पर बढ़ती है।

दिल—दिल दबोचा हुआ-सा मालूम पड़े। हृद्पेशी प्रदाह, दिल के चारों तरफ दर्दीली दाब। लोहे के हाथों से जकड़ा हुआ मालूम पड़े (कैक्टस)। इसके बाद कमजोरी और गशी जैसी हालत। जरा-से परिश्रम से दिल धड़कना। दिल की तेज चाल।

अंग—जोड़ सूजे हुए और वेदनापूर्ण। रात में हड्डियों में दर्द। सफेद सूजन सूजाक के कारण आयी वातपीड़ा, गरदन की जड़ और ऊपरी अङ्गों का वात रोग। हाथ और पैर ठण्डे। पैर में तीखा पसीना आये। बड़ी धमनी मण्डल में धुकधुकाहट; वात पीड़ा, जोड़ों में रात्रि-पीड़ा, संकुचन संवेदना।

चर्म—गरम, सूखा, पीला, सिकुड़ा हुआ। ग्रन्थियाँ बढ़ी हुईं। अस्थि गुल्म। हृदयरोग जनित सर्वाङ्ग शोथ।

ज्वर—सारे शरीर में गरम लपटें उठें। ज्वर स्पष्ट, बेचैनी, गाल लाल, मन्दता। अधिक पसीना।

घटना बढ़ना—घटना : चुप रहने से, गरम कमरे में, दाहिनी तरफ। **बढ़ना :** खुली हवा में इधर-उधर टहलने से।

सम्बन्ध—याट्रेन। आयोड०, रोग उत्पत्ति विचार से कार्बोलिक एसिड के समान है।

क्रियानाशक—हीपर सल्फ, ग्रैटियोला।

पूरक—लाइकोपोडियम; बैडियागा।

तुलना : ब्रोमियम; हीपर, मर्क्युरियस; फास्फो०; एब्रोटेनम, नैट्रम म्यूर; सैनिक्युला, ट्युबरकुलिनम।

मात्रा—स्थूल औषधि के पूर्ण घोल की आवश्यकता हो सकती है। ३ से ३० शक्ति। पोटाश आयोडाइड का आयोडीन मिला घोल (३२ ग्रेन पोटाश और ४ ग्रेन आयोडीन को १ औंस पानी में मिलाकर, १० बूँद की मात्रा में दिन में ३ बार) देने से मरे हुए केंचुए निकलते हैं।

बाहरी प्रयोग के लिए यह औषधि सबसे अधिक शक्तिवान, सबसे कम हानि-कारक और सफलता से प्रयोग में लायी जाने वाली कीटाणु विष नाशक औषधि है। घाव को साफ और संक्रामणहीन रखने का आदर्श साधन है। कीड़े, मकोड़े, सर्प इत्यादि का डंक मारना या दंश। गोली लगने के घाव और मिश्रित मोच, हड्डी टूटना, चर्म क्षीणता के साथ, सभी अवस्थाओं के लिए उत्तम है। चर्म को कीटाणु रहित करने के लिए उपयोगी है।

———

इपिकाकुआन्हा (Ipecacuanha)

(इपिकाक-रूट)

इसका मुख्य प्रभाव फुपफुस-पाकाशयिक स्नायु-मंडल की शाखाओं पर पड़ता है, जिससे सीने और पेट में आक्षेपिक उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है। अफीम खाने की आदत या उसे किसी प्रकार से सेवन करना। इपिकाकुआन्हा की मुख्य विशेषता लगातार मिचली और कै है, जो इसका मुख्य सांकेतिक लक्षण है। न पच सकने योग्य भोजन जैसे किशमिश, मुनक्का, केक इत्यादि खाने के बाद आये उपद्रव। खासकर छोटे बच्चों और बड़े लोगों के लिए जो दुर्बल हों और जिन्हें परिवर्तनशील वातावरण में जुकाम जल्दी होता है। गरम तर मौसम में आक्षेपिक लक्षण। चमकदार लाल और अधिक रक्तस्राव।

मन—चिड़चिड़ा, सभी चीजों का अनादर करे। उन चीजों की इच्छा करना जिनके बारे में जानकारी न हो।

सिर—खोपड़ी की हड्डियाँ जैसे कुचली गई हैं या रगड़ खाई हैं। दर्द दाँतों और जीभ की जड़ तक बढ़े।

आँखें—सूजी हुई, लाल। ढेलों के आरपार दर्द। आँसू अधिक आएँ। कनीनिका धुँधली। निकट की चीजें देखने से आँखें थकें। दृष्टि क्रिया परिवर्तनशील। पलक की पेशियाँ स्पर्शकातर। दुर्बलता के कारण अनुकूल क्रिया में झटके। चलती चीजों को देखने से मिचली हो।

चेहरा—आँखों के चारों तरफ नीले घेरे। आंसुओं के साथ बँधे समय पर आने वाला शूल, साथ में अधिक प्रकाशातंक, पलकों में सन्ताप।

नाक—जुकाम, नाक बन्द और मिचली के साथ। नकसीर बहना।

पेट—प्रायः जबान साफ़ रहे। मुँह नम, अधिक लार। लगातार मिचली और कै, साथ में दर्द और चेहरे में फड़कन। खाने, पित्त, खून, या श्लेष्मा की कै करे। आमाशय ढीला मालूम दे, मानो लटक रहा है। हिचकी।

उदर—एमीबा-युक्त पेचिश, मरोड़ के साथ। खांसते समय इतना दर्द कि जी मिचलाये, प्यास कम। कटन, मरोड़ नाभि के चारों तरफ अधिक। शरीर कड़ा, तना हुआ।

मल—पित्त जैसा, घास जैसा हरा, झागदार सिरे जैसा, नाभि के ऊपर ऐंठन। पेचिशी, चिकना मल।

स्त्री—गर्भाशयिक रक्तस्राव, अधिक, चमकदार, जोर से निकले, मिचली के साथ। गर्भावस्था की कै। नाभि से गर्भाशय तक दर्द। मासिक-धर्म समय से पहले और अधिक मात्रा में हो।

साँस-यन्त्र—कठिन सांस, सीने में लगातार सिकुड़न। दमा प्रति वर्ष; कठिन, लघु-सांस का आक्रमण। बराबर छींकते रहना, जुकाम, सांय-सांय वाली खाँसी। खाँसी लगातार, तीव्र हर साँस में। छाती बलगम से भरी मालूम पड़े, मगर खाँसने पर कुछ न निकले। बुलबुले उठते जान पड़ें। खरखराहट। दम घोटनेवाली खाँसी। बच्चा कड़ा पड़ जाये, चेहरा नीला हो जाये। कुकुर खाँसी, नाक और मुँह से खून निकले। मिचली के साथ, फुफ्फुस से खून बहना सिकुड़ा-सा लगे, लड़-खड़ाती खाँसी। क्रूप-खाँसी। जरा से परिश्रम से मुँह से खून निकले (मिलिफो०)। आवाज भारी खासकर जुकाम के बाद। पूर्ण स्वरलोप।

ज्वर—सविराम ज्वर, क्रमभ्रष्ट नाड़ी कुनैन के बाद हितकर है। कम से कम शीत और साथ में अधिक गरमी, मिचली, कै, साँस-कष्ट। अनुचित भोजन से रोग फिर आक्रमण करें।

नींद—अधखुली आँखें, सोने के काल में। नींद लगते ही सभी अंगों में झटके आयें (इग्नेशिया)।

अंग—शरीर कड़ा, बाद में बाँहें एक दूसरी तरफ झटकें।

चर्म—पीला, ढीला। आँखों के चारों तरफ नीला घेरा। बाजरे जैसे दाने।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : निश्चित समय पर, बछड़े का मांस खाने से, तर गरम हवा से, लेटने से।

सम्बन्ध—**तुलना कीजिए** : **एमेटिन**—इपीकाक का मुख्य मूल तत्व (शक्ति-शाली एमीबा नाशक है लेकिन कीटाणु नाशक नहीं। एमीबियासिस की अकसीर औषधि, एमीबा पेचिश की चिकित्सा में अति मूल्यवान। मसूढ़ा सड़ने में भी, पहले तीन दिन ½ ग्रेन, फिर मात्रा में कमी कर दें। एमेटिन, ½ ग्रेन इन्जेक्शन द्वारा सोरायसिस में। एमेटिन हाइड्रोक्लो ३, २x शूल की तरह उदर पीड़ा और मिचली के साथ दस्त में; एमेटिन एमीबायुक्त पेचिश। स्थूल मात्रा में, सावधानी से देना और प्रतीक्षा करना चाहिए। सम्भव है कि इससे फुफ्फुस कड़े पड़ जायें, हृदय गति तीव्र हो, सिर आगे को खिंचने की सम्भावना और फुफ्फुसीय उपखण्ड प्रदाह हो। रक्त वमन और अन्य प्रकार के रक्तस्राव में **तुलना कीजिए** : **जिलैटिन** (जो खून के जमने पर विशेष प्रभाव रखती है। इन्जेक्शन द्वारा या खाने के लिए ४ औंस के लगभग जेली में १० प्र० श० मिलाकर, दिन में ३ बार) **आर्सेनिक; कैमो०, पल्से०; टार्टर एमे०; स्क्विला कानबॉल वुलस** (शूल और दस्त) **टाइफा लैटिफोलिया**—कैट-टेल (पेचिश, दस्त और ग्रीष्म रोग) **युफोर्बिया हाइ-पेरिसिफोलिया**—गार्डेन स्पर्ज—(इपिकाक के अधिक समान। साँस पथ और पाका-

शयिक—आंत्रिक मार्ग और स्त्री इन्द्रियों की उत्तेजना)। **लिपिया मेक्सिकाना**—(लगातार कड़ी, सूखी वायुनलिका सम्बन्धी खाँसी, दमा और जीर्ण ब्रांकाइटिस)।

दमा रोग में तुलना कीजिए : ब्लाटा ओरियण्टैलिस।

क्रियानाशक—आर्सेनिक; चायना; टैबेकम।

पूरक—क्युप्रम, आर्निका।

मात्रा—३ से २०० शक्ति।

इरिडियम (Iridium)

(दी मेटल)

आंत्रिक सड़न और शरीर विषाक्रमण। **रक्तहीनता** लाल कणों को अधिक करती है। मिरगी रोग, चर्म टीबी। छोटे-बड़े जोड़ों का गठिया। गर्भाशयिक अर्बुद। मेरु-दण्ड का आंशिक पक्षाघात। **रोगाक्रमण के बाद शिथिलता**। बच्चे जो नाटे; दुर्बल अंग वाले और तेजी से बढ़ते हों। गर्भावस्था में वृक्क प्रदाह।

सिर—चित्त एकाग्रता कठिन। ऐसा लगे कि मन विचार रहित है। व्यग्रता। सिर का दाहिना भाग लकड़ी की तरह कड़ा मालूम दे। सिर की खाल का दाहिना भाग उत्तेजित। अधिक पानी सा जुकाम घर के अन्दर कम रहे। पीनस रोग।

श्वास-यन्त्र—खरखरी खाँसी, बात करने से बढ़े, गले का ऊपरी भाग कच्चा लगे, सूजा, अधिक गाढ़ा, पीले रङ्ग का बलगम निकले। जीर्ण स्वरयान्त्रिक नजला।

पीठ और अंग—वृक्क क्षेत्र में कमजोरी। मेरुदण्ड का आंशिक पक्षाघात खासकर वृद्ध लोगों का और रोगाक्रमण के बाद। पुट्ठे और बायीं जाँघ में दाब। दोनों जाँघों में दाब, खासकर बायीं में। बायें कूल्हे की हड्डी में मोच जैसा संवेदन और बायें नितम्ब क्षेत्र की तरफ धीमा दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : इरिडियम क्लोराइड (मुँह से लार बहती है और जबड़ों में कड़ापन पैदा करती है, बाद में सिर और स्नायु लक्षण उत्पन्न करती है। नासिक छिद्र और वायु नलिका समूह में रक्ताधिक्य। पीठ के निचले भाग में घसीटने की तरह दर्द। सिर दर्द, दाहिनी तरफ अधिक, गले में सीसे की तरह का भारीपन।)

तुलना कीजिए : प्लेटिना, पैलेडियम, ओस्मियम।

मात्रा—६ और ऊँची शक्ति।

आइरिस वर्सिकोलर (Iris Varsicolar)

(ब्लूफ्लैग)

चुल्लिका ग्रन्थियाँ, अग्न्याशय, लार ग्रन्थियाँ, आंत्रिक ग्रन्थियाँ और पाकाशयिक-आंत्रिक श्लैष्मिक झिल्लियाँ खासकर प्रभावित होती हैं। पित्त स्राव को बढ़ाती है। पुराना सिरदर्द और कॉलेर मॉरबस खासतौर पर इस दवा की चिकित्सा क्षेत्र में आते हैं।

सिर—मिचली के साथ अगले भाग का दर्द। खोपड़ी की खाल सिकुड़ी मालूम दे। दाहिनी कनपटी खासतौर पर रोगग्रस्त। पुराना सिर दर्द, आराम करने से बढ़े; आँखों के आगे धुँधलापन से शुरू हो, मानसिक परिश्रम के बाद, आराम के समय बढ़े। खाल पर दानेदार उद्भेद।

कान—गर्जन, भिनभिनाहट, टनकन, बहरापन के साथ। नाक सम्बन्धी चक्कर, कानों में तेज आवाजें आयें।

चेहरा—नाश्ते के बाद स्नायुशूल, जो आँखों के कोटर के निचले भाग के स्नायुशूल से शुरू हो और चेहरे में फैल जाये।

गला—मुँह और जबान झुलसी मालूम दे। गले में गरमी, गड़न और जलन। लार अधिक रेशेदार। घेघा।

आमाशय—सारी आँतों में जलन। कै, खट्टी, खून मिली, पित्त की मिचली, लार अधिक बहना (मर्कुरियस, इपिकाक, कैली आयोडेटम, भूख कम लगना।)

उदर—जिगर वेदनापूर्ण। कटन के साथ दर्द। वायुशूल। अतिसार पानी-सा मल; गुदा में जलन और आंत्र मार्ग के आरपार जलन के साथ। बँधे समय पर आनेवाला रात्रिकालीन अतिसार, साथ में दर्द और हरा स्राव। कब्ज (३० शक्ति दीजिये)।

अंग—जगह बदलने वाला दर्द। मानो बायीं तरफ का कूल्हे का जोड़ उखाड़ कर तोड़ दिया गया है। दर्द जानु के पिछले भाग तक बढ़े। सुजाक जनित वात रोग (इरिसिन का व्यवहार करें)।

चर्म—पाकाशयिक विकार के साथ भैंसिया दाद। दानें निकलना। अपरस चमकती खुरण्ड के साथ टेढ़े-मेढ़े चकत्ते। अकौता, रात में खुजली।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम को और रात में, आराम से। घटना : लगातार हरकत से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : नक्स।

तुलना कीजिए : आइरिस फ्लोरेन्टिना-ऑरिस रूट (सन्निपात, विक्षेप और पक्षाघात)। आइरिस फेक्टिसिमा (सिर दर्द और आँत उतरना)। आइरिस

जरमैनिका ब्लू गार्डन आइरिस—(शोथ चेहरे और नाक का, चेहरे पर स्याह दाग) आइरिस टेनेक्स माइनर-(सूखा मुँह, पेट के सिरे पर मृत्यु संवेदन, क्षुद्रान्त्र तथा अन्धान्त्र क्षेत्र में दर्द, उपांत्र प्रदाह। चिपक जाने के बाद दर्द होना)। प्रैंक्रिटिनम—कई तरह के एन्जाइम का मिश्रण-(आंत्रिक अनपच में सांकेतिक होता है, भोजन के एक घण्टे बाद या उससे कुछ अधिक देर के बाद दर्द होना। अनपचा दस्त। मात्रा ३-५ ग्रेन, पाचन काल के अन्दर देना अच्छा नहीं होता, इसके बाद देना चाहिए) पेप्सिनम अपूर्ण पाचन, पाकाशयिक क्षेत्र में दर्द के साथ। कृत्रिम भोजन पर पले हुए बालक का सूखा रोग। अजीर्ण का दस्त। मात्रा ३-४ ग्रेन। (क्लोम ग्रन्थि, गठिया, मधुमेह रोगों में) इपिकाक, पोडोफाइलम०, सैंग्विनेरिया, आर्से, एण्टिम क्रूड०।

मात्रा—अरिष्ट से ३० शक्ति। बहुत ऊँची शक्ति से अच्छे लाभ की सूचना मिली है।

जैकाराण्डा (Jacaranda)

(ब्रैजीलियन कैरोबा-ट्री)

आतशक, सुजाक और गठिया रोग के लिए प्रसिद्ध है। गर्भावस्था की कै, मूत्र जननेन्द्रिय लक्षण महत्वपूर्ण हैं। गठियावात लक्षण।

सिर—दर्द, इसके साथ उठने पर चक्कर, माथे के भारीपन के साथ। आँखें दर्द करें, सूजी हों और पानी बहे। जुकाम, सिर के भारीपन के साथ।

गला—खराशदार, सूखा संकुचित। गलकोश में दाने।

मूत्र—मूत्रमार्ग सूजा हुआ, पीला स्राव।

पुरुष—लिंग में गरमी और दर्द, वेदनापूर्ण लिंगोत्थान, पर्दा पीछे न हटे। पर्दा दर्दीला और सूजा हुआ। आतशक के दाने। सुजाक में वेदनापूर्ण लिंगोत्थान। लिंगमुण्ड पर खुजली वाले दाने।

अंग—दाहिने घुटने में वात पीड़ा। कटि-प्रदेश की कमजोरी। सुबह के समय पेशियों का चोटीलापन और कड़ा होना। सुजाक जनित गठिया। हाथों पर खाज वाले दाने। सुजाक और उपदंशीय सन्धि प्रदाह।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : थूजा, कोरैलियम, जैकाराण्डा, गुवालैंडाई (उपदंश के लक्षणों में; खासकर आँख और गले के उपदंशीय घाव, कमजोरी लाने वाले घाव। गहरे रंग का दर्दहीन दस्त)।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

जैलापा-एक्सोगोनियम पर्गा
(Jalapa Exogonium Purga)
(जैलैप)

आन्त्र-शूल और अतिसार उत्पन्न करती है और उन्हें अच्छा भी करती है। बच्चा सारे दिन अच्छा रहता है, लेकिन रात में चिल्लाता है, बेचैन रहता है और तंग करता है।

पाकाशयिक-आंत्रिक—जबान चिकनी, चमकीली, सूखी और गड़न वाली। दाहिने कोख में दर्द। अफरा और मिचली। चुटकी काटने और ऐंठन जैसा दर्द। पानी-सा पतला दस्त, कीचड़ की तरह मल। उदर तना हुआ। चेहरा ठण्डा और नीला। गुदा दर्द।

अंग—टाँगों और बाहों में टीस। पैर के अँगूठे के कड़े जोड़ में दर्द। नाखून की जड़ में गड़न। तलवों में जलन।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : इलाटेरियम, कैनाबिस सैटाइवा।

तुलना कीजिए : कैम्फोरा, कोलोसिन्थिस।

मात्रा—३ से १२ शक्ति।

जैट्रोफा (Jatropha)
(पर्जिंग नट)

हैजा और अतिसार में मूल्यवान है। उदर लक्षण अधिक महत्व रखते हैं। छोटी माता का दब जाना (एच० फैरिंगटन)।

पेट—हिचकी, बाद में अधिक कै। पीने के बाद मिचली और कै, गले में तेजाबीपन के साथ। अधिक प्यास। कै सरलता से हो। आमाशय में जलन और गरमी, कौड़ी में ऐंठन और संकुचन दर्द के साथ।

उदर—तना हुआ, गड़गड़ाहट के साथ। कोख में दर्द। जिगर में और दाहिनी स्कंधास्थि से कंधे तक दर्द। पेशाब तेजी से लगे।

मल—एकाएक अधिक, पानी-सा, चावल की माँड़ी की तरह। अतिसार, तेज अतिसार, उदर में तेज आवाज जैसे किसी छोटे छेद में से पानी गड़गड़ा कर निकले, ठंडक, ऐंठन, मिचली, कै से सम्बन्धित हो।

अंग—मांसपेशियों में ऐंठन, खासकर पिण्डली, टाँगों और पैरों में। सारे शरीर का ठंडापन। टखनों, पैरों और उनकी अँगुलियों में दर्द। एड़ियाँ उत्तेजनीय।

घटना-बढ़ना—घटना : हाथों को ठण्डे पानी में रखने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैम्फोरा; वेरेट्रम एल्बम; गैम्बोजिया; क्रोटन टिग०, जेट्रोफा युरेन्स—स्पॉज नेटल (शोथ और हृदय का आंशिक लकवा) ।

मात्रा—३ से ३० शक्ति ।

जेक्विरिटी—आरब्रस प्रिकैटोरियस

(Jequirity—Arbrus Prectorius)

(कैब्स आई वाइन)

कैंसर; चेहरे का चर्म, टी० बी० रोहे ।

आँखें—मवादी नेत्र प्रदाह; सूजन चेहरे और गरदन तक फैले । रोहेदार नेत्र-प्रदाह । आँख आना ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : जेक्विरिटोल—रोहा और शीशे पर चर्बी छा जाना, नया पकन स्थान स्थापित करने के लिए । जैकिरिटी के बीजों का प्रोटीन विष शरीर पर वही विषैला प्रभाव डालता है जैसा साँप के विष से होता है ।

जोनोसिया (Jonosia Asoca)

(बार्क ऑफ ऐन इण्डियन ट्री, इन्ट्रोड्यूस्ड बाई डॉ० एन० डी० राय, कलकत्ता)

स्त्री-जननेन्द्रिय पर विस्तृत प्रभाव रखती है । मासिक-धर्म का रुक जाना और गर्भाशय से रक्तस्राव ।

सिर—एक तरफ का सिर दर्द, गर्भाशय रोग के उपद्रव स्वरूप सिर दर्द, प्रादाहिक सिर दर्द, खुली हवा में और मासिक स्राव के जारी होने से कम । आँखों के ढेलों में दर्द । नेत्र गोलक के ऊपरी भाग में दर्द; प्रकाश असह्य । नाक बहे; अधिक पानी-सा स्राव । सूँघने की शक्ति लोप होना ।

आमाशय—मिठाई और तेजाबी चीजों की इच्छा । प्यास लगना, मिचली, अधिक कठोर कब्ज, खूनी बवासीर ।

स्त्री—मासिक-धर्म देर में हो और क्रमभ्रष्ट । मासिक-शूल अनियमित । मासिक-स्राव के पहले डिम्बाशयों में दर्द, अधिक मासिक-स्राव, मूत्राशय का क्षोभ । प्रदर ।

नींद—अशांत । यात्रा करने पर स्वप्न देखना ।

पीठ—रीढ़ की हड्डी से होकर उदर जाँघों तक दर्द ।

मात्रा—अरिष्ट ।

जुग्लैन्स सिनेरिया (Juglans Cinerea)

(बटरनट)

इस औषधि का चित्र है : दोषयुक्त उत्सर्जन जिससे कामला रोग और कई तरह के चर्म रोग उत्पन्न होते हैं। सिर के पिछले भाग का तीव्र दर्द जो बहुधा जिगर रोग से सम्बन्धित हो, इस औषधि का विशेष लक्षण है : सीने, आँखों और स्कन्धास्थि में दर्द, दम घुटन संवेदन के साथ। ऐसा लगे कि सभी आंतरिक यन्त्र बहुत बड़े हो गये हैं, खासकर बायीं तरफ के। पित्त पथरी।

सिर—मन्द, भरा हुआ सिर, खोपड़ी पर दाने। पिछले भाग का तीव्र दर्द। सिर बड़ा मालूम पड़े। पलकों और आँखों के चारों तरफ दाने।

नाक—नाक में टपक, छींकें आएँ। सीना पंजर के नीचे दर्द और दम घुटने की सम्भावना के बाद जुकाम। बाद में अधिक, सरल, गाढ़ा श्लेष्मा का स्राव।

मुँह—मुँह और गले में तेजाबीपन। तालुमूल क्षेत्र की बाहरी तरफ छरछराहट। जबान की जड़ और मुँह के अन्दर सूखापन।

पेट—दौर्बल्यवश आया अनपच रोग, अधिक डकार और वादी के साथ तनाव। जिगर प्रदेश में सन्ताप।

पीठ—गरदन की पेशियाँ कड़ी, तनी हुईं, लँगड़ी। स्कन्धास्थि के बीच में और दाहिनी तरफ दर्द। कटि-प्रदेश की हड्डी में दर्द।

चर्म—लाल, अरुणिमा की लाली की तरह। जिगर क्षेत्र और दाहिनी स्कन्धास्थि में दर्द के साथ कामला रोग। गरम होने पर खुजली और बींधने की तरह का दर्द। रस दाने। अकौता, खासकर निचले अंगों पर, त्रिकास्थि और हाथों पर। अनेक स्थानों पर लाल चकत्ते और विसर्प रोग सम्बन्धी लाली।

मल—पीलापन लिए हरा, कूँथन और गुदा में जलन। कै-दस्त।

घटना बढ़ना—घटना : गरम होने पर, व्यायाम, खुजलाने से; सुबह उठने पर। बढ़ना : टहलने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : जुग्लैण्डिन (आड़ी तिरछी आँत का नजला, पित्त का दस्त); चेलिडोनियम; ब्रायो०; आइरिस०।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

जुग्लैन्स रेजिया (Juglans Regia)

(वैलनट)

चर्म स्फोटक दर्शनीय है।

सिर—व्यग्र ऐसा लगे मानो सिर हवा में तैर रहा है। पिछले भाग में तेज दर्द। अंजनहारी।

स्त्री—समय से पहले मासिक-धर्म, काला, जमा हुआ। उदर तना हुआ।

चर्म—चेहरे पर काले तिल और मुँहासे। खुरण्डदार दाद, साथ में कानों के चारों तरफ दर्द। छोटे लाल दाने निकलना और खुजली। सिर की खाल लाल और रात में बहुत खुजली होना। उपदंश, घाव जैसा घाव। काँखों की ग्रन्थियाँ पकें।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : जुग्लैंस सिनेरिया।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

जंकस एफ्युसस (Juncus Effusus)

(कॉमन रश)

पेशाब बढ़ाने वाली औषधि। पेशाब की बीमारियाँ। मूत्रकृच्छ्र, पेशाब बूँद-बूँद हो। बवासीर के रोगियों में दमा के लक्षण। बुदबुदाहट की संवेदना। उदर में अफरा। सन्धिप्रदाह और पथरी।

मात्रा—अरिष्ट और पहली शक्ति।

जुनिपेरस कॉम्युनिस (Juniperus Communis)

(जुनिपर बेरीज)

गुर्दों का नजला व सूजन। पेशाब दबने के साथ शोथ। वृद्ध लोग, जिनकी पाचन-शक्ति मन्द हो और पेशाब कम उतरे। जीर्ण मूत्रपिण्ड आवरण प्रदाह।

मूत्र सम्बन्धी—रुकना, खूनी, थोड़ा पेशाब, बनफशा के फूल की-सी गन्ध (टेरेबि०)। गुर्दा प्रदेश में बोझ। मूत्रग्रन्थि में रस स्राव। गुर्दों में रक्ताधिक्य (युकैलिप्टोल)।

श्वास-यन्त्र—थोड़ा, तलछटदार पेशाब के साथ खाँसी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : सैबाइना, जुनिपेरिस वरजिनिएनस—रेड सिडार—(मूत्राशय में तीव्र कूँथन। पीठ में लगातार खींचन, गुर्दों में रक्ताधिक्य; मूत्रपिण्ड-आवरण-प्रदाह और मूत्राशय प्रदाह, वृद्ध लोगों में मूत्रदमन के साथ शोथ। मूत्र-कृच्छ्र, पेशाब करते समय मूत्रमार्ग में जलन, कटन, बराबर पेशाब लगना, संन्यास रोग, विक्षेप, पेशाब रुकना, गर्भाशय से रक्तस्राव)। टेरेबिन्थिना।

मात्रा—काढ़ा सबसे उत्तम है। एक पाइण्ट खौलते पानी में १ औंस। मात्रा आधा औंस से २ औंस या अरिष्ट १ से १० बूँद।

जस्टिसिया अधाटोडा बसाका (Justicia Adhatods Basaka)

(ऐन इण्डियन श्रब-सिधी)

साँस मार्ग के तीव्र नजले में लाभदायक औषधि (आरम्भ में प्रयोग करने योग्य)।

सिर—स्वभाव चिड़चिड़ा, बाहरी प्रभाव असह्य, भरा और भारी, आँसू आएँ, साथ में जुकाम अधिक, तरल स्राव, लगातार छींक, गन्धलोप और स्वाद, जुकाम के साथ खाँसी।

गला—सूखा, खाली निगलने पर दर्द। चिमड़ा बलगम। मुँह सूखा।

श्वास-यन्त्र—हँसली क्षेत्र से सीने में फैलने वाली खाँसी। फटी आवाज, स्वर-नली दर्दीली। दम घुटने के साथ। आक्षेपिक खाँसी। छींक के साथ खाँसी; खाँसी के साथ घोर साँस कष्ट। सीने के आसपास कसाव। दमा के हमले, बन्द गरम कमरा सहन न हो, कुकुर खाँसी।

सम्बन्ध—एलियम सेपा और युफ्रेशिया के बीच की अवस्था दर्शित करती जान पड़ती है, इसकी तुलना कीजिए।

मात्रा—३ शक्ति और ऊँची। निचली शक्तियों से रोग का भड़कना देखा गया है।

कैलि आर्सेनिकम (Kali Arsenicum)

(सोल्युशन ऑफ फाउलर)

कैलि आर्से० के रोगी की अवस्था संकटमयी होने की प्रवृत्ति रखती है और चर्म रोग जीर्ण होते जाते हैं। वह बेचैन, स्नायविक और रक्तहीन होता है।

चर्म—असह्य खुजली, कपड़ा उतारते समय अधिक हो। सूखा पपड़ीदार चुचुका। मुँहासे, मासिक काल में अधिक दाने निकलें। जीर्ण अकौता। खुजली गरमी से, टहलने से और कपड़ा उतारने से बढ़े। अपरस, पित्त के दाने। सड़ने और तेजी से फैलने वाले घाव। बाहों और घुटनों के मोड़ों में दरारें। गठिया के अस्थि, गुल्म, मौसम बदलने के समय बढ़े। कर्कट, जब एकाएक बिना किसी बाहरी कारण के घातक रूप धारण करे। (चर्म के अन्दर अनेक कड़ी गुठलियाँ)।

स्त्री—गर्भाशय के मुँह पर आतशक के दाने, बदगोश्त बढ़े, साथ में उड़ता हुआ दर्द, दुर्गन्धित स्राव, पेडू के नीचे दाब हो।

सम्बन्ध—रेडियम।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

कैलि बाइक्रोमिकम (Kali Bichromicum)

(बाइक्रोमेट ऑफ पोटाश)

इस औषध का विशेष आकर्षण पेट की श्लैष्मिक झिल्लियाँ, आँतें, वर्गायुमा, हड्डियाँ और रेशेदार तन्तु हैं। गुर्दे, दिल और जिगर भी प्रभावित होते हैं। जीर्ण कोरण्ड प्रदाह की सम्भावना, गुर्दा प्रदाह। पाकाशयिक बाधाओं के साथ गुर्दा प्रदाह। जिगर का क्षय। रक्तहीनता और ज्वर का न रहना इसकी विशेषता है। सर्वाङ्ग शक्तिहीन, पक्षाघात के स्तर तक। यह उन रोगियों के लिए सांकेतिक है जो मोटे, चर्बीले, हल्के रङ्ग के होते हैं, जिनको जुकाम जल्दी-जल्दी होता है या जिनको उपदश या कण्ठमाला दोष हो। लक्षण सुबह के समय बढ़ते हैं, तेजी से जगह बदलते हैं, वात और पाकाशयिक लक्षण बारी-बारी से आएँ। यह औषधि तीव्र अवस्था की अपेक्षा अर्द्ध जीर्ण अवस्था में अधिक लाभदायक होती है। सभी जगह की श्लैष्मिक झिल्लियाँ रोगग्रस्त हों। गलकोष, स्वर-यन्त्र, वायु नलिका समूह और नाक का जुकाम, **चिमड़ा, रेशेदार,** लसीला स्राव निकलता है, यह अवस्था इस औषधि का प्रधान सांकेतिक चिह्न है। **नाक की दरम्यानी उपास्थि में सुराख होना।** दौर्बल्यजनक जीर्ण नजला। अर्बुद। दिल और पेट का फैल जाना।

सिर - सिर में चक्कर आये, इसके साथ मिचली जो खड़ा होने पर आए। भौं के ऊपर दर्द, यह दर्द आने से पहले निगाह धुँधली पड़ जाए। **भृकुटी में दर्द और जैसे यह भरी हुई है।** आधासीसी जो थोड़ी-थोड़ी जगह में हो, या नजला दब जाने से। अगले भाग का दर्द, प्रायः एक आँख पर। **हड्डियाँ और खाल दर्दीली मालूम हों।**

आँखें—आँखों के घेरों के ऊपरी भाग का स्नायुशूल, दाहिनी तरफ अधिक। आँखों के ढेले जलें, सूजे हुए और शोथमयी। स्राव रेशेदार और पीला। पुतली पर घाव, बिना दर्द के या प्रकाश असह्य। केवल साधारण उत्तेजना के साथ पलकों की प्रदाहित चिपकन। काली खाँसी सम्बन्धी नेत्रप्रदाह, रोहे, साथ में कनीनिका का मांसमय या आरक्त हो जाना। उपतारा प्रदाह। कनीनिका की भीतरी सतह पर बिन्दुदार मवाद के साथ, दर्द कम, लेकिन घाव सूजन अधिक (कोनियम इसका उल्टा है)।

कान—सूजा हुआ। फटन दर्द के साथ। गाढ़ा, पीला, तारदार, दुर्गन्धित स्राव। बायें कान में तेज चिलकन।

नाक—बच्चों का नजला जो पैदाइशी उपदंश रोग से सम्बन्धित हो, खासकर थुलथुले, मोटे बच्चों में। **नाक की जड़ में दाब दर्द।** नाक में गड़न दर्द। **नथनों के बीच वाले परदे की पतली हड्डी में घाव, गोल घाव। घृणित दुर्गन्ध। स्राव रेशेदार, हरियाली लिए पीली।** चिमड़ी, रबर जैसी गुल्लियाँ नाक से निकलें जो

कच्ची जगह बनावें। सूजन नथुनों से मुँह तक बढ़े, साथ में नाक की जड़ में कष्ट और भरापन। नजला (हाइड्र०) बहुत खखारना। नाक से साँस न ले सके। सूखा जुकाम, नाक बन्द। तीव्र छीकें। अधिक पानी-सा स्राव। छिद्र के अगले भाग की जीर्ण सूजन, साथ में नाक बन्द रहना।

चेहरा—सुर्ख चेहरा। चकत्तेदार, लाल। मुँहासे। (जुग्लेंस, कॅलि आर्से) हड्डियाँ कोमल, खासकर आँखों के घेरों के नीचे की।

मुँह सूखी, चिमड़ी लार। जबान नकशेदार, लाल चमकीली, चिकनी और सूखी, पेचिश के साथ, चौड़ी, दरारेदार, मोटी मैल। जबान पर बाल जैसा संवेदन।

गला—मुँह के भीतरी भाग में गले के पास लाली और सूजन। सूखा और खुरखुरा। कर्णमूल ग्रन्थियाँ सूजी हुई। काग ढीला, शोथमयी थैली जैसा थुलथुला। तालुमूल और कोमल भाग पर रोगमयी दूषित झिल्लियाँ जमी हों। जलन पेट तक उतरे। सफेद चर्बीले चकत्ते। रोहिणी रोग. साथ में घोर शिथिलता और कोमल नाड़ी की गति। मुँह और गले से चिमड़ा रेशेदार स्राव।

आमाशय—बियर पीने से मिचली और कै हो। खाने के बाद ही बोझ जैसा लगे। मालूम हो कि पाचन-क्रिया रुक गयी है। आमाशय का फैल जाना। आमाशय शूल। आमाशय के गोल घाव। जिगर और तिल्ली में चिलकन जो पेट से होकर रीढ़ तक जाये। पानी से घृणा। मांस न पचे। बियर और तेजाबी चीजें पीने की इच्छा। आमाशय के लक्षण खाने से कम हों और वात रोग के लक्षण उभर आवें। चमकीली, पीली, पानी की कै।

उदर—खाने के बाद ही उदर में कटन, दर्द। जीर्ण आंत्रिक घाव। दाहिने कोखे में चोटीलापन, जिगर का क्षय और मुलायम रेशेदार तन्तुओं का अधिक होना। दर्द वाली सिकुड़न, दर्द और जलन।

मल—जेली की तरह, चमकीली और चटकीला, सुबह को अधिक। पेचिश; कूँथन, मल बादामी, झागदार। गुदा में गुल्ली जैसा संवेदन। समय-समय पर कब्ज, साथ में पुट्ठों के आरपार दर्द और बादामी मूत्र।

मूत्र सम्बन्धी—मूत्र-मार्ग में जलन। पेशाब करने के बाद एक बूँद बाकी रहे ऐसा मालूम पड़े जो न निकल सके। पेशाब में रेशेदार श्लेष्मा। मूत्र-मार्ग भर कर बन्द हो जाये। गुर्दे में रक्ताधिक्य, गुर्दा प्रदाह, साथ में थोड़ा एल्बूमेनदार पेशाब और थक्के। मूत्र पिंड आवरण का प्रदाह, मूत्र में उपत्वक् कोष, श्लेष्मा, मवाद या खून मिला हो। रक्त और दूध की तरह सफेद वस्तु मिला पेशाब।

पुरुष—दानेदार फुन्सियों के साथ लिंग की खुजली और दर्द करना। चिलकन के साथ घाव; रात में कष्ट बढ़ना। रात में उठने पर लिंग की जड़ में संकुचन। उपदंश के घाव, पनीर की तरह, चिमड़ा स्राव। लिंगोत्थान (पिकरिक एसिड)।

स्त्री - पीला, चिमड़ा प्रदर। योनि घुण्डी की तीव्र खाज, बहुत जलन और कामोत्तेजना के साथ। गर्भाशय का बाहर निकलना, गरमी के दिनों में अधिक।

श्वास-यन्त्र—आवाज भारी, शाम को अधिक; खाँसी में अधिक पीला बलगम; मात्रा में बहुत, चिपचिपा, लेसेदार, लम्बे चिमड़े, रेशे अधिक मात्रा में निकलें। स्वरयन्त्र में गुदगुदी। नजला से स्वरयन्त्र की खाँसी जिसमें टनटनाहट की आवाज हो। असली झिल्लीवाली काली खाँसी। सूखी जिसमें बरतन बजने जैसी आवाज हो जो स्वरयन्त्र तक और छिद्रों तक बढ़े। सीना पंजर में दर्द के साथ खाँसी, जो कन्धों तक बढ़े। कपड़ा उतारते समय बढ़े। साँस नली के विभाजन स्थान में खाँसते समय दर्द, सीना पंजर के बिचले भाग से पीठ तक।

दिल—फैल जाना, खासकर गुर्दों के दोष के साथ। दिल के चारों तरफ ठंडापन (कैलिनाइट्रिकम)।

पीठ - कमर के आरपार कटन, टहल न सके, पुट्ठों तक बढ़े। रीढ़ की अन्तिम अस्थि और त्रिकास्थि में दर्द जो ऊपर और नीचे बढ़े।

अंग—दर्द तेजी से एक जगह से दूसरी जगह को उड़े (कैलि सल्फुरि०, पल्से०)। चलता-फिरता दर्द, हड्डियों में, ठंडक से बढ़े। बायीं तरफ की गृध्रसी, हरकत से कम। हड्डियाँ कुचली मालूम पड़ें। कमजोरी अधिक। जंघास्थि में फटन जैसा दर्द, उपदंशीय वातरोग (मेजे०)। सभी जोड़ों में दर्द, सूजन, कड़ापन, चुरचुराहट। टहलने पर एड़ी में दर्द। एड़ी की मोटी नस सूजी हुई और दर्द वाली। छोटे स्थानों में दर्द (आक्जे० एसिड)।

चर्म—मुँहासे। रस दाने। चपटे, किनारेदार घाव; जिनमें गड्ढा करने की प्रवृत्ति हो और चिमड़ा मवाद निकले। स्राविक दाने, माता की तरह, जलन दर्द के साथ। रसदाने के साथ खुजली।

घटना-बढ़ना—घटना : गरमी से। बढ़ना : बियर, सुबह के समय गरम मौसम, कपड़ा उतारते समय।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : टार्टार एमेटि०; ब्रोमियम, हीपर०, इण्डिगो, कैल्के०, एण्टिम क्रूड। नकली झिल्ली रोग में तुलना कीजिए—ब्रोमियम, एमोनियम कास्टि०, सल्फ्यु० एसिड, इपिकाक।

क्रियानाशक। आर्से०, लैकेसिस।

मात्रा—३ विचूर्ण, ३० शक्ति और उससे ऊँची भी।

इस लवण की निचली शक्तियाँ अधिक काल तक नहीं रखनी चाहिये।

कैलि ब्रोमेटम (Kali Bromatum)

(ब्रोमाइड ऑफ पोटाश)

सभी पोटाश लवणों की तरह यह भी दिल को कमजोर बनाता और ताप को घटाता है। इससे ब्रोमिनिज्म का एक रोग विशेष हो जाता है। मानसिक शक्तियों की क्षीणता, स्मरण शक्तिहीनता, विषाद, श्लैष्मिक झिल्लियों की संवेदनहीनता, खासकर आँखों, गले और चर्म के मुँहासे, प्रबृद्ध मैथुन इच्छा, पक्षाघात। अपरस की प्रधान औषधि। जीर्ण गठिया की गुल्मावस्था। संन्यास रोग के लक्षण, जो शरीर में संचित हुए विष अथवा अन्य किसी कारण से हो, निद्रावेश और खर्राटे भरना, विक्षेप, वाक्रोध पेशाब में अलब्यूमिन आना। मिरगी रोग (बिना नमक के भोजन करना उचित है)।

मन—घोर शोकग्रस्त, भ्रम, नैतिक त्रुटि, धार्मिक विरक्ति। भ्रम हो कि उसके विरुद्ध कोई षड्यन्त्र हो रहा है। कल्पना करता है कि ईश्वरीय कोप के लिए उसी को चुना गया है। स्मरण शक्तिहीनता। कुछ-न-कुछ करना चाहे, इधर-उधर टह-लना; अशांत होना (टैरेण्टुला)। विष दिये जाने का भय (हायोसिया०) शब्दों को भूल जाने वाला, मस्तिष्क रोग, बताने पर किसी शब्द का उच्चारण कर सकता है मगर उसके बिना नहीं। भयानक स्वप्न। भयानक दृष्टिभ्रम। तीव्र प्रलापक सन्निपात।

सिर—आत्महत्या का पागलपन। उसके साथ कम्प, चेहरा सुर्ख। सिर में ठिठु-रन। दिमाग कमजोर। जुकाम जो गले तक फैलने की प्रवृत्ति रखे।

गला—काग और मुँह-गह्वर की सूजन। मुँह-गह्वर, गलकोष, स्वरनली की संवेदन हीनता। निगलना कष्टकर, खासकर तरल पदार्थ का (हायोसिया०)।

आमाशय—कै, घोर प्यास के साथ, प्रति भोजन के बाद। लगातार हिचकी (सल्फ्यु० एसिड)।

उदर—ऐसी संवेदना कि आँतें बाहर को निकली आ रही हैं। बाल हैजा। परावर्त्तित मस्तिष्क उत्तेजना के साथ; पेशियों के झटके, फड़कन के साथ, हरा, पानी-सा मल, अधिक प्यास के साथ कै, आँखें बैठना। पतनावस्था। उदर में भीतरी ठंडक। अधिक रक्तस्राव के साथ दस्त। हरा; पानी-सा मल। उदर का धँसना।

मूत्र-सम्बन्धी—मूत्रमार्ग की संवेदनीयता में कमी। अधिक पेशाब होना प्यास के साथ। मधुमेह (फॉस्फोरिक एसिड)।

पुरुष—कमजोरी और नपुंसकता। अधिक मैथुन के दुष्परिणाम, खासकर स्मरण शक्तिहीनता, अंगों के पारस्परिक सहयोग में कमी, अंगों में झुनझुनी और सुन्न होना, अर्ध-निद्रा में लिंगोत्तेजना।

स्त्री—योनि की तीव्र खाज। अधिक स्नायविक अशान्ति के साथ डिम्बाशयिक स्नायुशूल। मैथुन इच्छा का अधिक होना। डिम्बाशय के कौषिक अर्बुद।

श्वास-यन्त्र—आक्षेपिक काली खाँसी। गर्भावस्था में परावर्तित खाँसी। सूखी, थकाने वाली खाँसी।

अंग—हाथों को हिलाते रहना, अँगुलियों को मोड़ने में लगे रहना। पेशियों का फड़कना और झटका आना।

चर्म—चेहरे पर मुँहासे, दाने। खुजली सीने, कन्धों और चेहरे पर अधिक। चर्म की संवेदनहीनता। अपरस।

नींद—अशान्त निद्रा। अधिक। औंघाई चिन्ता, रंज, मैथुन इच्छा के कारण अनिद्रा। भयानक स्वप्न। सोते में दाँत पीसना, जल घोंटने वाले भयानक स्वप्न। सोते में चलना-फिरना।

घटना-बढ़ना—**घटना** : मानसिक शारीरिक काम में लगे रहने से।

मात्रा—मूल लवण से ३ विचूर्ण तक। इस लवण की अस्थायी विशेषता याद रखिए। नमक छोड़ देने से इनका प्रभाव बढ़ता है, ऐसा लोग कहते हैं।

कैलि कार्बोनिकम (Kali Carbonicum)

(कार्बोनेट ऑफ पोटास)

सभी पोटैशियम लवणों में कमजोरी के जो लक्षण हैं वे खासतौर से इस लवण में देखे जाते हैं। कोमल नाड़ी, ठण्डापन, उदासी और एक विशेष तरह की चिलकन, जो शरीर के किसी भी भाग में हो सकती है या किसी भी बीमारी के सम्बन्ध में। कैलि के सभी दर्द तेज और कटन वाले होते हैं और प्रायः सभी हरकत से कम होते हैं। ज्वर की अवस्था में कभी पोटाश के लवणों का व्यवहार न कीजिए (टी० ई० एलेन)। प्रत्येक जलवायु परिवर्तन असह्य; ठण्डा मौसम असह्य। प्रसव के बाद की अति उत्तम दवाओं में से एक है। गर्भपात, उसके बाद की कमजोरी के लिए प्रातःकाल रोग का बढ़ना इसकी विशेषता है। मोटे, वृद्ध लोग जिनमें आंशिक लकवा या शोथ की प्रवृत्ति हो। पसीना पीठ दर्द, कमजोरी। टपकन दर्द। शोथ आने की सम्भावना। क्षय रोग की खराबियाँ। दर्द, भीतर से बाहर की तरफ, डंक मारने की तरह। "जान जा रही है" ऐसी संवेदना। चर्बी आना। पेशियों और आन्तरिक यन्त्रों में डंक लगने जैसा दर्द। पेशियों का फड़कना। बायीं तरफ एक छोटी-सी जगह में दर्द। चुल्लिका ग्रन्थि पर विषाक्रमण। उरु सन्धि प्रदाह।

मन—निराश; बारी-बारी विरुद्ध भाव। बहुत चिड़चिड़ापन, भय और कल्पनायुक्त। पेट में चिन्ता मालूम दे। संवेदना मानो खाट नीचे को धँस रही है। कभी

अकेले न रहना चाहे। कभी शान्त या सन्तुष्ट न रहे। हठी दर्द। शोरगुल, स्पर्श असह्य।

सिर—घुमाने पर चक्कर आए। ठंडी हवा में सवारी करने से सिर को दर्द हो। जम्हाई लेने से सिर दर्द हो। कनपटियों में चिलकन, सिर की जड़ में टीस, एक तरफ की मिचली के साथ गाड़ी में सवारी करते समय। सिर में ढीलापन। दाँतों में बहुत सूखापन, केश झड़ें (फ्लोरि० एसिड)।

आँखें—आँखों में चिलकन। आँखों के सामने धब्बे, जाली या काले बिन्दु दिखाई देना। सुबह को पलक चिपकें ऊपरी पलकों पर छोटी थैलियों की तरह सूजन। भवों के बीच की छोटी जगह में सूजन। दुर्बलता या कष्टदायक दृष्टि। अधिक मैथुन के कारण आई आँखों की कमजोरी। आँखें बन्द करने पर मस्तिष्क में प्रकाश घुसने का दर्द वाला संवेदन।

कान—कानों में चिलकन। खुजली, पटपटाहट, टनटनाहट और गरजन।

नाक—गरम कमरे में नाक बन्द हो जाये। गाढ़ा बहने वाला, पीला स्राव (स्पाजेलि०) दर्दीले खुरण्डदार नथुने, खूनी श्लेष्मा नाक से निकले। नथुनों के मुँह पर पपड़ी। सुबह मुँह धोने पर नकसीर आए। नथुनों में घाव।

मुँह—मसूढ़े दाँतों से अलग हों, मवाद रसाये। पायरिया। चपटे घाव। जबान सफेद। बराबर मुँह लार से भरा रहे। खराब चिकना स्वाद।

गला—सूखा, पपड़ीदार, खुरखुरा। गड़न दर्द, मछली की हड्डी गड़ने की तरह। निगलना कठिन, खाना गले में धीरे-धीरे नीचे उतरे। सुबह को श्लेष्मा भरा रहे।

आमाशय—अफरा। मिठाई की इच्छा। आमाशय के निचले भाग में ढोंका जैसा जान पड़े। दम घोंटने वाली डकार। वृद्ध लोगों का अनपच रोग, जलन, तेज सूजन, अफरा। बरफ का पानी पीने से आमाशयिक विकार हों। खट्टी डकार। मिचली, लेटने से कम। बराबर ऐसा जान पड़े कि पेट में पानी भरा है। खट्टी कै, पेट में थरथराहट और कटन। खाने से घृणा। पेट में चिन्ता मालूम हो। कौड़ी प्रदेश बाहर से कोमल। खाते समस आसानी से गला घुटे। कौड़ी से पीठ तक दर्द।

उदर—जिगर प्रदेश में चिलक। जीर्ण जिगर रोग, दर्द के साथ। कामला रोग और जलोदर। उदर का तनाव और ठण्डापन। बायें आमाशयिक क्षेत्र से उदर के आरपार दर्द उठने के पहले दाहिनी तरफ फिरना आवश्यक।

मलांत्र—मल बड़ा, कठिन मल एक घण्टे पहले चिलकन दर्द के साथ। बवासीर, बढ़ी, सूजी, दर्दीली। गुदा के चारों तरफ खुजली वाले घाव। गन्दे दाने। प्राकृतिक मल के साथ अधिक खून जाना। खाँसने में बवासीर दर्द करे। मलांत्र और गुदा में जलन। सरलता से बाहर निकल आये। (ग्रैफा०, पोडो०) : खुजली। (इग्नेसि०)।

मूत्र—रात में कई बार पेशाब करने उठना पड़े। पेशाब लगने से बहुत पहले से मूत्राशय में दाब, खाँसने, छींकने इत्यादि से पेशाब निकल पड़ना।

पुरुष—अधिक मैथुन से आई खराबियाँ। मैथुन इच्छा की कमी। अधिक वीर्य-पात, बाद में कमजोरी।

स्त्री—मासिक-धर्म समय से पहले, अधिक (कैल्के० कार्ब), या बहुत देर करके पीला, थोड़ा जननेन्द्रिय के आस-पास दर्द के साथ, दर्द पीठ से नितम्ब पेशियों के आरपार, उदर में कटने के साथ। बायें योनि ओष्ठ से होकर दर्द उदर में फैल कर सीने तक जाये। युवतियों को मासिक-धर्म देर में हो, सीने के रोग या जलोदर के साथ। पहला मासिक-धर्म कष्टदायक। प्रसव के बाद रोग। गर्भाशयिक रक्तस्राव, अधिक स्राव के बाद बराबर पसीजते रहना, तीव्र पीठ दर्द के साथ जो बैठने या दबाने से कम हो।

साँस-यन्त्र—सीने में कटन के साथ दर्द, जो बायीं करवट लेटने से बढ़े। आवाज भारी और लोप होना। सूखी कड़ी खाँसी, करीब तीन बजे भोर में, गलकोष में चिलकन दर्द और सूखापन के साथ। ब्रांकाइटिस। सारा सीना बहुत कोमल लगे। बलगम थोड़ा और चिमड़ा, लेकिन सुबह को और खाना खाने के बाद बढ़े, दाहिने, निचले सीने में और कष्टवाले पहलू लेटने से बढ़े। हाइड्रोथोरैक्स। आगे झुकने से सीने के रोग-लक्षण कम हों, बलगम निकालना पड़े। पनीर ऐसा स्वाद, मात्रा में अधिक गाढ़ा। सीने का ठंडापन साँय-साँय की आवाज। काग के ढीलापन के साथ खाँसी। क्षय रोग की प्रवृत्ति, बराबर जुकाम होना। गर्म मौसम में ठीक रहें।

दिल—ऐसा लगे जैसे दिल लटक रहा हो। दिल प्रदेश में धड़कन और जलन, नाड़ी कमजोर और तेज रुक-रुक कर चले, पाचन विकार से। हृदय गति रुकने का भय।

पीठ—बहुत थकावट। गुर्दों और दाहिनी स्कंधास्थि में चिलकन। त्रिकभाग कमजोर मालूम पड़े। पीठ में कड़ापन और लकवा जैसी संवेदना। रीढ़ में जलन (गुवेको) गर्भावस्था में और गर्भपात के बाद तीव्र पीठ दर्द। कटि रोग। नितम्ब, जाँघों और कटि-संधि में दर्द। एकाएक पीठ के ऊपर से नीचे तक और जाँघों तक बढ़ने वाले तेज दर्द के साथ कटिवात।

अंग—पीठ और टाँगें काम न दें। अंगों में शान्ति, भारीपन, फटन और झटका आए। अङ्गों में फटन दर्द, सूजन के साथ। अङ्ग दाब सहन न करें। घुटने की सफेद सूजन कन्धों से कलाई तक चीरने-फाड़ने जैसा दर्द। कलाई के जोड़ में कुचले जाने जैसा दर्द। वृद्ध लोगों का पक्षाघात और शोथ रोग। अङ्ग सरलता से सो जायें। हाथ और पैर की अँगुलियों के सिरे में दर्द। तलवे अति कोमल। पैर के अँगूठों का दर्द के साथ खुलना। कटि से घुटनों तक दर्द। घुटनों में दर्द।

चर्म – सरसों की पलस्तर जैसी जलन।

नींद—खाने के बाद औंघाई। करीब दो बजे रात में जग जाये और फिर नींद न आवे।

घटना-बढ़ना —बढ़ना : मैथुन के बाद, ठण्डे मौसम में सूप और कॉफी से, सुबह को करीब ३ बजे, बायीं ओर दर्द वाली करवट लेटने से। घटना : गरम मौसम में, चाहे नम हो; दिन के समय, चलने-फिरने के समय में।

सम्बन्ध—पूरक : कार्बोवेजिटे०, (जीवन ताप की कमी यह सांकेतिक कर सकती है कि आरम्भ में कार्बो सेवन कराना आवश्यक है ताकि शारीरिक अवस्था उस स्तर तक सुधर जाये, जबकि कैली कार्ब लाभदायक सिद्ध हो)। अक्सर पेट और मूत्राशय रोग में नक्स के बाद लाभदायक होता है।

तुलना कीजिए : कैलि सैलिसिलिकम (कै खासकर गर्भावस्था का, धमनी प्राचीर का कड़ा पड़ना जीर्ण वातरोग के साथ), कैलि सिलिकम (गठिया के अस्थि गुल्म); कैलि एसिटिकम मधुमेह, दस्त, जलोदर, क्षारीय मूत्र, अधिक मात्रा में) कैलि सिट्रिकम (ब्राइट द्वारा वर्णित वृक्क रोग (ओजोमेह—१ छोटे ग्लास पानी में १ ग्रेन); कैली फेरोसायोनेटम—प्रुशियन ब्लू—(संक्रमण के बाद शारीरिक और मानसिक शिथिलता। रोज का साधारण काम-काज लगातार न कर सके। स्नायु विकार के दोष जो रक्त की दुर्बलता और स्नायु मण्डल की शिथिलता पर आधारित हो खासकर रीढ़ के। हृदय रोग जिनका सम्बन्ध हृदय के अपकर्ष या स्वाभाविक कार्य से सम्बन्धित हो। नाड़ी कमजोर, छोटी, क्रमभ्रष्ट। गर्भाशय लक्षण सीपिया की तरह, धँसन, संवेदन और आमाशय में दुर्बलता। प्रदर जिसमें स्राव अधिक और पीब जैसा हो, शिराओं की शिथिलतावश रक्तस्राव। (६x का व्यवहार करें); कैलि ऑक्जैलिकम (कटिवात, आक्षेप)। कैलि पिक्रो-नाइट्रिकम और कैलि पिक्रिकम (कामला रोग, घोर डकारें), कैलि टारटैरिकम (निचले अंगों का लकवा), कैलि टेल्युरिकम (साँस की गन्ध लहसुन जैसी, लार बहना, सूजी जबान)। इसके अतिरिक्त कैल्के०; एमोनि० फॉस; फॉसफो०; लाइको; ब्रायो०; नैट्रम०; स्टैनम०; सीपिया।

क्रियानाशक—कैम्फोरा, कॉफिया।

मात्रा—३० और ऊँची शक्तियाँ। ६ विचूर्ण। अधिक दोहराना नहीं चाहिए। जीर्ण गठिया के रोगों में, गुर्दों की जीर्ण बीमारी में और क्षय रोग में सावधानी से प्रयोग करें।

कैलि क्लोरिकम (Kali Chloricum)

(क्लोरेट ऑफ पोटैशियम—के० क्लो० ३)

गुर्दों पर अति लाभकारी प्रभाव डालती है जिससे काली खाँसी, वृक्कप्रदाह, रक्तरंजक पित्त मिश्रित मूत्र इत्यादि रोग उत्पन्न हो जाते हैं। अति तीव्र घावयुक्त क्षुद्र गह्वरीय मुख प्रदाह उत्पन्न हो जाता है। विगलित क्षत रोग। गर्भावस्था में दूषित विषैली अवस्थायें (मूत्र बाधायें), जीर्ण वृक्कप्रदाह; जिगर प्रदाह। सर्वाङ्ग विषाक्रमण। रक्त दोष। रक्तहीनता।

मुँह—अधिक तेजाबी लार बहना। पूरी श्लैष्मिक सतह लाल, फूली, शोथग्रस्त, भूरे तले के घाव। जबान सूजी हुई। मुख द्वारा चकत्तेदार और सड़न वाला। दुर्गन्ध। पारा सम्बन्धी मुख प्रदाह (कुल्ली कराने के लिए)।

पेट—कौड़ी और नाभी क्षेत्र में बोझ जैसा लगे। वादी भरना। हरियाली लिये काली चीजें कै होना।

मल—दस्त अधिक, हरियाली लिये, श्लेष्मायुक्त।

मूत्र—अलब्युमिन वाला, मात्रा में थोड़ा, दबा हुआ। खूनी पेशाब, दिन में अनेक बार। अणुमेंगी—अंडलाल और पित्त वाला, अधिक फॉस्फोरस जाये। तेजाबी, घन पदार्थों की मात्रा कम।

चर्म—कामला रोग। खुजली, चकत्तेदार या दाने वाली। बदरंग, कत्थई रंग।

मात्रा—२ से ६ शक्ति। बाहरी प्रयोग सावधानी से, क्योंकि यह विष है।

कैलि सियानेटम (Kali Cyanatum)

(पोटैशियम सायनाइड)

एकाएक असाधारण दुर्बलता आना। जबान का कर्कट रोग और घोर पीड़ाजनक स्नायुशूल इस औषधि से अच्छे होते हैं। पुराना सिर दर्द। गृध्रसी। मिरगी रोग।

जबान—कड़े किनारे वाले घाव। बोलना कठिन। बोलने की शक्ति का लोप होना, मगर बुद्धि ठीक रहे।

चेहरा—कनपटी प्रदेश में तीव्र स्नायुशूल, रोज एक ही समय आक्रमण हो। आँखों के घेरे और जबड़े के ऊपरी भाग में दर्द, चीख मारे और अचेत हो जाए।

साँस-यन्त्र—खाँसी, नींद न आना, साँस दुर्बल, गहरी साँस न ले सके।

घटना-बढ़ना—बढ़ना ः ४ बजे सुबह से ४ बजे शाम तक।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : प्लैटिना०; स्टैनम०; सीड्रन, मेजेरि०; म्यूर० एसिड।

मात्रा—६ शक्ति और २००।

कैलि हाइड्रियोडिकम (Kali Hydriodicum)

(आयोडायड ऑफ पोटैसियम)

अधिक मात्रा में, पानी-सा तेजाबी जुकामी स्राव जो इस पदार्थ से उत्पन्न हो जाता है, इसका निश्चित रूप से सांकेतिक चिह्न है, खासकर जब कि ये लक्षण कपालास्थि के वायुपूर्ण गह्वरों की पीड़ा के साथ हों। यह विशेष प्रकार से रेशेदार और सन्धिकारक तन्तु को प्रभावित करती है और उनमें पानी लाती है। ग्रंथि सूजन। प्रसव और रक्तस्राव की प्रवणता। उपदंश रोग के सभी चरण सांकेहिक होते हैं। १—तीव्र अवस्था में जब शाम को स्वल्प विराम ज्वर और रात में पसीना होने के बाद उतर आये। २—दूसरा चरण, श्लैष्मिक झिल्लियाँ और चर्म पर घाव। ३–तीसरा चरण, गाँठें बनना। स्थूल मात्रा में दीजिए। फैलनेवाली कोमलता। ग्रंथियाँ, सिर की खाल इत्यादि स्पर्श सहन नहीं करतीं। गरदन, पीठ, पैर खासकर एड़ी और तलवों में वात दर्द, जो ठंडक और भींगने से बढ़े। स्थूल मात्रा में आयो-डाइड ऑफ पोटाश उपदंश के उपद्रवों में लाभदायक होती है। (उपदंशजनित मुँह के सफेद, छोटे घाव, दाद इत्यादि), अन्य उपदंश सदृश रोगों और कीटाणु-जनित रोग जैसे क्षय रोग में हितकर है। शारीरिक वजन में कमी होना और खून थूकना इत्यादि। चाय की चुस्की भरनेवालों की खाँसी। इसके अतिरिक्त अनेक जीर्ण रोगों में अच्छी अवस्था उत्पन्न करती है; चाहे इस औषधि के लक्षण न भी उप-स्थित हों।

मन—शोकग्रस्त, उत्सुक, कठोर मिजाज। चिड़चिड़ा, सिर में रक्ताधिक्य, गरमी, टपक।

सिर—सिर के बगल में आरपार दर्द। घोर सिर पीड़ा। खोपड़ी में कड़े गुल्म फल जायें। आँखों के ऊपर और नाक की जड़ में बहुत तेज दर्द। मस्तिष्क बढ़ा हुआ जान पड़े। कड़ी गुठलियाँ, तेज दर्द के साथ। चेहरे का स्नायुशूल। ऊपरी जबड़े में गड़न के साथ दर्द।

नाक—लाल, सूजी हुई। नाक का सिरा लाल; अधिक तेजाबी गरम, पानी-सा पतला स्राव। पीनस रोग, नथनों के बीच वाली पतली हड्डी में छेद हो जावे। छींकें आना। नजला, सिर के अगले भाग के छिद्रों में भी कष्ट आये। नाक का भारी-पन और सूखापन, बिना स्राव के। अधिक ठंड, हरियाली, सरल स्राव।

आँखें—पुतली लाल, उभरी हुई; अधिक आँसू। **उपदंशीय नेत्र प्रदाह**। दानेदार नेत्र प्रदाह और अर्जुन रोग। घेरों पर अस्थि गुल्म निकलना।

कान—आवाजें आएँ। कानों में दर्द छेद हो रहा है।

आमाशय—लार अधिक। कौड़ी में गशी की संवेदना। ठंडा खाना और पीना, खासकर दूध से रोग बढ़े। अधिक प्यास। थरथराहट, दर्द के साथ जलन। बादी भरना।

स्त्री—मासिधर्म देर से, मात्रा में अधिक। मासिक काल में गर्भाशय दबोचा हुआ जान पड़े। उपाड़ लाने वाला, काटने वाला प्रदर, युवा विवाहिताओं में गर्भाशय की मन्द सूजन के साथ। रेशेदार अर्बुद, जरायु प्रदाह, जरायु का अधिक बढ़ कर ढीला पड़ जाना, १x या १ ग्रेन स्थूल मात्रा, दिन में तीन बार।

साँस-यन्त्र—घोर खाँसी, सुबह को अधिक। फुफ्फुस शोथ। **स्वर-यन्त्र में कच्चापन मालूम दे**। स्वर-यन्त्र में शोथ। दम घुटने से जागना। **बलगम साबुन की झाग की तरह; हरियालीदार**। फुफ्फुस प्रदाह, जब बलगम सख्त हो चला हो। **निमोनिया के कीटाणु से आया मस्तिष्क प्रदाह**। फुफ्फुस से पीठ तक चिलकन दर्द। दमा रोग। ऊपर चढ़ते समय साँस कष्ट, दिल में दर्द के साथ वक्षोदक रोग **(मर्कुरियस सल्फुरिकम) फुफ्फुसावरक झिल्ली प्रदाह**। प्लूरिसी साथ में जब पानी आया हो। **ठण्डक नीचे की तरफ सीने में उतरे**।

अग—तीव्र अस्थि पीड़ा। अस्थि परिवेष्ठ का मोटा हो जाना, खासकर जंघास्थि का छूना असह्य **(कैली बाइक्रो०, एसाफिटि०)**। वात पीड़ा, दर्द रात में और नम मौसम में बढ़े। जोड़ों का सिकुड़ना। **घुटनों का वातरोग स्राव के साथ**। पिठासे और रीढ़ की अन्तिम अस्थि में दर्द। कटि पीड़ा, लँगड़ाकर चलने को बाध्य। गृध्रसी, पीड़ा सह न सके, रात में और पीड़ित करवट लेटने से पीड़ा अधिक हो। निचले अंगों में बैठने पर सुरसुरी; लेटने पर आराम।

चर्म—बैंगनी चकत्ते टाँगों पर अधिक। मुहाँसे; जल भरे उद्भेद। छोटी फुन्सियाँ। ग्रन्थियाँ बढ़ी हुईं और कड़ी। शीतपित्त। शरीर भर खुरदरी गाँठें, कपड़ा ओढ़ने से कष्ट दें, शरीर बहुत गरम। बच्चों की गुदा में, पलक, मुँह और काग इत्यादि पर दरारें। शोथमयी सूजन की प्रवृत्ति, लाल मुँहासे।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : गरम कपड़ा; गरम कमरा, रात में, नम मौसम। **घटना** : हरकत, खुली हवा से।

सम्बन्ध—**क्रियानाशक** : हीपर।

तुलना कीजिए : **आयोडियम, मरकरी, सल्फर, मेजेरियम, चोफीनी,** (उपदंश के विस्फोट घाव की और अस्थि पीड़ा की हिन्दू औषधि) अरिष्ट में व्यवहार होती है।

मात्रा—डॉ० मेहोफर का कथन, उनके क्रॉनिक डिसीजेज ऑफ ऑरगेन में—श्वास सम्बन्धी रोगों के विषय में हम नियमानुसार प्रथम शक्ति की ६ से ३० बूँद की मात्रा एक दिन में प्रयोग करते हैं। नये रोगों में ३ शक्ति।

कैलि म्यूरियेटिकम (Kali Muriaticum)

(क्लोराइड ऑफ पोटास के० सी० एल०)

यद्यपि इसके परीक्षण नहीं हुए हैं, पर यह औषधि विस्तृत रूप से चिकित्सा में व्यवहृत है। इसका आविष्कार शुसलर साहब ने किया था। वास्तव में नजले की अवस्था में यह अति लाभदायक है। थोड़े दिन की सूजन में, रेशेदार स्राव में और ग्रन्थि सूजन में भी हितकर है। जबान की जड़ के पास सफेद या भूरी मैल और गाढ़ा सफेद बलगम इस औषधि के मुख्य सांकेतिक चिह्न मालूम होते हैं। घुटने की चोटी हड्डी पर कौषिक अर्बुद।

सिर—कल्पना करे कि वह भूखों पर मर जायेगा। सिर दर्द, कै के साथ। खुरण्डदार दाद। रूसी झड़ना।

आँखें—सफेद कीचड़ आए, मवादी चकत्ते। सतह के घाव। रोहे। कॉर्निया पर्दे का धुँधलापन।

कान—मध्य कान का पुराना नजला। कानों के पास की ग्रन्थियाँ सूजी हों। कानों से फटफटाहट हो और आवाजें आएँ। चुचुकाकार के रोगी होने की सम्भावना। बाहरी कान से अधिक स्राव।

नाक—नजला, सफेद गाढ़ा स्राव। गलकोष की मेहराबदार छत पपड़ीदार खुरण्ड से ढँकी हो। सूखा जुकाम। नकसीर। (आर्नि०; ब्रायो०)।

चेहरा—गाल सूजे हुए और वेदनापूर्ण।

मुँह—मुँह आना; मुँह में सफेद घाव। जबड़ों और गरदन की ग्रन्थियाँ सूजी हों। जबान पर भूरा सफेद मैल, सूखा-सा या चिकना।

गला—कौशिक तालुमूल प्रदाह। तालुमूल बढ़े हुए, इतने बढ़ गये हों कि साँस लेना कठिन हो। गले और तालुमूल पर भूरे चकत्ते। गलकोष की छतपर जकड़ी हुई पपड़ी। अस्पताली गल प्रदाह। गल-कर्ण-नली का नजला।

आमाशय—पकवान या गरिष्ट भोजन अनपच पैदा करे। सफेद, पारदर्शी श्लेष्मा कै हो, मुँह में पानी जमा हो। कब्ज के साथ पेट में दर्द। अधिक भूख लगना, पानी पीने से भूख गायब हो जाये।

उदर—सूजन, कोमलपन। बादी; अफरा। केंचुआ, गुदा में खाज पैदा करे।

मल—कब्ज, हल्के रंग का मल। दस्त, चर्बीला भोजन खाने के बाद, मटियाला या सफेद चिकना मल। पेचिश, पड़पड़ की आवाज के साथ चिकना मल निकले। खून बवासीर; गाढ़ा, काला खून; रेशेदार; थक्केदार।

स्त्री—मासिक धर्म बहुत देर से, या न हो, रुका या बहुत जल्द हो, अधिक मात्रा में, गहरा थक्कादार या चिमड़ा; तारकोल की तरह काला खून (**प्लैटिना**)। प्रदर, दूध-सा सफेद श्लेष्मा, बिना खाजवाला, सरल गर्भावस्था की मिचली, सफेद श्लेष्मा की कै साथ। स्तन मुलायम और कोमल।

श्वास-यन्त्र—स्वलोप, आवाज फटी हुई। दमा रोग आमाशयिक विकार के साथ; श्लेष्मा सफेद, खाँसकर बाहर निकालना कठिन। तेज आवाज वाली पेट से उठने वाली खाँसी, छोटी खाँसी, तीव्र और आक्षेपिक कुकुर खाँसी की तरह; बलगम गाढ़ा और सफेद। वायुमार्ग में खड़खड़ाहट जो गाढ़े, चिमड़े श्लेष्मा के वायु नलिकाओं में से गुजरने से पैदा हो; खाँसकर थूकना कठिन।

पीठ और अंग—वात ज्वर, जोड़ों के चारों तरफ स्राव संचयता और सूजन। वात दर्द केवल हरकत पर मालूम पड़े या अधिक हो। प्रति रात को वात दर्द, बिस्तर की गर्मी से अधिक हो, बिजली की तरह पिठासे से पैर तक लपके, बिस्तर पर से उठने और बैठ जाने को बाध्य करे। लिखते समय हाथ अकड़ जाये।

चर्म—मुँहासे, अयनिका और अकौता। दानों के साथ जिनमें गाढ़ा सफेद रस हो। सूखा, भूसी की तरह रूसी छूटे (**आर्सेनिक**) गाँठ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : गरिष्ठ भोजन की, घी, मक्खन आदि स्नेह, हरकत।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : बेलाडोना, जिसके बाद नजले और ढीलापन की अवस्था में कैलीम्यूर अच्छा काम करती है। काइबो (कर्णस्राव, दाहिने कान में चिलकन के साथ)—ब्रायो०, मर्क्युरियस, पल्से०, सल्फर।

मात्रा—३ से १२ शक्ति।

बाहरी प्रयोग चर्म रोग में, जब जलन हो।

कैलि नाइट्रिकम-नाइट्रम (Kali Nitricum—Nitrum)

(नाइट्रेट ऑफ पोटेशियम साल्टपीटर)

अकसर दमा रोग में व्यवहार होती है। इसके अतिरिक्त हृदय सम्बन्धी दमा में भी मूल्यवान है। सारे शरीर में एकाएक शोथ के लिये बहुमूल्य है। आमाशयिक-आंत्रिक प्रदाह, अधिक दुर्बलता के साथ और क्षय रोग के पुनराक्रमण में इस औषधि का इस्तेमाल होता है। मवादी गुर्दा प्रदाह।

सिर—खोपड़ी की खाल अति उत्तेजनीय। चक्कर के साथ सिर दर्द मानो दाहिनी तरफ और पीछे को गिर रहा हो, झुकने पर अधिक हो। बेकारी के कारण मानसिक थकावट।

आँखें—आँखों के सामने बादल छा जाये। काँच का धुँधलापन (आर्नि०; हैमामे०, सोलेनम नाइग्रम, फॉस०)। आँखों से रंग चक्र दिखाई देना। जलन और आँसू।

नाक—छींकना, सूजी मालूम दे, दाहिने नथुने में अधिक। सिरा लाल, खुजलाये, अर्बुद (सैंग्विनेरिया, नाइट्रिका)।

मुँह—जबान लाल, जलन के साथ दाने, सिरा जले। गला सिकुड़ा हुआ और दर्द करे।

मल—पतला, खूनी, ऐंठन के साथ, झिल्लीदार सुतड़े। बछड़े का मांस खाने से दस्त होना।

स्त्री—मासिक-धर्म समय से बहुत पहले, मात्रा में अधिक, काला, मासिक से पहले और साथ में तीव्र सिर पीड़ा। प्रदर रोग। डिम्ब प्रदेश में जलन, दर्द, केवल मासिक काल में (जिंक० यदि बाद में हो)।

श्वास-यन्त्र—भारी आवाज, इसके साथ सीने में दर्द और खूनी बलगम। सुबह की सूखी खाँसी इसके साथ तेज, छोटी, सूखी, पीड़ाजनक खाँसी। दमा, अधिक दमकशी, मिचली, मन्द मिचलन और सीने में गड़न के साथ। श्वासकष्ट इतना तीव्र कि प्यास होने पर पानी पीने के लिए भी साँस न रुक सके। सीने में घुटन जान पड़े। सुबह से दाब अधिक। खट्टी गन्ध का बलगम। श्लेष्मा खखारने पर थक्केदार खून निकलना। क्षय रोग में तीव्र वृद्धि। फुफ्फुस में रक्ताधिक्य। काली खाँसी, दौरे के साथ स्वर यन्त्र में सुरसुराहट। रोहिणी रोग।

दिल—नाड़ी दुर्बल, छोटी, सूत जैसी महीन। वक्ष प्रदेश में तेज चिलकन और धड़कन।

अंग—कंधों के डैनों के बीच में चिलकन। कंधों और घुटनों में फटन और गड़न। हाथ और अँगुलियाँ सूजी मालूम दें।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** बछड़े का मांस खाने से, शाम के लगभग, तीसरे पहर। **घटना :** जरा-जरा पानी पीने से।

सम्बन्ध—**क्रियानाशक : ओपियम; नाइट्रि स्पिरिटस-डल्सिस।**

ओपियम और मॉर्फीन विष को मारती है। एक गिलास पानी में ८–१० ग्रेन।

तुलना कीजिए : गन पाउडर (शोरा, गन्धक और लकड़ी का कोयला)—२x विचूर्ण। "रक्त विष दोष"। विषैला मवाद बहना। घाव को छूत से बचाती है।

आइवी और प्रिमुला की खुजली को मारती है (क्लार्क)। चेहरे पर दाद, झुण्ड की झुण्ड फुन्सियाँ (कारबंकल)। अस्थि मज्जा प्रदाह। कैनाबिस सैटाइवा (जिसमें कैलि नाइट्रिकम अधिक मात्रा में होता है)। लाइको०; सैंग्विने०, एलियम सैटाइवा; एण्टिमोनियम आयोडेटम।

मात्रा—१ से ३० शक्ति।

कैलि परमैंगेनिकम (Kali Permanganicum)

(परमैंगनेट ऑफ पोटैसियम)

नाक, गला और स्वरयन्त्र में भारी क्षोभ लाती है। रोहिणी। कष्ट-रजः। साँप काटना और दूसरे कीड़ों की डंसन। विषैली अवस्था, तन्तु में रस संचयता और सड़ाव आने की सम्भावना।

साँस-यन्त्र—नाक से खून बहना। नाक से स्राव। क्षोभ लाती है। गले में संकुचन और कड़ापन संवेदना। स्वर-यन्त्र कच्चा जान पड़े। छोटी, कष्टकर खाँसी।

गला—सूजा हुआ और दर्द करे। खखारी हुई सभी चीजों में खून की लकीरें। पिछला भाग दर्द करे। गरदन की पेशियाँ दर्द करें। काग सूजा हुआ दुर्गन्धित साँस।

मात्रा—२x पानी में।

कैलि फासफोरिकम (Kali Phosphoricum)

(फास्फेट ऑफ पोटैसियम)

स्नायु-विकार की महान औषधियों में से एक है। पतनावस्था। दुर्बल और थका हुआ। युवा अवस्था के लिए विशेष उपयोगी। पिंगला नाड़ी मण्डल में विचारणीय बाधायें। वे अवस्थायें जो स्नायु-जाल की कमजोरी में उत्पन्न होती हैं; स्नायविक दुर्बलता, मानसिक शारीरिक क्षीणता; सभी इस औषधि से दूर होती हैं। क्षोभ, उत्तेजना, अधिक परिश्रम और चिंता के दुष्परिणाम। इसके अतिरिक्त यह औषधि जीवन-शक्ति दौर्बल्य और क्षति, सड़न अवस्थाओं से भी सम्बन्धित है। इन दो अवस्थाओं में इस औषधि ने अधिक ख्याति पायी है। जहाँ सांघातिक अर्बुद का संदेह हो वहाँ इस औषधि को याद रखिये। कर्कट निकलवाने के बाद जब घाव भरने के समय उस पर चर्म तना हुआ मालूम दे। विलम्बित प्रसव।

मन—आकुलता, स्नायविक भय, सुस्ती। लोगों से मिलने की इच्छा न हो, अति थकावट और शिथिलता। अति स्नायविक, सरलता से चिहुँक जाये। चिड़चिड़ा।

कमजोर दिमाग, गुल्म वायु; भयानक स्वप्न देखना। सोते में उठकर चल देना। स्मरण शक्तिहीनता। जरा-सा परिश्रम भी अधिक मालूम हो। रोजगार के सम्बन्ध में बहुत उदासी, लज्जालु। निराश, बात करने की इच्छा न हो।

सिर—पिछले भाग का सिर दर्द, उठ जाने से कम। चक्कर लेटने से, खड़े होने पर, बैठने में और ऊपर देखने से बढ़े (ग्रैनेटम)। मस्तिष्क की रक्तहीनता। विद्यार्थी का सिर दर्द और उन लोगों का जो थक के चूर हो गए हैं। धीमी हरकत से सिर दर्द कम हो। जिस सिर दर्द के साथ थकान और आमाशय में भारी कमजोरी हो (इग्नै, सीपिया)।

आँखें—निगाह की कमजोरी, प्रतिक्षण शक्तिहीनता, रोहिणी रोग के बाद; शिथिलता से। पलकों का नीचे गिरना (कॉस्टि०)।

कान—कानों में गुनगुनाहट और भिनभिनाहट।

नाक—नाक का ऐसा रोग जिसके साथ दुर्गन्ध हो और दुर्गन्धित मवाद आए।

चेहरा—सुर्ख और मुरझाया हुआ, आँखें निस्तेज। दाहिनी तरफ का स्नायुशूल, जो ठण्डे प्रयोग से कम हो।

मुँह—साँस बदबूदार सड़ाँध। जबान पर कत्थई, सरसों जैसा मैल। सुबह को बहुत सूखा। दाँत दर्द, मसूढ़ों से जल्द खून बहे, उन पर चमकदार लाल धारियाँ हों। मसूढ़े मुलायम और पीछे हटे हों (कैप्सिकम०, हैमामे०, लैके०)।

गला—सड़न वाला गल प्रदाह; स्वरयन्त्र का लकवा।

आमाशय—स्नायविक दुर्बलता की अनुभूति (इग्नै०, सीपिआ, सल्फ०)। बिना मिचली के ओकाई जैसा मालूम हो।

उदर—अतिसार; सड़ी दुर्गन्ध, भय के कारण, उदासी और शिथिलता के साथ। खाते समय दस्त लगना। पेचिश, स्वच्छ खून का मल, रोगी प्रलाप करे; उदर फूल जाये। हैजा, चावल के पानी जैसा दस्त (वेरेट्रम एल्बम, आर्से०, जैट्रोफा) काँच निकलना। (इग्नै०, पोडो०)।

स्त्री—पीली, चिड़चिड़े स्वाभाव वाली, नाजुक मिजाज और जरा-सी बात पर रो देने वाली स्त्रियाँ। मासिक-धर्म समय से बहुत पीछे या बहुत थोड़ा। अत्यधिक स्राव, गहरा लाल, या कालेपन के साथ लाल, पतला, न जमने वाला, कभी-कभी दुर्गन्ध के साथ। दुर्बल और असफल प्रसव वेदना।

पुरुष—स्वप्नदोष, मैथुन शक्ति की कमी, मैथुन के बाद घोर शिथिलता। कैलि कार्बोनिकम।

मूत्र सम्बन्धी-यन्त्र—अनैच्छिक मूत्रस्राव। मूत्रमार्ग से रक्तस्राव। अधिक पीला मूत्र।

श्वास-यन्त्र—दमा, जरा-सा भोजन खा लेने से बढ़ जाये। ऊपर चढ़ते समय दम फूले। खाँसी, पीला बलगम।

अंग—पीठ और अंगों में लकवे जैसा लँगड़ापन। परिश्रम से अधिक हो। उदासी और परिणामस्वरूप शिथिलता के साथ दर्द।

ज्वर—शारीरिक ताप साधारण से बहुत कम।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : उत्तेजना, चिन्ता, मानसिक और शारीरिक परिश्रम, भोजन करने से ठण्डक, भोर में। घटना : सेंकना, आराम, पौष्टिक पदार्थ से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैलि हाइपोफास० (कमजोर और उसके साथ पैशिक तन्तुओं की क्षीणता। फास्फोरस। मूत्र में अंडलाल जाना, शारीरिक रक्त-हीनता या रक्त में श्वेत कणाधिक्य के साथ। अधिक चाय पीने से दुष्प्रभाव। जीर्ण ब्रांकाइटिस जहाँ बलगम गाढ़ा और बदबूदार हो, कभी-कभी थोड़ा और चिमड़ा हो। मात्रा ५ ग्रेन मूल लवण की (३x तक)। जैनिस्टा-डायर्स वीड—(इसमें स्कोपोलैमिन होता है; सिर के अगले भाग का दर्द, चक्कर, हरकत से अधिक, खुली हवा में और खाने से कम हो। सूखा गला, जब डकार के साथ जाग पड़े। केहुनी, घुटनों और टखनों पर खाज के दाने। जलोदर में मूत्र अधिक करता है)। मैक्रोजैमिया स्पिरैलिस—(कठोर रोग के बाद अति दुर्बलता, पतनावस्था। बिना किसी प्रत्यक्ष कारण से कमजोरी, दर्दहीन। चाँद पर छेद होने जैसा दर्द, और सारी रात ओकाई होती रहे, आँखें खोलना असम्भव, चक्कर और ठंडापन)। जिकम०, जेलिसमियम, सिमिसिफ्यु०, लकेसिस, म्यूरियेटिकम एसिड।

मात्रा—३ से १२ विचूर्ण। किसी-किसी रोग में उच्चतम शक्ति सांकेतिक होती है।

कैलि सिलिकेटम (Kali silicatum)

(सिलिकेट ऑफ पोटाश)

गहराई तक काम करने वाली औषधि। थकावट बहुत स्पष्ट। हर समय लेटे रहने की इच्छा।

सिर—अनमना; व्याकुल; सुस्त, लज्जालु। दुर्बल इच्छाशक्ति। सिर में रक्ताधिक्य, खून शरीर से सिर में उमड़ आवे। चक्कर, सिर ठण्डा, आलोकातंक। नाक का नजला, स्राव खूनी, घृणित, नाक सूजी, घाव वाली।

आमाशयिक—खाने के बाद आमाशय में भार, मिचली; दर्द, वादी। जिगर प्रदेश में दर्द। कब्ज। मलत्याग के समय गुदा में सिकुड़न।

अंग—शरीर और अङ्ग कड़े। अंगों पर रेंगन संवेदना। पेशियों में फड़कन। दुर्बल और थका हुआ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : खुली हवा, हवा के झोंके, ठण्डक, परिश्रम, हरकत, कपड़ा हटाना, स्नान।

मात्रा—ऊँची शक्तियाँ।

कैलि सल्फ्युरिकम (**Kali Sulphuricum**)
(पोटैशियम सल्फेट)

खाल उधड़ने के साथ आनेवाले रोग। प्रदाह के बादवाली अवस्था में उपयोगी। पीला, श्लैष्मिक, पानी-सा स्राव, मात्रा में अधिक, साँतर। जब पेशाब में आक्सेलेट आते हों तो अधिक लाभदायक सिद्ध हुई है।

सिर—गठियावात का सिर दर्द, शाम को शुरू हो। गंजा के दाग। और भूसी छूटना।

कान—गल कर्ण नली का बहरापन। पीला स्राव। (हाइड्रै०)।

नाक—जुकाम, पीले, चिकने स्राव के साथ। नाक बन्द होना। गंध लोप (नैट्र० म्यूर०)। नाक और गल कोष की झिल्लियाँ भरी हुईं। मुँह से साँस ले, खर्राटे लेना इत्यादि। जब अर्बुद निकलवाने के बाद सब लक्षण रह जायें।

चेहरा—गरम कमरे में दर्द करे। कैंसर।

आमाशय—जबान पर पीला, चिकना मैल। खराब, अप्रिय स्वाद। मसूढ़े दर्द करें। जलन, प्यास, मिचली, कै। बोझ जैसा जान पड़े। गरम चीजें पीने से भय।

उदर—शूल, उदर छूने में ठंडा लगे; फूला हुआ। पीला, चिकना दस्त। बवासीर के साथ कब्ज (सल्फर)।

पुरुष—सुजाक, पीलापन लिये हरा, चिकना स्राव। अंड प्रदाह। जीर्ण सुजाक का स्राव।

स्त्री—मासिक धर्म बहुत देर में, बहुत कम, उदर में बोझ ऐसा लगने के साथ। गर्भाशय से रक्तस्राव।

साँस-यन्त्र—घरघराहट, सीने में बलगम का घरघराना (टार्ट० एमे०)। इन्फ्लुएंजा के आक्रमण के बाद की खाँसी, खासकर बच्चों में। वायुनलिका समूह का दमा, पीले बलगम के साथ। खाँसी, शाम को या गरम जगह में अधिक हो। काली खाँसी की खरखरी (हीपर, स्पांजिया)।

अंग—गरदन की जड़ में, पीठ और अंगों में पीड़ा, गरम कमरे में अधिक हो। जगह बदलने वाला दर्द ।

ज्वर—रात में ताप अधिक होना। सविराम ज्वर, पीली, चिकनी जबान के साथ।

चर्म—अपरस (आर्सेनिक, थाइरायडिनम) अकौता, जलन, खुजली, जलदाने। मस्से। कैंसर। खोपड़ी की तर दाद। कुरी रोग। शीतपित्त। सिर की खोपड़ी या दाढ़ी की दाद, अधिक भूसी छूटने के साथ।

घटना-बढ़ना—घटना : शाम को, गरम कमरा में। बढ़ना : ठंढी खुली हवा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैलि सल्फुरिकम क्रोमिको—ऐलम ऑफ क्रोम-३x (नाक के बाँसे से बाहरी दीवार तक बहुत महीन सुतड़े उत्पन्न करती है; नाक के भीतरी भाग के रोग और इन्फ्लुएञ्जा। जीर्ण जुकाम। छींक, आँखें लाल, पानी-सा स्राव; श्लैष्मिक झिल्ली की उत्तेजना)। पल्से०, केलि बाइक्रो०, नैट्र म्यूर।

मात्रा—३ से १२ शक्ति।

कैल्मिया लैटिफोलिया (**Kalmia Latifolia**)

(माउण्टेन लॉरेल)

वात रोग की एक औषधि। दर्द तेजी से जगह बदले। अक्सर मिचली और मन्द नाड़ी का संयुक्त लक्षण इसके सभी लक्षणों में पाया जाता है। हृदय पर भी स्पष्ट प्रभाव रखती है। लघु मात्रा में हृदय-गति को उत्तेजित करती है, बड़ी मात्रा में उसको साधारण बनाती है। स्नायुशूल सुन्नता के साथ, दर्द नीचे की तरफ लपके। उरुस्तंभ में भाला लगने जैसा दर्द। दीर्घकालीन लगातार ज्वर, पेट तनाव के साथ। पक्षाघातिक संवेदन, प्रायः सभी लक्षणों के साथ अंगों में दर्द और टीस रहना। मूत्र में एल्बुमेन जाना।

सिर—चक्कर, जो झुकने से अधिक हो। मस्तिष्क में गड़बड़ी। सिर से गरदन की जड़ तक और दाँतों तक, अगल-बगल के भाग में दर्द। हृदय से विकारजनित सिर दर्द।

आँखें—कम दिखाई देना। आँखें हिलाते समय कड़ापन, खींचने का संवेदन। गठियावात सम्बन्धी नेत्र प्रदाह। श्वेत पटल प्रदाह, हिलाने से आँखों का दर्द बढ़े।

चेहरा—स्नायुशूल, दाहिनी तरफ अधिक। जबान में चिलकन। जबड़े और चेहरे की हड्डी में चिलकन और फटन।

आमाशय—कौड़ी प्रदेश में गरमी, जैसे लाल अंगारा रखा है। मिचली, कै। आमाशय में दर्द, जो आगे झुकने से अधिक हो; सीधे बैठने से कम हो। पित्ताक्रमण,

मिचली, चक्कर और सिर दर्द के साथ। कौड़ी के नीचे कोई चीज दबती जान पड़े।

मूत्र-सम्बन्धी—बार-बार हो, कटिप्रदेश में तेज दर्द के साथ। अरुण ज्वर के बाद आया गुर्दा प्रदाह।

दिल दुर्बल, मन्द नाड़ी (डिजि०; एपोसाइनम केना०) फड़फड़ाहट के साथ चिन्ता, आगे झुकने पर अधिक हो। छोटे या बड़े जोड़ों का दर्द अपनी जगह बदलकर दिल पर आ जाये। हृदय की तीव्र गति (थायरॉयडि)। तम्बाकू अधिक व्यवहार करने से आया हृदय रोग। साँस कष्ट के साथ और कौड़ी प्रदेश से हृदय की तरफ दाब। तेज दर्द जो साँस रोक दे। सीने से होकर हृदय के ऊपर से कन्धों के डैनों तक चुभन। तेज नाड़ी : हृदय की गति काँपती, तेज और संवेदनीय। हृदय के चारों तरफ घबराहट के दौरे।

स्त्री—मासिक-धर्म समय से बहुत पहले हो या दब जाए, इसके साथ-साथ अंगों, पीठ और जाँघों के भीतरी भाग में दर्द। मासिक-धर्म के बाद प्रदर रोग आरम्भ हो।

पीठ—दर्द गरदन से नीचे की तरफ बाँहों तक, पीठ के तीन मोहरे ऊपर के कन्धों के डैनों तक। पीठ में नीचे तक दर्द; मानों वह टूट जायगी, रीढ़ में एक ही जगह, कन्धों के आरपार। स्नायु-विकार सम्बन्धी कटि-पीड़ा।

अंग—अंसच्छादनी पेशी में दर्द, खासकर दाहिनी तरफ। कटि से घुटनों और पैरों तक दर्द। दर्द किसी अंग के बड़े भाग पर आक्रमण करे या कई जोड़ों पर और तेजी से गुजर जाये। अंगों में कमजोरी, ठिठुरन, गड़न, ठण्डापन। अन्तः-प्रकोष्ठास्थि नाड़ी में पीड़ा, तर्जनी तक आये। बायीं बाँह में चुनचुनाहट और सुन्न होना।

नींद—अनिद्रा, प्रातःकाल उठे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : आगे झुकना, (कैली कार्ब का उल्टा) मूलतः नीचे देखने से, हरकत, खुली हवा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैल्मिया में ऐरबुटिन जी० वी० होता है। डैरिस पिन्युटा (स्नायविक सिरदर्द में उपकारी है यदि गठियावात जनित हो)।

तुलना कीजिए : स्पाइजेलिया, पल्सेटिला।

पूरक : बेंजो० एसिड :

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति तक।

कैओलिन (Kaolin)

(बोलस एल्बा (चाइना क्ले) एलुमिना सिलिकेट)

काली खाँसी और वायुनलिका प्रदाह की औषधि।

नाक—खुजली और जलन। पीला स्राव। दर्द भरी; खुरण्डदार बन्द।

श्वास-यन्त्र—कण्ठनली के मार्ग में सीने का दर्दीलापन, दाब सहन न कर सके। भूरा बलगम। वायुनलिका समूह की पतली रक्त नलिकाओं का प्रदाह। स्वरयन्त्र में दर्द। झिल्लीदार काली खाँसी; झिल्ली कण्ठनली तक पहुँचे।

मात्रा—नीचे की शक्तियाँ।

काउसो ब्रैयेरा (Kousso-Brayera)

(हैजेनिया एबिसिनिका)

कृमिनाशक औषधि—मिचली और कै, चक्कर, हृदय क्षेत्र में चिन्ता। नाड़ी को धीमी और क्रमभ्रष्ट करे, प्रलापक सन्निपात की अवस्था और शिथिलता। तीव्र पतनावस्था। केंचुआ बाहर निकालने के लिए।

मात्रा—½ औंस कुनकुने पानी में मिलायें और १५ मिनट रख दीजिए। खूब हिलाकर पिलाइये। पहले थोड़ा नीबू का रस मिला सकते हैं (मेरेल)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : मैलोटस-कामला, केंचुआ निकालने की उत्तम औषधि, ३०—६० बूँद अरिष्ट, इलायची के अर्क में।

क्रियोजोटम (Kreosotum)

(बीचऊड क्रियोजोट)

क्रियोजोट, फिनॉल का एक मिश्रण है जो इसके अर्क खींचने से मिलता है।

सारे शरीर में टपकन और छोटे घावों से अधिक रक्तस्राव। बहुत तेज पुराने स्नायुशूल, दर्द प्रायः आराम से अधिक होता है। स्राव छीलने वाले; जलन करने वाले, दुर्गन्धित स्राव। रक्तस्राव, घाव होना, कर्कट रोग। तरल पदार्थों का और स्राव का तेजी से सड़ना और जलन के साथ दर्द। शीघ्रता से बढ़े हुए बालक जिनका विकास दूषित हो। वयःसन्धिकाल के बाद वाले रोग, फूलना, सड़ना। दाँत निकलने वाले बच्चों के रोग।

मानसिक—संगीत से रुलाई आवे और धड़कन हो। विचारशून्य, मन्दबुद्धि, भूलने वाला, चिड़चिड़ा। बच्चा सारी चीज चाहता है मगर पाने पर फेंक देता है।

सिर—मन्द दर्द, मानो कोई तख्ता माथे पर गड़ रहा है। मासिक धर्म का सिर दर्द। पिछले भाग का दर्द (जेल्से०; जिकम, पिक्रिकम)।

आँखें—नमकीन आँसू। पलक लाल और सूजे हुए।

कान—चारों तरफ दाने और भीतर फुन्सियाँ। ऊँचा सुने, भिनभिनाहट।

चेहरा—रोगग्रस्त, कष्टमयी भाव, गरम, गाल लाल।

मुँह—होंठ लाल, खून बहे। दाँत निकलने में बहुत दर्द, बच्चों को नींद न आवे। दाँतों का तेजी से सड़ना, खून बहे और स्पंज जैसे नर्म मसूढ़े, दाँत निकलें और भुरभुरे। सड़ाँध, दुर्गन्ध और कड़वा स्वाद। (स्टैफि; एटि० क्रूड)।

नाक—दुर्गन्ध आये और बहे। वृद्ध लोगों का जीर्ण नजला, तेजाबी स्राव। कच्चापन। चर्म टीबी (आर्से०)।

गला—जलन, दम घुटना या नजला। दुर्गन्ध।

आमाशय—मिचली, खाने के कई घण्टे बाद खाये हुए भोजन की कै, सुबह को मीठे पानी की कै। पेट में ठण्डापन, बरफ के पानी की तरह। सन्तापपूर्ण; खाने से कम। सन्तापपूर्ण, कड़ी जगह। खून की कै। एक घूँट पानी पीते ही कड़वा स्वाद।

उदर—तना हुआ। जलन वाली बवासीर। दस्त, बहुत बदबूदार, गहरा कत्थई रङ्ग, खूनी, सड़ा मल। बाल हैजा, जब पेट में सन्तापपूर्ण तनाव हो, हरा मल, मिचली, सूखा चर्म, शिथिलता इत्यादि।

मूत्र—बदबूदार। योनि घुण्डी और योनि की तीव्र खाज जो पेशाब करते समय अधिक हो, लेटे ही लेटे पेशाब करना, पहली नींद में पेशाब करने के लिए जल्दी न उठ सके। पेशाब करने का स्वप्न देखना। रात के पहले भाग में घड़ी-घड़ी पेशाब लगना। पेशाब लगते ही जल्दी करनी पड़े।

स्त्री—योनि घुण्डी के भीतर उपाड़ लाने वाली खाज; योनि के होठों की सूजन और जलन; योनि के होठों और जाँघों के बीच में तेज खुजली। मासिक काल में ऊँचा सुनना, भिनभिनाहट और गर्जन, बाद में दानें निकलना। बाहरी और भीतरी भागों में जलन और दर्द। प्रदर पीला, तेजाबी, हरे अनाज की गन्ध। दो मासिक-काल के बीच में प्रदर का अधिक स्राव हो। मैथुन के बाद रक्तस्राव। मासिक-धर्म, समय से बहुत पहले, देर तक जारी रहे। गर्भावस्था में कै और मुँह में पानी आना; मासिक स्राव रुक-रुक कर बहे (पल्स०), बैठने या टहलने पर रुक जाये, लेटते ही जारी हो। दर्द मासिक-धर्म के बाद अधिक हो। प्रसव स्राव दुर्गन्धित, रुक-रुक कर।

साँस-यन्त्र—स्वरभंग इसके साथ फटी हुई आवाज। स्वर यन्त्र में दर्द। खाँसी, शाम को अधिक; कै करने की चेष्टा; इसके साथ सीने में दर्द। सीना कच्चा, जलन, दर्द और दाब। इंफ्लुएंजा के बाद खाँसी (इरियोडिक्टियोन)। वृद्ध लोगों की जाड़े के दिनों की खाँसी, सीना पंजर पर भारी दाब के साथ। फुफ्फुस का सड़ना।

हर एक खाँसी के बाद पीब जैसा अधिक बलगम निकले, खून थूकना, सामयिक हमले। सीना और पंजर भीतर की तरफ दबा मालूम दे।

पीठ—पीठ में घसीटने जैसा दर्द, जो जननेन्द्रिय तक और नीचे की तरफ जाँघों तक बढ़े। बहुत कमजोरी लाए।

अंग—जोड़ों में, कटि और घुटनों में दर्द। कटि सन्धि में छेदने वाला दर्द। स्कंधास्थि में दर्द।

चर्म—खुजलाये; शाम के लगभग अधिक। तलवों में जलन। वृद्धावस्था की सड़न। छोटे घाव से अधिक खून बहे (क्रोटै०, लैके०, फास०) रस दाने और दाद। काले दाग, अँगुलियों और हाथों के उभरे भागों पर अकौता।

नींद—अशान्त करवटें बदलना। जागने पर अंगों में पक्षाघातिक संवेदन, व्याकुल स्वप्न—पीछा होने के, आग के, लिंगोत्थान इत्यादि के।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : खुली हवा में, ठण्डक, आराम, मासिक-धर्म के बाद, लेटने में। घटना : सेंकने से, हरकत से, गरम भोजन से।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : नक्स।

क्रिया व्याघातक : कार्बो०।

घातक रोग में पूरक : आर्से०; फॉस०; सल्फर।

गुवायकोल (क्रियोजोट का मुख्य अंग है और उसी की तरह प्रभाव रखती है। फुफ्फुसीय क्षय रोग में काम आती है। मात्रा—१–५ बूँद)।

मैटिको—आरटैन्थी या पाइपर ऑंगस्टिफोलिया, (सूजाक, फुफ्फुस से रक्तस्राव; प्रजनन-मूत्रेन्द्रिय और पक्वाशयांत्रिक मार्ग का नजला। रक्तस्राव रोधक है। कठिन, सूखी, गहरी, जाड़े की खाँसी। अरिष्ट का व्यवहार करें)।

तुलना कीजिए : फुलिगो लिग्नि; कार्बोलि० एसिड; आयोड०; लैकेसिस।

मात्रा—३ से १२ शक्ति, २०० शक्ति नाजुक मिजाज रोगियों को।

लैबरनम (Laburnum)

(सिस्टिस लैबर्नम)

इस झाड़ी के सभी भाग विषैले होते हैं, जो आमाशय और आँतों में प्रदाह पैदा करते हैं, साथ में कै-दस्त, सिर दर्द, चेहरे का पीलापन और ठण्डा चर्म। विस्तृत सुन्नता और विक्षेप इस द्रव की विशेषता है। मस्तिष्क, मेरुदण्डीय प्रदाह। अति शिथिलता, गले में रुकावट, गरदन की जड़ में कड़ापन, गरदन की जड़ से सिर के पिछले भाग तक फटन, धुंधली आँखें।

सिर—विचारशून्य, उदासीन (फॉस० एसिड) पुतलियों का असमान फैलाव, चक्कर आना, चेहरे की पेशियों में धड़कन (एगैरिकस) । दिमाग के पर्दों में पानी आना, निरन्तर चक्कर आना, अति निद्रा ।

पेट—अधिक प्यास । लगातार मिचली, कै एपिगैस्ट्रियम में जलन ।

पुरुष—ऐंठन और लिंगोत्थान, घास जैसा हरा मूत्र ।

अंग—हाथ सुन्न और दर्द । उनको हिलाने में कठिनाई ।

तुलना कीजिए : नक्स०, जेल्से०, सिसटिन (चालक नाड़ियों में पक्षाघात उत्पन्न करती है जैसा कुरारी में होता है और साँस-यन्त्र के लकवे से मृत्यु हो जाती है) ।

मात्रा—३ शक्ति ।

लैक कैनाइनम (Lac Caninum)

(मिल्क ऑफ डॉग)

यह औषधि अनेक प्रकार के गलक्षत, रोहिणी और गठियावात में निस्संदेह उपकारी है । यह उन बीमारियों से मिलती-जुलती हालत पैदा करती है जिनमें रोग-विष मन्द होता है और ज्वर नहीं आता । लक्षण का सांकेतिक चिह्न है : **जगह बदलने वाला दर्द;** कभी इस पहलू में कभी उसमें । ऐसा जान पड़े कि हवा पर चल रहा हो, लेटने पर बिस्तर न छूता हुआ जान पड़े । घोर सुस्ती । पीनस । उन स्त्रियों के लिए दूध सुखाने में अवश्य लाभकारी है जो बालक को दूध न पिला सकें । बहुत कमजोरी और पतनावस्था । प्रत्येक सुबह को प्राण जाने जैसी कमजोरी का संवेदन । स्तन-प्रदाह ।

मन—बहुत भूलना, लिखते समय गलती कर दे । निराशा । अपने रोग को असाध्य समझती है । क्रोधाक्रमण । साँप देखने का भ्रम । अपने को तुच्छ समझे ।

सिर—हवा में टहलने या उड़ने का संवेदन (स्टिक्टा,) । दर्द पहले एक तरफ फिर दूसरी तरफ हो । धुँधली निगाह, मिचली और कै जब सिर दर्द अपनी चरम सीमा पर रहे । पिछले भाग का दर्द जो माथे तक लपके । ऐसा मालूम हो कि मस्तिष्क सिकोड़ा और ढीला किया जा रहा है । कानों में आवाजें । बोलियाँ गूजें ।

नाक—जुकाम, एक नथना बन्द, दूसरा खुला; बारी-बारी से । नासा पक्ष और मुँह के किनारे चिटके हुए । नाक की हड्डी दबाने से दर्द करे । खूनी मवाद का स्राव ।

मुँह—चटकीले लाल, किनारों के साथ जबान पर सफेद मैल। लार अधिक। रोहिणी में लार बहना। खाते समय जबान कटकटाना (नाइट्रिक० एसिड; रस०)। बुरा स्वाद, मिठाई से बढ़े।

गला—छूना असह्य, निगलने में दर्द जो कानों तक बढ़े। गलक्षत और खाँसी, मासिक-धर्म के साथ। तालुमूल प्रदाह और झिल्ली प्रदाह तेजी से एक तरफ से दूसरी तरफ जाये। संचित स्राव, चमकीला, चिकना, मोती जैसा सफेद या स्वच्छ सफेदी की तरह। गरदन और जबान का कड़ापन। गला में जले हुए कच्चापन की तरह मालूम हो। गुदगुदी मालूम हो जिससे लगातार खाँसी आवे। गला प्रदाह मासिक-धर्म के साथ शुरू और खतम हो।

स्त्री—मासिक धर्म समय से बहुत पहले, मात्रा में अधिक, ढेर का ढेर आ पड़े। स्तन सूजे हुए, मासिक-धर्म के पहले दर्द हो (कैल्के० कार्ब, कोनि; पल्से०)। शुरू होते ही दर्द बन्द हो जाए। स्तन प्रदाह, जरा-सा झटका लगने से बढ़े ' दूध सुखाती है। एपिगैस्ट्रियम में दुर्बलता की संवेदना। कामोत्तेजना सरल। पीठ दर्द, मेरुदण्ड में छूना या दाब असह्य। अधिक दूध निकलता है।

अंग—दाहिनी तरफ का गृध्रसी। टाँगें कड़ी और सुन्न हों, पैरों में ऐंठन। अङ्गों और पीठ में वात पीड़ा जो एक तरफ से तेजी से दूसरी तरफ लपके, बाहों में अंगुलियों तक पीड़ा। हथेली और तलवों में जलन।

नींद—साँपों का स्वप्न।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : एक दिन की सुबह और दूसरे दिन की शाम, घटना। ठंडक, ठंडी चीज पीना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लैके०; कोनि०; लैके फेलिनम कैट्समिल्क—(बरौनी या स्नायुशूल, आँख के लक्षण, प्रकाशातंक, दुर्बल या कठिन दृष्टि, कष्टरजः) लैक्र वैक्सिनम—काऊज मिल्क—(सिर दर्द, वात पीड़ा या कब्ज), लैक वैक्सिनम केगुलेटम—कड्स—(गर्भावस्था की मिचली) लक्टिस वैक्सिनि फ्लॉक—क्रीम—झिल्ली प्रदाह, प्रदर, अतिरजः; निगलने में कष्ट), लैक्टिक एसिड।

मात्रा—३० और सबसे ऊँची शक्ति।

लैक डिफ्लोरेटम (Lac Defloratum)

(स्किम्ड मिल्क)

दूषित पोषण के परिणामस्वरूप आये रोगों की औषधि। पुराना सिर दर्द, साथ में दर्द के समय अधिक पेशाब होना। मोटर गाड़ी में सवारी करने से आया रोग।

सिर—निराशा। सुबह उठने पर सिर दर्द माथे से शुरू होकर पिछले भाग तक जाये। तीव्र थरथराहट, मिचली, कै, अन्धापन, कठोर कब्ज भी साथ में, शोरगुल, रोशनी; हरकत से मासिक काल में अधिक कष्ट हो। अति शिथिलता; दाब से और सिर को कस कर बाँधने से कम हो।

मल—कब्ज। मल कड़ा, बड़ा, अधिक काँखने के साथ, दर्द के साथ, गुदा छिले।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कोलोस्ट्रम, (बच्चों का दस्त। सम्पूर्ण शरीर से खट्टी गन्ध आए। शूल) नैट्र० म्यूर।

मात्रा—६ से ३० शक्ति और उससे ऊँची।

लैकेसिस (Lachesis)

(बुशमास्टर या सुरुकुकु)

सभी सर्प-विषों की तरह लैकेसिस रक्त में सड़ाव उत्पन्न करता है। उसको अधिक तरल बनाता है, इसलिए रक्तस्राव की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट रूप से विदित होती है। लाल दाग, विषैली अवस्थाएँ, झिल्ली प्रदाह और अन्य निम्न कोटि की बीमारियाँ, जब शरीर में विष पूरे तौर पर फैल जाये और घोर शिथिलता पैदा हो। इस औषधि के प्रयोग के लिए रोग के घटने-बढ़ने का क्रम अति महत्त्वपूर्ण है। शराबी की बकवास जब अधिक कम्प और विचार-छिन्नता हो। वयःसन्धिकाल में यह औषधि विशेष रूप से लाभदायक है। उन रोगियों के लिए जो उदास रहा करते हैं। स्राव दमन के दुष्प्रभाव। गल-झिल्लि-प्रदाह-जनित पक्षाघात (बोटुलिनम)। रोहिणी। कीटाणु को ले जानेवाले रोगो। अनेक भागों में तनाव। किसी स्थान पर कसाव सहन न हो।

मन—अधिक बोलना। कामुक; सुबह को शोकग्रस्त, किसी से बात करने की इच्छा न हो। बेचैन और अशान्त, काम-धाम करने को मन न चाहे। सारे दिन कहीं दूसरी जगह दूर रहने को मन करे। डाह करना (हायोसियामस) मानसिक परिश्रम रात में अच्छी तरह हो सके। सरल मृत्यु का इच्छुक। शुबहा करना, हर रात में आग का भ्रम। पूजा-पाठ करते रहने का उन्माद (वेरेट्रम, स्ट्रैमो०)। समय का ज्ञान नष्ट।

सिर—जागने पर सिर में से होकर नाक की जड़ तक दर्द हो। चाँद पर दाब और जलन। दर्द की लहरें, हिलने पर अधिक हो। सूजन के साथ बढ़ने-घटने वाला सिर दर्द। सिर दर्द के साथ टिमटिमाहट, निगाह का धुँधलापन, बहुत पीला चेहरा। चक्कर। मासिक-स्राव या नाक-स्राव के जारी होने से लक्षणों में कमी।

आँखें—रोहिणी रोग के बाद देखने में त्रुटि, बाहरी पेशियाँ एक स्थान पर केन्द्रित न हो सकें। ऐसा जान पड़े कि आँखें किसी डोरी से खींची जा रही हों जो नाक की जड़ पर गाँठ देकर बँधी हों।

कान—गण्डास्थि युगल प्रवर्द्धक से कान के भीतर तक दर्द, साथ में गल क्षत। कान कान मैल सूखा, कड़ा।

नाक—रक्त-स्राव, नथुने उत्तेजित। जुकाम, सिर दर्द से पहले। अगस्त-सितम्बर का दमा, छींक के दौरे (सिलिका, सैबाडि०)।

चेहरा—पीला। स्नायुशूल, (बाँयीं तरफ गरमी सिर के भीतर दौड़े फॉस०)। जबड़े की हड्डी में फटन दर्द। (एम्फिस बीना, फास०)। बैगनी, चकत्तेदार, फूला हुआ, सूजा दिखाई दे, कामलाग्रस्त, रक्तहीन।

मुँह—मसूढ़े सूजे हुए स्पंज की तरह नर्म, खून बहे। जबान सूजी हुई, जले, कम्प, लाल, सूखी, सिरा चिटका हुआ, दाँतों से टकराये। चपटे रस भरे चकत्ते। जलन और कच्चापन के साथ। घृणित मिचली लाने वाले स्वाद। दाँत दर्द करे दर्द कानों तक बढ़े। चेहरे की हड्डियों में दर्द।

गला—सन्तापपूर्ण, बाँयीं तरफ अधिक, तरल पदार्थ निगलने में कष्ट। तालुमूल प्रदाह। पीबवाला कर्णमूल ग्रन्थि प्रदाह। सूखा, तीव्र सूजन, बाहर और भीतर। झिल्ली प्रदाह, श्लैष्मिक झिल्ली गंदली, काली। गरम चीजें पीने से दर्द बढ़े। जीर्ण गलक्षत; अधिक खखारने के साथ। अधिक बलगम; चिपका रहे, ऊपर या नीचे न सरक सके। बहुत दर्द वाला, जरा-सी दाब से कष्ट बढ़े, छूना कष्टप्रद हो। झिल्ली प्रदाह इत्यादि का रोग बाँयीं तरफ से आरम्भ हो। तालुमूल बैंगनी या बैगनी सुर्ख। ऐसा जान पड़े कि गले में कोई चीज अटक गयी है जो निगली न जा सके। थूक या तरल पदार्थ निगलने से बढ़े। कानों में दर्द। कालर और गले का बन्धन ढीला करना आवश्यक।

आमाशय—मदिरा पीने और केकड़ा खाने की इच्छा। कोई भोजन करने से कष्ट हो। आमाशय का गढ़ा छूने से दर्द करें। भूखा, भोजन का इन्तजार न कर सके। कुतरन, दाब से कम हो, लेकिन कुछ घण्टों के बाद फिर वापस हो। एपिगैस्ट्रियम में उत्पन्न जान पड़े। खाली निगलना, किसी ठोस चीज से निगलने की अपेक्षा अधिक पीड़ाजनक।

उदर—जिगर प्रदेश स्पर्शकातर, कमर पर कोई कपड़ा सहन न हो। मद्यपान करने वालों के लिए खासतौर से लाभकारी है। उदर तना हुआ, उत्तेजित, दर्द करे (बेला०)।

मल—कब्ज, बदबूदार मल। गुदा बन्द मालूम हो, मानो उसमें से कोई चीज गुजर नहीं सकेगी। जब कभी छींके या खाँसे दर्द मलाशय में से ऊपर की तरफ

लपके। आँतों से खून बहे, जो झुलसे हुए घास की तरह हो, काले कण। बवासीर बाहर निकले, भीतर न जाये, बैंगनी रङ्ग की। छींकने या खाँसने से उसमें चिलक हो। मलाशय में पाखाना का वेग मालूम हो, मगर पाखाना न हो।

स्त्री—वयःसंधिकालीन रोग, धड़कन, गरमी की लपटें, रक्त स्राव, चाँद पर दर्द, गशी के दौरे, कपड़े के दाब से कष्ट अधिक हो। मासिक-धर्म कम दिनों तक रहे। बहुत कम स्राव से सभी कष्ट कम हों (इयुपियन)। बायीं डिम्ब ग्रन्थि सूजी हुई, बहुत दर्द करे, कड़ी। स्तन सूजे हुए, नीले रङ्ग के। मेरुदण्ड की अन्तिम अस्थि और त्रिकास्थि में दर्द, बैठे रहने के बाद उठने पर बढ़े। खासकर मासिक-धर्म के पहले और अन्त में अच्छा काम करती है।

पुरुष—भीषण काम-उत्तेजना।

श्वास-यन्त्र—वायुनली का ऊपरी भाग छुआ जाना सहन न करे, लेटने पर दम घुटना और गला घुटने का संवेदन, खासकर जब गले के चारों तरफ कोई कपड़ा इत्यादि हो, रोगी को मजबूर करे कि चारपाई से उछल कर किसी खुली खिड़की की तरफ दौड़े। कण्ठ में ऐसा जान पड़े कि कोई चीज गरदन से स्वरयन्त्र तक आई हो। गहरी साँस लेने की आवश्यकता मालूम हो। हृदय क्षेत्र में ऐंठन का कष्ट। खाँसी, सूखी, दम घुटने के दौरे, गुदगुदी। थोड़ा स्राव और अधिक स्पर्शकातरता, स्वरयन्त्र पर दाब से, सोने के बाद, खुली हवा से अधिक हो। सो जाने पर सांस प्रायः रुक जाये (ग्रिण्डेलिया)। दर्द करे। गुल्ली कसने का संवेदन (एनाका०) जो ऊपर नीचे चलती हो, छोटी खाँसी के साथ।

दिल—धड़कन; गशी के दौरे के साथ, खासकर वयःसंधिकाल में। संकुचन संवेदन जिससे धड़कन हो, व्याकुलता के साथ। नील रोग। क्रम भ्रष्ट गति।

पीठ—मेरुदण्ड की अन्तिम अस्थि का स्नायुशूल, बैठने के बाद, उठने पर अधिक हो। शान्त होकर बैठना आवश्यक। गरदन में दर्द, ग्रीवा प्रदेश में अधिक। पीठ से बाँहों, टाँगों और आँखों इत्यादि तक डोरी खिंची होने की संवेदना।

अंग—दाहिनी तरफ की गृध्रसी; लेटने से कम। जंघास्थि में दर्द। (हो सकता है गल क्षत बाद में आए) नसों का छोटापन।

नींद—रोग की प्रथमावस्था में रोगी सोवे। नींद लगते ही एकाएक चिहुँक पड़े। औंघाई मगर नींद न आवे (बेला० ओपि०) शाम को जागे।

ज्वर—पीठ में सर्दी, पैर बरफ जैसे ठंडे, गरम लहरें और गरम पसीना। तेजाबी चीज सेवन करने से दौरे वापस आवें। हर वसन्त के दिनों में सविराम ज्वर का आक्रमण।

चर्म—गरम पसीना, नीलापन, बैगनी रंग की तरह। फुड़िया, कारबंकल घाव, नीले घेरों के साथ। गहरे रङ्ग के छाले। बिस्तर-घाव, काले किनारों के साथ। नीली-

काली सूजन। विषैला स्फोटक; फटन, घाव। धूम्र रोग, अधिक शिथिलता के साथ। वृद्धावस्था का विसर्प रोग। वसार्बुद। कौषिक तन्तु का प्रदाह। नसों का सिकुड़ कर फूलना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सोने के बाद (कैलि० बाइक्रो०) लैकेसिस का रोगी रोग-वृद्धि काल में सो जाता है; वे रोग जो सोने की हालत में आक्रमण करें (कैल्के०), बायीं तरफ, बसन्त ऋतु, गरम पानी से स्नान करना, दाब, कसावट, गरम चीज पीना। आँखें बन्द करना। घटना : स्रावारम्भ, सेंकना।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : आर्से०, मर्क०, गरमी, एल्कोहल, नमक।

पूरक : क्रोटैलस कैस्केवेला अक्सर लैकेसिस का काम पूरा करती है, (म्यूर०) लाइको०, हीपर, सैलेमेण्ड्रा।

असमान : एसेटिक एसिड, कार्बो० एसिड।

तुलना कीजिए—कोटाइलेडॉन (वयःसन्धिकालीन रोग), नैट्र० म्यूर; नाइट्रिक० एसिड, क्रोटेल०, एम्फिसबीना—स्नेक लिजर्ड (दाहिना जबड़ा सूजा हुआ और दर्द करे, कोंचन दर्द; सिर दर्द; रस दाने और सूखे दाने), नाजा; लेपिडियम।

मात्रा—८ से २०० शक्ति। औषधि घड़ी-घड़ी दोहराना नहीं चाहिए। अगर लक्षण ठीक मिल जायें तो एक खुराक को अपना काम पूरा करने का अवसर देना आवश्यक है।

लैकनैन्थिस (Lachnanthes)

(स्पिरिट-वीड)

सिर, सीना और रक्त-सञ्चार प्रभावित होते हैं। नाक का पुल चुटकी से बींधा मालूम हो। ग्रीवास्तम्भ की औषधि, गरदन क्षेत्र में वातपीड़ा। ट्यूबरकुलोसिस—हल्के रंग के लोगों में। आरम्भिक अवस्था और निःसन्देह सीना रोग में, जहाँ अधिक ठण्डक हो। बात करने की इच्छा अधिक करती है—धारा प्रवाह व्याख्यान देने की इच्छा।

सिर—दाहिनी तरफ का दर्द, जबड़े तक बढ़े। सिर बढ़ा हुआ जान पड़े, जरा-सी आवाज से रोग अधिक हो। चमड़ी वेदनापूर्ण। अनिद्रा। गले पर लाल घेरे, सिर की खाल वेदनापूर्ण मानो सभी बाल बड़े हों, तलवों और हथेली में जलन। नाक का पुल चुटकी से बींधा मालूम पड़े।

सीना—गरमी का संवेदन, दिल के प्रदेश से बुलबुले उठते महसूस हों और खून में उबाल जो सिर तक बढ़े।

पीठ—कंधों के डैनों के बीच में ठंडक, पीठ में दर्द और तनाव।

गरदन—गलक्षत में एक तरफ झुकी हो। गरदन का गठियावात, गरदन का कड़ापन। जड़ में मोच आई हो ऐसा दर्द।

चर्म—शरीर बरफ जैसा ठंडा; चेहरा पीला, पसीने की सम्भावना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : डल्का०, ब्रायो०, पल्से०; और फेल टौरी भी (गरदन की जड़ में दर्द और वहाँ बहुत खींचन)।

मात्रा—३ शक्ति। क्षय रोग में अरिष्ट; हफ्ते में एक या दो बार ही दें; हर चार घण्टे पर ३ बूँद।

लैक्टिकम एसिड (Lacticum Acidum)

(लैक्टिक एसिड)

गर्भावस्था की कै, मधुमेह और गठिया वात रोग इस औषधि का कार्यक्षेत्र प्रस्तुत करते हैं। स्तनों के रोग। बाहर लगाने के लिए स्वरयन्त्रों में क्षय सम्बन्धी घाव पर।

पेट—जबान सूखी, झुलसी हुई। प्यास, अधिक भूख। मुँह में गलित घाव, अधिक लार बहना और जल हिचकी आना। मिचली, गर्भावस्था की मिचली खासकर पीली रक्तहीन स्त्रियों में। गरम, तेजाबी डकार। मिचली, खाने से कम। जलन; गरम गैस पेट से निकले, और गले तक जाये, जिससे अधिक श्लैष्मिक चिमड़ा बलगम निकले, धूम्रपान से कष्ट अधिक हो।

गला—भरा हुआ या गला अँटका मालूम हो। निगलता रहे। नीचे की तरफ सिकुड़ा मालूम हो।

सीना—स्तनों में दर्द, काँखों की गिल्टियाँ बढ़ी हों, दर्द बाहों तक बढ़े।

अंग—जोड़ों, कंधों में, कलाई और घुटनों में, वात पीड़ा अधिक कमजोरी के साथ। टहलते समय सारा शरीर काँपे।

मूत्र—अधिक मात्रा में, घड़ी-घड़ी। चीनी मिश्रित।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सैर्कोलक्टिक एसिड क्यू बी; लिथिया, फॉस० एडिस।

मात्रा—३ से ३० शक्ति। तीव्र आमाशय-आन्त्र प्रदाह में एक छोटे गिलास पानी में ६-१० बूँद। (कार्टियर)।

लैक्टुका विरोसा (Lactuca Virosa)

यह औषध मस्तिष्क और रक्तवाही यन्त्रों पर विशेष काम करती है। अनिद्रा के साथ शराबी की बकवाद, ठण्डक और कम्प भी साथ में। वक्षोदक और जलोदर। नपुंसकता। सारे शरीर में खासकर सीने में हलकापन, कसाव। **स्तनों में दूध बढ़ाने वाली औषधि**। हाथों-पैरों पर विशिष्ट प्रभाव।

मन—इन्द्रियाँ कुण्ठित। अधिक बेचैनी।

सिर—मन्द, भारी, छिन्न, चक्कर आये। सम्पूर्ण ठण्डक के साथ चेहरे में गरमी और सिर दर्द। साँस-यन्त्र रोग के साथ सिर दर्द।

उदर—बोझ जैसा, भग की संवेदना। वायु-संचयता के कारण उदर में नाना प्रकार की आवाजें, अधिक वायु-स्खलन। प्रातःकालीन शूल, उदर तना हुआ, मल-स्खलन और वायु-स्खलन से कुछ कमी।

सीना—कठिन साँस। सीने के शोथ से आई दमकशी। लगातार खाँसी जिसमें गुदगुदी हो। लगातार, दौरे वाली खाँसी मानो सीना टुकड़े-टुकड़े हो जायगा। निचले सीने में भींच की अनुभूति।

स्त्री—रजअवर्त्तक है। स्तनों में दुग्धाधिक्य (एसाफिटिडा)

अंग—लँगड़ा कूल्हा नीचे तक बायीं तरफ, टहलने से अधिक हो। पैरों और टाँगों में ठंडक और सुन्नपन। हाथों और बाहों में कम्प। नड़हर की हड्डी में ऐंठन जो पैर की अगुलियों और टखने तक बढ़े।

सम्बन्ध—क्रियानाशक: एसेटिक एसिड; कॉफिया।

तुलना कीजिए : नैबेलस प्रेनैन्थिस सरपेण्टेरिया-रैटल स्नेक रूट-ह्वाइट लैटूस, लैक्टुका की तरह, जीर्ण दस्त, भोजन करने के बाद अधिक या रात और सुबह के समय। उदर और मलाशय में दर्द; दुबलापन। कब्ज और औंघाई; दूसरों के कष्ट से प्रभावित होने की प्रवृत्ति। मन्दाग्नि, तेजाबी जलन; डकार के साथ। तेजाबी भोजन की इच्छा। गर्भाशय में थरथराहट के साथ प्रदर रोग, लैके०, कैली कार्ब; स्पाइरैन्थेस (स्तन में दूध बढ़ाने की औषधि)।

मात्रा—अरिष्ट।

लेमियम (Lemium)

(ह्वाइट नेटल)

सिर के आगे-पीछे हिलने के साथ सिर दर्द। मासिक धर्म प्राकृतिक समय के बहुत पहले और थोड़ी मात्रा में। प्रदर, बवासीर, कड़ा मल, खून के साथ। मूत्र-मार्ग

में संवेदन हो जैसा पेशाब की एक बूँद बही आ रही है। अंगों में फटन। रक्त थूकना। जरा-सी गड़न से एड़ी पर घाव (सेपा)।

माात्रा—३ शक्ति।

लेपिस ऐल्बस (Lapis Albus)

(सिलिको-फ्लोराइड ऑफ कैल्सियम)

ग्रन्थि रोग, घेघा, कर्कट रोग में घाव होने के पहले की अवस्था। स्तन, आमाशय और गर्भाशय में जलन, डंक लगने जैसा दर्द। ग्रन्थियों के पास की बन्धनियाँ विशेष रूप से रोगग्रस्त। मोटे, रक्तहीन बच्चे जिनमें आयोडिन की तरह भूख हो। राक्षसी भूख। कण्ठमालिका बाधाओं में विचित्र रूप से लाभदायक, सिवाय मलेरिया के। गर्भाशय का कर्कट रोग। रेशेदार अर्बुद; रोगग्रस्त भाग के आरपार तीव्र जलन, दर्द के साथ, अधिक रक्तस्राव भी साथ में। ग्रन्थियों के क्षेत्र में मुलायम और ढीलापन पाया जाता है। विरुद्ध उस कड़ापन के जो कैल्के० फ्लोर० और सिस्टस में होता है।

कान—मध्य भाग से स्राव आना। साइलिशिया के लक्षण हों तो लेपिस तेजी से लाभ करता है (बेलोब)।

सीना—स्तन क्षेत्र में लगातार दर्द। ग्रन्थि का कड़ा पड़ना।

चर्म—कण्ठमालिक फोड़े और घाव। ग्रन्थियों का बढ़ जाना और कड़ा पड़ना, खासकर ग्रीवा ग्रन्थि का। मेदार्बुद, मांसार्बुद, कर्कट रोग। योनि की तीव्र खाज।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सिलिका, बेडियागा, आर्से० आयोडे०, कैल्के० आयोडेटा, कोनियम, कॉलि, आयोडेटम; ऐस्टेरियस।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

लैप्पा-आर्कटियम (Lappa-Arctium)

(बरडॉक)

चर्म रोगों की चिकित्सा में विशिष्ट औषधि है। सिर, चेहरे, गरदन के उद्भेद छोटे दाने, मुँहासे। पलकों के किनारों पर बिलनी, घाव। अधिक और बराबर पेशाब होना। झुण्ड के झुण्ड फोड़े, बिलनी। (एन्थ्रोसिन)।

अङ्ग—हाथों, घुटनों और टखनों में दर्द जो अँगुलियों तक बढ़े। सभी जोड़ों में दर्द। सिरों पर दाने निकलना।

स्त्री—गर्भाशय का खिसकना। तीव्र सन्ताप, कुचलन संवेदन। गर्भाशय में योनि तन्तुओं के अधिक ढीलापन के साथ, मालूम पड़े कि पेडू के सभी यन्त्र सिकुड़ने

की शक्ति खो बैठे हैं और दुर्बल हैं। ये सभी लक्षण खड़े होने से अधिक होते हैं, टहलने से, पैर गलत पड़ जाने से या झटके से भी बढ़े।

मात्रा—अरिष्ट ३ शक्ति।

लैथाइरस (Lathyrus)
(चिक-पी)

रीढ़ की हड्डी के बगल वाले और अगले भाग पर काम करती है। पीड़ा नहीं उत्पन्न करती। परिवर्तित क्रिया सदा बढ़ जाती है। निचले अङ्गों का पक्षाघात रोग, आक्षेपिक पक्षाघात रीढ़ के बगल वाले भाग का कड़ा पड़ना। बेरी-बेरी। अँगुलियों का अनैच्छिक हिला करना। शिशु पक्षाघात। इंफ्लुएञ्जा और उसकी दुर्बलता, शरीर में क्षीणता पैदा करने वाले रोग के बाद जहाँ बहुत कमजोरी और भारीपन हो, स्नायु शक्ति सिर से वापस लाने के लिए उपयोगी है। बराबर औंघाई लगी रहे, जम्हाई आवे।

मन—उदास, व्याधि शंका। आँखें बन्द करके खड़े होने पर चक्कर।

मुँह—जबान के सिरे में जलन, दर्द, जबान और होंठ के टपकन और सुन्नपन के साथ मानो झुलस गये हों।

अङ्ग—हाथों की अँगुलियों के सिरे सुन्न। काँपती, लड़खड़ाती चाल। टाँगों में बहुत कड़ापन, चाल में झटके आएँ। चलने पर घुटने आपस में टकरायें। टाँगों में ऐंठन जो ठण्डक से बढ़े और ठण्डे पैर। बैठने पर न फैला सके और न पाल्थी मार सके। मेरुमज्जा प्रदाह, आक्षेपिक, लक्षणों के साथ। गाठिया का पक्षाघात। नितम्ब पेशियाँ और निचले अंग दुबले हो जायें। टाँगें नीली, सूजी हुई, मानो लटक रही हों। टखनों और घुटनों का तन जाना और लँगड़ापन, पैर की अंगुलियाँ फर्श पर से न उठें। एड़ी फर्श न छुए। पिंडली की पेशियाँ तनी हों। रोगी आगे की तरफ झुक कर बैठे, कठिनाई से सीधा हो।

मूत्र—मूत्राशय की परावर्तित क्रिया अधिक हो जाए। बार-बार जल्दी पेशाब करना आवश्यक, नहीं तो कपड़े में ही पेशाब होने की सम्भावना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : ऑक्सिट्रॉप०, सिकेल, पेटिवेरिया—दक्षिणी अमेरिका का एक पौधा—(पक्षाघात; निचले अंगों का पक्षाघात, सुन्न हो जाने के साथ। आन्तरिक ठण्डापन)। ऐग्रोस्टेमा गिथैगो—कॉर्न कॉकल—(जलन संवेदन; पेट में गलनली से गले में, निचले उदर और गुदा में; मिचली, कड़वी कै, संचार-क्रिया में रुकावट; सीधा रहना कठिन, चक्कर और सिर दर्द निचले जबड़े से चाँद तक जलन)।

मात्रा—३ शक्ति।

लैट्रोडेक्टस मैक्टैन्स (Latrodectus Mactans)

(स्पाइडर)

इस मकड़ी के काटने से तांडव लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं जो कई दिनों तक रहते हैं। इस पदार्थ के लक्षणों का स्पष्ट चित्रण हृदय-शूल रोग में मिलता है। हृदय इस पदार्थ के आक्रमण का मुख्य केन्द्र मालूम पड़ता है। सीने की पेशियों में सिकुड़न जो कन्धों और पीठ तक फैले। खून के जमने में कमी।

सिर—उत्सुक। दर्द से चिल्लाना। गरदन से सिर के पीछे तक दर्द। सिर के पिछले भाग में दर्द।

साँस-यन्त्र—घोर क्षणिक श्वासारोध। दम फूलना। साँस रुकने का भय हो।

सीना—हृदय क्षेत्र में तीव्र पीड़ा जो वक्ष से होती हुई बाँह के नीचे और अगली बाँह से होकर अँगुलियों तक जाये और साथ में सिरों का सुन्न होना। नाड़ी दुर्बल और तेज। सीने से उदर तक ऐंठन; डूबन संवेदन।

अङ्ग—बायीं बाँह में दर्द; बेदम मालूम हो। टाँगों में कमजोरी और फिर उदर पेशियों में ऐंठन। निचले अंगों का सुन्न हो जाना।

चर्म—शरीर भर का चर्म ठन्डा। संगमरमर की तरह ठण्डा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : **लैट्रोडेक्टस हैसेल्टी**—न्यू साउथ वेल्स ब्लैक स्पाइडर—(जीर्ण, दीर्घकालीन प्रभाव इसको जीर्ण रक्त विष दोष की तरह संकेतित करता है। रक्त विषाक्तता के तीव्र दर्द को रोकती है। घाव के आसपास अति शोथ, अंगों का लकवा, पेशियों की क्षीणता के साथ। तीव्र, भाला गड़ने जैसे तेज, जलन वाले दर्द, लकवा के पहले चक्कर, आगे गिरने की प्रवृत्ति, रक्त की विषैली अवस्थाएँ, उड़ने का लगातार भ्रम। स्मरण शक्ति खोना। गरज की आवाजें)। **ऐरैनिया माइगेल, थेरिडियन; लैट्रोडेक्टस कैलिपो**—न्यूजीलैण्ड स्पाइडर—(लसिकावाहिनी ग्रन्थि प्रदाह और स्नायविक फड़कन, लाल, जलन; स्फोट)। **ट्रियाटेमा**—किसिंग बग—सूजन और तीव्र खुजली हाथ और पैर की अँगुलियों में। दम घुटन की संवेदना और तीव्र खुजली हाथ और पैर की अँगुलियों में। दम घुटन की संवेदना और कठिन साँस, बाद में गशी आए और तेज नाड़ी।

मात्रा—६ शक्ति।

लॉरोसिरैसस (Laurocerasus)

(चेरी-लॉरेल)

आक्षेपिक, गुदगुदीदार खाँसी, खासकर हृदय रोगों में; इस औषधि से जादू की तरह अच्छी होती है। प्रतिक्रिया का अभाव; खासकर सीना और हृदय रोग में।

तरल पदार्थ पीने के बाद आवाज के साथ गले और आँतों में उतरे। शारीरिक ठण्डापन जो सेंकने से कम न हो। आमाशय में तीव्र दर्द, चेहरे की पेशियों और गलकोष में आक्षेप जन्मते शिशु का दम घुटना।

ज्वर—ठण्डक, शीत और गरमी बारी-बारी से आये। तीसरे पहर मुँह के सूखापन के साथ प्यास।

साँस-यन्त्र—नील रोग और कष्टमयी साँस; बैठ जाने पर बढ़े। रोगी हृदय पर हाथ रक्खे। खाँसी हृदय-पट बाधा के साथ। व्यायाम से हृदय की चारों तरफ दर्द हो। गुदगुदीदार, सूखी खाँसी। कष्टमयी साँस। सीने में संकुचन। खाँसी जिसमें लुआबदार बलगम या खून मिला बलगम अधिक मात्रा में आये। छोटी और दुर्बल नाड़ी। फुफ्फुसीय पक्षाघात की सम्भावना, साँस के लिए हाँफना पड़े, दिल पकड़ ले।

दिल - कपाट से खून का वापस हो जाना। दिल में फड़कन; धड़कन। नवजात शिशु का नील रोग।

नींद—गहरी नींद के दौरे, खर्राटे लेने और कठिन साँस के साथ।

अंग—हाथ और पैर की अँगुलियाँ गठीली हो जायें। चर्म नीला। नितम्ब, जाँघों और एड़ी में मोच आने जैसी पीड़ा। पैर और टाँगें ठंडी, लसीली। अँगुलियों से सिरों का गँठीला हो जाना। हाथों की शिरायें तनी हुईं।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : हाइड्रोसियानिक एसिड; कैम्फोरा, सिकेलि०, एमोनियम कार्ब; ऐम्ब्रा०।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति। चेरी लॉरेल जल २ से ५ बूँद की मात्रा में।

लेसिथिन (Lecithin)

(ए फॉस्फोरस-कन्टेनिंग कम्प्लेक्स ऑरगेनिक बॉडी प्रेपेयर्ड फ्रॉम योक आफ एग एण्ड एनिमल ब्रेन्स)

वनस्पति और जीव-जगत के जीवन-क्षेत्र में लेसिथिन एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। लेसिथिन पोषण अवस्थाओं पर अच्छा प्रभाव रखती है और विशेष तौर पर रक्त के ऊपर। इसलिए रक्तहीनता में और कड़े रोगों के बाद स्वास्थ्य वापस लाने में, स्नायु दुर्बलता और अनिद्रा में लाभदायक सिद्ध होती है। यह रक्त में लाल कण और हेमोग्लोबिन की मात्रा को बढ़ाती है। यह उत्तम दुग्ध उत्पन्न करती है और उसकी पोषण शक्ति और मात्रा को अधिक करती है।

शरीर में से फास्फेट की मात्रा व्यर्थ बाहर निकलने को तुरन्त कम करती है। मानसिक शिथिलता और नपुंसकता। क्षय रोग; पोषण में वृद्धि करती है और अन्य

खराबियों को घटाकर शारीरिक बल बढ़ाने में सहायक होती है। थकावट, कमजोरी, साँस फूलना, दुबलापन, सर्वाङ्गीण क्षय। मैथुन शक्ति दुर्बल।

मन—भूलना, मन्दबुद्धि, अस्त-व्यस्त।

सिर—मंद टीस, खासकर पिछले भाग में, कानों में टपक और टनटनाहट। जबड़े की हड्डियों के समूह में दर्द, चेहरा पीला।

आमाशय—भूख न लगना, प्यास, मदिरा और कॉफी की इच्छा, फूला हो, दर्द जो पेट से गले की तरफ उठे।

मूत्र—थोड़ा। फॉस्फेट, चीनी या अलब्युमेन से भरा हो।

काम-क्षेत्र—पुरुष की कामाग्नि लोप या दुर्बल। प्रजनन-शक्ति का क्षय होना डिम्ब की अक्षमता।

अंग—सन्तापपूर्ण टीस, शक्तिहीन। थकावट और कमजोरी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : फास्फोरस।

मात्रा—आधे से २ ग्रेन स्थूल औषधि की, और शक्तियों में भी १२ शक्ति।

लीडम (Ledum)

(मार्श टी)

गठियावात प्रकृति पर प्रभाव रखती है, गठियावात रोग की सभी स्थितियों में स्पष्ट प्रभाव करती है; जैसे जोड़ों की गतिविधि संबंधी दर्दों से लेकर स्राव परिवर्तन और जोड़ों के कोषों में ठोस पदार्थ संचित करने तक सभी स्थितियाँ लाती है। लीडम का वात रोग पैरों से शुरू होकर ऊपर को चढ़ता है। वह चर्म पर भी आक्रमण करता है और उस पर सरपेंचे के विष की तरह स्फोटक उत्पन्न करता है; इसलिए उसका क्रियानाशक भी है और कीड़ों के काटने के दुष्प्रभाव को नाश करता है। सारे शरीर में जीवन ताप की कमी रहती है। इस पर भी बिस्तर की गरमी असह्य होती है। तीखी, नोकदार चीजों से बने घाव, चर्म भेदन, जन्तु के काटने पर, खासकर अगर घाव की जगह ठंडी हो तो यही औषधि है। ताण्डव रोग। जब घाव के आस-पास के पट्ठों में फड़कन हो।

सिर—टहलते समय चक्कर आवे, एक तरफ गिरने की प्रवृत्ति। सिर को ढँकने से कष्ट। नकसीर। (मेलिलोटस, ब्रायो०)।

आँखें—आँखों में टीस। पलकों या श्लैष्मिक झिल्ली में रक्त या जल उतरना। कुचले जाने जैसा घाव। गठिया के साथ मोतियाबिंद।

चेहरा—माथे और गालों पर लाल दाने। उन्हें छूने से बींधने जैसा दर्द हो। नाक और मुँह के चारों तरफ खुरंडदार दाने।

मुँह—सूखा, डकार के साथ ओकाई। नजले के साथ गंदा स्वाद।

श्वास-यन्त्र—नाक में जलन। खून मिले बलगम के साथ खाँसी। साँस-कष्ट; सीना सिकुड़ा मालूम हो। साँस रुकना। कण्ठनली में दर्द। वृद्ध लोगों में वायुस्फीति के साथ वायु नलिका प्रदाह। सीने का कष्टप्रद संकुचन। स्वर-यन्त्र में गुदगुदी, दौरे की खाँसी। खून थूकना और वातरोग बारी-बारी से हो। सीना छूने से दर्द करे। कुकुरखाँसी, आक्षेपिक, सिसकन के साथ दोहरी साँस आना।

मलाशय—गुदा में दरारें। बवासीर की पीड़ा।

अंग—गठिया का दर्द पैरों और अङ्गों में से लपके, सभी जोड़ों में लेकिन खासकर छोटे जोड़ों में। दाहिने कन्धे में थरथराहट। कन्धों में दाब, जो हरकत से बढ़े। जोड़ों में पटपटाहट जो बिस्तर की गरमी से बढ़े। गठिया का गाँठें। पैरों के अँगूठे की गद्दी सूजी हुई (बांथ्प्स)। वातरोग निचल अंगों से शुरू हो और ऊपर की तरफ जाये (कैल्मिया इसका उल्टा है)। टखने सूजे हुए। तलवे वेदनापूर्ण; उनपर बोझ देना कठिन (एण्टिम क्रूडम; लाइको)। टखने जल्दी ही मोच खायें।

ज्वर—ठण्डा लगे, जीवन ताप की कमी। शरीर के भागों पर ठण्डा पानी टपकने का संवेदन, चेहरा गरम और शरीर ठण्डा।

चर्म—माथे पर कील जैसी गड़न दर्द। अकौता (चेहरे का)। पैर और टखनों की खुजली, खुजलाने से और बिस्तर की गरमी से खुजली बढ़े। काले दाग। चोट लगने के बाद बहुत काल तक चर्म का रङ्ग गहरा रहे। कारबंकल (ऐन्थ्रैसिनम, टैरेण्टुला, कुबेन०) रस टॉक्स विष मारक (ग्रिडेलिया, साइप्रिपीडियम, एनाकार्डियम)।

घटना-बढ़ना—घटना : ठण्डक से, पैरों को ठण्डे पानी में रखने से। बढ़ना : रात में बिस्तर की गरमी से।

संबंध—तुलना कीजिए : लीडम मकड़ी के विष का नाश करता है, रूटा; हैमामेलिस, बेलिसपेरेनिस, आर्निका।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

लेम्ना माइनर (Lemna Minor)

(डकवीड)

नजले की औषधि है। नाक के नथनों पर खासतौर से काम करती है। नासार्बुद, नासास्थि सूजन। नाक में क्षीणता के साथ श्लैष्मिक झिल्ली की क्षीणता। नाक बन्द होने से दमा रोग, जो तर मौसम में बढ़े।

नाक—दुर्गन्ध आए, घ्राणशक्ति नष्ट। खुरण्ड और दूषित मवादी स्राव अधिक मात्रा में। गले में नजला गिरे। नथनों से कान तक डोरी जैसा खींचन दर्द। शोथमयी अवस्था के कारण नाक बन्द होने को कम करती है। नथनों और गलकोष का सूखना।

मुँह—सुबह उठने पर दुर्गन्ध आए। कण्ठ और स्वर नली का सूखापन।

उदर—आवाज के साथ दस्त होने की प्रवृत्ति।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तरी में, बरसात के मौसम में, खाँसी अधिकतर वर्षा में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : डल्का०। (तरी का वातावरण और कोहरे के समय) कैल्के०, टिउक्रियम, कैलेण्डुला, नैट्र सल्फ।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

लेपिडियम बोनैरीसे (Lepidium Bonariense)

(क्रेस-ब्रैजिलियन क्रेम)

स्तन और हृदय रोग, छेद होने जैसा दर्द।

हृदय लक्षणों के साथ बायीं बाँह में सुन्नपन, आमाशय के तल में दुर्बलता का संवेदन।

सिर के बायें भाग में, सीने, नितम्ब से घुटने तक सभी स्थानों में गड़न पीड़ा।

दर्द की एक पतली लकीर कनपटी से ठुड्डी तक जाए मानो चेहरा उस्तरे से कट रहा हो। गले में जलन और कानों में गरज। सीने के चारों तरफ एक कसी पेटी जैसा मालूम पड़े, मानो हृदय में छूरी भोंकी जा रही हो। गरदन, पीठ और अङ्गों में दर्द।

तुलना कीजिए : लैकेसिस, आर्निका।

लेप्टैण्ड्रा (Leptandra)

(कल्वर्स रूट)

जिगर रोग की औषधि, जब कि कामला रोग और तारकोल जैसे पाखाने आते हों। पित्त विकार और जिगर की नाड़ियों में रक्त संचार मन्द, मलेरिया।

सिर—अगले भाग का मन्द दर्द, चक्कर, औंघाई और उदासी। आँखों में परपराहट और टीस।

पेट—जबान पर पीला मैल। पेट और आँतों में बहुत कष्ट, साथ में मल त्यागने की इच्छा। जिगर प्रदेश में टीस जो रीढ़ तक जाये जो कि ठिठुरी मालूम हो।

मल—अधिक, काला। चर्बीदार मल, साथ में नाभि पर पीड़ा। खूनी बवासीर। आंत्र स्वर, मल काला हो जाए और तारकोल ऐसा दिखाई दे। मटियाला मल और कामला रोग। काँच निकले, बवासीर के साथ। मलाशय से रक्तस्राव।

संबंध—तुलना कीजिए : पोडोफा०, आइरिस०; ब्रायो०; मर्क०; टीलिया, माइरिका।

मात्रा—अरिष्ट ३ शक्ति।

लियाट्रिस स्पाइकेटा-सेरैटुला (Liatris Spicata-Serratula)

(काँलिक रूट)

रक्तवाही नाड़ी मण्डल के लिए शक्तिवर्द्धक, चर्म और श्लैष्मिक झिल्ली के कार्य-क्षेत्र को उन्नतिशील बनाती है।

जिगर और तिल्ली रोग सम्बन्धी जल शोथ में और गुर्दा शोथ में भी काम आती है। इस अवस्था में मूत्रस्राव की कमी को दूर करती है। दिल और गुर्दा रोग के कारण सर्वांग शोथ में हितकर है। दस्त, साथ में तेज वेग और पीठ के निचले भाग में दर्द। शूल। घाव और दूषित घाव में ऊपर से लगाई जाती है। शक्तिशाली मूत्रल है।

मात्रा—१ से ४ ड्राम अरिष्ट या पानी में उबाल कर उसका अर्क।

लिलियम टिग्रिनम (Lilium Tig.)

(टाइगर-लिली)

वस्ति गह्वर के सभी यन्त्रों पर गहरा असर करती है। गर्भाशय और डिम्ब रोगों के अनेक उपद्रवों में लाभदायक है। बहुत-सी अविवाहित महिलाओं के रोगों में सांकेतित है। हृदय पर इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। छोटे स्थानों में दर्द (आँक्जेलिक० एसिड)। गठिया सम्बन्धी सन्धि प्रदाह।

मन—अपनी मुक्ति के लिए व्यथित रहती है। ढाढ़स देने से रोग बढ़ता। घोर उदासी। रुदन की हर समय इच्छा। उत्सुक, किसी अंग में पीड़ा आने या असाध्य रोग उत्पन्न होने का भय। कोसना, मारना, अश्लील बातों पर विचार करना। निरुद्देश्य; जल्दीबाजी की प्रवृत्ति; कुछ न कुछ किया करना।

सिर—गरम, मन्द, भारी। गरम कमरे में गशी आये। सिर में जंगलीपन।

आँखें—चक्षुपट प्रकाश सहन न करे। दर्द पीछे की तरफ सिर में जाये, आँसू बहे, धुँधला दिखाई दे। निकटवर्ती विषम दृष्टि। आँखों की दुर्बल पेशियों को शक्तिवान करती है। (आर्जे० नाइट्रि०)।

आमाशय : अफरा; मिचली ढोंके जैसे संवेदन के साथ। भूख अधिक और मांस खाने की इच्छा। प्यास अधिक और घड़ी-घड़ी पानी पिए; तीव्र लक्षणों के पहले।

उदर—उदर सन्तापपूर्ण; तना हुआ, कम्प सवेदन। दाब पीछे और नीचे की तरफ मलाशय और गुदा तक; खड़े होने पर अधिक, खुली हवा में टहलने से कम। निचले भाग में नीचे की ओर दबाव।

मूत्र-सम्बन्धी—मूत्र बार-बार दूध-सा सफेद, कम, गरम।

मल—मलाशय में दाब के कारण बार-बार वेग हो, खड़े होने से बढ़े। गुदा में नीचे तक दाब। भोर ही में तेज वेग से पेचिश, आँव और खून, साथ में ऐंठन खासकर मोटी और स्नायविक स्त्रियों में वयःसंधिकालीन उपद्रव।

दिल—मालूम हो कि हृदय बाँक में जकड़ा हुआ है (कैक्ट०)। फटने तक भरापन। सारे शरीर में टपक। धड़कन, नाड़ी, क्रमभ्रष्ट, तीव्र। हृदय क्षेत्र में दर्द, सीने में बोझ जैसा लगे। हृदय प्रदेश में ठंडापन। सीड़ वाले गरम कमरे में दम घुटे। दाहिनी बाँह में दर्द के साथ हृदय-शूल।

स्त्री—मासिक-धर्म समय से पहले, मात्रा में कम, गहरा रङ्ग थक्केदार, घृणित, केवल चलते फिरते बहे। प्राण जाने की-सी संवेदना। मल त्यागने के प्रबल वेग के साथ। मानो सभी भीतरी यन्त्र बाहर निकल पड़ेंगे। आराम करने से यह कष्ट गायब हो जाये (सीपिया; लैक-कैनाइनम; बेला०)। गर्भाशय में रक्ताधिक्य, बाहर निकलना, उलट जाना। बाहर से सहारा देने की लगातार इच्छा। डिम्बाशय और जाँघों में दर्द। तीखा, कत्थई रङ्ग का प्रदर, भग होठों में छुरछुराहट। मैथुन इच्छा जाग्रत। गर्भाशय क्षेत्र में फूलना। जरायु की अल्प वृद्धि। योनि घुण्डी की तीव्र खाज।

अंग—असमतल जमीन पर न चल सके। पीठ और रीढ़ में दर्द, साथ में कम्प, लेकिन बहुत अगले भाग में दाब के साथ। अँगुलियों में चुभन। दाहिनी बाँह और नितम्ब में दर्द। टाँगों में टीस, शान्त न रख सके। टखने के जोड़ में दर्द। हथेली और तलवे जलें।

नींद—अप्रफुल्लित, घृणित स्वप्न। सिर में जंगलीपन के कारण नींद न आवे।

ज्वर—तीसरे पहर बहुत ताप और सुस्ती, सारे शरीर में थरथराहट के साथ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ढाढ़स से, गरम कमरे में। घटना : ताजी हवा में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैक्ट०, हेलोनि०, म्यूरेक्स, सीपिया, प्लैटिना, पैलेडियम।

क्रियानाशक : हेलोनियस।

मात्रा—बिजली और सबसे ऊँची शक्तियाँ उत्तम लाभकारी प्रतीत हुई हैं। इसका लाभप्रद प्रभाव अकसर धीरे-धीरे विदित होता है।

लिम्युलस (जिफोसुरा) Limulus (Xiphosura)

(हॉर्स-फूट—किंगक्रैब)

सी० हेरिंग ने पहले-पहल लिम्युलस का परिचय कराया और उसका आंशिक परीक्षण उन्होंने और लिप्पे ने किए। जब हेरिंग ने किंग क्रैब का अंगविच्छेद किया तो उनको उसके रक्त का नीला रङ्ग देखकर अचम्भा हुआ हुआ और छान-बीन करने पर जैसा कि उनका अनुमान था, उसमें ताँबे का अंश पाया गया, जिसको उन्होंने हैजे के रोग के लिए लाभदायक समझा। इस निर्णय के लिए और भी सूक्ष्म परीक्षणों की आवश्यकता है जो कि प्रयोग में ऐसा अनुमान करना सही मालूम होता है। हेरिंग अपनी कल्पना से अनेक औषधियों के पथ-प्रदर्शक हो गये थे।

शारीरिक और मानसिक शिथिलता, समुद्र के पानी में स्नान करने के बाद औंघाई आना। आमाशयिक-आंत्रिक लक्षण। पूरे दाहिनी तरफ के शरीर का वेदना-पूर्ण भरापन।

सिर—मानसिक अवसाद। नाम याद रखना कठिन, चेहरे की गर्मी के साथ खिन्नता, चेहरे में खून दौड़े, ध्यानावस्था में अधिक हो। बाँयीं आँख के ढेले के पीछे दर्द।

नाक—बहता जुकाम। छींकें आना, पानी पीने से बढ़े। बराबर नाक बहा करे। नाक के ऊपर, आँखों के पीछे दाब।

उदर—गरमी के साथ शूल। पानी जैसा मल के साथ ऐंठन। उदर गरम और संकुचित। बवासीर, गुदा-संकुचित।

श्वास-यन्त्र—आवाज भारी। पानी पीने से साँसकष्ट बढ़े। सीना दबा मालूम पड़े।

अङ्ग—गृध्रसी। तलवे में टीस, सुन्न हों। दाहिनी कटि सन्धि में दर्द। एड़ी सन्तापपूर्ण।

चर्म—चेहरे और हाथों पर खाजदार चकत्ते और दाने। हथेली जले।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ऐस्टेरियस, होमेरस, क्युप्रम।

मात्रा—६ शक्ति।

लिनैरिया (Linaria)

(टोड-फ्लैक्स-स्नैप ड्रैगन)

फुफ्फुस आमाशयिक क्षेत्र में स्पष्ट रूप से काम करती है। डकार, मिचली लार बहना, पेट पर दाब। कामला रोग, तिल्ली और जिगर का बढ़ जाना। आंत्रिक लक्षण

और घोर औंघाई महत्वपूर्ण लक्षण हैं। हृदय सम्बन्धी गशी। अनवरत मूत्रस्राव। मलाशय लक्षण। जबान खुरदरी; सूखी, गला सिकुड़ा हुआ। ठण्डापन, सिर में गड़-बड़ी; घोर निद्रालुता। खुली हवा में रोग अधिक हो।

मात्रा—३ शक्ति।

लिनम युसिटैटिसियम (**Linum Usitatissium**)

(कामन फ्लैक्स)

वात प्रकृतिवाले व्यक्तियों में अलसी की पुल्टिस से साँस में भारी गड़बड़ी उत्पन्न हो जाती है; जैसे दमा रोग, जुलपित्ती इत्यादि। ऐसी अवस्थाओं में इस औषधि से उत्तेजना होती है। इस औषधि में थोड़ा अंश हाइड्रोसियानिक एसिड का होता है जिसके कारण कदाचित् यह तीव्र प्रभाव हो सकता है। इसका क्वाथ मूत्रमार्ग प्रदाह, मूत्राशय प्रदाह, पेशाब रुकना इत्यादि में लाभदायक होता है। इसके अतिरिक्त आन्त्र मार्ग में भी। यह औषधि दमा, इन्फ्लुएञ्जा, ज्वर, जुलपित्ती में काम आती है। जबान का लकवा और दाँती लगना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लिनम कैथार्टिकम—पर्जिङ्ग फ्लैक्स—उसी तरह के साँस लक्षण लेकिन शूल और दस्त में भी हितकर है।

मात्रा—निचली शक्तियाँ।

लिथियम कार्बोनिकम (**Lithium Carbonicum**)

(कार्बोनेट ऑफ लिथियम)

जीर्ण कठियावात रोग जो हृदय दोष से सम्बन्धित हो और कष्ट-दृष्टि विकार में इस औषधि से लाभ होता है। वात रोग के अस्थि गुल्म। मूत्राम्ल प्रकृति। सारा शरीर वेदनापूर्ण। गठिया और जोड़ों में चूना जमा होना।

सिर—तनाव जैसे बँधा हो, बैठने और बाहर जाने से कम हो। बाहरी भाग स्पर्शकातर। भोजन करते समय सिर दर्द बन्द हो जाए। कम्प और थरथराहट। दिल में दर्द, सिर तक बढ़े। कानों में टनटनाहट के साथ चक्कर। दोनों गाल सूखी चोकर ऐसी भूसी से ढँके हों।

आँखें—अर्द्ध दृष्टि, दाहिना आधा भाग दीख न पड़े। आलोकातंक। आँखों के ऊपर दर्द। सूखी पलकें। पढ़ने से आँखें दर्द करें।

आमाशय—अम्लता, मिचली, कुतरन; जो भोजन करने से कम हो (एना-कार्डियम)। कपड़े की जरा-सी भी दाब सहन न हो। (लैंकेसिस)।

मूत्र—ऐंठन। गंदला, श्लेष्मा और लाल तलछट के साथ। दाहिने गुर्दा प्रदेश में दर्द। सरल और बिना रङ्ग का। पेशाब करते समय दिल में दाब। अर्द्ध तीव्र और जीर्ण मूत्राशय प्रदाह।

साँस-यन्त्र—सीने का संकुचन। लेटने पर घोर खाँसी। हवा भीतर खींचने पर ठण्ढी मालूम हो। स्तन ग्रंथि में दर्द जो बाहों और अंगुलियों तक बढ़े।

दिल—हृदय-प्रदेश में वातिक दर्द। दिल में एकाएक धक्के पड़ें। हृदय प्रदेश में थरथराहट और धीमी चिलक। मासिक-धर्म के पहले दिल में दर्द, और मूत्राशय दर्द के साथ सम्बन्धित हो और पेशाब करने के पहले, पेशाब करने के बाद में कम हो। हृदय में कम्प और फड़फड़ाहट जो पीठ तक जाये।

मूत्र-सम्बन्धी—मूत्राशय में सन्ताप, दाहिने गुर्दे में दर्द और मूत्र-नलिका में भी। श्लेष्मा के साथ गँदला पेशाब, थोड़ा और गहरा, तीखा; बालू की तलछट।

अंग—सारे शरीर में पक्षाघातिक अकड़न। जोड़ों के आस-पास खुजली। कन्धों के जोड़ों में, बाँह में, अँगुलियों में और साधारणतया सभी छोटे जोड़ों में गठियावात पीड़ा। पैर के नतोदर भाग में दर्द, जो घुटने तक बढ़े। हाथ की अँगुलियों में और पैर की अँगुलियों के जोड़ों में कोमलता और सूजन, जो गरम पानी से कम हो। जोड़ों पर अस्थि-गुल्म-सूजन। टहलने पर टखनों में दर्द।

चर्म—पपड़ीदार, अकौता जैसी फटन हाथों पर, सिर पर, गालों पर और उसके पहले चर्म लाली और कच्चापन आए। धीमी चिलक जिसका खुजली में अन्त हो। दाढ़ी की दाद (ऊँची शक्ति व्यवहार करें)। सारे शरीर पर खुरदरी फरन, अन्त-स्त्वक का बहुत ढीलापन। चिमड़ा, सूखा, खुजलीदार चर्म।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सुबह को दाहिनी तरफ। घटना : उठना और इधर-उधर चलना-फिरना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : लाइको०; एमोनियम० फॉस०; बेंजोइक एसिड; कैल्के०; लिथियम क्लोर (कुनैन अधिक प्रयोग करने के लक्षण, जैसे; सिर में चक्कर, भरापन) गिचपिची दृष्टि। कानों में टनटनाहट, कम्प, शारीरिक कमजोरी, पेशिक और शारीरिक शिथिलता, कोई आन्त्र आमाशयिक प्रभाव नहीं होता। नाक वेदनापूर्ण, गला जले, दन्त पीड़ा)। लिथियम लैक्टिकम (कन्धों का वात रोग और छोटे जोड़ों का जो चलने-फिरने से कम हो, आराम से बढ़े)। लिथियम बेंजोइकम (कमर में गहराई तक दर्द; पिठासे में, मूत्राशय में असुविधा। मूत्राशय में उत्तेजना। पथरी रोग, घड़ी-घड़ी पेशाब लगना। मूत्राम्ल; तलछट का कम होते जाना)। लिथियम ब्रोमेटम (मस्तिष्क में रक्ताधिक्य, संन्यास रोग के आक्रमण का भय, अनिद्रा और मिरगी)।

मात्रा—१ से ३ विचूर्ण।

लोबेलिया-इनफ्लाटा (Lobelia Inflata)
(इण्डियन टोबैको)

रक्तवाहिनी की वात नाड़ियों को शक्ति देने वाली औषधि, सभी प्रवर्द्धन क्रियाओं को बढ़ाती है, अपनी सब शक्ति फुफ्फुस-आमाशयिक स्नायु पर खर्च कर देती है और एक मन्द ढीलापन उत्पन्न कर देती है, जिसके साथ सीने और कौड़ी में दाब, साँस रुकना, मिचली और कै उत्पन्न हो जाती है।

सुस्ती, पेशियों का ढीलापन, मिचली, कै और अनपच, ऐसे संकेत हैं जो इस औषधि के प्रयोग की तरफ ध्यान दिलाते हैं। दमा और आमाशयिक विकार। हल्के रंग के मोटे लोगों के लिए विशेष तौर पर लाभदायक है। मदपान के दुष्प्रभाव (स्राव दबने से आये विकार (सल्फ०)। झिल्ली वाला गल प्रदाह। नजले वाला कामला रोग (चियोनैन्थस)।

सिर—चक्कर आए, मृत्यु भय। आमाशयिक सिर दर्द, साथ में मिचली, कै और घोर शिथिलता; कष्ट तीसरे पहर से आधी रात तक, तम्बाकू से बढ़े। धीमा, भारी दर्द।

चेहरा—ठण्डे पसीने से तर हो। एकाएक रंग पीला होना।

कान—स्राव दबने से या अकौता रोग के कारण आया बहरापन। गले में गोली लगने जैसा दर्द शुरू हो।

मुँह—लार अधिक बहना, तीखा, जलता स्वाद, पारा जैसा स्वाद, चिमड़ा श्लेष्मा, जबान पर सफेद मैल।

आमाशय—अम्लता, वादी, खाने के बाद साँस फूलना। अधिक लार बहने के साथ गला जलन। तीव्र मिचली और कै। गर्भकालीन वमन। कौड़ी पर गशी और कमजोरी। अच्छी भूख के साथ अधिक लार बहना। अधिक पसीना और शिथिलता। तम्बाकू की गन्ध या स्वाद सहन न हो। तीखा, जलन, स्वाद, तेजाबीपन, साथ में पेट के तल भाग में संकुचन। बादी चीज खाने के बाद साँस फूले। गला जलन।

साँस-यन्त्र—सीने के सिकुड़ने से साँस कष्ट, जोर पड़ने से बढ़े। सीने में दाब और बोझ का संवेदन, तेज चलने से कम हो। मालूम पड़े कि दिल रुक जायेगा। दमा, कमजोरी के साथ जो पेट की कौड़ी मे मालूम हो, इसके पहले सारे शरीर पर खुजली हो। ऐंठन, टनकन खाँसी, छोटी साँस, गला पकड़ ले। वृद्धावस्था में फेफड़ों का फैल जाना।

पीठ—त्रिकास्थि में दर्द, जरा-सा स्पर्श सहन न हो। आगे झुक कर बैठे।

मूत्र—गहरा लाल रङ्ग, मात्रा में अधिक, लाल तलछट।

चर्म—तीव्र मिचली के साथ काँटे गड़ने जैसी खुजली।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** तम्बाकू, तीसरे पहर, जरा-सा हिलने से, ठंडक खासकर ठंडे पानी से नहाने पर। **घटना :** तेज टहलने से, (सीना दर्द), शाम के निकट और हल्के ताप से।

सम्बन्ध—**क्रियानाशक :** इपिकाक।

तुलना कीजिए : टैबेकम : आर्स०, टार्ट एमे०; वेरेट्रम, रोजा०।

लोबेलिया सिफिलिटिका या सेरूलिया (छींक वाले इन्फ्लुएञ्जा का पूर्ण चित्र दर्शाती है, जिसमें नाक के छिद्र का पिछला भाग, तालु मुँह का भीतरी भाग भी रोगग्रस्त हो। बहुत उदासी। माथे में आँखों के ऊपर दर्द, आँतों में दर्द, अफरा बाद में अधिक पानी-सा मल, साथ में कूंथन और गुदा में दर्द। घुटनों में दर्द। तलवों में चुभन। सीने के निचले भाग में बहुत दाब, मानो वहाँ हवा नहीं पहुँच सकती हो। सीने में बायीं तरफ की छोटी पसली के नीचे दर्द। सूखी खाँसी, साँस कठिन। नाक की जड़ पर धीमी टीस। कण्ठकर्णी नली का नजला। तिल्ली के पिछले भाग में दर्द)। **लोबेलिया एरिनस** (सांघातिक वृद्धियाँ, अति तीव्र, अन्त्रच्छदा कला का बढ़ जाना, लेसदार कर्कट; उदर में पेंच जैसा मरोड़, चर्म का बहुत सूखापन, नाक और मुख गह्वर की श्लैष्मिक झिल्ली का बहुत सूखापन, ब्रैण्डी से अनिच्छा; पहले अँगुलियों के सिरे सूखें, अकौता के चकत्तों से ढँके हों। चेहरे का सांघातिक रोग। अन्तस्त्वक प्रदाह)।

मात्रा—अरिष्ट से ३० शक्ति। बाहरी प्रयोग से ओक विष नष्ट होता है। अकसर **लोबेलिया एसेटम** दूसरी औषधियों की अपेक्षा उत्तम लाभ देती है। लोबेलिया का इन्जेक्शन द्वारा प्रयोग करने से यह औषधि ठीक वैसे ही काम करती है जैसा कि झिल्ली प्रदाह के विषनाशक संक्रमण स्थान पर काम करती है और शरीर को आगामी संक्रमण से बचाने की शक्ति प्रदान करती है। (एफ. एलिंग उड)।

लोबेलिया परप्युरेसेंस (Lobelia Purpurascens)

(परपुल लोबेलिया)

सभी जीवन शक्तियों का और स्नायुमंडल का घोर शिथिल पड़ना, साँस यन्त्र का पक्षाघात। इन्फ्लुएन्जा की स्नायविक शिथिलता। तन्द्रा। जबान सफेद और लकवाग्रस्त।

सिर—अव्यवस्थित और उदास। मिचली, चक्कर के साथ सिर दर्द, खासकर भौं के बीच में। आँखें खोलकर न रख सके, पलकों का आक्षेपिक बन्द होना।

छली साँस, हृदय और फुफ्फुस कार्यहीन मालूम पड़ें, धीमा साँस।
ोल की धमक के समान सुनाई दे।
ँखों को खोलकर रखना असम्भव। निद्रालु।
ुलना कीजिये : बैप्टिशिया, लोबेलिया, कार्डिनैलिस (कमजोरी,
अङ्गों का; संकुचित साँस, फुफ्फुसावरण प्रदाह, लम्बी साँस लेने पर
के साथ दर्द। बायें फुफ्फुस में दर्द, बीच-बीच में दिन के समय

शक्ति।

यम टेमुलेण्टम (Lolium Temulentum)

(डारनेल)

्रसी और लकवा रोग में उपयोग में लाई गई है। पतनावस्था में

क और उदास; अव्यवस्थित। चक्कर, आँखें बन्द करना
भारी। कान में आवाजें।
-मिचली, कै। आमाशय के गड्ढे में और उदर में दर्द। तीव्र

ड़ाती चाल। सभी अंगों का कम्प। अंग शक्तिहीनता। पिंडली
मानो डोरी में बँधी हो। सिर ठण्डे। बाहों और टाँगों की आक्षे-
ख न सके, पानी भरा गिलास न पकड़ सके। लकवा रोग में हाथों

ुलना कीजिए : सिकेल, लैथाइरस, ऐस्ट्राग्रैलस।
शक्ति।

जाइलोस्टियम (Lonicera Xylosteum)

(फ्लाई-ऊडबाइन)

क्षण। मूत्रविकार-सम्बन्धी आक्षेप। ओजोमेह। उपदंश।
और सीने में रक्ताधिक्य, तन्द्रा। एक पुतली का सिकुड़ना और
। प्रगाढ़ निद्रा, आँखें आधी खुलीं, चेहरा लाल।
में झटके आना। पूरी शरीर का काँपना। तीव्र आक्षेप। हाथ-पैर,
ानो लकवा हो गया है। हाथ-पाँव पर ठण्डा पसीना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लोनिसेरा पेरिसाइलमेनम—हनीसकल—(चिड़-चिड़ापन, कभी-कभी भड़क उठना) क्रोकस सैटाइवा।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

ल्युपुलस—ह्युमुलम (**Lupulus-Humulus**)

(हॉप्स)

स्नायुमंडल की छिन्न अवस्था की उत्तम औषधि जब साथ में मिचली, चक्कर और सिर दर्द हो जो रात भर रङ्गरेलियाँ मनाने के बाद आया हो। शिशु कामला रोग। मूत्र मार्ग में जलन। प्रायः सभी पेशियों में खींचन और अकड़न। स्नायविक कम्प, मद्पायियों की अनिद्रा और प्रलाप। चक्कर और जड़ता। धीमी नाड़ी। पसीना अधिक, लसीला, चिकना।

सिर—दूषित; चौकन्ना। अधिक उत्तेजित। धीमा; भारी सिर दर्द चक्कर के साथ। प्रत्येक पेशी में खींचन और फड़कन।

नींद—दिन में औंघाई आना। घोर निद्रा।

पुरुष—पीड़ाजनक लिंगोत्तेजना। वीर्य स्खलन जो काम-दौर्बल्य और हस्तमैथुन पर निर्धारित हो। धातु क्षीणता।

चर्म—चेहरे पर आरक्त ज्वर की तरह दाने। मालूम हो कि चर्म के नीचे कीड़े रेंग रहे हैं, पपड़ीदार मालूम हों, खाल छुटे।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कॉफिया; विनेगर।

तुलना कीजिए : नक्स०, आर्टिका इयुरेन्स, कैनाबिस०।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति तक। ल्युपुलिन १x विचूर्ण (धातु क्षीणता में अति उत्तम लाभकारी। वेदनापूर्ण कर्कट में लगाने के काम में आती है)।

लाइकोपोडियम (**Lycopodium**)

(क्लब मॉस)

जब तक रेणु कुचल नहीं दिए जाते यह औषधि गतिहीन रहती है। इसके विचित्र औषधि-गुण तभी स्पष्ट होते हैं जब इसका विचूर्ण या मिश्रण करके इसको सूक्ष्म बना दिया जाता है।

उन सभी अवस्थाओं में जहाँ लाइकोपोडियम लाभदायक सिद्ध होती है कुछ-न-कुछ मूत्र या पाचन बाधा उपस्थित रहती है। ग्रावोल द्वारा कार्बोनाइट्रोजनॉयड प्रकृति के अनुकूल है; रक्त में मूत्राम्ल की अधिकता। लाइकोपोडियम विशेष तौर पर

उन रोगों में लाभदायक है जो धीरे-धीरे बढ़ते हैं। इन्द्रियों की शक्तियों में दुर्बलता और साथ में पाचन शक्ति का लोप होना, जहाँ जिगर की क्रिया में अति गड़बड़ी हो। अशक्ति। पोषण दोष। कफ प्रकृति वालों का कोमल स्वभाव जिनमें नजले का झुकाव हो। वृद्ध लोग, जहाँ चर्म पर पीले धब्बे दिखाई दें, मटिआले रङ्ग का चेहरा, मूत्राम्ल विकार इत्यादि और इसके अतिरिक्त अकाल प्रौढ़। दुर्बल बालकों के रोग। लक्षण विशेष रूप से दाहिनी से बायीं तरफ जाते हैं, खासकर दाहिनी तरफ के रोग और लगभग ४ बजे शाम से ८ बजे रात तक अधिक होना। गुर्दा रोग में, पेशाब में लाल बालू, पीठ में दर्द, गुर्दा प्रदेश में भी दर्द, पेशाब करने के पहले बढ़े। ठण्ढी चीज पीना सहन न हो, सभी चीजें गरम चाहे। तीखी बुद्धि वालों के लिए, लेकिन दुर्बल पैशिक शक्ति वालों के लिए उत्तम लाभदायक है। गहराई तक पहुँचा हुआ, प्रगतिशील, पुराना रोग। कर्कट रोग। दुबलापन। सुबह की कमजोरी। ग्रन्थि स्राव। (मेदमय) को ठीक करने का स्पष्ट प्रभाव। वृद्धावस्था समय से पहले आ जाय। जिगर रोग में जलोदर। लाइको० का रोगी पतला चुचुका, अफरा से पीड़ित और सूखा होता है। जीवन ताप की कमी, रक्त-संचार की कमी, ठंडे हाथ-पाँव, दर्द तेजी से आवे और गायब हो जाये। आवाज और गन्ध असह्य।

मन—विषादग्रस्त, अकेले रहना चाहे। छोटी चीजें भी उत्तेजित करें। अति स्नायविकता। नया काम करने से घृणा। रोगी अवस्था में जिद्दी और घमण्डी। आत्मविश्वासहीनता। भोजन करने में जल्दबाज। कामों के बोझ से चूर-चूर हो जाने का लगातार भय। भयभीत। दुर्बल स्मरण-शक्ति, अव्यवस्थित विचार, अक्षर और अक्षरखंड को गलत बोले या लिखे। मस्तिष्क शक्ति दुर्बल होते जाना। (एनाकार्डियम, फास्फोरस, बैराइटा०) कोई नई वस्तु देखना सहन न करे। जो लिखे उसको पढ़ न सके। सुबह जागने पर शोकग्रस्त।

सिर—बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के सिर हिलाये। चेहरा और मुँह ऐंठा करे। चाँद पर दाब-दर्द, ४ बजे शाम से ८ बजे रात तक अधिक हो, और लेटे या झुकने से, अगर समय पर भोजन न मिले। (कैक्टस)। प्रत्येक खाँसी के दौरे के बाद थरथराहट, सिर-दर्द। जुकाम के तीव्र आक्रमण की अवस्था में आँखों के ऊपर दर्द जो कपड़ा हटाने से कम हो (सल्फर)। सुबह उठने पर चक्कर आवे। कनपटी में दर्द मानो एक दूसरे की तरफ पेंच कसी जा रही हों। पिछले भाग में फटने जैसा दर्द; जो ताजी हवा में कम रहे। बाल बहुत झड़ना। अकौता, कानों के पीछे तर पसीजन। माथे पर गहरी लकीरें। समय से पहले गंजा होना और बालों का सफेद होना।

आँखें—पलकों पर भीतर कोनों के पास बिलनी (अंजनहारी) निकलना। दिन में अंधापन (बोथ्रॉप्स)। रतौंधी विशेषरूप से। सब चीजों का केवल आधा भाग देखे, पलकों की लाली और पकनेवाला घाव। सोते में आँखें आधी खुली हों।

कान—गाढ़ा, पीला, बदबूदार स्राव। कानों के आसपास और पीछे अकौता। कर्ण-प्रदाह और बहरापन, टनटनाहट के साथ या बिना टनटनाहट के आरक्त ज्वर के बाद। ऊँचा सुनने के समय गुनगुनाहट और गर्जन, प्रत्येक आवाज कानों में विचित्र रूप से गूँजे।

नाक—सूँघने की शक्ति अति तीव्र। पिछला भाग सूखा जान पड़े। अगले भाग में थोड़ा, छीलने वाला स्राव। नथनों में घाव। खुरंड और चिमड़े टुकड़े (कैली बाई०, ट्यूक्रियम) निकले। बहता जुकाम। नाक बन्द लगे। नाक से बोलना, बच्चा नाक खुजलाते हुए नींद से जाग जाए। नासापक्ष की पंखे जैसी चाल (कैली ब्रोमेटम, फास्फो०)।

चेहरा—चेहरे का रंग हल्का, भूरा, पीला, आँखों के चारों तरफ नीले चक्र, मुरझाया, सूखा और दुर्बल ताँबे के रङ्ग के दाने। आंत्र ज्वर में निचले जबड़े का लटक जाना (लैके, ओपियम)। खुजली, पपड़ी, दाद, चेहरे और मुँह के किनारों पर।

मुँह—दाँत स्पर्श पर अति दर्द हो। गले में सूजन के साथ दाँत दर्द, सेंकने से कम हो। बिना प्यास के मुँह और जबान का सूखापन। जबान सूखी, काली, चिटकी, सूजी हुई, आगे-पीछे हिले। मुँह से पानी गिरे। जबान पर छाले। मुँह से दुर्गन्ध निकले।

गला—बिना प्यास गला सूखा। खाना और पानी नाक से ऊपर आवे। गले की सूजन साथ में निगलने पर गड़न जो गरम चीज से कम हो। तालुमूल की सूजन और पकन। तालुमूल की पकन दाहिनी तरफ से शुरू हो। झिल्ली प्रदाह, चर्बी दाहिनी तरफ से जमा होना शुरू होकर बायीं तरफ जाये। ठंढी चीज पीने से बढ़े। स्वर-तन्तुओं का पकना। क्षय सम्बन्धी स्वर-यन्त्र प्रदाह, खासकर जब पीब आनी शुरू हो गई हो।

आमाशय—मन्दाग्नि रोग में जो मैदे की बनी चीजें और खमीर बनाने वाले भोजन, बन्द गोभी, सेम इत्यादि फलियाँ खाने से पैदा हो। अति सूखा। रोटी इत्यादि से घृणा। मीठी चीज खाने की इच्छा। भोजन खट्टा लगे। खट्टी डकार, पाचन क्रिया अति दुर्बल। प्रचण्ड भूख, पेट के फूलने के साथ। खाने के बाद पेट फूलना और मुँह में कड़वापन। जरा-सा खाने से पेट में अफरा मालूम हो। केकड़े न खा सके। वादी की गड़गड़ाहट (चायना, कार्बोवेज)। रात को भूख लगने की संवेदना के साथ जाग जायें। हिचकी अपूर्ण जलन डकार केवल गलकोष तक उठे और वहाँ घण्टों तक जलन होती रहे। गरम खाना और पीना चाहे। संवेदना, रात में अधिक।

उदर—हल्का भोजन करते ही तुरन्त उदर फूल जाये। उदर में बराबर खमीर बनने की संवेदना। मानो खमीर पक रहा है। ऊपरी भाग में बाँयीं तरफ; दाहिनी तरफ आँत उतरना। जिगर कोमल। उदर पर भूरे धब्बे। जिगर रोग के कारण जलोदर। जिगर प्रदाह, जिगर का क्षय। उदर के निचले भाग में दर्द दाहिनी तरफ से बायीं तरफ को जाये।

मल—दस्त। आँतों की कार्यहीनता। असफल वेग। मल कड़ा, कठिन छोटा, अपूर्ण। बवासीर, स्पर्श से अति पीड़ा, टीस (म्यूरियेटिकम एसिड)।

मूत्र—मूत्र स्खलन के पहले पीठ में दर्द, स्खलन के बाद बन्द हो जाये, उतरने में मन्द गति, काँखना पड़े। पेशाब रुकना। रात में अनेक बार पेशाब लगना। भारी, लाल तलछट। बच्चा पेशाब करने के पहले रोये। (बोरैक्स)।

पुरुष—लिंग में उत्तेजनाहीनता, नपुंसकता। मूत्र-ग्रन्थियों का बढ़ना, लिंग पर मांसार्बुद (कैलेडि०; सैले०; ऐगनस कैस्टस)। शीघ्र पतन।

स्त्री—मासिक-धर्म बहुत देर से आये, बहुत दिनों तक जारी रहे, अधिक मात्रा में। योनि सूखी। मैथुन पीड़ामय। दाहिने डिम्बाशय में दर्द। योनि घुण्डी की नसों का फूलना। प्रदर तेजाबी, योनि में जलन के साथ। मलत्याग काल में जननेन्द्रिय से रक्तस्राव।

श्वास-यन्त्र—गुदगुदीदार खाँसी। साँस-कष्ट। सीने में तनाव वाला; सकुचित, जलन, पीड़ा। पहाड़ी से नीचे उतरते समय खाँसी बढ़े। खाँसी गहरी, खोखली। बलगम भूरा, गाढ़ा, रक्तमयी, मवादी, नमकीन (आर्सेनिक, फॉस०, पल्से०)। रात की खाँसी, गन्धक के धुएँ जैसी गुदगुदी होकर उठे। बच्चों में सीने का नजला, श्लेष्मा से भरा मालूम दे, लड़खड़ाये। उपेक्षित फुफ्फुस प्रदाह, अधिक साँस-कष्ट के साथ, नाक के पर्दे की झिल्ली का उधड़ना और बलगम की खड़खड़ाहट।

दिल—धमनी अर्बुद (बैराइटा कार्ब०)। बृहद्धमनी के रोग। रात में धड़कन। बायीं करवट न लेट सके।

पीठ—स्कन्धास्थियों के बीच में जलते कोयले जैसी जलन। पिठासे में दर्द।

अंग—सुन्न, अंगों में खींच और फटन; खासकर आराम के समय या रात में। बाहों में भारीपन। कन्धों और केहुनी के जोड़ों में फटन। एक पैर गरम, दूसरा ठंडा। जीर्ण गठिया, जोड़ों में खड़िया मिट्टी जैसा जमाव। पैरों से अधिक पसीना बहना। एड़ी में कंकड़ पर चलने जैसी गड़न। तलवों पर दर्द वाले घट्ठे, पैर के अँगूठे और अँगुलियाँ सिकुड़ी हों। दाहिनी तरफ अधिक पीड़ा, गृध्रसी वाली करवट न लेट सके। हाथ और पैर ठिठुरे हुए। दाहिना पैर गरम, बायाँ ठण्डा। रात को बिस्तर में टखनों और अँगुलियों में ऐंठन। अंग सुन्न हो जाये। फड़कना और झटका आना।

ज्वर—३ से ४ बजे तीसरे पहर जाड़ा, बाद में पसीना। बर्फीली ठण्डक बरफ पर लेटा मालूम हो। शीत के एक आक्रमण के बाद दूसरा (कॅल्के०, साइली०, हीपर)।

नींद—दिन में औंघाई। सोते में चिहुँकना। अकस्मात् घटनाओं के स्वप्न देखना।

चर्म—घाव बनें। चर्म के नीचे फोड़े, सेंकने से कष्ट बढ़े। जुलपित्ती, गरमी से बढ़े। तीव्र खुजली, दरारेदार फरन। मुँहासे। जीर्ण अकौता जो मूत्र बाधा, आमाशयिक विकार और जिगर रोग से सम्बन्धित हो, सरलता से खून बहे। चर्म मोटा और कड़ा हो जाये। शिराओं का सिकुड़ना और गठीलापन, जन्म दाग, उत्थापक अर्बुद। कत्थई धब्बे, बादामी रंग के चकत्ते; चेहरे और नाक की बायीं तरफ अधिक। सूखा, सिकुड़ा हुआ चर्म खासकर हथेली का; बाल समय से पूर्व भूरे हो जायें। शोथ रोग। बदबूदार स्राव, लसीला और दुर्गन्धित पसीना; खासकर पैरों और काखों से। अपरस।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दाहिनी तरफ से बाँयीं तरफ, ऊपर से नीचे की तरफ, ४ बजे शाम से ८ बजे रात तक, गरमी या गरम कमरे में, गरम हवा, बिस्तर से। सेंकने से, गले और पेट के लक्षण को छोड़कर जो गरम चीज पीने से कम होते हैं। घटना : हरकत से, आधी रात के बाद, गरम चीज खाने और पीने से, ठंढक से, ओढ़ना हटाने से।

सम्बन्ध—पूरक : लाइको०, कॅल्के० और सल्फर के बाद विशेष लाभदायक होता है। आयोड०, ग्रैफाइटिस, लैके०; चेलिडोनि०।

क्रियानाशक : कॅम्फो०, पल्से०, कॉस्टि०।

तुलना कीजिये : कार्बो नाइट्रो (जेनॉयड प्रकृति : सल्फर, रस०, अर्टिका, मर्कु०, हीपर, ऐलुमिना), लाइको० ही केवल ऐसी वनस्पति है जो एलुमिनम लेती है। (टी० एफ० एलेन) एण्टि० क्रू.ड०, नेट्र म्यूर, ब्रायो०, नक्स०, बोथ्रॉप्स (दिन में अन्धापन, सूरज निकलने के बाद देखना कठिन, दाहिने पैर के अँगूठे में दर्द, प्लम्बैगो लिटोरैलिस—एक ब्रैजिल का पौधा—(लाल पेशाब के साथ कब्ज, गुर्दों में, जोड़ों में और प्रायः सारे शरीर में दर्द, दूधिया लार, मुँह में घाव), अनपच रोग में लाइको के बाद हाइड्रैस्टि० अच्छा काम करती है।

मात्रा—नीचे की शक्ति और सबसे ऊँची शक्ति दोनों ही से उत्तम लाभ हुआ है। उत्सर्जन क्रिया में सहायता के लिए अरिष्ट की दूसरी या तीसरी शक्ति की कुछ बूँदें दिन में तीन बार देना चाहिए। इससे लाभ हुआ है, नहीं तो ६ से २०० शक्ति और इससे ऊँची शक्ति भी कुछ समय बिताने पर।

———

लाइकोपस वर्जिनिकस (**Lycopus Virginicus**)

(बगल-वीड)

रक्तस्राव को घटाती है, हृदय गति को कम करती है और हृदय के अलिंदों को और खासकर निलय की संकुचन क्रिया के समय को बढ़ाती है। अप्रबल रक्त (एड्रीनैलीन ६x)।

हृदय रोग की औषधि और बहिःनिसृत चक्षु गोलक तथा हृदय-स्पन्दन के साथ गलगण्ड में और बवासीर के रक्तस्राव में उपयोगी है। दिल की तीव्र धड़कन कुछ-न-कुछ दर्द के साथ की अवस्था में सांघातिक है। हृद्पट के रोग के कारण थूकना। विषाक्त गलगण्ड में लाभदायक है, अगर चीरा लगवाने से पहले उपयोग की जाये। मात्रा, अरिष्ट की बूँद (बीबे)।

सिर—अगले भाग का दर्द, अगले ऊँचे भाग में अधिक अक्सर बाद में, हृदय गति कष्टपूर्ण, नकसीर।

आँखें—उभरी हुईं, दाब बाहर की तरफ धड़कन के साथ। चक्षुगह्वर के ऊपरी भाग में दर्द, अण्डकोष के टीसन के साथ।

मुँह—निचले चवर्ण दाँतों में दर्द।

दिल—धूम्रपान वालों के हृदय की तेज गति। दिल के अगले भाग में दर्द, संकुचन, कोमलता, नाड़ी दुर्बल, क्रमभ्रष्ट, रुक-रुक कर चले, कम्पन के साथ, तीव्र नील रोग। स्नायविक उत्तेजना से आई धड़कन और दिल की चारों तरफ दाब। वात रोग की तरह दर्द, उड़ता हुआ दर्द, जो हृदय रोग से सम्बन्धित हो। हृदय सम्बन्धी दमा (सुम्बुल)।

श्वास-यन्त्र—साँय-साँय की आवाज। **रक्त थूक के साथ खाँसी**, रक्तस्राव कम, लेकिन बार-बार।

मूत्र—अधिक साफ रंग का, पानी जैसा मूत्र, खासकर जब हृदयगति उत्तेजित हो, कम मात्रा में भी। मूत्राशय खाली होने पर तना हुआ मालूम दे। मूत्रमेह। अण्डकोष में दर्द।

मलाशय—मलाशय से रक्तस्राव। बवासीर।

नींद—असाधारण तीव्र, पर दुर्बल रक्त-संचार के साथ अनिद्रा और रोगग्रस्त जागरण।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : एफेड्रा-टॉम्स्टर्स टी—(वहिःनिसृत चक्षुगोलक तथा हृद्स्पन्दन के साथ गलगण्ड रोग, तीव्र धड़कन के साथ आँखें बाहर को ठेली जान पड़ें), फ्युकस, स्पार्टीन क्रोटेगस, एड्रीनैलिन ६x।

मात्रा—१ से ३० शक्ति।

मेग्नेशिया कार्बोनिका (Magnesia Carbonica)

(कार्बोनेट ऑफ मैग्नेशिया)

आमाशयिक—आंत्रिक नजला, जब कि तेजाबी अवस्था भी स्पष्ट हो। अक्सर उन लोगों के लिए लाभदायक है जो इस औषधि को अपने पेट को गरम बनाने के लिए खाते रहे हैं। बच्चों के रोगों में बहुधा उपयोगी है; सारा शरीर खट्टी गन्ध करे, फोड़े निकलने की प्रवृत्ति। अस्वस्थ, शक्तिहीन स्त्रियाँ जिन्हें गर्भाशयिक और वयः-सन्धिकालीन कष्ट हों। कई भागों में सुन्नता और तनाव, स्नायविक शिथिलता। छुआ जाना और आवाज सहन न हो। ऊर्ध्व हनु-कोटर के रोग। धक्के, आघात, मानसिक शोक के असर। छुआ जाना असह्य, छुए जाने से रोगी चौंक उठता है। ठण्डी हवा या ठण्डा मौसम भी सहन नहीं होता। अधिक चिन्ता के उपद्रव, जब स्नायविक थकान के साथ कब्ज और शरीर में भारीपन भी हो। ऊर्ध्व हनु-कोटर के रोग। धक्के, आघात; मानसिक शोक के असर। भारीपन तीव्र। स्नायविक दर्द।

सिर—जिस करवट लेटे उसी करवट के सिर में चुभने जैसा दर्द, मानो बाल खींचे जा रहे हों, मानसिक परिश्रम से अधिक हो। तर मौसम में सिर की खाल की खुजली अधिक हो। दाहिनी आँख के घेरे के किनारे के ऊपर दर्द। आँखों के सामने काली तिल जैसी दिखाई दे।

कान—कम सुनाई देना। बहरापन एकाएक हो और फिर कम हो जाये। बाहरी कान सुन्न, बिचले कान में तनाव का संवेदन। मन्द टनटनाहट।

चेहरा—एक तरफ फटने जैसा दर्द, चुप रहने से बढ़े, चलते-फिरते रहना आवश्यक। दाँत दर्द, खासकर गर्भकाल में, रात को, ठण्डक से और शान्त रहने से अधिक हो। दाँत बहुत लम्बे मालूम हों। बुद्धि दाढ़ निकलना (चिरैन्थस)। कपोलास्थि में दर्द जो आराम से, रात में अधिक हो। कपोलास्थि की सूजन, टपकन, ठण्डी हवा से बढ़े।

मुँह—रात में सूखा स्वाद। छालेदार दाने; खूनी लार। गले में गड़न दर्द, घृणित मटर के रंग के कण खँखारना।

आमाशय—फल, तेजाबी चीज, वनस्पति खाने की इच्छा। डकार खट्टी कड़वे पानी की कै। मांस की प्रबल इच्छा।

उदर—गड़गड़ाहट, बुदबुदाहट। पेड़ू की तरफ दबाव। बहुत भारीपन, संकुचन। दाहिने कोख में चुटकी बींधने जैसी दर्द।

मल—मल त्यागने से पहले ऐंठन। आंत्रशूल। हरा, पानी-सा झागदार, तालाब की काई की तरह हरा। खूनी श्लैष्मिक मल। दूध पीने वाले बच्चों में

अनपचे दूध का मल। खट्टी गंध ऐंठन के साथ (रियूम)। मानसिक आघात या स्नायविक श्रम के बाद कब्ज।

स्त्री—मासिक धर्म दीख पड़ने के पहले गल-प्रदाह। मासिक धर्म के पहले क्षत का जुकाम और नाक बन्द होना। मासिक धर्म बहुत देर में और कम मात्रा में, गाढ़ा, गहरे रंग के पीब की तरह, श्लैष्मिक प्रदर। मासिक स्राव केवल सोने में, रात को अधिक (एमो०, म्यूर) या जब लेटी हो। टहलने से कम हो।

साँस-यन्त्र—गुदगुदीदार खाँसी, नमकीन, खूनी बलगम के साथ। सीने में संकुचन दर्द, साँस कष्ट के साथ। हरकत के समय सीने में वेदना।

अंग—कन्धों में मोच जैसी फटन। दाहिना कन्धा न उठा सके। (सैंग्वि०) सारा शरीर थका और वेदनापूर्ण जान पड़े, खासकर टाँगें और पैर, घुटने के मोड़ में सूजन।

चर्म—मटियाला, रक्तहीन और सूखी खाल की तरह, सिकुड़ा हुआ। हाथों और अँगुलियों पर खाज वाले रसदाने। चर्म के नीचे कड़ी गुठलियाँ, घाव, ठंडक असह्य।

ज्वर—शाम को शीत आये। रात में ज्वर। खट्टा, चिकना पसीना।

नींद—अप्रफुल्लित, जागने पर सोने जाने की अपेक्षा अधिक थकावट।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बिस्तर की गरमी से, ताप परिवर्तन से, ठण्डी हवा या मौसम, हर तीन हफ्ते पर, आराम। घटना : गरम हवा खुली हवा में टहलना।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : आर्स०; मर्क०।

पूरक : कैमो०।

तुलना कीजिये : रियुम, क्रियोजो०, एलोज, चिरैन्थस—वाल फ्लावर—(बहरापन, कान बहना, बुद्धि दाँत निकलने की उत्तेजना से रात में नाक बन्द हो जाय)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

मग्नेशिया म्युरियेटिका (Magnesia muriatica)

(म्यूरियेट ऑफ मग्नेशिया)

जिगर की औषधि, जबकि साथ में विशेष प्रकार का कब्ज भी हो। जीर्ण जिगर रोग, कोमलता और दर्द के साथ। दर्द रीढ़ और कौड़ी तक बढ़े, भोजन करने के बाद अधिक हो। खासकर उन स्त्रियों के रोगों के लिए अनुकूल है जिनको बहुत दिनों से पाचन-विकार और गर्भाशय रोग रहा हो। बच्चे जो दूध न पचा सकें। समुद्र स्नान का बुरा असर।

सिर—आवाज असह्य, फट जाने जैसा सिर दर्द, जो हरकत से, खुली हवा से बढ़े; दाब से और गरम कपड़ा लपेटने से कम रहे (साइलीशिया, स्ट्रानशियाना कार्बोनिका)। सिर पर अधिक पसीना (कैल्के, साइलि०)। चेहरे का स्नायुशूल; मन्द टीस, तर मौसम में, जरा भी बाहरी हवा से, अधिक से कम हो।

नाक—नथने घायल। जुकाम। नाक बन्द और बहती हो। जुकाम के बाद सूँघने और चखने की अक्षमता। लेट न सके। मुँह से साँस ले।

मुँह—होठों पर छाले। मसूढ़े सूजे हुए, सरलता से खून बहे। जबान जली हुई और झुलसी मालूम हो। गला सूखा, आवाज में भारीपन के साथ।

आमाशय—भूख कम, मुँह का स्वाद खराब। सड़े अण्डों की तरह डकार। मुँह में बराबर सफेद झाग आया करे। दूध न पचा सके। बिना उदर पेशियों के दबाये पेशाब न निकले।

उदर—जिगर में दाब दर्द, जो दाहिनी तरफ लेटने से बढ़े। उदर फूलने के साथ जिगर का बढ़ जाना; पीली जबान, पैदाइशी आँत उतरना जो अण्डकोष में गिरे। पेशाब करने के लिए उदर पेशियों का व्यवहार करना पड़े।

मूत्र—पेशाब करने में कठिनाई। मूत्राशय केवल अधिक काँखने और दबाने से खाली किया जा सके।

आँत—बच्चों के दाँत निकलने के समय कब्ज होना, बहुत थोड़ा मल निकले, मल गठीला, भेंड़ की लेंड़ी की तरह, गुदा के किनारे पर बिखर जाये। वेदनापूर्ण बवासीर।

स्त्री—मासिक-धर्म काला, थक्केदार। पीठ और जाँघों में दर्द। अप्राकृतिक रक्तस्राव, रात में अधिक। प्रत्येक मासिक काल में अति उत्तेजना। प्रत्येक मल त्यागने के समय और व्यायाम के बाद। प्रदर स्राव। बरौनी पर दाद, चेहरे और माथे पर दाने, मासिक-धर्म के पहले अधिक।

दिल—धड़कन और हृदय पीड़ा, बैठने के समय, चलने-फिरने से कम, जेल्सेमि० जिगर के बढ़ने के साथ हृदय की कार्यभ्रष्टता।

साँस-यन्त्र—आक्षेपिक, सूखी खाँसी, रात के अगले भाग में अधिक, सीने में जलन और दर्द के साथ।

अंग—पीठ और नितम्ब में दर्द, बाँहों और टाँगों में। सुबह टहलने के समय बाँहें सुन्न हो जायें।

नींद—दिन में नींद आवे, रात में गरमी और धक्के के कारण बेचैनी। उत्सुक स्वप्न।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : खाने के तुरन्त बाद, दाहिनी करवट लेटने से, समुद्र में नहाने से। घटना : दाब से, हरकत से, खुली हवा में, सिवाय सिर दर्द के।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कैम्फोरा, कैमो० ।

तुलना कीजिए : नैट्र० म्यूर; पल्से०, सिपिया, एमो० म्यु०, नैस्टरटियम ऐक्वैटिकम—वाटर क्रेस–(शीताद रोग में और कब्ज में लाभदायक, जो पेशाब में रुकावट से सम्बन्धित हो, कामोत्तेजक मानी जाती है । तम्बाकू के नशे को मारती है और स्नायु विकार में शान्तिप्रद है, स्नायु-दौर्बल्य, गुल्म वायु । जिगर की सख्ती सख्ती (क्षय) और जलोदर ।

मात्रा—अरिष्ट की ५ बूँद । ३ से २०० शक्ति ।

मैग्नेशिया फॉस्फोरिका (**Magnesia Phosphorica**)

(फॉस्फेट ऑफ मैग्नेशिया)

महान् आक्षेप-निवारक औषधि है । फैलने वाले दर्द के साथ पेशियों में ऐंठन । स्नायुशूल जो सेंकने से कम हो । विशेषकर थके, शक्तिहीन, शिथिल लोगों के लिए उपयोगी है । मानसिक परिश्रम करने की इच्छा न हो । घेघा ।

मन—दर्द के कारण सदा पीड़ित रहे । साफ-साफ सोच न सके । अनपच के कारण नींद न आवे ।

सिर—हिलने से चक्कर आवे, आँख बन्द करने पर आगे को गिरे । खुली हवा में टहलने पर कम हो । मानसिक परिश्रम के बाद टीस हो; गनगनाहट के साथ, गरम से कम (साइली०) । ऐसा लगे कि अन्दर का पदार्थ तरल हो गया है, मानो मस्तिष्क की वस्तुएँ जगह बदल रही हों; जैसे सिर पर टोपी रखी हो ।

आँखें—घेरे के ऊपरी भाग में दर्द, दाहिनी तरफ अधिक, बाहरी सेंक से कम हो । आँसू अधिक बहे । पलक फड़के । चक्षुगोलक का हिलना, वक्रदृष्टि, ऊपरी पलकों का पैशिक कार्यहीनता से नीचे गिरना । आँखें गरम थकी हुईं, धुँधलापन, रंगीन रोशनी दिखाई देना ।

कान—तीव्र स्नायुशूल, दाहिने कान के पीछे अधिक, ठण्डी हवा में जाने से बढ़े और चेहरा तथा गर्दन को ठंड पानी में धोने पर ।

मुँह—दाँत दर्द, गरमी और गरम तरल पदार्थ से कम हो । चेहरे, गले और गरदन की ग्रन्थियों की सूजन और जबान की सूजन के साथ दाँतों के घाव, पकन । दाँत निकलने वाले बच्चों के रोग । बिना ज्वर के आक्षेप ।

गला—दर्द और तनाव, खासकर दाहिनी तरफ; रोगग्रस्त भाग फूला मालूम पड़े, साथ में गनगनाहट और सारे शरीर में टीस ।

पेट—हिचकी । ओकाई रात-दिन । बहुत ठण्डी चीज पीने को प्यास ।

उदर—उदरशूल; जो दाब से कम हो। वायुशूल, रोगी को दोहरा होना पड़े, मलने, सेंकने, दाब से कम हो; साथ से डकारें आवें। मगर उससे आराम न मिले। फूला हुआ उदर में भरापन मालूम हो; कपड़ा ढीला करना पड़े, टहलना पड़े और बराबर वायुस्खलन होता रहे। वादी। अनपच के कारण वात रोगी में कब्ज होना।

स्त्री—मासिक-धर्म शूल। झिल्लीदार, कष्टदायक मासिक-धर्म। मासिक-धर्म बहुत पहले, गहरे रंग का, तारदार। बाहरी भाग की सूजन। डिम्बाशयिक स्नायुशूल। योनिशूल, आक्षेप।

साँस-यन्त्र—सीने का दमा सम्बन्धी दाब। सूखी, गुदगुदीदार खाँसी। आक्षेपिक खाँसी साथ में लेटने में कठिनाई। कुकुर खाँसी (कोरलियम)। आवाज भारी, स्वरयन्त्र दर्द करे और कच्चा। पसलियों का स्नायुशूल।

दिल—हृदयशूल। स्नायविक आपेक्षिक धड़कन। दिल के चारों तरफ संकुचन दर्द।

ज्वर—शाम को भोजन करने के बाद शीत आये। शीत पीठ के ऊपर नीचे चले, साथ में कम्प; बाद में दम घुटने की संवेदना।

अंग—हाथों का अनैच्छिक हिलते रहना। कम्प वात। टखनों में ऐंठन। गृध्रसी। पैर अति कोमल। टपकन दर्द। फड़कन। ताण्डव रोग। लेखक और खेलाड़ी का अंग ऐंठना। धनुस्तम्भीय आक्षेप। बाँहों और हाथों में कमजोरी, अँगुलियों के सिरे कड़े और सुन्न। सर्वपैशिक दुर्बलता।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दाहिनी तरफ, ठण्डक, स्पर्श रात में। घटना : गरमी होना, दाब, रगड़।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैलि फॉस०, कोलोसिं०, सिलिका; जिंक०, डायस्कोरिया विलोसा।

क्रियानाशक : बेला०, जेल्से०, लैके०।

मात्रा—१ से १२ शक्ति। कभी-कभी सबसे ऊँची शक्ति अच्छी समझी जाती है। गरम पानी में देने से विशेष लाभ करती है।

मैग्नेशिया सल्फ्यूरिका (Magnesia Sulphurica)

(एप्सम साल्ट)

चर्म, मूत्र और स्त्री रोग के लक्षण अधिक स्पष्ट हैं। सल्फेट और मैग्नेशिया का दस्त लाने वाला प्रभाव इसके आन्तरिक सुख के कारण नहीं है, बल्कि इसके भौतिक

संगठन के कारण है जो इसका शरीर में घुल जाना असम्भव कर देता है। द्रव्य के आन्तरिक गुण केवल सूक्ष्मीकरण ही से विद्यमान हो सकते हैं (पर्सी वाइल्ड)।

सिर—भयभीत, चक्कर, मासिक काल में सिर भारी। आँखों में जलन, कानों में आवाजें।

पेट - अक्सर डकारें आना, खराब अण्डों की तरह स्वाद के साथ। मुँह में पानी भरना।

मूत्र-सम्बन्धी—पेशाब करने के बाद मूत्रनली के मुँह पर चिलकन। और जलन। धार रुक-रुककर और टपकती हुई। सुबह का पेशाब अधिक मात्रा में चमकदार पीला, जल्दी ही गँदला हो जाये और अधिक मात्रा में लाल तलछट जमा हो। पेशाब निकलते समय कुछ हरा रहे; रंग साफ रहे और अधिक मात्रा में हो। मूत्रमेह। (फॉस एसिड; लैक्टि एसिट, आर्से० ब्रोमे०)।

स्त्री—गाढ़ा प्रदर, मासिक धर्म की तरह अधिक मात्रा में, चलने-फिरने से पिठासे और जाँघों में थकावट-दर्द के साथ। दो मासिक काल के बीच के समय में योनि से कुछ खून निकले। मासिक-धर्म चौदह दिन पर हो जाये, स्राव गाढ़ा, काला, अधिक मात्रा में। मासिक-धर्म समय से बहुत पहले; रुक-रुक कर।

गर्दन और पीठ—कुचलन और पकन दर्द कन्धों के बीच में, साथ में ऐसा मालूम हो कि एक मुट्ठी के बराबर ढोका रक्खा है जिसके कारण वह चित्त या करवट, नहीं लेट सकती, मालिश से कम हो। पिठासे से कुचलन जैसा तीव्र दर्द, जैसा मासिक-धर्म के पहले हो।

अंग—बिस्तर में, सुबह के समय जागने पर बायीं बाँह और पैर सुन्न हो जायें।

चर्म—सारे शरीर पर छोटे दाने जो बहुत खुजलायें। दबी हुई खुजली (सल्फर)। बायें हाथ की अँगुलियों के सिरों में रेंगन, मलने से कम। मस्से। विसर्प रोग (परिपूर्ण घोल ऊपर से लगाने के लिए), शोथ रोग (स्थूल मात्रा में)।

ज्वर—३ बजे दिन से १० बजे दिन तक शीत। पीठ में कम्पन, एक भाग में गरमी दूसरे में ठंडक।

मात्रा—३ शक्ति। लगाने के लिए १ : ४ पानी में घोल कर विषाक्रमण की अवस्थाओं में, विसर्प, अण्डकोष प्रदाह; फुड़िया इत्यादि पर।

मैग्नोलिया ग्रैण्डिफ्लोरा (Magnolia Grandiflora)

(मैग्नोलिया)

इस पदार्थ के लक्षण-चित्र में वात रोग और हृदय बाधायें स्पष्ट रूप में उपस्थित रहती हैं। कड़ापन और दर्द बढ़े। तिल्ली और दिल में बारी-बारी दर्द। शान्त रहने से दर्द बढ़े। चलने-फिरने वाला दर्द।

दिल—फुफ्फुस को न फैला सकने के साथ सीने पर दबाव। पेट में एक खाद्य का बड़ा गोला जैसा मालूम हो जो कष्ट दे। तेज चलने से या बायीं करवट लेटने से दम घुटे। साँस कष्ट। हृदय में ऐंठन दर्द। हृदय शूल। हृद्-अन्तर्वेष्ट झिल्ली प्रदाह और हृद्वेष्ट का प्रदाह। गशी आने की प्रवृत्ति जैसी संवेदना जैसे हृदय की गति रुक गयी है। पैरों की खुजली के साथ हृदय के चारों तरफ दर्द।

अंग—कड़ापन और तीव्र चंचल दर्द, जोड़ों में अधिक। पैरों का सो जाना। बायीं बाँह में सुन्नपन। हँसली की हड्डियों में गठिया वात पीड़ा। सभी अंगों में गोली लगने जैसा दर्द।

घटना-बढ़ना - बढ़ना : तर हवा में, बायीं करवट लेटने से, सुबह को बिस्तर छोड़ते ही। घटना : सूखा मौसम, हरकत, दो मासिक काल के बीच का स्राव जारी होने से। हैमा०, बोविस्टा, बेला०, इलैप्स०।

सम्बबन्ध—तुलना कीजिये : रस०; डल्कामारा, ऑरम०।

मात्रा—३ शक्ति।

मैलेन्ड्रिनम (Melandrinum)

(ग्रीज इन हॉरसेज)

चेचक से बचाव के लिए उत्तम प्रभावशाली औषधि। चेचक का टीका लगवाने के बुरे प्रभाव को दूर करती है। (थूजा, साइलीसिया)। कर्कट रोग के जमाव की विषैली वस्तुओं को शरीर से बाहर निकालने की लाभदायक औषधि। (कॉपर)।

चर्म—ऊपरी होंठ पर खुरण्ड, उखाड़ देने पर डंक लगने जैसा दर्द। माथे में टीसन। सूखा, खुरंडदार, खुजलीदार, हाथों और पैरों पर फटे घाव, ठण्डे मौसम में और धोने से पैर की अँगुलियाँ झुलसी जान पड़ें और बहुत खुजलायें। हड्डी की तरह गुल्म।

मात्रा—३० शक्ति और सबसे ऊँची शक्ति।

मैन्सिनेला (Mancinella)

(हिपोमेन मैंगेनील एपल)

चर्म लक्षण स्पष्ट है। अधिक छालेदार दाने के साथ चर्म प्रदाह, चेपदार स्राव निकले और खुरंड बने। वयःसन्धिकाल और युवा सन्धिकाल में याद रखना चाहिये जब साथ में अधिक काम-इच्छा हो (हेरिंग)। दृष्टिहीनता। अँगूठे में दर्द।

मन—चुप रहने का भाव, शोकग्रस्त। विचार चंचलता। एकाएक विचार लोप। लज्जालु। पागल हो जाने का भय।

सिर—चक्कर, सिर हल्का लगे, खाली। सिर की खाल खुजलाये। तीव्र रोग के बाद बाल झड़ें।

नाक—गन्धभ्रम, बारूद की, लौह इत्यादि की। नाक की जड़ पर दर्द।

मुँह—तीता लगे। अधिक घृणित लार। रक्त स्वाद। अन्तरिम भाग में जलन। गले और गलकोष में संकुचन के साथ निगलने में कष्ट।

आमाशय—आमाशय से बराबर गला घुटने की संवेदना उठा करे। अनपचे भोजन की कै, बाद में मरोड़ और अधिक मल। मल के साथ दर्द और काली चीजों की कै।

अंग—हाथ और पैर बरफ से ठण्डे। अँगूठे में दर्द। विसर्प रोग। जलने ऐसे बड़े छाले। मोटी, बादमी खुरंड। रक्त विष-स्फोट।

सम्बन्ध—तुलना : क्रोटन०, जैट्रोफा, कैन्थे०; एनाकार्डि०।

मात्रा ६ से ३० शक्ति।

मैंगेनम एसेटिकम (Manganum Aceticum)

(मैंगेनीस एसिटेट)

मैंगेनस से रक्त के लाल कण के नष्ट होने के साथ रक्तहीनता उत्पन्न होती है। कामला रोग, गुर्दा प्रदाह, साथ में एलब्यूमन वाला मूत्र। जिगर पर चर्बी जमा होना (क्षय)। कम्पवात कौषिक-तन्तु प्रदाह। निम्न तीव्र अवस्था, मवाद जल्द पैदा करके नव-तन्तु उत्पन्न करने में सहायक।

जीर्ण विषाक्रमण के लक्षण, प्रोफेसर यानजैक्श के अनुसार साथ में अनैच्छिक हँसी और रुदन तथा पीछे की तरफ चलना। अतिशयोक्तिपूर्ण परावर्तित क्रियायें और शारीरिक कौतूहल जो पुरुषों में एक दूसरे की चाल पर हँसी उड़ाने से विदित होता है। निचले अंगों का उन्नतिशील पक्षाघात, क्षयग्रस्त, दुर्बल लड़खड़ाती चाल।

हड्डियों और जोड़ों में दर्द, रात में खोदने जैसे दर्द के साथ। दमा के रोगी जो पंख के तकिये पर नहीं लेट सकते। उपदंशीय और रक्तहीन रोगी जो रक्त दौर्बल्य और पक्षाघात से पीड़ित हों उनको इस औषधि से लाभ होता है। छोटे जोड़ों का गठिया। जीर्ण सन्धि प्रदाह। भाषण देने और गाने वाले। श्लेष्मा की अधिक संचयता। बढ़ने वाले दर्द और कमजोर टखने। सर्वांगीण वेदना और टीस, शरीर का प्रत्येक भाग का छूने से दर्द करें, क्षय रोग की आरम्भिक अवस्था।

सिर—व्याकुलता और भय; लेटने से कम हो। बड़ा और भारी लगे। खून दौड़ने के साथ दर्द ऊपर से नीचे की तरफ। दृष्टि-क्षेत्र का संकीर्ण होना। विचार-शून्य चेहरा।

मुँह—तालु पर गुठलियाँ। दाँत दर्द, सभी कष्ट ठंडी चीज से बढ़ें। (कॉफिया इसका उल्टा है।) सारे समय खखारते रहना। धीमी स्वरहीन आवाज।

नाक—सूखी, बन्द। जीर्ण जुकाम, खून बहना, सूखापन के साथ, तर मौसम में अधिक।

कान—बन्द मालूम हो, नाक छिनकने पर कड़कड़ाहट। दूसरी जगहों से दर्द कानों में आवे। तर मौसम में बहरापन, सीटी बजने की आवाज।

पाचन-नली—घाव या मस्सों के साथ जबान दर्द वाली और क्षुब्ध। वादी, जिगर की जीर्ण वृद्धि।

साँस-यन्त्र—जीर्ण खरखरी। स्वर-यन्त्र सूखा, खुरखुराहट, संकुचित। स्वर-यन्त्र का क्षय रोग। खाँसी, शाम को अधिक और लेटने पर कम और तर मौसम में अधिक। बलगम कठिनाई से निकले। स्वर-यन्त्र में चिलक जो कानों तक बढ़े। सीने में गरमी। खून थूकना। प्रत्येक जुकाम में वायुनलिका प्रदाह (ब्रांकाइटिस) हो जाये (डल्का०)।

स्त्री—मासिक-धर्म की गड़बड़ी, नष्टरजः, बहुत पहले और थोड़ा, रक्तहीन स्त्रियों में। वयःसन्धिकाल में गरम लहरें।

अंग—पेशियों की फड़कन। पिंडली में ऐंठन। टाँगों की पेशियों में तनाव। रात में असह्य छेदन दर्द के साथ। हड्डियों और जोड़ों में सूजन। छूने पर शरीर का प्रत्येक अंग सन्तापपूर्ण मालूम हो। बिना गिरे हुए पीछे की तरफ न चल सके। आगे गिरने की प्रवृत्ति। आगे की तरफ झुक कर चले। टाँगें सुन्न मालूम पड़ें। चर्म उधड़ने के साथ चर्म प्रदाह। कम्प वात। विचित्र झटके की चाल, पंजों के बल चले, पीछे की तरफ पैर पड़े। टखनों में सन्ताप। हड्डियाँ अति स्पर्शकातर। जोड़ों की चमकीली लाल सूजन। गठिया, घुटनों में दर्द और खुजली। पैरों का वात रोग। निचले अंगों के चर्म में असह्य दर्द। जोड़ों के आसपास जलनदार चकत्ते। अस्थि-आवरण प्रदाह। जोड़ों के आसपास की खाल में मवाद पड़ना।

नींद—सुस्ती और औंघाई। स्पष्ट स्वप्न। शाम से नींद जैसा लगे।

चर्म—जोड़ों के चारों तरफ चर्म पके। लाल उभरे हुए चकत्ते। खुजली खुजलाने से कम हो। केहुनी के मोड़ों इत्यादि में गहरी दरारें, अपरस और छिल्के छूटना। घावों की चारों तरफ जलन होना। जीर्ण अकौता जो मासिक-धर्म के रुकने से सम्बन्धित हो, मासिक काल में या रजोनिवृत्ति के समय।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ठण्डा तर मौसम; मौसम परिवर्तन के समय। **घटना** : लेटने पर (खाँसी)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कोलॉयडल मैंगनीज (फुड़िया और अन्य गुच्छाणु स्टैफाइलो का संक्रमण), मैंगने० म्यूर (टखने दर्द वाले, अस्थिपीड़ा), मैंगने०, आक्साइडेटम (जंघास्थि-पीड़ा, कष्टदायक रजःशूल और दस्त आसानी से आए। थकावट और गरमी, औंघाई। विचारहीन, अप्राकृतिक चेहरा, मन्द स्वरहीन आवाज, "कम बोलना।" पेशियों में फड़कन, पिण्डली में ऐंठन, टाँगों की पेशियों में तनाव; अकसर न रोक सकने वाली हँसी। विचित्र चाल, कम्पवात की तरह लक्षण, उन्नतिशील चक्षु चित्रपट क्षय और नकली कड़ापन मैंगेन० बिन ऑक्साइड के कारखानों में काम करने वालों को अक्सर गोलाकार तन्तुओं का पक्षाघात हो जाया करता है। होमियोपैथिक प्रणाली के अनुसार ३x का व्यवहार करें। (मैंगेन० सल्फ०)। जिगर रोग, पित्त की अधिकता एक शक्तिवान आन्त्र बलवर्धक (आर्जेण्ट०, रस टॉक्स०, सल्फर)।

क्रियानाशक : कॉफि०, मर्क०।

मात्रा - २ से ३० शक्ति।

मैंगिफेरा इण्डिका (Mangifera Indica)

(मैंगो ट्री)

नासिका श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाह, छींक, गलकोष प्रदाह और अन्य तीव्र गल रोग, दम घुटने का संवेदन मानो गला बन्द हो जायगा। पाचन मार्ग की श्लैष्मिक झिल्ली का ढीला हो जाना। नजला और पानी-सा स्राव, जीर्ण आन्त्र उत्तेजना। नस-वृद्धि : औंघाई। ढीलापन, मन्द रक्तसंचार, पेशियाँ ढीली।

चर्म—हथेलियों की खुजली। चर्म मानो धूप से झुलसा हुआ है; सूजन, सफेद चकत्ते; तीव्र खुजली। कानों की लौ और होंठ सूजे हुए।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एरिजेरॉन एपिलीबियम।

मात्रा—अरिष्ट।

मेडोरिनम (Medorrhinum)

(दी गोनोरियल वाइरस)

एक शक्तिवान और गहराई तक काम करने वाली औषधि; प्रायः सुजाक दब जाने के कारण आये जीर्ण रोगों में सांकेतिक। स्त्रियों के जीर्ण वस्तिगह्वर रोग।

जीर्ण गठिया वात। स्नायु मण्डल का क्षोभ और उत्तेजना। पीड़ा असह्य, तनाव के साथ, स्नायु कम्प और टपकन। बच्चों का बौनापन और बुद्धिहीनता। बच्चों में जीर्ण नजला की अवस्थायें। नाक मैली, तालुमूल बढ़े हुए, नाक से गाढ़ा, पीला श्लेष्मा गिरे। मुँह से साँस लेने के कारण होठों का मोटा हो जाना। पतनावस्था और सारे शरीर में कम्प। सुजाक विष दोष का इतिहास। अक्सर सुजाक के दबे स्राव को बहाल करती है। सभी संवेदनाओं की तीव्रता। अंगों में शोथ, जलकोषों में शोथ। तन्तुओं का कड़ा पड़ना।

मन—दुर्बल स्मरणशक्ति। बात करते-करते सिलसिला भूल जाता है। बिना रुदन के न बोल सके। समय बहुत धीरे-धीरे व्यतीत होता जान पड़े (कैनाबिस इण्डिका, आर्जेण्टम नाइट्रिकम)। सदा जल्दी में रहे। अच्छा होने से निराश। ध्यान एकाग्र करना कठिन, पागल होने का भय (मैंसिनेला) संज्ञा उत्तेजित। स्नायविक अशान्ति। अँधेरे में भय लगना, जैसे कोई पीछे खड़ा है। विपन्न, आत्महत्या के विचार।

सिर—मस्तिष्क में जलन, दर्द पिछले भाग में अधिक। सिर भारी और पीछे को खिंचा हुआ। मोटर के झटके से, शिथिलता से और कड़ी मेहनत के कारण सिर दर्द। चाँद पर बोझ और दबाव। बाल सूखे और कड़े (खस्ता)। खाल पर खुजली, बाल झड़ना।

आँखें—मानो वे सभी चीजों को घूर रही हैं। ढेलों में टीस। आँखों में खपाचियाँ जैसी मालूम हों। पलक क्षुब्ध।

कान—आंशिक बहरापन, कानों में टपकन। दाहिने कान में तीव्र चिलकन दर्द।

नाक—तीव्र खुजली। सिर ठण्डा। पिछला भाग में रुका मालूम दे। जीर्ण नलिका और गलकोष नजला।

चेहरा—फीका, रक्तहीन, मुँहासे, चकत्ते लाली लिये। मासिककालीन छोटी फुड़ियाँ।

मुँह—जबान पर बादामी और मोटा मैल, छालेदार, गलित घाव। होठों और गालों की भीतरी सतह पर छाले।

आमाशय—कसैला स्वाद और गन्धक की महँक की डकार। खाना खाने के बाद अधिक भूख। अधिक प्यास। मद, नमकीन चीज, मिठाई इत्यादि खाने की प्रबल इच्छा, गर्म चीज पीने की इच्छा। गर्भावस्था में कष्टकर कै।

उदर—जिगर और तिल्ली में तीव्र दर्द। पेट के बल लेटने से आराम मिले।

मल—बहुत पीछे ओठँगने से ही मल-त्याग हो सके। गुदा पेशी की पिछली सतह पर दर्द वाले ढोंके का संवेदन। बदबूदार रस पसीजना गुदा में अधिक खुजली।

मूत्र—पेशाब करते समय वेदनापूर्ण ऐंठन। रात को अधिक मूत्र स्राव। गुर्दा शूल (बर्बेरिस, ओसिमम०, पैरीरा)। मूत्र धीरे-धीरे निकले।

स्त्री—तीव्र योनि खाज। मासिक-धर्म घृणित, अधिक, गहरे रंग का थक्केदार, धब्बे जल्दी साफ न हों, उस समय घड़ी-घड़ी पेशाब लगे। गर्भाशय के मुँह पर उत्तेजन, चकत्ते। प्रदर पतला, तीखा, छीलने वाला, मछली की गन्ध जैसा, जननेन्द्रियों पर मस्से (प्रमेही)। डिम्बाशय : पीड़ा बायीं तरफ अधिक या एक डिम्बाशय से दूसरे में। बाँझपन। गर्भाशय से अधिक रक्तस्राव। अति मासिक धर्म शूल। स्तन ठंडे, दर्द वाले और उत्तेजित।

पुरुष—रात में वीर्य-स्खलन, बाद में अति कमजोरी। नपुंसकता, जीर्ण सूजाक रस स्राव, सारी मूत्रनलिका दर्द वाली लगे। मूत्रमार्ग प्रदाह। बढ़ी हुई और दर्द वाली मूत्र ग्रन्थियाँ, साथ में घड़ी-घड़ी दर्द के साथ पेशाब लगना।

श्वास-यन्त्र—साँस लेने में अधिक दाब। पढ़ते समय आवाज भारी। सीने और स्तनों में दर्द और सन्ताप। रात में लगातार सूखी खाँसी। दमा। क्षय रोग की आरम्भिक अवस्था। स्वर-यन्त्र सन्तापपूर्ण मालूम दे। साँस-कष्ट; हवा बाहर न कर सके (सैम्बु०) खाँसी, पेट के बल लेटने से कम।

अंग—जलन गरमी के साथ पीठ में दर्द। टाँगें भारी, सारी रात टीस, उसको शान्त न रख सके (जिकम०) चलते समय टखने आसानी से मुड़ जायें। हाथों, पैरों में जलन। अँगुलियों के जोड़ बढ़े हुए, फूले हुए। गठिया के कड़े स्थान। एड़ी और पैर की गद्दी कोमल (थूजा०) तलवों में दर्द। अशान्त, हाथ से हाथ जकड़ने से कम।

चर्म—पीला। तीव्र और लगातार खुजली, रात में और उस पर सोचने से अधिक हो। बच्चों की गुदा के चारों तरफ लाल दाने। ताँबे के रङ्ग के चकत्ते। कुष्ठ रोग। अर्बुद और अप्राकृतिक स्फोट।

ज्वर—सारे समय पंखा झलवाना चाहे। पीठ के नीचे शीत, टाँगों, हाथों और अगली बाँहों का ठण्डापन। चेहरे और गरदन में गरम लहरें। रात पसीना और क्षय ज्वर।

नींद—पीने का स्वप्न देखे। उकड़ू होकर सोये (आर्स० फास०)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रोग पर सोचने से, सूर्य निकलने से डूबने तक, गरमी, समुद्र तट से दूर। घटना : समुद्र तट, पेट के बल लेटने से, तर मौसम से (कॉस्टि०)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : (स्तन-पान काल : गैलेगा; लैक्टूकाविरोसा); सल्फर, सिफिलिनम, जिकम ।

मात्रा—केवल सबसे ऊँची शक्ति का प्रयोग होता है। बार-बार दोहराना नहीं चाहिए।

मेडुसा (Medusa)

(जेली-फिश)

सारा चेहरा—आँखें, नाक, कान, होंठ फूला हुआ।

चर्म—सुन्न होना, जलन, काँटा गड़ने जैसे दर्द के साथ गरमी। रस दाने; खासकर चेहरे; बाँहों, कन्धों और स्तनों पर। जुलपित्ती (एपिस०, क्लोरैलम; डल्का०)।

स्त्री—दुग्ध-ग्रंथियों पर स्पष्ट प्रभाव। पहले के सभी प्रसव काल में दूध न उतरने पर इस औषधि से दूध उतरा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : पैरीरा; फाइसैलिया (जुलपित्ती); आर्टिका, होमैरस, सीपिया।

मेल कम सेल (Mel Cum Sale)

(हनी विद साल्ट)

जरायु-भ्रंश और जीर्ण जरायु-प्रदाह, खासकर जब जरायु की अल्प वृद्धि और जरायु की गरदन के प्रदाह से सम्बन्धित हो। इस औषधि के निर्णय का खास लक्षण है : तलपेट के आरपार कोखे की एक तरफ से दूसरी तरफ तक वेदना, जरायु का अपनी जगह से हटना और जरायु प्रदाह के आरम्भ में ऐसा लगे कि मूत्राशय बहुत भरा हुआ है। त्रिकास्थि से पेड़ू तक दर्द। दर्द मानो मूत्र नलिका में हो रहा है।

मात्रा—३ से ६ शक्ति। गुदा खाज और कृमि रोग में शहद का प्रयोग करें।

मेलिलोटस (Melilotus)

(यलो मेलिलोट-स्वीट क्लोवर)

रक्त संचित होना और रक्तस्राव इस औषधि के विशेष मार्गदर्शक लक्षण हैं। तीव्र रक्तसंचय के कारण आया स्नायविक सिर दर्द। शिशु का ऐंठन; झटके। सिर पर आघात के कारण आया मिरगी रोग। दर्द और दौर्बल्य इस औषधि की ओर सकेत

करते हैं। ठण्डापन मगर ताप की अधिकता, कोमलता और दर्द। पेशी मण्डल की क्षीणता। स्वप्न और वीर्यस्खलन।

मन—चित्त न जमा सके। अविश्वसनीय स्मरण शक्ति। गशी। भाग जाना और कहीं छिप जाना चाहे। भ्रम, सोचती है कि सभी लोग उसकी तरफ देख रहे हैं। जोर से बोलने से डर लगे, भाग जाना चाहे।

सिर—सिर दर्द, साथ में उबकाई, कै, आँखों के घेरों पर दाब, रक्तहीन चेहरा, हाथ और पैर ठंढे। आँखों के सामने काले दाग दिखाई देना। भारी, दबाव; अगले भाग में टपकन के साथ दर्द, मस्तिष्क में ऊपर-नीचे होने का संवेदन। पुराना सिर दर्द; नकसीर बहने या मासिक धर्म जारी होने से कम हो। सारे सिर पर भारीपन। आँखें भारी, धुँधलापन, आराम मिलने के लिए उन्हें कस कर बन्द करना चाहे। सिर और गरदन की दाहिनी तरफ, ऊपर चारों तरफ स्नायुशूल। खाल कोमल और छूने में दर्द।

नाक—बन्द होना, सूखी, मुँह से साँस लेना पड़े, सूखी, कड़ी खुरण्ड नाक में। नकसीर में अधिक रक्त निकले।

चेहरा—बहुत लाल और भरमाया हुआ, प्रधान ग्रीवा धमनी में टपकन के साथ (बेला०)।

मल—कठिन, दर्द के साथ, कब्ज के साथ। गुदा सिकुड़ा मालूम हो, भारी टपकन। बहुत मल जमा होने के बाद ही मल त्यागने की इच्छा हो (ब्रायो०, एल्युमिना)।

स्त्री—मासिक-धर्म कम मात्रा में; रुक-रुककर, साथ में मिचली और असाधारण कमजोरी। बाहरी भागों में गड़न के साथ दर्द। कष्टदायक मासिकधर्म, डिम्बाशय में स्नायुशूल।

साँस-यन्त्र—गला घुटता मालूम पड़े, खासकर तेज चलने में। खून थूकना। सीने पर बोझ। गले में गुदगुदी के साथ खाँसी।

अंग—घुटनों में दर्द, टाँगों को फैलाना चाहे, मगर आराम न मिले। जोड़ दर्द करें। चर्म और अंग ठंडे, घुटने के जोड़ों के। सुन्नपन और टीस।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बरसात, परिवर्तनशील मौसम, तूफान से पहले, हरकत, ४ बजे शाम।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : मेलिलोटस ऐल्बा-(ह्वाइट क्लोवर)—वही प्रभाव है। (रक्तस्राव, रक्ताधिक्यजनित सिर दर्द, रक्तनलिकाओं में रक्ताधिक्य, झटके)। एमिलेनम नाइट्रोसस, बेला०, ग्लोनो०।

मात्रा—अरिष्ट, सूँघने के लिए, निचली शक्तियाँ।

मेनिसपरमम (Menispermum)

(मूनसीड)

अधकपारी की दवा, जो बेचैनी और स्वप्न से सम्बन्धित हो। रीढ़ में दर्द। सारे शरीर पर सूखापन। खुजली। मुँह और गला सूखा।

सिर— भीतर से बाहर की तरफ दाब, अँगड़ाई लेने और जम्हाई लेने के साथ और पीठ दर्द के साथ। पुराना, रोज होने वाला सिर दर्द। माथे और कनपटी में जो पिछले भाग तक जाये। जबान सूखी हुई और अधिक लार।

अंग—पीठ में, जाँघों, केहुनी, कन्धों में दर्द। टाँगें दर्द करें मानो कुचल गई हैं।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : काकुलस; ब्रायोनि०।

मात्रा—३ शक्ति।

मेन्था पिपरिटा (Mentha Piperita)

(पिपरमिन्ट)

ठण्डक का संवेदन ग्रहण करनेवाली स्नायु को उत्तेजित करती है, इसलिए इसको मुँह में रखते ही साधारण ताप की हवा ठंडी मालूम होती है। साँस-यन्त्र और चर्म पर स्पष्ट प्रभाव। आमाशय और वादी शूल में उपयोगी है।

उदर— फूला हुआ, अशान्त निद्रा। शिशु शूल। पित्त शूल। साथ का अफरा।

साँस-यन्त्र—आवाज भर्रायी हुई। नाक का सिरा छूने में दर्द करे। गला सूखा और वेदनापूर्ण मानो आलपीन आड़ी होकर फँस गई हो, सूखी खाँसी; जो स्वरयन्त्र में हवा के प्रवेश से, धूम्रपान से, कोहरे से; बोलने से बढ़े। साथ में वक्षास्थि के ऊपरी गुहा में उत्तेजना (रियुमेक्स) साँस की नली छूने से दर्द करे।

चर्म—प्रत्येक खुजलाया हुआ स्थान पक जाये। लिखते समय हाथ और बाँह खुजलाए। योनि की तीव्र खाज। मोटा दाद (आर्से०, रैननक्युलस बल्बोसस)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रियुमेक्स; लैके०, मेन्था प्लेनियम—यूरोपियम पेनिरॉयल—(माथे और अंगों की हड्डियों में दर्द)। मेन्था विरिडिस स्पियर मिण्ट—(थोड़ा पेशाब बार-बार इच्छा)।

मात्रा—अरिष्ट, १ से २० बूँद, ३० शक्ति तक। योनि खाज में ऊपर लगाइए।

मेन्थॉल (Menthol)

मेन्थॉल के मूल तेल से बना हुआ एक चर्बीला पदार्थ। नासा-गल-कोष और मेरुदण्ड के स्नायुगुच्छ की श्लैष्मिक झिल्ली को प्रभावित करता है, उनमें स्नायु रोग और संवेदन-भ्रंश उत्पन्न होता हो। मेन्थॉल तीव्र जुकाम, तीव्र गल-कर्ण नलिका

जुकाम, गलकोष प्रदाह, स्वर-यन्त्र प्रदाह, स्नायुशूल इत्यादि में लाभदायक सिद्ध हुआ है (विलियम. बी. ग्रिन्स. एम. डी.) खुजली खासकर योनि घुण्डी में।

सिर—माथे में दर्द; अगले खोखले भाग के ऊपर आँखों के ढेले में उतरे। मानसिक गड़बड़ी। बायीं आँख के घेरे के ऊपर दर्द। चेहरे में जबड़े के ऊपर दर्द, सुन्नपन के साथ। आँखों के ढेलों में दर्द। जुकाम, नाक के पिछले भाग से स्राव। नाक ठंडी। कंठ-कर्णी नली बन्द मालूम हो और कुछ बहरापन हो।

साँस-यन्त्र—मुँह के गढ़े में गुदगुदी। हृदय-क्षेत्र में चुभन, दर्द, सारे सीने में फैले। बार-बार सूखी खाँसी; धूम्रपान से बढ़े। दमा की तरह साँस लेना, साथ में रक्ताधिक्यजनित सिर दर्द।

अंग—गरदन क्षेत्रीय पेशियों में दर्द। कटि पेशियों में दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : केलि बाइक्रो०, स्पाइजेलिया।

मात्रा—६ शक्ति। खाज के लिए बाहरी प्रयोग, १ प्र० श० घोल या मरहम लगाइए।

:—०—:

मेनियेन्थेस (**Menyanthes**)

(बक-बीन)

कुछ प्रकार के सिर दर्द और सविराम ज्वर की औषधि। उदर में ठंडापन। फड़कन। तनाव और दाब की संवेदना। स्त्रियों में चंचलता और मूत्र कष्ट। मधुमेह।

सिर—चाँद में दाब, हाथों से कस कर दबाने से कम हो। दोनों तरफ से दबाने जैसा दर्द। प्रत्येक कदम ऊपर चढ़ने से मस्तिष्क में बोझ जैसी दाब। गरदन की जड़ से सारे मस्तिष्क पर दर्द, झुकने से, बैठने से कम हो; ऊपर चढ़ने से बढ़े। जबड़ों में चुरचुराहट और चेहरे की पेशियों में फड़कन।

आमाशय—किसी समय पर प्यास न लगे। अधिक भूख, मगर जरा-सा खाने पर गायब हो जायें। मांस खाने की इच्छा। ठण्डापन आंत्रनली मुँह तक उठे।

उदर—तना और भरा, धूम्रपान से अधिक। उदर का ठंडापन।

अंग—हाथ और पैर बरफ जैसे ठण्डे। ऐंठन के सारे दर्द। लेटते ही टाँगों में झटके आएं और फड़कन हो।

ज्वर—ठंडापन अधिक प्रबल, जो उदर में; टाँगों में और नाक के सिरे पर अधिक मालूम पड़े।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : आराम करने से, ऊपर चढ़ने से। घटना : प्रभावित अंग को दबाने, झुकने एवं हरकत से।

तुलना : कैप्सि०, पल्से०, कैल्के०, फॉस० एसिड, सैंग्वि० ।

क्रियानाशक—कैम्फर ।

मात्रा—२ से ३० शक्ति ।

मेफाइटिस (Mephitis)

(स्कंक)

कुकुर खाँसी की अति उत्तम औषधि । इससे पूरा लाभ उठाने के लिए इसकी नीचे की शक्तियाँ, १x से ६x में देना चाहिए । दम घुटने की संवेदना, दमा के हमले, आक्षेपिक खाँसी, खाँसी इतनी प्रबल कि मालूम हो कि प्रत्येक आक्रमण में दम निकल जायेगा । बच्चे को उठा लेना आवश्यक, चेहरा नीला पड़ जाये, साँस बाहर को नहीं फेंक सकता । सीने के ऊपरी भाग में श्लेष्मा खड़खड़ाये । रोगी बरफ-से ठंडे पानी में नहाना चाहे ।

मन—उत्तेजित कल्पनाओं से भरा हुआ । न तो नींद आवे और न कोई काम ही कर सके ।

आँख—अधिक परिश्रम से दर्द, धुँधलापन, अक्षर न पहचान सके, पुतली लाल, आँखें गरम और दर्दपूर्ण ।

मुँह—दाँतों की जड़ में दर्द, झटका । फूला चेहरा । कसैला स्वाद, जैसे प्याज खाया हो ।

साँस-यन्त्र—पीते हुए या बात करते हुए एकाएक टेंटुआ का सिकुड़ जाना, खाना गलत रास्ते में चला जाये । नकली क्रूप खाँसी, साँस की हवा बाहर न निकाल सके । कुकुर-खाँसी, दिन में हमले कम, रात में अधिक बार; खाना खाने के बाद कै के साथ । दमा जैसे गन्धक का धुँआ भीतर जा रहा हो; बात करने से खाँसी आए, खोखली, गहरी खाँसी, कच्चापन के साथ; आवाज भारी और सीने के भीतर दर्द तीव्र आक्षेपिक खाँसी; रात में अधिक ।

नींद—निचली टाँगों से खून दौड़ने के साथ जाग उठना । पानी, आग इत्यादि के स्पष्ट स्वप्न ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ड्रोसे०, कोरैलि०, स्टिक्टा ।

मात्रा—१ से ३ शक्ति । प्रभाव अल्पकालीन ।

मरक्युरियेलिस पेरेनिस (Mercurialis Perennis)

(डॉगंस मरकरी)

अधिक शिथिलता और औंघाई । अग्रखण्ड उपास्थि पर अर्बुद, अधिक स्पर्श-कातरता, आमाशय, आँतों और मूत्राशय की पेशियों के तन्तुओं के रोग ।

सिर—नीचे उतरते समय चक्कर। सिर में गड़बड़ी। माथे के आरपार फीता कसा रहने जैसा दर्द। नथने दर्द करें। नाक की चेतनता जान पड़े कि दो नाक हैं।

मुँह गले और मुँह का बहुत सूखापन, जबान भारी और सूखी मालूम दे। ठिठुरी जबान। होंठ और गालों के जलनदार छाले। तालु, तालुमूल और गलकोष पर घाव। गले में सूखापन।

स्त्री—मासिक-धर्म का रुक जाना, थोड़ा, अति तीव्र कामाग्नि के साथ। स्तनों में सूजन और दर्द। कष्टदायक मासिक स्राव।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : बोरेक्स, क्रोटन०, युफोर्बि०।

मात्रा—२ शक्ति।

—:o:—

मरक्युरियस (Mercurius)

(मरक्युरियस सोल्युबिलिस और वाइवस क्विकसिल्वर)

इस शक्तिवान द्रव्य से शरीर के सभी यन्त्र और तन्तु कुछ-न-कुछ प्रभावित होते हैं। यह स्वस्थ कोषों को निर्बल, प्रदाहित और मुरदार बनाकर नष्ट कर देता है, रक्त को सड़ा देता है और घोर रक्तहीनता उत्पन्न कर देता है। यह घातक शक्ति, एक जीवन प्रदाता और रक्षक रूप में परिवर्तित कर दी जाती है, यदि यह होमियोपैथी के सिद्धांत के अनुसार प्रयोग की जाये, और इसके स्पष्ट लक्षणों को ध्यान में रक्खा जाये। सभी झिल्लियों और ग्रन्थियों, आन्तरिक यन्त्रों, अस्थियों के साथ-साथ शरीर का लसिका-वाहिनी मण्डल खासतौर पर प्रभावित होता है। पारा जो घाव पैदा करता है वे उप-दंश घाव की तरह होते हैं। अक्सर उपदंश के दूसरे चरण में सांकेतित होती है, जहाँ ज्वरीय रक्तहीनता, वक्षास्थि के पीछे जोड़ों के चारों तरफ वात पीड़ा इत्यादि, गले और मुँह में घाव, बाल झड़ना, मुँह और गले में स्फोट और घाव हों। ये विशेष स्थितियाँ और अवस्थाएँ हैं जिनमें मरकरी समान रूप से प्रभावकारी होता है, और जहाँ इस औषधि का २x चमत्कारी काम करता है। इसके अतिरिक्त पैतृक उपदंश बाधाएँ भी इसके प्रभाव क्षेत्र में हैं, अण्डाकार स्फोट, फोड़े, बच्चों की नाक से उप-दंशीय प्रदाहित स्राव, सुखण्डी रोग, पेट शूल और क्षय-प्रदाह। सभी जगह कम्प। निर्बलता, साथ में जरा-से परिश्रम से उबाल और कम्प आना। मरकरी के सभी लक्षण रात में बढ़ते हैं, बिस्तर की गरमी से, तरी से, ठण्डक से, बरसात में, पसीना आने के समय बढ़ें। रोग पसीना आने और आराम करने से अधिक होता है, सभी में बहुत थकावट, शिथिलता और कम्प रहता है। मानवीय "ताप मापक"। गरमी और ठंडक दोनों में उत्तेजनीय। रोगग्रस्त भाग बहुत सूजे हों; कच्चापन हो, दर्द न हो, अधिक तेल जैसा पसीना आराम नहीं देता। साँस, स्राव और शरीर से दुर्गन्ध आए। मवाद

बनने की प्रवृत्ति, मवाद पतला, हरियाली लिए, सड़ा पतले खून की लकीरों के साथ होता है।

मन—सवालों का जवाब देर में दे। स्मरण-शक्ति दुर्बल, मानसिक बल का अभाव। जीवन से थका हुआ। अविश्वासी समझे कि वह तर्कहीन हो रहा है।

सिर—चित्त लेटने पर चक्कर आवे। सिर के चारों तरफ फीता कसा मालूम हो। एक तरफ फटने जैसा दर्द, सिर की खाल पर तनाव जैसे पट्टी बँधी हो। नजले का सिर दर्द, सिर में बहुत गरमी, चुभन, जलन। सड़े स्फोट खोपड़ी पर। बाल झड़ना। हड्डी की गुठलियाँ, दर्द के साथ। चमड़ी तनी हुई, तेल जैसा पसीना निकले।

आँखें—पलक लाल, मोटे, सूजे हुए। अधिक, जलता, तीखा स्राव। तैरते हुए काले धब्बे। आग की चमक के बाद, गलाई कारखाने में काम करनेवालों का नेत्र रोग। उपदंशीय आधार का दर्द जलन के साथ। कोरण्ड नेत्र प्रदाह।

कान—गढ़ा, पीला स्राव, बदबूदार और खूनी। कान का दर्द बिस्तर की गरमी से बढ़े, रात में अधिक, गड़न के साथ दर्द। बाहरी नली में फुड़िया (कैल्के० पिक्रेटा)।

नाक—अधिक छींक आना। धूप में छींक आए। नथुने कच्चे, घाव वाले; नासास्थि सूजी हुई। पीला; हरा, घृणित, मवाद स्राव। जुकाम, तीखा स्राव, मगर इतना गाढ़ा कि होठों के नीचे तक न बढ़े; गरम कमरे में अधिक। नासास्थि में दर्द और सूजन, सड़न के साथ। गहरे सड़े घाव। रात में नकसीर। अधिक छीलने वाला स्राव। छींक के साथ जुकाम, दर्द वाला, कच्चापन, गड़न संवेदन, तर मौसम में अधिक हो, अधिक मात्रा में बहे।

चेहरा—पीला, मटियाला, मैला, फूला हुआ। चेहरे की हड्डियों में टीस। चेहरे पर उपदंशीय दाने।

मुँह—मिठास लिए कसैला स्वाद। लार अधिक बहे, खूनी, गाढ़ी। लार बदबूदार, कसैली। जीभ के कम्प के कारण बोलना कठिन। मसूढ़े स्पंज की तरह गरम, पीछे हटे हुए, खून जल्दी बहे। छूने से और चबाने से दर्द हो। सारा मुँह तर। दाँतों का ऊपरी भाग सड़े। दाँत ढीले, कोमल, लम्बे जान पड़ें। जबान पर सीधी लम्बाई में दरारें। जबान भारी। मोटी तर पसीजन, पीली थुलथुली, दाँतों के निशान पड़ी, जली। दन्त गुहा में फोड़े, रात में कष्ट अधिक। तर मुँह के साथ अधिक प्यास।

गला—नीलापन लिए लाल सूजन। बराबर निगलने की इच्छा। सड़ा गलप्रदाह, दाहिनी तरफ अधिक। हर एक मौसम बदलने के समय घाव और सूजन हो

जाया करे, निगलने पर कानों में फड़कन; तरल पदार्थ नाक में से लौट आये। तीव्र तालुमूल प्रदाह, निगलने में कठिनाई के साथ, मवाद पकने के साथ। गला दर्द वाला; कच्चा; छरछराता, जलन वाला। बोली एकदम बन्द होना। गले में जलन, जैसे गरम भाप ऊपर चढ़ रही है।

आमाशय—सड़ी डकार। ठंडी चीज पीने की अधिक प्यास। पाचन दुर्बल, लगातार भूख के साथ। आमाशय छूने से उत्तेजनीय। हिचकी और अनपचा भोजन मुँह में आना। भरा और सिकुड़ा मालूम पड़े।

उदर—शीत के साथ छुरी भोंकने जैसा दर्द। दाहिने कोखे में छेद होने जैसा दर्द। दर्द के साथ वादी फूलना। जिगर बढ़ा हुआ, छूने में चोटीलापन, कड़ा। कामला रोग। पित्त की कमी।

मल—हरियाली लिए, खूनी और चिकना, रात में अधिक, दर्द और ऐंठन के साथ। कभी पेट साफ होने का संवेदन न हो। मल त्यागने के साथ शीत, पेट में असुविधा, कटन, शूल और ऐंठन। सफेद भूरा मल।

मूत्र—घड़ी-घड़ी वेग। मूत्रमार्ग से हरा स्राव, पेशाब करने के पहले मूत्रमार्ग में जलन। मूत्र गहरे रंग का, थोड़ा, खूनी एल्ब्युमेन मिश्रित।

पुरुष—रसदाने और घाव, मादा आतशक का घाव। जननेन्द्रिय ठंडी। लिंग पटल उत्तेजनीय, खुजलाए। स्वप्नदोष, वीर्य खून मिला।

स्त्री—मासिक धर्म अधिक, उदर पीड़ा के साथ। प्रदर स्राव छीलने वाला, हरियाली लिए, खूनी; योनि में कच्चापन, डिम्बाशय में चुभन दर्द। (एपिस०)। खुजली और जलन, पेशाब करने के बाद अधिक हो, ठण्डे पानी से धोने पर कम हो। गर्भावस्था की मिचली और कै, अधिक लार के साथ। मासिक-काल में स्तन दर्दीले और दूध से भरे हों।

श्वास-यन्त्र—मुखगह्वर से वक्षास्थि तक दर्द। दाहिनी करवट न लेट सके। (*बाँयीं करवट, लाइकोपो०*)। खाँसी, पीला श्लेष्मा, मवादी बलगम। दौरे की खाँसी, रात में और बिस्तर की गरमी से अधिक हो। जुकाम शीत के साथ, हवा से भय। दाहिने फुफ्फुस के निचले गोलाकार भाग से पीठ तक चिलक। नकसीर के साथ कुकुर खाँसी (आर्निका)। खाँसी धूम्रपान से बढ़े।

पीठ—पिठासे में कुचले जाने जैसा दर्द, खासकर बैठते समय। रीढ़ की अन्तिम अस्थि में फटने जैसा दर्द, उदर दबाने से कम हो।

अंग—अंगों की कमजोरी। अस्थि दर्द और अंगों में कम्प, रात में अधिक। रोगी ठंडक सहन न करे। तेल जैसा पसीना। अंगों में कम्प, खासकर हाथों में वात कम्प। जोड़ों में फटन दर्द। रात में टाँगों पर ठण्डा, चमकीला पसीना। पैरों और टाँगों का शोथ।

चर्म—प्राय: बराबर तर रहे। चर्म का लगातार सूखापन। मरक्युरियस के विपरीत है। अधिक गन्धमय, चमकीला पसीना, रात में अधिक हो। **अधिक पसीना बहने की प्रवृत्ति, मगर उससे आराम न मिले।** मवाद भरे और रसभरे दाने। घाव, आकार-भ्रष्ट, किनारे अस्पष्ट। मुख्य स्फोट के चारो ओर दाने। खुजली, बिस्तर की गरमी से अधिक हो। कोरण्ड रोग; अधिक मवाद पड़ना। हर एक बार सर्दी लगते ही ग्रन्थियाँ बढ़ें। बाघी। अंडकोष प्रदाह (**क्लिमैटिस; हैमामे०; पल्से०**)।

ज्वर—प्राय: आमाशय या पित्त सम्बन्धी, साथ में अधिक रात्रि-पसीना, दौर्बल्य, धीमा ज्वर और अधिक दिनों का पुराना ज्वर। गरमी और कम्प—बारी-बारी से। पीला पसीना। **अधिक पसीना बिना आराम।** रेंगन शीत, शाम को और रात में अधिक। एक ही भाग में शीत और गरमी की लहरें बारी-बारी से।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : रात में, नम और तर मौसम, दाहिनी तरफ लेटने से, पसीना होने से, गरम कमरे में और बिस्तर की गरमी से।

संबंध—तुलना कीजिए : **कैपेरिस कोरियासिया** (बहुमूत्र, ग्रन्थि रोग, आम का दस्त, इन्फ्लुएञ्जा), **एपिलोबियम**-विलो हर्ब—(जीर्ण दस्त, मरोड़ और आम के साथ, अधिक लार, निगलने में कष्ट, शरीर का क्षय होना, घोर दौर्बल्य, शिशु-हैजा); **कैलि० हाइड्रियो०** (कड़े उपदंश क्षत में) **मरक्युरियस एसेटि०** (रोगग्रस्त भाग में प्रदाह और साथ में कड़ापन; सूखापन और गरमी, आँखें सूजी हुई, जलन, खुजली। नमी की कमी। गला सूखा, बात करना कठिन, वक्षास्थि के निचले भाग में दाब, मूत्रमार्ग में उपदंशीय क्षत, केंचुआ विशेष, घाव के किनारे दर्दवाले), **मरक्युरियस ऑरिटस** (अपरस और उपदंशीय जुकाम, मस्तिष्क अर्बुद, नाक और अस्थियों पर उपदंश का आक्रमण पीनस रोग, अण्ड की सूजन); **मरक्युरियस ब्रोमेटस** (उपदंश के दूसरे चरण के चर्म रोग), **मरक्युरियस नाइट्रोसस**—नाइट्रेट ऑफ मरक्युरी—(खासकर फुन्सीदार चक्षु प्रदाह और कनीनिका प्रदाह, सुजाक और श्लैष्मिक चकत्ते, गड़न दर्द के साथ उपदंशीय गुल्म), **मरक्युरियस फासफोरिकस** (उपदंशजनित स्नायु रोग, अस्थि गुल्म); **मरक्युरियस प्रेसिपिटेटस रियूबर** (रात को लेटने पर नींद के क्षण में दम घुटने के हमले, एकाएक उछल पड़े जिससे आराम मिले; सूजाक, मूत्रमार्ग कड़ी डोरी की तरह लगे; कोमल, फैलनेवाले उपदंशीय क्षत और बाघी, बिम्बिका रोग; श्लैष्मिक चकत्ते, अकौता, चर्म पर फटन और दरारें, दाढ़ी की खाज, नेत्रच्छद प्रदाह, खाने और लगाने के लिए, सिर के पिछले भाग में सीसे जैसा भारीपन, साथ में कान बहना), **मरक्युरियस टैनिकस** (आमाशयिक-आंत्रिक रोगों में या मरक्युरी के अन्य औषधियों से अति उत्तेजनीय रोग में औपदंशीय चर्म रोग), **एरिथ्रिनस**—साउथ अमेरिकन रेडमुलेट फिश—(लाल चर्म पर से रूसी छूटना और उपदंश रोग, सीने पर लाल दाने, रूसी छूटना), **लोलियम टेमुलेण्टम**

(हाथों और टाँगों में कम्प), मरक्युरियस कम कैलि (जीर्ण स्नायविक जुकाम । चेहरे का तीव्र पक्षाघात), हेनकेरा —ऐलम रूट—(आमाशयिक-आंत्रिक प्रदाहिक मिचली, पित्त और झागदार श्लेष्मा की कै, मल पानी-सा, अधिक, चिकना, मरोड़, मल त्यागने से जी न भरे । मात्रा अरिष्ट की २–१० बूँद ।

तुलना कीजिये : मेजेरि०, फाम०; सिफि; कैली म्यूर; इपियोप्स ।

क्रियानाशक—हीपर; आरम, मेजेरि० ।

पूरक—बैंडियागा ।

मात्रा—२ से ३० शक्ति ।

मरक्युरियस कोरोसिवस (Mercurius Corrosivus)

(कोरोसिव सब्लिमेट)

मलाशय की मरोड़ में, जो लगातार जारी रहती है और मल-त्यागने से भी कम नहीं होती उसमें यह औषधि सभी औषधियों से आगे है । यह मरोड़ अक्सर मूत्राशय में भी पहुँच जाता है । अलब्यूमेन वाला मूत्र (ब्राइट्स रोग) । सुजाक, दूसरा चरण, लगातार ऐंठन के साथ । गुर्दों के स्राविक केन्द्रों को नष्ट करती है । यह काम धीरे-धीरे करती है पर निश्चित रूप से । गर्भाधान की आरम्भिक अवस्था में साण्ड-लाल मूत्र (बाद में फॉस०, जबकि गर्भकाल पूरा हो) ।

सिर—प्रलापक सन्निपात, मूर्च्छा । अगले भाग का दर्द, रक्ताधिक्य, गालों में जलन । खोपड़ी के अस्थि-परिवेष्ट में खींचन, दर्द ।

आँखें—ढेलों के पीछे दर्द जैसे बाहर को ढकेली जा रही हों । जल जाने की तरह के छाले, पर्दे के गहरे घाव । अधिक प्रकाशातंक, तेजाबी स्राव । उपतारा प्रदाह, साधारण और उपदंशीय (बाहरी प्रयोग में चपकाव रोकने के लिए एट्रोपिन के साथ) । दर्द, रात में अधिक, तेज, जलन, चिलक, फटन । मवाद पड़ने की तेज सम्भावना । उपतारा मटियाला मोटा, न तो फैले और न सिकुड़े । सांडलाल चित्र-पट प्रदाह, नवजात शिशु का मवादी नेत्र प्रदाह । पलक शोथमय, लाल, छिले । तीव्र जलन । आँखों में दर्द ।

नाक—तीव्र जुकाम । पीनस, नथनों की बिचली पर्दे वाली पतली हड्डी में छेद हो (कैलि बाइक्रो) । नथनों में कच्चापन और गड़न । पिछले भाग की सूजन । श्लैष्मिक झिल्ली सूखी, लाल और खूनी, श्लेष्मा से ढँकी हुई ।

कान—घोर टपकन । घृणित मवाद ।

चेहरा—सूजा हुआ । लाल फूला हुआ । होंठ काले, सूजे हुए । दाँत गन्दे मैल जमी हुई । हड्डियों का स्नायुशूल ।

मुँह—दाँत ढीले। मसूढ़े बैगनी, सूजे हुए और स्पंज की तरह नर्म। जबान सूजी और फूली हुई। लार बहना। मसूढ़ों का सड़ना। पानी अधिक आना, स्वाद नमकीन और कड़वा।

गला—लाल सूजा, वेदनापूर्ण फूला। काग फूली हुई निगलना कष्टकर। कानों में बहुत तेज दर्द के साथ; नाक के पिछले भाग में अधिक दर्द हो। बहुत सूजन के साथ जलन, दर्द, जरा से बाहरी दाब से अधिक हो। वक्षोदर के आस-पास की सभी ग्रन्थियाँ सूजी हों।

आमाशय—लगातार हरी, पित्त की कै। कौड़ी अति कोमल।

उदर—कुचलने का-सा संवेदन; अन्धान्त्र-पुच्छ क्षेत्र और अनुप्रस्थ बृहदन्त्र में फूलन, जरा भी छूने पर बहुत दर्द।

मल—पेचिश; ऐंठन जो मल त्यागने से कम न हो, लगातार हाजत। मल गरम, खूनी, चिकना, घृणित, कटन के साथ दर्द और श्लैष्मिक झिल्ली की धज्जियों के साथ।

साँस-यन्त्र—स्वर-यन्त्र में चाकू से काटने की तरह दर्द। आवाज देती हुई। खाँसी खूनी बलगम के साथ। नाड़ी तेज और सविरामिक। सीने में बलगम से चिलकन।

मूत्र—मूत्रमार्ग में अति जलन। पेशाब गरम, जलता, थोड़ा-सा, दबा हुआ, खूनी, हरियाली लिए स्राव। सांडलाल मूत्र। मूत्राशय से ऐंठन। कटन दर्द, मूत्र-मार्ग से मूत्राशय में जाये। पेशाब करने के बाद पसीना हो।

पुरुष—लिंग और अण्ड बहुत अधिक सूजे हुए। उपदंश क्षत, फैलने वाले रूप धारण करें। सुजाक; मूत्रमार्ग का मुँह लाल, सूजा हुआ, लिंग दर्द करे और गरम। स्राव हरियाली लिए, गाढ़ा।

ज्वर—जरा-सी बाहरी हवा से शीत लगे। पसीना अधिक, शरीर ठंडा।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम को, रात में और अम्लपन से। घटना : आराम से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : आर्से०, लैके०, लिओण्युरस—मदर वॉर्ट (पेड़ू के यन्त्रों को प्रभावित करती है, झटकों को और स्नायविक उत्तेजना को कम करती है, स्राव को बढ़ाती है और ज्वर की उत्तेजना को घटाती है। मासिक-धर्म और प्रसव स्राव को उत्साहित करती है, पेचिश, कै, उदर में भयानक दर्द, घोर प्यास। जबान सूखी और दरारेदार)। मोन्सोनिया—(बृहत् मात्रा में पेचिश रोग में व्यवहृत)।

क्रियानाशक—कैल्शियम सल्फाइड सभी तरह के बाइक्लोराइड विष का संहार करती है।

मात्रा—६ शक्ति।

— :o: —

मरक्युरियस साइनेटस (Mercurius Cynatus)

(सायनाइड ऑफ मर्करी)

तीव्र संक्रमण, फुफ्फुस प्रदाह, गुर्दा प्रदाह। इसका प्रभाव संक्रामक रोग के विष की तरह होता है। अधिक तीव्र पतनावस्था, रक्तस्राव की प्रवृत्ति, शरीर के सभी छिद्रों से रक्त प्रवाहित होना, गहरे रङ्ग का पतला रक्त। नील रोग, तेज साँस और हृदय गति तेज, सांडलाल मूत्र और पेशियों में फड़कन और झटके। आंत्रिक ज्वर का फुफ्फुस प्रदाह। रोग संघर्ष के कारण शरीर का रंग नीला, जहाँ दम घुटना सम्भावित हो और फुफ्फुसीय पक्षाघात का भय हो। अधिक पसीना। विशेष रूप से मुखगह्वर को प्रभावित करती है। यह लक्षण और साथ में अधिक शिथिलता, इस औषधि को झिल्ली प्रदाह की चिकित्सा में स्थान प्रदान करते हैं, जिस क्षेत्र में इस औषधि ने बहुत सफलता प्राप्त की है। सांघातिक रोग, अधिक शिथिलता, ठण्डापन और मिचली। उपदंशीय घाव जब छेद होने की सम्भावना हो।

सिर—अधिक उत्तेजना, क्रोधाक्रमण, प्रचण्डता, बकवादीपन। कष्टदायक सिर दर्द। आँखें धँसी हुईं, चेहरा पीला।

मुँह—घावों से भरा हुआ। जबान पीली। लार अधिक। दुर्गन्धित साँस, लार ग्रन्थियों का दर्द और सूजन। तीखा स्वाद। मुँह के घाव पर भूरी झिल्ली रहे।

गला—कच्चा और वेदनापूर्ण जान पड़े। श्लैष्मिक झिल्ली फटी हो, घाव हो। जगह-जगह पर कच्चापन दिखाई दे, खासकर भाषण देने वालों के मुँह में। गला बैठा, बोलने पर दर्द। कोमल तालु और मुखगह्वर का सड़न क्षय मुखगह्वर बहुत लाल, निगलना बहुत कठिन। नाक से गहरे रंग का खून गिरे। स्वरयन्त्र और नाक का झिल्ली प्रदाह (कैलि बाइक्रो०)।

आमाशय—मिचली, पित्त, खून की कै। हिचकी, उदर दर्द करे, दाब असह्य।

मलाशय—असह्य दर्द। गुदा के चारों तरफ लाली। अक्सर रक्तस्राव। मरोड़ के साथ मल त्यागे। घृणित, पतले पदार्थ का स्राव, सड़ी गन्ध। काला मल।

मूत्र—केसरिया रंग का, दर्द से हो, सांडलाल थोड़ा। अधिक दुर्बलता और शीत के साथ गुर्दा प्रदाह। पेशाब का दब जाना।

चर्म—नमी, बरफीली ठण्डक।

मात्रा–६ से ३० शक्ति। ६ से नीचे की शक्ति के आरम्भ से रोग बढ़ने की सम्भावना है।

———

मरक्युरियस डलसिस (Mercurius Dulcis)

(कैलोमेल)

कानों के नजलाजनित प्रदाह और कंठकर्णी नली के नजले में लाभदायक है; बहरापन। गुदा में दर्द के साथ दस्त। प्रोस्टेट-ग्रन्थि प्रदाह। स्वल्पविराम पित्ता-क्रमण। पीला चेहरा, थुलथुला, फूला, अधिक रोगग्रस्त; ढीलापन। प्रदाह जिसमें चमकीले स्राव हों। स्वल्प विराम पित्त ज्वर प्रवृत्ति में मुख्य तौर से सांकेतित, अंत्रावरक झिल्ली-प्रदाह और मस्तिष्क झिल्ली प्रदाह में जब साथ में चमकीला स्राव हो। गुर्दा और हृदय के सम्मिलित रोग के साथ शोथ, खासकर जब कामला रोग भी उपस्थित हो (हेल)। जिगर का कड़ा हो जाना खासकर अधिक बढ़ने की अवस्था में १x का प्रयोग करें (जूसेट)।

कान—बिचले भाग का प्रदाह, कंठकर्णी नली का बन्द होना, कंठमालिक बच्चों के कान के रोग, कर्णपटह की झिल्ली। सिकुड़ी हुई मोटी और निश्चल।

मुँह—घृणित साँस, लार बहना; मसूढ़े दर्दीले। घाव। जबान काली। गहरे रङ्ग की सड़ी लार बराबर बहती रहे, बहुत कष्ट। गले में घाव और निगलने में कष्ट। दानेदार गलकोष प्रदाह।

पेट—मिचली और कै। बच्चों की सामयिक कै। (क्युप्रम, आर्से०; आइरिस)।

मल—थोड़ा, खूनी श्लेष्मा पित्त के साथ, और लगातार इच्छा, बिना मरोड़। गहरा, हरा पानी-सा, बरछी लगने जैसे दर्द के साथ। गुदा में दर्द भी और जलन। पेचिश; श्लेष्मा और खून वाला थोड़ा मल जो पित्त से ढँका हो।

चर्म—ढीला और पुष्टिहीन। ग्रन्थियाँ सूजी हुईं। फैलने वाले घाव। ताँबे के रङ्ग वाले दाने।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : केलि म्यूरि०।

मात्रा—२ से ६ विचूर्ण। सुखप्रद प्रभाव के लिए (स्थूल विधि), आँतों को साफ करने के लिए २ या ३ ग्रेन की मात्रा में पहली दशमलव शक्ति, प्रति घण्टे कई बार दोहराना।

मरक्युरियस आयोडेटस फ्लेवस (Merc. Iod. Flla.)

(प्रोटो आयोडाइड ऑफ मर्करी)

गले के रोग, ग्रन्थियों की बहुत सूजन और जबान पर एक विशेष प्रकार का मैल, दाहिनी तरफ अधिक। उपदंश क्षत जिसमें बहुत काल तक कड़ापन कायम रहे।

पुट्ठों की ग्रन्थियाँ सूजी हुईं, बड़ी और कड़ी। स्तन अबुंद, साथ में अधिक मात्रा में गरम पसीना निकलने की प्रवृत्ति और आमाशयिक गड़बड़ी।

जबान—मोटी, मैल, जड़ पर पीलापन। सिर और किनारे लाल हो सकते हैं और दाँत का निशान पड़ जाये।

गला—क्षुद्र गह्वर का तालुमूल प्रदाह। जब तालुमूल की केवल ऊपरी सतह रोगग्रस्त हो। दुर्गन्धित साँस के साथ चर्बीला स्राव। सूजन दाहिनी तरफ से आरम्भ हो। गलकोष के पिछले भाग पर छोटे घाव। सूजे हुए स्वरयन्त्र और मुख-गह्वर पर से आसानी से उधड़ने वाले चकत्ते, दाहिने तालुमूल पर अधिक कष्ट, अधिक चिमड़ा श्लेष्मा, ढोंके का संवेदन। निगलने की लगातार इच्छा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : प्लम्बम आयोडेट० (स्तन अर्बुद)।

मात्रा—२ विचूर्ण।

मरक्युरियस आयोडेटम रुबर (Msrc. Iod. Rub.)

(बिन-आयोडाइड ऑफ मर्करी)

झिल्ली प्रदाह और घावयुक्त गलक्षत; खासकर बाँयीं तरफ, अधिक ग्रन्थि-सूजन के साथ। जीर्ण मवादी बाघी। कड़े उपदंश-क्षत। कंठमालिक रोगियों में जीर्ण उपदंश रोग। जुकाम का आरम्भिक चरण, खासकर बच्चों में।

गला—मुखगह्वर गहरा लाल, निगले तो दर्द हो। नाक और गले में बलगम खखारने की प्रवृत्ति, गले में ढोंके का संवेदन। गले और गरदन की पेशियों का कड़ापन।

नाक—जुकाम और कम सुनना, दाहिनी तरफ की नाक गरम। पिछले भाग में श्लेष्मा खखारना, नासास्थि सूजी हो। नाक और गले की श्लैष्मिक झिल्ली ढीली हो। कंठकर्णी नली का बन्द होना, फट से आवाज करके खुले।

मुँह—मसूढ़े सूजे हुए, दाँत दर्द करें, ग्रन्थि सूजी हुई। जबान की झुलसन संवेदना। मुख-क्षत। अधिक लार। जबान जड़ के पास कड़ी मालूम हो और हिलाने में दर्द करे।

गला—झिल्ली प्रदाह, जबड़ा निम्न ग्रन्थि में पीड़ाजनक, रक्ताधिक्य, मुखगह्वर गहरा लाल, बायीं तरफ के तालुमूल में अधिक कष्ट। कोरण्ड का झिल्ली प्रदाह। अगर बराबर दी जाये तो अक्सर तालुमूल ग्रन्थि के चारों तरफ के प्रदाह को नाश करती है। काग बढ़ने से खाँसी आये, गल क्षत के साथ। स्वरभंग के साथ स्वरयांत्रिक रोग।

चर्म—छोटी दरारें और चिटकन, कड़े दाने। उपदंश रोग के कड़े क्षत, उपदंश के घाव। बाघी, अण्डकोष में मांस वृद्धि।

मात्रा—३ विचूर्ण।

मरक्युरियस सल्फ्युरिकस—हाइड्रार्ज० ऑक्साइड सब-सल्फ
(Merc. Sulph, Hydrarg, oxyd, Sub-Sulph)
(टरपेथम मिनरेल येलो सल्फेट ऑफ मरकरी)

पानी-सा मल, गुदा द्वार में जलन। जबान का सिरा दर्दीला। टाँगों का शोथ। सूरज की किरणों से छींक आना। प्रातःकालीन दस्त, मल पीले पदार्थ की गरम धारा में फलक के निकले। चावल के पानी की तरह, अधिक मात्रा में मल। थोड़ा, जलता हुआ, साफ रंग का मूत्र। घोर साँस-कष्ट, उठ कर बैठ जाना पड़े। साँस तेज, छोटी, सीने में जलन। वक्षोदक रोग (आर्से०) हृदय पीड़ा व कमजोरी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: मरक्युरियस एसिटेट, (अन्तिम बूँद निकलते समय मूत्र मार्ग में कटन)।

मेथिलीन ब्लू (Mathylene Blue)
(वन ऑफ दी एनिलीन डाइस)

स्नायुशूल, स्नायु दौर्बल्य, मलेरिया की एक औषधि। टायफॉयड, इस रोग में यह पेट का फूलना कम करती है। प्रलापक सन्निपात। ज्वर, मवाद बनने को कम करती है। कम्प, ताण्डव रोग, मिरगी रोग की सम्भावना। गुर्दा प्रदाह (तीव्र कोरण्ड प्रदाह) अरुण ज्वर सम्बन्धी गुर्दा प्रदाह। मूत्र हरे रंग का हो जाता है। इसके व्यवहार से आयी मूत्राशय उत्तेजना जरा-सा जायफल खाने से ठीक हो जाती है। गुर्दों में पीब आना, मूत्र में अधिक मात्रा में मवाद रहना। सुजाकजनित वात रोग और मूत्राशय प्रदाह। पीठ दर्द, गृध्रसी, स्नायुशूल, संन्यास रोगी की पिछली अवस्थाएँ (जिसेवियस)।

मात्रा—३ शक्ति।

मेजेरियम (Mezereum)
(स्पर्ज ओलिव)

चर्म लक्षण, अस्थि रोग और स्नायुशूल खासकर दाँतों और चेहरे में, सभी महत्व रखते हैं। जोड़ों में कुचलन, खींचना और कड़ापन के साथ, थकन संवेदना,

कई प्रकार के दर्द, शीत के साथ और ठंडी हवा असह्य। अस्थि पीड़ा, चेचक का टीका लगावाने के बाद दाने निकलना। पेशियों में ऐंठन के साथ जलन, लपकन संवेदना। दर्द ऊपर को लपकते हैं। मानो रोगी को बिस्तर पर से ऊपर की तरफ खींच रहे हों। एक बगले रोग। रोगी ठंडी हवा से बहुत घबराये।

सिर—बात करना कठिन, परिश्रम मालूम पड़े। सिर दर्द; बात करने से बढ़े। दाहिनी तरफ गशीवाला सिर दर्द। सिर के बाहरी भाग के रोग, पपड़ीदार दाने, सफेद खुरण्ड। चेहरे और दाँतों में तीव्र स्नायुशूल, कानों की तरफ बढ़े, रात में हो; भोजन करने से बढ़े, गरम चूल्हे के पास कम हो। दाँतों की जड़ का सड़ना। दाँतों लम्बे मालूम पड़ें।

नाक—छींक, जुकाम, भीतरी भाग छिला हुआ। पिछले भाग में ग्रन्थि बृद्धि।

कान—बहुत खुला मालूम पड़े मानो पर्दा बाहरी ठंडी हवा से टकरा रहा हो और हवा कानों में बह रही हो। अंगुली देने की इच्छा।

आँखें—आपरेशन के बाद पलकों का स्नायुशूल। खासकर आँखों का ढेला निकलवाने के बाद। दर्द फैलता है और ऊपर की तरफ झपटता है, ठंडापन और हड्डियों के कड़ापन के साथ।

चेहरा—लाल। जुकाम के साथ मुँह के चारों तरफ फटना।

आमाशय—टाँग की चर्बी खाने की इच्छा। जबान में जलन, पेट तक फैले। मुँह से पानी बहे। गले में मिचली मालूम दे, खाने के बाद कम हो। जीर्ण आमाशय शूल, जलन, छिलन दर्द, मिचली। कै कत्थई रंग की। अधिक जलन के साथ आमाशयिक घाव।

उदर—बच्चों में उदर बढ़ जाने के साथ ग्रन्थियों की सूजन। पेड़ू की परिधि में दाब। वादी शूल, कम्प और कठिन साँस के साथ।

मलाशय—प्रसव के बाद कब्ज। मलाशय का बाहर निकलना। दस्त छोटे सफेद कण निकलना। हरा स्राव। कब्ज, जिगर और गर्भाशय की कर्महीनता के साथ। गुदा का संकुचन, चिलक और मलाशय का बाहर निकलना।

मूत्र—मूत्र के ऊपर लाल परत का तैरना। गरम, खूनी। काटने वाला, पेशाब कर लेने के बाद मूत्र मार्ग के अगले भाग में जलन। मूत्राशय में ऐंठन, दर्द के बाद खूनी पेशाब। पेशाब कर लेने के बाद कुछ बूँदें खून की निकलें।

स्त्री—बार-बार मासिक-कर्म, जल्दी, मात्रा में अधिक। प्रदर अण्डे की सफेदी की तरह बहुत काटने वाला।

पुरुष—अण्ड का बढ़ जाना। घोर काम इच्छा। खूनी पेशाब के साथ सुजाक रोग।

साँस-यन्त्र—वक्षोदर की अस्थियों में चोटीलापन और जलन। सीने के आरपार संकुचन। खाँसी, भोजन करने से बढ़े, बहुत नीचे के भाग में, उत्तेजना, गरम चीज पीने से।

अंग—गरदन और पीठ में दर्द, हरकत से और रात में बढ़े, छूना असह्य, जंघास्थि और लम्बी हड्डियों में दर्द और जलन। टाँगें और पैर सुन्न हो जायें। कटि और घुटने में दर्द।

चर्म—अकौता, असह्य खुजली, योनि खाज के साथ शीत, जो बिस्तर में अधिक हो। घाव खुजलायें और जलें, चारों तरफ दाने और चमकते, गहरे लाल घेरे। जलन, दर्द के साथ कमरबन्द की तरह दाद। हड्डियाँ खासकर लम्बी हड्डियाँ सूजी हुई और प्रदाहित, सड़न, अस्थि गुल्म; रात में, छूने से, तर मौसम में दर्द बढ़े (**मर्करी सिफिलिनम**)। फटा, पका और ऊपर मोटी खुरण्ड बने, जिसके नीचे मवाद पड़े (**क्राइसोफैनिक एसिड**)।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : ठण्डी हवा, रात में, शाम को आधी रात तक, गरम भोजन से, छूने से, हरकत से। **घटना** : खुली हवा में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : **डिर्का पैलस्ट्रिस** लेदर ऊड—(पाकाशयिक-आन्त्रिक उत्तेजक, लार बहने के साथ, कै और दस्त पैदा करनेवाली, मस्तिष्क प्रदाह, स्नायुशूल, साथ में उदासी, धड़कन और साँस-कष्ट); **मर्क०; फाइटो; रस०, गुयेकम, सिफि०**।

क्रियानाशक : कैलि० हाइड्रि०, मर्क०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

माइक्रोमेरिया (Micromeria)

(यरबा बुएना)

कैलिफोर्निया का एक पुदीने की तरह का पौधा जो आमाशय और आँतों पर काम करता है। चाय की तरह शूल और वादी कम करने के लिए काम में आता है। स्वादिष्ट, ज्वरनाशक वस्तु है, रक्त साफ करती है और बलवर्धक है।

पेट—मिचली, पेट और आँतों में दर्द। वादी।

मात्रा—अरिष्ट।

मिलिफोलियम (Millefolium)

(ऐरो)

कई प्रकार के रक्तस्राव के लिए अमूल्य औषधि, गहरा लाल खून। उलझी हुई हार्निया, चेचक, आमाशय के गढ़े में अधिक पीड़ा के साथ। पथरी का चीरा लगवाने के बाद के उपद्रवों में हितकर है। ऊँचाई से गिरने के बाद का बुरा असर, भारी चीज उठाना। लगातार तापाधिक्य। मुँह से खून आना।

सिर – धीरे हिलने से नकसीर आए। मालूम हो कि कोई चीज भूल गयी हो। सिर खून से भरा मालूम पड़े। मासिक-धर्म दबने से अकड़न और मिरगी आए। छुरी लगने जैसे दर्द के हमले।

नाक—नकसीर (इरेक्थाइटिस)। आँखों में नाक की जड़ तक बरछी लगने जैसा दर्द।

मल—आँतों से रक्त गिरे। खूनी बवासीर। पेशाब खूनी (सेने स० आरियस)।

स्त्री—मासिक-धर्म समय से पहले, मात्रा में अधिक, देर तक बहता रहे। गर्भाशय में रक्तस्राव, गहरा लाल, पतला। गर्भाशय में शिराओं की दर्द भरी सिकुड़न।

साँस यन्त्र—क्षय रोग के आरम्भ में खून थूकना, खूनी बलगम के साथ खाँसी जो मासिक-धर्म के दबने से या बवासीर में हो। तीव्र धड़कन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : फिकस बेनोसा (पाकर)। (आँतों और फुफ्फुस से रक्त प्रवाह); एकालाइफा और हेलिक्स टोस्टा—स्नेल—(खून थूकने में, सीने के रोगों में, क्षय रोग), इसके अतिरिक्त सिकेलि, इपिका०; इरेक्थाइटस, जेरेनियम मेकु०, हैमामे०।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

मिचेला (Mitchella)

(पारट्रिज-बेरी)

सभी रोगों के साथ, खासकर गर्भाशयिक प्रदाह के साथ, मूत्राशय लक्षण रहते हैं।

मूत्र—मूत्राशय की गरदन पर उत्तेजना, पेशाब लगने के साथ। (यूपेटो० पर्फ; एपिस०), मूत्रकृच्छ्र। मूत्राशय का नजला।

स्त्री—गर्भाशय की गरदन गहरी लाल। कष्टदायक मासिकधर्म और गर्भाशय से गहरा लाल खून गिरे।

सम्बन्ध—तुलना : चिमाफिला अम्बेला०, सेनेसियो०; इयुवा उर्सी, जेरेनियम मैकु०, गॉसिपियम।

मात्रा—अरिष्ट।

मोमोर्डिका बैल्सामिना (Momordica Balsamina)

(बैल्सैम एपल)

मरोड़, शूल, दर्द पीठ और कोढ़ी में, साथ में अधिक मासिक-धर्म। वृहदन्त्र के प्लीहा मोड़ में अफरा। शोथ।

सिर—चक्कर; सिर का भीतरी पदार्थ हल्का मालूम हो, आँखों के आगे कोहरा।

उदर—गड़गड़ाहट, ऐंठन, शूल। पीठ से उठे, पूरे उदर पर फैले।

स्त्री दर्द वाला और अधिक मासिक धर्म, प्रसव की तरह दर्द, बाद में खून गिरे, पिठासे का दर्द पेड़ू की तरफ आवे।

सम्बन्ध- मोमोर्डिका कैरैण्टिया—इण्डियन वेराइटी—अधिक तीव्र लक्षण—आँतें पीले पानी की तरह के पदार्थ से भरी हों, मल तेजी से आवाज के साथ निकले—ऐंठन, प्यास, शिथिलता। हैजे के लक्षण। क्रोटन टिग्लियम, एलैटेरियम की तरह। ३x का व्यवहार करें।

मात्रा—अरिष्ट। जलन, हाथ के चर्म की फटन इत्यादि पर बाहर रूई से लगायें और पुल्टिस के रूप में व्यवहार करें।

मार्फिनम (Morphinum)

(ऐन एल्केलॉयड ऑफ ओपियम)

मॉर्फिन का अफीम से वैसा ही सम्बन्ध है जैसा एट्रोपिन का बेलाडोना से—यानी उसका स्नायविक रूप दर्शाती है। यह कम उत्तेजक, कम आक्षेपिक है परन्तु अधिक नींद लाने वाली है। कम कब्ज करती है और मूत्राशय के संकुचन को अधिक प्रभावित करती है। यह कम पसीना लाती है और अधिक खाज उत्पन्न करती है।

मन—घोर उदासी। चिड़चिड़ापन, कसूर निकालना, मूर्च्छा वायुयुक्त। आतंक से धक्का लगना। स्वप्न जैसी अवस्था।

सिर—जरा-सा सिर हिलाने से चक्कर आवे। 'कसने जैसा' संवेदन के साथ सिर दर्द। फटन दर्द, सिर पीछे की तरफ खिंचा हो।

आँखें—नीली, पलक झपके। आँखों की खुजली। आँखें बन्द करने पर दृष्टिभ्रम। घूरना, रक्तमय, फैलना, ऐंचापन। पुतली का असमान संकुचन। अस्थिर दृष्टि। बिलनी। दृष्टि पेशियों का आंशिक पक्षाघात।

कान—बायें कान में वेदनापूर्ण टपकन, गरमी से कम। सारे शरीर में रक्त संचार का शब्द सुनाई दे।

चेहरा—चेहरे, होठों, जबान, मुँह या गले में धुँधलापन लाल या पीला।

नाक—छींक के दौरे। नाक के सिरे पर खुजली और टपकन।

मुँह—बहुत सूखा। जबान सूखी, बादामी बैगनी रंग बीच में। प्यास। अरुचि, मांस से घृणा के साथ।

गला—सूखा और सिकुड़ा, गलकोष पक्षाघात ग्रस्त, निगलना प्रायः असम्भव, गरम चीज पीने से कम; ठोस चीज से बढ़े।

आमाशय—मिचली, लगातार और मृत्यु तुल्य गशी, लगातार जी मिचलाए। हरा तरल पदार्थ कै करना। उठने पर मिचली और कै अधिक हो।

उदर—तना हुआ। उदर में और रीढ़ के पूरे भाग में तीव्र दर्द। कर्णपटह प्रदाह।

मलाशय—दस्त पानी-सा, कत्थई या काला, घोर कूँथन के साथ। कब्ज, मल बड़ा, सूखा, गठीला, छिलन और दरारें पड़ने की प्रवृत्ति के साथ।

मूत्र—मूत्राशय का आंशिक पक्षाघात। पेशाब रुक जाना। धीरे और कठिनता से पेशाब निकलना। मूत्र ग्रन्थि के ढीलापन और बढ़ जाने से पेशाब रुक जाना। मूत्राशय विकार तीव्र और जीर्ण।

पुरुष—नपुंसकता। दाहिनी अण्डकोष-नस में दर्द। (ऑक्जैलिक एसिड)।

दिल कभी बहुत तीव्र गति और कभी बहुत मन्द गति; बारी-बारी से। हृदय के पैशिक तन्तु स्वस्थ रहते हैं चाहे कितने ह। थके हों। नाड़ी छोटी, कमजोर, दोहरी चोट।

श्वास-यन्त्र—मूर्च्छायुक्त और साँस लेने में संघर्ष, वक्षोदर मध्यस्थ पेशी का पक्षाघात, हिचकी, साँसकष्ट, आवेशपूर्ण, पहली नींद में (लैके०, ग्रिण्डेलिया)। हृत्पेशी विकारजनित दमा। सीना कसा हुआ-सा। सीने के निचले पंजर में दर्द। सूखी, कड़ी, कष्टदायक, थकाने वाली खाँसी, रात में अधिक। दम घोंटने वाली खाँसी, चिमड़ा बलगम, पतला, थोड़ा, लेकिन ढीला और अधिक सुनाई पड़े।

पीठ—रीढ़ के साथ-साथ दर्द। कमर में कमजोरी। कटि-क्षेत्र के आरपार टीस, सीधा होकर न चल सके। (सिमिसिफ्यु०)।

अंग—लड़खड़ाकर चलना, सुन्न होना।

चर्म—सुर्ख, बैंगनी धब्बे दाद की तरह दाने। खुजली। चर्म का कड़ापन, रोग वृद्धि की चरम सीमा पर जुलपित्ती उभरना।

स्नायु-सम्बन्धी—बेचैनी और अति संवेदनीयता, कम्प, फड़कन, झटके, आक्षेप। पीड़ा से अति संवेदनीयता। दर्द से सभी अंगों में फड़कन और झटके आने लगें और अकस्मात घोर स्नायुशूल तथा गशी। सन्निपात, उदासी भय। स्नायुशूल जो प्रचंड पीड़ाजनक हो; बाँयीं तरफ आँख के घेरे के ऊपर और दाहिनी तरफ पसलियों के बीच में; गरम से कम, कई जोड़ों में साथ-साथ प्रदाह। सारे शरीर में दर्द। बिस्तर पर बहुत कड़ा मालूम हो। सोने के बाद रोग का बढ़ना (लैके०) दाद के बाद स्नायुशूल (मेजेरि०)।

नींद—जम्हाई लेना, औंघाई, लम्बी, गहरी नींद। अनिद्रा, अशान्त निद्रा, अक्सर चिहुँक उठना, औंघाई, मगर नींद न आवे।

ज्वर—शीत। बरफीली ठण्डक। जलन, गरमी, अधिक पसीना।

मात्रा—२ से ६ विचूर्ण।

मॉस्कस (Moschus)

(मस्क)

स्नायु मूर्च्छा और स्नायविक आक्षेप की औषधि। गशी के हमले और आक्षेप, अकड़न इत्यादि। विशेष संकेत ठण्डक से कष्ट बढ़ना है, हवा अति असह्य। अधिक स्नायविक कम्प और अक्सर गशी। अधिक वादी, फूलन। रोग साधारण मार्ग पर नहीं चलता। ठण्डापन। पेशियों में तनाव, चर्म और मस्तिष्क में तनाव।

मन—अनियन्त्रित हँसी। झिड़कना। धड़कन के साथ चिन्ता, चिहुँकना जैसे डर गया हो। कामेन्द्रिय सम्बन्धी व्याधि-शंका।

सिर—नाक की जड़ पर दाब, दर्द। सिर की चाँद पर दाब। जरा भी हिलने से चक्कर, बहुत ऊँचाई से गिरने का संवेदन। खाल स्पर्श सहन न करे। तोप छूटने की आवाज कानों में।

आमाशय—काली कॉफी जैसी उत्तेजक चीजें पीने की इच्छा। भोजन से घृणा। सभी चीजें स्वादहीन लगें। पेट के लक्षण के साथ सीने में चिन्ता। तनाव। भोजन करते समय गशी आ जाये। उदर बहुत फूला हुआ। आक्षेपिक, स्नायविक हिचकी (हाइड्रोसि० एसिड, सल्फ्यु० एसिड, इग्नेशिया एमेरा, कैंजुपुटम)।

पुरुष—तीव्र काम इच्छा, अनैच्छिक स्खलन। नपुंसकता जो मूत्रमेह से सम्बन्धित हो (कोका०)। समय से पहले बुढ़ापा। मैथुन के बाद मिचली और कै।

स्त्री—मासिक धर्म समय से बहुत पहले, अधिक मात्रा में। गशी की प्रवृत्ति (नक्स मस्केटा, वेरेट्रम०) मैथुन इच्छा, योनि में अधिक गुदगुदी। जननेन्द्रिय की तरफ खींचन और दाब, संवेदन जैसे मासिक धर्म हो जायेगा।

मूत्र—अधिक पेशाब। मूत्रमेह।

साँस यन्त्र—सीने में कसाव, लम्बी साँस लेना आवश्यक। एकाएक स्वरयन्त्र और गलकोष में सिकुड़न आये। कठिन साँस, सीना दबा हुआ, सीने का वायु मूर्च्छा-युक्त झटका, दमा। टेंटुए में झटका आये; फुफ्फुस के पक्षाघात की सम्भावना। दमा रोग, घोर चिन्ता, भय, दम घुटने की सवेदना के साथ। खाँसी रुके, बलगम न निकल सके। गुल्म वायु।

दिल—मूर्च्छा, वायुयुक्त धड़कन। दिल के चारों तरफ कम्प। दुर्बल नाड़ी और मूर्च्छा।

घटना-बढ़ना—घटना : खुली हवा में, मालिश से। बढ़ना : ठंडक से। खुली हवा अति ठण्डी जान पड़े।

तुलना : नक्स मस्केटा, एसाफिटिडा, वेलेरि०, सुम्बुल, इग्नेशि० कैस्टोरि०,।

स ता—ऐम्ब्रा०।

क्रियानाशक—कैम्फा०, कॉफि०।

मात्रा—पहली से ३ शक्ति।

म्युरेक्स (Murex)

(पर्पल फिश)

स्त्री-जननेन्द्रिय के लक्षण अति महत्वपूर्ण और मार्गदर्शक हैं और चिकित्सा से उनकी पुष्टि भी हुई है। विशेष तौर पर स्नायविक, प्रफुल्ल चित्त वाली, प्रेम करने वाली स्त्रियों के लिए प्रयुक्त है। रोगी कमजोर और दुबला।

मन—अधिक शोकग्रस्त, चिन्ता, भय।

आमाशय—दुर्बलता का संवेदन (सीपिया)। भूखा कुछ खाना आवश्यक।

स्त्री—गर्भ की चेतना। गर्भाशय की गरदन में टपकन। मैथुनेच्छा प्रबल, ऐसा जान पड़े कि कोई चीज पेड़ू के किसी दर्दीले स्थान पर चढ़ रही है, बैठने से कष्ट बढ़े। गर्भाशय की दाहिनी तरफ से दर्द दाहिने या बाँयें स्तन तक जाये। मैथुन-इच्छा प्रचंड। योनि भाग के जरा से स्पर्श से प्रचंड कामोत्तेजना भड़क उठे। गर्भाशय में चोटीला दर्द। मासिक-धर्म क्रमभ्रष्ट, अधिक, अक्सर बड़े थक्के। गर्भाशय से बाहर निकलने का सवेदन। गर्भाशय का जगह छोड़कर बाहर निकलना, बढ़ जाना साथ में पेड़ू में मरोड़ और तेज दर्द जो स्तनों तक बढ़े, लेटने से अधिक हो। कष्टरजः

और जीर्ण गर्भाशय के भीतर की श्लैष्मिक झिल्ली के स्तर का प्रदाह, जगह छोड़ना : दोनों पैर कस कर एक के ऊपर दूसरा दबाकर रखे रहना आवश्यक। प्रदर हरा या खूनी और मानसिक लक्षण तथा त्रिकास्थि में टीस बारी-बारी से। स्तनों में कोमल अर्बुद, मासिककाल में उनमें दर्द हो।

मूत्र – रात में कई बार पेशाब हो, उसमें बैलेरियन के समान गन्ध हो, लगातार इच्छा (क्रियोजो०)।

घटना-बढ़ना – बढ़ना : जरा भी छूने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : प्लैटिना; लिलि०; सीपिया (इसमें म्युरेक्स जैसी घोर कामोत्तेजना नहीं होती)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

म्युरियेटिकम एसिडम (Muriaticum Acidum)
(म्यूरियेटिक एसिड)

इस अम्ल में रक्त को प्रभावित करने की विशेषता है, जिसमें यह ऐसी विषैली अवस्था उत्पन्न कर देती है जैसी तापाधिक्य और घोर शिथिलता के साथ मन्द ज्वर में पायी जाती है। रोगिणी इतनी दुर्बल हो जाती है कि बिस्तर में पायताने की तरफ चिपक जाती है। शरीर के रसों का सड़ना। पेशाब करते समय अनैच्छिक मल-स्खलन। रक्तस्राव। विशेषकर मुँह और गुदा द्वारा।

मन—चिड़चिड़ा, खिन्न और अशांत जोर से कराहना। घोर बेचैनी, उदास, मौन। चुपचाप रोग सहन किया करे।

सिर—चक्कर आये, दाहिनी तरफ लेटने से अधिक हो, पिछला भाग भारी मानो सीसा भरा हो। दूसरों की बोली असह्य हो। ऐसा दर्द मानो मस्तिष्क कुचल गया है।

नाक – रक्त गिरे; बहुत छींक आना।

चेहरा—निचला जबड़ा लटका हुआ, दाने और झुर्रियाँ, होंठ कच्चे; सूखे, चिटके हुए।

मुँह—जबान पीली, सूजी हुई, सूखी, चमड़े की तरह सुन्न। जबान पर गहरे घाव। जबान में कड़ी गुठलियाँ। अन्तस्त्वक् प्रदाह, किनारे नीले, लाल (कार्बो० एसिड)। मुख-क्षत। मसूढ़े और ग्रन्थियाँ सूजी। साँस दुर्गन्धित। दाँतों पर पपड़ी।

गला—काग सूजा हुआ। घाव और रोगग्रस्त झिल्लियाँ। शोथमयी, गहरे रङ्ग का कच्चा। निगलने की चेष्टा करने से झटके आएँ और गला घुटे।

आमाशय—मांस को देखना या उसका विचार सहन न हो। कभी-कभी प्रबल भूख और पानी की लगातार इच्छा। आमाशय नजले में नमक के तेजाब की कमी और भोजन का अप्राकृतिक उबाल।

मलाशय—पेशाब करते समय अनैच्छिक मल-स्खलन की प्रवृत्ति। बवासीर; हर प्रकार के स्पर्श से अति उत्तेजनीय, साफ करने वाला कागज तक सहन न हो। पेशाब करते समय गुदा में खाज हो और काँच निकलना। गर्भावस्था में बवासीर, नीलापन, गरम, प्रचण्ड चिलकन।

दिल—नाड़ी तेज, दुर्बल और छोटी। हर तीसरी ठोंक पर रुक-रुक कर चले।

मूत्र—बिना मल त्यागे पेशाब न कर सके।

स्त्री—मासिक-धर्म बहुत जल्दी हो। मासिक काल में गुदा दर्द करे। योनि का घाव।

अङ्ग—भारी, दर्द वाले, कमजोर। लड़खड़ाती चाल। एड़ी की मोटी नस में दर्द।

चर्म—मवादी दाने, अति खाज (रसटॉक्स०), कारबंकल, निचले अंगों पर घृणित गन्ध के घाव। अरुण ज्वर, लाली, काली लकीरों के छोटे दाग के साथ, दाने कम। हाथों के पीछे अकौता।

ज्वर—हाथ-पैर ठण्डे। गर्मी बिना प्यास। आंत्रिक-ज्वर की तरह गशी। रक्त-स्राव। बेचैनी। अनैच्छिक मल-मूत्र त्याग। बिस्तर में पड़े रहने से बने घाव। नाड़ी तेज और दुर्बल। घोर पतनावस्था।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तर मौसम में, आधी रात के पहले। घटना : बायीं करवट लेटने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : फॉस एसिड, आर्से०; बैप्टिशिया, ब्रायो० और रस० के बाद अच्छा काम करती है।

क्रियानाशक : ब्रायोनिया।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

माइगेल लैसिओडोरा (Mygale Lasiodora)

(ब्लैक क्यूबन स्पाइडर)

कमजोरी, धड़कन, स्नायविकता, भय, मकड़ी की अन्य औषधियों की तरह इस औषधि का मुख्य चिकित्सा-क्षेत्र ताण्डव रोग है। काम सम्बन्धी लक्षण अति विशिष्ट हैं।

मन—प्रलाप करे; बेचैन, उदास, मृत्युभय, निराश।

चेहरा—चेहरे की पेशियों में फड़कन। तेजी के साथ बारी-बारी मुँह और आँखें खुलती रहें। गरम और सुर्ख। जबान सूखी और पपड़ीदार, कष्ट से बाहर निकले। सिर एक तरफ को खिंचा हो। रात को दाँत कटकटाये।

आमाशय—मिचली और निगाह धुँधली। भोजन से घृणा। अति प्यास।

पुरुष—अति कामोत्तेजना। सुजाक का बाँझपन। (कैलि ब्रोमेटम; कैम्फ०)।

अंग—असावधान चाल। सारे शरीर का हिलते रहना। कम्प। अति लाल धारियाँ जो लसिकावाहिनी के मार्ग पर हों। अंगों में फड़कन। अशान्त हाथ। आक्षेप, बाँहों और टाँगों का अनैच्छिक हिलते रहना। चलते समय अंग घसीटते जाएँ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एगैरिकस०, टैरेण्टुला०, क्युप्रम०, जिजिया।

घटना-बढ़ना—घटना : सोते में। बढ़ना : सुबह को।

मात्रा—२ से ३० शक्ति।

मायोसोटिस (Myosotis)

(फॉरगेट-मी-नॉट)

पुराना ब्रांकाइटिस और क्षय रोग। रात्रि-पसीना।

श्वास-यन्त्र—अधिक घृणित मवादी बलगम के साथ खाँसी; खाँसते समय गला घड़घड़ाये और कै हो; खाते समय या उसके बाद अधिक हो। वायु मार्ग से अति स्राव। बाँयें निचले फुफ्फुस में दर्द, खाँसते समय दर्द और उँगली मारकर परीक्षा करते समय टंकार सहन न हो।

मात्रा—अरिष्ट से २ शक्ति तक।

माईरिका (Myrica)

(येबेरी)

जिगर पर दर्शनीय प्रभाव, कामला रोग और श्लैष्मिक झिल्ली के साथ। लगातार निद्रा। कामला रोग।

मन—निराश; चिड़चिड़ा, उदासीन, शोकमय।

सिर—चमड़ी कसी लगे। औंघाई के साथ सिर दर्द, आँखों का पीलापन; ढेलों में दर्द। चाँद और माथे पर दाब। सुबह को जगने पर, कनपटियों और माथे में धीमी, भारी टीस। गरदन की जड़ में दर्द और कड़ापन।

चेहरा—पीला। खुजली और बींधन। रेंगन संवेदन।

मुँह—जबान रोएँदार, मुँह में बुरा स्वाद और मिचली। चिमड़ा गाढ़ा, ओकाई लानेवाला स्राव। कोमल स्पंज की तरह और खून बहने वाले मसूढ़े (मर्क०)।

गला—संकुचित और खुरखुराहट; लगातार निगलने की इच्छा। रेशेदार श्लेष्मा, कठिनता से छूटे।

आमाशय—स्वाद कड़वा और ओकाई लाने वाला, दुर्गन्धित साँस के साथ। भूख; मगर पेट में पूरा भोजन करने जैसा भरापन। अम्ल की प्रबल इच्छा। कौड़ी में कमजोरी, संवेदन, मिचली के लगभग; खाने के बाद अधिक, तेज चलने में कम हो।

उदर—जिगर प्रदेश में धीमा दर्द। पूर्ण कामला रोग, पीला चर्म। भूख लुप्त। आमाशय और उदर में भरापन। थोड़ा, पीला, झागदार मूत्र।

मल—टहलते समय लगातार वायु-स्खलन। मल त्यागने की इच्छा, मगर सिवाय अधिक वायु के मल न निकले। पतला, हल्के रंग का मल, राख के रंग का, पित्त जरा भी न हो।

मूत्र—गहरे रंग का झागदार, थोड़ा, गहरे रंग का, पित्त मिश्रित।

नींद—अशान्त, बुरे स्वप्न और अक्सर जाग जाना; अनिद्रा।

अङ्ग—लड़खड़ाती चाल। कन्धों के डैनों के नीचे और गरदन के पीछे दर्द, सभी पेशियों में, दाहिने पैर के तलवे में।

चर्म—पीला और खाज वाला। कामला रोग। जन्तुओं की तरह रेंगन, संवेदन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : टिलिया, कॉर्नस सिर०, चेलिडो०, लेप्टै०, फैगोपिरम।

क्रियानाशक—डिजिटै० (कामला रोग)।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

माइरिस्टिका सेबिफेरा (**Myristica Sebifera**)

(ब्रैजिलियन यक्युबा)

शक्तिशाली जीवाणु नाशक औषधि है। चर्म सौत्रिक तन्तु और अस्थि परिवेष्ट का प्रदाह। आघात सम्बन्धी संक्रमण। कर्णशूल प्रदाह। नासूर। कारबंकल। अंगुल बेड़ा पर मुख्य प्रभाव। अँगुलियों के नाखूनों में दर्द, साथ में उनकी हड्डियों में सूजन। हाथ कड़े हों जैसे देर तक किसी चीज को कसकर दबाये रखा हो। कसैला स्वाद और गले में जलन। जबान सफेद चिटकी हुई। विस्फोट सम्बन्धी सूजन।

मवाद जल्द आरम्भ करती है। अक्सर चीर-फाड़ की आवश्यकता को दूर करती है। बिचले कान की सूजन, पीव आने की अवस्था। गुदा में नासूर। अक्सर हीपर या साइलिशिया की अपेक्षा।

माइर्टस कम्युनिस (Myrtus Communis)

(माइमर्टल)

इसकी पत्तियों में माइर्टल होता है जो तीव्र जीवाणुरोधक है। सीने का दर्द जैसा प्रायः क्षय रोग में हुआ करता है, इस औषधि का सांकेतिक लक्षण है। क्षय रोग की आरम्भिक अवस्था। स्नायु को शांत करती है, सबल बनाती है, श्लैष्मिक झिल्लियों को शक्ति प्रदान करती है। वायुनलिका प्रदाह, मूत्राशय प्रदाह और मूत्र-पिण्ड-आवरण-प्रदाह।

सीना—बायें स्तन में चिलकन दर्द जो कन्धों के डैनों तक बढ़े। (इलिसियम, थेरेडि०; पिक्स-लिक्विडा)। सूखी खोखली खाँसी, सीने में गुदगुदी के साथ। सुबह को अधिक हो। सीने की बायीं तरफ जलन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : माइर्टस चेकन (भारी, पीला बलगम के साथ जो जल्दी जगह न छोड़े, जीर्ण वायुनलिका प्रदाह। बलगम रोगी को अधिक दुखी बनाये रखता है और वह खाँसता रहता है।)

मात्रा—३ शक्ति।

नैजा ट्रिपुडियन्स (Naja Tripudians)

(वाइरस ऑफ दी कोब्रा)

नैजा आदर्शभूत रूप से गोलाकार तन्तुओं का पक्षाघात पैदा करता है। (एल. जे. बॉयड) रक्तस्राव नहीं उत्पन्न करता; केवल शोथ उत्पन्न करता है। अतः इस सर्प द्वारा डँसे गये व्यक्ति के शरीर पर आघात का कोई बाहरी चिह्न नहीं होता, घाव के नीचे के तन्तु बैंगनी होते जाते हैं और घाव के आसपास अधिक मात्रा में गाढ़े खून की तरह तरल पदार्थ जमा हो जाता है। काटे हुए स्थान में प्रचण्ड जलन के साथ दर्द, काटने का पहला चिह्न लक्षित होता है। मनुष्य में कुछ समय तक इसके अतिरिक्त कोई दूसरा लक्षण नहीं पैदा होता, फिर अन्य लक्षण आरम्भ होते हैं। यह सम्प्राप्ति-काल प्रायः एक घण्टे का होता है। फिर एक बार आरम्भ होते ही अन्य लक्षण तीव्रता से एक के बाद दूसरे दिखाई देने लगते हैं। नशे की अवस्था हो जाती है, फिर अंग शक्तिहीन हो जाते हैं। रोगी की बोली बन्द हो जाती है, निगलना बन्द हो जाता है और होंठ की हरकत पर काबू नहीं रहता। अधिक मात्रा में लार बहने लगती है।

साँस-क्रिया धीरे-धीरे कम होने लगती है और अन्त में रुक जाती है। सारे समय चेतना बनी रहती है। यह लैकेसिस और क्रोटेलस की तरह रक्तस्राव या दूषित अवस्था की औषधि नहीं। इसका काम हृदय के चारों तरफ सीमित रहता है। हृदय कपाट के रोग। ऊपर की तरफ खून का उभरना, साँस में कष्ट, बाईं करवट न लेट सके। हृदय की पेशियों का बढ़ जाना और कपाट बाधायें। सभी अंग एक-दूसरे के पास खिंचे जान पड़ें। ठण्डक असह्य। हृदय रोग के साथ माथे और कनपटियों में दर्द। वे रोग जो मुख्यतः शरीर की गतिवाही नाड़ी-मण्डल की खराबी पर आधारित हैं। संकुचन। पेशियों का नियन्त्रण लोप हो जाना।

मन—काल्पनिक कष्टों पर सदा कुढ़ता रहे। आत्महत्या का (आरम०) पागलपन। उदास। बात करने से घृणा। अस्पष्ट बोली। शोकग्रस्त। अकेले रहने से भयभीत। पानी बरसने का भय।

सिर—मिचली और कै के साथ बायीं कनपटी और बायें नेत्र के घेरे के क्षेत्र में दर्द जो सिर के पिछले भाग तक बढ़े। सूखे स्वरयन्त्र के साथ मौसमी इनफ्लुएञ्जा। सोने के बाद दम घुटने के हमले (लैके०)। आँखें पथराई हुईं। दोनों पलकों का पक्षाघात।

कान—श्रवण भ्रम, कर्णशूल, जीर्ण कर्ण प्रदाह, काला स्राव, मिचली के पानी की तरह गन्ध।

साँस-यन्त्र—दम घुटने की संवेदना के साथ गले को पकड़ लेना। स्पर्शकातर, सूखी खाँसी जो हृदय रोग पर आधारित हो (स्पांजि०, लॉरोसिस) चमकीला श्लेष्मा और लार। शाम को दमा की तरह संकुचन। दमा जुकाम से आरम्भ हो।

दिल—ऊपरी भाग के वक्ष क्षेत्र में नीचे को खींचन और चिन्ता। दिल के ऊपर बोझ जैसा मालूम पड़े। हृदय-शूल का दर्द गरदन की जड़ तक, बायें कन्धे, कनपटी और बाँह तक बढ़े, साथ में चिन्ता और मृत्यु भय हो। हृदय लक्षण के साथ माथे और कनपटी में दर्द, नाड़ी की गति क्रम-भ्रष्ट। हृदय के पक्षाघात की संभावना, शरीर ठण्डा, नाड़ी मन्द, दुर्बल, क्रम-भ्रष्ट, तार। दिल की भीतरी झिल्ली का तीव्र और जीर्ण प्रदाह। धड़कन। हृदय क्षेत्र में चिलकन दर्द। संक्रामक रोग के बाद हृदय की बाधाएं मन्द तनाव से स्पष्ट लक्षण (इलेप्स वाइपेरा)।

स्त्री—बायीं तरफ के डिम्बाशय का स्नायुशूल, अक्सर बायीं तरफ के पेडू के दर्द में लाभदायक है, खासकर चीर-फाड़ के बाद हृदय की तरफ खिंचा जान पड़े।

नींद—बहुत भारी, लकड़ी के कुंदे की तरह पड़ा रहे, खर्राटों के साथ, जैसा कि साँप काटने से हुआ करता है।

घटना-बढ़ना—घटना : उत्तेजक वस्तुओं से। बढ़ना : खुली हवा में चलने या सवारी से।

संबंध—तुलना कीजिए : सर्प के विष साधारण तौर पर। बंगेरस फैसियेटस (लैन्डेड करैत)। यह तीव्र विष मस्तिष्क के धूसर पदार्थ का प्रदाह रोग और मेरुमज्जा प्रदाह की तरह अवस्था उत्पन्न कर देता है, लक्षणों के और तन्तु विधान विद्या के दृष्टिकोण से। लैके०, क्रोटल०; स्पाइजे०, स्पांजि०।

मात्रा ६ से ३० शक्ति।

नैफ्थेलीन (Naphthaline)

(ए केमिकल कम्पाउण्ड फ्राम कोल-टार; टार कैम्फर)

जुकाम, मौसमी इन्फ्लुएन्जा, फुफ्फुस का क्षय रोग और सुजाक भी इस औषधि के कार्य-क्षेत्र में आते हैं। मूत्र पिण्ड-आवरक झिल्ली प्रदाह। मूत्रयन्त्र की परिधि की उत्तेजना। कुकुर खाँसी।

सिर—ऐसा लेटा रहे जैसे किसी नशे की चीज से गशी आ गई हो। बेचैन, चेहरे का रङ्ग हल्का पीला।

आँखें—इसका आँखों से स्पष्ट आकर्षण है। इससे चक्षुपट का पृथक्करण होता है, चक्षुपट-चुचुकाकार में स्राव, चक्षुपट पर चकत्ते, धुँधलापन और अन्धापन बारी-बारी से। चमकती चीजें देखना। कोमल मोतियाबिन्द। चक्षुपट में रसस्राव, कृष्ण पटल और पलक में स्राव। मोतियाबिन्द। कनीनिका का धुँधलापन।

मूत्र—प्रबल वेग। मूत्र मार्ग का सिरा लाल, सूजा हुआ, लिंग के पर्दे का शोथ। एमोनिया जैसी दुर्गन्ध।

श्वास-यन्त्र—छींक, आँखें सूजी हुईं; दर्दवाली, सिर गरम। मौसमी इन्फ्लुएञ्जा; आक्षेपिक दमा; खुली हवा में कम। सीना और आमाशय दर्दवाला। कपड़ा ढीला करना पड़े। कष्टदायक और आहें भरने वाली साँस। वृद्ध लोगों में दमा के साथ वायुकोषों का फैल जाना। कुकुर खाँसी, लम्बी-लम्बी और लगातार सुरसुरी, साँस घुटे। तीव्र स्वर-यन्त्र और टेंटुआ प्रदाह। वायुनलिका प्रदाह जब आक्षेपिक लक्षण, चिमड़ा बलगम और दाब के साथ सम्बन्धित हो (कार्टियर)।

चर्म—चर्म प्रदाह, खुजलीदार पसीजन। मुँह के किनारों पर दानें और नाखूनों के चारों तरफ सुर्खी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ड्रोसे०; कोरैलि०; कॉक्कस०; टर्पिन०, हाइड्रे०। (कुकुर खाँसी, सूखा दमा और वायुनलिका रोग। १-२ ग्रेन की मात्रा में)।

मात्रा—३ विचूर्ण।

नारसिसस (Narcissus)

(डैफोडिल)

मिचली के लक्षण, बाद में तीव्र कै और दस्त।

डफोडिल की कली में एक विशेष प्रकार का क्षारोद रहता है जो विशेषज्ञों के कथनानुसार, अपना प्रभाव उसके निकालने की विधि के अनुसार परिवर्तित करता है, कि फूल निकलती कली से रस निकाला गया है या फूल खिल जाने के बाद। इस प्रकार से पहली अवस्था से यह क्षारोद मुँह में सूखापन को दुर्बल और मन्द करता है, आँखों की पुतली को फैलाता है, नाड़ी की गति को तेज करता है। इसके विरुद्ध फूल खिलने के बाद उसकी नीचे वाली कली से निकाला हुआ क्षारोद अधिक लार बहाता है, चर्म स्राव को अधिक करता है, आँखों को पुतली का सिकोड़ता है, नाड़ी की गति को कुछ ढीला करता है, कुछ मिचली; मूर्च्छा पैदा करता है — (दी लैंसेट)।

खाँसी और वायुनलिका प्रदाह की औषधि। लगातार खाँसी-जुकाम, माथे का दर्द। कुकुर खाँसी की आक्षेपिक अवस्था।

चम – सूखे दाने, रस दाने और मवाद्मी दानों के साथ लाल चकत्ते, तर मौसम में अधिक होना।

मात्रा—पहली शक्ति।

नैट्रम आर्सेनिकम (Natrum Arsenicum)

(आर्सेनियेट ऑफ सोडियम)

नाक के नजले की औषधि, साथ में सिर दर्द, नाक की जड़ में दर्द, सूखी, वेदनापूर्ण आँखें। अपरस (आर्से०, क्राइसोफं० एसिड; थायरॉयडि०) सात साल के ऊपर के उम्र के बच्चों का वायुनलिका प्रदाह। जुकाम को साफ करने में सहायता देती और शारीरिक शक्ति तथा भूख को कायम रखती है (कार्टियर)।

सिर—जल्दी से सिर घुमाने से ऐसा जान पड़े कि पानी पर तैर रहा है। अगले भाग में नाक की जड़ पर, आँखों के घेरे पर टीस। सिर दर्द, जो दाब और धूम्रपान से बढ़े।

नाक—पानी-सा स्राव गले से उतर आवे। बन्द मालूम हो, जड़ पर दर्द, सूखी खुरण्ड, उखाड़ने पर कच्चापन। नाक के पिछले भाग में गाढ़ा, पीला श्लेष्मा। नाक में खुरण्ड।

आँखें—नजले वाला नेत्र प्रदाह और घृणित मवादी स्राव। आँखें कमजोर मालूम दें, ढेलों में कड़ापन और पलक बन्द होने की प्रवृत्ति। भारी लगें और झपकें।

हवा में आँसू बहे। सुबह को चिपक जायें। सूखी दर्द करें, जलन, जल्दी थक जायें। पेरों के आसपास शोथ। पेरों के ऊपरी भाग में दर्द।

गला—गहरे रंग का, बैंगनी रंग की तरह, सूजन, शोथमय, लाल और चमकीला।

श्वास-यन्त्र खाँसी, जो शरीर को हिला दे, अधिक हरियाली का बलगम। सीने, हृदय क्षेत्र और स्वर-यन्त्र में दाब। खान में काम करने वालों का दमा रोग। फुफ्फुस में धुआँ घुसा मालूम हो।

अङ्ग—बाँहों में टीस, कन्धों में अधिक। गृध्रसी। जोड़ कड़े। सारे शरीर में थकावट। घुटनों के जोड़ पटपटायें।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : आर्से०; कैलि कार्बो०; एपिस०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

नैट्रम कार्बोनिकम (Natrum Carbonicum)

(कार्बोनेट ऑफ सोडियम)

नैट्रम वंश की सभी औषधियाँ कौशिक क्रिया को बढ़ाती हैं और औषजनीकरण तथा पोषण क्रिया में सहायक होती हैं। गरमी के दिनों की अधिक गरमी के कारण आयी कमजोरी, लू लगने के जीर्ण प्रभाव, शिथिलता, रक्तहीनता, दूधिया जलयुक्त चर्म, अति दुर्बल टखने, सभी विशेष रूप से नैट्रम कार्बोनिकम की अवस्थायें हैं।

मन—विचार करने में असमर्थ, समझने की क्रिया कठिन, मन्द। मानसिक दौर्बल्य और उदासी, चिन्ता, आवाज असह्य। मौसमी परिवर्तन से सर्दी आए। बिजली-तूफान के समय चिन्तित और बेचैन, संगीत से अधिक हो (ऐम्ब्रा०)। प्रसन्नता स्पष्ट। कुछ व्यक्तियों की उपस्थिति विशेषकर असह्य।

सिर—जरा भी मानसिक परिश्रम से टीस, जो धूप से या गैस की रोशनी में काम करने से अधिक हो (ग्लोनो०)। अधिक बड़ा मालूम दे। सुनने में कष्ट हो। गरमी के दिन आते ही सिर में टिस होने लगे। धूप लगने से चक्कर आवे।

नाक—बाहरी नाक से सभी लक्षण जो दूषित वृद्धि को प्राप्त हों। दाने और फूलन। लगातार जुकाम, नाक बन्द होना। नाक का स्राव दुर्गन्धित। बाहरी नाक के अनेक रोग (कॉस्टि०)। पिछले भाग से नजला। गले से अधिक श्लेष्मा खखारना; जरा-सी बाहरी हवा से कष्ट बढ़े।

चेहरा—झुर्रियों वाला, पीले धब्बे; दाने। ऊपरी होंठ की सूजन। दर्द, साथ में आँखों और सूजे हुए होंठों के चारों तरफ नीले चक्र।

आमाशय—फूला हुआ और स्पर्शकातर मालूम दे। अधिक गरम होने के बाद ठण्डा पानी पीने का दुष्प्रभाव। जल हिचकी। ५ बजे सुबह भूख लगना। अति दुर्बल पाचन शक्ति जो जरा-सी बदपरहेजी से पैदा हो। दूध से घृणा। भोजन करने के बाद उदासी। कड़वा स्वाद। जीर्ण मंदाग्नि वाले, सदा डकार लेते रहें, अम्लपित्त और वात रोग। मन्दाग्नि थोडा विस्कुट खाने से कम हो।

आँतें—एकाएक मल-वेग हो। तेज आवाज के साथ निकले। मल में पीली चीज, नारंगी के गूदे की तरह निकले। दूध पीने से दस्त।

स्त्री—गर्भाशय की गरदन का कड़ापन। योनि घुण्डी दर्द करे। (सीपिया, म्युरेक्स०)। भारीपन, संवेदन। बैठे रहने से अधिक, हिलने-डोलने से कम रहे। मासिक-धर्म देर में, कम मात्रा में, मांस के धोवन की तरह (नाइट्रि० एसिड)। प्रदाह, स्राव घृणित, उत्तेजक, शूल के बाद।

श्वास-यन्त्र—सूखी खाँसी, बाहर से गरम कमरे में आने से उठे। बायीं तरफ के स्तन के ठंडापन के साथ खाँसी आवे।

नींद—बहुत सबेरे जाग उठे। कामोत्तेजक स्वप्न। दिन में औंघाई।

अंग—पुरानी मोच। अंगों की अधिक कमजोरी, खासकर सुबह को। टखनों का जल्द मोच खा जाना और खसक जाना। पैर पीछे मुड़ जावें। (कॉस्टि०)। हाथ-पैर की अँगुलियों के बीच में दर्द। एड़ी और पिछली मोटी नस रोगग्रस्त। हाथ का चर्म चिटका हुआ। हिलाने-से घुटनों का खोखला भाग दर्द करे। घुटनों तक बर्फीली ठंढक।

चर्म—जल्दी पसीना छूटे या सूखा, खुरखुरा, चिटका हुआ। अँगुलियों के सिरों पर केहुनी और पैरों की अँगुलियों पर दाने निकलना, रस भरे दाने; चकत्ते। शिरायें, भरी हुई। पैर के तलवे कच्चे और दर्द करें।

घटना-बढ़ना - बढ़ना : बैठने से, संगीत से, गरमी के दिनों में गरमी से, मानसिक परिश्रम से, बिजली-तूफान में। जरा भी बाहरी हवा से, मौसम के परिवर्तन से, धूप से। घटना : हरकत से, नाक या कान में अँगुली देने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : सोडिआइ बाइ कार्बोनस (मूत्र में एसीटोन की अधिकता के साथ गर्भावस्था में कै होना, पीने के लिए, पानी में १० ग्रेन मिलाकर २४ घण्टे में थोड़ा-थोड़ा पीना) नेट्र०, सल्फ०, कॉस्टि०, नैट्रम कैकोडाइल० (दुर्गन्धित साँस और मुँह से खराब गन्ध। उदर के चर्म का सूखा चर्म रोग। सांघातिक अर्बुद)। (क्षय रोग में ५ सेंटीग्राम इंजेक्शन के रूप में प्रतिदिन। रस में लाल कण दुगुना करती है। सांघातिक रोग में भी); आर्सिनैल (डिसोडियम मिथाइल आर्सेनेट) इसका परिचय एम० ए० गॉटियर ने क्षय रोग के दूसरे चरण के लिए कराया है, ४-६ सेंटिग्राम प्रतिदिन एक सप्ताह तक, फिर एक सप्ताह तक

औषधि बन्द करना। लेकिन उसकी छोटी मात्रा में भी यानी 1x से 3x तक भी लाभदायक होती है, ज्वर कम करती है, रात्रि पसीना और खून का थूक जाना बन्द हो जाता है।

क्रियानाशक। आर्स०, कैम्फो०।

मात्रा—६ शक्ति।

नैट्रम क्लोरेटम (Natrum Chloratum)

(लैबेरेक्स सोल्युशन)

जिगर रोग के साथ गर्भाशय और उसके बन्धनों के प्रदाह और ढीलापन की अवस्थाएँ। बिचले कान का जीर्ण नजला रोग, मोटा, थुलथुला शरीर। दोनों हाथ सुबह को सूजे रहें। बादी भरा। उदास, मूर्च्छा की अवस्था।

सिर—माथे के आरपार टीस के साथ चक्कर। तैरता हुआ संवेदन, मानो सिर की चाँद पानी में बह जायगी। नाक से थक्केदार खून बहे।

मुँह—जबान और गले के किनारों पर दर्द वाले स्पर्शकातर चकत्ते, मसूढ़े दर्द वाले, जबान सूजी हुई, घाव। बुरा सड़ा स्वाद। रोयेंदार जबान, बड़ी, थुलथुली, दरारेदार। खाँसी स्वरभेद के साथ।

पेट—भोजन करने के बाद औंघाई।

मूत्र—गहरे रङ्ग का, अंडलाल और थक्का के साथ। विस्तृत गुर्दा प्रदाह। पिठासे के आरपार अधिक दर्द।

स्त्री—ऐसा लगे कि बैठने पर गर्भाशय ऊपर जो ढकेल दिया गया है। (फेरम आयोडे०)। ऐसा लगे कि वह खुल रहा है और बन्द हो रहा है। गर्भाशय से प्रचण्ड रक्तस्राव। प्रदर और पीठ में दर्द। निष्क्रिय, धँसन, गर्भाशय के भारीपन से। गर्भाशय भारी हो, ढीला हो, अपनी जगह से बाहर निकलने की प्रवृत्ति। जरायु की अल्प वृद्धि।

अंग—सुबह को हाथों का सूजा रहना। टखनों और घुटनों की अधिक कमजोरी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: ऑरम म्यूरियेटि०; नैट्रो०; कैल्के०; सीपिया, हेलियोट्रोपियम (जरायु का खसकना, तीव्र दुर्बलता, संवेदन और स्वरभेद, झिल्लीदार, कष्टदायक मासिक धर्म)।

क्रियानाशक—पल्सेटि०, गुयेकम।

मात्रा—३ शक्ति।

नैट्रम म्युरियेटिकम (Natrum Muriaticum)

(क्लोराइड ऑफ सोडियम)

बहुत दिनों तक अधिक नमक खाने से शरीर में घोर पोषण, परिवर्तन उत्पन्न कर देता है जिससे न कि केवल शरीर में अधिक नमक संचय हो जाने के लक्षण पैदा हो जाते हैं जैसे जलोदर और शोथ से विदित होता है, बल्कि रक्त में भी परिवर्तन हो जाता है और परिणामस्वरूप रक्तहीनता और रक्त में श्वेत कणों की संख्या बढ़ जाती है। तन्तुओं में दूषित पदार्थ की सञ्चयता भी होना मालूम होता है जिससे छोटे-बड़े जोड़ों का गठिया हो जाता है। परीक्षणों में ऐसे बहुत-से लक्षण मिले हैं। (डॉ० स्टानहैम)। कुछ प्रकार के सविराम ज्वर की, रक्तहीनता की, हरित् पाण्डु रोग की और पाचन-यन्त्र सम्बन्धी अनेक विकारों की और चर्म की एक शक्तिशाली औषधि है। अधिक कमजोरी जो प्रायः सुबह के समय बिस्तर छोड़ने के पहले ही जान पड़ती हो। ठण्डापन। शोथ, जो गरदन में अधिक दिखाई देता है। जुकाम होने की अधिक प्रवणता। श्लैष्मिक झिल्लियों का सूखापन। सारे शरीर में सिकुड़न की संवेदना। बहुत कमजोरी और थकावट। सभी संवेदनाओं के प्रति असहिष्णुता। गल-ग्रन्थि की अतिवृद्धि। घेघा। एक प्रकार का चर्मरोग, जिसमें एक प्रकार के विचित्र पीपल के रंग के दाने शरीर पर निकल आते हैं, साथ में बहुत सुस्ती रहती है और रक्तहीनता बढ़ती रहती है। मूत्रमेह।

मन—रोगों में मानसिक कारण, शोक, भय, क्रोध इत्यादि के आक्रमण से रोग उत्पन्न हो जाना। उदास, खासकर जीर्ण रोगों में। ढाढ़स देने से रोग बढ़े। चिड़चिड़ापन, छोटी बातों पर भड़क उठे, भद्दापन, जल्दबाज्। रोने के लिए अकेले रहना चाहे। आँसुओं के साथ हँसी।

सिर—थरथराहट। अन्धा करने वाला सिर दर्द। ऐसी टीस जैसे हजारों छोटी हथौड़ियाँ भेजे पर लग रही हैं। सुबह को जागने पर, मासिक-धर्म के बाद सूर्योदय से सूर्यास्त तक दर्द हो। सिर बहुत बड़ा मालूम पड़े, ठण्डा। स्कूली-लड़कियों का रक्तहीनताजनित सिर दर्द, स्नायविक प्रकृति, हताश, साहसहीन। जीर्ण सिर दर्द, एक तरफ का, प्रादाहिक, सूरज निकलने से डूबने तक, साथ में पीला चेहरा, मिचली, कै, सामयिक, आँखों पर जोर देने से, मासिक-कालीन। आक्रमण से पहले होठों, जबान और नाक का सुन्न होना और झुनझुनाना, सोने से कम हो। सिर का अगला छिद्र सूजा हो।

आँखें—कुचली जान पड़ें, साथ में स्कूली बच्चों का सिर दर्द। पलक भारी। पेशियाँ कमजोर और कड़ी। अक्षर गिचपिचा जायें। चिनगारियाँ झड़ती दिखाई दें। सभी चीजों के चारों तरफ चमकीली, तिरछी, टेढ़ी-मेढ़ी रोशनी दिखाई दे। आँखों

में जलन। पढ़ने या लिखने में थक जायें। आँसू-कोष पर दबाने से मवादी श्लेष्मा निकलना। आँसू बहना, जलता हुआ और काटने वाला। पलक सूजे हुए। आँखें आँसू से भीगी मालूम पड़ें। खाँसने से आँसू चेहरे के नीचे तक बहें (युफ्रे०)। आंतरिक पेशियों के ठीक काम न करने के कारण दुर्बल या कष्ट-दृष्टि (जेल्से० और क्यूप्र० एसेटि०, जब बाहरी पेशियों में खराबी हो)। नीचे देखने से आँखों में दर्द। मोतियाबिन्द की आरम्भिक अवस्था (सिकेलि०)।

कान—आवाजें, गरजन और टनटनाहट।

नाक—तीव्र बहता जुकाम, जो एक से तीन दिन तक बहे फिर नाक बन्द होने से बदल जाये। जिससे साँस लेना कठिन हो जाये। स्राव के साथ पतला पानी-सा; अण्डे की कच्ची सफेदी की तरह। तीव्र छींकें, जुकाम। उस जुकाम के लिए अक्सीर है जो छींकने के साथ आरम्भ हो। ३० शक्ति का व्यवहार करें। गंध और स्वाद लोप होना, भीतरी भाग दर्द करे। सूखा जुकाम।

चेहरा—तेल लगा जैसा, चमकदार, जैसे चरबी लगी हो। मटियाला रङ्ग। ज्वर छाले।

मुँह—जबान पर झागदार मैल, किनारों पर थूक के बुलबुले। सूखा। मसूढ़े फूले हुए। जबान, होंठों और नाक सुन्न होना, झुनझुनाना। जबान पर दाने और जलन, मानों उस पर बाल हैं, मुँह के चारों तरफ दाने और होठों पर मोती जैसे दाने निकलें। होठ और मुँह के किनारे सूखे, घाव वाले और चिटके। निचले होंठ के बीच में गहरी दरार। नक्शेदार जबान (आर्से०, रस०, टैरैक्से०) विरसता। निचले होंठ पर बड़े जल दाने जो सूजा हो और जलन हो। घोर प्यास।

आमाशय—भूख लगे, लेकिन दुबला होता जाये, खून आये (आयोड०) धड़कन के साथ गला जलना। न बुझने वाली प्यास। भोजन करते समय पसीना निकले। नमक अधिक खाने की इच्छा। रोटी से या चिकनी चीज से जैसे केकड़े की चर्बी से घृणा। आमाशय के गड्ढे में थरथराहट। हृदय परिधि के गड़न संवेदन।

उदर—उदर में कटन दर्द। तना हुआ। खाँसने पर उदर में दर्द।

गुदा—मल त्यागने के बाद जलन, दर्द और गड़न। गुदा संकुचित, फटी हुई; रक्त गिरे। कब्ज, सूखा मल, भुरभुरा (एमो० म्यूरियै०, मैग० म्यूरियै०) बिना दर्द का अधिक मात्रा में दस्त, उदर में चुटकी काटने जैसे दर्द के बाद।

मूत्र—पेशाब करने के ठीक बाद ही दर्द (सारसा०)। मात्रा में अधिक; अनैच्छिक, टहलते, खाँसते समय। अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति में कुछ देर ठहर के पेशाब उतरे (हीप०; म्यूरि० एसिड)।

पुरुष—मैथुन के बाद भी वीर्य-स्खलन विलम्ब से, नपुंसकता।

स्त्री—मासिक-धर्म क्रमभ्रष्ट, प्रायः अधिक। योनि सूखी। प्रदर : तीखा पानी-सा। दुर्बलता का बोध, सुबह को अधिक (सीपिया)। गर्भाशय का निकलना, मूत्रमार्ग में कटन के साथ। असफल प्रसव वेदना। मासिक-धर्म का दब जाना। (बाद में कैलि कार्बो दीजिए)। मासिक काल में गरमी लगना।

श्वास-यन्त्र—पेट के गड्ढे में गुदगुदी के साथ खाँसी, साथ में जिगर में चिलक और पेशाब छलकना (कॉस्टि०, स्क्विला०)। सीने भर में चिलकन। सिर में फटन दर्द के साथ खाँसी। दम फूलना, खासकर ऊपर चढ़ते समय। (कैल्के०)। कुकुर खाँसी, खाँसते समय आँसू बहे।

दिल—तीव्र धड़कन। दिल में ठंडापन। दिल और सीना सिकुड़ा मालूम पड़े। फड़फड़ाहट, धड़कन, सविराम नाड़ी। दिल की धड़कन से सारा शरीर हिले। लेटने पर रुक-रुक कर।

अंग—पीठ में दर्द, ओठंगना चाहे (रस०, सिपिया)। प्रति हरकत रक्त की चाल बढ़ावे। हथेली गरम और पसीजती। बाहें और टाँगें तथा खासकर घुटने कमजोर। नाखून की जड़ में प्रदाह और असह्य दर्द। अँगुलियों के पास सूखापन और पटपटाहट। अँगुलियों और निचले अंगों में सुन्नपन और झुनझुनी। टखने कमजोर और आसानी से झुक जायँ। टाँग की बड़ी नस का दर्द, सिकुड़न। (कॉस्टि०)। हिलाते समय जोड़ों में चुरचुराहट। सिर, सीना और पेट के प्रदाह के साथ पैरों का ठंडापन।

नींद—दोपहर से पहले औंघाई। सोते में स्नायविक फड़कन। डाकुओं का स्वप्न देखना। शोक के कारण अनिद्रा।

चर्म—चिकना, तेल पुता-सा खासकर बालवाले स्थान पर। सूखे दाने, खासकर सिर के बालों के किनारे और जोड़ों के मोड़ों पर। ज्वर छाले। जुलपित्ती, खुजली, और जलन। पपड़ीदार दाने अंगों के मोड़ में, सिर के बालों वाले स्थान के किनारों पर, कानों के पीछे (कॉस्टि०)! हथेली पर मस्से। अकौता, कच्चा लाल और सूजा हुआ। नमक खाने से, समुद्र तट पर बढ़े। बालों की जड़ पर असर करता है। बाल झड़ना। छत्ते, परिश्रम से खुजली हो। चिकना चर्म।

ज्वर—६ बजे सुबह से ११ बजे दिन तक शीत। गरमी, अधिक प्यास, ज्वर अधिक जोर करे। ज्वर के छाले। शरीर का ठंडापन और लगातार शीत स्पष्ट रहते हैं। रक्त में जल की अधिकता, जीर्ण मलेरिया में, साथ में कमजोरी, कब्ज, भूख की कमी इत्यादि। जरा से परिश्रम से पसीना बहे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : आवाज, संगीत, गरम कमरा, लेटने पर, करीब १० बजे दिन में, समुद्र तट पर, मानसिक परिश्रम से; ढाढ़स देने से, गरमी से, बात करने

से, घटना : खुली हवा में, ठण्डे पानी से, नहाने से, भोजन के समय के उल्लंघन करने से, दाहिनी करवट लेटने से, पीठ पर कड़ी चीज की दाब से, तंग कपड़ा पहनने से।

सम्बन्ध—पूरक : एपिस, सीपिया, इग्नै०।

तुलना कीजिए : ऐक्वा मैरिना—समुद्र का जल है जो उसके तट से कुछ मील दूर जाकर लिया गया है और कुछ गहराई से, छाना जाता है और उसमें दूनी मात्रा में स्वच्छ जल मिलाया जाता है। नशे की हालतों की तरह कंठमालिक बाधाओं की तरह, आंत्रिक प्रदाह जैसी अवस्था। यह मूल रीति से रक्त पर काम करती है। कर्कट रोग में यह नशे को मारती है। (चर्म के नीचे इन्जेक्शन द्वारा पहुँचाई जाती है और इस प्रकार से चर्म, गुर्दों और आँतों के रोग में, आमाशयिक आन्त्र रोग में, क्षय रोग में व्यवहार की जाती है); बच्चों की कंठमालीय बीमारियाँ। लसिकाग्रन्थि प्रदाह। वृक्क रोग, अकौता, संकुचित नसों का घाव। एक बड़ी "खून साफ करनेवाली और शक्तिवर्द्धक औषधि।" समुद्र जल की पोटेंसियाँ कमजोरी, प्रतिक्रिया न आने और उन सभी लक्षणों के लिए समुद्र तट पर बढ़ते हैं, हितकर है। घेघा। सैल मैरिनम सी साल्ट—ग्रन्थि की जीर्ण वृद्धि में खासकर गरदन की, यह औषधि सांकेतित होती है। ग्रन्थि में मवाद पड़ना। यह औषधि उन रोगियों के लिए जिनमें कंठमालीय विकार हो, मुख्य नहीं तो सहायक औषधिक के रूप में अति लाभदायक है। कोष्ठबद्धता में लाभदायक है। नैट्रम सैलेनिकम (स्वरयन्त्र का क्षय रोग, साथ में खूनी श्लेष्मा के छोटे टुकड़े और आवाज का कुछ भारीपन)। नैट्रम सिलिकम (रक्तस्राव की अस्वाभाविक प्रवृत्ति, कंठमालीय अस्थि रोग, वृद्धावस्था के खुजली रोग में हर तीसरे दिन शिराओं में सुई द्वारा देना चाहिये। (डॉलिकस०, फैगोपाइर०)। इग्ने; सीपिया, थूजा, ग्रैफा० एलुमि०। क्रियानाशक : आर्से०, फास०, नाट्रिस्पिरिटस डलसिस।

मात्रा—१२ से ३० शक्ति और ऊँची। कभी-कभी सबसे ऊँची शक्ति बहुत उत्तम लाभ करती है। औषधि अक्सर न दोहराइये।

नैट्रम नाइट्रिकम (Natrum Nitricum)

(नाइट्रेट ऑफ सोडियम)

प्रदाह की एक अनुभूत औषधि है। रक्त थूकना। रक्त मूत्र। प्रसवकालीन रक्तस्राव। रक्त प्रवाहिक चेचक। औंघाई। क्षय रोग के दर्द। इन्फ्लुएञ्जा। श्लैष्मिक झिल्ली से रक्त-स्राव, खासकर नाक की। पेशाब में रक्त रंजक का निकलना, पेशाब में यूरिक

एसिड की अधिकता। दमा रोग और साथ में मूत्र में ठोस पदार्थ की अधिकता। रक्तहीनता और जलाधिक्य। शिथिलता, टहलते समय कई बार आराम करना पड़े।

सिर—मन्द। मानसिक या शारीरिक काम करने की इच्छा न हो। भीतर दबाने वाला दर्द। कर्णशूल। जबड़ों की हड्डी में भीतर की तरफ दबाने वाला दर्द। नाक से खून बहना।

आमाशय—खट्टा पानी मुँह में आना। कॉफी से घृणा। वायु भरना, साथ में आमाशय के गढ़े में दाब और सीने में दर्द, हरकत से बढ़े, डकार आने से कम हो।

उदर—उदर की पेशियाँ दर्द के साथ रीढ़ की तरफ सिकुड़ी हों। तना हो। कठिन मल। जान पड़े कि अधिक भार बाहर निकलने को रह गया है।

दिल—हृदय-क्षेत्र में दर्द। नाड़ी धीमी और कोमल।

मात्रा—२ विचूर्ण।

नैट्रम फॉस्फोरिकम (Natrum Phosphoricum)

(फॉस्फेट आफ सोडियम)

नैट्रम फॉस्फोरिकम उन रोगों की औषधि जो लैक्टिक एसिड के अधिक हो जाने के कारण उत्पन्न हो जाते हैं। ये अक्सर अधिक चीनी खाने के कारण होते हैं। वे रोग जिनमें अम्ल की अधिकता हो। खट्टी डकार और खट्टा स्वाद, खट्टी कै। मुँह और जबान के पिछले ऊपरी भाग पर पीला, क्रीम के रंग जैसा मल। गले के किसी भाग की सूजन, उसमें ढोंका जैसा मालूम पड़े। वायु खट्टी डकार के साथ। कृमि लक्षण के साथ शूल। जोड़ों का पड़पड़ाना। कामला रोग (१x विचूर्ण) मूत्र में ऑक्जेलेट का अधिक मात्रा में खारिज होना।

मन—रात से जागने पर ऐसी कल्पना करे कि कमरे के सामान, कुर्सी, मेज इत्यादि जीवित व्यक्ति हैं; या वह दूसरे कमरे में पैर की आवाज सुन रहा है। भयभीत।

सिर—सुबह के समय मन्द, भरापन और थरथराहट।

आँखें—सुनहला पीला स्राव, क्रीम जैसे रंग का।

कान—एक कान लाल, गरम, अकसर खाज, आमाशयिक विकार और अम्लाधिक्य।

नाक—घृणित दुर्गन्ध। नाक खुजलाना। नासा-गलकोष का नजला, गाढ़ा, पीला, घृणित श्लेष्मा।

चेहरा—नीला, सुर्ख रंग का; पीला।

मुँह—होठों और गालों के गले-सड़े घाव। जबान के सिरे पर छाले, शाम को उनमें अकड़न हो। जबान पर पतला, तर मैल। मुँह की छत के पिछले भाग पर पीला क्रीम जैसा मल। निगलने में कष्ट। तालुमूल और कोमल तालु पर गाढ़ी क्रीम जैसी झिल्ली।

पेट—खट्टी डकार, खट्टी कै, हरियाले रंग का दस्त। मुँह में भरा खाना थूक दे।

पुरुष—बिना स्वप्न के धातु क्षीणता, पीठ में कमजोरी और अंगों के कम्प के साथ। बिना लिंगोत्तेजना के काम-इच्छा। सुजाक।

स्त्री—मासिक धर्म समय से बहुत पहले, पीला, पतला, पानी-सा योनि से तेजाबी स्राव के साथ बाँझपन। प्रदर। मलाईदार या शहद के रङ्ग का तेजाबी और पानी-सा। गर्भाशय से खट्टी गन्ध का स्राव। गर्भावस्था की कै, खट्टी कै के साथ।

अंग—घुटनों के जोड़ों का वात रोग।

पीठ—थकावट, कलाई, और अंगुलियों के जोड़ों में टीस। पैर की नसों में दर्द। सन्धि तैल विषयक वायु शब्द। वात रोग का सन्धि प्रदाह।

चर्म—पीला। कई स्थानों में खुजली, खासकर टखनों में जुलपित्ती। चिकना, लाल, चमकता। दिन में पैर बरफ जैसे ठण्डे, रात में जलें। लसिकावाहिनी ग्रंथियों की सूजन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए **नैट्रम लैक्टिक॰** (वात रोग और गठिया, गठिया का दूषित कड़ापन, मूत्रमेह के साथ वात रोग), **नैट्रम नाइट्रोसम** (हृदय-शूल, नील रोग, गशी, रात में अधिक पतला मल, थरथराहट और भारीपन गशी की तरह अवस्था, सिर में स्नायविक दर्द, मिचली, डकार, नीले होंठ)। **नैट्रम सिलिको फ्लोरिकम-सैलुफर**-(कर्कट रोग की एक औषधि; अर्बुद, अस्थि रोग, अस्थि सड़न, नाकड़ा, बहुछिद्रास्थि में शूल। सावधानी से प्रयोग करना चाहिये), **नैट्र॰ सेलेन॰** (जीर्ण स्वर-यन्त्र प्रदाह और स्वर-यन्त्र का क्षय रोग, गाने वालों का गला बैठना, अक्सर गला साफ करने के साथ श्लेष्मा के छोटे ढोंके निकलना), **नैट्र॰ सल्फ्युरोसम** (दस्त, खमीरी मल के साथ), **नैट्र॰ सल्फो-कार्बोलि॰** (मवादयुक्त रक्त, मवादी फुफ्फुसावरण प्रदाह, ३ से ५ ग्रेन हर ३ घण्टे पर), **नैट्र॰ टेलुरिकम** (साँस में लहसुन की गन्ध, क्षय रोग का रात पसीना), **कैल्के॰, रोबिनिया, फॉस॰**। मूत्र में ऑक्जेलेट की अधिकता में १x, दिन में चार बार देने से पथरी बढ़ना रुक जाती है; ऑक्जेल ऑफ लाइम को घोल के रूप में रखती है (श्वार्ट्ज)।

मात्रा—३ से १२ विचूर्ण। कामला रोग में १x। स्थूल सिद्धान्त से, मार्फिन की आदत के लिए फॉस्फेट सोडा त्वचान्तर्गत इन्जेक्शन द्वारा डॉ॰ एम॰ जे॰ लुइस ने

प्रयोग किया। फॉस्फेट सोडा ७५ ग्रेन रोज शारीरिक आयोडिन के विष का निराकरण के लिए और इन्द्रिय ग्रंथि का विषाक्तता तथा कण्ठमाला में भी प्रयोग किया जाता है।

नैट्रम सैलिसिलिकम (Natrum Salicylicum)

(सैलिसिलेट ऑफ सोडियम)

सिर, कान, गला, गुर्दा और जिगर पर इसका विस्तृत प्रभाव है, सभी शरीर परिवर्त्तनों पर काम करती है। रक्तस्राव, खासकर नकसीर। आन्तरिक कान पर स्पष्ट काम करती है, साथ में चक्कर, बहरापन, कानों में आवाजें और अस्थि-संचार का लोप होना, इसलिये इसका उपयोग कान की खराबी से आये सिर चकराने में होता है। इन्फ्लुएन्जा के बाद शिथिलता की अवस्था में अति उत्तम औषधि है। सुस्ती, औंघाई; बेचैनी, कम्प। मनोभ्रन्श की आरम्भिक अवस्था। पित्त की मात्रा बढ़ाती है। क्षुद्र-गह्वर पूर्ण तालुमूल प्रदाह।

सिर—पूर्ण विवेक और उन्माद का बारी-बारी आना। चक्कर, जो सिर उठाने से अधिक हो। सभी चीजें दाहिनी तरफ घूमती जान पड़ें। धीमा सिर दर्द और कौतूहल। खाल पर सौत्रिक अर्बुद।

आँखें—चक्षुपट से रक्त प्रवाह, अण्ड लाल युक्त, चक्षुपट प्रदाह, रक्त स्राव के साथ। आघात के कारण उपतारा प्रदाह, संक्रमण के साथ और उससे सम्बन्धित अन्य रोग (डॉ० ग्रैबेल)।

कान—धीमी टनटनाहट। बहरापन। कान सम्बन्धी चक्कर।

सीना—कष्टदायक साँस, आवाज के साथ साँस लेना, छिछला, हाँफना, नाड़ी क्रमभ्रष्ट। स्वर की पूर्ण लोपता।

चर्म—शोथ। जुलपित्ती, लाल घेरेदार दाने। झुनझुनाना और खुजलाना। मवादी विषैले स्फोट।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये ; लोबेलिया परप्युरैसेन्स (औंघाई, चक्कर, के साथ सिर दर्द; भौंहों के बीच में, आँखें खोल न रख सके, जबान सफेद, क्रमहीन मालूम दे, हृदय और फुफ्फुस का पक्षाघात। सभी जीवन शक्तियों की शिथिलता, मृत्युतुल्य शीत बिना कम्प, उदर शूल की मन्द स्नायविक शिथिलता), गोल्थे०, चाइना। पाइरस मैलस—क्रैब ऐपल ट्री-(कान सम्बन्धी चक्कर। डॉ० कूपर)।

मात्रा—३ शक्ति।

नैट्रम सल्फ्युरिकम (Natrum Sulphuricum)

(सल्फेट ऑफ सोडियम; ग्लाबर्स साल्ट)

जिगर रोग की औषधि, खासकर उद्‌जन प्रकृति के नाम से पुकारे जाने वाले व्यक्तियों में जहाँ रोग तर मकानों में, तहखानों इत्यादि में रहने के कारण उत्पन्न होता है। सभी रोग बरसाती मौसम में या किसी रूप में पानी से बढ़ते हों। जब सूखा मौसम तर हो जाता है तो कष्ट घट जाता है; पानी के पास उत्पन्न होने वाली वनस्पति भी न खा सके। मछली भी न खा सके। गरम, सूखी हवा अच्छी मालूम दे। चिकित्सा प्रयोग से यह औषधि पृष्ठ-वंश की मज्जा के झिल्ली प्रदाह (गर्दन तोड़ बुखार) में, सिरपर चोट लगने से आए सिर के रोग में और उससे मानसिक रोग में अमूल्य सिद्ध हुई है। प्रति वसंत ऋतु में सिर रोग का वापस आना। मस्सा निकलने की प्रवृत्ति। अँगुलियों, आँखों और पैरों के रोग। जीर्ण बीमारी या गठिया (लाइको पो०)।

मन—प्रफुल्लित। संगीत उदास करे। सामयिक उन्मादाक्रमण के साथ शोक-ग्रस्त। आत्महत्या की प्रवृत्ति; संयम से काम लेना पड़े। किसी बात पर सोच न सके। बात करने या दूसरों की बात सुनने से घृणा।

सिर—पिछले भाग का दर्द। कानों में कोंचन, चिलक। चक्कर, सिर पर पसीना होने से कम हो। खाँसते समय फटन मालूम दे। चाँद पर गरमी लगना। दाहिनी कनपटी में छेदन, पेट में जलन के बाद। गिरने या सिर की चोट का बुरा असर और उसके कारण आयी मानसिक बाधाएँ। बहते हुए पानी का स्वप्न देखना।

कान—गड़न के साथ दर्द, कान का दर्द, तर मौसम में बिजली की तरह कड़कन हो।

नाक—नाक बहना, गाढ़ा, पीला स्राव और नमकीन श्लेष्मा। जुकाम। नकसीर। बहुछिद्रास्थि प्रदाह।

आँखें—पुतली पीली। रोहा। प्रकाशातंक (ग्रैफाइटिस)।

मुँह—चिकना गाढ़ा, लसीला, सफेद बलगम (श्लेष्मा), कड़वा स्वाद तालु पर छाले।

गला—पिछले भाग से गाढ़ा, पीला श्लेष्मा गिरे।

पेट—खट्टी कै, जबान पर बादामी कड़वा मैल; चेहरा पीला, ठण्डी चीज की प्यास, पित्त की कै, तेजाबी मन्दाग्नि, गला जले और वायु के साथ।

उदर—ग्रहणी कला का नजला, जिगर प्रदाह, पीलिया रोग और पित्त की कै, जिगर छूने से दर्द करे, तेज चुभन, दर्द, कसा कपड़ा कमर पर सहन न हो। बाँयीं

करवट लेटने से दर्द बढ़े। पेट में वायु भरना। ऊर्ध्वांग भी। बृहद आँतों में वायु संचित हो, नाश्ते से पहले अधिक। उदर और गुहा में जलन होना कुचलने जैसा दर्द और पाखाना मालूम देना। पीला दस्त, पानी-सा मल प्रातःकालीन पतला मल; तर मौसम के बाद अधिक। अनैच्छिक मल त्यागना, वायु-स्खलन के साथ। बड़े आकार का मल।

मूत्र—पित्त से लदा हुआ। ईंट की बुकनी जैसी तलछट। अधिक मात्रा में बहुमूत्र।

स्त्री—मासिक कालीन नकसीर, तेजाबी और मात्रा में अधिक हो। मासिक-काल में टेढुओं में जलन। दाद जैसी योनि खाज। प्रदर : हरा-पीला। सुजाक के बाद। आवाज भारी होने के साथ प्रदर रोग।

पुरुष—उपदंशीय रेशे, मुलायम मांसार्बुद, हरा स्राव। सुजाक, गाढ़ा, हरा स्राव, दर्द कम।

साँस-यन्त्र—कष्टदायक साँस, तर मौसम में। खाँसते समय सीना पकड़ना आवश्यक; तर दमा, सीने में खड़खड़ाहट, ४ और ५ बजे सुबह। खाँसी में गाढ़ा, लसदार, हरा बलगम आए। सीने में थकावट। लम्बी साँस लेने की बराबर इच्छा। बच्चों का दमा, जब शारीरिक रचना मिलती हो। फुफ्फुस में जब जल्द प्रदाह नाश न हो। खाँसी से इतना कष्ट कि बिस्तर पर से उछल पड़े। दर्द वाली जगह थाम ले। ब्रायो०। बिचले बायें सीने के आरपार दर्द। सर्दी का हर एक आक्रमण दमा रोग उत्पन्न करे।

पीठ—कपड़ा उतारते समय खुजली आए। गरदन के पीछे और मस्तिष्क की जड़ में तीव्र दर्द। कन्धों से डैनों के बीच में गड़न दर्द। पृष्ठ-वंश की मज्जा की झिल्ली का प्रदाह। पीछे की ओर वक्रता।

अंग—कक्षीय ग्रन्थियों की सूजन। नाखूनों की जड़ के चारों तरफ सूजन। तलवों में जलन, पैरों में शोथ, पैर की अँगुलियों के बीच में खुजली। गठिया। अंगों में दर्द, अक्सर आसन बदलना पड़े। चारों तरफ घूमे। कटि संधि में दर्द, बाँयीं तरफ अधिक, झुकने से बढ़े। घुटनों का कड़ापन। जोड़ों का चुरचुराना। वातरोग जो तर, ठण्डे मौसम में अधिक हो।

चर्म—कपड़ा उतारते समय खुजली। पीला, पानी भरा छाला। सुजाक के उपद्रव, मस्से की तरह लाल गुल्म सारे शरीर पर।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : संगीत (उदासी लावे), बाँयीं करवट लेटने से, तह-खाने की तरी, तर मौसम। **घटना :** सूखा मौसम, दाब, आसन बदलना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : नैट्रम सक्सिनेट ५ ग्रेन हर ३ घण्टे पर। (नजला वाला कामला रोग)। **मलेरिया ऑफिसिनेलिस**—सड़ी हुई वनस्पति-(मलेरिया के

पराग पुष्ट जीवाणु को लोप करने की स्पष्ट शक्ति रखती है। मलेरिया सम्बन्ध धातु विकार। शारीरिक दौर्बल्य और रुकावट। प्लीहा रोग। मलेरिया और वात रोग। जिगर की क्रिया भ्रष्ट। ६ शक्ति और उससे ऊँची शक्ति), नेट्रम कोलेइनिकम—फेल टोरी डेपुरेटम–(कब्ज, जीर्ण पक्वाशयिक और आंत्रिक नजला, जिगर का कड़ापन, गरदन की धड़ में दर्द, भोजन करने के बाद सोने की प्रवृत्ति, अधिक वायु स्खलन, जलोदर), मोमोर्डिका बैल्सैम ऐपल–(शूल, दर्दीला मासिक-धर्म, हाथ में खून का फलक कर निकलना), पल्मो वल्पिस–उल्फ्स लंग (लगातार साँस का छोटापन जिसे जरा-सी हरकत पर दमा का दौरा शुरू हो जाये। प्रबल, आवाजदार, बुल्बुल-सी करने वाली आवाज। १x विचूर्ण), पीउसम बोल्डस बोल्डो—(पेट और पाचन-मार्ग की कमजोरी, मलेरिया के बाद जिगर बाधायें। जिगर क्षेत्र और पेट में जलन, बोझ, कड़वा स्वाद, सुस्ती, जिगर के फोड़े, दमा, वायु नलिका प्रदाह, जुकाम, फुफ्फुस का शोथ), नैट्रम आयोडेट० (वात सम्बन्धी हृदय-अन्तर्वेष्ट झिल्ली प्रदाह की सम्भावना, जीर्ण वायु नलिका प्रदाह, वात और उपदंश का तीसरा चरण (अस्थि विकार)। जुकामी रोग, धमनी प्राचीर का कड़ापन। इस स्थान पर कई लक्षण जैसे हृदय शूल, चक्कर, कष्टदायक सांस, सभी ५-१० ग्रेन, दिन में ३ बार लगातार देने से कम हो जाते हैं), नैट्रम हाइपोसल्फ्यु० (ताँबे के रङ्ग जैसे धब्बे, लगाने और खाने को), सल्फ० थूजा, मर्क०, स्टिलिञ्जिया।

पूरक : आर्से०; थूजा।

मात्रा—१ से १२ विचूर्ण।

निकोलम (Niccolum)

(मेटलिक निकेल)

दुर्बल या क्षीण अथवा वेदनादायक दृष्टि। दुर्बल पाचन, कब्ज के साथ स्नायविक सिर दर्द के सामयिक हमले। नजला। दुर्बलकाय, स्नायविक, अध्ययन करने वाले लोगों के अनुकूल है; साथ में अक्सर सिर दर्द आना। मन्दाग्नि और कब्ज।

सिर—सिर को हिलाने से मेरुदण्ड के ऊपरी कशेरुकाओं में चुरचुराहट। चाँद पर कील ठोंकने जैसा दर्द। सुबह का चाँद पर दाब दोपहर तक रहे; गरम कमरे में अधिक। चिलकन। चीजें बहुत बड़ी जान पड़ें। अधकपारी पहले बाँयीं तरफ आए। ऊपरी होंठ का फड़कना।

नाक—तीव्र छींके, बन्द होना। नजला, नाक के सिरे की लाली और सूजन के साथ। नाक की जड़ पर तीव्र दर्द जो कनपटी से होते हुए चाँद पर जाये।

गला—दर्द करे, दाहिनी तरफ, अधिक कोमलपन के साथ, बाहर से छूने पर दर्द करे। दम घुटने का संवेदन।

आमाशय—उदरार्द्ध प्रदेश में कर्महीनता, खालीपन, बिना भोजन की इच्छा के। तीव्र आमाशयिक शूल जो कन्धे तक बढ़े। प्यास और तीव्र हिचकी। चबाने वाले दाँत से खट्टा, घृणित स्राव निकले। दूध पीने के बाद दस्त, कूँथन।

स्त्री—मासिक-धर्म देर में, थोड़ा, अधिक कमजोरी और आँखों में जलन के साथ। अधिक प्रदर, पेशाब करने के बाद अधिक हो। (मैग० म्यूर०; प्लैटि०) और मासिक-धर्म के बाद भी।

साँस यन्त्र—आवाज भारी। सूखी, कष्टकर खाँसी, सीने में चिलकन के साथ। बैठने को और सिर को पकड़ने को बाध्य हो। खाँसते समय जाँघों पर हाथ धरे।

चर्म—सारे शरीर पर खुजली, गरदन पर अधिक, खुजलाने से कम न हो।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : निश्चित समय पर, हर दो हफ्ते पर, साल भर बाद, दोपहर से पहले। **घटना** : शाम को।

मात्रा—३ विचूर्ण।

निकोलम सल्फ्युरिकम (Niccolum Sulphuricum)

(सल्फेट ऑफ निकेल)

वयःसन्धिकाल की बाधाओं के लिए लाभदायक। मलेरियाजनित स्नायु शूल। मूत्र और लार अधिक। कसैला स्वाद। कमजोर, दुर्बल दृष्टिवाले शिक्षित लोग जिनकी पाचन शक्ति दुर्बल हो और कब्ज हो, सुबह को कष्ट अधिक हो और सामयिक सिर दर्द और आवाज भारी हो।

सिर—स्नायविक, अशान्त, ओठँगने की इच्छा, थका, किसी काम को लग कर न कर सके। सामयिक सिर दर्द, पिछले भग्ग का दर्द, रीढ़ तक बढ़े, पीठ के बल लेटने पर अधिक हो, आँखों में चोटीला दर्द।

पीठ—तनी, सुन्न संवेदन, गरदन में अधिक। रीढ़ की हड्डी दर्दीली। तलवों की जलन के साथ सुबह जाग उठे। रीढ़ का दर्द, टाँगें और बाँहें भारी और कमजोर, चित् न लेट सके।

स्त्री—डिम्बाशय में मन्द टीस, साथ में मासिक धर्म शुरू होने की संवेदना। गरम लहरें, बाद में दो भागों के मिलने के स्थान में पसीना, अलग करने पर पसीना सूखे।

मात्रा—२ विचूर्ण।

नाइट्रिकम एसिडम (Nitricum Acidum)

(नाइट्रिक एसिड)

यह औषधि अपने प्रभाव विशेष के लिए उन स्थानों को चुनती है जहाँ श्लैष्मिक झिल्ली चर्म से मिलती है। ये स्थान खपच्ची गड़ने की तरह दर्द करते हैं। गड़न दर्द गाड़ी में सवारी करने से सभी लक्षण कम हो जाते हैं। गहरे रङ्ग वाले, अधेड़ लोगों पर अच्छा काम करती है। पारा के दुरुपयोग के बाद उपदंश रोग में लाभकारी है। दर्द तेजी से शुरू हो और गायब हो जाये (बेला०) उदजनक प्रकृति वाले, सुजाक की औषधि।

मुँह, जबान, जननेन्द्रिय पर छाले और घाव, सरलता से खून बहे। दरारें, मल-त्याग काल में दर्द, मानो गुदा फट गई है। सभी स्राव अति घृणित, खासकर मूत्र, मल और पसीना। जीर्ण रोग वाले लोग जिन्हें जुकाम जल्दी-जल्दी हुआ करे और दस्त की प्रवृत्ति हो। अति शारीरिक उत्तेजना। शरीर-पोषण विकार जो उपदंश, कण्ठमालिक बाधा, जिगर वृद्धि और रक्तहीनता के साथ सविराम ज्वर इत्यादि के कारण हुआ हो। पथरी रोग, सन्धिप्रदाह। श्लैष्मिक झिल्ली खुर्चवाने के बाद महीन रक्त नलिकाओं से रक्त-स्राव।

मन चिड़चिड़ा, घृणा करना, बदला लेना चाहे, हठी, निराश, उदासीन। आवाज से, छूने और झटके से घबराये। मृत्यु-भय।

सिर सिर के चारों तरफ फीता कसा जैसा मालूम हो। टोपी के दाब से सिर दर्द हो, भरापन, सड़क की आवाज से अधिक हो। बाल गिरें। खोपड़ी की खाल स्पर्शकातर।

कान—सुनना कठिन, गाड़ी या ट्रेन की सवारी में कठिनाई कम हो। आवाज से बहुत घबराये, जैसे खड़न्जे की सड़क पर गाड़ी की खड़खड़ाहट। (कॉफि०, नक्स०)। चबाते समय कानों में चुरचुराहट।

आँखें—द्वि-दृष्टि, तेज, गड़न, दर्द। कनीनिका का पकना। सुजाकी नेत्र प्रदाह, प्रकाशातंक, लगातार आँसू बहना। उपदंशीय उपतारा प्रदाह।

नाक—पीनस रोग। हर सुबह को नाक से हरी गुठलियाँ गिरें। जुकाम, नथनों में छटपटाहट और खून बहने के साथ। सिरा लाल। नाक में खपची जैसी गड़न। चुचुकाकार का सड़ना। नकसीर, सीना रोग के साथ। जीर्ण नाक बहना, पीला, घृणित, छीजन वाला स्राव, नासा-झिल्ली प्रदाह, पानी-सा और अति छिलन पैदा करने वाला स्राव।

मुँह—घृणित साँस। लार बहना। मसूढ़ों से खून जाना। जबान के किनारों पर दाद के दाने। जबान साफ लाल और तर, बीच में दरारों के साथ। दाँत ढीले

हो जायें, मसूढ़े कोमल स्पन्ज की तरह। कोमल तालु में घाव तेज सड़न के साथ दर्द। लार बहना और बदबूदार साँस। खूनी लार।

गला—सूखा। कानों में दर्द। बराबर बलगम खखारा करे। सफेद धब्बे, और नोकीले बिन्दु, जैसे खपाची रखी है, निगलने में दर्द हो।

आमाशय—अधिक भूख, मीठे स्वाद के साथ। न पच सकने वाली चीजों, जैसे खड़िया, मिट्टी इत्यादि की इच्छा। हृदय छिद्र में दर्द। मंदाग्नि, साथ में पेशाब में अधिक आक्जैलिक एसिड, यूरिक एसिड और फॉस्फेट जाना तथा अधिक उदासी। चर्बी और नमक से प्रेम (सल्फ)।

उदर—बहुत ऐंठन, मगर मल थोड़ा ही निकले। मलाशय फटा मालूम पड़े। आँतों में कब्ज, मलाशय में दरारें। मल त्यागने में फटन। मल त्यागने के बाद तीव्र कटन दर्द जो कई घण्टों तक रहे (रैटानहिया)। आँतों से रक्तस्राव अधिक, चमकीला। काँच निकलना। बवासीर से जल्दी खून बहे। दस्त, चिकना, घृणित। मल त्यागने के बाद चिड़चिड़ापन और शिथिलता आए। शूल कपड़ा कसकर पहनने से कम हो। कामला रोग, जिगर में टीस।

मूत्र—थोड़ा, गहरे रंग का, घृणित। घोड़े के पेशाब की तरह गन्ध करे। पेशाब करने पर ठण्डा। जलन और कड़कन। मूत्र खूनी और सांडलाल। पुराने मूत्र-ग्रन्थि के रोगियों में कभी धुँधला, सांडलाल मूत्र और कभी अधिक साफ मूत्र, बारी-बारी से।

पुरुष—लिंगमुण्ड (सुपारी) और उसके पर्दे में दर्द और जलन। घाव, जलन चुभन, घृणित स्राव निकलना।

स्त्री—बाहरी भाग दर्द करे, घावयुक्त। (हीपर०; मर्क०; थूजा०;)। प्रदर, भूरा, मांस के रंग का, पानी-सा या रेशेदार; घृणित। जननेन्द्रिय के बाल झड़ें। (नैट्रम म्यूर०; जिंक०)। गर्भाशय से रक्त स्राव। मासिक-धर्म के समय से पहले अधिक, कीचड़ के पानी की तरह; साथ में पीठ, कूल्हा और जाँघ में दर्द, योनि के आरपार चिलक। प्रसव के बाद गर्भाशय से अधिक रक्तस्राव।

साँस-यन्त्र—आवाज फटी हुई; स्वर-भेद, साथ में सूखी, कष्टकर खाँसी जो स्वर-यन्त्र और पेट के गढ़े में गुदगुदी के साथ उठे। वक्षास्थि की निचली तरफ दर्द। ऊपर चढ़ते समय साँस फूलना (आर्स०; कैल्के०)। सोते में खाँसी (कैमो०)।

अंग—घृणित पैर-पसीना, जो अँगुलियों में छरछराहट पैदा करे, गड़न दर्द के साथ; पैर की अँगुलियों पर बेवाई फटना। हथेली और हाथों पर पसीना, ठंडे, नीले नाखून। रात में काँखों में पसीना।

चर्म—मस्से, बड़े और दरारेदार, धोने पर खून बहे। घाव, सरलता से खून बहे, उत्तेजनीय, खपच्ची जैसा दर्द, टेढ़े-मेढ़े किनारे, तला कच्चा, मांस जैसा दिखाई पड़े। अधिक मांसांकुर। चेहरे पर काले, महीन-छिद्र, माथे पर अधिक दाने।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम को और रात में, ठंडे मौसम में, और गरमी में। भी। घटना : गाड़ी की सवारी करते समय (विरुद्ध; काकुलस०)।

सम्बन्ध—पूरक : आर्से०; कैलेंडि०; लैक कैना०, सीपिया। विरुद्ध, लैक।

तुलना कीजिए : मर्क०; कैलि कार्बो० थूजा, हीपर०, कैल्के०।

मात्र—६ शक्ति। नाइट्रिक एसिड के रोगी को, जब अच्छा होने लगता तो चर्म लक्षण दिखाई देने लगते हैं, यह अच्छा चिह्न है।

नाइट्रि स्पिरिटस डल्सिस (Nitri Spiritus Dulcis)

(स्वीट स्पिरिट्स ऑफ नाइटर)

मन्द ज्वर में, जब गशी की अवस्था हो, संवेदन शक्ति का अभाव, रोगी को जगाना कठिन, यह अवस्था इस औषधि से ठीक होती है। सूखा चर्म, मिचली, वादी। नमकीन स्वाद। अधिक नमक खाने से आये उपद्रव (आर्से०, फॉस०)। तूफानी मौसम में जुकाम हो। अरुण ज्वर के बाद तीव्र गुर्दा प्रदाह। शोथ। पेशाब बढ़ाने वाली उत्तम औषधि।

चेहरा—मुखमण्डल का स्नायुशूल, आलोकातंक साथ। गालों में जलन और कै, बाद में सुस्ती। मुखास्थि में छेद होने जैसा दर्द और जबड़ों के कोणों में। ठण्डक सहन न हो।

साँस यन्त्र—थोड़ा भी टहलने पर बहुत तेज साँस चलना। वक्षास्थि के नीचे दर्द, संकुचन।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : मानसिक अशान्ति से, जाड़े और वसन्त में।

सम्बन्ध—डिजिटैलिस की क्रिया बढ़ाती है।

तुलना कीजिए—फॉस० एसिड, लाइको पो०।

मात्रा—पानी में शुद्ध स्पिरिट की कुछ बूँदें घोल कर हर २ या ३ घण्टे पर एक मात्रा दें।

नाइट्रो म्युरियेटिक (Nitro Muriatic Acid)

(ऐक्वा रीजिया)

मूत्र में ऑक्जेलेट की अधिकता के लिए प्रायः अकसीर है। अपरस की तरह चर्म लक्षण के कष्ट को हरती है। ३ से ५ बूँद दिन में ३ बार। पित्त के विकार;

जिगर प्रदाह, जिगर की सुस्ती, जिगर का क्षय। खासतौर से जिगर की उस प्रदाहिक मन्दता और आमाशय नजले में हितकर है जो गरम और तर वातावरण में प्रायः होते हैं और जो मांस और मदिरा से बढ़ते हैं तथा (हेल)। गुदा संकुचित। शर्कराश्मरी (पेशाब में रेत आना)।

मुँह— मसूढ़े से सरलतापूर्वक खून बहना। मुँह में पानी भरना। रात में बराबर लार बहा करे (मर्क०)। मुख-क्षत, मुँह में भीतरी भाग में और जबान पर छोटे, छिछले घाव। कसैला स्वाद। (क्युप्रम मेट०)।

आमाशय—खट्टी डकारें, पेट में खालीपन और भूख की संवेदना के साथ, खाने से कम हो। लार बहना, रात में अधिक।

मल—कब्ज, असफल वेग। गुदा संकोचक पेशियाँ सिकुड़ी हो। गुदा तर और दर्द करे।

मूत्र—गँदला, मूत्र मार्ग में जलन, ऑक्जेलिक अम्ल की अधिकता।

मात्रा—५ से १० बूँद पानी में मिलाकर।

न्युफार ल्युटिम (Nuphar Luteum)

(यलो पाड लिली)

स्नायविक दौर्बल्य उत्पन्न करती है, जननेन्द्रिय पर स्पष्ट प्रभाव है।

पुरुष—मैथुन इच्छा का पूर्ण अभाव, जननेन्द्रिय ढीली, लिंग सिकुड़ा हुआ। नपुंसकता, मलत्याग के समय, पेशाब करते समय वीर्य स्खलन। धातुक्षीणता। अण्ड और लिंग में दर्द।

मल—आंत्र शूल। पीला दस्त, सुबह को अधिक। आंत्र ज्वर में अतिसार।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए—जननेन्द्रिय दौर्बल्य में : एग्नस०, कैलि ब्रोमे०; लाइको०; सेलेनि०; योहिम्बिन०। अतिसार में। चेलिडो०, गैम्बो०; सल्फ०; निम्फिया आडोरेटा, स्वीट वाटर लिली-(प्रातःकालीन अतिसार, पीठ दर्द), प्रखर स्राव तीक्ष्ण, घृणित स्राव, वायुनलिका से अधिक स्राव, घाव युक्त गलप्रदाह।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

नक्स मॉस्केटा (Nux Moschata)

(नटमेग)

हृदय-गति के रुकने के साथ गशी के आक्रमण की स्पष्ट प्रवृत्ति। श्लैष्मिक झिल्लियाँ और चर्म अति सूखे। विचित्र भाव, अति प्रबल औंघाई के साथ। मूत्र

में नीलांश का प्राप्त होना। तीव्र रोगाक्रान्त के समय साधारणतया गशी आने की प्रवृत्ति। शोकाक्रमण, घोर उदासी, (इग्नेशिया)। टहलने की चेष्टा में लड़खड़ाना।

मन—परिवर्तनशीलता; हँसना और रोना। मानसिक गड़बड़ी, कमजोर स्मरण-शक्ति। चकित भाव जैसे स्वप्न देख रहा हो। सोचती है कि उसके दो सिर हैं।

सिर—खुली हवा में चलने से चक्कर आवे, जरा-सा अधिक खाने पर टीस। औंघाई के साथ सिर बढ़ा हुआ मालूम दे। सिर में टपकन। सिर में पटपटाहट का संवेदन। खुली हवा में असह्य। फटन जैसा सिर दर्द; कस कर दबाने से कम हो।

आँख—चीजें बड़ी दिखाई दें; बहुत दूर या गायब हो जायें। आँखों के आगे तिल। चक्षुतारा का प्रसार।

नाक—गन्ध असह्य, नकसीर, काला खून, सूखी, बन्द।

मुँह—बहुत सूखा। जबान मुँह की छत पर चिपकी रहे, लेकिन पानी की इच्छा न हो। रुई की तरह लार। (बर्बे०)। गर्भावस्था में दाँत दर्द। जबान सुन्न, पक्षाघातग्रस्त। गले का सूखापन।

आमाशय—अधिक अफरा। अफरा के साथ अनपच। हिचकी और बहुत मसालेदार भोजन की इच्छा। गठिया। जोड़ों को छोड़कर आमाशय को आक्रान्त करे।

उदर—आँतों में पक्षाघात जैसी कमजोरी। प्रचण्ड अफरा। मल मुलायम, मगर बाहर न निकाल सके, बहुत काँखने पर भी बाहर न निकले (एल्युमिना)। मलत्याग काल में या उसके बाद गशी आए। बवासीर बाहर निकलना।

स्त्री—गर्भाशय से रक्त। मासिक-धर्म देर तक रहे, गहरे रंग का, गाढ़ा। प्रदर कीचड़ जैसा, खूनी। मासिक धर्म का दब जाना, साथ में लगातार गशी के हमले और अनिद्रा। (कैलि कार्बो०)। मासिक धर्म परिवर्तनशील, समय और मात्रा दोनों क्रम-भ्रष्ट।

साँस-यन्त्र—हवा के विरुद्ध चलने से स्वरभेद हो (हीपर)। बिस्तर में गरम होने के बाद खाँसी आना।

दिल—कम्प, फड़फड़ाहट। ऐसा संवेदन कि किसी ने दिल को पकड़ लिया है। धड़कन, नाड़ी रुक-रुक कर चले।

अंग—दाहिने कूल्हे में से घुटने तक दर्द जो हरकत से बढ़े, खासकर ऊपर चढ़ते समय। पैर भीगने से वात दर्द, बाहरी हवा से भी। सूखा, गरम कपड़ा वात का दर्द कम करे। जरा से परिश्रम से थकावट आए।

नींद—बहुत औंघाई (.इण्डॉल)। रोगजनित अनिद्रा। मृत्युमूर्च्छा।

ज्वर—बायें हाथ से शीत शुरू हो। (कार्बो०)। शीत और गरमी बिना प्यास, पसीने का अभाव। चर्म और आन्तरिक भाग सूखे; आँखें: नाक, होंठ, मुँह, जबान, गला इत्यादि सभी सूखे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ठंडी, तर हवा, ठंडा भोजन, ठण्डे पानी से नहाना, दर्दवाली करवट लेटना, हरकत, झटका। घटना : सेंकना, सूखा मौसम।

सम्बन्ध—ओलियम माइरिस्टिका—आयल ऑफ नटमेग—(फुड़िया, अंगुलबेड़ा, विषैले घाव, सभी में यह औषधि २X में प्रयोग की जाती है); **ओरनिथोगैलम** (वादी, निचले सीने के आरपार उत्तेजना का संवेदन, जब बिस्तर में करवट बदले तो उसे ऐसा मालूम हो कि एक पानी भरा थैला भी साथ में घूम गया है। आमाशयिक घाव और कर्कट।) माइरिस्टिका सेबिफेरा। श्लेष्मायुक्त सूजन, जल्द मवाद बनाती है, शक्तिवान कीटाणुनाशक। सभी तन्तुओं के पकने की प्रवृत्ति। हीपर और साइलीशिया से अधिक शक्तिशाली बताई जाती है।

तुलना कीजिए। नक्स वो०, पल्से०, रस०, इग्ने०, एसाफि०।

क्रियानाशक—कैम्फो०, जेल्से०, वैलेरि०।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

नक्सवोमिका (Nux Vomica)

(पायजन-नट)

यह सबमें बड़ी बहुलक्षणीय औषधि है, क्योंकि इसके अधिकांश लक्षण शरीर के अनेक साधारण रोगों से मिलते हैं जो सदा होते रहते हैं। अन्य औषधियों के अधिक निष्फल प्रयोग के बाद यह प्रायः पहली औषधि है जो शरीर में संतुलन स्थापित करती है और जीर्ण दुष्प्रभावों का नाश करती है।

नक्स—आधुनिक जीवन की अनेक बाधाओं के लिए उत्तम औषधि है। नक्स का आदर्श रोगी दुर्बल-पतला, तेज, फुर्तीला, स्नायविक और चिड़चिड़ा होता है। यह अधिक मानसिक काम करता है, मानसिक परिश्रम से लदा रहता है, अधिक व्यायाम नहीं करता, बैठा ही रह कर सब काम करता है, देर तक दफ्फर में काम किया करता है, अध्ययन में अत्यधिक समय व्यतीत करता है, काम-काज में लीन रहता है, वह घरेलू जीवन और मानसिक परिश्रम के लिए स्फूर्तिदायक पदार्थ चाहता है; जैसे—कॉफी, मदिरा प्रायः अधिक मात्रा में। या तो वह अपनी उत्तेजना को तम्बाकू के शान्तिप्रद प्रभाव से शान्त करता है, या अफीम इत्यादि का शिकार बन जाता है। इन वस्तुओं के साथ और भी चेष्टाएँ बढ़ जाती हैं। भोजन के समय

मसालेदार और उत्तेजक चीजों की इच्छा, मदिरा और सुन्दरी इसमें मुख्य काम करती हैं; ताकि वह व्यावसायिक चिन्ता को भूल जाये। देर तक जागना। इसका परिणाम होता है सिर में मंदता, मन्दाग्नि, चिड़चिड़ापन। ये सभी दूसरे दिन के लिए उपस्थित हो जाते हैं। अब वह मल-उत्सर्जक के रूप में कोई चीज लेने लगता है, जिगर की टिकियाँ, खनिज जल और जल्द ही इन चीजों की आदत पड़ जाती है और ये उसके शरीर को और भी जटिल बना देती हैं। चूँकि ये सब जीवन की हानिकारक क्रियाएँ स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में अधिकांश पायी जाती हैं इसलिए नक्स प्रायः पुरुषों की औषधि कहलाती है। इस प्रकार के जीवन से चिड़चिड़ापन और स्नायविकता उत्पन्न होती है, अति उत्तेजनीयता और सवेदनीयता: जो नक्स के व्यवहार से बहुत कुछ शान्त होगी। खासकर पाचन की गड़बड़ी, यकृत शिरा सम्बन्धी रक्ताधिक्य और उसपर निर्धारित विषाद। चेतनायुक्त आक्षेप, स्पर्श से, रहकत से अधिक। ईर्ष्यालु; उत्तेजित प्रकृति। नक्स के रोगी को जल्दी सर्दी लग जाती है, खुली हवा इत्यादि से घृणा करते हैं। नक्स सदा बदमिजाज रहता है, बेताल, आक्षेपिक क्रिया।

मन—अति चिड़चिड़ा, सभी संवेदनाओं से अति प्रभावित। भद्दा दुष्ट। आवाज, गन्ध, प्रकाश इत्यादि सहन न हो। स्पर्श से घृणा। समय धीरे व्यतीत हो। जरा-सा रोग अधिक कष्ट दे। दूसरों को धिक्कारने की प्रवृत्ति। उद्विग्न, कसूर निकालना।

सिर—सिर के पिछले भाग में या आँखों के ऊपर दर्द, साथ में चक्कर, मस्तिष्क चक्कर खाता जान पड़े। प्रचण्ड उत्तेजना। क्षणिक अचेतनता के साथ चक्कर आना; नशे की अवस्था, सुबह को, मानसिक परिश्रम से, तम्बाकू, मदिरा, कॉफी, खुली हवा से बढ़ना। चाँद पर दाब, कील ठोंकने की तरह। सुबह को और भोजन करने के बाद चक्कर आना। सिर की खाल कोमल। सिर में दर्द, सिर को किसी कड़ी चीज से दबाने की इच्छा के साथ प्रदाहिक सिर दर्द, जो बवासीर से सम्बन्धित हो धूप में सिर दर्द करे (ग्लोनो०, नैट कार्बो०)। मैथुन के बाद सिर फैला हुआ और सन्तापपूर्ण मालूम हो।

आँखें—प्रकाशातंक, सुबह को अधिक। भीतरी किनारों में छरछराहट, सूखने का संवेदन, घेरों के निचले भाग में स्नायुशूल, आँखों से पानी बहने के साथ। नशीली चीजों की आदत के कारण दृष्टि स्नायु की क्षीणता, दृष्टि-पेशियों का आंशिक पक्षाघात, तम्बाकू या अन्य उत्तेजक वस्तुओं से अधिक हो। घेरों की फड़कन, जो सिर के पिछले भाग तक फैले। दृष्टि-नाड़ी प्रदाह।

कान—कण्ठकर्णी नली में से कानों में खुजली। कान की नली सूखी और उत्तेजित। कर्ण शूल, बिस्तर में अधिक हो। कर्ण-स्नायु की अधिक उत्तेजना, जो की आवाज दर्दवाली मालूम दे और क्रोधित करे।

नाक—ठसी मालूम दे, खासकर रात में। बन्द जुकाम, नाक से साँस न आए, सूखे, ठण्डे वातावरण में, गरम कमरे में अधिक हो। गन्ध से गशी की सम्भावना। जुकाम, दिन में बढ़े, रात में और बाहर जाने के बाद बन्द हो या एक से दूसरे नथनों में बदला करे। सुबह को नकसीर आए। (ब्रायो०) तेजाबी स्राव, लेकिन नाक बन्द रहे।

मुँह—जबड़े सिकुड़े हुए। छोटे मुखक्षत, खूनी लार के साथ। जबान का पहला आधा भाग साफ, पिछला आधा भाग गहरे मैल से ढँका हो, सफेद पीला चिटके किनारे। दाँतों में दर्द ठण्डी चीज से बढ़े। मसूढ़े सूजे हुए सफेद और उसमें खून बने।

गला— खुरदुरा, खुर्चन संवेदन। सुबह जागने पर; गुदगुदी; खुरखुराहट का संवेदन, कसाव और तनाव। गलकोष सिकुड़ा हुआ। कान सूजा हुआ। कानों में चिलकन।

आमाशय—खट्टा स्वाद; और सुबह को मिचली, खाने के बाद। पेट में बोझ और दर्द, खाने के कुछ देर बाद अधिक हो। वादी और मुँह में पानी आना। खट्टी कड़वी डकार। मिचली और कै; अधिक मरोड़ के साथ। प्रचण्ड भूख, खासकर मन्दाग्नि के हमले से प्रायः एक दिन पहले आमाशय का क्षेत्र दाब सहन न करे (ब्रायो०, आर्से०), कौड़ी प्रदेश फूला हुआ, पत्थर जैसी दाब खाने के कुछ घण्टों बाद। उत्तेजक वस्तुओं की इच्छा। स्निग्ध चीजों से प्रेम और वे सहन भी हों (पल्स इसका उल्टा है)। कड़ी कॉफी पीने से आया अनपच। वायु-स्खलन कठिन। कै करना चाहे मगर कै न हो।

उदर—उदर की दीवारों में कुचले जाने जैसा दर्द (एपिस०, सल्फ०)। पेट फूलनाः आक्षेपिक शूल के साथ। कपड़ा उतारने से शूल हो। जिगर कसा हुआ, चिलकन और सन्ताप के साथ। शूल ऊपर की तरफ की दाब के साथ, जिससे छोटी साँस आवे और पाखाना मालूम हो। उदर परिधि में कमजोरी। फँसी हुई आंत्र-वृद्धि (ओपि०)। उदर के निचले भाग में जननेन्द्रिय की तरफ कमजोरी। छोटे बच्चों की जाँघ की जड़ में आँत उतरना।

मल—कब्ज, साथ में अक्सर असफल वेग। अपूर्ण और असन्तोषजनक, ऐसा लगे कि कुछ भाग भीतर ही रह गया है। मलाशय का सिकुड़ना। घड़ी-घड़ी मल त्यागने की इच्छा जो असफल हो या हर चेष्टा पर बहुत थोड़ा-सा मल निकले।

मल त्यागने की इच्छा का पूर्ण अभाव इस औषधि की विपरीत अवस्था दर्शाती है। कब्ज और दस्त बारी-बारी, जुलाब की दवा के दुरुपयोग से। पूरे उदर में मल-त्याग की इच्छा मालूम पड़े। खाज वाली अस्राविक बवासीर; असफल मलत्याग इच्छा के साथ, अधिक दर्द, तेज औषधियों के बाद। अति मैथुन के बाद दस्त, सुबह को अधिक हो। बार-बार, थोड़ा-थोड़ा मल त्यागे। अधिक वेग के साथ थोड़ा मल। पेचिश; मल त्यागने से कुछ समय के लिए कम हो: मलाशय में लगातार असुविधा। कामला रोग के साथ दस्त। (डिजि०)।

मूत्र—उत्तेजित मूत्राशय, संकोचक पेशी के आक्षेप के कारण बार-बार थोड़ा-थोड़ा पेशाब निकलना। खूनी पेशाब। (इपिका०, हेरेबि०)। असफल इच्छा, आक्षेपिक और रुकने के साथ पेशाब बूँद-बूँद चूने के साथ गुर्दाशूल जो जननेन्द्रिय तक बढ़े। पेशाब करते समय मूत्रमार्ग में खुजली भड़क उठे और मूत्राशय की गरदन में दर्द हो।

पुरुष—सरल उत्तेजन; काम इच्छा यों ही भड़क उठे। आरामतलब जीवन बिताने के कारण वीर्य-स्खलन। अधिक मैथुन के दुष्प्रभाव। अण्ड में संकुचन दर्द। अण्ड प्रदाह। (हैमा०, पल्से०)। धातु क्षीणता, स्वप्न के साथ, पीठ पीड़ा, रीढ़ में जलन, कमजोरी और चिड़चिड़ापन।

स्त्री—मासिक-धर्म समय से बहुत पहले हो; देर तक रहे, सदा क्रमभ्रष्ट काला खून (साइक्लै०, लैके०; पल्से०)। गशी के दौरों के साथ। गर्भाशय का बाहर निकलना। दर्दवाला मासिक-धर्म। त्रिकास्थि में दर्द के साथ और लगातार मल त्यागने की इच्छा। प्रसव वेदना अपर्याप्त, मलाशय तक बढ़े, मलत्याग इच्छा के साथ और घड़ी-घड़ी पेशाब मालूम हो। (लिलि०)। मैथुन इच्छा प्रबल। गर्भाशय से अधिक रक्तस्राव, साथ में पाखाना मालूम हो।

साँस-यन्त्र—नजले के कारण खरखरी। गले में छिलने जैसे संवेदन के साथ। आक्षेपिक संकुचन। दमा, आयाशय में अफरा, सुबह या खाने के बाद। खाँसी, ऐसा संवेदन जैसे सीने के अन्दर कोई चीज फट के अलग हो गई हो। छिछली साँस। संकुचित साँस। कसी, सूखी, कष्टकर खाँसी कभी-कभी खूनी बलगम के साथ। खाँसने के साथ फटने जैसा सिर दर्द शुरू हो और कौड़ी प्रदेश में कुचलने जैसा संवेदन।

पीठ—कटि प्रदेश में पीठ दर्द। रीढ़ में फटन, ३ से ४ बजे सुबह अधिक हो। गरदन-बाँह क्षेत्र में स्नायुशूल, छूने से अधिक हो। बिस्तर में करवट लेने के लिए बैठना पड़े। कंधास्थि के नीचे कुचले जाने जैसा दर्द। बैठना लाभदायक है।

अंग—बाँह और हाथ सो जायें। आघात के कारण बाहों का आंशिक पक्षाघात। टाँगें सुन्न, लकवा जैसा लगे, टखनों और तलवों में ऐंठन। आंशिक पक्षाघात, अधिक

परिश्रम से या भींगने से (रस०) । हिलाते समय घुटनों के जोड़ में पटपटाहट हो । टहलते समय टाँगें घसीटकर चले । सुबह के समय बाँहों और टाँगों में शक्तिहीनता का संवेदन ।

नींद—३ बजे भोर से सुबह तक नींद न आवे, फिर अप्रफुल्लित भाव जाग उठे । भोजन करने के बाद और शाम को औंघाई आना । कौतूहल और जल्दीबाजी के स्वप्न । कुछ देर सो जाने के बाद आराम मिले, अगर बीच ही में जगाया न जाये ।

चर्म - पूरा शरीर जलता हो, खासकर चेहरा तब भी बिना सर्दी के हिल न सके या कपड़ा न हटा सके । आमाशयिक खराबी के साथ पित्त । मुँहासे, चर्म लाल और चकत्तेदार ।

ज्वर—ठंडी अवस्था प्रबल । सुबह के समय आक्रमण की संभावना । अधिक कम्प, अँगुलियों की नाखूनों के नीलापन के साथ । अंगों और पीठ में टीस, आमाशयिक लक्षण । शीत-ज्वर की सभी अवस्थाओं में कपड़ा ओढ़े रहे । खट्टा पसीना, शरीर के एक ही तरफ । कपड़ा हटाने पर सर्दी लगे, फिर भी कपड़ा ओढ़ना न चाहे । शरीर की सूखी गरमी ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सुबह को, मानसिक परिश्रम, खाने के बाद, स्पर्श, गरम मसाला, उत्तेजक पदार्थ, मादक पदार्थ, सूखा मौसम, ठंडक ।

घटना : झपकी लेने के बाद अगर बीच में छेड़ा न जाये, शाम को, आराम के समय, तरी में, तर मौसम में (कॉस्टि०), कड़े दाब से ।

संबंध—नक्स में ताँबा होता है, दोनों की मरोड़ पैदा करने वाली प्रवृत्ति पर ध्यान देना चाहिए ।

पूरक : सल्फ०, सीपिया ।

विपरीत : जिंकम ।

तुलना कीजिए : स्ट्रिकनिया । कलि कार्बो०, हाइड्रै०; ब्रायो०; लाइको०, ग्रैफा० ।

क्रियानाशक : कॉफिया०; इग्ने०, काकुलस० ।

मात्रा—१ से ३० शक्ति और उससे ऊँची शक्तियाँ । कहा जाता है कि रात को सोते समय देने से नक्स अच्छा काम करती है ।

निक्टैन्थस आर्बर–ट्रिस्टिस
(**Nyctanthes Arbor-Tristis**)
(पैंघाला–माली–सैड ट्री)

पित्त ज्वर और कठोर मियादी ज्वर, गृध्रसी, वात रोग । बच्चों का कब्ज ।

सिर—उत्सुक और बेचैन; धीमा सिर दर्द। जबान पर मैल।

आमाशय—जलन संवेदन, ठण्डे प्रयोग से कम हो। प्यास, कै करने से कम।

उदर—जिगर का कोमलपन। अधिक पित्तमय मल, मिचली के साथ। कब्ज।

ज्वर—प्यास, शीत के पहले और शीत के समय तथा गरमी के समय। शीत के अन्त में कै करने से आराम मिले, पसीना न हो।

मात्रा—अरिष्ट, बूँद की मात्रा में।

ओसिमम कैनम (Ocimum Canum)

(ब्रैजिलयन ऐल्फावाका)

गुर्दा, मूत्राशय और मूत्र-मार्ग के रोगों में इस औषधि को याद रखना चाहिए। मूत्र में लाल बालू का रहना इस औषधि की मुख्य विशेषता है और अकसर आजमाई गई है। पेड़ू, स्तनों की ग्रन्थियों की सूजन। गुदा शूल, खासकर दाहिनी तरफ का। गुर्दा पथरी के लक्षण स्पष्ट रहते हैं।

मूत्र—अधिक अम्लता, यूरिक अम्ल के नोकीले कणों का बनना। गँदला, गाढ़ा, घृणित, मवादी, खूनी, ईंट की बुकनी जैसी पीली तलछट। **कस्तूरी का गन्ध। मूत्र-मार्ग में दर्द। गुर्दों में ऐंठन।**

पुरुष—बायें अण्ड का गरम होना और सूजना।

स्त्री—योनि घुण्डी सूजी हुई, होठों में चिलकन दर्द। स्तन घुण्डी जरा से स्पर्श से दर्द करे। स्तन भरे और तने मालूम हों; खुजली। योनि का बाहर निकलना।

संबंध—तुलना : बर्बे : हेडियोमा; लाइको०; पेरीरा०; अर्टिका०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

ओनैन्थे क्रोकाटा (Oenanthe Crocata)

(वाटर ड्रापवार्ट)

मिरगी रोग की तरह विक्षेप, जो मासिक धर्म और गर्भावस्था में अधिक हो। प्रसवकालीन ऐंठन, ऐसा आक्षेप जो रक्त-दोष से आया हो और वह रक्तदोष दूषित सफाई के कारण स्वतः पैदा हुआ हो। गले और पेट में जलन, हिचकी और कै। चेहरे पर लाल चकत्ते। चेहरे की फड़कन। चर्म रोग, खासकर कुष्ट और चर्म की सख्ती।

सिर—सारे सिर पर दर्द, चकत्ते। एकाएक पूर्ण अचेतनता। उग्र प्रलापक सन्निपात, चक्कर। चेहरा लाल, आँखें चढ़ी हुई, पुतली फैली हुई, चेहरे की पेशियों की आक्षेपिक फड़कन, हनुस्तम्भ, मुँह में झाग, जबड़ों की अकड़न। अधिक जम्हाई आना। छोटी-छोटी बातों पर रोने की प्रवृत्ति।

साँस-यन्त्र—गुदगुदीदार खाँसी, सीने के निचले भाग में खड़खड़ाहट के साथ और गाढ़ा झागदार बलगम। भारी कष्ट से साँस आए, खर्राटे भरे।

अंग—विक्षेप; पीछे की तरफ शरीर का अकड़ जाना। पीठ से शुरू होकर जाँघों, कटि-स्नायु में दर्द जाये। हाथ और पैर ठंडे। हाथ और पैर सुन्न होना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : साइक्यूटा; कैली ब्रोम।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

ओलियेंडर-नेरियम ओडोरम (Oleander-Nerium Odo.)

(रोज-लॉरेल)

चर्म, हृदय, स्नायुमण्डल पर विशेष प्रभाव रखती है। जहाँ यह पक्षाघात के लक्षण और साथ में ऊपरी अङ्गों की विक्षेपिक सिकुड़न की अवस्था उत्पन्न और अच्छा करती है; अधरङ्ग। बोलना कठिन।

मन—स्मरणशक्ति दुर्बल, मन्द प्रत्यक्ष विषाद के साथ कठिन कब्ज।

सिर—नीचे देखने के समय चक्कर आये और दोहरी चीज देखना, किसी चीज पर गौर से देखने पर या बिस्तर पर से उठने पर चक्कर आवे। मस्तिष्क में ऐसा दर्द जैसे सिर फट जायगा। सुन्न संवेदन। मन्द बुद्धि, सोच न सके। चमड़ी पर दाने। कानों के पीछे तर, घृणित चकत्ते (ग्रैफा०, पेट्रोलि०) और सिर के पिछले भाग पर साथ में आगे की तरफ लाल; खुरदुरे दाद की तरह चकत्ते हों। माथे पर और बालों के किनारों पर छिलनेवाली खुजली; जो गरमी से बढ़े।

आँखें—सभी चीजों को केवल तिरछी आँखें करके देख सके। पढ़ने पर आँखों से आँसू आए। दोहरी चीजें देखना। ऐसा मालूम दे कि आँखें सिर के भीतर खिंची जा रही हैं।

चेहरा—पीला, मुरझाया हुआ; आँखों के चारों तरफ नीले घेरे (फॉस० एसिड)।

आमाशय—बहुत ललचा कर खाये, तेजी से खाना, बिना भूख के खाये। प्यास। वायु डकार। कै; खाने की, हरियालीदार पानी की। गड्ढे में थरथराहट।

उदर—अधिक गड़गड़ाहट, अधिक दूषित वायु-स्खलन। नाभि के चारों तरफ कुतरन। असफल वेग। **अनपचा मल। वायु-स्खलन के समय मल निकल पड़े।** गुदा में जलन के साथ दर्द।

सीना—बोझ ऐसी दाब, लेटने पर दम फूले। सीने में कमजोरी और खालीपन के साथ दिल धड़कना। कष्टदायक साँस। सीने में आड़ी चिलकन।

अंग—निचले अंगों में कमजोरी। टाँगों और पैरों में लकवा। अंगों में जीवन ताप की कमी, ठंडे पैर। बिना दर्द वाला लकवा। पैरों में लगातार ठंडक अँगुलियों में सूजन, जलन और कड़ापन। हाथों की शिरायें सूजी हुई। शोथ। जोड़ों का कड़ापन।

चर्म—खुजलीदार, भूसीदार दाने, दाद, स्पर्शकातर और सुन्न। रात में जलन। स्पर्शकातर चर्म जरा-सी रगड़ दर्द और छिलन पैदा करे। अति खाजवाले दाने, खून बहना, पसीजना, पसीने का अभाव। अति खुजली, तीव्र खासकर सिर की चमड़ी पर जो उत्तेजनीय हो।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : कपड़ा उतारने से, आराम से, कपड़े की रगड़ से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : कोनि०, मैट्र० म्यूर; रस०, कॉस्टि०, लैथाइ०। ओलियेण्डर में ओलियेण्ड्रिन और नेरीन भी है जिसे डिजिटैलिन के पूर्ण रूप से समान नहीं तो घनिष्ट रूप से सम्बन्धित होना कहा जाता है। नाड़ी धीमी हो जाती है, अधिक क्रम से चलने लगती है; जोरदार हो जाती है। **अधिक पेशाब होना,** दिल धड़कना, शोथ और हृदय रोग की कष्टदायक साँस आदि सभी विकार गायब हो जाते हैं।

क्रियानाशक—कैम्फो; सल्फ।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

ओलियम ऐनिमैली (Oleum Animale)

(डिपेल्स ऐनिमैल आयल)

स्नायु-मण्डल पर काम करती है, खासकर फुफ्फुस—आमाशयिक क्षेत्र पर। अधकपारी और शुक्र रज्जु के स्नायुशूल में लाभदाक। जलन, दर्द और चिलकन "आगे की तरफ खिंचा हुआ" और "पीछे से आगे की तरफ" जानेवाला दर्द।

सिर—फटन दर्द, शोक और चिड़चिड़ेपन के साथ, भोजन के बाद अधिक, मालिश से कम हो। खुजली वाले, जलन वाले दाने, रगड़ने से कम। जबड़े की हड्डी जोर से ऊपर को खिंची मालूम दे। अधकपारी, अधिक बार पेशाब आने के साथ।

आँखें—आँखों में गड़न, धुँधलापन। आँखों के आगे चमकती वस्तुएँ, खाते समय आँखों से पानी बहे। निकट-दृष्टि। पलकों का फड़कना (एगैरि०)।

नाक—पानी-सा, काटनेवाला स्राव, खुजली हवा में अधिक हो।

चेहरा—खिंचा मालूम दे। ऐंठन की तरह दर्द। होंठों का फड़कना। जबड़े की हड्डी ऊपर की तरफ खिंची मालूम दे। दाँत दर्द, जो दाँतों के एक दूसरे से दबाने से कम हो।

मुँह—खाते समय गाल काट ले (कॉस्टि)। जबान दर्द करे मुँह में चरबी जैसा लगे।

गला—दर्द करे। सूखा, सिकुड़ा। हवा खींचने पर ठण्डक लगे।

आमाशय—आमाशय में पानी भरा मालूम दे; ठण्डक का संवेदन, संकुचन संवेदन, जलन। डकार आने से कम हो।

उदर—वादी और गड़गड़ाहट। गुदा में जलन के साथ मल त्यागने की असफल इच्छा। मल त्यागने के बाद उदर में चोटीला दर्द।

मूत्र—अनेक बार मूत्र-इच्छा। कूँथन और कम पेशाब निकलने के साथ हरियालीदार पेशाब, घड़ी-घड़ी और तेज इच्छा। मूत्रमार्ग में खुजली।

पुरुष—काम इच्छा अधिक, स्खलन बहुत जल्दी। शुक्र-रज्जु में होकर अण्ड तक दर्द। अण्ड पकड़कर ऊपर की तरफ जोर से खींचा हुआ मालूम दे, दाहिनी तरफ तरफ अधिक कष्ट आए। मूलाधार में दाब, मूत्राशय ग्रन्थियों का ढीलापन।

स्त्री—मासिक धर्म समय के पहले और थोड़ी मात्रा में, काला रङ्ग।

श्वास-यन्त्र—सीना सिकुड़ा मालूम दे। पैर का पसीना दब जाने से आया दमा रोग। दाब। पीछे से आगे की तरफ सीने में चिलकन।

अंग—पिठासे में मोच। सिर उठाने में मेरुदण्ड में पटपटाहट। (एलो०, नैट्र० कार्ब, थूजा०)। बेचैनी। कन्धों में वात दर्द। एड़ी पर मछली के पानी की गन्ध का पसीना हो।

घटना बढ़ना—बढ़ना : खाने के बाद, २ बजे तीसरे पहर से ६ बजे रात तक। घटना : मालिश से, डकार से, खुली हवा में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : पल्से०, आर्से०, सिलि०, सीपिया।

क्रियानाशक—कैम्फो०, ओपि०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति और ऊँची।

ओलियम जेकोरिस ऐसेलि (Oleum Jecoris Aselli)

(कॉड-लिवर आयल)

आन्तरिक उपयोग में, बलबर्द्धक और जिगर तथा क्लोम विषयक औषधि (बर्नेट)। शोष, सुस्ती, कंठमालिक रोग, वात बाधाएँ। शिशु का सूखा रोग, गरम हाथों और सिर के साथ दुबलापन, रात में बेचैनी और ज्वर। जिगर प्रदेश में दर्द। तपेदिक के शुरू में।

सीना—आवाज फटी हुई। तेज चिलकन दर्द। जलनवाले चकत्ते। सूखी, सारे शरीर को हिला देनेवाला, गुदगुदीदार खाँसी, खासकर रात में। कण्ठमाला से पीड़ित बच्चों की सूखी, कुकुर खाँसी। इस अवस्था में बूँदों में दवा दीजिए। प्रतिदिन एक बूँद, बारह बूँद तक बढ़ाइये, तब उसी प्रकार एक-एक बूँद करके कम कीजिए। (डैहल्के)। सीने के आर-पार वेदना। खून थूकना (एकालिफा०, मिलिफो०) अन्य लक्षणों के साथ धड़कन। पीलापन। उन बच्चों के लिए जो दूध नहीं पी सकते।

अङ्ग—केहुनी, घुटनों और त्रिकास्थि में टीस। जीर्ण वात रोग, पेशियों और बन्धनों के तनाव के साथ। हथेली में जलन।

ज्वर—शाम के लगभग बराबर शीत। यक्ष्मा-ज्वर। रात्रिकालीन पसीना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कोलेस्टेरिन; ट्यूबर्कुलिनम; फॉस्फो०, आयोडि० ऑयल जेकोरिस के १ लीटर में ०·४ ग्राम आयोडि० होती है। (गैंडस मोरहुआ कॉड)—तीव्र साँस नाक के नथुनों के फड़फड़ाहट के साथ, सीने में खून दौड़ना, फुफ्फुस में दर्द और खाँसी में सूखी गरमी।

मात्रा—१ से ३ विचूर्ण। लगाने के लिए दाद पर और नाटे, दुबले बच्चे को रात के समय रोज लगाना चाहिये।

ओलियम सैंटेली (Oleum Santali)

(ऑयल ऑफ सैंडल ऊड)

मूत्र और जननेन्द्रिय क्षेत्र में इस औषधि का काम अधिक उपयोगी है, खासकर सुजाक रोग में। यह शक्तिवर्द्धक और कीटाणुनाशक और कफ निकालने वाली औषधि है। चीनी में २ या ३ बूँद देने से अक्सर शरीर को हिला देने वाली सूखी खाँसी में आराम देगी जबकि बलगम बहुत कम निकल रहा हो।

पुरुष—पीड़ाजनक लिंगोत्तेजना, अगले पर्दे की सूजन। गाढ़ा, हल्का पीला, मवादी स्राव।। शरीर के सन्धि भाग में गहराई में दर्द।

मूत्र—घड़ी-घड़ी जलन, चिलकन, सूजन और लाली, लिंगमुण्ड में। धार पतली और मन्द। गुर्दा क्षेत्र में तीव्र टीस। मूत्रमार्ग को कोई गोल चीज दबाती जान पड़े, खड़े होने से अधिक हो। जीर्ण सुजाक स्राव, अधिक, गाढ़ा जीर्ण मूत्राशय प्रदाह।

मात्रा—२ से १० बूँद कोषों में रखा हुआ।

ओनिस्कस ऐसेलस-मिलेपेड्स
(Oniscus Asellus-Millepedes)
(ऊड—लाउस)

विशेषतः मूत्रवर्द्धक है, इसलिए शोथ रोग में लाभदायक है। दमे की अवस्थाएँ, साथ में ब्रांकाइटिस।

सिर—दाहिने कान के पीछे गोस्तन-प्रवर्धन में छेदन-दर्द। (कैंप्सि०) धमनियों की तीव्र टपकन। (पोथोस; ग्लोनोइन)। नाक की जड़ पर दर्द वाली दाब।

आमाशय—हृदय छिद्र में लगातार दाब, कै।

उदर—तनाव, आध्मान; अति तीव्र शूल।

मूत्र—मूत्रमार्ग में कटन, जलन। मल और मूत्र में अभाव के साथ मूत्राशय और मलाशय में ऐंठन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : पोथोस फीटिडा, कैन्थे०।

मात्रा—६ शक्ति।

ओनोस्मोडियम (Onosmodium)
(फॉल्स ग्रॉमवेल)

चित्त एकाग्रता और इन्द्रियों में पारस्परिक तालमेल की शक्ति की कमी, चक्कर, सुन्न होना और पैशिक शिथिलता। आँख और सिर के लक्षणों का साथ-साथ रहने की विशेषता, साथ में पैशिक थकावट और मन्दता।

अधकपारी की एक औषधि है। आँखों पर जोर पड़ने से और कान दौर्बल्य के कारण सिर दर्द। यह दोनों—पुरुष और स्त्रियों में काम इच्छा में कमी करती है, इसलिए होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार काम सम्बन्धी स्नायु दौर्बल्य में काम आती है। स्त्रियों में कामाग्नि की कमी; स्नायविक दर्द, सर्वांग शिथिलता। ऐसा काम करे जैसे थका ही पैदा हुआ है।

सिर—स्मरण शक्तिहीनता। नाक खूनी लगे। व्यग्रता। मन्द, भारी, चक्कर आये, पिछले भाग में आगे को दाब। सुबह जागने के बाद पिछले अग्र भाग में दर्द, खासकर बाईं तरफ। कनपटी और जबड़ों में दर्द। (कैप्सिकम)

आँखें—धुँधली निगाह, चक्षु-वक्र में रक्ताधिक्य और चक्षु-पट की रक्त-नलिकायें बढ़ी हों। आँखों में जोर पड़ने जैसी संवेदना, प्रयोग करने से बढ़े। आँखें भारी और मन्द, पेशी दुर्बलता; पेशियाँ तनी हों। आन्तरिक पेशियों का आंशिक पक्षाघात। आँखों के ढेलों में, घेरे और ढेलों के बीच में दर्द जो बायीं कनपटियों तक बढ़े।

गला—तीव्र सूखापन। पिछले छिद्र से नजला टपके। कच्चापन, छिलन। पिछले छिद्रों में भरापन। ठंडी चीज पीने से लक्षण बढ़ें।

उदर—बरफ के पानी की और दूसरी ठंडी चीज पीने की इच्छा, अक्सर पानी चाहे। उदर फूला मालूम पड़े।

पीठ और कटि-क्षेत्र में दर्द। पैरों और टाँगों में झुनझुनी और सुन्न होना।

सीना—छाती में सन्ताप और टीस; सूजी और वेदनापूर्ण जान पड़े। हृदय में दर्द, नाड़ी तेज, क्रमहीन, कमजोर।

पुरुष—लगातार कामोत्तेजना। मानसिक नपुंसकता। इच्छा का लोप होना। शीघ्रपतन। दुर्बल लिंगोत्थान।

स्त्री—तीव्र गर्भाशयिक दर्द, नीचे की ओर दबाव के साथ, पुराना दर्द सिर से उठे। मैथुन इच्छा पूर्ण रूप से नष्ट होना। ऐसा लगे कि मासिक धर्म शुरू होने को है। स्तनों में टीस। घुण्डी की खुजली। मासिक-धर्म बहुत पहले और देर तक रहे। गर्भाशय क्षेत्र में सन्ताप, प्रदर पीला, तेजाबी अधिक।

अंग—पीठ में दर्द। टाँगों में, घुटनों के गढ़े में और घुटनों के नीचे थकावट की संवेदना और सुन्नपन (लड़खड़ाती चाल)। बगल का भाग बहुत ऊँचा मालूम दे। बाँयें स्कन्धास्थि क्षेत्र में दर्द। अधिक पैशिक कमजोरी और थकावट।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना**: हरकत से, झटके से और तंग कपड़ा पहनने से। **घटना**: कपड़ा उतारने के बाद, पीठ के बल लेटने से, ठण्डी चीज पीने से और खाने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: नैट्र० म्यूर०, जेल्से०, रूटा, लिलियम०।

मात्रा—३० शक्ति।

ऊफोरिनम (Oophorinum)

(ओवेरियन एक्सट्रैक्ट)

डिम्बाशय में चीरा लगवाकर निकलवा देने के बाद के रोग। वयःसन्धिकालीन बाधाएँ। डिम्बाशय अर्बुद। चर्म सम्बन्धी रोग और मुँहासे। खुजली रोग।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : ऑर्किटिनम-टेस्टिक्युलर एक्सट्रैक्ट (डिम्बाशय के निस्तर के बाद, काम सम्बन्धी कमजोरी, वृद्धावस्था की क्षीणता)।

मात्रा—निचली शक्तियों का विचूर्ण।

ओपरक्युलिना टरपेथम (Operculina Turpethem)

(निशोप)

प्लेग, ज्वर, दस्त की औषधि।

मन—प्रलाप सन्निपात, बेचैनी से सम्बोधित बकवास। बिस्तर से भगने की प्रवृत्ति, बकना, दर्द से गशी आवे।

उदर—पानी-सा दस्त, मल अधिक, जान जाने जैसी संवेदना के साथ। हैजा। खूनी बवासीर।

चर्म—लसिकावाहिनी ग्रन्थियों का बढ़ना और पक जाना। फुड़िया और धीरे-धीरे मवाद देनेवाले फोड़े।

ओपियम-पैपैवर सोम्निफेरम

(Opium-Papaver Somniferum)

(ड्राइड लैटेक्स ऑफ दी पॉपी)

हैनिमैन का कहना है कि अन्य औषधियों की अपेक्षा ओपियम की क्रिया का मूल्यांकन करना अधिक कठिन है। ओपियम का प्रभाव जैसे स्नायु-मण्डल की असंवेदनीयता, औंघाई जैसा नशीलापन, दर्दहीनता और गशी, सर्व शारीरिक मदता और जीवन सम्बन्धी प्रतिक्रिया का अभाव; सभी ऐसी अवस्थाएँ हैं जो इस औषधि का होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार उपयोग में लाने का मुख्य मार्ग दर्शित करते हैं। सभी रोगों में मूर्च्छा जैसी निद्रा प्रधान रहती है। उनमें दर्द का अभाव होता है और साथ में प्रगाढ़, विचारहीन निद्रा, कठिन साँस रहता है। पसीनेदार चर्म। गहरा, महोगनी नामी लकड़ी जैसे रङ्ग का चेहरा। रक्ताम्बु स्रावी, संन्यास-रोग, रक्तवाही नाड़ियाँ क्षीण, उनमें रक्त संचित हो जाये। औषधियों की प्रतिक्रिया का

अभाव। गरम होने से रोग का उभर जाना या अधिक कष्टदायक होना। अफीम इच्छित क्रिया को कम करती है, पुतलियों को संकुचित करती है, उच्चकोटि की मानसिक शक्तियों को मन्द करती है, आत्म-नियन्त्रण शक्ति को और ध्यान एकाग्रता को और मूल्यांकन शक्ति को कम करती है। कल्पना की प्रबलता, चर्म को छोड़कर सभी उत्सर्जन क्रियाओं को स्थगित करती है। स्पष्ट रूप से विदित औषधियों का भी प्रभाव न होना। वे रोग जो भयाक्रमण पर आधारित हों।

मन—रोगी कुछ भी नहीं चाहता। **चेतनता का पूर्ण रूप से लोप होना, सन्यास अवस्था।** भयानक कल्पनायें, साहसी, मन प्रफुल्लित। अपने कष्ट को न समझ सके और न मूल्यांकन कर सके। समझे की वह अपने घर पर नहीं है। सन्निपातिक बकवादीपन, आँखें पूरी खुली हों।

सिर—**चक्कर, वृद्ध लोगों में सिर का हल्कापन।** मन्द, भारी, मन्दबुद्धि। प्रलापक सन्निपात। भयाक्रमण के बाद चक्कर। सिर के पीछे दर्द, बहुत बोझ जैसा मालूम दे। (जेल्से०) फटन संवेदना। पूर्ण असंवेदनीयता, समझने की शक्ति का पूर्ण अभाव। मस्तिष्क का पक्षाघात।

आँख—आधी बन्द, फैली, पुतली असंनेदनीय, **सिकुड़ी**। पलकों का पक्षाघात। (जेल्से०, कॉस्टि०)। घूरती, चमकीली।

चेहरा—लाल, फूला, सूजा, **गहरा लाल, गरम**। नशीला, विचारहीन दिखाई दे। (बैप्टि० लैके०), आक्षेपिक फड़कन, खासकर मुँह के कोनों में। चेहरे की शिरायें फूली हुई। **निचले जबड़ों का लटक जाना।** टेढ़ा-मेढ़ा।

मुँह—सूखा। जबान काली, पक्षाघातग्रस्त। खूनी झाग। घोर प्यास। होठों का बाहर निकलना। बोलना और निगलना कठिन।

आमाशय—शूल और विक्षेप के साथ कै होना। मल की तरह कै। आँतों (हार्निया) का फँसना। भूखा, खाने की इच्छा न हो।

उदर—कड़ा, फूला हुआ, तना हुआ। सीमा-विष शूल। शूल के समय मल त्यागने की इच्छा और कड़ा मल निकलना।

मल—कठोर कब्ज, मल त्यागने की इच्छा का लोप होना। **गोल, कड़ी, काली गोलियाँ।** मल बाहर-भीतर करे। (थूजा०, साइलि०)। छोटी आँतों में आक्षेप-जनित मल संचयता। अनैच्छिक स्खलन, काला घृणित, झागदार। मलाशय में घोर पीड़ा जैसे दबा कर फाड़ा जाता हो।

मूत्र—निकलना शुरू होने में देर लगे, कमजोर धार। भयाक्रमण के बाद रुक जाना या अनैच्छिक स्खलन। मूत्राशय की शक्ति और संवेदनीयता का लोप होना।

स्त्री—भयाक्रमण के बाद मासिक-धर्म का दब जाना। प्रसव वेदना का मृत्यु, मूर्च्छा और फड़कन के साथ रुक जाना। प्रसवकालीन विक्षेप, वेदना काल के बीच के समय में मूर्च्छा और औंघाई। नशीलापन के साथ भयाक्रमण के कारण गर्भपात का भय और प्रसव स्राव का दब जाना। गर्भाशय में घोर प्रसवात्मक वेदना, मल त्यागने की इच्छा के साथ।

श्वास-यन्त्र—नींद आने के बाद साँस रुक जाये फिर से साँस जारी करने के लिए हिलना पड़े (ग्रिंडेलिया)। आवाज फटी हुई। गहरा खर्राटा मारना; खरखराहट, कठिन सांस, कठिन, सविराम गहरा, क्रमभ्रष्ट। सीने में गरमी, हृदय-क्षेत्र में जलन। साँस कष्ट और नीला चेहरा के साथ खाँसी, खूनी बलगम।

नींद—बहुत औंघाई, तन्द्रा, (जेल्से०, नक्स मस्के०)। गहरी और बुद्धि मन्द; निद्रा में डूब जाये। घोर मूर्च्छा, निद्रा। सो जाने के बाद साँस रुकना। (ग्रिण्डे०), तन्द्रा। बिछौने को नोचना, बहुत औंघाई मगर नींद न आवे। दूर की आवाजें, मुर्गे की बाँग इत्यादि उनको सोने न दे। बच्चा बिल्ली, कुत्ता, काली शक्लों का स्वप्न देखे। बिस्तर इतना गरम लगे कि उस पर सो न सके। प्रसन्नता के, विचित्र प्रेममय स्वप्न। हिलाने वाली शीत फिर गरमी, नींद और पसीने के साथ। केवल गरम अवस्था में प्यास लगना।

ज्वर—नाड़ी भारी और धीमी गति वाली। पूरी शरीर पर गरमी फैले। गरम पसनी। ज्वर की विशेषता, गशी की निद्रा हो, खर्राटे की साँस, अंगों का फड़कना; घोर प्यास और निद्रालुता। प्रायः मन्द ताप और नशीलापन।

पीठ और अंग—पीछे की ओर वक्रता। गरदन की शिरायें फूली हुईं। दर्दहीन पक्षाघात (ओलियेंडर)। अंगों का फड़कना। सुन्न होना। झटके, सकुचन जैसे पेशियाँ अपना काम तीव्रता से कर रही हों। विक्षेप प्रकाश से, चमक से बढ़े, अंगों का ठण्डापन।

चर्म—गरम, तर, पसीनायुक्त। कपड़ा हटा देने की लगातार इच्छा। निचले अंगों को छोड़कर सारे शरीर पर पसीना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : गरमी, सोने पर उसके बाद। (एपिस०, लैके०) घटना : ठण्डी चीजें, बराबर टहलते रहने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एपिस०; बेला०, जेल्से०, नक्स मॉस०; मॉर्फिनम (दर्द से अधिक संवेदनीयता, फड़कन, उदर तनाव, तीव्र खाज), कोडीन (सूखी, कष्टदायक, लगातार खाँसी, पेशियों में फड़कन, खासकर पलकों में), एशोल्ट्जिया-कैलिफोर्निया पॉपी। (एक दोषरहित निद्राकारक)।

क्रियानाशक : तीव्र अफीम विषाक्रमण। एट्रोपिन और काली कॉफी। अफीम विष का दुष्प्रभाव। इपिकाक, नक्स, पैसिफ्लोरा०। बर्बेरिस, अफीम खाने की आदत को ठीक करती है।

मात्रा—३ शक्ति से ३० एवं २०० शक्ति।

ओपण्टिया-फिकस इण्डिका (Opuntia-Ficus Indica)

(प्रिक्ली पियर)

मिचली के साथ दस्त। जान पड़े कि आँतें उदर के निचले भाग में बैठ गई हैं। उदर के निचले तिहाई भाग में रोगग्रस्त संवेदना। अंत्रच्युति, बार-बार ढीला मल के साथ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : चैपारो एमारगोसा (जिसको मैक्सिको के डाक्टर लोग जीर्ण दस्त के लिए अकसीर मानते हैं)। रिसिनम कम्युनिस (दस्त, पेचिश, कठोर, जीर्ण दस्त)।

मात्रा—२ शक्ति।

ओरियोडैफ्नि (Oreodaphne)

(कैलिफोर्निया लॉरेल)

स्नायविक सिरदर्द, ग्रीवा, पश्चात् मस्तिष्क भाग का दर्द, मस्तिष्क मेरुमज्जा प्रदाह, दौर्बल्यमय दस्त और आंत्रशूल।

सिर—चक्कर झुकने या हिलने से बढ़े। सिर भारी, पलक भारी, फड़कन। घोर टीस, साथ में दोनों घेरों के भीतरी कोण में दाब, प्रायः बाईं तरफ के, जो मस्तिष्क के भीतर से होकर सिर की खाल को पार कर पिछले भाग की जड़ तक जाये, रोशनी, आवाज से बढ़े, और आँखें बन्द करने से तथा पूर्ण शान्ति से कम हो। लगातार, धीमी टीस, ग्रीवा और सिर के पिछले भाग में जो स्कंधास्थि से होकर रीढ़ की हड्डी तक जाकर सिर में घुसे, कानों में दर्द। सिर में बहुत भारीपन, साथ में सिर को बराबर हिलाते रहने की इच्छा, मगर उससे आराम न मिले। पलकों का झपकना, फड़कन, कमजोरी लानेवाला दस्त।

पेट—डकार; मिचली और कम्प के साथ।

मात्रा—१ से ३ शक्ति। अरिष्ट को सूँघना।

ओरिगैनम (Origanum)

(स्वीटर्जोरैम)

प्रायः स्नायुमण्डल पर काम करती है और हस्तमैथुन तथा कामोत्तेजना की अधिकता में लाभदायक है। स्तनों के रोग (ब्यूफो०)। तीव्र व्यायाम की इच्छा उसको दौड़ने के लिए बाध्य करती है।

स्त्री—प्रेमोन्माद; वेगमय काम-इच्छा, प्रदर, मूर्च्छा। कामोत्तेजक विचार और स्वप्न।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : फेरुला ग्लाका (स्त्रियों मे घोर कामोत्तेजना, सिर के पिछले भाग की बर्फीली ठंडक), प्लैटि०; वैलेरि०, कैन्थे०, हायोसियामस।

मात्रा—३ शक्ति।

ओर्निथोगेलम अम्बेलाटम (Ornitho-Umbalatum)

(स्टार ऑफ बेथलेहम)

जीर्ण आमाशयिक और अन्य उदर के कड़ेपन की बाधायें; कदाचित् पाचन-मार्ग का कर्कट, खासकर आमाशय और अन्धात्र-पुच्छ का। इसका प्रभाव केन्द्र आमाशय निम्न द्वार पर है जहाँ यह पक्वाशय तनाव के साथ पीड़ाजनक संकुचन पैदा करती है। उदासी। पूर्ण शिथिलता। रोगग्रस्तता का भाव रोगी को रात में जगाये रखता है।

आमाशय—जबान पर मैल। सीने और आमाशय में कष्टप्रद संवेदना जो पाकाशय द्वार से वायु के साथ एक तरफ से दूसरी तरफ ढुलकती है, शुरू हो। भूख का अभाव, बलगमी ओकाई और दुबलापन। आमाशय का घाव रक्तस्राव के साथ। दर्द उस समय अधिक होता है जब भोजन आमाशयिक द्वार से गुजरता है। पिसी हुई कॉफी की तरह का मल। आमाशय का फूलना। घृणित वायु की बार-बार डकार। कौड़ी के आर-पार वेदनापूर्ण दुर्बलता।

मात्रा—मूल अरिष्ट की एक ही मात्रा, फिर उसके प्रभाव की प्रतीक्षा कीजिये।

ओस्मियम (Osmium)

(दी एलिमेण्ट)

साँस-यन्त्रों की उत्तेजना और नजला। अकौता। सांडलाल मूत्र। कण्ठनली में दर्द। स्थानीय पसीने को अधिक करती है और उसमें गन्ध देती है। नाखून की तहों को चपकाती है।

सिर—मालूम हो कि सिर के चारों तरफ फीता कसा है। बालों का गिरना। (कैलि कार्बो०, फ्लोरिक एसिड)।

नाक – जुकाम नाक में भरापन के साथ। नाक और स्वरयन्त्र हवा सहन न करे। पिछले भाग से श्लेष्मा की छोटी गुठलियाँ।

आँखें—धुन्ध रोग। रोग परिवर्तनशील, क्षीण दृष्टि के साथ। तीव्र घेरे के ऊपर और नीचे का स्नायुशूल, घोर पीड़ा और जल प्रवाह। मोमबत्ती की रोशनी के चारों तरफ हरा चक्र दिखाई दे। चक्षुप्रदाह। आँखों के भीतरी भाग में तनाव होना, धुँधलापन प्रकाशातंक।

श्वास-यन्त्र—तीव्र स्वरयन्त्र प्रदाह, खाँसी और चिमड़ा, रस्सीदार बलगम, विक्षेपिक खाँसी, ऐसा लगे कि श्लैष्मिक झिल्ली स्वरनली से खींची जा रही हो। तीव्र छोटे झटकों में आवाज के साथ सूखी कड़ी खाँसी, जो नीचे से उठे और पूरे शरीर को हिला दे। बोलने से स्वर-यन्त्र में दर्द हो। आवाज भारी स्वरयन्त्र में दर्द, वक्षास्थि में चोट लगे। खाँसी के साथ अंगुलियों में फड़कन।

चर्म—अधिक खाज के साथ अकौता। उत्तेजित चर्म। खाजदार दाने। दुर्गन्धित पसीना, काँखों में पसीना जो लहसुन की तरह गन्ध करे, शाम और रात में अधिक। बढ़ते नाखून से उसकी तक चिपकी रहे।

सम्बन्ध—तुलना—आर्जेण्ट; इरिडियम, सेलेनि०; मैंगेन०।

मात्रा—६ शक्ति।

—:०:—

आस्ट्रिया वर्जिनिका (**Ostrya-Virg.**)

(आइरन ऊड)

मलेरिया के कारण रक्तहीनता में मूल्यवान है। पित्तमय अवस्थायें और सविराम ज्वर।

पाकाशय—जबान, पीली, जड़ पर मैल। भूख का लोप होना। सिर के अगले भाग का धीमा सिर दर्द के साथ अक्सर मिचली। कष्टदायक दर्द।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

ओवि गैलिने पेलिकुला (**Ovi Gallinae Pellicula**)

(मेम्ब्रेन ऑफ एग शेल)

एकाएक दर्द उठना। नीचे की तरफ दबाव की संवेदना। कलाई, बाँहों, कमर इत्यादि पर कपड़ा कसा जाना सहन न हो। पीठ दर्द और बायें नितम्ब में दर्द। कमजोरी। दिल और बायें डिम्बाशय में दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: कैल्के०, वाजा, ओवा टोस्टा, टोस्टा प्रिपैराटा—रोस्टेड-एग-शेल्स-कैल्केरिया ओवोरम—(प्रदर और पीठ दर्द) ऐसा जान

पड़े कि रीढ़ टूट गयी है और तारों से बँधी है या किसी डोरी से सब जोड़कर बाँध दी गई है। कर्कट पीड़ा। (मस्से)। **दमा के लिए एग-वैक्सिन भी।** डॉ० फ्रिट्ज टैल्बॉट की निकाली हुई विधि पर बहुत ध्यान दिया गया है जिससे वे बच्चों को एक प्रकार के दमा में अण्डे की वैक्सिन बनाकर चिकित्सा करते हैं। ऐसा दमा जो अण्डे के पोषक तत्वों की असहिष्णुता के कारण आया हो, अण्डे की सफेदी बार-बार खिलाने से उस विष का निराकरण करके दूर किया जा सकता है। चर्म को साबुन और अलकोहल से अच्छी तरह साफ करके अण्डे के ऊपरी खोल (छिलके) को तोड़ लें और पीले भाग को फेंक दें। केवल सफेदी लें और चर्म को नाखून द्वारा हलका-सा खुरच कर उसमें मलें।

ऑक्जेलिकम एसिडम (**Oxalicum Acidum**)

(सॉरेल एसिड)

यद्यपि वनस्पति भोजन में और मानव शरीर में आक्जेलेट का कुछ न कुछ अंश सदा रहता है, तब भी यह अम्ल यदि खा लिया जाये तो शरीर के अन्दर स्वयं एक तीव्र विष का काम करता है और आमाशयिक आन्त्र प्रदाह, चालन पक्षाघात, पतनावस्था, मूर्च्छा और मृत्यु का कारण हो जाता है।

सुषुम्ना को प्रभावित करती है और चालन स्नायु का पक्षाघात उत्पन्न करती है। सीमित स्थानों में **(कैली ब्राइको०)** तीव्र पीड़ा, जो **हरकत से और उस पर सोचने से अधिक हो। सामयिक आक्रमण।** गले और सीने का विक्षेपिक लक्षण। **बायीं तरफ का वात रोग। स्नायु दौर्बल्य।** क्षय रोग।

सिर—गरमी लगना। व्यग्रता और चक्कर। मल त्यागने के पहले और उसके समय सिर दर्द।

आँखें—आँखों में दर्द, फैली मालूम दें। **चित्रपट की अतिस्नायविक उत्तेजना।**

आमाशय—कौड़ी में तीव्र दर्द जो वायु-स्खलन से कम हो। आमाशयिक प्रदाह, कौड़ी के निचले भाग में ठण्डापन। जलन दर्द, ऊपर को चढ़ें, जरा-सा छूने से घोर पीड़ा हो। कड़वी और खट्टी डकार, रात में बढ़े। झड़बेर न खा सके।

उदर—खाने के २ घण्टे बाद अफरा के साथ ऊपरी भाग में और नाभि प्रदेश में दर्द। जिगर में चिलकन। शूल। उदर में छोटे स्थानों में जलन। कॉफी पीने के बाद दस्त।

पुरुष शुक्र-रज्जु में घोर स्नायुशूल। अण्ड कुचले गये और भारी जान पड़े। शुक्राशय प्रदाह।

मूत्र—घड़ी-घड़ी अधिक मात्रा में। पेशाब करते समय मूत्रमार्ग में जलन और लिंगमुण्ड (सुपारी) में दर्द। विचार करते ही पेशाब करना आवश्यक हो जाए। मूत्र में ऑक्जेलेट मिले हों।

श्वास-यन्त्र—हृदय रोग के साथ स्नायविक स्वरभेद। (कोका; हाइड्रोसियानिक एसिड)। गले के नीचे की तरफ जलन। स्वरयन्त्र और सीने की सिकुड़न के साथ विक्षेपिक साँस, आवाज भारी। बायें फुफ्फुस में दर्द। स्वरभेद। स्वर नसों का संकुचन पेशियों का पक्षाघात। कष्टदायक साँस; छोटे झटकेदार साँस। बायें फुफ्फुस के निचले भाग के आरपार तेज दर्द जो कौड़ी तक नीचे उतरे।

दिल—हृदय के यान्त्रिक रोग में धड़कन और साँस-कष्ट जो सोचने से बढ़े। नाड़ी दुर्बल। हृदय लक्षण और साथ में स्वरलोप; हृदयशूल बायें फुफ्फुस में एकाएक तेज गड़न दर्द, साँस रुके, बारी-बारी से। हृदय के ऊपरी क्षेत्र का दर्द जो बायें कंधे तक लपके। मुख्य धमनी की अक्षमता।

अङ्ग—सुन्न, कमजोर, चुनचुनाहट। दर्द मेरुदण्ड से शुरू हो और अंगों के नीचे तक बढ़े। खींचन और कोंचन दर्द अंगों के नीचे तक झपटे। पीठ दर्द; पीठ सुन्न, कमजोर। अस्थि-मज्जा प्रदाह। पैशिक शिथिलता। कलाई मोच जैसी दर्दीली। (अलमस०)। निचले अङ्ग नीले, ठंडे, सुन्न संवेदन। मस्तिष्क और पृष्ठ-वंश की मज्जा की झिल्ली का कड़ापन। कई स्थानों में कोंचन दर्द, झटके के साथ दर्द।

चर्म—स्पर्शकातर, गड़न दर्द, बाल बनाने के बाद अधिक हो; चकत्तेदार, गोल सफेद धब्बे; पसीना तरल।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** बायीं तरफ, जरा-सा छूने से, बाल बनाने से। ३ बजे सुबह को पाकाशयिक और उदर पीड़ा के कारण जाग पड़े। सभी रोग अपनी अवस्था के बारे में सोचने से अधिक हों।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : आर्से०; कॉल्चि०, आर्जेण्ट, पिक्रिक एसिड, सिसर एरीटिनम—चिक पी—(शरीर में अश्मरी का निर्माण, पीला रोग, जिगर रोग, पेशाब बढ़ाने वाली) स्कोलोपेण्ड्रा—सेण्टिपेड—(पीठ और कमर में घोर पीड़ा जो अंगों के नीचे तक बढ़े, निश्चित समय पर वापस आवे, सिर से शुरू होकर पैर की अँगुलियों तक उतरे। हृदय शूल। प्रदाह, दर्द, सड़न। फुन्सियाँ और फोड़े)। केसियम—(कटि प्रदेश में और अण्ड में दर्द। सिर दर्द, कनपटी में से झपटे। दस्त और शूल। (सुस्ती)।

लाइम वाटर—ऑक्जेलिक एसिड विष का क्रियानाशक।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

:—०—:

ऑक्सिडेनड्रान-ऐण्ड्रोमेडा ऐरबोरिया
(Oxydendron-Andromeda Arb.)
(सॉरेल ट्री)

शोथ की औषधि—जलोदर और सर्वांग शोथ। पेशाब दवा। संयुक्त शिरा सम्बन्धी रक्त संचार की गड़बड़ी। मूत्राशय ग्रन्थि का बढ़ना। मूत्राशयी पथरी। मूत्राशय की गरदन की उत्तेजना। साँस लेने में बहुत कठिनाई। अरिष्ट। तुलना कीजिए : सेरेफोलियस (शोथ, साण्डलाल मूत्र रोग जो गुर्दा रोग के कारण हो, मूत्राशय प्रदाह)।

आक्सिट्रोपिस (Oxytropis)
(लोको वीड)

स्नायु मण्डल पर स्पष्ट प्रभाव। कम्प, खालीपन। पीछे की तरफ पैर पड़े, मेरुदण्ड का प्रदाह और पक्षाघात। दर्द तेजी से उठे और गायब हो जाये। मुख-संकोचनी पेशी का ढीलापन। लड़खड़ाती चाल। परावर्तित क्रिया का लोप होना।

मन—अकेले रहने की इच्छा। बात करने या काम करने की इच्छा न हो। अपने लक्षणों पर सोचने से कष्ट अधिक हो। (ऑक्जेलिक एसिड)। मानसिक उदासी : चक्कर (ग्रैनेटम)।

सिर—चक्कर। सिर के आसपास भरापन, गरमी। नशा जैसा मालूम हो। दृष्टिहीनता के साथ। जबड़ों की हड्डी और पेशी में दर्द। मुँह और नाक सूखी।

आँखें—दृष्टि लोप होना, पुतली सिकुड़ी हुई। प्रकाश से सुकड़ापन आये। आँखों की स्नायु और पेशियों का पक्षाघात।

आमाशय—शूल के साथ डकार, एपिगैस्ट्रियम शक्तिहीन।

गुदा—लुआबदार मल, गुदा में से सरक जाये, लौंदेदार।

मूत्र—पेशाब के बारे में सोचते ही पेशाब लगे। अधिक पेशाब। गुर्दों में दर्द। (बरबेरिस०)।

पुरुष—मैथुन की न तो इच्छा हो और न शक्ति ही रहे। अण्ड में, शुक्ररज्जु भर में और जाँघों के नीचे तक पीड़ा।

अङ्ग—अन्तःप्रकोष्ठिका-स्नायु मार्ग में दर्द। मेरुदण्ड के आसपास सुन्नपन। लड़खड़ाती चाल। तालमेल का प्रभाव। घुटने की चपनी की परावर्तित क्रिया का लोप होना। दर्द तेजी से शुरू हो और गायब हो जाये, मगर पेशियों में दर्दीलापन और तनाव रहे।

नींद—बेचैन, झगड़े के स्वप्न देखना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : लक्षणों पर सोचना (किसी एक विशेष विषय में उन्माद की प्रवृत्ति)। एक दिन का नागा देकर। **घटना :** सोने के बाद।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ऐस्ट्रॅगै०, लेथाइर०, आक्जे०, बैराइटा० (लोको के पौधे में बैराइटा अधिक मात्रा में होती है) लोलियम०।

मात्रा—३ शक्ति और ऊँची शक्तियाँ।

पियोनिया (**Paeonia**)

(पियोनी)

मलाशय और गुदा सम्बन्धी लक्षण महत्त्वपूर्ण हैं। शरीर के निचले अंगों, टाँगों, पैरों की अँगुलियों पर, स्तनों और मलाशय पर पुराने घाव।

सिर—चेहरे पर खून का झपटना। स्नायविकता। हिलने के समय चक्कर आना : आँखों में जलन और कानों में टनटनाहट।

गुदा—गुदा में कटन; खुजली, गुदा के मुँह पर सूजन। मल त्याग के बाद में जलन, फिर आन्तरिक शीत। गुदा में जलन और आन्तरिक शीत के साथ गुदा में नासूर और दस्त। दर्दयुक्त वाला घाव, विटप स्थान पर घृणित पसीजन। **बवासीर, मलद्वार की दरारें, गुदा और विटप का घाव, बैंगनी रंग, खुरण्डदार।** मलत्याग काल के साथ और बाद में कष्टदायक दर्द। एकाएक लेई जैसा दस्त, उदर में गर्शी ऐसी संवेदना है।

सीना—बाँयीं तरफ सीने में गड़न दर्द। सीने में गरमी। आगे से पीछे तक, दिल से होकर धीमी चिलकन।

अंग—कलाई और अँगुलियों में दर्द, घुटनों और पैर की अँगुलियों में दर्द।

नींद—भयानक स्वप्न, रात्रि भय।

चर्म—स्पर्शकातर; पीड़ामय। गुदास्थि के नीचे, त्रिकास्थि के चारों तरफ घाव, नसों का फूलना। किसी स्थान के घाव, दाब के कारण, बिस्तर घाव इत्यादि। खुजली, जलन, डंक मारने जैसा दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ग्लूकोमा-ग्राउण्ड आइवी-(मलाशयिक लक्षण)। हैमामे०, सिलि०; इस्क्युलस० रैटानहिया (गुदा में अधिक संकुचन, मल बहुत जोर देने से निकले)।

क्रियानाशक—रैटानहिया; एलो०।

मात्रा—३ शक्ति।

पैलेडियम (Palladium)

(दी मेटल)

एक डिम्बाशयिक औषधि। जीर्ण डिम्बाशय प्रदाह के मिश्रित लक्षण उत्पन्न करती है। जहाँ उस ग्रन्थि का आन्तर-विधान पूर्ण रूप से नष्ट नहीं हो जाता, वहाँ लाभदायक है। मस्तिष्क और चर्म पर भी काम करती है। चालक स्नायु की दुर्बलता, परिश्रम से जी चुराये।

मन—रोआँसा भाव। अनुमोदन की चाह। गर्व, आसानी से चिढ़ जाय। कड़ी भाषा का प्रयोग करे। संगत में प्रसन्न रहे, बाद में बहुत थकावट और पीड़ा अधिक हो जाये।

सिर—आगे-पीछे हिलाता जान पड़े। कंधों में दर्द के साथ कनपटी और पार्श्व, कपालास्थि का स्नायुशूल। एक कान से दूसरे कान तक चाँद से होकर दर्द, शाम के मनोरंजन के बाद अधिक हो। चिड़चिड़ापन और खट्टी डकार के साथ। रक्तहीन चेहरा।

उदर—नाभि से पेड़ू तक गोली लगने जैसा दर्द। ऐसा लगे कि आँतें काट डाली गई हैं। आँतों का फँसने जैसा संवेदन। उदर का दर्द, दाहिने पुट्ठे में सूजन। अफरा।

स्त्री—गर्भाशय का बाहर निकलना और उलट जाना। मंद वस्तिगह्वरीय अन्त्रावरक झिल्ली प्रदाह, दाहिनी तरफ के दर्द और पीठ दर्द के साथ अधिक मासिक धर्म। गर्भाशय में कटन दर्द, मलत्याग होने के बाद कम। दाहिने डिम्बाशय के क्षेत्र में दर्द और सूजन। चिलकन या जलन दर्द वस्तिगह्वर में और निर्बलता, मालिश से कम हो। नाभि से स्तनों तक दर्द और चिलकन। चमकदार प्रदर स्राव। दूध पिलाने के काल में मासिक धर्म। दाहिने स्तन में घुण्डी के पास चिलकन। यह औषधि उस प्रसव बाधा में सांकेतित है जिसका आरम्भ दाहिने डिम्बाशय से हुआ हो। गर्भाशय का बाहर निकलना और उलट जाना, मन्द वस्तिगह्वरीय अंत्रावरक झिल्ली प्रदाह और उसके साथ के अन्य लक्षण केवल आधारित मात्र हैं। एफ० एग्विलर, एम० डी०)।

अंग—अति खाज। पिठासे में थकावट की संवेदना। अङ्ग में उड़ता हुआ वात दर्द। हाथ-पैर में भारीपन और थकावट। पैर की अँगुलियों से कटि तक झपटन दर्द। दाहिने कन्धे में वात दर्द, दाहिनी कटि में आन्त्रिक स्नायुशूल।

सम्बन्ध—पूरक—प्लैटि०।

तुलना कीजिए : आर्जे०, हेलोनि, लिलि०; एपिस०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

पैराफिन (Paraffin)

(प्युरिफाइड पैराफिन)

गर्भाशय रोगों में मूल्यवान् है। खासकर कब्ज में लाभदायक है। चाकू लगने की तरह दर्द। दर्द एक स्थान से दूसरे तक जाये और फिर उसी स्थान में वापस आये, यही क्रम जारी रहे। आमाशय का दर्द, गले और रीढ़ में जाये और फिर आमाशय में लौट आये, यही क्रम चलता रहे।

सिर—सिर और चेहरा का बायाँ भाग अधिक रोगग्रस्त हो, डंक मारने और ऐंठन वाला दर्द। ऐसा दर्द जैसे सिर की चाँद की बाँयीं तरफ कील ठोंकी जा रही हो। बाँयें कान में ऐंठन।

आँख--निगाह धुँधली, आँखों के आगे काले धब्बे दिखाई दें। पलक लाल। ऐसा लगे कि आँखों पर चर्बी जमा हो गई है।

मुँह—दाँतों से निचले जबड़े तक फटन, ऐंठन दर्द। लार से भरा हुआ, चमकीला, कड़वा स्वाद।

आमाशय—सारे समय भूख लगी रहे। आमाशय के आरपार दर्द। आमाशय का दर्द और गले व रीढ़ का दर्द। बारी-बारी सीने तक बढ़े, डकार के साथ। बाँयीं तरफ के आमाशयिक प्रदेश में स्थानीय दर्द, मानों वह भाग ऐंठा जा रहा हो। आमाशय दर्द के साथ धड़कन।

उदर—निचले भाग में दर्द जो जननेन्द्रिय, मलाशय, त्रिकास्थि तक बढ़े; बैठने से कम हो।

मलाशय—मलत्याग की बार-बार इच्छा। बच्चों में कठोर कब्ज। (ऐलुमिना; निक्टैन्थेस०)। बवासीर और लगातर असफल मलत्याग की इच्छा के साथ पुराना कब्ज।

स्त्री—मासिक धर्म बहुत देर में, रज काला; अधिक मात्रा में। दूध जैसा प्रदर। स्तन-घुण्डी में जलन दर्द करे, जैसे भीतर पकी हो। कामाद्रि में कोंचन दर्द। योनि घुण्डी में जलन दर्द के साथ बहुत गरम पेशाब।

अंग—ऊपर चढ़ते समय रीढ़ में दर्द जो पुट्ठों के क्षेत्र में और दोनों तरफ से कमर तक बढ़े। सभी जोड़ों में बिजली के झटके जैसा लगे। पिण्डलियों में ऐंठन दर्द जो पैर की अँगुलियों तक बढ़े, जोड़ों में, टखनों और तलवों में फटन के साथ पैरों की सूजन।

चर्म—असह्य जलन, चर्बीलापन और जहरीलापन। कीटाणुरहित जल से धोकर सुखाइए और पैराफिन को पिचकारी से छिड़किये और पतली रुई से ढँक दीजिए। पाला मारने में भी लाभदायक है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : नैफ्थैलिन, पेट्रोलि०, क्रियोजो०, इयुपिऑन।
मात्रा—निचले विचूर्ण और ३० शक्ति।

पैरिरा ब्रावा-कॉन्ड्रोडेन्ड्रॉन टोमेन्टोसम
(Pareira Brava-Chondrodendron Tomentosum)
(वर्जिन वाइन)

मूत्र-यन्त्र के लक्षण अति विशिष्ट हैं। गुर्दाशूल, मूत्राशय ग्रन्थि (प्रोस्टेट) रोग और मूत्राशय प्रदाह में लाभदायक है। ऐसा लगे कि मूत्राशय फैला हुआ है, दर्द के साथ। दर्द जाँघों के नीचे तक रुक जाये।

मूत्र—काला, खूनी, गाढ़ा श्लैष्मिक मूत्र। लगातार वेग, बहुत काँखना पड़े, काँखते समय जाँघों के नीचे तक दर्द हो। पेशाब तभी निकल सके जब घुटनों के बल होकर सिर को जमीन पर गड़ा दे। मूत्राशय में तनाव की संवेदना और अगले जंघा क्षेत्र में स्नायुशूल (स्टैफि०)। पेशाब करने के बाद बूँद-बूँद चूना। (सेलेनि०)। लिंगमुण्ड में तीव्र पीड़ा। मूत्र-मार्ग में खुजली, मूत्र-मार्ग में प्रदाह, मूत्र-ग्रन्थि रोग के साथ। मूत्र-मार्ग की सूजन, प्रायः झिल्की से बन्द हो जाये।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : पैरिटेरिया (गुर्दों की पथरी, भयानक स्वप्न, रोगी जीवित ही गाड़ दिये जाने का स्वप्न देखे)। चिमाफिला (मूत्राशय प्रदाह के बाद जीर्ण प्रदाहिक रक्ताधिक्य, तीव्र मूत्र ग्रन्थि प्रदाह, बैठने पर विटप प्रदेश में गोला जैसा संवेदन)।

फैबियाना पिची देखिये (मूत्रकृच्छ्र; प्रमेह के बाद की बाधायें, पथरी; मूत्रातिसार), इयुवा०, हाइड्रैन्जिया, बर्बे, ओसिमम, हेडियोमा।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

पेरिस क्वाड्रिफोलिया (Paris Quadrifolia)
(वन-बेरी)

सिर के लक्षण स्पष्ट रूप से पाये जाते हैं और उनकी पुष्टि भी हुई है। बढ़ जाने जैसा संवेदन और उसी के कारण तनाव। शरीर की दाहिनी तरफ ठण्डा; बाँयीं तरफ का शरीर गरम। नजले की तकलीफ, नाक की जड़ में कसापन। स्पर्श संवेदन की बाधायें।

मन—काल्पनिक दुर्गन्ध संवेदन। बहुत बड़ा जान पड़े। बकवादीपन व्यर्थ बड़बड़ाना, मग्न।

सिर—ऐसा लगे कि सिर की खाल सिकुड़ गई है और खोपड़ी छील दी गई है, चाँद स्पर्शकातर, बालों को ब्रश न कर सके। टीस जैसे कोई डोरी आँखों से सिर के पिछले भाग तक खींची जा रही हो। बोझ संवेदन के साथ पिछले भाग में दर्द। सिर बहुत बड़ा जान पड़े जैसे बढ़ गया हो। खाल कोमल सिर की बाँयीं तरफ सुन्न होना।

आँखें—बरौनी के रोग। आँखें भारी जान पड़ें; जैसे बाहर को निकली हों; ढेलों में से होकर डोरी से कसी जैसी संवेदना। बढ़ी लगें, जैसे पलक उनको ढँकने के लिए काफी न हों।

चेहरा—स्नायुशूल, बायीं तरफ के जबड़े की हड्डी में गरम चिलकन, बहुत दर्द। ऊर्ध्व हनु-कोटर के सूजन में लाभ हुआ है जहाँ साथ में आँखों के लक्षण भी उपस्थित हों।

मुँह—जागने के समय जबान सूखी, सफेद मैल, बिना प्यास, साथ में कड़वा स्वाद या स्वाद की क्षमता घट जाये।

साँस-यन्त्र—नाक की जड़ में कसाव और भरी जैसी जान पड़े। सामयिक दर्द-हीन स्वरभेद। खाँसी जैसे गल-कोष मे गन्धक का धुँआ घुस गया हो। लगातार खखारना, स्वर-यन्त्र और गल कोष में चिमड़ा हरा श्लेष्मा।

अंग—गरदन की जड़ में और कंधों के आर-पार बोझ और थकावट। स्नायुशूल जो बांयी तरफ की पसलियों के बीच के भाग से शुरू होकर बाँयीं बाँह में जाये। बाँह कड़ी हो जाय और अँगुलियाँ सिकुड़ जायें। गुदास्थि का स्नायुशूल, टपकन, गड़न, बैठन पर। अक्सर अँगुलियाँ सुन्न हो जायें। ऊपरी अंगों का सुन्न होना। सभी चीज खुरदरी जान पड़ें।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : पेस्टिनाका—पार्सनिप—(बकवादीपन; शराबी की बकवास, दृष्टि भ्रम; दूध असह्य; भोजन के रूप में जड़ का उपयोग होता है, क्षय रोगियों और गुर्दों की पथरी रोग में इसको पानी में पकाकर, या उसका रस निकालकर या सलाद की तरह कच्चा ही देते हैं)। सिलि०, कल्के०; पल्स०, रसटॉ०।

विरुद्ध— फेरम फॉस०।

क्रियानाशक : कॉफी०।

मात्रा—३ शक्ति।

पार्थेनियम-एस्कोबा ऐमार्गो
(Parthenium-Escoba Amargo)
(बिटर-ब्रूम)

क्यूबा में ज्वर की चिकित्सा के लिए व्यवहार की जाती है, खासकर मलेरिया के लिए। स्तनों से दूध का अधिक निकलना। मासिक-धर्म का रुक जाना और दुर्बलता। हृत्पेशी विकारजनित श्वास। क्विनाइन के बाद।

सिर—टीस, नाक तक बढ़े; सूजा मालूम पड़े। आगे के उभरे भाग में दर्द। आँखें भारी, ढेले में टीस। कानों में टनटनाहट। नाक की जड़ पर दर्द, सूखी मालूम दें। दाँतों में टीस। दाँत नुकीले मालूम हों। बहुत लम्बे, दृष्टि क्षीण। कानों में टनटनाहट और दर्द।

उदर—बाँयीं कोख में दर्द। झिल्ली का रोग।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सोने के बाद, एकाएक हिलना। घटना : उठने के बाद और इधर-उधर टहलने पर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : चाइना; सियानोथ०, हेलियांथस।

— :o: —

पैसिफ्लोरा इनकारनेटा (Passiflora Incarnata)
(पैशन फ्लावर)

एक प्रभावशाली आक्षेपनाशक। कुकुरखाँसी। अफीम खाने की आदत तोड़ने के लिए। शराबी की बकवास। बच्चों का आक्षेप, स्नायुशूल। स्नायु मंडल पर शांतिप्रद, हितकर प्रभाव के लिए। अनिद्रा। प्राकृतिक निद्रा उत्पन्न करती है, कोई मस्तिष्क बाधा नहीं पैदा करती, 'बच्चों के स्नायु रोग', कृमि-ज्वर, निकलने की बाधायें; आक्षेप। धनुष्टंकार। मूर्च्छा वायु, प्रसूतिका आक्षेप। पीड़ाजनक दस्त। तीव्र उन्माद। प्रायः दुर्बल रहना। दमा, १०-३० बूँद, हर १२ मिनट पर, ऐसी कई खुराकें दें। विसर्प रोग पर ऊपर से लगाने के लिए।

सिर—तीव्र दर्द मानो सिर का ऊपरी भाग अलग हो जायगा; आँखें बाहर को ढकेली जान पड़ें।

आमाशय—सीसा ऐसा भारी, खाने के बाद या खाते समय अरुचि, वादी भरना और खट्टी डकारें।

नींद—अशान्त और जागते रहना जो अधिक शिथिलता से हो। खासकर कमजोर बच्चों और बुड्ढों में। बच्चों और बुड्ढों की अनिद्रा जो मानसिक चिन्ता और अति परिश्रम से आयी हो, साथ में विक्षेप की संभावना। रात वाली खाँसी।

मात्रा—मूल अरिष्ट की बड़ी मात्राओं की आवश्यकता होती है, ३० से ६० बूँद, कई बार दोहराना चाहिये।

पॉलिनिया सार्बिलिस (Paullinia Sorbilis)

(गुवाराना)

इसमें कैफीन अधिक अनुपात में होती है, जिसके कारण इसका पुराने सिर दर्द के कुछ प्रकारों में लाभदायक होना अनुमान किया जाता है।

सिर—बुद्धि की उत्तेजना। अधिक चाय या कॉफी के व्यवहार करने वालों का पुराना सिर दर्द। मदिरापान के बाद टपकन के साथ सिर दर्द।

आँतें—मल अधिक, खूनी, चटकीला हरा, छिल्के मिले, गन्धहीन। शिशु हैजा।

चर्म—कनपटी और बाँहों पर दाग पड़ना। जुलपित्ती (डल्का०, एपिस०, क्लोरैल०)।

नींद—बिना रुकनेवाली औंघाई और सिर का भारीपन, खाने के बाद चेहरा भरभराया हो।

मात्रा—बड़ी मात्रा में देना चाहिए, विचूर्ण की १५ से ६० ग्रेन।

पेन्थारम (Penthorum)

(वर्जिनिया स्टोनक्रॉप)

नाक में कच्चापन और तर संवेदन के साथ जुकाम की एक औषधि। गला कच्चा मालूम दे। उत्तेजना के साथ श्लैष्मिक झिल्ली की जीर्ण बाधायें। नाक के पिछले भाग का जीर्ण नजला, जीर्ण गलकोष प्रदाह श्लैष्मिक झिल्ली बैंगनी और ढीली। नाक छिद्र का पिछला भाग तर और कच्चा मालूम हो, नाक और कान भरा लगे। स्वरभेद। आवाज भारी, स्वररज्जु ढीली। श्लैष्मिक झिल्ली स्राव की अधिकता। गुदा की खाज और मलाशय में जलन। गलकोष की छत में पीड़ा और कण्ठकर्णी नली रोगग्रस्त।

नाक—लगातार तर रहे, जो कितना भी छिनकने से कम न हो। स्राव गाढ़ा, मवाद की तरह, खून की लकीरोंदार। युवाकालीन नासिका-पश्चात भाग का नजला।

मात्रा—बहुत तेजी से काम नहीं करती और जीर्ण रोगी के लिए लाभदायक है, इसका व्यवहार कुछ दिनों तक करना चाहिए। निचली शक्तियाँ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : पेन्थोरम अक्सर पल्सेटिला, सैंगुइनेरिया, हाइड्रै० के बाद अच्छा काम करती है।

पर्टुसिन (Pertusin)

(कॉकलुचिन)

यह औषधि कुकुरखाँसी के कीटाणु के चमकदार और लच्छेदार श्लेष्मा से बनाई जाती है। कुकुर-खाँसी और दूसरी आक्षेपिक खाँसियों की चिकित्सा के लिए इसका परिचय जॉन एच क्लार्क ने कराया।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ड्रोसेरा; कोरैलियम०, क्युप्रम, नैफ्थैलि०, मेफाइटिन, पैसिफ्लोरा०, कॉक्कस कैक्टाई, मैग्नेशिया फॉस०।

मात्रा—३० शक्ति।

पेट्रोलियम (Petroleum)

(क्रूड रॉक-आयल)

कण्ठमालीय विकार, खासकर गहरे रङ्ग वालों में जिनको श्लैष्मिक झिल्ली की प्रादाहिक अवस्थायें हुआ करती हैं, आमाशय की अम्लता और चर्म पर दाने निकलना।

अति स्पष्ट चर्म लक्षण, पसीने और तेल की ग्रंथियों पर काम करती है। जाड़े के दिनों में रोग बढ़ता है। मोटर गाड़ी में, घोड़ा गाड़ी में और जहाज में चढ़ने से रोग पैदा होना। बहुत दिनों तक ठहरनेवाले आमाशयिक और फुफ्फुस रोग। जीर्ण दस्त। मानसिक अवस्थाओं, भय, क्रोध इत्यादि के बाद आये जीर्ण रोग, युवा कन्याओं की रक्तहीनता, आमाशय घाव के साथ या बिना घाव के।

मन—मानसिक उत्तेजना से रोग का बढ़ना। सड़क में रास्ता भूल जाय। अपने को दो व्यक्ति समझे या ऐसा जान पड़े कि कोई दूसरा व्यक्ति उसके बगल में लेटा है। **मृत्यु को निकट समझे और अपने कामों को जल्द निपटाने की चिन्ता करे।** चिड़चिड़ा, आसानी से नाराज हो जाये, सभी चीजों पर चिढ़ना। **उदास; निगाह के धुँधलेपन के साथ।**

सिर—**स्पर्शकातर, जैसे ठण्ढी हवा उस पार बह रही है।** सुन्न मालूम दे, जैसे लकड़ी का बना हो, **पिछला भाग भारी जैसा सीसे का हो (ओपियम)।** उठने पर चक्कर आयें, कनपटी में मालूम हो जैसे नशे में हो, या समुद्री यात्रा कर रहा हो। **सिर की खाल पर दाने,** पिछले भाग में और कानों के आस-पास अधिक। सिर की खाल छूने से दर्द करे, बाद में सुन्न होना। सिर दर्द, आराम पाने के लिए कनपटी को पकड़े, खाँसते समय हिलने से दर्द पैदा हो। ३० शक्ति का व्यवहार करें।

आँखें—बरौनी का झड़ना। निगाह धुँधली; दूर की चीज साफ दिखाई देना, महीन अक्षर बिना चश्मे के न पढ़ सके; अश्रु-थैलियों का पकना। किनारों का प्रदाह। किनारों पर दरारें। आँखों के चारों तरफ का चर्म सूखा और भूसीदार।

कान—आवाज सहन न हो, खासकर जब कई लोग एक साथ बोलते हों। अकौता, खाल उधड़ना इत्यादि, कानों के भीतर और पीछे की तरफ, तीव्र खाज के साथ। रोगग्रस्त भाग छूने से दर्द करे। कानों के छेद में दरारें। सूखा जुकाम, बहरापन और आवाजों के साथ। कानों में टपकन और पड़पड़ाहटें। जीर्ण कंठकर्णी नली का नजला। कम सुनाई देना।

नाक—नथने घाव युक्त, चिपटे हुए, जलें, सिरा खुजलाये। नकसीर, पीनस, खुरण्ड और मवादी, घृणित स्राव के साथ।

चेहरा—सूखा, सिकुड़ा लगे; जैसे अण्डे की सफेदी से ढँका हो।

आमाशय—गला जले, गरम, तीव्र, खट्टी डकार। तनाव। बहुत खालीपन मालूम दे। चर्बीले भोजन से घृणा, मांस, गोभी खाने से कष्ट बढ़े। मल त्यागने के बाद ही भूख लगे। मुँह में पानी भरने के साथ मिचली। खाली पेट दर्द करे; बराबर खाते रहने से कम रहे (एनाका०, सिपिया)। प्रबल भूख। रात में खाने के लिए उठना आवश्य (सोरिनम)। लहसुन की दुर्गन्ध।

उदर—केवल दिन में ही दस्त हो, पानी-सा पतला पाखाना, ढेर का ढेर आ पड़े और गुदा में खाज हो। गोभी खाने के बाद; पेट में खालीपन के साथ।

पुरुष—विटप प्रदेश पर दाद की तरह दाने। मूत्र-ग्रंथि सूजी और फूली हुई। मूत्रमार्ग में खुजली।

स्त्री—मासिक धर्म से पहले सिर में थरथराहट (क्रियोजोट०) प्रदर अधिक, सांडलाल। (एल्यूमिना; बोरे०; बोवि०; कल्के फॉस)। जननेन्द्रिय दर्द करे और तर। तरी का संवेदन (युपेटो० पर्फो०)। स्तन घुण्डी पर खुजली वाली चोकरदार मैल।

सांस-यन्त्र—आवाज भारी (कार्बो०; कॉस्टि; फॉस०)। रात में सूखी खाँसी और सीने पर दाब। खाली पेट रहने से सिर दर्द पैदा हो। सीने पर दाब; ठण्डक से बढ़े। रात में सूखी खाँसी, सीने की गहराई से उठे। काली खाँसी और स्वर-यन्त्र का झिल्ली प्रदाह।

दिल—ठण्डापन। (कार्बो एनि०; नैट्र० म्यूरि०)। उबाल, गरमी और धड़कन के साथ मूर्च्छा।

पीठ—गरदन की जड़ में दर्द; कड़ापन और दर्द वेदना। पिठासे में कमजोरी। गुदास्थि वेदना।

अंग—जीर्ण मोच। काँखों में घृणित पसीना। घुटने कड़े। अँगुलियों के सिरे खुरदरे चिटके, दरारें, हर जाड़े के दिनों में। घुटने में फुलस जाने जैसा संवेदन। जोड़ों का चुरचुराना।

चर्म—रात में खुजली। बेवाई फटना। तर, खुजली, जलन। बिस्तर घाव। चर्म सूखा, सिकुड़ना, अति कोमल, खुरदरा और चिटकी खाल की तरह। दर्द। जरा-सा छिलने से पक जाये। (हीपर०)। खाल उधड़ना; हाथों पर विचर्चिका; मोटे हरियालीदार खुरण्ड, जलन और खाज; लाला, कच्चापन, दरारों में से खून बहे। अकौता। चिटके घाव, जाड़े में अधिक कष्ट हो।

ज्वर—शीत के बाद पसीना। गरम लपटें, खासकर चेहरे और सिर पर, रात में अधिक। पैर और आँख में पसीना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तरी, तूफान के पहले और तूफान में, मोटर में सवारी करने से; मन्द हरकत, जाड़े में, खाने से, मानसिक अवस्थाओं से।

घटना : गरम हवा, सिर ऊँचा करके लेटने से, सूखा मौसम।

सम्बन्ध तुलना कीजिए : कार्बो०, ग्रेफा०, सल्फर, फॉस०।

पूरक : सीपिया।

क्रियानाशक : नक्स, काकुल०।

मात्रा—३ से ३० और ऊँची शक्तियाँ। स्थूल मात्रायें अक्सर अच्छी होती हैं।

पेट्रोसेलिनम (Petroselinum)

(पार्सले)

इस औषधि का मुख्य संकेत इसके मूत्र सम्बन्धी लक्षणों से मिलता है। बहुत खुजली के साथ बवासीर।

मूत्र—विटप प्रदेश से सारे मूत्रमार्ग में जलन, टपकन, एकाएक पेशाब लगना, घड़ी घड़ी कामोत्तेजक गुदगुदी नौ गह्वर में। एकाएक वेग, सूजाक, पेशाब का वेग रोक न सके, खाज, मूत्र-मार्ग की गहराई में; दूध जैसा स्राव।

आमाशय—प्यास और भूख; मगर खाने या पीने की इच्छा का लोप हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एपिओल—पार्सले का कार्यकारी तत्व—(कष्टदायक मासिक धर्म), कैन्थे०; सार्सा०; कैनेबि०; मर्क०।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

फैसियोलस (Phaseolus)

(ड्वार्फ बीन)

हृदय-लक्षण अति स्पष्ट । मधुमेह ।

सिर—मस्तिष्क के भारीपन के कारण विशेष तौर पर माथे में या घेरों में टीस, हरकत से या मानसिक परिश्रम से कष्ट बढ़े ।

आँखें—पुतली फैली हुई, प्रकाश से प्रभावित न हो । ढेले छूने से दर्द करें ।

सीना—सांस धीमा और आहें भरना । नाड़ी तेज । धड़कन । हृदय के आसपास रोगग्रस्त जैसा, नाड़ी दुर्बल । दाहिनी तरफ की पसलियाँ दर्द करें । फुफ्फुसावरण या हृदयावरण में शोथ, वेदनापूर्ण ।

मूत्र—मधुमेह ।

दिल—भयानक धड़कन और मृत्यु भय ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : क्रेटेगस, लैके० ।

मात्रा—६ और ऊँची शक्ति । और मधुमेह के लिए छिलकों को पानी में उबालकर, मगर तीव्र सिर दर्द से सचेत रहिये ।

फेलाण्ड्रियम (Phellandrium)

(वाटर ड्रापवर्ट)

सांस यन्त्र के लक्षण बहुत आवश्यक हैं और चिकित्सा में उनकी बार-बार पुष्टि की गई है । क्षयरोग, वायुनलिका प्रदाह और वायुस्फीति रोग के घृणित बलगम और खाँसी के लिए एक उत्तम औषधि । तपेदिक, प्रायः फुफ्फुस के बिचले गोले पर आक्रमण । सभी चीजें मीठी लगें । खून थूकना, क्षय सम्बन्धी और अधिक दस्त ।

सिर—चाँद पर वजन, कनपटी में और आँखों के ऊपर टीस तथा जलन । चाँद में कुचले जाने जैसा संवेदन । चक्कर, लेटने पर चक्कर आये ।

आँखें—पलकों का स्नायुशूल, आँखों के प्रयोग की चेष्टा से अधिक हो । आँखों में जलन । जल-प्रवाह । प्रकाश सहन न हो । सिर दर्द आँखों में जाने वाले स्नायु से सम्बन्धित हो ।

स्त्री—दुग्ध-नलिकाओं में दर्द; जो दूध पिलाने के काल में असह्य हो । स्तन-घुण्डी में दर्द ।

सीना—दाहिनी छाती के आरपार, वक्षास्थि के पास गड़न के साथ दर्द, जो पीठ में कंधे के पास तक बढ़े । साँस कष्ट और लगातार खाँसी, भोर में अधिक । घृणित बलगम के साथ खाँसी, उठकर बैठ जाना आवश्यक, आवाज भारी ।

ज्वर—क्षय ज्वर और अधिक कमजोरी लाने वाला पसीना, सविराम, बाँहों में दर्द के साथ। अम्ल पदार्थ की इच्छा।

अंग—टहलने से थकावट।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कोनि०, फाइटो०, साइलीशिया, एण्टिमो० आयोडे०, मायोमोटिस आर्वेन्सिस।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति। क्षय रोग में ६ शक्ति से कम न दें।

फॉस्फोरिकम एसिडम (Phosphoricum Acid.)
(फॉस्फोरिक एसिडम)

एसिडों में जो आम कमजोरी पायी जाती है, वह इस अम्ल में सर्वाधिक पाई जाती है। पहले मानसिक दौर्बल्य आता है और बाद में शारीरिक। फॉसफोरिक एसिडम का उत्तम कार्यक्षेत्र उन युवा लोगों में पाया जाता है जो तेजी से बढ़ते हैं और जिन पर मानसिक या शारीरिक परिश्रम का भार पड़ा है। जब कभी शरीर किसी तीव्र रोग का शिकार हुआ हो। असाधारण शोकाक्रमण। जीवन-रसों का निकल जाना; सभी अवस्थाओं में हम इस औषधि का व्यवहार करते हैं। मुँह में अधिक पानी भरा रहना या गला जलना, वादी भरना, दस्त, मूत्रमेह, वालास्थि विकृति और अस्थि आवरण सम्बन्धी प्रदाह। किसी अंग के कटवाने के बाद ठूँठ भाग का स्नायुशूल। आंत्रिक ज्वर में रक्तस्राव। कर्कट की पीड़ा घटाने के लिए लाभदायक है।

मन—बुझा हुआ। स्मरणशक्ति मन्द। (एनाका०)। उदासीन, लापरवाह। चित्त न जमा सके, सही शब्द भूल जाये। समझना कठिन। शोक या दूसरे मानसिक आक्रमण का बुरा असर। प्रलापक सन्निपात, घोर बुद्धिमांद्य के साथ। निराश।

सिर—भारी, व्यग्र। ऐसा दर्द जैसे दोनों कनपटियाँ दबाकर कुचल दी गई हैं। हिलाने से या आवाज से अधिक हो। कुचल जाने जैसा सिर दर्द। चाँद पर दाब। समय से पहले जवानी ही में बाल सफेद हो जायें; झड़ें। मैथुन के बाद धीमा सिर दर्द, आँखों पर जोर देने के बाद भी (नैट्र० म्यूर०)। शाम के लगभग खड़े होने या टहलने से आये। बाल झड़ें, समय से पहले सफेद हों।

आँखें—आँखों की चारों तरफ नीले चक्र। पलक सूजे हुए; ठंडे। पुतली फैली हुई। चमकीली। सूरज की रोशनी से बचना चाहे। इन्द्रधनुष के रंग दिखाई दें। बहुत बड़ी मालूम हों। निगाह का धुँधलापन हस्तमैथुन वालों में। दृष्टि-स्नायु की

मंदता। दर्द, मानो दोनों ढेले एक दूसरे के पास दबा कर सिर के भीतर ठेले जा रहे हों।

कान—गरज; कम सुनाई देने के साथ। आवाज सहन न हो।

नाक——खून बहना। अँगुली दिया करे। खुजली।

मुँह—होंठ सूजे, चिटके। मसूढ़ों से खून बहे; पीछे हटे हुए। जबान सूजी हुई; सूखी, गाढ़े, झागदार श्लेष्मा के साथ। दाँत ठंडे लगें। रात में बिना जाने दाँतों से जबान काट ले।

चेहरा—पीला मटियाला; ऐसा तनाव जैसे अण्डे की सफेदी पोतकर सुखा दिया गया हो। चेहरे की तरफ ठण्डा।

आमाशय—रसदार चीजों की इच्छा अधिक। खट्टी डकार। मिचली। खट्टी चीजें खाने या पीने से रोग उत्पन्न हो। खाने के बाद औंघाई के साथ आमाशय में बोझ जैसी दाब (फेल टौरी०) ठंडे दूध की प्यास।

उदर—तनाव और आँतों में उबाल जैसा संवेदन। तिल्ली बढ़ी हुई। (सिया० नोथ०) नाभि प्रदेश में टीस। तेज गड़गड़ाहट।

मल—दस्त, सफेद, अनैच्छिक, दर्दहीन, अधिक वायु के साथ, कोई खास शिथिलता न हो। दुर्बल, कोमल, कमजोर हड्डियों वाले बच्चों का अतिसार।

मूत्र—अक्सर अधिक, पानी जैसा, दूधिया सफेद, मूत्रमेह। पेशाब के पहले चिन्ता और बाद में जलन। रात में बार-बार पेशाब होना। पेशाब में फॉस्फोरस की मात्रा अधिक होना।

पुरुष—रात में और मलत्यागकाल में वीर्य स्खलन। शुक्राशय प्रदाह। (ऑक्जैलि० एसिड०)। काम शक्ति कम, अण्ड कोमल और सूजे हुए। आलिंगन के समय जननेन्द्रिय ढीली रहे। (नक्स०)। मूत्राशयिक ग्रन्थि रस-स्खलन, मुलायम मल के समय भी। अण्डकोष का अकौता। लिंग के पर्दे का शोथ, और लिंग मुण्ड की सूजन। लिंग के पर्दे पर दाद। आतशकी मस्से। (थूजा)

स्त्री—मासिक धर्म बहुत पहले और मात्रा में अधिक, जिगर दर्द के साथ। खुजली, मासिकधर्म के बाद पीहा प्रदर। दूध कम उतरे, दूध पिलाने से स्वास्थ्य बिगड़े।

श्वास-यन्त्र—मानसिक धुँधलेपन के बाद सीने के रोग। आवाज फटी हुई। सीने में गुदगुदी से सूखी खाँसी। नमकीन बलगम। साँस कठिन। बात करने से सीने में कमजोरी आए। (स्टैनम०) वक्षास्थि के पीछे दाब, जिससे निकलना कठिन हो जाये।

दिल—धड़कन, उन बच्चों में जो बहुत तेजी से बढ़ रहे हों, शोक के बाद, हस्तमैथुन के बाद उपद्रव। नाड़ी क्रमहीन, सविराम।

पीठ—स्कंधास्थि के बीच में छेद होने जैसा दर्द। पीठ और अंगों में दर्द जैसे चोट लगी हो।

अंग—कमजोर, अंग फटने जैसा दर्द, हड्डियों और अस्थि परिवेष्ट में भी। ऊपरी बाँह और कलाई में ऐंठन। घोर दौर्बल्य। रात में दर्द, जैसे हड्डियाँ छीली गई हों। आसानी से ठोकर खाये और गलत कदम बढ़े। अँगुलियों के बीच में या जोड़ों की तहों में खुजली।

चर्म—रस दाने, मुहासे, रसफुड़िया। अति घृणित, मवादी घाव। जलन वाले लाल दाने। कई स्थानों पर सुरसुरी। बालों का झड़ना। (नैट्र० म्यूर०, सेलेनि०)। ज्वर के साथ फोड़ों की प्रवृत्ति।

नींद—औंघाई। कामोत्तेजक स्वप्न, वीर्य-स्खलन के साथ।

ज्वर—शीत। रात में और सुबह को अधिक पसीना। मन्द ज्वर, बुद्धिमान्द्य और मूर्च्छा के साथ।

घटना-बढ़ना – घटना : गरम जगह रहने से। बढ़ना : जोर पड़ने से, किसी से बात करने से, जीवन रस के निकल जाने से, अधिक मैथुन से। किसी चीज से जिससे रक्त संचार रुके, रोग अधिक हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : इनाथेरा बायेनिस–इवनिंग प्राइम रोज—(स्नायु शिथिलता के साथ चापहीन दस्त। मस्तिष्क में शोथमय गुल्म की आरम्भिक अवस्था। कुकुर-खाँसी और अक्षेपिक दमा) नैक्ट्रैण्डा एमैरे। (पानी-सा दस्त, सूखी जबान, शूल, धँसी आँखों के चारों तरफ, नीले चक्र अशान्त निद्रा)। चायना; नक्स०; पिक्रि० एसिड; लैक्टिक० एसिड; फॉस०।

क्रियानाशक : कॉफिया।

मात्रा—१ शक्ति।

फॉस्फोरस (Phosphorus)

(फॉस्फोरस)

फॉस्फोरस उत्तेजना पैदा करता है, प्रदाह पैदा करता है और श्लैष्मिक झिल्ली को क्षीण करता है। रक्ताम्बु झिल्ली को उत्तेजित करता है और प्रदाह पैदा करता है, मेरुदण्ड और स्नायु में सूजन पैदा करता है जिससे पक्षाघात हो जाता है। हड्डी को नष्ट करता है, खासकर निचले जबड़े और जाँघ की हड्डी को; रक्तकणों को

छिन्न-भिन्न करता है जिससे रक्तवाहिनियों में और सभी तन्तुओं में और यन्त्रों में चर्बी आ जाती है; जिससे रक्त-प्रवाह और रक्तमय कामला रोग हो जाता है।

शारीरिक यन्त्रों में एक विनाशकारी अवस्था उत्पन्न करता है। जिगर की पीली सिकुड़न और जिगर में प्रदाह पैदा करता है। लम्बे, दुबले लोग, तंग सीनेवाले, पतले झलझले चर्मवाले, रसों और धातुओं के अधिक निकल जाने से कमजोर, अधिक स्नायविक, दुर्बल, सूखा शरीर; काम प्रवृत्ति, इन लक्षणों के लोग खासकर फॉस्फोरस के क्रियाक्षेत्र में रहते हैं। बाहरी प्रभाव से शीघ्र उत्तेजना; प्रकाश, आवाज, गन्ध, स्पर्श, आकाशीय विद्युत परिवर्तनों से, बिजली तूफान से शीघ्र प्रभावित हों। लक्षणों का अकस्मात् आक्रमण, अकस्मात् शिथिलता, गर्मी, पसीना, चमकन, दर्द इत्यादि। रक्त में लाल कण अधिक हो जाना। रक्त उत्सर्ग, चर्बीलापन, अंग विशेष का बड़ा हो जाना, अस्थि सड़न, सभी ऐसी अवस्थाएँ हैं जहाँ फॉस्फोरस की आवश्यकता होती है। पेशियों का अप्राकृतिक ढीलापन, स्नायु-प्रदाह। साँस मार्ग का प्रदाह। पक्षाघात के लक्षण। आयोडीन और अधिक नमक खाने का दुष्प्रभाव। बायीं तरफ लेटने से रोगाधिक्य। उपदंश का तृतीय चरण। चर्म पर आक्रमण और स्नायविक दौर्बल्य। शीताद रोग। कृत्रिम वृद्धि पक्षाघात। पैशिक क्रिया भ्रष्ट और जीवन-शक्ति दुर्बल। अस्थि मज्जा प्रदाह। हड्डियों की कमजोरी, चुरचुराना।

मन—भारी; उत्साहहीन। जल्दी चिढ़ जाये। भयभीत, जैसे सभी कोनों से कोई जन्तु रेंगकर बाहर निकल रहा हो। दिव्य ज्ञान की अवस्था। चिहुँक जाने की तीव्र प्रवृत्ति, बाहरी प्रभाव से प्रचण्ड उत्तेजना। स्मरण शक्तिहीनता। पागलों का पक्षाघात। हर्षावेश। अकेले रहने पर मृत्यु भय। मस्तिष्क की थकावट। उन्माद, स्वयं भाव की अति वृद्धि। उत्तेजनीय, सारा शरीर गरम हो जाये। बेचैन, अशान्त। असाधारण उत्तेजना, उदासीन।

सिर—वृद्ध लोगों का चक्कर, उठने पर अधिक। (ब्रायो०)। रीढ़ से गरमी शुरू हो। स्नायुशूल। रोगग्रस्त भाग को गरम रखना आवश्यक। जलन दर्द। सिर का जीर्ण प्रदाह। मस्तिष्क का धुँधलापन; पिछले भाग में ठंडक के साथ। गर्मी के साथ चक्कर। माथे की खाल बहुत कसी मालूम हो। सिर की चमड़ी की खाज, बाल झड़ना, गुच्छों में बाल गिरे।

आँखें—मोतियाबिन्द। ऐसा लगे जैसे आँखों के सामने कोहरा का पर्दा, धूल या कोई दूसरी चीज खिंची हुई हो। आँखों के सामने काली बुन्दकियाँ तैरती मालूम हों। आँखों पर हाथ की छाया डालकर अच्छा दिखाई दे। बिना अधिक प्रयोग के भी आँखें और सिर में थकावट। मोमबत्ती से चारों तरफ हरा चक्र दिखाई दे। (ओसिमियम) अक्षर लाल लगें। चक्षु स्नायु की सिकुड़न। पलकों और आँखों

के आसपास का शोथ। मोती जैसी सफेद पुतली और लम्बी तिर्छी बरौनी। तम्बाकू के दुरुपयोग से प्रायः आंशिक दृष्टिहीनता। (नक्स०)। घेरे की अस्थियों में दर्द। बाहरी पेशियों का आंशिक पक्षाघात। चक्षुकेन्द्र के खिसकने से द्विदृष्टि। मैथुनाधिक्य से आया दृष्टिकष्ट। धुन्ध रोग। चक्षु-नलिकाओं में संवरोधन निर्माण और कोषों की क्षीणता। निगाह के परिवर्तन, जहाँ वृद्ध लोगों को टेढ़ी लकीरें दिखाई दें और दर्द रहे। प्रकाश दिखाई देने के साथ और दृष्टिभ्रम के चक्षुपट के रोग।

कान—ऊँचा सुने, खासकर मनुष्य की बोली। आवाजों में गूँजन। (कॉस्टि०)। आंत्र ज्वर के बाद मन्द सुनाई देना।

नाक—नथनों का पंखों की तरह हिलना। (लाइको०) खून बहना; मासिक धर्म की जगह नकसीर आयें। गंध संवेदना की अति उत्तेजना। (कार्बो० एसिड; नक्स०)। नासिका अस्थि आवरण का प्रदाह। घृणित काल्पनिक गंध। (ऑरम)। जीर्ण जुकाम, थोड़ा, मन्द रक्तस्राव के साथ; रूमाल में हमेशा खून लगा रहे। नासिका अर्बुद, रक्त प्रवाह सरल। (कैल्के०, सैंग्वि०)।

चेहरा—पीला, रागग्रस्त; आँखों के नीचे नीले घेरे। मुर्दे जैसा चेहरा। चेहरे की हड्डियों में फटन दर्द, एक या दोनों गालों पर घेरेदार लाली। निचले जबड़े की हड्डी की सूजन और सड़ना। (ऐम्फिसबीना, हेक्ला लावा)।

मुँह—मसूढ़े सूजे हुए और उनसे खून आसानी से बहे। घाव युक्त। कपड़ा धोने के बाद दाँत दर्द। जबान सूखी, चिकना लाल या सफेद; मोटा मैल न हो। दाँत निकलवाने के बाद लगातार खून बहना। दूध पीते बच्चे के मुँह का छुर-छुराना। गलनली में जलन। मुखगह्वर और गलकोष में सूखापन। अधिक ठंडे पानी की प्यास। गलनली का रुकना।

आमाशय—खाने के बाद जल्दी ही भूख लगे। प्रत्येक भोजन करने के बाद खट्टा स्वाद और खट्टी डकार। खाने के बाद आमाशय से अधिक मात्रा में डकार के साथ वायु निकलना। कौर का कौर अनपचा भोजन निकले। कं; पानी जैसे ही पेट में गरम हो वैसे ही कै द्वारा बाहर निकले। चीरा लगवाने के बाद ही कै। हृदय छिद्र सिकुड़ा लगे, बहुत तंग, खाना निगलते ही ऊपर निकले (ब्रायो०; ऐलुमि०)। पेट में दर्द; ठंडे भोजन से, बरफ से कम हो। आमाशय क्षेत्र छूने, टहलने पर दर्द करे। आमाशय की सूजन, जलन के साथ जो गले और आँतों तक बढ़े। अधिक नमक खाने का दुष्प्रभाव।

उदर—ठंडा लगे (कैप्सि०)। तेज कटन दर्द। पूरे उदर गड्ढे में बहुत कमजोरी का, खालीपन का भाव मालूम हो; कार्यहीन संवेदन। जिगर में रक्ताधिक्य। तीव्र जिगर प्रदाह। चर्बी अधिक जमा हो जाना। (कार्बोनि० टेट्राक्लो-

राइड, आर्से०, क्लोरोफार्म) कामला रोग । क्लोम । विषयक रोग । उदर पर बढ़े, पीले चकत्ते ।

मल—अति दुर्गन्धित मल और वायु-स्खलन । लम्बा, पतला, कड़ा, कुत्तों के मल की तरह । निकालने में कठिनाई । बाईं करवट लेटने में पाखाना लगे । दर्दहीन, अधिक, कमजोरी लाने वाला दस्त । हरा श्लेष्मा, जिसमें साबूदाने की तरह दाने हों । अनैच्छिक, मानो गुदा खुली ही रह गयी । पाखाने के बाद कमजोरी आये । मल त्यागने के समय मलाशय से खून बहे । सफेद कड़ा मल, खूनी बवासीर ।

मूत्र—खून का पेशाब, खासकर ओजोमेह में ('ब्राइट्स' रोग) । (कैन्थे०) । गँदला कत्थई । लाल तलछट ।

पुरुष—शक्तिहीन । प्रबल इच्छा; कामातुर स्वप्न के साथ अनैच्छिक वीर्यपात ।

स्त्री—जरायुप्रदाह । हरित्-पाण्डुरोग । शिराप्रदाह । स्तन फोड़े के बाद नासूरी दरारें । दो मासिक काल के बीच में जरायु से कुछ खून निकले । मासिकधर्म बहुत पहले और थोड़ा; अधिक न हो, लेकिन बहुत देर तक जारी रहे । मासिकधर्म के पहले रुदन करे । स्तनों में गड़न दर्द । प्रदर : अधिक, छिलन वाला, कड़क वाला, मासिकधर्म की जगह । मासिकधर्म का रुक जाना, क्रमभ्रष्ट मासिक-धर्म (ब्रायो०) । स्तनों में मवाद पड़ना · जलन; पानी-सा, घृणित स्राव । प्रचण्ड कामोन्माद । जरायु अर्बुद ।

साँस-यन्त्र—आवाज भारी । शाम को अधिक । स्वरयन्त्र बहुत वेदनापूर्ण । वक्ताओं का गलक्षत; गला बैठना, बोलने पर स्वरयन्त्र में बहुत गुदगुदी । स्वरभेद, शाम को बढ़े; कच्चापन के साथ । स्वरयन्त्र की पीड़ा के कारण बोल न सके । गले में गुदगुदी की वजह से खाँसी, जो ठंडी हवा में, पढ़ने से, हँसने से, बोलने से, गरम कमरे में, ठंडी हवा में जाने से बढ़े । खाँसते समय मीठा स्वाद । कड़ी, सूखी, खाँसी, वेदनापूर्ण खाँसी । फुफ्फुस में रक्ताधिक्य । सीने पर दबाव, जलन के साथ दर्द, गरमी । सीने के आरपार कसाव जैसे बहुत बड़ा बोझ धरा हो । सीने में तेज चिलकन, साँस तेज, दबा हुआ । सीने में बहुत गरमी । फुफ्फुस प्रदाह, दाब के साथ बाईं करवट लेटने से कष्ट बढ़े । खाँसी के साथ सारा शरीर काँपे । बलगम मुर्चेदार खूनी रंग का या मवादी । लम्बे, तेजी से बढ़ने वाले युवक का तपेदिक रोग । ऐसी अवस्था में बहुत नीचे की शक्ति, या बार-बार औषधि न दीजिये, यह शायद तपेदिक से ग्रस्त स्थानों को बहुत तेजी से नष्ट करने का काम करने लगे । बार-बार खून थूकना । (एकालि०) । खाँसते समय गले में दर्द । स्नायविक खाँसी जो तेज गंध से, अजनबी आदमी के आने से शुरू हो, बायीं तरफ लेटने से, अजनबी लोगों के बीच में, ठंडे कमरे में अधिक हो ।

दिल—आकुलता के साथ तीव्र धड़कन, बायीं तरफ लेटने पर अधिक। नाड़ी तेज, छोटी और मुलायम। दिल फैला हुआ, खासकर दाहिना भाग। दिल में गरमी लगना।

पीठ—पीठ में जलन, टूटने जैसा दर्द। स्कंधास्थियों के बीच में गरमी लगना। रीढ़ की कमजोरी।

अंग—हाथ और पैर की अँगुलियों से ऊपर चढ़ने वाला लकवा जो चालक और संवेदक दोनों स्नायु पर आक्रमण करे। कन्धे के जोड़ों में और केहुनी में चिलकन। पैरों में जलन। जरा-सा जोर पड़ने से कमजोरी, और कम्प हो। हाथ से कोई चीज पकड़ी न जाये। जंघास्थि सूजी हुई और सड़े। बाहें और हाथ सुन्न हो जायें। केवल दाहिनी तरफ लेट सके। झिल्ली प्रदाह लकवा के बाद साथ में हाथों और पैरों में सुरसुरी। जोड़ एकाएक बेकार हो जायें।

नींद—बहुत औंघाई, खासकर भोजन करने के बाद। मृत्युवत तन्द्रा। वृद्ध लोगों की औंघाई। आग के स्पष्ट स्वप्न, खून निकलने के। कामातुर स्वप्न। देर में सोये और उठने पर कमजोरी। जरा नींद आना, फिर जाग उठना। कुक्कुर निंदिया।

ज्वर—हर शाम को शीत लगे। रात में घुटने ठंडे। अधिक कमजोरी, बिना प्यास, मगर अप्राकृतिक भूख। क्षय ज्वर, छोटी, तेज नाड़ी। लसीला, रात्रि पसीना। घाव, प्रलापक सन्निपात। अधिक पसीना बहना।

चर्म—छोटे से छोटे घाव में से भी अधिक खून बहे। घाव अच्छे हों और फिर खून बहने लगे। पीला रोग। बड़े घाव के घेरे के बाहर छोटा घाव हो जाना। काली लकीरों के छोटे दाग। काला दाग। धूम्र रोग। शीताद रोग। रक्ताकार छत्रिका और स्फोट।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** स्पर्श मानसिक या शारीरिक परिश्रम, गोधूली में गरम खाना या पानी, मौसम बदलने के समय, गरमी में भीग जाने पर, शाम के समय, बाँयीं तरफ या दर्दवाली करवट लेटने से, तूफान के समय सीढ़ी से ऊपर चढ़ते समय। **घटना :** अन्धेरे में, दाहिनी तरफ लेटने से, ठंढा भोजन, ठंडक से, खुली हवा, ठण्ढे पानी में नहाने से, सोने से।

सम्बन्ध—पूरक : आर्से०, एलियम सिपा, लाइको०, सिलिका०।

सैंग्विसुगा ३०—लीच—(लगातार रक्त प्रवाह, जोंक लगवाने का बुरा असर)। फॉस्फो० पेंटाक्लोराइड, (आँखों और नाक की श्लैष्मिक झिल्ली में बहुत उत्तेजना, गला और सीना दर्दवाला)।

असमाव—कॉस्टि०।

तुलना कीजिये : फॉस्फोरस के बाद ट्यूबरकुलिनम अच्छा काम करती है और उसकी क्रिया में सहायता देती है। फॉस्फोरस हाइड्रोजेनैटस (दाँतों का भुरभुराना, अति संवेदनीयता, गति शक्ति राहित्य); ऐम्फिसबीना (दाहिनी तरफ का जबड़ा सूजा और दर्दीला) थाइमॉल (काम सम्बन्धी स्नायु दौर्बल्य, उत्तेजनीय पेट, कटि प्रदेश के आरपार टीस, मानसिक और शारीरिक परिश्रम से अधिक हो), कैल्के०; चायना; पेन्टिमो०; सिपिया; लाइको०, सल्फ०। फुफ्फुस प्रदाह में न्यूमोकोसिन २२० और न्यूमोटॉक्सिन (क्रैहिस) फ्रेन्कल डिप्लोकॉक्कस लैसिओलैटस से निकला हुआ। फुफ्फुस प्रदाह और पक्षाघात के लक्षण फुफ्फुसावरण में दर्द और क्षुद्रान्त्र तथा अन्धान्त्र क्षेत्र सम्बन्धी दर्द। (कार्टियर)।

क्रियानाशक : फॉस्फोरस के विष को मारने के लिए – टरपेण्टाइना जिसके साथ यह एक बिना घुलनेवाला लोंदा बनाती है। इसके अतिरिक्त पोटास परमैंग०, नक्स०, फॉस०, क्लोरोफार्म और ईथर की मिचली और कै को मारती है।

मात्रा—३ से ३० शक्ति। बहुत नीचे की शक्ति बार-बार नहीं दोहराना चाहिए। खासकर क्षयरोग में। यह यहाँ युथैनेसिया की तरह काम करती है।

फाईसैलिस-सोलेनम वेसिकैरियम (Physalis-Solan. Vesi.)
(एल्केकेंगी-बिटर चेरी)

मूत्र सम्बन्धी लक्षण स्पष्ट रूप से उत्पन्न करती है, जिससे इसका पथरी रोग आदि में प्राचीन काल से व्यवहार की पुष्टि होती है। शरीर में अश्मरी का निर्माण, पेशाब अधिक लाती है। सुस्ती और पैशिक दौर्बल्य।

सिर—चक्कर, मानसिक धुँधलापन, स्मरण शक्ति दौर्बल्य। लगातार बात करने की इच्छा। थरथराहट, दर्द माथे में, आँखों के ऊपर भारीपन। चेहरे का लकवा। मुँह का सूखापन।

अंग—अंग कड़े, संकुचन, ऐंठन। पक्षाघात। रेंगन संवेदन और अधिक मूत्र के साथ मलत्यागकाल में पसीना होना। ज्वर के समय जिगर में दर्द।

ज्वर—खुली हवा में शीत। शाम को हरारत, टहलते समय हर एक झटका सिर में लगे।

साँस-यन्त्र—खाँसी। आवाज फटी, गला स्पर्शकातर, सीने पर दाब जिससे नींद न आवे। सीने में छूरा भोंकने जैसा संवेदन।

मूत्र—तेजाबी, घृणित, रुका हुआ, अधिक। अनेक बार मूत्र-स्खलन, स्त्रियों को इतने जोर का पेशाब लगे कि रुक न सके। रात में तेजी से पेशाब लगना, बहते रहना। अनैच्छिक मूत्रस्राव।

चर्म—हाथ और पैर की अंगुलियों के बीच की खाल उधड़ना; जाँघों पर दाने, माथे पर अस्थि गुल्म।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : खेमे की ठंडी शाम। गरम होने से।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति। झरबेरी का रस शोथ में और मूत्राशय की उत्तेजना में देते हैं।

फाइजॉस्टिग्मा (Physostigma)

(कॅलैबर बीन)

यह औषधि और इसका प्रभावशाली तत्व, ऐसेरिन; मेटेरिया मेडिका में एक मूल्यवान स्थान रखता है। दिल को उत्तेजित करती है, रक्तचाप को बढ़ाती है और कृमिवत् आकुञ्चन गति को बढ़ाती है। पुतली को सिकोड़ती है और पलकों की पेशियों को भी संकुचित करती है। निकट दृष्टि की अवस्था पैदा करती है। **मेरुदण्ड की उत्तेजना,** चालन-शक्ति का लोप होना, शिथिलता, कशेरुकाओं की उत्तेजना के साथ। तन्तुमय अर्बुद। पेशियों का तनाव; पक्षाघात। मेरुदण्ड के चालन और परावर्त्तित क्रिया को मन्द कर देती है और दर्द की संवेदनीयता को नष्ट करती है, पैशिक दौर्बल्य; बाद में पूर्ण पक्षाघात, गोकि पैशिक संकुचन क्रिया में कोई कमी नहीं होती। पक्षाघात और कम्प, ताण्डव रोग। मस्तिष्क प्रदाह; उत्तेजना। साथ में पेशियों का कड़ापन। ताण्डव रोग और धनुष्टंकार रोग। बहुस्थि मज्जाप्रदाह, अग्र भागिक। एसेरिन को पुतली सिकोड़ने के बाहरी उपयोग में लाते हैं।

सिर—चाँद पर लगातार दर्द, सिर में सिकुड़न संवेदन के साथ चक्कर आना। भौंरों के ऊपर दर्द, पलकों का उठना सहन न हो। मस्तिष्क मेरु मज्जा प्रदाह; सारे शरीर में कड़ापन। चेहरे की पेशियों की आक्षेपिक अवस्था।

आँखें—रतौंधी (इसका उल्टा ब्रोथ्रॉप्स है)। प्रकाशातंक, **पुतली का सिकुड़ना,** **नेत्र पेशियों का फड़फड़ाना।** आँखें बन्द करने की शक्ति का लोप होना, उड़ते हुए धब्बे, प्रकाश की चमक, आंशिक अन्धापन। धुन्ध रोग, संविधान का आंशिक पक्षाघात। विषम दृष्टि। अधिक जल प्रवाह। पलक पेशियों का आक्षेप; साथ में प्रयोग करने पर उत्तेजनीयता। प्रगतिशील निकट दृष्टि। झिल्ली प्रदाह रोग के बाद आँखों और संविधान पेशियों का पक्षाघात।

नाक—बहता जुकाम, नथनों में जलन और चुनचुनाहट, नाक जकड़ी हुई और गरम। नथनों के चारों तरफ ज्वर छाले।

मुँह—जबान का सिरा छरछराये। कोई गोला गले में ऊपर आता जान पड़े।

गला—गले में शक्तिवान हृदय धड़कन मालूम हो।

पेट—खाने के बाद अधिक पीड़ा। कौड़ी प्रदेश पर स्पर्श असह्य। दर्द सीने में और बाँहों के नीचे तक बढ़े। पेट दर्द, जीर्ण कब्ज।

स्त्री—क्रमभ्रष्ट मासिकधर्म, धड़कन के साथ। आँखों में रक्ताधिक्य। पेशियों का कड़ापन।

दिल—धीमी नाड़ी, धड़कन, आक्षेपिक क्रिया, साथ में सर्वाङ्गीण धड़कन संवेदन। सीने और सिर में दिल की धड़कन स्पष्ट रूप से सुनाई दे। दिल का फड़-फड़ाना गले में मालूम हो। हृदय का चर्बीलापन (क्युप्रम एसे०)।

अंग—दाहिनी तरफ के जानु पश्चाद्भाग में दर्द। मेरुदण्ड में जलन और झुनझुनी। हाथ और पैर सुन्न। सीने के पहले भागों में एकाएक झटका। धनुस्त-म्भीय आक्षेप। चालन शक्तिहीनता। पक्षाघातग्रस्त भागों में सुन्नपन, अंगों में ऐंठन दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एसेरिन, फाइजॉस्टिग्मा का क्षारोद तत्व हृदय गति को मन्द करता है और धमनी तनाव को बढ़ाता है; पलक पेशियों की क्रमभ्रष्ट क्रिया की वजह से पलक पेशियों में आक्षेप और आक्षेपिक विषम दृष्टि, पलकों का आक्षेप, पुतली सिकुड़ी हुई। पलकों में फड़कन, ढेलों में दर्द; धुँधलापन, आँख के प्रयोग के बाद आँखों के चारों तरफ और सिर में दर्द। (पुतली सिकोड़ने के लिए बाहरी प्रयोग। एट्रोपीन से फैलाई हुई पुतली को एसेरिन सिकोड़ती है, मगर उस पुतली को नहीं जो जेलसीमियम से फैलाई गई हो। आन्तरिक व्यवहार ६x)।

एसेरिन सैलिसिलेट (चीरा लगवाने के बाद आँतों में पक्षाघात, आध्मान, इन्जेक्शन के लिए $\frac{1}{60}$, $\frac{1}{20}$ ग्रेन)

इनका भी तुलना कीजिये : मस्कैरिन, कोनियम, कुरारी, जेल्से०; थिबैनम (धनुस्तम्भ) पिपेरेजिनम—(मूत्र अम्ल बाधाएँ) अति खाज, गठिया और मूत्र-मार्ग में पथरी। लगातार पीठ दर्द। चर्म सूखा, पेशाब कम। वातीय सन्धि पीड़ा। कार्बन मिश्रित जल में एक ग्रेन मिलाकर रोज दीजिये। १ और २ दशमलव विचूर्ण दिन में तीन बार।

क्रियानाशक—एट्रोपिया। पूरी चिकित्सा की मात्रा में फाइजॉस्टिग्मा इनके बहुत-से बुरे प्रभाव को दूर करेगी।

मात्रा—३ शक्ति। एसेरिन की समक्षाराम्ल सल्फेट का आधे ग्रेन से ४ ग्रेन तक एक औंस डिस्टिल्ड वाटर के साथ मिलाकर आँखों में ढाल देते हैं, इससे चक्षुतारा का प्रसारण, आँखों में चोट लगना, उपतारा प्रदाह, कनीनिका पर घाव इत्यादि की अवस्थाओं पुतली संकुचित होती है।

———

फाइटोलक्का (Phytolacca)

(पीक-रूट)

टीस, वेदनापूर्ण, बेचैनी, शिथिलता ऐसे साधारण लक्षण हैं जो फाइटोलक्का की ओर संकेत करते हैं। मुख्यतः यह ग्रन्थि विकार की औषधि है। गरमी और प्रदाह के साथ ग्रन्थि सूजन। सौत्रिक और अस्थि तन्तु पर, पैशिक बन्धन और पैशिक आवरण झिल्ली पर घाव भरने के बाद निशान के तन्तु पर, इस औषधि का शक्तिशाली प्रभाव है। उपदंशीय अस्थि पीड़ा जीर्ण वात रोग। गल प्रदाह, तालुमूल प्रदाह और झिल्ली प्रदाह। धनुस्तम्भ और धनुष्टंकार, शरीर का वजन कम होना। दाँत देर में निकलना।

मन—वैयक्तिक शिष्टाचार का अभाव, वातावरण का विचार न होना। जीवन से उदासीन।

सिर—उठने पर चक्कर। मस्तिष्क में सन्ताप। अगले भाग से पीछे की तरफ दर्द। कनपटी में और आँखों के ऊपर दाब। ऊपरी खाल पर वात रोग, जब पानी बरसे तभी दर्द पैदा हो। खाल पर छिल्केदार दाने।

आँखें—गड़न। पलकों के नीचे बालू जैसा मालूम पड़े। चक्षुपुटीय किनारे गरम लगें। अश्रुकोष का नासूर। (फ्लोरिक एसिड)। अधिक गरम जलस्राव।

नाक—जुकाम, एक नथने से और पिछले भागों से श्लैष्मिक स्राव।

मुँह—दाँत निकलने वाले बच्चे जिनमें दाँत से दाँत काटने की प्रबल इच्छा हो। दाँत जकड़े; निचले होंठ नीचे को खिंचे हों। होंठ फैले; जबड़े कसकर जकड़े, ठुड्डी वाक्षास्थि के ऊपर खिंची हो। जबान का सिरा लाल, खुरदरा और झुलसा मालूम दे, मुँह से खून बहे, किनारों पर छाले। जीभ नक्शेदार, फटी, दरारेदार, बीच में नीचे तक पीले चकत्ते। अधिक तारदार लार।

गला—गहरा लाल या नीलापन लिये लाल। जबान की जड़ में अधिक दर्द, कोमल तालु और तालुमूल सूजे हुए। गले में ढोंका जैसा संवेदन। (बेला०, लैके०)। गला खुरखुरा; सिकुड़ा, गरम लगे। तालुमूल सूजे, खासकर दाहिना, गहरा लाल रङ्ग, निगलने पर कानों में तीव्र टीस दर्द। कृत्रिम श्लैष्मिक स्राव, भूरा सफेद, गाढ़ा, चिमड़ा, पीलापन लिये श्लेष्मा, कठिनाई से अलग हो। कोई गरम चीज न निगल सके। (लैके)। कर्ण मूल में तनाव और दाब। घावयुक्त गल प्रदाह और झिल्ली प्रदाह, गला बहुत गरम लगे, जबान की जड़ पर दर्द जो कानों तक बढ़े। बढ़ा हुआ काग, शोथमय। तालु प्रदाह, तालुमूल और मुखगह्वर सूजा हुआ, जलन, दर्द, पानी तक न निगल सके। कंठमाला। क्षुद्रगह्वर पूर्ण, गलकोष प्रदाह।

उदर—दाहिने कोख में एक चोटीला स्थान। उदर पेशियों का वात रोग। नाभि शूल। जलन; चुभन; दर्द। उदर और कौड़ी प्रदेश के आरपार चोटीलापन। वृद्ध लोगों और कमजोर दिल वालों का कब्ज। मलाशय से रक्तस्राव।

मूत्र—थोड़ा, दबा हुआ, गुर्दा प्रदेश में दर्द के शाथ। गुर्दा प्रदाह।

स्त्री—स्तन-प्रदाह, स्तन कड़े और कोमल। स्तन अर्बुद और साथ में कक्षीय और ग्रन्थि का बढ़ना। स्तनों का कर्कट रोग। स्तन कड़े; दर्दीले और बैंगनी रङ्ग के। स्तनों का फोड़ा। बच्चे को दूध पिलाते समय दर्द घुन्डी से सारे शरीर में फैल जाये। मासिक धर्म के पहले और सायंकाल में स्तन स्पर्श सहन न करे। अधिक दुग्ध स्राव। (कैल्के)। मासिक स्राव अति अधिक और बार-बार। दाहिनी तरफ के डिम्बाशय का स्नायुशूल।

पुरुष—अंड का पीड़ाजनक कड़ापन। विटप प्रदेश में से लिंग तक चुभन।

सिर—ऐसा जान पड़े कि हृदय गले से कूद गया है। (पोडो०)। हृदय क्षेत्र में चमकन दर्द जो दाहिनी बाँह के दर्द के साथ पारी बदल कर उठे।

साँस-यन्त्र स्वरमंद। कठिन साँस, सूखी ठोकन, गुदगुदीदार खाँसी; रात में अधिक हो। (मेन्था०; बेलाडो०)। खाँसी के साथ, वक्षास्थि के बीच से सीने में टीस। निचली पसलियों के बीच वाले भाग का वात दर्द।

पीठ—कटि प्रदेश में टीस दर्द, रीढ़ की हड्डी में से एक पतले मार्ग से त्रिकास्थि में जाये। गुर्दा प्रदेश में कमजोरी और मन्द पीड़ा। पीठ कड़ी, खासकर सुबह उठने पर और तर मौसम में।

अंग—बाहों में कड़ापन और ऊपर उठाने में कष्ट के साथ। दाहिने कन्धे में चिलकन दर्द। (हृदय देखिये) वात दर्द, सुबह को अधिक। बिजली के धक्के की तरह तेजी से लपके, चमकन, कोंचन, जगह बदलने वाला दर्द। (पल्से०, कैली० बाइक्रो०)। जाँघों की निचली तरफ दर्द। उपदर्शीय गृध्रसी। एड़ी में टीस, पैर उठाने से कम हो। धक्के की तरह दर्द। टाँगों में दर्द, रोगी को उठाने में डर लगे। पैर फूले, टखनों और पैरों में दर्द। पैर की अंगुलियों में स्नायुशूल।

ज्वर—तेज ज्वर, जो शीत और अधिक शिथिलता के साथ बारी-बारी से आए।

चर्म—खाज, सूखा, कुम्हलाया हुआ। पीला। सूखे और रसदाने। चर्मरोग के आरम्भ में बहुत उपयोगी। फुड़िया की प्रवृत्ति; और जब घाव पर चर्बी आवे। खाल उधड़ना, स्फोट। उपदंशीय स्फोट। ग्रन्थियों का सूजना और कड़ापन। उपदंशीय बाघी। अरुण ज्वर की तरह फरन। मस्से और तिल।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : प्राकृतिक विद्युत् परिवर्तन से उत्तेजनीय भींगने से, जब पानी बरसे, तरी से, ठण्डा मौसम, रात में, बाहरी ठण्डक लगने से, हरकत से दाहिनी तरफ। **घटना :** सेंकना, सूखा मौसम, आराम।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : फाइट लक्का बेरीका अर्क। (गल प्रदाह और मोटापन की चिकित्सा में काम आती है) ब्रायों०, रस०, कैलि हाइड्रि०, मर्करी, सैंग्वि०, ऑरम ट्रिफा० । विरुद्ध : मर्करी ।

क्रियानाशक : दूध और नमक, बेलाडो०, मेजेरि० ।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति । स्तन प्रदाह में बाहरी प्रयोग की जाती है ।

पिक्रिकम एसिडम (Picricum Acidum)

(पिक्रिक एसिड—ट्रिनिट्रोफेनॉल)

पक्षाघात के साथ मेरुदण्ड में क्षीणता उत्पन्न करती है । मस्तिष्क का धुँधलापन और कामोत्तेजना । कदाचित् मेरुदण्ड के कटि क्षेत्र के मार्ग से जननेन्द्रिय पर काम करती है । शिथिलता, पीठ में कमजोरी और दर्द, अंगों में आल्पीन, सूई गड़ने जैसी संवेदना । स्नायविक दौर्बल्य (आक्जेलिक एसिड) । पैशिक दौर्बल्य । भारीपन, थकावट । मेरुमज्जा प्रदाह, आक्षेप और शिथिलता के साथ । लेखक कम्प । उन्नतिशील, कठोर रक्तहीनता । मूत्र क्षय विकार, पूर्ण मूत्ररोध के साथ । जलने पर एक प्रतिशत सोल्युशन की पट्टी लगाने से उत्तम लाभ होता है जब तक उसमें अंकुर न शुरू हों । रक्तहीन चेहरा ।

मन—इच्छा शक्ति की कमी । काम करने की इच्छा न हो । मस्तिष्क का मुलायम पड़ना शिथिलता से साथ, मनोभ्रंश, चुपचाप, अशान्त भाव से बैठा रहे ।

सिर—सिरदर्द; कसकर बाँधने से कम रहे । पिछले भाग का दर्द, जरा-से मानसिक परिश्रम से बढ़े, चक्कर और कानों में आवाजें आयें । कानों के भीतर और गरदन के पीछे फुड़िया । देर तक मानसिक परिश्रम के बाद आकुलता और इम्तहान में फेल होने के साथ । मस्तिष्क का धुँधलापन ।

आँखें—अधिक, गाढ़े, पीले स्राव के साथ जीर्ण नजला, नेत्रप्रदाह ।

पेट—कड़वा स्वाद । भोजन से घृणा ।

मूत्र—थोड़ा, पूर्ण मूत्ररोध । बूँद-बूँद टपके । मूत्र में अधिक नील होना, दानेदार टुकड़े और चर्बीले, क्षीण अन्तस्त्वक् । घोर दौर्बल्य, गहरे रङ्ग का, खूनी, थोड़े मूत्र के साथ गुर्दा प्रदाह । रात में पेशाब लगना ।

पुरुष—वीर्यपात अधिक मात्रा में, बाद में बहुत शिथिलता, बिना कामोत्तेजना के स्वप्न । अनैच्छिक लिंगोत्तेजना, पुरुषों में अधिक कामोत्तेजना । कड़ी लिंगोत्तेजन, अण्ड में और उसके बन्धन में ऊपर तक दर्द के साथ मूत्राशय ग्रन्थि का ढीलापन, खासकर उन अवस्थाओं में जो बहुत पुरानी न हों ।

स्त्री—बायीं तरफ के डिम्बाशय में दर्द और मासिक धर्म के पहले प्रदर, योनि कुण्डी की तीव्र खाज।

अंग—रीढ़ की लम्बाई में जलन। अधिक दौर्बल्य। सारे शरीर में भारीपन, थकावट; खासकर अङ्गों में परिश्रम से अधिक हो। पैर ठंडे। जल्द गरम न हों। तीव्र ऊपर चढ़नेवाला पक्षाघात।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : जरा से परिश्रम से, खासकर मानसिक, सोने के बाद, तर मौसम। गरम मौसम की औषधि, उन दिनों में रोग अधिक हो। घटना : ठंडी हवा में, ठंडे पानी से, कसे दाब से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : आक्जेलिक एसिड, जेल्से०, फॉस०, सिलिका, अर्जेण्ट० नाइट्रि०।

तुलना कीजिये : जिंक, पिक्रि (चेहरे की फड़कन और कम्पवात), फेर० पिक्रे०। (कानों में भिनभिनाहट, बहरापन, जीर्ण गठिना, नकसीर, मूत्राशयिक ग्रन्थि), कैल्के० पिक्रे० (कानों में और उनके चारों तरफ फुड़िया)।

मात्रा—६ शक्ति।

पिलोकार्पस माइक्रोफाइलस (Pilocarpus Microphyllus)
(जैबोरैंडी)

पिलोकार्पस एक शक्तिवान ग्रन्थि उत्तेजक और पसीना बढ़ाने वाली उत्तम औषधि है। इसके अति आवश्यक प्रभाव पसीना बढ़ाना, लार बढ़ाना और चक्षुतारा का चिर संकोचन हैं। गरम लहरें, मिचली, लार बहना और अधिक पसीना। चेहरा, कान, गरदन, एक मात्रा जैबारैंडो की देने के बाद गहरी लालिमायुक्त हो जाते हैं और सारे शरीर पर पसीने की बूँदें आ जाती हैं और उसी समय मुँह में पानी आ जाता है तथा लगातार सोते में लार बहने लगती है। अन्य स्राव; नेत्र स्राव, नाक-स्राव, वायुनलिका स्राव, आँतों का स्राव भी कुछ कम मात्रा में आरम्भ हो जाता है। पसीना और लार प्रायः अधिक मात्रा में बहती है, जो अक्सर सवा पाव के लगभग होती है।

होमियोपैथिक तरीके से असाधारण पसीना निकलने, और क्षय के रोग के अधिक रात्रि पसीना में बहुत लाभदायक सिद्ध हुई है। वह गलग्रन्थि पर काम करती है और इसका पसीना लानेवाला प्रभाव कदाचित् इसी के कारण से है। हृदय गति वृद्धि और धमनी की टपकन के साथ वहिःनिसृत चक्षु गोलक तथा हृत्स्पन्दन के साथ गलगण्ड रोग, कम्प और स्नायविकता, गरमी और पसीना, वायुनलिका की उत्तेजना। कर्णमूल प्रदाह को जल्द अच्छा करने की मूल्यवान औषधि।

आँखें—आँखों पर जोर पड़ना, किसी भी कारण से। पलकों की पेशियों की उत्तेजना। जरा-से प्रयोग से आँखें थक जायें। प्रयोग पर आँखों में गरमी और जलन हो। दूर की सभी चीजें धुँधली दिखाई दें, हर कुछ मिनटों के बाद धुँधलापन। सिर दर्द, प्रयोग पर ढेलों में गड़न और दर्द। चक्षुपट पर देर तक देखी हुई चीज का अक्स बना रहे। बिजली या अन्य कृत्रिम प्रकाश आँखें सहन न करें। पुतली सिकुड़ी हुई, प्रकाश से प्रभावित न हों। घूरती आँखें। समीप दृष्टि। आँखों के प्रयोग से चक्कर और मिचली। आँखों के सामने सफेद धब्बे। आँखों में गड़न दर्द। पलक फड़कें। क्षीणतायुक्त कृष्ण पटल प्रदाह। पढ़ते समय संविधान क्रिया में आक्षेप।

कान—कर्ण पट गह्वर में रक्ताम्बु स्राव। टनटनाहट। (पिलोकार्पिन २x)।

मुँह—लाल, लसीला, अंडे की सफेदी की तरह। सूखापन। लार अधिक साथ में अधिक पसीना।

आमाशय—चलती हुई चीजों को देखकर मिचली आवे, कै, पेट में दाब और दर्द।

उदर—दस्त बिना दर्द, भरभराया चेहरा और अधिक पसीने के साथ, दिन में।

मूत्र—कम मात्रा में; बहुत पेशाब लगने के साथ विटप स्थान पर दर्द।

दिल—नाड़ी क्रमभ्रष्ट, दोहरी चाल। सीने पर दाब। नील रोग, पतनावस्था। स्नायविक हृदय रोग।

साँस-यन्त्र—वायुनलिका की श्लैष्मिक झिल्ली सूजी हुई। खाँसी आने की तीव्र प्रवृत्ति और कठिन साँस। फुफ्फुस शोथ। झागदार बलगम। अधिक, पतला, पानी-सा बलगम। धीमा, आहें भरे।

चर्म—शरीर के सभी भागों से अधिक पसीना। चर्म का लगातार कठोर सूखापन। सूखा अकौता। आधे शरीर पर पसीना। पसीने के साथ शीत।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: एमिले० नाइट्रो०; एट्रोपि०; फाइजाँस्टिग्मा, लाइको०, रूटा०। पिलोकार्पिन म्यूर०; (कान की खराबी से सिर चकराना, तेजी से बढ़ने वाला क्षय रोग; अधिक रक्तस्राव और अधिक पसीना के साथ। २x विचूर्ण) एट्रोपिन और पिलोकार्पिन में शत्रुता है। $\frac{1}{100}$ ग्रेन की एक मात्रा $\frac{1}{2}$ ग्रेन पिलोकार्पिन को मारती है।

मात्रा—३ शक्ति।

पाइनस सिलवेस्ट्रिस (Pinus Sylvestris)

(स्कॉच पाइन)

टखनों की कमजोरी और चलने में झिझक तथा कंठमालिक और कमजोर हड्डी वाले बच्चों की चिकित्सा में यह औषधि वास्तविक रूप से लाभदायक सिद्ध हुई है। निचले अंगों का दुबलापन। पाइनस सिलवेस्ट्रिस में वात रोग, वायुनलिका समूह के रोग और पित्त रोग के लक्षण सम्मिलित हैं। सीना पतला मालूम हो और ऐसा मालूम हो कि बैठ जायेगा।

अंग—तनाव, सभी जोड़ों में गठिया दर्द, खासकर अंगुलियों के जोड़ों में। पिण्डली में ऐंठन।

चर्म—आमवात। सारे शरीर में खुजली, खासकर जोड़ों और उदर पर। नाक खुजलाना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : पाइनस लैम्बरटिना–शूगर पाइन (कब्ज, मासिक-धर्म का रुकना, गर्भपात) पाइनस लेम्बरटिना, वृक्ष का रस जुलाब का काम करता है। दबा हुआ और पीड़ाजनक मासिकधर्म।

इसके अतिरिक्त एबीज कैना; एबीज नाइग्रा।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

पाइपर मेथाइस्टिकम (Piper Methysticum)

(कावा-कावा)

कावा-कावा का नशा मौन और निद्रालुता की अवस्था का होता है और साथ में गिचपिचे स्वप्न और पैशिक शक्तिहीनता रहती है।

मूत्र और चर्म लक्षण का पुष्टिकरण हुआ है। कड़ापन। सन्धि प्रदाह से आकार परिवर्तन। बादी के साथ शूल।

मन—बहुत क्षुब्ध। सर्वोच्च भावना। ध्यान दूसरी तरफ देने से लक्षणों का कुछ समय के लिए कम होना। आसन बदलने की अशान्त इच्छा।

मूत्र—अधिक मात्रा में। पेशाब करते समय जलन। सूजाक और जीर्ण सुजाक स्राव। मूत्राशय प्रदाह। पीड़ाजनक लिंगोत्थान।

चर्म—पपड़ीदार। पपड़ी झड़ने पर सफेद धब्बे रह जायें। कोढ़। चर्म का सख्त पड़ जाना।

अंग—दाहिनी बाँह में दर्द। हाथों का कर्महीन जान पड़ना। अँगूठों के जोड़ों में दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : चॉलमूँगरा—टैरैक्टोजेनस—(इसका तेल और उससे बनायी अन्य औषधियाँ कुछ हद तक कोढ़ की चिकित्सा में और खासतौर पर उसकी शुरू की अवस्था में लाभदायक होती हैं।)

बिक्सा ओरेलाना—दक्षिणी अमेरिका का एक पौधा है जो चालमूँगरा से सम्बन्धित है। कोढ़, अकौता और फीलपाँव की चिकित्सा के लिए उपयोगी बताई गई है।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दूसरी तरफ ध्यान लगाने से, आसन बदलने से।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

पाइपर नाइग्रम (Piper Nigrum)

(ब्लैक पेपर)

सभी जगह जलन और दाब।

मन—शोकग्रस्त, भयभीत। चित्त एकाग्र न कर सके। जरा-सी आवाज पर चिहुँकना।

सिर—भारी; सिर दर्द, मानो कनपटी भीतर की तरफ दबी हो, नाक और चेहरे की हड्डियों में दाब। आँखें प्रदाहित और जलें। लाल, गरम चेहरा। ढेलों में फटन; टीस। नाक खुजलाना, छींक, नकसीर। होठ सूखे और चिटके।

गला—वेदनापूर्ण, कच्चा लगे, जले। तालुमूल में जलन दर्द।

पेट—आमाशयिक असुविधा, भरापन। अधिक प्यास। अफरा। तनाव। शूल और ऐंठन।

सीना—कष्टदायक साँस, सीने के कई स्थानों के दर्द के साथ खाँसी, खून थूकने जैसा मालूम पड़े। धड़कन, हृदय पीड़ा, धीमी, सविराम नाड़ी। दूध का अधिक उतरना।

मूत्र—मूत्रमार्ग और मूत्राशय में जलन। कठिन मूत्रस्राव। मूत्राशय भरा लगे, सूजा, घड़ी-घड़ी लगे, मगर न निकले। अनैच्छिक लिंगोद्रेक।

मात्रा—निचली शक्तियाँ।

पिट्युटरी ग्लैंड (Pituitary Gland)

पिट्युटरी जननेन्द्रिय के विकास और पुष्टि पर उत्तम प्रभाव डालती है, पेशियों को शक्तिशाली बनाती है और गर्भाशय मन्दता नाश करती है। इसका प्रभाव छिल-

केदार पेशी सूत्रों पर स्पष्ट रूप से विदित है। मस्तिष्क-रक्तस्राव। रक्तस्राव को रोकती है और थक्कों को गलाने में सहायक है। गर्भाशय मन्द; जहाँ प्रसव का दूसरा चरण हो और गर्भाशय का मुँह पूरे तौर पर न खुला हो। रक्त चापाधिक्य; जीर्ण गुर्दा प्रदाह, मूत्राशय ग्रन्थि प्रदाह। भोजन के बाद १० बूँद। (डॉ॰ ऑर्ज फुलर॰)। चक्कर, चित्त एकाग्रता कठिन, सिर के अगले भाग में गड़बड़ी और गहराई तक भरापन। ३० शक्ति उपयोग करें।

सम्बन्ध—पिट्यूट्रिन—रक्तवाहिनियों को संकीर्ण करने वाली और प्रसूतावस्था की औषधि। खासकर गर्भाशय पर प्रभाव के कारण यह उपयोग की जाती है; या तो बच्चा पैदा करने के काम में सहायता के लिये या प्रसव के बाद बहुत रक्त प्रवाह को रोकने के लिये। १ सी॰ सी॰ की मात्रा में इन्जेक्शन द्वारा बच्चा बाहर आने की अवस्था में, दर्द बढ़ाने के लिये। हृत्, पिण्डैष, गुर्दा प्रदाह और धमनी के कड़ापन में इस औषधि का प्रयोग वर्जित है। ग्रन्थि में पिछले भाग के रस को पानी में घोल-कर १५ बूँद के एम्पुल्स में भरते हैं और एक एम्पुल इन्जेक्शन की मात्रा होती है। गर्भाशय द्वारा प्रयोग करने से कोई प्रभाव नहीं होता।

पिक्स लिक्विडा (**Pix Liquida**)

(पाइन-टार)

टार और उसके योगिक झिल्लियों पर काम करते हैं।

इसके चर्म लक्षण अति विशिष्ट हैं। खाँसी की एक उत्तम औषधि है। इन्फ्लुएञ्जा के बाद वायुनलिका उत्तेजना (क्रियोजोटम, कैलि बाइ क्रोमिकम) छिल्केदार स्फोट। अधिक खाज। काले रङ्ग की पतली चीज की लगातार कै, पेट में दर्द के साथ। बाल झड़ना। (फ्लोरि॰ एसिड)।

सीना—बायीं तरफ के उपपर्शुका क्षेत्र में जहाँ वह पसली से मिलता है, एक स्थान पर दर्द। फुफ्फुस में से बलगम की खड़खड़ाहट और मवादी, घृणित बलगम, घृणित दुर्गन्ध और स्वाद। जीर्ण वायुनलिका-प्रदाह।

चर्म—चिटका; असह्य खाज, खुजलाने से खून बहे। हाथों के पीछे दाने।

सम्बन्ध—इसके अंगों की तुलना कीजिए : क्रियोकोट॰, पेट्रोलि॰, पाइनस॰; इयुपिअन टेरेबिन्थि॰; कार्बोलिक एसिड।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

प्लैण्टैगो मेजर (Plantago Major)

(प्लैण्टेन)

कान दर्द, दाँत दर्द, अनैच्छिक मूत्र स्राव की चिकित्सा में विख्यात है। आँखों में तेज दर्द; दाँत के गड़ने से या मध्यकर्ण प्रदाह से परावर्त्तित दर्द। आँखों के ढेले छूने से कोमल। दाँतों और कानों के बीच में दर्द जगह बदले। मसूढ़ों का सड़ना। निकोटिन के व्यवहार की पुरानी आदत से आई उदासी और अनिद्रा। तम्बाकू से घृणा पैदा करती है।

सिर—सामयिक मुखमण्डल पक्षाघात, ७ बजे सुबह से २ बजे तीसरे पहर तक अधिक; साथ में आँखों से पानी बहना, आलोकातंक, दर्द कनपटी और चेहरे के बिचले भाग तक फैले।

कान—तीव्र श्रवण संवेदन, आवाज, असह्य लगे। कानों में गड़न, दर्द। स्नायुशूल, कान दर्द, दर्द सिर से होकर एक कान से दूसरे कान में जाये। कर्ण प्रदाह; दाँत दर्द के साथ। एक कान के आरपार तेज आवाजें आयें।

नाक—तीव्र एकाएक हल्का पीला, पानी जैसा स्राव।

मुँह—दाँत दर्द करें और छूने से उत्तेजनीय और दर्दीले हों। गालों का सूजना। लार बहना; दाँत लम्बे जान पड़ें, ठण्डी हवा से और स्पर्श से कष्ट बढ़े। दाँत दर्द, खाते समय कम रहे। लार अधिक बहे। पलकों में परावर्तित संवेदन के साथ दाँत दर्द।

मल—पाखाना करना चाहे, बार-बार जाये मगर कर न सके। बवासीर इतनी कष्टदायक कि खड़ा न हो सके। दस्त, बादामी पानी-सा मल।

मूत्र—अधिक मात्रा में, रात मे अनैच्छिक स्राव। (रस एरोमैटि०, कॉस्टि०, बेलाडो०)।

चर्म—खुजली और जलन, रस दाने। जुलपित्ती, बेवाई फटना। (एगैरि० टैमस)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैल्मिया०; कैमो०; फ्ले०।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ। दाँत दर्द में खोखलों में लगाई जाती है, और कान दर्द, अति खाज और ओक विषाक्रमण में। कटे घाव में।

प्लैटैनस आक्सिडेण्टैलिस (Platanus Occidentalis)

(साइकैमोर–बटनऊड)

कूर्चास्थि का अर्बुद। टिंचर लगाइये। तीव्र और जीर्ण अवस्था में जहाँ तन्तु नष्ट हो गया हो और घाव भरने के निशान ने पलकों में सिकुड़न पैदा कर दी हो,

इसके प्रयोग से साधारण अवस्था में हो गया। बच्चों में अच्छा काम करती है। कुछ समय तक प्रयोग करना चाहिए। मीन्वक्किका।

प्लैटिना (Platina)

(दी मेटल)

मुख्यतः स्त्री रोग की औषधि है। पक्षाघात की प्रबल प्रवृत्ति, संवेदन हीनता; स्थानीय सुन्नपन और ठंडक विद्यमान होता है। गुल्म वायु युक्त आक्षेप, नाड़ी धीरे-धीरे, धीमी और तेज होती है। (स्टैनम०)। कम्प।

मन—हत्या करने की प्रबल धारणा। अहम्मन्यता, दूसरों को घृणा से देखे। हठी, घमण्डी। सब चीजों से थक गया हो। सब चीजें बदली मालूम दें। मानसिक व्याधि; जो मासिक धर्म के दबने से सम्बन्धित हो। मानसिक लक्षण उत्पन्न होने से शारीरिक लक्षण गायब हो जायें।

सिर—तनाव और दाब का दर्द जो एक छोटे-से स्थान में सीमित हो। **मरोड़, भाला गड़ने जैसा दर्द।** माथे और दाहिनी कनपटी में सिकुड़न। **सिर दर्द के साथ सुन्नपन।**

आँखें—सभी चीजें वास्तविक माप से छोटी दिखाई दें। पलकों का फड़कना। (एगैरि०)। आँखें ठण्डी मालूम हों। घरों में मरोड़ के साथ दर्द।

कान—सुन्न लगें। अकड़न, चिलक, गरज और घबराहट।

चेहरा—चेहरे का स्नायुशूल, साथ में जबड़े की हड्डियों का सुन्नपन; मानो वह भाग पेचों के बीच में है। नाक की जड़ पर दर्द मानो बाँक में जकड़ी हो। सारे दाहिनी तरफ के चेहरे में ठंडापन; **रेंगन और सुन्नपन।** दर्द धीरे-धीरे घटे और बढ़े। (स्टैनम०)

आमाशय—उफान, अधिक अफरा, संकुचन, **अति भूख,** लगातार मिचली, उत्सुकता और कमजोरी के साथ।

उदर—चित्रकारों का शूल। नाभि प्रदेश में दर्द, जो भीतर से होकर पीठ तक बढ़े। उदर में दाब और कमजोरी पेड़ू तक बढ़े।

मल—पीछे हटे, कम मात्रा में, कठिनाई से बाहर निकले। मलाशय में चिपका रहे, जैसे गीली मिट्टी हो। **चमकीला मल।** सफर करने वालों का कब्ज जो भोजन और पानी बदला करते हों। मल जैसे जला हुआ है।

स्त्री—जननेन्द्रिय भाग अति उत्तेजित। भीतर और बाहर चुनचुनाहट। (कैलि० ब्रोमे०; ओरिजेन०)। डिम्बाशय उत्तेजित और जलन वाले। मासिक धर्म बहुत

पहले, अधिक मात्रा में, गहरे रंग का थक्केदार, साथ में आक्षेप और वेदनापूर्ण कमजोरी; शीत और योनि-प्रदेश की उत्तेजना, योनि शूल। अति प्रबल मैथुन इच्छा। अति जननेन्द्रिय विकास, योनि में आक्षेपिक शूल। घुण्डी की तीव्र खाज। डिम्बाशय शूल; बाँझपन के साथ। असाधारण मैथुन इच्छा और शोकग्रस्त।

अंग—जाँघों में कसाव, जैसे कस कर बाँधी हुई हों। सुन्नपन और थकावट की संवेदना पक्षाघात जैसा लगे।

नींद—टाँगों को अलग-अलग फैला के सोवे। (कैमोमि०)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बैठने और खड़ा होने से, शाम को। घटना : टहलने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रोडिनम, स्टैनप०, वैलेरि०, सीपिया। इसके अतिरिक्त तुलना कीजिए : प्लैटिनम म्युरियेटिकम (उपदंश रोग में आयोडाइड ऑफ पोटास के असफल होने के बाद इस औषधि ने लाभदायक काम किया है, सिर के पिछले भाग का तीव्र दर्द, निगलने में कष्ट और उपदंशीय गला और अस्थि रोग, पैरों की हड्डी का सड़ना), प्लैटि०, म्यूरि० नेट्रो (अनेक बार मूत्रस्खलन और लार बहना), सेडम एकरे कामोत्तेजना स्नायविक केन्द्रों की उत्तेजना को शान्त करके आराम देती है।

क्रियानाशक : पल्से०। प्लैटिना सीसे के दुष्प्रभाव को दूर करता है।

मात्रा—६ विचूर्ण और ३० शक्ति।

प्लम्बम मेटैलिकम (Plumbum Metallicum)

(लेड)

कड़ापन की अवस्थाओं की बड़ी दवा। सीस विषजनित पक्षाघात खासकर, फैलने वाली पेशियों का, अगली बाँह और ऊपरी अंगों का, दर्द के बाद आंशिक सुन्नता या संवेदनीयता के साथ, केन्द्र से परिधि की तरफ का। स्थानीय स्नायुशूल, स्नायु-प्रदाह। प्लम्बम के प्रभाव के मुख्य प्रभाव क्षेत्र हैं। रक्त, पाचन और स्नायु। यह रक्त निर्माण में रुकावट पैदा करती है, लालकण तेजी से कम हो जाते हैं; इसी कारण से चेहरे का पीलापन, पांडुरोग, रक्तहीनता हो जाती है। आंतरिक यन्त्रों में संकुचन की संवेदना।

प्रलापक सन्निपात, मृत्यु-निद्रा और आक्षेप। धमनी का अधिक तनाव और कड़ापन। उन्नतिशील पैशिक सिकुड़ाव। शिशु पक्षाघात। उरुस्तम। अधिक और तीव्र गति से आनेवाला दुबलापन। गुल्म पक्षाघात प्रान्तस्थ रोग में महत्त्वपूर्ण औषधि है। प्लम्बम का आक्रमण केन्द्र स्नायविक अधांगात्र और अगले भाग के स्नायु सिरे

हैं। अनेक भागों का कड़ापन, स्नायु के पिछले भाग में कड़ापन। संकुचन और छेद होने जैसा दर्द। तीव्र गुर्दाप्रदाह के सभी लक्षणों के साथ आंशिक या पूर्ण अन्धापन, गठिया (जीर्ण)।

मन—**मानसिक उदासी; कतल कर दिए जाने का डर।** मौन विषाद। प्रत्यक्ष बोध की मन्दता, स्मरण शक्ति हीनता, शब्द बोध हीनता। भ्रम और काल्पनिक भावनायें। बौद्धिक विराम; स्मरण-शक्ति का मन्द पड़ना। (**एनाका०, बैराइटा०**) आंशिक पक्षाघातिक भ्रंश।

सिर—प्रलापक सन्निपात और आंत्रशूल बारी-बारी से। ऐसा दर्द मानो एक गोला गले से मस्तिष्क में उठ रहा हो। बाल बहुत सूखे। **कर्णनाद (चाइना, नैट्रम सैलिसिलि०, कार्बोनियम सलफ्युरेटम)।**

आँखें—पुतली सिकुड़ी हुई। पीली। चक्षु-स्नायु सूजी हुई। मवादी प्रदाह। **धुंधरोग,** खासकर अगर रीढ़ रोग से सम्बन्धित हो। चक्षु स्नायु प्रदाह, आँखों के सामने काले लोप हो जाने वाले धब्बे। मूर्छा के बाद एकाएक अन्धापन।

चेहरा—**पीला और धातु विकारी।** पीला, मुर्दे जैसा, गला बैठे। चेहरे की खाल चिकनी, तेल जैसी, चमकती। नाक और होंठ की पेशियों का कम्प।

मुँह—मसूढ़े सूजे हुए, पीले, **किनारों पर स्पष्ट नीली लकीरें।** जबान काँपती, लाल किनारे। बाहर न निकल सके; जैसे लकवा मार गया हो।

आमाशय—गलकोष में और आमाशय में सिकुड़न; दाब और कसाव। **आमाशयिक शूल।** लगातार कै। ठोस चीज निगली न जाये।

उदर—तेज आन्त्रशूल, शरीर के सभी भागों में फैले। **उदर की दीवार किसी तागे से रीढ़ की तरफ खिंची हुई मालूम दे।** दर्द से अँगड़ाई लेने की इच्छा। आन्त्रावरोध; आँतों का नीचे उतर कर फँस जाना। उदर भीतर की तरफ धँसा हुआ। तीव्र शूल के साथ वायु का उदर में रुक जाना। शूल और प्रलाप सन्निपात या क्षीण अंग में पीड़ा बारी-बारी से।

मलाशय—**कब्ज, मल कड़ा ढोंकेदार, काला, ऐंठन और गुदा के झटके के साथ।** आँतों में मल भर जाने की वजह से बाहर न निकलना। (प्लैटि०)। मलाशय का स्नायुशूल। गुदा रुकावट के साथ ऊपर को खिंची हो।

मूत्र—बार-बार हो; असफल ऐंठन। ओजोमेह, घनत्व कम। **जीर्ण सांतर वृक्क प्रदाह;** उदर में अधिक पीड़ा के साथ। थोड़ा मूत्र। मूत्राशय में मरोड़। **बूँद-बूँद टपके।**

पुरुष—**मैथुन की शक्ति नष्ट।** अण्ड ऊपर को खिंचे हों। सिकुड़े लगें।

स्त्री—योनि का कष्टपूर्ण आक्षेप, साथ में दुबलापन और कब्ज। स्तन-ग्रन्थि का कड़ापन, योनि और योनिघुण्डी अति कोमल। स्तनों में चिलकन और जलन दर्द। (एपिस, कोनि०, कार्बो एनि०, सिली०)। गर्भपात की सम्भावना। अधिक मासिक स्राव, साथ में ऐसा मालूम दे कि धागा उदर से पीठ तक खींचा जा रहा है। जम्हाई और अँगड़ाई लेते रहना।

दिल—दिल की कमजोरी। नाड़ी कोमल और छोटी, दोहरी चाल। नाड़ी तार जैसी, प्रान्तस्थ धमनियों में ऐंठन जैसा सिकुड़ाव।

पीठ—मेरुदण्ड का कड़ापन। बिजली की तरह दर्द, दाब से कुछ समय के लिए कम रहे। निचले अंगों का पक्षाघात।

चर्म—पीला, गहरे कत्थई रंग के धब्बे। कामला रोग, सूखा। अगली बाहों और टाँगों की शिरायें फूली हुई।

अंग—एक-एक पेशी का पक्षाघात। हाथ से कोई चीज जमीन के ऊपर न कर सके और न उठा सके। फैलाना कठिन। पियानो बजाने वालों की हाथ फैलाने वाली पेशियों पर अधिक जोर पड़ने से पक्षाघात। (कुरारी)। जाँघों की पेशियों में दर्द; दौरे के साथ उठे। कलाई का लटक जाना। पिण्डली में ऐंठन। अंगों में चुभन और जलन; चुनचुनाहट और फड़कन भी, सुन्न होना, दर्द या कम्प। पक्षाघात। पैर सूखे हुए। क्षीण अंग का दर्द और शूल बारी-बारी से आये। घुटनों की टोपी की परावर्तित क्रिया का लोप होना। हाथ और पैर ठण्डे। रात में दाहिने पैर के अंगूठे में दर्द; छूना असह्य।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में हरकत से। घटना : मालिश, कड़ा दाब, शारीरिक व्यायाम। (एलुमेन)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : प्लम्बम एसेटि० (पक्षाघातग्रस्त अङ्ग में वेदनापूर्ण ऐंठन; आमाशय घाव में तीव्र पीड़ा और पैशिक ऐंठन, ऊपर से लगाने के लिए (स्थूल प्रयोग। तर एक्जिमा में और श्लैष्मिक सतह के स्राव को सुखाने के लिये सावधानी से प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि सीसे की काफी मात्रा शरीर में सोखने से सीसा विषाक्रमण हो सकता है; लिकर प्लम्बि सब एसेटैटिस का एक या दो ड्राम, एक औंस पानी में मिलाकर; इसके अतिरिक्त योनि घुण्डी की खाज में लिकर प्लम्बि और ग्लिसरिन बराबर मात्रा में मिलाकर, प्लम्बम आयोडेट० कई तरह के पक्षाघात क्षीणतामय कड़ापन में खासकर मेरुदण्ड के शोथ, धमनी के कड़ापन में, रौद्रत्वक के अनुभव के आधार पर प्रयोग की गई है। स्तन-ग्रन्थियों का कड़ापन, खासकर जब प्रदाह की सम्भावना मालूम हो, चोटीली और दर्दीली। बहुत कड़ापन जो चर्म के सूखापन से सम्बन्धित हो। क्षय रोग का कोंचन दर्द)।

तुलना कीजिए : एलुमिना; प्लैटिना; ओपियम; पोडोफाइलम; मर्क०; थैलि० । प्लेकट्रेन्थस (पक्षाघात, आपेक्षिक मेरुदण्डीय), प्लम्बम क्रोमिकम (विक्षेप, घोर पीड़ाजनक, पुतली बहुत फैली, उदर धँसा), प्लम्बम, फॉस्फो० (कामशक्ति का अभाव; चालन शक्तिहीनता) ।

क्रियानाशक : प्लैटि०; एल्युमि०; पेट्रोलि० ।

मात्रा—३ से ३० शक्ति ।

पोडोफाइलम (Podophyllum)

(मे-ऐपल)

पित्त प्रकृति के लोगों के लिए खास तौर पर उपयोगी है। यह खासकर पक्वाशय, छोटी आँतों पर, जिगर पर, और गुर्दों पर काम करती है। पोडोफाइलम का रोग पाकाशयिक-आंत्रिक प्रदाह होता है और साथ में आंत्रशूल और पित्त की कै होती है। मल पानी-सा पतला और लुआबदार, बिना दर्द, अधिक मात्रा में आता है। पाखाना बहुत जोर से खारिज हो; बदबूदार । गर्भावस्था के अनेक रोग, प्रसव के बाद लटका हुआ उदर, गर्भाशय का बाहर निकलना । बिना दर्द के हैजा रोग । जिगर की मंदता; संयुक्त शिरा सम्बन्धी रक्ताधिक्य, बवासीर की प्रवृत्ति, कुक्षि देशीय पीड़ा, सतह की शिराओं में भरापन, कामला रोग ।

मन—तेजाबी फल खाने से बकवादीपन और प्रलापक सन्निपात । उदासी ।

सिर—आगे गिरने की प्रवृत्ति के साथ चक्कर । सिर दर्द, धीमी दाब, सुबह को अधिक, चेहरा गरम और कड़वे स्वाद के साथ और दस्त बारी-बारी । कराहने, कै, अधखुली आँखों के साथ । सिर को अगल-बगल लुढ़काना । सोते में बच्चे के सिर पर पसीना आये ।

मुँह—रात में दाँत पीसना; मसूढ़ों को आपस में कसकर दबाने की प्रबल इच्छा । (फाइटोलै०) दाँत निकलने में कठिनाई । जबान चौड़ी, बड़ी, तर । घृणित, सड़ा स्वाद । जबान में जलन ।

आमाशय—गरम, खट्टी डकार, मिचली और कै । अधिक मात्रा में ठंडा पानी पीने की प्यास (ब्रायो) । गरम, झागदार श्लेष्मा की कै । गला जलन, पानीदार या खाली डकार । दूध की कै ।

उदर—तना हुआ; गरम खाली और कमजोरी की संवेदना । केवल पेट के बल आराम से लेट सके । जिगर प्रदेश दर्दीला । मलने से अच्छा लगे । ऊपर जाने वाली बड़ी आँत में गुड़गुड़ाहट और वायु रेंगना ।

मलाशय—शिशु हैजा रोग। पुराना अतिसार, बहुत सुबह को, दाँत निकलते समय, साथ में गरम दमकते गाल, नहाते या धोते समय, गरम मौसम में तेजाबी फल खाने के बाद। सुबह दर्दहीन दस्त जब कि वह शिरा के रक्तरोध या आँतों की वजह से न हो। मल हरा, पानी-सा, घृणित, अधिक, फलक कर निकले। काँच निकलना; मल त्यागने से पहले या साथ में। कब्ज, मटियाला मल, कड़ा सूखा, कठिन। कब्ज और दस्त बारी-बारी। (ऐण्टि० क्रू.ड०)। भीतरी और बाहरी बवासीर।

स्त्री—गर्भाशय और दाहिने डिम्बाशय में दर्द, साथ में ऊपर जाने वाली आँत में जगह बदलने वाली आवाजें। पेडू में मरोड़ के साथ मासिक-धर्म का दबना। गर्भाशय का बाहर निकलना, खासकर प्रसव के बाद। गर्भावस्था में गुदा के बाहर निकलने के साथ बवासीर। गर्भावस्था में भारी चीज उठाने से या जोर पड़ने से गर्भाशय का बाहर निकलना।

अङ्ग—कन्धों के बीच में दाहिनी, कन्धास्थि के नीचे, कमर और कटि प्रदेश में पीड़ा। दाहिने पेडू क्षेत्र में दर्द, जाँघ के भीतरी भाग से नीचे की तरफ झपटे, घुटने तक बायीं तरफ पक्षाघात जैसी कमजोरी।

ज्वर—आमाशय प्रदेश, घुटनों, टखनों और कलाई में दर्द के साथ ७ बजे सुबह ज्वर। ज्वर के समय अधिक बकवाद करना। पसीना अधिक मात्रा में।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना** : भोर में, गरम मौसम में, दाँत निकलने के काल में।

सम्बन्ध—**तुलना कीजिए** : **मैंड्रागोरा**-इसको मैनड्रेक भी कहते हैं—(पोडोफा० से गड़बड़ाना नहीं चाहिये। सोने की बहुत इच्छा, आवाज की संवेदना अधिक और सब चीजें बढ़ी हुई देखना। आँतें कर्महीन; मल बड़ा, सफेद और कड़ा)। एलो०; चेलिडो०; मर्क०; नक्स०; सल्फ०। **प्रुनेला**—सेल्फहील (मलाशय शोथ)।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति। २०० और १००० सांकेतिक होने पर शिशु हैजा में अच्छा काम करती है।

पोलिगोनम पंक्टैटम (Polygonum Punct.)

(हाइड्रो पाइपर) (स्मार्ट वीड)

युवा लड़कियों के जरायु से अस्वाभाविक रक्तस्राव और मासिक धर्म रुकना। नसों का सिकुड़ना और फूलना। बवासीर और मलाशय में थैलियाँ पड़ना। पेट में जलन, बाद में पेट के गड्ढे में ठंडापन।

उदर—अधिक गुड़गुड़ाहट, मिचली, पतले मल के साथ जकड़न दर्द। वायुशूल।

मलाशय—गुदा के भीतर बहुत-से खाज वाले उभार। बवासीर। पतला मल।

मूत्र सम्बंधी—मूत्राशय की गरदन में वेदनापूर्ण सिकुड़न।

स्त्री—कटि-क्षेत्र और कमर में टीस। ऐसा संवेदन मानो दोनों तरफ की कटि एक दूसरे की तरफ खिंची है। पेड़ू के भीतर बोझ और तनाव का संवेदन। स्तनों के आरपार चमकन दर्द। मासिक धर्म का अप्राकृतिक रुकना।

चर्म—निचले अंगों पर छिछली सतह के घाव, खासकर स्त्रियों के वयः-सन्धिकाल में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : काडुअस मैरियेनस (घाव) हैमामे०, सेनेसियो०; पोलिगोनम परसिकेरिया (गुर्दा शूल और पथरी, गलित घाव), पोलिगोनम सैजिटैटम—एरो-लीव्ड। टीर थम्ब—(२x गुर्दा प्रदाह के शूल के लिए; मवादी गुर्दा प्रदाह, मेरुदण्ड में एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने वाला दर्द, कड़े तालु में खाज, दाहिने पैर और टखने के भीतरी तरफ जलन। सी० एम० बोगर); पोलि-गोनम एविक्युलेरे—नाट ग्रास—(अरिष्ट की बड़ी मात्रा में, फुफ्फुसीय क्षय और सविराम ज्वर में तथा खासकर धमनो के कड़ापन में लाभदायक सिद्ध हुई है। लाल चकत्ते का चर्म रोग)।

मात्रा—अरिष्ट।

पोलिपोरस पिनिकोला (Polyporus Pinicola)

(पाइन एगैरिक)

सविराम ज्वर, स्वल्प-सविराम ज्वर और पित्त ज्वर में उपयोगी है जबकि साथ में सिर दर्द, पीली जबान, लगातार मिचली, कौड़ी प्रदेश में मूर्च्छा का संवेदन और कब्ज हो। अपने वानस्पतिक सम्बन्धो पॉलिप ऑफिसिनैलिस या बोलेटस लैरिसिस क्यु० बी० के समान है। नरहर की हड्डी में गहराई तक धीमा, तीव्र दर्द जिससे नींद न आए।

ज्वर—बहुत सुस्ती, सिर में रक्ताधिक्य, साथ में चक्कर, चेहरा गरम और सुर्ख; सारे शरीर में चुभन, कलाई और घुटनों के दर्द के कारण रात में बेचैनी; वात पीड़ा; अधिक पसीना। सिर दर्द लगभग १० बजे दिन, साथ में पीठ दर्द, टखनों और टाँगों में दर्द जो १ बजे तीसरे पहर तक अधिक हों, फिर धीरे-धीरे कम हो।

पापुलस कैण्डिकैन्स (Populus Candicans)

(बाम ऑफ गिलेड)

तीव्र जुकाम पर विचित्र प्रभावशाली मालूम होती है, जब खासतौर पर साथ में गहरी, फटी आवाज हो या स्वरलोप भी हो जाये शरीर की सतह की संवेदनहीनता (अधिकतर पीठ और उदर), मालिश और थपकी बिना दर्द सहन हो जाए और रोगी उस क्रिया की गरमी से उपकार मानता है। अँगुलियों के सिरे मोटे हो जायें, चुटकी काटने या गड़ाने का संवेदन न हो। औषधि खाते ही बोली खुल जाती है। (कोका)।

सिर—अपने लक्षणों पर सभी से बहस करती है। सिर गरम, हाथ-पैर ठंडे। होठों पर ठण्डे घाव। (नैट्र० म्यूर)। जबान मोटी और सुन्न जान पड़े। आँखों, नाक, मुँह, गला और वायु मार्ग में जलन, उत्तेजना।

साँस-यन्त्र—तीव्र, फटी आवाज। गला और नथुने जलें। सूखी खाँसी के कारण आगे की तरफ झुक कर खड़ी हो। गलकोष और स्वरयन्त्र सूखे लगें तथा आवाज कमजोर एवं स्वरहीन। सीना और गला कच्चा और दर्दीला लगे। नासा-गलकोष जुकाम के कारण बच्चों की खाँसी, पिछले भाग से श्लेष्मा गिरे।

मात्रा—अरिष्ट।

पॉपुलस ट्रेमुलायडस (Populus Tremuloides)

(अमेरिकन ऐस्पेन)

इसके आमाशयिक और मूत्र सम्बन्धी लक्षण इस औषधि की उपयोगिता अनपच रोग और मूत्राशय के नजले में दर्शाते हैं, खासकर वृद्ध लोगों में। चीड़-फाड़ के बाद गर्भावस्था में फफोलेदार फुन्सियाँ। रात पसीना। जड़ैया।

पेट—बादी और अम्लता के साथ अनपच रोग। मिचली और कै।

मूत्र—तीव्र ऐंठन, दर्द वाली जलन। मूत्र में श्लेष्मा और मवाद हो। मूत्र ग्रन्थि बढ़ी हुई। विटप देश के पीछे मूत्र स्खलन के बाद दर्द हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: नक्स०, चाइना, कॉरनस फ्लोरिडा; कैनेबिस०; कैन्थे०।

मात्रा—अरिष्ट या पोपुलिन का विचूर्ण १x।

— :०: —

पोथोस फेटिडस (Pothos Foetidus)

(स्केक कैबेज-इक्टोडस)

दमा के रोग के लिये जो गर्द में साँस लेने से बढ़े। वायु मूर्च्छा। अक्रमिक आक्षेपिक दर्द। शारीरिक लक्षणों की अस्थिरता और उनमें बादी की अधिकता इस औषधि के विशेष संकेत हैं। (सेमुएल जोन्स)। उदर में अफरा। दमा रोग जिसमें कण्ठ में घुटन पड़े।

सिर—मानसिक अनुपस्थिति, चिड़चिड़ापन। सीमित स्थानों में सिर दर्द और साथ में कनपटी की धमनियों में तीव्र टपकन। भौंहों के बीच के स्थान से खींचन। खुली हवा से अच्छा रहे। (पल्से०)। नाक के पुल के आर-पार लाल सूजन।

उदर अफरा।

साँस-यन्त्र—आक्षेपिक काली खाँसी। कष्टदायक साँस, एकाएक बेचैनी और पसीना हो। गले में दर्द के साथ छींक आना। साँस लेने की कठिनाई के साथ सीने में दर्द। जबान सुन्न लगे। दमा, मल त्यागने से कम हो।

मात्रा—अरिष्ट और नीचे की शक्तियाँ।

प्रिमुला वेरिस (Primula Veris)

(काउस्लिप)

मस्तिष्क-प्रदाह के साथ स्नायुशूल, अधकपारी, छोटे-बड़े जोड़ों का दर्द।

सिर—सिर के चारों तरफ फीता कसने जैसा संवेदन, सिर पर हैट न रख सके। (कार्बो० एसिड)। माथे की खाल तनी हो। खड़े होने से गिरने का भय। तीव्र चक्कर, जैसे भारी चीजें घूम गई हों। कानों में भिनभिनाहट, खुली हवा में कम।

साँस-यन्त्र—साँस मार्ग में जलन और चुभन के साथ खाँसी। दुर्बल आवाज।

मूत्र-सम्बन्धी—मूत्र में बनफशे के फूल की तेज गन्ध (टेरेबिंथिना)।

अंग—दाहिनी तरफ की काँख की पेशी वेदनापूर्ण। अंगों में भारीपन और सुस्ती, खासकर कन्धों में। दाहिने हाथ की हथेली में जलन। हाथ और पैर के अँगूठे में खींचन के साथ दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : साइक्लैमेन०, रैनानक्युलस०, इनोथेरा-ईवनिंग प्राइमरोज—(शिथिलता आये, पानी-सा पतला दस्त, शिशु हैजा, मस्तिष्क में शोथ, गुल्म), प्रिमुला-फैरिनोसा-दी वाइल्ड प्राइमरोज (चर्मप्रदाह खासकर पहली अँगुली और अँगूठे पर)।

मात्रा—२ शक्ति।

प्रिमुला ऑब्कोनिका (Primula Obconica)

(प्राइमरोज)

प्राइमरोज का विष उसकी ग्रन्थियों के बालों में रहता है, जो सरलता से टूट जाते हैं और एक उत्तेजक रस निकलता है जो चर्म में सूख जाता है।

लेकिन स्नायविक प्रकृति वाले लोगों में बिना इस पौधे के स्पर्श के भी इस विष के चर्म-लक्षण पैदा हो जाते हैं क्योंकि केवल उसके निकट आने ही से प्रभावित हो जाता है, जैसा कि सरपेंचे के विष की दशा में होता है, लक्षणों का सविराम आक्रमण, दाहिनी तरफ अधिक। जिगर और तिल्ली में दर्द। गहराई तक स्राव संचयता और तन्तुओं का तनाव, छाले। पक्षाघात संवेदना। कमजोरी। गलकोष की वेदना और चेहरे में उत्तेजना की कमी, बारी-बारी।

चेहरा—तर अकौता। फुन्सीदार दाने ठुड्डी पर। रात में जलन हो। जुलपित्ती की तरह दाने। पलक सूजे हों।

अङ्ग—बाँहों; कलाई, अगली बाँहों हाथों पर अकौता, रस भरे और छाले। कंधों की चारों तरफ बातपीड़ा। हथेली गरम और सूखी। जोड़ों और अंगुलियों का पटपटाना। अंगुलियों के बीच में दाने। हाथों के पीछे बैंगनी चकत्ते, हथेली सतह कड़ी। अंगुलियों पर छाले।

चर्म—अधिक खुजली; रात को अधिक हो, विसर्पिका की तरह लाल और सूजी हुई, सिरों पर गुल्म। उभरे हुए तल पर छोटे दाने। चर्म-लक्षण के साथ ज्वर-लक्षण।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : रस०, फैगोपाइरम (क्रियानाशक) ह्युमिया एलेगैंस, उसी तरह के चर्म लक्षण।

प्रोपाइलैमिन (Propylamin)

(डिस्टिल्ड हेरिंग ब्राइन)

तीव्र वात रोग में, एक या दो दिन में ज्वर और पीड़ा को अच्छा कर देती है। गठिया जनित चेहरे का पक्षाघात और वातिक स्थान विकल्प, खासकर हृदय बाधायें।

अङ्ग—कलाई और टखनों में दर्द, जरा-सी हरकत से अधिक हो। (ब्रायो०)। बहुत बेचैनी और प्यास। वात रोग, अंगुली से सुई पकड़ने पर भी बहुत भारी मालूम दे। अंगुलियों में चुनचुनाहट और सुन्नपन। कलाई और टखनों में दर्द, खड़ा न हो सके।

सम्बन्ध—(चेनोपोडियम वलवैरिया, इस पौधे से सड़ी मछली की गन्ध निकलती है, और इसमें प्रोपाइलैमिन अधिक मात्रा में होता है। कटिक्षेत्र और निचली पीठ के क्षेत्र में कमजोरी)।

मात्रा—लगभग ६ औंस पानी में १०–१५ बूँद मिलाकर हर दो घंटे पर, एक चाय चमम्च की मात्रा में।

प्रूनस स्पाइनोसा (Prunus Spinosa)

(ब्लैक-थॉर्न)

मूत्रयन्त्र और सिर पर विशेष प्रभाव। कुछ प्रकार के स्नायुशूल में, सारे शरीर का शोथ और खासकर पैर के शोथ में अति मूल्यवान है। पैर और टखने मोच खाए मालूम हों। **पलकों का स्नायुशूल (स्पाइजे०)।**

सिर—सिर की हड्डी के नीचे फाड़ने वाली दाब। दाहिनी तरफ के अगले भाग की हड्डी से मस्तिष्क में से होकर पिछले भाग तक तेज लपकन दर्द। दाहिनी तरफ की आँख के ढेले में ऐसा दर्द मानो वह फट जायगा। दाँत में कोंचन दर्द मानो दाँत बाहर की तरफ खींचे जा रहे हों, कोई गरम चीज खाने से अधिक हो।

आँखें—**पलकों का स्नायुशूल**—दाहिनी आँख के ढेले में फटन दर्द, जो बिजली की तरह झपट के भेजे में से होकर पिछले भाग में जावे। बायीं आँख में एकाएक दर्द मानो वह फट जायेगी, जलस्राव से कम हो। उपतारा कृष्णपट प्रदाह। चक्षु गोलक के जल का धुँधलापन। आँखों में फटन संवेदन।

उदर—जलोदर। मूत्राशय में ऐंठन दर्द, टहलने से बढ़े।

मलाशय—कड़ा गुठलीदार मल, मलाशय दर्द के साथ जैसे कोई कोनेदार चीज ठेली जा रही हो। चिकने दस्त के साथ गुदा में जलन।

मूत्र—मूत्राशय में ऐंठन। असफल मूत्र-स्खलन इच्छा। तेजी से पेशाब लगे, मूत्र लिंगमुण्ड तक आता मालूम पड़े, फिर वापस होकर मूत्रमार्ग में पीड़ा उत्पन्न करे। मूत्रकृच्छ्र। पेशाब बाहर निकलने के पहले देर तक जोहना पड़े।

साँस-यन्त्र—टहलते समय साँस लेने में साँय-साँय की आवाज होना। सीने पर दाब, उत्सुक, छोटी साँस। हृदयशूल। तीव्र धड़कन, जरा-सी हरकत से भड़क उठे।

चर्म—मोटा दाद। शोथ, अँगुलियों के सिरों पर खुजली, जैसे ठिठुर गई हों।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लोरोसिरेसस; प्रुनस पैडस—वर्ड-चेरी—(गलक्षत, वक्षास्थि के पीछे दाब और मलाशय में चुभन दर्द); प्रुनस वर्जिनियाना—वाइल्ड

चेरी—(हृदय को शक्ति देती है, हृदयपिंड के ग्राहक-कोष्ठ की मन्दता और तनाव दूर करती है, उत्तेजनीय हृदय गति, हृदय के दाहिने भाग का फैलना; खाँसी, रात में, लेटने पर अधिक हो; दुर्बल पाचन-शक्ति, खासकर अधिक उम्र के व्यक्तियों में, जीर्ण वायुनलिका प्रदाह, पैशिक शक्तिवर्द्धक); पाइरस—मॉउण्टेन ऐश – (आँखों में उत्तेजना, कमर के चारों तरफ कसाव, गर्भाशय में आक्षेपिक दर्द, मूत्राशय, हृदय में आक्षेपिक दर्द; हृदय में ठंडे पानी का संवेदन, ठंडापन कण्ठनली के मुँह तक पहुँचे, वात और गठिया दर्द)।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

सोरिनम (Psorinum)

(स्केबीज वेसिकल)

इस औषधि का चिकित्सा-क्षेत्र उन रोगों में है जिन्हें खाज बाधाओं के नाम से पुकारा जाता है। सोरिनम एक ठंडी औषधि है, सिर को गरम रखना चाहे, गरमी के दिनों में भी गरम कपड़ा पहनना चाहे। ठंडक असह्य। दौर्बल्य, जो किसी यांत्रिक रोग पर निर्धारित न हो, खासकर किसी तीव्र रोगाक्रमण के बाद। प्रतिक्रिया का अभाव अथवा अणुजीवनाशक कोष का क्रमभ्रष्ट होना, जब ठीक चुनी हुई औषधियाँ असफल हो जायें। कण्ठमालिक रोगी। सभी स्रावों में घृणित गन्ध रहती है। अधिक पसीना। हृदय दौर्बल्य। चर्म लक्षण विशिष्ट रूप से स्पष्ट रहते हैं। अकसर जुकाम होने की प्रवृत्ति से मुक्ति प्रदान करती है। टहलते समय पसीना होना। उपदंश, जन्मजात या तीसरा चरण। घृणित स्राव।

मन—निराश, स्वस्थ होने से निराश। स्थाई रूप से शोकग्रस्त, धार्मिक विषाद। आत्महत्या की प्रवृत्ति।

सिर—सिर में धक्के की तरह संवेदना के साथ रात में जाग उठे। जीर्ण सिर दर्द, आक्रमण के साथ भूख लगना, साथ में चक्कर। ठोंकन दर्द। भेजा बहुत बड़ा जान पड़े, मौसम बदलने से बढ़े। पिछले भाग में धीमा दर्द। सिर की खाल पर तर दाने, बाल सिकुड़े हुए। बाल सूखे।

आँखें—पलक चिपकें। आँख आना। जीर्ण प्रदाह जो बराबर लौटा करे। पलक के किनारे लाल। स्राव तेजाबी।

मुँह—कोनों पर फटे घाव जो जल्दी अच्छे न हों। जबान-मसूढ़े घावयुक्त, कोमल तालु पर घृणित स्वाद का चिमड़ा श्लेष्मा चिपका हो।

नाक—सूखा जुकाम; नाक बन्द होने के साथ। जीर्ण जुकाम पिछले भाग से स्राव, मुँहासे।

कान—कानों के चारों तरफ कच्चे, लाल, **रस पसीजते चकत्ते**। कानों के पीछे चोटीला दर्द। कनपटी और कानों के ऊपर से गालों तक मोटा दाद। **कानों की तरफ के अकौता से** घृणित रसस्राव। असह्य खुजली। जीर्ण कर्णप्रदाह। **कानों से अति घृणित स्राव;** बादामी दूषित।

चेहरा—ऊपरी होंठ की सूजन। पीला; कोमल। **चेहरे पर तर फरन**। रोग-ग्रस्त चेहरा।

गला—तालुमूल बहुत सूजे हुए, निगलने से दर्द हो, कान में दर्द के साथ। अधिक घृणित लार, गले में चिमड़ा श्लेष्मा। बार-बार होने वाला तालुमूल प्रदाह। **तालुमूल प्रदाह की प्रकृति को दूर कर देती है**। चिकनी मवादी, मटर जैसी गोलियाँ। घृणित गन्ध और स्वाद वाला श्लेष्मा खखारना। **(एगैरिकस)**।

पेट—सड़े अण्डों की तरह डकार। **सदा बहुत भूख लगी रहे; रात के समय भी कुछ खाना आवश्यक**। मिचली; गर्भावस्था की कै। खाने के बाद उदर में दर्द।

मल—आम, खूनी। **अति घृणित, गहरे रंग का, पतला**। कड़ा, कठिन मल, साथ में मलाशय से खून बहना और जलन वाली बवासीर। शिशु का कब्ज। पीले रोगी, कण्ठमाला पीड़ित बच्चों में।

स्त्री—प्रदर : घृणित, ढोकेदार, अधिक पीठ दर्द और **दुर्बलता**। स्तन सूजे हुए और दर्द वाले। घुण्डियों से एक प्रकार का तेजाबी रस पसीजना जो ग्रन्थियों में जलन और छिलन पैदा करे।

साँस-यन्त्र—दमा, साँस कष्ट के साथ, बैठने से बढ़े, लेटने और बाहों को फैलाने से कम हो। सूखी खाँसी, सीने में बहुत कमजोरी के साथ। **वक्षास्थि के नीचे घाव जैसी संवेदना**। सीने में दर्द, लेटने से कम। हर जाड़े के दिनों में खाँसी उठे, चर्म स्फोट के दब जाने से। हर साल कभी-न-कभी इन्फ्लुएंजा भड़क उठे।

अंग—जोड़ों में कमजोरी मानो वे छिन्न-भिन्न हो जावेंगे। **अँगुलियों के नाखून के चारों तरफ दाने**। घृणित पैर-पसीना।

चर्म—मैला, धुँधला। सूखा, बिना चमक का, खुरदरे बाल। असह्य खाज। दाद जैसी फरन, खासकर सिर की खाल पर और जोड़ों के मोड़ों में खुजली के साथ, बिस्तर की गरमी से बढ़े। ग्रन्थियों का बढ़ना। वसास्रावी ग्रन्थियों से अधिक रस निकले, तेल लगा जैसा चर्म। मन्द घाव, देर में भरें। कानों के पीछे अकौता। खुरण्डदार फरन सारे शरीर पर। जरा से परिश्रम से जुलपित्ती निकल आवे। अँगुलियों के नाखूनों के पास रस दाने।

ज्वर—अधिक घृणित पसीना, रात पसीना।

नींद—असह्य खाज से अनिद्रा। जल्द चिहुँक पड़ना।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** कॉफी, सोरिनम का रोगी कॉफी पीते रहने से जल्द अच्छा नहीं होता। मौसम बदलने के समय, गरम धूप में, ठण्डक से। जरा-सी ठंडी हवा से या बाहरी हवा से भय। **घटना :** गरमी, गरम कपड़ा ओढ़ना, गरमी के दिनों में भी।

सम्बन्ध—**पूरक**—सल्फर।

तुलना कीजिए : पेडिक्युलस—हेड लाउस—(बच्चों में खुजली रोग। हाथ, पैर और गरदन के उभरे भाग पर दाने। खुजली, रौद्रत्वक। अध्ययन और काम करने की असाधारण-मनोवृत्ति) पेडिक्युलस (कूटीज) मोह ज्वर और खाई ज्वर एक रोगी से दूसरे में फैलती है। प्रतिक्रिया के अभाव के सम्बन्ध में **कैल्केरिया और नैट्रम आर्स** से तुलना कीजिए। (**गावेर्टनर** भविष्य को बुरा देखना, विश्वास न होना, आँखों के रोग से कष्ट, ऊँचाई का भय। जुलपित्ती। ३० और २०० का व्यवहार करें। (ह्वीलर)।

मात्रा—२०० शक्ति और उससे ऊँची। बार-बार दोहराना नहीं चाहिए। सोरिनम को लगभग ६ दिन अपना प्रभाव प्रकट करने में लगते हैं और केवल एक ही मात्रा ऐसे लक्षण उत्पन्न कर सकती है जो हफ्तों तक रहें। (एजेडी)।

टिलिया (Ptelea)

(वाफर ऐश)

आमाशय और जिगर के रोगों की उत्तम औषधि है। जिगर प्रदेश की टीस। भारीपन। बायीं करवट लेटने से बहुत बढ़ती है। आमाशय की कमजोरी। दमा रोग।

सिर—मन्द और बुद्धिहीन संवेदना। माथे से नाक की जड़ तक दर्द, बाहर को ढकेलता हुआ दर्द, अग्रभागिक सिर पीड़ा जो आवाज, हरकत, रात में, आँखें मलने से अधिक हो, अम्लता के साथ। कनपटी, मानो आपस में दबाई गई हो।

मुँह—लार अधिक, सूखे, कड़वे स्वाद के साथ। जबान पर सफेद या पीला मैल; खुरखुरी, सूजी मालूम दे। जबान पर लाल और उभरे दाने मालूम दें।(आर्जे० नाइट्रि०) मैल बादामी, पीला हो सकता है।

आमाशय—बोझ और भरापन। कौड़ी प्रदेश में चुभन, मुँह में सूखापन के साथ। डकार, मिचली, कै, पेट में लगातार छिलन, गरमी और जलन की संवेदना।

खाने के बाद पेट में खालीपन। पेट और जिगर लक्षण अंगों में पीड़ा के साथ संबंधित हों।

उदर—दाहिनी तरफ बहुत बोझ और दर्द, भारी टीस दाहिनी तरफ लेटने से कम हो। जिगर वेदनापूर्ण, सूजा हुआ, दाब असह्य। उदर का सिकुड़ना।

साँस-यन्त्र– पीठ के बल लेटने पर फुफ्फुस में दाब का संवेदन और दम घुटे। दमा, कष्टदायक साँस, हृदय क्षेत्र में ऐंठन दर्द।

नींद—अशान्त, भयानक स्वप्न के साथ, रात्रि भय, जागने पर सुस्ती और प्रफुल्लित।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बायीं करवट लेटने पर, प्रातःकाल। घटना : खट्टी चीज खाने पर।

सम्बन्ध–तुलना कीजिए : मर्क०; मैग्ने० म्यूरि०; नक्स; चेलिडो०।

मात्रा—१ से ३० शक्ति।

—:०:—

पुलेक्स इरिटैन्स (Pulex Irritans)

(कॉसन फ्ली)

मूत्र और स्त्री-लक्षण महत्त्वपूर्ण हैं।

सिर—बहुत उतावलापन, खिन्न और चिड़चिड़ा। अगले भाग का दर्द, आँखों में बड़ी होने का संवेदन। चेहरा मुरझाया हुआ बूढ़ों जैसा।

मुँह–कसैला स्वाद। गले में धागे जैसा संवेदन। प्यास, खासकर सिर दर्द के समय।

आमाशय—साँस और स्वाद घृणित। तीव्र मिचली, कै, ओकाई और गशी के साथ। मल बहुत घृणित। उदर फूला हुआ।

मूत्र—थोड़ा घड़ी-घड़ी मालूम हो, मूत्राशय में दाब और मूत्र-मार्ग में जलन के साथ। स्खलन एकाएक बन्द हो जाये, बाद में दर्द। मूत्र घृणित, न रोक सके; बहुत जल्दी से करना पड़े। मासिकधर्म के पहले मूत्राशय में उत्तेजना।

स्त्री—मासिक धर्म देर में हो। मासिककाल में लार अधिक बहे। योनि में जलन। प्रदर : अधिक घृणित, हरा-पीला दाग लग जाये; मासिकधर्म और प्रदर के धब्बे जल्दी धोये न जा सकें। पीठ दर्द। (आक्जैलिक एसिड)

पीठ—टीस, कमजोर, स्कन्धास्थि के नीचे पेशियों में खींचन।

ज्वर—सारे शरीर पर आँच जैसी लगे, जैसे भाप पर बैठा हो; आग के पास बैठने पर भी कम्प लगे।

चर्म चुनचुनीदार खुजली। शरीर पर छरछराते चकत्ते। चर्म से दुर्गन्ध निकले।

घटना-बढ़ना—घटना : बैठने या लेटने पर। बढ़ना : बायीं करवट, इधर-उधर चलने-फिरने।

मात्रा—ऊँची शक्ति।

पल्सेटिला (Pulsatilla)

(विंड फ्लावर)

औषधियों में वायु-दिशा-दर्शक।

पल्सेटिला के चुनने में मानसिक भाव और अवस्थायें मुख्य सांकेतिक लक्षण होते हैं। यह विशेष रूप से स्त्री-रोग की औषधि है, खासकर कोमल, विनीत, सरलता से झुक जाने वाली प्रकृति की स्त्रियाँ। उदास जल्द रो दे; बात करते समय रुदन करे; परिवर्त्तनशील विरोधाभास, रोगी खुली हवा खोजता है, वहाँ अच्छा मालूम होता है। गोकि सर्दी लगती है। सभी श्लैष्मिक झिल्लियाँ रोगग्रस्त हों। स्राव, गाढ़ा, मन्द और पीलापन लिये हरा। अक्सर लौह की आधारित शक्तिवर्द्धक औषधियों के बाद सांकेतिक होती है। चेचक की ठीक चिकित्सा न होने के बाद लक्षण बराबर बदलते रहते हैं। बिना प्यास, चिड़चिड़ापन और शीत से काँपे। जब युवाकाल की अवस्था में स्वास्थ्य बिगड़ने के तीव्र आक्रमण हों। अति स्पर्शकातर, सिर ऊँचा करके रखना चाहे। एक तकिये से असुविधा। हाथों को सिर के नीचे करके लेटे।

मन—रुदन, सरल, डरपोक, चिड़चिड़ा। शाम को अकेले रहने से भय, अन्धेरे में रहने से प्रेत भय और भूत का भय। ढाढस पसन्द करे। बच्चे खिलवाड़ और चुम्बन पसन्द करें। जल्दी उत्साहहीन हो जाये। विपरीत लिंग के लोगों में भय। धार्मिक विषाद। सुख और दुःख की चरम सीमा पसन्द करे। अति भावुक। मानसिक अस्थिरता।

सिर—सिर में भ्रमणशील चिलकन, दर्द चेहरे और आँखों तक बढ़े, चक्कर, खुली हवा में कम। अगले भाग में और आँखों के घेरों के ऊपर दर्द। स्नायुशूल, दाहिनी कनपटी से शुरू हो, उसी तरफ की आँख से तेजाबी आँसू। अधिक परिश्रम से सिर दर्द हो। चाँद पर दाग।

कान—मानो कोई चीज बाहर को ढकेली जा रही हो। ऊंचा सुने मानों कान भरे हों। कर्ण प्रदाह। गाढ़ा, मन्द स्राव, घृणित गंध। बाहरी कान सूजा हुआ लाल। नजले का कर्ण प्रदाह। कर्ण शूल, रात में बढ़े। सुनने की तीव्रता कम करती है।

आँखें—गाढ़ा, अधिक, पीला, मन्द, स्राव, अनुत्तेजक। आँखों में खुजली और जलन। अधिक जलस्राव और श्लैष्मिक स्राव, पलक सूजे, चिपके हुए। बिलनी, नेत्र छिद्र की शिरायें बहुत बढ़ी हुईं। नवजात शिशु का नेत्रप्रदाह। मन्द नेत्रप्रदाह, मन्दाग्नि के साथ, गरम कमरे में अधिक।

नाक—जुकाम, दाहिनी नथना बन्द, नाक की जड़ पर दाब। सूँघने की शक्ति लोप। नाक के भीतर बढ़ी हुई, हरी, घृणित, खुरण्ड। शाम को नाक बन्द हो जाये। पीला श्लैष्मा, सुबह को अधिक। बुरी गन्ध; जैसा पुराने जुकाम में होता है। नाक की हड्डियाँ वेदनापूर्ण।

चेहरा—दाहिनी तरफ का स्नायु-शूल, अधिक आँसू निकलने के साथ। नीचे का होंठ फूला हुआ जो मध्य में चिपटा हो। आँखों के घेरों के ऊपर शूल जो सन्ध्या से आधी रात रहे, दर्द के साथ शीत।

मुँह—चिपचिपा स्वाद। सूखा मुँह, बिना प्यास; घड़ी-घड़ी धोना चाहे। सूखे होंठों को अक्सर चाटा करे। निचले होंठ के बीच में चिटकन हो। पीली या सफेद जबान जिस पर चिमड़ा श्लेष्मा चिपका हो। दाँत दर्द, मुँह में ठंडा पानी रखने से कम रहे। (कॉफि०) मुँह से घृणित दुर्गन्ध। (मर्क०; आरम०)। खाना, खासकर रोटी कड़वी लगे। अधिक मीठी लार। स्वाद परिवर्तनशील, कड़वा, पित्त का, पीठी का, नमकीन, घृणित। विरसता। उत्तेजक वस्तुओं की इच्छा।

आमाशय—स्निग्ध, गरम, खाने और पीने से घृणा। डकार, खाने का स्वाद देर तक रहे; बरफ, फल, पेस्टरी का स्वाद। कड़वा स्वाद, सभी चीज का स्वाद कम मालूम पड़े। छिछले चर्म घाव की तरह दर्द, अफरा। मक्खन से घृणा। (सैंग्वि०)। गला जले। मन्दाग्नि, खाने के बाद कसाव, कपड़ा ढीला करना पड़े। सभी रोगों के साथ प्रायः प्यास का अभाव। खाने के बहुत देर बाद उसी की कै। खाने के एक घण्टे पहले पेट में दर्द। (नक्स०)। पेट में बोझ जैसा, खासकर जागने पर। कुतरन, भूखापन। (एबीज कै०)। पेट के गढ़े में टपकन मालूम हो। (एसाफिटिडा) कमजोरी, खासकर चाय पीने वालों में। जब हिचकी, सुबह को घृणित स्वाद के साथ।

उदर—दर्द करे, तना हुआ, तेज गड़गड़ाहट। पत्थर जैसी दाब शाम को शीत के साथ शूल।

मल—गड़गड़ाहट, पानी-सा, रात में अधिक, कभी दो पाखाने एक तरह के न हों। फल खाने के बाद दस्त। (आर्से०; चायना)। बादी बवासीर, खुजली और चुभन दर्द के साथ। पेचिश, श्लेष्मा और खून, (मर्क०; रियुम)। रोजाना दो या तीन बार साधारण मल।

मूत्र—अधिक वेग; लेटने से अधिक हो। मूत्र-स्खलन, खाँसते या वायु विसर्जन के समय। मूत्र त्यागने के बाद मूत्राशय में आक्षेपिक दर्द।

स्त्री—मासिक धर्म का अप्राकृतिक रुकना। (सिमिसिफ्यूगा, सेनेसियो० आरियस, पॉलीगोनम०)। पैर भींगने से, कमजारी से, या रक्तहीनता से मासिक धर्म का दब जाना। मन्द स्राव। शांत, मिचली, धँसन दर्द; रुक-रुक कर। प्रदर: तेजाबी, जलन पैदा करने वाला, क्रीम जैसा। पीठ में दर्द, थकावट। मासिक धर्म के समय या बाद में दस्त।

पुरुष—सुजाक, अण्ड प्रदाह; उदर से अण्ड तक दर्द, मूत्रमार्ग से गाढ़ा पीला स्राव, सुजाक की पुरानी अवस्था। मूत्रमार्ग का बन्द होना, केवल बूँद-बूँद टपके, धार रुक-रुक कर। (क्लिमैटिस)। तीव्र मूत्राशय ग्रंथि प्रदाह। पेशाब करते समय दर्द और ऐंठन, चित् लेटने से बढ़े।

श्वास-यन्त्र—अनियमित स्वरभंग। असामयिक, कुछ देर के लिए आवाज भारी हो, फिर गायब हो जावे। शाम को और रात में सूखी खाँसी, आराम पाने के लिए बिस्तर पर उठ बैठना पड़े और अधिक मात्रा में बलगम निकले। सुबह की खाँसी। सीने पर दाब और दर्द। कौड़ी पर बहुत दर्द। खाँसी के साथ पेशाब निकल पड़े। (कॉस्ट०)। सीने के बीच में घाव की तरह दर्द। बलगम सादा, गाढ़ा, कड़वा, हरापन लिये। छोटी साँस, आकुलता और बायीं तरफ लेटने से दिल धड़के। (फॉस)। लेटने पर दम घुटे।

नींद—शाम को जागना, पहली नींद अशान्त। जागने पर थकावट और अप्रफुल्लित। तीसरे पहर नींद रोकी न जा सके। हाथ को सिर के नीचे करके सोए।

पीठ—गरदन की जड़ और पीठ में तेज चमकन दर्द, कंधों के बीच में, त्रिकास्थि में, बैठने के बाद।

अंग—बेचैन, अनिद्रा और शीत के साथ जाँघों और टाँगों में खींचन, तनाव का दर्द। अंगों में दर्द, तेजी से जगह बदले, तनाव के साथ दर्द; झटके के साथ ऊपर चढ़े। केहुनी के चारों तरफ सुन्न होना। कटि-संधि में दर्द; घुटने सूजे हुए, फटन, खींचन दर्द के साथ। शाम के निकट एड़ी में दर्द; रोगग्रस्त अंग नीचे लटकाने से कष्ट बढ़े (वाइपेरा) अगली बाँहों और हाथों की शिरायें फूली हुई। पैर लाल, सूजे, फूले हुए। टाँगें थकी हुईं। और भारी लगें।

चर्म—मसालेदार भोजन के बाद, दस्त के साथ जुलपित्ती, मासिक धर्म में देर होने से, कपड़ा उतारते समय। छोटी चेचक। युवाकाल में मुँहासे। नसों का फूलना।

ज्वर—बेवाई फटना, गरम कमरे में भी, बिना प्यास। सीमित स्थानों में दर्द के साथ, शीत, शाम को अधिक हो। ४ बजे शाम शीत। रात में असह्य जलन, गरमी, शिराओं के तनाव के साथ, कई स्थानों में गरमी लगना; दूसरों में ठंडक। एक तरफ का पसीना, पसीना के समय दर्द। बाहरी गरमी असह्य, शिरायें तनी हों। ज्वर उतरने के समय सिर दर्द, दस्त, अरुचि, मिचली।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : गरम से, गरिष्ट, चर्बीले भोजन से, खाने के बाद, शाम के लगभग, गरम कमरे में, बाईं तरफ या बिना दर्द वाली करवट लेटने से, पैर लटकाने से। घटना : खुली हवा में, हरकत से, ठण्ड प्रयोग से, ठंडे भोजन से और ठंडी चीज पीने से, गो कि प्यास न हो।

सम्बन्ध—पेंयोरम; अक्सर जुकाम की पुरानी अवस्था में पल्सेटिला के बाद सांकेतिक होती है। जोनोसिया असोका—सैराका इण्डिका—(मासिक धर्म का अप्राकृतिक रुकना, मासिक धर्म का अति प्रवाह, स्त्री-जननेन्द्रिय पर शक्तिशाली प्रभाव। उदर पीड़ा), ऐट्रिप्लेक्स (गर्भाशयिक लक्षण, मासिक धर्म का रुकना, मूर्च्छा वायु, कन्धों के बीच में ठण्डक, गरम भोजन से अनिच्छा, विचित्र भोजन; धड़कन, अनिद्रा) पल्सेटिला, न्युटालियाना, उसी प्रकार का प्रभाव।

तुलना कीजिए : साइक्लैमेन; कैलिबाइक्रोम; कैलि सल्फ; सल्फर।

पिमेंटा—आल्सपाइस – (एक तरफ का स्नायुशूल, शरीर के कुछ भाग गरम और कुछ ठंडे)। एनाजाइरिस (सिर दर्द, मासिक-धर्म का रुकना)।

पूरक : कॉफिया; कैमोमि०; नक्स०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

पाइरोजेनियम (Pyrogenium)

(आर्टिफिसियल सेप्सिन)

इस औषधि का परिचय इङ्गलिश होमियोपैथिक चिकित्सकों ने कराया था, यह औषधि पतले गौ मांस को सड़ाकर और धूप में २ सप्ताह तक सुखाकर तब शक्तिवान बनाई जाती है। इसकी सिद्धि और बहुत-सी चिकित्सा सम्बन्धी अनुभवी बातें इसी शक्तिवान की हुई औषधि से एकत्रित की गई हैं। डॉ० स्वान ने कुछ विषैली मवाद को शक्तिवान बनाया था और इसकी सिद्धि की गयी है और चिकित्सा में व्यवहार की गई है। इन दोनों शक्तिवान औषधियों में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता। पाइरोजेन, अधिक बेचैनी के साथ दूषित अवस्थाओं की बहुत बड़ी औषधि है। "दूषित ज्वर में, खासकर प्रसूति ज्वर में पाइरोजेन अपनी उपादेयता दर्शायी है कि

यह एक शक्तिशाली होमियोपैथिक दोषनाशक और अनपच निवारक औष
एच० सी० एलेन ज्वर, क्षय-ज्वर; मोह ज्वर, सड़े पदार्थ से विषाक्रमण, झिल्ल
कटे घाव में पीब आना; गन्दी नाली से विषाक्रमण, जीर्ण मलेरिया, गर्भपात
असर, ये सभी अवस्थायें कभी-न-कभी ऐसे रूप धारण कर सकती हैं जब इस
शाली औषधि की आवश्यकता हो जाये। सभी स्राव अति घृणित होते हैं—
धर्म का, प्रसव की सफाई; दस्त-कै, पसीना इत्यादि। फोड़ों में बहुत पी
जलन। जीर्ण अवस्थायें जो किसी दूषित अवस्था पर निर्धारित हों। उत्तेज
और दूषित ज्वर में हृदय गति रुकने की सम्भावना। इन्फ्लुएञ्जा, आंत्रज्वर ल

मन—आकुलता और उन्मादीय विचारों से भरा हो। बातूनी। अपने व
अमीर समझे, बेचैन। शरीर को बाँहों और टाँगों से भरी हुई समझे। सोते या
में यह न बता सके कि यह स्वप्न देख रहा है।

सिर—बिना दर्द के थरथराहट। नाक के पर्दों का पंखे की तरह ि
(लाइको० फॉस०)। बेचैनी के साथ फटन, सिर दर्द।

मुँह—जबान लाल, सूखी, चिटकी हुई, चिकनी जैसी बार्निश पोती हो
सूखा, बोलना कठिन। मिचली और कै। स्वाद अति सड़ा हुआ। साँस घृणित

आमाशय—पीसी हुई काफी की तरह कै। पेट में पानी गरम होते ही कै व

उदर—मूत्राशय और मलाशय में असह्य मरोड़। फूला हुआ, दर्द, कटन

मल—दस्त, अति घृणित, कत्थई रंग, बिना दर्द, अनैच्छिक। कब्ज; मल
न निकले, (ओपियम) ठस जाने से निकलना कठिन। मल बड़ा काला, दु
काली गोली की तरह।

दिल—हृदय के आसपास थकान। धड़कन। संवेदन मानो हृदय भर
सदा अपने दिल की धड़कन सुना करे। नाड़ी असाधारण तेज, शरीर त
असमान। बायाँ स्तन घुण्डी के क्षेत्र में दर्द। हृदय चेतनता।

स्त्री—प्रसव सम्बन्धी अन्त्रावरण झिल्ली प्रदाह, अधिक स्राव, घृणित व
साथ गर्भपात के बाद रक्त-विषाक्रमण। मासिक धर्म अति घृणित। गर्भाशय
प्रदाह। मन्द वस्ति गह्वर प्रदाह के कारण हर मासिक काल में ज्वर। दूषित
संक्रमण। वस्तिगह्वर प्रदाह। प्रादाहिक स्राव। चीरा लगवाने के बाद
दूषित अवस्था।

ज्वर—ठंडक से कम्प। विषैला ज्वर। पीब आने की अवस्था। कम्प प
शुरू हो। ताप तेजी से बढ़े। बहुत गरम पसीने के साथ बहुत गरमी, मगर प
निकलने से ताप कम न हो।

अंग—गरदन की रक्तनलियों में थरथराहट। हाथ, बाँह और पैर का सुन्न होना। सभी अङ्गों और हड्डियों में टीस। बिस्तर बहुत कड़ा मालूम पड़े। (आर्नि०)। सुबह को बहुत कमजोरी। चोटीलापन, हरकत से कम हो। (रस०)। दूषित शय्याक्षत।

चर्म—थोड़ी-सी कटन या जरा-सी चोट भी बहुत सूज जाये और प्रदाहित हो जाये, बदरंग। सूखा।

नींद—अर्ध निद्रा में जाग पड़े। सारी रात स्वप्न देखे।

घटना-बढ़ना—घटना—हरकत से आराम मिले।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : स्ट्रेप्टोसिन (ज्वरनाशक क्रिया, संक्रमण रोगों में दूषित अवस्थायें)। क्रिया में तीव्र, खासकर तापावस्था में। स्टैफिलोसिन (उन रोगों में जहाँ स्टैफिलोकॉक्कस मुख्य कीटाणु बाधक हों, जैसे मुँहासे, फोड़े, फुन्सियाँ, फुफ्फुसावरण में मवाद पैदा होना, दिल के भीतर की झिल्ली का प्रदाह, इत्यादि), सेपिन—डॉ० शेड का तैयार किया हुआ प्रोटियस वल्गैरिस का एक विष, वही लक्षण हैं जो पाइरोजेनियम में पाये गये हैं जिसमें इसका अधिकांश अंश है) एचिनेसिया; कार्बो०, आर्स०, लैके०, रस०; बैप्टि०।

पूरक : ब्रायो०।

मात्रा—६ से ३० और ऊँची शक्तियाँ। अक्सर न दोहरायें।

क्वैसिया (Quassia)

(क्वैसिया-ऊड)

आमाशयिक यन्त्रों पर शक्तिदायक क्रिया करती है। (जेनशियाना०, हाइड्रै०) आँखों पर स्पष्ट प्रभाव करती जान पड़ती है, धुँधलापन और मोतियाबिन्द पैदा करती है। जिगर में दाहिनी तरफ पसलियों के बीच की पेशियों में दर्द। जिगर में दाब और चिलकन और उसी से सहानुभूति पीड़ा तिल्ली में भी।

आमाशय—वायु और अम्लता के साथ कमजोरी लाने वाली मंदाग्नि। गला जलना और पेट दर्द। डकार के साथ खाना ऊपर आये। उदर खाली और धँसा जान पड़े। संक्रामक रोग के बाद मंदाग्नि, खासकर इन्फ्लुएञ्जा और पेचिश के बाद। जबान सूखी या कत्थई, चमकीला मैल। जिगर का कड़ापन और जलोदर भी साथ में।

मूत्र—अधिक इच्छा; वेग रोकना असम्भव, रात-दिन बहुत पेशाब होना। जैसे ही कन्चा आवे; बिस्तर भीग जाये।

अंग—जम्हाई लेने और अँगड़ाई लेने की प्रवृत्ति। (रस०)। पीठ में ठंडापन। भूख के साथ शिथिलता। आन्तरिक ठंडापन के साथ अंगों का ठंडापन। (हेलोडर्मा)।

मात्रा—१ से ३ शक्ति या ऐक्वा क्वासिया की एक चम्मच की एक मात्रा।

करकस ग्लैंडियम स्पिरिटस (Quercus Gl. Sp.)

(स्पिरिट डिस्टिल्ड फ्रॉम टिंचर ऑफ एकॉर्न कर्नेल्स)

इसका प्रयोग पहले-पहल रैडेमैचर ने जीर्ण प्लीहा रोग में किया था; प्लीहा शोथ। शराब के प्रभाव को मारती है। चक्कर, सिर में आवाज के साथ बहरापन। मद मिश्रित पेय की इच्छा को नष्ट करती है; निम्न मात्रा में कई महीनों तक औषधि दें। शोथ और जिगर रोग। गठिया में और वादी के साथ जीर्ण मलेरिया में लाभदायक।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : ऐन्जेलिका (अरिष्ट में ५ बूँद प्रति मात्रा, दिन में तीन बार, मद से घृणा उत्पन्न करती है, इसके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न यन्त्रों की दुर्बलता, मन्दाग्नि, स्नायविक सिर दर्द इत्यादि; जीर्ण वायुनलिका प्रदाह में स्राव बढ़ाने के लिए)। सियानोथ०; लैके०, नैट्र० म्यूरियै०, हेलिऐन्थस (प्लीहा बढ़ी और दर्द वाली)।

मात्रा—परिस्रुत स्पिरिट की १० बूँद से एक चम्मच तक दिन में ३ या ४ बार। कुछ समय के लिए दस्त शुरू हो सकता है। यह अच्छा प्रभाव है। करकस ऐकॉर्न ३x विचूर्ण में प्लीहा रोग पर, वादी, अफरा में, पुराने मलेरिया में और मद्यपान की आदत छुड़ाने में अच्छा काम करती है। (क्लार्क)।

क्विल्लाया सैपोनैरिया (Quillaya Saponaria)

(चिली सोप-बार्क)

तीव्र जुकाम, छींक और गलक्षत को उत्पन्न और अच्छा भी करती है। जुकाम के शुरू में अति प्रभावशाली है। अक्सर उसको आगे बढ़ने से रोकती है। गलक्षत के साथ जुकाम, गले में गरमी और सूखापन। कठिन बलगम के साथ खाँसी। भूसीदार चर्म।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैलि हाइड्रियोडिकम; जेल्से०; एलियम सेपा; स्क्विला। सैपोनैरिया (गञ्चत, अनैच्छिक मूत्र स्खलन)। सेनेगा।

मात्रा—अरिष्ट से १ शक्ति।

रेडियम (Radium)

(रेडियम ब्रोमाईड)

होमियोपैथिक मेटेरिया मेडिका का एक महत्वपूर्ण योग खासकर जब से डिफेनवैंच के सिद्धीकरण ने इसके लक्षण को निश्चित रूप से ठीक-ठीक दर्शाया। १,००,००० रेडियो शक्ति के रेडियम ब्रोम का प्रयोग किया गया था। यह वात रोग और गठिया, सभी चर्म रोगों में, खासकर मुँहासे, तिल, मस्से, घाव, कर्कट में लाभदायक पाई गई है। रक्तचाप की कमी। सारे शरीर में टीस, बेचैनी के साथ, हिलने, बोलने से कम। जीर्ण संधि-वात हो। पॉलिमार्फो न्युक्लियर न्युट्रोफिल्स की स्पष्ट अधिकता। बहुत कमजोरी।

मन—भयभीत, उदास, अन्धेरे में अकेले रहने का भय, लोगों के साथ रहने की इच्छा। थका हुआ और चिड़चिड़ा।

सिर—सिर के पीछे दर्द के साथ चक्कर, बिस्तर में जाने पर बायीं तरफ अधिक। सिर की जड़ में और चाँद पर दर्द, तीव्र कटि-पीड़ा के साथ-साथ। दाहिनी आँख के ऊपर तीव्र दर्द जो पिछले भाग और चाँद पर फैले, खुली हवा में कम हो। सिर भारी लगे। अगले भाग का दर्द। दोनों आँखों में टीस, नासिका छिद्रों में खुजली और सूखापन। खुली हवा में कम। दाहिनी तरफ के निचले जबड़े के कोने में टीस दर्द। पाँचवीं मौखिक नाड़ी का स्नायुशूल।

मुँह—मुँह का सूखापन। कसैला स्वाद। जबान के सिरे पर चुभन संवेदना।

आमाशय—आमाशय में खालीपन। आमाशय में गरम संवेदन। मिठाई, मलाई की बरफ से घृणा। मिचली और धँसन, वायु डकार।

उदर—दर्द, तीव्र ऐंठन, गड़गड़ाहट, अफरा। मैकबर्नें-बिन्दु और द्विवक महाराव के स्थान के ऊपर दर्द। अधिक अफरा। कब्ज और ढीला मल बारी-बारी से। गुदा खाज और बवासीर।

मूत्र—ठोस पदार्थों का अधिक निकलना, खासकर क्लोराइड का। मूत्र और नलिका की उत्तेजना, अलब्यूमन। रवेदार और कौषिक पदार्थों के टुकड़े निकलना। वात लक्षणों के साथ गुर्दा प्रदाह। अविरत रक्तस्राव।

स्त्री—योनिलिंगिका की तीव्र खाज। देर में और क्रमभ्रष्ट मासिक धर्म, पीठ-दर्द। मासिक धर्म शुरू होते ही उदर में विटप देश पर टीस हो। दाहिने स्तन में दर्द, मालिश से कम।

साँस-यन्त्र—वक्षास्थि गह्वर के ऊपर गुदगुदी के साथ लगातार खाँसी। सूखी, आक्षेपिक खाँसी। गला सूखा, दर्द करे, सीना कसा हुआ।

पीठ—गरदन के पीछे टीस। ग्रीवा कशेरुकाओं में दर्द, लङ्गड़ापन, सिर आगे को झुकाने से बढ़े, खड़ा होने से या बैठने पर कम हो। कटि और त्रिकास्थि में पीड़ा, दर्द हड्डी में मालूम हो, लगातार हरकत से कम हो। कंधों और कटि त्रिकास्थि के बीच में दर्द, टहलने के बाद कम।

अंग—सभी अङ्गों में, जोड़ों में तीव्र दर्द, खासकर घुटनों और टखनों में, कन्धों, बाँहों, हाथों की अँगुलियों में तेज दर्द। टाँगें, बाँहें, गरदन चुरचुरी मालूम हों, मानों हिलने से टूट जायेंगी। बाँहें भारी मालूम दें। कन्धों में चुरचुराहट। पैर की अँगुलियों, पिंडली, कटि-सन्धि और खोखले स्थानों में दर्द। टाँगों और कटि-पेशियों में दर्द। सन्धि-प्रदाह, टीस, रात में अधिक हो। अँगुलियों का चर्म प्रदाह। अँगुलियों के नाखूनों में चुचुकन परिवर्तन।

चर्म—छोटे दाने। अयनिका और चर्म प्रदाह, खुजली, जलन, सूजन, लाली के साथ। सड़न और घाव। सारे शरीर पर खुजली, जलन, मानो चर्म जल रहा हो। उपत्वक प्रदाह।

नींद—बेचैनी। सुस्ती के साथ औंघाई। स्वप्न स्पष्ट, आग लगने के।

ज्वर—आंतरिक ठण्डक, संवेदन, दाँत कटकटाना, दोपहर तक। आंतरिक ठण्डक, बाद में चर्म का गरम होना जो पेट की खराबी और बादी से सम्बन्धित हो।

घटना-बढ़ना - घटना : खुली हवा, लगातार हरकत, गरम जल से स्नान करना, लेटने से, दाब। बढ़ना : उठने पर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एनाकार्डियम (इससे उत्पन्न हुआ घाव रेडियम के घाव की तरह होता है। यह आक्रमण स्थान से भिन्न किसी दूसरी जगह हो सकता है और देर के बाद मालूम पड़ सकता है)।

तुलना कीजिए : एक्स-रे; सीपिया; युरेनियम, आर्से०, पल्से०, कॉस्टिकम।
क्रियानाशक : रस० वेने०, टेल्यूरियम।
मात्रा—३० और १२ विचूर्ण।

रैननक्युलस बल्बोसस (Ranunculus Bulb.)

(बटर कप)

विशेष रूप से पेशी तन्तुओं और चर्म पर काम करती है और इसका विशिष्ट प्रभाव सीने की दीवारों पर होता है जैसे पार्श्व-वेदना। मद्यपान का दुष्प्रभाव। शराबी की बकवाद। आक्षेपिक हिचकी। वक्षोदक रोग। सारे शरीर में झटके। हवा और स्पर्श से उत्तेजना। जीर्ण गृध्रसी।

सिर—चिड़चिड़ापन, माथे और आँखों के ढेलों में दर्द। सिर की खाल में रेंगन संवेदन। माथे में भीतर से बाहर की तरफ दाब दर्द।

आँखें—दिन में दिखाई न देना (दिनौंधी) चक्षु-पटल धूएँ की तरह। दाहिनी आँख पर दर्द, खड़े होने और टहलने से अच्छा लगे। चक्षु-पटल पर छाले, अति पीड़ा के साथ, प्रकाशातंक और जल-प्रवाह।

सीना—वक्षास्थि में, पसलियों में, उनके बीच के जगहों में और दोनों कोखों में कुचलन जैसा अनेक प्रकार का दर्द और सन्ताप। पसलियों के बीच का वात रोग। खुली हवा में टहलने से सीने में शीत। सीने में, कन्धों के बीच में चिलकन; साँस भीतर लेने से, हरकत से बढ़े। सीने में वात रोग मानो चर्म के भीतरी भाग में घाव हो गया है। उदर का दाब से कोमलपन। कन्धों के डैनों के निचले किनारे में पैशिक दर्द, बैठे रहकर कामकाज करने पर छोटी जगहों में जलन।

चर्म—जलन और तीव्र खाज, स्पर्श से बढ़े। कड़ी गुठलियाँ। अति खाज के साथ दाद। वर्तुलाकार विसर्पिका, हल्के नीले किनारे। हथेलियों में खुजली। हथेलियों पर छालेदार दाने। नाखून कोमल। अंकुरदार चर्म। अँगुलियों के सिरे और हथेली पपड़ीदार, सूखे और रसदार दाने।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: खुली हवा में, हरकत से, स्पर्श से, आकाशीय परिवर्त्तन, भींगा, तर, तूफानी मौसम, शाम को। ठण्ढी हवा से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

सम्बन्ध: असमान: सल्फर, स्टैफि०।

तुलना कीजिए: रैननक्यु० ऐक्रिस (कटि पेशियों और जोड़ों में दर्द, शरीर को झुकाने और घुमाने से), रैननक्यु० ग्लैसियालिस - रीनडीयर फ्लावर कार्लिना—(फुफ्फुसीय रोग, वायु नलिका-फुफ्फुसीय प्रदाह—सिर में बहुत बोझ, चक्कर और संन्यास रोग की सम्भावना के साथ, रात पसीना, जाँघों पर अधिक); रैननक्यु० रेपेंस (शाम को बिस्तर में जाने पर माथे और सिर की खाल में रेंगन) रैननक्यु० फ्लैमुला (घाव, बाहों पर गलित घाव)।

इनकी भी तुलना कीजिए: ब्रायो०; क्रोटोन०; मेजे०, इयुफोर्बि०।

क्रियानाशक: ब्रायो०; कैम्फो०; रस०।

मात्रा—मूल अरिष्ट की १० से ३० बूँद शराबी बकवास में, ३ से ३० शक्ति साधारण रूप में जीर्ण गृध्रसी में। रोगग्रस्त तरफ से पैर की एड़ी में अरिष्ट लगाइये। (एम० जूसेट)।

रैननक्युलस स्केलेरैटस (Ranunculus Scle.)

(मार्श बटर कप)

इस वनस्पति कुटुम्ब की अन्य औषधियों से अधिक उत्तेजक है जैसा चर्म लक्षणों से विदित होता है। छेदन, कुतरन दर्द। स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अंडाकार विशद स्फोट। बँधे समय पर आनेवाले रोग। मूर्च्छित, पेट में दर्द के साथ।

सिर—चाँद की बायीं तरफ एक छोटी जगह पर कुतरन। भयानक स्वप्न—मुर्दों का, साँप का, लड़ाई इत्यादि का। बहती नाक, छींक और पेशाब में जलन के साथ।

मुँह—दाँत और मसूढ़े उत्तेजित। जबान नक्शेदार। कच्चे चकत्ते। मुँह छरछराता और कच्चापन। जबान में जलन और कच्चापन।

उदर—नाभि के पीछे गुल्ली ठोंकी जैसी लगे। जिगर प्रदेश के ऊपर दर्द, संवेदन कि दस्त शुरू होगा। दाहिनी तरफ की कृत्रिम पसली के पीछे गुल्ली ठोंकी जैसी संवेदना, गहरा साँस लेने से कष्ट बढ़े।

सीना—चर्मावरण उत्तेजित। हर शाम को सीने में कुचलन दर्द और थकावट। अग्रखंड के पीछे दर्द व जलन।

चर्म—रस दाने, बड़े छाले होने की सम्भावना के साथ। तेजाबी स्राव जो चारों तरफ के भाग को दर्दीला बनावे।

अंग—छेद होने जैसा दर्द। दाहिने पैर की अँगुली में एकाएक जलन, चुभन। गट्टे, जलन और दर्द के साथ, खासकर जब पैर लटका हो। हाथ और पैर की अँगुलियों में गठिया।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

रैफेनस (Raphanus)

(ब्लैक गार्डेन रैनिश)

जिगर और तिल्ली में दर्द और चिलकन उत्पन्न करती है। पित्त और लार को बढ़ाती है। अगर शलजम के साथ नमक का व्यवहार किया जाये तो कोई लक्षण प्रकट नहीं होगा। वायु की अधिक संचयता और फँसना। 'गुल्म' लक्षण। चिकने चर्म के साथ भूसी छूटना। बिम्बिका रोग। गुल्म वायु, पीठ और बाहों में शीत। कामातुर, अनिद्रा। (कैलि ब्रोमेटम०)। अत्यधिक मैथुनेच्छा—स्त्रियों में। चीरा लगाने के बाद अधिक वायुपीड़ा।

सिर—उदासी; बच्चों की तरफ से घृणा, खासकर लड़कियों की तरफ से। सिर दर्द, मस्तिष्क कोमल और दर्दीला जान पड़े। निचले पलक का शोथ। पिछले भागों में श्लेष्मा।

गला—गर्भाशय से गले तक गरम जल स्नान जैसी संवेदना; वहीं रुक जाये। गले में गरमी और जलन।

आमाशय—सड़ी डकार। कौड़ी में जलन, बाद में गरम डकार।

उदर—ओकाई और कै, भूख की कमी। फूला, तना कड़ा। ऊपर से या नीचे से कोई वायु स्खलन न हो। नाभि के पास चुभकन। मल तरल झागदार, अधिक, कत्थई, साथ में शूल और आँतों में सूजन। मल पदार्थ की कै।

स्त्री—जननेन्द्रिय की स्नायविक उत्तेजना। मासिक-धर्म अधिक और देर तक। तीव्र मैथुन इच्छा, अन्य स्त्रियों और बच्चों से घृणा, कामोन्माद।

मूत्र—गंदला, खमीरी, तलछट। मूत्र अधिक, दूध की तरह गाढ़ा।

सीना—सीने का दर्द पीठ और गले तक बढ़े। सीने के बीच में भारी ढोका और ठंडक की संवेदना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : मोमोर्डिका (तिल्ली की तह के पास अधिक कष्ट), कार्बो०; एनाका०, आर्जे०; नाइट्रि०; ब्रेसिका।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

रेटानहिया (Ratanhia)

(क्रैमेरिया—मेरो)

मलाशय के लक्षण महत्त्वपूर्ण हैं और अनुभव में उनकी पुष्टि की गई है। इस औषधि ने अनुपक्ष अच्छा किया है। तीव्र हिचकी। स्तन घुण्डी चिटकी (ग्रैफा०; यूपेटो० एरोमेटिकम)। क्षुद्र कृमि।

सिर—मल त्यागने के बाद और सिर आगे को झुकाकर बैठने पर सिर में फटन जैसा दर्द। ऐसा संवेदन मानो सिर की खाल नाक से चाँद तक खिंची हुई है।

आमाशय—आमाशय में चाकुओं की तरह कटन दर्द।

मलाशय—ऐसा दर्द मानो मलाशय शीशे के टुकड़े से भरा हो। मल त्यागने के बाद घण्टों तक गुदा में टीस और जलन रहे। सिकुड़ा लगे। गुदा पर सूखी, गरमी, एकाएक चाकू के गड़न जैसी चिलक। बहुत जोर करने पर मल बाहर निकले, बवासीर का बाहर निकलना। गुदा में दरारें; साथ में अधिक सिकुड़न; आग जैसा

जलन, बवासीर भी वैसे ही जले, ठंडे पानी से कम हो। घृणित, पतला दस्त, मल जला हुआ सा, मल त्यागने के पहले और बाद में जलन, गुदा से पसीजन। क्षुद्र कृमि : सैंटो०; टिउक्रि०; स्पाइजे०)। गुदाखाज।

संबंध—तुलना कीजिये : पियानिया, क्रोट्रोन०—(मलाशयिक स्नायुशूल), सैंग्वि०, नाइट्रि० (मलाशय का रोग) मैक्युना प्रूरेंस—डोलिकोस बवासीर, साथ में जलन बवासीर बाधायें), सिलिको-सल्फोकैलासिय ऑफ एलुमिना, स्लैग ब्लास्ट आयरन फर्नेंस सिंडर—(गुदा खाज, बवासीर और कब्ज, घुटनों की सूजन), उदर में अफरा, तनाव और कटिवात। लाइकोपोडियम की तरह।

मात्रा—३ से ६ शक्ति। लगाने के लिए मलहम के रूप में मलाशय के रोग में लाभदायक है।

रैमनस कैलिफोर्निका (Rhamnus Californica)

(कैलिफोर्निया कॉफी ट्री)

वात रोग और पेशी दर्द की सफल औषधि। पार्श्ववेदना, कटि-वात और आमाशय पीड़ा। मूत्राशय में ऐंठन, मांस पैशिक वेदना आधारित मासिक धर्म पीड़ा व कष्ट, सिर, गरदन और चेहरे में दर्द। वात रोग, जोड़ सूजे हुए, दर्दीले, स्थान परिवर्तन की प्रवृत्ति, अधिक पसीना। वातिक हृदय (वेब्सटर)। विद्यार्थियों का सिद्धिकरण। २x शक्ति।

मन—उत्तेजित, अशान्त, चिड़चिड़ापन। सुस्ती, मस्तिष्क में मन्दता और विचार शक्ति में गड़बड़ी, अध्ययन में चित्त एकाग्र न कर सके।

सिर—चक्कर, भरापन। भारी, कुचलन संवेदना, दाब से कम। हर कदम पर फटन संवेदन। सन्ताप, पिछले भाग और चाँद पर विशेष रूप से, पीछे झुकने से अधिक हो। बायीं कनपटी में धीमा दर्द। अगले (बायीं तरफ) भाग में मन्द टीस, पीछे की तरफ और माथे के ऊपर बढ़े। गहरा, दाहिनी तरफ का अग्रभागिक दर्द। पलकों का फड़कना।

कान—कम सुने। निगलने पर दाहिनी तरफ की कर्णशंकुली बाह्यार्बुद के नीचे गहराई में दर्द।

चेहरा—भरभराया, गरम जलता। जबड़े की हड्डियों से बाहर की तरफ दाब।

मुँह—मसूढ़े और होठों के बीच में सन्तापपूर्ण मुखक्षत। जबान पर मैल, बीच में साफ, गुलाबी चकत्ता।

गला—सूखा, खुरखुराहट। दाहिनी तरफ और तालुमूल दर्द करें।

आँतें—कुछ वायु के साथ कब्ज। ऐंठन और सूखा मल। वायु मिश्रित दस्त।

जनन मूत्रेन्द्रिय—अधिक मूत्र। मूत्र-मार्ग के अगले भाग में गुदगुदी, सुबह को बूँद-बूँद गिरना (अप्रमेहिक)। काम इच्छा अधिक।

साँस-यन्त्र—वक्षास्थि के निचले भाग में दाब। दाहिनी तरफ की पसलियों के बीच की पेशियों में कोमलपन।

दिल—नाड़ी परिवर्तनशील। धीमी नाड़ी।

अंग—पेशी क्रिया को न रोक सके। बेकाबू। टाँगें दर्द करें। नशीली चाल।

घटना-बढ़ना—लक्षण शाम को बढ़ते हैं।

सम्बन्ध—रैमनस कैथेर्टिका या रैमनस फ्रैंगुला—यूरोपियन बकथार्न—वात रोग की औषधि—(उदर के लक्षण, शूल दस्त; बवासीर, खासकर अजीर्ण)। रैमनस परशियाना—कैस्केरा सैग्रेडा (कब्ज में आराम देने वाली, आंत्रिक शक्ति-वर्धक और उसी पर निर्धारित मन्दाग्नि। १०–१५ बूँद अरिष्ट)।

मात्रा—अरिष्ट १५ बूँद की मात्रा में हर चार घण्टे पर एक मात्रा।

रियुम (Rheum)

(रूबार्ब)

बच्चों के उन रोगों में अक्सर उपयोगी है जब दस्त में खट्टी गन्ध हो। दाँत निकलने में कठिनाई। सारे शरीर से खट्टी गन्ध आए।

मन—अधीर और उग्र, बहुत-सी चीजें चाहे और रोए। (सिना)।

सिर—बाल वाली खाल पर पसीना, लगातार और अधिक। चेहरे पर ठण्डा पसीना; खासकर मुँह और नाक के चारों तरफ।

मुँह—अधिक लार। दाँतों में ठण्डापन। दाँत निकलने में कठिनाई, बेचैन और चिड़चिड़ा। साँसें खट्टी गन्ध। (कैमो०)।

आमाशय—अनेक प्रकार के भोजन की इच्छा, मगर जल्द ही सभी से थक जाये। तलपेट में थरथराहट। भरा मालूम हो।

उदर—नाभि के आसपास शूल। कपड़ा हटाते समय शूल। वायु गले तक चढ़ती जान पड़े।

मलाशय—मल त्यागने के पहले दर्द, पेशाब करने की प्रबल इच्छा। मल खट्टा महँके, लेई की तरह, कँपनी और कुंथन के साथ गुदा में जलन। दाँत निकलने के समय में खट्टी महक का दस्त। शूलमय, मल त्यागने की असफल इच्छा से ही मल पीछे लौट जाये।

घटना-बढ़ना-बढ़ना : कपड़ा हटाने पर, खाने के बाद, चलने-फिरने से।
तुलना कीजिये : मैग० फास०, हीपर, पोडो०; कैमो० इपी०।
क्रियानाशक : कैम्फो०, कैमो०। पूरक : मैग० कार्ब०।
मात्रा—३ से ६ शक्ति।

रोडियम (Rhodium)

(मेटल केमिकल एलिमेंट)

(डॉ० मैकफारलैन ने २०० शक्ति से सिद्ध किया)

उत्तेजित और रोआंसा। अगले भाग का सिर दर्द, सिर के भीतर से झटके आएँ। भ्रमणशील, स्नायुशूल सिर में, आँखों के ऊपर, कानों में नाक की दोनों तरफ; दाँतों में। बहुत जुकाम। होंठ सूखे, मिचली खासकर मिठाई से। मन्द सिर-दर्द। कड़ी गरदन और बायें कन्धे तथा बाँह में नीचे तक वात दर्द। बाँहों में, हथेलियों और चेहरे में खाज। उदर में बरछी गड़ने जैसे दर्द के साथ ढीला मल। वमन-क्रिया के कार्य में अति वृद्धि, मल त्यागने के बाद मरोड़। मूत्र की मात्रा अधिक। यन्त्रणापूर्ण और साँय-साँय वाली खाँसी। सीने से गाढ़ा, पीला श्लेष्मा निकले। कमजोर, चक्कर जैसा और थका जान पड़े।

रोडोडेण्ड्रन (Rhododendron)

(स्नो रोज)

छोटे-बड़े जोड़ों का दर्द स्पष्ट लक्षण है। गरमी के दिनों में वात रोग। रोग के बढ़ने का समय (तूफान आने से पहले) उत्तम संकेत है।

मन—तूफान से भय; खासकर बिजली की गर्जना से। भूलना।

सिर—कनपटियों में टीस। हड्डियों में फटन दर्द। सिर दर्द, मदिरा, प्रचण्ड वायु, ठण्डे और भीगे मौसम में रोग बढ़े। तूफान आने के पहले आँखों में दर्द। पलकों का स्नायुशूल जिसमें आँखों के ढेले, घेरे और सिर भी शामिल हों। आँखों में प्रयोग करने पर गरम संवेदन।

आँखें—पेशी वेदना, शिर से शुरू होकर आँखों में से तेज चिलकन, आँधी के पहले कष्ट बढ़े।

कान—कानों में भिनभिनाहट और टनटनाहट के साथ ऊँचा सुने। सुबह को अच्छा सुनाई देना, कुछ घण्टों के बाद शुरू हो जायें।

चेहरा—मुखमण्डलीय स्नायुशूल; तीव्र झटके, दर्द जिसमें दाँत-स्नायु भी रोग-ग्रस्त हो, कनपटी से निचले जबड़े और ठुड्डी तक; खाने और सेंकने से कम। तर मौसम में और आँधी आने से पहले दाँत दर्द। मसूढ़े सूजे हुए। घिसे दाँत ढीले हों।

सीना—तीव्र फुफ्फुसावरण दर्द जो बायीं तरफ, सीने के अगले भाग तक नीचे दौड़े। उससे साँस फूले और बोल न सके। तेज चलने से तिल्ली में चिलकन। छोटी पसलियों के निचले भाग में ऐंठन।

पुरुष—बायाँ अण्ड अधिक सूजा हुआ, ऊपर खिंचा हुआ, अण्ड-प्रदाह; सूजी ग्रन्थियाँ कुचली जान पड़ें। सुजाक के बाद अण्ड का कड़ापन और सूजन। अण्डकोष में जल संचय (साइलीशिया)।

अंग—जोड़ सूजे हुए। पैर के अंगूठों की गठिया सम्बन्धी सूजन। सभी अंगों में वातिक दर्द, खासकर दाहिनी तरफ; आराम से और तूफान के समय अधिक हो। गरदन का कड़ापन। कन्धों, बाँहों, कलाई में दर्द, आराम के समय अधिक हो। हड्डियों के सीमित स्थानों में दर्द जो मौसम बदलने के समय फिर से उभर आए। एक टाँग को दूसरी पर रक्खे बिना न सो सके।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तूफान से पहले। खराब मौसम में सभी लक्षण उभर जायें, रात में, सुबह के निकट। घटना : तूफान खतम होने पर, सेंकने से और खाने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एम्पिलॉप्सिस (अण्डकोष में जल-संचय होना और गुर्दों का शोथ)। डल्का०; रस०, नैट्र० सल्फ०।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

रस एरोमैटिका (Rhus Aromatica)

(फ्रेगरेंट स्युमक)

गुर्दा और मूत्र सम्बन्धी रोग, खासकर बहुमूत्र। अनैच्छिक मूत्र स्राव, मूत्राशय की दुर्बलता के कारण; वृद्धावस्था की मूत्र धारणा, शक्तिहीनता। इस औषधि के प्रभाव क्षेत्र में खूनी पेशाब और मूत्राशय प्रदाह भी आते हैं।

मूत्र—पीला, अलब्युमेनयुक्त, टपकते रहना। पेशाब करने के शुरू में तीव्र पीड़ा, बच्चों में अति पीड़ाजनक हो। बराबर टपका करे। बहुमूत्र रोग, कम घनत्व का, अधिक मात्रा में (फॉस० एसिड, एसेटिक एसिड)।

मात्रा—अरिष्ट, अधिक मात्रा में।

रस ग्लैब्रा (Rhus Glabra)

(स्मथ स्युमक)

नकसीर और पश्चात् मस्तिष्कीय पीड़ा। दुर्गन्धित वायु स्खलन। मुँह में घाव होना।। हवा में उड़ने का स्वप्न देखना। (स्टिक्टा०)। दुर्बलता के कारण अधिक पसीना निकलना। (चाइना)। यह दावे के साथ कहा जाता है कि यह औषधि पेट को ऐसा कीटाणुरहित कर देगी कि मल और वायु पूर्णरूप से गंधहीन हो जायगी। यह घाव की प्रकृति के साथ सड़न अवस्था पर काम करती है।

मुँह—शीताद रोग, पोषण विकार; दूध पीने वाले शिशु का मुखक्षत (वैरानिका) उपक्षतीय मुखप्रदाह।

सम्बन्ध—पारे का प्रभावनाशक कहा जाता है, और पारे का प्रयोग के बाद उपदंश के दूसरे चरण में व्यवहार की गई है।

मात्रा—अरिष्ट। प्रायः कोमल फूले हुए मसूढ़ों पर, मुखक्षत, गलकोष प्रदाह इत्यादि पर लगाने के लिये प्रयोग की जाती है।

रस टॉक्सिकोडेण्ड्रन (Rhus Toxicodendron)

(पॉयजन-आइवी)

इस औषधि के चर्म पर प्रभाव के कारण, वात पीड़ा, श्लैष्मिक झिल्ली के रोग, आंत्रिक ज्वर की तरह ज्वर, इनका अक्सर संकेत मिलता है। रस सौत्रिक-तन्तुओं पर स्पष्ट प्रभाव रखती है, जोड़, बन्धन, आवरण, कण्डरा कला इत्यादि; दर्द और कड़ापन पैदा करती है। चीरा लगवाने के बाद की बाधायें। फटन दर्द। हरकत से रस० का रोगी "उत्साहित होता है" इसलिये आसन बदलने से रोग में क्षणिक कमी होती है। जोर पड़ने से; भारी बोझ उठाने से, गरम अवस्था में भीगने से रोग उत्पन्न हो। विषैली दवायें। कौषिक तन्तु प्रदाह और संक्रमण, कारबंकल की आरंभिक अवस्था (एचिनैसिया)। ठंडक से आया वात रोग। दूषित रोग।

मन—अशान्त, उदास। आत्महत्या का विचार। अत्यन्त अशांत; बराबर करवटें बदलता रहे। प्रलापक सन्निपात, विष दिये जाने का भय। (हायोसि०) संवेदना यन्त्रों की क्षीणता। रात को महान भयभीत; बिस्तर में न रह सके।

सिर—ऐसा लगे कि कोई तख्ता माथे पर बँधा है। उठने पर चक्कर आवे। भारी सिर। भेजा ढीला मालूम दे और टहलने या उठने पर मानो खोपड़ी से टकरा रहा है। सिर की खाल उत्तेजित, जिस करवट लेटे उस करवट अधिक कष्ट हो। पिछले भाग में दर्द (रस रैडिकैंस)। स्पर्श से पीड़ा हो। माथे में दर्द और वहाँ से पीछे को जाये। सिर की खाल पर तर दाने; बहुत खुजली हो।

आँखें—सूजी हुई, लाल, शोथमय, घेरों के कौषिक तन्तुओं का प्रदाह। फुन्सीदार प्रदाह। अलोकातंक, अधिक पीला मवाद बहे। पलकों का शोथ, मवादी नेत्र प्रदाह। पलक सूजे हुए, चिपके, फूले हुए। आँखों की पुरानी चोट। कनीनिका के चारों तरफ रक्तमय घेरे। कनीनिका पर अधिक घाव। ठंड और नमी के कारण नेत्र-प्रदाह, गठियावात सम्बन्धित। आँखें घुमाने से या दबाने से दर्द करें, जरा-सा हिला न सके, जैसा तीव्र स्नायु गुल्म प्रदाह में होता है। पलक खोलने से अधिक गरम आँसू स्राव।

कान—कानों में दर्द, जैसे कोई चीज घुसी हो। गुल्म; सूजन। खूनी मवाद।

नका—छींक आना, भींगने से जुकाम। नाक का सिरा लाल, दर्द वाला घाव युक्त। नाक की सूजन। झुकने पर खून बहे।

चेहरा—चबाने से जबड़ों में चुरचुराहट। जबड़ों का आसनी से खिसक जाना। (इग्नेसि०, पेट्रोलि०) चेहरा फूला, विसर्पिका। गले की हड्डियाँ स्पर्श सहन न करें। कर्णमूल प्रदाह। मुखमण्डल का स्नायुशूल, शीत के साथ, शाम को बढ़े। क्रस्टालैक्टिया (मवाद से सिर के बालों का चिपक कर चटाई की तरह बन जाना)। (कैल्के०; वायोला ट्राइकालर)।

मुँह—दाँत ढीले और लम्बे मालूम पड़ें, मसूढ़े दर्द करें। जबान लाल और दरारेदार, मैली, सिरे पर लाल त्रिकोण, सूखी और किनारों पर लाल, मुँह के कोने घावयुक्त, ज्वर में छाले, मुँह के चारों तरफ और होठों पर। (नेट्र० म्यूरि०)। जबड़े के जोड़ों में दर्द।

गला—ग्रंथि सूजन के साथ दर्द। निगलने में गड़न दर्द। बायीं तरफ के कर्णमूल में प्रदाह।

आमाशय—न बुझनेवाली प्यास के साथ, सभी तरह के भोजन से घृणा; क्षुधाहीनता। कड़वा स्वाद। (क्युप्रम०)। मिचली, चक्कर और आमाशय फूलना, खाने के बाद। दूध की इच्छा। अधिक प्यास, सूखा मुँह और सूखे गले के साथ। पत्थर जैसा दाब। (ब्रायो०; आर्से०)। खाने के बाद औंघाई।

उदर—प्रचण्ड पीड़ा, पेट के बल लेटने से आराम मिले। पुट्ठों की ग्रंथियों की सूजन। ऊपर जाने वाली बड़ी आँत में दर्द। शूल, झुककर टहलने को मजबूर हो। खाने के बाद फूलना, तनाव। सुबह उठते ही वायु गड़गड़ाए, मगर चलने-फिरने से गायब हो जाये।

गुदा—रक्त, आँव और लाल श्लेष्मा का दस्त। जाँघों के नीचे तक फटन दर्द के साथ पेचिश। सड़ी गन्ध का मल। झागदार, दर्दहीन मल। अक्सर मलाशय के पास के फोड़े को पचा देगा। पेचिश।

मूत्र—गहरे रंग का, गँदला, गाढ़े रङ्ग का, थोड़ा मूत्र, सफेद तलछट के साथ। मूत्रकृच्छ्र, स्खलन के साथ।

पुरुष—ग्रन्थियों और लिंगावरण की सूजन, चेहरा लाल और विसर्पिका। अण्ड मोटा, फूला हुआ और शोथमय। तीव्र खुजली।

स्त्री—सूजन, साथ में योनिलिंगिका की तीव्र खुजली। वस्तिगह्वर सन्धि का कड़ापन, जो हिलते ही मालूम हो। मासिकधर्म समय से पहले, अधिक देर तक रहे, तेज़ाबी। प्रसवांतक स्राव पतला, देर तक जारी रहे, घृणित, कम मात्रा में। (पल्से०; सिकेल०)। योनि के ऊपर की तरफ झपटन के साथ (सीपिया)।

साँस-यन्त्र—ऊपरी वक्षास्थि के पीछे गुदगुदी। सूखी, कष्टदायक खाँसी, आधी रात से सुबह तक; शीत की हालत में या हाथों को बिस्तर से बाहर निकालते समय। अति परिश्रम से खून थूकना; गहरा लाल खून। इन्फ्लुएञ्जा सभी हड्डियों के साथ। (युपेटो० पर्फो०)। आवाज पर बहुत जोर देने से गला भारी होना (आर्नि०)। सीने में दाब, कड़कन दर्द के साथ, साँस न लिया जाये। वृद्ध लोगों में वायुनलिका की खाँसी, जागने पर बढ़े, श्लेष्मा के छोटे गोले खाँसने से निकलें।

दिल- अति परिश्रम के कारण बहुत बढ़ जाना। नाड़ी तेज कमजोर, क्रमभ्रष्ट, सविराम, बाँयीं बाँह के सुन्नपन के साथ। शान्त बैठने से कम्प और धड़कन।

पीठ—निगलने पर कन्धों के बीच में दर्द। पिठासे के अन्दर दर्द और कड़ापन, हरकत से या कड़ी चीज पर लेटने में कम हो। बैठे रहने से बढ़े। गरदन की जगह का कड़ापन।

अंग—जोड़ों की गरम, दर्द भरी सूजन। पेशी बँधनी, बन्धनियों और पेशी वेष्ठकारी पतले तन्तुओं के आवरण या बन्धनों में दर्द। वात दर्द : गरदन की जड़ पर, कमर पर और अङ्गों पर बड़े स्थान तक फैले, हरकत से कम (एगैरिक०)। हड्डियों के गुल्म का दर्दीलापन। अंग कड़े, पक्षाघातिक। ठण्डी, ताजी हवा सहन न हो, वह चर्म को दर्दीला करे। अन्तःप्रकोष्ठास्थि के स्नायुमार्ग में दर्द। जाँघों में नीचे तक फटन। गृध्रसी, ठंडे, तर मौसम में और रात में अधिक। अधिक परिश्रम से और बाहरी हवा लगने से सुन्नपन और सुरसुरी। पक्षाघात, परिश्रम के बाद कंप। घुटनों के जोड़ के पास कोमलपन। अगली बाँह और अँगुलियाँ शक्तिहीन; अँगुलियों के सिरों में रेंगन। पैरों में चुनचुनाहट।

ज्वर—दौर्बल्य विशिष्ट, अशान्त, कम्प। आन्त्र ज्वर, जबान सूखी और बादामी, दाँतों पर मैल, दस्त, बहुत बेचैनी। सविराम, शीत, सूखी खाँसी और बेचैनी के साथ। गरम चरण में जुलपित्ती। प्यास। शीत मानो ठंडा पानी उसके शरीर पर छोड़ा जा रहा हो, बाद में गरमी लगे और अँगड़ाई लेने की इच्छा हो।

चर्म — लाल, सूजा हुआ, अधिक खाज। फुन्सियाँ, भैंसिया दाद, जुलपित्ती, बिम्बिका, विसर्प, रसदार दाने। ग्रन्थि फूली हुई। कौषिक तन्तु प्रदाह। जलन वाला अकौता, पपड़ी बनने की सम्भावना।

नींद— अति परिश्रम के स्वप्न : गहरी नींद मानो मूर्च्छा है। आधी रात के पहले अनिद्रा।

घटना-बढ़ना--बढ़ना : सोते में ठण्डक, तर बरसाती मौसम और पानी बरसने के बाद, रात में, आराम के समय, भीगने से, चित्त या दाहिनी तरफ लेटने से। घटना : सेंकना, सूखा मौसम, हरकत, टहलना, आसन बदलना, मालिश, गरम प्रयोग से, अंगों को फैलाने से।

सम्बन्ध--पूरक : ब्रायो०, कैल्के० फ्लोरि, फाइटोल० (वात रोग)। जुलपित्ती में इसके बाद बोविष्टा लाभदायक है।

विरुद्ध--एपिस।

क्रियानाशक--दूध और ग्रिंडेलिया लोशन से स्नान कराना बहुत प्रभावशाली है। ऐम्पिलॉप्सिस ट्रिफोलिया—थ्री-लीफ उडबाइन-दूषित चर्म प्रदाह जो वनस्पति विष के कारण हुआ हो-३० और २००। रस विषाक्रमण के समान है। एलोपैथिक विशेषज्ञों ने आइवी विषाक्रमण से शरीर को सुरक्षित करने के लिए क्रम से बढ़ाते हुए मात्रा में खिलाकर या इन्जेक्शन द्वारा प्रयोग करने की सिफारिश की है, मगर यह इतनी प्रभावशाली नहीं है जितनी होमियोपैथिक औषधि होती है, खासकर रस ३० और २०० और एनाकार्डि० इत्यादि। एनाकार्डि०, क्रोटन० ग्रिंडेलिया, मेजेरि०, साइप्रिपि०, प्लम्बेगो (योनि घुण्डी का अकौता), ग्रैफा०।

तुलना कीजिये : रस रैडिकेंस (प्रायः समान प्रभाव), विशेषतायें ये हैं। जबान में जलन, सिर दर्द करने लगे, दर्द प्रायः एकबगला और एक साथ कई स्थानों में होता है, जो अक्सर दूरी पर होते हैं और एक जगह के बाद दूसरी जगह होता है। बहुत-से लक्षण अच्छी तरह शुरू हो जाने के बाद कम हो जाते हैं, खासकर बिजली तूफान में। खासतौर पर सालाना रोग का बढ़ना। (लैके०)। रस रैडिकेन्स में सिर के पिछले भाग में दर्द होता है। और गरदन की जड़ में भी ऐसा दर्द होता है जो वहाँ से उठकर सिर के ऊपर से होता हुआ आगे की तरफ बढ़ता है। रस डाइवर्सिलोबा कैलिफोर्निया पॉयजन ओक— (रस० का प्रभावनाशक, कठोर चर्म लक्षण, साथ में भयानक खुजली, चेहरे, हाथ और जननेन्द्रिय का बहुत फूलना, चर्म बहुत उत्तेजनीय, अकौता और विसर्प रोग, प्रबल स्नायविक दौर्बल्य, जरा-सा परिश्रम से थकावट आये, केवल शिथिलता ही से नींद आ जाये), जेरोफाइलम (कष्ट रजः और चर्म लक्षण) और भी तुलना कीजिए : आर्नि०; बैप्टि; लैके०, आर्से०,

हायोसि०, ओपि० (बुद्धिमांद्य अति प्रबल), मिमोसा सेंसिटिव प्लैण्ट (वात रोग, घुटने कड़े, पीठ और अंगों में कोंचन दर्द। टखनों का फूल जाना। टाँगें काँपें)

मात्रा—६ से ३० शक्ति। २०० और उससे ऊँची शक्ति रस० के पौधे और अरिष्ट के विष को मारती है।

रस वेनेनेटा (Rhus Venenata)

(पॉयजन-एल्डर)

इस रस० सम्बन्धी औषधि के चर्म लक्षण अति तीव्र होते हैं।

मन—घोर उदासी, जीने की इच्छा न रहे, निराश।

सिर—भारी, अगले भाग में दर्द, टहलने या झुकने से बढ़े। बहुत फूलने से आँखें करीब-करीब बन्द हों। कानों की फुन्सीदार सूजन। नाक लाल और चमकदार। चेहरा फूला हुआ।

जबान—सिरा लाल। बीच में दरारें। नीचे की तरफ रसदाने।

उदर—शूल के साथ ४ बजे सुबह को अधिक मात्रा में पानी जैसा सफेद मल, तेजी से निकले। प्रत्येक मल त्यागने के पहले तलपेट में दर्द हो।

अंग—दाहिनी बाँह में पक्षाघात जैसी खींचन; खासकर कलाई में, अँगुलियों तक बढ़े।

चर्म—खुजली, गरम पानी से कम। फुन्सियाँ। विसर्प, चर्म गहरा लाल अयनिका अस्थिगुल्म, हर रात में खुजलाना और लम्बा हड्डियों में दर्द।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : क्लिमेटिस। कैलिफोर्निया पॉयजन-ओक (रस डाइ-वर्सिलोबा) इसके बिल्कुल समान है। यह रेडियम के प्रभाव को नाश करती है और उसके बाद अच्छा काम करती है।

तुलना कीजिए : एनाकार्डि०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

रिसिनस कम्युनिस (Ricinus Communis)

(कैस्टर-आयल)

आमाशयिक आन्त्र मार्ग पर स्पष्ट प्रभाव रखती है। दूध पिलाने वाली माताओं का दूध बढ़ाती है। कै और ओकाई। सुस्ती और कमजोरी।

सिर—चक्कर, पिछले भाग का दर्द, रक्ताधिक्य के लक्षण, कानों में भनभनाहट। चेहरा पीला, मुँह का फड़कना।

आमाशय—अधिक प्यास के साथ भूख न लगना, पेट में जलन, मुँह में अधिक पानी आना, मिचली; अधिक मात्रा में कै होना, तलपेट का चर्म तर, मुँह सूखा।

उदर—मलाशय पेशियों के संकुचन के साथ गड़गड़ाहट, शूल, गड़गड़ाहट के साथ लगातार दस्त। ऐंठन और शीत के साथ चावल के माँड़ की तरह मल।

मल—ढीला, लगातार, बिना दर्द, अंगों की पेशियों में ऐंठन के साथ गुदा सूजी हुई, मल हरा; चिकना और खूनी। ज्वर, दुबलापन; निद्रालुता।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रेसोर्सिन। (ग्रीष्म-रोग; कै के साथ); सड़न के आन्त्रिक कीटाणु को नाश करती है, कोलस टेरासिना (पैशिक ऐंठन)। आर्से०; वेरेट्र०।

मात्रा—३ शक्ति। दूध बढ़ाने के लिये हर चार घण्टों पर ५ बूँद। पत्तियों की पुल्टिस की बाहरी स्थानीय प्रयोग।

रोबिनिया (Robinia)

(यलो लोकस्ट)

अम्लपित्त रोग की औषधि। उन अवस्थाओं में जहाँ एलब्युमेन जैसे पदार्थ की पाचन-क्रिया अति तीव्र होती है और श्वेतसार का पाचन बाधायुक्त होता है। अधिक स्पष्ट रूप से अम्लता के साथ आमाशयिक लक्षण अच्छी तरह आजमाये गये हैं और इस औषधि के सांकेतिक चिह्न हैं। रोबिनिया में अम्लता के साथ सिर के अग्र भाग का दर्द साथ-साथ रहता है। **अति खट्टी डकार।** खट्टी और हरियालीदार कै, शूल और अफरा। हर रात को आमाशय में जलन; दर्द और कब्ज, साथ में पाखाने का वेग। बच्चों को अम्लपित्त। मल और पसीना खट्टी गन्ध का। वायु का आमाशय में रुकना।

सिर—मन्द, थरथराहट वाला, अग्रभागिक दर्द, हरकत से और पढ़ने से बढ़े। आमाशयिक सिर दर्द, साथ में खट्टी कै।

आमाशय—मन्द; भारी टीस। मिचली, खट्टी डकार, तेज खट्टे पानी जैसे पदार्थ की अधिक कै। (सल्फ्यु० एसि०)। आमाशय और आँतों का अधिक फूलना। बादी शूल। (कैमो०; डायस्को०)। खट्टा मल, बच्चे से खट्टी गन्ध आये।

स्त्री—अति प्रबल मैथुनेच्छा। तीखा, घृणित प्रदर। दो मासिक धर्म काल के बीच वाले काल में खून बहना। योनि और योनि कपाट पर मोटा दाद।

सम्बन्ध—मैग्नेशिया फास०, आर्जे० नाइट्रि०, ओरेस्किन टैनेटे (अनपच रोग, अम्ल की कमी और पाचन-क्रिया की मन्दता, २४ घण्टे पर एक खुराक देना चाहिए)।

मात्रा—३ शक्ति। कुछ समय तक व्यवहार करना चाहिये।

रोजा डैमैसेना (Rosa Damascena)

(डैमास्क रोज)

कर्ण-नली के रोगग्रस्त होने के साथ पीड़ाजनक मौसमी एन्फ्लुएञ्जा में लाभदायक है।

कान—कम सुनाई देना, टनटनाहट। कण्ठकर्णी नली का नजला। (हाइड्रे०; मर्क्युरियस डलसिस०)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : मौसमी इन्फ्लुएञ्जा में फ्लियम प्रैटेंसे—टिमोथी ग्रास—(दमा रोग के साथ इन्फ्लुएञ्जा; पानी-सा जुकाम, नाक और आँखों की खुजली; अक्सर छींकना, कष्टदायक साँस। ३-३० शक्ति का व्यवहार करें) सकसि० एसिड सैंबाडि०, युफ्रे०; सोरि०, कैलि हाइड्रियोडिकम नैफ्थे०।

मात्रा—निचली शक्तियाँ।

रियुमेक्स क्रिस्पस (Rumex Crispus)

(यलो डॉक)

इसकी विशेषता दर्द है, बहुस्थानीय और परिवर्त्तनशील, न तो कोई निश्चित स्थान हो और न एक प्रकार का। खाँसी, गले के निचले भाग में गुदगुदी के साथ लगातार होती रहे। यह गुदगुदी वायुनलिका के विभाजन स्थान तक नीचे उतरती है। गले के तल भाग को छूने ही से खाँसी आवे। जरा-सी ठण्डी हवा लगने से अधिक हो; सब खाँसी शरीर और सिर को चादर से ढँकने पर बन्द हो जाये। रियुमेक्स श्लैष्मिक झिल्ली के स्राव को कम कर देती है। और साथ-साथ स्वरयन्त्र और कण्ठनली की श्लैष्मिक झिल्ली के साथ बढ़ाती है। इसका चर्म पर प्रभाव विशिष्ट पड़ता है जहाँ पर यह घोर खुजली उत्पन्न करती है। लसिकावाहिनी ग्रन्थियों का बढ़ जाना और उनके स्राव का दूषित होना।

आमाशय—जिह्वा के किनारे दर्दवाले, मैलदार। तलपेट में कड़ी चीज का संवेदन। हिचकी, लार अधिक, मिचली, मांस न खा सके; उससे डकार आवे अति

तीव्र खाज। अधिक मद्यपान से आया कामला रोग। जीर्ण पेट दर्द, तलपेट में टीस और सीने में चिलकन, गले के तल भाग की तरह बढ़े, हरकत से या बातचीत करने से बढ़े। बायीं छाती में, खाने के बाद दर्द, अफरा।

साँस-यन्त्र—नाक सूखी। खाँसी गले के तल भाग में गुदगुदी पैदा करे। नाक और कण्ठनली से अधिक श्लेष्मिक स्राव। सूखी कष्टदायक खाँसी, नींद न आने दे। दाब से, बात करने से और खासकर ठंडी हवा में साँस लेने से, और रात में अधिक हो। कफ मुँह भर-भर पतला, पानी-सा झागदार बलगम, बाद में तारदार और चिमड़ा, स्वर-यन्त्र और कण्ठनली का कच्चापन। वक्षास्थि के पीछे सन्ताप खासकर बायीं तरफ, बायें कन्धे क पास। ग्रीवास्थि के नीचे दर्द : गले में ढोंके का संवेदन।

मल—कत्थई पानी-सा दस्त बहुत सबेरे खाँसी के साथ, जो बिस्तर के बाहर भगा दे। बढ़े हुए तपेदिक रोग मे बहुमूल्य है। (सेनेगा०, पल्से०; लाइको०, आर्से०)। मलाशय में खपच्ची जैसी गड़न के साथ गुदा में खुजली, बवासीर।

चर्म चर्म की अधिक तीव्र खाज, खासकर निचले अंगों में; कपड़ा उतारते हुए ठंडी हवा लगने से अधिक हो। जुलपित्ती, मिले-जुले छत्ते।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : शाम को, ठण्डी हवा में साँस लेने से, बायीं तरफ के सीने में, कपड़ा हटाने पर।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कास्टिक०; सल्फर; बेला०, रियुमेक्स में क्राइसोफेनिक एसिड होता है, जो इस औषधि के चर्म लक्षण से मिलते हैं। रियुमेक्स एसिटोसा शीप-सॉरेल-(जून के महीने में इकट्ठा किया जाता है और सुखाया जाता है, चेहरे के अन्तस्त्वक रोग में लगाया जाता है (काउपर्थवेट)। सूखी लगातार छोटी खाँसी और आँतों में तीव्र पीड़ा, काग बढ़ा हुआ, गलकोष की सूजन, कर्कट रोग में भी), रियुमेक्स आब्टु सिफोलियस-लैपैथम-ब्राड लीक डॉक—(नकसीर और बाद में सिर दर्द, गुर्दों में दर्द, प्रदर)।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

रूटा ग्रेवियोलेंस (Ruta Graveolens)

(रियु-बिटरवर्ट)

अस्थिकला बन्धनियों पर, आँखों पर और गर्भाशय पर काम करती है। वे रोग जो खासतौर पर सकोचनी बन्धनों पर अधिक जोर पड़ने से उत्पन्न होते हैं। अस्थिकला में संचयता। आँखों की पेशियों पर अधिक जोर पड़ना, सभी भाग पीड़ाजनक

रहते हैं, मानो कुचले गये हैं। मोच खाना (आर्निका के बाद)। मोच के बाद लँगड़ापन। कामला रोग, अधिक सुस्ती। कमजोरी और निराश होना। चोटीली "कुचली" हड्डियाँ।

सिर—कील गड़ने जैसा दर्द, अधिक नशे की चीज पीने से। अस्थि आवरक वेदनापूर्ण। नकसीर।

आँखें—आँखों पर जोर पड़ना, बाद में सिर दर्द आये, आँखें लाल, गरम और दर्दीली, अधिक सीने-पिरोने से या छोटे अक्षर पढ़ने से। (नैट्र० म्यूरि०, आर्जें० नाइट्रि०)। संविधान क्रिया की गड़बड़ी। पढ़ते समय थकावट दर्द। घेरों के भीतर दाब। चक्षुपटीय बन्धनी में चोटीलापन। भौं पर दाब। दुर्बल या कष्टदायक दृष्टि।

मलाशय—आमाशय में टीस, कुतरन दर्द।

मूत्र—पेशाब करने के बाद मूत्राशय की गरदन में दाब, दर्द के साथ संकुचन। (एपिस)। लगातार पेशाब लगा करना, मूत्राशय भरा मालूम पड़े।

गुदा—कठिन मल, बहुत काँखने पर निकले। कब्ज और झागदार आम का मल बारी-बारी, मल के साथ खून जाना। बैठे रहने पर गुदा में फटन, चिलकन। निचली आँतों में कर्कट रोग। प्रसव के बाद जब मल-त्यागने के लिए बैठे, तभी काँच निकल आवे। घड़ी-घड़ी मल त्यागने की असफल इच्छा। झुकने पर गुदा बाहर निकल आवे।

साँस-यन्त्र—अधिक मात्रा में गाढ़ा, पीला बलगम के साथ खाँसी, सीना कमजोर लगे। वक्षास्थि पर दर्दीला स्थान, सीने में कसाव के साथ छोटी साँस।

पीठ—गरदन की जड़ में, पीठ और कमर में दर्द। पीठ का दर्द जो दाब से और पीठ के बल लेटने से कम हो। कटिवात, सुबह उठने के पहले अधिक हो।

अंग—मेरुदण्ड और अङ्ग कुचले मालूम पड़ें। पिठासा और कमर दर्द करे। कुरसी पर से उठने पर टाँगें जवाब दें, कटि और जाँघ इतनी कमजोर हो (फॉस०, कोनियम०) अँगुलियों में सिकुड़न। कलाई और हाथों में दर्द और कड़ापन। वात गण्ड। (बेंजोइक एसिड)। गृध्रसी, रात को लेटने पर अधिक हो, पीछे से दर्द कटि के नीचे तक जाँघों में। फैलाने वाली नस छोटी हो जाये। (ग्रैफा०)। पेशी बँधनी दर्द वाली। पैर की पिछली मोटी नस में टीस। टाँगों के फैलाने पर जाँघों में दर्द। पैर और टखनों की हड्डियों में दर्द। बहुत बेचैनी।

घटना बढ़ना—बढ़ना : लेटने पर, ठंडक से, तर मौसम में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रैटानहिया, कार्डुअस०। गुदा (उत्तेजना) जेबोरैंडी; फाइटो०; रस०; साइलिशिया; आर्नि०।

क्रियानाशक—कैम्फो० ।

पूरक : कैल्के० फास० ।

मात्रा—१ से ६ शक्ति । वातगण्ड पर टिंचर लगाने के लिए और आँख में लोशन छोड़ने के लिए ।

सैबाडिला (Sabadilla)

(सेबाडिला साड : एसैग्रिया ऑफसियालिस)

नाक और अश्रु ग्रंथियों के श्लैष्मिक झिल्ली पर काम करती है । इससे जुकाम और मौसमी इन्फ्लुएञ्जा की तरह लक्षण उत्पन्न होते हैं, यही प्रभाव होमियोपैथी में व्यवहृत हुए हैं । शीत; ठंडक असह्य । कृमि रोग, परावर्तित लक्षणों के साथ; अति मैथुन इच्छा; विक्षेप । लगातार कटन दर्द के साथ बच्चों का दस्त ।

मन—उत्तेजित, डरपोक, चिहुँकने वाला । अपने ही लिए गलत धारणा रखना । कल्पना करे कि वह बहुत बीमार है, शरीर के सभी भाग सिकुड़ गये हैं कि वह गर्भवती है कि उनको कर्कट रोग हो गया है । सविराम ज्वर में सरसाम ।

सिर—चक्कर, साथ में ऐसा संवेदन कि सभी चीजें एक दूसरे की चारों तरफ घूम रही हैं, आँखों के सामने कालापन और मूर्च्छा जैसा भी मालूम हो । शिथिलता और दाब जैसा लगे । गन्ध अत्यधिक असह्य सोचने से सिर दर्द और अनिद्रा । पलक लाल, जलन हो, आँखों से पानी बहना । सुने कम ।

नाक—आक्षेपिक-छींक, नाक बहती रहे । जुकाम, तीव्र अग्रभागिक दर्द और आँखों की लाली और जल-प्रवाह के साथ । अधिक पानी-सा नाक-स्राव ।

गला—दर्द वाला, बायीं तरफ से शुरू हो । (लैके०) । अधिक मात्रा में चिमड़ा बलगम । ऐसा संवेदन कि कोई चर्म का टुकड़ा गले में लटक रहा है, जिसे निगलना पड़े । गरम चीज खाना और पीना आराम दे । खाली निगलना अति कष्टदायक । मुख-गह्वर और गला सूखा हो । गले में ढोके का संवेदन जिसे निगलते रहना पड़े । जीर्ण गलक्षतः ठण्डी हवा से कष्ट बढ़े । जबान जली जैसी ।

आमाशय—सूखी खाँसी और साँस की कठिनाई के साथ पेट में आक्षेपिक दर्द । प्यास न हो । तीव्र भोजन से घृणा । मीठी और चर्बीली चीजों की प्रबल भूख । मुँह में पानी रहना, अधिक लार । आमाशय में ठण्डी, खाली संवेदना । गरम चीजों की इच्छा । मीठा-सा स्वाद ।

स्त्री—मासिकधर्म देर में; क्रमहीन । सविराम (क्रियोजो०, पल्से०) गर्भाशय के क्षणिक और स्थानीय प्रदाह के कारण और रक्तहीन अवस्था बारी-बारी ।

ज्वर – शीत की प्रधानता; नीचे से ऊपर की तरफ। सिर और चेहरा गरम; हाथ और पैर बरफ जैसे ठण्डे; साथ में शीत। ज्वराक्रमण के समय आँखों से पानी बहना। प्यास न लगे।

अंग—पैर की अंगुलियों के नीचे और बीच के चर्म का चिटकना, नीचे की तरफ सूजना।

चर्म—पेड़ की छाल की तरह सूखा। नाखून अंकुरदार, आकार भ्रष्ट, मोटे गरम, जलन; रेंगन, कलबलाहट संवेदना। गुदा में खुजली।

घटना-बढ़ना - बढ़ना : ठंडक और ठंडी चीज पीना, पूर्णिमा। घटना : गरम खाना और गरम चीज पीना, लपेट के रखना।

सम्बन्ध—पूरक : सीपिया।

तुलना कीजिये : वेरैट्रिना (सैबाडिला का क्षारीय तत्व है, वेरैट्रम का नहीं, स्नायुशूल में लगायी जाती है और शोथ घटाने के लिए। इसके ५ ग्रेन में १ ड्राम लैनोलिन मिलाकर जांघों के भीतर भाग में रगड़ने से पेशाब बढ़ता है), कॉल्चि०; नक्स, एरण्डो और फोलैटिन फ्लेअम प्रैटेन्स—टिमोथी फ्लू शक्तिकृत—१२—बहुत-से रोगों में अकसीर और विशेष रूप से संवेदन-हीनता उत्पन्न करती है (रैबे) कुमारिनम (फ्लू)।

क्रियानाशक : पल्स, लाइकोपो०, कोनियम, लैके०।

मात्रा ३ से ३० शक्ति।

सैबाल सेरुलेटा (Sabal Serrulata)

(सॉ पाल्मेटो)

सैबाल प्रजनन मूत्रेन्द्रिय यन्त्रों की उत्तेजना के समान क्रियात्मक प्रभाव रखती है। साधारण और काम सम्बन्धी दौर्बल्य। पोषण और तन्तु निर्माण को बढ़ाती है। सिर, आमाशय और डिम्बाशयिक लक्षण विशिष्ट रूप से विद्यमान हैं। मूत्र ग्रंथि वृद्धि, शुक्र नाड़ीक्षय और मूत्र की कठिनाई में मूल्यवान है। मूत्रमार्ग के झिल्ली ग्रन्थि भाग पर काम करती है। मूत्र-ग्रन्थि के साथ नेत्र प्रदाह। स्तन-ग्रन्थियों के कम बढ़ने में अमूल्य है। सो जाने का भय। सुस्ती, लापरवाही और उदासीनता।

सिर—सम्भ्रान्ति, भरापन, सहानुभूति से घृणा, क्रोधित कर दे। सिर दर्द के साथ चक्कर। दुर्बल रोगियों में स्नायुशूल। दर्द नाक से ऊपर की तरफ माथे पर चढ़े।

पेट—डकार और अम्लता। दूध की इच्छा। (रस०; एपिस०)।

मूत्र—रात में लगातार पेशाब करने की इच्छा। अनैच्छिक मूत्र-स्राव; संकोचन पेशी का आंशिक पक्षाघात। जीर्ण सुजाक। कठिन मूत्र-स्खलन। मूत्र-ग्रन्थियों के बढ़ जाने के साथ मूत्राशय प्रदाह।

पुरुष—प्रोस्टेट ग्रन्थियों के रोग, बढ़ जाना, ग्रन्थि-रस का निकलना। अण्ड-क्षीणता और मैथुन शक्ति की कमी। मैथुन के समय वीर्य स्खलनकाल दर्दीला। काम सम्बन्धी स्नायु दुर्बलता। जननेन्द्रिय ठण्डी लगे।

स्त्री—डिम्बाशय कोमल और बढ़े हुए। स्तन सिकुड़े हुए। आयोड०, (कैलि आयोडेटम)। युवा लड़कियों के स्नायुविकार, दबी हुई या परिवर्तित कामप्रवृत्ति।

साँस-तन्त्र—नाक के जुकाम के साथ अधिक बलगम। जीर्ण वायु-नलिका प्रदाह (स्टेन०, हीप०)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: फॉस्फो० एसिड, स्टिगमाटा मेडिस; सैटेल०; एपिस०। मूत्र ग्रंथिक लक्षणों में: फेर० पिक्र०, थूजा, पिक्रिक एसिड (अधिक कामोत्तेजना) पॉपुल्स ट्रेम्युलॉयडस, (मूत्राशय प्रदाह के साथ मूत्र-ग्रन्थि वृद्धि)।

मात्रा—मूल अरिष्ट, १० से ३० बूँद। ३ शक्ति अक्सर अच्छी होती है। अच्छा काम करने के लिए अरिष्ट को ताजे बेरीज (झड़बेरी) से तैयार करना चाहिए।

सैबाइना (Sabina)

(सैबाइना)

गर्भाशय पर विशेष प्रभाव रखती है, इसके अतिरिक्त रसदार और रेशेदार झिल्लियों पर; इसलिए यह गठिया रोग में व्यवहार की जाती है। त्रिकास्थि के त्रिटपास्थि तक दर्द। रक्तस्राव, जहाँ रुधिर पतला हो और थक्के बन जायें। गर्भपात की प्रवृत्ति, खासकर तीसरे महीने में। घोर धड़कन, खिड़की खोलना चाहे।

मन—संगीत असह्य, स्नायविकता उत्पन्न करे।

सिर—मासिकधर्म दबने के साथ चक्कर। फटन का सिर दर्द, एकाएक शुरू हो और धीरे-धीरे कम हो। सिर और चेहरे पर खून दौड़े। चर्वण पेशियों में खींचन दर्द। चबाते समय दाँतों में टीस।

आमाशय—गला, जलना। लेमोनेड पीने की इच्छा। कड़वा स्वाद। (रस०) तलपेट में भाला गड़ने जैसा दर्द, पीठ के आरपार।

उदर—धँसन, संकुचन दर्द। शूल, अधिकतर कुक्षि प्रदेश में। अफरा।

गुदा—भरापन। कब्ज। पीठ से विटप स्थान तक दर्द। बवासीर, गहरे लाल खून के साथ; अधिक रक्तस्राव।

मूत्र—गुर्दा प्रदेश में जलन और थरथराहट। खूनी पेशाब, तीव्र इच्छा, मूत्राशय सूजा हुआ; सभी जगह थरथराहट। मूत्रमार्ग की सूजन।

पुरुष—सुजाक, मवादी स्राव के साथ। आतशकी मस्से। लिंगाग्र में जलन, दर्द। लिंगावरण वेदनापूर्ण, पीछे हटाने में कठिनाई। इच्छा वृद्धि।

स्त्री—मासिकधर्म अधिक मात्रा में, चटकीला। गर्भाशय पीड़ा जाँघों तक बढ़े। गर्भपात का भय। मैथुन की इच्छा की वृद्धि। मासिक-धर्म के बाद प्रदर, छीलने वाला, घृणित। दो मासिककाल के बीच वाले समय में खून बहना, अधिक मैथुन इच्छा के साथ। (एम्ब्राग्रिसिया)। खून का रुकना, अधिक प्रसवांतक दर्द। सरल गर्भपात वाली स्त्रियों में अधिक मासिकस्राव। गर्भपात के बाद डिम्बाशय और गर्भाशय की सूजन। गर्भाशय से पास-गुल्म को निकालने में सहायक। (कैन्थे०)। त्रिकास्थि से विटप देश तक दर्द और नीचे से ऊपर को, योनि में चमक उठे। रक्त प्रवाह, कुछ थक्केदार, जरा-सा हिलने से अधिक हो। गर्भाशयिक दुर्बलता।

पीठ—त्रिकास्थि और विटप देश के बीच में एक हड्डी से दूसरी हड्डी तक दर्द। पिठासे में पक्षाघात जैसी पीड़ा।

अंग—जाँघों के अगले भाग में चोटीला दर्द। एड़ी और प्रपादास्थि में चुभन। जोड़ों में प्रादाहिक दर्द। गठिया, गरम कमरे में बढ़े। लाल चमकती सूजन। गठिया। अस्थि गुल्म। (एमोनियम० फॉस०)।

चर्म—गोल मस्से अति खाज और जलन के साथ। अधिक मांसाकुर। (थूजा०; नाइट्रि० एसिड)। मस्से। चर्म में काले छिद्र।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : जरा-सा हिलने से, गरमी से, गरम हवा से। घटना : ठंडी ताजी हवा से।

सम्बन्ध—पूरक—थूजा।

तुलना कीजिए : सैंग्विसोर्बा—(शिराओं में रक्ताधिक्य और मन्द रक्त स्राव, निचले अङ्गों की शिराएँ फूली और सिकुड़ी हों, पेचिश, स्नायविक, चिड़चिड़े लोगों में। दीर्घकालीन अधिक मासिकधर्म, साथ में सिर और अङ्गों में रक्ताधिक्य। वयःसन्धिकालीन रक्त-प्रवाह। २x शक्ति का व्यवहार करें), सैंग्विसुगा—दी लीच—(रक्तस्राव, खासकर गुदा से। ६x व्यवहार करें), रोसमैरिनस (मासिक-धर्म बहुत पहले, अति पीड़ा, बाद में गर्भाशय रक्तस्राव। सिर भारी, औंघाई। बिना प्यास के निचले अङ्गों का बर्फीली ठण्डक के साथ ठिठुरना, बाद में गरमी। स्मरण-शक्ति दुर्बल), क्रोकस सैटाइवा; कैल्के०, ट्रिलि०, इपिका०, मिलिफो०, एरिजे०।

क्रियानाशक : पल्से०।

मात्रा—स्थानीय प्रयोग, मस्सों पर, अरिष्ट। आन्तरिक व्यवहार, ३ से ३० शक्ति तक।

सैक्रम ऑफिसिनेल सकरोज (Saccharum Off. Sucrose)

(केन-शूगर)

महान डॉ० हेरिंग के अनुसार स्त्रियों और बच्चों के अधिकांश जीर्ण रोग अधिक चीनी के व्यवहार से होते हैं।

चीनी कीटाणुनाशक है। संक्रमण और सड़न को रोकती है, रेशों को गलाती है और घोर अभिसरण क्रिया उत्पन्न करके स्राव को बढ़ाती है; इस प्रकार से घाव को रक्तरस से भीतर की तरफ से बाहर की तरफ साफ करती है और घाव भरने में सहायक होती है। टाँगों के घाव।

चीनी हृदय की पेशियों के लिए शक्तिवर्द्धक और विकास करने वाली है, इसलिये रक्त की सन्तुलन क्रिया की लोपता में और कई तरह की हृदयपटल की बाधाओं में लाभकारी है। एक शक्तिवर्द्धक और पोषक का काम करती है जैसे रक्तहीनता में, क्षीण रोग में, स्नायु दौर्बल्यता में इत्यादि। वजन और शक्ति बढ़ाती है।

चक्षुतारा का धुँधलापन। धुन्ध दृष्टि। अम्लता और गुदा खाज। ठंडा बलगम। हृदय पटल की क्षीणता।

मोटे, फूले, बड़े अंगों वाले बच्चे, जो क्रुद्ध, चिड़चिड़े, कराहते रहनेवाले हों, चंचल स्वभाव के, स्वादिष्ट भोजन के इच्छुक हों, स्वादिष्ट चीजें और पौष्टिक भोजन का वहिष्कार करें। पैरों का शोथ। हर सातवें दिन सिर दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सैकरम लैक्टिस—शूगर ऑफ मिल्क—लैक्टोज—(दिन में अधिक मूत्र स्राव, कष्टदायक दृष्टि, ठण्डे, दर्द, जैसे महीन बर्फीली सूइयाँ गड़ाई जा रही हैं, चुनचुनाहट के साथ, मानों पाला लगा हो, अधिक शारीरिक थकान। शूगर ऑफ मिल्क, बड़ी मात्रा में बैसिलस एसिडफोलस के विकास के लिए जो कि आँतों में सड़न बाधाओं को ठीक करने और कब्ज दूर करने के लिए उपयुक्त)।

मात्रा—३० शक्ति और ऊँची। गठित घाव में स्थानीय प्रयोग। बिना पटल विकार के हृदय की पैशिक दौर्बल्य के कारण हृद्-स्थगन की कठोर अवस्थाओं में अन्य चिकित्सा के साथ आधी छटाँक मिश्री सुबह और शाम मूल्यवान है। मिरगी रोग, रक्त में चीनी की कमी से स्नायु में उत्तेजना होती है और विक्षेप की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। यदि कोई यांत्रिक रुकावट न हो और केवल गर्भाशय की क्षीणता हो

तो चीनी शीघ्रता से बच्चा पैदा करने के लिए मूल्यवान है। २५ ग्राम चीनी पानी में घोलकर हर आधे घण्टे पर कई बार दें।

तुलना कीजिए : सैकरिन (लाला-रस और पाचन रस क्रिया को रोकती है जिससे अनपच उत्पन्न होता है। प्रोफे० लेबिन का विश्वास है कि यह स्राविक कोषों पर काम करती है और इससे (दाहिने कोखे में) दर्द, क्षुधाहीनता, दस्त और क्षीणता उत्पन्न होती है।

सैलिसिलिकम एसिडम (Salicylicum Acidum)
(सैलिसिलिक एसिड)

इसके लक्षणों से इसका उपयोग वात रोग, मन्दाग्नि और कान की खराबी के सिर चकराने में सांकेतित है। इन्फ्लुएञ्जा के बाद की शिथिलता, कानों में टनटनाहट और बहरापन में भी उपयोगी है। रक्तमूत्र।

सिर—चक्कर, बाईं तरफ गिरने की आशंका। सिर-दर्द, एकाएक उठते समय भ्रांति। जुकाम की सम्भावना। कनपटियों में बरछी लगने जैसा दर्द।

आँखें—चक्षुपट में रक्तस्राव। इन्फ्लुएञ्जा के चक्षुपट प्रदाह और अलब्यूमेन मूत्र में भी।

कान—कानों में गर्ज और टनक। चक्कर के साथ बहरापन।

गला—दर्द करे, लाल, सूजन। गलकोष प्रदाह, निगलना कठिन।

आमाशय - मुखक्षत, जलन, दर्द और घृणित साँस के साथ। बादी, अफरा; गरम, खट्टी डकार। सड़ा उफान। उफानजनित मन्दाग्नि। जबान बैंगनी, सीसे के रंग की, घृणित साँस।

मल—सड़ा दस्त, आमाशयिक-आंत्रिक बाधा, खासकर बच्चों में, मेंढक के अंडों की तरह हरे मल। (मैग्ने० कार्बो०)। गुदा की तीव्र खाज।

अंग—घुटने सूजे हुए दर्दीले। तीव्र सन्धि प्रदाह, वात रोग, स्पर्श और हरकत से बढ़े, अधिक पसीना। दर्द जगह बदले। गृध्रसी शूल, जलन दर्द रात में अधिक। अधिक पैर पसीना और उसके दब जाने से रोग उत्पन्न होना।

चर्म—खाजदार फुन्सियाँ और दाने; खुजलाने से अच्छा मालूम हो। बिना नींद के पसीना। जुलपित्ती। गरम जलता चर्म। धूम्र रोग। मोटा दाद, हड्डियों का सड़ना और मुलायम होना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सैलोल (जोड़ों में वात रोग, सन्ताप और तनाव के साथ, आँखों के ऊपर दर्द, पेशाब से कासनी-गन्ध) कॉल्चि०, चाइना०, लैक्टि० एसिड; स्पाइरिया और गॉल्थेरिया में सैलिसिलिक एसिड होता है।

मात्रा—दशमलव ३ विचूर्ण।

सेलिक्स नाइग्रा (Salix Nigra)

(ब्लैक-विलो)

पुरुष और स्त्री दोनों की जननेन्द्रिय पर स्पष्ट प्रभाव रखती है। वायु मूर्च्छा और स्नायविकता। कामोत्तेजक विचार और कामातुर स्वप्न। जननेन्द्रिय की उत्तेजना को नियन्त्रित करती है, कामोत्तेजना को संयत बनाती है। कामोन्माद और वीभत्स प्रदर्शन। अति कामोन्माद बाधा के साथ तीव्र सुजाक, पीड़ाजनक लिंगोत्थान। हस्तमैथुन के बाद के उपद्रव, वीर्यक्षीणता।

चेहरा—लाल, फूला खासकर नाक का सिरा, आँखें रक्त मिली और स्पर्श तथा हरकत से पीड़ा। बालों की जड़ दर्द करे। नकसीर।

स्त्री—मासिक धर्म के पहले और बीच में अधिक स्नायविक गड़बड़ी, डिम्बाशय में दर्द, कठिन मासिक स्राव। डिम्बाशय में रक्ताधिक्य और स्नायुशूल। अति रजः, गर्भाशय सौत्रिक अर्बुद के साथ रक्त स्राव। कामोन्माद।

पुरुष—अण्ड की पीड़ाजनक हरकत।

पीठ—त्रिकास्थि और कटि-क्षेत्र के आर-पार दर्द। जल्दी पैर न बढ़ा सके।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : याहिम्बिन०; कैन्थे०।

मात्रा—अरिष्ट की वृहत् मात्रा, ३० बूँद।

सैल्विया ऑफिसिनैलिस (Salvia Off.)

(सेज)

दुर्बल रक्तसंचार की अवस्था में अधिक पसीना निकलने को नियन्त्रित करती है, उस तपेदिक में कम उपयोगी है जिसमें रात-पसीना और दम घोंटने वाली गुदगुदोदार खाँसी हो। अधिक दुग्ध-स्राव। चर्म पर शक्तिवर्द्धक प्रभाव।

साँस-यन्त्र—गुदगुदीदार खाँसी, खासकर तपेदिक में।

चर्म—मुलायम, ढीला, दुर्बल रक्तसंचार और ठण्डे अङ्गों के साथ। अत्यधिक पसीना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : क्राइसेन्थेमम ल्युकैन्थेमम—ऑक्स आई डेसी—पसीना निकलने वाली ग्रन्थियों पर विशिष्ट भाव रखती है। साइप्रिपेडियम की तरह स्नायु मण्डल को शान्त करती है। दाहिनी तरफ के जबड़े और कनपटी की हड्डियों में फटन दर्द। आँतों और मसूढ़ों में दर्द, स्पर्श से बढ़े, गरमी से कम। चिड़चिड़ापन और रोना। यहाँ १२x का प्रयोग करें। अनिद्रा और रात पसीना। अत्यधिक पसीना और स्नायुमण्डल की अति उत्तेजना के लिए। अरिष्ट की वृहत् मात्रा। फेलाण्ड्रियम०;

ट्युबर०; सेल्विया स्कलेराटा (स्नायुमण्डल का शक्तिवर्धक, मात्रा, एक चाय का चम्मच एक पाइण्ट गरम जल में, शरीर में स्पंज करने के लिये, सूँघना) रूबिया टिक्टोरम—मैडर—प्लीहा रोग की औषधि (सियानोथस) पाण्डु रोग और मासिक-धर्म का रुकना, क्षय रोग। रक्तहीनता, अपोषिक अवस्था, प्लीहा, रक्तहीनता। मात्रा १० बूँद अरिष्ट।

मात्रा—अरिष्ट, २० बूँद की मात्रा में कुछ जल मिलाकर। प्रभाव जल्द ही मालूम पड़ता है, दवा लेने के २ घण्टे बाद; और यह प्रभाव २ से ६ दिन तक जारी रहता है।

सैम्बुकस नाइग्रा (Sambucus Nigra)

(एल्डर)

विशेष रूप से साँस-यन्त्र पर काम करती है। बच्चों का सूखा जुकाम, नाक बन्द हो जाना, शोथ। बहुत-से रोगों में अधिक पसीना निकले।

मन—आँखें बन्द करते ही शक्लें दिखाई दें। चिन्ताग्रस्त। आसानी से डर जाये। भयाक्रमण के बाद दम घुटना।

चेहरा—खाँसी से नीला हो जाये। गालों पर लाल, जलते चकत्ते। चेहरे पर गरमी और पसीना।

उदर—मिचली और बादी फूलन के साथ शूल, बार-बार पानी जाये, चिकना मल।

मूत्र—चर्म की सूखी गरमी के साथ अधिक मूत्र-स्खलन। कम मात्रा में मूत्रस्राव के साथ बार-बार लगना। तीव्र गुर्दा प्रदाह, कै के साथ, शोथ के लक्षण।

साँस-यन्त्र—आमाशय में दबाव और मिचली के साथ सीने में दाब, स्वरयन्त्र में चिमड़े बलगम के साथ फटी आवाज। रोने और कष्टदायक साँस के साथ आधी रात के लगभग दौरे वाली दम घोंटनेवाली खाँसी। आक्षेपिक काली खाँसी। सूखा जुकाम। छोटे बच्चों में नाक बन्द होना, फुसफुसाना नाक सूखी और रुकी हो। ढीली, दम घोटनेवाली खाँसी। दूध पीते हुए बच्चा स्तन छोड़ दे, नाक से साँस न ले सके, जकड़ी हो। बच्चा एकाएक जाग उठे जैसे दम घुट जाता, बैठ जाये। नीला पड़ जाए, हवा बाहर न निकाल सके (मेफा०)। दमा रोग जिसमें गला घुटे।

अङ्ग—हाथ नीचे पड़ जायें। टाँगों में, पैरों के भीतरी भाग में और पैरों में शोथमय फूलन। पैर बरफ की तरह ठंडे। कमजोरी लाने वाला रात पसीना (सैल्विया, एसेटिक एसिड)।

ज्वर—सोते में सूखी गरमी। कपड़ा हटाने से भय। जागने की अवस्था सारे शरीर पर अधिक पसीना। ज्वराक्रमण से पहले सूखी, गहरी खाँसी।

चर्म – सोने की अवस्था में चर्म पर सूखी गरमी। फूला और शोथमय, सा शरीर शोथमय, जाग जाने पर अधिक पसीना बहे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सोने की अवस्था में, आराम में, फल खाने के बाद घटना : बिस्तर में बैठ जाने से, हरकत से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : इपिका०, मेफा०, ओपियम, सैम्बुकस कैनाडेंसि (शोथ में बहुमूल्य, बड़ी मात्रा में प्रयोग करना चाहिए—तरल सत, ½ से १ चा चम्मच दिन में ३ बार)।

क्रियानाशक—आर्से०, कैम्फो०।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

सैंग्विनेरिया (Sanguinaria)

प्रधानतः दाहिनी तरफ की औषधि और विशेष रूप से श्लैष्मिक झिल्ली पर काम करती है, खासकर साँस-मार्ग के। इसमें स्पष्ट रूप से रक्तवाहिनी की गड़बड़ी होती है, जैसा गालों पर घेरेदार लाल चकत्ते, गरम लहरें, सिर और सोने में खून का रुकना, कनपटी की शिराओं का फूलना, हथेली और तलवों में जलन-सी मालूम होती है और वयः-सन्धिकालीन बाधाओं में लाभदायक सिद्ध हुई है। गरम पानी की तरह जलन संवेदना। इंफ्लुएञ्जा की खाँसी। तपेदिक। साँसयन्त्र के जुकाम का एकाएक रुक जाना और फिर दस्त शुरू होना। शरीर के कई भागों में जलन होना इसकी विशेषता है।

सिर—दाहिनी तरफ अधिक, पुराना सिर दर्द, सिर के पिछले भाग से दर्द शुरू होकर ऊपर को फैले और आँखों के ऊपर तक पहुँचकर वहीं ठहर जावे, खासकर दाहिनी आँख के ऊपर तक शिरायें और कनपटी तनी हों। दर्द, लेटने और सोने से कम रहे। सिर दर्द वयःसन्धिकाल में वापस आवे, हर सातवें दिन। (सल्फर, सैंबाडि०)। बायीं तरफ की ऊपरी पार्श्व कपालास्थि के एक छोटे स्थान में दर्द। आँखों में जलन। सिर के पीछे दर्द "बिजली की चमक की तरह।"

चेहरा—भरभराया हुआ। स्नायुशूल, दर्द ऊपरी जबड़े से सभी तरफ फैले। गालों पर लाली और जलन। यक्ष्मा ज्वर। जबड़ों के कोनों में भरापन और कोमलता।

नाक—मौसमी फ्लू। अधिक घृणित स्राव के साथ पीनस रोग। नासार्बुद। जुकाम, बाद में दस्त। जीर्ण श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाह, झिल्ली सूखी और रक्त-संचित।

कान—कानों में जलन। सिर दर्द के साथ कान दर्द। भनभनाहट और गर्जन। कान-अर्बुद।

गला—फूला, दाहिनी तरफ अधिक। सूखा और सिकुड़ा। सूखा, जलन संवेदन के साथ। मुँह का और मुखगह्वर का घाव। जबान सफेद, झुलसी मालूम हो। तालुमूल प्रदाह।

आमाशय—मक्खन से घृणा। तीखी चीजों की इच्छा। बिना बुझनेवाली प्यास। जलन, कै। लार बहने के साथ मिचली। कमजोरी जैसे जान चली जायगी। (फॉस०, सीपिया)। पित्त थूकना, आमाशय-पक्वाशय का नजला।

उदर—जुकाम कम होने लगे तो दस्तशुरू हो। जिगर प्रदेश के ऊपर दर्द। दस्त, पित्तमय बहुत जोर से निकलने वाला मल। (नैट्र० सल्फ्यु०, लाइकोपो०)। मलाशय का कर्कट रोग।

स्त्री—प्रदर, घृणित, छीलने वाला। मासिक-धर्म घृणित, अधिक मात्रा में। स्तनों में दर्द। मासिक-धर्म के पहले काँख में खुजली। वयःसन्धिकालीन बाधायें।

साँस-यन्त्र—स्वर-यन्त्र का शोथ। कण्ठनली दर्द वाली। वक्षास्थि के पीछे गरमी और तनाव। स्वरलोप। पाकाशयिक विकारी खाँसी, डकार से कम हो। सीने में जलन, दर्द के साथ खाँसी, दाहिनी तरफ अधिक। बलगम चिमड़ा, मोरचे के रंग का, घृणित, प्रायः बाहर निकलना असम्भव। इन्फ्लुएञ्जा और कुकुर-खाँसी के बाद आक्षेपिक खांसी वापस आवे। वक्षास्थि के पीछे गुदगुदी जिससे लगातार कड़ी खाँसी आती रहे, रात में लेटने पर अधिक हो। बिस्तर से उठ बैठना आवश्यक। सीने की दाहिनी तरफ जलन वाला दर्द, दाहिने कंधे में घुसे। दाहिनी स्तन-घुण्डी के नीचे तीव्र दर्द। मासिक-धर्म के दबने से खून थूकना। तीव्र साँस कष्ट और सीने में सिकुड़न। घृणित साँस और मवादी बलगम। सीने में जलन, मानो गरम भाप सीने से उदर में जा रहा है। सौत्रिक क्षय रोग। फुफ्फुस प्रदाह; पीठ के बल लेटने से कम। पेट के विकार के साथ दमा। (नक्स०)। फुफ्फुस के विकार के साथ कपाट रोग, मूत्र में फॉस्फेट आये और दुबलापन। वायु मार्ग के नजले के एकाएक दब जाने के कारण दस्त शुरू होना।

अंग—दाहिने कन्धे में, बाँयीं उरु-सन्धि और गरदन की जड़ में वात रोग। हथेली और तलवों में जलन। उन स्थानों में वात रोग जहाँ मांस की सतह पतली हो, जोड़ों में नहीं। पैर की अंगुलियों और तलवों में जलन। दाहिनी तरफ का स्नायु प्रदाह, स्पर्श से कम हो।

चर्म—रस० (सरपच) विष का प्रभाव नाश करती है। लाल चकत्तेदार स्फोट, वसन्त ऋतु में अधिक हो। जलन और खाज, गरमी से बढ़े। मुँहासे, कम मात्रा में मासिक धर्म के साथ। चर्वण अस्थि पर लाल, घेरेदार चकत्ते।

घटना बढ़ना—बढ़ना : मिठासपन, दाहिनी तरफ, हरकत, स्पर्श। घटना : अम्लमय पदार्थ, सोने से, अन्धकार से।

सम्बन्ध—पूरक : टार्टर एमेटिक।

तुलना कीजिए : जस्टिसिया (वायुनलिका जुकाम, नाक का साधारण जुकाम, गला बैठना, अति उत्तेजना), डिजिटैलिस (अधकपारी) बेला०, आइरिस०; मेलिलो०, लैके०, फेरम०, ओपि०।

मात्रा—सिर दर्द में अरिष्ट; वातरोग में ६ शक्ति।

सैंग्विनेरिना नाइट्रिका (Sanguinarina Nitrica)

(नाइट्रेट आफ सैंग्विनेरिन)

नासार्बुद में उपयोगी है। तीव्र और जीर्ण नजला। तीव्र कण्ठनली प्रदाह। (वाइथिया)। गले और सीने में तीव्र पीड़ा और जलन, खासकर वक्षोस्थि के नीचे। इन्फ्लुएंजा। आँखों से पानी जाना, आँखों और सिर में दर्द, सिर की खाल में दर्द, रुकावट की संवेदना। जीर्ण निस्राववाही ग्रन्थि या कोष सम्बन्धी प्रदाह।

नाक—रुकी मालूम हो। जलन दर्द के साथ अधिक; पानी-सा श्लेष्मा। विकृत वृद्धि संस्कार के शुरू में नासास्थि का बढ़ना। स्राव कम, सूखने की प्रवृत्ति। छोटी खुरण्डें जिन्हें उखाड़ने पर खून बहे। नासाकण्ठनली से चिपका हुआ। पिछले भाग का स्राव, कठिनाई से उखड़े। नथने सूखे और जलन, नाक की जड़ पर दाब के साथ पनीला श्लेष्मा। नथने गाढ़े, पीले, सूखे श्लेष्मा से ठसे हों। छींक आना : नथनों के पिछले भाग में कच्चापन और दर्द।

गला—खुरखुरा, सूखा, सिकुड़ा, जलन, संवेदन। दाहिनी तरफ का। तालुमूल दर्द करे, निगलना कठिन।

मुँह—जबान की बगल में घाव।

साँस-यन्त्र—छोटी, ठोंकन खाँसी; साथ में गाढ़ा, पीला, कुछ मीठा बलगम। वक्षास्थि के बीच में दाब। गले और वायुनलिका में सूखापन और जलन। गुदगुदीदार खाँसी। जीर्ण नाक, स्वरयन्त्र और वायुनलिका का नजला। आवाज बदली हो, गहरी, फटी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सैंग्विनेरिया टारटैरिकम (चक्षुगोलक का असमान बहिःसरण, चक्षुतारा का प्रसारण, धुँधली निगाह)। एरम ट्रिफाइलम; सोरिनम; कैलिबाइक्रोमिकम।

मात्रा—३ विचूर्ण।

सैनिक्यूला (ऐक्वा) Sanicula (Aqua)

(दी वाटर ऑफ सैनिक्युला स्प्रिंग्स, ओटावा; इल०)

यह औषधि अनैच्छिक मूत्र स्राव, समुद्री उत्क्लेश, कब्ज इत्यादि में लाभदायक पायी गयी है। सूखा रोग।

सिर—नीचे की तरफ आने का भय। (बोरैक्स)। सोते में सिर के पिछले भाग पर और गरदन की जड़ पर अधिक पसीना। (कैल्के०, साइलिसिया)। प्रकाशातंक, ठण्डी हवा में या ठण्डे प्रयोग से आँखों से पानी बहना। अधिक पपड़ीदार रूसी छूटना। कानों के पीछे दर्द।

गला—गाढ़ा, लसदार, चिमड़ा श्लेष्मा।

मुँह—जबान बड़ी, थुलथुली, जलन वाली; ठंडा रखने के लिए बाहर निकालनी पड़े। जबान पर दाद।

आमाशय—मोटरकार में सवारी करने से मिचली और कै होना। प्यास कम और बार-बार (आर्से०, चाइना)। पेट में पहुँचते ही कै हो जाये।

मलाशय—मल बड़ा, भारी; वेदना पूर्ण। सारे मूलाधार में दर्द। जब तक अधिक मल पेट में जमा न हो तब तक मलत्याग की इच्छा न हो। बहुत जोर करने पर ही थोड़ा-सा मल निकले, पीछे हटे, गुदा के मुँह के पास आने पर बिखर जाये (मैग० म्यू०)। बहुत घृणित दुर्गन्ध। गुदा, मूलाधार और जननेन्द्रिय के पास की खाल उधड़ना। खाने के बाद रङ्ग और अवस्था में बदलने वाला दस्त।

स्त्री—नीचे के रुख दबाव, मानो पेड़ू की सब चीजें बाहर निकल जायेंगी, आराम से कम हो। जननेन्द्रिय के भागों को सहारा देने की इच्छा। गर्भाशय में दर्द। प्रदर, मछली के धोवन की या बासी पनीर की गन्ध। (हीपर)। योनि बड़ी जान पड़े।

पीठ—त्रिकास्थि में स्थान भ्रंश होने का संवेदन, दाहिनी तरफ लेटने से कम।

अंग—पैर के तलवों में जलन। (सल्फर; लैके०) घृणित पैर पसीना : (साइली०, सोरि०)। अंगों पर ठंडा, चिपचिपा पसीना।

चर्म—मैला, चिकना, कत्थई, सिकुड़ा। अकौता, हाथों और अँगुलियों पर दरारें। (पेट्रोलि०, ग्रेफा०)।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बाहों को पीछे की तरफ हिलाने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : एब्रोटै०, एल्यूमि०, कैल्के०, साइली०, सल्फर। सैनिक्यूला एक्वा को सैनिकल (पूल रूट या उड मार्श) के साथ, जिसे सैनिक्यूला भी कहते हैं, भ्रमित नहीं होना चाहिए। इसको कई स्नायु रोगों में देते हैं, जो वैले-

रियाना के लक्षण से मिलते हैं। इसका उपयोग रक्तमय उत्सर्ग को गला कर, घाव भरने के लिए होता है और स्नावरोचक की तरह। इसकी आजमाइश नहीं हुई है।

मात्रा—३० शक्ति।

सैंटोनिनम (Santoninum)

(सेंटोनिन)

यह औषधि सैंटोनिका का आधारित तत्व है, जो आर्टिमिसिया मैरिटिमा की कलियाँ हैं—सिना देखिये।

आँखों के और मूत्रमार्ग के लक्षण विशेषतः दर्शनीय हैं। यह औषधि कृमि रोग में निश्चित रूप से लाभदायक है, जैसे आमाशयिक आंत्रिक उत्तेजना, नाक का खुजलाना, अशान्त निद्रा, पैशिक फड़कन। लम्बे और क्षुद्र कृमियों के लिए, मगर केचुवों के लिए नहीं। बच्चों की रात खाँसी। जीर्ण मूत्राशय प्रदाह। स्वरयांत्रिक बाधा और वर्द्धनशील क्षीणता में बिजली जैसा लपकन दर्द।

सिर—रंगीन दृष्टि भ्रम के साथ सिर के पिछले भाग में दर्द। नाक खुजलाना। नाक में अंगुली डाले।

आँखें—एकाएक धुँधलापन। रंगों का संवेदन न होना, सब चीजों को पीले रंग का देखना। कृमि के कारण ऐंचापन। आँखों के पास गहरे रंग के चक्र।

मुँह—दुर्गन्धित साँस, भूख कम, प्यास। जबान गहरी लाल। दाँत पीसना। मिचली, खाना खाने के बाद कम। गला घुटने की संवेदना।

मूत्र—मूत्र यदि अम्लाधिक्य हो तो हरियाली लिए और यदि क्षारीय हो तो बैगनी रंग का हो। रुक-रुक कर होना और मूत्रकृच्छ्र रोग। अनैच्छिक स्राव। मूत्राशय में भरापन। गुर्दा प्रदाह।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : सिना; टियुक्रि०, नेपथे०, नेट्र० फॉस०; स्पाइजेलिया।

मात्रा—२ से ३ विचूर्ण। निचली शक्तियाँ अक्सर नशीली होती हैं। ज्वर या कब्ज वाले बच्चों को मत दीजिये।

सैपोनेरिया (Saponaria)

(सोप रूट)

तीव्र जुकाम, नाक बहना, गलक्षत रोगों में अति उपयोगी है। अक्सर जुकाम को तोड़ देगी।

मन—दर्द या संभावित मृत्यु से पूर्ण उदासीन। औंघाई के साथ उदासीन और मन गिरा रहना।

सिर– चिलकन, आँखों के घेरों के ऊपर दर्द, बाईं तरफ, शाम को और हरकत से बढ़े। आँखों के घेरों के ऊपर थरथराहट। सिर में रक्ताधिक्य, गरदन की जड़ में थकावट। जुकाम में नशीली अवस्था, बाईं तरफ चलने की लगातार चेष्टा। बाईं तरफ की त्रिक शाखा (पाँचवीं नाड़ी) का स्नायुशूल, खासकर आँखों के घेरों के ऊपर। नाक में (ऊपर की तरफ बन्द होने का संवेदन; खुजली और छींक भी)।

आँखें—तीव्र आँख दर्द। ढेले की गहराई में गरम; चिलकन। पलकों का स्नायु-शूल; बाईं तरफ अधिक प्रकाशातंक। ढेलों का बाहर निकल पड़ना। पढ़ने या लिखने से अधिक कष्ट। आँखों के भीतरी भाग में दाब का पड़ना। धुन्ध रोग।

आमाशय—निगलना कठिन। मिचली, गला जलना, भरापन जो डकार आने से कम न हो।

दिल—धड़कन कमजोर, नाड़ी की गति गिनती में कम। चिन्ता के साथ धड़कन।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में, मानसिक परिश्रम, बाईं तरफ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए। सैपोपिन—एक ग्लुकोज मिश्रित तत्व जो क्विलाया, यूका, सेनेगा, डायोस्कोरिया और दूसरे पौधों में पाया जाता है। (थका, उदासीन। बाईं कनपटी में; आँखों में दर्द; प्रकाशातंक, आँखों में गहराई तक चिलकन। पाँचवें स्नायु गुच्छ के रोग। अधकपारी। मासिक स्राव के पहले अधिक पीड़ा, तीव्र गलक्षत, दाहिनी तरफ अधिक, तालुमूल फूले, गरम कमरे से कष्ट अधिक हो। तीखा, जलन स्वाद और तीव्र छींक)।

इनकी तुलना कीजिए : बर्बेस्कम; काकुलस इण्डिका। (दोनों में सैपोनिन होती है)। क्विलाया; (एनागैलिस, एग्रोस्टेमा, हेलोनियस, सारसापैरिला, पैरिस०, साइक्लैमन और दूसरी बनस्पति में सैपोनिन का अंश होता है)।

सार्कोलैक्टिक एसिड (Sarcolactic Acid)

स्पष्ट है कि यह अम्लपैशिक क्षय की अवस्था में पैशिक तन्तुओं में बनता है। ध्रुव प्रकोप सम्बन्ध में साधारण लैक्टिक एसिड से भिन्न है।

यह अधिक विस्तृत क्रियावाली और गहराई तक काम करनेवाली औषधि है और इसके रोग तथा साधारण अम्ल से भिन्न हैं। इसको विलियम बी० ग्रिग्स० एम० डी० ने सिद्ध किया है जिन्होंने इसको तीव्र संक्रामक इन्फ्लुएञ्जा में अति मूल्यवान

पाया, खासकर जब कठोर झोकाई और शिथिलता हो तथा जब आर्सेनिक असफल हो गया था। मेरुदण्ड की स्नायु दुर्बलता, पशिक दुर्बलता, हृदय दुर्बलता के साथ-साथ कष्ट।

साधारण लक्षण—पैशिक शिथिलता के साथ रुकावट, किसी परिश्रम से रोग बढ़े। सारे शरीर में वेदना, जो तीसरे पहर अधिक हो। रात में बेचैनी। नींद आना कठिन। सुबह उठने पर थकावट।

गला—कंठनली में सिकुड़न। नासा गलकोष में कसाव के साथ गलक्षत। गले में गुदगुदी।

आमाशय—मिचली। न रोक सकने वाली कै, पानी तक की, बाद में कमजोरी।

पीठ और अंग—पीठ, गरदन और कन्धों में थकावट। पक्षाघात जैसी कमजोरी। कलाई लिखने से जल्द थक जाये। ऊपर चढ़ने से बहुत कमजोरी, जाँघों और पिंडली का कड़ापन। बाँहें शक्तिहीन मालूम पड़ें। पिंडली में ऐंठन।

मात्रा—६ से ३० शक्ति। १५x का प्रभाव बहुत स्पष्ट होता है। (ग्रिग्स)।

सारासिनिया परप्युरिया (Sarracenia Purpurea)

(पिचर-प्लैंट)

चेचक की एक औषधि। दृष्टि विकार। क्रमभ्रष्ट हृदय-क्रिया के साथ सिर में रक्ताधिक्य। हरित्पाण्डु रोग। इसमें एक तीव्र क्रिया वाला पाचन रस होता है। कठोर सिर दर्द, कई भागों में थरथराहट, खासकर गरदन, कन्धों और सिर में जो फटने की हद तक भरा जान पड़े।

आँख—प्रकाशातंक। आँखें फूली और दर्दीली मालूम पड़ें। घेरों में दर्द। काली चीजें आँखों के साथ-साथ चलती रहें।

आमाशय—सभी समय भूखा रहे और खाने के समय खाने के बाद भी औंघाई। अधिक मात्रा में दर्द के साथ कै।

पीठ—कटि-प्रदेश से स्कंधास्थि तक टेढ़े-मेढ़े रास्ते से चुभकन दर्द।

अंग—अंग कमजोर। घुटनों और नितम्ब सन्धि में कुचल जाने जैसा दर्द। बाँहों की हड्डियाँ दर्द करें। कंधों के बीच कमजोरी।

चर्म—शीतला रोग का जोर कम करती है, दानों को उभारने से रोकती है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : टार्टार० एमे०, वैरियोलिनम, मेलोण्ड्रिनम।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

सार्सापैरिला (Sarsaparilla)

(स्मिलैक्स)

वृक्कशूल; सूखा रोग और आतशक या सुजाक रोग के कारण अस्थिआवरण-पीड़ा। गरमी के मौसम के बाद और चेचक छुपाने के बाद स्फोट, फुन्सियाँ और अकौता। मूत्र सम्बन्धी लक्षण विशेष रूप से स्पष्ट हैं।

मन—निराश, उत्तेजित, क्रुद्ध, बदमिजाज और चुप रहे।

सिर—दर्द से उदास हो। दाहिनी कनपटी के ऊपरी भाग में चुभन दर्द। सिर के पिछले भाग से आँखों तक दर्द। कान से नाक की जड़ तक दर्द फैले। आतशक या सुजाक रोग के कारण अस्थि-आवरणों में पीड़ा। इन्फ्लुएंजा। सिर की खाल उत्तेजित। चेहरे और ऊपरी होंठ पर स्फोट। सिर की खाल पर तर दाने। खुरण्ड रोग चेहरे से शुरू हो।

मुँह—जबान सफेद; चपटे घाव; लार बहना, कसैला स्वाद; प्यासहीन। घृणित साँस।

उदर—गड़गड़ाहट और उदास। शूल और पीठ दर्द के साथ-साथ। अधिक वायु, शिशु हैजा।

मूत्राशय—मूत्र कम, चिकना, रसदार; बालू आये, खूनी। पथरी। वृक्कशूल। मूत्रस्खलन के बाद तीव्र पीड़ा। बैठने पर मूत्र टपके। मूत्राशय तना और कोमल। बच्चा पेशाब करते समय और उसके पहले चिल्लाये। बच्चे के पोतड़े (बिछौने की चादर) पर बालू के कण पड़े मिलें। बच्चों का वृक्कशूल और मूत्रकृच्छ्र। दाहिने वृक्क से नीचे की तरफ दर्द। मूत्राशय की मरोड़, मूत्र पतली कमजोर धार से गिरे। मूत्रमार्ग के मुँह पर दर्द।

पुरुष—खूनी वीर्य-स्खलन। जननेन्द्रिय पर असह्य दुर्गन्ध। जननेन्द्रिय पर दाद। पुट्ठों और विटप देश पर खुजली। उपदंश, पपड़ीदार दाने और अस्थि पीड़ा।

स्त्री—स्तन घुंडी छोटी, क्षीण, सिकुड़ी हुई। मासिक धर्म के पहले खुजली और माथे पर तर दाने। मासिक धर्म देर में और कम मात्रा में। मासिकधर्म के पहले दाहिने पुट्ठे पर तर दाने निकलें।

चर्म—दुबला, क्षीण, तहदार। (एब्रोटे०, सैनिक्यू०) सूखा थुलथुला। भैंसिया दाद, घाव। खुली हवा से लाल चकत्तेदार दाने, सूखी खुजली। बसन्त ऋतु में रोगाक्रमण; पपड़ी पड़ जाये। दरारें, हाथ और पैर की खाल चिटके। चर्म कड़ा, कठोर। गरमी के दिनों का चर्म रोग।

अंग—पक्षाघात ग्रस्त, फटन दर्द। हाथ और पैरों का काँपना। हाथ और पैरों की अँगुलियों के बीच में जलन। नख कोष का घाव, अँगुलियों के सिरों के चारों

तरफ घाव, नाखून के नीचे का कटन संवेदन। वात रोग, अस्थि पीड़ा, रात में अधिक। हाथ और पैर की अँगुलियों पर गहरी दरारें; नाखून के नीचे जलन। हाथों पर मोटा दाद; अँगुलियों के सिरों के चारों तरफ घाव। (सोरिन०)। नाखूनों के नीचे फटन संवेदना। (पेट्रोलि०)। प्रमेह के बाद वातरोग।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में तरी से, पेशाब करने के बाद, जम्हाई लेने से, बसन्त ऋतु में, मासिक धर्म के पहले।

सम्बन्ध—पूरक : मर्क०, सीपिया।

तुलना कीजिए : वर्बे०; लाइको०; नैट्र० म्यूरि०, पेट्रोलि०; सैंसाफ्रास; सॉरुरस—लिजार्डस, टेल—(गुर्दों मूत्राशय, मूत्रग्रन्थि और मूत्रमार्ग की उत्तेजना। दर्दीला और कठिन पेशाब, मूत्राशय प्रदाह, साथ में पेशाब रुकना)। क्युकरबिटा सिट्रलस—वाटर-मेलन—(बीज का जोशांदा पेशाब रुकने के साथ दर्द और पीठ पर तुरन्त काम करता है। दर्द गायब करके स्राव बढ़ाता है)।

क्रियानाशक : बेलाडोना।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

स्क्रोफ्युलेरिया नोडोसा (Scrophularia Nodosa)

(नॉटेड फिगवर्ट)

ग्रन्थि वृद्धि की अवस्था में एक शक्तिशाली औषधि। प्लीहा और लसिका-ग्रंथियों की वृद्धि।

एक मूल्यवान चर्म औषधि। स्तनों पर प्रभाव विशेष, स्तन के अर्बुद को गलाने के लिए अति लाभदायक। कानों का अकौता। योनि खाज। नाकड़ा के घाव। कंठमालिक फूलन। (सिस्टस०) दर्द वाली बवासीर। क्षयग्रस्त अण्डकोष। अन्तस्त्वक प्रदाह। स्तन में गुठलियाँ (सोरिनम)। सभी मुड़ने वाली पेशियों में दर्द।

सिर—शीर्ष पर चक्कर मालूम दे, खड़े होने पर अधिक हो, औंघाई, माथे से सिर के पीछे तक दर्द। कानों के पीछे अकौता। पपड़ीदार, मोटा दाद।

आँखें—कष्टदायक प्रकाशासह्यता। (कोनियम०)। आँखों के आगे बिन्दुयें। पलकों में चिलकन। ढेले दर्दीले।

कान—बाहरी कान के आस-पास सूजन। बाहरी कान में गहरे घाव। कानों के चारों तरफ अकौता।

उदर—दाब से जिगर में दर्द। नाभि के नीचे शूल। द्विवक्र महराब और मलाशय में दर्द। दर्द वाली सूनी, बाहर निकली बवासीर।

साँस-यन्त्र—तीव्र, कष्टदायक साँस, सीने पर दाब, कम्प के साथ। कंठनली के विभाजन स्थान के आस-पास दर्द। कण्ठमालिक रोगियों में दमा रोग।

चर्म—चुभन, खाज, सिर के पीछे अधिक।

निद्रा—घोर औंघाई; थकावट के साथ, सुबह को और भोजन करने से पहले और बाद में।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दाहिनी करवट लेटने से।

तुलना कीजिए : लोबेलिया एरिनस; रूटा; कारसिनोसिन; कोनियम०; एस्टेरियस।

मात्रा—अरिष्ट और १ शक्ति। कर्कटीय ग्रन्थि पर लगाइये। सेम्परविवम।

स्कुटेलरिया लैटेरिफ्लोरा (Scutellaria Lat.)

(स्कलकैप)

यह एक स्नायविक उपशामक है, जहाँ स्नायु भय की प्रधानता हो। हृदय की उत्तेजना। ताण्डव रोग। बच्चों की स्नायविक उत्तेजना और आक्षेप, दाँत निकलने के समय। पेशियों में फड़कन। इन्फ्लुएन्जा के बाद स्नायविक दौर्बल्य।

मानसिक—किसी घोर विपत्ति का भय। ध्यान एकाग्र न कर सके। (इथूजा०)। व्यग्रता।

सिर—अग्रभाग में धीमा दर्द। आँखें बाहर को ढकेली जाने का संवेदन। चेहरा भरभराया। अशान्त निद्रा और भयानक स्वप्न। इधर-उधर टहलना आवश्यक। रात्रि-भय। अधकपारी, दाहिनी आँख के ऊपर अधिक; ढेलों में टीस। घड़ी-घड़ी पेशाब करने के साथ स्कूल अध्यापकों का विस्फोटिक सिर दर्द। मस्तिष्क के अगले और पिछले भाग में दर्द। स्नायविक, कष्टदायक सिर दर्द, आवाज, गन्ध प्रकाश से बढ़े। रात में, आराम से कम। अरिष्ट की ५ बूँद।

आमाशय—मिचली, खट्टी डकार, हिचकी; दर्द और कष्ट।

उदर—अफरा, भरापन, तनाव, शूल और असुविधा। हल्के रङ्ग का दस्त।

पुरुष—धातु-स्खलन और नपुंसकता, कभी अच्छा न होने के भय के साथ।

निद्रा—रात्रि-भय; एकाएक जाग पड़ना, भयानक स्वप्न।

अंग—पेशियों में फड़कन, चलता-फिरता रहे, हिलता रहे। ताण्डव राग। कम्प। ऊपरी अङ्गों में तीव्र गड़न दर्द। रात में बेचैनी। कमजोरी और टीस।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : साइप्रिसिडि०; लाइकोपस०।

मात्रा—अरिष्ट और नीची शक्तियाँ।

सिकेल कॉरन्यूटम (Secale Cornutum)

(अरगट)

बिना धारीवाले पेशिक सूत्रों में सिकुड़न पैदा करती है, इसलिए सारे शरीर में सिकुड़न की संवेदना होती है। इससे रक्तहीनता की अवस्था; ठण्डापन, सुन्न होना, काली धारियों के छोटे चकत्ते, चर्म क्षय और सड़न उत्पन्न होती है। बुड्ढों, चुचुके चर्म वालों के लिए लाभदायक औषधि, दुबली, सूखी, वृद्ध स्त्रियाँ। सिकेल की सभी अवस्थायें ठंडक से कम रहती हैं, सारा शरीर गरम रहता है। रक्तस्राव, लगातार पसीजन, पतला, घृणित, पानी-सा काला खून। कमजोरी, चिंता, दुबलापन, गो कि भूख और प्यास अधिक हो। चेहरे और उदर की पेशियों में फड़कन। सिकेल रक्तचाप बढ़ा कर क्लोम ग्रन्थि रस के स्राव को कम करती है। (हिंस्डेल)।

सिर—मन्द, रक्ताधिक्यजनित दर्द। (सिर के पीछे से शुरू होता है), पीले चेहरे के साथ। सिर पीछे की तरफ खिंचा हुआ। बालों का झड़ना, सूखा और भूरा। नकसीर, काला खून।

आँखें—पुतली फैली। आरम्भिक मोतियाबिंद, वृद्धावस्था, खासकर स्त्रियों में। आँखें धँसी हुई और चारों तरफ नीले घेरे।

चेहरा—पीला; चुचुका, मुरझाया हुआ। ऐंठन चेहरे से शुरू होकर सारे शरीर में फैले। चेहरे पर लाल धब्बे। आक्षेपिक टेढ़ापन।

मुँह—जबान सूखी, चिटकी हुई, स्याही की तरह खून रसाये, गाढ़ा मैल, लसीका, हल्का पीला, ठण्डा, सूखा। जबान का सिरा चुनचुनाये, कड़ा हो। जबान फूली हुई, सुन्न।

आमाशय—अप्राकृतिक प्रचण्ड भूख, अम्ल पदार्थ की इच्छा। न बुझने वाली प्यास। हिचकी, मिचली, खून और कॉफी जैसी बुकनी की कै। आमाशय और उदर में जलन, बादी का तनाव। दुर्गन्धित डकार।

मल—हैजे जैसा मल, ठण्डक और ऐंठन के साथ। गहरा हरा, पतला, सड़ा, खूनी, बरफीली ठण्डक और ओढ़ने से घृणा के साथ, अति शिथिलता भी साथ में। अनैच्छिक मल, मल-स्खलन का संवेदन न हो, जैसे गुदा-छिद्र बिलकुल खुला हो।

मूत्र—मूत्राशय का पक्षाघात। रुकना, असफल चेष्टा। मूत्राशय से काला खून निकलना। वृद्ध लोगों में अनैच्छिक मूत्र-स्राव।

स्त्री—शरीर में ठंडक के साथ और गरमी सहन न होने के साथ मासिकधर्म शुरु। दुर्बल और रक्तहीन स्त्रियों में मन्द रक्तस्राव। गर्भाशय में जलन व दर्द। बादामी रंग का घृणित प्रदर। मासिकधर्म क्रमभ्रष्ट, अधिक, गहरे रंग का, दूसरे

काल तक बराबर पानी-सा खून रसाया करे। तीसरे महीने गर्भपात का भय। (सैबाइना) प्रसव के समय, अंगों के ढीला होने पर भी ठेलने की शक्ति न हो। प्रसव के बाद का दर्द। दूध का दब जाना, स्तन न भरें। गहरे रंग का घृणित प्रसव स्राव। प्रसूत ज्वर, घृणित स्राव। पेट में अफरा, ठंडापन, पेशाब का दबना।

सीना—हृदय-शूल। उदर मेहराब में ऐंठन के साथ साँस कष्ट और दाब। सीने में छेदन दर्द। हृदय क्षेत्र का कोमलपन। सिकुड़न और सविराम नाड़ी के साथ धड़कन।

निद्रा—गहरी और देर तक। बेचैनी, ज्वर, उत्सुक स्वप्न के साथ अनिद्रा। मद्पान और औषधि के दुरुपयोग के कारण अनिद्रा।

पीठ—मेरुदण्ड उत्तेजित, निचले अंगों में चुनचुनाहट, केवल पतला ओढ़ना सहन हो। कम्पवात। सुरसुरी और सुन्नपन। अस्थिमज्जा प्रदाह।

अंग—अँगुलियों में सुरसुराहट के साथ अधिक धूम्रपान करने वालों के हाथ और पैर ठण्डे, सूजे हुए। काँपती हुई, लड़खड़ाती चाल। सुरसुराहट, दर्द और आक्षेपिक झटके। सुन्न होना। अँगुलियाँ और पैर नीले, चुचुके, फैले हों या पीछे मुड़े हों, सुन्न। तीव्र ऐंठन। अंगों की बर्फीली ठण्डक। अंगुलियों के सिरों में तीव्र पीड़ा, पैरों की अँगुलियों में चुनचुनाहट।

चर्म—सुकड़ा हुआ, सुन्न; धब्बेदार, धुँधला, नीला रंग। कड़ा; नवजात शिशु का शोथ। शरीर पर पीले या नीले दाग पड़ना और नख विकृति। नीला रंग। सूखी विगलन, धीरे-धीरे बढ़े। स्फीति घाव। जलन संवेदन, ठण्डक से कम, शरीर के रोगग्रस्त भाग को कपड़ा हटाकर रखना चाहे जो कि स्पर्श से ठण्डा मालूम हो। सुरसुरी, रेंगन, काली लकीरें। छोटे घाव से खून बहता रहे। लाल चकत्ते। फुड़िया, छोटी, दर्द वाली, हरा स्राव, धीरे-धीरे पके। चर्म स्पर्श से ठंडा मालूम दे, तब भी ओढ़ना अच्छा न लगे। गरमी से अति घृणा। चर्म के नीचे सुरसुरी।

ज्वर—ठण्डापन। ठण्डा, सूखा चर्म, ठण्डा, लसीला पसीना, अति प्यास। आतरिक गरमी की संवेदना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : गरमी, गरम कपड़ा ओढ़ना। घटना : ठंडक, कपड़ा हटाने से, मालिश, अंग फैलाने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : अर्गटिन (धमनी का कड़ा पड़ना जो तेजी से बढ़े। रक्त चापाधिक्यः २x विचूर्ण। शोथ, सड़न और प्रसव संबंधी रक्त-स्राव, जब सिकेल के लक्षण होते हुए भी असफलता हो), पेडिक्युलेरिस कैनाडेंसिस (कम्पवात के लक्षण, मेरुदण्ड में उत्तेजना) ब्रासिका नेपस—रेप सीड—(शोथमय फूलना, मुँह के भीतर चपटे घाव, प्रचंड भूख, पेट का वायु से फूलना, नाखूनों का लटकना,

गलना), सिनामोमम, कालिच०, आर्स०, ऑरम म्यूरि०; २x (कम्पवात) ; एग्रोस्टेमा-कार्न-काकल—इसका प्रभावशाली तत्त्व सैपोनिन है जो घोर छींकें और तेज जलन स्वाद पैदा करती हैं, पेट में जलन, जो कण्ठनली तक और गरदन तथा सीने तक बढ़े, चक्कर, सिर दर्द, हरकत कठिन, जलन संवेदन । आस्टिलैगो, कार्बो०; पिट्युट्रिन (गर्भाशय के मुँह का फैलना, दर्द कम) ।

क्रियानाशक : कैम्फो०, ओपियम ।

मात्रा—१ से ३० शक्ति । एलोपैथिक उपयोग—प्रसवकालीन रक्तस्राव जब गर्भाशय बिलकुल खाली हो जाए, मगर न सिकुड़े और प्रसव के बाद रक्तस्राव में जब कि गर्भाशय अपनी जगह से हट गया हो, आधे ड्राम से एक ड्राम तक इसका रस देना चाहिए । पैगॉट साहब का नियम याद रखना चाहिये "जब तक गर्भाशय में कोई वस्तु उपस्थित हो, चाहे वह बच्चा, खेड़ी, झिल्ली या खून के थक्के हों, कभी अर्गट का प्रयोग नहीं करना चाहिए ।"

सेडम ऐकर (Sedum Acre)

(स्माल हाउसलीक)

गुदा की दरारों की पीड़ा की तरह बवासीर दर्द, सिकुड़न के साथ दर्द, मल त्यागने के कुछ घण्टों के बाद । दरारें ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : म्युक्यूना युरेंस (बवासीर बाधायें और उस पर निर्धारित रोग); सेडम टेलेफियम (गर्भाशय से रक्तस्राव), उदर और मलाशय से भी, अत्यधिक मासिक स्राव, खासकर वयःसन्धिकालीन); सेडम रैपेंस—एस० ऐल्पेस्टर—(कर्कट, उदर के यन्त्रों पर प्रभाव विशेष, पीड़ा, शक्तिहीनता) ।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति तक ।

सेलेनियम (Selenium)

(दी एलिमेण्ट सेलेनियम)

सेलेनियम हड्डियों और दाँतों की बनावट के तत्वों में सदा पाया जाता है । जननेन्द्रिय-मूत्र-यन्त्रों पर प्रभाव, विशेष, और अक्सर ढलती उम्र वालों में सांकेतिक होती है खासकर मूत्र ग्रन्थि प्रदाह और कर्मेन्द्रियों के दौर्बल्य में । अति दुर्बलता, गरमी से अधिक हो । जल्द थक जाना, वृद्धावस्था में शारीरिक अथवा मानसिक । तीव्र शिथिलता लाने वाले रोगों के बाद दौर्बल्य ।

मन—कामातुर विचार, नपुंसकता के साथ। मानसिक परिश्रम से आयी थकान। घोर शोकग्रस्त। अति निराश, असन्तोषपूर्ण, उदास।

सिर—बाल झड़ना। बायीं आँख के ऊपर पीड़ा, धूप में चलने से, गंध से और चाय पीने से बढ़े। सिर की खाल खिंची मालूम हो। चाय पीने से सिर दर्द हो।

गला—आरम्भिक क्षय सम्बन्धी स्वरयन्त्र प्रदाह। हर सुबह को बलगम के बिल्लौरी ढोके खखारना और थूकना। आवाज भारी। खूनी बलगम के साथ सुबह की खाँसी, गानेवालों का गला भारी होना। अधिक मात्रा में माँडी जैसा बलगम। (स्टैनम०)।

आमाशय—ब्रेण्डी और दूसरी तेज चीजें पीने की इच्छा। मीठा स्वाद। धूम्रपान के बाद हिचकी और डकार। खाने के बाद सारे शरीर पर टपकन। खासकर उदर पर।

उदर—जीर्ण जिगर रोग, जिगर वेदनापूर्ण बढ़ा हुआ। जिगर क्षेत्र के ऊपर महीन दाने। कब्ज, मल कड़ा और मलाशय में जमा हो।

मूत्राशय—मूत्रमार्ग के मुँह पर ऐसा जान पड़े कि एक काटने वाली बूँद बाहर निकलना चाहती है। अनैच्छिक बहते रहना।

पुरुष—नींद से वीर्य बहा करे। मूत्र ग्रन्थि रस बहा करे। मैथुन के बाद चिड़चिड़ापन आये। कामातुर विचार के साथ रमण में असमर्थ। इच्छा बढ़ाती है और कमजोरी कम करती है। धातु पतली, गंधहीन। अति रमण से आयी स्नायविक दुर्बलता। मैथुन की चेष्टा करते ही लिंग ढीला पड़ जाये। कोष में पानी उतरना।

चर्म—खुजली के साथ हथेली में सूखे, छिलकेदार दाने। टखनों के आस-पास, चर्म की तहों में, अँगुलियों के बीच में खुजली। बरौनी, दाढ़ी और जननेन्द्रिय पर के बाल झड़ें। अँगुलियों के जोड़ों पर, अँगुलियों के बीच में और हथेली पर खुजली। अँगुलियों के बीच में रसभरे दाने (रस०, एनाका०) तैलाक्त भूसी; सेल जैसी चिकनी सतह पर काले तिल; गंज, मुँहासे।

अंग—सुबह के समय पिठासे में पक्षाघात की पीड़ा। हाथों में फटन। दर्द, रात में बढ़े।

नींद—सभी रक्त-नलिकाओं में टपकन के कारण नींद न आवे, उदर पर अधिक। आधी रात तक नींद न आवे; बहुत सबेरे एक ही समय रोज जगे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सोने के बाद, गरम मौसम में, सिन्कोना से; बाहरी हवा से, मैथुन से।

सम्बन्ध—असमान : चाइना, शराब।

तुलना कीजिए : एग्नस०, कैलेडियम०, सल्फर, टेलूरि०, फॉस्फो० एसिड।

क्रियानाशक : इग्ने०, पल्से० ।

मात्रा—६ से ३० शक्ति । उन कर्कट रोगों में जहाँ चीर-फाड़ असम्भव है, कोलॉयडल सेलेनियम का व्यवहार करें । इससे पीड़ा, अनिद्रा, घाव और स्राव सभी कम हो जाते हैं ।

सेम्परविवम टेक्टोरम (Sempervivum Tectorum)

(हाउसलीक)

भँसिया दाद, मोटे कर्कट वाले अर्बुद के लिये लाभदायक बताई जाती है । जबान पर कड़े कठिन अर्बुद । स्तनों का कर्कट । दाद । खूनी बवासीर ।

मुँह - मुँह के घाव । जबान का कर्कट रोग । (गैलियम०) । जबान पर घाव, जल्दी खून बहे, खासकर रात में, छुरी लगने जैसे दर्द के साथ अधिक पीड़ा । पूरा मुँह कोमल ।

चर्म—विसर्प रोग । मस्से और दाने । चपटे घाव । सतह लाल और डंक लगने जैसा दर्द ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सेडम ऐकर—स्माल हाउसलीक—(शीतादीय अवस्थायें, घाव, सविराम ज्वर) । (गेलियम कैलि सियानेटम) । ऑक्जेलिक ऐसिटोसेला—ऊड सोरेल-होठों के कर्कटीय स्फोट को साफ करने के लिये इसका गाढ़ा किया हुआ रस क्षारीय औषधि की तरह व्यवहार में आता है) । कोटाइलेडन, फिकस०, कैरिका-(फिग)—डंठल तोड़कर उसका दूध मस्सों पर लगाने से वे गायब हो जाते हैं ।

मात्रा—अरिष्ट और २ दशमलव, पौधे का ताजा रस । ऊपरी प्रयोग के लिये कीड़ों, शहद की मक्खियों के काटने पर और विषैले घाव पर, मांसांकुर पर ।

सेनेसियो आरियस (Senecio Aureus)

(गोल्डेन रंगवर्ट)

चिकित्सा क्षेत्र में, स्त्री अङ्ग विशेष पर इसका प्रभाव बार-बार पुष्ट किया गया है । मूत्र-यन्त्र पर भी इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ता है । गुर्दों में रक्ताधिक्य के कारण पीठ दर्द । जिगर में सख्ती आने की आरम्भिक अवस्था ।

मन—किसी चीज पर ध्यान न लगा सके । निराशा । उत्तेजित और चिड़चिड़ा ।

सिर—धीमा, बुद्धिहीन, बनाने वाला सिर दर्द । पिछले भाग से अगले भाग तक चक्कर की लहरें । बायीं आँख के ऊपर और बायीं कनपटी में तेज दर्द । नाक मार्ग का भरापन; जलन; छींकें आना; अधिक स्राव ।

चेहरा—दाँत अति कोमल। बायीं तरफ तेज कटन दर्द। मुखगह्वर, गला, मुँह सूखा।

आमाशय—खट्टी डकार; मिचली।

गला—मुँह, गला, मुख-गह्वर का सूखापन। गलकोष का जलन, नासा-गलकोष में कच्चापन, बराबर निगलते रहना, चाहे दर्द मालूम हो।

उदर—नाभि के चारों तरफ दर्द; सारे उदर में फैले, मलत्याग से कम हो। कड़े ढोकों से मिला हुआ, पतला पानी-सा मल। (ऐण्टिमो० क्रूडम)। मल त्यागने में काँखना पड़े, पतला गहरे रङ्ग का, खूनी मल, ऐंठन के साथ।

मूत्र—अधिक श्लेष्मा और ऐंटन के साथ, थोड़ा, गहरे रंग का, खूनी मूत्र। बहुत गरम और लगातार इच्छा : गुर्दा प्रदाह। सिर दर्द के साथ। बच्चों के मूत्राशय की उत्तेजना। वृद्ध शूल। (पैरिरा०, ओसिमम०, बर्बे०)।

पुरुष—अनैच्छिक वीर्य स्खलन के साथ कामातुर स्वप्न। मूत्र-ग्रन्थि बढ़ी हों। शुक्ररज्जु में मन्द, भारी पीड़ा, अण्ड तक बढ़े।

स्त्री—मासिक-धर्म देर में, दबा हुआ। पीठ दर्द के साथ युवा कन्याओं में यान्त्रिक कारणों से मासिक-धर्म का रुकना। मासिक-धर्म के पहले गले, सीना, और मूत्राशय में प्रदाह। मासिक-धर्म शुरू होने पर लक्षण कम हों। मूत्र की गड़बड़ी के साथ रक्तहीन, पीड़ायुक्त समय से बहुत पहले और अधिक मात्रा में मासिक-धर्म। (कैल्के०, एरिजे०)।

साँस-यन्त्र—साँस-मार्ग के ऊपरी भाग की तीव्र प्रदाहिक अवस्था। आवाज फटी हुई। मुश्किल से साँस खींचने के साथ ढीली खाँसी। सीना कच्चा और दर्द वाला। ऊपर चढ़ने पर कष्टदायक साँस। (कैल्के०) सूखी कष्टदायक खाँसी, सीने में चिलकन दर्द।

नींद—बहुत औंघाई, शोकातुर स्वप्न। उत्तेजना और अनिद्रा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : सेनेसियो जैकोबिया (मस्तिष्क-मेरुदण्ड की उत्तेजना, पेशियाँ तनी हुईं, खासकर गर्दन और कन्धों की, कर्कट रोग में)। ऐलेट्रिस०; कॉलोफा०, सीपिया।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति तक सेनेसिन, का पहला विचूर्ण।

सेनेगा (Senega)

(स्नेकवर्ट)

नजले की अवस्थायें, खासकर साँस-मार्ग की और पक्षाघातजनित स्पष्ट नेत्र लक्षण, प्रदाह के बाद सीने पर घेरेदार चकत्ते रह जायें।

मन—एकाएक बहुत दिनों के आवश्यक स्थान देखे हुए याद आ जाना। झगड़ालू।

सिर—दाब और आँखों की कमजोरी के साथ सिर में मन्दता। कनपटी में दर्द। माथे में फटन दर्द।

आँखें—पेशियों में अधिक तनाव, सिर पीछे झुकाने से कम। बड़ी पेशी पर प्रत्यक्ष काम करती है। नेत्र प्रदाह, पलक सूखे और पपड़ीदार (ग्रैफा०) सूखी और ऐसा लगे कि घेरों के नाप से बड़ी हैं। आँसू अधिक, टिमटिमाहट, घड़ी-घड़ी पोंछना पड़े। सब चीजें साये में मालूम पड़ें। पैशिक कष्ट। (कास्टि०)। द्वि-दृष्टि, सिर को पीछे झुकाने से कम रहे। नेत्र गोलक के जल का धुँधलापन। नश्तर लगवाने के बाद शीशे के टुकड़ों को पचाने में सहायता देती है।

नाक - सूखी। जुकाम, अधिक पानी-सा स्राव और छींकना। नथुने परपरायें।

चेहरा—बाईं तरफ का लकवा। चेहरे में गरमी। मुँह और होठों के कोनों में जलन। छाले।

गला—छिलन संवेदन, स्वरभंग के साथ गले और मुख-गह्वर का नजले वाला प्रदाह। जलन और कच्चापन। ऐसा लगे कि झिल्ली छिल गई है।

साँस-यन्त्र—स्वरभंग। बात करने में दर्द। खाँसने पर पिछले भाग में फटने जैसा दर्द। स्वर-यन्त्र का नजला। स्वरलोप। ठोकन खाँसी। गलनली तंग मालूम हो। अकसर खाँसी का छींक में अन्त हो। सोने में खड़खड़ाहट (टार्ट० एमे०)। ऊपर चढ़ने से सीने में दाब। सीने की दीवारों के दर्द के साथ वायु नलिका का नजला, अधिक बलगम, दाब और सीने पर बोझ जैसा लगे। वृद्धावस्था में चिमड़ा, अधिक बलगम कठिनाई से निकले। जीर्ण सांतर गुर्दा प्रदाह या जीर्ण वायुस्फीति के वृद्ध लोगों में कमजोर दमा। फुफ्फुसावरण प्रदाह में स्राव। वक्षोदक रोग। (मर्क०, सल्फर०)। सीने पर ऐसा दाब जैसे फुफ्फुस रीढ़ की तरफ ढकेले जा रहे हों। आवाज लड़खड़ाती, स्वर-रज्जु का आंशिक पक्षाघात।

मूत्र—बहुत कम होना, सुतड़ों और श्लेष्मा से लदा हो, पहले और बाद को जलन। गुर्दा प्रदेश में पीछे की तरफ तनाव।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : खुली हवा में, आराम के समय। घटना : पसीना आने से, सिर पीछे की तरफ झुकाने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : कास्टि०, फॉस०, सैपोनिन, एमोनि०, कैल्के, नेपेटा कैटेरिया—कैटनिप (सर्दी पकाने के लिए; शिशु शूल; वायु मूर्च्छा)।

मात्रा—अरिष्ट से ३० शक्ति।

सेना (Senna)

(कैसिया ऐक्युटिफोलिया)

शिशु के उस शूल में जब वह वायु से भरा हुआ जान पड़े, अधिक उपयोग में आती है। मूत्र में ऑक्जैलिक एसिड और साथ में यूरिया की अधिकता; घनत्व की अधिकता हो। जब शरीर शिथिल हो गया हो, कब्ज हो, पेशी दौर्बल्य हो; और नाइट्रोजन पदार्थ की क्षीणता में सेना शक्तिवर्द्धक का काम करेगी। रात में रक्त उबाल। रक्त में एसिटोन की अधिकता, शिथिलता, गशी, शूल और अफरा के साथ कब्ज। जिगर बढ़ा हुआ और कोमल।

मल—पतला, पीला, स्खलन से पहले चुटकी काटने जैसा दर्द। हरियाली लिए आम, अधिक वेग। बना रहे। (मर्क०)। मूत्राशय के बन्द होने के साथ मलाशय में जलन। शूल और अफरा के साथ कब्ज। जिगर बढ़ा हुआ और कोमल, मल कड़ा और गहरे रंग का, भख गायब, जबान पर मैल, बुरा स्वाद और कमजोरी, सभी साथ में।

मूत्र—अधिक गाढ़ा, विशिष्ट घनत्व बढ़ा हो। पेशाब में नेत्रजन, अत्यधिक, मूत्र में आक्जैलिक एसिड, फॉस्फेट और एसिटोन की अधिकता।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : कैलि कार्बो०, जैलापा।

क्रियानाशक—नक्स०; कैमो०।

मात्रा—३ से ६ शक्ति।

सीपिया (Sepia)

(इङ्की जूस ऑफ कटलफिश)

शिराओं में रक्ताधिक्य के साथ शरीर यन्त्रों के उस अंश को प्रभावित करती है जहाँ स्नायु और रक्तवाहिनियाँ प्रवेश करती हैं, और जहाँ से बाह्य प्रणालियाँ निकलती हैं। उदर के अन्दर के भाग में रक्तरोध और उसके कारण कर्महीनता, थकावट, घोर कष्ट। दुर्बलता, पीला चेहरा, धँसन संवेदन, खासकर स्त्रियों में जिनके यन्त्रों पर इसका विशेष प्रभाव होता है। दर्द पीठ तक बढ़े, कम्पन जल्दी मालूम हो। गर्भपात की प्रवृत्ति। रजोनिवृत्ति के समय कमजोरी और पसीनों के साथ गरम लहरें। लक्षण के ऊपर की तरफ जाने की प्रवृत्ति। गशी आना सरल। आन्तरिक भाग में "गोली" जैसा संवेदन। सिपिया साँवले रंग की स्त्रियों पर अच्छा काम करती है। सभी दर्द निचले भाग से उठते हैं। एक प्रसिद्ध गर्भाशयिक औषधि। क्षय रोगी जिनको जीर्ण जिगर रोग और गर्भाशय सम्बन्धी उपद्रव सताते हैं। गरम कमरे में भी ठण्डा मालूम होता है। अनुमस्तिष्क में टपकन, सिर दर्द।

मन—जिनसे अधिक प्रेम था उनकी तरफ से उदासीन। काम-काज से, कुटुम्ब से घृणा। चिड़चिड़ापन, सरलता से क्रुद्ध हो जाये। अकेले रहने का भय। अधिक शोकग्रस्त। लक्षण बताते हुए रुदन करे। क्लेशदग्ध। शाम के लगभग चिन्ताग्रस्त। मन्दता।

सिर—चक्कर, साथ में ऐसा संवेदन मानो कोई चीज सिर के चारों तरफ लुढ़क रही है। संन्यास रोग के आरम्भिक लक्षण। मिचली, कै के साथ सिर के भीतर से बाहर की तरफ, अधिकतर बायीं तरफ या माथे में गड़न दर्द, मकान के अन्दर या दर्द वाली करवट लेटने से अधिक हो। सिर में पीछे और आगे की तरफ झटके आना। चाँद पर ठण्डापन। मासिकधर्म के अन्त में पेशियों के संकोचन; ऋतु काल में कम स्राव के साथ, प्रचण्ड धक्कों की तरह सिर दर्द, बाल गिरें। सिर की सन्धि-अस्थि खुली हो। बालों की जड़ उत्तेजित। माथे पर बालों के पास दाने।

नाक-स्राव गाढ़ा-हरियाली लिए, मोटी गुठलियाँ और खुरण्ड। नाक के आर-पार हल्का पीला दाग। हरा खुरण्ड (अगले भाग से) और नाक की जड़ पर दर्द के साथ जुकाम। जीर्ण नजला, खासकर पिछले भाग का, भारी ढोकेदार स्राव, मुँह से खखारना आवश्यक।

आँखें—पैशिक कष्टदायक दृष्टि, आँखों के सामने काले दाग दिखाई दें, कष्ट-दायक प्रदाह और गर्भाशय बाधा का सम्बन्ध हो। सुबह-शाम नेत्र रोग अधिक हो। चक्षुपटीय अर्बुद। पलकों का नीचे गिरना, उत्तेजना। अधोदेश की शिराओं में रक्ताधिक्य।

कान—कानों के पीछे गरदन की जड़ पर विसर्पिका। चर्म की तह के भीतर के घाव जैसा दर्द, बाहरी कान फूलना और फरन।

चेहरा—पीले चकत्ते; पीला या रक्तहीन, मुँह के पास पीलापन। लाल छत्ते, नाक और गालों पर हल्के कत्थई रंग के, घोड़े की जीभ की तरह धब्बे।

मुँह—जबान साफ। स्वाद नमकीन, घृणित। जबान पर मैल मगर मासिक काल में साफ हो जाये निचले होंठ का फूलना और चिटकना। ६ बजे शाम से आधी रात तक दाँत दर्द, लेटने से अधिक हो।

आमाशय—खालीपन; का संवेदन भोजन करने से कम न हो (कार्बो० एनि०)। भोजन को देखते ही या उसकी गन्ध से जी मिचलाये। करवट लेटने से मिचली अधिक हो। अधिक तम्बाकू पीने से आया अनपच रोग। सभी चीजें नमकीन लगें। (कार्बोवेजि०, चाइना) कोखों के चारों तरफ चार इञ्च चौड़ा दर्द का पट्टा बँधा मालूम हो। सुबह खाने से पहले मिचली। खाने के बाद भी मिचलाना। तलपेट में जलन। सिरका, अम्ल, अचार खाने की इच्छा। दूध पीने से

रोग बढ़े, खासकर खौलाए हुए दूध से उदर फूलने के साथ खट्टा अनपच डकार। घी और मक्खन से घृणा।

उदर—बादी, सिर दर्द के साथ। जिगर चोटीला और दर्दीला; दाहिनी तरफ लेटने से अधिक हो। उदर पर बहुत-से कत्थई चकत्ते। उदर में ढीलापन और धँसन संवेदन।

मलाशय—मल त्यागने के समय खून बहना और मलाशय में भारीपन। कब्ज, बड़े आकार का कड़ा मल; मलाशय में गोला जैसा मालूम हो, काँख न सके, अधिक कूँथन और ऊपर की तरफ चुभन दर्द के साथ। ढीला मल, कठिन। काँच निकलना (पोडा०) गुदा से लगभग लगातार रस पसीजना। शिशु दस्त, खौलाये दूध से अधिक हो और तेज शिथिलता। मलाशय और योनि में दर्द ऊपर की तरफ झपटे।

मूत्र—लाल; चमकीला, मूत्र में बालू। पहली नींद में अनैच्छिक मूत्र-स्खलन। जीर्ण मूत्राशय प्रदाह, मन्द मूत्र-स्खलन, पेडू के ऊपर-नीचे के धँसन संवेदन के साथ।

पुरुष—जननेन्द्रिय ठंडी। घृणित पसीना। जीर्ण सुजाक का स्राव, केवल रात ही में मूत्रमार्ग से स्राव आए, दर्द न हो। लिंगमुण्ड के चारों तरफ मांसाकुर। मैथुन से रोग उत्पन्न हो।

स्त्री—पेडू क्षेत्र के यन्त्र ढीले पड़ गये हों। बाहर की ओर दबाव, संवेदन मानो सभी चीजें योनि लिंगिका की तरफ से बाहर निकल जायेंगी। (बेला०, क्रियोजोट०, लिलि० टिग्रि०; लैक कैना०; नैट्र० का०, पोडो०)। बाहर निकलना रोकने के लिए टाँगों को एक पर एक रखना पड़े या योनि को दबाना पड़े। प्रदर, अधिक खाज के साथ, पीला, हरियालीदार स्राव। मासिक-धर्म बहुत देर में और कम मात्रा में, क्रमभ्रष्ट; समय से पहले और अधिक मात्रा में, तेज चुभन दर्द। योनि में ऊपर की तरफ तेज चिलकन, गर्भाशय में नाभि तक। गर्भाशय और योनि का बाहर निकलना। गर्भावस्था की मिचली और कै। योनि दर्द खासकर मैथुन के समय।

साँस-यन्त्र—सूखी, थकान लाने वाली खाँसी, पेट से उठती मालूम हो। खाँसी के समय सड़े अण्डे का स्वाद। सुबह और शाम सीने पर दाब। कष्टदायक साँस, सोने के बाद बढ़े, हरकत से कम। सुबह को अधिक नमकीन बलगम के साथ खाँसी आना। (फॉस०, एम्ब्रा०)। फुफ्फुस के निचले भाग में खून जमा हो जाने के कारण फुफ्फुसावरण प्रदाह। कुकुर खाँसी जो जल्द अच्छी न हो। सीने या स्वरयन्त्र में गुदगुदी के कारण खाँसी।

दिल—प्रचण्ड, धड़कन रुक-रुक कर हो। सभी धमनियों में टपकन। रक्तावेग के साथ कम्प संवेदन।

पीठ—पिठासे में कमजोरी। दर्द पीठ में बढ़े। कन्धों के बीच में ठण्डापन।

अंग—निचले अंग कर्महीन और तने हुए, बहुत छोटे होने जैसा तनाव। भारीपन और चोटीलापन। सभी अंग अशांत। रात-दिन झटके आएँ और फड़कन हो। एड़ी में दर्द। पैर और टाँगों में ठण्डापन।

ज्वर—अकसर गरम लहरें, जरा-सी हरकत से पसीना आये। शरीर में गरमी की कमी। पैर ठण्डे और तर। प्यास के साथ कम्प, शाम के लगभग अधिक।

चर्म—कहीं-कहीं, इधर-उधर विसर्पिका रोग के चकत्ते। खुजली, जो खुजलाने से कम न हो। केहुनी और घुटनों के मोड़ों में अधिक। पीलापन लिए भूरे रंग के चकत्तों का चर्म रोग, होठों पर मोटा दाद, मुँह के आसपास और नाक पर। हर वसन्त ऋतु में दाद की तरह चर्म रोग। खुली हवा में जाने पर जुलपित्ती, गरम कमरे में कम। अत्यधिक, दुर्गन्धित पसीना। पैर पर पसीना, अंगुलियों पर अधिक, असह्य, दुर्गन्धित। युवा स्त्रियों के चर्म पर बदरंग धब्बा। घृणित दुर्गन्ध के साथ सख्त पड़ना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: दोपहर के पहले और शाम को, कपड़ा धोने से, नहाने से, तरी से, बायीं तरफ, पसीना आने के बाद; ठंडी हवा से, सेंकने से, तूफान के पहले। घटना : व्यायाम से, बिस्तर की गरमी, सेंकने से, अङ्ग सिकोड़ने से, ठण्डे पानी से नहाने से, सोने के बाद जागने पर।

सम्बन्ध—पूरक : नेट्र० म्यूरि०, फॉसफो०, नक्स० (इसके असर को बढ़ाती है)। गुवेकम अक्सर सीपिया के बाद लाभदायक होती है।

विरुद्ध: लैके०, पल्से०।

तुलना कीजिए : लिलिय०, म्युरेक्स०, साइलीसिया, सल्फर; ऐस्पेरुला—नैसेंट ऑक्सीजन-भभके से उतारा पानी जिसमें यह गैस घुला हो—(युवा लड़कियों का प्रदर रोग और गर्भाशय का नजला); ओजोनम (त्रिकास्थि का दर्द, पेड़ू के अन्दर यन्त्रों और विटप क्षेत्र में थकावट); (डिक्टैम्नस—बर्निङ्ग बुश—(प्रसव वेदना में आराम देती है), गर्भाशय से रक्तस्राव, प्रदर और कब्ज, निद्रा-भ्रमण में भी), लैपेथम (संकोचन और गर्भाशय से ठेलने की चेष्टा और गुर्दों के दर्द के साथ प्रदर रोग)।

मात्रा—१२, ३० और २०० शक्ति। अधिक नीची शक्ति का व्यवहार नहीं करना चाहिए और न बार-बार दोहराना चाहिए। इसके विरुद्ध डा० जूसेट का विचित्र अनुभव है कि इसको कुछ दिनों तक बड़ी मात्रा में सेवन करना चाहिये। १x दिन में दो बार।

सीरम एँग्विलर इक्थियोटॉक्सिन (Serum Ang. Ich.)

(ईल सीरम)

ईल मछली का रक्ताम्बु, रक्त पर विषैला प्रभाव पड़ता है और तेजी से उसकी लाल रक्त-कणिकाओं को नष्ट कर देता है। मूत्र में अण्डलाल और बालू के कण, पेशाब में रक्तरंजक का निकलना, मूत्ररोध (२४ से ३६ घण्टों तक), और इसके साथ-साथ मृत देह परीक्षा, ये सभी इन बातों को सिद्ध करते हैं कि इस द्रव्य का मुख्य प्रभाव क्षेत्र गुर्दे हैं। इसके अतिरिक्त इसका द्वितीय वर्ग का प्रभाव जिगर और हृदय पर होता है जिससे ऐसे परिवर्तन होते हैं जैसे संक्रामक रोग में पाये जाते हैं।

इन सभी ऊपर लिखी बातों से चिकित्सा क्षेत्र में ईल मछली के रक्ताम्बु के मौलिक लक्षणों का पता चलता है। जब कभी सर्दी से, संक्रमण से या नशे से गुर्दे तीव्र रूप से रोगग्रस्त हो जाते हैं और आक्रमण में पेशाब की कमी, या बिल्कुल बन्द होना या सांडलाल मूत्र होना विशेष रूप से पाया जाता है, तो ऐसी अवस्थाओं में हम ईल के रक्ताम्बु को पेशाब बढ़ाने और ठीक करने में और अण्डलाल को रोकने में अति लाभदायक पावेंगे। जब हृदय रोग के बीच में अच्छी तरह से काम करने-वाले गुर्दे एकाएक सुस्त हो जायें और रोगग्रस्त हो जायें और जब इसके अतिरिक्त हृदय की गति क्रमभ्रष्ट हो जाये तथा हृदय संकोचन क्रिया का अभाव स्पष्ट होने लगे, इस दशा में भी हमको इस रक्ताम्बु से अच्छे लाभ की आशा रखनी चाहिए। मगर ऐसी अवस्था में इस औषधि का निर्णय करना आसान काम नहीं है। जब कि डिजिटैलिस के तीन प्रसिद्ध लक्षण दिखाई पड़ते हैं—धमनी का अति तनाव; पेशाब की कमी और शोथ। ईल के रक्ताम्बु की विशेषता अति तनाव और पेशाब की कमी बिना शोथ की है, हमको यह ध्यान रखना चाहिए कि ईल सीरम का प्रभाव विशेषकर गुर्दों पर होता है और मुझको विश्वास है तथा मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि अगर डिजिटैलिस हृदय रोग की औषधि है तो ईल का सीरम गुर्दा रोग की औषधि है। कम-से-कम यहाँ तक तो जितने अनुभव अब तक प्रकाशित हुए हैं सभी से यह अन्तर सिद्ध होता है। हृदय का आकुञ्चन रुकने के आक्रमण में ईल के सीरम ने कम प्रभाव दिखाया है, मगर उसने हृदय सम्बन्धी मूत्र में यूरिक अम्ल की अधिकता की अवस्था में अच्छा लाभ दिखाया है। इसी कारण जहाँ डिजिटैलिस शक्तिहीन सिद्ध हुआ है वहाँ ईल के सीरम ने गुर्दों की थकावट को दूर करके अधिक मात्रा में मूत्र-स्राव बढ़ाया है। मगर इसका वास्तविक संकेत तीव्र गुर्दा प्रदाह की अवस्था में स्पष्ट मिलता है। (जूसेट)।

मन्द वृक्क-प्रदाह। हृदय रोग—जब आकुञ्चन क्रिया रुक जाये और हृदय गति बन्द होने की सम्भावना हो। डॉ० जूसेट के प्रयोगों ने यह अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है कि इससे तीव्र वृक्क-प्रदाह की उपस्थिति में, जब कि मूत्र में मूत्र अम्ल की अधिकता की प्रबल सम्भावना हो, हमको इस सीरम पर ध्यान देना चाहिए। हृदय की यान्त्रिक बाधाओं में अति लाभदायक है। हृदय के ढकनों की संकुचन क्रिया की कमी, शोथ के साथ या बिना शोथ के हृदय गतिरोध, साँस कष्ट और मूत्र-स्खलन में कठिनाई।

सम्बन्ध—ईल सीरम और वाइपेरा के विषय में बहुत समानता पायी जाती है।

तुलना कीजिये : पेलियस; लैकेसिस।

मात्रा—ग्लिसरीन या भभके से उतारे हुए पानी में इसकी शक्ति बढ़ाई जाती है, निचली शक्ति १x से ३x हृदय रोग में, ऊँची शक्ति तीव्र वृक्क आक्रमण में।

साइलीसिया (Silicea)

(सिलिका-प्योर फ्लिंट)

परिपक्वता अपूर्णता और उसके कारण पोषण बाधाएँ। यह इससे भी आगे बढ़कर स्नायु दौर्बल्य की अवस्था परिणामतः उत्पन्न करती है और स्नायु शक्तिवर्द्धन व परिवर्तित क्रिया के लिए संवेदनशीलता को तीव्र करती है। अस्थि रोग, सड़न, गलन। साइलीशिया शरीर में सूत्र को पचाने की और घाव के निशान के तन्तुओं को पचाने की शक्ति देती है। क्षय रोग में इसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। क्योंकि ऐसी अवस्था में यह घाव-चिह्न पचा कर रोग को तीव्र कर देता है जो पहले उन तन्तुओं में दबा था (जे० वियर)। यान्त्रिक परिवर्तन, इसका काम गहरा और धीमा होता है। सामयिक अवस्थायें, फोड़े, तालुमूल प्रदाह, सिर दर्द, आक्षेप, मिरगी रोग, आक्रमण के पहले ठंडापन। कोमल अर्बुद। कण्ठमालिक बच्चे अस्थि दौर्बल्य विकारी, जिनका सिर बड़ा हो, बच्चों की चाँद का अस्थि-सन्धि स्थान खुला हुआ और पुराने टाँकों का खुलना, उदर फूलना। बच्चों के चलना सीखने में देर लगे। माता का टीका लगवाने के दुष्प्रभाव। मवाद बनने की अवस्थाएँ। सभी नासूर छेद प्रभावित होते हैं। चूँकि मवाद बनाता है इसलिए फोड़ों के पकने में सहायक होता है। साइलीसिया का रोगी ठंडा, काँपता है, आग को छाती से लगाता है; बहुत गरम कपड़ा पहनता है, बाहरी हवा से घृणा करता है, हाथ और पैर ठण्डे, जाड़े में रोग अधिक हो। जीवनताप की कमी। मानसिक और शारीरिक शिथिलता। सर्दी

के प्रति असहिष्णुता। मदिरायुक्त पेय से घृणा। सभी रोग जिनमें मवाद बनने की प्रवृत्ति हो। मिरगी रोग। नैतिक अथवा शारीरिक साहसहीनता।

मन—सहनशील, कायर, चिंतित। स्नायविक और उत्तेजित। प्रबल असहिष्णुता। मानसिक धुँधलापन। जिद्दी, हठी बच्चे। चित्तभ्रम। विचार दृढ़ता, केवल आलपीनों के बारे में सोचता रहता है, उनसे भय मालूम पड़े। उन्हें खोजता है और गिनता है।

सिर—उपवास करने से आयी टीस। ऊपर देखने से चक्कर आये, गरम कपड़ा लपेटने से कम, बाईं करवट लेटने से भी कम। (मैग्नेशिया० म्यूरि०, स्ट्रांशिया०)। सिर पर अधिक पसीना; घृणित, गर्दन तक पहुँचे। दर्द सिर के पिछले भाग में शुरू होकर सिर भर में फैले और आँखों के ऊपर आकर ठहर जाये। दोनों भौंवों के बीच का स्थान फूला हो।

आँखें—आँखों के कोने रोगग्रस्त। अश्रु-नलिका का फूलना। प्रकाश से घृणा, खासकर दिन के प्रकाश से, उससे चकाचौंध हो, आँखों में तेज दर्द, आँखें स्पर्श सहन न करें, बन्द करने से कष्ट बढ़े। साफ न दिखाई पड़ना, अक्षर गिचपिचा जायें। बिलनी। उपतारा प्रदाह, उपतारा तथा कृष्णपटल प्रदाह, आंतरिक भाग में मवाद पड़ना। कनीनिका में छेद होना या चर्बीला घाव। आघात के कारण कनीनिका का फाड़ा। दफ्तर में काम करने वालों का मोतियाबिन्द। चक्षु-प्रदाह और कनीनिका घाव के दुष्प्रभाव। धुँधलापन साफ करती है। ३०x शक्ति महीनों तक व्यवहार करें।

कान—घृणित स्राव। कर्णास्थि का सड़ना। पिस्तौल छूटने जैसी तेज आवाज। आवाज असह्य। कानों में गरज।

नाक—नाक के सिरे पर खाज। सूखी, कड़ी खुरण्ड, उखाड़ने से खून बहे। नाक की हाड्डियाँ उत्तेजित। सुबह को छींक आना। जकड़ी और गन्धहीन। निचले पर्दे की झिल्ली में छेद होना।

चहरा—होंठ के किनारों का चर्म चिटकना। ठुड्डी पर दाने। मुखमंडल का स्नायुशूल, थरथराहट, फरन, लाली, ठंडी तरी से रोग बढ़े।

मुँह—जबान पर बाल रखा है, ऐसा मालूम पड़े। मसूड़े ठंडी हवा सहन न करें। मसूढ़ों पर फुड़िया। दाँत की जड़ पर फोड़े। मसूढ़ों का सड़ना। (मर्कुरियस कोरोसाइ०), ठंडा पानी असह्य।

गला—सामयिक तालुमूल प्रदाह। तालुमूल में आलपीन जैसी गड़न। जुकाम

गले में जमा हो जाये। कर्णमूल-ग्रन्थि फूली हों। (बेला,० रस०, कैल्के०)। निगलने में चुभन दर्द। ग्रीवा ग्रन्थि कड़ी, ठंडी फूली हुई।

आमाशय—मांस और गरम भोजन से घृणा। भोजन निगलने पर पिछले छिद्र में सरलता से घुस जाये। भूख न लगना, प्यास अधिक। खाने के बाद खट्टी डकार। (सिपिया०, कैल्के०)। तलपेट दाब से दर्द करे। पीने के बाद कै करना। (आर्से०; वेरेट्रम०, वेरैटा०)।

उदर - दर्द या दर्दीली ठंडक उदर में, बाहरी गरमी से कम। कड़ा, फूला। शूल, कटन दर्द, साथ में कब्ज, पीले हाथ और नीले नाखून। आँतों में अधिक गड़-गड़ाहट। पुट्ठे की ग्रंथियाँ फूली हुईं और दर्दीली। जिगर का फोड़ा।

मलाशय—पक्षाघातग्रस्त मालूम हो। गुदा में नासूर। (वर्बे०; लैके०)। दरारें और बवासीर, दर्दीली संकुचन छल्ले में झटकन के साथ। मल कठिनाई से निकले, जरा-सा निकल कर फिर भीतर सरक जाये। बहुत काँखना पड़े, मलाशय में चुभन, मलद्वार बन्द हो जाये। मल बहुत देर तक मलाशय में अटका रहे। मासिक-धर्म के पहिले और बीच में सदा कब्ज रहे, साथ में गुदा संकोचन, छल्ले में उत्तेजना। दुर्गन्धित दस्त।

मूत्र—खूनी, अनैच्छिक, लाल या पीली तलछट के साथ। मलत्याग काल में काँखने पर ग्रन्थि रस निकले। केचुवे वाले बच्चों को रात में अनैच्छिक मूत्र-त्याग।

पुरुष—जांघों के भीतरी भाग पर दोनों के साथ; जननेन्द्रिय पर जलन और छरछराहट। जीर्ण सुजाक, गाढ़ा, घृणित स्राव। अण्डकोष फूलना। अति कामोत्ते-जना, रात्रि-वीर्य-स्खलन। अण्ड वृद्धि।

स्त्री—दूधिया (कैल्के०, पल्से, सिपिया) तेजाबी प्रदर, मूत्र-स्खलन-कालीन। योनिलिंगिका और योनि खाज, अति उत्तेजनीय। दो मासिककाल के बीच में रक्त-स्राव। सारे शरीर पर बर्फीली ठंडक के आक्षेपिक आक्रमण के साथ अधिक मासिक-स्राव। स्तन घुण्डी अति दर्दीली, जल्दी पके, भीतर को धँसी हों। स्तनों के नासूरी घाव (फास०)। योनि के होठों का फोड़ा। जब बच्चा दूध पीये तब योनि से रक्त बहे। योनि पर श्लैष्मिक थैलियाँ। (लाइको०; पल्से०; रोडो०)। स्तन में कड़ी गुठलियाँ। (कोनियम०)।

साँस यन्त्र—जुकाम जल्द अच्छा न हो, बलगम लगातार, मवादी श्लैष्मिक और अधिक। फुफ्फुस प्रदाह के बाद अच्छा होने में देर लगे। खाँसी और गलक्षत साथ में छोटी गोलियों की तरह बलगम जो टूटने से बहुत दुर्गन्ध करे। दिन में बलगम के साथ खाँसी, खूनी या मवादी। सीने के भीतर से होकर पीठ तक चिलकन। लेटने

के समय तीव्र खाँसी, गाढ़ा, ढोंकेदार, पीला बलगम, बलगम की मवादी अवस्था (बेलसमम पेरूवियेनम)।

पीठ—रीढ़ कमजोर, पीठ पर बाहरी हवा लगने से अति उत्तेजनीय, रीढ़ की अन्तास्थि में दर्द। रीढ़में चोट लगने से उसमें उत्तेजनीयता, रीढ़ की हड्डियों का रोग। रीढ़ की वक्रता।

नींद—सोते में चलना-फिरना, नींद में ही उठ बैठे। अनिद्रा, अधिक रक्तोत्तेजना और सिर में गरमी के साथ। सोते में अक्सर चिहुँकना। व्याकुल स्वप्न। अधिक मुँह फैलाना।

अंग—गृध्रसी। कूल्हा, टाँगों, पैरों में दर्द। पिण्डली और तलवों में ऐंठन। टाँगों की कर्महीनता। हाथों के प्रयोग से उनमें कम्पन आए। अगली बाँह की पक्षाघातिक कमजोरी, अंगुलियों के नाखूनों के रोग, खासकर अगर उन पर सफेद धब्बे हों, पैर के नाखूनों का भीतर की तरफ बढ़ना। बर्फीली ठंडक और पसीनेदार पैर। जो भाग सोने में दबे वह सुन्न हो जाये। पैरों, हाथों और काँखों में घृणित पसीना। अंगुलियों के सिरों में पकन संवेदन। गल्का रोग। घुटने में दर्द मानों कसकर बँधा हो। पिंडली तनी और सिकुड़ी। पैर की अंगुलियों के नीचे दर्द। तलवे दर्दीले। (रूटा०)। पैर के भीतरी भाग से भीतर ही भीतर तलवों तक दर्दीलापन। मवाद पड़ना।

चर्म—अंगुली के फोड़े, फोड़े-फुन्सियां, पुराने नासूरा घाव। कोमल, हल्का पीला, मोम जैसा चर्म। अंगुलियों के सिरे के पास चिटकना। ग्रन्थियों का बिना दर्द के फूलना। गुलाबी रंग के चकत्ते। पुराने घाव के निशान एकाएक दर्दीले हो जायें। मवाद घृणित। तन्तुओं में धँसी हुई चीज बाहर निकालने में सहायक हैं। जरा-सी चोट पक जाये। दीर्घकालीन नासूरी और मवादी अवस्था। अंगुलियों के सिरे सूखे। चर्म फटन, केवल दिन में या शाम को खुजलायें। नाखून चिटके हुए नाटे। कड़े अर्बुद। जोड़ों के फोड़े। अशुद्ध टीका लगवाने की बाधायें। कोषों का बढ़ना। कुष्ठ रोग, अस्थि गुल्म और ताँबे के रंग के चकत्ते। कोर्म अर्बुद।

ज्वर—शीत; ठंडी हवा असह्य। रेंगन, सारे शरीर पर कम्पन। अंग ठंडे गरम कमरे में भी। रात में पसीना सुबह के लगभग अधिक। रोगग्रस्त भाग ठंडा मालूम पड़े।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : अमावस को, सुबह को, धोने से, मासिक काल में ओढ़ना हटाने से, लेटने से, तरी में बायीं करवट लेटने से, ठंडक से। घटना : हल्के गरमी से, सिर को लपेटने से, गरमी के दिनों में; भींगना या नम मौसम में।

सम्बन्ध—पूरक : थूजा०, सैनिकू०, पल्स, फ्लोरिक एसिड। मरक्यूरियस और साइलीसिया एक के बाद दूसरी अच्छा काम नहीं करती।

तुलना कीजिए : ब्लैक गनपाउडर ३x (फोड़े, फुन्सियाँ, कारबंकल, अंग बैंगनी)। घाव जो न भरें; खराब भोजन या पानी का बुरा परिणाम—(क्लार्क)। हीपर, कैलि फॉस०; पिक्रि० एसिड; कैल्के०; फॉस०; ताजशोर, नैट्रम सिलिकम (अर्बुद; अस्वाभाविक रक्तस्राव की प्रवृत्ति, सन्धि-प्रदाह; मात्रा ३ बूँद, दिन में ३ बार दूध में); फेरम सायनेटम (मिरगी, स्नायु रोग, साथ में उत्तेजनीय दौर्बल्य और अति उत्तेजनीयता, खासकर सामयिक प्रकार की), सिलिका मैरिना—सी सैंड-सिलिका और नैट्रम म्यूर के लक्षण। ग्रन्थि प्रदाह और पकन का आरम्भ। कब्ज। (कुछ समय तक ३x विचूर्ण व्यवहार करें), विट्रम-क्राउन ग्लास—(रीढ़ की वक्रता, सिलिका के बाद, हड्डी का सड़ना, स्राव पतला, पानी-सा घृणित। अधिक दर्द, कंकड़ी की तरह किरकिराहट और रगड़न), एरंडी डोनैक्स (निष्कामक और उत्पन्नकारक यन्त्रों पर काम करती है, पकन, खासकर जीर्ण और जहाँ घाव नासूरी हो, खासकर लम्बी हड्डियों में। सीने पर, ऊपरी अंगों पर और कानों के पीछे खुजलीदार दाने)

मात्रा—६ से ३० शक्ति। २०० और उससे ऊँची शक्ति निश्चित रूप से प्रभावशाली : कठोर सांघातिक रोगों में कभी-कभी सबसे निचली शक्तियाँ लाभदायक होती हैं।

———

सिल्फियम (Silphium)

(रोजिन वीड)

कई प्रकार के दमा रोग और जीर्ण वायुनलिका प्रदाह में व्यवहार की जाती है। मूत्राशय का नजला इन्फ्लुएन्जा। पेचिश; आक्रमण से पहले सफेद श्लेष्मा से ढँका हुआ कब्ज का मल।

साँस-यन्त्र—तर खाँसी, बलगम अधिक; तारदार, झागदार, हल्के रंग का। सीने में श्लेष्मा के लड़खड़ाने के संवेदन से शुरू हो और बाहरी हवा से अधिक हो। फुप्फुस का संकुचन। जुकाम, साथ में अधिक, तारदार श्लैष्मिक स्राव। गला खखारने और खुरचने की इच्छा। पिछले छिद्रों की उत्तेजना जिसमें नथनों की श्लैष्मिक झिल्ली भी सम्मिलित हो, साथ में आँखों के घेरों के ऊपर के भाग में संकुचन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एरालिया०, कोपेवा०; टेरिबि०; क्युबेबा, सैम्बु०;

सिल्फियॉन साइरेनैकम (फुफ्फुस का क्षय रोग, साथ में लगातार खाँसी, अधिक रात-पसीना; दुवलापन इत्यादि); पालिगोनम एविक्युलेरे (क्षय रोग में उपयोगी पाई गई है जब मूल अरिष्ट की स्थूल मात्रा दी गई), सैल्विया (गुदगुदीदार खाँसी), आरम ड्रैकान्टियम (रात में लेटने पर ढीली खाँसी)। जस्टिसिया एधाटोडा (वायुनलिका का नजला, अधिक भारी और अति उत्तेजनीय)।

मात्रा —३ शक्ति। कुछ लोग निचली विचूर्ण शक्ति को अच्छा समझते हैं।

सिनापिस नाइग्रा (Sinapis Nigra)

(ब्लैक मस्टर्ड)

इन्फ्लुएञ्जा, जुकाम, और गलकोष प्रदाह में उपयोगी है। गाढ़े ढोंकेदार स्राव के साथ नथने और गलकोष का सूखापन।

सिर—सिर की खाल गरम और खुजलाए। ऊपरी होंठ और सिर के अगले भाग पर पसीना। जबान छालेदार मालूम पड़े।

नाक - पिछले छिद्र का श्लेष्मा ठंडा मालूम पड़े। थोड़ा, तेजाबी स्राव। पूरे दिन बायाँ नथुना बन्द रहे या तीसरे पहर और शाम को। सूखा, गरम आँख से पानी बहने के साथ, छींक, ठोंकन, खाँसी लेटने से कम। नथुना एक के बाद दूसरा बन्द हो। नथनों के अगले भाग का सूखापन।

साँस-यन्त्र—लेटने से खाँसी कम हो जाये।

गला—झुलसा, गरम, सूजा मालूम पड़े। दमा जैसा साँस। तेज आवाज वाली खाँसी के हमले, साँस बाहर निकलने में कुत्ता भोंकने जैसी आवाज निकले।

आमाशय—घृणित साँस, प्याज की गन्ध (एसाफि०; ऐरमोरैक०) पेट में जलन, कंठनली, गला और मुँह तक बढ़े जिसमें मुख-क्षत हो। गरम, खट्टी डकार। शूल। केवल झुकने पर शूल उठे, सीधे बैठने से कम हो। पसीना, मिचली आने से कम हो।

मूत्र—मूत्राशय में दर्द, रात-दिन बार-बार अधिक पेशाब होना।

पीठ—पसलियों के बीच की पेशियों में और कटिक्षेत्र में वात दर्द, पीठ और कूल्हों के दर्द से नींद न आये।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: सल्फर, कैप्सिकम०, कोलोसि०, सिनैपिस ऐल्बा—व्हाइट मस्टर्ड—(गले के लक्षण स्पष्ट, खासकर दाब और जलन, कण्ठनली में रुका-

वट के साथ, गलनली में ढोंका जैसा संवेदन जो वक्षास्थि के ऊपरी भाग के पी
मालूम हो, साथ में बहुत डकार आवे, वैसे ही लक्षण मलाशय में मालूम हो। मस्ट
आयल सूँघने से (त्रिकशाखा नाड़ी के संवेदन, नाड़ी के अन्त होने के स्थान प
काम करती है। कानों के निचले भाग की पीड़ा कम करती है और नाक, नथु
और तालुमूल की पीड़ाजनक अवस्थाओं में लाभदायक है)।

मात्रा—३ शक्ति।

स्कैटाल (Skatol)

अन्नासार सड़न की अन्तिम अवस्था दर्शाती है और मानव मल का एक अं
है। आंत्रिक सड़न के कारण स्वयं विष के साथ मुहासे।

आमाशय और उदर के लक्षण तथा सिर के अगले भाग में दर्द। मन्दता औ
उत्साहहीनता। कोसने और कसम खाने की इच्छा।

मन—ध्यान लगाने की कमी; अध्ययन करना असम्भव, निराश, लोगों के सा
रहने की इच्छा। चिड़चिड़ापन। सबकी तरफ से गन्दा विचार।

सिर—अगले भाग का दर्द, बाईं आँख पर अधिक, शाम को अधिक हो, ज
सो जाने के बाद कम हो।

पक्वाशय—जबान पर मैल, घृणित स्वाद। सब अनाज का स्वाद नमकी
लगे। डकार लेना। भूख अधिक। हल्का, पीला, पतले आकार का कम, अ
घृणित मल। आंत्रिक अनपच।

मूत्र—अकसर, थोड़ा, जलन, कठिन।

नींद—सोने की अधिक इच्छा, जागने पर अप्रफुल्लित, निद्रालु अवस्था।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : इण्डोल, बैप्टिसिया, सल्फर।

मात्रा—६ शक्ति।

स्कूकम चक (Skookum Chuck)

(चक-वाटर एँड स्कूकम-स्ट्रांग)

(साल्ट्स फ्राम वाटर फ्राम मेडिकल लेक नियर स्पोकेन, वाश)

चर्म और श्लैष्मिक झिल्ली से प्रबल आकर्षण है—एक खाजनाशक औषधि

मध्य कर्ण प्रदाह। अधिक, रक्तमय मुर्दे जैसी गन्ध का स्राव। मूत्र में मूत्राम्ल की अधिकता। जुकाम। जुलपित्ती। चर्मरोग। अकौता। सूखा चर्म। इन्फ्लुएन्जा। अधिक जुकामी स्राव और छींकें आना।

सम्बन्ध – सैक्सोनाइट—(चर्म को साफ करने की, गन्धहीन और शान्तिप्रद गुण होते हैं। (कॉपर्थवेट)। अकौता, झुलसन, जल जाना, घाव, बवासीर)।

मात्रा—१ विचूर्ण।

सोलेनम लाइकोपरसिकम (Solanum Lyco.)

(टोमैटो)

वात रोग और इन्फ्लुएञ्जा के लक्षण स्पष्ट हैं। सारे शरीर पर तीव्र टीस। इन्फ्लुएन्जा के बाद दर्द रह जाये। सिर में सदा तीव्र रक्ताधिक्य के चिह्न दिखाई दें। इन्फ्लुएञ्जा, जरा-सी धूल में साँस लेने से स्पष्ट रूप से रोग बढ़ जाये। घड़ी-घड़ी पेशाब लगना और अधिक पानी-सा दस्त।

सिर—फटन दर्द, पिछले भाग से शुरू होकर सारे शरीर में फैले। सारा सिर और उसकी खाल दर्द वाली मालूम हो, कुचली, जो दर्द बन्द होने के बाद मालूम पड़े।

आँखें—मन्द, भारी, पुतली सिकुड़ी हुई, ढेले सिकुड़े मालूम हों, आँखों के अन्दर और चारों तरफ टीस। आँखें भरभराई हुई।

नाक—अधिक, पानी-सा जुकाम; गले में टपक पड़े। अगले भाग में खुजली; नाक में गर्द जाने से अधिक हो; घर के अन्दर कम रहे।

दिल—चिंता और भयभीत होने के साथ नाड़ी की गति में स्पष्ट रूप से वृद्धि।

साँस-यन्त्र—आवाज भारी। सीने में दर्द, सिर तक बढ़े। आवाज फटी हुई; लगातार गला साफ करने की इच्छा। ठेलने वाली खाँसी, गहरी और कड़ी। सीना दबा जान पड़े, सूखी, ठोंकन खाँसी, रात में अधिक आए और नींद न आने दे।

मूत्र—खुली हवा में बराबर टपका करे। रात में पेशाब करने उठना पड़े।

अङ्ग—पीठ के आरपार पर टीस। कटि-प्रदेश में धीमा दर्द। दाहिनी त्रिकोण कंधास्थि में और वक्षाच्छादिनीपेशी में तेज पीड़ा। दाहिनी बाँह के बीच में गहराई तक दर्द। दाहिनी केहुनी और कलाई में और दोनों हाथों में वातपीड़ा। निचले अंगों में तीव्र टीस। दाहिनी जाँघ का स्नायुशूल। दाहिनी बाँह के भीतर वाली दोहरी हड्डी के स्नायु मार्ग में चुनचुनाहट।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : दाहिनी तरफ, खुली हवा में, लगातार हरकत से, झटका, आवाज। घटना : गरम कमरे में, तम्बाकू से।

सम्बन्ध तुलना कीजिये : बेलाडो० बाद में अच्छा काम करती है। (युपे० पर्फ; रस०, सैंग्विने०; कैप्सि०)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

सोलेनम नाइग्रम (Solanum Nigrum)

(ब्लैक नाइट शेड)

सारे शरीर में धनुष्टंकारीय आक्षेप और सख्ती के साथ उन्माद। अर्गट खाने की बुरी आदत की अवस्था में लाभ के साथ व्यवहार की गई है। सिर और आँखों पर स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। मस्तिष्क प्रदाह। जीर्ण आंत्रिक विषैली अवस्था। दाँत निकलने के काल में मस्तिष्क उत्तेजना। प्रचण्ड और आक्षेपिक प्रकार की बेचैनी। अंगों के सिकुड़न के साथ सुरसुरी।

सिर—प्रचण्ड प्रलापक सन्निपात। चक्कर, घोर सिर दर्द और मानसिक क्रिया की पूर्ण लोपता। भयानक स्वप्न। रक्त संचित सिर दर्द।

नाक—तीव्र जुकाम, अधिक पानी-सा स्राव; दाहिने नथने से, बायाँ बन्द, साथ में कम्प और गरमी बारी-बारी से।

आँखें दोनों आँखों में ऊपर दर्द। पुतलियों का बारी-बारी फैलना और सिकुड़ना, दुर्बल दृष्टि, तैरते हुए धब्बे दिखाई दें।

साँस-यन्त्र—सीने में संकुचन संवेदना कठिन साँस के साथ; गले में गुदगुदी के साथ। बलगम गाढ़ा, पीला। बायीं तरफ सीने में दर्द; स्पर्श से दर्द।

ज्वर—ठंडक और गरमी बारी-बारी। अरुण ज्वर, चकत्तों में फरन। जबड़े सुर्ख।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : बेलाडो०; सोलेनम कैरोलिनेंस—हॉर्स नेटल—(आक्षेप और मिरगी, २०-४० बूँद की मात्रा में; बुद्धिहीन प्रकार की मिरगी में अति लाभदायक, जहाँ रोग बचपन से आगे बढ़ने लगे, गुल्म वायुयुक्त मिरगी, कुकुर खाँसी में भी), सोलेन० मेमोसम—ऐपल ऑफ सीडम (बायें कूल्हे के जोड़ में दर्द), सोलेन० ओलेरैसियम—(स्तन ग्रंथि का फूलना, अधिक दुग्ध स्राव के साथ), सोलेन० ट्यूबरोसम—पिंडली ऐंठन और अंगुलियों का सिकुड़न; दाँत बन्द करके थूकना), सोलेन० वेसिकैरियम—(चेहरे के पक्षाघात में सिफारिश की गई है)। सोलेन०

एसिटिकम (वृद्ध और बच्चों के वायुनलिका प्रदाह की अवस्था में फुफ्फुस के पक्षाघात की सम्भावना, बलगम निकालने के लिए बहुत देर तक खाँसना पड़े, सोलेन०, स्यूडोकैप्स० (तीव्र पीड़ा, निचले उदर में), सोलेन० ट्यूबेरोस, एग्रोटेंस—डिजीज्ड, पोटैटो—(मलाशय बाहर निकलना, विस्तृत गुदा; साँस और शरीर से दुर्गन्ध आये, मलाशय के अर्बुद; सड़े आलू की तरह लगें; खून भरे छोटे गड्ढों का स्वप्न देखना; (सोलेनम ट्यूबरोसम—पोटैटो बेरीज—(टाँगों की पिण्डली और अंगुलियों में ऐंठन) ।

मात्रा—२ से ३० शक्ति ।

सोलिडागो विर्गा (Solidago Virga)

(गोल्डेन रॉड)

क्षय रोग में इस फूल के अन्दर की बुकनी सूँघने से फुफ्फुस रक्तस्राव उत्पन्न हुआ था । क्षय रोगी को बराबर जुकाम होना, (२x) । कमजोरी मालूम देना, बारी-बारी शीत और गरम, गलकोष का नजला, गले में जलन, अंगों में पीड़ा और वक्षस्थली घाव । मूत्रकृच्छ्र के साथ गुर्दों के क्षेत्र में दर्द । गुर्दे दाब सहन न करें । साण्डलाल मूत्र (ब्राइट का रोग), इन्फ्लुएञ्जा जो सोलिडैगो के कारण उत्पन्न हुआ हो । ऐसी अवस्था में ३० शक्ति या ऊँची शक्तियाँ दीजिये ।

आँखें—रक्तसंचित, पानी-सा, जलन, चुभन ।

नाक—अधिक श्लैष्मिक स्राव के साथ नथनों में उत्तेजनीयता; छींकों का दौरा ।

आमाशय—कड़वा स्वाद, खासकर रात में, बहुत थोड़ा कत्थई और खट्टे मूत्र के साथ जबान पर मैल ।

साँस—वायुनलिका प्रदाह, अधिक मवादी बलगम के साथ खाँसी, खून की लकीरें, दबा हुआ साँस । लगातार कष्टदायक साँस । प्रति रात को मूत्रकृच्छ्र के साथ दमा ।

स्त्री—गर्भाशय का बढ़ जाना, मूत्राशय पर नीचे की तरफ दबा हो । सौत्रिक अर्बुद ।

मूत्र—थोड़ा, लाली लिए कत्थई, गाढ़ा तलछट, मूत्रकृच्छ्र पथरी । कठिन और थोड़ा । मूत्र में एल्बूमेन, खून, चिकनाई । गुर्दों की दर्द जो आगे की तरफ उदर और मूत्राशय तक बढ़े (बर्बे०) साफ और घृणित मूत्र । प्रायः कैथेटर के प्रयोग की आवश्यकता नहीं होने देना ।

पीठ—रक्त संचित गुर्दों का पीठ दर्द। (सेनेसि० ऑरि०)।

चर्म—चकत्ते, खासकर निचले अंगों पर; खुजली। मूत्र की गड़बड़ी, शोथ और सड़न-भय के साथ निचले भागों में चर्म-पुष्पिका।

सम्बन्ध—आयडोफार्म २x गोल्डेन रॉड के विष को नाश करती है। आर्सेनिक। एग्रिमोनिया। (गुर्दा प्रदेश में दर्द)।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति। सोलिडागो का तेल १ औंस से ८ औंस तक, मदसार, १५ बूँद की मात्रा में वृद्ध लोगों के वायुनलिका प्रदाह और वायुनलिका दमा रोग में बलगम निकालने के लिए देना चाहिए। (एलि जा. जोन्स)।

स्पारटियम स्कोपेरियम (Spartium Scoparium)

(ब्रूम)

स्पारटीन सल्फेट हृदय की शक्ति बढ़ाती है, उसकी गति को कम करती है और रक्तचाप घटाती है। वह वेरेट्रम और डिजिटैलिस के उत्पन्न किये हुए अच्छे प्रभाव को जारी रखती है (हिंस्डेल)।

स्पारटीन सल्फेट ने (ब्रूम का क्षारोद सत्त) सिद्ध करने वाले व्यक्तियों के हृदय के फैलने और सिकुड़ने की क्रिया को कम कर दिया था। स्फाइगमोग्राम्स से यह भी स्पष्ट होता है कि रक्तचाप भी कम हो गया था। यह रक्तचाप और नाड़ी की गति को इसलिए कम करती है क्योंकि इसका विष फुफ्फुस-पाकाशयिक स्नायु को शक्ति देने के साथ, हृदय पेशियों पर अपना प्रभाव डालकर, हृदय गति को मन्द कर देती है। यह हृदय की संकोचन क्रिया मन्द कर देती है। यह हृदय की संकोचन क्रिया को कमजोर कर देती है। मूत्र की मात्रा बढ़ जाती है। इसलिए इस औषधि में मूत्र-वृद्धि के गुण हैं। अतः यह शोथ रोग में लाभदायक है।

सांडलाल मूत्र। साँस क्रिया कठिन। इन्फ्लुएन्जा और दूसरे संक्रामक रोगों के बाद क्रम-भ्रष्ट हृदय गति। तनाव की मन्दता। धमनियों के अधिक तनाव, धमनियों की सख्ती को रोकने के लिए, शामक क्रिया के लिए स्थूल मात्रा में प्रयोग की जाती है। मार्फिया की आदत को रोकने के बाद, हृदय गति को शक्तिवान रखने के लिए १।१० से १।४ ग्रेन इंजेक्शन द्वारा अति लाभदायक है। स्पारटियम उस समय सांकेतित होती है जब मौलिक रूप से हृदय की पेशियाँ और खासकर स्नायु यन्त्र रोगग्रस्त होते हैं। तेजी से कम करती है और उसका प्रभाव ३ से ४ दिनों तक रहता है। पाचन में कोई बाधा नहीं करती। गुर्दा-प्रदाह।

दिल—तम्बाकू से आए उपद्रव। हृदय शूल। क्रम-भ्रष्ट क्रिया, गैस इत्यादि से क्रम बिगड़ गया हो, कमजोर, स्नायविक, गुल्म वायु रोगियों में। हृदय पेशियों की क्षीणता, संतुलनशक्तिहीनता। तनाव में कमी। जल संचित अवस्थाओं में स्पारटीन को २ ग्रेन की मात्रा में देना चाहिये, लेट न सके। ऐसी अवस्था में यह अधिक आराम देती है। गुर्दों पर विशिष्ट प्रभाव रखती है, उनका विष बाहर निकालने में और उसके कम होने से हृदय कष्ट दूर करने में सहायता देती है।

आमाशय—मानसिक मन्दता के साथ पाकाशयिक-आन्त्रिक पथ में वायु संचयता।

मूत्र—मूत्र-मार्ग में या स्त्री की बाहरी जननेन्द्रिय में जलन। अधिक मात्रा में मूत्र निकलना।

मात्रा—१ से ३ विचूर्ण।

स्पाइजेलिया (Spigelia)

(पिंकरूट)

स्पाइजेलिया हृदयावरण झिल्ली प्रदाह की और हृदय के दूसरे रोगों की महत्वपूर्ण औषधि है, क्योंकि इसकी सिद्धि बाहरी परिवर्त्तनों को बहुत सावधानी से ध्यान देने के विचार से की गई थी और इसके आन्तरिक लक्षणों की अनेक प्रयोगों से पुष्टि की गई है। (सी. हेरिंग)।

आँख, हृदय और स्नायुमण्डल से बहुत आकर्षण रहती है। इसके प्रभाव में पाँचवीं स्नायु का स्नायुशूल प्रधान है। खास तरह के रक्तहीन, दुर्बलता वातग्रस्त और कण्ठमालिक रोगियों के लिए उपयोगी है। चुभन दर्द। हृदय रोग और स्नायुशूल। स्पर्श असह्य। रोगी भाग ठिठुरे लगें; सारे शरीर में गनगनी दौड़ा दे। कृमि की उपस्थिति के कारण रोगों की औषधि। बच्चा नाभि को अति सन्तापपूर्ण स्थान दर्शित किया करता है। (ग्रैनेटम, नक्स मॉस०)।

मन—तेज आलपीन, सूई इत्यादि नोकदार चीजों से भय लगे।

सिर—अगले उभरे भाग के नीचे दर्द जो आँखों तक बढ़े। (ओनोसमोडियम)। आधे भाग का दर्द, बायीं आँख भी सम्मिलित हो; और पीड़ा, थरथराहट, गलत कदम रखने से अधिक हो। सिर के चारों तरफ फीता कसा जैसा दर्द। (कार्बोलिक एसिड; कॅक्ट०; जेल्से०) चक्कर, सुनने की संवेदना अति तीव्र।

आँखें—बहुत बड़ी जान पड़ें, घुमाने से उन पर दाब दर्द। पुतली फैली, प्रकाशासह्यता; वात सम्बन्धित नेत्र प्रदाह। आँखों के भीतर और चारों तरफ तीव्र पीड़ा जो उनके खोखले में गहराई तक जाये। पलकों का स्नायुशूल। सच्चा स्नायु प्रदाह।

नाक—अगला भाग सदा सूखा रहे, पिछले भाग से स्राव निकले। जीर्ण जुकाम; पिछले भाग से सरल श्लेष्मा निकले।

मुँह—जबान दरारदार, दर्दीली। फटन जैसा दाँत दर्द, खाने के बाद और ठंडक से अधिक हो। मुँह से दुर्गन्ध निकले। घृणित स्वाद।

चेहरा—चेहरे का लकवा रोग; आँखें, गण्डास्थि युगलक प्रवर्द्धन, गाल, दाँत, कनपटी सभी रोगग्रस्त हों; झुकने से, स्पर्श से, सुबह सूर्यास्त तक अधिक रहे।

दिल—घोर धड़कन। दिल के ऊपर सीने के क्षेत्र में दर्द और हिलने से अधिक हो। धड़कन के अक्सर हमले खासकर मुँह से दुर्गन्ध के साथ। नाड़ी कमजोर और क्रमभ्रष्ट। हृद्वेष्ट का प्रदाह, चुभन दर्द के साथ, धड़कन, साँस कष्ट। स्नायुशूल बाँह तक या दोनों बाहों तक बढ़े। हृदयशूल। गरम पानी की इच्छा जिससे कम हो। वातिक हृदय पीड़ा, काँपती नाड़ी, सारा बायाँ भाग दर्द करे, कष्टदायक साँस, दाहिना तरफ सिर ऊँचा करके लेटना आवश्यक हो।

मलाशय—खुजली और रेंगन। घड़ी-घड़ी असफल चेष्टा। केंचुवे।

ज्वर—जरा भी हिलने से कम्प आये।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : स्पर्श से, हरकत से, आवाज से, घूमने, धोने, धक्के से। घटना : सिर ऊंचा करके दाहिनी करवट लेटने से, साँस भीतर खींचने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : स्पाइजेलिया मेरिलैंडिका (उन्मादीय उत्तेजना, हँसने और रोने के दौरे, जोर से, बिना सिलसिले की बातें करना, चक्कर, पुतली फैली, रक्ताधिक्य)। एकोना०; कैक्ट०; सिमिसि०; आर्निका० (स्पाइजेलिया जीर्ण आर्निका है), सिनाबरिस, (आँखों के घेरों के दर्द) नाजा०; स्पांजिया० (हृदय), सैबाडि०, ट्युक्र०, सिना (कृमि रोग के लक्षण)।

क्रियानाशक : पल्सेटिला।

मात्रा—६ से ३० शक्ति स्नायुशूल लक्षण में, २ से ३ शक्ति प्रादाहिक लक्षणों में।

स्पाइरिया अल्मारिया (Spiraea Ulmaria)

(हार्डहैक)

गल नली में जलन और दाब, सिकुड़ी लगे, मगर निकलने से कष्ट न बढ़े। दोषपूर्ण अन्तरात्मिक मान्यता। मूत्र मार्ग की उत्तेजना को कम करती है, मूत्राशय ग्रन्थि पर प्रभाव डालती है, जीर्ण सुजाक स्राव और मूत्राशय ग्रन्थि के स्राव को रोकती है, सतिकाक्षेप, मिरगी और जलांतक रोग में प्रयोग की गई है। पागल जानवरों के काटने पर। भिन्न-भिन्न भागों में गरम लगना। स्पाइरिया में सैलिसिलिक अम्ल पाया जाता है।

स्पाइरैंथस (Spiranthes)

(लेडीज ट्रेसेज)

स्तन्यकाल में दूध बढ़ाने के लिए दी जाती है। कटिवात और वातरोग, शूल, साथ में औंघाई और आक्षेपिक जम्हाई के लिए व्यवहार में आती है। यह एकोना० की तरह प्रदाहनाशक औषधि है, इसके लक्षणों में रक्त-सञ्चयता और प्रदाह दर्शित होते हैं। डकार के साथ गलनली में अम्लता और जलन।

स्त्री—योनि की तीव्र खाज, योनि घुण्डी लाल, योनि में सूखापन और जलन। मैथुन के समय योनि में जलन-दर्द। रक्तमय प्रदर।

अंग—गृध्रसी, खासकर दाहिनी तरफ की। कन्धों में दर्द, हाथों की शिराओं का फूलना। हाथों की सभी चालक तन्तुओं में दर्द। पैर और उसकी अंगुलियाँ ठण्डी।

ज्वर—गरम लहरें। हथेली पर पसीना। हाथ बारी-बारी गरम और ठण्डे।

मात्रा—३ शक्ति।

स्पांजिया टोस्टा (Spongia Tosta)

(रोस्टेड स्पांज)

साँस-यन्त्र की खाँसी, काली खाँसी इत्यादि के लक्षणों के लिये विशेष रूप से संकेतित औषधि। हृदय रोग और अकसर क्षय रोग की बाधायें। गोरे रंग के ढीले

सूत्रों और फूली ग्रन्थियों वाले बच्चे। जरा-से परिश्रम पर सीने और चेहरे में खून दौड़ने के साथ शरीर की शिथिलता और भारी चिंता तथा कठिन साँस।

मन – चिन्ता और भय। हर एक उत्तेजना से खाँसी आवे।

सिर—खून दौड़ना, फटन, सिर दर्द, माथे में अधिक।

आँखें—पानी बहना, गोंद जैसा या श्लैष्मिक स्राव।

नाक—स्राविक जुकाम और बन्द होना बारी-बारी से। सूखापन; जीर्ण, सूखा, नाक का जुकाम।

मुँह—जबान सूखी और बादामी, फफोलेदार।

गला—गल ग्रंथि फूली हो। चिलकन और सूखापन। जलन और गड़न; गलक्षत, मीठी चीज खाने से अधिक हो। गुदगुदाने से खाँसी आवे। लगातार गला साफ करता रहे।

पेट—अत्यन्त प्यास, विशेष क्षुधा, धड़ पर कसा वस्त्र असह्य, हिचकी।

पुरुष – दर्द और कोमलपन के साथ शुक्ररज्जु और अण्ड का फूलना। अण्डकोष प्रदाह, शुक्ररज्जुक्षय। जननेन्द्रिय में गरमी।

स्त्री—मासिक-धर्म के पहले त्रिकास्थि में दर्द, भूख, धड़कन। मासिक काल में दम घुटने के हमलों के साथ जाग पड़े। (क्यूप्रम०, आयोडि०, लैके०। दमा के साथ मासिक-धर्म का रुकना)। (पल्से०)।

साँस-यन्त्र—सभी वायु मार्गों का अधिक सूखापन। स्वरभंग, स्वरयन्त्र सूखा, जले, संकुचित। खाँसी, सूखी भौंकती, कुकुरखाँसी की तरह, स्वर-यन्त्र स्पर्श से उत्तेजनीय। कुकुरखाँसी; साँस भीतर खींचने और आधी रात से पहले अधिक हो। छोटी साँस, हाँफना, कठिन स्वरयन्त्र में गुल्ली ठँसी जैसी। खाने और पीने से खाँसी रुक जाये, खासकर गरम चीज पीने से। स्पांजिया में सूखी; जीर्ण सहानुभूतिक खाँसी या आंत्रिक हृदय रोग में लाभ होता है। (नाजा०) सीने की गहराई के किसी स्थान विशेष से न रोकी जा सकने वाली खाँसी, वह भाग कच्चा और दर्दीला मालूम पड़े। सीना कमजोर, कठिनाई से बोल सके। स्वर-यांत्रिक क्षय रोग। घेघा, दम घुटने के आक्रमण के साथ। वायु नलिका का नजला; साँय-साँय वाली दम फूलने वाली खाँसी के साथ, ठण्डी हवा में अधिक बलगम और दम घुटना, सिर को नीचा करके लेटने से या गरम कमरे में रोग बढ़े। एकाएक कमजोरी के साथ सीने पर दाब और गरम होना।

दिल—तेज गति वाली प्रचण्ड धड़कन, साँस कष्ट के साथ, लेट न सके; लेटे

आसन में अच्छा मालूम हो। दर्द और दम घुटने के साथ आधी रात के बाद जाग पड़े; भरभराया हो, गरम हो और अति भयभीत हो। (एकोना०)। कपाटीय अक्षमता। हृदय-शूल, गशी, चिंतित और पसीना आये। रक्त में उबाल, शिरायें तनी हुई। हृदय का सीने में उभरना मानो ऊपर की तरफ बाहर धक्का देकर निकल जायेगा। हृदय का ढीलापन, खासकर दाहिनी तरफ का भाग, साथ में दमा का लक्षण।

चर्म—ग्रंथि का फूलना और कड़ापन वहिःसूत्रिक गोलक भी, ग्रीवा ग्रन्थि फूली हुई, साथ में तनाव, पीड़ा जो सिर घुमाने से मालूम हो, दाब से दर्द करे, घेघा। खुजली, छोटी माता।

नींद—भय के साथ जाग पड़े और दम घुटता मालूम पड़े। प्रायः सोने के बाद रोग बढ़े या रोग के बढ़ने ही में सो जाये (लैके०)।

ज्वर—चिन्ता के साथ गरमी के हमले, चेहरे की गरमी, लाली और पसीना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ऊपर चढ़ना, तेज हवा से आधी रात के पहले। घटना : नीचे उतरते समय, सिर नीचा करने लेटने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एकोना०; हीपर०; ब्रोमि०; लैके०; मर्कुरियस-प्रोटो आयोड (घेघा)।

मात्रा—२ विचूर्ण या टिंचर से ३ शक्ति।

स्क्वला मैरिटिमा (Squilla Maritima)

(सी-ओनियम)

धीमी क्रिया की औषधि। उन रोगों के लिए अनुकूल है जो कई दिनों में अपनी चरम सीमा पर पहुँचते हैं। हठी, मन्द, वातपीड़ा सारे शरीर में फैले। प्लीहा की औषधि, बायीं तरफ का कष्ट, पसली के नीचे चिलकन। हृदय और प्लीहा रोग की महत्वपूर्ण औषधि। वायुनलिका-फुफ्फुसीय प्रदाह।

खासकर साँस पथ, पाचन मार्ग और गुर्दों पर भी काम करती है। वृद्ध लोगों के जीर्ण वायु-नलिका प्रदाह के लिए मूल्यवान है, जहाँ बलगम खड़खड़ाये, कष्ट-दायक साँस हो और मूत्र की मात्रा कम हो।

आँखें—उत्तेजनीय मालूम हों, बच्चा उनमें मुट्ठी गड़ाया करे। ठण्डे पानी में तैरने जैसा संवेदन।

आमाशय—पत्थर जैसी दाब।

साँस-यन्त्र—स्राविक जुकाम; नाक के किनारे दर्दीले मालूम दें। छींक आना; गला उत्तेजनीय, छोटी, सूखी खाँसी, लम्बी साँस लेना आवश्यक, कष्टदायक साँस और सीने में चिलकन और उदर पेशी की दर्दीली सिकुड़न। प्रचण्ड, अक्रमिक, शिथिलता वाली खाँसी, साथ में अधिक, श्लेष्मा, अधिक नमकीन, चिकना बलगम और साथ में अनैच्छिक मूत्र, छलकन और छींक। बच्चा खाँसते समय चेहरे को मुट्ठी से रगड़े। (कास्टि०; पल्से०)। गहरी सांस लेने से या ठण्डा पानी पीने से, परिश्रम से, गरम हवा से ठंडी हवा में जाने से, खाँसी आवे। छोटी चेचक की खाँसी। रात में कई बार अधिक मात्रा में पेशाब होना। (फॉस० एसिड)। खाँसी के साथ छींकें आना।

दिल—हृदय की शक्ति बढ़ाने वाली औषधि, जो परिधि की रक्तवाहिनियों और हृदय की धमनियों को प्रभावित करती है।

मूत्र—तेजी से पेशाब लगना, अधिक मात्रा में पानी-सा मूत्र। खाँसते समय मूत्र का अनैच्छिक छलकना। (कॉस्टि०, पल्से०)।

चर्म—चुभन दर्द के साथ, शरीर पर छोटे, लाल चकत्ते।

अंग—बाकी शरीर की गरमाहट के साथ हाथ पैरों की बर्फीली ठण्डक। (मिनियेन्थिस)। खड़े होने पर पैर दर्द करे। दुकानदार लड़कियों के पैरों का कोमलपन।

घटना-बढ़ना—घटना : आराम से। बढ़ना : हरकत से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : डिजिटै०; स्ट्रोफेन्थस; एपोसाइनम, कैनाबिनमः ब्रायो०; कैल्किकार्बोनिकम। स्क्विला, डिजिटैलिस के बाद अच्छा काम करती है, अगर यह कठोर रोगों में असफल हो।

मात्रा—१ से ३ शक्ति।

स्टैनम (Stannum)

(टिन)

इसका मुख्य प्रभाव स्नायुमण्डल और साँस-यन्त्रों पर केन्द्रित है। स्टैनम के संकेतित होने की अवस्था में दुर्बलता प्रधान रहती है, खासकर जीर्ण वायुनलिका और फुफ्फुस रोगों में, जहाँ क्षय रोग के आधार पर अधिक मात्रा में श्लैष्मिक-मवादी

स्राव निकलता हो। बात करने से गले और सीने में अधिक कमजोरी मालूम हो। उन दर्दों में स्टैनम की आवश्यकता होती है जो धीरे-धीरे बढ़कर चरम सीमा पर जा पहुँचते हैं और अन्त में धीरे-धीरे गायब हो जाते हैं। पक्षाघात जैसी दुर्बलता, आक्षेप, पक्षाघात।

मन—शोकग्रस्त, चिन्तित। निरुत्साहित। लोगों से मिलने का भय।

सिर - कनपटी और माथे में टीसन। कठोर जुकाम और खाँसी के साथ इन्फ्लुएन्जा। हरकत से दर्द बढ़े; धीरे-धीरे बढ़े और कम हो मानो सिर कसकर बँधा हो, माथा भीतर को दबा मालूम हो। टहलने का झटका सिर में मालूम हो। जबड़े की हड्डी और आँखों के घेरों में खींच के साथ दर्द। कान की ललरी के छिदे स्थान का पकना।

गला—अधिक मात्रा में चपकीला श्लेष्मा, कठिनाई से अलग हो, छुड़ाने की चेष्टा से मिचली आवे। गला सखा और गड़न हो।

आमाशय—भूख। भोजन पकाने की गन्ध से कै हो। कड़वा स्वाद। दर्द दाब से कम हो, मगर स्पर्श से अधिक हो। आमाशय में खालीपन का संवेदन।

उदर—खालीपन के साथ, नाभि के चारों तरफ ऐंठन की तरह शूल। शूल, कड़े दाब से कम हो।

स्त्री—धसन संवेदन। पेट में कमजोर डूबन संवेदन के साथ गर्भाशय की स्थान च्युति। (सीपिया)। मासिक-धर्म समय से पहले और अधिक मात्रा में। योनि में दर्द, ऊपर और पीछे की तरफ मेरुदण्ड तक अति दुर्बलता के साथ प्रदर रोग में।

साँस-यन्त्र—स्वरभंग, वेग के साथ खाँसी आने के साथ बलगम निकले, शाम से आधी रात तक प्रचण्ड सूखी खाँसी। हँसने, गाने, बात करने से खाँसी आये, दाहिनी तरफ लेटने से अधिक हो। दिन में, अधिक मात्रा में हरा, मिठास वाले बलगम के साथ खाँसी आना। सीने में दर्द, सीने में कमजोरी मालूम हो; कठिनाई से बात कर सके। थोड़े बलगम के साथ इन्फ्लुएञ्जा की खाँसी जो दोपहर से आधी रात तक आवे। साँस छोटी, संकुचित, साँस लेते समय और बाईं तरफ लेटने से, उसी तरफ चिलकन। श्लैष्मिक क्षय रोग। यक्ष्मा ज्वर।

नींद—एक पैर सिकोड़ कर और दूसरा फैलाकर सोना।

अंग—पक्षाघात जैसा दौर्बल्य, चीजें गिरा दे। टखने फूले हुए। बैठने की चेष्टा पर अंग एकाएक जवाब दें। नीचे उतरते समय चक्कर और कमजोरी।

अगली बाँह और हाथ की आक्षेपिक फड़कन। कलम पकड़ते समय अँगुलियों में झटका आये। स्नायु प्रदाह। टाइप करने वालों का पक्षाघात।

ज्वर—शाम को गरमी, शिथिल करने वाला रात-पसीना, खासकर सुबह के निकट। यक्ष्मा ज्वर। पसीना खासकर माथे और गरदन की जड़ पर, कमजोर करने वाला, घृणित दुर्गन्ध वाला।

घटना-बढ़ना—**बढ़ना :** आवाज का प्रयोग करने से (जैसे हँसना, बात करना, गाना)। दाहिनी करवट लेटने से, गरम चीज पीने से। **घटना :** खाँसने और बलगम निकालने से, कड़े दाब से।

सम्बन्ध—पूरक : पल्से०।

तुलना कीजिये : स्टैन० आयोडे० ३x—मुलायम तन्तु परिवर्तन की विशेषता के साथ जीर्ण सीना रोग में बहुमूल्य है। लगातार इच्छा खाँसने की, गले में एक सूखे स्थान की गुदगुदी से उत्पन्न हो, जो जबान की जड़ में मालूम पड़े। गले का सूखापन। धूम्रपान करनेवालों की कण्ठनली और वायुनलिका की उत्तेजना। फुफ्फुसीय लक्षण, खाँसी तेज आवाज वाली, खोखली, बाद में बलगम आये। (फेलाण्ड्रियम०) मवाद रसाने की अवस्था। क्षय रोग की बढ़ती अवस्था में कभी-कभी जब स्टैनम आयोडे० ने कोई प्रभाव नहीं किया ऐसी अवस्था में आयोडिन की एक मात्रा दूध के साथ देने से इस औषधि का लाभदायक प्रभाव आरम्भ हो जाता है। (स्टोनहम)।

तुलना कीजिये : कॉस्टि०, कैल्के०, सिलि०, ट्यूबर्कु०, बैसिलि०, हेलोनि०। मरटस चेकैन (जीर्ण वायुनलिका प्रदाह, क्षय रोग की खाँसी वायुस्फीति, साथ में पाकाशयिक नजला बाधा और गाढ़ा, पीला कठिन बलगम। वृद्ध लोग जिनमें बलगम निकालने की शक्ति क्षीण हो गयी हो)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

स्टैफिसेग्रिया (Staphysagria)

(स्टावेसीकर)

उत्तेजना स्पष्ट रूप से विद्यमान होने के साथ स्नायु रोग, जननेन्द्रिय-मूत्रेन्द्रिय मार्ग के और चर्म के रोग, अधिकतर ऐसे लक्षण दर्शाते हैं जिनमें इस औषधि की आवश्यकता होती है। दाँतों और दंतगुहा, अस्थिवेष्ट पर काम करती है। क्रोध और अपमान का दुष्प्रभाव। **अति मैथुन और अप्राकृतिक क्रिया इत्यादि। अति**

उत्तेजना। तन्तुओं का फटना। दाँत निकलवाने के बाद दर्द और उत्तेजना,संकुचन, छल्लों का फटना या खिंच जाना।

मन—अकारण जिद्दी, उत्तेजना का प्रचण्ड वेग। व्याधि शंकाग्रस्त, उदास। उनके बारे में दूसरे लोग क्या समझते हैं, उसपर अति उत्तेजित। काम विषय को सोचा करना, अकेले रहने की इच्छा। चिड़चिड़ापन। बच्चा बहुत-सी चीजों के लिए रोये, मगर मिलने पर बहिष्कार कर दे।

सिर—बुद्धि मन्द करने वाला सिर दर्द; जम्हाई लेने से गायब हो जाये। मस्तिष्क में चुभन मालूम पड़े। माथे में शीशे के गोले जैसा संवेदन। कानों के ऊपर और पीछे खुजलीदार दाने। (ओलियैण्डर)

आँखें - ढेलों में गरमी, चश्मा धुँधला कर दे। बार-बार होने वाली बिलनी। पलकों पर छोटा घेरेदार रसभरा अर्बुद (प्लैटेनम०)। आँखें धँसीं, चारों तरफ नीले घेरे। पलकों के किनारे खुजलायें। आँखों के कोनों के रोग, खासकर भीतरी कान के। कनीनिका के फटे या छिले घाव। उपदंशीय नेत्र प्रदाह के ढेलों में फटन दर्द।

गला - निगलने पर कानों तक चिलकन लपके; खासकर बायें कान तक।

मुँह—मासिककाल में दाँत दर्द। दाँत काले और भुरभुरे। लार बहुत, स्पंज की तरह नरम मसूड़े, खून बहे। (मर्क०; क्रियाजोट०)। निचले जबड़े की हड्डी फूली हुई। खाने के बाद नींद आना। मसूढ़ों का सड़ना (प्लैंटेगो)।

आमाशय—थुलथुला और कमजोर। उत्तेजक वस्तु की इच्छा। पेट ढीला मालूम दे। तम्बाकू की अधिक इच्छा। कुकुर-भूख, जब पेट भरा हो तब भी उदर में नश्तर लगवाने के बाद मिचली।

उदर—क्रोध के बाद शूल। गरम वायु-स्खलन। बच्चों का उदर फूला हुआ, अधिक वायु के साथ। शूल, पेड़ू में कूँथन के साथ। उदर में चीरा लगने के बाद तीव्र पीड़ा। वायु संकुचन। कूँथन के साथ। ठण्डा पानी पीने के बाद दस्त। कब्ज (टिंचर की १ बूँद सुबह व शाम)। मूत्र-ग्रन्थियों की वृद्धि के साथ बवासीर।

पुरुष—हस्तक्रिया के बाद विशेषकर, कामातुर विषय पर सोचते रहना। चेहरा मुरझाने के साथ धातु क्षीणता, दोषपूर्ण चेहरा, धातु स्खलन, साथ में पीठ दर्द, कमजोर और काम-स्नायु दौर्बल्य। मैथुन के बाद साँस कष्ट।

स्त्री—जननेन्द्रिय अति उत्तेजित, बैठने पर अधिक हो। (बर्बे०; क्रियोजो०)। विवाहिताओं में मूत्राशय की उत्तेजना। प्रदर। उदर में धँसन के साथ गर्भाशय का बाहर निकलना, कूल्हे के चारों तरफ टीसन।

मूत्र—मूत्राशयिक आन्त्र वृद्धि (खाने और लगाने को) प्रसूतावस्था में मूत्राशय प्रदाह। नवविवाहिता में मूत्रस्खलन की असफल इच्छा। मूत्राशय पर दाब, ऐसा लगे कि खाली नहीं हुआ। ऐसा संवेदन कि पेशाब की एक बूँद मूत्रमार्ग में लगातार लुढ़कती रहती है। पेशाब करते समय मूत्रमार्ग में जलन। मूत्र ग्रन्थि बाधायें, बार-बार पेशाब लगना, पेशाब करते समय मूत्रमार्ग में जलन। (थूजा०; सैबाल०, फेरम पिक्रेटम)। पेशाब करने के बाद स्खलन इच्छा और दर्द। मूत्राशय में नश्तर लगवाकर पथरी निकलवाने के बाद आयी पीड़ा।

चर्म—सिर, कान, चेहरे और शरीर पर अकौता; मोटी पपड़ी, सूखी, तीव्र स्राव; खुजाने से खुजली की जगह बदल जाये, अंजीरी मस्से, वृन्त पूर्ण (थूजा०)। सन्धि प्रदाह वाला गुल्म अँगुलियों के जोड़ों के बीच वाली हड्डी की सूजन। रात पसीना।

अंग—मांसपेशियाँ, खासकर पिंडली की कुचली मालूम पड़े। पीठ दर्द सुबह उठने के बाद अधिक हो। अङ्ग चोटीले और दर्दीले मालूम पड़ें। जोड़ कड़े। जांघिक स्नायुशूल। नितम्बों में मन्द टीस जो कूल्हे के जोड़ और पिठासे तक बढ़े।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : क्रोध, अनपच, शोक, अपमान, रसक्षीणता, हस्तमैथुन, अतिमैथुन, तम्बाकू पानी, रोगग्रस्त भाग के जरा-सा स्पर्श से। घटना : जलपान के बाद, सेंकना, रात को आराम करने से।

सम्बन्ध—विरुद्ध : रैनानक्युलस बल्बो०।

पूरक : कास्टि; कोलोसि०।

तुलना कीजिये: फेरम फाइरोफॉस० (प्रपादास्थि पर रसदार अर्बुद) कोलोसिं०, कॉस्टि०, इग्नै०, फॉस० एसिड, कैलेडि०।

क्रियानाशक : कैम्फो०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

स्टैलेरिया मीडिया (Stellaria Media)

(चिकवीड)

सभी शारीरिक क्रियाओं में रक्तरोध, रक्ताधिक्य और क्रियामन्दता की अवस्था उत्पन्न करती है। सुबह के समय रोग का अधिक होना।

शरीर के सभी अङ्गों में तेज, जगह बदलने वाला वात दर्द स्पष्ट रूप से दर्शनीय है। वात रोग, प्रायः सभी भागों में लपकता हुआ दर्द, जोड़ों का कड़ापन; स्पर्श से दर्द करें, हरकत से अधिक हो। जीर्ण वात रोग। जगह बदलने वाले दर्द।

(पल्से०, केलि० सल्फ्यूरि०) । अपरस । गठियाग्रस्त अँगुलियों के जोड़ों का बढ़ना और सूजना ।

सिर—साधारण चिड़चिड़ापन । सुस्ती, काम करने की इच्छा न हो । आँखों में करकराहट और जलन, बाहर निकली मालूम दें । धीमा, अगले भाग का दर्द, ऊँघाई के साथ सुबह को और बायीं तरफ अधिक हो । गरदन की पेशियाँ तनी हुईं और दर्द करें । आँखें बाहर निकली मालूम हों ।

उदर—जिगर रक्त भरा, फूला, चिलकन दर्द और स्पर्श से उत्तेजना के साथ । मटियाला मल । जिगर मन्द । कब्ज या कब्ज और दस्त बारी-बारी ।

अंग—शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में वात पीड़ा । पिठासे में गुर्दों के ऊपर और नितम्ब प्रदेश में तेज दर्द, जाँघों तक नीचे उतरे । कन्धों और बाँहों में दर्द । स्नैहिक कला का प्रदाह । कुचलन संवेदन । टाँगों की पिंडली में वात दर्द ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : सुबह को, गरमी से, तम्बाकू । घटना : शाम को ठण्डी हवा, हरकत से ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : पल्सेटिला (वात रोग में समान लक्षण) दर्द जगह बदलता हो, आराम से अधिक हो और गर्मी से, ठण्डी हवा से; कम हो ।

मात्रा—बाहरी प्रयोग, टिंचर । खाने के लिए २x शक्ति ।

स्टरक्युलिया (Sterculia)

(कोला-नट)

स्नायु-दौर्बल्य । रक्त संचालन को ठीक करती है, शक्तिवर्द्धक और दर्दनाशक है । हृदय-गति क्रम को ठीक करती है, मूत्र बढ़ाती है । दुर्बल हृदय ।

मद्यपान की आदत नाश करने की औषधि । यह पाचन-क्रिया और भूख को बढ़ाती है और शराब पीने की इच्छा को कम करती है । दमा रोग । बिना भोजन किये हुए और बिना थकावट मालूम हुए देर तक परिश्रम करने की शक्ति देती है ।

सम्बन्ध—कोका ।

मात्रा—३ से १० बूँद की मात्रा में एक ड्राम तक भी, दिन में ३ बार पीना चाहिए ।

स्टिक्टा (Sticta)

(लंगवॉर्ट)

इसमें ऐसे लक्षण समूह हैं जैसे जुकाम, वायुनलिका के नजले और इन्फ्लुएञ्जा, साथ में स्नायविक और वातिक गड़बड़ी में मिलते हैं। शरीर में मंदता और सुस्ती रहती है मानों जुकाम होने जा रहा है; माथे में धीमा, भारी दाब, नजले वाला नेत्र प्रदाह इत्यादि। गरदन में वातिक कड़ापन।

मन—हवा में तैरता मालूम पड़े (दात्यूरा आरबोरिया, लैक कैना०)। विचारों में विकलता, रोगी को बात करना आवश्यक हो।

सिर—माथे में और नाक की जड़ पर धीमी, भारी दाब के साथ, मंद सिर दर्द। स्राव शुरू होने के पहले माथे में नजलेवाला सिर दर्द। आँखों में जलन और ढेलों में दर्द। ऐसा लगे कि सिर की खाल बहुत छोटी हो गयी है। पलकों में जलन।

नाक—नाक की जड़ पर भरापन। (नक्स०)। नाक की श्लैष्मिक झिल्ली की क्षीणता के साथ जुकाम। (कैल्के० फ्लोर)। नाक की झिल्ली का सूखापन। लगातार छिनकने की इच्छा; मगर स्राव न निकले। सूखा खुरण्ड; खासकर शाम को और रात में। फ्लू, लगातार छींक आना। (सैबाडि०)।

स्त्री—दूध कम निकलना।

उदर—दस्त, मल अधिक, झागदार; सुबह को अधिक। पेशाब अधिक, मूत्राशय में दर्द और टीस के साथ।

साँस-यन्त्र—गले में कच्चापन, श्लेष्मा पीछे की तरफ सरक जाये। रात में सूखी, ठोंकन खाँसी, साँस भीतर खींचने में अधिक हो। वायुनली प्रदाह, बलगम निकालने में सहायक। सुबह को ढीली खाँसी। सीने में से होकर वक्षास्थि से मेरुदण्ड तक दर्द। छोटी माता के बाद खाँसी (सैंग्वि०), शाम के लगभग और थकने के बाद अधिक हो। वक्षास्थि की दाहिनी तरफ से नीचे की तरफ उदर तक टपक।

अङ्ग—दाहिने कन्धे के जोड़ में, त्रिकास्थि में और द्विशिरा पेशी में वातपीड़ा। जोड़ों में सूजन; गरमी, लाली। रोगग्रस्त भाग पर सूजन और लाली का छोटा स्थान। दर्द तीव्र और खींच के साथ। ताण्डव की तरह आक्षेप; टाँगें हवा में तैरती मालूम हों। घुटनों का फूलना। (रस०, कैलि हाइड्रोडिकम, स्लेग०)। घुटनों

में चुभन दर्द । जोड़ और आस-पास की पेशियाँ लाल, फूली हुई, दर्दीली । नजले के लक्षणों से वातपीड़ा हो ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: एकाएक तापमान में परिवर्तन ।

सम्बन्ध तुलना कीजिए: दात्यूरा आरबोरिया बोग मैन्सिया केण्डिका (चित्त एकाग्र न कर सके, मन हजारों प्रश्नों और ऊँचे विचारों में तैरा करे। तैरने जैसा सम्वेदन मानो विचार मस्तिष्क के बाहर तैर रहे हैं। सिर दर्द, गला जलना । पेट के ह्रदयांत की चारों तरफ जलन मालूम हो, जो सिकुड़न के साथ गलनली तक बढ़े। जिगर प्रदेश के ऊपर गर्मी और भरापन । सिट्रेरिया—आइसलैण्ड मांस (जीर्ण दस्त, क्षयरोग, खूनी बलगम । काढ़े के रूप में दूध के साथ उबाल कर वायु नलिका स्राव, नजले इत्यादि में व्यवहार करते हैं) ।

इसके अतिरिक्त तुलना कीजिए: एरिजि०; ड्रोसे०; स्टिलिंजि०; रिउमेक्स०; सेम्बुक० ।

मात्रा—टिंचर से ६ शक्ति ।

स्टिग्माटा मेडिस—जिआ (Stigmata Maydis-Zea)

(कॉर्न सिल्क)

इस औषधि के मूत्र लक्षण स्पष्टरूप से दर्शनीय हैं और यह औषधि ह्रदय के यांत्रिक रोग में सफलता के साथ दी गई है, जहाँ निचले अंगों का शोथ हो और मूत्र की मात्रा कम हो । मूत्राशय ग्रन्थियों का बढ़ना और पेशाब का रुक जाना । मूत्र अम्लीय और फॉस्फेट युक्त । मूत्राशय प्रदाह ।

मूत्र—दबना और रुकना । मूत्रकृच्छ्र । गुर्दा में पथरी रोग, गुर्दा प्रदाहित, मूत्र में खून और लाल बालू । मूत्र-स्खलन के बाद कूँथन । मूत्राशय का नजला । प्रमेह । मूत्राशय प्रदाह ।

ज्वर—(जीर्ण मलेरिया में काढ़े के रूप में व्यवहार किया जाता है । चाय के चम्मच की मात्रा में, बिना संकोच के दीजिए) । डॉ० ई० सी० लोवे, इंगलैंड ।

मात्रा—अरिष्ट १० से ५० बूँद की मात्रा में ।

स्टिलिंजिया (Stillingia)

(क्वीन्स रूट)

जीर्ण अस्थि आवरण सम्बन्धित वात रोग, उपदंशीय और कण्ठमालिकबाधायें। साँस-यन्त्र के लक्षण मुख्य रूप से दर्शनीय हैं। लसिका-वाहनियों की मन्दता, जिगर मन्द, साथ में कामला रोग और कब्ज।

मन—अंधकारपूर्ण भविष्य; उदास।

साँस-यन्त्र—सूखी, आक्षेपिक खांसी। स्वरयन्त्र संकुचित, मूत्रगह्वर में चुभन के साथ दर्द। दबाने से गलकोष दर्दीला मालूम हो। स्वरभंग और जीर्ण स्वर-यांत्रिक बाधायें जो भाषण देने वालों को उत्पन्न होती हैं।

मूत्र—बिना रंग का मूत्र, सफेद तलछट जमी हो, मूत्र दूधियाला गाढ़ा।

अंग—अंगों की हड्डियों में और पीठ में टीस दर्द।

चर्म—घाव, हाथों और अँगुलियों पर जीर्ण विस्फोट। ग्रीवा ग्रंथियों का बढ़ना। टाँगों में जलन, खाज, हवा लगने से बढ़े। अस्थि-गुल्म। कण्ठमालिक चम रोग, उपदंशीय द्वितीय चरण के विस्फोट और बाद के लक्षण मूल्यवान सहायक औषधि।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तीसरे पहर, तर हवा, हरकत। घटना : सुबह के समय, सूखी हवा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : स्टैफिसै०; मर्कुरियस०, सिफिलि०; ऑरम०, कोराइडेलिस (उपदंशीय अस्थि गुल्म)।

मात्रा—टिंचर और १ शक्ति।

स्ट्रैमोनियम (Stramonium)

(थॉर्न-ऐपिल)

इस द्रव्य की पूरी शक्ति मस्तिष्क पर लगती है, गोकि चर्म और गले में भी कुछ प्रभाव दिखाई देता है। स्राव और निःसृत स्राव का दबना। ऐसा संवेदन मानो अंग शरीर से अलग हो गये हैं। मद्यपानिक सन्निपात। दर्द का संवेदन लोप होना और पैशिक चालन शक्ति का लोप होना, खासकर भाव प्रकट करने वाली और चालक पेशियों का। घूम-घूम कर बड़े भाव से चलना। वृद्धावस्था का पक्षाघात।

मन—धर्मभीरु; ईमानदार, नम्र और लगातार बात करता रहे। बहुत

बातें करने वाला, हास्यप्रिय, हँसना, गाना, कसम खाना, प्रार्थना करना, कविता बनाना। भूत-प्रेत देखता है, आवाजें सुनता है, आत्माओं से बातें करता है। तेजी से खुशी में रंज में बदल जाये। आक्रमणकारी और अश्लील, । अपने व्यक्तित्व का भ्रम, अपने को लम्बा, दोहरा, कोई अंशहीन समझता है। धार्मिक कृत्यों में व्यस्त। अन्धेरा या अकेलापन सहन न हो, सदा रोशनी और संगत में रहे। पानी या और कोई चमकती वस्तु देखते ही आक्षेप आने लगे। कहीं भाग जाने की प्रबल इच्छा के साथ सन्निपात। (बेला०; ग्रायो०, रस टॉ०)।

सिर—अकसर तकिये पर से सिर उठाया करे। माथे में और भौहों के ऊपर सिर दर्द जो ६ बजे सुबह से शुरू हो, दोपहर तक अधिक रहे। धुँधलापन के बाद छेदन दर्द। सिर में खून दौड़ना, लड़खड़ाना आगे की तरफ और बायीं तरफ गिरने की सम्भावना के साथ में श्रवण-भ्रम।

आँखें - ऊँची और प्रधान दिखाई दें, घूरती फैली हुई, पुतली फैली हुई। दृष्टिहीनता, शिकायत करे कि अँधेरा है, और रोशनी माँगे, छोटी चीजें बड़ी दिखाई दें। शरीर के भाग बहुत फूले दिखाई दें। वक्र दृष्टि। सभी चीजें काली दिखाई दें।

चेहरा - गरम; लाल, चेहरे पर गोल लाल चकत्ते। चेहरे में खून दौड़े, टेढ़ा-मेढ़ा। भयभीत भाव प्रकट हों। पीला चेहरा।

मुँह—सूखा, लसीला लार चूआ करे। पानी से घृणा। हकलाना। आक्षेप के कारण निगल न सके। चबाने की हरकत।

आमाशय—भोजन का स्वाद सूखे तिनके की तरह हो। प्रचण्ड प्यास। श्लेष्मा और हरे पित्त की कै।

मूत्र—दब जाना, मूत्राशय खाली रहे।

पुरुष—अति कामोत्तेजना, वीभत्स बकवाद के साथ हाथ लगातार जननेन्द्रिय पर रहे।

स्त्री—बकवादीपन, गीत गाना, प्रार्थना के साथ अति जरायु-स्राव। विशिष्ट मानसिक लक्षणों और अधिक पसीना प्रदाह के साथ, प्रसवकालीन उन्माद। प्रसव के बाद विक्षेप।

नींद—भयभीत होकर जाग पड़े; भय से चिल्ला पड़े। गहरी, लम्बी साँस वाली नींद। औंघाई, मगर सो न सके। (बेला०)।

अंग—शोभायमान, क्रमबद्ध चाल। ऊपरी पेशियों का पृथक् पेशीसमूहों में

आक्षेप। ताण्डव रोग; आंशिक आक्षेप, परिवर्तनशील। बायें कूल्हे में प्रचण्ड पीड़ा। कण्डरा का कम्प, फड़कन, लड़खड़ना।

चर्म—चमकीली, लाल। सन्निपात इत्यादि के साथ, अरुण ज्वर, विस्फोट दबने के दुष्प्रभाव।

ज्वर—अधिक पसीना जो रोग कम न करे। प्रचण्ड ज्वर।

घटन-बढ़ना—बढ़ना: अन्धेरे कमरे में, अकेले रहने पर, तेज रंग वाली या चमकीली चीज देखने पर, सोने के बाद, निकलने पर। घटना: तेज रोशनी से, संगत में, गरमी से।

सम्बन्ध–विशेष रूप से तुलना कीजिए: हायोसि० और बेलाडो०। इस औषधि का ज्वर बेला० से कम और हायोसि० से अधिक होता है। इसमें मस्तिष्क की यांत्रिक उत्तेजना अधिक होती है, मगर बेलाडो० की सच्ची प्रदाहिक अवस्था की तरह कभी नहीं होती।

क्रियानाशक: बेलाडो०; टैबेक०; नक्स०।

मात्रा—३० शक्ति और उससे नीची शक्तियाँ।

स्ट्रॉन्शिया (Strontia)

(कार्बोनेट ऑफ स्ट्रांशिया)

वात पीड़ा, जीर्ण मोच, अन्ननली की संकीर्णता। पीड़ा से रोगी को गशी आ जाये या शरीर भर में रोगग्रस्त संवेदन उत्पन्न हो जाये रक्त-स्राव का जीर्ण परिणाम; शल्य क्रिया के बाद अधिक रक्त पसीजने के साथ ठंडक व शिथिलता। धमनी, का कड़ा पड़ना। भरभराया चेहरा, टपकती धमनी, संन्यास रोग की सम्भावना के साथ रक्त-चापाधिक्य। प्रबल अनैच्छिक चिहुँकन। अस्थि रोग; खासकर जंघास्थि का। रात में बेचैनी। दम घुटने की संवेदना। चीरा लगवाने के बाद शरीर में प्रबल उपघात। स्नायुप्रदाह से अधिक उत्तेजना।

सिर—सिर दर्द और मिचली के साथ चक्कर आना। फूलन, दाब। गरदन की जड़ से टीस ऊपर को चढ़े। सिर को गरम कपड़े से लपेटने से कम हो। (साइलिशिया)। चेहरे में खून दौड़ना; प्रबल टपकन। आँखों में वेरों के ऊपर का स्नायुशूल दर्द धीरे-धीरे बढ़े और घटे। (स्टैनम०)। नाक में खूनी पपड़ी। चेहरा लाल, जलन, खुजली। नाक की खुजलाहट, लाली, जलन।

आँखें—आँखों में जलन और लाली। देखी हुई चीजों के नाचने और बहुरंगी परिवर्तन के साथ; आँखों के प्रयोग से पीड़ा हो और आँसू आएँ।

आमाशय—भूख न लगना, मांस से घृणा, रोटी और बियर की इच्छा। भोजन स्वादहीन लगे। खाने के बाद डकारें आना। हिचकी, जिससे सीने में दर्द हो, हृदयशूल।

उदर—उदरीय वलय में गड़न। दस्त; रात में अधिक; लगातार वेग; सुबह के निकट कम हो जाये। गुदा में जलन जो मलत्याग के बाद देर तक रहे। (रैंटानहिया)। उदर का असुविधाजनक भरापन और फूलना।

अंग—टखनों के शोथ के साथ जांघिक स्नायुशूल। दाहिने कंधे में वात पीड़ा। दस्त के साथ वात पीड़ा। कुतरन, मानो हड्डी की मज्जा में हो रही है। पिंडली और तलवों में ऐंठन। जीर्ण ऐंठन खासकर टखने के जोड़ों में। शोथ पैरों में, बर्फीली ठंडक। वात पीड़ा; खासकर जोड़ों में हाथों की शिराओं में रक्ताधिक्य।

ज्वर—गरमी लगना, मगर कपड़ा हटाने या उतारने से घृणा।

चर्म—तर खुजलीदार, जलन के साथ उद्भेद, खुली हवा में कम। खासकर गरम धूप में। शोथ के साथ, टखने, जोड़ों में मोच। रात में अधिक पसीना।

घटना बढ़ना—घटनाः गरम पानी में डुबोने से। बढ़नाः मौसम बदलने के समय, चुपचाप रहने से, हिलते ही, ठंडक असह्य।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : आर्निका॰, रूटा॰, साइलिसिया, बैराइटा का॰, कार्बो॰, स्ट्रान्शि आयोडे॰ (धमनी की सख्ती) स्ट्रान्शि॰ ब्रोमे॰ (अकसर जहाँ ब्रोमाइड सांकेतिक होती है वहाँ उत्तम काम करती है। गर्भावस्था की कै। स्नायविक मंदाग्नि। यह उफान निवारक है और अधिक अम्लता को नाश करती है) स्ट्रान्शि॰ नाइट्रे॰ (दूषित इच्छायें, सिर दर्द और कानों के पीछे अकौता)।

मात्रा—६ विचूर्ण और ३० शक्ति।

स्ट्रोफेन्थस हिस्पिडस (Strophanthus Hispidus)

(कोम्ब-सीड)

स्ट्रोफैन्थस एक पेशिक पित्त है। वह सभी धारीदार पेशियों की संकोचन शक्ति को बढ़ाती है। हृदय पर काम करती है, उसकी संकुचन-क्रिया को बढ़ाती है और तीव्रता को घटाती है। हृदय में शक्ति देने के लिए और शोथ के दूषित पदार्थ को

बाहर निकालने में सहायता देती है। दुर्बल हृदय के लिए छोटी मात्रा में। वह बढ़ा हुआ जान पड़ता है। कपाटों में से रक्त का वापस हो जाना, जहाँ शोथ और जल संचयता की प्रबलता हो (डिजिटे०)। स्ट्रोफैन्थस से कोई पाकाशयिक कष्ट नहीं होता, कोई संचित प्रभाव नहीं रखती, पेशाब बढ़ाने वाली प्रमुख औषधि है और वृद्ध लोगों के लिए अधिक सुरक्षित है, क्योंकि वह वासेमोटर (वाहिका प्रेरकों) पर कोई असर नहीं डालती। फुफ्फुस प्रदाह में और चीड़फाड़ के बाद। अधिक रक्त-स्राव के कारण और शिथिलता में और तीव्र रोगों के बाद। बहुत दिनों तक शक्ति-वर्द्धक चीजों के व्यवहार करने के बाद। धूम्रपान वालों का उत्तेजनीय हृदय। धमनी का कड़ापन, वृद्ध लोगों की धमनियों का तनाव। चुरचुरे तंतु को शक्ति देती है, खासकर हृदय की पेशियों और कपाटों को। चर्बीले हृदय की पूरक क्रिया दुर्बलता की अवस्था में खास तरह पर लाभदायक है। जुलपित्ती। धड़कन और साँस फूलने के साथ। रक्तहीनता। वहिःनिसृत चक्षुगोलक तथा हृत्स्पन्दन के साथ गलगण्ड। मोटे व्यक्ति।

सिर—द्वि-दृष्टि के साथ कनपटी पीड़ा, दृष्टि मन्द, चमकीली आँखें, भरभराया चेहरा। वृद्धावस्था का चक्कर।

आमाशय—मदिरा से घृणा विशेष के साथ मिचली और इसलिए रोगात्मक पिपासोन्माद की चिकित्सा में सहायता देती है। अरिष्ट की सात बूँदें।

मूत्र—मात्रा अधिक, कम और सांडलाल।

स्त्री—अतिरजः गर्भाशायिक रक्त-प्रवाह; गर्भाशय में रक्ताधिक्य। वयःसन्धिकाल में कूल्हे और जाँघों में टीस दर्द।

साँस—कष्टदायक साँस, खासकर ऊपर चढ़ने से। फुफ्फुस में रक्ताधिक्य, फुफ्फुसीय शोथ। वायुनलिका और हृदय सम्बन्धी दमा रोग।

दिल—नाड़ी तेज। हृदय गति दुर्बल, तीव्र, क्रमभ्रष्ट जो पैशिक दौर्बल्य और अक्षमता के कारण हो। हृदय पीड़ा।

चर्म—जुलपित्ती, खासकर पुरानी।

अंग—फूले हुए शोथमय। सर्वांग शोथ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: डिजिटे० (लेकिन स्ट्रोफैन्थस से कम तेज है) फॉस एसिड (दुर्बल हृदय, क्रमभ्रष्ट नाड़ी, हृदय क्षेत्र में फड़फड़ाहट, सोते में धड़कन, गर्मी)।

मात्रा—अरिष्ट और ६ शक्ति। अधिक तीव्र रोगों में अरिष्ट की ५ से १० बूंद, दिन में ३ बार।

स्ट्रिक्निनम (Strychnium)

(एल्केलॉयड ऑफ नक्स वॉमिका)

इसका प्राथमिक कार्य है: चालन स्नायु केन्द्र और मेरुदण्ड की परावर्तित क्रिया को शक्ति देना। पेशियों के आक्षेप में मेरुदण्ड की अप्राकृतिक परावर्तित उत्तेजना, मूत्राशय के आक्षेप इत्यादि में इसका होमियोपैथिक प्रभाव होता है।

स्ट्रिक्निनम केन्द्रीय स्नायुमण्डल व मानसिक क्रिया को शक्ति देती है, विशेष इन्द्रियाँ अधिक तीव्र हो जाती हैं। साँस तेज चलने लगती है। सभी परावर्तित क्रियायें तेज हो जाती हैं। पेशियों में, चेहरे और गरदन में कड़ापन। पीछे की तरफ वक्रता के साथ धनुष्टंकार रोग। धनुष्टंकारीय आक्षेप, सिर और एड़ी का पीछे की तरफ झटकना और बाकी शरीर आगे की तरफ। दौरों के बीच के समय पेशियों में ढीलापन, जरा-से स्पर्श से, आवाज और गंध से रोग का अधिक होना। मेरुदण्ड को अधिक प्रभावित करती है और नक्स की अपेक्षा पेट की खराबियों में कम लाभदायक है। धनुष्टंकार रोग। विस्फोटक स्नायविकता। सभी पीड़ा एकाएक उठती है और रह-रह कर कम होती है।

सिर—बेचैनी। अति असहिष्णुता। सिर में भरापन और फटन दर्द, आँखों में गरमी के साथ। कानों में गर्जन के चक्कर। सिर का आगे की तरफ झटकना। सिर की खाल दर्दीली। सिर की खाल और गरदन की जड़ का खुजलाना।

आँखें—गरम दर्दीली, आखें उभरी हुई, घूमती हुई। पुतली फैली हुई। आँखों के आगे चिनगारी। आँखों की पेशियों का आक्षेपिक संकुचन, फड़कन और पलकों का कम्प।

कान—श्रवण-शक्ति अति तीक्ष्ण, जलन, खाज और गरज।

चेहरा—पीला, उत्सुक, मुर्ख। जबड़े कड़े, निचले जबड़े की आक्षेपिक जकड़न।

गला—सूखा, संकुचित, ढोके जैसा संवेदन। निगलना असम्भव। गल-नली भर में जलन और आक्षेप। मुँह के भीतर तालु में अति खुजली।

आमाशय—लगातार ओकाई। घोर कै। गर्भावस्था का वमन।

उदर—उदर-पेशियों में तेज दर्द, आँतों में चुभन दर्द।

मलाशय—आक्षेप काल में अनैच्छिक मल-स्खलन। बहुत कठोर कब्ज।

स्त्री—मैथुन की इच्छा। (कैन्थे०; कैम्फो०; फ्लोरि० एसिड०; लैके०; फॉस०; प्लैटि०;)। शरीर स्पर्श ही से कामोत्तेजना हो।

साँस-यन्त्र—स्वरयन्त्र के पास की पेशियों का आक्षेप। अति कष्टदायक साँस। सीने की पेशियों में तेज, संकुचन पीड़ा। इंफ्लुएञ्जा के बाद लगातार खाँसी आना।

पीठ—गरदन की पेशियों का तनाव। गरदन की जड़ में और रीढ़ की हड्डी में नीचे तक तेज दर्द। पीठ कड़ी, मेरुदण्ड में तेज झटका। मेरुदण्ड में नीचे तक बरफीली ठंडक।

अङ्ग—अंग तने हुए। जोड़ों में सख्ती के साथ वात रोग। घोर झटका, फड़कन और कम्प। धनुष्टंकारीय विक्षेप और पीछे की वक्रता, जरा-से स्पर्श से या हिलने की चेष्टा से आक्षेप शुरू हो। पेशियों में धक्के। ऐंठन की तरह दर्द।

ज्वर—मेरुदण्ड में नीचे तेज ठंडक और कम्प। सीना और सिर के नीचे तक पसीना बहे। निचले अंग ठंडे।

चर्म—सारे शरीर का खुजलाना, खासकर नाक का। मेरुदण्ड में नीचे तक बरफीली ठंडक।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: सुबह; स्पर्श; आवाज; हरकत, भोजन करने के बाद। घटना: चित्त लेटने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये: युकैलिप्टस (स्ट्रिक्निन के दुष्प्रभाव को नाश करती है), स्ट्रिक० आर्से० (वृद्ध लोगों का आंशिक पक्षाघात, पेशियों का ढीलापन। शिथिलता। अपरस; पक्षाघात जैसे लक्षणों के साथ जीर्ण दस्त, चर्बीलेपन के आरम्भ के साथ हृदय की सन्तुलन क्रिया सम्बन्धी ढीलापन, लेटने पर स्पष्ट रूप से कष्टदायक साँस, निचले अंगों का शोथ, मूत्र कम मात्रा में, अधिक घनत्व, ग्लूकोज से लदा हुआ। बहुमूत्र। ६x विचूर्ण), स्ट्रिक० एट फेर० सिट० (हरित रोग और पक्षाघात जैसी अवस्थायें, मन्दाग्नि, अनपच कै के साथ; २x और ३x विचूर्ण), स्ट्रिक्निन नाइट्रे० (२x और ३x विचूर्ण, मद्यपान की इच्छा को नाश करने वाली बताई जाती है। २ सप्ताह तक व्यवहार करें), स्ट्रिक्निन सल्फु० (पाकाशयिक दौर्बल्य); स्ट्रिक्निन वैलेरिन (मस्तिष्क शक्ति की क्षीणता, स्त्रियों के प्रबल स्नायविक उपदाह की अस्वाभाविक अभिवृद्धि २x विचूर्ण)।

तुलना कीजिये: साइक्यूटा०; आर्निका (ताण्ड रोग)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

स्ट्रिक्निया फॉस्फोरिका (Strychnia phos.)

(फॉस्फेट ऑफ स्ट्रिक्निन)

यह औषधि मस्तिष्क मेरुदण्ड मण्डल के जरिये पेशियों पर काम करती है और फड़कन, कड़ापन, कमजोरी, और शक्तिहीनता उत्पन्न करती है; रक्तसंचार पर भी प्रभाव रखती है और नाड़ी की क्रमभ्रष्टता उत्पन्न करती है और मस्तिष्क पर काम करती है जिस कारण नियन्त्रण में शक्तिहीनता होती है और हँसने की अनियंत्रित इच्छा और मस्तिष्क के प्रयोग की इच्छा नष्ट हो जाती है। अति क्रमभ्रष्ट नाड़ी। तीव्र धड़कन। तेज और के दुर्बल नाड़ी। ताण्डव, गुल्म वायु, तीव्र ज्वर के बाद अति दौर्बल्य में लाभदायक है। लक्षण हरकत से बढ़ते हैं और आराम से व खुली हवा में कम होते हैं। मेरुदण्ड की रक्तहीनता में, पक्षाघात में, मेरुदण्ड की जलन, खुजली और कमजोरी में दर्द आगे की तरफ सीने तक बढ़ता है; निचले पीठ के क्षेत्र में छूने से कोमलपन; ठंडे लसीले पैर, हाथों और काँखों पर चिपचिपा पसीना। अधिक ढीले हृदय में सन्तुलन शक्ति का भ्रष्ट होना और प्रसवकालीन फुफ्फुसीय संकुचन; हृदय पेशियों के चर्बीलापन का आरम्भ। (रॉयल)।

मात्रा — ३ विचूर्ण।

सक्सिनम (Succinum)

(एलेक्ट्रॉन एम्बर)–(ए फॉसिल रेजिन)

स्नायविक और गुल्म वायु के लक्षण। दमा रोग। तिल्ली के रोग।

सिर— रेलगाड़ियों के डिब्बों और बन्द जगहों का भय। सिर दर्द, आँखों से पानी बहना, छींकना।

साँस-यन्त्र—दमा, क्षय रोग का आरम्भ, जीर्ण वायुनलिका प्रदाह, सीने में दर्द। कुकुर खाँसी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : ऐम्बरग्रिस (ऐम्ब्रा०) से पृथक् औषधि है। सक्सिनिक एसिड० (फ्लू, छींकों के दौरे, नाक के नथनों से पानी-सा श्लेष्मा बहना; दमा रोग। साँस-पथ में प्रदाह, जिससे दमा, सीना दर्द इत्यादि हो; पलकों, किनारों और नाक की खुजली, बाहरी हवा में बढ़ना। ६ से ३० शक्ति का व्यवहार करें।

तुलना कीजिए : एरण्डो०, ब्राइथिया, सैबाडिला, सिनापिस०।

मात्रा—३ विचूर्ण। तेल की ५ बूँद की मात्रा में।

सल्फोनेल (Sulfonal)

(ए कोल-टार प्रॉडक्ट)

मस्तिष्क विकार सम्बन्धी चक्कर अनुमस्तिष्क के रोग, मांसपैशिक क्रिया असमता के लक्षण और ताण्डव रोग। ये सभी इस औषधि का होमियपैथी में व्यवहार करने की तरफ संकेत करते हैं। प्रबल दौर्बल्य, कर्महीन, गशी जैसा जान पड़ना और निराश, मुख संकोचक पेशियों पर नियन्त्रण न रहे। पेशियों का पारस्परिक सहयोगहीन होना।

मन—मानसिक गड़बड़ी, धुँधलापन, भ्रम, उदासीन। प्रसन्न व आशापूर्ण भाव और उदासी व दुर्बलता बारी-बारी। अति उत्तेजनीयता।

सिर—शोथमय, मूर्ख, सिर उठाने की चेष्टा करने से पीड़ा। द्वि-दृष्टि; आँखों के नेत्र में भारीपन, कानों में टनटनाहट, वाकरोध, जबान में मानो लकवा हो गया है। आँखें रक्तमय और अशान्त। चक्कर, उठ न सके। द्वि-दृष्टि, ऊपरी पलक का पक्षाघात, कानों में टनटनाहट, निगलने में कठिनाई, बोलना कठिन।

मूत्राशय— जमे हुए टुकड़ों के साथ सांडलाल मूत्र। कम मात्रा में। गुलाबी रंग। पेशाब करने की लगातार इच्छा, थोड़ा बादामी लाल रंग का। खून का पेशाब करना।

साँस-यन्त्र—फुफ्फुस में रक्ताधिक्य, कष्टपूर्ण साँस। आहें भरने वाला साँस कष्ट।

अंग—मांसपैशिक क्रमभ्रष्टता, लड़खड़ाना, ठंढापन, कमजोरी, कम्पन, टाँगें बहुत भारी मालूम दें। घोर अशान्ति, पैशिक फड़कन। घुटनों का हिलना गायब होना। दोनों टाँगों का कड़ापन और पक्षाघात। टाँगों का सुन्न होना।

नींद—अशान्त जागते रहना, ऊँघना। अनिद्रा।

चर्म—खुजलीदार, हल्का नीला रंग वाला धूम्र रोग। अरुणिमा।

सम्बन्ध – ट्रियोनेल : शारीरिक उत्तेजना से सम्बन्धित अनिद्रा; (चक्कर), असन्तुलन, शक्तिहीनता, मांसपेशिक क्रियाभ्रष्टता, मिचली, कै, दस्त, परिश्रमिक साँस, शरीर नीला, कानों में टनटनाहट, दृष्टि-भ्रम)।

मात्रा—१ विचूर्ण।

गैर होम्योपैथिक व्यवहार—नींद लाने के लिए गरम पानी में १० से ३० ग्रेन। लगभग दो घण्टे में काम करता है।

सल्फर (Sulphur)

(सब्लिमेटेड सल्फर)

यह हैनिमैन साहेब की बहुत बड़ी खाज-विषनाशक औषधि है इसका प्रभाव केन्द्रापसारी है—भीतर से बाहर की तरफ—और चर्म के लिए विशेष रूप से आकर्षण रखती है। जहाँ यह गरमी और जलन, साथ में खुजली उत्पन्न करती है जो बिस्तर की गरमी से अधिक होती है। सौत्रिक कर्महीनता और ढीलापन, अतः शक्तिमन्दता के इन लक्षणों की विशेषता है। गरमी के उफान, पानी से घृणा, बाल और चर्म सूखे तथा कड़े, शरीर छिद्र लाल, लगभग १२ बजे दिन के समय पेट में डूबन संवेदन, झपकियाँ; ये सभी अवस्थायें होमियोपैथिक सिद्धान्त से सल्फर की तरफ संकेत करती हैं। सल्फर के रोगी के लिए खड़ा होना सबसे खराब आसन है। यह सर्दी असुविधाजनक रहता है। मैले-कुचैले लोग जिनकी चर्म रोग की प्रवृत्ति हो। नहाने से घृणा। जब ध्यानपूर्वक चुनी हुई औषधियाँ असफल हों; खासकर तीव्र रोगों में, यह औषधि शरीर की प्रतिक्रिया शक्ति को बढ़ा देती है। वे रोग जो अच्छे होकर फिर हो जाया करें। शरीर के स्राव और गन्ध की घृणित अवस्था। होंठ और चेहरा बहुत लाल, जरा-से में खून दौड़ जाये। अकसर पुराने रोगों की चिकित्सा शुरू करने में और तीव्र रोगों की चिकित्सा अन्त करने में अच्छी तरह लाभ के साथ व्यवहार में आती है।

मन—बहुत भूलना। सोचना कठिन। भ्रम, फटे-पुराने कपड़ों को सुन्दर वस्तुएँ समझे, यह कि वह बहुत धनवान है, सारे समय काम में ही लगा रहे। बड़ी उम्र के लोगों में बच्चों जैसे चिड़चिड़ापन। बदमिजाज। प्रेमोल्लंघन करना, अति स्वार्थी, दूसरों की परवाह न करना। धार्मिक कृत्यों में व्यस्त, काम-धाम से घृणा, अवारागर्दी किया करे अपना धर्म सोचने में काहिलपन। ऐसी कल्पना करे कि लोगों को गलत चीजें दे रहा है जिससे वे मर जायेंगे। सल्फर के रोगी प्रायः सदा चिड़चिड़े रहते हैं, उदासी छायी रहती है, दुबले और कमजोर होते हैं चाहे भूख अच्छी हो।

सिर—सिर की चाँद पर लगातार गरम रहना। कूप्रम सल्फ्यु०; (ग्रैफा०)। भारीपन और भरापन, कनपटी में दाब। चोट लगने जैसा सिर दर्द, झुकने से बढ़े और साथ में चक्कर। पुराना सिर दर्द जो निश्चित समय पर उठे। सिर पर से रूसी छूटना, पपड़ी जमना, सूखापन। सिर की खाल सूखी, बाल झड़ना, धोने से कष्ट बढ़े। खुजली खुजाने में जलन हो।

आंख—पलकों के किनारों पर जलन वाले स्राव। लैम्प के प्रकाश की चारों तरफ प्रकाश-चक्र। आँखों में गरमी और जलन (आर्से०, बेला०)। आँखों के आगे

काले कण दिखाई दें। चक्षुपटल पर घाव की पहली अवस्था। जीर्ण नेत्र प्रदाह, अधिक जलन और खाज के साथ। सांतर विधानीय चक्षुप्रदाह। कनीनिका का धुँधलापन, घिसे हुए शीशे की तरह।

कान—कानों में भिनभिनाहट। स्राविक कर्ण प्रदाह के दब जाने का दुष्परिणाम। अति संवेदनीयता। बहरापन के पहले अति संवेदनीय श्रवण शक्ति। जुकामी बहरापन।

नाक—नाक के आरपार मैंसिया दाद। घर के अन्दर नाक में ठँसापन। काल्पनिक दुर्गन्ध की संवेदना। नथुनों के बगल में लाली और पपड़ी। जीर्ण सूखा जुकाम; सूखी खुरण्ड, सरलता से खून बहे। अर्बुद और ग्रन्थि वृद्धि।

मुँह—होंठ सूखे, गला लाल, जलन। सुबह को कड़वा स्वाद। दांतों के आरपार झटके। मसूढ़ा का फूलना, थरथराहट दर्द। जबान सफेद, सिरा और किनारे लाल।

गला—गले में ढोंके जैसा संवेदन, खपच्ची जैसा दाब। जलन, लाली और सूखापन। गोला उठता और गलनली को बन्द करता जान पड़े।

आमाशय—भूख का पूर्ण अभाव या अति प्रबलता। सड़ी डकार। भोजन अधिक नमकीन मालूम हो, पानी अधिक पिये, भोजन कम करे। दूध सहन न हो। मिठाई की अधिक इच्छा। (आर्जे० नाइट्रि०)। अति अम्लता, खट्टी डकार। जलन, दर्दीला बोझ जैसा दाब। लगभग ११ बजे दिन को बहुत कमजोरी और शिथिलता; कुछ खाना आवश्यक। गर्भावस्था में मिचली। रोगी पानी अधिक पीये।

उदर—दाब से अति उत्तेजनीयता, कच्चापन और दर्दीलापन का आंतरिक संवेदन। किसी जीवित वस्तु के चालन का संवेदन (क्रोक०, थूजा०)। जिगर के ऊपर दर्द और चोटीलापन। पानी पीने के बाद शूल।

मलाशय—गुदा में जलन और खुजली, उदर मंदता के कारण बवासीर। घड़ी-घड़ी असफल वेग, कड़ा, गँठीला, अपर्याप्त मल। बच्चा दर्द के कारण डरा करे। गुदा के चारों तरफ लाली; साथ में खाज। सुबह का दस्त दर्दहीन; बिस्तर पर से भागना पड़े. काँच निकले। बवासीर, पसीजन और डकार।

मूत्र—अकसर पेशाब करना, खासकर रात में। अनैच्छिक मूत्र-स्खलन खासकर कण्ठमालिक, गन्दे बच्चों में मूत्रमार्ग में जलन जो पेशाब होते समय मालूम हो और बाद में देर तक रहे। पेशाब में श्लेष्मा और मवाद, जहाँ से गुजरे वहाँ छरछराहट पैदा करे। तेजी से पेशाब करना, एकाएक जोर से इच्छा हो। बिना रंग के अधिक मात्रा में पेशाब होना।

पुरुष—लिंग में चिलकन। अनैच्छिक वीर्य-स्खलन। बिस्तर में जाने के समय जननेन्द्रिय में खुजली। लिंग ठंडा, ढीला और शक्तिहीन।

स्त्री—योनिलिंगिका की खुजली। योनि में जलन। अधिक घृणित पसीना। मासिक-धर्म बहुत देर में, थोड़े समय तक रहे, कम मात्रा में और कठिन, गाढ़ा, काला तेजाबी, भागों में छरछराहट पैदा करे। मासिकधर्म के पहले सिर दर्द या स्राव एकाएक रुक जाय। प्रदर, जलन वाला, खराश पैदा करने वाला। स्तन बुण्डी चिटकी और जलन हो।

साँस-यन्त्र—दाब और जलन सीने में। कठिन साँस, खिड़कियाँ खोल कर रखना चाहे। स्वर लोप। सीने भर में गरमी। सारे सीने के ऊपर लाल, कत्थई चकत्ते। ढीला खाँसी, बोलने से और सुबह को अधिक हो। हरापन, मवादी, मीठे स्वाद का बलगम। श्लेष्मा की अधिक खड़खड़ाहट। हृदय के बहुत बड़े लगने और धड़कन के साथ सीना भारी लगे और चिलकन हो। फुफ्फुसावरणीय प्रदाहिक स्राव। टिंचुरा सल्फ्युरिस का व्यवहार करें। चिलकन, दर्द पीठ में से होकर गुजरे, गहरा साँस लेने से या पीठ के बल लेटने से बढ़े। सीने में गरम लहरें जो सिर तक बढ़े। सीने पर बोझ जैसा दाब। रात के मध्य में कष्टदायक साँस, बैठ जाने से कम हो। नाड़ी शाम की अपेक्षा सुबह को तेज चले।

पीठ—कंधों के बीच में खींचन, दर्द। गरदन की जड़ में कड़ापन। ऐसा लगे कि मेरुदण्ड के टुकड़े एक पर एक सरक रहे हों।

अंग—हाथों में कम्प। गरम, पसीनेदार हाथ। वात पीड़ा जो बायें कंधे में हो। भारीपन, आंशिक पक्षाघात का संवेदन। खुजली के साथ वातिक गठिया। रात में हथेली और तलवे जलें। काँखों में पसीना जिसमें लहसुन की गन्ध हो। हाथों और बाहों में खींचन और फटन। घुटनों और टखनों में कड़ापन। सीधे होकर न चल सके। कन्धे झुके रहें। कण्डरा पर होने वाले कोषार्बुद।

नींद—सोते में बातें करता है, अंग झटकता है, फड़कता है। स्पष्ट स्वप्न, गाते हुए जागे। अक्सर जाग उठे और एकाएक पूरी तरह से जाग जाये : कुकुर निंदिया; जरा-सी आवाज पर जाग जाये। २ बजे रात से ५ बजे सुबह तक न सो सके।

ज्वर—अक्सर गरम लहरें। सारे शरीर में गरमी के तूफान। चर्म सूखा, प्यास अधिक। रात में पसीना, गरदन की जड़ पर और काँखों में एक ही भाग पर पसीना। घृणित पसीना। स्वल्प-विराम ज्वर।

चर्म—सूखा, पपड़ीदार अस्वस्थ जरा-सी चोट पक जाये। हल्के, बादामी चकत्ते। खुजली; जलन खुजलाने और धोने से बढ़े। दानेदार फटन, मवादी दाने,

दरारें, नाखूनों का व्रण। चर्म की तहों में छिलन। (लाइको०)। हड्डियों के चारों तरफ फीते जैसा कसापन। स्थानीय औषधि प्रयोग के बाद चर्म रोग उत्पन्न होना। अति खाज रोग, खासकर गरमी से, शाम को, बसन्त काल में हुआ करे, तर मौसम में।

घटना-बढ़ना – बढ़ना : आराम से खड़े होने से, बिस्तर को गरमी से, धोने से, नहाने से, सुबह को, ११ बजे दिन में, रात को, मद्य मिश्रित उत्तेजक पेय से, सामयिक। घटना : सूखे गरम मौसम में, दाहिनी तरफ लेटने से, रोगग्रस्त अंग को खींचने से।

सम्बन्ध—पूरक एलो०; सोरिन०; एकोना०; पाईरारारा (अमेजन नदी में पकड़ी हुई एक तरह की मछली जो कई तरह से चर्म रोग की चिकित्सा में व्यवहार की जाती है)। कुष्ठ, क्षय रोग के गुल्म, उपदंशीय गुल्म, नसों की सिकुड़न और फूलन इत्यादि।

तुलना कीजिए : एकोना० (अकसर तीव्र रोगों में इसके बाद सल्फर अच्छा काम करती है, मर्क्यु० और कैल्केरिया अक्सर सल्फर के बाद अच्छा काम करते हैं, मगर पहले नहीं। लाइको० सीपिया; सार्सा०; पल्से०; सल्फर हाइड्रोजेनिसेटम (सन्निपात, उन्माद, दम घुटना; सल्फर टेरेबिथिनेटम (जीर्ण वातिक सन्धि प्रदाह, ताण्डव रोग); टैनिक एसिड (नाक से रक्त प्रवाह, घाँटी का बढ़ना; कुल्ली करना, कब्ज, मैग्नेशिया आर्टिफिसिएलिस (शाम को बहुत भूख, चेहरे पर अधिक पसीना; जोड़ों में कुचलन दर्द, मलत्याग के बाद मलाशय में सिकुड़न)।

मैग्नेटिस पोलस आर्टिकस (उत्सुक; आँखों का ठंडापन जैसे एक बरफ का टुकड़ा आँखों के घेरों के अन्दर पड़ा हुआ है, लार अधिक बहना; कब्ज, प्रगाढ़ निद्रा, कम्प, उदर में वायु संचय हो)।

मैग्नेटिस पोलस आस्ट्रेलिस (पलकों का सूखापन, टखनों की हड्डियों का सरलता से सरक जाना, पैर के नाखून का भीतर की तरफ बढ़ना, जुकाम में टीस, तलवों में चुभन)।

ग्रन्थि-विकार में तुलना कीजिये, एग्रैफिस०।

मात्रा—सभी शक्तियों में नीची से नीची और ऊँची से ऊँची काम करती हैं। कुछ बहुत उत्तम लाभ ऊँची शक्तियों से देखा गया है जो अकसर दोहराई नहीं गई। १२ शक्ति चिकित्सा शुरू करने के लिए अच्छी है और फिर रोगों के प्रभावित होने के विचारानुसार शक्ति को बढ़ाना चाहिए। जीर्ण रोगों में २०० शक्ति और उससे ऊँची शक्ति। मन्द विस्फोटक सबसे नीची शक्ति।

सल्फर आयोडेटम (Sulphur Iodatum)

(आयोडाइड ऑफ सल्फर)

कठोर चर्म रोग, खासकर खाज और मुहासे। तरल अकौता।

गला—गला और तालुमूल बढ़े हुए और लाल। फूलन। जबान मोटी। कर्णमूल ग्रन्थि ढीली हो गयी हो।

चर्म—कान, नाक और मूत्रमार्ग में खुजली। चेहरे पर रस दाने। होठों पर ठंढे घाव। गरदन पर फोड़े। खाज। मुहासे। घमौरी। बाहों पर खाज वाली फरन। बाल सब खड़े मालूम दें।

मात्रा—३ विचूर्ण।

———

सल्फ्युरिकम एसिडम (Sulphuricum Acidum)

(सल्फ्युरिक एसिड)

अम्ल पदार्थों की दुर्बलता विशेषकर जो सभी अम्लों में उपस्थित रहती है, इस अम्ल में भी पायी जाती है, खासकर पाचन-पथ में जिसके कारण पेट में ढीलापन मालूम होता है और उत्तेजक वस्तुओं की प्रबल इच्छा होती है। कम्प और दौर्बल्य। सभी चीज जल्दी से होनी चाहिए। गरम लहरें, बाद में कम्प के साथ पसीना। कट जाने पर सड़ने की प्रवृत्ति। लेखकों के हाथ की ऐंठन। सीसा विषाक्रमण। पेट का दर्द और अनपच। प्रसूतिका रक्त-प्रवाह।

मन—अशांत, उतावलापन, प्रश्नों का उत्तर शीघ्रता से न देने की इच्छा।

सिर—दाहिनी तरफ का स्नायुशूल, दर्दीले धक्के, चर्म पर चुटकी काटने जैसा दर्द। ऐसा संवेदन कि माथे में भेजा ढीला हो गया है और इस बगल से उस बगल को लुढ़क रहा है। (बेला० रस टॉ०) मस्तिष्क में धक्का लगना, जहाँ चर्म ठंढा और शरीर ठण्डे पसीने से तर हो। सिर के पिछले भाग के बगल में, दाब पीड़ा, सिर के पास हाथों को उठाने से कम। बाहरी भाग का दर्द, मानो खाल पर घाव हो गये हों, छूने से दर्द करे। दाहिनी कनपटी में खोदने जैसा संवेदन मानो एक गुल्ली दबाई जा रही हो।

आँखें—आघात के कारण आँखों की आंतरिक रक्तनलिकाओं में रक्ताधिक्य। श्लैष्मिक झिल्ली में अधिक अर्बुद रोग, टीस और तेज दर्द के साथ।

मुँह—मुख में मुँहा (घाव) मसूढ़े से खून सरलता से बहे। दुर्गन्धित साँस। मसूढ़ों में सड़न।

आमाशय—गला जलना, खट्टी डकारें, दाँत खट्टे हो जायें (रोबिनि०)। मद की प्रबल इच्छा। पानी में पेट से ठण्डापन मालूम हो, मदिरा मिलाना आवश्यक। पेट में ढीलापन। कॉफी की गन्ध से घृणा। खट्टी कै। ताजे भोजन की इच्छा। हिचकी। पेट सेंकने से पेट का आंतरिक ठण्डापन कम हो। गनगनी के साथ मिचली।

उदर—दुर्बलता का संवेदन, कुल्हों और पिठासे में धँसन संवेदन के साथ। ऐसा जान पड़े कि आँत नीचे उतर आवेगी; खासकर बायीं तरफ की।

मलाशय—बवासीर, तर पसीजन। मलाशय में बड़ा-सा गोला मालूम पड़े। दस्त, सड़ा, काला, शरीर की खट्टी गंध और उदर के खालीपन के साथ।

स्त्री—मासिक-धर्म समय के पहले और अधिक मात्रा में। वृद्ध स्त्रियों में योनि-ग्रीवा गलना, खून बहना। तीखा, जलन वाला प्रदर, अक्सर खूनी श्लेष्मा निकले।

साँस-यन्त्र—गरदन की पेशियों में चुभन दर्द और नाक के पर्दों में हिलने के साथ तेज साँस चलना, स्वर-यन्त्र तेजी से ऊपर-नीचे करे। छोटी फटन खाँसी के साथ बच्चों की वायुनलिकाओं में प्रदाह।

अंग—बाहों; हाथों में ऐंठन की तरह पक्षाघातिक झटका, सिकुड़न, लिखते समय अंगुलियों में झटका आए।

चर्म—चोट इत्यादि लगने के दुष्परिणाम। कुचला जाना और लाल चर्म। काले चकत्ते। काली लकीरों के छोटे दागः धूम्र रोग रक्त स्राविक। लाल, रक्तमय, खुजली वाले चकत्ते। शरीर के सभी छिद्रों में काला खून निकलना। पुराने घाव के निशान, लाल और नीले हो जायें और दर्द करें। बेवाई फटना जिसमें सड़न की प्रवृत्ति हो। कारबंकल, फुन्सियाँ और दूसरे और संक्रमणों के विस्फोट।

घटना-बढ़ना—बढ़नाः अधिक गरमी या ठंडक से, दोपहर के पहले या शाम को। घटनाः सेंकने से, रोगग्रस्त करवट लेटने से।

सम्बन्ध—पूरक-पल्से०।

तुलना कीजिएः आर्नि०, कैलेण्डुला०, लीडम०, सीपिया, कैल्के०।

मात्रा—मद्यपान की प्रबल इच्छा को नाश करने के लिए कई हफ्तों तक सल्फ्युरिक एसिड को उसके तिगुने भाग एल्कोहल में मिलाकर १० से १५ बूँद की मात्रा में, दिन में ३ बार देना चाहिए। होमियोपैथी में २ से ३० शक्ति व्यवहार करें।

सल्फ्युरोसम एसिडम (Sulphurosum Acidum)

(सल्फ्युरस एसिड $H_2 SO_3$)

सल्फ्युरस एसिड (तालुमूल प्रदाह फुहारा देने के लिए), मुहाँसे, पेट में घावयुक्त पीड़ा; बहुरंगी रूसी छूटना।

सिर—व्याकुल, शोकाकुल, लड़ाई करने की प्रवृत्ति। कै करने से सिर दर्द कम हो। कानों में टनटनाहट।

मुँह—मुँह में घावयुक्त सूजन। जबान लाल या बैंगनी। मैलदार।

आमाशय—भूख न लगे। कठोर कब्ज।

साँस-यन्त्र—अधिक बलगम के साथ लगातार दम घोटने वाली खाँसी। स्वर-भङ्ग सोने में संकुचन। कठिन साँस।

स्त्री श्वेत प्रदर। दौर्बल्य।

मात्रा—तालुमूल प्रदाह में फुहारे से औषधि को छिड़कना। रिंगर के अनुसार हर भोजन के दस मिनट पहले १० से १५ बूँद पीने से मुँह में पानी भरना कम होगा और पेट में उबाल और बादी नहीं रहेगी। यह मुखछत को भी अच्छा करती है। होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार ३ शक्ति।

सुम्बुल (Sumbul)

(मस्क; रूट)

इस औषधि के अन्तर्गत बहुत-से गुल्म वायु और स्नायविक लवण हैं, और यह औषधि स्नायुशूल में और हृदय की अनेक यांत्रिक बाधाओं में व्यवहार की जाती है। ठंडा होने से सुन्न हो जाने तक। बायीं तरफ की सुन्नता। मदपानिक सन्निपात की अनिद्रा (टिंचर की १५ बूँद)। मेरुदण्ड के नीचे तक पानी गिरने का सम्वेदन। दमा रोग। धमनियों के कड़ा पड़ने में एकतन्तु औषधि है।

सिर—आवेगमय और अशान्त। सुबह की मन्दता, शाम को तीव्रता। लिखने और जोड़ने में गलती कर देना। तिल निकलना। नाक में चिमड़ा; पीला श्लेष्मा।

गला—गला घुटने की सम्वेदना, बराबर निगलते रहना। पेट से डकारें उठना। गलनली की पेशियों में आक्षेप। गले में चिमड़ा बलगम।

दिल—स्नायविक धड़कन। बायें स्तन और कोखे के क्षेत्र में स्नायुशूल। हृदय रोग सम्बन्धी दमा रोग। बाईं बाँह में टीस, भारीपन, सुन्न, थकावट। किसी परिश्रम से दम फूले। नाड़ी क्रमहीन।

स्त्री—डिम्बाशय स्नायुशूल। उदर भरा, तना; दर्दीला। वयःसन्धिकालीन गरम लहरें।

मूत्र—पेशाब की सतह पर तेल जैसी चमकती गोलियाँ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तीव्र परिश्रम, बायीं तरफ।

सम्बन्ध – तुलना कीजिये : एसाफिटिडा, मॉस्कस।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति। डॉ० डब्लू मैकजार्ज धमनी के कड़ापन के लिए २x हर तीन घण्टे पर देने की सलाह देते हैं।

सिम्फोरिकार्पस रेसीमोसा
(Symphoricarpus Rac.)
(स्नोबेरी)

गर्भावस्था में लगातार वमन होने के लिए अच्छी बतलायी जाती है।

अमाशयिक गड़बड़ी, चंचल भूख; मिचली, जल हिचकी, कड़वा स्वाद। कब्ज। मासिककालीन मिचली। जरा-सा हिलने से मिचली। सभी तरह के भोजन से घृणा। चित्त लेटने से कम।

मात्रा—२ से ३ शक्ति।

२०० शक्ति भी लाभदायक सिद्ध हुई है।

सिम्फाइटम (Symphytum)
(कॉम्फ्रे-निटबोन)

इसकी जड़ में एक दानेदार ठोस पदार्थ होता है जो घाव वाली सतह पर चर्मांकुर उत्पन्न करने में सहायक होता है। यह औषधि अमाशयिक और बड़ी आड़ी-आँत के घाव के लिए आंतरिक प्रयोग में आती है। इसके अतिरिक्त पेट दर्द में और बाहरी प्रयोग में गुदा खाज के लिए। नस-बन्धनी और अस्थिवेष्ट की चोटों के लिए प्रायः सभी जोड़ों पर काम करती है। घुटने का स्नायुशूल।

उस घाव के लिए उपयोगी है जो हड्डियों के भीतर एक और मूलाधार तक घुस जाये जब टूटी हुई हड्डी जल्दी न जुड़े; किसी अंग के काट डालने के बाद उसका ठूँठा भाग उत्तेजनीय हो। कमर की गहराई तक का फोड़ा। अस्थि परिवेष्ट चुभन और दर्द।

सिर—कनपटी; चाँद और माथे में दर्द जो जगह बदले। दर्द नाक की हड्डी से नीचे उतरे। जबड़े की निचली हड्डी में सूजन, कड़ापन, लाली और फूलन।

आँखें—कुन्द चीज के आघात से आँखों में दर्द। आँखों की चोट के लिए इससे बढ़कर कोई औषधि नहीं है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : आर्निका०; कैल्के फॉस।

मात्रा—अरिष्ट। घाव, गुदा खाज पर लगाने के काम में आती है।

सिफिलिनम (Syphilinum)

(दी सिफिलिटिक वाईरस-ए नोजोड)

सुबह के समय प्रबल शिथिलता और दौर्बल्य।

जगह बदलने वाला गठियावात दर्द। जीर्ण विस्फोट और वातरोग।

मीनवक्किका। उपदंश बाधायें। अँधेरे के बाद से दिन की रोशनी होने तक दर्द हो, जो धीरे-धीरे बढ़े, घटे। मद्यपान की जन्मजात प्रवृत्ति। मुँह, नाक, जननेन्द्रिय, चर्म के घाव। एक के बाद एक फोड़ा निकलना।

मन—स्मरण-शक्ति नष्ट, बीमारी आने से पहले की सब बातें याद रखता है। मुखक्षत; ऐसा मालूम हो कि पागल हो रहा है या पक्षाघात हो रहा है। रात से डर लगना और जागने पर शिथिल होने का डर। आशाहीन, अच्छा होने से निराश।

सिर—कनपटी के आरपार रेखामय पीड़ा या आँखों के पीछे की तरफ। रात को अनिद्रा और प्रलापक सन्निपात। बाल झड़ें। सिर की हड्डियों में दर्द। चाँद अलग होती जान पड़े! सिर दर्द जो बुद्धिहीन बना दे।

आँखें - कनीनिका की छालेदार सूजन जो पुरानी हो और बार-बार आये; कनीनिका की झिल्ली पर छालेदार फरन और छिलन, झुण्ड के झुण्ड हों, अति प्रकाशासह्यता, जलप्रवाह अधिक। पलक फूले हुए, रात में अधिक पीड़ा, ऊपर की पलकों का पक्षाघात। क्षय रोग सम्बन्धी नेत्र प्रदाह। द्वि-दृष्टि, एक प्रतिबिम्ब नीचे भी दिखाई दे। आँखों पर ठण्डी हवा बहती मालूम दे। (फ्लोरिक एसिड)।

कान—उपदंश पर निर्धारित कान की हड्डियों का सड़ना।

नाक—नाक की हड्डियों का सड़ना, तालु और बिचली झिल्ली में छेद होने के साथ कड़ापन, पीनस रोग।

मुँह—मसूढ़ों के पास के दाँतों का भाग सड़े, किनारे दरारेदार, घिसे हुए। जबान पर मैल; दाँत दरारेदार, गहरी, लम्बी चिटकन। घाव दर्द करे और जलन हो। लार अधिक बहे; सोते में टपका करे।

आमाशय—एल्कोहल की प्रबल इच्छा।

मलाशय—बन्धनियों से कसा जान पड़े। एनिमा लेने में बहुत दर्द हो। दरारें, काँच निकलना।

अंग—गृध्रसी, दर्द रात में अधिक हो, दिन निकलने पर कम हो। कन्धों के जोड़ों में; त्रिकास्थि के जोड़ के पास वात दर्द। पीड़ा, चक्कर खाये। लम्बी हड्डियों में तेज पीड़ा। पैर की अँगुलियों के बीच में लाली और छरछराहट। (साइलिशिया)। वात रोग, पेशियों में कड़ी गुठलियाँ। सदा हाथों को धोता रहे। मन्द भाव। पेशियाँ कड़ी गुठलियों में सिकुड़न आयें।

स्त्री—योनि के होठों पर घाव। प्रदर, अधिक, पतला, पानी-सा, तीखा, साथ में तेज चाकू की तरह चुभने वाला डिम्बाशयिक दर्द।

श्वास-यन्त्र—स्वर-लोप, गरमी के मौसम में जीर्ण दमा, साँय-साँय की आवाज और खड़खड़ाहट (टार्ट० एमेटि०)। खाँसी सूखी, कड़ी, रात में अधिक हो, वायु-नली स्पर्श सहन न करे। (लैके०) हृदय के तल भाग से शिखर तक, रात के समय, कोंचन दर्द।

चर्म—सूखे बादामी विस्फोट, बुरी गन्ध के साथ। अति दुबलापन।

तुलना: मर्क०, कैलि हाइड्रियोडिकम; नाइट्रिकम एसिड, ऑरम०, एल्युमिना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: रात में, सूर्यास्त से सूर्योदय तक समुद्र तट पर, गरमी के मौसम में। घटना: समुद्र से दूर और पहाड़ पर, दिन के समय, धीरे-धीरे चलने-फिरने से।

मात्रा—सब ऊँची शक्ति में और देर-देर पर।

सिजिजियम जेम्बोलेनम (Syzgium Jamb.)

(जैम्बोल सीड्स–एनलेक्सिग, एक्टिव प्रिंसिपल)

रक्त में चीनी अधिक करने का तत्कालीन प्रभाव रखती है, फलस्वरूप मूत्र में शर्कराधिक्य का रोग हो जाता है।

मधुमेह की अति उपयोगी औषधि। कोई भी औषधि इतने स्पष्ट रूप से मूत्र में चीनी की मात्रा न तो कम करती है और न गायब करती है। शरीर के ऊपरी भाग में गरमी की चुनचुनाहट, छोटे लाल दाने जो बहुत तेजी से खुजलायें। अति प्यास, दुर्बलता, दुबलापन। मूत्र अधिक मात्रा में, अधिक घनत्व का। चर्म पर पुराने घाव। बहुमूत्रीय घाव।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: इन्सुलीन–अग्न्याशय का गतिशील तत्व जो पानी

में घुल जाता है, इससे शरीर में चीनी का क्रम ठीक होता है। अगर मधुमेह में ठीक कालान्तर में व्यवहार की जाये तो चीनी प्राकृतिक अनुपात में सीमित रहती है और मूत्र मधुहीन रहता है। अधिक मात्रा में सेवन करने से कमजोरी और थकावट, कम्प और अधिक पसीना होने लगता है।

टैबेकम (Tabacum)

(टोबैको)

टैबेकम के लक्षण बहुत स्पष्ट हैं। मिचली, चक्कर, शरीर का मृत्युतुल्य पीलापन, कै होना, बर्फीली ठंडक और पसीना, साथ में नाड़ी का रुक-रुक कर चलना सभी इसकी विशेषताएँ हैं। इसमें विशिष्ट रोगाणुनाशक गुण हैं। हैजे के कीटाणुओं को मारती है। पूरे पैशिकमण्डल की पूर्ण शिथिलता। पतनावस्था। पेट दर्द, आंत्र-शूल; समुद्र यात्रा वमन; शिशु हैजा, जुकाम, सर्दी, लेकिन उदर पर से कपड़ा हटाना चाहे। आँतों में तीव्र आकुञ्चन तथा वमन क्रिया, दस्त लगना। रक्त-वाहिनियों में अधिक तनाव और हृदय तथा होठों की धमनियों में कड़ापन उत्पन्न करती है। हृदय-धमनियों के शूल और अधिक तनाव के साथ हृदयशूल में उत्तम समान क्रियात्मक औषधि सिद्ध होना चाहिए। (कारटियर)। गले, सीने, मूत्राशय में संकुचन। चेहरे का फीका रङ्ग. दम फूलना। कड़ी कसी हुई नब्ज चलना।

मन—घोर तुच्छता का संवेदन। अति निराश। भुलक्कड़। असन्तुष्ट।

सिर—आँखें खोलने पर चक्कर आये, पुराना सिर दर्द, घोर मिचली के साथ सामयिक हमले। फीते जैसा कसाव। एकाएक हथौड़े की चोट पड़े ऐसा सिर दर्द। स्नायविक बहरापन। आँख, नाक, और मुँह से अधिक स्राव।

आँखें—निगाह धुँधली, वक्र दृष्टि। आंशिक या सम्पूर्ण अन्धापन। पेशियों में अनैच्छिक फड़कन। लोप हो जाने वाले काले धब्बे। बिना किसी कारण के एकाएक अन्धापन आये, बाद में शिराओं में रक्ताधिक्य और दृष्टि स्नायु का सिकुड़ जाना।

चेहरा—पीला, नीला, सिकुड़ा, शिथिल ठंडे पसीने वाला। (आर्से०, वेरेट्र०) बादामी चकत्ते।

गला—नासा-गलकोष-प्रदाह और कण्ठनली प्रदाह, खखारना, सुबह की खाँसी, कभी-कभी कै के साथ। भाषण देने वालों का गला बैठना।

आमाशय—लगातार मिचली, जो तम्बाकू पीने की गन्ध से बढ़े (फॉस०)। जरा-सा हिलने से कै हो, कभी-कभी मल जैसा पदार्थ कै में आये। गर्भावस्था में; अधिक थूकने के साथ। समुद्री मिचली, पेट के तल में गहरी कमजोरी, पेट में

ढीलापन मालूम दे, साथ में मिचली (इपिकाक)। पेट में दर्द; हृदय के किनारे से दर्द बायीं बाँह में जाये।

उदर—ठंडा। उदर उघाड़ा रखना चाहे। इससे मिचली और कै कम हो। दर्द के साथ तनाव। हार्नियाँ, आँतें उतर कर फँस गई हों।

मलाशय—कब्ज, मलाशय पक्षाघातिक; काँच निकले। दस्त एकाएक, पानी-सा साथ में मिचली और कै, शिथिलता और ठंडा पसीना, खट्टे दूध की तरह पाखाना, गाढ़ा, थक्केदार, पानी-सा। मलाशय में ऐंठन।

मूत्राशय—गुर्दा-शूल, मूत्रनलिका के मार्ग में तीव्र दर्द, बायीं तरफ।

दिल—बायीं तरफ लेटने से धड़कन। नाड़ी सविरामिक, दुर्बल अप्रत्यक्ष। हृदय-शूल, हृदय-क्षेत्र के ऊपरी भाग में दर्द। वक्षोस्थि के बीच मे दर्द चारों तरफ फैले। तीव्र धड़कन। अति मन्द धड़कन। धक्का लगने से या बहुत जोर पड़ने से हृदय का अधिक तीव्र फैलाव। (रॉयल)।

साँस-यन्त्र—सीने में कठिन, तीव्र संकुचन। हृदय क्षेत्र के ऊपर दाब, कन्धों के बीच में दर्द और दिल धड़कन के साथ। खाँसी और उसके बाद हिचकी। खाँसी सूखी, कष्टदायक; ठंडे पानी की एक घूँट पीना आवश्यक। (कॉस्टि०, फॉस०) कष्टदायक साँस, बायीं करवट लेटने से बायीं बाँह में नीचे तक चुनचुनाहट के साथ।

अंग—टाँगें और बाँहें बरफ की तरह ठंडी, अंग कम्प, संन्यास रोग के बाद पक्षाघात। (प्लम्बम०)। चाल घसीटती; लड़खड़ाती। बांहों में दुर्बलता।

नींद—अनिद्रा जिसके साथ हृदय विस्तार, ठंडा, लसीला चर्म और व्याकुलता हो।

ज्वर—शीत, ठण्डे पसीने के साथ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: आँखें खोलने पर; शाम के समय, अत्यधिक ठंडक या गरमी। घटना: कपड़ा हटाने से; खुली ताजी हवा से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये: हाइड्रोब्रोमिक एसिड, कैम्फो०; वेरेट्र०, आर्से०।

तुलना कीजिये: निकोटिनम (शक्तिवर्द्धक और शक्तिनाशक प्रभाव बारी-बारी, बाद में शारीरिक ढीलापन और कम्पन, मिचली, ठण्डा पसीना और शीघ्र पतन, सिर पीछे को मुड़ा, पलकों और जबड़ों की पेशियों का सिकुड़ना, गरदन और पीठ की पेशियाँ कड़ी हों। स्वर-यन्त्र और वायु-नलिका की पेशियों के कारण फुफुकार ऐसी साँस।

क्रियानाशक—सिरका; खट्टा सेव, कैम्फर स्थूल क्रियात्मक विषनाशक है। आर्से०। (चबाने वाला तम्बाकू), इग्ने० (धूम्रपान वाला तम्बाकू), सीपिया

(स्नायुशूल और अनपच), लाइको० (नपुंसकता), नक्स, (तम्बाकू के कारण बुरा स्वाद) कैलेडि० और प्लैण्टैगो। (तम्बाकू से घृणा उत्पन्न करती है), फॉस० अधिक तम्बाकू पीने से आया हृदय रोग, काम सम्बन्धी दौर्बल्य)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति और उससे ऊँची।

टैनेसेटम वलगैरी (Tanacteum Vul.)

(टैन्सी)

असाधारण स्नायविक सुस्ती और थकी भावना "अधमरी, अधजिन्दी अवस्था" सारे शरीर में। ताण्डव रोग में और परिवर्तित आक्षेप (कृमि) में लाभदायक। आइवी विष की एक अचूक औषधि।

सिर—भारी, मन्द, गड़गड़ाहट। जरा-से परिश्रम से सिर दर्द करे।

मन—चिड़चिड़ा, आवाज असह्य। मानसिक थकावट, मिचली और चक्कर, बन्द कमरे में बढ़े।

कान—गरज और टनकन, आवाज विचित्र सुनाई दे, कान एकाएक बन्द हो जाये।

उदर—आँतों में दर्द, मलत्याग से कम हो। खाने के बाद ही मलत्याग की इच्छा हो। पेचिश।

स्त्री—पीड़ाजनक मासिक-स्राव जिसके साथ जान जाने जैसी कमजोरी और पुट्ठों में खींचन। मासिक धर्म दब गया हो, देर में हो, अधिक मात्रा में हो।

साँस-यन्त्र—तेज, कष्ट के साथ। आवाज के साथ। झागदार बलगम से वायु-मार्ग बन्द हो।

सम्बन्ध— तुलना कीजिये: सिमिसिफ्यु०, सिना, एब्रसिंथि०। नक्स० बाद में अच्छा काम करती है।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

टैनिक एसिड (Tannic Acid)

(टैनिन-डिजैलिक एसिड)

अधिक श्लैष्मिक झिल्ली स्राव और तन्तु को संकुचित करने और रक्त-स्राव रोकने के लिए बहुधा बाहरी स्थानीय व्यवहार में आती है। दुर्गन्धित पसीने को

गन्धहीन करने के लिए काम में आती है। कठोर स्नायविक खाँसी। खून का पेशाब। कठोर कब्ज। उदर में दर्द, दाब से असह्य, आँतें मोटी-मोटी गोल सिलिंडर की तरह मालूम हों। आधा प्रतिशत सोल्यूशन।

सम्बन्ध—गैलिक ऐसिड; सावधानी से देना चाहिए।

टैरेण्टुला क्युबेन्सिस (Tarentula Cub.)

(क्युबैन स्पाइडर)

एक विषाक्त औषधि, रक्त की दूषित अवस्था। झिल्ली प्रदाह। अति प्रचण्ड प्रदाह और पीड़ा, रोग के आरम्भ ही से और लगातार शिथिलता। कई प्रकार के घातक पतन। बैंगनी रंग और जलन, कोंचन दर्द। बाघी। यह मृत्यु पीड़ा की दवा है, अन्तिम संघर्ष में शान्ति प्रदान करती है। अति खाज, खासकर जननेन्द्रिय पर। पैर अशान्त रहें। सविराम विषैली गनगनी। बाघीयुक्त महामारी। रोग को अच्छा करने वाली और रोग के आक्रमण को रोकने वाली औषधि, संक्रमणकाल में अति लाभदायक।

सिर—गरमी और गरम पसीने के बाद चक्कर आये। चाँद पर धीमी टीस। बायीं आँख से होकर सिर के अगले भाग के पार तक चमकन दर्द।

आमाशयिक—पेट कड़ा, दर्दीला मालूम हो। भूख की कमी सिवाय नाश्ते के।

पीठ – गुर्दों के क्षेत्र के आरपार खुजली।

अंग—हाथ काँपें, रक्त से फूला हुआ।

मूत्राशय—मूत्र रुकना। खाँसने पर मूत्र न रोक सके।

चर्म लाल चकत्ते और दाने। सारा चर्म फूला मालूम पड़े।

कारबंकल, जलन, चुभन दर्द। हल्का बैंगनी रंग। फोड़े, जहाँ दर्द और सूजन प्रधान हो। स्तनों में कठिन अर्बुद। "वृद्धावस्था" के घाव।

नींद - औंघाई, अशान्त कड़ी खाँसी के कारण अनिद्रा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : आर्से०, पायोरोजोन, क्रोटेल, एचिनी०, एन्थ्रा-क्सि०, बेलाडो०, एपिस०।

घटना-बढ़ना—घटना : धूम्रपान से। बढ़ना : रात में।

मात्रा —६ से ३० शक्ति।

टैरेन्टुला हिस्पानिया (Tarentula Hispania)

(स्पैनिश स्पाइडर)

विचित्र स्नायविक अवस्था; गुल्म-वायु, साथ में हरित पाण्डु रोग, तांडव रोग, कष्टदायक मासिक धर्म, मेरुदण्ड की उत्तेजना। मूत्राशय में कूँथन। संकुचन संवेदन। सुरसुरी। अति बेचैनी; लगातार हिलते रहना चाहिए, चाहे टहलने से भी रोग बढ़े। गुल्मवायु युक्त मिरगी रोग। अति प्रचण्ड कामोत्तेजना।

मन—एकाएक भाव बदल जाये। लोमड़ी जैसी मक्कारी। विनाशकारी आवेग। नैतिक शिथिलता। लगातार कोई-न-कोई काम करते रहना चाहे या टहलते रहना चाहे। संगीत असह्य। संग-साथ से घृणा, मगर किसी-न-किसी को अपने पास रखना चाहे। कृतघ्न, असन्तुष्ट, चित्त की तरंगों पर काम करने वाला।

सिर—प्रचण्ड पीड़ा, मानो हजारों सूइयाँ मस्तिष्क में चुभाई जा रही हों। चक्कर आये। बालों में ब्रश करवाना चाहे या सिर में मालिश करवाना चाहे।

पुरुष— कामोत्तेजना; जो पागलपने की हद तक पहुँचे; धातुक्षीणता।

दिल—धड़कन, हृदय के ऊपरी क्षेत्र में कष्ट, मालूम हो कि दिल ऐंठ गया और घुमा दिया गया है।

स्त्री—योनिलिंगिका सूखी और गरम, अधिक खाज। अधिक मासिक-धर्म, अक्सर कामोत्तेजित आक्षेप के साथ। योनिलिंगिका की अति खाज; कामोन्माद। कष्टदायक मासिक धर्म, अति उत्तेजनीय डिम्बाशयों के साथ।

अंग—टाँगों में कमजोरी, ताण्डव चालन। टाँगें सुन्न। कम्प के साथ कई जगहों में कड़ापन। फड़कन और झटके। टाँगों में असुविधा के साथ जम्हाई आना, बराबर हिलते रहना। अस्वाभाविक संकुचन और हरकत।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : हरकत, स्पर्श, आवाज। घटना : खुली हवा में, संगीत, चटक रंग, रोगग्रस्त भाग की मालिश से। बढ़ना : दूसरों को कष्ट में देखकर।

सम्बन्ध—तुलना : एगैरि०, आर्से०; क्युप्रम०; मैग० फॉस०।

क्रियानाशक : लैके०।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

टैरैक्सेकम (Taraxacum)

(डैण्डेलियन)

अमाशयिक सिर दर्द, पित्ताक्रमण, साथ में विशेष प्रकार की नक्शेदार जबान

और पीला चर्म। मूत्राशय का कर्कट रोग। पेट में बादी भरना। मूर्च्छा वायु में अफरा आना।

सिर—चाँद पर अधिक गरमी मालूम देना। उरःसंखास्थि चुचुक-प्रवर्द्धन पेशी को छूने से सन्ताप हो।

मुँह—नकशेदार जिह्वा। जिह्वा पर सफेद पतला मैल, कच्ची मालूम दे; चकत्तों में निकले और छूटने के बाद नीचे लाल, उत्तेजनीय जगह रह जाये। भूख लोप होना। कड़वा स्वाद और डकार। लार बहना।

उदर—जिगर बढ़ा और कड़ा। बायीं तरफ तीव्र चिलकन। आँतों में बुलबुले फटने जैसा संवेदन। पेट तना हुआ। मलत्याग कठिन।

अंग—अति अशान्त। घुटनों का स्नायुशूल, दाब से कम हो। अंगों को छूने से दर्द करे।

ज्वर—खाने के बाद शीत, पीने के बाद अधिक हो; अंगुलियों के सिरे ठण्डे। कड़वा स्वाद। गरमी बिना प्यास, चेहरे में और पैर की अँगुलियों में। सो जाने पर पसीना।

चर्म—अधिक रात पसीना।

घटना-बढ़ना—बढ़नाः आराम से, लेट जाने से, बैठने से। घटनाः छूने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजियेः कोलिन, यह टैरेक्सेकम के जड़ का एक अंश है, कर्कट की चिकित्सा में लाभदायक सिद्ध हुई है। कोलिन और न्युरिन से निकटतम सम्बन्ध है, यह 'कैक्रोमी" है—प्रोफे० एडमकीविवज (ई, शेलेगेल०) का। ब्रायो०; हाइड्रै स्टि०, नक्स०, टेला एरैनिया। (स्नायविक दमा और अनिद्रा)।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

टारटैरिकम एसिडम (Tartaricum Acidum)

(टारटैरिक एसिड)

यह अंगूर, अनन्नास, चूका और दूसरे फलों में पायी जाती है। शीताद नाशक, सड़न निवारक है, श्लेष्मा और लार ग्रन्थियों को शक्ति देती है।

मन्दता और सुस्ती। घोर दौर्बल्य, साथ में दस्त और सूखी बादामी जबान। एँड़ी में दर्द। (फाइटोल०)।

आमाशय—प्यास अधिक, लगातार कै, गले और आमाशय में जलन। अधिक श्लैष्मिक स्राव के साथ अनपच रोग।

उदर—नाभि में चारों तरफ और कमर में दर्द। पिसी हुई कॉफी के रंग का मल (रात में अधिक), साथ में बादामी, सूखा जबान और गहरी हरी कै।

मात्रा—३ विचूर्ण।

———

टैक्सस बैकाटा (Taxus Baccata)

(यू)

चर्म के रसदाने और रात पसीना। गठिया और जीर्ण वात रोग में भी हितकर।

सिर—आँखों से जलस्राव के साथ घेरों के ऊपरी भाग और कनपटी का दर्द जो दाहिनी तरफ अधिक हो। पुतली फैली हुई। चेहरा फूला हुआ और पीला।

आमाशय—लार गरम, तीखी। मिचली। आमाशय के गड्ढे में और नाभि प्रदेश में दर्द। खाने के बाद खाँसी। आमाशय के गड्ढे में आलपीन और सूई गड़ने जैसी चुभन, भारीपन का संवेदन, बार-बार कुछ न कुछ खाना आवश्यक (कोनिफेरी से तुलना कीजिए)।

चर्म—बढ़े, चपटे, खाज वाले दाने। दुर्गन्धित रात-पसीना। पैरों का गठिया। विसर्प रोग।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

———

टेल्यूरियम (Tellurium)

(दी मेटल टेल्यूरियम)

चर्म लक्षण (चक्राकार मैंसिया दाद), मेरुदण्ड, आँख, कान के लक्षण विद्यमान हैं। अति स्पर्शकातर पीठ। सारे शरीर में दर्द। घृणित स्राव। लक्षण धीरे-धीरे बढ़े। (रेडियम)। त्रिकास्थि और जंघस्नायु में पीड़ा।

सिर—असावधान और भूलने वाला। सिर की बायीं तरफ और माथे में बाँयीं आँख के ऊपर दर्द। बाँयीं तरफ के चेहरे की पेशियों में टेढ़ापन और फड़कन; बोलते समय मुँह की बाँयीं तरफ का कोना ऊपर को और बाँयीं तरफ खिंचे। उत्तेजित भाग में स्पर्श का भय। सिर, गरदन की जड़ में रक्ताधिक्य बाद में कमजोरी और आमाशय में गरमी। सिर की खाल में खाज, लाल चकत्ते।

आँखें—पलक मोटे, सूजे हुए और खुजली। अनुपक्ष, मवादी नेत्र-प्रदाह। नेत्र रोग के बाद मोतियाबिंद, उपतारा और काले पर्दे में स्राव संचयता को शरीर ही में पचाने में सहायक होती है।

कान—कानों के पीछे अकौता। बिचले कान से स्राव आये, स्राव तीखा, मछली के अचार की तरह गंध करे। कान के छिद में खुजली, फूलन और थरथराहट। बहरापन।

नाक—जुकाम, आँख से पानी बहना और भारी आवाज, खुली हवा में कम रहे। (ऐलियम सिपा)। नाक रुकी हुई; पिछले भाग से नमकीन बलगम खखारा करे।

आमाशय—सेब खाने की इच्छा। खाली और दुर्बल संवेदन। गला जलना।

मलाशय—हर मलत्याग के बाद गुदा में शरीर सन्धि स्थान के पास अति खाज।

पीठ—त्रिकास्थि में दर्द। अन्तिम मोहरे से पाँचवी पृष्ठास्थि तक दर्द; अति उत्तेजनीय, छूने से अधिक हो। (चिनि० सल्फ्यु० फॉस्फो०)। गृध्रसी, दाहिनी तरफ अधिक, खाँसने से, जोर पड़ने से और रात में, साथ में मेरुदण्ड स्पर्शकातर। घुटनों के मोड़ों में बँधनी-पेशियों की सिकुड़न।

चर्म—हाथ और पैरों का खुजलाना। विषर्पीय चकत्ते, दाद (ट्युबरक्युलिनम) गोल घेरेदार फरन जिनमें से घृणित गंध निकले। बालों की जड़ों का प्रदाह। चर्म में चुभन। घृणित दुर्गन्ध। (सल्फर) घृणित पैर-पसीना। अकौता, कानों के पीछे और सिर के पिछले भाग में। अकौता के गोल चकत्ते।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में आराम करते समय, ठण्डे मौसम में, रगड़ से, खाँसने से, हँसने से, दर्दीली करवट लेटने से, छूने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रेडियम; सेलेनियम; टेट्राडाइमाइट—जिआर्जिया और नॉर्थ कैरोलिना से प्राप्त किया हुआ रवादार पदार्थ जिसमें बिस्मथ, टेल्यूरियम और सल्फर रहता है—(गुदास्थि का दर्द, नाखून के घाव, हाथों में छोटी जगहों में, टखनों, एड़ी में और टाँगों के पिछले भाग की बड़ी नस में दर्द); सीपिया, आर्से०, रस टॉ०।

मात्रा—६ शक्ति और उससे ऊँची। असर देर में आता है और बहुत दिनों तक जारी रहता है।

टेरेबिन्थिना (Terebinthina)

(टरपेनटाइन)

श्लेष्मिक सतह से खून बहने में विशेष प्रभाव रखती है। पेट का वायु से फूलन और मूत्र सम्बन्धी लक्षण स्पष्ट है। गुर्दों की सूजन; साथ में रक्तस्राव—काला,

मन्द, घृणित। पहले शोथ, फिर एलब्यूमेन मूत्र रोग विशेष। (गूलान)। औंघाई और पेशाब का रुकना। तन्द्रा। बिना फटी बेवाई।

सिर—धीमा दर्द जैसे सिर के चारों तरफ फीता कसा हो। (कार्बो० एसिड)। चक्कर एकाएक दृष्टिहीनता के साथ। सन्तुलन शक्ति की गड़बड़ी, थकावट और चित्त जमाना कठिन। जुकाम, नथुनों की छरछराहट और रक्तस्राव की प्रवृत्ति के साथ।

आँखें—दाहिनी आँख के ऊपर स्नायुशूल। आँख और सिर की बगल में तीव्र पीड़ा। मद्यपानजनित कष्टदायक दृष्टि।

कान—अपनी ही आवाज विचित्र मालूम पड़े, समुद्री घोंघे की तरह भुनभुनाहट, जोर से बोलने में कष्ट हो। कर्णशूल।

मुँह—जबान सूखी, लाल, दर्द वाली, चमकीली, सिर में जलन, साथ में उभरे भाग दर्शनीय। (आर्जे०। नाइट्रि; बेला०; कैलिबाइक्रो०, नक्स मॉ०)। साँस ठडी, घृणित। गले में घुटन संवेदन। मुख प्रदाह। दाँत निकलना।

आमाशय—मिचली और कै, उदरोर्द्ध प्रदेश में गरमी।

उदर—प्रचण्ड तनाव। दस्त, मल पानी-सा; हरियालीदार; घृणित खूनी, वायु-स्खलन के पहले दर्द और मलत्यागने के बाद कष्ट में कमी। आँत से रक्त स्राव, केंचुवे। उदर शोथ, पेड़ू के अन्त्रावरक झिल्ली का प्रदाह। हर बार मल त्यागने के बाद गशी। आन्त्रिक शूल, साथ में आँतों से रक्त-प्रदाह और घाव।

मूत्राशय—पेशाव रुक जाना, खूनी पेशाब के साथ। कम मात्रा में, दबा हुआ कासनी के फूलों की महँक; मूत्र नलिका प्रदाह, पीड़ाजनक लिंगोत्थान के साथ (कैन्थेरि०)। किसी तीव्र रोग के बाद गुर्दों में सूजन। लगातार ऐंठन।

स्त्री—गर्भाशय क्षेत्र में प्रचण्ड जलन। जरायु प्रदाह, प्रसवकालीन अन्त्रावरण झिल्ली प्रदाह। गर्भाशय में जलन के साथ अति रक्त-स्राव।

साँस-यन्त्र—कठिन साँस, फुफ्फुस फैले, तने हुए मालूम हों, खून थूकना। खूनी बलगम।

दिल—नाड़ी तेज, छोटी; धागे जैसी, सविराम।

पीठ—गुर्दा प्रदेश में जलन के साथ दर्द। दाहिने गुर्दे में खींचन जो नितम्ब तक पहुँचे।

चर्म—मुँहासे। अयनिका, खाज वाले रस दाने, फफोलेदार, विस्फोट, जुलपित्ती धूम्र रोग, काले दाग, शोथ,। अरुण ज्वर। बेवाइ; साथ में तीव्र खाज और टपक पेशियों में टीस दर्द।

ज्वर—गरमी साथ में घोर प्यास, सूखी जबान अधिक ठंडा लसीला, पसीना। अफरा के साथ आन्त्र ज्वर, रक्त-प्रवाह, गशी-निद्रा, प्रलापक सन्निपात, शिथिलता।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: एलुमेन, सिकेलि०, कैन्थे०, नाइट्रि० एसिड। टैरेबीन १x (जीर्ण वायुनलिका प्रदाह और जाड़े के मौसम की खाँसी, साँस-मार्ग की निम्न तीव्र प्रदाहिक अवस्थायें। बलगम को ढीला करती है, कसाव को कम करती है और बलगम सरलतापूर्वक निकलने लगता है)। स्नायविक खाँसी। जनसमूह में भाषण देने वालों और गाने वालों की आवाज में भारीपन। मूत्राशय प्रदाह जब मूत्र क्षारीय हो और घृणित गन्ध हो।

ओनोनिस स्पाइनोसा—रेस्ट हैरो—(पेशाब बढ़ाने वाली। पथरी को निकालने वाली। जीर्ण गुर्दा प्रदाह, जुनिपर की तरह मूत्र-वृद्धि का प्रभाव; पथरी, जो नकसीर सिर धोने से अधिक हो)।

क्रियानाशक—फासफा०।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

ट्युक्रियम मैरम (Teucrium Marum)

(कैट-थाइम)

नाक के, मलाशय के लक्षण पथप्रदर्शक हैं। नासार्बुद। बच्चों के रोग। अधिक औषधियों के प्रयोग के बाद उपकारी। अधिक उत्तेजना। अँगड़ाई लेने की इच्छा। क्षीणता रोग के साथ जीर्ण नासिका स्राव की एक अति विख्यात औषधि, बड़ी घृणित खुरण्डें और गुठलियाँ, पीनस रोग। गन्ध लेने की अक्षमता।

सिर—उत्तेजित; कम्पित भाव। अग्रभाग की पीड़ा, झुकने से अधिक हो। मदात्यय के बाद मस्तिष्क को शक्ति देती है।

आँखें—किनारों में गड़न, छरछराहट, पलक लाल फूली; चक्षुपटीय कम्प। (स्टैफि०)।

कान—सिसकारी और घण्टी बजने की आवाज सुने।

नाक—नथनों के अगले और पिछले भागों का नजला। श्लैष्मिक अर्बुद। जीर्ण नजला; बड़े टेढ़े-मेढ़े ढोके निकलें। घृणित साँस। नथुनों में रेंगन, आँखों से पानी बहने और छींक आने के साथ। जुकाम, नाक बन्द होने के साथ।

आमाशय—अधिक मात्रा में गहरा हरा पदार्थ कै करना। लगातार हिचकी, पीठ में दर्द के साथ। अप्राकृतिक भूख। खाने के बाद हिचकी, स्तनपान कराने के बाद।

साँस-यन्त्र—सूखी खाँसी, गलकोष में गुदगुदी, गले में गन्दा स्वाद जब श्लेष्मा खखारे। अधिक बलगम।

अंग—अंगुलियों के सिरों के और पैर की अंगुलियों के जोड़ों के रोग। बाहों और टाँगों में फटन दर्द। पैर की अंगुलियों के नाखूनों में दर्द मानो वे मांस में गड़ गये हों।

मलाशय—गुदा में खाज और शाम को बिस्तर में लगातार उत्तेजना। केचआ रोग, हर रात में बेचैनी के साथ, मल त्यागने के बाद मलाशय में रेंगन।

नींद—फड़कन, दम घुटे, भय से घबरा कर जाग उठे, बेचैनी।

चर्म—खुजली से सारी रात करवटें बदला करे। बहुत सूखा चर्म, नाखूनों में पीब वाली दरारें।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: ट्युक्रियम स्कोरोडोनिया—ऊ-इसैज, (तपेदिक में मवादी श्लैष्मिक बलगम के साथ, शोथ, अण्ड प्रदाह और शुक्र रज्जु क्षय; खासकर फुफ्फुस और ग्रन्थियों के क्षयरोग के साथ जो युवा, दुबले-पतले व्यक्तियों में हो। हड्डियाँ और मूत्र जननेन्द्रिय भी रोगग्रस्त, ३x)। सिना; इग्नेशि०; सैंग्वि०, साइलीशिया।

मात्रा—१ से ६ शक्ति। बाहरी, स्थानीय प्रयोग, अर्बुद पर बुकनी के रूप में छिड़कने के लिए।

— :o: —

थैलियम (Thallium)

(दी मेटल थैलियम)

थैलियम का प्रभाव अन्तःस्त्राविक ग्रन्थियों पर मालूम देता है, खासकर गल-ग्रन्थि और सामने के पास वाली ग्रन्थि पर। अति प्रचण्ड स्नायुशूल, आक्षेपिक चुभन दर्द। पैशिक क्षीणता। कम्प। गति शक्ति राहित्य की घोर पीड़ा को अच्छा करती है। निचले अंगों का पक्षाघात। पेट और आँतों में बिजली के धक्कों जैसा दर्द, टाँगों और नीचे के अंगों का पक्षाघात। तीव्र; और दौर्बल्य वाले रोगों के बाद बाल झड़ना। रात पसीना। अनेक स्थानों का स्नायु-प्रदाह। चर्म पोषण बाधायें।

अंग—कम्प। जैसे लकवा मार गया हो। कोंचन दर्द, बिजली के धक्कों की तरह। बहुत थकावट। जीर्ण अस्थि-मज्जा-प्रदाह। हाथ और पैर की अँगुलियों का सुन्न हो जाना जो निचले अंगों में फैले और निचला उदर तथा विटप प्रदेश में रोग बढ़े। निचले अंगों का पक्षाघात। अंगों का नीला पड़ना। सुरसुरी, अँगुलियों में शुरू हो और पेड़ू में से होकर विटप क्षेत्र तक और भीतरी जाँघ से पैरों तक बढ़े।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लैथाइर०; कॉस्टि०; आर्जेण्ट०, नाइट्रि०, प्लम्बम० ।

मात्रा—निचले विचूर्ण से ३० शक्ति ।

थैस्पियम ग्रोरियम-जिजिया (Thaspium Aureum-zizia)

(मीडो पार्सनिप)

गुल्म वायु, मिर्गी, ताण्डव रोग, व्याधि-शंका, सभी इसके प्रभाव-क्षेत्र में आते हैं ।

मन—आत्महत्या के विचार, उदास । बारी-बारी हँसे-रोये ।

सिर—चाँद पर और दाहिनी कनपटी में दाब, जो पीठ दर्द से सम्बन्धित हो ।

पुरुष—मैथुन के बाद बहुत सुस्ती । मैथुन-शक्ति का बढ़ जाना ।

स्त्री—बायें डिम्बाशय का सविराम स्नायुशूल । अधिक मात्रा में तीखा प्रदर ; मासिक धर्म विलम्ब के साथ हो ।

साँस-यन्त्र—सीने में चिलकन के साथ सूखी खाँसी । कष्टदायक साँस ।

अंग—साधारण थकावट । ताण्डव रोग, खासकर नींद में टाँगें चञ्चल रहें ; (टैरेण्टुला०) । बाहों में लँगड़ापन और आक्षेपिक फड़कन ।

घटना-बढ़ना - बढ़ना : सोने से ।

तुलना कीजिए : एगैरि०, स्ट्रैमो०, टैरेंटु०; साइक्यूटा०; इथूजा० ।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति तक ।

थिया (Thea)

(टी)

स्नायविक अनिद्रा, हृदय बाधायें, धड़कन और पुराने चाय पीने वालों की मंदाग्नि । बहुत तरह के पुराने सिर दर्द उत्पन्न करती है । टैबेकम के उपद्रवों का शमन करती है । (एलेन) ।

सिर—अल्पकालीन मानसिक उल्लास । बदमिजाजी । एक स्थान से फैलने वाला रोग, पुराना सिर दर्द । अनिद्रा और अशान्त । श्रवण भ्रम । सिर के पिछले भाग पर ठंडक, तर संवेदन ।

आमाशय—उदरोर्द्ध प्रदेश में दुर्बलता का संवेदन । गशी, कर्महीन संवेदन । (सीपिया; हाइड्र०; ओलिएण्डर) अम्ल की इच्छा । एकाएक अधिक वायु पैदा हो जाना ।

उदर—अफरा की आवाजें। आँत उतरने की सम्भावना।

स्त्री—डिम्बाशयों में दर्द और कोमलपन।

दिल—आकुल दाब। हृदय के ऊपरी क्षेत्र में कष्ट। धड़कन; बायीं करवट न लेट सके। फड़फड़ाहट। नाड़ी तेज, क्रमभ्रष्ट, सविराम।

नींद—दिन में निद्रालुता, रात में अनिद्रा साथ में रक्तवाही नाड़ी मण्डल की उत्तेजना और अशान्ति तथा सूखा चर्म। भयानक स्वप्न से डर न लगे।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में खुली हवा में टहलने से, खाने के बाद।

घटना : निम्न ताप से, कुनकुने पानी से स्नान करने के बाद।

सम्बन्ध—क्रियानाशक : कैलि हाइपोफास०; थुजा०; फेरम, कैलि हाइड्रि०।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

थेरिडियन (Theridion)

(ऑरेन्ज-स्पाइडर)

स्नायविक उत्तेजना। क्षय बाधाओं के लिए आकर्षण रखती है। चक्कर, पुराना सिर दर्द, हृदय क्षेत्र के चारों तरफ विचित्र पीड़ा, सरपट आने वाला क्षयरोग, कण्ठमाला बाधाएँ सभी की इस औषधि से लाभ के साथ चिकित्सा की गई है। आवाज असह्य, वह शरीर को बेधती है, खासकर दाँतों को। आवाजें शरीर की दर्द वाली जगहों पर आघात करती हैं। अस्थि क्षय रोग, अस्थि सड़न, अस्थि में रक्तहीनता और क्षीणता। क्षय रोग, बायीं तरफ के फुफ्फुस के शिखर में चिलकन। (ऐन्थ्रैक्स) जहाँ स्पष्ट लक्षणों वाली औषधि का लाभ टिकाऊ सिद्ध न हो।

मन—अशान्त, किसी चीज से प्रसन्न न हो। समय तेजी से बीते।

सिर—किसी व्यक्ति के फर्श पर चलने से पीड़ा अधिक हो। चक्कर, साथ में जरा-सा हिलने से कै और मिचली, खासकर आँखें बन्द करने से।

आँखें—आँखों के सामने चमकती, काँपती चीजें दिखाई दें, प्रकाश असह्य। ढेलों के पीछे दाब। बायीं आँख के ऊपर थरथराहट।

नाक—हल्का, पीला, गाढ़ा, घृणित स्राव; पीनस। (पल्से०; थूजा०)।

आमाशय—समुद्री मिचली। आँखें बन्द करने पर हिलने से मिचली और कै। (टैबेक०) तिल्ली के अगले भाग के ऊपर बाईं तरफ चुभन दर्द। जिगर प्रदेश में जलन।

साँस-यन्त्र—बायीं तरफ सीने के ऊपरी भाग में दर्द। (मार्टस०; पिक्स०; एनिसि०, बायीं तैरती पसली, (फ्लोटिंग रिब) की जगह पर दर्द। हृदय व्याकुलता और दर्द। बाईं तरफ के सीने की पेशियों में चुटकी काटने जैसा।

पीठ—कशेरुकाओं के बीच में उत्तेजना, रीढ़ पर दाब असह्य, चुभन दर्द।

चर्म—सभी जगह चुभन। जाँघों का चर्म उत्तेजित। खुजली।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : स्पर्श, दाब; जहाज पर, घोड़ा-गाड़ी में सवारी से, आँखें बन्द करने से झटके, आवाज, मैथुन, बाईं तरफ।

मात्रा—३० शक्ति।

थियोसिनैमिनम-रोडैलिन (Thiosinaminum-Rhodallin)

(ए केमिकल डीराइव्ड फ्रॉम ऑयल ऑफ मस्टर्ड सीड)

एक घुलाने वाली औषधि, भीतरी और बाहरी, पुराने घाव के निशान के तन्तुओं को, अर्बुद, बढ़ी हुई ग्रन्थि, नाक के घाव, नली की रुकावट, चुभन, कड़े तन्तुओं को पचाने के लिये। आँख का बाहर निकलना, कनीनिका का धुँधलापन, मोतियाबिंद, सन्धि का कड़ापन, सौत्रिक अर्बुद, चर्म का जीर्ण कड़ापन। कानों में आवाजें। डॉ० ए० एस० हार्ड सुझाव देते हैं कि इस औषधि से बुढ़ापा देर में आता है। कशेरुका मज्जा के क्षय रोग की औषधि है, बिजली की तरह आने वाले दर्द को ठीक करती है। आमाशय, मूत्राशय को और मलांत्र के रोग की चरम सीमा। मलांत्र में संकोचन, २ ग्रेन दिन में दो बार।

कान—धमनी काठिन्य सम्बन्धी चक्कर। टनटनाहट सुनाई देना। पपड़ी के मोटे पड़ने के साथ जुकामी बहरापन। मंद, मवादी कर्णप्रदाह (मध्य भागिक, सौत्रिक बन्धनियों का पैदा होना जिससे लघु अस्थि की चालन क्रिया में रुकावट हो। पर्दे का मोटा हो जाना। स्नायु के सौत्रिक परिवर्तन के कारण आया बहरापन)।

मात्रा—१x शक्ति।

थ्लैस्पि बर्सा पैस्टोरिस–कैप्सेला
(Thlaspi Bursa Pastoris–Capsella)

(शेफर्डस्' पर्स)

एक रक्तस्राव नाशक और यूरिक एसिड नाशक औषधि है। गर्भावस्था में ओओमेह (अल्ब्यूमेन आना)। जीर्ण स्नायुशूल। गुर्दे और मूत्राशय की उत्तेजना। पीठ में टीस या शरीर भर में सन्तापपूर्ण दर्द के साथ गर्भाशय के सौत्रिक अर्बुद से रक्तस्राव। कन्धों की त्रिकास्थि के बीच में टीस; ऐंठन और थक्कों के निकलने के साथ गर्भाशय से रक्तस्राव। मक्खन निकाला दूध चाहे। गर्भाशय के रोग के दब जाने का दुष्परिणाम (बरनेट०)।

सिर—आँखें और चेहरा फूला हुआ। अक्सर नकसीर आये। चक्कर, उठने पर बढ़े। अग्रभाग में पीड़ा, शाम के लगभग अधिक हो। कानों के पीछे पपड़ीदार दाने। जबान सफेद, मैलदार। मुँह और होंठ चिटके हुए। दाहिनी आँख के ऊपर तेज दर्द जो आँख के ऊपर की तरफ खींचे।

नाक—नाक में चीरा लगवाने से रक्तस्राव। खासकर मन्द रक्तस्राव।

पुरुष—टहलने या घोड़े की सवारी के धक्के से शुक्र-रज्जु में उत्तेजना।

स्त्री—गर्भाशय से अति रक्तस्राव, बड़ी-बड़ी अधिक मात्रा में मासिक धर्म। घोर गर्भाशय शूल के साथ रक्तस्राव एक के बाद दूसरा काल अति कष्टकर। मासिक-धर्म के पहले और बाद में प्रदर-स्राव, खूनी, गहरे रङ्ग का, घृणित ऐसा धब्बा पड़ जाये जो न छूटे। उठने पर गर्भाशय में चोटीला दर्द। एक मासिक कष्ट के अच्छा होते ही दूसरे मासिक का कष्ट शुरू हो जाये।

मूत्र—अक्सर बार-बार मूत्र, भारी, फॉस्फेट जाये। जीर्ण मूत्राशय प्रदाह। मूत्रकृच्छ्र और आक्षेपिक स्राव। खून का पेशाब। पथरी गुर्दों का शूल। ईंट की बुकनी जैसी तलछट। मूत्र मार्ग का प्रदाह; मूत्र छोटी धारों में फलका करे। अक्सर पेशाब निकालने की नली (कैथेटर) का काम करती है।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : अर्टिका०, क्रोक०, ट्रिलि० मिलिफो०।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

थूजा ऑक्सिडेंटैलिस (**Thuja Occid**)

(आर्बर विटे)

यह औषधि चर्म, रक्त, आमाशय आंत्रपथ, गुर्दों और मस्तिष्क पर काम करती है। इसका मांसांकुर की उपज पर, मांसार्बुद पर, छिद्रमय (स्पंज की तरह) अर्बुद पर विशेष प्रभाव पड़ता है। तर श्लैष्मिक अर्बुद। रक्तस्राव वाले छत्तेदार स्फोट। तिल। शिराओं में रक्ताधिक्य।

थूजा का मुख्य प्रभाव चर्म और जननेन्द्रिय पर पड़ता है, जिसके फलस्वरूप ऐसी अवस्थाएँ उपस्थित होती हैं जो हैनिमैन के सुजाक (साइकोसिस) दोष के समान होती हैं, जिनका मुख्य लक्षण चर्म और श्लैष्मिक सतहों पर मांस स्फोट उभरना होता है जैसे अजीर ऐसे मस्से और चर्मांकुर। इस औषधि में खास तरह से जीवाणुनाशक गुण हैं; जैसे सुजाक और चेचक के टीका में। सुजाक का दब जाना, डिम्ब-प्रणाली का प्रदाह। चेचक के टीका लगवाने के बुरे असर। पीड़ा—जैसे पेशियों में और जोड़ों में फटन दर्द जो रात में अधिक हो, सूखे मौसम में कम रहे, तर, भीगे मौसम में बढ़े, लँगड़ापन। उद्जन प्रकृति, जिसका रक्त रोगपूर्ण-जल

सञ्चित करता है, अतः तर हवा और पानी रोग को अधिक उत्तेजित कर देता है। चाँद के प्रकाश से रोग उत्पन्न होना। तीव्र शिथिलता और दुबलापन। बायीं तरफ असर करने वाली और शीतयुक्त औषधि। चेचक, दाने निकलने को रोक देती है और मवाद पड़ने वाला ज्वर नहीं हो पाता। चेचक के टीका की बाधायें; जैसे चर्म रोग, स्नायुशूल इत्यादि।

मन—स्थिर भावना जैसे एक अजनबी व्यक्ति उसके बगल में उपस्थित है। जैसे उसकी आत्मा शरीर से पृथक् हो गई है, मानो उदर में कोई जीवित वस्तु उपस्थित है। (क्रोक०)। भावात्मक उत्तेजना, संगीत से रुदन और कम्प शुरू हो।

सिर—कील घँसने जैसा दर्द। (कॉफि०, इग्ने०)। चाय पीने से स्नायुशूल। (सेलीन०)। बायीं तरफ का सिर दर्द। सफेद, भूसीदार गंज, बाल सूखे और झड़े। चेहरा चिकना; तेल पुता जैसा।

आँखें—पलकों का स्नायुशूल, उपतारा प्रदाह। रात में पलक चिपक जायें, सूजें; पपड़ीदार। बिलनी और उभरे भाग पर अर्बुद। (स्टैफि०)। श्वेत पटल का तीव्र और निम्न प्रदाह। श्वेत पटल पर चकत्तेदार उभरन, नीला लाल रंग का दिखाई दे। बड़े, चपटे, छाले मन्द। श्वेत पटल की ऊपरी सतह का प्रदाह जो बार-बार हुआ करे। जीर्ण श्वेत पटल प्रदाह।

कान—जीर्ण कर्ण-प्रदाह, मवादी स्राव। निगलने पर चुरचुराहट। अर्बुद।

नाक—जीर्ण नजला गाढ़ा, हरा श्लेष्मा, खून और मवाद नाक साफ करने पर दाँतों में दर्द हो। नथनों के भीतर स्राव। नाक में गड्ढे सूखे। जड़ पर दर्द के साथ दाब।

मुँह—जबान का सिरा बहुत दर्दीला। जड़ के पास किनारों पर, सफेद छाले, दर्द के साथ छरछराहट। मसूढ़ों के पास दाँतों का सड़ना, असहिष्णुता, मसूढ़े पीछे हटें। जो चीज पी जाये वह आवाज के साथ पेट में उतरे। जबान पर अर्बुद, जबान और मुँह की शिरायें मोटी और सिकुड़ी हुई। दन्त-गुहा का बढ़ता हुआ अस्थि-क्षत।

आमाशय—भूख का पूर्ण अभाव। ताजे मांस और आलू से घृणा। चर्बीले भोजन से तीखी डकार। उदरोर्द्ध प्रदेश में कटन दर्द। प्याज न खा सके। वादी भरना, खाने के बाद दर्द, खाने के पहले उदरोर्द्ध में दुर्बलता का संवेदन; प्यास। चाय पीने से आया अनपच।

उदर—तना हुआ, कड़ा। जीर्ण दस्त, नाश्ते के बाद अधिक हो। मल तेजी से निकले, गड़गड़ाहट की आवाज। बादामी धब्बे। बादी भरना और तन जाना,

जगह-जगह पर उभरना। गड़गड़ाहट और शूल। घोर मलाशय दर्द के साथ कब्ज, जिससे मल भीतर को सरक जाये। (साइलि०, सैनिक्यू०) बवासीर फूली हुई, बैठने से अधिक कष्ट हो, साथ में गुदा में चिलकन, जलन के साथ दर्द। गुदा में दरारें छूने से दर्द करें, मस्से भी निकले हों। किसी जीवित पदार्थ के चलने की संवेदन (क्रोकस०)। बिना पीड़ा।

मूत्राशय—मूत्रमार्ग फूला, सूजा हुआ, पेशाब की धार फटी हो और पतली हो। पेशाब करने के बाद गुदगुदी। पेशाब करने के बाद कटन। (सार्सा०)। अकसर पेशाब करना पड़े, पीड़ा के साथ। एकाएक इच्छा मगर रुक न सके। मूत्र-ग्रन्थि का पक्षाघात।

पुरुष—लिंग और लिंगमुण्ड की सूजन; लिंग में दर्द। लिंगाग्र चर्म का प्रदाह। सुजाकजनित वात रोग। सुजाक। अण्ड का जीर्ण कड़ापन। घड़ी-घड़ी मूत्र-स्खलन, इच्छा के साथ मूत्राशय की गरदन की जड़ में दर्द और जलन। मूत्राशय ग्रन्थियों का बढ़ना। (फेर० पिके०; थियोसिनैमिनम; आयोडि०, सेबाल०)।

स्त्री—योनि अधिक उत्तेजित। (बर्बे०, क्रियोजो०, लाइसिन)। योनिघुण्डी और विटप क्षेत्र पर मांसांकुर। अधिक प्रदर, गाढ़ा, हरा। बायें डिम्बाशय और पुट्ठे में तेज दर्द। मासिक धर्म देर में और कम मात्रा में। अर्बुद, मांस वृद्धियाँ। डिम्बाशय प्रदाह, बायीं तरफ अधिक, हर मासिक काल में बढ़े। (लैके०) मासिक धर्म के पहले अधिक पसीना बहे।

साँस-यन्त्र—सूखी, कष्टकर खाँसी, तीसरे पहर, पेट के गढ़े में दर्द के साथ। सीने में चिलकन, ठण्डी चीज पीने से बढ़े। बच्चों का दमा (नैट्र० सल्फ्यु०)। स्वर-यन्त्र की फुन्सीदार फरन। जीर्ण स्वरयन्त्र प्रदाह।

अंग—टहलते समय ऐसा जान पड़े कि अंग लकड़ी या शीशे के बने हैं और आसानी से टूट जायेंगे। अँगुलियों से सिरे फूले हुए, लाल, सुन्न। पैशिक फड़कन, कमजोरी और कम्प। जोड़ों का चुरचुराना। एड़ी और घोड़ानस में दर्द। नाखून खस्ता। पैर की अँगुलियों के नाखून भीतर की तरफ गड़कर बढ़ें।

चर्म—अर्बुद, बहुपक्ष, अन्तस्त्वक मांसांकुर, तिल, कारबंकल, घाव, खासकर मलद्वार-जननेन्द्रिय क्षेत्र पर। चकत्ते और धब्बे। पसीना मीठा और बदबूदार। सूखा चर्म, बादामी चकत्ते के साथ। कमरबन्द की तरह दाद, भैंसिया दाद। ग्रन्थियों में फटन दर्द। ग्रन्थियों का बढ़ना। नाखून झड़े हुए, खस्ता और मुलायम। केवल ढँके भागों पर दाने निकलें, खुजलाने पर कष्ट बढ़ना। स्पर्श से अति उत्तेजनीयता। एक ही तरफ का ठंडापन। मांसार्बुद, बहुपक्ष। हाथों और बाँहों पर कत्थई चकत्ते।

नींद—कठिन अनिद्रा।

ज्वर—शीत; जाघों से शुरू हो। केवल बिना ढँके भागों पर पसीना हो, या सिर के सिवाय सारे शरीर पर सोते में, अधिक खट्टा, शहद की गन्ध। शाम को खून में उबाल आए, रक्तवाहिनियों में थरथराहट।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में, बिस्तर की गरमी से, ३ बजे सुबह और ३ बजे तीसरे पहर, ठंडी तर हवा से, नाश्ते के बाद, चर्बी से; कॉफी से, चेचक का टीका लगवाने के बाद। घटना : बायीं तरफ, अंग को ऊपर सिकोड़ने में।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : (उद्जनक प्रकृति : कैल्के०, साइलिशिया; नेट्र० सल्फ्यु; ऐरानिया, एपिस०; पल्से०)। क्युप्रेमस आस्ट्रेलिस (तेज गड़न दर्द, गर्म संवेदन, वात रोग और सुजाक), क्युप्रेमस लासोनियाना (थूजा की तरह, पेट में प्रचण्ड पीड़ा), स्फिगुरस (दाढ़ी के बाल झड़ना, जबड़े के जोड़ में और गण्डास्थि युगल में दर्द), साइलिशिया, मेलाण्ड्रिनम (चेचक का टीका), मेडोरि० (दबा हुआ सुजाक), मर्क०, सिनाबेरि०, टेरेबिंथि०, जुनिपेरस, सैबाइना, साइलीशिया, कैन्थे०, कैनाबिस०, नाइट्रि० एसिड, पल्से०, ऐण्टि० टार्ट०, ऐबोंरिन थूजा की अमदसारीय औषधि है।

क्रियानाशक—मर्क०, कैम्फो०, सैबीना (मस्से)।

पूरक : सैबाइना, आर्से, नैट्र० सल्फ, साइलीशिया।

मात्रा - ऊपर से लगाने के लिए मस्से और दूसरी मांसवृद्धि पर टिंचर या मलहम। खाने के लिए अरिष्ट से ३० शक्ति।

थाइमॉल (Thymol)

(थाइम कैम्फर)

यह औषधि जनन तथा मूत्र-यन्त्र सम्बन्धी रोगों पर विस्तृत प्रभाव रखती है। यह रोग-सम्बन्धी धातु क्षीणता, अनैच्छिक लिंगोत्तेजना और मूत्राशय ग्रन्थि-स्राव में सांकेतित होती है। इसके सिद्धीकरण में यह ज्ञात हुआ है कि इसका कार्य-क्षेत्र जननेन्द्रिय रोगों तक सीमित है, जहाँ यह खास तरह का कामोन्माद उत्पन्न करती है। यह अंकुसी की तरह के केंचुओं के रोग की मुख्य औषधि है। (चिनापोडियम०)।

मानसिक—चिड़चिड़ापन, मनमानी करना, सब काम अपने ही तरीके से होने के लिए बाध्य करे। संगीत की प्रबल इच्छा। कामों में तेजी गायब हो जाये।

पीठ—थकावट, टीस सारे कटि प्रदेश में। मानसिक और शारीरिक परिश्रम से रोग बढ़े।

पुरुष—अधिक, प्रति रात धातु-स्खलन, साथ में सुस्ती, काम विषय के स्वप्न। अनैच्छिक लिंगोत्थान। मूत्र-स्खलन में जलन, बूँद-बूँद टपकना, अनेक बार पेशाब करना। मूत्राम्ल की अधिकता। फॉस्फेट का बढ़ना।

नींद—सोकर जागने पर थकान, मन हल्का न हो। कामातुर और विचित्र कल्पनाओं से स्वप्न देखना।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: कार्बन टेट्राक्लोराइड से केचुओं में जैसा डॉ० लैम्बर्ट ने जो सूवा, फिजी के रहने वाले हैं, ५००० रोगियों की चिकित्सा में लाभ के साथ प्रयोग किया है।

"१. कार्बन टेट्राक्लोराइड एक साधारण और आंत्र कृमिनाशक, शक्तिशाली औषधि है। उन्होंने एक ऐसे देश में, जहाँ कृमि रोग बहुधा व्यापक रहता है; अंकुश कृमि की चिकित्सा में अति उत्तम औषधि सिद्ध किया है।

"२. इससे रोगी को कोई कष्ट नहीं होता, खाने में स्वादिष्ट है, रोगी को पहले से कोई तैयारी नहीं करनी होती, और शुद्ध अवस्था में कोई विषैलापन नहीं होता। ये सभी अवस्थाएँ जनसाधारण की चिकित्सा में लाभदायक हैं।

"३. डब्लू जी०, स्मिली और एस. बी. पेसोवा जो साओ पाउलो, ब्रैजिल के निवासी हैं, उन्होंने भी कार्बन टेट्राक्लोराइड अंकुश केंचुओं का नाश करने के लिए अति लाभदायक पाया है। केवल एक ही मात्रा ३ सी० सी० की बड़े लोगों में ९५ प्र० श० अंकुश कृमि को निकाल देती है।"

घटना-बढ़ना—बढ़ना: मानसिक और शारीरिक परिश्रम से।

मात्रा—६ शक्ति।

थाइमस सर्पीलम (Thymus Serpyllum)

(वाइल्ड थाइम)

बच्चों के साँस-यन्त्र में संक्रमण बाधायें, सूखा स्नायविक दमा, कुकुरखाँसी, प्रबल आक्षेप; मगर बलगम थोड़ा।

सिर में दाब के साथ कानों में टनटनाहट। गलकोष में जलन, गलक्षत जो खाली निगलने से बढ़े, रक्तनलिकायें तनी हुईं; गहरे रंग की।

मात्रा—अरिष्ट।

थाइरॉयडिनम (Thyroidinum)

(ड्रायड थाइरॉयड ग्लैण्ड ऑफ दी शीप)

थाइरॉयड निम्नलिखित अवस्थायें उत्पन्न करता है। रक्तहीनता, दुबलापन, पैशिक दौर्बल्य, पसीना बहना, सिर दर्द, चेहरे और अंगों का स्नायविक कम्प, चुनचुनाहट, पक्षाघात। हृदय गति बढ़ जाती है, आँख की पुतलियों का फैलना और बाहर निकल पड़ना। श्लैष्मिक शोथ और गलगण्ड के साथ जड़बुद्धि में इसका प्रभाव विशिष्ट पड़ता है। वातजनित जोड़ों का प्रदाह और गुल्म। शिशु क्षीणता। अस्थि क्षय। हड्डियों का टूटना; देर में जुड़ना। आधे ग्रेन की मात्रा दिन में दो बार बहुत दिनों तक देने से लड़कों के ऊपर चढ़े अण्ड में लाभदायक कहा जाता है। थाइरॉयड शरीर के सभी यन्त्रों के विकास और पोषण-क्रिया पर अच्छा प्रभाव डालती है। थाइरॉयड की दुर्बलता में अधिक मिठाई खाने की प्रबल इच्छा होती है।

अपरस और तीव्र धड़कन में लाभदायक है। बच्चों का बढ़ना रुक जाना। स्मरण-शक्ति बढ़ाती है। घेघा। अधिक मोटापन। गहरे रङ्ग के रोगियों की अपेक्षा हल्के रङ्ग के रोगियों के लिए अधिक उपयोगी है। धुन्ध। **स्तन अर्बुद।** **गर्भाशयिक सौत्रिक अर्बुद।** बहुत कमजोरी और भूख, तब भी दुबला होता जाये। **रात में अनैच्छिक मूत्रस्राव। प्रसव के बाद दूध न उतरना।** गर्भाधान के बाद ही से चिकित्सा आरम्भ कीजिए। **मात्रा** १½ ग्रेन, दिन में दो या ३ बार। **गर्भावस्था में कै होना** (सोकर उठने से पहले ही बहुत सबेरे औषधि देनी चाहिए)। **स्तनों का सौत्रिक अर्बुद।** २x विचूर्ण। धमनिकाओं को फैलाती है। (**एड्रीनैलिन उनको सिकोड़ती है**)। गशी की संवेदना और मिचली। तीव्र रोग के आक्रमण के बाद कमजोरी में ठंडक असह्य। जल्दी थकना, नाड़ी कमजोर, गशी की प्रवृत्ति, दिल धड़कना, हाथ और पैर ठण्डे, रक्तचाप की कमी, शीत असह्य। (**थायरॉयड १x, दिन में २ बार**) श्लैष्मिक शोथ और कई प्रकार के शोथ में शक्तिवान; मूत्रल है।

मन—नशीली अवस्था, साथ में बेचैनी और उदासी बारी-बारी। चिड़चिड़ापन, जरा-से विरोध से रोग बढ़े, छोटी-छोटी बातों पर भड़क उठे।

सिर—मस्तिष्क में हलकापन। **लगातार अगले भाग में दर्द।** आँखें उभरी हुई। चेहरा सुर्ख, होंठ जले। जबान पर मोटा मैल। भरापन और गरमी। चेहरा सुर्ख। मुँह में बुरा स्वाद।

दिल—कमजोर, तेज नाड़ी, लेटने में असमर्थ। तेज धड़कन। (नाजा०)। सोने में व्याकुलता; मानो सिकुड़ा हो। जरा-से परिश्रम से दिल धड़के। तीव्र हृदय पीड़ा। हृदय जल्दी उत्तेजित हो। हृदय की क्रिया कमजोर, अँगुलियाँ सुन्न।

आँखें—उन्नतिशील दृष्टि क्षीणता। आँखों के बीच के सामने लोप होने वाले धब्बों के साथ (कार्बोनि० सल्फ्युरेटम)।

गला—सूखा, रक्ताधिक्य, कच्चा, जलन, बायीं तरफ अधिक।

आमाशय—मीठी चीज की इच्छा और ठण्ढे पानी की प्यास। मोटरकार में सवारी करने से मिचली हो। बादी। उदर में अधिक वायु।

मूत्र—अधिक स्राव, अनेक बार, कुछ अलब्यूमेन और चीनी। कमजोर बच्चों में अनैच्छिक मूत्र स्खलन, जो कि स्नायविक और चिड़चिड़े हों (३ ग्रेन) रात और सबेरे। पेशाब से कासनी फूल की गन्ध, मूत्रमार्ग में जलन, यूरिक अम्ल का अधिक होना।

अंग—सन्धि प्रदाह, साथ में मोटापा की प्रवृत्ति; अंग ठण्डे और ऐंठन के साथ। निचले अंगों की खाल उधड़ना। सिर ठण्डे : टीस। टाँगों में शोथ। अंगों में और सारे शरीर में कम्प।

साँस-यन्त्र—सूखी; दर्दीली खाँसी, थोड़ा, कठिन बलगम और गलकोष में जलन के साथ।

चर्म—अपरस जो अधिक चर्बीलापन से सम्बन्धित हो। (विकास अवस्था में न हो। चर्म सूखा, पोषणहीन। हाथ और पैर ठण्डे। अकौता। गर्भाशय का सौत्रिक अर्बुद। बादामी रंग की फूलन। ग्रन्थियों की पथरी जैसी फूलन। मन्द रोग। अति खाज के साथ कामला रोग। मीनवक्किका, चर्म का क्षय रोग, नाकड़ा इत्यादि। बिन दाने की खुजली, रात को अधिक हो।

सम्बन्ध—स्पांजिया०, कैल्के०; फियुकस०, लाइकोपस०, आयोडोथाइरिन (थाइरॉयड ग्रन्थि से निकला हुआ प्रबल तत्व, एक ऐसा पदार्थ जिसमें आयोडिन और नाइट्रोजन अधिक मात्रा में होते हैं, शरीर की पोषण और परिवर्तन क्रिया को प्रभावित करती है, शरीर के वजन को कम करती है, मधुमेह उत्पन्न कर सकती है। मोटेपन में सावधानी से प्रयोग करना चाहिए; क्योंकि सम्भवतः चर्बीला हृदय परिवर्तन गति की तीव्रता का साथ न दे सके। दूध में थाइरॉयड ग्रन्थि का आन्तरिक स्राव रहता है। थाइमस ग्लैण्ड एक्सट्रैक्ट (आकारभ्रष्ट सन्धि प्रदाह, शारीरिक परिवर्तन। जीर्ण-सन्धिप्रदाह, ५ ग्रेन की टिकिया; दिन में ३ बार)। बहिःनिस्सृत चक्षुगोलक तथा हृद्स्पन्दन के साथ गलगण्ड रोग में ऊँची शक्तियाँ उत्तम लाभ देती हैं।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

टिलिया युरोपा (Tilia Europa)

(लिंडेन)

आँखों की पैशिक दुर्बलता में, पतले पीले खून के रक्त स्राव में मूल्यवान है। प्रसव सम्बन्धी जरायु प्रदाह। अस्थिमय गह्वर के रोग। (केलि हाइड्रियोडि०, चेलिडोनियम०)।

सिर—स्नायुशूल, (पहले दाहिने फिर बायीं तरफ का) साथ में आँखों के आगे पर्दा जैसा। भ्रान्त, साथ में निगाह धुँधली। अधिक छींकना, साथ में नाक बहना। नाक से रक्तस्राव।

आँखें—आँखों के सामने जाली जैसा जान पड़े। (कैल्के०, कॉस्टि०, नैट्र० म्यूर०) द्वि-दृष्टि।

स्त्री—गर्भाशय के क्षेत्र में तीव्र पीड़ा नीचे के रुख दबाव, साथ में गरम पसीना जिससे आराम न मिले। टहलते समय अधिक चिकना प्रदर। (बोवि०, कार्बो ऐनि०; ग्रैफा०)। योनि के बाहरी भाग की लाली और दर्द। (थूजा सल्फर)। पेड़ू की सूजन, पेट का तन जाना, उदर का कोमलपन और गरम पसीना जिससे कष्ट कम हो।

चर्म—जुलपित्ती। घोर खुजली और आग जैसी जलन, खुजलाने के बाद छोटे, लाल, खाज वाले दाने निकलना। सोने के बाद ही गरम और अधिक पसीना निकलना। ज्यों-ज्यों वात पीड़ा बढ़े, त्यों-त्यों पसीना भी अधिक हो।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : तीसरे पहर और शाम को गरम कमरे में, बिस्तर की गरमी से घटना : ठण्डे कमरे में, हरकत से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : लिलियम०; बेलाडो०।

मात्रा—अरिष्ट से ६ शक्ति।

टिटैनियम (Titanium)

(टी मेटल)

यह धातु हड्डियों और पेशियों में पायी जाती है। इसका बाहरी व्यवहार नाकड़ा में और दूसरे क्षय रोग की बाधाओं में, और चर्म रोग, नाक के जुकाम इत्यादि में किया गया है। सेब में ०·११ प्र० श० टिटैन होता है। अपूर्ण दृष्टि, विशेषता यह है कि सभी वस्तुओं का केवल आधा ही अंश दीख पड़ता है। लम्बाकार अर्द्ध दृष्टि के साथ चक्कर आना। बहुत शीघ्र वीर्यस्खलन के साथ काम दौर्बल्य। सांडलाल मूत्र। अकौता, नाकड़ा, नाक की श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह।

मात्रा—निचली और बिचली शक्तियाँ।

टोंगो-डिपट्रिक्स ओडोरेटा (Tongo-Diptrix odo.)

(सीड्स ऑफ कुमैरीना-ए ट्री इन गाइना)

स्नायुशूल में उपयोगी है; कुकुर-खाँसी।

सिर—चक्षु कोटर के ऊपर वाली स्नायु में फटन दर्द, सिर में गरमी और थरथराहट, दर्द और अश्रु-प्रवाह के साथ। उपद्रव, खासकर पिछले भाग में, औंघाई और नशीली अवस्था के साथ। ऊपरी होंठ की दाहिनी तरफ फड़कन। जुकाम, नाक बन्द, मुँह से साँस लेना पड़े।

अंग—कूल्हे के जोड़ में, जाँघ की लम्बी हड्डी में, घुटने में फटन दर्द। खासकर बायाँ तरफ।

सम्बन्ध—मेलिलोटस। ऐन्थोजेंथम, ऐस्पेरूला; और टोंगो में कुमैरिन जो कार्यवाही तत्व है, रहता है। इनकी तुलना फ्लू में कीजिये। इसके अतिरिक्त ट्रिफोलि०; नैप्थे०, सैंबाडि।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

टोरूला सेरेविसे (Torula Cerevisiae)

(सैकैरोमाइसेज) (ईस्ट प्लैंट)

इस औषधि का परिचय डॉ० लेहमैन और इङ्गलिंग ने कराया है। इसके होमियोपैथिक सिद्धान्त से परीक्षण नहीं हुए; इसलिए केवल चिकित्सा द्वारा लक्षणों का अनुभव हुआ है, किन्तु उनमें से अधिकतर लक्षणों की पुष्टि हुई है। सुजाकनाशक औषधि, अत्यधिक प्रवणता की अवस्थायें जो प्रोटीन अथवा एन्जाइम्स से उत्पन्न होती है। (इङ्गलिंग)।

सिर—सिर के पीछे और गर्दन में टीस। सिर दर्द और शरीर भर में तीव्र पीड़ा, कब्ज से अधिक हो। छींकें आना और सायँ-सायँ की आवाज। नाक के पिछले भाग से नजला टपके, चिड़चिड़ापन और उत्तेजना।

आमाशय—बुरा स्वाद। मिचली। मन्दाग्नि। आमाशय और उदर से वायु डकार। उदर में चोटीलापन। भरापन। गड़गड़ाहट, दर्द जगह बदले, वायु संचयता। कब्ज। सभी स्रावों से खट्टी खमीरी और उबसा हुआ गंध आए।

अंग—पीठ दर्द, केहुनी और घुटनों के नीचे तक थकावट और कमजोरी। हाथ बरफ की तरह ठंडे; जल्दी सुन्न हो जायें।

नींद—बेचैनी के साथ अशान्त निद्रा।

चर्म—फुड़िया, फिर-फिर हो। टखनों की चारों तरफ खाज वाला अकौता। नाना प्रकार के रंगों के दाग।

मात्रा—शुद्ध खमीर से बनी हुई रोटी या ३ शक्ति और उससे ऊँची। खमीर की पुल्टिस चर्म रोग, फुड़ियाँ सूजन इत्यादि में व्यवहार की जाती हैं।

ट्रिब्यूलस टेरेस्ट्रिस (Tribulus Terrestris)

(इक्षुगंधा)

एक ईस्ट इण्डियन औषधि जो मूत्र रोगों में लाभदायक है, खासकर मूत्र-कृच्छ्र में और जननेन्द्रिय की दुर्बलता में, जो वीर्य दौर्बल्य से, शीघ्र वीर्य-स्खलन और धातु के पतलापन से विद्यमान होती है। मूत्राशय मुखशायी (प्रोस्टेट) ग्रन्थि का प्रदाह, पथरी रोग और जननेन्द्रिय स्नायु दौर्बल्य। हस्तमैथुन के उपद्रवों में लाभ करती है, वीर्य-स्खलन को और अनैच्छिक वीर्यस्राव को ठीक करती है, वृद्धावस्था में अति मैथुन के कारण आंशिक नपुंसकता या जब इस अवस्था के साथ मूत्र लक्षण, रुक-रुक कर मूत्र-स्राव, पीड़ाजनक मूत्रस्राव इत्यादि भी उपस्थित हों।

मात्रा—१० से २० बूंद अरिष्ट दिन में ३ बार।

ट्राइफोलियम प्रेटेन्स (Trifolium Pratense)

(रेड क्लोवर)

अधिक लार बहना। लाला-ग्रन्थि में रक्ताधिक्य के साथ भरापन की संवेदना, बाद में अधिक लार बहना। ऐसा जान पड़े कि कर्णमूल फूलने वाले हैं। पीब वाली दाद, सूखी, पपड़ीदार खुरण्ड। गरदन कड़ी। कर्कटीय धातु दोष।

सिर—जागने पर गड़बड़ी और सिर दर्द। मस्तिष्क के अगले भाग में मस्तिष्क की कर्महीनता, स्मरण शक्ति का लोप होना।

मुँह—लार अधिक बहना। (मर्क० : सिफिलि०)। गल-क्षत और खरखरी।

साँस-यन्त्र—ऐसा जुकाम जैसा लू लगने के पहले हुआ करता है, अधिक उत्तेजना के साथ पतला श्लेष्मा गिरे। गला फटने जैसा और घुटना, रात में खाँसी के साथ शीत। खुली हवा में आने पर खाँसी आये। लू। आक्षेपिक खाँसी, कुकुर खाँसी, दौरों के साथ, रात में बढ़े।

पीठ—गरदन कड़ी, वक्षोस्थि तथा कण्ठास्थि पेशियों में ऐंठन, गरमी और उत्तेजना से कम हो।

अंग—हथेलियों में चुनचुनाहट। हाथ और पैर ठण्डे। जंघास्थि के साथ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : ट्राइफोलियम रेपेन्स ह्वाइट क्लोवर कर्णमूल प्रदाह को रोकती है, लाला ग्रंथियों में सूजन जान पड़े, दर्द और सख्ती; खासकर जबड़े की निचली हड्डी में, जो लेटने से अधिक हो। मुँह पानी-सी लार से भरा हो, लेटने से अधिक हो। मुँह और गले में रक्त का स्वाद। ऐसा मालूम दे कि हृदय स्थगित हो जायगा, साथ में अधिक भय; उठने-बैठने या इधर-उधर चलने से बढ़े। अकेले रहने से, साथ में चेहरे पर ठण्डा पसीना।

ट्रिलियम पेण्डुलम (Trillium Fendulum)

(ह्वाइट बेथ रूट)

यह रक्तस्राव की साधारण औषधि है, जब बहुत गशी और चक्कर भी साथ में हो। पुराना रक्तातिसार। जिसमें आम भी हो। गर्भाशय से रक्तस्राव। गर्भपात का भय। पेडू क्षेत्र के यन्त्रों का ढीलापन। ऐंठन; दर्द। क्षय रोग, साथ में अधिक मात्रा में मवादी बलगम और खून थूकना।

सिर—माथे में दर्द, जो आवाज से अधिक हो : गड़बड़ी, आँखों के ढेले बड़े जान पड़ें। निगाह धुँधली, सभी चीजें हल्के नीले रंग की दिखाई दें। नकसीर। (मिलेफो०; मेलिलोट०)।

मुँह—मसूढ़े से खून बहना। दाँत निकलने के बाद खून बहना।

आमाशय—गरमी और जलन जो गलनली तक ऊपर उठे। खून की कै।

मलाशय—जीर्ण दस्त; खून स्राव। पेचिश, शुद्ध खून निकलना।

स्त्री—गर्भाशय से स्राव। साथ में ऐसा संवेदन कि कूल्हे और पीठ टुकड़े-टुकड़े होकर गिर रहे हैं, कसकर बाँधने से कम हो। जरा-सा हिलने से चमकदार लाल खून फलक पड़े। सौत्रिक अर्बुद से रक्तस्राव हो। (कैल्के०, नाइट्रि० एसिड, फॉस, सल्फ्यु० एसिड)। गर्भाशय का खसक कर बाहर को निकलना, बहुत धँसन संवेदन के साथ। प्रदर अधिक मात्रा में; पीला; तारदार। (हाइड्रैस्टि०, कैलिबाइक्रो०, सैबाइना)। वयःसन्धिकाल में जरायु से अधिक रक्तस्राव। प्रसूति स्राव एकाएक रक्तमय हो जाये। प्रसव के बाद मूत्र टपका करे।

साँस-यन्त्र—खाँसी जिसमें खून थूके। अधिक मात्रा में मवादी बलगम। खून थूकना। वक्षास्थि के सिर पर टीस, छींक के साथ क्रमभ्रष्ट साँस के दम घोंटने वाले हमले। सीने के आस-पास चुभन दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : ट्रिलियम सेरनम (आँखों के लक्षण, सब चीजें हल्की नीली दीख पड़ें; मुँह में चिकनापन), फिकस (रक्त प्रवाह, अधिक मासिक स्राव, खूनी पेशाब, नकसीर फूटना, खून की कै, खूनी बवासीर), सैंग्विस्यूगा—लीच (रक्त प्रवाह, गुदा से रक्तस्राव), इपिका०, सैबाइना, लैके०, हैमामे० ।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ ।

ट्रिआस्टियम परफोलियेटम (Triosteum Perfoliatum)
(फीवर-रूट)

ट्रिओस्टियम ऐसे दस्त के लिए मूल्यवान औषधि है जिसके साथ शूल और मिचली हो, मल त्यागने के बाद निचले अंग सुन्न हो जायें और मूत्र अधिक मात्रा में निकले । इन्फ्लुएञ्जा में भी हितकर है । स्नायविक लक्षणों को शान्त करती है । (कॉफिया; हायोसा०) । पित्त की अधिकता । पित्त शूल ।

सिर—उठने पर मिचली के साथ पिछले भाग में दर्द, बाद में कै हो । इन्फ्लुएञ्जा, सारे शरीर में पीड़ा और अंगों में टीस के साथ । पीनस, अग्रभागिक पीड़ा ।

आमाशय—भोजन से अति घृणा; उठने पर मिचली, बाद में कै और ऐंठन । मल पानी-सा झागदार ।

अंग—सभी जोड़ों का कड़ापन, पिंडली सुन्न हो, हड्डियों में टीस, पीठ में वात पीड़ा । अंगों में पीड़ा ।

चर्म—जूते के तले की गोट के पास खाज । आमाशय विकार से आयी जुलपित्ती ।

मात्रा—६ शक्ति ।

ट्रिनिट्रोटोलुयेन (Trinitrotoluene)
(टी. एन. टी.)

गोले-बारूद के कारखानों में काम करने वालों के लक्षण; जो टी. एन. टी. बनाने का काम करते हैं और जो उसको साँस द्वारा शरीर में लेते हैं तथा पचाते हैं और कुछ अंश चर्म के द्वारा भी शरीर में प्रवेश करते हैं । इस औषधि का लक्षण विवरण डॉ० कॉनरैड वेसलहोयेफ्ट ने तैयार किया था और जनरल ऑफ अमेरिकन इन्स्टीच्यूट ऑफ होमियोपैथी के दिसम्बर सन् १९२६ के अंक में प्रकाशित हुआ था ।

रक्त के लाल कणों को नाश करने वाला टी. एन. टी. का प्रभाव शरीर में रक्तहीनता और कामला रोग तथा उनके साथ के अन्य लक्षणों का जिम्मेदार है। रक्तकण रंजक में परिवर्तन हो जाता है, इसलिए वह अच्छी तरह से ओषजन पहुँचाने का काम नहीं कर सकता; जिसका परिणाम यह होता है कि दम फूलना, चक्कर, सिर-दर्द, गशी; धड़कन, अप्राकृतिक थकावट, पेशिक ऐंठन और नील रोग उत्पन्न हो जाता है। औंघाई, उदासी, अनिद्रा भी उपस्थित हो जाती है। इसके विषाक्रमण के बाद वाली अवस्था में विषैला कामला रोग और क्षीणताजनित रक्तहीनता हो जाती है। यह कामला रोग लाल कणों के नष्ट होने के कारण होता है, न कि पित्त नलिका के रुकने की वजह से।

सिर—उदासी और सिर दर्द (अगले भाग का), संगत से घृणा, उदासीन, सरलता से रो पड़े। गशी, चक्कर, मानसिक मन्दता, सन्निपात, विक्षेप, मृत्यु जैसी मूर्च्छा। चेहरे का रंग बहुत गहरा।

साँस-यन्त्र—कसाव के साथ नाक का सूखा होना, छींक आना, जुकाम, गलकोष में जलना, सीने पर दाब, घुटन बोझ, सूखी, आक्षेपिक खाँसी, श्लेष्मा की गुठलियाँ निकलें।

आमाशय—कड़वा स्वाद, अधिक प्यास, खट्टा पानी ऊपर आना, असियन्त्रवत् के पीछे मन्द जलन, मिचली, कै; कब्ज और फिर ऐंठन के साथ दस्त होना।

हृदय गह्वरीय—धड़कन, तीव्र, मन्द सविराम नाड़ी।

मूत्र—गहरे रङ्ग का, मूत्र-स्खलन के समय जलन, एकाएक इच्छा, धार का रुक-रुक आना या बन्द हो जाना।

चर्म—हाथ पीले, धब्बेदार। चर्म प्रदाह, गुठलीदार लाल चकत्ते; रस दाने, खुजली और जलन, फूलन। चर्म के निचले भाग में और नाक से रक्तस्राव की प्रवृत्ति। घुटनों के पिछले भाग में थकावट वाला दर्द।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : मदसार से (एक दो घूँट ह्विस्की पीने से ही गिर पड़ता है), चाय (स्पष्ट घृणा)।

सम्बन्ध—तुलना : जिंक०; फॉस्फो०; सिना, आर्से०, प्लम्बम०।

मात्रा—३० शक्ति का प्रयोग लाभ के साथ किया गया है।

ट्रिटिकम—एग्रोपाइरॉन रेपेन्स
(Triticum-Agropyron Repens)
(काउच ग्रास)

मूत्राशय अति उत्तेजित, मूत्रकृच्छ्; मूत्राशय प्रदाह और सुजाक की उत्तम औषधि।

नाक—बराबर छींका करे।

मूत्र—अक्सर बार-बार हो, कठिनता और दर्द से उतरे। (पोपु०)। पथरीली तलछट। नजला और मवादी स्राव। (पैरीरा)। मूत्रकृच्छ्र मूत्रपिंड आवरण का प्रदाह; मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि का बढ़ना। जीर्ण मूत्राशय प्रदाह। उत्तेजनीयता। पेशाब की धार का रुकना। लगातार इच्छा। पेशाब गाढ़ा हो और मूत्रमार्ग की श्लैष्मिक झिल्ली को उत्तेजित करे।

सम्बन्ध - तुलना कीजिए : ट्रैडेसैण्टिया (कान और ऊपरी वायु मार्गों से रक्तस्राव, पीड़ाजनक मूत्रस्राव, मूत्रमार्ग से स्राव, अंड की सूजन)। चिमैफ०, सेनेसियो, पोपुलस, ट्रेम; बूचू, युवा।

पालिट्रिकम जुनिपेरिनम ब्राउण्ड मांस—(वृद्ध लोगों का दर्द के साथ मूत्र-स्खलन, शोथ, पेशाब में रुकावट और दब जाना)।

मात्रा—टिंचर।

ट्राम्बिडियम (Trombidium)

(रेड एकेरस ऑफ दी फ्लाई)

पेचिश की चिकित्सा में विशेष स्थान रखती है। खाने और पीने से रोगलक्षण बढ़ते हैं।

उदर—मल त्यागने से पहले और बाद में अधिक पीड़ा, केवल भोजन ही करने पर मलत्याग हो। सुबह के समय कोखे में चुभन। उठने पर तेजी से ढीला मल निकलने की इच्छा के साथ जिगर में रक्ताधिक्य रोग के साथ बादामी पतला; खूनी मल। मलत्याग काल में, बायीं तरफ तेज दर्द जो नीचे को लपके। गुदा में जलन हो।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

ट्युबरक्युलिनम (Tuberculinum)

(ए न्यूक्लियो प्रोटीन, ए, नोसोड फ्रॉम ट्यूबरक्युलर एब्सेस)

ट्यूबरक्युलिनम गुर्दों के रोगों में सांकेतिक होती है, लेकिन इसके प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए, क्योंकि जहाँ चर्म और आँतें ठीक तरह से काम नहीं करतीं, वहाँ ऊँची शक्ति भी खतरनाक है। जीर्ण मूत्राशय प्रदाह में उत्तम और स्थायी लाभ होता है। (डॉ० नेबेल मॉनट्रिअक्स)।

क्षय रोग के आरम्भ में निर्विवाद रूप से मूल्यवान है। खासकर हल्के रङ्ग और तंग सीने वाले रोगियों के लिए उपयोगी है। ढीले सूत्र, शक्तिग्रहण करने में सुस्त और मौसम परिवर्तन से शीघ्र प्रभावित होना। रोगी सदा थका रहे, हरकत से बहुत थकावट हो, काम करने से घृणा, सदा परिवर्तन चाहे। जब लक्षण बराबर बदला करें, और ठीक चुनी हुई औषधि कोई लाभ न करे, और जरा-सी सर्दी लगने से जुकाम हो जाया करे। तेजी से दुबला होते जाना। मिरगी; स्नायु-दौर्बल्य; और उत्तेजित बच्चों में अति मूल्यवान। बच्चों का दस्त, हफ्तों तक जारी रहे, अधिक क्षीणता, हल्का नीला शरीर, शिथिलता। मानसिक दृष्टि से दुर्बल बच्चे, जिनका मानसिक विकास कम हो। तालुमूल बढ़े हुए। चर्म रोग, तीव्र सन्धिवात। अति उत्तेजनीय, मानसिक और शारीरिक। सर्वाङ्ग शिथिलता। स्नायविक दौर्बल्य। कम्प। मिरगी। सन्धि प्रदाह।

मन—ट्यूबरक्युलिनम के पारस्परिक विपरीत लक्षण हैं, उन्माद और विपन्न, अनिद्रा और मूर्च्छा-निद्रा। चिड़चिड़ापन, खासकर जागने पर उदासी। विषादग्रस्त; जानवरों से भय लगना; खासकर कुत्तों से। अश्लील भाषा बोलने की इच्छा, कोसना, कसम खाना।

सिर—मस्तिष्क की गहराई में दर्द और तीव्र स्नायुशूल। सभी चीजें अनजान मालूम दें। घोर पीड़ा जैसे लोहे का बन्द सिर की चारों तरफ जकड़ा हो, मस्तिष्क प्रदाह। जो रोगग्रस्त स्राव आरम्भ हो; पसीना-मूत्र स्रावाधिक्य, दस्त, रोग सम्बन्धित चर्म लक्षण में औषधि को उसी समय दोहराना चाहिए जब रोग अपनी चरम सीमा पर पहुँचे। रात में दृष्टिभ्रम, भयभीत होकर जाग उठे। बालों का फूलना और खून बहना। (विनका०)। झुण्ड-की-झुण्ड छोटी फुन्सियाँ जो बहुत दर्द करें, एक झुण्ड के अच्छा होने पर दूसरा झुण्ड निकल आये। नाक में हरा, घृणित मवाद।

कान—लगातार घृणित कर्ण-स्राव। खुरदुरे, दरारेदार किनारों के साथ कान के पर्दों में छोटे-छोटे छेद हो जाना।

आमाशय—मांस से घृणा। धँसन, भूख की संवेदना। (सल्फर)। ठंडे दूध की इच्छा।

उदर—बहुत सबेरे एकाएक दस्त होना। (सल्फर)। गहरे कत्थई रंग का मल, घृणित, अधिक वेग से निकले। आन्त्र-क्षय रोग अथवा गंडमालाजनित क्षय।

स्त्री—मन्द स्तन अर्बुद। मासिक धर्म बहुत पहले, अधिक मात्रा में देर तक बहता रहे। कष्टप्रद मासिक धर्म। स्राव के साथ पीड़ा भी अधिक हो।

साँस-यन्त्र—तालुमूल बढ़े हों। सोते में कड़ी सूखी खाँसी। बलगम गाढ़ा, सरलता से निकले, अधिक वायुनलिका स्राव। साँस छोटा। अधिक ताजी हवा में

भी दम घुटे। ठण्डी हवा की इच्छा हो। बच्चों में वायुनलिका तथा फुफ्फुस प्रदाह। कड़ी, ठोंकन खाँसी, अधिक पसीना और वजन का घटना। सीने भर में बलगम की खड़खड़ाहट। फुफ्फुस के सिरे पर से दूषित पदार्थ की संचयता शुरू हो (बार-बार दोहराना चाहिये)।

पीठ—गरदन की जड़ में और मेरुदण्ड भर में तनाव। कन्धों के बीच में या पीठ में ऊपर की तरह शीत।

चर्म—जीर्ण अकौता, घोर खुजली, रात में अधिक। क्षय रोगी बच्चों में मुँहासे। छोटी चेचक, अपरस (थाइरायड)।

नींद—कम, जल्द, बहुत सुबह को जाग पड़े। दिन में बिना रुकने वाली नींद। स्पष्ट और कष्टदायक स्वप्न।

ज्वर—स्वल्प विरामिक ढंग का चर्म सीमा के बाद वाला ताप। ऐसी अवस्था में हर २ घण्टे पर औषधि दीजिए (मैकफर्लेन)। अधिक पसीना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : हरकत, सङ्गीत, आँधी के पहले, खड़े होने से, तरी से, बाहरी हवा से, बहुत तड़के और सोने के बाद। घटना : खुली हवा से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये। डॉ० कोच का लसिका रस (लिम्फ)-(तीव्र और जीर्ण सांतर विधानीय गुर्दा प्रदाह, फुफ्फुस प्रदाह, वायुनलिका तथा फुफ्फुस प्रदाह, क्षय रोगों में फुफ्फुस में रक्ताधिक्य उत्पन्न करती है। उपखण्ड फुफ्फुस प्रदाह—वायुनलिका फुफ्फुस प्रदाह की उत्तम औषधि है); ऐवियारे—ट्युबरक्युलिन जो चिड़ियों से लिया गया हो—(फुफ्फुस के सिरे पर काम करती है, इन्फ्लुएन्जा के वायुनलिका प्रदाह में उत्तम औषधि सिद्ध हुई है; लक्षण क्षय रोग की तरह होते हैं; कमजोरी घटाती है, खाँसी कम करती है, भूख बढ़ाती है और शरीर में शक्ति देती है; बच्चों का तीव्र वायुनलिका फुफ्फुस प्रदाह; हथेली और कानों का खुजाना, खाँसी, तीव्र, प्रादाहिक उत्तेजनीय, लगातार और गुदगुदीदार, शक्ति और भूखहीनता); हाइड्रे॰स्टि॰ (ट्युबरक्यु॰ के बाद रोगी को मोटा बनाने के लिये), फॉरमिक एसिड (क्षय रोग, जीर्ण गुर्दा प्रदाह, कठिन अर्बुद, फुफ्फुसीय क्षय रोग, तीसरे चरण का न हो, नाकड़ा, पेट और स्तन का कर्कट, डॉ॰ क्रल ३ शताय शक्ति के बराबर की सूक्ष्मता का सोल्युशन सुई द्वारा व्यवहार करते हैं। यह ६ मास के भीतर दोहराना नहीं चाहिये)।

तुलना कीजिये : बेसिलिन॰, सोरिन॰; लैके॰ केलेंगुवा (क्षय रोग सभी स्राव और साँस से लेहसुन जैसी गन्ध) ट्युक्रियम स्कोराडोनिया।

तुलना कीजिए : थूजा (टीका लगाने के विष से ट्युबरक्युलिन के प्रभाव का रास्ता बन्द हो सकता है इसलिए जब तक थूजा न दिया जाय वह प्रभाव मार्ग नहीं खुलता; उसके बाद ट्युबरक्युलिन बहुत अच्छा काम करती है (बरनेट)।

पूरक : कैल्केरिया०, चायना, ब्रायो० ।

मात्रा—प्रायः सभी जीर्ण औषधियों की अपेक्षा बच्चों की बीमारी में ट्युबर-क्युलिन को बार-बार दोहराना आवश्यक होता है। (एच० फर्जी उड्स) । ३० शक्ति और उससे अधिक ऊँची शक्ति, बार-बार दोहराना नहीं चाहिये। जब ट्युबर-क्युलिनम असफल होती है तब अक्सर सिफिलिनम लाभ के साथ दी जा सकती है और उसका प्रभाव होने लगता है।

फुफ्फुसीय क्षयरोग में ट्युबरक्युलिनम का व्यवहार करने में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

अगर शरीर के निष्कासन यन्त्र अच्छी अवस्था में रहें तो ज्वर रहित शुद्ध क्षय रोग में अच्छा स्पष्ट परिणाम होता है, लेकिन १००० शक्ति से कम शक्ति कदापि नहीं देनी चाहिए, जब तक इससे नीची शक्ति की प्रबल आवश्यकता न हो। उन रोगियों में जिनके वायुनलिका समूह में मालाणु, गुच्छाणु और न्यूमोनिया के कीटाणु उपस्थित रहते हैं, और जिनके बलगम को धोने के बाद, शुद्ध टी. बी. कीटाणु बचे रहते हैं, वहीं ऊपर की चिकित्सा लाभदायक है। मिश्रित संक्रमण में, जैसा बहुधा पाया जाता है, जहाँ बलगम में टी. बी. कीटाणु के अतिरिक्त अनेक दूसरे विषैले कीटाणु भी उपस्थित रहते हैं; दूसरी तरह की चिकित्सा आवश्यक है। यदि हृदय अच्छी हालत में है, केवल एक ही मात्रा ट्यूबरक्युलिनम की १०००-२००० शक्ति की देना चाहिये, अगर दूसरी औषधियों का कोई स्पष्ट लक्षण न हो। तापमान का ध्यान रखते हुए और दूसरे स्रावों का विचार करते हुए, उस एक मात्रा को उस समय तक काम करने देना चाहिए जब तक उसका प्रभाव जारी रहे, प्रायः ८ दिन से ८ हफ्ते तक। तब प्रायः कोई जटिल लक्षण दर्शनीय होता है और किसी विशेष कीटाणुनाशक औषधि को जैसे साइलिशिया; लाइकोपोडियम, फॉस्फोरस इत्यादि के देने की आवश्यकता होती है। कुछ समय के बाद फिर अवस्था में जटि-लता उत्पन्न होती हैं और अब बलगम के कीटाणु में से (मालाणु, गुच्छाणु या न्युमोनिया के कीटाणु में से) अति विषैली कीटाणुनाशक औषधि की अधिक ऊँची शक्ति प्रयोग की जाती है। बलगम में कीटाणु का ठीक भेद जानना अति आवश्यक है; और इस समकीटाणु भेद के निर्णय से फिर चिकित्सा का रास्ता साफ हो जाता है। इसलिए एक तरफ रोग के कारण तत्त्व का विचार करते हुए (जहाँ यह समरोग कीटाणु का निर्णय नहीं सिद्ध हुआ है) औषधि का विचार करना चाहिए और दूसरी तरफ केवल लक्षणों को ध्यान में रखते हुए कीटाणुनाशक औषधियों का प्रयोग करने से वह रोग काबू में आ जाता है।

मेरा स्वयं अनुभव है कि मिश्रित संक्रमण में मालाणु, गुच्छाणु या न्युमोनिया कीटाणुनाशक औषधि ५०० शक्ति से कम का प्रयोग नहीं करना चाहिए। मैं उन

औषधियों का प्रयोग केवल २००० से १००० शक्ति में करता हूँ क्योंकि मैंने ३०, १००, २०० शक्ति में भयानक रोग वृद्धि देखी है। जब तापमान १०४ डिग्री से एकाएक ६६ डिग्री हो गया। इसलिए यह चेतावनी उन लोगों के लिए नहीं जो मजाक उड़ाया करते हैं, बल्कि उन लोगों को दी जाती है जो इस शक्तिशाली शस्त्र का लाभदायक प्रयोग करना चाहते हैं। औषधि के रूप में उन्हीं रोग-विषों का प्रयोग किया जाता है जो ट्यूबरक्युलिनम की तरह शुद्ध और महाविषैले रोग-विष से तैयार किए गये हों।

इस तरह चिकित्सा करने से बहुत-से रोगी जिनको असाध्य समझकर छोड़ दिया जाता है, एक या दो वर्ष में असाधारण तापमान को प्राप्त करते हैं, गोकि उनके फुफ्फुस तन्तु का अधिकांश नाश हो गया रहता है। यह परिणाम निश्चित है, जहाँ रोगी अपने को सम्भाल कर रखेगा और उसका दिल इन विषाक्त औषधियों को सहन करने योग्य रहा है और जिनका पेट और जिगर अच्छी अवस्था में काम करता रहा है। इसके अतिरिक्त मौसमी परिवर्तनों से बचना आवश्यक है। चूँकि क्षयरोग में धातुपरिवर्तन और उनकी पोषण क्रिया में घोर विघ्न पड़ता है; इसलिए भोजन का निर्णय अति आवश्यक है और उसका अधिकांश शाक पदार्थ होना चाहिए जिसके साथ नीचे की शक्ति के शारीरिक लवण भी देना आवश्यक है। कैल्केरिया कार्ब ३x, ५x, कैल्केरिया फॉस २x, ६x और बीच-बीच में थोड़े समय के लिए यांत्रिक औषधि भी जैसे कैक्टस ट्रि० ३०,चेलिडोनियम; ट्रि० ३०, टैराक्सेकम ट्रि०, नैस्टर्टियम ट्रि०, अर्टिका युरेंस ट्रि०, टुसिलेगो फारफारा ट्रि०, लाइसिमैकिया नुमूलेरिया ट्रि० लक्षण की अवस्था के अनुसार थोड़े-थोड़े समय तक देना चाहिए।

कुछ भी हो, किसी कठिन क्षय रोगी को ट्युबरक्युलिनम की पहली मात्रा के देने का निर्णय करना गम्भीर विचार और महत्व की अवस्था है। यह औषधि बिना हृदय-क्रिया की ध्यानपूर्वक परीक्षा किए हुए कदापि नहीं देना चाहिए। जिस तरह सर्जन बेहोश करने के पहले हृदय-क्रिया को अच्छी तरह समझता है उसी तरह औषधि देने वाले चिकित्सक को भी इस महा औषधि के प्रयोग से पहले हृदय की अवस्था को जान लेना आवश्यक है, खासकर बच्चों की चिकित्सा में और वृद्ध लोगों की—और अकाल वृद्ध युवा रोगी की। वह चिकित्सक जो ऐसा करता है अपने अन्तःकरण पर कम ठेस लगावेगा। जब ट्युबरकुलिनम के विरुद्ध लक्षण हों तो ऐसी अवस्था में उसकी निकटतम विषनाशक औषधि देनी चाहिए।

"ऊपर लिखी चेतावनी दमा, फुफ्फुसावरण झिल्ली प्रदाह, कण्ठमालिक रोगियों के अन्त्रावरण झिल्ली प्रदाह में भी ध्यान में रखना चाहिये" (डॉ० नेबेल मॉन्ट्री अक्स)।

—:o:—

टर्नेरा (Turnera)

(डैमियाना)

अधिक सहवास से आये स्नायु-दौर्बल्य में लाभदायक है; नपुंसकता। स्नायु-शिथिलता के कारण जननेन्द्रियों की दुर्बलता। वृद्ध लोगों में पेशाब रुकना। जीर्ण मूत्राशय-ग्रन्थि स्राव। गुर्दों का और मूत्राशय का नजला। स्त्रियों की काम वासना नष्ट। युवा लड़कियों में प्राकृतिक रूप से मासिक स्राव प्रस्तुत करने के लिए।

मात्रा—अरिष्ट और तरल रस—१० से ४० बूँद की मात्रा में।

टुसिलैगो पेटासाइट्स (Tussilago Petasites)

(बटर-बर)

मूत्रयन्त्रों पर कुछ प्रभाव रखती है, अतः सुजाक में लाभदायक है। आमाशय द्वार के रोग।

मूत्र—मूत्रमार्ग में रेंगन।

पुरुष—सुजाक हल्का, पीला, गाढ़ा स्राव। लिंगोत्थान, साथ में मूत्र मार्ग में रेंगन। शुक्ररज्जु में दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : टुसिलैगो फ्रैग्रेन्स (पाकाशय द्वार में दर्द, रक्ताधिक्य और मोटापन); टुसिलैगो फारफारा (खाँसी); फुफ्फुसीय क्षय रोग में बीच-बीच में देने वाली औषधि। (ट्युबरक्युलीनम देखिए)।

मात्रा—अरिष्ट।

उपास टीण्टे (Upas Tiente)

(उपास-ट्री स्ट्रिकनोस टीण्टे)

यह बलात् संकोचन, ताण्डव रोग और श्वास रोग उत्पन्न करती है।

सिर—मानसिक काम करने की इच्छा न रहना। चिड़चिड़ापन। मस्तिष्क की गहराई में मन्द दर्द।

आँखें—चक्षु प्रदाह के साथ आँखों में और उनके गढ़ों में दर्द। निस्तेज धँसी हुई आँखें। बिलनी निकलना।

मुँह—होंठों पर मोटा दाद। जबान पर जलन। मुँह में खपची गड़ने जैसा दर्द। (नाइट्रि० एसिड)।

पुरुष—काम इच्छा अधिक, शक्तिहीनता के साथ। मन्द पीठ दर्द, मानो अधिक मैथुन किया हो।

सीना—पूरी दाहिनी तरफ के फुफ्फुस में जिगर की तरफ कोंचन दर्द जिससे साँस रुके। और धड़कन, पेट में भारीपन।

चर्म—हाथ और पैर सुन्न। नाखून सूजे हों; नाखून की जड़ें खुजलायें और लाल हों।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये: उपास ऐंटियारिस—रेजिन्स एक्युलेशन ऑफ एण्टियारस टॉक्सिकेरिया (पेशी मण्डल के लिए एक घोर विषैली वस्तु। यह ऐच्छिक पेशियों की क्रिया को और हृदय की पेशियों को बिना किसी आक्षेप के स्थगित कर देती है। जावा देश में तीर पर लगाने वाले विष के काम में आती है। (मेरेल)। (अन्तर यह है कि यह क्षणिक आक्षेप; घोर कै, दस्त, अधिक शिथिलता पैदा करती है)। ऑक्जैलिक एसिड, उपास दें जब ब्रायोनिया असफल हो। (आंत्र-ज्वर में)।

क्रियानाशक: कुरारी।

मात्रा—२ से ६ शक्ति।

युरेनियस नाइट्रिकम (Uranium Nitricum)

(नाइट्रेट ऑफ युरेनियम)

मधुमेह उत्पन्न करती है और मूत्र की मात्रा बढ़ाती है। यह जाना हुआ है कि यह गुर्दा प्रदाह, मूत्रमेह, जिगर की खराबी, रक्तचापाधिक्य और शोथ रोग उत्पन्न करती है। इसका प्रमुख चिकित्सा संकेत है: बहुत दुबलापन, दौर्बल्य और जलोदर तथा सर्वांग शोथ की सम्भावना। पीठ दर्द और मासिक-धर्म देर से होना। श्लैष्मिक झिल्ली और चर्म का सूखापन।

सिर—बदमिजाज, मन्द, भारी दर्द। नथने दर्दीले, साथ में मवादी, तीखा स्राव। मानसिक उदासी।

आँख—पलक सूजे और चिपके हुए, बिलनी।

आमाशय—अधिक प्यास; मिचली; कै। प्रचण्ड भूख, खाने के बाद वायु संचयता। पाकाशयिक द्वार के क्षेत्र में छेदन दर्द। पाकाशयिक और आड़ी मलनली के घाव। जलन पीड़ा। उदर फूला हुआ। वायु जो लाइकोपोडियम से कुछ कम हो।

मूत्र—अधिक मात्रा में अधिक मूत्रस्राव। धार का रुक-रुक कर बहना। मूत्रमेह। दुबलापन और पेट का तनाव। मूत्रमार्ग में जलन; अधिक तेजाबी मूत्र के साथ। बिना पीड़ा के पेशाब न रोक सके। अनैच्छिक मूत्रस्राव। (मूलीन ऑयल)।

पुरुष—पूर्ण नपुन्सकता, रात में अनैच्छिक वीर्य-स्खलन के साथ। लिंग ठण्डा, ढीला और पसीनेदार।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए। सिजिजियम, फास्फो० एसिड; लैक्टि० एसिड, आर्जेण्टम नाइट्रि०, कैलिबाइ क्रोमि०; आर्से०, फ्लोरिडजिन (एक शक्कर तत्व जो सेब और दूसरे फलों के पेड़ों की जड़ों की छाल से निकाला जाता है। मूत्रमेह और जिगर का चर्बीलापन सविराम ज्वर उत्पन्न करती है। मात्रा प्रतिदिन १५ ग्रेन। फ्लोरिजिन से मधुमेह होता है। रक्त में कोई शर्कराधिक्य नहीं होती। यह गुर्दों के स्राविक अन्तस्त्वकों को अलब्यूमेन की चीनी में परिवर्तित करने के लिए बाध्य करती है। रक्त शर्करा में कोई वृद्धि नहीं होती।

मात्रा—२ विचूर्ण।

यूरिया (Urea)

(कार्बेमाइड)

क्षयरोग। गाँठें। ग्रन्थि-वृद्धि। वृक्क-शोथ, सर्व नशीली अवस्था के साथ। गठिया युक्त अकौता। अलब्युमेन वाला मूत्र, मूत्रमेह; यूरिया युक्त मूत्र। मूत्र पतला और हलका। शोथ की चिकित्सा में जनप्रिय मूत्रल औषधि। हर ६ घण्टे पर १० ग्रेन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: यूरिक एसिड (गठिया, गठियायुक्त अकौता, वात रोग, मेदार्बुद); युरिनस (मुँहासे, फुड़िया, शीताद रोग, शोथ)। **अर्टिका**, **ट्युबरक्युलि०**, **थाइरॉयडि०**।

अर्टिका युरेन्स (Urtica Urens)

(स्टिंगिंग-नेटल)

प्रसव के बाद स्तनों में दूध का अभाव और शरीर में अश्मरी का निर्माण। श्लैष्मिक झिल्ली से अधिक स्राव। अनैच्छिक मूत्रस्राव और जुलपित्ती। तिल्ली के रोग। घोंघे खाने के बुरे असर को मारती है। प्रति वर्ष उसी समय रोग का वापस आना। गठिया और मूत्र अम्ल की गड़बड़ी। निष्कासन क्रिया को प्रोत्साहित करती है।

वात रोग जो जुलपित्ती की तरह दोनों से सम्बन्धित हो। स्नायु प्रदाह।

सिर—चक्कर, प्लीहा पीड़ा के साथ सिर दर्द।

उदर—दस्त, जीर्ण वृहत् आंत्रिक बाधा जिसमें अधिक श्लैष्मिक स्राव की विशेषता हो।

पुरुष—अण्डकोष की खाज, रात भर खाज से जागा करे, अण्ड फूला हो।

स्त्री—दूध कम उतरना। गर्भाशय से रक्तस्राव। तेजाबी और काटनेवाला प्रदर। योनि घुण्डी की प्रबल खाज, चुभन, खुजली और शोथ के साथ। स्तन्य काल समाप्त करने के बाद दूध स्राव को बन्द करती है। स्तनों का अधिक फूलना।

अंग—तीव्र गठिया; त्रिकास्थि में दर्द, टखने और कलाई में दर्द।

चर्म—खुजली वाले चकत्ते। जुलपित्ती, जलन, गरमी, सुरसुरी के साथ, प्रचण्ड खाज। जुलपित्ती दब जाने का दुष्परिणाम। वात रोग और जुलपित्ती बारी-बारी। केवल चर्म पर जलन हो। गुल्मीय पित्ती रोग। (बोवि०)। लाल चकत्ते; दाने, अधिक जलन और चुभन के साथ। जल जाना और झुलस जाना। छोटी माता, चेचक। (डल्का०)। हृद् स्नायविक प्रदाह शोथ। योनि-ओष्ठों पर मोटा दाद; जलन, अण्डकोष पर खुजली और चुभन।

ज्वर—उदर पर दर्दीलापन के साथ बिस्तर में गरम लगना। गठिया का ज्वर। गरम देश का ज्वर।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: बर्फीली हवा से, पानी से, ठंडी तर-हवा से, छूने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: मेडूसा; नैट्र० म्यूर०; लैक कैना०, रिसिन (स्तन स्राव की कमी); बाम्बिक्स रस०, एपिस०, क्लोरल०, एस्टैक०, पल्स० (जुलपित्ती); बोलेटस लुरिडम और एनाकार्डि० (क्षयरोगी जुलपित्ती); लाइकोपो० और हेडियोमा (यूरिक अम्ल की बाधायें), फॉर्मिका।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

अस्निया बारबाटा (Usnea Barbata)

(टी-मॉस)

कुछ प्रकार के प्रदाहिक सिर दर्दों की औषधि, लू लगना।

सिर—फटन संवेदन, मानो कनपटी फट जायगी या आँखें अपने गढ़ों से बाहर निकल जायेंगी।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: ग्लोनोइन, बेलाडो०।

मात्रा—अरिष्ट, बूँदों की मात्रा में।

अस्टिलैगो मेडिस (Ustilago Maydis)

(कॉर्न-स्मट)

गर्भाशय का थुलथुलापन। रक्तस्राव। कई स्थानों में रक्ताधिक्य, खासकर वयःसन्धिकाल में। खुरण्ड रोग। (वियोला ट्रि०)।

सिर—बहुत उदासी। भरापन। मासिक धर्म की गड़बड़ी से स्नायविक सिर दर्द। अधिक जलस्राव के साथ आँतों के ढेलों में टीस।

पुरुष—हस्तमैथुन को न रोक सकने वाली इच्छा। वीर्य स्राव, रसिकता के स्वप्नों के साथ वीर्यपात और हस्तमैथुन की अदम्य इच्छा। कटि क्षेत्र में मन्द पीड़ा, घोर निराशा और मानसिक चिड़चिड़ापन के साथ।

स्त्री – असामयिक, क्रमभ्रष्ट मासिक-धर्म। डिम्बाशय जलें, दर्द करें, फूलें। गर्भपात के बाद अधिक मासिक स्राव, जरा-सी उत्तेजना से रक्त स्राव, गाढ़ा लाल, कुछ थक्केदार रक्त। वयःसन्धिकाल में अधिक मासिक स्राव। (कैल्के० कार्बं०, लैके०)। गहरे रङ्ग का खून, थक्केदार काला तारदार, पसीजा करे। गर्भाशय का ढीला पड़ना। गर्भाशय की गरदन से खून बहना प्रसव के बाद रक्तस्राव। अधिक प्रसव स्राव।

ज्वर—पसीना अधिक। नाड़ी पहले तेज, फिर मन्द धड़कन।

अङ्ग—पैशिक दौर्बल्य, पीठ भर में खौलते पानी जैसा संवेदन। संकुचित और प्रसारित हरकत, ताण्डव रोग। पैशिक संकोचन, खासकर निचले अंगों का।

चर्म—बाल झड़ना। छोटी फुन्सियों की प्रवृत्ति। चर्म सूखा, अकौता, ताँबे के रंग के चकत्ते। अति खाज, धूप से जलना। अपरस (खाने और लगाने को।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : सिकेल०; सैबाइना, जिया इटैलिका (चर्म रोग को अच्छा करने का गुण रखती है, खासकर अपरस अकौता में। स्नान करने का पागलपन। आत्महत्या की भावना, खासकर डूबकर मरने की। जल्दी ही क्रोधित हो उठे। भूख अधिक, अधिक खाना, बीच-बीच में बार-बार खाने से घृणा। मुँह में पानी भरना, मिचली, कै, मद्पान से कम ही।

मात्रा – अरिष्ट से ३ शक्ति।

युवा उर्सी (Uva Ursi)

(बियर-बेरी)

मूत्र लक्षण महत्त्व के हैं। मूत्राशय प्रदाह। खूनी पेशाब के साथ जरायु से रक्तस्राव। जीर्ण मूत्राशयी उत्तेजना; साथ में दर्द, कूँथन और नजला। चिकने मूत्र-

स्खलन के बाद जलन। मूत्र-पिण्ड आवरण का प्रदाह। श्वास कष्ट, मिचली, कै, नाड़ी छोटी और क्रमभ्रष्ट, नील रोग। बिना खाजवाली जुलपित्ती।

मूत्राशय—मूत्राशय के तीव्र आक्षेप के साथ बहुधा मूत्र-स्खलन इच्छा, जलन और फटन दर्द। मूत्र में खून, मवाद और अधिक चिमड़ा श्लेष्मा रहे साथ में बड़े-बड़े थक्के हों। अनैच्छिक हरा मूत्र। कष्टदायक मूत्रकृच्छ्र।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : **आब्युटिन** : (युवा की एक रवादार शर्करा, जो कैल्मिया, गॉल्थेरिया और एरियासी वंश की अन्य साधारण वस्तुओं में भी पाई जाती है। चीनी के साथ ३ से ८ ग्रेन की मात्रा में, दिन में तीन बार देना चाहिए। मूत्र कीटाणु नाशक और मूत्र वृद्धि के लिए व्यवहार की जाती है।) **आर्कटॉस फाइलॉस मैनजेनिटा** (गुर्दों और जननेन्द्रिय पर काम करती है। प्रमेह, मूत्राशयिक, नजला, मूत्रमेह। अधिक मासिक स्राव : पत्तियों का अरिष्ट बनाकर प्रयोग करते हैं), **वैक्सिनम मॉइर्टिलस**—हकलबेरीज—(पेचिश, आंत्रिक ज्वर, आँतों को कीटाणु रहित रखती है और दूषित रोगाणुओं को फिर से शरीर में अनपच होने और संक्रमण होने से रोकती है)।

मात्रा—अरिष्ट ५ से ३० बूँद। मूत्रपिण्ड आवरण के प्रदाह में पत्तियों का विचूर्ण देते हैं।

वैक्सिनिनम (Vaccininum)

(नौसोड—फ्रॉम वैक्सि मैटर)

चेचक के रोगी के दानों के रस से बना हुआ टीका प्रचण्ड जीर्णता की वह विषैली रोगात्मक अवस्था उत्पन्न कर सकता है जिसको बरनेट ने वैक्सिनोसिस के नाम से पुकारा है, ये लक्षण वैसे ही हैं जैसे हैनिमैन के साइकोसिस के होते हैं। स्नायुशूल, कठोर चर्म स्फोट, कम्प, अधिक वायुसंचयता और पेट फूलने के साथ अनपच रोग। (क्लार्क) कुकुर खाँसी।

मन—चिड़चिड़ापन, अधीर। अप्रसन्न, स्नायविक उत्तेजना।

सिर—अगले भाग का दर्द। माथा और आँखें फटी मालूम हों। पलक सूजे हुए और लाल।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : चेचक के टीका के विष को नाश करने वाली औषधियाँ; वैरियोलिन, मैलाड्रिनम; थूजा०, कठिन घातक रोगों की चिकित्सा में एक शक्तिशाली सहायक औषधि।

मात्रा—६ से २०० शक्ति।

वैलेरियाना (Valeriana)

(वैलेरियन)

गुल्म वायु (हिस्टीरिया), अति स्नायविकता, स्नायविक रोग; जब स्पष्ट रूप से अच्छी तरह चुनी हुई औषधि असफल हो, गुल्मवायु, आक्षेप और उससे सम्बन्धित रोग। गुल्मवायु युक्त पेट में वायु संचित, बादी भरना।

मन—परिवर्तनशील भाव। हल्कापन जान पड़े; मानो हवा में तैर रहा हो; अति स्नायविकता। (स्टैफि०)। रात में दृष्टि-भ्रम। चिड़चिड़ापन। कम्प।

सिर—बहुत ठण्डा, माथे पर दाब। नशीलापन।

कान—बाहरी हवा लगने से या ठण्डक से कान-पीड़ा हो। स्नायविक आवाजें; प्रचण्ड स्नायविक उत्तेजना।

गला—गले के नीचे धागा लटकता मालूम पड़े। गले में मिचली मालूम हो। गलकोष संकुचित मालूम हो।

आमाशय—मिचली के साथ भूख। घृणित डकार। तेजाबी पानी ऊपर आने के साथ जल-डकार। गशी के साथ मिचली। दूध पीने के बाद बच्चा फटा दूध अधिक मात्रा में कै करे।

उदर—फूला हुआ। गुल्मवायु, ऐंठन। पतला, पानी-सा दस्त, जमे दूध के ढोकों के साथ, बच्चों के तेज चिल्ला उठने के साथ। हरियालीदार, ढेला बँधा, खूनी मल। खाने के बाद और बिस्तर में रात के समय आँतों में झटके आयें।

साँस-यन्त्र—सोने के बाद दम घुटे। आक्षेपिक दमा, पेट के ऊपरी मेहराबदार झिल्ली में आक्षेप।

स्त्री—मासिक धर्म देर में और कम मात्रा में (पल्से०)।

अङ्ग—अङ्गों में वात पीड़ा। लगातार झटके। भारीपन। गृध्रसी। खड़े होने से और फर्श पर आराम करने में दर्द बढ़े। (बेलाडो०) टहलने से कम हो। बैठने से एड़ी में दर्द हो।

नींद—औंघाई, प्रति रात में खुजली और पेशिक झटकों के साथ। जागने पर अधिक हो।

ज्वर—देर तक, टिकाऊ गरमी, अकसर चेहरे पर पसीने के साथ। गरमी अधिक व्यापक। बर्फीली ठण्डक का सवेदन। (हेलोडर्मा, कैम्फो०, एबाज कैना०,)।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : एसाफि०, इग्ने०, क्रोक०, कैस्टोरि० एमो०, वैलेरि० (स्नायुशूल में, पाकाशय की गड़बड़ी में और अधिक स्नायविक उत्तेजना

में); अनिद्रा, खासकर गर्भावस्था और मासिकस्राव के साथ, वृद्धावस्था में शिथिलता। दुर्बल काय, स्नायविक गुल्मवायु पीड़ित रोगी।

मात्रा—अरिष्ट।

वैनेडियम (Vanadium)

(दी मेटल)

इसका काम ओषजन को शरीर और रक्त में पहुँचाने का है और अपनी उपस्थिति में शरीर की रासायनिक क्रिया का सचालन करना है, इसलिए यह क्षीणता रोग में उपयोगी है। यह रक्त में रक्त-रंजक पित्त को बढ़ाती है और शरीर के विषैले रसों में ओषजन को पचाकर उनको दोषरहित कर देती है। इसके अतिरिक्त यह अणुजीवनाशक कोषों को बढ़ाती और शक्ति देती है और रोगजनक जीवाणुओं का नाश करती है।

यह जिगर और धमनियों की क्षीणता की औषधि है। क्षुधाहीनता और पाकाशयिक आंत्रिक उत्तेजना, मूत्र में अलब्यूमेन, थक्के और रक्त आना। कम्प, चक्कर, गुल्म वायु और शोकग्रस्त; आँखों का स्नायविक प्रदाह और अन्धापन। रक्तहीनता और दुबलापन। खाँसी सूखी, उत्तेजनीय और आक्षेपिक, कभी-कभी रक्तस्राव के साथ। नाक, आँख, गले में उत्तेजना। क्षय रोग, जीर्ण वात रोग और मूत्रमेह। पाचन-यन्त्र पर और क्षय रोग के आरम्भ में काम करती है। धमनी का कड़ापन, ऐसी संवेदना जैसे हृदय दब रहा हो और रक्त के लिए मुख्य धमनी में स्थान नहीं है। पूरे सीने पर व्याकुल दाब। हृदय में चर्बी आना। क्षीण अवस्थायें, मस्तिष्क का मुलायम पड़ना। मस्तिष्क और जिगर की धमनियों का अर्बुद।

तुलना कीजिये : आर्से०; फॉस०; एमोनि० वैनेडि (जिगर का क्षय)।

मात्रा—६-१२ शक्ति। इस औषधि का उत्तम रूप वैनेडियेट ऑफ सोडा है। २ मिलीग्राम प्रतिदिन खिलाना चाहिए।

वैनिला-प्लैनिफोलिया (Vanilla-Planifolia)

(वैनिला)

ओक विष की तरह चर्म में उत्तेजना लाता है; यह अवस्था कभी-कभी बीजों के छूने से हो जाती है और वैनिला का एसेंस मिला हुआ बाल धोने के मसाले के बाहरी व्यवहार से हो जाती है। लोगों की भावना है कि वैनिला मस्तिष्क और

काम-शक्ति को बढ़ाती है। नकली वैनिला का सत् व्यवहार मत कीजिए। वैनिला के कारखाने में काम करनेवालों को अनेक प्रकार के स्नायुविकार और रक्तसंचार बाधायें हो जाती हैं। मासिक स्राव को क्रमयुक्त बनाने वाली और कामोद्दीपक औषधि है। मासिक धर्म देर तक रहे।

मात्रा—वैनिला, ६ से ३० शक्ति, चर्म रोगों में लाभदायक पाई गई है।

वैरियोलिनम (Variolinum)

(लिम्फ फ्रॉम स्मॉल-पॉक्स पस्ट्यूल)

"आन्तरिक विधि से चेचक का टीका लगाने" के काम में आती है। चेचक से बचाव के लिए और उसकी अवस्था सुधारने और अच्छा होने में सहायता देती है।

सिर—चेचक निकलने की दूषित भावना। बहरापन। सिर के पिछले भाग में दर्द। आँखों के ढेले सूजे हों।

साँस-यन्त्र—संकुचित साँस। गला बन्द मालूम पड़े। गाढ़े, चिमड़े, सूनी बलगम के साथ खाँसी। गले की दाहिनी तरफ ढोंके जैसा संवेदन।

अंग—तीव्र ऐंठन वाला पीठ दर्द। टाँगों में टीस। बेचैनी के साथ सारे शरीर में थकावट। कलाई में दर्द। दर्द पीठ से उदर में जगह बदले।

ज्वर—गरम ज्वर, घोर फैलने वाली गरमी। अधिक दुर्गन्धित पसीना।

चर्म—गरम, सूखा। रसदाने निकलना। वत्तुलाकार विसर्पिका।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : वेक्सिन (वही प्रभाव)। मैलाण्ड्रिनम—घोड़े की चर्बी का रोगग्रस्त पदार्थ (चेचक को रोकने वाली और चेचक के टीके के बुरे असर को दूर करती है; जीर्ण अकौता जो टीका लगाने के बाद निकले)।

मात्रा—६ से ३० शक्ति।

वेरेट्रम एल्बम (Veratrum Album)

(ह्वाइट हेलेबोर)

इस औषधि से, अति ठंडक, नीलापन और कमजोरी के साथ पतनावस्था का सम्पूर्ण चित्र दीख पड़ता है। शल्य-क्रिया के बाद का धक्का, साथ में माथे पर ठंडा पसीना, पीला चेहरा; तेज, कमजोर नाड़ी। प्रायः सभी लक्षणों के साथ माथे पर ठण्डा पसीना होना। कै, ओकाई और अंगों में मरोड़। अधिक, तीव्र ओकाई और कै इस औषधि का विशेष लक्षण है। शल्य आघात। सभी श्लैष्मिक सतहों का

अधिक सूखापन। "मल भक्षण" प्रचण्ड उन्माद और मौन; बात करने से घृणा; बारी-बारी से।

मन—मूर्च्छित अवस्था और उन्माद के साथ शोकग्रस्त। विचारहीन अवस्था में बैठा रहे; किसी चीज पर ध्यान न जाये; मौन उदासीन। प्रचण्ड भड़कन, चीखता है, कोसता है। प्रसवकालीन उन्माद। घर से निकलकर व्यर्थ इधर-उधर घूमना। आने वाली, काल्पनिक मुसीबत का भ्रम। उन्माद; चीजों को काटने और फाड़ने की प्रबल इच्छा (टैरेण्टु०) दर्द के आक्रमण, साथ में सन्निपात जो पागल बना दे। कोसना, रात में चिल्लाना।

सिर—चेहरा सिकुड़ा हुआ। माथे पर ठण्डा पसीना। जैसे चाँद पर बरफ का ढोंका रखा है; ऐसा मालूम हो। मिचली, कै, दस्त, पीले चेहरे के साथ सिर दर्द। गरदन इतनी कमजोर कि सिर को न सम्हाल सके।

आँखें—गहरे रंग की चक्रों से घिरी। घूरती; ऊपर उठी हों। बिना चमक। लाली के साथ जल बहना। पलक सूखे, भारी।

चेहरा—मुरझाया हुआ। नाक का सिरा और चेहरा बरफ की तरह ठण्डा। नाक और अधिक नोकीली हो जाये। गालों, कनपटी और आँखों में फटन जैसा दर्द। चेहरा बहुत पीला, नीला, ठंडा, शिथिल।

मुँह—जबान, ठण्डी, पीली, पिपिरमिंट जैसा ठण्डा। बीच में सूखी जो पानी से कम न हो। नमकीन लार। दाँत दर्द, दाँत भारी लगे जैसे सीसा भर दिया गया हो।

आमाशय—अति भूख। ठण्डे पानी की प्यास, निगलते ही कै हो जाये। गरम भोजन से घृणा। हिचकी। अधिक मात्रा में कै और मिचली; पीने से और जरा-सा हिलने से अधिक हो। फल, रसदार और ठण्डी चीजों की, बरफ की, नमक की इच्छा हो। पेट के गड्ढे में कष्ट। कै करने के बाद बहुत कमजोरी आये। जीर्ण, भोजन की कै के साथ अति उत्तेजना।

उदर—कमजोरी और खालीपन। पेट और उदर में ठण्डापन। मल त्यागने के पहले उदर में दर्द। ऐंठन, उदर और टाँगों में गाँठें। ऐसा जान पड़े कि आँतें बाहर निकलेंगी। (नक्स वो०) उदर दाब से कोमल, फूला, घोर शूल।

मलाशय—मलाशय की कार्यहीनता के कारण कब्ज, गरमी और सिर दर्द के साथ। छोटे बच्चों का कब्ज और जब बहुत ठण्डे मौसम के कारण हो। मल बड़ा, बहुत काँखने के साथ जब तक शिथिल न हो जाये, साथ में ठंडा पसीना। दस्त, बहुत दर्द हो, पानी-सा, अधिक और तेजी से निकले, बाद में बहुत शिथिलता। दूषित और साधारण हैजा जब अधिक ओकाई के साथ कै हो।

साँस-यन्त्र—फटी, कमजोर आवाज। सीने में खड़खड़ाहट। वायुनलिका में बहुत बलगम जो खखारा न जा सके। खड़खड़ाहट। वृद्ध लोगों में जीर्ण वायुनली का प्रदाह (हिपोजेनिन)। खाँसने से कुत्ता भौंकने जैसी आवाज हो, पेट की खराबी से खाँसी, बाद में वायु-डकार, गरम कमरे से बढ़े। खोखली खाँसी, गले के नीचे गुद-गुदी, नीले चेहरे के साथ। पीने से, खासकर ठंडे पानी के पीने से खाँसी उठे, खाँसने से पेशाब हो जाये। ठंडी हवा से गरम कमरे में आने पर खाँसी आवे। (ब्रायोनिया)।

दिल—तेज, आवाज वाले, साँस के साथ और चिन्ता के साथ धड़कन। नाड़ी क्रमभ्रष्ट, दुर्बल। तम्बाकू चबाने से दिल की पीड़ा। कुछ जिगर की रुकावट के साथ कमजोर लोगों में सविराम हृदय-क्रिया। होमियोपैथिक मात्रा में अति उत्तम हृदय शक्तिवर्द्धक औषधि। (जे. एस. मिचेल)।

स्त्री— मासिक धर्म समय से बहुत पहले; अधिक मात्रा में और शिथिलता पैदा करने वाला। कष्टदायक मासिक धर्म, ठंडापन; ओकाई ठंडे पसीने के साथ। जरा-से परिश्रम से गशी आ जाये। मासिक धर्म के पहले कामोन्माद।

अंग—जोड़ों का दर्दीलापन और कोमलपन। बिजली के धक्के की तरह गृध्रसी। पिंडली में ऐंठन। गरदन के नाड़ी जाल में स्नायुशूल; बाहें फूली हुईं, ठंडी, पक्षाघात-ग्रस्त मालूम हों।

चर्म—नीला, ठंडा, लसीला, चुरचुरा, मुर्दे जैसा ठंडा। ठंडा पसीना। हाथ और पैर के चर्म पर झुर्रियाँ।

ज्वर—अधिक शीत और प्यास के साथ कम्प।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में, तर, ठंडा मौसम। घटना : टहलने और निम्न गरमी से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : वेरेट्रिनम—ऐन एलकेलॉयड फ्रॉम सीड्स ऑफ सैबाडिला—(विद्युत पीड़ा पेशियों में विद्युत धक्के, सौत्रिक फड़कन), कोलस टेरे-पिना (पिंडली में ऐंठन), कैम्फा०, क्युप्र०, आर्से०; क्युप्रम आर्से० (सविराम, ठंडा, लसीला पसीना), नर्सिसस पेटिकस (आँतों में अधिक चुभन, कटन पीड़ा के साथ पाकाशयिक-आंत्रिक प्रदाह। गशी, कम्प, ठंडे अंग, छोटी, क्रमहीन नाड़ी), ट्राइकोसंन्थेस—(दस्त, जिगर में दर्द, हरे मल त्याग के बाद चक्कर), एगैरिक०, एमेटिक (चक्कर, बरफ की तरह ठंडे पानी की इच्छा; पेट में जलन, दर्द), एगै-रिक० कैलॉयड्स (हैजा, पेट में ऐंठन, ठंडे हाथ-पैर, पेशाब दबा), वेरैट्रिन (रक्त-वाहिनियों का तनाव बढ़ना। यह उनको ढीला करती है और शरीर विष को चर्म, गुर्दों और जिगर द्वारा बाहर निकालती है)।

मात्रा—३ से ३० शक्ति। दस्त में ६ से नीचे मत दीजिये।

वेरेट्रम विरिडि (Veratrum Viride)

(ह्वाइट अमेरिकन हेलेबोर)

हृत्कोषीय तथा कर्ण गह्वर में कम्प के आक्षेपिक आक्रमण। हृदय के सिकुड़ने और फैलने की क्रिया चाप को घटाती है। रक्त-संचयता, खासकर फुफ्फुस में; मस्तिष्क के तल में, मिचली और कै के साथ। फड़कन और आक्षेप खासकर अधिक रक्त वाले मोटे-तगड़े लोगों के लिये लाभदायक है। अति शिथिलता। हृदय का वात रोग। फूला, सुर्ख चेहरा। प्रचण्ड प्रलाप। लू लगने का दुष्परिणाम। गलनली प्रदाह (फैरिंगटन)। जीवाणु (डिप्लोकॉक्कस) ग्रस्त फुफ्फुसीय प्रदाह में वेरेट्रम विरिडि शरीर के रोगजनक जीवाणुओं को ७० से १०६ प्र० श० नाश करने की शक्ति रखती है। न्यूमोनिया में जिगर की रक्त-संचयता और आरम्भिक प्रदाह की अवस्था में लाभदायक है। घटने-बढ़ने वाला ताप। चिकित्सा-क्षेत्र में यह देखा गया है कि संकोचन, ध्रॉम्सन्स रोग, अँगुलियों और अँगूठों का फड़कना और पेशियों का ढीलापन युक्त पक्षाघात में ऐसे लक्षण देखे जाते हैं जो पैशिक तन्तुओं पर वेरेट्रम विरिडि उत्पन्न करती है। (ए. इ. हिन्सडेल, एम. डी.)।

मन—झगड़ालू और बकवादी।

सिर—अति रक्त संचयता, संन्यास रोग की अवस्था। सिर गरम, आँखें रक्त-मय। फूला, सुर्ख चेहरा। भावहीन चेहरा। सिर सिकुड़ा, पुतली फैली, 'द्वि-दृष्टि'। मस्तिष्क प्रदाह। दर्द गरदन की जड़ से उठे; सिर ऊपर न उठा सके। लू लगना, सिर भरा, धमनी थरथराती। (बेला०, ग्लोनो० अस्निया)। चेहरा सुर्ख। चेहरों की पेशियों की आक्षेपिक फड़कन। (एगेरिकस)। मिचली के साथ चक्कर।

जबान—सफेद या पीली, बीच में नीचे तक लाल लकीर। झुलसा जान पड़े। लार अधिक।

आमाशय—प्यास। मिचली और कै। जरा-सा भोजन या तरल पदार्थ आमाशय में जाते ही कै होकर निकल जाये। संकुचन दर्द, गरम चीज पीने से अधिक हो। हिचकी अधिक और दर्द वाली, गलनली में झटकन के साथ। गलनली और पेट में जलन।

उदर—चोटीलापन के साथ पेडू के ऊपर दर्द।

साँस-यन्त्र—फुफ्फुस की सूजन। कठिन साँस। सीने पर भारी बोझ जैसा। फुफ्फुस प्रदाह, पेट में गशी जैसी संवेदना और तीव्र सूजन के साथ। काली-खाँसी। मूत्ररोध के साथ, मासिक धर्म के दिखाई पड़ने के पहले शूल।

मूत्र—गँदली तलछट के साथ थोड़ी मात्रा में।

स्त्री—गर्भाशय का मुँह कड़ा हो। (बेला०, जेल्से०)। प्रसूति ज्वर। सिर में रक्तसंचयता के साथ मासिक-धर्म का दब जाना। मूत्र-रोध के साथ मासिक-धर्म के शुरू होने के पहले शूल।

दिल – नाड़ी धीमी, मुलायम, कमजोर, क्रमभ्रष्ट, सविराम। तेज नाड़ी, मन्द तनाव। (टेबेकम; डिजि०)। हृदय-क्षेत्र में लगातार, मन्द, जलन के साथ दर्द। हृदय कपाटों के रोग। सारे शरीर में नाड़ी की टपक मालूम हो, खासकर दाहिनी जाँघ में।

अंग—कंधों और गरदन के पीछे टीस, दर्द। जोड़ों और पेशियों में तीव्र दर्द। अंगों में तेज बिजली की तरह धक्के। आक्षेपिक फड़कन। तीव्र वात रोग। ज्वर।

चर्म—विसर्प रोग, मस्तिष्क के लक्षणों के साथ। अयनिका। कई स्थानों में खुजली। गरम पसीना।

ज्वर – शाम को अधिक गरमी और सुबह को बहुत ही कम गरमी। ज्वर जहाँ ताप में अधिक अन्तर रहता हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : जेल्से०; बैप्टि०, बेलो०, एकोना०; फेरम फॉस०। कार्बन के विष को मारती है—तरल रस २०–४० बूँद।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

वरबैस्कम (Verbascum)

(मुलीन)

करोटि के पाँचवीं जोड़ा स्नायु को निचले जबड़े में जाने वाली स्नायु पर, कान पर; साँस पथ पर, मूत्राशय पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है; शूल के साथ सर्दी और जुकाम। चेहरे की स्नायविकता; वायुनलिका और मूत्र-यन्त्रों की उत्तेजना को शान्त करती है।

चेहरा—स्नायुशूल जिसमें गण्डास्थि युगलक प्रवर्द्धन, कनपटी व जबड़े की सीध का स्थान और कान सभी सम्मिलित हों। (मेनिऐन्थ०)। खासकर बायीं तरफ का कान, साथ में आँखों से पानी बहना। जुकाम जैसा लगे कि नाक का क्षेत्र चिमटी से कुचला गया हो। बोलने से, छींकने से और ताप परिवर्तन से दर्द बढ़े, दाँत दबाने से भी रोग अधिक हो। दर्द चुभन के साथ उठे, जरा भी हरकत से शुरू हो, हर रोज एक ही समय सुबह व तीसरे पहर दर्द उठे।

कान—कर्णशूल, रुकावट की संवेदना के साथ। बहरापन। बाहरी कान सूखा, पपड़ीदार। (बाहर लगाने के लिये भी)।

उदर—दर्द गहराई में नीचे तक उतरे जिससे गुदा की संकोचक पेशी में सिकुड़न हो।

मलाशय—कई बार पाखाना हो, नाभि क्षेत्र में ऐंठन के साथ। खूनी बवासीर, सूजा हुआ, कड़े मल के साथ। सूजन और दर्दीली बवासीर।

साँस-यन्त्र—फटी आवाज, गहरी, कड़ी आवाज, बिगुल जैसी बोली, मोटी तेज आवाज। खाँसी, रात को बढ़े। दमा गलकोष में दर्द, सोते में खाँसी आवे।

मूत्र—लगातार टपका करे। अनैच्छिक मूत्रस्राव। पेशाब करने में जलन। मूत्राशय में दाब के साथ अधिक पेशाब।

अंग—तलवों, दाहिने पैर और घुटनों में ऐंठन की तरह दर्द। निचले अङ्ग भारी जान पड़ें। अँगूठा सुन्न मालूम दे। बायें टखने में स्नायुशूल। निचले अङ्गों में दर्द और कड़ापन।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ताप परिवर्तन से, बोलने से; छींकने से, कस कर काटने से। निम्नदन्त स्नायु, ६ बजे सुबह से ४ बजे शाम तक।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रस ऐरोमे०, कॉस्टि; प्लैटिन०, स्फिगुरस (गण्डास्थि युगलक प्रवर्द्धन में दर्द)।

मात्रा—मुलीन का तेल (कान के दर्द में और कान के छेद की सूखी, पपड़ीदार अवस्था में। रात में या लेटने पर कष्टदायक खाँसी में भी, स्थानीय (बाहरी प्रयोग)। आंतरिक व्यवहार के लिए अरिष्ट और निचली शक्तियाँ) अनैच्छिक मूत्र-स्राव, ५ बूंद की मात्रा में रात और सुबह को खाना चाहिये।

वर्बीना (Verbena)

(ब्लू वरवेन)

चर्म और स्नायुमण्डल को प्रभावित करती है। स्नायविक मन्दता, कमजोरी, उत्तेजना और आक्षेप। कुचले जाने से बने घाव के रक्ताधिक्य को पचाती है और दर्द कम करती है। फफोलेदार विसर्प रोग। मन्द सूजन और सविराम ज्वर। ओक विष की औषधियों में से एक है। मिर्गी, अनिद्रा, मानसिक शिथिलता। मिर्गी में यह औषधि रोगी को मानसिक प्रफुल्लता देती है और कब्ज दूर करती है।

मात्रा—अरिष्ट की एक ही मात्रा। मिरगी में कुछ दिनों तक जारी रखनी चाहिए। डॉ० वैनियर (पैरिस) क्षय की चिकित्सा में पेशाब बढ़ाने के लिए वर्बीना का चाय के रूप में प्रयोग करते हैं।

वेस्पा क्रैब्रो (Vespa Crabro)

(लाइव वैस्प)

चर्म और स्त्रियों के लक्षण दर्शनीय हैं। कड़ापन का संवेदन। श्लैष्मिक झिल्ली की रक्तवाहिनी के तनाव-निर्मायक मण्डल के लक्षण।

चक्कर, चित्त लेटने से कम। गशी; सुन्न होना और अन्धापन। मिचली और कै, बाद में रेंगन। गनगनी पैर से ऊपर की तरफ आये। आँतों में ऐंठन, दर्द। ऊपर बाँह के दर्द के साथ काँख की ग्रन्थियों का फूलना। खुजली के साथ लेटने पर दबा हुआ पसीनायुक्त।

चेहरा—दर्द करे और फूला। पलकों की विसर्पयुक्त सूजन। अर्जुन रोग। घोर जलन, पीड़ा के साथ मुँह और गले का फूलना।

मूत्र—पेशाब करते समय जलन हो, खाज भी।

स्त्री—मासिक धर्म के पहले उदासी; दर्द, दाब और कब्ज। बायाँ डिम्बाशय विशेष रूप से रोगग्रस्त, अक्सर जलन के साथ पेशाब होना; त्रिकास्थि का दर्द ऊपर पीठ में जाए। गर्भाशय के बाहरी मुँह की चारों तरफ छिलन।

चर्म—अरुणिमा; घोर खाज, जलन। फुड़िया, चुभन और दर्दीलापन, सिरका से धोने से कम हो। चकत्ते, दाग और फूलन, साथ में जलन, चुभन और दर्दीलापन। अनेक प्रकार की अरुणिमा, सिर धोने से कष्ट कम हो।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : स्कार्पियो (लार अधिक, वक्रदृष्टि, अकड़न), एपिस०।

क्रियानाशक—सेम्परवाइनम टेक्टर; बाहरी व्यवहार।

मात्रा—३ से ३० शक्ति।

वाइबर्नम ओपुलस (Viburnum Opulus)

(हाई क्रैनबेरी)

ऐंठन की एक साधारण औषधि। पेड़ू के यन्त्रों का शूल। आन्तरिक जननेन्द्रिय की अत्यधिक चेतना। स्त्री लक्षण महत्त्वपूर्ण। अकसर गर्भपात को रोकती है। अप्राकृतिक प्रसव वेदना। आक्षेपिक और रक्त-संचयित अवस्थायें : जो डिम्बाशय या गर्भाशय बाधाओं पर निर्धारित हों।

सिर—चिड़चिड़ापन, चक्कर; आगे गिरता मालूम हो, कनपटी क्षेत्र में तीव्र पीड़ा। आँखों के ढेलों में दर्दीलापन।

आमाशय—लगातार मिचली, खाने से कम हो। भूख नदारद।

उदर—एकाएक ऐंठन और शूल। नाभि के क्षेत्र में दाब से कोमलता।

स्त्री—मासिक धर्म बहुत देर में, थोड़ी मात्रा में, कुछ घण्टों तक रहे, दुर्गन्धित, साथ में ऐंठन दर्द जो जाँघों के नीचे तक उतरे। (बेला०)। मासिक धर्म के पहले धँसन दर्द। डिम्बाशय क्षेत्र भारी और सूजा लगे। त्रिकास्थि और विटप देश में टीस, जाँघों की अगली पेशियों में दर्द के साथ। (जैन्थकजाइलम) आक्षेपिक और झिल्लीदार कष्टप्रद मासिक-धर्म। प्रदर छीलने वाला। जननेन्द्रिय में तीव्र पीड़ा और खाज; बैठने के प्रयास से गशी आवे। अक्सर और गर्भाधान के शुरू ही में गर्भपात, जाहिर में बाँझपन मालूम हो। पीठ से कमर तक और गर्भाशय तक दर्द, बहुत सबेरे अधिक हो।

मूत्र—अक्सर पेशाब लगना। अधिक मात्रा, पीला, हल्के रङ्ग का मूत्र। खाँसते या टहलते ही छलक पड़े।

मलाशय—मल बड़ा और कड़ा, गुदा में दर्द और मलाशय में कटन के साथ।

अंग—गरदन की जड़ में कड़ावन, तनाव। ऐसा लगे कि पीठ टूट जायेगी। त्रिकास्थि का पीठ दर्द। निचले अंग भारी और कमजोर।

घटना-बढ़ना—तुलना कीजिए : वाइबर्नम प्रुनिफोलियम—ब्लैक हाव—(गर्भपात की प्रवृत्ति), प्रसवांतक वेदना; जबान का कर्कट, कठोर हिचकी; गर्भाशय को शक्ति प्रदान करने वाली समझी जाती है। गर्भावस्था की मिचली और कै, गर्भाशय के खसकने के साथ बाँझ स्त्रियों का मासिक धर्म क्रमभ्रष्ट होना। सिमिसिफ्यु०; कॉलोफा०, सीपिया; जैन्थकजाइलम।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

विनका माइनर (Vinca Minor)

(लेसर पेरिविंकल)

चर्म रोग, अकौता और खासकर केशों का उलझना और रक्तस्राव, रक्त-प्रवाह और गलझिल्ली के प्रदाह में भी।

सिर—चाँद में फटन दर्द, कानों में टपकन और सीटी जैसी आवाज। घोर चक्कर, आँखों के आगे टिमटिमाहट। सिर की खाल पर चकत्ते, पसीजन, बालों को चिपका दे। खाल की तीक्ष्ण खाज। गंज के चकत्ते। बालों का फूलना और रक्तस्राव। खुजलाने की प्रबल इच्छा।

नाक—सिरा जल्दी ही लाल हो जाया करे। मेदक झिल्ली पर तर दाने। एक नथने का बन्द होना। नाक में घाव। भूसीदार खुश्की ऊपरी होंठ पर और नाक के निचले भाग में।

गला—निगलना कठिन । घाव होना । बार-बार खखारना । झिल्ली प्रदाह ।

स्त्री—बहुत कमजोरी के साथ अधिक मात्रा में मासिक स्राव । मन्द गर्भाशयिक रक्त-प्रवाह (आस्ट०; ट्रिलि०, सिकेल०), अधिक स्राव; लगातार बहते रहना; खासकर वयःसन्धिकाल में । (लैके०) । सौत्रिक अर्बुद से रक्तस्राव ।

चर्म—तीक्ष्ण खाज । जरा-सी रगड़ से लाली और दर्दीलापन के साथ, चर्म की असहिष्णुता । सिर और चेहरे का अकौता, रस-दाने, जलन, दुर्गन्ध । बाल आपस में चिपके हों ।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : ओलिएंड०, स्टैफि० ।

मात्रा—१ से ३ शक्ति ।

वायोला ओडोरेटा (Viola Odorata)

(वायोलेट)

कान के रोगों पर प्रभाव विशेष रखती है । खासकर काले बालों वाले रोगियों के लिए, आँखों के घेरों के ऊपर और घेरों के रोग, शरीर के ऊपरी भाग का वात-रोग जब दाहिनी तरफ जोर हो । बच्चों में केचुए (टियुक्रि०) । गर्भाशय के सौत्रिक अर्बुद के दर्द पर बाहरी प्रयोग के लिए । साँप और शहद की मक्खी के काटने पर । चेहरे के ऊपरी आधे भाग और कानों तक तनाव बढ़े ।

सिर—माथे में जलन । चक्कर, सिर को सभी चीजें तेजी से घूमती जान पड़ें । गरदन की जड़ में कमजोरी की संवेदना के साथ सिर का भारीपन । सिर की खाल तनी हो, भौंहें सिकोड़नी पड़ें । भौंहों के ठीक ऊपर दर्द होने की प्रवृत्ति । आँखों के नीचे और कनपटी में थरथराहट । माथे के ऊपर दर्द । अगले छिद्र पर काम करती है । क्षय रोगियों के गुल्मवायु के हमले ।

आँखें—पलकों का भारीपन । आँखों के ढेले दबे मालूम दें । आँखों के सामने आग की लपटें दिखाई दें । निकट दृष्टि । चक्षु कृष्ण पटल का प्रदाह । दृष्टि-भ्रम, आग जैसा देखना; तिरछे चक्र देखना ।

कान—कानों में चिलकन । संगीत से घृणा । गर्जन और गुदगुदी । कानों के नीचे गहरी चिलक । बहरापन; कर्णप्रदाह । आँखों के ढेलों में दर्द के साथ कर्ण रोग ।

साँस-यन्त्र—नाक के सिरे पर सुन्नपन, धक्का लगने जैसा । सूखी, छोटी आक्षेपिक खाँसी और साँस-कष्ट; दिन में अधिक हो । सीने पर दाब । फटी आवाज के साथ कुकुर-खाँसी । गर्भावस्था में साँस-कष्ट । कठिन साँस, चिन्ता और धड़कन, साथ में गुल्म-वायु के हमले ।

अंग—त्रिकोण-अस्थि की पेशी का वात रोग। अङ्गों में कम्प। दाहिनी कलाई और उसके नीचे हथेली की ऊपरी हड्डियों में दाब दर्द (उल्मस)।

मूत्र—दूध जैसा मूत्र; तेज गन्ध। स्नायविक बच्चों में अनैच्छिक मूत्रस्राव।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ठंडी हवा से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : उल्मस (पैरों में सुरसुरी, सुन्नपन, टाँगों और पैरों में रेंगन; कलाई के ऊपर वात दर्द, उस स्थान में जहाँ पिचिणिका महती पेशी अपनी बन्धनी छोड़ती है, सुन्नपन, चुनचुनाहट, और भारी दर्दीलापन), चेनोपोडियम (कान, भीतरी छेद से पानी-सा रक्तमय स्राव, मध्य कान का जीर्ण प्रदाह, मनुष्य की आवाज से उन्नतिशील बहरापन, मगर गुजरती हुई गाड़ियों और दूसरी आवाजों का सुनाई देना, भिनभिनाहट, अस्थि से आवाज का कम निकलना, या बिल्कुल न निकलना, कान की चेतनता बनी रहना, तेज, तीखी, महीन आवाज अच्छी सुनाई दे, मगर मन्द आवाजें कम सुनाई देना)। ऑरम०; पल्से०; सीपिया; इग्ने०, सिना; कालीफा० (छोटे जोड़ों का वात रोग)।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

वायोला ट्राइकलर (Viola Tricolor)

(पैन्सी)

इस औषधि का मुख्य व्यवहार बचपन के अकौता रोग में स्पष्ट स्वप्नों के साथ में वीर्य-स्खलन के लिए होता है।

सिर—भारी, आगे की तरफ दबाने वाला दर्द। ग्रन्थि फूलने के साथ खोपड़ी का अकौता। चेहरा गरम और खाने के बाद पसीना।

गला—अधिक बलगम खखारना पड़े, हवा में अधिक। निगलना कठिन।

मूत्र—अधिक, गन्ध खराब, बिल्ली की गन्ध जैसी।

पुरुष—लिंग के अग्र पटल का फूलना, लिंगमुण्ड में जलन। खुजली। मल त्याग के समय वीर्यस्राव।

चर्म—खुजलीदार, पीली पपड़ीदार फुन्सियों के साथ चर्मदल। असह्य खाज। जलन, खुजली के साथ स्फोट खासकर चेहरे और सिर पर, रात में अधिक। मोटी पपड़ी, जो चिटकती है और उनमें से चिमड़ा पीला मवाद निकले। अकौतायुक्त खुजलीदार पीली फुन्सियों के साथ पपड़ीदार चर्मरोग चेहरे पर। बाल झरना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : जाड़े में, ११ बजे दिन।

तुलना कीजिए · लाइको०।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रस टॉ० कैल्के०, सीपिया।

मात्रा—निचली शक्तियाँ।

वाइपेरा (Vipera)

(दी जर्मन वाइपर)

वाइपर के विष से कुछ काल के लिए परावर्त्तित क्रिया बढ़ती है, आंशिक पक्षाघात होता है, निचले अंगों से पक्षाघात शुरू होकर ऊपर की तरफ चढ़ता है। ऊपर चढ़ने वाले तीव्र पक्षाघात की तरह अवस्था होती है (वेल्स)। गुर्दों पर प्रभाव विशिष्ट रखती है और रक्तमय मूत्र उत्पन्न करती है। हृदय-शोथ।

शिराओं के फूलने में सांकेतिक होती है, फटन संवेदना। जिगर का बढ़ना। रजोनिवृत्ति काल के रोग। टेंटुवा का शोथ। अनेक स्थानों के स्नायु प्रदाह। और अस्थि-मज्जा प्रदाह।

चेहरा—अधिक फूला हुआ। होंठ और जीभ फूली हुई, सुर्ख बाहर निकली हुई। जीभ सूखी, कत्थई, काली। बोलना कठिन।

जिगर—बढ़े हुए जिगर में तीव्र पीड़ा, कामला रोग और ज्वर के साथ, कन्धों और नितम्ब तक बढ़े

अंग—रोगी अंगों को उठाकर रखने को बाध्य। नीचे लटकाने से ऐसा लगे कि फट जायेंगे, और दर्द असह्य हो। (डिआडे०)। शिराओं का सिकुड़ना और तीव्र शिरा प्रदाह। शिरायें फूली हुईं, उत्तेजित, फटन दर्द। निचले अंगों में तीव्र ऐंठन।

चर्म—सुर्ख। बड़ी पपड़ियों में उघड़े। लसिका वाहिनियों का अर्बुद, फुड़िया, कारवंकल्स, फटन संवेदन, रोगग्रस्त भाग को उठाकर रखने से कष्ट कम हो।

सम्बन्ध—पेलियस बेरस—ऐडर० (शिथिलता और गशी, रुकती नाड़ी, पीला चर्म, नाभि के क्षेत्र में दर्द, बाँह, जबान और दाहिनी आँख का फूलना, चक्कर, मीनाक्कका, गशी, रोगग्रस्त संवेदन, सीने पर दाब, ठीक से साँस न ले सके, अंगों में टीस और सख्ती, जोड़ कड़े, शिथिल संवेदन, अखिल प्यास)। ईल सेरम (हृदय और गुर्दा रोग। हृदय की प्रतिकारक क्रिया का लोप होना और गति रुकने की सम्भावना)।

विस्कम एल्बम (Viscum Album)

(मिस्टलेटो)

रक्तचाप की कमी। रक्तवाहिनियों का फैलना, मगर गह्वर मज्जाओं के केन्द्रों पर काम न करे। फुफ्फुस-पाकाशयिक स्नायु केन्द्रों की उत्तेजना के कारण नाड़ी धीमी हो। लक्षण, खासकर गृध्रसी, मिरगी, ताडव रोग और जरायु से अति रक्तस्राव।

वात रोग सम्बन्धी बहरापन। दमा। मेरुदण्ड की पीड़ा, जो गर्भाशयी बाधा से सम्बन्धित हो। फटन दर्द के साथ वात रोग, जननेन्द्रिय क्षेत्रों में गड़बड़ी के साथ। मिरगी आने के पहले वाले लक्षण और छोटी मिरगी की तरह लक्षण।

सिर—सिर ऐसा लगे कि सिर के ऊपर की खोपड़ी का पूरा भाग उठा दिया गया हो। आँखों की चारों तरफ नीले घेरे। द्वि-दृष्टि। कानों में भिनभिनाहट और जैसे बन्द होने लगे हैं। सर्दी से बहरापन। चेहरे की पेशियाँ बराबर हिला करें। लगातार चक्कर।

साँस-यन्त्र—कष्टदायक साँस, बाईं तरफ लेटने से दम न घुटे। आक्षेपिक खाँसी। गठिया या वात सम्बन्धी दमा। आवाज के साथ सपरिश्रम साँस।

स्त्री—रक्तस्राव, दर्द के साथ; रक्त कुछ थक्केदार और गहरा लाल। वयःसन्धि-काल के रोग (लैके०; सल्फर)। त्रिकास्थि से पेड़ू में दर्द, ऊपर से नीचे की तरफ दर्द के साथ। आंवलनाल अटकी हो। (सिकेल०)। जीर्ण जरायुअन्तस्थ श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह। जरायु से अतिरिक्त स्राव, डिम्बाशय शूल, खासकर बाईं तरफ।

दिल—कपाटों की अपूर्ण क्रिया व मन्दता के साथ अति ढीलापन; नाड़ी छोटी और कमजोर, ओठंग न सके। मैथुन के समय दिल धड़कना। तनाव कम। प्रतिकारक क्रिया का कम पड़ते जाना, साँस-कष्ट, बायीं तरफ लेटने से अधिक हो। हृदय पर बोझ और दाब, जैसे हाथ से दबोचा जा रहा हो; हृदय क्षेत्र में गुदगुदी।

अंग—घुटनों, टखनों का दर्द और कन्धों, केहुनी का दर्द बारी-बारी हो। जाँघ का स्नायुशूल। दोनों जाँघों और ऊपरी अंगों में फटन, चुभन दर्द। एक लपट पैरों से सिर तक उठती है जैसे आग पर रखा हो, ऐसा मालूम हो। जाँघों के भीतर और ऊपरी अंगों के साथ त्रिकास्थि से सामयिक दर्द पेड़ू में जाये जो बिस्तर में अधिक हो। सारे शरीर में कम्प। मानो सभी पेशियाँ कम्पमय संकुचन की अवस्था में हों। अङ्गों का शोथ। हाथ और पैर के पिछले भाग पर मकड़ी रेंगती जान पड़े। सारे शरीर पर खुजली। पैरों में दाब दर्द।

घटना-बढ़ना—बढ़ना: जाड़े में, ठंडक से; तूफान के समय; बिस्तर में, हरकत में, बाईं करवट लेटने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए: सिकेल०, कॉनवैलेरिया०, ब्रायो०; पल्से०, रोडोडे०। गिपमिन—प्रभावकारी तत्व—(विरमक के मन्द तनाव को बढ़ाती है), (हेरेडा हेलिक्स—आईवी-करोटि सम्बन्धी दाब)।

मात्रा—अरिष्ट और निचली शक्तियाँ।

वाईथिया (Wyethia)

(पॉयजन-वीड)

गले पर विशिष्ट प्रभाव रखती है, गलकोष-प्रदाह में, खासकर चलुगल गह्वर-पूर्ण प्रकार के गलकोष प्रदाह में उत्तम लाभकारी सिद्ध हुई है। गाने वालों और भाषण देने वालों के गले में उत्तेजना। खूनी बवासीर में भी लाभकारी है। फ्लू के लक्षण, नाक के पिछले भाग में खुजली।

सिर—उत्तेजित, अशान्त, उदास। चक्कर। सिर में खून दौड़ना। माथे में तीव्र दर्द।

मुँह—झुलसा जान पड़े, भोजन नली के नीचे तक गरम संवेदन। तालु में खुजली।

गला—लगातार साफ करना और खखारना। पिछला भाग सूखा, खखारने से कम न हो। गला फूला हुआ मालूम हो, उपजिह्वा सूखी और जलन वाली। निकलना कठिन। बराबर थूक निकला करे। काग बढ़ा जान पड़े।

आमाशय—बोझ जैसा जान पड़े। वायु डकार और हिचकी बारी-बारी, मिचली और कै।

उदर—दाहिनी तरफ की पसलियों के भाग में दर्द।

मल—ढीला, गहरे रङ्ग का, रात में। गुह्य-द्वार की खुजली। कब्ज; साथ में बवासीर, खून न निकले।

साँस-यन्त्र—सूखी, कष्टकर खाँसी, कण्ठ से गुदगुदी के साथ। वायु नलिकाओं में जलन का संवेदन। बात करने या गाने से गला बैठने की प्रवृत्ति, गला सूखा, गरम। सूखा दमा।

स्त्री—बायें डिम्बाशय में दर्द, घुटने तक। गर्भाशय में दर्द, ऊपर ही से उसका चिह्न जान पड़े।

अंग - पीठ में दर्द, मेरुदण्ड के किनारे तक बढ़े। दाहिनी बाँह में दर्द, कलाई और हाथ का कड़ापन। सारे शरीर में पीड़ा।

ज्वर—११ बजे दिन में शीत। शीत के समय बरफ का पानी पीने की इच्छा। गरम अवस्था में प्यास न हो। सारी रात अधिक पसीना। पसीना आने के समय घोर सिर दर्द।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : आरम०, सैंग्वि०, लैके०।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

जैन्थकजाइलम (Xanthoxylum)

(प्रिकली ऐल)

इसका मुख्य प्रभाव स्नायु-मण्डल और श्लैष्मिक झिल्ली पर पड़ता है। पक्षाघात, खासकर आधे शरीर का। पीड़ाजनक रक्तस्राव, प्रसव के बाद का दर्द। स्नायुशूल। पीड़ाजनक मासिक-धर्म और वात रोग सम्बन्धी बाधाएँ, सभी इस औषधि के चिकित्सा के क्षेत्र में उपयोगी होने की तरफ संकेत करते हैं। खासकर सादे जीवन के और स्नायविक व कोमल शरीर वाले व्यक्तियों के लिए। पतली रक्तवाहिनियों में रक्त-संचार की मन्द गति। स्नायु दौर्बल्य, पोषण क्रिया की निर्बलता; अनिद्रा, पिछले भाग का सिर दर्द। मुँह में श्लैष्मिक स्राव। स्राव को बढ़ाती है और सभी ग्रन्थियों के स्राव को बढ़ाती है जो मुँह में स्राव बढ़ाने का काम करती हैं।

मन—उत्तेजित, भयभीत। मानसिक उदासी।

सिर—भरापन। चाँद पर बोझ और दर्द। आँखों के ऊपर दर्द, नाक पर थरथराहट दाब, माथे में दाब, सिर विभाजित जान पड़े; कानों में टनटनाहट। सिर के पिछले भाग का दर्द। चक्कर और वादी के साथ कष्टदायक सिर दर्द।

चेहरा—निचले जबड़े का स्नायुशूल। मुँह और मुख-गह्वर का सूखापन। गलकोष प्रदाह (वाईथिया)।

उदर—चुभन और दस्त। पेट में तनाव, कूँथन, गन्धहीन स्राव के साथ पेचिश।

स्त्री—मासिक धर्म समय से बहुत पहले और पीड़ाजनक। डिम्बाशय के स्नायु-शूल, कमर और निचले अंगों में दर्द के साथ, बायीं तरफ अधिक, नीचे जाँघों तक उस स्नायु के मार्ग से उतरे—जो जंघा और जननेन्द्रिय से संबंधित है। स्नायुशूल और पीड़ाजनक मासिक-धर्म, साथ में स्नायुशूलिक सिर दर्द, पीठ में और टाँगों में नीचे तक दर्द। मासिक-धर्म गाढ़ा, लगभग काला। प्रसव के बाद का दर्द। (आर्निका०; क्युप्रम०; कैमोमिला) मासिक-धर्म होने के समय प्रदर हो। स्नायु दौर्बल्य के रोगी, जो दुबले, सूखे हों, पोषण क्रिया की मन्दता, साथ में अनिद्रा और सिर के पिछले भाग में दर्द।

साँस-यन्त्र—स्वरलोप। लम्बी साँस लेते रहना, सीने पर दाब। सूखी खाँसी रात-दिन।

अंग—मेरुदण्ड के बाद बायीं तरफ का पक्षाघात। बायीं तरफ का भाग सुन्न होना, चालन स्नायु की क्रम-भ्रष्टता। आधे शरीर का पक्षाघत। गरदन की जड़ में दर्द पीठ तक बढ़े। जाँघ का स्नायुशूल; गरम मौसम में अधिक हो। जाँघ के अगले

भाग का स्नायुशूल। (स्टैफिसेग्रिया) बायीं बाँह सुन्न हो। स्नायुशूल का चमकन दर्द, बिजली लगने जैसा, सभी अंगों में।

नींद—कड़ी अनिद्रा और प्रफुल्लित; उठने का स्वप्न देखे। स्नायु दुर्बल लोगों की अनिद्रा।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : नेफेलि०; सिमिसिफ्यूगा, स्टैफिसे०, मेजेरि०, पिसिडिया – ह्वाइट डॉगऊड—(स्नायविक उत्तेजना को शान्त करती है। चिन्ता के कारण अनिद्रा; स्नायविक उत्तेजना, आक्षेपिक खाँसी, क्रमभ्रष्ट मासिक-धर्म का दर्द; स्राव ठीक करती है। स्नायुशूल और आक्षेपिक रोग। अरिष्ट को बृहत् मात्रा में में व्यवहार करें)।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

जेरोफाइलम (Xerophyllum)

(टैमालपेस लिली। बास्केट ग्रास फ्लावर)

अकौता सम्बन्धित बाधाओं में, ओक विष में और आन्त्र-ज्वर की आरम्भिक अवस्थाओं इत्यादि में लाभकारी सिद्ध होना चाहिए।

मन—मन्द, पढ़ने में चित्त न जमा सके; नामों को भूलना; शब्द का अन्तिम अक्षर पहले लिखे, मामूली शब्दों के अक्षरों को अशुद्ध लिखे।

सिर—भरा मालूम हो, कसा हुआ, माथे के आर-पार दर्द आँखों के ऊपर। नाक की जड़ पर बहुत दाब। चकित होना। अचेतनता। टपकन सिर दर्द।

आँखें—दर्दीली, बालू जैसी किरकिराये; निकट से देखने में अकेन्द्रित, दर्द और जलन हो।

नाक—भरी हो; नाक के पुल पर कसापन, नाक का तीव्र जुकामी स्राव।

चेहरा—सुबह के समय फूला हुआ। आँखों के नीचे थुलथुला।

गला—निगलने पर चुभन दर्द।

आमाशय—भारी और भरा मालूम दे। खट्टी डकार; घृणित, तीसरे पहर के नाश्ते के बाद और दिन के पूरे खाने के बाद। २ बजे तीसरे पहर कै होना।

उदर—आँतों में बादी भरना। सुबह आँतों में गुड़गुड़ाहट, पाखाना मालूम हो।

मलाशय—कब्ज, मल कड़ा, छोटे ढोके। कठिन, ढीला मल; बहुत कूँथन के साथ; अधिक वायु। मलाशय में धँसन दर्द।

मूत्र—रुक न सके; टहलने पर टपकता रहे। रात में कई बार।

स्त्री—धँसन सम्वेदना। योनिघुण्डी सूजी हुई, अति खाज। मैथुन इच्छा अधिक; डिम्बाशय और जरायु पीड़ा और प्रदर के साथ।

साँस-यन्त्र—पिछला भाग कच्चा, गाढ़ा, पीला श्लेष्मा निकले। छीकें आना। कण्ठनली में दर्द, ढोकेदार सिकुड़न।

पीठ—त्रिकास्थि से कन्धास्थि तक गरम लगे। पीठ दर्द टाँगों तक उतरे। गुर्दों में दर्द। रीढ़ के नीचे तक गरमी।

अंग—पेशिक लँगड़ापन, कम्प। घुटनों में दर्द। अंग कड़े मालूम हों। (रस टॉ०)।

चर्म—छाले पड़ने और तीव्र खाज, गड़न, जलन के साथ लाल चकत्ते। छालेदार स्फोट; छोटे ढोंके। चर्म खुरदरा और चिटका; पके चमड़े की तरह लगे। चर्म प्रदाह खासकर घुटनों के चारों तरफ। ओक विष की तरह सूजन। पुट्ठे की ग्रंथियाँ और घुटने के पीछे फूलन।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : ठण्डा पानी लगने से, तीसरे पहर और शाम को। घटना : गरम पानी लगने से, सुबह को रोगग्रस्त भाग हिलाने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिए : रस टॉ०, एनाकार्डि०, ग्रिण्डेलिया।

मात्रा—६ शक्ति या उससे ऊँची।

एक्स-रे (X-Ray)

(वायल कनटेनिंग एल्कोहल एक्सपोज्ड टु एक्स-रे)

रोयेण्टजेन किरण (एक्स-रे) के बार-बार आघात से चर्म रोग उत्पन्न हो जाते हैं जो बाद में कर्कट रोग हो जाता है। कष्टदायक पीड़ा। जननेन्द्रिय ग्रन्थियाँ खास तरह से रोगग्रस्त होती हैं। डिम्बाशय और अण्डकोषों का सिकुड़ जाना। बाँझपन। रक्त की लसिकाओं और अस्थि-मज्जा में परिवर्तन हो जाता है। रक्तहीनता और श्वेताणुओं की वृद्धि। जले स्थान पर घाव होना जो जल्द अच्छा न हो। अपरस।

कोषों की क्रिया को बढ़ाने का गुण रखती है। जीवन की प्रतिक्रिया शक्ति को जाग्रत करती है, शारीरिक और मानसिक। दबे हुए लक्षण ऊपर लाती है, खासकर प्रमेह विषयक और मिश्रित संक्रमण वाले। इस प्रकार से इसका होमियोपैथिक प्रभाव आन्तरिक केन्द्र से बाहर की तरफ होता है।

सिर—सिर और चेहरे के विभिन्न भागों में गड़न दर्द। दाहिने ऊपरी जबड़ में धीमा दर्द। गरदन कड़ी। गरदन में एकाएक चिटकन, कानों के पीछे अधिक तीव्र दर्द। सिर को तकिये पर से उठाने पर गरदन की पेशियों में दर्द। कानों में भरापन, सिर में टपकन।

मुँह—जबान सूखी, खुरदरी, दर्द करे। निगलने पर गले में दर्द मिचली।

पुरुष—अश्लील स्वप्न। काम-इच्छा का लोप होना। दबे हुए प्रमेह को ऊपर लाती है।

अंग—वात पीड़ा। सर्वाङ्गीण थकावट और रोगग्रस्त संवेदना। हथेली खुरदरी और पपड़ीदार।

चर्म—सूखा, खुजलीदार अकौता। नाखून की जड़ों के चारों तरफ लाल चकत्ते। चर्म सूखा, चुचुका। दर्दीली दरारें। मांसांकुर। नाखून मोटे पड़ना, अपरस।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : बिस्तर में तीसरे पहर; शाम और रात में, खुली हवा में।

मात्रा—१२ शक्ति और उससे अधिक।

तुलना कीजिए : एलेक्ट्रिसिटस—दूध की चीनी में बिजली की करेंट अच्छी तरह सोखाई हुई। चिन्ता, लघु कम्प, बेचैनी, धड़कन, सिर दर्द। (आँधी आने का भय; अंगों में भारीपन)।

मेग्नेटिस पोलि एम्बो—दी मैग्नेट—दूध की चीनी या डिस्टिल किया हुआ पानी जिसमें चुम्बक का पूरा असर डाला गया हो। (शरीर भर में जलन, कोंचन, ऐसा दर्द मानों जोड़ टूट गये हैं, जब दो हड्डियों की बन्धनी एक दूसरे को छुए; चुभन और झटकन, कील ठोंकने जैसा सिर दर्द; पुराने घावों में ताजा होने की प्रवृत्ति)।

मैग्नेटिस पोलस आर्कटिकस—नॉर्थपोल ऑफ दी मैग्नेट-(अशान्त निद्रा, सोते में उठकर चलना, बोलना, गरदन के पास रीढ़ की हड्डियों में चुरचुराहट, ठंडापन, दाँत दर्द)।

मैग्नेटिस पोलस आस्ट्रेलिस—साउथ पोल ऑफ दी मैग्नेट-(पैर के अँगूठे के नाखून के भीतरी भाग में तीव्र पीड़ा, भीतर बढ़ने वाले पैर के नाखून, पैर के जोड़ों का जल्दी ही उखड़ना; पैर नीचे से लटकाने से दर्द करें)।

योहिम्बिनम (Yohimbinum)

(कोरियेन्थी योहिम्बी)

जननेन्द्रिय को उत्तेजित करती है और केन्द्रीय स्नायु-मण्डल और साँस यन्त्रों के केन्द्र पर काम करती है। बड़ी मात्रा में देने से कामोद्दीपक है, लेकिन उदर यन्त्रों की तीव्र और जीर्ण सूजनों में असांकेतिक है। होमियोपैथिक सिद्धान्त के अनुसार जननेन्द्रिय की प्रादाहिक अवस्थाओं में लाभदायक है। दुग्ध-ग्रन्थियों में रक्ताधिक्य उत्पन्न करती है और दुग्ध स्राव को बढ़ाती है। अत्यधिक मासिक-स्राव।

सिर—कौतूहल, चेहरे में गरम लहरें। खराब, कसैला स्वाद। अधिक लार। मिचली और डकार।

जननेन्द्रिय—प्रबल और देर तक रहने वाला लिंगोत्थान। स्नायु दौर्बल्य-जनित नपुंसकता। खूनी बवासीर। आन्त्रिक रक्तस्राव। मूत्रमार्ग प्रदाह।

ज्वर—अकड़न, घोर ताप, गरम लहरें और कम्प, पसीने की प्रवृत्ति।

नींद—अनिद्रा : सारे जीवन की गुजरी बातों को सोचते रहने से जागा करे।

मात्रा—कामोद्दीपक प्रभाव के लिए १ प्र० श० सोल्यूशन की १० बूँद या सूई द्वारा ०·००५ ग्राम की टिकिया। होमियोपैथिक मात्रा ३ शक्ति।

युक्का फिलामेंटोसा (Yucca Filamintosa)

(बियर-ग्रास)

पित्त लक्षण के नाम से पुकारी जाने वाली अवस्था, सिर दर्द के साथ। निराश और चिड़चिड़ा।

सिर—टीस मानो खोपड़ी उड़ जायगी। माथे की धमनियाँ टपकें। नाक लाल।

चेहरा—पीला, जबान पीली, मैली, दाँतों का निशान पड़े। (मर्क०; पोडो०, रस टॉ०)।

मुँह—सड़े अण्डों का स्वाद। (आर्निका०)।

गला—मानो पिछले छिद्र से कोई चीज लटक रही हो; जिनको न नीचे उतार सके और न ऊपर ला सके।

उदर—जिगर के ऊपर दाहिनी तरफ गहराई में दर्द, जो पीठ में जाये। मल हल्का पीला, कत्थई, पित्तमय।

पुरुष—लिंग के पर्दे में जलन और फूलन, लिंगछिद्र की लाली। प्रमेह। (कैना०; टुसिलै०)।

मात्रा—अरिष्ट से ३ शक्ति।

जिकम मेटालिकम (Zincum Metallicum)

(जिंक)

परीक्षणों के समय मस्तिष्क मन्दता चित्रांकित थी। जिंक की क्रिया का अधिकांश शब्द "फैग" धुँधलापन में सम्मिलित है। शरीर के तन्तु नवजीवित होने की अपेक्षा तेजी से नष्ट होते हैं। स्फोट या स्राव के दब जाने के कारण शरीर की अपेक्षा तेजी से नष्ट होते हैं। स्फोट या स्राव के दब जाने के कारण शरीर का विषैलापन। स्नायु-मण्डल के लक्षण महत्त्वपूर्ण हैं। दोषपूर्ण जीवन शक्ति से मस्तिष्क का पक्षाघात सम्भव। रोगावस्था में उदासी। मेरुदण्ड के रोग। फड़कन। दर्द मानो चर्म और

मांस के बीच हो रहा है। स्राव आरम्भ होने से कष्ट कम हो। ताण्डव रोग जो भय या स्फोट के दबने से उत्पन्न हो। पीला चेहरा तापरहित अवस्था के साथ आक्षेप। घोर शिथिलता के साथ स्पष्ट रक्तहीनता। यह रक्त में लाल कणों की संख्या कम कर देती है और उनको नष्ट करती है। परिणामतः स्फोट बाधायें। मस्तिष्क और मेरु-दण्ड की बाधाओं के साथ जीर्ण रोग; कम्प, आक्षेप, फड़कन और अशांत पैर सभी सांकेतिक लक्षण हैं।

मन—दुर्बल स्मरण शक्ति। आवाज असह्य। बातचीत करने से घृणा। बच्चा सभी बातों को जो उससे कही जाये तो दोहराए। काल्पनिक अपराध के कारण गिरफ्तार होने का भय। शोकग्रस्त। सुस्त, मन्द बुद्धि। आंशिक पक्षाघात।

सिर—बाईं तरफ को गिरता मालूम हो। जरा-सी मदिरा पीने से सिर दर्द करे। मस्तिष्क में जल-वृद्धि। सिर अगल-बगल लुढ़काया करे। सिर तकिये में गड़ाए। चाँद पर बोझ के साथ पिछले भाग में दर्द। सिर और हाथ अनैच्छिक हिला करें। मानसिक धुँधलापन, स्कूली बच्चों पर अधिक मानसिक परिश्रम का बोझ पड़ने से आया सिर दर्द। माथा ठण्डा, पिछला भाग गरम। सिर में गर्जन। भय से चिहुँक उठे।

आँखें—अनुपक्ष में छरछराहट; जल प्रवाह, खुजली। ऐसा लगे की आँखें सिर में धँसी हैं। पलक और भीतरी कानों में खुजली और दर्द। पलकों की कार्यहीनता, नीचे गिरी रहें। आँखें इधर-उधर घुमाना। चीजों का आधा भाग धुँधला दीख पड़े। उत्तेजनीय चीजों से अधिक हो। ऐंचापन आंशिक या सम्पूर्ण अन्धापन, तीव्र सिर दर्द के साथ। श्वेत पटल की लाली और सूजन, भीतरी कानों में अधिक।

कान—फटना, चिलकन और बाहरी सूजन। घृणित मवादी स्राव।

नाक—ऊपर की तरफ दर्द, जड़ पर दाब।

चेहरा—होंठ पीले, मुँह के किनारे चिटके हुए। ठुड्डी पर लाली और खुजली-दार दाने। चेहरे की हड्डियों में फटन।

मुँह—दाँत ढीले। मसूढ़ों से खून बहे। दाँत कटकटाना। खूनी स्वाद। जबान पर छाले। दाँत निकलना कठिन, बच्चा कमजोर, ठण्डे और अशान्त पैर।

गला—सूखा। लेसदार बलगम बराबर खखारा करे। गले और स्वर-यन्त्र में कच्चापन और सूखापन। निगलते समय गले की पेशियों में दर्द।

आमाशय—हिचकी, मिचली, कड़वे श्लेष्मा की कै। पेट में जलन, मीठी चीजों से गला जले। जरा-सा पेशाब मूत्राशय में ठहर न सके। करीब ११ बजे दिन में प्रचण्ड भूख (सल्फर)। खाते समय बहुत लालच करे, बहुत तेजी से भक्षण करना। दौर्बल्यजनित अनपच रोग, मानो पेट शिथिल हो गया है।

उदर—तनाव के साथ, जरा-सा खाना खाने पर दर्द होना। नाभि के नीचे छोटी-सी जगह में दर्द। गड़गड़ाहट और चुभन, तनाव। वायुशूल साथ में उदर का सिकुड़ना। (प्लम्ब०) बढ़ा हुआ, कड़ा दर्दीला जिगर। गुर्दों के परावर्तित लक्षण। खाने के बाद चुभन।

मूत्र—बैठ कर आगे झुके बिना पेशाब न उतरे। गुल्मवायु युक्त मूत्रकृच्छ्र। टहलते, खाँसते और छींकते समय अधिक अनैच्छिक मूत्रस्खलन।

मलाशय—कड़ा, छोटा, कब्ज वाला मल। शिशु हैजा, कूथन के साथ, हरा, श्लैष्मिक स्राव। दस्त एकाएक रुक जाये फिर मस्तिष्क लक्षण उभर जायें।

पुरुष—अण्डकोष फूले हुए। ऊपर खिंचे हुए। लिंगोत्थान प्रचण्ड। शोकग्रस्तता के साथ वीर्यस्खलन। विटप प्रदेश के बालों का झड़ना। अण्डकोष का शुक्र-रज्जु तक सिकुड़ जाना।

स्त्री—डिम्बाशय में पीड़ा, खासकर बायीं तरफ की, शान्त न रह सके। (वाइबर्नम) प्रसव के बाद कामोन्माद। मासिक धर्म बहुत देर में हो, दबा हुआ, प्रसव स्राव दबा हुआ। (पल्से०)। स्तन दर्द करें। रात में अधिक मासिक स्राव (बोवि०)। मासिक स्राव के बाद सभी लक्षण कम हों। (यूपियन; लैके०)। सभी स्त्री रोग लक्षणों के साथ बेचैनी, उदासी, ठण्डापन, मेरुदण्ड की कोमलता और अशांत पैर उपस्थित रहें। मासिकधर्म के पहले और काल में सूखी खाँसी।

श्वास-यन्त्र—वक्षास्थि के नीचे जलन, दाब। सीने में संकुचन और कटन। आवाज फटी हुई। कमजोर करनेवाली आक्षेपिक खाँसी; मीठी चीज खाने से बढ़े। बच्चा खाँसते समय जननेन्द्रिय पकड़ ले। दमायुक्त वायुनलिका प्रदाह, साथ में सीने में संकुचन। कष्टदायक साँस जो बलगम ऊपर आते ही कम हो।

पीठ—पिठासे में दर्द। पीठ का स्पर्श सहन न हो। (सल्फर, थेरिडि०, सिन्को०)। कन्धों के बीच में तनाव और चुभन। मेरुदण्ड की उत्तेजना। अन्तिम पीठ की हड्डी या पहली कटि-अस्थि में मन्द टीस, बैठने से बढ़े। मेरुदण्ड भर में जलन। लिखने से या किसी परिश्रम से गरदन की जड़ में थकान। कन्धों के डैनों में फटन।

अंग—कई पेशियों में लँगड़ापन, कमजोरी और फड़कन। बेवाई फटना। (एगेरि०) पैर हिलाता रहे, शांत न रह सके। टाँगों पर बड़ी शिराओं का सिकुड़ना, गठीलापन। पसीना बहना। पीला चेहरे के साथ विक्षेप। आड़ा दर्द, खासकर ऊपरी अङ्गों में। पैर के तलवे कोमल। पैर का ऊपरी तलवा जमीन पर रखकर चले।

नींद—सोते समय चिल्लाये, शरीर में झटके आयें। भयभीत होकर जाग उठे, डर लगे। सोते में पैरों का स्नायविक कम्प। रात के समय सोते में, बिना जाने हुए, जोर से चिल्लाये। सोते में चलना। (कैलि फास०)।

चर्म—गठीली शिरायें; खासकर निचले अंगों की। (पल्से०)। पैरों और अङ्गों में, खटमल रेंगने जैसी सुरसुरी; नींद न आवे। अकौता खासकर रक्तहीन और स्नायु दौर्वल्य रोगियों में। जाँघों और घुटनों के खोखले भागों में खुजली। चर्म रोग का दब जाना, पश्चात् गमन।

ज्वर—अक्सर पीठ के नीचे तक ज्वर कम्प। ठण्डे अंग। रात पसीना। पैर में अधिक पसीना।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : मासिक-धर्म के समय, छूने से, ५ बजे शाम से ६ बजे रात्रि तक; दिन के भोजन के बाद, मदिरा से। घटना : खाते समय, स्राव जारी होने से, चर्म स्फोट के विद्यमान होने से।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : एगैरि०; इग्ने०; प्लम्बम०; आरजेन्ट०; पल्से०, हेलेबो०, ट्युबक्यु०।

विरुद्ध—नक्स वा०, कैमो०। स्राव से रोग कम होने में।

तुलना कीजिए : लैके०, स्टैनम०, मॉस्कस।

तुलना कीजिए : जिंकम एसेटिकम (रात जागरण और विसर्प का परिणाम, मस्तिष्क दर्दीला जान पड़े, रैडेमेकर का सोल्युशन, ५ बूँद की मात्रा में, दिन में तीन बार, उन लोगों के लिये जिनको बिना अच्छी तरह सोये हुए काम करना पड़ता है); जिन्क ब्रोमेटम (दाँत निकलना, ताण्डव रोग, मस्तिष्क में अधिक जल-संचयता) जिन्क० ऑक्सिडेटम मिचली और खट्टा स्वाद, बच्चों को एकाएक कै होना। पित्त की कै और दस्त होना। उदर में वायु संचयता। कूँथन के साथ पानी-सा मल। इन्फ्लुएञ्जा के बाद कमजोरी। दहकता लाल चेहरा, स्वप्न की तरह, अप्रफुल्लित निद्रा के साथ अधिक निद्रालुता। रात जागरण की तरह लक्षण। मानसिक और शारीरिक परिश्रम (रैडेमैकर)। जिंक० सल्फ०, अक्सर दोहराई नहीं जाती है (ऊँची), कनीनिका के धुँधलापन को साफ करेगी (मैकफलैंड) कनीनिका प्रदाह; रोहेदार पलक; जवान पक्षाघातिक, बाँहों और टाँगों में ऐंठन, कम्प और आक्षेप। हस्तमैथुन के कारण शोकग्रस्त, व्याधि शंका, स्नायविक सिर दर्द)। जिंक० सियानेटम (मस्तिष्क प्रदाह और मस्तिष्क-मेरुमज्जा सम्बन्धी स्राव, कम्पवात पक्षाघात, ताण्डव रोग और गुल्म-वायु में इसकी तरफ ध्यान दिया गया है),

जिंक० आर्स० (ताण्डव रोग, रक्तहीनता, जरा परिश्रम से घोर शिथिलता आये। उदासी और निचले अंगों का रोगग्रस्त होना दीख पड़ता है) जिंक कार्ब० (प्रमेह के बाद गले का रोग। तालुमूल फूले, हल्के नीले चकत्ते), जिंक० फॉस (मोटा दाद १x), जिंक म्युरिएटि० (बिस्तर की चादर को नोचने की प्रवृत्ति, सूँघने और स्वाद का सम्वेदन नष्ट होना, चर्म का रंग हलका नीला, हरा, ठण्डा और पसीनेदार; जिंक फॉस० सिर ओर चेहरे का स्नायुशूल, गति शक्ति राहित्य में बिजली की तरह चमकन दर्द; मानसिक मन्दता, स्नायविकता और चक्कर, कामोत्तेजना और अनिद्रा); एमोनि० वैलेरियम (घोर स्नायुशूल, अति स्नायविक उत्तेजना के साथ); जिंक पिक्रिकम (चेहरे का पक्षाघात, मानसिक धुँधलापन, अलब्यूमेन रोग में सिर दर्द, वीर्यस्राव, स्मरण शक्ति और शारीरिक शक्तिहीनता), अस्वस्थ घाव, दरारें, खाल उधड़ना, जले हुए स्थान इत्यादि पर संकोचन तथा स्रावरोधक प्रभाव और शक्तिवर्द्धक प्रभाव के लिए लगाने के लिए ऑक्साइड ऑफ जिंक का व्यवहार करते हैं।

मात्रा—२ से ६ शक्ति।

जिंकम वैलेरियेनम (Zincum Valerianum)

(वैलेरिनेट ऑफ जिंक)

स्नायुशूल, गुल्म वायु, हृदय शूल और अन्य पीड़ाजनक बाधाओं को और खासकर डिम्बाशय रोगों की औषधि। बिना आरम्भिक चिह्न के मिरगी। गुल्मवायुमय हृदय पीड़ा। चेहरे का स्नायुशूल, बायीं कनपटी में और निचले जबड़े की हड्डी में अधिक तीव्र। बच्चों में अनिद्रा। कठोर हिचकी।

सिर—प्रचण्ड स्नायुशूल, सविराम, सिर दर्द। दर्द से प्रायः पागल-सा हो जाए, जो कोंचने और भोंकने वाला हो। शोकग्रस्तता के साथ, सिर के दर्द से न रोके जाने वाली अनिद्रा।

स्त्री—डिम्बाशय शूल; दर्द अंगों के नीचे, पैर तक दौड़े।

अंग—गरदन और मेरुदण्ड में तीव्र पीड़ा। शान्त न बैठ सके, सदा टाँगें हिलाता रहे। गृध्रसी।

मात्रा—१ या २ विचूर्ण स्नायुशूल की चिकित्सा में कुछ समय तक व्यवहार करना चाहिए।

जिंजिबर (Zingiber)

(जिंजिबर)

पाचन-मार्ग, जननेन्द्रिय यन्त्र और साँस बाधाओं में इसका प्रयोग करना चाहिए। गुर्दों की पूर्ण कार्यहीनता।

सिर—अर्धकपाली, एकाएक आँखों के आगे टिमटिमाहट; गड़गड़ाहट और खालीपन मालूम हो। भौवों के ऊपर दर्द।

नाक—रुकी जान पड़े और सूखापन मालूम हो। असह्य खुजली और दाने।

आमाशय—खाने का स्वाद देर तक रहे, खासकर रोटी और टोस्ट का। भारी जान पड़े, पत्थर जैसा। खरबूजा खाने से और गन्दा पानी पीने से रोग उत्पन्न हो। अम्लता। (कल्केरिया०; रोबिनिया)। जागने पर पेट में भारीपन, वायु और गड़गड़ाहट, अधिक प्यास और खालीपन के साथ। पेट के गड्ढे से वक्षास्थि के निचले भाग में दर्द खाने से बढ़े।

उदर—शूल, दस्त, बहुत ढीली आँतें। खराब पानी पीने से दस्त, साथ में अधिक वायु आना, कटन दर्द, संकोचक छल्लों का ढीलापन। गर्भावस्था में गुदा में गरमी, छरछराहट, दर्दीलापन। जीर्ण आंत्र नजला। गुह्यद्वार लाल, सूजा हुआ। खूनी बवासीर, गरम, दर्दीली, छरछराती। (एलो०)।

मूत्र—बहुत बार पेशाब लगना। लिंग-छिद्र में चुभन, जलन। मूत्रमार्ग से पीला स्राव। पेशाब गाढ़ा, गंदला, तीखी गन्ध का दबा हुआ। आंत्र ज्वर के बाद पेशाब का बिल्कुल रुक जाना। पेशाब करने के बाद देर तक बूँद-बूँद टपका करे।

पुरुष—लिंग-पटल की खुजली। काम-इच्छा की उत्तेजना; पीड़ाजनक लिंगोत्थान। वीर्य-स्खलन।

साँस-यन्त्र—आवाज भारी। स्वरयन्त्र के नीचे कड़कन, साँस लेना कठिन। दमा, चिन्तारहित, सुबह में अधिक हो। गले में खुरचन, सीने में चिलकन। खाँसी सूखी, कष्टदायी, सुबह को अधिक बलगम आए।

अंग—सभी जोड़ों में बहुत कमजोरी। पीठ का लँगड़ापन। तलवों और हथेलियों में ऐंठन।

सम्बन्ध—तुलना कीजिये : कलेडि०।

क्रियानाशक—नक्स०।

मात्रा—१ से ६ शक्ति।

रेपर्टरी

[Repertory]

भद्दा—चीजें हाथों से गिराए—इथूजा, एपिस, बोविस्टा, हेलेबो, इग्ने, लैके, नैट्र म्यूर, नक्स वो, टैरे हिस्पा।

मस्तिष्क-शिथिलता—इथूजा, एलैंथ, ऐल्फा, एनाका, ऐन्हैलो, आर्जे नाइट्रि, एवेना, बैप्टि, कैल्के कार्ब, कैल्के फास, काकुल, कोका; क्युप्रम मेटा, जेल्से, कैलि ब्रो, कैलि फास, लेसिथि, नैट्रम म्यूर, नक्सवॉ, फॉस एसिड, फास्फो, पिक्रि एसिड, साइलि, स्ट्रिक फास, जिंक मेटा, जिंक फास, जिंक पिक्रि। देखिये स्नायुदौर्बल्य (स्नायुमण्डल)।

कड़ापन—(कैटेलेप्सी) टान्स (मूर्च्छा)—एकोना, आर्टिवल, कैम्फो मोनो ब्रो, कैना इण्डि, कैमो, साइक्यूटा, क्रोटे, कैस्का, कुरारी, जेल्से, ग्रैफा, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, लैके, मर्क, मॉर्फि, मॉस्कस, नक्स, मॉस, ओपि, सैबाडि, स्ट्रैमो।

दिव्य दृष्टि –(क्लीयर विजन्स)—एकोना, एनाका, ऐन्हैलो, कैनाईंडि, नैबुलस, नक्समॉस, फास्फो। देखिये भ्रष्ट-दृष्टि (हैलुसिनेन्स)

ग्रहण-क्रिया—(कॉम्प्रीहेन्शन) कठिन—ऐग्नस, एलैंथ, एनाका, बैप्टि, काकु, जेल्से, हेलेबो, लाइको, नैट्रम कार्ब, नक्समॉस, ओलिएंड, ओपियम, फास्फो एसिड, फासफो, प्लम्बम मेटा, जेरोफाइल, जिंकम मेटा। देखिये स्मरण शक्ति।

ग्रहण-क्रिया—(कॉम्प्रीहेन्शन) सरल—बेला, कॉफिया, लैके।

चेतनाहीनता—ऐबसिन्थि, एलैंथ, आर्नि, एट्रोपि, बेलाडो, कैना इंडि, कार्बो-एसिड, साइक्यूटा, क्युप्रम ऐसिट, जेल्से, ग्लोनो, हेलेबो, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, म्यूरि एसिड, नक्समॉस, इनैन्थी, ओपि, स्टैमो, जेरोफाइल, जिंकम मेटा।

जड़ता (क्रेटेनिज्म) क्षीण बुद्धि, मूर्खता—एबसिंथि, इथूजा, एनाका, आर्निका। बैसिलिनम, बेराइटा कार्ब, बैराइटा म्यूर, ब्यूफो, कैल्के, फॉस, हेलेबो, रस, इग्नेशिया, आयोडम, लोलि, नैट्र कार्ब, ऑक्सिट्रोपि, फॉस एसिड, प्लम्बम मेटा, सल्फर, थायराइ।

प्रलाप-सुरासार सम्बन्धीय (एल्कोहॉलिक) (मदपानिका)—एकोना, एगैरि, एन्टिमटार्ट, एट्रोपि, बेलाडो, कैना इंडि, कैप्सि, चिनिसल्फ, सिमिसि, डिजिटै, हायोसि, हाइड्रोब्रोमा, कैलि ब्रोमे, कैलिफास, लैके, ल्युपुल, नक्सवो, ओपि, पैसिफ्लो, पैस्टिनाका, रैनानबल, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि नाइट्रि, सुम्बुल, टियुक्रि।

बिस्तर खसोटना (Carphologia) बिस्तर को नोचना, समेटना—एगैरि, ऐट्रोपि, बेलाडो, हेलेबो, हायोसि, म्युरि एसिड, ओपि, स्ट्रैमो, जिंक म्यूरि।

ज्वरान्तक अचैतन्यता (Coma vigil)—कुरारी, हायोसि, म्युरि एसिड, ओपि, फॉस्फो।

नाशकारी (Destructive) (भूँकने, काटने, मारने, फाड़ने की इच्छा)–बेलाडो, कैन्थे, क्युप्रम मेटा, हायोस, सीकेलि, स्ट्रैमो, वेरेट्रम एल्ब, वेरेट्र विरिडी।

भागने या छिप जाने की प्रबल इच्छा—एकोना, एगैरि, बेलाडो, ब्रायो, क्युप्रममेटा, हेलेबो, हायोसि, ओपेरक्यु, ओपि, रस टॉ, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब।

उन्मत्त, व्यग्र, बकना—एकोना, एगैरि, बेलाडो, कैन्थे, साइक्यूटा, क्युप्रममेटा, हायोसि, मर्क साइ, इनैन्थी, सोलेन नाइग्रा, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब।

कामोन्माद—कैन्थे, हायोसि, फॉस्फो, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब।

बकवादीपन, बराबर बोलता रहे—ऐगैरि, बेलाडो, कैना इंडि, सिमिसि, हायोसि, लैके, मर्कसाइ, ओपेरक्यु, ओपि, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब।

प्रसन्न, नाचते-गाते हुए—ऐगैरि, बेलाडो, हायोसि, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब।

बुदबुदाना धीरे-धीरे, समझ में न आवे—एगैरि, एलैंथ, एपिस, आर्नि, बैप्टि, बेलाडो, क्रोटै, हेलेबो, हायोस, लैके, म्युरि एसिड, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, रस टॉ, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब।

तेजी से जवाब देना—सिमिसि, लैके, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब।

देर से जवाब देना, रोग दोहराना—आर्नि, बैप्टि, डिफ्थे, हेलेबो, हायोसि, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, सल्फर।

मूर्च्छा, निद्रा, गशी, मोह—इथूजा, ऐगैरि, एलैंथ, एमो कार्ब, ऐण्टि टार्ट, एपिस, आर्नि, बैप्टि, बेलाडो, बेंजो नाइट्रि, कैम्फो, कार्बो एसिड, डिफ्थे, जेल्से, हेलेबो, हायोसि, लैके, लारो, लोबे, परप्यु, म्यूरएसिड, नाइट्रिस्प्रिडल, नक्समॉस, ओपि, फास्फोएसिड, फास्फो, पिलोका, रसटॉ, स्ट्रैमो, टैरबि, थाइराय, वेरेट्र एल्ब, जिंकम मेटा।

मनोभ्रंश (Dementia)—ऐगैरि, एनाका, एपियम वाइरस, बेलाडो, कल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैनाबिस इन्डि, कोनियम, हेलेबो, हायोसि, इग्नेशिया, लिलियम टिग्रि, मर्क, नैट्रम, सैलिसि, ओपियम, फॉस एसिड, फॉस, पिक्रिक एसिड, सल्फर, वेरेट्रम एल्ब।

मिरगी सम्बन्धी—एकोना, बेलाडो, सिमिसिफ्यूगा, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रममेटा, लॉरोसेरैसस, इनैन्थी, साइलि, सोलेनम कैरोलि, स्ट्रैमो, वेरेट्र विरिडि।

हस्तमैथुनजनित—ऐग्नसकैस्ट, कैल्केरिया फॉस, कैन्थे, कॉस्टि, डैमियाना, नक्सवोमिका, ओपि, फास्फो एसिड, फॉसफोरस, पिक्रिक एसिड, स्टैफि।

आंशिक पक्षाघात (Paretic)—एकोना, एस्कुग्ले, ऐगैरि, आर्से, बैडियागा, बेलाडो, कैनाइन्डि, सिमिसिफ्यूगा, क्युप्रम मेटा, हायोसि, इग्ने, आइडो फार्म, मर्क, फॉस्फो, प्लम्बम मेटा, स्ट्रैमो, वेरेट्रम विरिडी, जिंकम मेटा।

वृद्धावस्था—एनाका, ऑरम आयोड, बैराइटा ऐसेटि, बैराइटा कार्ब, कैल्केरिया फॉस, कोनियम, नैट्रम आयोडेट, फॉस, सिकेलि।

उपदंशीय (Syphilitic)—आरम आयोड, कैलि आयोड, मर्करी की सभी औषधियाँ, नाइट्रिक एसिड, सल्फर।

आवेग (Emotions) परिणाम, क्रोध, बुरी खबर, आशाभंग; चिढ़ना—एकोना, एपिस, आर्से, ऑरम, ब्रायो, कॉस्टि, कैमो, काकुलस, कॉल्चि, कोलोसिंथ, जेल्से, ग्रैटि, हायोसि, इग्ने, लैके, नैट्रम म्यूर, नक्सवोमि, फास्फो एसिड, पल्से, सीपिया; स्टैफिसै।

भयाक्रमण, भय—एकोना, एपिस, ऑरम, बेलाडो, जेल्से, हायोसि, हाइपेरि, इग्नेशिया, नैट्रमम्यूर, मॉर्फिया, ओपियम, पल्से, सैम्बु, वेरेट्रम एल्ब।

शोक चिन्ता—एमोनि म्यूरि, ऐण्टिम क्रू, एपिस, ऑरम मेटा, कैल्के फॉस, कॉस्टि, कॉकु, साइक्लैमेन, इग्ने, नैट्रम म्यूर, फॉस एसिड, प्लैटिना, सैम्बुकस नाइग्रा।

डाह—एपिस, हायोसि, लैके, स्टैफिसै।

प्रसन्नता, अत्यधिक—कॉस्टि, कॉफिया, क्रोकस सैटाइ।

गृह व्याधि (Nostalgia) घर में रहने के कारण मानसिक रोग होना—कैप्सि, युपेटोरियम पर्प्युरियम, हेलिबोरस, इग्ने, मैग म्यूर, फॉस्फो एसिड, सेनेसियो ऑरियस।

लज्जा, कलंक, मानहानि, मौन अप्रसन्नता—ऑरम, इग्ने, नैट्रम म्यूर, स्टैफिसै।

भय-त्रास-उठाये जाने का या उठाकर दूसरी जगह से जाने का—बोरेक्स, ब्रायो, सैनिकु।

सड़क को पार करने का, भीड़, कौतूहल से—एकोनाः हाइड्रोक्लो एसिड, प्लैटिना।

अन्धेरे से, भूत-प्रेत—एकोना, आर्से, बेलाडो, कॉर्बोवेज, कॉस्टि, हायोसि, लाइको, मेडोरि, ओपियम, फॉस्फो, पल्से, रेडियम, रसटॉ; स्ट्रैमो।

मृत्यु से, घातक रोग से आने वाली विपत्ति का—एकोना, ऐग्नस, कैस्ट, एनाका, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्से, ऑरम, कैक्टस, कैल्के कार्ब, कैना इन्डि, सिमिसि, डिजिटै, जेल्से, ग्रैफा, हाइड्रै, इग्ने, कैलि कार्ब, लैक कैना, लिलिटिग्रि, मेडोरि, नाजा, नैट्रम म्यूर, नाइट्रिक एसिड, नक्सवो, फैसिओल, फॉस्फो, प्लैटिना, पोडो, सोरि, पल्से, रसटॉ, सैबाडि, सीकेलि, सीपिया, स्टैन, स्टैफि, स्टिलि, सिफि, वेरेट्रम एल्ब।

नीचे की तरफ गति, गिरने का—बोरैक्स, जेल्से, हाइपेरि, सैनिकुला।

हृदय-गति के रुकने का, चलते-फिरते रहना आवश्यक—बोरैक्स, जेल्से, (विपरीत लक्षण होने से डिजिटै)।

दूध से—कैनाबिस सै।

बुद्धिहीनता का—एकोना, एलुमिना, आर्जे नाइट्रि, कैल्के कार्ब, कैनाबि इण्डि, क्लोरम, सिमिसि, आयोडीन, कैलि ब्रोमे, लैक कैनाइनम, लिलियम टिग्रि, लाइसिन, मैन्सिने, मेडोरि, प्लैटिना, सीपिया, सिफिलि, वेरेट्रम एल्ब।

हिलने का—ब्रायो, कैलेडि, जेल्सी, मैग फॉस।

संगीत से—एकोना, ऐम्ब्रा, ब्यूफो, नैट्रम कार्ब, नक्सवोमि, सैबाडिला, टैरे हिस्पा, थूजा।

शोरगुल से—एकोना, ऐसैर, बेलाडो, बोरैक्स, कैलेडि, कैमो, कॉकु, फेरम, इग्ने, कैलिकार्ब, मैग म्यूर, मेफाइ, नैट्रम कार्ब, नाइट्रिक, एसिड, नक्सवो, फॉस्फो, साइलि, टैनेसे, टैरे हिस्पा, थेरिडि, जिंकम मेटा।

लोगों से (Anthorophobia)—एकोना, ऐम्ब्रा, ऐनाका, ऑरम, बैराइटा कार्ब, कोनि, जेल्से, इग्ने, आयोड, कैलि फॉस, लाइको, मेलिलो, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, सीपिया, स्टैफि।

बन्द जगहों से—सक्निम।

नोकीली चीजों से—साइलि, स्पाइजे।

विष का—हायोसि, कैलि ब्रोमे, लैके, रसटॉ, वेरेट्रम विरिडी।

वर्षा से—नाजा।

अकेले रहने से, घृणा—ऐन्टिमटार्ट, आर्से, बिस्मथ, कोनि, हायोसि, कैलि कार्ब, लैककैना, लिलि टिग्रि, लाइको, नाजा, फॉस्फो, पल्से, रेडियम, सीपिया, स्ट्रैमो, थाइमॉल, वेरेट्रम एल्ब।

अकेले रहने की इच्छा—ऐम्ब्रा, एरैगेल, आर्से मेटा, ऑरम, बैराइटा कार्ब, ब्रायो, ब्यूफो, कैक्ट, कैम्फि, कार्बो एनि, सिमिसि, कोका, साइक्लै, जेल्से, इग्ने, आयोड, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नक्सवो, ऑक्सिट्रो, फॉस्फो एसिड, स्टैफि, थूजा।

दूरी का (Agoraphobia) खुली जगहों का भय—एकोना, आर्जे नाइट्रि, आर्निका, कैल्के कार्ब, हाइड्रोसियानिक एसिड, नक्सवोमि।

मच्चभय—एनाका, आर्जेनाइट्रि, जेल्से।

उपदंश भय—हायोसायमस।

बिजली तूफान—बोरैक्स, एलेक्ट्रिसिटस, नैट्र कार्ब, फॉस्फो, सोरि, रोडो, साइलि।

स्पर्श—एकोना, ऐंगस्टियुरा, एण्टिक्रू, एण्टि टार्ट, एपिस, आर्निका, बेलाडो, कैमो, सिना, सिन्कोना, कॉलच्चिकम, हीपर, आयोड, कैलिकार्ब, लैंके, मैग फॉस, नाइट्रिक एसिड, मक्स मॉस, नक्सवो, फॉस्फो, प्लम्बम, सैनिकु, सीपिया, स्पाइजे. स्ट्रैमो, सल्फर, टैरेण्टु हिस्पा, थूजा।

जल से भय (Hydrophobia)—एगैवे, एनागै, एण्टिमक्र, बेलाडो, कैन्थे, कॉक्सिनेला, फेगस, हायोसि, लैके, लॉरो, लाइसिन, स्पाइरिया, स्ट्रेमो, सल्फर, टैनेसे, वेरेट्र एल्ब, जैन्थक स्पिसिनोसम।

रोग-भ्रम (Hypochondriasis)—एल्फाल्फा, एलो, एल्यूमि, एनाका, आर्जे नाइट्रि, आर्से, ऑरम मेटा, ऑरम म्यूर, ऐवेना, कैक्ट, कैल्के कार्ब, सिमिसि, कोनि, फेरम मेटा, बेलोनि, हाइड्रोसिएसिड, हायोसि, इग्ने, कैलि ब्रो, कैलिफॉस, लाइको, मर्क, नैट्रम कार्ब, नैट्रम म्यूर, नक्स वोमि, फॉस्फो एसिड, प्लम्ब, पोडो, पल्सै, स्टैनम, स्टेफि, सल्फर, सुम्बु, टैरेण्टुला, हिस्पा, थेस्पियम, ऑरिय, थूजा, बैले, वेरेट्रम एल्ब, जिंक मेटा, जिंक ऑक्सि।

हिस्टीरिया—एकोना, ऐग्नसकैस्ट, ऐम्ब्राग्रि, एमोवैले, एपिस, ऐक्वले, एसाफि, एस्टेरि, बेलाडो, कैक्ट, कैजुपु, कैम्फोरा मोनोब्रोम, कैनाइंडि, कैस्टोरि, कॉलो, कैमो, सिमिसि, कॉकु, कोनि, क्रोकस, युपैटोऐरो, जेल्से, हायोसि, इग्ने, कैलिफॉ, लिलिटिग्रि, मैग म्यूर, मॉस्क, माइगेल, नक्समॉस, ओरिजै, फास्फो एसिड, फास्फो, प्लेटिना, पोथॉस, स्कुटे, सिनेसि, सीपिया, स्ट्रिकान, फॉसे, सुम्ब, टैरेण्टु, हिस्पा, थेरि, वैलेरि, जिंक वैले।

कल्पना—मनोवृत्तियाँ, मनोराज्य, निर्मूल भ्रम, साधारण भ्रम, तीव्र, स्पष्ट-ऐब्सिंथि, एकोना, एगैरि, ऐम्ब्रा, बेलाडो, कैना इंडि, डियुब्रो, हायोसि, कैलिकार्ब, लैके, ओपियम, रसटॉ, स्कोपोल, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्रम एल्ब, देखिये हैलुसिनेशन (निर्मूल भ्रम)।

घर से दूर होने का भ्रम, घर पहुँचना आवश्यक जान पड़े और वैसी भावना रहे—ब्रायो, कैल्केरिया फॉस, सिमिसि, हायोसि, ओपियम।

मानो बिस्तर पर कोई अन्य व्यक्ति भी लेटा है—पेट्रोलि।

मानो बिस्तर धँसा जा रहा है—बैप्टि, बेलाडो, बेंजो, कैलि कार्ब।

मानो बिस्तर बहुत कड़ा है—आर्नि, बैप्टि, ब्रायो, मॉर्फि, पाइरो, रूटा।

मानो कोई गाली दे रहा है या गलती निकाल रहा है—बैराइटा कार्ब, कोकेन, हायोसि, इग्ने, पैलेडि, स्टैफि।

मानो कोई कत्ल कर रहा है—ऐब्सिंथि, कैलि ब्रो, प्लम्बम मेटा।

मानो टुकड़े-टुकड़े किया जा रहा है और इधर-उधर बिखेरा जा रहा है—बैप्टि, डैफ्नेइंडि, पेट्रोलि, फॉस्फो, स्ट्रैमो।

मानो मकान गिर रहा है और वह उसके नीचे कुचला जा रहा है—आर्जे नाइट्रि।

मानो उसकी मृत्यु हो गयी है—एपिस, लैके, मॉस्क, ओपियम।

मानो वह राक्षस है, कोसता है, कसमें खाता है—एनाका।

मानो उसका सर्वनाश हो रहा है, वह नर्कवास करेगा एकोना, आर्से, ऑरम, साइक्लै, लैके, लिलिटिग्रि, लाइको, मेलिलो, ओपियम, प्लैटिना, सोरि, पल्से, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्र एल्ब।

मानो उसमें दो व्यक्ति हैं (द्वि-व्यक्तित्व)—एनाका, बैप्टि, कैना इंडि, पेट्रोल, स्ट्रैमो, थूजा, ब्रैले।

मानो काले बादलों से ढँका हुआ है, सारा जगत अन्धकारमय और भयानक है—आर्जे नाइट्रि, सिमिसि, लैक, कैना, पल्से।

मानो कुर्सी के नीचे से कोई चूहा दौड़ रहा है और वह भयभीत हो गया है—इथूजा, सिमिसि, लैक कैना।

मानो किसी अपराध में दोषी ठहराया गया है जो उससे नहीं हुआ है—आर्से, सिना, साइक्लै, इग्ने, नक्सवो, रूटा, स्टैफि, वेरेट्रम एल्ब, जिंक मेटा।

मानो अंग खोखले हैं कॉकु, आक्सि ट्रा।

मानो अजनबी वातावरण में है - साइक्यूटा, हायोसि, प्लैटिना, ट्युबर।

मानो हल्का हो गया, केवल आत्मा है, हवा में तैर रहा है—एसारम, दतूरा, ऐरबोरिया, हाइपेरिकम, लैक, कैना, लैक्टो डेक्ट, हैसेल्टी, नैट्र आर्से, ओपियम, रसग्लैबरा, स्टिक्टा, वैलेरियाना।

मानो कांच, लकड़ी आदि का बना है—युपियन, रसटॉ, थूजा।

मानो कारबार में लगा हुआ है—ब्रायो, ओपियम।

मानो शत्रुओं से सताया जा रहा है—एनाका, सिन्कोना, कोकेन, हायोसि, कैलिब्रो, लैके, नक्सवो, प्लम्बम मेटा, रसटॉ, स्ट्रैमो।

मानो विष दिया जा रहा है—हायोसि, लैकेसिस, रसटा, वेरेट्रम विरि।

मानो उसमें दो इच्छा-शक्तियाँ हैं—एनाका, लैके।

मानो उसके पेट में मस्तिष्क है—मर्कुरियस पेरे।

मानो गर्भवती है या उसके उदर में कोई जीवित वस्तु है - क्रोक, साइक्लै, ओपियम, सैबाडिला, सल्फर, थूजा, वेरेट्र एल्ब।

मानो पीछा किया जा रहा है - एनाका, हायोसि, स्ट्रैमो।

मानो आत्मा और शरीर अलग हो रही है—एनाका, नाइट्रिक एसिड, थूजा।

मानो शरीर फूल गया है - एकोना, एरैनिया, आर्जे नाइट्रि, एसाफि, बैप्टि; बोविस्टा, कैना इंडि, ग्लोनो, ओपियम, प्लैटिना।

मानो आधिदैविक बन्धन में है—एनाका, लैके, ओपि, प्लैटिना, थूजा।

मानो बहुत रागग्रस्त है—आर्से, पोडो, सैबाडि।

मानो बहुत धनवान है—फास्फो, प्लैटिना, पाइरो, सल्फर, वेरेट्रम एल्बम।

मानो चीजें बड़ी हो गयी हैं—एकोना, एगैरि, आर्जे नाइट्रि, एट्रोपिन; बोविस्टा, कैना इंडि, जेल्स, ग्लोनो, हार्यासि, ओपियम, पैरिसकोयाड्रि।

मानो सभी चीजें उल्टी हैं—कैम्फारा, मोनो ब्रो।

मानो सभी चीजें छोटी हैं—प्लैटिना।

समय और दूरी का भेद लोप होना या गड़बड़ाना—ऐन्हैलोनियम, कैना इंडि; साइक्यूटा विरोसा, ग्लोनो, लैके।

समय के बोध में परिवर्तन, समय धीरे-धीरे व्यतीत हो—ऐल्यूमि, ऐम्ब्रा; ऐन्हैलोनियम, आर्जे नाइट्रि, कैना इंडि, मेडो, नक्स मॉस, नक्स वोमि।

काल्पनिक भ्रम-साधारण औषधियाँ—एब्सिथि, एगैरि, ऐम्ब्रा, एनाका, ऐन्हैलोनियम, एण्टिपाइरिन, आर्से एल्बम, ऐट्रोपिन, बेलाडोना, कैना इंडि, कैन्थेरिस, कैमो, क्लोरैलम, सिमिसिफ्यूगा, कोकेन, क्रोटेलम, कैल्कै, हायोसि, कैलि ब्रोमे, लैके; नैट्रसैलिसिलिकम, नक्स वो, ओपियम, फॉस्फो, स्ट्रैमो, सल्फर, थिया, ट्राइयोन, जिंक म्यूर।

काल्पनिक भ्रम, दृष्टि सम्बन्धी, श्रवण सम्बन्धी (घटिगा संगीत, बोलियाँ)—एगैरिकस, एनाका, एण्टिपाइ, आर्से, बेलाडोना, कैना इंडि, कैमो, कोकेन, इलैप्स, मर्क, नाजा, नैट्र फास, पल्से, स्ट्रैमो, थिया।

काल्पनिक भ्रम गंध विषयक—ऐग्नस कैक्टस, एनाका, आर्से, इयुफोर्बियम, एमिगडेल, ओपियम, पैरिस क्वाड्रि, जिंक म्यूर।

काल्पनिक भ्रम स्पर्श सम्बन्धी—एनाकार्डियम, कैन्थेरिस, ओपियम, स्ट्रैमो।

काल्पनिक भ्रम दृष्टि सम्बन्धी (जानवर, खटमल, चेहरे)—ऐब्सिथि, ऐगेरि, एम्ब्रा, ऐन्हैलोनियम, ऐन्टिपाइरिन, आर्से, एट्रोपिन, बेलाडोना, कैल्के कार्ब, कैनाबिस इंडिका, सिमिसिफ्यूगा, कोकेन, हायोसि, कैलि ब्रोमे, लैकेसिस, मार्फिनम, नैट्रसैलि, ओपियम, पैस्टिनाका, फास्फोरस, प्लैटिना, पल्से, सैण्टो, स्ट्रैमो, सल्फर, वैलेरियाना, वेरेट्र एल्बम।

पागलपन—उन्माद, शोकग्रस्त, मनोभ्रंश देखिए।

बकवादीपन - एगैरिकस, ऐम्ब्रा, बेलाडो, कैना इंडि, सिमिसिफ्यूगा, कोकेन, यूजेनिया जेम्ब्रोस, हायोसि, लैकेसिस, ओपियम, पैस्टिनाका, फाइसैलिस, स्ट्रैमो, टैरेण्टुला हिस्पा, वैलेरियाना, वैरेट्रम एल्बम।

उन्माद-साधारण **औषधियाँ**—ऐब्सिथि, एकोना, एगैरिकस, एनाकार्डियम, आर्निका, आर्से, एट्रोपि, बैप्टि, बेलाडो, ब्रायो, कैना इंडि, कैन्थे, क्लोरैल, सिमिसि-फ्यूगा, सिन्कोना, क्रोकस, क्रोटेलस कैस्कै, क्युप्रम एसेटिकम, क्युप्रममेटा, ग्लोनो, ह्रायोसि, कैलि ब्रो, लैके, लॉरोसिरैसस, लिलि टिग्नि, लाइकोपो, मर्क, नैट्रम्यूर, नक्स वोमि, ओपियम, ओरिजेनम, पैसिफ्लोरा, फासफोरस, पिक्रि एसिड, पिसिडा, प्लैटिना, पल्से, रसटॉ, सिकेलि, सोलेनम नाइग्रम, स्पाइजे, स्पंजिया, सल्फर हाइड्रो, सल्फर, स्ट्रैमो, टैरेण्टुला हिस्पा, अस्टिलैगो, वेरेट्रम एल्बम, वेरेट्रम विरिडी।

कामोन्माद (मदोन्माद, अतिकामोत्तेजना)—ऐम्ब्रा, एपिस, बैराइटा म्यूर, कैल्केफास, कैना इंडि, कैन्थे, फेरू ग्लॉला, जिन्सेंग, ग्रैटियोला, ह्रायोसि, लिलिटिग्रिनम, मेन्सिनेलिया, म्यूरेक्स, ओरि-जैनम, फॉस्फोरस, पिक्रि एसिड, प्लैटिना, रोबिनिया, सैलिक्स नाइग्रा, स्ट्रैमो, टैरेण्टुला हिस्पा, वेरेट्रम एल्बम।

विषादोन्माद (Lyfemania)—आर्से, आरम, कॉस्टि, साइक्यूटा, नक्स वो, पल्स।

एक विषयक उन्माद (Kleptomania इत्यादि)—ऐब्सिथि, साइक्यूटा, ओरियस, आक्सिट्रोपिस, प्लैटिना, टैरेण्टुला हिस्पा।

सूतिकोन्माद—ऐग्नसकैस्ट, बेलाडो, सिमिसि, ह्रायोसि, प्लैटिना, सीकेलि, सेनासयो ओरियस, स्ट्रैमो, वेरेट्रम एल्ब, वेरेट्रम विरिडी।

विषाद रोग (Melancholia) साधारण औषधियाँ—एकोना, ऐग्नस कैस्ट, एलुमिना, एनाका, आर्जे नाइट्रि, आर्से, आरममेटा, बैप्टि, बेलाडोना, कैक्टस, कैल्केका, कैम्फो, कास्टि, सिमिसि, सिन्को, कोका, कॉफिया, कोनि, साइक्लै, डिजि, फेरममेटा, जेल्से, हेलिबो, हेलोनि, इग्ने, आयोड, कैलिब्रो, लैक कै, लैके, लिलियम टिग्रि, लाइको, मर्क, नैट्रमम्यूर, नक्स मॉस, नक्स वो, ओपियम, फॉस्फोएसिड, फास्फो, पिक्रिएसिड, प्लैटिना, प्लम्ब मेटा, पोडो, पल्से, सीपिया, साइलीशिया, सालेनमकैरो, स्ट्रैमो, सल्फर, टैरेण्टुला हिस्पा, थूजा, वेरेट्रम एल्बम, वेरेट्रम विरिडी, जिंक मेटा।

यौवनारम्भ—एण्टिक्रू, हेलेबो, मैन्सिने, नैट्रम म्यूर।

प्रासूतिक (Puerperal)—ऐग्नस कैस्टस, बेलाडोना, सिमिसि, नैट्रम म्यूर, प्लैटिना, वेरेट्रम विरिडी।

धर्म सम्बन्धी—आर्से, आरममेटा, ऑरम म्यूर, केलिब्रोमे, लिलियम टिग्रि, मेलिलो, प्लम्ब, सोरि, पल्से, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्रम एल्ब।

लिंग (Sexual)—ऐग्नस कैस्ट, ऑरम मेटा, सिमिसि, कोनि, लिलियम टिग्रि, नक्सवो, पिक्रि एसिड, प्लैटिना, सीपिया।

स्मरणशक्ति-भूलना, दुर्बल या पूर्ण लोपता—ऐब्सिथि, एकोना, इथूजा, ऐग्नस, एल्युमिना, एम्ब्रा, एनाका, एन्हैलोनियम, आर्जेण्ट नाइट्रि, आर्निका, ऑरम,

एजाडि, बैराइटा कार्ब, कैलोडि, कैल्केका, कैल्के फॉस, कैम्फो, कैना इंडि, कार्बोज, कॉकु, कोनि, ग्लिसेरिन, इक्थि, कैलि ब्रो, कैलि कार्ब, कैलिफा, लैक कैना, लैके, लेथिथि, लाइको, मेडो, मर्क, नैट्र फा, नेट्रम म्यूर, नाइट्रिक एसिड, नक्स मॉस, नक्सवोमि, ओलियेण्ड, ओपियम, फास्फो एसिड, फास्फो, पिक्रि एसिड, प्लम्ब मेटा, रोडो, रसटॉ, सेलेनि, सीपिया, साइलि, सल्फर, सिम्फाइट, टेलूरि, थाइरॉयडिन, जिंक मेटा, जिंक फॉस, जिंक पिक्रि।

परिचित गलियाँ याद न आयें—कैना इंडि, ग्लोनो, लैके, नक्स मॉस।

नाम याद न पड़े—एनाका, बैराइटा, एसे, क्लो म युओनाइनम, ग्वायकम, हीपर, लाइको, मेडो, सल्फर, सिफिलि, जेरोफाइलम।

बातचीत करने में सही शब्द याद न रहे-(स्मृतिहीन, वाचाघात, वाक्विकार— (amnesic aphasia Paraphasia)—एगैरि, एलुमि, एनाका, एरागैलस, आर्से नाइट्रि, आर्निका, कैल्केका, कैल्केफॉस, कैनाबिस इंडि, कैमो, सिन्को, डायस्को, डल्का, कैलि ब्रोमे, लैक केना, लिलिटिग्रि, लाइको, नक्स मॉस, फास्फो एसिड, प्लम्ब मेटा, सुम्बुल, जेरोफाइ।

ध्यान जमाने में कठिनाई या बेवसी—इथू, एगैरि, ऐग्नस कैस्ट, एलो, एलुमिना, एनाका, एरागैलस, आर्जे नाइट्रि, वैप्टि, वैराइटा का, कैना इंडि, कॉस्टि, कोनि, फैगोपा, जेल्से, ग्लोनो, ग्लिसेरिन, हेलेबो, इक्थ, इण्डो, इरोडि, लैक कैना, लाइको, ओपियम, नेट्र का, नक्समॉस, नक्सवो, फास्फो एसिड, फॉस्फो, पिक्रिएसिड, पिट्युट, सीपिया, साइलि, स्टैफि, सल्फर, सिफिलि, जेरोफा, जिंक मेटा।

अक्षर या शब्द छोड़ दे—बेंजो एसिड, सेरियस सर्प, कैमो, कैलि ब्रो, लैक कैना, लैके, लाइको, मेलि, नक्स मॉस, नक्स वो।

विचार-गति तीव्र—एनाका, बेलाडो, कैना इंडि, सिमिसि, सिन्को, कॉफिया, इग्ने, लैक कैना, लैके, फाइजॉस्टि।

विचार-गति मन्द—एग्नस, कैप्सि, कार्बोवेज, लाइको, मेडो, नक्समॉस, ओपियम, फॉस्फो एसिड, फास्फोरस, प्लम्ब, सीकेलि, थूजा।

पढ़ते, बात करते या लिखते समय विचारों का लोप हो जाना—एनाका, ऐसैर, कैम्फो, कैना इंडि, लैके, लाइको, नक्समॉस, पिक्रि एसिड।

सोच न सके—एबीज ना, इथूजा, एल्यूमिना, एनाका, आर्जेन्टम नाइट्रि, ऑरम मेटा, बैप्टि, कल्के का, कैनाइंडि, कैप्सि, कोनि, जेल्से, ग्लिसरीन, कैलिफॉस, लाइको, नैट्र फा, नैट्रम्यूर, नक्स मॉस, नक्सवो, ओलिएण्ड, पेट्रोलि, फास्फोरिक एसिड, फास्फो, पिक्रिक एसिड, रसटॉ, सीपिया, साइलि, जिंक मेटा।

दुर्बल, अति मैथुन से—ऐग्नस, एनाका, आर्जेण्टम नाइट्रि, ऑरम, सिनकोना, नैट्रम्यूर, नक्सवो, फास्फोरिक एसिड, स्टैफि।

मन-अन्यमनस्क (Absent minded)—एकोना, ऐग्नस, एनाका, एपिस, ऐरागै, आर्निका, बैराइटा का, कैना इंडि, कैलिब्रो, क्रियोजोट, लैक कैना, लैके, मर्क, नैट्रम म्यूर, नक्स मॉस, फॉस एसिड, पोथ, रसटॉ, टेल्युरि, जिंक।

नैतिक और इच्छा-शक्ति का अभाव—ऐब्रो, ऐसिटैनि, एनाका, सेरियस सर्पें, कोका, कोकेन, कैलि ब्रो, कॉफिया, ओपियम, पिक्रिक एसिड, स्टिक का, टैरे हिस्पा।

धुँधलापन, गड़बड़ी; उदासी; मन्दता—एबीज नाइग्रा, एकोना, एस्कु, एगैरि, एलैंथ, ऐल्फा, एल्यूमि, एनाका, एपिस, ऐरागै, आर्जेण्टनाइट्रि, आर्निका, बैप्टि, बैराइटा का, बेलाडो, कैल्के का, कैना सैटाइवा, कार्बोनि, सल्फ्यू, साइक्यूटा, कॉकु, कॉलचि, युओनाइमस, फेरम मेटा, जेल्से, ग्लोनो, ग्लिसरिन, हेलेबो, हायोसि, हाइपेरिकम, इण्डोल, इरिडि, कैलिब्रो, कैलिफॉस, लैककैना, लेसिथि, लाइको, मैन्सि, नैट्रमका, नक्स मॉ, नक्सवो, ओपियम, फॉसएसिड, फॉस्फो, पिक्रिएसिड, पिसिडिया, रसटॉ, सेलेनि, स्टैफि, स्ट्रैमो, सल्फोनैल, जेरोफाइल, जिंकमेटा, जिंक वैले।

उत्तेजना, प्रफुल्लता—एकोना, ऐगै, बेलाडो, कैना इंडि, कैन्थे, कोका, कोकेन, कॉफि, कोक, युकेलि, हायोसि, लैके, मर्कसाइ, नक्सवो, ओपियम, पालिनिया, फाइजॉ, पिसिडिया, स्ट्रैमो, थिया, वेरेट्र एल्बम।

भाव-चित्तवृत्ति-बिजली के गर्जन के साथ तूफान के समय बेचैनी, चिन्ता—नैट्रका, फॉस्फो।

पेट में व्याकुलता, मालूम हो—आर्नि, डिजि, इपीका, कैलिका, पल्से, वेरेट्रम एल्बम।

व्याकुलता, उत्सुकता, बेचैनी—एकोना, इथू, ऐग्नस, ऐमिल, एनाका, एण्टिक्रूड, आर्जेनाइट्रि, आर्से, एसाफि, आरम, बेलाडो, बिस्मथ, बोरै, कैक्ट, कैल्के का, कैम्फो, कैमो, सिमिसि, सिन्कोना, कॉफिया, कोनि, क्युप्रममेटा, डिजि, हीपर, इग्ने, कैलिकार्ब, लैके, लिलिटिग्रि, मेडो, नेट्रम कार्ब, नैट्रम्यूर, नाइट्रिक एसिड, नक्सवो, ओपियम, फास्फो, प्लैटिना, सोरि, पल्से, रसटॉ, सीकेलि, सीपिया, साइलि, स्टैंथ, स्टैफि, स्ट्रैमो, सल्फर, टैबे, वेरेट्रम एल्बम।

उदासीनता सभी चीजों से अनिच्छा—एगैरि, ऐग्नस, एपिस, आर्जेनाइट्रि, आर्नि, आर्से, बैप्टि, ब्रायो, सिमिसि, सिन्को, कोनि, फ्लो एसिड, जेल्से, ग्लिसरीन, हेलेबो, हाइड्रोसिएसिड, इग्ने, इण्डोल, लैबर्न, लैके, लिलिटिग्रि, मर्क, नेट्रम्यूर, नक्स मॉस, नक्सवो, ओपियम, फॉस्फो एसिड, फास्फो, फाइटो, पिक्रिएसिड, प्लैटिना, सीकेलि, सीपिया, स्टैफि, थूजा, वेरेट्रम एल्ब।

मानसिक अथवा शारीरिक काम से घृणा—एगैरि, एल्फा, एलो, एनाका, एरागै, आरम म्यूर, बैप्टि, बैराइटा कार्ब, कैल्के का, कैप्सि, कार्बो एसिड, कॉस्टि,

सिन्को, कोका, कोनि, साइक्लैमेन, जेल्स, ग्लोनो, हेलिबो, इण्डोल, कैलि फास, लेसि, मैग फास, नैट्र कार्ब, निकोल सल्फ, नाइट्रिक एसि, नक्स वो, आक्सिट्रो, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, पिक्रि एसिड, पल्से, रैमनस कैल, सेलेनि, सीपिया, साइलि, स्ट्रिक्निया फॉस, सल्फर, टैनेसेटम, थाइमॉल, जिंक मेटा।

लज्जाशील डरपोक—एम्ब्रा, ऑरम, बैराइटा का, कैल्केरिया का, कैल्के साइलि, कास्टि, कोका, कोनियम, ग्रैफा, इग्ने, कैलिफास, लिलिटिग्रि, मैन्सिने, मेलिलो, फास्फो, पल्से, साइलि, स्टैफि।

शिकायत करते रहना, असंतुष्ट, अतृप्त - एलो, एण्टि क्रूडम, आर्से, बिस्मथ, बोरै, ब्रायो, कैप्सि, कैमो, सिना, कॉलचि, इंडोल, कैलिकार्ब, मैगफास, नाइट्रिक एसिड, नक्सवो, प्लैटिना, सोरि, पल्से, स्टैफि, सल्फर, टैबे।

हताश, निराश, आसानी से हिम्मत हारना, आत्म-विश्वास का अभाव—एकोना, ऐग्नस, ऐल्यूमि, एनाका, एण्टि क्रूड, आर्जेनाइट्रि, आर्नि, आर्से, ऑरम, बैराइटा का, कैल्केका, कैल्केसिलि, कॉस्टि, कोनियम, जेल्से, हेलिबो, इग्ने, आयोड, लिलिटिग्रि, नैट्रम म्यूर, नाइट्रिक एसिड, नक्स वो, ओपियम, फास्फो एसिड, फास्फो, पिक्रि एसिड, सोरि, पल्से, रूटा, सेलेनि, सीपिया, स्टैफिसिफिलि, थाइमॉल, वेरेट्रम एल्ब।

दोष लगाते रहना, तुच्छ विषयों पर अधिक ध्यान देना, अत्यधिक सावधानी—एपिस, आर्से, कैमो, ग्रैफा, हेलोनि, मार्फिनम, नक्स वो, प्लैटिना, सीपिया, स्टैफि, सल्फर, टैरेण्टु हिस्पा, वेरेट्रम एल्बम।

निडर, अस्वाभाविक हिम्मत—एगैरि, बेलाडो, कोकेन, ओपियम, साइलि।

बेचैन, खिन्न, चिड़चिड़ा, दुःशील, झगड़ालू, भुनभुनाना—एब्रो, एकोना, इस्क्यु, इथू, एगैरि, एनाका, ऐण्टि क्रू, ऐण्टिटा, एपिस, आर्से, ब्रायो, ब्यूफो, कैल्केब्रो, कैल्केका, कैप्सि, कास्टि, कैमो, सिना, सिन्को, कॉलचि, कोलोसिं, कोनि, क्रोक, फेरम मेटा, हेलोनि, हीपर, आइबेरिस, इग्ने, इण्डोल, इपिकाक, कैलिकार्ब, कैलिफॉस, क्रियोजोट, लैक कैना, लिलिटिग्रि, लाइको, नैट्रम म्यूर, नाइट्रिक एसिड, नक्स वो, प्लैटिना, पल्से, रेडियम, रियूम, सारसा, सीपिया, साइलि, स्टैफि, सल्फोनाल, सल्फर, सिफिलि, थूजा, थाइमॉल, ट्यूबर, वैलेरि, वेरेट्रम एल्ब, वेरेट्र विरिडी, जिंक मेटा।

आकुल, रात और दिन—कैमो, इग्ने, इपिका, लैक कैना, सोरि, स्ट्रैमो।

आकुल, दिन ही में—लाइको।

आकुल, रात ही में—ऐन्टी टार्ट, जैलापा, नक्स वो, रियुम।

आकुल, ताकि बच्चा स्पर्श, देखा जाना या किसी का बोलना पसन्द न करे—ऐन्टिमक्रू, एण्टिटा, कैमो, सिना, जेल्से, नक्स वो, सैनिक्यूला, साइलि, थूजा।

आकुल, बच्चा भिन्न-भिन्न चीजें माँगता है, मगर मिलने पर सदा बहिष्कार कर देता है ऐण्टि टार्ट, ब्रायो, कैमो, सिना, इपेकाक, क्रियोजोट, रियुम, स्टैफि।

प्रसन्न, चञ्चल, मग्न—एनागै, बेलाडो, कैना इण्डि, कॉफि, क्रोकस सैटाइवा, साइप्रिपि, युकैलि, फॉमिका, हायोसि, लैके, नक्स मॉस, प्लैटिना, स्पांजिया, स्ट्रैमो, थिया, वैलेरि।

शोक करना, मनन करना, आहें भरना—एलैन्थ, कैल्के कार्ब, सिमिसि, डिजिटै, आइवेरिस, इग्ने, लाइको, म्यूर एसिड, नैट्र म्यूर, फास्फो एसिड, पल्से।

अभिमानी, जिद्दी, घमंडी—बेलाडो, कोनि, क्युप्रम मेट, लैके, लाइको, पैलैडि, फॉस्फो, प्लैटिना, स्टैफि, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्बम।

अभिमानी, दूसरों का अपमान करे—इपेका, प्लैटिना।

अभिमानी ऐग्नस, आरम, लैक कैन, थूजा।

अति उत्तेजनीय, विरोध सहन न हो, तुच्छ बातों पर चिढ़े—एकोन, ऐनाका, एण्टिक्रू, आर्नि, आर्स, ऐसाफि, ऐसैरि, ऐस्टेरि, ऑरम, बेलाडो, ब्रायो, कैन्थे, कैप्सि, कैमो, सिना, सिन्को, कोकु, काल्चि, कोलिसिं, कोनि, फेरम मेट, हेलेबो, हेलोनि, हीपर, इग्ने, लैके, लाइको, मेजे, मार्फि, म्युरि एसिड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, पैलैडि, पेट्रोलि, फॉस, प्लैटिना, पल्से, सारसा, सीपिया, साइलि, स्टैफि, थुजा, थाइरॉये।

हिस्टीरिया युक्त (परिवर्त्तनशील, विरुद्ध भावनायें)—एकोना, एलम, ऐम्ब्रा, एसाफि, कैम्फोरा, मोनाब्रो, कैस्टोरि, कॉस्टि, सिमिसि, कौबैल्टम्, कॉकू, कॉफिया, क्रोक, जेल्से, इग्ने, कैली फॉस, टिप्रि, मैंगे एसेटि, मॉस्कस, नैट्र म्यूर, नक्स मॉस, फास्फो, प्लैटिना, पल्से, सीपिया, सुम्बुल, टैरण्टु हिस्पै, थ्लैस्पि, वैलेरि, जिंकम वैले।

अधीर प्रेरक—एकोना, ऐनाका, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, कैमो, कोलो, हीपर, इग्नै, मेडो, नैट्र म्यूर, नक्स वो, पल्से, रियूम, सीपिया, स्टैफि, सल्फर।

निर्लज्ज, अपमानकारी, डाही, बदला लेने वाला, द्रोही—ऐनाका, आर्स, ब्यूफो, कैमो, सिन्को, क्युप्रम, लैक कैना, लाइको, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, स्टैफे, टैरे हिस्पै।

निर्लज्ज, चिढ़ानेवाला, डाँटने पर हँसे—ग्रैफा।

अनिश्चित, डाँवाडोल—आर्जेनाइट्रि, ऑरम, बैराइटा का, कैल्के, साइलि, कॉस्टि, ग्रैफा, इग्ने, नक्स मॉस, नक्स वो, पल्स।

आलसी, अशान्त, सुस्त, उत्साहहीन—ऐलेट्रि, एलो, ऐनाका, एपिस, ऑरम मेट, बैप्टि, बैराइटा कार्ब, बर्बे ऐक्वि, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कोनियम, साइक्लैमेन, डिजि, युफ्रै, फेरम, जेल्से, ग्लानो, हेलोनि, इण्डोल, कैलि फॉस, लेसिथिन, लिलि टिग्रि, मर्क, नैट्र म्यूर, नक्स वो, फॉस्फो, पिक्रिक एसिड, पल्से, रुटा, सैर्कोल, एसिड, सीपिया, स्टैनम, सल्फर, थाइमोल, जिंकम।

डाही—एपिस, हायोसि, इग्नै, लैके, नक्स वोमि।

चिन्ताकुल, निराश, उदास, विषादपूर्ण, विचारमग्न, भयभीत, मन की मलीनता—एबीस नाइग्रा, एकोना, एस्क्यु, ऐग्नस, ऐल्फा, एल्युमि, ऐमो कार्ब, एमो म्यूर, एनाका, एपिस क्र, एपिस, आर्जे, नाइट्रि, आर्से, आर्स मेट, ऑरम, ब्रायो, ब्युट्रि एसिड, कैक्टस, कैल्के, आर्स, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सिमिसि, सिन्को, कॉकु, कोनि, क्युप्रम मेटा, साइक्लै, डिजि, युओनाइम, युफ्रेसि, ग्रेफा, हेलेबो, हेलोनि, हीपर, हाइड्रै, आइवेरिस, इग्ने, इण्डिगो, आयोडम, कैली ब्रो, कैली फॉस, लैक कैन, लैक डेफ्लो, लैके, लिलि टिग्रि, लाइको, मेडो, मर्क, माइगेल, माइरिका, नाजा, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नैट्र आर्स, नाइट्रिक एसिड, नक्स मॉस, नक्स वो, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, प्लैटिना, प्लम्बम, पोडो, सोरिनम, पल्से, रेडियम, रस टॉ, सैर्कोलैक एसिड, सारसा, सेनेसिओ, सीपिया, साइलि, स्पाइजे, स्टैनम, स्टैफि, स्टिलिंज, सल्फर, टैबेकम, थूजा, वेरेट्र ऐल्बम, जिंक मेट, जिंक फास।

कोमल, विनीत, सहनशील—ऐलुमिना, इग्नै, म्युरेक्स, फॉस्फो एसिड, पल्से, सीपिया, साइलीशिया।

लोकशत्रु, कृपण, स्वार्थी—आर्स, लाइको, पैलैडियम, प्लैटिना, सल्फर, सीपिया।

उत्तेजित, घबराया हुआ, अस्थिर, चिन्ताग्रस्त—ऐब्सिंथ, एकोना, ऐम्ब्रा, एनाका, एबीज, एपियम ग्रै, आर्जे नाइट्रि, आर्स, एसाफि, ऐसैर, ऑरम म्यूर, बेलाडो, बोरैक्स, बोवि, ब्युट्रि एसिड, कैल्के ब्रो, कैम्फोरा, मोनोब्रो, कॉस्टि, सेड्रोन, कैमो, सिमिसि, सीना, कॉफिया, कोनियम, फेरम, जेल्से, हेलोनि, हायोसि, हायोसि हाइड्रो ब्रोम, आइरिस, इग्नेशिना, कैली ब्रो, कैली फॉस, लैक कैना, लैकेसिस, लिलि टिग्रि, मैग का, मेडो, मॉर्फिनम, नैट्रम कार्ब, नक्स मॉस, नक्स वो, फॉस, सोरिनम, पल्से, सिकेलि, साइलीशिया, स्टैफि, स्ट्रैमो, सुम्बुल, टैरेण्टुला हिस्पा, थिया, वैलेरियाना, जिंकम मेट, जिंकम फास, जिंकम वैलेरियन।

अश्लील, कामातुर—कैंथ, हायोसि, लिलि टिग्रि, म्यूरेक्स, फास्फोरस, पल्से, स्टैफि, स्ट्रैमो, वेरेट्र ऐल्बम।

बेचैन (मानसिक और शारीरिक)—ऐब्सिन्थि, एकोना, एगैरि, ऐम्ब्रा, ऐरैनै, आर्स, आरम मेटा, बेलाडो, बिस्मथ, कैम्फो, कैना इण्डि, कैन्थे, कॉस्टि, सेन्क्रिस,

कैमो, सिमिसिफ्यु, काफिया, हायोसि, इग्नैशिया, आयोडम, कैली ब्रोम, लैक कैना, लैकेसिस, लॉरोसिरैसस, लिलि टिग्रि, मेडो, नक्स वो, मार्फिया, म्यूर एसिड, माइगेल, नैट्र कार्बो, नैट्र म्यूर, नक्समॉस, नक्सवो, ओपियम, फॉस्फो, फाइटो, प्लैटिना, सोरिनम, पाइरोजेन, रेडियम, रस टॉ, रूटा, साइलीशिया, स्ट्रैमो, टेरेण्टुला हिस्पानि, आर्टिका, वैले, वेरेट्र एल्बम, वेरेट्र विरिडि, जिंकम मेटा, जिंकम वैले।

दुःखी, भावुक, आहें भरना—ऐग्नस कैस्टस, एमो कार्ब, एमो म्यू, ऐण्टिम क्रूडम, आरम, कैक्टस, कैल्के फॉस, कार्बो ऐनि, सिमिसि, कॉकु, कोनियम, साइक्लै, डिजि, ग्रैफा, आइबेरिस, इग्ने, इंडिगो, कैली फास, लैकेसिस, लिलि टिग्रि, म्यूर एसिड, नाजा, नैट्र का, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, फॉस्फो एसिड, फास्फोरस, प्लैटिना, सोरिनम, पल्से, रस टॉ, सिकेल, सेलेनि, सीपिया, स्टैनम, स्टैफि, सल्फर, थूजा, जिंक मेटा।

दुःखी, संगीत सुनकर रुदन करे—एकोना, एम्ब्रा, ग्रैफा, नैट्र कार्ब, नैट्र सल्फ, सैबाइना, टैरैण्टु हिस्पा, थूजा।

गन्दा, फूहड़—एमो कार्ब, कैप्सि, मर्क, सोरि, सल्फर, वेरेट्र एल्बम।

हठी, मनमानी काम करने वाला—एगैरि, एण्टि क्रू, ब्रायो, कैप्सि, कैमो, सिन्को, कैली कार्ब, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, सैनिकु, साइलीशिया, स्टैफि।

मूर्ख——इस्क्यु ग्लै, एनाका, एपिस, आर्न, बैप्टि, बेलाडो, ब्रायो, कॉकु, जेल्से, हेलेबो, हायोसि, इण्डोल, लैके, नक्स मॉ, ओपियम, फॉस एसिड, फॉस्फो, रस टॉ, सिकेलि, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्बम।

आत्महत्या—ऐलुमिना, एनाका, एण्टि क्रू, आर्स, ऑरम, सिंकोना, फ्लूरिको, इग्नै, आयोडम, कैली ब्रो, नाजा, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, सोरि, पल्से, रस टॉ, सिकेल, सीपिया, साइलीशिया, अस्टिलै, वेरेट्रम एल्बम।

किसी का विश्वास न करना—ऐनाका, ऐन्हैलोनियम, कॉस्टिकम, सिमिसिफ्यु, हायोसि, लैकेसिस, मर्क, नक्स वो, पल्से, स्टैफिसे, वेरेट्र विरिडि, वेरेट्र एल्ब।

सहानुभूति प्रगट करना—कॉस्टि, कॉकु, पल्से।

कम बोलना, छेड़ा जाना पसंद न करे और न सवालों का जवाब देना चाहे—एगैरिकस, ऐण्टि क्रू, एण्टि टार्ट, आर्निका, बेलाडो, ब्रायो, कैक्टस, कार्बो एनि, कैमो, कोलो, जेल्से, हेलिबो, इग्नै, आयोड, म्यूर एसिड, नाजा, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स वो, ऑक्सिट्रो, फॉस्फो एसिड, फास्फो, सार्सा, साइलिशिया, सल्फर।

कम बोलना, उदास, चुप्पा, मुँह फुलाये हो, दूसरों से अलग रहना चाहे—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टार्ट, आर्न, ऑरम मेट, ब्रायो, कैमो, सिमिसि, सिन्कोना, कोलो, कोनि, क्युप्रम, इग्नै, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वो, प्लैटिना, सैनिकु, सिटि, सल्फर, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्रम विरिडि।

रोते रहना—एमो म्यूर, एण्टि क्रू, एपिस, आर्स, ऑरम, कैक्ट, कैल्के का, कास्टि, सिमिसि, कॉकु, क्रोक, साइक्लै, डिजि, ग्रैफा, इग्नै, लैक कैना, लैके, लिलि टिग्रि, लाइको, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉस, फास्फो एसिड, प्लैटिना, पल्से, रस टॉ, सीपिया, साइलीशिया, स्टैन, सल्फर।

भयानक स्वप्न—(Night Terror)—एकोना, ऑरम ब्रो, कैल्के कार्ब, कैमो, साइक्यूटा, सिना, क्लोरेल, साइप्रिपो, कैली ब्रो, कैली फॉस, स्कूटेले, सोलैन नाइग्रम, स्ट्रैमो, ट्यूबर, जिंकम मेटा।

प्रवृत्ति—गाली देने की, कोसने की, कसम खाने की—एनाका, बेलाडो, कैंथे, सेरियस सर्वे०, लैक कैना, लिलि टिग्रि, नाइट्रि एसिड, पैलेडि, स्ट्रैमो, ट्यूबर, वेरेट्र एल्बम।

बेकार के काम में लगे रहना—एब्सिंथि, आर्जे नाइट्रि, आर्स, कैन्थे, लिलि टिग्रि, सल्फर, टैरैण्टु, हिस्पै।

उठाये जाने की और एक जगह से दूसरी जगह ले जाये जाने की—ऐण्टि टार्ट, आर्स, बेंजो एसिड, कैमो, सिना, इपिकाक।

बेरहम होने की, आक्रमणकारी निर्दयता की—एब्रोटे, ऐब्सिंथि, ऐनाका, बेलाडो, ब्रायो, कैन्थे, क्रोक, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, प्लैटिना, स्टैफि, स्ट्रैमो, टैरैण्टु हिस्पै, वेरेट्र ऐल्बम।

नाश करने की, काटने की, मारने, कपड़ा फाड़ने की—बेलाडो, ब्यूफो, कैन्थे, क्युप्रम मेटा, हायोसि, लिलि टिग्रि, सिकेलि, स्ट्रैमो, टैरैण्टु हिस्पै, वेरेट्र ऐल्बम।

गन्दे रहने की, अव्यवस्था, घृणित रहने की—कैप्सि, सोरि, साइलीशिया।

मैग्नेटाइज होने की, चम्बकीय शक्ति से प्रभावित होने की—कैल्के का, फॉस्फो, साइलि।

वीभत्स होने की—ऐनाका, कैन्थे, हायोसि, लैके, लिलियम टिग्रि, फॉस्फो, प्लैटिना, स्ट्रैमो, वेरेट्रम ऐल्बम।

आत्महत्या की—एलूमि, ऐण्टि क्रू, आर्स, ऑरम, कैप्सि, सिमिसि, इग्नै, कैली ब्रो, मर्क, नाजा, नैट्र सल्फ, नक्स वो, सोरि, पल्से, रस टॉ, थ्लैस्पि, अस्टिलै, वेरेट्र एल्बम।

नाचने की—ऐगैरि, बेलाडो, साइकूटा, क्रोकस, हायोसि, स्टिक्टा, स्ट्रैमो, टैरेण्टु हिस्पा।

मूर्खतापूर्ण काम करने की—बेलाडो, कैना, इण्डि, साइक्यूटा, हायोसि, लैके, स्ट्रैमो, टेरेण्टुला, हिस्पै।

अति लालच से भक्षण करना—लाइको, जिंकम मेटा।

जनेन्द्रिय पकड़ने की—ब्यूफो, कैन्थे, हायोसि, अस्टिलै, जिंकम।

जल्दीबाजी की—एकोना, ऐलूम, एपिस, आर्जे नाइट्र, ऑरम, बेलाडो, कॉफि, इग्नै, लिलि टिग्रि, सेड्रो, नैट्र म्यूर, सल्फ्यू एसिड, थूजा, जिंक वैले।

दूसरों से जल्दीबाजी कराने की—आर्जे नाइट्र, कैना इण्डि, नक्स मॉस।

जिसको प्यार करे उसे मारने की—आर्स, सिन्को, मर्क, नक्स वो, प्लैटि।

अस्वाभाविक, अत्यधिक हँसी आना, मामूली बातों पर भी—ऐनाका, कैना इण्डि, क्रोक, हायोसि, इग्नै, मास्कस, नक्स वो, प्लैटि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक, फॉ, टैरैण्टु हिस्पे, जिंकम ऑक्सि।

झूठ बोलने की—मार्फिनम, ओपियम, वेरेट्र एल्ब।

शरीर अङ्ग-भंग करने की—ऐगैरिकस, आर्स, बेलाडो, हायोसि, स्ट्रैमो।

बड़े-बड़े काम करने की—कोकेन।

प्रार्थना करने की, विनती करने की, गिड़गिड़ाने की—आरम मेट, पल्से, स्ट्रैमो, वेरेट्रम एल्बम।

सभी बातें दोहराने की—जिंकम मेटा।

फटकारने की—कोनियम, डल्का, लाइको, मॉस्कस, नक्स वो, पैलेडियम, पेट्रोलि, वेरेट्रम एल्बम।

गाने की—ऐगैरि, बेलाडो, कैना इण्डि, साइक्यूटा, क्रोकस, हायोसि, स्पांजिया, स्ट्रैमो, टैरेण्टु हिस्पै, वेरेट्रम एल्बम।

बिस्तर में नीचे की तरफ खिसकने की—म्यूरियेटिक एसिड।

लगातार अँगड़ाई और जम्हाई लेने की—ऐमिल नाइट्रेट, प्लम्ब मेटा।

कविता में बात करना, काव्य दोहराना, भविष्यवाणी करना—ऐगैरि, ऐण्टिक्रू, लैके, स्ट्रैमो।

चीजों को फाड़ना—ऐगैरि, बेलाडो, सिमेक्स, क्यूप्रम मेटा, स्ट्रैमो, टैरेन्टु हिस्पै, वेरेट्रम एल्बम।

चिढ़ाने की, डाँटे जाने पर हँसने की—ग्रैफा।

सिद्धांतवादी बनने की या मनन करने की—कैनाबिस इण्डिका, कॉकु, कॉफि, सल्फर।

भिन्न-भिन्न वस्तुओं को छूने की—बेलाडो, सल्फ, थूजा।

घर से निकल कर इधर-उधर व्यर्थ घूमना—ऐरैगोलस, ब्रायो, इलैटेरियम, लैके, वेरेट्र ऐल्बम।

काम करने की—इथूजा, ऑरम, सेरियस, कोकेन, कॉफि, युकैलि, फ्लो एसिड, हेलोनि, लैसेर्टस, पेडिकूलै, पिसिडिया।

चीखना—तीखी, अचानक, चुभने वाली चीख—एपिस, बेलाडो, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैमो, साइक्यूटा, सिना, सिन्को, साइप्रिपि, जेल्से, हेलेबो, आइडोफॉर्म, कैली ब्रो, स्ट्रैमो, ट्यूबर, वेरेट्रम ऐल्बम, जिंकम मेटा।

ज्ञानेन्द्रिय मन्द पड़ना—एलेन्थस, ऐनाका, बैप्टि, कैप्सिकम, डिजिटै, जेल्से, हेलेबो, फॉस्फो एसिड, रस टॉ।

अधिक तीव्र—एकोना, एसाफि, ऐसारकम, ऐट्रोपिन, ऑरम, बेलाडो, बोरै, कैमो, सिन्कोना, कॉफिया, कॉल्चिकम, फेरम मेट, इग्नै, लाइसिन, मॉर्फिनम, नक्स वो, ओपियम, फॉस्फो, साइलिशिया, स्ट्रिक, सल्फर, टैरेण्टुला हिस्पै, वैलेरि, जिंक मेट।

बोली—तेजी से जल्दी-जल्दी बोलना—ऐनाका, ऑरम, बेलाडो, ब्रायो, कॉकु, हीपर, हायोसि, लिलि टिग्र, मर्क, वेरेट ऐल्बम।

स्वरलोप या स्वरयंत्र का पक्षाघात (Aphasia) वाचाघात—बेराइटा एसेटि, बैराइटा कार्ब, बोथ्रोप्स, कॉस्टि, कैमो, चेनापो, कालिच, कोनियम, ग्लोनो, कैली ब्रो, कैली साइ, लैकेसिस, लाइको, मेजे, फास्फो, प्लम्बम मेटा, स्ट्रैमो, सल्फोनाल। देखिये स्नायु मण्डल।

मतिमन्द, कठिन, समझ में न आये, हकलाना—इस्क्यूलस ग्लैब्रा, ऐगैरि, एनाका, ऐन्हैलो, ऐट्रोपि, बैराइटा कार्ब, बेलाडो, बोथ्रोप्स, बोविस्टा, ब्यूफो, कैना, कैनाबिस सैटाइवा, कॉस्टि, सेरियस, सर्पे, साइक्यूटा, क्यूप्र मेटा, जेल्से, हायोसि, इग्ने, कैली ब्रो, कैली, साइ, लैके, लार्गो, मर्क, माइगे, नाजा, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, ओलियान्ड, ओपियम, फॉस्फो, स्ट्रैमो, सल्फोनाल, थूजा, वाइपेरा।

मतिमन्द, भावहीन, कम बोलना—मैंगैनम एसेटि, मैंगैनम ऑक्सि।

निद्राचार—(Somnambulism)—एकोना, आर्टिमिसिया वलगैरिस, कैनाबिस इण्डि, कुगरी, इग्नै, कैली ब्रो, इण्डि फॉ, फास्फो, साइलिशिया, जिंक मेट।

चिहुँकना—आसानी से डर जाये—एकोना, एगैरि, एपिस, एसार, बेलाडो, बोरै, कैलैडि, कैल्के का, कार्बो वेज, कैमो, सिमिसि, साइप्रिपि, इग्नै, कैली ब्रो, कैली का, कैली फॉ, नैट्र का, नक्स वो, ओपियम, फास्फो, सोरि, सैम्बू नाइग्रा, स्कुटेलै, सीपिया, साइलिशिया, स्ट्रैमो, सल्फर, टैरेण्टुला हिस्पै, थेरिडि, ट्यूबर, जिंक मेट।

जीवन से घृणा—(Taedium vitae)—ऐण्टि क्रू, आर्स, ऑरम, सिंको, हाइड्रैस्टिस, लैक, कैना, लैक डिफ्लो, कैली ब्रो, नाजा, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, फॉस्फो, प्लैटिना, पोडो, रस टॉ, सल्फर, टैबेकम, थूजा, वेरेट्र ऐल्बम।

सिर

मस्तिष्क – फोड़ा—आर्न, बेलाडो, क्रोटे, आयोड, लैके, ओपियम, वाइपेरा।

रक्तहीनता - एल्यूमि, आर्स, कैल्के फॉस, कैम्फोरा, सिन्कोना, फेरम मेटा, फेरम फास, कैली कार्ब, कैलीफॉस, नक्स वो, फॉस्फो, सिकेल, टैबे, वेरेट्रम एल्ब, जिंक मेटा।

क्षीणता—ऑरम, बैराइटा कार्ब, फ्लोरिक एसिड, आयोड, फॉस्फो, प्लम्ब मेटा, जिंकम मेटा।

धक्का लगना—एकोना, आर्न, बेलाडो, साइकूटा, हैमा, हाइपेरि, कैली आयोड, नैट्र सल्फ, ओपियम, सल्फ्यू ऐसिड।

रक्ताधिक्य (सिर में अधिक खून दौड़ना)—ऐबिंसथि, एकोना, ऐक्टिया स्पाइकेटा, एगैरि, ऐम्ब्रा, ऐमिल, आर्न, ऐस्टैरि, ऑरम, बेलाडो, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के आर्स, कार्बो वे, कैमो, चिनी सल्फ, सिनाबे, सिन्को, कॉफि, क्रोकस, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्र मेटा, फेरम फॉस्फो, फेरम, पाइरो, जेल्से, ग्लोनो, हायोसि, इग्नै, आयोडम, लैके, लाइको, मेलीलो, नैट्र सल्फ, नक्स वा, ओपियम, सीपिया, साइलि, सोलेनम, लाइको, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्र विरिडी।

रक्ताधिक्य, मन्द—एस्कू, क्लोरल, सिन्को, डिजि, फेरम पाइरोफास, जेल्से, हेलेबो, ओपियम, फॉस्फो।

प्रदाह (मस्तिष्क प्रदाह) (Meningitis)—मस्तिष्क सम्बन्धी (तीव्र और जीर्ण)—ऐकोना, इथू, एपिस, एपोसाइ, कैने, आर्नि, बैप्टि, बेलाडो, ब्रायो, कैल्के, ब्रो, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैम्फोरा, कार्बो एसिड, चिनि सल्फ, क्रोम ओक्सिले, साइकूटा, सिमिसि, सिन्को, क्रोटे, क्यूप्र एसिटि, क्यूप्रमेट, डिजि, जेल्से, ग्लोनो, हेलेबो, हाइड्रोसि एसिड, हाइपेरि, आयोडम, आइडो फॉर्म, कैली आयोड, क्रियोजो, लैके, मर्क का, मर्क डल्सिस, मॉस्कस, ओपियम, आक्जे एसिड, फाइसो-स्टिग्मा, प्लम्ब मेट, फॉस्फो, रस टॉ, साइलीशिया, सोलेन, नाइग्रम, सल्फर, स्टैमो, ट्यूबर, वेरेट्र विरि, वाइपेरा, जिंक मेटा। देखिए मस्तिष्क जल संचयता।

प्रदाह मस्तिष्क सम्बन्धी - क्यूप्र साइ, डिजि, हेलेबो, आयोड, सिकेल, ट्यूबर, वेरेट्रम विरि।

प्रदाह मस्तिष्क सम्बन्धी—(Cerebro Spinal) एगैरि, एलै, एपिस, आर्जे नाइ, एट्रोपिन, ब्रायो, साइक्यूटा, सिमिसि, कॉकु, क्रोटै, क्यूप्र ऐसेटि, इचिनेसिया, जेल्से, ग्लोनो, हेलेबो, हायोसि, इपिका, कैलि आयोड, लैबर्न, नैट्र सल्फ, ओपियम, ओरियोडैफ्ने, फाइसोस्टि, साइलिशिया, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्रम विरिडि, जिंक साइ, जिंक मेट।

प्रदाह, आघात सम्बन्धी—एकोना, आर्स, बेलाडो, हाइपेरि, नैट्र सल्फ, साइलिशिया।

प्रदाह, क्षय रोग सम्बन्धी—एपिस, वैसि, बेलाडो, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कॉकु, क्यूप्र साइ, डिजि, ग्लोना हेलेबो, हायोसि, आयोड, आइडोफार्म, कैली आयोड, ओपियम, स्ट्रैमो, सल्फर, ट्यूबर, वेरेट्रम विरिडि, जिंक मेटा, जिंक ऑक्सि।

पक्षाघात—ऐलुमेन, कोनियम, क्यूप्रम, मेट, जेल्से, हेलेबो, लाइको, ओपियम, प्लम्बम, सिकेल, जिंक मेट। देखिए रक्त मूर्च्छा (Apoplexy) (रक्त-संचार मण्डल)।

काठिन्य रोग (Sclerosis) (मुलायम पड़ना, क्षीण होना)—एगैरि, आर्ज नाइट्र, ऑरम, बैराइटा का, कैनाबिस इण्डि, कोनियम, कैली ब्रोमे, कैली आयोड, कैली फॉस, लैके, लाइको, नक्स मॉस, नक्स वो, फास्फो, पिक्रिक ऐसिड, प्लमबम मैट, सैलेमैण्ड्रा, वैनाडियम, जिंकम मेट। देखिये धमनी-काठिन्य रोग (रक्त-संचालन मण्डल)।

अर्बुद—ऐपोमार्फिया, आर्चि, बेराइटा कार्ब, बेलाडो, कैल्के कार्ब, कोनियम, ग्लोनाइन, ग्रैफाइ हाइड्रै, कैली आयोड, प्लम्बम मेट, सीपिया।

अनुमस्तिष्क के रोग—हेलोड, सल्फोनाल।

खोपड़ी की हड्डियों के जोड़ का स्थान-बन्द होने में देर लगना—एपिस, ऐपोसाइ, कैल्के फॉस, मर्क, सोपिया, कैल्के कार्ब, साइलिशिया, सल्फर, जिंक मेट।

सिर दर्द (Cephalagia)—कारण ऊँचाई का स्थान—कोका।

स्नान करने से—ऐण्टि क्रू।

बियर—रस टॉ।

ब्राइट रोग—ऐमो वैले, जिंकम, पिक्र।

मिश्री, चीनी की—ऐण्टि क्रू।

जुकामी—सेपा, हाइड्रै, मर्क, पल्से, स्टिक्टा।

जुकाम का दब जाना—बेलाडो, कैलीब्राइको, लैके।

कॉफी पीने से—आरम, इग्नै, नक्स वो, पॉलि।

कब्ज से—ऐलो, ऐलूमिना, ब्रायो, कालिन, हाइड्रै, नाइट्रिक एसिड, नक्स वॉ, ओपियम, रैटेन्हिया।

नाचने से—आर्ज नाइट्र।

दस्त और सिर दर्द बारी-बारी—एलो, पोडो।

शरीर में दूषित पदार्थ से—ऐक्लेपियस। बिरियाका।

मानसिक आवेश सम्बन्धी - ऐसिटैनिलिड, आर्जे नाइट्रि, कैमो, सिमिसिफ्यू, कॉफिया, एगिफेगस जेल्से, इग्ने, मेजे, फॉस्फो एसिड, पिक्रि एसिड, प्लैटिना, रस टॉ, साइलीशिया।

चर्म विस्फोट के दब जाने से—ऐन्टि, क्रू, सोरि, सल्फ।

आँखों पर अधिक जोर पड़ने से—ऐसिटैनिलिड, सिमिसि, एपिफेगस, जेल्से, नैट्र म्यूर, ओनोस्मांडियम, फॉस्फो एसिड, रूटा, ट्यूबर।

निराहार रहने से— आर्स, कैक्टस, लैके, लाइको, साइलीशिया।

पेट दर्द साथ में या बारी-बारी — बिस्मथ।

पाकाशयिक-आंत्रिक उत्पात—ऐन्टि क्रू, ब्रायो, कार्बो वेज, सिन्को, इपिका, आइरिस वर्सि, नक्स मॉ, नक्स वो, पल्से रहैमनस, कैली, रोबिनिया।

बाल कटवाने से—बेलाडो, ब्रायो।

हैट के दबाव से—कैल्के फॉ, कार्बो वे, हीपर, नैट्र म्यूर, नाइट्रिक एसिड।

रक्त प्रवाह से, अत्यधिक रक्तस्राव से या जीवन रसों के अधिक निकल जाने से—कार्बो वेज, सिन्को, फेरम, फेरम पाइरो, फॉस, फॉस्फो एसिड, साइलीशिया।

बवासीर के कारण —कोलिन्सोनिया, नक्स वो।

बरफ के पानी से—डिजिटै।

इन्फ्लुएन्जा—कैम्फोरा, लोबेलिया, परप्यु।

कपड़े पर लोहा करने से ब्रायो, सीपिया।

लेमोनेड, चाय, शराब पीने से—सेलेनियम।

जिगर की खराबी से—लेप्टैण्ड्रा, नक्स वो, टीलिया।

कटिवात में बारी-बारी—ऐलो।

मलेरिया—आर्स; कैप्सिकम, सेड्रोन, चिनिनम सल्फ, सिन्को; क्यूप्रम ऐसेटि, युपैटोरियम पर्फ, जेल्से, नैट्र म्यूर।

मानसिक परिश्रम या स्नायु-शिथिलता से—एसिटैनिलिडियम, ऐगैरि, ऐनाका; आर्जे नाइट्रि, ऑरम ब्रोम, चियानैन्थ, सिमिसि, कॉफिया, एपिस, जेल्से, इग्ने, कैली फॉस, मैग फॉस, नैट्र कार्ब, निकोल, नक्स वो, फैसिओलस, फॉस्फो एसिड, पिक्रिक एसिड, सैबैडि; स्कुटल, साइलिशिया, जिंकम मेटा।

पारा से—स्टिलिन्जिया।

नींद लानेवाली औषधियों के दुरुपयोग से – एमेटिक एसिड।

शक्ति से अधिक बोझ उठाने से—कैल्के कार्ब।

पसीना दब जाने से—ऐस्क्लेपियस सिरियाका, ब्रायो।

हवा के विरुद्ध सवारी करने से—कैल्के आयोडेटा, कैली कार्ब।

मोटर कार की सवारी से—काकुलस, ग्रेफा, मेडो, नाइट्रि एसिड।

कामोत्तेजना की दुर्बलता होने से— सिन्क, नक्स वो, ओनोस्मो, फॉस्फो एसिड, साइलिशिया।

नमदार कमरे में सोने से—ब्रायो।

नींद के अभाव से—सिमिसि, काकुलस, नक्स वो।

मेरुदण्ड के रोग से, ताण्डव रोग—ऐगैरि।

मदिरायुक्त पेय से—एगैरि, एण्टि क्रू, लोबे इंफ्ला, नक्स वो, पॉलीनिया, रोडो, रूटा, जिंकम मेटा।

सूरज के प्रकाश से या गरमी से—बेलाडो, कैक्टस, फेरम फॉस, जेल्से, ग्लोनो, कैलि हाइड्रो, लैके, नेट कार्ब, नक्स वो, सैंग्वि, स्ट्रैमो।

उपदंश सम्बन्धी—आर्स, ऑरम आर्स, ऑरम, सारसा, स्टिलिन्जिया, सिफिलि।

चाय से—नक्स वो, पॉलिनिया, सेलेनि, थूजा।

तम्बाकू से—ऐन्टि क्रू, कैलैडि, कार्बो एसिड, जेल्से, इग्नै, लोबेइन्फ्ला, नक्स वो।

आघात से—आर्न, हाइपेरि, नैट्र सल्फ।

मूत्र में मूत्राम्ल की अधिकता से—आर्न, बैप्टि, कैना इंडि, ग्लोनो, हाइपेरिकम, सैंग्विने।

गर्भाशय के रोग, परावर्तित—ऐलो, बेलाडो, सिमिसि, जेल्से, इग्ने, पल्से, सीपिया, जिंकम फॉस।

चेचक का टीका लगवाने से—थूजा।

मौसम बदलने से—कैल्के फास, फाइटो।

जाति : प्रकार—रक्तहीनता—आर्से, कैल्के फॉस, सिन्को, साइक्लै, फेरम मेट, फेरम फॉस, फेरम आयोड, कैल्मि, नैट्र, म्यूर, फॉस्फो एसिड, जिंक मेटा।

जुकामी—आर्स, बेलाडो, ब्रायो, कैम्फो, सेपा, युपेटो पर्फ, जेल्से, कैली ब्राइको, लाइको, मेन्थोल, मर्क, नक्स वो, पल्से, सैबाडि, सैंग्वि, स्टिक्टा, सल्फर।

जीर्ण—आर्जे नाइट्रि, चिनि सल्फ, कॉकु, लैके, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, प्लम्ब, सोरि, सीपिया, साइलि, थूजा, ट्यूब, जिंक मेटा।

जीर्ण : स्कूली लड़कियों का—बैराइटा कार्ब, कैल्के, फॉस, आयोडम, फॉस्फो।

जीर्ण : बैठे रहने वाले व्यक्तियों का—ऐनाका, आर्जे नाइट्रि, ब्रायो, नक्स वो।

वयःसन्धिकालीन—एमिल, कैक्टस, सिमिसि, क्रोक, साइक्लै, ग्लोनो, लैके, सैंग्वि, सल्फर।

प्रादाहिक रक्ताधिक्य—एकोन, एमिल, आर्जे नाइट्रि, बेलाडो, ब्रायो, कैक्टस, चिनि सल्फ, फेरम फास, जेल्से, ग्लोनो, ग्लिसरीन, जीनोसिया, लैकेसिस, मिलिफो,

नैट्र म्यूर, नक्स वो, ओपियम, फैसिओल, सैंग्वि, साइलीशिया, सोलैन नाइ, सल्फर, अस्निया, वेरेट्रम विरिडि।

प्रादाहिक : मन्द—चिनि सल्फ, फेरम फॉस, फेरम पाइरोफॉ, जेल्से, ओपियम, साइलिशिया।

पाकाशयिक, पित्त सम्बन्धी—एमो पिक्रि, ऐनाका, आर्जे नाइट्रि, बैप्टि, ब्रायो, कैमो, चेलिडो, चिओनैन्थ, साइक्लै, युपेटो पर्फ, इपिका, आइरिस, लोबै इन्फ्ला, मर्क सल्फ, नक्स वो, पोडो, पल्से, रोबिनिया, सैंग्वि, स्ट्रिक, टैरैक्सै।

हिस्टीरिया युक्त (मस्तिष्क शूल के साथ)-एगैरि, ऐक्विले, कॉफिया, युओनिम हीपर, इग्नै, कैली कार्ब, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, नक्स वो, प्लैटिना, पल्से, थूजा।

मासिक धर्म सम्बन्धी—इथूजा, ऐवेना, बेलाडो, कैक्टस, कैना इंडि, कैनासैटा, चिओनैन्थ, सिमिसिफ्यूगा, सिन्को, कॉकु, क्रोकस, साइक्ले, फेरम मेट, ग्लोनो, ग्लिसरीन, कैली फास, लैक डिफ्लो, लैके, लिलि टिग्रि, नैट्र म्यूर, प्लैटी म्यूर, पल्से, सैंग्वि, सीपिया, अस्टिलै, वाइबर्नम ओपु, जैन्थक।

मस्तिष्क शूल, प्रायः आधे सिर का स्नायविक—ऐमोन कार्ब, ऐमो वैले, ऐनाका, ऐन्हैलो, आर्जे नाइट्रि, एस्टेर, ऐवेना, बेलाडो, ब्रायो, कैफेन सिट्रि, कैल्के एसेटिक, कैल्के कार्ब, कैना इंडि, कार्बो एसिड, सेड्रान, चिओनैन्थ, सिमिसि, कॉकु, काफिया, क्रोटै, कैल्के, साइक्लै, एपिफे, जेल्से, गुआरिया, इग्ने, इण्डिगो, आइरिस, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, लैक डिफ्लो, लैके, मेलि, मेनिस्पिरमम, नैट्र म्यूर, निकोलस, नक्स वो, ओनोस्मो, पॉलीनिया, प्लैटिना म्यूर, पल्से, सैंग्वि, सैपोनिन, स्कूटेले, सीपिया, साइलिशिया, स्पाइजे, स्टैनम, सल्फर, टैबे, थिया, थेरि, बरवैस्कम, जैन्थो, जिंकम सल्फ, जिंकम वैले, जिजिया।

स्नायुशूल—ऐकोनिटीन, एस्क्यू, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेलाडो, बिस्मथ, सेड्रोन, रिपा, चेलिडो, चिनि सल्फ, सिमिसि, कोलो, डेरिस, जेल्से, मैग फॉ, मेलि, मेन्थॉल, ओरिया डैफ, पैलैडि, फास्फो, स्पाइजे, टैरैण्टु हिस्पै, जिंक वैले।

वात रोग सम्बन्धी गठिया युक्त—ऐक्टिया स्पाइकाटा, बेलाडो, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कॉल्चि, कोलो, डेरिस, गुआइकम, हीपर, इपिका, कैलि सल्फ, कैल्मिया, लाइको, नक्स वो, फाइटो, रस टा, सीपिया साइलि, सल्फर।

मूत्र अम्ल की अधिकता से—आर्न, ग्लोनो, हाइपेरि, सैंग्वि।

गर्भाशय—डिम्बाशय सम्बन्धी—बेलाडो, सिमिसि, जेल्से, हेलोनि, इग्नै, ओनोसिया, लिलि टिग्रि, प्लैटिना, पल्से, सीपिया, जिंकम।

स्थान अगले भाग में—एकोना, एस्कु, ऐल्फा, एलैन्थस, ऐगैरि, ऐलो, ऐमो कार्ब, ऐनैका, ऐण्टि पाइरि, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आरम बेलाडो, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो ऐसिड, सेड्रीन, सेपा, चिनि सल्फ, चियोनैन्थ, यूपेटो पर्फ, युफ्रे, जेल्से, ग्लोनो, हाइड्रै, इग्नै, इण्डोल, आइरिस, कैली बाइक्रो, लेप्टै मेलि, मेनिस्पे, नैट्र म्यूर, नक्स वो, फास्फो, पिक्रि एसिड, प्रूनस स्पाइनोसा, टिलिया, पल्से, रोबीनिया, रस टॉ, स्कुटेलै, साइलि, स्टेलैरिया, स्टिक्टा, वायोला ओडोराटा।

अगले भाग का जो आँखों तक, नाक की जड़ तक, चेहरे इत्यादि तक बढ़े—एकोना ऐगैरि, ऐलो, आर्स, आर्स मेटै, बैडियागा, ब्रायो, कैप्सि, सेड्रोन, सेरियस, सिमि, हीपर, इग्नै, कैली आयोड, लैके, मैग म्यूर, मेंथोल, ओनोस्मो, प्लैटिना, प्रूनस स्पि, टिटेलिया, स्टिक्टा।

अगले भाग का जो पिछले भाग तक, गरदन की जड़ तक और रीढ़ तक बढ़े—ब्रायो, युओनाइम, जेल्से, लैक डिफ्लो, मेनिस्पेर, नक्स वो, ओरिऔडैड, प्रूनस स्पि, सीपिया, ट्यूबर।

सिर के पिछले भाग का—इथू, ऐल्फा, ऐनाका, एवेना, ब्रायो, कैम्फो, कैना इण्डि, कार्बो वेज, सिमिसि, कॉकु, यूओनियम, युपेटो पर्फो, फेरम मेट, जेल्से, जुन्सेंग, ग्लैंस सिनेरिया, लैक कैना, लैके, लेसिथिन, निकोल सल्फ, नक्स वो, ओनोस्मो, ओरियोडैफ, पेट्रोलि, फास्फो एसिड, पिक्रि एसिड, प्लैटि म्यूर, रेडियम, रस ग्लैब्रा, सैंग्वि, सीपिया, साइलि, सल्फर, जैन्थक, जिंक मेट।

सिर के पिछले भाग का जो आँखों और माथे तक बढ़े—एरण्डो, बेलाडो, कार्बो वेज, सिमिसि, सिन्को, जेल्से, ग्लीसरीन, इण्डोल, लैक कैना, मैग म्यूर, ओनोस्मो, फास एसिड, पिक्रि एसिड, रस रैडि, सैंग्वि, सारसा, साइलि, स्पाइजे।

आधे सिर का (Hemicrania)—आर्जे नाइट्रि, आर्से, बेलाडो, ब्रायो, सेड्रोन, कैमो, कॉफिया, कोलोसिं, साइक्लै, जिनसेंग, ग्लोनो, इग्नै, जोनोसिया, कैली बाइक्रो, लैके, नैट्र म्यूर, ओलियम, ऐनिमैलिस, ओनोस्मो, फॉस्फो, प्रूनस स्पाइकाटा, पल्से, सैंग्वि, सीपिया, स्पाइजे, स्टैनम, थूजा।

आधे सिर का, बायीं तरफ—नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओनोस्मो, सैपोनिन, स्पाइजे।

आधे सिर का दाहिनी तरफ—सेड्रोन, चेलिडो, आइरिस, कैली बाइक्रो, रेडियम, सैंग्वि, साइलि, टैबेकम।

रीढ़ और गरदन का—बेलाडो, साइलि, कॉकु, डल्का, जेल्से, गोसिपि, हेलेबो, नैट्र म्यू, नैट्र सल्फ, निकोल सल्फ, ओरियोडैफ, फॉस्फो एसिड, पिक्रि एसिड, स्कुटेले, साइलिशिया, वेरेट्रम विरिडि।

आँखों के गढ़े के ऊपरी भाग का—एकोना, ऐकोनिटिन, एलो, आर्स, कार्बो ऐसिड, सेड्रो, सेरियस, चिनि सल्फ, सिमिसि, सिनैबे, कोलोसिं, ग्लोनो, इग्नै, इण्डोल, आइरिस, कैली बाइक्रो, लाइको, मेली, मेन्थोल, नक्स वो, फेलेण्ड्रियम, पल्से, वायोला ओडो।

आँखों के गढ़े के ऊपरी भाग का बायीं तरफ—ऐक्टिया, स्पाइकाटा, आर्जे नाइट्रि, एस्ट्रगै, ब्रायो, कार्बो वेज, सेड्रोन, कॉकु, युओनियम, मेन्थोल, नक्स वो, ओरियोडैफ, सैंगोनि, सेलेन, सेनेसि, स्पाइजे, टेलूरि, जैन्थक।

आँखों के गढ़े के ऊपरी भाग का दाहिनी तरफ—ऐरण्डो, बिस्मथ, चेलिडो, आइरिस, कैली बाइक्रो, मेलिको, प्लेटिना, सैंग्वि, साइलि।

चीरफाड़ के टाँका लगाने के निशान का कैल्के फॉस।

कनपटी का - एकोना, एनाका, आर्निका, बेलाडो, ब्रायो, कैप्सि, सेड्रोन, कार्बो एसिड, चिनि सल्फ़, सिन्को, एपिस, जेल्से, ग्लोनो, इग्नै, लैकेसिस, नाजा, अनोस्मो, ओरियोडैफ, फेलाण्ड्रि, फास्फो एसिड, प्लैटिना, रस टॉ, सैंग्वि, सेनेसिओ, सीपिया, स्पाइजे, स्टैनम, सल्फ एसिड, अस्निया।

कनपटी, एक कान से दूसरे कान तक—एण्टि पाइरि, कैल्के आर्स, मेंथाल, पैलेडि, सिफिलिनम।

चाँद पर—एलुमेन, एनाका, एक्टि स्पाइका, आर्स, कैक्टस, कैल्के फॉस, सिमिसि, सिन्को, जेल्से, ग्लोनो, हाइपेरि, लैके, मेनियेन्थ, नक्स वा, पैलेडि, फेलाण्ड्रि, फास्फो एसिड, प्लैटिना, पल्से, सीपिया, सल्फर, वेरेट्रे एल्बम।

दर्द की प्रकृति : टीस, मन्द—एकोना, एस्कु, ऐल्फा, ऐलो, ऐन्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्स, एजेडि, बैप्टि, बेलाडो, ब्यूट्रि एसिड, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कार्डु मैरि, सीपा, सिमिसि, सिन्को, कॉकु, युओनिम, जेल्से, हेलेबो, हाइड्रै, इक्थि, इग्न, इण्डोल, आइरिस, कैली, बाइक्रो, लैप्टै, लिलिटिग्रि, मेंथोल, माइटेंस, नाजा, नैट्र आर्स, नक्स वो, निक्टैन्थ, ओनोस्मो, ओरियोडैफ, फैलैंड्रि, पिक्रिक एसिड, प्लम्बम मेट, स्कूटेले, साइलिशिया, स्टैनम, स्टेलैरिया।

छेदन, खोदन—आर्जे नाइट्रि, एसाफि, ऑरम, चेलिडो, क्लिमै, कोलोसिं, हीपर, नैट्र सल्फ़, सीपिया, स्ट्रैमो।

कुचलन, चोटीलापन, दर्दीलापन—आर्न, बैप्टि, बेलिस, सिन्को, कॉफिया या युओनिम, युपेटोपर्फो, जेल्से, गुवारिया, इग्नै, इपिका, लाइको, मेन्थोल, नक्स वो, फेलाण्ड्रि, फॉस्फो एसिड, रस टॉ, साइलि, टैवेकम।

जलन, गरमी - ऐकोना, एलुमेन, एपिस, आर्न, आर्स, ऐस्टेरियम, रुवैन्स, बेलाडो, कैल्के फॉस, ग्लोनो, हेलोनि, लैके, लिलि टिग्रि, मर्क, आर्कजै ऐसिड, फेलाण्ड्रि, फास्फो, साइलि, टॉगो, वेरेट्रम विरिडी, वायोलाओडो।

फटन, खुलन – एकोना, बेलाडो, ब्रायो, कैक्टस, कैप्सि, सिन्को, डैफ्नै, जेल्से, ग्लोनो, मैगम्यूर, मैलि, नैट्रम्यूर, नक्स मॉस, नक्स वो, ओलिएण्डर, पल्से, सैंग्वि, सीपिया, सोलेन, लाइको, स्ट्रिक, अस्निया, वेरेट्र एल्ब।

संकुचित; रस्सी जैसा कसापन, दबोचन—एकोना, एनाका, एण्टिपाइ, कैक्टस, कार्बो वेज, काडु मै, कोका, कॉकु, युपेटो पर्फ, जेल्से, ग्लोनो, गुवानो, आयोड, लैटै, मर्क, पिरे, मर्क, नाइट्रि एसिड, ओस्मि, प्लैटिना, स्पाइजे, स्टैनम, सल्फर, टैरेण्टुला हिस्पै, ट्युबर।

फैलने वाला भरापन—एकोना, एमिल, आर्जे नाइट्रि, बैप्टि, बेलाडो, बोवि, ब्रायो, कैप्सि, चिनि आर्स, सिमिसि, सिन्कोना, जेल्से, ग्लोनो, ग्लिसरीन, कैली बाइक्रो, मेन्थोल, नक्स वो, स्ट्रिक, सल्फर, वेरेट्रम विरिडी।

खींच—बिस्मथ, ब्रायो, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉलो, कास्टि, कैमो, कैली कार्ब, नक्स वो।

ऐंठन प्रचण्ड—एगैरि, ऐमिल, ऐनाका, आर्जे नाइट्रि, ऑरम, बेलाडो, ब्रायो, सिमिसि, सिन्को, ग्लोनो, कैली आयोड, मेलिलो, औरियो डैक, प्लैटि म्यूर, सैंग्वि, स्कूटैले, साइलि, स्पाइजे, स्ट्रिकनी, जिंक वै।

भारीपन—ऐकोना, ऐलो, आर्जे नाइट्रि, बैप्टि, बैराइटा म्यूर, बेलाडो, ब्रायो, कैक्टस, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कॉकु, जेल्से, ग्लोनो, ग्लीसरीन, हाइड्रै, हाइपेरिकम, इग्न, आइरिस, लैके, लिलि टिग्रि, मेलिलो, मेनियैन्थ, मर्क, नक्स वो, ओनोस्मो, ओपियम, औरियोडैक, पेट्रोलि, फिलैंड्रि, फास्फो ऐसिड, फॉस्फो, पिकरिक एसिड, प्लैटि, पल्से, रस टॉ, सीपिया, सल्फर, थेरिडि।

सामयिक, सविरामिक,—एकोना, ऐमोपिक्रे, आर्जेनाइट्रि, आर्स, बेलाडो, कैक्टस, सेड्रोन, चेलिडो, सिन्को, युपेटो पर्फ, जेल्से, इग्नै, कैली साइ, मैग म्यूर, निकोलम, निकोल सल्फ, सैंग्वि, सीपिया, स्पाइजे, टैबे, टेला ऐरै, जिंक वैले।

सामयिक, सविरामिक, एक दिन का नागा देकर—ऐन्हैलो, सिन्को।

सामयिक, सविरामिक, हर तीसरे दिन-सातवें दिन—युपेटो पर्फ।

सामयिक, सविरामिक, हर सातवें दिन—कैल्के आर्स, सैबाडि, सैंग्वि, साइलि, सल्फ।

सामयिक, सविरामिक, हर आठवें दिन—आयरिस।

सामयिक, सविरामिक, हर हफ्ते २ हफ्ते पर—सल्फर।

सामयिक, सविरामिक, हर २-३ हफ्ते पर—फेरम मेटा।

सामयिक, सविरामिक, हर छः हफ्ते पर—मैग म्यूर।

सामयिक, सविरामिक, कई दिनों तक रहे—टैबेकम।

सामयिक; सूरज के साथ बढ़े और घटे—ग्लोनो, केल्मिया, नेट कार्ब, नेट्र म्यूर, सैंग्वि, स्पाइजे, टैबे।

गड़न कील जैसी—ऐगैरि, ऐनाथे, ऐक्विले, कॉफिया, हीपर, इग्नै, मैग, पॉली ऐग्रो, नक्स वो, पैरैफि, रूटा, सिली, थूजा, जिंक वै।

दाब के साथ—ऐकोना, ऐलो, ऐनाका, बेलाडो, ब्रायो, कैक्टस, कैप्सि, कार्बो ऐसिड, कैमो, चेलिडो, चिओनैन्थ, सिमिसि, एपिकै, युपेटो पर्फ, फेरम, ग्लोनो, हाइड्रोसि एसिड, इग्नै, कैली कार्ब, लैके, मेलि, मेलिन्ऐथ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, ओपियम, ओरियाडैफ, पेट्रोलि, फॉस एसिड, प्लैटिना, पोडो, पल्स, रस टॉ, सैंग्वि, सीपिया, स्टैनम, स्टिक्टा, सल्फर, सल्फू ऐसिड, थैस्प, वेरैट्र, एल्ब, जिंकम मेट।

दाब, चिमटी या बांक जैसा—इक्टि स्पिका, बिस्मथ, कैक्टस, कैमो, लाइको, मेनिसपे, मेनियैन्थ, फॉस्फो एसिड, प्लैटिना, पल्से, वरबैस्क, विओला ट्रि।

दबा के फाड़ने वाला—आर्जे नाइट्रि, ऐसैफे, ऑरम, ब्रायो, कार्बो ऐन, सिमिसि, सिन्को, कोरेलि एरिओड, फैगोपा, मेनिसपे, प्रून स्पि, टैलिया, स्ट्रोन्शिया।

दाब, मन्द, बोझ जैसा—ऐलो, ऐलुमेन, कैक्टस, कार्बो वेज, सिमिसि, युपेटो पर्फ, हाईपेरि, लैके, मेनिऐन्थ, नाजा, नक्स वो, ओपियम, पेट्रोलि, फेलाण्ड्रि, फॉस्फो एसिड, पल्से, सीपिया, सल्फर, थेरिडि।

दाब, छोटे स्थानों में-आर्जे नाइट्रि, इग्नै, कैली बाइक्रो, प्लैटिना, पोथोस, थूजा।

जगह बदलने वाला, झपटने वाला, कोंचन फटन—एकोन, एस्कु, एपिस, आर्न, आर्स, बेलाडो, कैप्सि, सेडॉन, सिमिसि, सिन्को, कोली, इग्नै, आइरिस, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, लैक कैना, प्रून स्पि, पल्से, सैंग्वि, साइलि, स्पाइजे, विन्का।

धक्का (बिजली का), भोंकने जैसा—एपिस, ऐस्टेरि, बेलाडो, कैना इण्डि, सिकूटा, कॉकु, ग्लोनो, रेडियम, सैंग्वि, सीपिया, टैबे, जिंक वै।

चिलकन, चमकन—ऐकोना, एस्कू, आर्न, आर्स, बेलाडो, ब्रायो, कैना इण्डि, कैप्सि, साइक्ले, कैली का, निकोल, पल्से, टैरेण्टु हिस्पै।

बुद्धिहीन करने वाला—आर्जे नाइट्रि, बेलाडो, ब्रायो, जेल्से, ग्लोनो, सेनेसि, स्टैफि, सिफिलि।

थरथराहट, ठोंकन, हथौड़े की चोट जैसी, टपकन—एकोना, एक्टि स्पाका, ऐमिल, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेलाडो, ब्रायो, कैक्टस, कैने इण्डि, कैप्सि, चिनि आर्स, चिनि सल्फ्, सिमिसि, सिन्को, क्रोकस, युपैटो पर्फ, फेरम मेट, फेरम फॉस, जेल्से, ग्लोनो, ग्लिसरीन, हाईपरि, आइरिस, लैक डि; लैके, लाइको, मेलि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पॉली सोरी, पल्से, सैंग्वि, सीपि, साइलि, स्पाइजे, सल्फर, टोंगो, बैरेट्र वि।

साथ के लक्षण-घोर कष्ट और विह्वलता—ऐकोना, आर्स, प्लेटिना।

धमकी उत्तेजना, तनाव—ऐकोना, बेलाडो, ग्लोनो, ग्लिसरीन, मेली, पॉथी, अस्लिया, वेरैट्र वि ।

मेरुदण्ड मार्ग में जलन—पिक्रि एसिड ।

गनगनी—आर्जे नाइट्रि, कैम्फो, लैक्ट्रसा विरोसा, मैंगेन म्यूर, पल्स, सैंग्वि, साइलि ।

ठंडक, पीठ और सिर के पिछले भाग में—बर्बे वल्गे ।

ठंडक, सिर में—कैल्के ऐसेटिका, कैल्के कार्ब, सीपि, वेरेट्र ऐल्बम ।

ठंडक हाथों और पैरों का—बेलाडो, कैल्के कार्ब, फेरम मेट, लैके, मेली, मेनिऐन्थ, नाजा, सीपि, सल्फर, वेरैट्र ऐल्बम ।

उदर शूल—ऐलो, कॉकु ।

कब्ज—ऐलो, ऐलुमे, ब्रायो, युओनिम, हाइड्रै, लैक डि, निकोल, नक्स वो, ओपियम, प्लम्ब मेटै ।

जुकाम—ऐगैरि, कैम्फो, सेपा ।

खाँसी—आर्न, कैप्सि, लाइको ।

सन्निपात के साथ—ऐगैरि, बेलाडो, सिफिलिनम, वेरेट्र एल्बम ।

दस्त के साथ—ऐलो, कैमो, पोडो, वेरैट्र एल्बम ।

चौंधाई—येलैंथस, ऐंटि टार्ट, ब्रेका, चेलिडो, डूबो, जेल्से, इण्डियम, लेप्टै, माइरिका, स्टेलैरिया ।

कान, जलन—रस टॉ ।

कान, बहरापन—चिनि सल्फ़ु, वरबैस्क ।

कान, गर्जन—आरम, चिनि सल्फ़ु, सिन्को, फेरम मेटा, सैंग्वि, सल्फोना ।

कान, फड़कन—कैप्सि ।

पेट में खालीपन—इग्ने, कैली फॉस, सीपि ।

उत्तेजना, आवेग—कैने इण्डि, पैलैडि ।

उत्तेजना, काम सम्बन्धी—एपिस, प्लैटी म्यूर ।

शिथिलता, शक्तिक्षीणता—आर्स, ऑरम ब्रोम, सिन्को, जेल्से, इग्नै, इण्डियम, लैक डि, लोबे इन्फ्ला, पिकरिक एसिड, सैंग्वि, सल्फर ।

आँखें, अन्धापन या दृष्टि बाधा, पहले या साथ में—ऐन्हैलो, बेलाडो, साइक्लै, एपिफेगस, जेल्से, इग्नै, आइरिस, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, लैक कैन, लैक डि, नैट्र म्यूर, निकोल, नक्स वो, पिकरिक एसिड, पोडो, सोरि, सैंग्वि, साइलि, थेरी, जिंक सल्फ़ु ।

आँखें बड़ी मालूम दें—आर्जे नाइट्रि ।

आँखों में भारीपन—ऐलो ।

आँखों और पलकों का भारीपन—बेलाडो, जेल्से ।

आँखों में रक्ताधिक्य—बेला; मेली, नक्स वो ।

आँखों से पानी बहे—चेलिडो; फैलाण्ड्रि; रस टॉ, स्पाइजे, टैक्सस ।

आँखों में चोटीलापन, दर्द—ऐलो, सेड्रो, सिमिसि, युपेटो पर्फ; जेल्से, होमैरस, मेन्थाल; माइर, नैट्र म्यूर, फेलैण्ड्रि, स्कूटेल, साइलि, स्पाइजे ।

आँखों से दिखाई न पड़े; जब सिर का दर्द शुरू हो—आइरिस, लैकेडि, नैट्रम्यूर ।

चेहरा सुर्ख गरम—एकोना; एमिल, बेलाडो, कैमो, फेरम फास, जेल्से, ग्लोनो, मैग फॉस, मेलिलो, नाजा, नैट्र म्यूर, नक्स वो, पोडो, सैंग्वि, सीपिया ।

चेहरा पीला—एकोन, कैल्के कार्ब, सिन्को, इग्नै, लैके, लोबेला इन्फ्ला, मेलिलो, नैट्र म्यूर, साइलि, स्पाइजे, टैबे, वेरेट्रम वि ।

गशी—नक्स वो, वेरेट्र वि ।

ज्वर—ऐकोन, आर्स, बेलाडो, फेरम फॉस ।

उदर वायु—ऐस्क्लेपि ट्यूब, कैल्के एसेटि, कैल्के फॉ, कैना इण्डि, कार्बो वेज, जैन्थकजाइलम ।

पेट दर्द, साथ में या बाद में—बिस्मथ ।

पाकाशयिक आंत्रिक क्रम-भंग—ऐगै, एलो, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ब्रायो, कैने इण्डि, कार्बोवेज, सिन्कोना, आइरिस, नक्स वो, पोडो, पल्से ।

बाल झड़ना—ऐण्टि क्रू, नाएट्रि एसिड, साइलि ।

सिर आगे-पीछे हिलाना या और किसी प्रकार से—लेमियम, सीपिया ।

सिर पीछे को हटा हो—बेलाडो, कॉकु, गौसिप ।

हृदय की गति परिश्रमित—लाइकोपस ।

बवासीर के साथ—नक्स वोम ।

भूख के साथ—ऐनाका, कैक्टस, एपिफे, इग्नै, लाइको, सोरि ।

दाहिनी कोख में चिलकन—एस्कू ।

चिड़चिड़ापन—ऐनाका, ब्रायो, कैमो, इग्ने, नक्स वो ।

जिगर विकार—चेलिडो, जुग्लैंस, सिनेरि, लेप्टै, नक्स वो ।

बकवादीपन—कैने इण्डि ।

कटिवात बारी-बारी—ऐलो ।

मानसिक मन्दता, निराशा, शोकग्रस्त—ऐलो, अर्जे नाइट्रि, ऑरम, इग्ने, इण्डोल, आइरिस, लैक डिफ्लो, नाजा, पिकरि एसिड, प्लम्बम मेट, पल्से, सारसा, सीपिया, जिंक मेट ।

मानसिक दौर्बल्य—अर्जे नाइट्रि, नक्स वो, साइलि ।

वैशिक दर्दीलापन—जेल्से, रस टॉ ।

मिचली—ऐलो, एण्टि क्रू, आर्स, ब्रायो, कॉक्कु, फेरम मेटा, जेल्से, इण्डोल, इपिका, आइरिस, लैककैना, लैक डिफ्लो, लोबे इन्फ्ला, लोबे पर्फ, नाजा, नैट्र म्यूर, नक्स वो, पॉली, पेट्रोलि, पल्से, सैंग्वि, सीपिया, सिलिका, टैबे ।

सिर की खाल पर गठिया युक्त अस्थि गुल्म—साइलिशिया ।

नकसीर के साथ—एगैरि, एमिल, एण्ट्र क्रू, हैमा मेली ।

नाक सूखी, स्नायुशूल—डल्का ।

सुन्न होना, चुनचुनी, होंठ, जबान और नाक का—नैट्र म्यूर ।

सुन्न होना—चेलीडो, इण्डोल, प्लेटिना ।

कनपटी में दर्दीलापन—सिमिसि, साइलि ।

अति उत्तेजना—आर्स, बेलाडो, कैमो, सिन्को, कॉफिया, इग्ने, नक्स वो, साइलि, स्पाइजे, टेला एरानिया ।

उदर पीड़ा—सीना, कोलो, वेरैट्र एल्बम ।

अंगों में पीड़ा—सैंग्वि ।

कटि-प्रदेश में पीड़ा—रेडियम ।

धड़कन के साथ—कैक्ट, स्पाइजे ।

अनेक बार मूत्र-स्खलन के साथ—ऐस्क्ले साइरि, जेल्से, इग्ने, लैक डि, सैंग्वि, स्कूटेलै, साइलि ।

मुँह से अधिक पानी बहना, लार—फेगस, आइरिस ।

साँस-यन्त्र बाधाओं के साथ—लैक्टू विरो ।

बेचैनी—आर्स, हेलेबो, इग्ने, पाइरो, स्पाइजे ।

सिर की खाल कुचली मालूम पड़े—एस्कू, सिन्को, कोलो, सिलिका ।

तमोदृष्टि—(Scotoma)—ऐस्पैरे ।

अनिद्रा के साथ—कॉफिया, इण्डियम, सिफि, जिंक वैले ।

अधिक पसीना—लोबे, इन्फ्ला, टैबे ।

आपेक्षिक लक्षण—इग्नै ।

कनपटी की शिराओं में अधिक खून भरा हो—कार्ल्स बैड, जेल्से ।

प्यास—पूलेक्स ।

जबान पर मैल, दुर्गन्ध इत्यादि—कैल्के एसेटि, कार्ड मैरि, युओनिम, जाइम्नो क्लोडस, पल्से ।

दाँत दर्द—सैंग्वि ।

शरीर भर में कम्प—आर्जे नाइट्रि, बोरैक्स, जेल्से ।

चक्कर—ऐकोन, ऐग्रोस्ट, ब्रायो, चिनि सल्फ, सिन्कोना, कॉकु, युपेटो पर्फ, जेल्से, ग्लोनी, इग्नै, लैप्ट, लोबे पर्फ, नक्स वो, पोडो, सीपिया, जैन्थकजा।

के के साथ—आर्जे नाइट्रि, आर्स, ब्रायो, कैल्के; ऐसे, कैमो, सिन्को, काकु, ग्लोनी, इपिकाक, आइरिस, लैक कैने, लैक डि, लोबे इन्फ्ला, मेलीलो, नैट्र म्यूर, नक्स वो, पल्से, रोबिनिया, सैंग्वि, सीपिया, सिलिका, वेरेट्रम एल्बम, जिंक सल्फ्यु।

जम्हाई—कैली कार्ब, स्टैफि।

घटना-बढ़ना—बढ़ना अधिक औषधि के दुरुपयोग से—नक्स वो।

मध्यरात्रि के बाद—फेरम मेट।

तीसरे पहर—ऐनैंथ, वैडि, बेलाडो, साइक्ले, युपेटी, रप्यु, इण्डौल, लोबे इन्फ्ला, मेलीलो, सेलेनि।

खुली हवा में—आर्स, बोविस्टा, वैन्का, सिन्को, कॉकू, कॉफिया, मैग म्यूर, नक्स वा, सीपिया।

क्रोध से—नक्स वॉ।

ऊपर चढ़ने से—एण्टिम क्रू, बेलाडो, ब्यूट्रि एसिड, कैल्कै कार्ब, कोन, वैले, मेनियन्थि।

अधिक ध्यान देने से—इग्नै।

सोते से जागने पर—लैके।

ताली बजाने से—एन्हैलो।

सिर पीछे की तरफ झुकाने से—ग्लोनो।

सिर आगे की तरफ झुकाने से—बेलाडो, कोबै।

दाँत बन्द करने से—एमो कार्ब।

बाहरी ठंडी हवा से—आर्स, बेलाडो, सिन्को, युपेटो, रप्यु, फेरमफॉस, इक्थि, इग्नै, आइरिस, नक्स वो, रोडो, रस टॉ, सिलिका।

छूने, स्पर्श से—बेलाडो, सिन्को, फेरम फॉ, रस टॉ, टैरे हिस्पै।

खाँसने से—ऐकोना, आर्न, बेलाडो, ब्रायो, कैप्सि, कार्बो वेज, आइरिस, कैली कार्ब, नैट्र म्यूर, नक्स वो, पेट्रोलि, फास्फो, सीपिया, सल्फर।

कॉफी पीने से—ऐक्टि, स्पा, इग्नै, नक्स वो।

दूध पीने से—ब्रोमियम।

खाने से—ऐमो कार्ब, आर्न, आर्स, ऐट्रोपा, ब्रायो, कैक्ट, कॉकु, कॉफिया, जेल्से, इग्नै, लैके, लाइको, नक्स वो।

शाम को—ऑरम, कॉस्टि, सेपा, साइक्लो, यूपेटी रप्यु, इण्डोल, कैली सल्फ, पल्से, प्लैटी।

परिश्रम, मानसिक या शारीरिक—ऐलो, ऐनाका, अर्जे नाइट्रि, कॉक्कु, एपिके, जेल्से, नैट कार्ब, नक्स वो, फॉस्फो, पिक्रिक एसिड, सीपिया, सिलिका, ट्यूबर।

धीरे-धीरे अधिक हो या कम हो—प्लैटिना, स्टैनम।

खखारने से—कानवैले।

झटका, गलत कदम पड़ने इत्यादि से—ऐलो, बेलाडो, ब्रायो, सिन्को, क्रोटे, फेरम फॉ, ग्लोनो, लैके, लाइको, मेनियैन्थ, रस टॉ, सिलिका, स्पाइजे, थूजा।

बायीं तरफ का अधिक—ऐनाका, आर्स मेट, ब्रोमि, चिनि सल्फ, साइक्लै, एपिके, युपेटी परप्यु, लैके, निकोल, ओरियोडैफ, पैरेफिन, सैपोनि, सैनेसि, सीपि, स्पाइजे, थूजा।

प्रकाश से—बेला, फेरम, लैक डि, लाइसिन, इग्ने, कैली बाइक्रो। कैली कार्ब, नक्स वो, ओरियोडैफ, फेलाण्ड्रि, सैंग्वि, स्कूटेले, साइलि, टैरेण्टु, हिस्पै।

लेटने पर—आर्स मेट, बेलाडो, बोविस्टा, सिनको, कोनो, युपेटी पर्फ, जेल्से, ग्लोन, लैके, लाइको, रस टॉ, सैंग्वि, थेरि।

सिर के पिछले बल लेटने से—कॉक्कु, कोलो।

दर्द वाली करवट लेटने पर—सीपिया।

मासिक धर्म—क्रोकस, लैल डिफ्लो, नैट्र म्यूर, सीपिया।

सुबह के समय—ऐस्कू, ऐलूमि, एमो म्यूर, ऐलैरै, साइक्लै, हीपर, लैक डिफ्लोट; माइर्ट, नैट्र म्यूर, निकोल, नक्स वो, फॉस्फो एसिड, पोडो, सैंग्वि, स्पाइजे, स्टेलर, सल्फर।

सुबह जागते ही, आँखें खोलते ही—बोवि, ब्रायो, ग्रैफा, नैट्र म्यूर, नक्स वो, ओनोस्मो, स्ट्रिक, टैबे।

चालन, हरकत—ऐकोन, ऐनाका, एपिस, बेलाडो, ब्रायो, म्यूट्रि एसिड, सिन्को, कॉकु, जेल्से, ग्लोनो, ग्लीसरीन, इग्नै, आइरिस, लैके, मैग म्यूर, मैंथोल, नैट्र म्यूर, नक्स वो, फॉस एसिड, टेलि, रस टॉ, सीपिया, स्पाइ, साइलि, स्टैन, थेरि।

आँखें हिलने पर—बेलाडो, ब्रायो, सिमि, कोलो, क्युप्र मेट, जेल्से, इक्थि, इग्नै, नक्स वो, फाइसोस्ट, पल्से, रस टॉ, स्पाइजे।

पैशिक तनाव के कारण—कैल्के कार्ब।

नींद लाने वाली औषधियों के कारण—कॉफिया।

रात के समय—आर्स, ऑरम, बोविस्टा, मर्क डल्सिस, टिलिया, पल्से, स्ट्रिक, सल्फर, सिपि, टैरैण्टु हि।

आवाजों से—एकोना, आर्स, बेलाडो, कॉफिया, फेरम फॉस, इग्नै, लैक डिफ्लो, लैकनैन्थ, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, फैलाण्ड्रि, फॉस्फो एसिड, टिलिया, सैंग्वि, स्कूटेल, साइलि, स्पाइजे, टैबे, टैरैण्टु हि।

दोपहर में—चिनि सल्फ, सैंग्वि, टैवे ।

नकसीर से—ऐमिल, ऐण्टि क्रू ।

चमकीली चीजों से—बेलाडो, ओरियाडैफ, फॉस एसिड, साइलि, स्पाइजे ।

गंध से—कॉफिया क्रूडा, इग्नै, स्कूटेलै, सेलेनि ।

अधिक गरमी होने से—कार्बो वेज, साइलि, थूजा ।

दाब से—डायस्को, हीपर, लैके, नैट्र आर्स, टिलिया, साइलि ।

कार की सवारी से—कॉकू, कैली कार्ब, पेट्रोलि ।

दाहिनी तरफ—बेलोडो, ब्रायो, कैक्टस, कार्बो एसिड, चैलिडो, क्रोटै, हीपर, आइरिस, लाइको, मेजे, सैंग्वि, टैक्सास ।

बिस्तर से उठने पर—ब्रायो, कॉकु ।

बैठने पर——सिन्कोना, रस टॉ ।

सोने के बाद—क्रोटै, कैस्कै, इग्नै, लैके ।

उत्तेजक वस्तुओं के दुरुपयोग से—इग्नै, नक्स वो ।

मलत्याग से—ऐलो, इग्नै, ऑक्जे एसिड ।

झुकने से—ऐकोन, आर्स मेट, बेलाडो, ब्रायो, ग्लोनो, इग्नै, लैके, नक्स वो, पल्से, रस वेने, सिपिया, साइलि, सल्फर ।

धूप से—बेलाडो, जेल्से, ग्लोना, कैली बाइक्रो, लैके, नैट्र का, नक्स वो, सैंग्वि, सेलेनि, स्पाइजे ।

बात करने से—कैक्टस, कॉफिया, इग्नै, मेजे ।

तम्बाकू से—कार्बो एसिड, जेल्से, हीपर, इग्नै, लोबे इन्फ्ला, नैट्र आर्स ।

साधारण तौर पर निम्नताप से—ऐलो, ब्रायो, सेपा, युफ्रैसिया, ग्लोनो, हाइपेरि, लीडम, निकोल, फॉस्फो, पल्से, सीपिया ।

पानी देखने से—लाइसिन ।

मौसम बदलने से—कैल्के, फॉस, डल्का, गुवाइकम, फाइटो, सोरि, रोडो, स्पाइजे ।

शराब से—नक्स वो, रोडो, जिंक ।

जाड़े से—ऐलो, बिस्मथ, कार्बो वेज, नक्स वो, सैबाडि, सल्फर ।

काली चीजों से काम करने से—सीड्रन ।

घटना-उठने पर—कैली फॉस ।

सिर पीछे झुकाने से—बेलाडो, म्यूरेक्स ।

सिर आगे झुकाने से—सिमिसि, हायोसि, इग्नै ।

आँखें बन्द करने से—ऐण्टि टा, बेलाडो ।

साधारण तौर पर ठंडक से—ऐलो, ऐलुमेन, आर्स, बिस्मथ, सेपा, साइक्लै, फेरम फॉस, लाइको, फॉस्फो, पोथो, पल्स, स्पाइजे, टैबे।

बातचीत करने से—डल्का।

अन्धेरी कोठरी में—सैंग्वि, साइलि।

खाने से—ऐलूमि, ऐनाका, एपियम ग्रै, कार्ल्स, चेलिडो, कोका, कैली फॉस, लीथियम कार्ब, सोरिनम।

सिर के पास हाथ से पकड़ने पर—कार्बो ऐनि, ग्लोनो, पेट्रोलि, सल्फ्यू एसिड।

लेटने से—ऐनाका, ब्रायो, सिन्को, फेरम, जेल्से, इग्नै, लैके, मैग म्यूर, नक्स वो, फॉस्फो एसिड, सैंग्वि, साइलि, थेरि।

लेटने से, दर्द वाली करवट—कैल्के आर्स, इग्ने।

लेटने से, दर्द वाली करवट सिर ऊँचा करके—बेलाडो, जेल्से।

लेटने से, दर्द वाली करवट, सिर नीचा करके—ऐम्ब्रिसथि, इथूजा।

मासिक धर्म के समय—बेलाडो, सेपा, ग्लिसरीन, जोनोसिया, लैके, मेली, जिंक मेट।

मानसिक परिश्रम से, जोर पड़ने से—हेलोनि, पिक्रिक एसिड।

मन्द हरकत से—सिन्कोना, ग्लोनो, हेलोनि, आइरिस, कैली फॉस, पल्से।

लगातार कड़ी हरकत से—इण्डिगो, रस टॉ, सीपिया।

नकसीर बहने से—ब्रायो, ब्यूफो, फेरम फॉस, मैग सल्फ, मेली, सोरि, रस टॉ।

खुली हवा से—ऐकोन, ऐक्टिया स्पाइ, सेपा, कोका, इण्डोल, जोनोसिया, पल्से, रेडियम, सिपिया, थूजा।

आँखों को अधखुली करने पर—ऐलो, कॉकसिनेल, आरियोडैफ।

अनेक बार मूत्र-स्खलन से—ऐकोना, जेल्से, इग्ने, फास्फो एसिड, सैंग्वि, सिलिका, वेरेट्र एल्बम।

दाब से—एपिस, अर्जे नाइट्रि, बेलाडो, ब्रायो, कार्बो ऐनि, सिन्को, कोलो, जेल्से, ग्लोलो, इग्नै, इण्डिगो, लैक कैन, लैक डि, मैग म्यूर, मैग फॉस, मेनियान्थ, नक्स मॉ, नक्स वो, पैरिस, पल्से, सैंग्वि, सिपिया, साइलि, स्पाइजे, थूजा, वेरेट्र एल्ब।

सिर को उठाने से—सल्फोनाल।

आराम, शान्ति से—बेलाडो, ब्रायो, कॉकू, जेल्से, लिथि कार्ब, मेनियैन्थ, नक्स वो, ओरियोडैफ्ने, पल्से, सैंग्वि, साइलि, स्पाइजे।

मालिश से—इण्डिगो, टेरैण्टु हि।

ओठंगने से—बेलाडो।

सोने से—कोक्सीनेल, जेल्से, नैट्र म्यूर, सैंग्वि, स्कूटेल, साइलि ।

धूम्रपान से—ऐरैनि ।

उत्तेजक वस्तु से—जेल्से ।

मल और वायु स्खलन से—इथुजा, सैंग्वि ।

झुकने से—सीना, इग्नै, मेनियान्थ ।

पसीना आने से—नैट्र म्यूर ।

चाय पीने से—कार्बो एसिड ।

दर्द के बारे में सोचने से—कैम्फोरा, हेलोनि, ऑक्जै एसिड ।

सिर आगे की तरफ घुमाने से—इग्नै ।

सिर नंगा करने से—ग्लोनो, लाइको ।

साधारण तौर पर निम्नताप से—ऐमो का, सिन्को, कोलो, इक्थि, मैग फॉस, नक्स वो, फॉस्फो, रस टॉ, साइलि ।

कस कर कपड़ा लपेटने से या पट्टी बाँधने से—ऐगैरि, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बेल, ग्लोनो, इग्नै, लैक डि, मैग म्यूर, पिक्रिक एसिड, पल्से, साइलि, स्ट्रांशिया ।

सिर में जल-संचयता (तीव्र और जीर्ण) जलगुल्म—एकोना, एपिस, ऐपोसाइनम, आर्जे नाइट्रि, आर्नि, आर्स, बैराइटा का, बेलाडो, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फा, कैन्थे, कार्बो एसिड, चिनि सल्फ्यू, सिन्को, क्युप्रम, एसेटि, साइप्रिपेडियम, डिजि, जेल्से, हेलेबो, आयोड, आयोडोफा, इपिका, कैली ब्रो, कैली आयोड, लैबर्न, मर्क सल्फ, एनोथेरा, ओपियम, फॉस्फो, पोडो, साइलि, सोलेन नाइग्र, सल्फर, ट्यूबर, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक ब्रो, जिंक म्यूर, जिंक मेट ।

हरकत, सिर रखने का आसानी—सिर के पिछले भाग को तकिये में गड़ाना या अगल-बगल घुमाना—एपिस, आरम, बेला, हेलेबो, पोडो, जिंक मेट ।

सिर को ऊपर सीधा न रख सके, गरदन के पतलेपन से—एब्रोटे, इथूजा, कॉकू, नैट्र म्यूर, वेरेट्र एल्ब ।

पीछे की तरफ खिंचा हुआ, पीछे हटा—ऐगैरि, आर्ट वल, बेलाडो, कैम्फोरा, मोनो ब्रो, सिक्यूटा, क्युरारी, हाइड्रोसि एसिड, आयोडोफो, मोर्फि, नैट्र सल्फ, सिकैल, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्रम वि ।

हरकत लगातार, बराबर हिलते रहना, झटकन, कम्पन—ऐगैरि, ऐण्टि टा, आर्स, बेलाडो, कैने इण्डि, कैमो, हायोसि, लेमियम, माइगे, नक्स मॉ, ओपियम, स्ट्रैमो, स्ट्रिक, वेरेट्र वि, जिंक मेट ।

सिर की दाद—(Seborrhoea)—एमो म्यूर, आर्स, बेराइटा कार्ब, बैल्का, ब्रायो, फ्लो एसिड, ग्रैफाई, हीपर, हिरैक्लि, आयोड, कैली सल्फ, लाइको, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, सैनिक्यूला, सिपिया, सल्फर, सल्फ आयोड, थूजा ।

चर्मोद्भेद (Eruptions)—फुन्सियाँ—एनाका, ऐण्टि टा, ऑरम, कैल्के म्यूर, कैल्के सल्फ, डल्का, हीपर, जुग्लेन्स रि, स्क्रोफुले, साइलि ।

खुरण्ड रोग—आर्कटि लप्पा, ऐसैटैकस, बैराइटा कार्ब, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के सल्फ, साइकूटा, क्लिमैटि, डल्का, ग्रैफा, हीपर, कैली म्यूर, लाइको, मर्क, मेजे, ओलियांड, पेट्रो, सोरि, रस टॉ, सारसा, स्क्रोफु, सिपिया, साइलि, सल्फर, ट्रिफोल, विनका माइनर, वायोला ट्रि ।

अकौता—(Eczema)—आर्कटियम लप्पा, ऐस्टैकस, कैल्के कार्ब, क्लिमै, ग्रैफाई, हाइड्रै, लाइको, मेजे, ओलियैण्ड, पेट्रोलि, सोरि, सेलेनि, सल्फर, टेलूरि, वायोला ओडो ।

विसर्प रोग—(Erysipelas)—बेलाडो, युफोर्ब, रस टॉ ।

शहादिया (Favus), सिर का तर गंज रोग, (Proigo Scald Head)—इथिओप्स, आर्स आयोड, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के म्यूर, कैल्के सल्फ, डल्का, फेरम आयोड, ग्रैफा, हीपर, जुग्लैन्स रि, कैली सल्फ, नाइट्रि एसिड, सिपिया, सल्फर, वायोला ट्रि ।

गुल्म अर्बुद, अस्थि गुल्म—ऐनैन्थे, ऑरम मेट, कैल्के फ्लो, क्युप्रम मेट, फ्लो एसिड, हेक्ला, कैली आयोड, मर्क फॉस, मर्क साइलि, स्टिले ।

विसर्पिका, भैंसिया दाद—ऐनैन्थे, क्राइसो, नैट्र म्यूर, ओलियँड, रस टॉ ।

खाज वाले दाने—क्लिमै, ओलिएण्ड, साइलि, स्टैफि, सल्फर ।

नम, तर दाने—कैल्के सल्फ, क्लिमै, ग्रैफा, हीपर, लाइको, मर्क, मेजे, ओलिएण्ड, पेट्रोलि, सोरि, रस टॉ, सिपिया, सिलि, स्टैफि, विन्का ।

नम, तर दाने कानों के पीछे—ग्रैफा, लाइको, ओलिएण्ड; पेट्रोलि, स्टैफि, थ्योस्पी, ट्यूबर ।

नम, तर दाने बालों के किनारे पर; गरदन की जड़ में—क्लिमै, हाइड्रै, नैट्र म्यूर, ओलिएण्ड, सल्फर ।

केशों का उलझना और स्राव—(Plica Polonica)—ऐण्टि टा, बैराइटा कार्ब, बोरेक्स, ग्रैफा, लाइको, नैट्र म्यूर, सोरि, सारसा, ट्यूबर, विन्का, वायोला ट्रि ।

मवादी दाने फुन्सियाँ—ऐरण्डो, सिकूटा, क्लिमे, ग्रैफा, आइरिस, जुगलै सिने, मेजेरियम ।

चाँद, गंज (Ringworm Tinea Capitis)—आर्स, बेसि, बेराइटा म्यूर, कैल्के का, क्राइसै, डल्का, ग्रैफा, कैली सल्फ, मेजे, पेट्रोलि, सोरि, सीपिया, साइलि, सल्फर, टेलूरि ट्यूब, वायोला ट्रि । देखिये चर्मरोग ।

पपड़ी खुरण्ड—ऐण्टि क्रू, आर्स, कैल्के सल्फ, साइक्यूटा, डल्का, ग्रैफा, हीपर, लाइको, मेजे, सल्फर, ट्रिफो ।

सूखे छिल्के—आर्स, कैली सल्फ, मेजे, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, फाइटो, सोरि, सैनिक, थ्लैस्पि ।

लाल चकत्ते—टेलूरि ।

बसार्बुद—बेराइटा का, बेंजो एसिड, ग्रैफा, हीपर, कैली आयोड, नाइट्रिक एसिड, फाइटो ।

बाल—चुरचुरे, खुरखुरे, सूखे—बैडियागा, बेलाडो, बोरैक्स, ग्रैफा, कैली कार्ब; प्लम्ब मेट, सोरि, सिकेल, स्टैफि, थूजा ।

झड़ना—(Alopecia)—ऐलूमि, ऐण्टि, क्रू, आर्स, ऐरण्डो, ऑरम, वैसि, बैराइटा का, कैल्के का, कैल्के आयोड, कार्बो वेज, क्राइसै, फ्लो एसिड, ग्रैफा, हाइपेरि, कैली कार्ब, लाइको, मैन्सि, मेजे, नैट्र म्यूर, नाइट्रिक एसिड, पेट्रोलि, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, पिक्स लिक्वडा, सेलेनि, सीपिया, साइलि, स्ट्रिक आर्स, सिफिलि, थैलियम, थूजा, थाइरो, स्फिग्यूरस, विन्का माइनर, जिंकम मेट ।

चिकनापन, ग्रीज की तरह—बेंजोन नाइट्रैट, ब्रायो, मर्क ।

भूरापन, समय के पहले—लाइको, फॉस्फो एसिड, सीकेल, सल्फ एसिड ।

उलझे हुए, गुच्छेदार—बोरैक्स, फ्लो एसिड, लाइको, सोरिनम, ट्यूबर, विन्का ।

खुजली—सिर की खाल पर—ऐलूमिना, ऐण्टि क्रू, आर्स, ऐरण्डो, बोवि, कैल्के का, कार्बो वेज, क्लिमै, ग्रैफा, हिरैक्लि, आइडोफो, जुग्लै रीजिया, मैग का; मैन्सिन, मैन्सिप, नाइट्रि एसिड, ओलियंड, फॉस, सीपिया, साइलिशिया, स्टिक्नया; सल्फर, टेलूरि, विन्का ।

स्नायुशूल—ऐकोना, सिमिसि, हाइड्रै, फाइटो ।

सुन्न होना—ऐकोन, ऐलूमि, फेरम, ब्रो, ग्रैफा, पेट्रोलि ।

स्पर्श से उत्तेजना, कंघी करने से पसीना—एकोन, ऐपिस, आर्न, आर्स, एजाडि, वेलाडो, बोवि, ब्रायो; कार्बो; कॉस्टि, सिन्को; युओनिम, युपेटो पर्फ, जेल्से, हीपर, कैली बाइक्रो, लैकनैन्थ, मेलीलो, मर्क, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वो, ओलियैंडर, पेरिस, रस टॉ, सीपिया, साइलि, स्ट्रिक्निया, सल्फर ।

पसीना—कैल्के का, कैल्के फॉ, कैमो, ग्रैफा, हेलेबो, हीपर, हेरैक्लि, हाइपेरि, मैग म्यूर, मर्क, पोडो, रियूम, सैनिक, साइलि ।

तनाव—ऐकोना, आर्न, ऐसैरम, बैप्टि, कैनचैल, कॉस्टि, आइरिस, मर्क, पैरिस, रैटैनि, सेलेनि, स्टिक्टा, वायोला ।

संवेदना—मानो माथे में एक गोला कसकर अटका हुआ है—स्टैफि ।

मानो भेजा जम गया है—इण्डिगो।

मानो भेजा माथे में ढीला हो गया है, अगल-बगल गिर रहा है—बेलाडो, ब्रायो, रस टॉ, सल्फ् एसिड।

मानो बाल खींचे जा रहे हैं, चाँद पर के—ऐकोन, आर्जे नाइट्रि, कैली नाइट्रि, लैकनैन्थ, मैग का, फॉस्फो।

मानो खोपड़ी का ऊपरी भाग उड़ जायगा—ऐकोना, कैनै इण्डि, सिमिसि, पैसीफ्लोरा, सिफिलि, विस्कम ऐल्बम, यूका।

चकित; सम्भ्रान्त, बुद्धिमन्द, मूर्खता, नशीलापन—ऐब्सिन्थि, ऐकोन, एलैन्थस, एलो, ऐनैका, एपिस, ऐरैनि, आर्निका, बैप्टि, बेलाडो, ब्रायो, कैनै इण्डि, कार्बो वेज, सिन्को, कॉकू, जेल्से, ग्लोनो, हेलीबो, मेन्थोल, नैट्र का, नक्स मॉ, नक्स वो, ओपियम, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, क्वेरकस, रस टॉ, सिपि, सल्फर, टैनैसे, जेरोफिल, जिंक मेट।

कुचलन, दर्दवाला, भेजे में—आर्जे मेटा, आर्न, बैप्टि, बेलाडो, बेलिस, बोविस्टा, सिन्को, युपिओन, लीडम, नक्स ओ, पेट्रोलि, रस टॉ, वेरेट्र ऐल्बम। देखिये सिर दर्द।

जलन, सिर में—ऐकोना, ऐलुमेन, एपिस, आर्नि, आर्स, ऐस्टेरि, बेलाडो, कैन्थे, नक्स वो, फॉस्फो, जिंकम।

जलन, चाँद पर—ऐवेना, क्यूप्र, सल्फ, डैफ्ने, फ्रैक्सी ऐमे, ग्रैफा, हेलोन, लैके, रस टॉ, सल्फर, टैरैक्स।

फटन—ऐकोना, आर्जे नाइट्रि, बेलाडो, कैप्सि, सिन्को, कोकेन, फार्मिका, जेल्से, ग्लोनो, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ।

ठंडापन—एगैरि, आर्स, बैराइटा का, कैल्के का, कैल्के फॉ, कैल्के सल्फ, कार्बोवेज, कोनि, हेलोड, लॉरो, नैट्र म्यू, सिपिया, बैले, वेरेट्र ऐल्बम।

पिछले भाग में ठंडकपन—बर्बे वलगै, कैल्के फॉस, डल्का, फैरूला, हेलोड, फास्फो।

बाँक में कसा मालूम पड़े—ऐनाका, ऐण्टिपाइरि, आर्जे नाइट्रि, बर्बे बल, कैक्टस, कैने इण्डि, कार्बो एसिड, सिमि, कोका, युपैटो पर्फ, फैन्किस्किया, जेल्से, हाइपेरि, मैग फॉस, नाइट्रि एसिड, प्लैटिना, स्टैन, सल्फर, ट्यूबर। देखिये सिर दर्द।

रेंगन, सुरसुरी—एकोन, कैल्के का, पेट्रोलि, रैनै वल, रैनै रेपेंस, सल्फर।

खालीपन, खोखलापन—अर्जे मेट, कॉस्टि, कॉकू, क्यूप्रम एसेटि, क्युप्रम मेट, ग्रैने, मैन्सिन, फॉस, पल्से, जिंक।

बड़ा, भरा हुआ विस्तृत मालूम हो—ऐसिटैनि, ऐकोन, अर्जे नाइट्रि, आर्स म्यूर, बैप्टि, बेला, बोवि, ब्रायो, सिमिसि, कॉकू, जेल्से, ग्लोनो, जुग्लैन्स सिने, आस्टिसि, लैकनैन्थ, मेली, मेन्थोल, नैट्र का, नक्स वो, ओक्विड्रो, पेरिस, रस टॉ, अस्निया, वेरेट्रम वि।

छोटी जगह में कुतरन—नैट्र सल्फ, रैने स्के।

भारीपन—ऐकोन, ऐगैरि, ऐलो, आर्न, एपिस, बैप्टी, कैल्के का, चेलि, सिमिसि, सिन्को, जेल्से, म्यूर एसिड, ओपिय, ओरियम, ओरियोडैफ, पेट्रोलि, फॉस्फो एसिड, प्लैटी, रस टॉ, सीपिया। देखिये सिर दर्द।

हल्कापन—एबीज कैना, हायोसि, जुग्लैसि, मैन्सि, नैट्र आर्स, नैट्र, क्लो।

मस्तिष्क (भेजे) का ढीलापन—ऐमो का, आर्स, बेला, ब्रायो, सिन्को, हायोसि, कैली का, रस टॉ, स्पाइजे, सल्फ्यू एसिड, सल्फर।

सुन्नपन ऐलुमिना, बैप्टि, ब्यूफो, कैल्के आर्स, कॉकु, कोनि, ग्रैफा, कैली ब्रो, ओलिएण्डर, पैरिस, पेट्रोलि, प्लैटि।

खुलना और बन्द होना मालूम दे – कैने इण्डि, सिमि, कॉकु, लैक कैना।

थकान मालूम हो—एपिस, आर्न, चिनि आर्स, कोनि, फेरम फॉस, फॉस्फो, जिंक वै।

लहराता, थरथराता, ऊपर-नीचे करता जान पड़े—ऐकोन, ऑरम, बेलाडो, कैन्थे, चिनि सल्फ्, सिमि, सिन्को, ग्लोनो, हीपर, हायोसि, इण्डि, लैके, मैग फॉस, मेली, नक्स वो, पैलै, रस टॉ, सेनेसि, सल्फर।

चाँद पर जंगलीपन; पागलपन का संवेदन – लिलि टिग्नि।

चक्कर—साधारण औषधियाँ—ऐब्सिंथि, ऐकोन, एड्रेन, स्कूलस ग्ले, इथूजा, ऐगैरि, ऐलूमिना, ऐम्ब्रा, ऐण्टि क्रू, एपिस, ऐपोमोर्फ, अर्जे नाइट्रि, आर्नि, आर्स आयो, ऑरम म्यू, बैप्टि, बेलाडो, बिस्म, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के का, कैने इण्डि, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, चेनापो, चिनि सल्फ्, सिमिसि, सिन्को, कोका, कॉकु, कोनि, साइक्लै, डिजि, युपेटो पर्फ, फेरम मेट, फोरमैलिन, जेल्से, जिनसेंग, ग्लोमो, ग्रैनैट, हाइड्रोसि ऐसि, आयोड, कैली का, लैबर्नम, लैके, लिथियम क्लो, लोलियम, लुपु, मर्क बाइ, मॉर्फि, मास्कस, नैट्र सैल, निकोटि, नक्स वो, ओपियम, औक्जै एसिड, पेट्रोलियम, फॉस्फो, पिकरिक एसि, पोडो, पल्से, क्वेरकस, रेडियम, सैलिसि ऐसि, सेनेसि, सीपिया, सिलिका, स्पाइजे, स्ट्रॉन्शि, स्ट्रिक्नी, सल्फर, टैबे, टैरैण्टु हिस्पै, थेरिडियन, वाइथिया।

कारण और प्रकार—मस्तिष्क की रक्तहीनता—आर्न, बैराइटा म्यू, कैल्के का, चिनि स, सिंको, कोनि, डिजि, फेरम कार्ब, फेरम, हाइड्रोसि एसिड, नैट्र म्यूर, सिलिका।

मस्तिष्क सम्बन्धी—बेलाडो, कॉकू, जेल्से, सल्फोना, टैवै।

मस्तिष्क प्रदाह रक्ताधिक्य—एकोन, आर्न, बेला, सिन्को, क्युप्र मेट, ग्लोनां, हाइड्रोसि ऐसि, आयोड, नक्स वो, ओपियम, स्ट्रैमो, सल्फर।

मिरगी सम्बन्धी—आर्जे नाइट्रि, कैल्के का, क्युप्रम मेट, कैल्मिया, नक्स वो, सिलिका।

पाकाशयिक-आंत्रिक उत्पात—ऐलो, ब्रायो, सिन्को, कॉकु, इपिका, कैली का, नक्स वो, पल्से, रहैमनस कैलिफो, टैवै।

हिस्टीरिया युक्त—ऐसैफे, इग्ने, वैलेरियाना।

कान के भीतरी शंखाकार छिद्र सम्बन्धी (मेनियर रोग)—आर्न, बैराइटा म्यू, ब्रायो, कार्बन सल्फ, कॉस्टि, चेनापो, चिनि सैलि, सिंको, कोनि, फेरम फॉ, जेल्से, हाइड्रोबो एसिड, कैली आयोड, नैट्र सैल, ओनोस्मो, पेट्रोलि, पिलोका, पाइरस, सैल ऐस, सिली, टैवै, थेरिडियन।

समुद्री रोग (Mal-de-mer) ऐपोमोर्फिया, कॉकू, पेट्रोलि, स्ट्रैफि, कॉकम।

मानसिक परिश्रम—आर्जे नाइट्रि, नैट्र का, नक्स वो।

स्नायविक उत्पात—ऐम्ब्रा, अर्जे नाइट्रि, कॉकू, नक्स वो, फॉस्फा, रस टॉ, थेरिडि।

आवाजें—नक्स वो, थेरिडि।

फूलों की गन्ध से—नक्स वो, फॉस्फो।

वृद्धावस्था (बुढ़ापे में शारीरिक परिवर्तन)—ऐम्ब्रा, आर्स, आयोड, बैराइटा म्यू, बेलिस, कोनि, डिजि, आयोड; ओपियम, फॉस, रस टॉ, सल्फर।

खुली हवा—आर्न, कैल्के, ऐसे, कैन्थे, साइक्लै, नक्स वो।

दृष्टि विकार—कोनियम, जेल्से, पिलोका।

विटप प्रदेशीय बाधायें—ऐलो, कोनि।

सूरज का प्रकाश—ऐगैरि, नैट्र कार्ब।

केंचुवे से—चाइना, स्पाइजे।

आक्रमण—उत्पन्न होने की विधि—शूल के साथ बारी-बारी—कोलोसिं, मैग कार्ब, स्पाइजे।

गरदन की जड़ या सिर के पिछले भाग से शुरू हो—जेल्से, आइबेरिस, पेट्रोलि, सिलिका।

सीढ़ी पर चढ़ते समय—आर्स हाइड्रो, कैल्के का।

आँखें बन्द करते समय—एपिस, आर्न, लैके, मैग फॉ, थेरिडि, थूजा।

खाँसते समय—ऐण्टि टा।

सीढ़ी से नीचे उतरते समय—बोरैक्स, कोनियम, फेरम, मेफाइटिस, सैनिकुला।
खाते समय – ऐमो कार्ब, कॉकू, मैग म्यूर, नक्स वो, पल्से।
गरम कमरे में घुसते ही—आर्स, आयोड, प्लैटिना, टैबे।
भय खाते ही—ओपियम।
ऊँची छत के कमरे में—क्यूप्रम ऐसेटिकम्।
रङ्गदार प्रकाश देखते ही—आर्ट वल।
बहते पानी को देखते समय—अर्जे मेट, ब्रोमि, फेरमेट, वेरेट्रम एल्ब।
नीचे की तरफ देखते समय—बोरैक्स, ओलियण्ड, कैल्मिया, स्पाइजे।
गौर से देखते समय—कॉस्टि, कोनि, लैके, ओलियण्ड।

ऊपर की तरफ देखते समय—कैल्के का, चिनि आर्स, ग्रैनैटम, कैली फॉस, पेट्रोलि, पल्से, सिलिका, टैबे।

लेटते समय—ऐडोनिस वर, एपिस, केलैडि, कोनि, लैके, नैट्र म्यूर, नक्स वो, रोडो, रस टॉ, सिली, स्टैफि, थेरिडि, थूजा।
आँखें खोलते ही—लैके, टैबे।
पढ़ते समय—ऐमो कार्ब, आर्न, क्यूप्र मेट, नैट्र म्यूर।
गाड़ी की सवारी करते समय—कॉकु, हीपर, लैके, टिफ्लो, पेट्रोलि।

बिस्तर या कुर्सी से उठते ही—एकोन, ऐडोनिस वर, बेल, ब्रायो, कैने इण्डि, कॉकू, कोनि, फेर मेट, नैट्र सैल, नक्स वो, ओलियण्ड, ओपियम, पेट्रोलि, फॉस्फो, रस टॉ, सल्फर,।

सुबह उठते समय—एलुमि, ब्रायो, जैकैरै, लैके, लाइको, नक्स वो, ओपियम, फॉस्फो, पॉडो, पल्से।

सिर हिलाते या घुमाते समय—ऐकोन, कैल्के का, कोनियम, हीपर, कैली का, मार्फि, नैट्र आर्स।

आँखें बन्द करके खड़े होने से—आर्जे नाइट्रि, लैथाइरस।

झुकने से—ऐकोन, बैराइटा का, बेलाडो, ब्रायो, ग्लोनो, आयोड, कैल्मिया, नक्स वो, ओरियोडैफ, पल्से, सल्फर, थेरिडि।

आँखें घुमाने से—कोनियम।

सिर घुमाने से—ब्रायो, कैल्के का, कॉलचि, कोनियम, कैली का, मेन्थोल, मार्फीनम, नैट्र आर्स।

सिर को बाईं तरफ घुमाते समय—कॉलचि, कोनियम।
बिस्तर में करवट बदलते समय—बेला, कोनियम।

टहलते समय—ऐकोन, ऐगैरि, बेलाडो, कॉस्टि, सिन्को, डिजि, जेल्से, कैलि का, लैके, मैग फॉस, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, ओरियोडैफ, पेट्रोलियम, फॉस्फो एसिड, रस टॉ, थेरिडियन ।

अन्धेरे में टहलते समय—स्ट्रैमो ।

खुली हवा में टहलते समय—ऐगैरि, आर्निका, साइक्ले, ड्रोसे, नक्स वो, सीपिया, सल्फर ।

पुल पार करते या पानी पर से गुजरते समय—फेरम, लाइसिन ।

साथ के लक्षण (Concomitants) भिनभिनाहट, टनटनाहट—आर्जे नाइट्रि, बेलाडो, कार्बो वेज चेनापो, चिनि सल्फ, जेल्से, पिकरिक एडिस, स्ट्रिक्नि, वैले ।

मृत्युतुल्य पीला—ड्युबो, पल्से, टैबै ।

दौर्बल्य, शिथिलता—ऐम्ब्रा, अर्जे नाइट्रि, बैप्टि, सिन्को, कोनियम, एचिनै, जेल्से, टैबेकम, वेरेट्रम ऐल्बम ।

धुंधला दिखाई पड़ना, द्वि-दृष्टि इत्यादि—आर्ज नाइट्रि, बेलाडो, जेल्से, ग्लोनो, नक्स वो, वैले, विन्का ।

औंघाई, सिर गरम—इथूजा ।

अचेतना—ऐकोन, ऐलेट्रि, बर्बे वल, ब्रायो, कैम्फो, कार्बो वेज, ग्लोनो, नक्स वो, फॉस्फो, सैबै ड, टैबे ।

पेट दर्द; आक्षेप—साइक्यूटा ।

सिर लम्बा जान पड़े, पेशाब लगे—हाइपेरि ।

सिर दर्द—ऐकोन, ऐग्रोस्ट, एपिस, कॉकु, नक्स वो ।

नशा जैसा जान पड़े—एबीज कैने, आर्जे मेटा, बेलाडो, सिन्को, कॉकु, कोनियम, जेल्से, नक्स वो, ओपियम, ओक्सि ट्रो, पेट्रोलि ।

जिगर उत्पात—ब्रायो, कार्डु मै, चेलि ।

मिचली कै—ऐकोन, ब्रायो, कॉकु, युओनिम, कैली बाइक्रो, नक्स वो, पेट्रोलि, पीलोका, पोडो, पल्से, स्ट्रांशि, टैबे, थेरिडि ।

स्नायविक अवस्थायें—ऐम्ब्रा, कॉकु, जेल्से, इग्नै, फॉस्फो ।

नकसीर—बेलाडो, ब्रायो, कार्बो ऐनि ।

पीछे की ओर वक्रता—साइक्यूटा ।

धड़कन, हृदय लक्षण—इथूजा, बेलाडो, कैक्ट, डिजि, स्पाइजे ।

नाक की जड़ पर दाब—बैप्टि ।

आखें बन्द करने से आराम मिले—ऐलो, लोलियम ।

खाना खाने से आराम मिले—एलूमिना।

सिर को पूर्ण रूप से स्थिर रखने से आराम मिले—कोनियम।

लेटने से आराम मिले—एपिस, एनथीमिस, ऑरम, ब्रायो, सिन्को, कॉकु, नाइट्रि एसिड, पल्से।

नकसीर फूटने से आराम मिले—ब्रोमियम।

आराम करने से कष्ट में कमी—आर्स, कोल्चि, साइक्ले, स्पाइजे।

कै करने से कष्ट में कमी—टैबे।

खुली हवा में टहलने से आराम मिले—ऐमो म्यूर, कैली का, मैगफॉस, पल्से, रस टॉ, टैबे।

साधारण गरमी से आराम मिले—मैंगे म्यूर, सिलिका, स्ट्रॉन्शि।

तन्तुलन सम्वेदन के साथ—फेरम मेट।

लड़खड़ाना, कम्प, दौर्बल्य की गति—आर्जे नाइट्रि, क्रोटो, जेल्से, नक्स वो, फॉस्फो, एसिड, फास्फो, स्ट्रैमो।

पीछे गिरने की सम्भावना—ऐब्सिथि, बेलाडो, ब्रायो, कैलि नाइट्रिकम, नक्स वो।

आगे गिरने की सम्भावना—ऐलूमिना, ब्रायो, काडु मैरि, कॉस्टि, चेलीडो, इलैप्स, गवारिया, मैग फॉस, पेट्रोलि, पोडो, स्पाइ, स्ट्रैमो, आर्टिका, साइबर्न ओपू।

बायीं तरफ गिरने की सम्भावना—ऑरम, बेलाडो, कोनियम, ड्रोसे, युपेटो पर्फ, आयोड, सैल एसिड, सिलिका, स्ट्रैमो, जिंकम।

दाहिनी तरफ गिरने की सम्भावना—इक्लोड, कैली नाइट्रि।

आँखें

भौं—बाल झड़े—ऐलूमिना, बोरैक्स, मर्क, नाइट्रि ऐसि, प्लम्ब ऐसेटि, सैनिकू, सेलेनि, सिलिका।

भौं पर दाने—फ्लो ऐस, सिलिका, थूजा।

भौं पर मांसांकुर—एनान्थिरम।

कोने—खुजली, गड़न—ऐलूमिना, एपियम ग्रैवे, आर्स, कार्बो वेज, फ्लो ऐसि, ग्रैफो, हीपर, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वो, फॉस्फो, सकसिनिक एसिड, सल्फर जिंक मेट।

दर्द कच्चे नासूर—ऐण्टि क्रू, बोरैक्स, ग्रैफा, पेट्रोलि, सिलिका, स्टैफि, जिंक मेट।

फूले हुए, लाल—एगैरि, आर्जे नाइट्रिक, सिनैबेरिस, ग्रैफा, जिंक मेट।

मोतियाबिन्द—ऐमो का, आर्जे नाइट्रि, आयोड, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कैने सै, कॉस्टि, चिमैफि, सिनेरे, कोचलियर, कॉलचि, कोनि, युफ्रै, आयोड, कैली म्यूर, लीडम, मैग का, नैफ्थे, नैट्र म्यूर, फॉस, प्लैटेन, पल्से, क्वैसिया, सैण्टोना, सिकेल, सेनेगा, सीपि, सीलिका, सल्फर, टेलु, थियोसिन, जिंक।

प्रकोष्ठ—उपतारा तथा कनीनिका के बीच के स्थान में मवाद—हीपर, साइलीशिया।

उपतारा का कोई अंश काटकर निकाल देने के बाद प्रकोष्ठ में रक्तस्राव—लीडम।

रंजित पटल-कृष्ण-प्रदाह—ऐगैरि, फॉस, रोडो, रूटा, सैण्टोनि।

कृष्णपटल का अलग हो जाना—एकोन, आर्न, नक्स वो।

कृष्णपटल का रस बाहर निकलना—हैमे।

कृष्णपटल शोथ, (कोरॉयडाइटिस) क्षीणताजनित—नक्स वो, फॉस्फो, पिलोका।

रंजित पटल शोथ, (कोरॉयडाइटिस) बिखरा हुआ और साधारण—आर्स, बेलाडो, ब्रायो, सीड्रन, जेल्से, इपिका, कैली आयोड, मर्कुरि, आयोडे रूबर, नैफ्थे, फॉस, प्रूनस स्पि, सैण्टो, टैबे, टेलू, थूजा।

रंजित पटल शोथ, मवादी—हीपर, रस टॉ।

रंजित पटल, शोथ, मवादी, उपतारा बाधा के साथ—कैली आयोड, प्रूनस स्पि, सिली।

रंजित पटल-शोथ, मवादी, चक्षु-पटल बाधा के साथ (उपदंशोय)—ऑरम, कैली आयोड, कैली म्यूर, मर्क कॉर, मर्क आयोड रूबर।

पटल की पेशियाँ—समायोजन क्रिया क्रम-भ्रष्ट—इपिका, रूटा।

रोमक पेशी का आंशिक पक्षाघात—आर्जेनाइट, ऐट्रोपि, कॉस्टि, डुबो, जेल्से, पेरिस, फाइजॉस्टि।

रोमक पेशियों का आक्षेप—एगैरि, एसेरीन, इपिका, जैबोरे, लिलि टिग्रि, फाइजॉस्टि, पिलोका।

चक्षु-स्नायुशूल—आर्स, सीड्रन, चेलिडो, चेनोपोडियम, सिमिसि, सिन्को, सिनैबे, कॉल, कोमोक्लैडिया, क्रोकस, क्रोटन टिग्लियम, जेल्से, लैके, मेजे, नैट्र म्यूर, पेरिस, फॉस्फो, प्लैटिना, प्रूनस स्पि, रोडो, सैपोन, स्पाइजे। देखिये दर्द।

आँख की श्लैष्मिक झिल्ली—अर्जुन रोम—एपिस, गुवारिया, हीपर, कैली आयोड, रस टॉ, सल्फ्यू ऐसि, वेरा।

स्राव तीखा—आर्स, ऑरम, युफ्रैसिया, मर्क कॉर, मर्क, सोरि, रस टॉ।

स्राव, साफ श्लेष्मा—इपिका, कैली म्यूर।

स्राव मलाईदार, अधिक—आर्जे नाइट्रि, कैल्के, सल्फ्यू, डल्का, हीपर, नैट्र फॉस, नैट्र सल्फ, पिकरि ऐसि, पल्से, रस टॉ, सिफिलि।

स्राव रेशेदार—कैली ब्राइको।

काले दाग और चोट इत्यादि—ऐकोन, आर्न, हैमे, लैके, लीडम।

बाहरी वस्तु, उत्तेजना—ऐकोन, सल्फर।

रोहे छालेदार या अंकुरमय—थूजा।

रक्ताधिक्य—एकोन, आर्स, बेल, सेपा, इपिका, नक्स वो, रस टॉ, सल्फर, थूजा।

प्रदाह, आँख आना, तीव्र और मन्द तीव्र स्रावमय—एकोन, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, कैन्थे, क्लोरल, ब्रूनो, डल्का, युफ्रेसिया, फेरम फॉस, गूवारिया, हीपर, कैली म्यूर, मर्क कॉ, मर्क पेरे, मर्क, नैट्र आर्स, ओपियम, पिकरिक ऐसि, पल्से, रस टॉ, सीपिया, सल्फर, युपास।

प्रदाह जीर्ण—एलूमिना, ऐण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऑरम म्यूर, बेल, युफ्रैसिया, कैली बाइक्रो, मर्क सल, पिकरिक ऐसि, सोरि, पल्से, सल्फर, थूजा, जिंक मेट।

प्रदाह, स्वरनली प्रदाहयुक्त, झिल्ली प्रदाहयुक्त—ऐसेटिक एसिड, एपिस, गुवारिया, आयोड, कैली बाइक्रो, मर्क साइ।

प्रदाह, ग्रन्थि या क्षुद्र कोष सम्बन्धी (अंकुरीय)—एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आरम मे, आरम म्यूर, कैल्के आयोड, क्रोटन टि, जेबिव, कैली बाइक्रो, नैट्र म्यूर, फाइटो, पल्से, थूजा, जिंक सल्फ।

प्रदाह सुजाकी—एकोन, ऐण्टि टा, एपिस, अर्जे नाइट्रि, कैल्के हाईपोफॉ, हीपर, कैली बाइक्रो, मर्क कॉर, मर्क, पल्से, रस टॉ, वेरेट्र वि।

प्रदाह, सुजाक, अनुकम्पित—अर्जे नाइट्रि, युफ्रे, मर्क, पल्से। देखिये मवादी।

प्रदाह, जल भरे छालेदार—ऐण्ट टा, कैल्के का, कैल्के, पिक्रै, कोनियम, युफ्रे, ग्रैफा, इग्ने, मर्क कॉर, पल्से, रस टॉ, सिलि, सल्फर।

प्रदाह, मवादी—आर्जे नाइट्रि, कैल्के हाइपा, हीपर, मर्क कॉर, मर्क, पल्से, रस टॉ, सिलि।

प्रदाह, फुन्सीदार—ऐण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्स, कैल्के का, ग्रैफा, हीपर, जेक्विरि, कैली बाई, मर्क कॉर, मर्क नाइट्रि, पल्से, रस टॉ।

प्रदाह, आघातिक—ऐकोन, आर्न, बेल, कैलेण्डू, कैन्थे, युफ्रे, हैमा, लिडम, सिम्फाइट।

कनीनिका—फोड़ा—कैल्के स, हीपर, कैली स, मर्क को, सिलि, सल्फर।

प्रसारण—कैल्के का।

स्राव, पानीदार—एपिस।

बाहरी वस्तु—एकोन, कैल्के हाइपो, हीपर, रस टॉ, सल्फर।

प्रदाह (केरेटाइटिस)—एकोन, एपिस, आर्स, आयोड, ऑरम म्यूर, बेला, कैने सै, कोनि, युफ्रे, हीपर, इलेक्स, कैली बाइ, कैली म्यूर, मर्क कॉर, नक्स वो, फास्फो, सैंग्वि, सल्फर, थूजा।

प्रदाह, सन्धि प्रदाह युक्त—क्लिमै, कॉलचि, कोलो।

प्रदाह, विसर्पिका सम्बन्धी, रस दानेदार—एपिस, आर्स, कैल्के फॉ, युफ्रैसि, रैने बल, टेलू।

प्रदाह, आंतरीय, वंशगत उपदंशीय व्यक्तियों में—ऑरम मेट, ऑरम म्यूर, कैने सै, मर्क साइ, मर्क कॉर।

प्रदाह, सांतर विधान सम्बन्धी, उपदंश रोग पर आधारित हो—ऑरम म्यूर, कैल्के हाइपो, कैली आयोड, कैली म्यूर, मर्क स, सल्फर।

प्रदाह छालेदार—एपिस, बेल, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कैल्के फॉ, कोनि, ग्रेफा, हीपर, इपिका, मर्क कॉर, पल्से, रस टॉ, सिफि, थूजा।

सुलेमानी—(Onyx)—हीपर।

धुन्ध—आर्जे नाइट्रि, ऑरम, ऑरम म्यूर, बैराइटा का, कैडमि सल्फ, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कैल्के हाइपो, कैल्के आयोड, कॉस्टि, कैन सै, सिन रे, कोनि, युफ्रै, हीपर, कैली बाइ, कैली म्यूर।

छाले—मर्क कॉर, मर्क सल्फ, नैफ्थे, नाइट्रि ऐसि, फॉस्फो, पल्से, सैके ऑफ, सेनेगा, सिली, सल्फर, थिओसिनम, जिंक मे, जिंक सल्फ।

फुन्सियाँ—ऐण्टि क्रू, कैल्के का, कोनियम, क्रोटन टिग्लि, युफ्रै, हीपर, कैलीबाई, कैली आयोड, मर्क नाइट्रो, नाइट्रि ऐसि।

आँख का बाहर निकल आना, मवादी प्रदाह के बाद—एपिस, युफ्रैसि, इलेक्स, फाइजॉस्टि।

घाव—इथियोप्स, ऐण्टिमो, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आरम म्यूर, कैल्के का, कैल्के हाइपो, कैल्के आयोड, कैल्के सिलि, युफ्रैसि, ग्रेफ, हीपर, कैली-बाइ, कैली म्यूर, मर्क कॉर, मर्क आयोड, फ्लै, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, रस टॉ, सिली, सल्फर, थूजा, जिंक मेट।

घाव गहराई तक—आर्स; युफ्रै, कैली बाई, मर्क कॉर, मर्क आयोड फ्लो, मर्क आयोड रूब, सिली।

घाव, मन्द—कैल्के का, कैली बाइक्रो, सिली, सल्फर।

घाव, सतह के चिपटे—आर्स, ऐसैफे, युफ्रै सि, कैली म्यूर, मर्क, नाइट्रि एसिड।

घाव, कोषमय—ऑरम मेट।

घाव कटन, फटन वाले—स्टैफि।

आँखों के ढेले—बुरा असर बरफ की चमक का—ऐकोन, साइक्यू।

बुरा असर, बिजली की या दूसरी कृत्रिम रोशनी का—ग्लोनो, जैबोरै।

बुरा असर, आग की चमक का—एकोन, कैन्थे, ग्लोनो, मर्क।

बुरा असर, नश्तर लगवाने का—एकोर्न, आर्न, ऐसैर, ब्रायो, क्रोक, इग्ने, लेडम, रस टॉ, सेनैगा, स्ट्रॉन्शि, थूजा।

बुरा असर, मेला तमाशा, सिनेमा देखने का—आर्न।

जलन, गड़न—ऐकोन, आर्स, आर्स मेट, ऑरम म्यूर, बेला, कैल्के का, कैन्थे, सेपा, क्रोकस, युफ्रै सि, फैगोपा, फेर फा, लेप्टै, लाइको, मैग फॉ, मर्क कॉर, नैट्र आर्स, नैट्र म्यू, ओपियम, फाइटो, पिलोका, पल्से, रैनै बल, सैंग्वि, सल्फर, थूजा, जिंक मेट।

ठंडक—ऐलूमि, ऐसैरि, कोनि, मेजे, नैट्र म्यूर, प्लैटिना।

ठंडक मानों पलकों के नीचे हवा बह रही हो—क्रोक, फ्लो ऐसि, सिफिलि, थूजा।

सूखापन, गरमी—ऐकोन, ऐलूमि, आर्स, बेला, बर्बे वल, क्लिमै, क्रको, ग्रैटि, लाइको, मर्क कार नैट्र आर्स, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ; नक्स मा, ओपियम, सेनेगा, सीपिया, स्टिक्टा, सल्फर, जिंक मे।

श्लैष्मिक झिल्ली का शोथ, पारभाषक—एपिस।

बड़ी, फूली जान पड़े—ऐकोन, बेला, ऑक्जे एसिड, पेरिस; फॉस्फो एसि, रस टॉ, सारासी, सेनेगा, स्पाइजे, ट्रिलि।

आसपास में दाने—ऐण्टि टॉ, क्रोटि टि, गुवाइक।

गरमी और टिमटिमाहट, तर मौसम में अधिक हो—ऐरैनि।

गरमी और हवा असह्य—क्लिमै, कोरै।

गरमी—इस्क्यू, कार्बो वेज, इंडोल, लिलि टि, मेफाइटि, ओपियम, फॉस्फो, रूटा, सैपोनै, स्ट्रिक्नि, सल्फर।

भारीपन—बैप्टि, जेल्से, मेलिलो, ओनोस, ओपियम, पैरिस, पार्थी, सीपिया, सोलेन, लाइको, सल्फोनैल।

रक्तस्राव, (आंतरिक)—आर्न, हैमे, लैके, लीडम, ऐसि।

आघात, चोट—ऐकोन, आर्न, कैलेंडु, कैन्थे, कॉलचियर, हैमे, लीडम, फाइजॉस्टि, रस टॉ, सल्फ्यू ऐसि, सिम्फाइट।

खुजली होना—ऐगैरि, ऐग्नस, ऐण्टि क्रू, आर्स मेट, ऑरम म्यू, कैल्के का, कॉस्टि, सेपा, क्रोक, फैगोप, गैम्बो, मर्क, नक्स वो, पल्से, रस टॉ, सिला, सल्फर, जिंक मेट।

स्थिति—अवस्था—निस्तेज—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, बैप्टि, डिफ्थे, मर्क, ओनोस्मो, सोलेन, लाइको।

पथराई हुई; टेढ़ी-मेढ़ी—बेला, कैने इण्डि, साइक्यूटा, क्युप्रम मेट, ग्लोनो, हेलेबो, हायोसि, मार्फी, इनैन्थे, ओपियम, फॉस्फो एसि, पिक्सिडिया, स्ट्रैमो, स्ट्रिकनी।

चमकदार शीशे जैसी, मुर्दे की तरह—ओपि, फॉस्फो ऐसि, जिंक मेट, चेहरा देखिये।

चमकती, प्रकाशमान, लपलपाती—बेल, ब्रायो, कैन्थे, क्यूप्रम मेट, हायोसि, मर्क कार, स्ट्रैमो, वेरेट्रम विरिडी।

नीचे की तरफ झुकी हुई—इथू, हायोसि।

बाहर निकली हुई (Exophthalmus)—ऐमिल, बेल, क्लिमै, कोमोक्लेडिया, फेरम फॉस, ग्लोनो, हैलो, लाइको, पेरिस, सैंग्वि टार्ट, सैपोन, स्पांजि, स्टेलैर, स्ट्रैमो, स्ट्रिक, थाइरॉ।

लाल, खून-सी लाल—एकोन, इस्क्यु, एलै, बेला, सेपा, सिनाबे, डल्का, जेल्से, हैमे, हायोसि, मर्क कॉर, मॉर्फि, ओपियम, रूटा, सिली, सल्फोना, सल्फर, थूजा, वेरेट्र वि।

लाल सूजी हुई—ऐकोन, ऐण्टि क्रू, अर्जे नाइट्रि, आर्स, ऑरम म्यूर, बेल, कॉस्टि, क्लिमै, यूफ्रै सि, फेरम फ़ॉस, हीपर, इण्डोल, इपिका, जैकोरै, लाइको, मर्क, सल्फ, नेट्र म्यूर, रस टॉ, सैंग्वि नाइ।

लाल कच्ची—आर्जे नाइट्रि, क्रोटि टि।

लाल पीला देख पड़ना—ऐलो।

नीचे की तरफ झुके—इथू, हायोसि।

सीधे नीचे ऊपर घूमे लम्बाकार मार्ग में—बेनजिनर, नाइट्रि, जिंक मेट।

सो जाने पर घूमें—इथू।

आँखें बन्द करके जल्दी से घूमें—क्यूप्रम मेट।

ऊपर की तरफ घूमें—बेल, साइक्यू, हेलबो, म्यूरि एसिड, एनैन्थी।

संवेदन मानों आँखों पर चर्बी है—पैराफि।

संवेदन मानो आँखों में बालू या खपचियाँ पड़ गयी हैं—ऐकोन, ऐलुमिना, आर्स, कॉस्टि, कॉक्कस, कैक्टि, युफ्रैसि, फेरम फॉस, ग्रैफाई, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, फाइटो, सल्फर, जेरोफाइ।

संवेदन मानो आँखों से हवा वह रही है—फ्लो एसिड।

माथा का दर्द कम करने के लिए आँखों को ऐंचा करे—ऐलो।

तनाव—ऐसैर, ऑरम, कैल्मि, मेडो, नैट्र आर्स, रस टॉ।

धँसी हुई नीले घेरों से घिरी हो—ऐसेटि एसिड, ऐण्टि क्रू, एथियम ग्रे, आर्स, कैम्फो, सिन्को, क्युप्रम मेट, ग्रैनैट, हेलेबो, इपिका, नैट्र का, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, सिकेल, स्टैफि, उपास, वेरेट्र एल्बम, विस्क ऐल्बम। देखिये चेहरा।

उपदंशीय रोग—जैके, गुवा, कैली आयोड, मर्क आयोड फ्ले, नाइट्रि एसिड, थूजा।

कम्प (Nystagmus)—ऐगैरि, वेनजिन नाइट्रि, कार्बन हाइड्रो, साइक्यू, जेल्से, आयोड, कैली आयोड, मैग फॉ, फाइजास्टि।

आँख स्थिर न रख सके—आर्जे नाइ, पैरिस।

आँखों का सफेद भाग पीला—ब्रैसिका, कैमो, चेलिडो, सिन्को, क्रोट, डिजि, युओनाइम ऐट्रोप्यु, आयोड, लैके, मर्क, माइर्टस, नैट्र फॉ, नैट्र सल्फ, पोडो, प्लम्ब, सीपिया। देखिये चेहरा।

पलक और किनारे—चिपक जाना—ऐगैरि, ऐलुमि, ऐण्टि क्रू, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बोरैक्स, कैल्के का, डिजि युफ्रैसि, ग्रैफा, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, लाइको, मर्क सोल, नैट्र म्यूर, सोरि, पल्से, रस टॉ, सीपिया, सल्फर, थूजा, युरैनि, जिंक मेट।

नीलापन—डिजि, मॉरफिया।

झूम जाना (Ptosis)—ऐलूमि, कॉलो, कॉस्टि, कोनि, डल्का, जेल्से, ग्रैफा, होमैटॉक्सि, हेलोडर्मा, कैल्मिया, मॉर्फी, नाजा, नैट्र आर्स, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वो, ओपियम, फॉस्फो, प्लम्ब, रस टॉ, सीपिया, स्पाइजे, स्ट्रैमो, सल्फोना, सिफिलि, उपास, वेरेट्र एल्बम, जिंक मेट।

सूखापन—ऐकोन, ऐलूमि, आर्स, वेल, ग्रैफा, लिथि का, नक्स वो, पल्स, सेनेगा, सीपिया, सल्फर, जिंक मेट।

सूखापन; पपड़ीदार, छिलकेदार—आर्स, बोरैक्स, सीपिया, टेलुरि, थूजा।

बाहर की तरफ उल्टे हों—एपिस, ग्रैफा, थियोसिनम।

भीतर की तरफ उल्टे हों (पड़वाल)—बोरैक्स, ग्रैफा, नैट्र म्यूर, टेलूरि।

दाने-अंकुर छाले, रस दाने—कैन्थे, नैट्र सल्फ; पैले, रस टॉ, सीपिया, थूजा।

दाने निकलना अर्बुद—ऐण्टि टा, कैल्के का, कॉस्टि, कोनि, फेरम पाइरो, फॉस्फो, कैली आयोड, प्लेटैन, सिलि, स्टैफि, थूजा, जिंक मेट ।

बिलनी (अंजनहारी) निकलना मेदमय—बेंजो एसिड, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लोर, आयोड, कैली आयोड, मर्क सो, प्लैटैनस, स्टैफि ।

अकौता, दरारें—बैमि, क्राइपैरीब, ग्रैफा, पेट्रोलि, स्टैफि, सल्फर, टेलू ।

रोहे (Trachoma)—ऐलूम, आर्स, ऑरम म्यूर, कैल्के कार्ब, सिनेबि, डल्का, युफ्रै, ग्रैफा, हीपर, जैक्वि, कैली बाइक्रो, कैली म्यूर, मर्क पेरे, नैट्र आर्स, नैट्र सल्फ, पल्से, सीपिया, सल्फर, थूजा, जिंक सल्फ ।

मवादी दाने—ऐण्टि क्रू, हीपर ।

पपड़ी खुरण्ड, छिलके—आर्जे नाइ, आर्स, बोरै, कैल्के कार्ब, ग्रैफा, कैली म्यूर, लाइको, सेनेगा, सीपिया ।

अंजनी, गुहौरी (Hordeolum)—ऐगैरि, एपिस, ऑरम म्यूरनैट्रो, कैल्के पिक्रे, कोनि, ग्रैफा, हीपर, लाइको, मर्क, पल्से, सीपिया, सिलिका, स्टैफि, सल्फर, थूजा, युरैनि ।

अंजनी, बाद में कड़ी गठलियाँ—कोनियम, स्टैफि, थूजा ।

घाव—आर्जे नाइट्रि, आर्स, कॉस्टि, युफ्रैसिया, ग्रैफा, हीपर, लैप्पा, लाइको, सल्फर, टेलूरि । देखिये तन्तु ।

प्रदाह (पलक शोथ)—तीव्र, ऐकोन, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, कैमो, डिजि, डल्का, युफ्रैसि, हीपर, क्रिओजो, मर्क आयोड, फ्ले, मर्क प्रेरूब, मर्क सोल, नैट्र आर्स, पेट्रोलि, पल्से, रस टॉ, सल्फर, उपास, युरैनि ।

प्रदाह, जीर्ण—एलुमि, ऐन्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, ऑरम, बैराइटा कार्ब, बोरैक्स, कैल्के कार्ब, क्लिमै, युफ्रैसिया, ग्रैफाइ, हीपर, जुग्लै, मर्क कॉर्ब, मर्क प्रेरूब, पेट्रोलि, सोरिनम, सीपिया, सिलिका, स्टैफि, सल्फर, टेलू ।

प्रदाह, विसर्प युक्त—ऐपिस, बेल, रस टॉ, वेस्पा ।

लाली—ऐगैरि, एमो ब्रो, एण्टि क्रू, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, सिनाबे, क्लिमै, डिजि, युफ्रै, ग्रैफा, हीपर, लाइको, मर्क कॉर, मर्क सो, रस टॉ, सैबाडि, सल्फर । देखिये प्रदाह ।

संवेदन—जलन और गड़न—ऐगरि, ऐलूमि, एपिस, आर्स, ऐरण्डो, बेल, कैल्के कार्ब, सेपा, कैमो, क्रोक, युफ्रैसिया, ग्रैफा, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, लाइको, मर्क, मेजे, नैट्र म्यूर, पल्से, सैनाडि, सल्फर ।

ठण्डापन—क्रोक, फॉस्फो ऐसि ।

भारीपन—कॉलो, जेल्से, हीमैटै, हेलोड, नैट्र म्यूर, सीपिया । देखिये झुकना, नीचे गिरना ।

खुजली—ऐगैरि, एलूमि, एम्ब्रोसि, कैल्के कार्ब, गैम्बो, ग्रैफा, लाइको, मेजे, मॉर्फि, रस टॉ, स्टैफि, सक्सिनिक एसिड, सल्फर, टेलूरि, जिंक।

पलकों के ऊपर पेशियों में टपकन—सिना।

कच्चापन और दर्द—ऐण्टि क्रू; आर्जे नाइट्रि, आर्स, बोरैक्स, युफ्रैसि, ग्रैफा, हीपर, मर्क का, पेट्रोलि, सल्फर, जिंक। देखिये प्रदाह (पलक शोथ)।

पलकों में झटके, कम्प (ब्लेफैरोस्पाज्म निकटिटेशन)—एगैरि, आर्स, एट्रोपि, वेल, कैल्के कार्ब, कैमो, साइक्यू, कोडी, क्रोक, एसेर, जेल्से, गुवाइक, हायोसि, इग्नै, लोवे, पर्प्यु, नैट्र फॉ, नैट्र म्यूर, निकोटि, नक्स वो, फाइजास्टि, पल्से, रूटा, स्ट्रिक्नि, सल्फु ऐसि।

कड़ापन—कॉस्टि, जेल्से, कैल्मि, रस टॉ।

फूलना (एडीमा)—एमो ब्रो, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्स म्यूर, ऑरम म्यूर, वेल, कैल्के कार्ब, डिजि, यूफोर्ब, यूफ्रैसि, ग्रैफा, हीपर, कैली कार्ब, कैली आयोड, मर्क को, नैट्र आर्स, नैट्र का, फॉस्फो, पल्से, रस टॉ, रस वेने, सेबा, सीपिया।

मोटा पड़ना—एलूमि, आर्जे नाइट्रि, कैल्के का, ग्रैफा, हीपर, मर्क, टेलू।

धुन्ध रोग धुन्ध दृष्टि (Glaucoma)—ऐकोन, ऐट्रोपि, ऑरम, बेल, ब्रायो, कॉस्टि, सीड्रन, कोकेन, कोलो, कोमोक्लैडिया, क्रोक, एसेर, जेल्से, मैग कार्ब, नक्स वो, ओपियम, ओस्मियम, फॉस्फो, फाइजास्टि, प्रून स्पि, रस टॉ, स्पाइजे, सुप्रा-रेनल एक्सट्रैक्ट।

पुतली पर मवाद जमा होना (Hypopion)—क्रोटो टि, हीपर, मर्क को, मर्क, प्लम्ब, सिलिका।

उपतारा तथा कृष्ण पटल शोथ—कैली आयोड, प्रूनस स्पि, सिलिका।

उपतारा—पलक प्रदाह आघातजनित संक्रमण दोष—नैट्र, सैलिसि।

उपतारा—पुतली का काला भाग—अपनी जगह से खसक कर बाहर या नीचे सरक जाना—ऐण्टि सल्फ, आरैटम, फाइजास्टि।

उपतारा प्रदाह—साधारण औषधियाँ—एकोन, आर्स, बेल, सेड्रोन, सिनाबे, क्लिमै, डूबो, युफ्रैसिया, फेरम फॉस, जेल्से, ग्रिण्डे, हीपर, आयोडम, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, मर्क को, मर्क स, पल्से, रस टॉ, स्पाइजे, सल्फर, सिफिलि, टेलुरि, टेरेबि, थूजा।

चमकीला—ऐकोन, ब्रायो, सिनैबे, हीपर, मर्क का, रस टॉ, थूजा।

वात रोग सम्बन्धी—आर्न, ब्रायो, क्लिमै, कोलिच, युफ्रैसिया, फोरमिका, कैली बाइक्रो, कैल्मि, लेडम, मर्क कॉ, रस टॉ, स्पाइजे, टेरेबि, थूजा।

जल-स्राव—एपिस, आर्स, ब्रायो, सेड्रोन, जेल्से, मर्क को, मर्क, स्पाइजे।

उपदंशीय—एसैफे, ऑरम, सिनाबे, क्लिमै, आयोड, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, मर्क को, मर्क साइ, मर्क आयोड फ्ले, नाइट्रि ऐसि, सल्फर, थूजा।

आघात सम्बन्धी—ऐकोन, आर्न, बेल, हैमे, लेडम, रस टॉ।

क्षय रोग सम्बन्धी—आर्स, कैली बाइक्रो, सल्फर, सिफिलि, ट्यूबर।

अश्रु-थैली, मवाद पड़ना—ऐण्टि टॉ, कैल्के का, कैलेण्डु, हीपर, मर्क डल्सिस, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, पल्से, साइलि, स्टैन।

अश्रुकोष प्रदाह—एपिस, फ्लोरिक ऐसि, हीपर, आयोड, मर्क, पेट्रोलि, पल्से, साइलि, स्टैनम।

अश्रु-नलिकाओं का बन्द होना, जुकाम, बाहरी हवा इत्यादि से—कैल्के कार्ब।

अश्रु-नलिकाओं का छोटा होकर रुकना—नैट्र म्यूर।

अश्रु-नलिकाओं का फूल जाना—ग्रैफा, साइलि।

अश्रु-बहुस्राव—कैल्के कार्ब, ग्रैफा, हीपर, मर्क पेरे, मर्क सॉ, नैट्र म्यूर, स्क्विला, सिलिका, टोगो। देखिये नेत्र जल प्रवाह।

अश्रु-नलिका का नासूर—कैल्के कार्ब, कॉस्टि, फ्लो ऐसि, लैके, मर्क कॉर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, पेट्रोलि, फॉस, फाइटो, साइलि, स्टैन, सल्फर।

नेत्र से आँसू गिरना—एकोन, ऐम्ब्रो, ऐण्टि पाइ, एपिस, आर्न, आर्स मेटा, ऑरम, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सेपा, कोनि, युजेनि, जै, युफ्रै, गुवारिया, इपिका, कैली आयोड, लाइको, मर्क कार, मर्क, पेरे, मर्क सल्फ, नैट्र आर्स, नैट्र म्यूर, फॉस, फाइटो, पल्से, रस टॉ, सैबैडि, सैंग्वि नाइट्रि, सिलासिलि, सकसिनम, स्टिक्टा, सल्फर, टैक्सस।

आँसू, तीखा, जलनवाला गरम—एपिस, आर्स, सीड्रन, यूजेनि, युफ्रैसि, ग्रैफा, कैली आयोड, क्रियोजो, मर्क का, नैफ्थै, नैट्र म्यूर, रस टॉ, सल्फर।

सादा—सेपा, पल्से।

घटना-बढ़ना—खुली हवा में आराम मिले—सेपा।

रात में अधिक हो—एपिस।

ठंडे प्रयोग से अधिक हो—सैनिक्यू क्यू।

खाँसने से अधिक हो—युफ्रै, नैट्र म्यूर।

खाने से अधिक हो—ओलियम ऐनिमेल।

आँखों में बाहरी वस्तु के पड़ने से, ठंडी हवा से, बरफ की चमक से अधिक हो—एकोना।

बहुत सवेरे अधिक हो—कैल्के कार्ब।

खुली हवा में अधिक हो—कैल्के कार्ब, कॉल्चि, लाइको, फॉस, सैनिक्यू, साइलि।

आँखें बन्द करने की शक्ति न रहना—फाइजॉस्टि ।

नेत्रच्छग्रन्थि (Meibomian Glands मेइबोमियन ग्लैंड) का—

फूलना—इथूजा, वैडियागा, क्लिमै, डिजि, ग्रैफा, हीपर, पल्से, रस टॉ । देखिये प्रदाह-पलक शोथ ।

आँखों की पेशियाँ—सिकुड़न—ऐगैरि, साइक्यूटा, फाइजॉस्टि, स्ट्रिक्निन ।

चक्षु-पेशियों में दर्द—कार्बो वेज, सिमिसि, अनोस्मो । देखिये दर्द ।

चक्षु पेशियों का पक्षाघात—आर्जें नाइ, बेला, कॉस्टि, कोनि, युफ्रै, जेल्से, हायोसि, लैके, ऑक्सिट्रो, फॉस्फो, फाइजॉस्टि, रस टॉ, रूटा, सैण्टो, सेनेगा, सिफिलि ।

चक्षु-पेशियों का पक्षाघात, बाहरी—जेल्से, फॉस्फो ।

चक्षु-पेशियों का पक्षाघात, आन्तरिक—ऐलुमिना, कोनि, लैके, नैट्र म्यूर, ओनोस्मो, रूटा ।

चक्षु-पेशियों का पक्षाघात, सरलोर्ध्व नेत्र चालनी पेशी का—सेनेगा ।

चक्षु पेशियों का पक्षाघात, दौर्बल्य—जेल्से, लैके, नैट्र म्यूर, फाइजॉस्टि, रूटा, टिलिया ।

आँखों में तनाव—कम होना—एपियम विरस, सीड्रन, ऐसेरिन, नैट्र म्यूर, ओस्मि, प्रूनस स्पि, रैन बल्बो, रोडो ।

अधिक होना—देखिये ग्लूकोमा (धुन्ध रोग) ।

आँख उठना—अभिष्यंद—एकोना, ऐमो म्यूर, एपिस, आर्स, बेलाडो, कैमो, डल्का, युफ्रैशिया, जेल्से, कैलि ब्राइक्रो, मर्क को, मर्क, नक्स वा, पल्से, सल्फर ।

जीर्ण—ऐलूमि, आर्जें नाइट्रि, आर्स, कोनियम, युफ्रैसिया, ग्रैफा, कैलि बाइक्रो, लाइको, सोरिन, सीपिया, सल्फर, जिंक मेटा ।

गह्वरपूर्ण, दानेदार—(Follicular Granular)—ऑरम म्यूर, युफ्रैसिया, जेक्विरि, पल्से ।

प्रामेहिक नवजात (Neenatorum)—एकोना, आर्जें नाइट्रि, बेलाडो, कैल्के सल्फ, कैना सैटा, हीपर, कैली सल्फ, मर्क कॉ, मर्क प्रेरूब, मर्क, नाइट्रि एसिड, पल्से, रस टॉ, सिफिलि, थूजा ।

प्रामेहिक, वंशगत प्रवृत्ति—एकोना, क्लिमै, नाइट्रि एसिड, पल्से ।

मवादी—एपिस, आर्जें नाइट्रि, कैलैण्डु, ग्रिण्डे, हीपर, मर्क कार, मर्क प्रेरूब, नैट्र सल्फ, प्लम्ब, पल्से, रस टॉ ।

वातज—एकोन, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, क्लिमे, कोल्चि, युफ्रैसिया, इग्नेश्य, कैली बाइक्रो, लीडम, लिथियम कार्ब, लाइको, मर्क कार, मर्क, नक्स वॉ, फाइटो, रस टॉ; साइलि, स्पाइजे, सल्फर ।

कण्ठमालीय—इथियोप्स, ऐण्टिमोनियम, इथूजा, एपिस, आर्जे नाइट्रि. आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, ऑरम म्यूर, बैराइ का, बैराइ आयोड, बेलाडो, कैल्कै कार्ब; कैल्कै आयोड, कैने सैटि, सिस्टस, क्लमै, कोक्लियर, कॉल्चि, कोनियम, युफ्रेसि, ग्रैफा, हीपर, आयोड, कैली बाइक्रो, मर्क कार, मर्क डल, मर्क नाइट्रि, मर्क प्रेरूब, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, सोरि, पल्से, रस टॉ, स्क्रोफूले, साइलि, सल्फर, थूजा, वायोला ट्रि, जिंक सल्फ।

वृद्धावस्था में—ऐलूमि।

सहानुभूतिक—बेल, ब्रायो, कैलेण्ड, मर्क, रस टॉ, साइलि। (देखिये आँख की श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह)।

उपदंशीय—एपिस, एसाफे, जेल्से, कैली आयोड, मर्क कार, नाइट्रि एसि।

दृष्टि की अति संवेदनीयता——उत्तेजना—क्राइसैरो।

चक्षु-बिम्ब—(Optic Desks) रक्ताधिक्य के कारण चक्षुपट की रक्त नलिकाओं का फूल जाना—बेल, ओनोस्मोडियम।

चक्षु-बिम्ब—पीला, फीका; दृष्टि क्षेत्र का संकुचित होना; चक्षुपट की रक्त-नलिकाओं का सिकुड़ना—ऐसिटैनिलिड।

चक्षु-स्नायु—क्षीण—ऐगैरि, आर्जे नाइट्रि ऐटॉक्सि; कार्ब, सल्फ; आइडोफा; नक्स वॉ, फॉस; सैण्टोनाइन, स्ट्रिक्नी नाइट्रि, टैबै।

प्रदाह (स्नायुप्रदाह; न्यूराइटिस)—एपिस, आर्स, बेल, कार्बन सल्फ, कैल आयोड; मर्क को; नक्स वॉ, पिकरिक ऐसि, प्लम्ब मे, पल्से, रस टॉ; सैण्टोनी, टैबे, थाइरॉ।

स्नायुप्रदाह, रक्त संचार का रुकना—बेल, ब्रायो; डुबो, जेल्से; हेलेबो, नक्स वो, पल्से; वेरैट्र वि।

स्नायु प्रदाह, नीचे उतरने वाला—आर्स, क्युप्रम मेट, मर्क कार।

पक्षाघात—नक्स वो, ओक्सि ट्रो; फॉस्फो ऐसि।

नेत्र-कोटर (Orbits) अस्थि गुल्म—कैली आयोड।

कौषिक तन्तु प्रदाह—एपिस; हीपर, कैली आयोड, फाइटो, रस टॉ, साइलि।

चोट लगना-आघात—एकोन, आर्स, हैमै, सिम्फाइटम।

चारों तरफ दर्द—एपिस, ऐसाफि, ऑरम मेट, बेला, सिनाबे, हीपर, हाइड्रोकोटाइल, इलेक्स; प्लैटिना, प्लम्बम मेटै, स्पाइजे।

दर्द गहराई में—एलो, जेल्से, मर्क को; फास्फो, फाइटो, प्लैटिना, रूटा, सारासी, स्पाइजे, स्टैन, उपास। देखिए दर्द।

अस्थिवेष्ट का प्रदाह (पेरीयोस्टाइटिस)—ऐसाफि, ऑरम, कैली आयोड, मर्क, साइलि।

दर्द स्थान—पलकों में—आर्स, सीड्रन, चेनापो, क्रोमी ओक्सी, सिमिसि, सिनाबे, कोमोक्लै, क्रोट टि; जेल्से, पैरिस, फॉस, प्लैटे, प्रुनस स्पि, रोडो, स्पाईजे; थूजा।

ढेलों में—एकोन, ऐल्फा, ऐमो ब्रो, साफि, ऑरम, ऐजेर, बैप्टि, बेलाडो, ब्रायो, सीड्रन, चेलिडो, चिमाफि, सिमिसि, सिन्को, क्लिमै, कॉकु, कोली, कोमोक्लोडिया, कोनियम, क्रोटो टिग, एसेर, युपैटो पर्फ, युफ्रैसिया, जेल्से, ग्रिण्डै, गुवारिया, हीपर, इण्टो, जैबोरै, कैली आयोड, कैल्मिया, लाइको, मेन्थोल, मर्क कार, नैट्र म्यूर, निकोल सल्फ, नाइट्रि ऐसि, ओलिऐण्ड, ओनोस्मो, ओस्मि, पैरिस, पैसिफ्लो, फॉस, फॉस्फो ऐसि, फाइजॉस्टि, प्लैटिना, प्रूनम स्पि, पल्से, रोडो, रस टॉ, रूटा, सैंग्वि, स्पाइजे, स्टैफि. फाइट, सिफिलि, टेरेबिं, थेरीडि, थूजा, उपास, वायोल ओडो।

घेरों में—ऐलो, ऐमो पिकरि, ऐसाफि, ऑरम मेट, चेली, सिमिसि, क्रोटो टि, जेल्से, इलेक्स, कैलि आयोड, मेन्थोल, सिनाबेरिस, फॉस्फो, रूटा, स्पाइजे, थेरीडि, उपास।

घेरों के ऊपरी भाग में—ऐसाफि, ब्रायो, कार्बो ऐसि, सीड्रन, चिनि सल्फ, डुबोई, जेल्से, कैली बाइक्रो, मैग फॉस, मेलीलो, मेन्थोल, मर्क कार, प्लैटि, रूटा, स्पाइजे, थूजा।

प्रकार—टीस सन्ताप—इस्कु, एल्फा, ऐलो, आर्न, आर्जे नाइट्रि, बैप्टि, ब्रायो, सिमिसि, युपेटो पर्फ, युफ्रैसिया, एसेर, जेल्से, हैमे, लीडम, लैप्टै, मेन्थोल, नैट्र म्यूर, निकोल सल्फ, नाइट्रि ऐसि, ओनोस्मो, रेडियम, रस टॉ, रूटा, सीपिया, स्पाइजे।

छेद होने जैसा—एसाफि, ऑरम, कोलो, क्रोटो टिग, हीपर, मर्क को।

कुचल जाने जैसा—आर्न, ऑरम म्यूर, सिमिसि, क्युप्रम मेट, जेल्से, हीपर, नैट्र म्यूर।

जलन, चिलकन—ऐकोन, एमो गम्मो, आर्स, ऐसाफि, कार्बो वेज, सेपा, क्लिमै, युफ्रैसि, इलेक्स ऐक्वि, इण्डोल, आयोड, जैबोरै, लाइको, मर्क को, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, रैन बल्बो, रूटा, साइलि।

बड़ी जान पड़े, फटे—एमो ब्रो, ब्रायो, सिमि, कोमोक्ले, पैरिस, प्रूस्पि, स्पाइजे।

स्नायुशूल—आर्स, ऐसाफि, बेल, सीड्रन, चिनि सल्फ, सिमिसि, सिन्को, सिनाबे, कोलो, कोमोक्ले, क्रोटि टि, जेल्से, कैली आयोड, कैल्मि, मैग फॉस, मेलो, मेजे, ओस्मी, फॉस्फो, फाजॉस्टि, प्रूस्पि, रोडो, स्पाइजे।

सामयिक, सविराम—आर्स, ऐसाफि, सेड्रोन, चिनी सल्फ, सिन्को, स्पाइजे।

कोंचने वाला; धँसने वाला—एपिस, ऑरम, मिलिफो, रस टॉ।

भीतर की तरफ दबाता हुआ; मानो संकुचित हो गया है—ऑरम म्यूर, क्रोटि टि, हीपर, ओलिएण्ड, पैरिस, फॉस्फो एसिड।

बाहर की तरफ दबाता हुआ—ऐसैर, ब्रायो, सिमिसि, कॉकु, कोलो, कोमोक्ल, गुवारिया, लाइको, मर्क कार, पासीफ्लो, स्पाइजे, थेरि।

दबाता हुआ, कुचलता हुआ—ऐकोन, ऐसाफि, ऑरम म्यूर, सिन्को, क्लिमै, क्रोटो टि, क्युप्रम, युफ्रैसिया, हीपर, मेन्थोल, नाइट एसिड, ओलियैंड, पैरिस, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, प्रूस्नि, रैन बल्बो, रस टॉ, रूटा, सैंग्वि, सीपिया, स्पाइजे।

स्पर्श असह्य—एकोन, आर्नि, आर्स, ऑरम, ब्रायो, सिमिसि, क्लिमै, युपेटो पर्फ, हैमा, हीपर, लेप्टै, रस टॉ, सिलि, स्पाइजे, थूजा। देखिये टीसन।

चुभन, फटन, झपटनेवाला, काटनेवाला—एकोन, एसाफि, ब्रायो, कैल्के कार्ब, चिमाफि, सिमिसि, सिनैब, क्लिमै, कोलो, युफ्रै, ग्रैफा, हेलेबो, हीपर, कैली कार्ब, कैल्मि, मैग फॉ, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, फाइजॉस्टि, प्रूस्नि, रोडो, रस टॉ, साइलि, स्पाइजे।

खपची की तरह—एपिस, ऑरम, हीपर, मेडो, मर्क, नाइट्रि एसिड, सल्फर, थूजा।

बींधन—एपिस, युफ्रै, हीपर, कैली कार्ब, पल्से, थूजा।

खींच, तनाव—गुवाइक, जैबारै, कैल्मि, मेडो, नैट्र म्यूर, ओनोस्मो, रस टॉ, रूटा।

फटने जैसी—आर्स, एसाफि, ऑरम म्यूर, बेल, चेलिडो, कोल्चि, क्रोटो टि, गुवारिया, मर्क कार, पल्से, सिलि।

थरथराहट—एसाफि, बेल, ब्रायो, सिमिसि, हीपर, मर्क, थेरिडि।

घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में—आर्स, एसाफि, सिनाबे, कोनियम, युफ्रैसि, हीपर, कैली आयोड, लाइको, मर्क कार, मर्क सल्फ, पल्से, रस टॉ, सीपिया, स्पाइजे, सिफिलि, थूजा।

आँधी के पहले—रोडोडेण्ड्रन।

आँखों को बन्द करने से—साइलीशिया।

ठण्डी हवा से—ऐसैर, क्लिमै, हीपर, मैग फॉस।

तर, ठंडी बरसाती मौसम से—मर्क को, रस टॉ, स्पाइजे।

रोशनी की चमक से—एसैर, कोनियम, मर्क।

नीचे देखने से—नैट्र म्यूर।

ऊपर देखने से—चेलिडो।

लेटने से—बेल।

हरकत से—आर्स, ब्रायो, सिमिसि, क्रोटो टि, ग्रिण्डे, इण्डोल, कैल्मिया, रस टॉ, स्पाइजे।

हरकत से या आँखों का प्रयोग करने से—आर्जे नाइट्रि, आर्नि, ब्रायो, सिमिसि, युफ्रैसिया, कैल्मिया, नैट्र म्यूर, ओनोस्मो, फाइजॉस्टि, पल्से, रस टॉ, रूटा, स्पाइजे।

सूरज के प्रकाश से—ऐसैर, मर्क।

सूरज निकलने से छिपने तक—कैल्मिया, नैट्र म्यूर।

स्पर्श से—ब्रायो, हीपर, फॉस, प्लैण्टै।

निम्न ताप से—आर्जे नाइट्रि, कोमोक्लै, पल्से, सल्फर, थूजा।

बाईं तरफ अधिक—मेन्थोल, ओनोस्मो, स्पाइजे, थेरिडि।

दाहिनी तरफ अधिक—बेल, सीड्रन, चेलिडो, कोमोक्लै, कैल्मिया, मैग फॉस, प्रूनस स्पि, रैन बल्बो, रूटा।

घटना : ठंडक से—आर्जे नाइट्रि, ऐसैर, पल्से।

अन्धेरे से—कोनियम, लिलि टि।

पीठ के बल लेटने से—पल्से।

हरकत से—कैली आयोड।

दाब से—आर्जे नाइट्रि, एसाफि, चेलिडो, चिनि सल्फ, कोलो, कोनियम, लिलि टिग्रि।

आराम से—ऐसाफि, ब्रायो, सिमिसि।

स्पर्श, दाब से—एसाफि, चेलिडो।

निम्न ताप से—आर्स, हीपर, मैग फॉ, थूजा।

कनीनिका का मांसमय या आरक्त हो जाना—एपिस, ऑरम म्यूर, चिनि म्यूर, हीपर, कैली बाइक्रो, मर्क आयोड, रूबर, नाइट्रि ऐसि। देखिये कनीनिका कोर्निया।

समस्त चक्षुगोलक का प्रदाह (Pan-Ophthalmitis)—हीपर, रस टॉ।

प्रत्यक्ष शक्ति का लोप होना—कैली फॉस्फो।

आलोकातंक, चमक लगना (Photophobia)—एकोन, ऐग्नस, ऐलैंथस, ऐण्टि टा, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्स मेट, ऐसैर, आरम म्यूर, बैल, बेंजोल, कैल्के का, कैल्के फॉ, सेपा, सिमिसि, क्लिमै, कोनियम, क्रोक, इलैप्स, युफ्रैसि, ग्रैफा, हीपर, इग्नै, कैली का, लिलि टि, लाइको, मर्क कार, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस्फो ऐसि, फॉस्फो, सोरि, पल्से, रस टॉ, स्क्रोफूले, साइलि, स्पाइजे, सल्फर, थेरिडियन, जिंक मेटा।

अनुपक्ष, नाखूना, जफरा (Pterygium)—ऐमोब्रो, एपिस, कैल्के का, कैने सैटा, गुवारिया, लैके, रैटानहिया, स्पाइजे, सल्फर, टेलूरि, जिंक मेटा।

पुतली (Pupils)—सिकुड़ाव—(Myosis)—एकोन, सिना, ऐसेर, जेल्से, हेल्लिबोर, इग्नै, आयोड, लोनिसेरा, मर्क कार, मॉर्फि, ओपियम, ओक्सिट्रो, फॉस्फो, फाइजॉस्टि, पिलोका, सोलेन निग्र ।

फैली हुई (Mydriasis)—ऐसिटै, ऐगैरि, ऐग्नस, एलैंथस, ऐट्रोपि, बेल, कैल्के का, कैम्फो, साइक्यू, कोकेन, डिजि, डुबो, जेल्से, ग्लोनो, हैल्लिबो, हायोसि, आयोड, नाइट्रि एसि, नक्स मो, एनैन्थे, सिकेलि, स्ट्रैमो, वेरेट्र वि, जिंक मेट ।

असम्वेदनीयता, प्रतिक्रिया मन्द—बेल, बेंजोल, कैम्फो, साइक्यू, जेल्से, हेल्लिबोर, हाइड्रोसि ऐसि, हायोसि, लॉरोसि, नाइट्रि ऐसि, ओपियम, फॉस, पिलोका, स्ट्रैमो, जिंक मेट ।

चक्षुपट, चित्रपट (Retina) रक्तहीनता : लिथि का ।

संन्यास रोग (रक्तस्राव से, आघात सम्बन्धी खाँसी आदि)—एकोन, आर्न, बेल, बोथ्रोप्स, कोक, कं टै, हैमे, लैके, लीडम, नैट्र सेलि, फास्फो, सिम्फाइ ।

धमनी आक्षेप—नक्स वॉ ।

रक्ताधिक्य —एकोन, ऑरम, बेल, कार्बन सल्फ, डूबो, फेर फॉस, जेल्से, फॉस्फो, पल्से, सैन्टोनि ।

रक्ताधिक्य, हृदय के रोग से—कैक्टस, ग्रैण्डि फ्लोरस ।

रक्ताधिक्य, प्रकाश से, कृत्रिम, तीव्र चमकीली—ग्लोनोइन ।

रक्ताधिक्य, मासिक-धर्म के दब जाने से—बेल, पल्से ।

रक्ताधिक्य, आखों के अधिक प्रयोग से—रूटा, सैण्टोनि ।

अलग हो जाना—ऑरम म्यूर, डिजिटैलिस, जेल्से, नैप्थे, पिलोका ।

शोथ—एपिस, बेल, कैन्थे, कैलो आयोड, फॉस्फो ।

अति संवेदनीयता (दृष्टिविषयक)—बेल, सिमिसि, कोनियम, लिलि टिग्रि-नम, मैक्रोटिन, नक्स वॉ, आक्जे० एसि, फॉस्फो, स्ट्रिक्नीन ।

प्रदाह, (चक्षु-चित्रपट का प्रदाह) सांडलाल मूत्र सम्बन्धी और जीर्ण—क्रोटन, जेल्से, कैल्मिया, मर्क को, नैट्र सैलि, फॉस्फो, प्लम्बम मेट, सैलिसिलिक एसिड ।

प्रदाह, संन्यासी रोग सम्बन्धी—ग्लोनोइन, लैकेसिस ।

प्रदाह, रक्तश्वेताणुमयता—नैट्र सल्फ, थूजा ।

प्रदाह, रंजकमय—नक्स वो, फॉस्फो ।

प्रदाह, रोगमय कोषों की अति वृद्धि के साथ—कैली आयोड, थूजा ।

प्रदाह, छिद्रमय फोड़े—बेल, कैली आयोड, मर्क को, मर्क आयोड रूबर, नैफ्थे, सल्फर ।

प्रदाह, सरल और स्नायिक—ऑरम, बेल, बेनजिन, डिनाइट्र, ब्रायो, डुबो, जेल्से, मर्क, पिकरिक एसि, पल्से, सैण्टो।

प्रदाह, उपदंशीय—आयोड, कैली आयोड।

चोट आघात—एकोन, आर्न, बेल, हैमे, लैके, लीडम, फॉस।

समरोधन निर्माण और क्षीणता—हैमे, फॉस्फो।

चक्षुश्वेत पटल—अपकृष्टता—ऑरम, बैराइटा म्यू, प्लम्बम।

काले चकत्ते—आर्स, बेल, कैमो, हैमे, लैके, लीडम, नक्स वो, सेनेगा।

प्रदाह गहराई तक (Scleritis) प्रदाह ऊपरी थोड़ा अंश तक (Superficial equiscleritis)—एकोना, आर्से, आरम म्यूर, इरिजियम एक्वेटि, हीपर, कैल्मिया, मर्क का, सीपिया, स्पाइजे, थूजा।

ऐंचापन—Strabismus (Squinting)—ऐलूमेन, ऐलूमि, ऐपिस, ऐपोसा, बेल, बेनजिन, डिनाइट्रि, कैल्के फॉ, साइक्यूटा, सीना, क्युप्र ऐसे, साइक्लै, जेल्से, हायोसि, नक्स वॉ, सैण्टो, सिके, स्पाइजे, स्ट्रैमो, टैबे, जिंकम।

एक बिन्दु की ओर झुकी हुई—साइक्लै, जैबोरे।

ऐंठन पर निर्धारित—बेल, साइक्यूटा, हायोसि।

आघात चोट पर निर्धारित—साइक्यूटा।

कृमि केचुओं पर निर्धारित—बेल, सिना, साइक्लै, हायोसि, मर्क, सैण्टो, स्पाइजे।

फैलती हुई—मार्फि, नैट्र सैलि।

दृष्टि अन्धापन (Amaurosis)—एकोन, एपिस, ऑरम मेट, बेल, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, चिनि सल्फ, सिन्को, कोनियम, साइक्लै, डल्का, जेल्से, हीपर, हायोसि, मेन्सिन, मर्क, मोमोरडि, नैफ्थे, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फास्फो, प्लम्बम ऐसिटेट, प्लम्ब मेट, सैण्टो, सीपि, सिलि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, टैबे, वैनैडि, जिंक मेट।

रङ्गों से—बेंजिन, डिनाइट्रि, कार्बन सल्फ, फाइजॉस्टि, सैण्टो।

दिन में—ऐकोन, बोथ्रोप्स, कैस्टर, लाइको, फास, रैनन बल्बो, साइलि।

हिस्टीरियायुक्त—फॉस्फो, प्लैटि, सीपिया।

रात में—बेल, कैडमि सल्फ, सिन्को, हेल्लिबो, हीपर, हायोसि, लाइको, नक्स वॉ, फाइजॉस्टि, पल्से, स्ट्रिक्नि।

चक्षुगोलक के पिछले भाग के स्नायु में प्रदाह (Retrobulbar Neuritis)—आइडोफॉ।

तम्बाकू से—नक्स वॉ, फॉस्फो, पिलोका, प्लम्ब एसेटि।

धुन्ध-दृष्टि—(लीपापोती, कमजोरी)—ऐकोन; ऐगैरी, ऐनेका, आर्न, ऑरम, वैप्टि, बेंजोन, डिनाइट्रि, कास्टि, सिन्कोना, कोनियम, कोल्चि, साइक्लै, डिजि, एलैप्स, ऐसेर, युफ्रैप्स, जेल्से, हीपर, जैबोरै, कैली कार्ब, कैली फॉस, लिलि टिग्रि, लीथि, क्लोर, लाइको, मैग फॉ, नैपथै, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, नक्स मॉ, ओनोस्मो, आक्जै ऐसि, ओस्मि, फास्फो एसि, फाइजॉस्टि, पिलोका, पल्से; रैने बल्बो, रस टॉ, रूटा, सैण्टो, सेनेगा, सीपिया, साइली, स्ट्रोन्सि, टैबे, थूजा, टिटैनि, जिंक मे ।

सभी चीजें कोहरे या पर्दे में से दीखती मालूम हों—ऐगैरि, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सिना, क्रोक, साइक्लै, जेल्से, कैली कार्ब, लिलिटिग्रि, मोमोरड, नैट्र म्यूर, फास्फो, फाइजॉस्टि, प्लम्ब, पल्से, रूटा, सीपि, टैबे ।

सभी चीजें लम्बी दीख पड़ें—बेल ।

सभी चीजें उल्टी दीख पड़ें—बेल, गुवारि ।

सभी चीजें बहुत बड़ी दीख पड़ें—बोवि, हीपर, हायोसि, निकोल, नक्स मॉ, ओक्जै ऐसि ।

सभी चीजें बहुत छोटी दीख पड़ें—बेंजिन डिनाइट्रि, ग्लोनो, निकोटि, प्लैटिना, स्ट्रैमो ।

चीजों का अक्स देर तक रहे—जैबो ।

पढ़ने से आँखें जल्दी थकें—ऐमोन, केल्के का, सिना, जैबोर, नैट्र आर्स, नैट्र म्यू, फॉस्फो, रूटा, सिपि, सल्फर ।

पढ़ने से आँखें दब कर अलग होती या बाहर निकली जान पड़ें, जो ठंडे पानी के छींटे से आराम हो—ऐसैर ।

पढ़ने से अक्षर लाल हों—फॉस्फो ।

पढ़ने से अक्षर गायब हों—साइक्यूटा, कॉकु ।

पढ़ने से अक्षर एक में मिल जायें—ऐगैरि, बेल, कैल्के का, कैने, इंडि, सिना, सिन्को, कोनि, इलैप्स, फेरम, हायोसि, लाइको, नैट्र म्यू, साइलि ।

दुर्बल, क्षीण अथवा, वेदनादायक दृष्टि (Asthenopia) (आँखों पर जोर पड़ना, संविधान क्रिया में झटकों के साथ)—ऐगैरि, ऐलूमि, ऐमो का, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्जेमेंट, बेल, कार्बन सल्फ, कास्टि, नैट्र म्यु, निकोल सल्फ, निकोटी, नक्स वॉ, ओनोस्मो, पैरिस, फॉस्फो, फाइजॉस्टि, रोडो, रूटा, सैन्टो, सेनेगा, सीपि, स्ट्रोन्सि ।

सरल बहिर्नेत्र चालनी पेशी—क्युप्रम ऐसेटि, जेल्से ।

सरलांत्र नेत्र चालनी पेशी—जैबोर, मस्कै, नैट्र म्यू, फाइजॉस्टि, पिलोका ।

निकट दृष्टि—(Myopic)—ऐगैरि, लिलि टिग्रि ।

विषम दृष्टि तथा वक्र-दृष्टि मार्ग—(Astigmation)—जेल्से, लिलि टिग्रि, फाइजॉस्टि।

द्वि-दृष्टि (Diplopia) : दोहरी चीजें दीख पड़ना—ऐगैरि, ऑरम, बेल, साइ-कूटा, कोनियम, साइक्लै, डिजि, जेल्से, जिन्से, हायोसि, नैट्र म्यू। नाइट्रि ऐसि, ओलियांडर, ओनोस्मो, फॉस्फो, फाइजॉस्टि, प्लम्बम, सिकेल, स्ट्रैमो सल्फोनाल, सल्फर, सिफिलि, वेरेट्रम वि।

अर्द्धदृष्टि—(Hemiopia)—कैल्के सल्फ, ग्लोनो, हीपर, लिथि का, लाइको, म्यूर ऐसि, नैट्र म्यूर, टिटैनि, वेरेट्र वि।

बायाँ आधा भाग—कैल्के का, लीथि का, लाइको।

निचला आधा भाग—ऑरम, डिजि।

लम्बाकार, सीधी खड़ी—फेर फॉ, लीथि कॉ, मॉर्फीनम; म्यूर ऐसि, टिटैनि।

Hypermetropia—कैल्के का, कोनियम, जैबोरै, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, रूटा, सीपिया, साइलि।

निकट दृष्टि—ऐकोन, ऑरम, ऐगैरि, म्यूर, बेल, कार्बन सल्फ, युफ्रै, जेल्से, लिलि टिग्रि, नाइट्रि ऐसि, फॉस्फो, फाइजॉस्टि, फाइजॉस्टि, पिलोका, रूटा, वायोला, ओडो।

दृष्टि-भ्रम—रंगों सम्बन्धी प्रकाशातंक-आंखों के सामने कालापन जान पड़े—ऐगैरि, ऐट्रोपि, बेल, कार्बो वेज, कार्बन सल्फ, सिनकोना, साइक्लै, डिजि, लैके, लाइको, मैग का, मैग फॉ, मर्क, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, फाइजॉस्टि, सीपि, स्ट्रोन्सि, टैबै, जिंक।

आँखों के सामने नीलापन दीख पड़ना—क्रोटै, ट्रिलि सेर, ट्रिलि पेन।

रंगों में गड़बड़ी दीख पड़ना—बेल, कैल्के का, क्रोक, मर्क, पल्से, रूटा, स्टैफिस, स्ट्रैमो।

चमक, आग की लपट जैसी टिमटिमाहट—ऐगैरि, ऐलो, बेल, कैल्के, फ्लो, कास्टि, क्लिमै, साइक्लै, ग्लोनो, हीपर, इग्नै, आइरिस, लाइको, फॉस्फो, फाइजॉस्टि, पल्से, सेनेगा, वायोला ओडो।

भूरी चीजें देखना—आर्जे नाइट्रि, कोनवै, गुवारिया।

हरी चीजें देखना—डिजि, ओस्मि, फॉस्फो।

प्रकाश के चारों तरफ चक्र दिखाई देना—बेल, क्लोरल, हायोसि, सल्फर।

चीजें सफेद देखना—क्लारल।

चीजें चमकीली, विचित्र, रंगीन, विकट, अग्निमय दीख पड़ें—ऐन्हैलो, ऑरम, बेल, सिन्कोना, साइक्लै, नैट्र म्यू, सीपिया।

आँखों के सामने लाल रंग दिखाई देना--ऐण्टीपाइरीन, एपिस, बेल, डुबो, इलैप्स, हीपर, फॉस्फो, स्ट्रोमि ।

चिनगारियाँ, तारे—ऑरम, बेल, कैल्के फ्लो, कॉस्टि, क्रोक, साइक्लै, ग्लोनो, लाइको, नैश्थे, साइलि, स्ट्रिकिन ।

धब्बे (Muscae Volantes)—एगैरि, ऐनाका, ऐट्रोपि, ऑरम, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिन्को, कोल्चि, कोनियम, साइक्लै, साइप्रि, कैली कार्ब, मेली, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस्फो, फाइजॉस्टि, सीपिया, साइलि, सल्फर, टैबे ।

आँखों के सामने पीला रंग दीख पड़ना—ऐलो, कैन्थे, सिना, डिजिटॉक्स, सैण्टोनि ।

नेत्र जल का धुँधलापन-फैला हुआ—हैमे, हीपर, कैली आयोड, मर्क कॉर, मर्क आयोड रुबर, थूजा ।

गँदलापन —कोलेस्टेरि, कैलि आयोड, फॉस्फो, प्रून स्पि, सेनेगा, सोलन नाइग्र, सल्फर ।

कान

श्रवण नाड़ी —अनुभव शून्यता-चेनापो ।

बाहरी भाग (Auricle)—जलन वाला मारने जैसा—एगैरि, कॉस्टि, सैंग्वि ।

चर्मोद्भेद—ऐण्टि क्रू, बैराइटा कार्ब, कैल्के कार्ब, कैल्के सल्फ, ग्रैफाइ, लाइको, मेजे, पेट्रोलि, रस टॉ, टेलूरि ।

उद्भेद—कैल्के सल्फ ।

अकौता, चारों तरफ—आर्स, ऐरंडो, बोविस्टा, क्राइसैरोब, क्लिमै, क्रोट टि, ग्रैफा, हीपर, कैली म्यूर, मेजे, ओलिएण्ड, पेट्रोलि, सोरि, रस टॉ, सैनिकू, स्क्रोफ्यू, टेलूरि ।

विसर्प—एपिस, बेल, रस टॉ, रस वेने ।

दरारें—कैल्के कार्ब, ग्रैफा ।

पाला मारने से घाव—ऐगैरि, एपिस, बेल, रस टॉ ।

खाल उधड़ना—पेट्रोलि ।

विसर्पिका—सिस्टस, ग्रैफा, सोरि, रस टॉ, सीपिया, टेलूरि ।

नम—ऐण्टि क्रू, कैल्के का, ग्रैफा, हीपर, मेजे, पेट्रोलि, सोरि, सैनिक्यू ।

मवादी दाने—आर्स, हीपर, सोरि ।

पपड़ी—क्राइसैरी, हीपर, सोरि।

चारों तरफ की गिल्टियाँ फूली हुई, वेदनापूर्ण—बैराइटा का, बेल, कैल का, कैम्फि, ग्रैफा, आयोडम, मर्क।

खुजलाना—ऐगैरि, आर्स, हीपर, नैट्र फॉस, सल्फ, आयोड, ट्यूबर।

लौ पर दाने—बैराइटा का।

लौ के छेद हुए स्थान का घाव युक्त होना—स्टैन।

सुन्न पड़ना—मैग का, प्लैटिना, वरबैस्कम।

फटन दर्द, कड़ापन—बर्बे वल।

लाल, कच्चापन—ग्रैफा, पेट्रोलि, सल्फर।

लाली, फूलना—ऐकोन, ऐगैरि, ऐनाका, एपिस, बेल, सिन्को, ग्रैफा, हीपर, कैली बाइक्रो, मेड्युसा, मर्क, पल्से, रस टॉ, स्क्रोफुला, सल्फर।

छूना असह्य—आर्न, बेल, ब्रायो, कैम्फि, सिन्को, फेरम फॉस, हीपर, सोरि, सैनिक्यू, सीपिया।

मैल निकालना—कार्बो वेज, कॉस्टि, कोनियम, इलैप्स, ग्रैफा, लैके, पल्से, सीपिया, स्पांजिया।

बहरापन—सुनने में कठिनाई, कम सुनाई देना—साधारण औषधियाँ—ऐगैरि, ऐग्रफिस, ऐम्ब्रा, ऐमो का, आर्नि, आर्स आयोड, बैराइटा कार्ब, बैराइटा म्यूर, बेल, कैल्के फ्लो, कैलेण्डु, कार्बो ऐनि, कार्बोनि सल्फ, कॉस्टि, चीरेन्थस, चेनोपो, चिनि सल्फ, सिन्को, कोनि, डिजि, डल्का, इलैप्स, फेर फॉस, फेर पिक्रि, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रै, हाइड्रो ब्रो, ऐसि, आयोड, कैली आर्स, कैली का, कैली म्यूर, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैजे ऐसिटिक, मर्क डल्सिस, मर्क सल्फ, मेजे, नैट्र का, नैट्र सैलि, नाइट्रि ऐसि, पेट्रोलि, फॉस्फो ऐसि, फॉस्फो, सोरि, पल्से, रैमस कैली, सैलि ऐसि, सैंग्वि नाइट्रि, सीपिया, सिलि, टेलूरि, थियोसिन, वरबैस्क, वायोला ओडो।

कारण—पारा के दुरुपयोग से—हीपर, नाइट्रि एसि।

ग्रन्थि विकार और तालुमूल की अतिवृद्धि से—ऐग्रैफिस, आरम, बैराइटा का, कैल्के फॉस, मर्क, नाइट्रि ऐसि, स्टैफि।

संवेदनीयता के साथ बारी-बारी—साइलि।

संन्यास रोग के कारण—आर्न, बेल, कॉस्टि, हायोसि, रस टॉ।

अस्थि संवाहन विकार, कमी अथवा लोप होना—चेनोपोडियम।

वजला (कष्ठकर्णी नली, मध्य कान का)—आर्स आयो, ऐसैरि, कैल्केरिया के सभी लवण, कॉस्टि, जेल्से, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रैस्टि, आयोडम, कैली बाइक्रो, कैली म्यूर, कैली सल्फ, मैंगे एसेटि, मेन्थोल, मर्क डल्सिस, मर्क सल्फ, पेट्रोलि, पल्से, रोजा डैमै, सैंग्वि, सीपिया, सिलि, थिओसिन।

मस्तिष्क सम्बन्धी—चेनोपोडियम, म्यूर ऐसि।
ठण्डक लगने से—ऐकोन, कैली म्यूर, विस्क ऐल्बम।
धक्का लगने से—आर्नि, चिनि सल्फ।
तर मौसम—मैंगे ऐसेटि।
स्राव का दब जाना अथवा अकौता—लोबे इन्फ्ला।
सिर की खाल के दाने दब जाना—मेजे।

मनुष्य की बोली सुनने में कठिनाई—कैल्के कार्ब, चेनापो, इग्नै, फॉस्फो, सिलि, सल्फर।

संक्रामक रोग—आर्नि, बैप्टि, जेल्से, हीपर, लाइको, पेट्रोलि, फॉस्फो, पल्से।

स्नायु शिथिलता और स्नायु विकार—ऐम्ब्रा, ऐनैका, ऑरम, बेल, कॉस्टि, चिनि सल्फ, सिन्को, जेल्से, इग्नै, लैके, फॉस्फो ऐसि, फॉस, प्लैटि, टैबे, वैले।

पोषण बाधा, बच्चों में बढ़ने के समय—कैल्के कार्ब, मर्क आयोड रूबर।
वृद्धावस्था—कैली म्यूर, मर्क बल, फॉस्फो।
गठिया वात विकार—फेर पिक्रि, हैमे, कैली आयोड, लेडम, साइलि। सल्फर, विस्क ऐल्ब।

संवाहन नाड़ियों का कड़ा पड़ना—फेर पिक्रि, थिओसि।
कंठमालिक विकार—इथिओप्स, कैल्के कार्ब, मर्क, मेजे, साइलि, सल्फर।
मन्द स्वर की आवाज—चेनापा।
उपदंश—क्रियोजो।
पानी में काम करने से—कैल्के का।
मासिक धर्म के पहले अधिक—फेरम पिक्रि, क्रियोजो।
आवाज से, मोटर की सवारी से कम हो—कैलेण्डुला, ग्रैफा, नाइट्रि ऐसि।

कम्बु-कर्णी नली—(नजला का बन्द होना)—ऐल्फा, ऐलुमि, बैराइटा म्यूर, सभी कैल्केरिया युक्त लवण, कैप्सि, कॉस्टि, फेर आयोड, फेर फा, जेल्से, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रै, आयोड, कैली बाइ, कैली क्लो, कैली म्यूर, लैके, लोबे सेरु, मेन्थोल, मर्क डल, नाइट्रि एसि, पेन्थो, पेट्रोलि, फाइटो, पल्से, रोजा डैमे, सैंग्वि नाइ, साइलि, विस्क ऐल्ब।

कम्बु-कर्णी नली प्रादाहिक, मन्द, पीड़ा अधिक—बेल, कैप्सि।
कम्बु-कर्णी नली गुदगुदी निगलना चाहे, खाँसी—जेल्से, नक्स वॉ, साइलि।
बाहरी श्रवण, पथ-फुड़िया, दाने—बेल, कैल्के पिक, हीपर, मर्क सल्फ, पिक्रि ऐसि, सिलि, सल्फर।
जलन—आर्स, ऐरण्डो, कैप्सि, सैंग्वि, स्ट्रिक।

खोदन और छिलन—सिना, सोरि।

सूखापन—कैल्के पिक्रे, कार्बो वेज, फेरम पिक्रि, ग्रैफा, नक्स वॉ, पेट्रोलि, वरवैस्क।

हड्डी का बढ़ना—कैल्के फ्लो, हेक्ला, कैली आयोड।

हवा से फैला मालूम पड़े—मेजे, पल्से।

दरारें—ग्रैफा, पेट्रोलि।

प्रदाह और पीड़ा—एकोन, एपिस, आर्स आयोड, बेल, बोरैक्स, ब्रेकीग्लो, कैल्के पिक्रे, कैमो, फेरम फॉस, हीपर, कैली बाइ, कैली म्यूर, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि, सोरि, पल्से, रस टॉ, टेल्यूरि।

खुजली—ऐलूमि, ऐनै का, कैल्के का, कॉस्टि, इलेप्स, हीपर, कैली बाइक्रो, कैली का, सोरि, पल्से, सैबैडि, सीपिया, सिलि, सल्फर, टेलूरि, वायोला ओडो।

अर्बुद, स्फोट, दाने—ऐलूमि, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के फास, फार्मिका, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, कैली म्यूर, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि, फॉस, सैंग्वि, साइलि, स्टैफि, ट्यूक्रि, थूजा।

पपड़ी, वहिस्त्वकीय, भूसीदार, स्नाविक हो—कैल्के पिक।

संवेदन, मानो बायें कान में पानी का बूंद है—एकोना।

संवेदन, मानो कानों से गर्मी निकल रही है—इथू, कॉस्टि।

संवेदन, मानो बन्द हो गया हो—इथू, ऐनैका, ऐसैर, कार्बोनि सल्फ, कैमो, क्रोटैलस, ग्लोनो, मर्क, नाइट्रि एसि, पल्से, वरबेस्क।

संवेदन, मानो अधिक खुला हो—मेजे।

हवा, स्पर्श से संवेदनीय—आर्स, बेल, बोरैक्स, कैप्सि, कैमो, फेर फॉस, हीपर, मर्क, मेजे, नक्स वॉ, पेट्रोलि, टेलूरि।

अति उत्तेजित—आवाज, शोर-गुल असह्य—ऐकोना, ऐन्हैलो, ऐसैर, आरम, बेल, बोरैक्स, चेनापो, सिमिसि, सिन्कोना, कॉफिया, फेरम फास, इग्नै, आयोड, लैके, मैग म्यूर, नैट्रि का, नाइट्रि ऐसि, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपियम, पेट्रोलि, फास्फो ऐसि, फॉस्फो, प्लैटि, पल्से, सैंग्वि, सीपिया, साइलि, स्पाइजे, टेरेबिं, थेरि।

गगव, भीतरी छेद खूनी, पानी-सा स्राव—चेनापो।

सूजन (भीतरी कान की सूजन)—ऑरम, कैली आयोड, मर्क, आयोड रूबर

चुचुकाकार अस्थि सड़न—आरम, कैप्सि, फ्लो ऐसि, नाइट्रि ऐसि, सिलि।

सूजन प्रदाह—(Mastoiditis)—ऐमो पिक्रे, एसाफि, ऑरम, बेल, बैंजो ऐसि, कैन्थे, कैप्सि, हीपर, कैली म्यूर, मैग फॉ, मेन्थोल, ओनोस्मो, ओनिस्कस, टेलूरि।

कान का परदा—चूना जमा होना—कैल्के फ्लो।

सूजन, प्रदाह—(Myringitis)—ऐकोना, एट्रोपि, बेल, ब्रायो, सिन्को, हीपर। कर्ण प्रदाह देखिए।

छेद होना—ऑरम, कैल्के का, कैप्सि, कैली बाइक्रो, मर्क, साइलि, टेलूर, ट्यूबर।

मोटा पड़ना—आर्स आयोड, मर्क डल्सिस, थियोसि।

पतली, सफेद, पपड़ीदार वस्तु जमा होना—ग्रेफा।

घाव होना—कैली बाइक्रो।

छोटी हड्डियाँ—सड़ना—एसाफि, ऑरम, कैल्के कार्ब, कैप्सि, फ्लो ऐसि, हीपर, आयोड, साइलि, सिफिलि।

प्रस्तरवत् अस्थि, छूने में कोमल—कैप्सि, ओनोस्मो।

कड़ी कनपटी की हड्डी का प्रस्तरवत् भाग भी—कैल्के फ्लो।

मध्य कान (ढोल) Tympnium—प्रदाह (Otitis)।

नजला तीव्र—एकोना, बेल, कैमो, फेर फॉस, जेल्से, हीपर, कैली म्यूर, मर्क, पल्से, रस टॉ, सिलि।

नजला जीर्ण—ऐगैरि, आर्स, बेराइटा म्यूर, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सिन्को, ग्रेफा, हाइड्रैस्ट, आयोड, जैबोरै, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, कैली म्यूर, मर्क डल, नाइट्रि ऐसि, फॉस्फो, सैंग्वि, ट्यूक्रि। देखिए कम्बुकर्णी नली।

पीब आना, नया : (Otitis Media Suppurative)—एकोना, आर्स, आर्स आयोड, बेल, बौरेक्स, बोविस्टा, कैल्के सल्फ, कैप्सि, कैमो, फेरम फॉस, जेल्से, गुवाइक, हीपर, कैली बाइक्रो, कैली म्यूर, मर्क सल्फ, मर्क वाइवस, माईरिस्टिका, प्लैन्टै, पल्से, सिलि, थियोसिन।

मवादी अवस्था जीर्ण—इथियोप्सि, ऐलूमि, आर्स आयोड, ऑरम, बेराइटा म्यूर, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, कैप्सि, कॉस्टि, चेनॉपो, इलैप्स, हीपर, हाइड्रै, आयोड, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, कैली म्यूर, कैली फॉस, कैली सल्फ, किनो, लैपिस ऐल्बा, लाइको, मर्क सल्फ, मर्क वा, नाजा, नाइट्रि ऐसि, सोरि, पल्से, सिलि, सल्फर, टेलूरि, थूजा, वायोला ओडो।

स्राव का भेद—(कर्णस्राव) खूनी—आर्स, फेरम फॉस, हीपर, कैली आयोड, मर्क सल्फ, मर्क, सोरि, रस टॉ, स्कूकम चक।

छीलने वाला, पतला—ऐलु, आर्स, आर्स आयोड, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, सिस्टस, आयोड, मर्क, सिलि, टेलूरि।

कफ और पीब जैसा, बदबूदार, तीखा या सरल—इथिओप्स, आर्स आयोड, एसाफि, ऑरम, बोरैक्स, कैल्के कार्ब, सल्फ, कैप्सि, कार्बो वेज, इलैप्स, फेरम फॉस,

ग्रेफा, हीपर, हाइड्रै, कैली बाई, कैली सल्फ, काइनो, लाइको, मर्क प्रेरूब, मर्क सल्फ, मर्क वाइ, नैट्र म्यूर, सोरि, पल्से, सिलि, सल्फर, टेलूरि, थूजा, ट्युबर।

पीड़ा (Otalgia)—एकोन, ऐण्टिपाइरि, एपिस, बेल, बोरैक्स, कैप्सि, कैमो, चिनि सल्फ, कॉफिया, डल्का, फेर फॉस, जेल्से, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, मैग फॉस, मेन्थोल, मर्क सल्फ, मर्क वाइ, नाजा, प्लैण्टेगो, पल्से, सैंग्वि, टेरेबि, वैले, वायोला ओडो, विस्क ऐल्बम, वरबैस्कम।

भेद—टीस, लगातार—कैप्सि, गुवाइक, मर्क।

छेद होने जैसा—ऐमो पिक्रे, एसाफि, ऑरम, बेल, कैप्सि, कैली आयोड, साइलि, स्पाईजे।

जलन—आर्स, कैप्सि, क्रियोजो, सैंग्वि, सल्फर।

मरोड़, दबानेवाला; कोंचन—एनाका, कैल्के कार्ब, कैमो, कैली बाइक्रो, मर्क, पल्से।

स्नायुशूल, चुभनेवाला; जगह बदलने वाला; झटकों के साथ; एकाएक पैदा हो; आक्षेपमय—ऐकोन, बेल, कैप्सि, सेपा, कैमो, सिन्को, फेरम फॉस, कैली कार्ब, मैग फॉस, नाइट्रि ऐसि, पल्से, साइलि, स्पाइजे, वायोला ओडो।

टपकनवाला; थरथराहट का—ऐकोन, बेल, कैक्ट, कैल्के कार्ब, फेर फॉस, ग्लोनो, मर्क को, मर्क सल्फ, पल्से, रस टॉ, टेलूरि।

डंक मारने वाला—ऐकोन, एपिस, कैप्सि।

चिलकन—बोरैक्स, कैमो, फेरम फॉ, हीपर, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, मर्क, नाइट्रि ऐसि, प्लैण्टे, पल्से, वायोला ओडो।

फाड़ने वाला—बेल, कैप्टि, कैमो, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, मर्क, सल्फ, प्लैण्टे, पल्से।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—रात में—ऐकोन, आर्स, बेल, कैल्के फॉ, कैमो, डल्का, फेरम फॉ, हीपर, कैली आयोड, मर्क, पल्से, रस टॉ।

ठंडी हवा से—कैल्के फॉ, कैप्सि, कैमो, हीपर, कैली म्यूर, मैग फॉस, सैंग्वि।

आवाज—बेल, कैमो।

दाब-हरकत - मेन्थोल।

सेंकना; निम्न ताप से—ऐकोन, बोरैक्स, कैल्के फॉस, कैमो, डल्का, मर्क, नक्स वा, पल्से।

चेहरा और गरदन ठंडे पानी से धोने के बाद—मैग फॉ।

घटना—दिन में—ऐकोन।

ले जाये जाने से, हरकत से—कैमो।

ठंडे प्रयोग से—पल्से।

हरकत से; ढँके रहने से—ऑरम।

ठंडा पानी जरा-जरा पीने से—बैराइटा म्यूर।

निम्न ताप से—बेला, कैप्सि, कैमो, डल्का, हीपर, मैग फॉस।

खुली हवा में—ऐकोन, ऑरम, फेर फॉस, पल्से।

कानों में टनटनाहट और दूसरी आवाजें—(Tinnitus Aurium)

साधारण औषधियाँ—ऐड्रीनै, ऐमो कार्ब, एण्टिपाइरीन, आर्स, बैराइटा कार्ब, बैराइटा म्यूर, बेल, कैंचैला, कार्बन सल्फ, कॉस्टि, चेनॉपो, ग्लासि, चिनि सैल, चिनि सल्फ, सिमिसि, सिन्को, सिस्टस, कोनि, डिजि, फेर फॉस, फेर पिक्रि, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रै, जैबोरै, कैली कार्ब, कैली आयोड, कैली म्यूर, कैली फॉस, लैके, लेसिथि, लिथि क्लो, मर्क, मर्क डल, नैट्र म्यूर, नैट्र सैलि, पार्थ, पेट्रोलि, फॉस, पिलोका, प्लैटिना, प्लम्बम म्यूर, पल्से, सैल एसिड, सैंग्वि नाइ, सिलि, सल्फोना, सल्फर, वायोला ओडो।

भिनभिनाहट—ऐमो कार्ब, ऐनैका, एण्टिपाइरीन, बैराइटा म्यूर, बैराइटा कार्ब, कैंचैला, कॉस्टि, चेनापो, चिनि सल्फ, सिन्को, डिजि, डायोस्को, फेरम फॉस, फॉर्मि, ग्रैफा, आयोड, आइरिस, कैली फॉस, क्रियोजो, लैके।

पटपटाहट; चटचटाहट; चुरचुराहट, नाक साफ करते; चबाते, निगलते, छींकते समय—ऐम्ब्रा, बैराइटा कार्ब, बैराइटा म्यूर, कैल्के कार्ब, चेनॉपो ग्लासि, फार्मिका, जेल्से, ग्रैफा, कैली कार्ब, कैली म्यूर, लैके, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, पल्से, साइलि, थूजा।

फुफकार, सिसिकार—कैने इण्डि, चिनि सल्फ, डिजि, ग्रैफा, ट्यूक्रि।

भिनभिनाहट—ऐलुमि, ऐनाका, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सिन्को, फेरम फॉस, कैली फॉस, क्रियोजो, लाइको, पेट्रोलि, पल्से, सैंग्वि, सीपिया, टेरिबिं।

संगीत असह्य—ऐकोन, ऐम्ब्रा, ब्यूफो, वायोला ओडो।

टपकन, थरथराहट—कैल्के कार्ब, कॉस्टि, फेरम फॉस, ग्लोनो, हीपर, हाइड्रो ब्रोमाइड एसिड, लैके, मर्क, मॉर्फि, नाइट्रि एसिड, पल्से।

आवाजों, बोली का गूँजना—बैराइटा कार्ब, बैराइटा म्यूर, बेल, कॉस्टि, कोलो, लाइको, फॉस्फो, टेरेबिं।

घंटों की टनटनाहट—बेल, कैल्के फ्लो, कार्बन सल्फ, कॉस्टि, कैमो, चिनि सल्फ, सिन्को, फॉर्मिका, ग्रैफा, आइरिस, लैके, मेजे, नैट्र सैलि, पेट्रोलियम।

गरज—ऑरम, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, चिनि सल्फ, सिन्को, इलैप्स, फेरम फॉस, ग्रैफा, क्रियोजो, लाइको, मर्क डल्सि, मर्क, नैट्र म्यूर, नैट्र सैलि, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलियम, फॉस्फो एसिड, पल्से, सैलि एसिड, सैंग्वि, साइलि, स्ट्रिक्नी, वायोला ओडो।

गरज, सङ्गीत से कम हो—इग्नै।

झपटन की आवाजें—फेरम फॉस, जेल्से, पल्से ।

गाने की आवाजें –चिनि सल्फ, डिजि, ग्रैफा, लैके, पल्से ।

सनसनाहट—बैराइटा म्यूर, बेल, हीपर, रोडो, सल्फर ।

———

नाक

उपदंशीय रोग—एसाफि, ऑरम, ऑरम म्यूर, सिनाबे, फ्लोर एसिड, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क कार, साइलि ।

हड्डियाँ – सड़न—एसाफि, आरम, आरम म्यूर, कैडमि सल्फ, कैली बाइ, मर्क आयोड, रूब्र, मर्क फॉस । देखिये तन्तु (साधारण) ।

दर्द—एसाफि, आरम, सिनाबे, हीपर, कैली आयोड, लैके, मर्क, पल्से, साइलि ।

अस्थिवेष्ट प्रदाह—एसाफि, ऑरम, मर्क, फॉस । देखिये तन्तु ।

घाव होना—एसाफि, हेक्ला, हीपर, कैली बाइक्रो । देखिये तन्तु ।

बाहरी नाक-दाने, वृद्धि या अर्बुद इत्यादि मुँहासे—आर्स, आर्स ब्रो, ऐस्टेरि, बोरैक्स, कॉस्टि, क्लिमे, इलैप्स, कैली ब्रो, नैट्र कार्ब, साइलि, जिंजिबर ।

अकौता—कैल्सैम पीरू, आइरिस. सारसा ।

विसर्प रोग—बेल, कैन्थे, रस टॉ ।

कत्थई चकत्ते—फास, सल्फर ।

फुन्सियाँ—कैडमियम सल्फ, कुरारी, हीपर, साइलि ।

भैंसिया दाद—ऐकोन, लाइको, ऐलुमि, बेल, म्यूर एसि, नैट्र म्यूर, सीपि, सल्फर ।

घाव—आर्स, आरम म्यूर, कैली बाइक्रो, क्रियोजो, थूजा, एक्स-रे ।

मवादी दाने –हीपर, पेट्रोलि, सोरि, साइलि ।

पपड़ी – कॉस्टि ।

मस्से –कॉस्टि, थूजा । देखिये चर्म ।

प्रदाह—ऐकोन, ऐगैरि, एपिस, ऑरम, ऑरम म्यूर, बेल, बोरैक्स, कार्बो एनि, फेरम आयोड, फेरम पिक्रि, फ्लोरि ऐसि, ग्रैफा, हीपर, हिपोजे, कैली आयोड, मेडूसा, मर्क कार, नैफ्थे, नैट्र कार्बो, नाइट्रि ऐसि, साइलि, सल्फर ।

खुजलाना– ऐगैरि, सिना, फिलिक्स मास, इग्नै, आयोड, फॉस्फो ऐसि, पिनस, साइलि, ट्युक्रि, जिंक ।

सुन्न होना—नैट्र म्यूर ।

लाली—ऐगैरि, ऐलुमि, एपिस, आर्स, बेल, बोरैक्स, आयोड, कैली आयोड, नैट्र कार्ब, सोरि, रस टॉ, रस वेने, यूका, जिंक ।

छूने से दर्द हो—ऐलूमि, ऑरम मेट, ब्रायो, कैल्के कार्ब, सिनाबे, कोनियम, ग्रेफा, हीप, कैली बाइ, लैकनैन्थ, लिथि, मर्क, नाइट्रि ऐसि, रस टॉ, साइलि।

शिराओं का फूलना और सिकुड़ना—कार्बो वेज।

पीली लकीर इस तरफ से उस तरफ आरपार—सीपिया।

नासा-पक्ष (बगल के पर्दे)—जलन, गर्मी, कटन—आर्स, चेनॉपो, ग्लॉसि, सैंग्वि नाइट्रि, सेनेगा, सिनैपि, सल्फर।

सूखापन—क्लोरम, हेलेबो, सैंग्वि नाइ।

अकौता—एण्टि क्रू, बैल्सम पीरू, बैराइटा का, ग्रेफा, पेट्रोलि।

फटन, स्फोट; दरारें खुरण्ड, घाव—एलूमि, एण्टि क्रू, ऑरम, ऑरम म्यूर नैट्रो, बोविस्टा, कैल्के का, कॉस्टि, कॉण्डुरैंगो, कोरैलि, ग्रैफा, इग्नै, कैली बाइक्रो, कैली का, लाइको, मर्क, नाइट्रि ऐसि, पेट्रोलि, सल्फर, टेरेबि, थूजा।

पंखे की तरह हिलना—ऐण्टि टा, ब्रोमि, चेली, गैडस मोर, कैली ब्रो, लाइको, फॉस, पाइरोजेन, सल्फ ऐसि।

भैंसिया दाद—डल्का, नैट्र म्यूर, फाइजॉस्टि, साइलि।

खुजाना—कार्बोवेज, सिना, नैट्र फास, सैण्टो, साइलि, सल्फर।

लाल भीतरी कोना—ऐगैरि, मर्क सल्फ, प्लम्बम, ऐसिटिकम सल्फर।

छूने से दर्द—ऐलुमिना, ऐण्टि क्रू, आर्स, ऑरम, ऑरम म्यूर, कैल्के का, कोपेवा, कोरैलि, फैगोपा, ग्रैफा, हीपर, कैली बाइक्रो, मर्क को, नाइट्रि ऐसि, पेट्रोलि, सिक्विल, यूरैनि।

धुआँ लगा, मैल नथुने—हेलेबो।

थरथराहट—एकोन, ब्रोमि।

सिरा—नीलापन, कार्बो ऐनि, डिजि।

जलन—बेल, बोरैक्स, ऑक्जेलिक ऐसि, रस टॉ।

ठण्डा पीला नोकीला—एपिस, आर्स, कैल्के फॉस, कैम्फो, कार्बो वेज, सिन्को, हेलेबो, टैबै, वेरेट्र एल्बम। देखिये चेहरा।

रक्ताधिक्य—ऐमो का।

चर्मोद्भेद दाने, स्फोट—मुँहासे—ऐमो का, कॉस्टि, सीपिया।

दरार—ऐलुमि, ग्रैफा, पेट्रोलि।

फुन्सियाँ—ऐनैन्थि, बोरैक्स।

भैंसिया दाद—इथूजा, क्लिमै, कॉनवै, डल्का, नैट्र म्यूर।

गुठलीदार—ऑरम।

मवादी दाने—कैली ब्रो।

पपड़ी—कॉस्टि, नैट्र का ।

घाव—बोरैक्स, रस टॉ ।

अर्बुद—ऐनैन्थि, कार्बो ऐनि ।

मस्से—कॉस्टि ।

प्रदाह—बेल, बोरैक्स, सिस्टस, युफोर्बिया, निकोल, नाइट्रि ऐसि, रस टॉ सीपिया ।

खुजली—कार्बो ऐनि, कास्टि, सिना, मॉर्फी, पेट्रोलि, सैण्टोना, साइलि ।

लाली—बेल, बोरैक्स, कैल्के कार्ब, कैप्सि, कैली आयोड, कैली नाइट्रि, निकोल, नाइट्रि ऐसि, रस टॉ, सैलिक्स, साइलि, सल्फर, विन्का माइ ।

छूने से दर्द—बोरैक्स, हीपर, मेन्था, रस टॉ ।

चुनचुनाहट—बेल, मार्फिनम ।

सुन्न होना मानो धक्का लगा हो—वायोला ओडो ।

आन्तरिक नाक—नथुनों की विभाजक झिल्ली का फोड़ा—ऐकोन, बेल, कैल्के का, हीपर, साइलि ।

नकसीर फूटना, रक्तस्राव : साधारण औषधियाँ—ऐब्रोटे, ऐकोन, ऐगैरि, ऐम्ब्रोसिया, ऐमो का, आर्नि, आर्स, बेला, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के का, कार्बो वेज, सिन्को, क्रॉक, क्रोटे, कैक्टे, इलैप्स, फेर एसे, फेर फॉस, फेर पिक्रि, फिकस, हैमो, इपिका, कैली का, कैली क्लो, लैके, मैलि, मर्क, मिलिफो, म्यूरि ऐसि, नैट्र नाइट्रि, नैट्र सैलि, नाइट्रि ऐसि, नक्स वो, ओनिस्कस, ओस्मो, फॉस, पल्से, सिकेलि, सीपिया, सल्फर, थ्लैस्पी, वरसा, टिलिया, ट्रिलि, वाइपेरा ।

कारण छिनकने से—इगैरि, ऑरम म्यूर, बोविस्टा, कार्बो वेज, कॉस्टि, ग्रैफा, फॉस, सीपिया, सल्फर ।

खाँसी—आर्न ।

खाने से—ऐमो का ।

रक्तस्राव प्रवृत्ति—आर्स, क्रोटै, हैमा, इपिका, लैके, फास ।

मासिक-धर्म का लोप होना, असामयिक—ब्रायो, हैमा, लैके, नैट्र फॉस, पल्स, सीपिया ।

बवासीर का दब जाना—नक्स वॉ ।

हरकत; आवाज; प्रकाश—बेल ।

चीर फाड़—थ्लैस्प ।

बार-बार होना—आर्स, फेरम फॉस, मिलिफो, फॉस ।

झुकने से—रस टॉक्स ।

जोर करने से—कार्बो वेज।

लक्षण के रूप में ज्वर (प्रसूत ज्वर इत्यादि के साथ)—आर्नि, हैमे, इपिका, लैके, फॉस, रस टॉ।

आघात से—ऐसेटिक ऐसि, आर्नि, हैमा, मिलिफो।

नहाने-धोने से—ऐमो कार्ब, एन्टि सल्फ्यू ऑरे, आर्न, कैली कार्ब, मैग कार्ब।

आक्रमण और साथ की अवस्थायें—रात के समय सोते में—मर्क सल्फ, नक्स वा।

तेजी से बढ़ने वाले बच्चों में—ऐब्रो, आर्न, कैल्के कार्ब, क्रोक, फॉस।

प्रतिदिन हमले—कार्बो वेज।

सुबह के समय चेहरा धोने से—ऐमो कार्ब; आर्न; कैली कार्ब; ओनिस्कस।

सुबह के समय, जागने पर; बिस्तर छोड़ने से—ऐलो, ऐम्ब्रा, बोविस्टा; ब्रायो, सिन्को, लैक, नक्स वॉ।

वृद्ध लोगों में—ऐगैरि, कार्बो वेज।

चुचुका चर्म—कैम्फोरा।

पहले गर्मी और सिरदर्द—नक्स वॉ।

पित्ताशय के साथ—चेलिडो।

सीना रोग के साथ—हैमामे, नाइट्रि ऐसि।

जीर्ण चक्कर—सल्फर।

चेहरे में रक्ताधिक्य, लाल—बेल, मेलि, नक्स वॉ।

पीला चेहरा—कार्बो वेज, इपिका।

शिथिलता के साथ—कार्बो वेज, सिन्को, डिफ्थेरि।

सीना के लक्षण के कम होने के साथ—बोविस्टा।

सिर दर्द के कम होने के साथ—हैमामे, मेलि।

नाक की जड़ के कसाव, दाब के साथ—हैमे।

रक्त के प्रकार—काला, तारदार—क्रोक, क्रोटैलस, मर्क सल्फ।

चमकदार लाल—ऐकोन, बेल, ब्रायो, कार्बो वेज, एरेक्टा, फेरम फास, इपिका, मिलिफो, ट्रिलियम।

जमा हुआ थक्केदार—सिन्को, नैट्र क्लोरे, नक्स वॉ।

गहरे रंग का पतला—आर्न, हैमे, लैके, म्यूर ऐसि; सीकेलि।

बिना जमने वाला, मन्द गति, अधिक मात्रा में—ब्रायो, कार्बो वेज, क्रोटै, हैमे, फॉस्फो, थ्लैस्पि, ट्रिलि।

नाक छिनकना—लगातार—ऐमो कार्ब, बोरैक्स, हाइड्रै, लैक कैना, मैग म्यूर, स्टिक्टा, ट्राइटिकम ।

अँगुली दिया करे—ऑरम, सिना, हेलेबो, फॉस्फो ऐसि, सैण्टो, ट्युक्रि, जिंक मेट ।

जलन, छरछराहट—ऐकोन, एस्कूलस, ऐमो म्यूर, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, बैराइटा कार्ब, ब्रोमि, कैलि सेपा, कोपे, हीपर, हाइड्रै, कैओलिन, मर्क कार, मर्क सल्फ, पेन्थोर, सैबाड, सैंग्वि नाइट्रि, सिनापि ।

ठंडापन—इस्कूल, कैम्फो, सिस्टस, कारैलि, हाइड्रै, लिथि कार्ब, वेरेट्र एल्ब ।

रक्ताधिक्य तीव्र—बेल, क्युप्रम मेटा, मेलिलो ।

सूखापन—ऐकोन, एस्कूलस, ऐमो कार्ब, बेल, कैल्के कार्ब, कैम्फो, कोनि, कोपे, ग्लिसरीन, ग्रैफा, कैली बाई, कैली कार्ब, कैली आयोड, लेम्ना, लाइको, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, पेट्रोल, फास, रुमेक्स, सैम्बू, सेंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, सिनेसि, सीपिया, साइलि, सिनैपि, स्टिक्टा सल्फर । देखिये बन्द होना ।

स्फोट, वृद्धियाँ—फुन्सिया दाने—साइलि, ट्यूबर, विन्का ।

चर्म टीबी—आर्स, कैल्के कार्ब, साइक्लू, हाइड्रै, हाइड्रोकोटा, मर्क, रस टॉ, सल्फर, ट्युबर ।

गोल फूलन—आर्स ।

गोल आकार की फुन्सियाँ—कॉस्टि, नाइट्रि एसिड, थूजा ।

नासाबुंद—कैडमि सल्फ, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, कॉस्टि, सेपा, कोनियम, फॉर्मिका, कैली बाइक्रो, कैली नाइट्रि, लेम्ना मा, मर्क आयो रुबर, नाइट्रि एसिड, फॉस, सोरि, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, स्टैफि, ट्यूक्रि, थूजा, वाइयेथियो ।

खुरण्ड, पपड़ी गोले—ऐलूमि, ऐण्टि क्रू, ऑरम, बोरैक्स, कैडमि सल्फ, कैल्के फ्लो, कोपेवा, डल्का, इलेप्स, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, लेम्ना माइनर, लाइको, नैट्र आर्स, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, पल्सै, सैंग्वि नाइट्रि, सीपिया, साइलि, स्टिक्टा, सल्फर, ट्यूक्रि, थूजा ।

घाव, चर्म उधड़ना—ऐलूमि, आर्स, आर्स आयोड, फेरम, ऑरम, बोरैक्स, सेपा, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइ, कैली कार्ब, क्रियोजो, मर्क कार, मर्क, नाइट्रि एसिड, रैनन, स्केले, सिलि, थूजा, विन्का ।

कड़ापन—नाक की झिल्ली का विशेष कड़ापन (राइनोस्क्लेरोमा)—ऑरम म्यूर नैट्रो, कैल्के फ्लो, कोनियम ।

प्रदाह नाक की श्लैष्मिक झिल्ली का (राइनाइटिस): तीव्र—जुकामी; गुल्म—उत्तेजना से, फ्लू, गुलाबी जुकाम ग्रीष्म जुकाम—ऐग्रोसि, ऐरेलि, आर्स,

आर्स आयोड, ऑरम, ऐरण्डो, बेंजो ऐसि, सेपा, चिनि आर्स, कोकेन, क्युप्रम ऐसे, डल्का, युफोर्बि, पिलो, युफ्रैसिया, जेल्से, हीपर, इपिका, कैली आयोड, कैली सल्फ, क्रोमि, लैके, लिनम, यूसिटै, मर्क आयोड फ्ले, नैफ्थे, नैट्र आयोड, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पोलैन्टिन, सोरि, रैन बल्बो, रोसा डै, सैबैडि, सैंग्वि नाइट्रि, सिलि, सिनापि, स्कूकम चक, सोलिडै, स्टिक्टा, सुप्रैरन, एक्सट्रै, ट्रिफोलि, ट्यूबर।

दाह तीव्र जुकाम, सिर में मामूली सर्दी व जुकाम—एको, यस्कूल, ऐमो का; ऐमो म्यूर; आर्स, आर्स आयोड, ऐरल, ऐवेना, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैम्फो, सेपा, कैमो, डल्का, युपेटो पर्फ, युफ्रैसि, फेर फॉ, जेल्से, ग्लीसरीन, हीपर, हाइड्रै, हाइड्रोसि ऐसि, आयोड, जस्टी, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, लैके, मेन्थॉल, मर्क सल्फ, नैट्र आर्स, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस्फो, पल्से, स्क्विला, सैबैडि, सैम्बु, सैंग्वि नाइट्रि, सोलिडै, स्टिक्टा, टेरेबि, थेरिडि, ट्रांम्ब।

साथ की अवस्थायें-अंगों में टीस—ऐकोन, ब्रायो, युपैटो पर्फ, जेल्से।

कम्प (आरम्भिक अवस्था)—ऐकोन, बैप्टि, कैम्फो, कैप्सि, फेर फॉ, जेल्से, मर्क आयोड रूबर, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फाइटो, स्क्विला, सैपोनै।

जुकाम- होने की प्रवृत्ति—ऐग्रैफिस, एलूमि, आर्स, बैसि, बैराइटा का, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के फॉ, कैलेण्डु, डल्का, फेरम फॉ, जेल्से, हीपर, हाइड्रै, कैली का, मर्क, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फास्फो, सोरि; सीपिया, सोलिडै, सल्फर, ट्यूबर।

जुकाम—सूखी, कसी, सर्दी, शिशु जुकाम—ऐकोन, ऐब्रो, ऐमो का, ऐमो म्यूर, ऐरम, कैल्के का, कैम्फो, कास्टि, कैमो, सिस्टस, कोनियम, डल्का, इलेप्स, ग्लीसरीन, ग्रैफा, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली कार्ब, लैके, लाइको, मैन्थोल, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, ओस्मो, पैल्से, सैम्बू, सीपिया, साइलि, सिनैपि, स्टिक्टा, ट्यूक्रि। देखिये बन्द होना।

बहना और बन्द होना बारी-बारी—ऐमो कार्ब, आर्स, लैक कैना, लैके, मैग, म्यूर, नैट्र आर्स, नक्स वो, पल्से, स्विक्ला, सिनैपि, सोलेन नाइग्रम, स्पांजिया।

जुकाम बहनेवाला पानी-सा—यस्कूल, ऐग्रैफिस, एलैन्थस, एम्ब्रोसिया, ऐमो म्यूर, ऐमो फॉस, एरेलि, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, ब्रोमि, सेपा, साइक्लै, युकैले, युपेटो पर्फ, युफ्रैसिया, जेल्से, हाइड्रै, आयोड, इपिका, जस्टीसि, कैली क्लो, कैली आयोड, मर्क कार, मर्क सल्फ, नैरसिसस, नैट्र आर्स, नैट्र म्यूर, स्क्विला, सैबैडि, सैंग्वि नाइट्रि, सिला, सिलि, सोलेने निग्र, ट्रिफोलियम।

जुकाम, सामयिक—आर्स, सिन्कोना, नैट्र म्यूर, सैंग्वि।

जुकाम जीर्ण होने की प्रवृत्ति—ऐमो कार्ब, कैल्के का, कैल्के आयोड, कोनियम, ग्रैफा, हीपर, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, पल्से, सारसा, सिलि, सल्फर।

जुकाम, धड़कन के साथ, खासकर वृद्ध लोगों में—ऐनाका।

जुकाम; गाढ़ा श्लेष्मा के साथ—ऑरम, फेर आयोड, हीपर, कैली बाइक्रो, कैली सल्फ, मर्क सल्फ, पेन्थोर, पल्से, सैंग्वि नाइट्रि, सीपिया; स्टिक्टा।

जुकाम, शाम को अधिक हो—सेपा, ग्लीसरीन, पल्से।

जुकाम, नवजात शिशु में अधिक हो—डल्का।

जुकाम, गरम कमरे में अधिक, खुली हवा में कम—आर्स, सेपा, नक्स वॉ।

खाँसी—ऐलूमि, बेल, ब्रायो, सेपा, ड्रोसे, युफ्रैसि, जस्टिसिया, लाइको, नक्स वॉ, सैंग्वि, सिनैपि, स्टिक्टा।

ज्वर, मन्द, वृद्ध लोगों में—बैप्टी।

सिर दर्द—ऐकोन, आर्स, बेल, ब्रायो, सेपा, कैम्फो, सिन्को, युपैटो पर्फो, जेल्से, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, नैट्र आर्स, नक्स वॉ, सैबैडि, सैंग्वि।

आवाज फटना, स्वरभंग—आर्स, कास्टि, सेपा, हीपर, ओस्मि, फॉस, पोपुलस कैन, टेलुरि, वरबैस्क।

शिशु, जुकामी अवस्था, नाक बहना—ऐकोन, ऐमो कार्ब, बेल, कैमो, डल्का, इलैप्स, हीपर, मर्क आयोड फ्लो, नक्स वॉ, सैम्बू, स्टिक्टा, सल्फर।

अनिद्रा—आर्स, कैमो।

आँखों से पानी बहना, छींक आना—ऐकोन, ऐम्ब्रोसि, ऐमो फॉस, एरैलि, आर्स, आर्स आयोड, कैम्फो, सेपा, कैमो, साइक्लै, युपैटो पर्फो, युफ्रैसिया, जेल्से, इपिका, जस्टीसिया, कैली क्लो, कैली आयोड, मेन्थोल, मर्क सल्फ, नैफ्थै, नैट्र म्यूर, नक्स वो, स्क्विला, सैबैडि, सिला, सिनैपि, सोलिडै, स्टिक्टा। देखिये नेत्र जल-प्रवाह।

प्रकाशातंक—आर्स, बेल, सेपा, युफ्रैसिया।

शिथिलता, सुस्ती—आर्स, आर्स आयोड, बैप्टि, जेल्से, स्क्विला।

दम फूलना—ऐण्टि टा, ऐरैली, आर्स आयोड, बैडी, इपिका, नैफ्थै।

प्रदाह, तीव्र, छिछड़ेदार, रेशेदार—कॉस्टि, एपिस, आर्स, एचिनै, हीपर, कैली बाइ, लैकै, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि।

प्रदाह जीर्ण, क्षीणताजनित—ऐलूमिना, ऐमो कार्ब, ऑरम, कैल्के फ्लो, सिनाबे, इलैप्स, फ्लो ऐसि, ग्रैफा, हीपर, कैली बाइ, कैली आयोड, कैली सल्फ, लेम्ना माइ, लाइको, मर्क, सैक्रोमिकोल, सीपिया, स्टिक्टा, सल्फर, थ्यूक्रि, वायेथि।

प्रदाह, जीर्ण जुकाम—ऐलूमि, ऐमो ब्रो, ऐमो म्यूर, आर्स आयोड, ऑरम म्यूर। बैल्सम पीरू, ब्रोमि, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, क्यूबे, इलैप्स, यूकैले, हीपर, हिपोजी, हाइड्रै, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली आयोड, क्रियोजो, लेम्ना माइ, मेडोरि, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि ऐसि,

फॉस, सोरि, पल्से, सैवैडि, सैंग्वि नाइट्रि, सीपिया, साइलि, स्पाईजे, स्टिक्टा, ट्युक्रि, थेरि, थूजा।

प्रदाह, मवादी बच्चों में—ऐलूमि, आर्जे नाइट्रि, कैल्के कार्ब, साइक्लै, हीपर, आयोडम, कैली बाइक्रो, लाइको, नैट्र कार्ब, नाइट्रि ऐसि।

स्राव का प्रकार श्लैष्मिक झिल्ली के प्रदाह में—तीखा पानी-सा बहता रहे, गरम या पतला श्लेष्मा—ऐम्ब्रो, ऐमो कास्टि, ऐमो म्यूर, ऐरैलि, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, बेल, कार्बो वेज, सेपा, कैमो, युकैलि, जेल्से, ग्लीसरीन, आयोड, कैली आयोड, क्रिओजो, लैके, मर्क कार, मर्क, म्यूर ऐसि, नैफ्थे, नैट्र आर्स, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, सैवैडि, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, सिलि, सल्फर, ट्रिफोलि।

अण्डे की सफेदी की तरह, साफ रंग का श्लेष्मा—एस्कू, कैल्के कार्ब, कैम्फा, ग्रैफा, हाइड्रै, कैलि बाइक्रो, कैलि आयोड, कैली म्यूर, बेल, कैल्के, मेन्थाल, नैट्र म्यूर, फॉस्फो।

सरल, सादा श्लेष्मा—यूफ्रैसिया, ब्रुगलैं, सिने; कैली आयोड, पल्से, सीपिया।

खूनी श्लेष्मा—एलैंथ, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऑरम, एचिने, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, मर्क को, मर्क आयोड रूबर, पेन्थोर, फॉस, सैंग्वि नाइ, साइलि, थूजा।

हरा, पीला, घृणित (मवादी या श्लैष्मिक-मवादी)—ऐलूमि, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, ऑरम, बैल्सम पेरू, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कैल्के सल्फ, डल्का, युकेलि, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, कैली सल्फ, लाइको, मेडो, मर्क, नैट्र कार्ब, नैट्र सल्फ, नाइट्रि ऐसि, पेन्थोर, फॉस, पल्से, सैंग्वि नाइट्रि, सीपिया, सिलि, थेरिडि, थूजा, ट्यूबर।

झिल्ली बनना—ऐमो कॉस्टि, एचिनै, हीपर, कैली बाइक्रो। देखिए झिल्ली युक्त श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह।

दुर्गन्धित घृणित—आर्स आयोड, ऐसाफि, ऑरम, बैल्सम पीरू, कैल्के कार्ब, एचिनै, इलैप्स, युकैलि, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, मर्क सल्फ, नैट्र का, नाइट्रि ऐसि, सोरि, पल्से, सैंग्वि, सीपिया, सिलि, सल्फर, थेरेडि, ट्यूबर।

अधिक मात्रा में—ऐलेन्थ, ऐमो म्यूर, ऐरैलि, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, बैल्सम पीरू, कैल्के आयोड, सेपा, युफ्रेसिया, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, मर्क, नक्स वो, पल्से, सैंग्वि नाइट्रि, थूजा।

नमकीन स्वाद का—ऐरैलि, सीपिया, टेलूरि।

पपड़ी, खुरण्ड, गुठलियाँ—ऐलूमि, ऐन्टि क्रूड, ऑरम, ऑरम म्यूर, बोरैक्स, कैल्के फ्लो, कैल्के सिलि, कॉस्टि, इलैप्स, फैगोपा, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइक्रो,

कैओलिन, लेम्ना मा, लाइको, मर्क आयो फ्ले, नैट्र आर्स, नाइट्रि ऐसि, पेट्रोलि, सोरि, पल्से, सीपिया, सिलि, स्टिक्टा, सल्फर, ट्यूक्रि, थेरिडि, थूजा।

गाढ़ा—ऐलूमि, एमो ब्रो, कैल्के का, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, मर्क कार, मर्क सल्फ, नैट्र का, पेन्थो, पल्से, सीपिया, थेरिडि, थूजा।

एक तरफ का—कैल्के सल्फ, कैलेण्डु, फाइटो।

चमकीला, गाढ़ा, रस्सीदार, तारदार—बोविस्टा, गैलिकम, एसि, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, माइरटस, स्टिक्टा, सुम्बुल।

खुजलाना, नाक में—ऐग्नस, ऐमो का, आर्स आयोड, एरण्डो, ऑरम, ब्रोमि, सेपा, सिना, फैगोप, ग्लीसरीन, हाइड्रै, नैट्र म्यूर, रैननकू बल्बो, रोसा, डैमैस्कै, सैबैडि, सैंग्वि, सैन्टो, सीपिया, सिलि, ट्यूक्रि, वाइयेथिया।

स्नायविक कौतूहल—ऐगैरि।

सुन्न होना, चुनचुनाहट—एकोन, जुग्लैंस सिरि, नैट्रम्यूर, प्लैटिना, रैनन बल्बो, सैबैडि, सैंग्वि, साइलि, स्टिक्टा।

पीनस—गंध—ऐलूमि, आर्स, ब्रायो, एसाफि, ऑरम म्यूर, आरम मेट, कैडमि सल्फ, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कार्बो ऐसि, डिफ्थे, इलेप्स, फेर आयोड, ग्रैफाइ, हीपर, हिपोजी, हाइड्रै, हाइड्रै म्यूर, आयोड, कैली बाइक्रो, कैली का, कैली आयोड, कैली फॉस, क्रियोजो, लैके, लेम्ना मा, मर्क आयो फ्ले, मर्क प्रे रूब, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि, फॉस्फो ऐसि, फॉस्फो, सोरि, पल्से, सीपिया, सिलि, ट्यूक्रि, थेरिडि, थूजा, ऑस्टि।

उपदंशीय—एसाफि, ऑरम, ऑरम म्यूर, क्रोटे, फ्लोर ऐसि, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, नाइट्रि ऐसि, सिफिल।

दर्द—उठे हुए भागों में टीस, दाब से कम हो—ऐग्नस।

छेदन, कुतरन—एसाफि, ऑरम, ब्रोमि, कैली आयोड, मर्क आयोड रूबर।

जलन—एस्कूलस, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, क्रोमि एसि, कैली आयोड, लैके, मर्क को, सैंग्वि। देखिये जलन।

ऐंठन की तरह—प्लैटिना, सैबैडि।

नाक की जड़ पर दाब—ऐकोन, ऐलूमि, ऑरम, कैप्सि, सेपा, सिनैबै, जेल्से, हीपर, आयोड, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, मेनियैन्थ, नैट्र आर्स, नक्स वॉ, ओनिस्कस, पैरिस, प्लैटिना, पल्से, रैनै बल्बो, रूटा, सैंग्वि नाइट्रि, सीपिया, स्टिक्टा, थेरिडि।

अगले छिद्रों में दाब—जेल्से, इग्नै, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क, नक्स वॉ, सैंग्वि, स्टिक्टा।

कानों में तेज दर्द—मर्क कॉर।

खपच्ची की तरह गड़न—ऑरम, हीपर, कैली बाइक्रो, नाइट्रि ऐसि।

कानों तक डोरी जैसा दर्द—लेम्ना माइ ।

थरथराहट —बेल, हीपर, कैली आयोड ।

सिर के पिछले भाग से नाक की जड़ तक, तेज चुभन दर्द, स्राव के दब जाने से—कैली बाइक्रो ।

पिछले छिद्र (नासा-गलकोष विषयक) प्रदाह, तीव्र—एकोन, कैम्फो, सिस्टस, जेल्से, कैली बाइक्रो, मेन्थॉल, मर्क कार, नैट्र आर्स, वाइयेथिया । देखिये श्लैष्मिक झिल्ली प्रदाह, गलकोष प्रदाह ।

जीर्ण—ऑरम, कैल्के फ्लो, इलैप्स, फैगोप, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, मर्क को, पेन्थोर, सीपिया, स्पाइजे, स्टिक्टा, सल्फर, थूजा ।

जीर्ण, श्लैष्मिक स्राव के साथ, साधारण औषधियाँ—ऐलूमि, ऐमो ब्रो, एण्टि क्रू, आर्स आयोड, ऑरम, कैल्के, साइलि, कोरैलि, एचिनै, ग्लिसरीन, हाइड्रै, इरिडि, कैली बाइक्रो, कैली म्यूर, लेम्ना मा, मर्क आयोड, रूबर, नैट्र कार्ब, पेन्थोर, फाइटो, सैंग्वि नाइट्रि, सिनैपि नाइग्रा, स्पाइजे, स्टिक्टा, ट्युक्रि, थेरिडि, वायेथे ।

साफ, तीखा, पतला श्लेष्मा—आर्स आयोड ।

साफ, श्लेष्मा—सेपा, कैली म्यूर, नैट्र म्यूर, सोलेन, लाइको ।

ढोंकेदार—ओस्मि, ट्यूक्रि ।

गाढ़ा, चिमड़ा, पीला या सफेद श्लेष्मा—ऐलूमि, ऐमो ब्रो, ऐण्टिम क्रू, कैल्के सिलि, कोरैलि, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, लेम्ना माइ, मेन्थोल, मर्क आयोड फ्ले, नैट्र कार्ब, सैंग्वि नाइट्रि, सीपिया, स्पाइजे ।

अर्बुद, गुल्म—फ्रांमि एसिड, ओस्मि ।

सर, कच्चापन—पेन्थोर ।

गंध का संवेदन—कम होना—ऐलुमिना, साइक्लै, हैलेबो, हीपर, कैली कार्ब, मेन्थोल, मेजे, रोडो, साइलि, टैबेकम ।

अति उत्तेजनीय, संवेदनीय—ऐकोन, ऐगैरि, ऑरम, बेल, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, काफिया, कॉल्चि, ग्रैफा, इग्नै, लाइको, मैग म्यूर, नक्स वो, फास, सैंग्वि, सैबेडि, सीपिया, सल्फर ।

फूलों की गंध से अति संवेदनीय—ग्रैफाइ ।

भोजन की गंध से अति संवेदनीय—आर्स, कोल्चि, सीपिया ।

तम्बाकू की गंध से अति संवेदनीय—बेला ।

गन्ध के संवेदन का लोप होना (Anosmia) या विषयग्रस्त होना—ऐलुमिना, ऐमो म्यूर, एमाइग्डैलस, परसिका, ऐनाका, ऐपोसाइ, ऐण्ड्रो, लेम्ना माइ,

ऑरम, बेला, कैल्के का, हीपर, इग्ने, आयोड, जस्टिसि, कैली बाइक्रो, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, पल्से, सैंग्वि, सीपिया, साइलि, सल्फर, ट्युक्रि, जिंक म्यूर।

गन्धभ्रम (Parosmia)—ऐग्नस, ऐनाका, ऐपोसा, ऐण्ड्रो, आर्स, ऑरम, बेल, कैल्के कार्ब, कोरैलि, डायोस्को, ग्रैफा, इग्नै, कैली बाइक्रो, मैग म्यूर, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, फॉस, पल्से, सैंग्वि, सल्फर।

उत्तेजना—नाक की हवा से, छूने से—ऐस्कू, ऐलूमि, ऐण्टि क्रू, ऐरैलि, आर्स, ऐरम, ऑरम म्यूर, बेल, कैल्के का, केम्फो, हीपर, कैली बाइ, केओलिन, मर्क, नैट्र म्यूर, ओस्मि, साइलि।

छेद (Sinuses)—कोटर ललाट विवर, जतृक विवर साधारण बाधायें—आर्स, एसाफि, ऑरम मे, बेल, कैल्के का, कैम्फो, युकैलि, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, कैली म्यूर, लाइको, मर्क, आयोड, फ्ले, मर्क, मेजे, फॉस्फो ऐसि, फास, साइलि, स्पाइजे, स्टिक्टा, ट्युक्रि।

ललाट विवर का जुकाम—ऐमोनियेकम, इग्नै, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, लाइको, मेन्थोल, मर्क आयोड, फ्ले, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, सैबैडि, स्टिक्टा, थूजा।

कोटर (Antrum) में दर्द और फूलन—फॉस्फो, स्पाइजे।

उपदंशीय बाधायें—ऑरम, कैली आयोड, नाइट्रि ऐसि।

छींकना (Sternutation)—ऐकोन, ऐम्ब्रो, ऐमो म्यूर, ऐरैलि, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, ऐरण्डो, कैल्के का, कैम्फो, सेपा, साइक्लै; युपैटो पर्फ, युफ्रैसिया, युफोर्बिया, जेल्से, इक्थि, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली आयोड, लोबेलिया सेरु, मेन्थोल, मर्क, नैप्थे, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, रोसा, डै, रस टॉ, सैबैडि; सिक्किनि एसि, सैंग्वि नाइ, सिला, सेनेसि, सेनेगा, सिनैपि, स्टिक्टा।

छींक आना जीर्ण प्रवृत्ति—सिला।

छींकने की असफल इच्छा—आर्स, कार्बो वेज, साइलि।

छींकना गरम कमरे से, बिस्तर से उठने से, झाड़ू को हाथ से छूने से अधिक हो—सेपा।

छींकना ठंडी हवा में अधिक हो—आर्स, हीपर, सैबैडि।

छींकना, शाम को अधिक हो—ग्लीसरीन।

छींकना सुबह को अधिक हो—कैम्फोरा, कॉस्टि, नक्स वॉ, साइलि।

छींकना, हाथों को ठंडे पानी में डुबाने से अधिक हो—लैक डि, फॉस।

बन्द होना, भरापन, कसापन—ऐकोन, ऐम्ब्रोसि, ऐमो कार्ब, ऐमो म्यूर, ऐनैका, ऐपोसा, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, ऑरम, ऑरम म्यूर, नैट्रो, कैल्के कार्ब,

कैम्फो, कॉस्टि, कैको, कोनियम, कोपेवा, इलेप्स, युकैलि, फ्लो ऐसि, फोर्मिका, ग्लीसरीन, ग्रैफो, हेलियैन्थै, हीपर, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली आयोड, लेम्ना मा, लाइको, मेन्थोल, नैट्र आर्स, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, पैरिस, पेन्थोर, पेट्रोलि, पल्से, रेडियम, सैबैडि, सैम्ब, सैंग्वि नाइट्रि, सेपोन, सीपिया, साइलि, सिनैपि, स्पांजिया, स्टिकटा।

बन्द होना, एक के बाद दूसरा नथुना, बारी-बारी—ऐकोना, ऐमो कार्ब, बोरैक्स, लैक कैना, मैग म्यूर, नक्स वॉ।

फूलना—ऐण्टि पाइरिन, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, ऑरम सल्फ, बैराइटा कार्ब, वेल, कैल्के कार्ब, हीपर, कैली बाइ, लेम्ना मा, मर्क को, मर्क आयोड रूबर, नाइट्रि एसिड, सैबैडि, सैंग्वि, सीपिया—देखिये प्रदाह।

नथुनों के बीचवाली झिल्ली का घाव—ऐलूम, ऑरम, ब्रोमि, कैल्के कार्ब, कार्बो एसिड, फ्लो ऐसि, हिपोजी, हाइड्रै, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क कार, नाइट्रि ऐसि, साइलि, विन्का।

उपदंश रोग के घाव—ऑरम, ऑरम म्यूर, कोरैलि, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, मर्क कार, नाइट्रि ऐसि।

तर संवेदन जो छिनकने से कम न हो—पेन्थोरम।

चेहरा

आकृति, अवस्था-रक्तहीन सफेद संगमर्मर की तरह मोमी—एसेटिक ऐसि, एपिस, आर्स, कैल्के का, फेर मे, लैके, मर्क कार, नैट्र कार्ब, सीपिया, साइलि।

फूला, थुलथुला—इथूजा, एमो बेंज, एपिस, आर्स, बोरैसिक ऐसि, बॉथ्रोप्स, कैल्के कार्ब, फेर मे, कैली कार्ब, हेलोबो, हायोसि, लैके, मेडूसा, मर्क कार, ओपियम, फॉस, टैक्सस, जेरोफाइल।

निचली पलकों के पास फूला हुआ हो—एपिस, जेरोफाइल।

आँखों के आस-पास फूला हो—ऐमो बेंजो, आर्स, बोरै ऐसिड, इलैप्स, मर्क का, नैट्र कार्ब, फॉस, रस टॉ, थ्लैस्पि, जेरोफा।

ऊपर पलकों के आस-पास फूला हो—कैली कार्ब।

नीला, सुर्ख (नील रोग)—ऐबसिन्थि, ऐमो कार्ब, ऐण्टि टॉ, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऑरम, कैम्फो, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, क्लोरम, साइक्यू, सीना, सिनैबे, क्रोटै, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम मेट, डिजि, फेर, हाइड्रोसि एसिड, इपिका, लैके, लॉरोसिरैसस, मॉर्फिया, इनैन्थी, ओपियम, फेनास, रस टॉ, सैम्बू, सिकेल, स्ट्रिक, टैबे, वेरेट्र ऐल्ब। देखिये रक्त संचार।

चारों तरफ नीले घेरे तथा चक्र, मन्द आँखें—एब्रोटे, ऐसेटिक एसिड, आर्स, बर्बे वलगै, बिस्म, कैल्के कार्ब, कैम्फो, सिना, सिन्को, साइक्लै, इपिका, स्टैन, स्टैफि, टैबे, वेरेट्र एल्ब, जिंक मेट।

भरभराना, सुर्ख—ऐम्ब्रा, एमिल, कार्बो ऐनि, काल्स, कोका, फेरम, स्ट्रैमो, सल्फर।

काँसे के रोग का होना—ऐण्टि क्रू, नाइट्रि एसिड, सिकेल, स्पाइजे।

कत्थई धब्बे—कॉलो, सीपिया।

ताँबे के रंग का दिखाई पड़ना—ऐलूमि, नाइट्रि एसिड।

टेढ़ा-मेढ़ा—ऐबसिन्थि, आर्ट वल, बेल, कैम्फो, साइक्यू, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम मेट, क्रोटै, हेलेबो, हायोसि, नक्स वॉ, ओपियम, सिकेल, स्ट्रैमो।

मटीला, मैला, रक्तहीन, रोगग्रस्त—ऐसेटि एसिट, आर्स, बर्बे वल, कैल्के फॉस, कैम्फो, कार्बो वेज, कॉस्टि, चेलिडो, सिन्को, फेरम, ग्लीसरीन, हाइड्रै, आयोड, लाइको, मर्क कार, मर्क, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस्फो एसिड, फॉस, पिकरिक एसिड, प्लम्ब मेट, सोरि, सैनिकू, सिकेल, सीपिया, स्पाईजे, स्टैफि, सल्फर।

उत्सुक कष्टपूर्ण, पीड़ित दिखाई देना—ऐकोन, इथू, आर्स, बोरैक्स, कैम्फो, कैन्थे, सिना, सिन्को, आयोड, क्रियोजो, मर्क कार, प्लम्ब, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, टैबे, वेरेट्र एल्ब।

औंघाई जैसा, मन्द बुद्धि दिखाई देना—ऐलैन्थस, एपिस, बैप्टी, कैने इण्डि, जेल्सै, हैल्लिबो, ओपियम, रस टॉ।

भावहीन, चेहरा लगाया हो—मैंगे ऐसेटि।

चिकना, चमकीला, तेल लगा जैसा—नैट्र म्यूर, प्लम्ब, सोरि, सैनिकु, सेलेनि, थूजा।

नशीला, (रोगी, उतरा हुआ मुर्दे जैसा)—ऐकोन, इथूजा, ऐण्टि टा, आर्नि, आर्स, बर्बे वलगै, कैम्फो, कार्बो वेज, सिन्को, साइप्रिपी, हेलिबो, लैके, मर्क साइ, प्लम्ब मे, पाइरो, सिकेलि, टैबे, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक मेट।

कामला रोगग्रस्त, पीला—आर्स, बर्बे वल्गै, ब्लैटा एमे, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, चेलिडो, चिओनैन्थ, सिन्को, क्रोटै, डिजी, हीपर, हाइड्रै, आयोड, कैली कार्ब, लैके, लाइको, मर्क डलसिस, माइर्ट, नैट्र म्यूर, नैट्र मॉ, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओलियम जैको ऐसे, पेट्रोलि, पिक्रि ऐसि, प्लम्ब मेट, पोडो, सीपिया, टैरैक्स, युका। देखिये कामला रोग।

पीला (हल्का)—ऐब्रो, ऐसे ऐसि, ऐण्टि टा, एपिस, आर्जे नाइ, आर्स, बेल, बर्बे वल्गै, बोरैक्स, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैम्फो, कार्बो वेज, सिना, सिन्को, क्युप्रम

मेट, साइक्लै, डिजि, फेरम ऐसे, फेरम मेट, फेरम म्यूर, फेरम आयोड, ग्लोनो, हेल्लिबो, इपिका, कैली कार, लैके, लेसिथि, मेडो, मर्क कार, मर्क डलसिस, मॉर्फि, नैट्र कार, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, फॉस्फो ऐसि, फॉस्फो, प्लम्ब मेट, पल्स, पाइरो, सैण्टो, सिकेलि, सीपिया, साइलि, स्पाइजे, स्टैन, स्टैफि, टैबे, वेरैट्र एल्ब, जिंक मेट।

चर्म पत्र की तरह—आर्स।

लाल, मगर उठने से मुर्दे जैसा पीला हो जाये—ऐकोन, वेरेट्र ऐल्ब।

लाल, गहरे रङ्ग का, धुंधला बुद्धिहीन फूला—ऐले, एपिस, आर्स मे, वैप्टि, बोथ्रोप्स, ब्रायो, कार्बो ऐसि, डिफथे, जेल्से, हायोसि, लैके, मोर्फि, नक्स वॉ, ओपि, रस टॉ, स्ट्रैमो।

लाल, टेढ़ा-मेढ़ा—बेल, साइकू, क्युप्र एसेटि, क्युप्र मेट, क्रोटै, हायोसि, ओपियम, स्ट्रैमो।

लाल, सुर्ख, खाने के बाद—ऐलूमि, कार्बो ऐनि, काल्र्स, कोरैलि, स्ट्रांसिया।

लाल, सुर्ख, भरभराया, आवेग, पीड़ा, परिश्रम के कारण—ऐकोन, फेरम मेट, इग्नै, मेलिलो।

लाल, भरभराया, गरम, सुर्ख—ऐसेटिक ऐसि, ऐकोन, ऐगैरि, ऐमिल, ऐन्टेरि, बैप्टि, बेल, कैन्थे, कैप्सि, फेरम फॉ, जेल्से, ग्लोनो, ग्लिसरीन, क्रियोजो, मेलिलो, माइगे, ओपियम, क्वेर्कस, रैमनस, कैलिफो, सैंग्वि, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्र वि।

लाल, अर्धभाग—ऐकोन, कैमो, सिना, ड्रोसे, इपिका, नक्स वॉ।

लाल, मगर ठण्डा एसाफि, कैप्सि।

उत्तेजित, स्नायु शूल के बाद—कोडिनम।

पसीनेदार—ऐसेटिक ऐसि, ऐमिल, एण्टि टा, आर्स, कैमो, ग्लोनो, सैम्बू, साइलि, टैबे, वेरेट्र ऐल्ब, वायोला ट्रि।

पसीनेदार ठण्डा—ऐण्टि टा, आर्स, कैम्फो, कार्बो वेज, सिना, युफोर्बिया, लोबेलिया इन्फ्ला, टैबे, वेरेट्रम ऐल्बम, जिंक म्यूर।

पसीना, छोटी जगहों में खाते समय - इग्नै।

पसीना माथे पर—कैमो, युफोर्बिया, ओपि, वेरेट्र ऐल्ब।

फूलन—ऐकोना, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि पाइरिन, एपिस, आर्स, आर्स मेट, बेल, सेपा, कोल्चि, हेल्लिबो, लैके, मर्क को, ऐनैन्थे, ओपि, फॉस, रस टॉ, रस वे, वेरेट्र ऐल्ब, वेस्पा, वाइपेरा।

फूलना दाँत दर्द से—बेल, कैमो, कॉफि, मैग कार्ब, मर्क।

सिकुड़ा वृद्ध जैसा—ऐब्रो, आर्जे नाइ, बैराइटा कार्ब, बोरै, कैल्के फॉस, कोनि, फ्लो ऐसि, आयोड, क्रियोजो, लाइको, नैट्र म्यूर, ओपि, सोरि, प्युलेक्स, सैनि, सारसा, सिके, साइलि, सल्फर।

हड्डियाँ (चेहरे की) सड़न—ऑरम मे, सिस्टस, फ्लो ऐसि, हेक्ला ।

अस्थि गुल्म, गुठलियाँ—फ्लोरि ऐसि, हेक्ला ।

प्रदाह—ऑरम मेट ।

दर्द—ऐलूमि, आर्जे नाइ, ऐस्ट्रे गै, ऑरम, कार्बो एनि, कॉस्टि, डल्का, हीपर, मर्क, नाइट्रि स्पिरि डल्सिस, फॉस्फो, साइलि, जिंक ।

उत्तेजनीय—ऑरम, हीपर, कैली बाइक्रो, मेजे । देखिये जबड़े ।

गाल—काट ले, चबाते, बात करते समय—कॉस्टि, इग्नै, ओलि ऐनि ।

जलन होना—ऐगैरि, युफोर्बिया, फेर फॉस; नाइट्रि स्पि डल्सि, फास्फो ऐसि, कॉस्टि, सल्फर । देखिये संवेदन ।

दाने निकलना—ऐण्टि क्रू, डल्का, ग्रैफा, लीडम, मेजे । देखिये चेहरे पर फरन, दाने निकलना ।

गोल—ऐण्टिपाइरीन ।

दर्द—ऐगैरि, ऐंगस्टू, वेरेट्र ऐल्ब । देखिये चेहरे का स्नायुशूल ।

लाली—ब्रोमि, कैप्सि, साइक्ल्यू, कॉफि, कोल्चि, युफोर्बि, युफ्रै सि, मेलिलो । देखिये लाल चेहरा ।

लाली एक ही तरफ—एकोन, कैमो, सिना, ड्रोसेरा, इपिका, नक्स वॉ ।

चकत्ते, घेरेदार लाल, जलन वाले—बेंजो ऐसि, ब्रायो, सिना, फेर म्यूर, लैकनैन्थ, फॉस, सैम्बु, सैंग्वि, स्ट्रैमो, सल्फर ।

फूलना—ऐकोन, बेल, बोविस्टा, कैल्के फ्लो, युफोर्बिया, कैली म्यूर, प्लैटिना । देखिये चेहरे की फूलन ।

चुनचुनाहट, सुन्न होना—ऐकोन, प्लैटि ।

घाव, मस्सों की तरह दानेदार—आर्स ।

गर्भाशय रोग से अर्द्धचन्द्राकार पीला निशान—सीपिया ।

ठुड्डी—फरन, दाने निकलना—ऐण्टि क्रू, ऐस्टेरि, साइक्ल्यू, डल्का, ग्रैफा, हीपर, नैट्र म्यूर, फॉस्फो ऐसि, रस टॉ, सीपिया, साइलि, सल्फ, आयोड, जिंक ।

चेहरे पर दाने निकलना, चर्म रोग होना—मुँहासे गुलाबी रङ्ग के—आर्स ब्रो, कार्बो ऐनि, क्राइसैनि, युजीनि, जैम्बो, क्रियोजो, ओफोरिनम, सोरि, सल्फर, सल्फ्यूरस ऐसि ।

मुँहासे मामूली, सादे—ऐम्ब्रा, ऐण्टि क्रू, बेल, बर्बे ऐक्वी, कैल्के फॉस, कैल्के सल्फ, कार्बो वेज, सिमिसि, क्लिमै, कोनियम, क्रोटि टि, युजो जैम्बो, ग्रैफा, इण्डि,

जुग्लै रेजि, कैली आर्स, कैली ब्रो, कैली कार्ब, लीडम, मेडो, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस ऐसि, सल्फर, थूजा ।

रक्त रसौली ऐब्रोटे ।

चकत्ते—बर्ब ऐक्वि, कैली कार्ब, नक्स वॉ ।

कर्कट, खुला हुआ, खून बहना—सिस्टस ।

बेवाई फटना—ऐगैरि ।

काले तिल जैसे स्फोट—एब्रो, युजी जैम्बो, जुग्लै रेजि, नाइट्रि ऐसि, सल्फर ।

खुरंड रोग—कैल्के कार्ब, हीपर, मर्क प्रे रूबर, रस टॉ, साइलि, वायोला ट्रि । देखिये सिर की खाल ।

अकौता (एक्जिमा)—ऐनैका, क्रू आर्स, कैल्के कार्ब, कार्बो ऐसि, क्रोटन टि, डल्का, ग्रैफा, हीपर, मर्क प्रे रूबर, मेजे, नैट्र म्यूर, सीपिया, साइलि, सल्फर, सल्फ आयोड, विन्का, वायोला ट्रि ।

अन्तस्त्वक प्रदाह (Epithelioma)—आर्स आयोड, कैली सल्फ, लोबे, एरिनस ।

विसर्प रोग (Erysipelas)—ऐनैका, ओक्सि, ऐनैन्थे, एपिस, बेल, बौरैक्स, कैन्थे, कार्बो इनि, युफोर्बि, फेरम म्यूर, ग्रैफा, गिम्नो क्लै, हीपर; रस टॉ, सीपिया, सोलैन कैरो, वेरेट्र वि ।

अर्यनिका (Erythema)—आर्स आयोस, बेल, काण्डूरै, एचिनै, युफोर्बिया, ग्रैफा, नक्स वॉ ।

फोड़े घेरेदार (Furacles)—ऐलूमि, एण्टि क्रू, कैल्के फॉस, हीपर, लीडम, मेडोरि ।

भैंसिया दाद (Herpes tetter)—एनाका ओक्सि, कैन्थे, क्लिमै, डल्का, युफोर्बिया, लिमूलस, लाइको, नैट्र म्यूर, रस टॉ, सीपिया ।

तर, नम—एण्टि क्रू, साइक्यू, डल्का, ग्रैफा, हीपर, मेजे, सोरि, रस टॉ, वायोला ट्रिकलर ।

माथे पर खुजली वाले दाने, मासिक धर्म के समय—युजी जैम्बो, सोरि, सैंग्वि, सारसा ।

दाग (Lentigo Freckles)—एमो कार्ब, आइरिस वर्स, ग्रैफा, लाइको, म्यूर एसिड, नैट्र कार्ब, नाइट्रि एसिड, फॉस्फो, सीपिया, सल्फर, टैबे, थूजा ।

चर्म टीबी (Lupus)—सिस्टस ।

मवादी दाने, फुन्सियाँ—एण्टि कार्ब, बेल, कैल्के कार्ब, कैल्के सल्फ, साइक्यूटा, ग्रैफा, हीपर, इण्डियम, मर्क, सोरि ।

खुरदरा, अकड़ा—बर्बे एक्वि, कैली कार्ब, पेट्रोलि, सल्फर ।

पपड़ी, खुरंड, भूसी छूटना—आर्स, साइक्यूटा, सिस्टम, डल्का, ग्रेफा, हीपर, मेजे, रस टॉ।

छिल्के छूटना—आर्स, युफोर्बिया।

चकत्ते, ताँबे के रंगवाले—बेंजो ऐसि, कार्बो ऐनि, लाइको, नाइट्रि ऐसि।

चकत्ते लाल—बर्बे ऐक्वि, युफोर्बिया, कैली बाइ, कैली कार्ब, एनैन्थे, पेट्रोलि।

चकत्ते पीले—नैट्र कार्ब, सीपिया।

उपदशीय चर्मरोग—लाल, नीले घेरेदार चकत्ते, महीन छोटी फुन्सियाँ—कैली आयोड।

ताँबे के रंग के चकत्ते—कार्बो ऐनि, लाइको, नाइट्रि ऐसि।

पपड़ी चकत्ते—नाइट्रि ऐसि।

मवादी दाने फुन्सियाँ—कैली आयोड, नाइट्रि ऐसि।

गुठलियाँ अर्बुद—ऐलूमि, कार्बो ऐनि, फ्लोर एसिड।

घाव, तीक्ष्ण स्राव वाले—कोनियम।

मस्से, मासांकुर—कैल्के सल्फ, कैस्टोरिया, कॉस्टि, कैली कार्ब।

दाढ़ी पर दाने—हीपर।

दाढ़ी का बाल झड़ना—ग्रेफा, सेलेनि,। देखिये सिर की खाल।

दाढ़ी की खाज—कैल्के कार्ब। देखिये चर्म।

माथा—सिकुड़ा, चुचुका, झुर्रीदार जान पड़े—बैप्टी, बेलिस, ग्रेटि, हेलेबो, लाइको, फॉस, प्रिमूला।

भवों के बीच के स्थान का फूलना—साइलि।

जबड़े—चबाते समय चुरचुराना—एमो कार्ब, ग्रेनेट, लैक कैना, नाइट्रि ऐसि, रस टॉ।

जल्दी जगह से हट जाये—इग्नै, पेट्रोलि, रस टॉ, स्टैफि।

अर्बुद, फुलन स्फोट—एम्फिस, कैल्के फ्लो, हेक्ला, प्लम्ब, थूजा।

दर्द—एकोन, एगैरि, एलूमि, एमो म्यूर, एमो पिक्र, ऐम्फिस, ऐंगस्टू एरम, ऐस्ट्रैगै, ऑरम मेट, बैप्टि, कॉन, कैल्के कॉस्टि, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, मर्क, फॉस्फो, रस टॉ, सैंग्वि, स्फिगर, स्पाइजे, जैन्थ।

कड़ापन, स्तम्भन, जकड़न—एबिसेंथि, ऐकोन, आर्न, बेल, कार्बन, ओक्सि, कॉस्टि, कैमो, साइक्यूटा, क्युप्रम ऐसि, क्युप्रम मे, कुरारी, डल्का, हाइड्रोसि ऐसि, हाइपेरि, इग्नै, मर्क कार, मार्फि, नेरियम, निकोटि, नक्स वॉ, इनैथी, फाइजास्टि, सोलेन नाइग्रम, स्ट्रैमो, स्ट्रिक, वेरेट्र एल्ब।

कम्प—एलूमि, एण्टि टा, कैडमि सल्फ, जेल्से।

निचला जबड़ा—सड़ना, हड्डी का गलना—एम्फिस, ऐंगस्टू।

चबाने जैसी हिलने की क्रिया—एकोन, बेल, ब्रालि, हेलेबो, स्ट्रैमो।

मसूड़ों का छोटा अर्बुद (Epulis)—प्लम्बम एसेटि, थूजा।

नीचे की तरफ लटक जाना, ढीला पड़ना—आर्स, आर्न, जेल्से, हेलेबो, हायोसि, लैक, लाइको, म्यूरि एसिड, ओपियम।

गुठलियाँ दर्दीली—ग्रैफा।

दर्द—कॉस्ट, चिनि सल्फ, सिन्को, सिस्टस, स्पाइजे, जैन्थ। देखिये जबड़ा।

फूलना—एम्फिस, ऑरम म्यूर नैट्रो, मर्क, फॉस्फो, साइलि, सिम्फाइ।

ऊपरी जबड़ा—ऊर्ध्व हनु-कोटर (Antrum of Highmore) के रोग—आर्न, बेल, चेलिडो, कोमोक्लैडिया, युफोर्बियो, एमिग्डैल, हीपर, कैली आयोड, कैली सल्फ, मैग का, मर्क कार, पेरिस, फॉस्फो, साइलि, टिलिया।

दर्द—ऐस्ट्रैगै, कैल्के फॉस, युफोर्बिया, फ्लोर ऐसि, मर्क आयोड रूबर, फॉस्फो, पॉलिगोन, स्पाइजे।

अर्बुद—हेक्ला।

पेशियाँ—(चेहरे को) टेढ़ा होना—(Risus Sardonicus)—साइक्यूटा, क्युप्रम एसेटि, हाइड्रोसि एसिड, ओपियम, सिकेलि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नी, टेलूरि।

दर्द—एनैका, ऐंगस्टू, कॉकु, कोल्चि, ऑक्सि ट्रो, सैबाइ। देखिये मुखमण्डल का पक्षाघात।

पक्षाघात—(Bell's palsy)—एकोन, एलूमि, ऐमो फॉस्फ, बेल, कैडमि सल्फ, कॉस्टि, कॉकुल, कुरारी, डल्का, फोर्मिका, जेल्से, ग्रैफा, हाइपेरि, कैली फ्लोरि, कैली आयोड, मर्क कम कैली, फाइसैलिस, रस टॉ, रूटा, सेनेगा, जिंक पिक्रि।

बाईं तरफ का—कैडमि सल्फ, सेनेगा।

दाहिनी तरफ का—बेल, कॉस्टि।

कड़ापन, तनाव—एब्सिंथि, एकोन, एगैरि, बैप्टि, कॉस्टि, जेल्से, हेलोड, नक्स वॉ, रस टॉ। देखिये अकड़न (Trismus)।

फड़कन, आक्षेपिक—ऐगैरि, आर्जे नाइ, बेल, कॉस्टि, कैमो, साइक्यूटा, सिना, जेल्से, हायोसि, इग्नै, लेबर्न, लॉरो, मेनियैन्थ, माइगे, नक्स वॉ, इनैन्थी, ओपियम, सिकेलि, स्ट्रैमो, टेलूरि, विस्क एल्ब।

मुखमण्डल का पक्षाघात—दर्द (चेहरे का दर्द)—

प्रकार—प्रादाहिक सूजन, रक्ताधिक्य, स्नायुशूल—ऐकोन, ऐगैरि, आरानिया, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, कैक्ट, कैप्सि, कॉस्टि, सेड्रन, सेपा, कैमो, चिनि आर्स; चिनि सल्फ, सिमिसि, सिन्को, कोफिया, कॉल्चि, फेरम, जेल्से, हेक्ला, कैली आयोड,

कैली फॉस, कैल्मि, मैग फॉ, मेन्थोल, मर्क कार, मर्क सल्फ, मेजे, नाइट्रि स्पि डल्सि, फॉस्फो, प्लैटे, प्लैटिना, पल्से, रेडियम, राडि, रस टॉ, सैंग्वि, साइलि, स्पाइजे, स्टैन, सल्फर, थूजा, टिलिया, वरबेक्स, जिंक फॉ, जिंक वै ।

परावर्तित पीड़ा, दाँत सड़े होने के कारण—कॉफिया टोस्टा, हेक्ला, मर्क सल्फ, मेजे, स्टैफि ।

वात रोग सम्बन्धी—ऐकोन, ऐक्टि स्पाइ, कॉस्टि, कैमो, कॉल्चि, कोलो, डल्का, पल्से, रोडो, रस टॉ ।

उपदंशीय—(पारा के दुरुपयोग के कारण)—कैली आयोड, मेजे, नाइट्रि एसिड ।

शरीर-विष के कारण—(मेलेरिया सम्बन्धी, कुनैन सेवन करने के बाद)—आर्स, सिन्को, इपिका, नैट्र म्यूर ।

स्थान भेद—आँखें—आर्स, सिमिसि, क्लिमै, नक्स वॉ, पैरिस, स्पाइजे, थूजा । देखिये आँखें ।

जबड़े नीचे के—एम्पिस, कैल्के कार्ब, लैके, नाइट्रि स्पि डल्सि, प्लैटि, रेडियम, रोडो, जैंथ, जिंक वैले ।

जबड़े ऊपरी—ऐम्फिस, बिस्म, कैल्के कास्टि, कैमो, कोलो, डल्का, युफोर्बि ऐमि, ग्रैफा, आइरिस, कैलसिन्थि, कैली आयोड, कैल्मिया, क्रियोजो, मेजे, पैरिस, सैंग्वि, थूजा, वरबैस्क ।

जबड़ा-ऊपरी (चक्षुगह्वर के नीचे का भाग)—काल्चि, आइरिस, मैग फॉ, मेजे, नक्स वॉ, फॉस्फो, वरबैस्क ।

जबड़ा, ऊपरी, दाँतों, कनपटी, आँखों, कानों, कपोलास्थि में—एक्टि स्पाइ, आर्जे नाइट्रि, आर्से, बेल, बिस्म, कैमो, क्लिमै, काफि, कोलो, डल्का, कैली साइ, मेजे, फॉस, प्लैण्टे, रोडो, सैंग्वि; स्पाइजे, थूजा, वरबैस्क ।

कपोलास्थि द्वय (गण्डास्थि युगलक प्रवर्द्धन)—(Zygoma)—ऐंगस्टू, आर्जे मेट, ऑरम, कैल्के कॉस्टि, कैप्सि, सिमिसि, कोलो, हाइड्रो कोटा, लैसिथि, मेन्थोल, ओलि एनि, मैग कार्ब, मेजे, पेरिस, प्लैटिना, रस, टॉस्फिगर, स्पाइजे, स्ट्रिक, थूजा, वरबैक्स, जिंक मेट, ।

एक तरफ का, बाईं तरफ—ऐकोन, आर्जे नाइट्रि, कोलो, कोरैलि, हाइड्रोकोटाइल, लैके, पैरिस, प्लैटी, सैपोन, सेनेसि, स्पाइजे, वरबैस्क, जिंक वै ।

एक तरफ का, दाहिनी तरफ का—ऐरेनि, कैक्टस, कैप्सि, सेड्रोन, क्लिमैटि, काफि, कोल्चि, हाइपेरि, कैल्मि, मैग फॉस, मेजे, पल्से ।

दर्द का प्रकार—ऐंठन का तरफ खींचन, दाब—ऐंगस्टु, बिस्मथ, ब्रायो, कैक्ट, कॉकु, कोलोसि, मेजे, प्लैटि, थूजा, वेरेट्र एल्ब, वरबैस्क ।

कटन, फटन, झटकन, चिलकन—एकोन, एम्फिस, आर्स, ऑरम, कॉस्टि, कैमो, सिन्को, कोलो, डल्का, हाइपेरि, मैग फॉस, मर्क, मेजे, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, रेडियम, रोडो, सेनेसि, साइलि, स्पाइजे।

स्नायु मार्ग के ठीक रास्ते में दर्द की महीन लकीर दौड़े—कैप्सि, सेपा।

धीरे-धीरे हमला करे और धीरे-धीरे कम हो—प्लैटिना, स्टैन।

धीरे-धीरे हमला करे और एकाएक गायब हो—आर्जे मेटा, बेल, पल्से।

गरम सुइयाँ चुभती मालूम दें—आर्स।

बरफ जैसी ठंडी सुइयाँ चुभती मालूम पड़ें—एगैरि।

तेजी के साथ चुभन जैसा दर्द, आक्षेपिक, बिजली की तरह चमकने वाला, फैलने वाला—आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, कॉकुलस, कोलो, जेल्से, ग्रैफा, हीपर, कैली आयोड, क्रियोजो, मैग फॉस, नक्स वो, फॉस्फो, प्लैण्टै, रेडियम, सैंग्वि, स्पाइजे, स्ट्रिक, जिंक मेट।

सामयिक, सविराम—कैक्ट, सेड्रोन, चनि सल्फ, सिन्को, कोलो, ग्रैफा, मैग फॉस, प्लैन्टै, स्पाइजे, वेरेट्रम एल्ब, वरबैस्क।

साथ के लक्षण—तेजाब, खट्टी डकारें—आर्जे नाइट्रि, नक्स वो, वरबैस्क।

ठंडक और बाद में कुकुरभूख—डल्का।

जुकाम (नाक बहना, आँखों में पानी बहना)—वरबैस्क।

गाल गहरे लाल—स्पाइजे।

कम्प—कोलोसिं, डल्का, मेजे, पल्से, रस टॉ।

पेट का दर्द, बारी-बारी—बिस्म।

आँखों से पानी बहना—बेल, इपिका, नक्स वॉ, प्लैण्टै, पल्से, वरबैस्क।

मानसिक उत्तेजना—कैमो, कोफि, क्रियोजो, नक्स वॉ।

सुन्न—ऐकोन, मेन्थोल, मेजे, प्लैण्टै, रस टॉ।

प्रकाशातंक—नाइट्रि स्पि डल्सि, प्लैण्टै।

पलकों का कार्यहीन होकर नीचे गिरना—जेल्से।

बेचैनी धड़कन—स्पाइजे।

लार बहना, गरदन का कड़ापन—मेजे।

स्पर्श असह्य—एकोन, बेल, सिन्को, कोलो, हीपर, मेजे, पैरिस, स्पाइजे, वरबैस्क।

चेहरे का फड़कना—एगैरि, बेल, कॉस्टि, कैली कार्ब, नक्स वॉ, थूजा, जिंक मेट।

आँखों के आगे पर्दा जैसा—टिलिया।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—तेजाबी वस्तुओं से, हरकत से, आवेग से—कैली कार्ब ।

चबाने से, मुँह खोलने से—ऐंगस्टू, कॉकु, हेलेबो, हीपर, मेजे ।

ठण्ड, सूखा लगे—ऐकोन, कोफि, कैल्मि, मैग कार्ब, मैग फॉ, नाइट्रि स्पि डल्सि ।

ठण्ड, तरी लगने से—कोलो, डल्का, मैग म्यूर, रस टॉ, साइलि, स्पाइजे, थूजा ।

छू जाने से, स्पर्श से—बेल, कैप्सि, सिन्को, कोलो, क्युप्रम मे, हीपर, मैग फॉ, मेजे, पैरिस, स्पाइजे, वरबैस्क ।

खाने-पीने से—बिस्म, आइरिस, मेजे ।

खाने के समय मुँह इत्यादि की हरकत से—कोलो, फॉस्फो, वरबैस्क ।

खाने से, हरकत से, झुकने से; झटके से इत्यादि—बेल, फेर फॉस, स्पाइजे ।

सूरज निकलने से डूबने तक—स्पाइजे ।

हरकत से, आवाज से—आर्स, चिनि सल्फ, सिन्को, स्पाइजे ।

दाब से –कैप्सि ।

आराम से—मैग कार्ब, प्लैटी, रस टॉ ।

बात करने से, हिलने से, रोगी के दूसरी तरफ करवट बदलने या लेटने से—क्रियोजोट ।

बात करने से, छींकने से, तापमान के परिवर्तन से, दाँतों के दाब से—वरबैक्स ।

चाय पीने से—सेलेनि, स्पाइजे, थूजा ।

दर्द की तरह सोचने से—ऑरम ।

तम्बाकू से—सीपिया ।

निम्न ताप से—कैमो, ग्लोनो, कैली कार्ब, मर्क सल्फ, मेजे, पल्से ।

तीसरे पहर—कॉकु ।

दिन के समय—सेड्रोन, प्लैण्टै, स्पाइजे ।

शाम के समय, रात में—आर्स, कैप्सि, मैग कार्ब, मर्क सल्फ, मेजे, पल्से, रस टॉ ।

घटना, चबाने से—क्युप्र ऐसेटि ।

ठण्डे प्रयोग से, ठण्डक से—बिस्म, क्लिमै, कैमो फॉस, फॉस्फा, पल्से ।

खाने से—रोडो ।

घुटनों के बल झुकने से और सिर को कसकर, फर्श पर दबाने से—सैं॰ ।

हरकत से, खुली हवा से—थूजा ।

दाब से—सिन्को, कोलो, मैग म्यूर, रोडो ।

आराम से—कोला, नक्स वॉ ।

मालिश से—एकोना, प्लैटि ।

निम्न ताप से—आर्स, कैल्के कार्ब, कोलो, क्युप्र एसेटि, मैग म्यूर, मैग फॉ, मेजे, थूजा । देखिये घटना-बढ़ना ।

संवेदन—गरमी, जलन—ऐगैरि, एग्रोस्टे, ऐण्टि क्रू, आर्स, फेरम, कैन्थे, कैप्सि, कैमो, युफोर्बिया, कैली का, नैट्र कार्ब, सैंग्वि, सेनेगा, सिलि, स्ट्रोंसि, सल्फर, वायोला ट्रि ।

मकड़ी का जाला मानों सूख गया हो—ऐलूमि, बैराइटा का, बोरै, ब्रोमि, युफोर्बिया, ग्रैफा, फॉस्फो एसिड, रेन रवेले ।

ठण्डापन—ऐम्ब्रो, ऐगैरि, एण्टि टा, कैम्फो, कार्बो वेज, ड्रोसे, हेलोड, फॉस एसिड, प्लेटिना, वेरेट्र एल्ब । देखिये नशीला, हिपोक्रेटिक चेहरा ।

सिकुड़न, चुचुकन जैसा जान पड़े, माथे पर—बैप्टि, बेलिस, ग्रैटि, हेलेबो, फॉस, प्रिमूला ।

सरसराहट (सुन्न होना, चुनचुनाहट, रेंगन)—ऐकोन, एगैरि, कोल्चि, गाइम्नोक्लै, हेलोड, माइरि, नक्स वॉ, प्लैटि ।

खुजाना—ऐगैरि, ऐण्टि क्रू, मेजे, माइरि, नैट्र म्यूर, रस टॉ, सीपिया, स्ट्रोन्सि ।

मुखमण्डल का स्नायुशूल—(Tic Douloureux)—ऐकोन, एनैन्थी, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, कैप्सि, सिमिसि, कॉकसिने, कोल्चि, क्युप्रम मेट, जेल्से, ग्लोनो, ग्रैफा, कैली कार्ब, कैली आयोड, मैग फॉस, मेजे, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, फॉस, रस टॉ, सीपिया, स्टैन, स्टैफि, सल्फर, स्ट्रिक, थूजा, वरबैस्क, जिंक मेट । देखिये मुखमण्डल का स्नायुशूल, पंचमी मौखिक नाड़ी का शूल—Prosopalgia Trifecial Neuralgia.

मुँह

साँस ठण्डी—एण्टि टॉ, आर्स, कैम्फो, कार्बो वेज, सिस्टस, क्युप्र मे, युफोर्बिया, लैथा, हेलोड, जैट्रोफा, टैबे, टेरेबिं, वेरेट्र एल्ब ।

दुर्गन्धित साँस—(Fetor oris)—एबीज नाइग्रा, एलूमि, एम्ब्रा, ऐनाका, ऐण्टि क्रू, आर्स, आर्न, ऑरम, बैप्टि, बोरै, ब्रायो, कैल्के का, कैप्सि, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, चेली, सिन्को, सिस्टस, डैफ्ने, डिफ्थे, ग्रैफा, हेलो, हीपर, इण्डोल, आयोड, कांचालागुवा, कैली क्लो, कैली परमै, कैली फॉ, कैली टल, क्रिओजो, लैके, मर्क को,

मर्क साईं, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, म्यूर ऐसि, नैट्र, टेलू, नाईट्रि ऐसि, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फाइटो, सोरि, पल्से, क्वेरकस, रियूम, सीपिया, सिनैपि, स्पाइजे, स्टैन, सल्फ एसिड, टेरेबिं।

साँस घृणित—केवल भोजन करने के बाद—कैमो, नक्स वॉ, सल्फ।

साँस घृणित—शाम को या रात में—पल्से, सल्फर।

साँस घृणित—युवाकाल के आरम्भ में, बालिकाओं में—ऑरम मेट।

साँस घृणित-केवल सुबह को—आर्न, बेल, नक्स वॉ, साइलि, सल्फर।

बाहरी मुँह—किनारे : रंग : आस-पास मोती जैसा सफेद—इथ, सिना, सैण्टो।

आस-पास पीला रंग—सीपिया।

दरारें घाव—ऐमो म्यूर, ऐण्टि क्रू, आर्स, ऑरम, एरण्डो, बोवि, काण्डिडयुरैं, एचिने, युपैटो पर्फ, ग्रैफा, हेल्लिबो, हीपर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, पेट्रोलि, रस टॉ, सिकेल।

चारों तरफ दाने—ऐण्टि क्रू, आर्स, ऐस्टेरि, एचिने, ग्रैफा, हीपर, नैफ्थे, मेजे, म्यूरि एसि, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, सेनेगा।

होंठ—काले—आर्स, ब्रायो, मर्क कार, वाइपेरा।

नीले—आर्स, कैम्फो, कार्बो एसि, कार्बो वेज, क्युप्रम मेट, क्युप्रम सल्फ, डिजि, हाइड्रोसि एसि, सिकेलि, वेरैट्र ऐल्ब, जिंक। देखिये चेहरा।

बलता हुआ, गरम, पपड़ीदार—ऐकोन, आर्न, आर्स, ऑरम, ब्रायो, कैप्सि, इलीसियम, नैट्र म्यूर, फॉस, रस टॉ, सल्फर, थाइरॉ।

कर्कट रोग (कैन्सर)—ऐसेटि ऐसि, आर्स, आर्स आयोड, क्लिमै, कोमो क्लै, कॉण्डुरै, कोनियम, हाइड्रै, क्रियोजो, लाइको, सीपिया, टैबे, थूजा।

चबाने की हरकत—ऐकोन, बेल, ब्रायो, हेलेबो, स्ट्रैमो।

ठंडे घाव, मोटे घाव, छालेदार फुन्सियाँ—एगैरि, आर्स, कैल्के फ्लोर, कैप्सि, डल्का, फ्रैक्स ऐमे, हीपर, मेडो, नैट्र म्यूर, रस टॉ, रस वेने, सीपि, सल्फ आयोड, उपास।

दरारें, घाव—ऐण्टि क्रू, आर्स, ऑरम, ब्रायो, कार्बो वेज, कार्बन सल्फ, क्लिमै, कॉण्डियुरैं, ऐचिने, ग्लोसरीन, ग्रैफा, कैली बाइक्रो, मर्क ग्रे रूबर, म्यूरि एसि, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, फॉस, रस टॉ, साइलि।

दरारें, घाव, निचले होंठ के बीच में—ऐमो का, ग्रैफा, हीपर, नैट्र म्यू, पल्से, सोरि।

टेढ़ा-मेढ़ा होना—आर्टेमी वल, कैडमि सल्फ, साइक्यू, क्युप्रम ऐसेटि, कुप्री, स्ट्रैमो।

सूखा—ऐकोना, ऐण्टि क्रू, ब्रायो, चियोनैन्थ, सिन्को, युओनाइम, ग्लिसरीन, हेलेबो, हेलोनि, म्यूर ऐसि, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, फॉस ऐसि, पल्स, रस टॉ, सेनेसि, सीपिया, सल्फर, जिंक मेट। देखिये जलन।

अकौता—ऐण्टि क्रू, ऑरम म्यूर, बोवि, कैल्के कार्ब, ग्रैफा, लाइको, मेजे, रस वे।

दाने निकलना—मुँहासे—बोरैक्स, सोरि, सारसा, सल्फ आयोड।

खाल उधड़ना—कोनियम, सीपिया।

मुँह पर झाग—ऐब्सिंथि, सिंकू, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम मेट, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, लाइसिन, इनैन्थी, ओपियम। देखिये आक्षेप (स्नायुमण्डल)।

चिपके हों—कैने इण्डि, हेलोनि।

अक्सर चाटा करे—पल्से।

सुन्न होना चुनचुनाहट—ऐकोन, क्रोटै, एचिने, नैट्र म्यूर।

दर्द, सन्ताप—ऐरम, बोरै, कैल्के कार्ब, इलिसियम, नैट्र म्यूर, रस टॉ, रस वेने, सीपिया।

नोचता है जब तक खून न बहे—ऐरम, हेलेबो, जिंक मेटा।

लाल खून बहे—ऐरम, क्रियोजो।

लाल गहरा—ऐलो, सल्फ, ट्यूबर।

फूलन—ऐण्टि पायरी, एपिस, बावि, ब्रायो, कैप्सि, मेड्यूसा, मर्क कार, रस वे, विपेरा।

फूलन निचला—पल्से, सीपिया।

फूलन ऊपरी—एपिस, बेल, कैल्के कार्ब, हीपर; नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, सोरि, रस टॉ।

फड़कन आक्षेपिक—ऐगैरि, आर्टेमि वल, सिमि, जेल्से, इग्नै, माइगे, निकोल, ओपियम, स्ट्रिक।

घाव; कर्कटवाले—आर्स।

भीतरी मुँह (मुख गुहा)—दाँत उखड़वाने के बाद खून बहना—आर्नि, बोवि, सिन्को; हैमे।

जलन, छरछराहट—ऐकोन, एस्कु, एपिस, आर्स; ऐरम, बेला, बोरै, ब्रायो, कैप्सि, कैन्थे, कार्बो वेज, कोल्चि, फेरम फॉ, आईरिस, मर्क कार, सैंग्वि, सल्फ, टैरैक्स, वेस्पा।

मुखक्षत, घाव—रैगैवे, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाईट, आर्स, बोरै; कैप्सि, कार्बो वेज, एकिने हाइड्रै, कैली बाईक्रो, कैली क्लो, लाईको, मर्क कार, मर्क, म्यूर ऐस, नैट

हाईपोक्लो, नैट म्यूर, नाईट ऐस, फाइटो; सैल ऐस, सल्फ ऐस; सल्फर। देखिये मुखक्षत, पेट दर्द।

ठण्डापन—कैम्फो, सिस्टस, कोतिनेल, सिनैपि नि, बेरैटा ऐल्ब।

सूखापन—ऐकोन, एस्कू, एलूमि, एपिस, आर्स, बेल, बारै, ब्रायो, क्यूप्र, डूबो, हायोस, आइरिस टेनै, कैली बाइ, कैली फॉ, लैके, लाइको, मर्क कार, मर्क पर मोर्फि, म्यूर ऐस, नैट सल्फ, नक्स मॉ, ओपि, फॉस्फा, पल्से, रेडियम, रस टॉ, सैंग्वि, सेनेसि, सीपी, टेरेबि।

सूखापन, अधिक प्यास के साथ—एकोन; आर्स, ब्रॉय, रस टॉ, सल्फर, वेरैट्र एल्ब।

सूखापन, बिना प्यास—एपिस, लैकेसिस, लाइको, नक्स मॉ, पेरिस, पल्से, सैबैडि।

ग्रन्थियाँ लार सम्बन्धी, कोषमय, तन्तु सूजन—ऐन्थ्रैसी, ब्रायो, हीपर, मर्क, म्यूर एसिड।

मुँह आना (Stomatitis) साधारण औषधियाँ—एकोन, एलूमी, आर्जे नाइट, एरम, बैप्टी, बेल, बोरैक्स, कैप्सि, कोन, हाइड्रै, कैली, फूलो, कैली म्यूर, मर्क कार; मर्क सल्फ, नैट्र म्यूर, नाइट्र ऐस, नक्स वॉ, रैनैनकू स्कले, सीपि, सिनैपि निग, सल्फर, सल्फ ऐस, वेस्पा।

प्रदाह छालेदार, चिपटे घाव (Thrush)—इथूजा; ऐण्टि टा, आर्स, बैप्टि, बोरै, ब्रायो, कार्बो वेज, युपैटों एरोम, हाइड्रै, हाइड्रैस्ट म्यूर, कैलीफ्लोर, कैली म्यूर, मर्क कार, मर्क सल्फ, म्यूर ऐस, नैट्र म्यूर, नाइट एसिड, रस ग्लै, सारसा, सेन्पेर-विषम टैक्टर, सल्फ ऐस, सल्फर।

प्रदाह, क्षुद्र-गह्वर-पूर्ण पानी भरे—ऐनैका, एनैन्थ, कैन्वे, कैप्स, कैली क्लो, हाइड्रैस्ट म्यूर, मैग कार्ब, नैट म्यूर, म्यूर ऐस, रस टॉ, सल्फर।

प्रदाह, गलित, सड़न अवस्था (विगलित क्षत रोग, Nema, दुर्गन्धित मुख घाव Cancerum Oris)—आर्स, बैप्टि, हाइड्रै, कैली क्लो, कैली फॉस, क्रियोसो, लैके, मर्क को; मर्क सल्फ, म्यूर, ऐस; सिकैल, सल्फ ऐस।

प्रदाह, पारा दोष से—बैप्टि, कार्बो वेज, हीपर, हाइड्रै, म्यूर ऐस, नाइट एसिड।

प्रदाह, घाव सम्बन्धी—ऐगैबे, एलनस, आर्जे नाइट, आर्स, ऐरम, बैप्टि, बोरै, क्लोर; सिनैने, कोरिडै, हीपर, हाइड्रै म्यूर, कैली बाइक्रो, कैली क्लोरि, कैली बाइ; मैग कार्ब, मेन्थोल, मर्क कार, मर्क सल्फ, म्यूर एसिड, नाइट एसिड, नाइट म्यूर, एसिड, फॉस, रस ग्लै, सल्फ एसिड, सल्फूरस एसिड; टैरैक्स।

खुजाना—ऐरण्डो, बोरैक्स, कैली बाइक्रो ।

श्लैष्मिक झिल्ली, चमकीली, बारनिश की हुई लगे—एपिस, नाइट एसिड ।

श्लैष्मिक झिल्ली सूजन जल जाने के बाद—एपिस, कैन्थे ।

श्लैष्मिक झिल्ली, पीली फेर मे, मोर्फी ।

श्लैष्मिक झिल्ली लाल, सुर्ख, धुँधली—बैप्टि, लैके, मोर्फो, फाइटो ।

श्लैष्मिक झिल्ली, लाल, फूली, शोथमय, भूरे स्थलों वाले घाव के साथ—कैली क्लोर । देखिये मुँह आना (Stomatitis) ।

दर्द—एपिस, ऐरम, बेल, बोरैक्स, हीपर, मर्क, नाइट एसिड, उपास । देखिये मुँह आना (Stomatitis) ।

नकली दाँत के प्लेट के कारण, दर्द हों : छूने, खाने से अधिक हो—ऐलूमि, बोरैक्स ।

तालु (Palata) क्षत के घाव—ऐगैबे ।

छाले पड़ना—नैट सल्फ ।

मलाईदार मैल—नैट फॉस ।

सिकुड़न, खुजलाहट—ऐकोन ।

सूखा—कार्बो ऐनि ।

शोथ—एपिस ।

लम्बा होना—स्ट्रिक । (देखिये घाँटी (Uvula) ।

खुजली, गुदगुदी—ऐरण्डो, जेल्से, बाइयेथि ।

सड़न, हड्डी का गलना—ऑरम, मर्क साइ ।

लाल फूलन—ऐकोन, एपिस, ऑरम, बेल, फ्लोर एसिड, कैली आयोड, मर्क कार ।

घाव होना, कच्चापन—ऐण्टि क्रू, ऐरम, सिनैबे, हीपर, मर्क कार, मर्क पेरे, नाइट्रि एसिड, सल्फ एसिड; टैरैक्स । देखिये गला ।

चुचका हो दूध पिलाने से, दर्द हो—बोरै ।

लार बहना, (Ptyalism) लार अधिक बहना—ऐसेटिक एसिड, एलियम सैटि, ऐनाका, ऐण्टि क्रू, ऑरम, बैप्टि, बिस्म; बायो, कैमो, चिओनैन्थ, सिन्को, कोल्चि, क्युप्रम मेट, डैफ्ने, डिजि, डल्का, एपिफेगस, युफोर्बि, ग्रैनैट, हीपर, आयोड, इपिका, आइरिस, जैबोरै, कैली क्लोरि, कैली आयोड, कैली परमैंगे, लैक कैना, लैक्टिक एसिड, लोबे इन्फ्ला, मर्क कार, मर्क साइ, मर्क डल्सि, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, मेजे, मस्कैरिन, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूर एसिड, फॉस, पिलोका, पोडो, टिलिया, पल्से, रस टॉ, सैंग्वि, सार्सा, सीपिया, सल्फर, सिफिल, टैबैक, ट्रिफोलि ।

खाने के बाद—एलियम सैटि ।

गर्भावस्था में—ऐसेटिक एसिड, ग्रेनेट, आयोड, जैबोरै, लेक्टि एसिड, मर्क, मस्कैरिन, नाइट्रि एसिड, पिलोका, सीपि । देखिये गर्भावस्था (स्त्री-जननेन्द्रिय मण्डल) ।

सोने में—कैमो, कॉकसिनेल, लैक्टि एसिड, मर्क, रियूम, सिफिलिनम ।

पारा के दुरुपयोग से—हीपर, आयोड, आइरिस, कैली क्लोरि, नाइट्रि एसिड ।

लार, तीखी, गरम—आर्स, ऐरम, बोरै, डैफ्ने, कैली फ्लोरि, क्रियोजो, मर्क, नाइट्रि एसिड, टैक्सस ।

कड़वा—आर्स, ऐनैमे, ब्रायो, कैली सल्फ, पल्से, सल्फर ।

खनी—ऐण्टि पाइरिन, आर्स, मैग कार्ब, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ ।

दुर्गन्धित, घृणित—आर्स, आयोड, क्रियोजो, मैन्सिन, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि, सोरि, रियुम ।

झागदार, रूई के गोले की तरह—ऐलेट्रि, ऐक्वा मैरी, बर्बेरिस, ब्रायो, कैन्थे, लाइसिन, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फॉस ऐसि, सल्फर ।

कसैला स्वाद—बिस्म, कैमो, कॉकू, क्युप्रम मेट, मर्क, नाइट्रि एसि, जिंक ।

दूध जैसा—प्लम्ब ओक्सी ।

श्लेष्मा—बेल, कोल्चि, डल्का, नाइट्रि ऐसि, फॉस ऐसि, फ़ॉस, पल्से ।

रेशेदार, तारदार, चिमड़ा, चिकना, (साबुन की तरह)—ऐमो म्यूरि, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, डल्का, एपिस, हाइड्रै म्यूर, हाइड्रै आयोड, आइरिस, कैली बाइक्रो, कैली क्लोरि, लाइसिन, मर्क सल्फ, मर्क वॉ, माइरि, नैट्र म्यूर, पिलोका, पल्स, टैरैक्स ।

नमकीन—ऐण्टि क्रू, युफोर्बिया, लेक्टि ऐसि, मर्क कार, नैट्र म्यूर, फॉस, सीपिया, वेरेट्र ऐल्ब ।

खट्टा स्वाद—आइरिस, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पेरिस, पोडो ।

मिठास स्वाद—क्युप्रम मेट, मर्क, प्लम्ब, ऐसेटि, पल्से, स्टैन ।

पानी-सा—ऐसैर, बिस्म, आयोड, जैबोरै, लौबे इन्फ्ला, नैट्र म्यूर, फॉस, ट्रिफोलि ।

घाव होना-मुँह का दर्दीलापन—ऐलूमि, अर्जेनाइ, आर्स, ऐरम, बोरै, कैप्सि, हीपर, हाइड्रै म्यूर, हाइड्रै, कैली क्लो, मर्क कार, मर्क सल्फ, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, फाइटो, रैनै स्कले, रसग्लै, सेम्परांव टैक्टो, सिनैप निग्रा, सल्फ एसिड, टैरैक्स—देखिए मुँह आना (घावयुक्त) ।

घाव, उपदंशीय, श्लैष्मिक चकत्ते—सिनैबै, कैली बाइक्रो, मर्क कार, मर्क नाइट्रो, मर्क प्रेरूब, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, स्टिलि, थूजा । देखिये पुरुष जननेन्द्रिय मण्डल ।

वसों का सिकुड़वा—वेरिकोज वेन्स—(Vericose Veins) ऐम्ब्रा, थूजा ।

जबान

मैल-रङ्ग-काला—आर्स, बैप्टि, कैम्फो, लैके, लाइको, मर्क कार, मर्क साइ, मर्क डल्सि, मर्क वाई, ओपि, फॉस, रस टॉ, वाइपेरा।

हल्का, नीला, सुर्ख, हल्का पीला—आर्स, क्युप्रम सल्फ, डिजि, जिम्नो क्लैडस, मर्क साइ, मॉर्फि, ओपि, म्यूर एसिड, सिकेलि, वेरेट्र एल्ब, वाइपेरा।

बादामी—ऐमो कार्ब, ऐण्टि टॉ, आर्स, बैप्टि, ब्रायो, क्युप्र आर्स, एचिनै, हायोसि, मेडो, मर्क साइ, मॉर्फि, म्यूर एसिड, नैट्र सल्फ, फॉस, सिकेलि, वाइपेरा।

बीच में बादामी कत्थई—बैप्टि, फॉस, प्लम्ब मेट।

हल्का, बादामी सुर्खी—एलैन्थ, ऐण्टि टॉ, आर्स, बैप्टि, ब्रायो, कैली फॉस, लैके, रस टॉ, स्पांजिया, टार्ट एसिड, वाइपेरा।

साफ—आर्स, ऐसैर, सोना, सिन्को, कोरिडै, डिजि, इपिका, मैग फॉस, नाइट्रि एसिड, पाइरो, रस टॉ, सीपि।

अगला भाग साफ, पिछला भाग मैलदार—नक्स वॉ।

मासिक धर्म के स्राव के समय साफ रहे, मासिक धर्म के अन्त होने पर मैली हो जाये—सीपिया।

बीच में गहरे रंग की लकीर, टायफायड की जबान—आर्नि, बैप्टि, म्यूर एसिड।

थुलथुली, मोटी, तर, दाँतों के निशान पड़े हों—आर्स, चैलिडो, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, मर्क कॉर, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, नैट्र फॉस, पोडो, पाइरो, रस टॉ, सैनिकू, स्ट्रैमो, थूका।

झागदार, किनारों पर बुलबुले—नैट्र म्यूर।

रोयेंदार—ऐण्टि टॉ, आर्स, बैप्टि, कैन्थे, कार्डु मैरि, चिनि आर्स, कोका, फेरि पिक्रि, जेल्से, गुवाइकम, लाइको, माइरि, नक्स वॉ, पल्से, रूमेक्स,। देखिये सफेद।

भूरापन लिये सफेद रंग का आधार—कैली म्यूर।

हरियाली लिये मैल—नैट्र सल्फ, प्लम्ब एसे।

नक्शेदार—एण्टि क्रू; आर्स, कैली बाइक्रो, लैके, मर्क बाइ, नैट्र म्यूर, नाइट्रि, एसिड, ओक्जै एसिड, फाइटो, रैनैन, रस टॉ, टैरैक्स, टेरेबिं,।

लाल अलग-अलग चकत्तेदार नक्शा—नैट्र म्यूर।

लाल—ऐकोन, एपिस, आर्स, बेल, बोरै एसिड, कैन्थे, क्रोटै, डिफ्थे, जेल्से, हायोसि, कैली बाइक्रो, लैके, मर्क कार, मेजे, नक्स वॉ, पाइरो, रस टॉ, टेरेबि।

लाल, सूखी, खासकर बीच में—एण्टि टॉ, रस टॉ।

लाल किनारे—एमिग परसि, एण्टि टॉ, आर्स, बैप्टि, बेल, कैन्थे, काडु मैरि, चेलि, एचिने, कैली बाइक्रो, लैक कैना, लैके, मर्क का, मर्क आयोड फ्ले, मर्क, नाइट्रि एसिड, पोडो, रस टॉ, रस वेने, सल्फर, टैरैक्सैकम।

लाल, किनारे, बीच में सफेद—बेल, रस टॉ।

लाल बीच में या धारियाँ—ऐण्टि टॉ, आर्स, कॉस्टि, क्रोटै, वेरेट्र विरिडि।

लाल, उभरा हुआ भाग पीला, मिटा हुआ—ऐलियम सैटि।

लाल उभरा हुआ भाग स्पष्ट—ऐण्टि टॉ, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, कैली बाइक्रो, लाइको, मेजे, नक्स मॉ, टिलिया, टेरेबि।

लाल, कच्चापन—आर्स, ऐरम, कैन्थे, टैरैक्स।

लाल, चमकीली, चिकनी, वार्निश की हुई जैसी—एपिस, कैन्थे, क्रोटै जैलापा, कैली बाइक्रो, लैके, नाइट्रि एसिड, फॉस, पाइरो, रस टॉ; टैरेबि।

लाल धब्बे, उत्तेजनीय—रैने स्क्ले, टैरैक्स, टेरेबि।

लाल सिरा—एमिग परसि, आर्जे नाइट्रि, आर्स, साइक्लै, मर्क आयो फ्लै, फाइटो, रस टॉ, रस बेने, सल्फर।

लाल, तर, बीच में लीक—नाइट्रि एसिड।

मकोय के रंग की—बेल, फ्रेगैरि, सैपोनै।

एक ही तरफ (दाहिनी या बाईं तरफ)—डैफ्ने, लोबै इन्फ्ला, रस टॉ।

सफेद रोयेंदारे चिकनी, लेईदार—एकोन, इस्कु, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्न, बैप्टि, बेल, बिस्म, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, काडु मैरि, चेलिडो, सिन्को, साइक्लै, फेर, ग्लोनो, हेडियोमा, हाइड्रै, इपिकाक, कैली कार्ब, कैली फ्लोर, कैली म्यूर, लैक कैना, लोबे इंफ्ला, लाइको, मर्क कार, मर्क; मेजे, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओक्जै एसिड, पैरिस, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, सीपिया, सल्फर, टैरेक्स, वेरैट्र विरि।

पीला, मैला, मोटा मैल—इस्कु, वैप्टि, ब्रायो, कार्बो वेज, कैमो, चेलि, चिओनैन्थ, सिन्को, फेरम, हाइड्रै, इण्डोल, कैली बाइक्रो, कैली सल्फ, लेप्टै, लाइको, मर्क डल्सि, मर्क आयोड फ्ले, मर्क, माइरि, नैट्र फॉस, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ऑस्टिया, पोडो, पल्से, सैंग्वि, सल्फर, युका।

बीच में पीला धब्बा—बैप्टि, फाइटो।

हालतें, अवस्थायें—सुन्न पड़ना—कार्बोनियम सल्फ्युरेटम।

चुचुकन—म्यूरि ऐसि।

कटन—ऐब्सिथि, हाइड्रै, हायोसि, इग्नै, इलिसियम, फॉस ऐसि, सिकेलि।

जलन, छरछराहट, झुलसी हुई जान पड़े—एकोन, एपिस, आर्स, एरम, बैप्टि, बेला, बर्ब वल, कैन्थे, कैम्सि, कार्बो एनि, कॉस्टि, कोलो, आइरिस, लाइको, मर्क

कार, मेजे, म्यूरि एसिड, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, पोडो, रैनै स्क्ले, सैंग्वि, सैनिकू, सिनैपि, सल्फर।

सिरे पर जलन हो—आर्स, बैराइटा का, कैल्के का, कैप्सि, आइरिस, लैथाइरस, फाइजॉस्टि, सैंग्वि, टेरेबि।

ठण्डापन—एसेटिक, एसिड, कैम्फो, कार्बो वेज, सिस्टस, हेलोड, हाइड्रोसि एसिड, सिकेलि, वेरेट्र एल्ब।

सूखापन—एकोन, एलैन्थ, ऐण्टि टा, एपिस, आर्स, बैप्टि, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कोल्चि, हायोसि, कैली बाइक्रो, कैली का, लैके, लिओनूर, मर्क कॉर, मर्क, मार्फि, म्यूरि ऐसि, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, पेरिस, फॉस एसि, फॉस, पल्से, पाइरो, रस टॉ, सल्फर, टेरेबि, वेरेट्र विरि, वाइपेरा।

स्फोट (Eruptions), उभरन—कैन्सर, कर्कट रोग—ऐलुमेन, एपिस, आर्स, ऑरम, ऑरम म्यूरि, नैट्रो, क्रोटै, गेलियम, होआँगनान, कैली क्लोर, कैली साइ, म्यूरि एसिड, सेम्पर टैक्टो, थूजा, वाइबर्न प्रू।

चिटकन, दरारें, छिलन—ऐनैन्थे, आर्स, एरम, एरण्डो, बैप्टि, बेल, बोरिकम एसिड, बारै, ब्रायो, कैमो, कैली बाइक्रो, लैके, लिओनूर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, फाइटो, प्लम्ब ऐसेटि, पाइरो, रैनै स्कले, रस टॉ, रस वे, सेम्पर्वि टेक्टो, देखिये घाव।

उपत्वक् प्रदाह—(Epithelioma)—आर्स, कार्बो एसिड, क्रोमि एसिड, कैली साइ, म्यूरि एसिड, थूजा।

ऊपरी भाग में, लम्बे तरफ दरारें—मर्क।

उभरन गुल्म—आर्स, हाइड्रै, ऑरम, ऑरम म्यूर, नैट्रो, कैस्टोरि, गैलियम ऐपै, म्यूरि ऐसि, नाइट्रि एसिड, थूजा।

अपरस (Soriasis)—कैस्टर इक्वि, कैली बाइक्रो, म्यूरि ऐसि।

जबान के नीचे वाला स्फोट या तेदवा—(Ranula)—एम्ब्रा, कैल्के कार्ब, फेरम फॉ, फ्लोरि एसिड, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, थूजा।

दाद—(Ringworm)—नैट्र म्यूर, सैनिकू। देखिए लाल किनारे।

घाव होना—एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्स हाइड्रो, बैप्टि, फ्लोरि ऐसि, कैली बाइक्रो, लाइ, मर्क, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसि, नाइट्रो म्यूर एसिड, सैंग्वि नाइट्रि, सैम्पर्वि टेक्टो, सिफली, थूजा।

घाव उपदंश सम्बन्धी—ऑरम, सिनावे, फ्लोरि एसिड, कैली बाइक्रो, लैके, मर्क, मेजे, नाइट्रि ऐसि।

शिरायें सिकुड़ी-बटुरी हों—(Vericose veins)—एम्ब्रा, हैमे, थूजा।

छाले, पानी भरे फोले—एमो कार्ब, एपिस, बर्बे वल, बोरै, कैन्थे, कार्बो एनि, लैसर्टा, लाइको, मर्क पेरे, म्यूरि एसिड, नैट्र फॉस, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, फाइटो, रस टॉ, सल्फ एसिड, थूजा।

मस्से—ऑरम म्यूर, मैग एसैटि।

कड़ापन जमा होना—एलुमेन, ऑरम म्यूर, कैल्के फ्लो, म्यूरि एसिड, सेम्पर्वि, टेक्टो सिली।

भारीपन—कॉस्टि, कोल्चि, जेल्से, गुवाइको, मर्क पेरे, म्यूरि ऐसि, नक्स वॉ।

प्रदाह (Glossitis)—ऐकोन, एपिस, आर्स, बेल, कैन्थे, क्रोटै, लैके, मर्क कार, मर्क, म्यूरि ऐसि, ओक्जे ऐसि, फाइटो, रैन स्केले, सल्फ ऐसि, वाइपेरा। देखिए फूलन।

सुन्न होना, चुनचुनाहट, झुनझुनाहट—ऐकोन, कोनि, एचिने, जेल्से, इग्नै, लैथाइरस, मर्क पेरे, नैट्र म्यूर, नक्स मा, नक्स वॉ, प्लैटि, रेडियम, रियूम, सिकेलि।

दर्द—ऐकोन, आर्स, ऐरम, बेल, कैली आर्स, कैली आयोड, मर्क वॉ, नाइट्रि, ऐसि, फाइटो, रूटा, सेम्पर्वि टेक्टो, थूजा। देखिये दर्दीलापन (Soreness)।

पक्षाघात—लकवा—एकोना, कैमो, एकोन, ऐनाका, आर्न, आर्स, बैराइटा कार्ब, बेल, बाथ्राप्स, कैनै इडि, कॉस्टि, कॉकु, कोनि, क्युप्र, कुरारी, डल्का, जेल्से, गुवाको, हायोसि, लैके, लोबे, पल्प्युरा, म्यूर एसिड, नक्स मॉ, आलियांड, ओपि, प्लम्ब मेट, सिकेलि, स्ट्रैमो, जिंक सल्फ। देखिये स्नायु-मण्डल।

बाहर निकलना कठिन—ऐनाका, एपिस, आर्स, कैल्के कार्ब, कॉस्टि क्रोटै, डल्का, गुवाको, जेल्से, हायोसि, लैके, मर्क, म्यूरि एसिड, माइग, नैट्र म्यूर, पाइरो, प्लम्ब मेट, स्ट्रैमो, सल्फोनाल, टेरेबि।

बाहर निकलना, साँप की तरह—ऐब्सिन्थि, क्रोटै, क्युप्रम, लैके, लाइको, मर्क, सैनिकु, पाइपेरा।

कच्चापन—खुरदुरापन—एपिस, आर्स, ऐरम, कैन्थे, डल्का, नाइट्रि, एसिड, फाइटो, रैन स्केलै, टैरैक्स।

जबान पर बाल जैसा लगे—ऐलियम सैट, कैली बाइक्रो, नैट्र म्यूर, साइलि।

फूली बढ़ी हुई जान पड़े—ऐब्सिथि, इथू, ऐनाका, क्रोटै, नक्स वॉ, टिलिया, पल्से।

दर्दीलापन—एपिस, ऐरम, सिस्ट, कैली कार्ब, मर्क कॉर, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, ओक्जै एसिड; फिलैंड्रि, फाइजॉस्टि, रैन स्केले, रस टॉ, सम्पर्वि, टेक्टो, सीपिया, साइलि, टेरेबि, थूजा।

आक्षेप—ऐकोन, बेल, रूटा, सिकेलि। देखिये कम्प।

कड़ापन तनाव—कोनि, डल्का, हायोसि, लैक कैना, मर्क आयोड रू, निकोल, सिकेलि, स्ट्रैमो।

फूलन—ऐकोन, एपिस, आर्स, ऐरम, एस्टर, बैप्टि, बेल, बिस्म, कैजूपु, कैन्थे, क्रोटै, डिफ्थे, फ्रैगेर, कैली टेलू, लैके, मैग फा, मर्क को, मैजे, म्यूरि एसि, इनैन्थी, ओक्जे एसिड, पीलियस, रूटा, थूज', वेस्पा, वाइपेरा।

कम्पन—एब्सिथि, ऐगैरि, ऐगैरिसिन, एपिस, आर्स, बेल, कैम्फो, कॉस्टि; कैमो, जेल्से, लैके, मर्क, प्लम्ब, स्ट्रैमो।

स्वाद

लोप होना—ऐमिग, पर, ऐण्टि क्रू, ब्रायो, साइक्ले, फार्मेलिन, जिम्नेमा, जस्ट्री, लाइको, मैग कार्ब, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, पोडो, पल्से, सैंग्वि, साइलि, सल्फर।

भ्रष्ट : बदला हुआ—साधारण—इस्कू, ऐलूमि, एण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, कैल्के का, कैम्फो, कार्बो वेज, चेलि, सिन्को, साइक्लै, फैगोप, जिम्नेमा, हाइड्रै, कैली कार्ब, लाइको, मैग कार्ब, मैग म्यूर, मर्क कार, मर्क सल्फ, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पेरिस, पोडो, पल्से, रियूम, सीपिया, सल्फर, जिंक म्यूर।

खाने के बाद—आर्स, कार्बो वेज, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, जिंक।

सोने के बाद—रियूम।

तीखा-चरपरा-खट्टा—ऐलो, ऐमो कार्ब, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, युफोर्बि, हीपर, हाइड्रै, इग्नै, आइरिस, कैली कार्ब, लोबे, इन्फ्ला, लाइको, मैग कार्ब, नैट्र फॉ, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, फॉस, एसिड, फास, पल्से सीपिया, सल्फर।

कड़वा : पित्त का—ऐकोन, ऐलो, आर्स ऐथैमै, बैप्टि, ब्रायो, कैम्फो, कार्डु मैरि, कैमो, चेलि, सिन्को, कोलो, क्युप्र, डिजि, हाइड्रै, इपिका, कैली कार्ब, लाइको, मर्क को, माइरि, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, पैरिस, पोडो, टीलिया, पल्से, रस टॉ, सैबैडि, सीपिया, स्टैन, सल्फर, टेरैक्स।

कड़वा, तम्बाकू से—एसैर, युफ्रैसि, पल्से।

खून जैसा—ऐलूमि, चेलिडो, कैली कार्ब, मैन्सिने, नाइट्रि ऐसि, साइलि, सल्फर, ट्रिफोलि, जिंक।

कसैला—इस्कू, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बिस्म, कॉकू, क्युप्र आर्स, क्युप्र मेट, लैक्टि एसि, लोबे इन्फ्ला, मर्क को, नाइट्रो, म्यूरि ऐसि, नक्स वो, रस टॉ, सल्फर।

कोमल, परिवर्तनशील—कॉफि, पल्से।

घृणित, सड़ा दुर्गन्धित, चिकना—आर्न, ऑरम म्यूर, बोरै, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, चेलि, फेरम मे, ग्रैफा, हीपर, इण्डोल, लेडम, लेम्ना, माइ, लाइको,

मर्क को, मर्क, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स वो, पेट्रोलि, फॉस, पोडो, पल्से, पाइरो, सीपि, युका ।

चिपटा फीका, तिनकी की तरह पीठी जैसा—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, आर्स, वैप्टि, बोरै, सिन्को, साइक्लै, युफोर्बि, एमिग, फेर मेट, ग्लीसरी, इग्नै, कैली सल्फ, नक्स मॉ, पल्से ।

चरबी जैसा, लेई की तरह—आर्न, कार्बो वेज, कॉस्टि, युओनिम, ओलि ऐनि, फॉस, पल्से, ट्रिलि सेर ।

मिरच जैसा—हाइड्रै ।

सुबह को खराब—फैगोप, ग्रैफा, हाइड्रै, नक्स वो, पल्से ।

नमकीन—ऐण्टि क्रू, आर्स, बेल, कैडमि सल्फ, कार्बो वेज, सिन्को, साइक्लै, मर्क को, पल्से, सीपि, सल्फर, जिंक मेट ।

मीठा—ऐगैरि, ऐपो ऐण्ड्रो, बिस्म, चेलिडो, क्युप्रम मेट, डिजि, ग्लीस, मर्क, नाइट्रि ऐसि, फेलाण्ड्रि, प्लम्ब, पल्से, पाइरो, सैबेडि, सेलेनि, स्टैन ।

मसूढ़े

खून का बहना—आसानी से—ऐगैवे, एलूमि, ऐम्ब्रा, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बैप्टि, बेंजो एसिड, बोरै, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, सिस्टस, क्रटैल, ऐचिनै, हीपर, आयोड, क्रियोजो, लैके, मर्क को, मर्क, नाइट्रि ऐसि, फॉस, प्लैटि, सीपि, साइलि, स्टैफि, सल्फ ऐसि, सल्फर, जिंक ।

खून बहे, देर तक दाँत निकलवाने के बाद—आर्स, बोविस्टा, हेमे, क्रिओजो, फॉस, ट्रिली ।

नीली लकीर, किनारे पर—प्लम्ब ।

जलन हो—ऐण्टि पाइरि । देखिए दर्द ।

ठण्डे मालूम हों—कॉकसिनेला ।

दाँतों को चबाना चाहे—फाइटो, पोडो ।

छोटा अर्बुद—कैल्के का, प्लम्ब, थूजा ।

प्रदाह—(फुड़िया Gumboil)—ऐकोन, बेल, बोरै, कैल्के, फ्लो, कैल्के सल्फ, कैमो, हेक्ला, हीपर, क्रियो, मर्क को, मर्क फॉस, रस टॉ, साइलि । देखिये दर्द, सूजन ।

दाँत निकलने के साथ दर्द होना—आर्न, सीपि ।

दर्दीलापन; कचट उत्तेजनीय—ऐलूमि, ऐमो का, अर्जे नाइ, ब्रैप्टि, बेल, बोरै, कैल्के का, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, डोलिकोस, हीपर, क्रिओजो, मर्क, नाइट्रि ऐसि, प्लैंट, रस टॉ, साइलि, सल्फर, थूजा।

लाल लकीरें—(Strophulus)—ऐण्टि क्रू, एपिस, कैमो, कैली फॉस, पल्से, रस टॉ।

फूलना – (Scorbutic) थुलथुले मुलायम स्पंज जैसा पीछे हटे हों—ऐगैवे, ऐलूमि, ऐण्टि क्रू, आर्न, आर्स. बैप्ट, कार्बो वेज, सिस्टस, एचिने, हीपर, आयोड, कैली का, कैली क्लो, काली फॉस, क्रिओजो, मर्क, म्यूरि एसिड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, फॉस, स्टैफि, सल्फर, थूजा।

फूलना—एपिस, बेल, बिस्म, कैल्के कार, कॉस्टि, कैमो, सिस्टस, ग्रैफा, क्रियोजो, लैके, मैग म्यूर, मर्क को, मर्क डलिस, मर्क आयोड, रूबर, मर्क वि, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, फॉस, प्लम्ब, रोडो, सीपि, साइलि, स्ट्रैफि, सल्फर, टेरेवि।

घाव होना—(Pyorrhoea Alveolaris)—ऑरम, बैप्टि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिस्टस, एमेटि, कैली का, क्रियोजो, मर्क को, मर्क नाइट्रि ऐसि, फॉस, प्लैटि, सीपि, साइलि, स्टैफि, सल्फ, एसिड, थूजा।

दाँत

दाँत के घाव (Alveolar abscess)—हीपर, मर्क, साइलि।

काला गहरे रंग का भुरभुरा—एण्टि, क्रू, क्रियोजो, मर्क, फॉस, हाइड्रो, स्टैफि, सिफ्लि, थूजा।

सड़ना, गलना समय के पहले—कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, कैल्के फॉस, कॉकु, फ्लो एसिड, हेक्ला, क्रियोजो, मर्क, मेजे, फॉस, साइलि, स्टैफि, ट्यूबर।

सिरों का सड़ना—मर्क, स्टैफि।

जड़ का सड़ना—मर्क, मेजे, साइलि, सिफ्ली, थूजा।

प्याले की तरह, छोटा होना, दरारेदार—स्टैफि, सिफ्लि।

दाँत निकलना—(दाँत निकालने में कठिनाई, देर लगे)-ऐकोन, बेल, बोरैक्स, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कॉस्टि, कैमो, चिरैन्थ, कॉफि, क्युप्रस, जेल्से, हेक्ला, कैली ब्रो, क्रियोजो, मैग फॉस, मर्क, नक्स वॉ, पासीफ्लो, फाइटो, पोडो, पल्से, साइलि, सोलेन निग्रम, स्टैफि, सल्फर, टेरेबि, जिंक ब्रो, जिंक मेट।

मस्तिष्क स्नायु मण्डल के लक्षणों के साथ—ऐकोन, ऐगैरि, बेल, कैमो, सिमिसि, साइप्रि, डोलिकोस, हेलेबो, कैली ब्रो, पोडो, सोलेन निग्रम, टेरेबि, जिंक।

मसूढ़ों के दाब के साथ—सिकू, फाइटो, पोडो।

कब्ज, सर्वाङ्ग उत्तेजना, रोग प्रवणता (Cachexia) के साथ—क्रियोजो, नक्स वॉ, ओपियम।

आक्षेप अकड़न के साथ—बेल, कैल्के कार्ब, कैमो, साइकूटा, क्यूप्रम, ग्लोनो, कैली ब्रो, मैग फॉस, सीलेन निग्रम, स्टैन, जिंक ब्रो।

मस्तिष्क में खून दौड़ जाने का भय हो—एपिस, हेलेबो, ट्युबर, जिंक म्यूर।

खाँसी के साथ—ऐकोन, बेल, फेर फॉस, क्रियोजो।

बहरापन, कान प्रदाह के साथ, नाक के तनाव के साथ—चिरैन्थ।

दस्त के साथ—इथू, कैल्के कार्ब, कैल्के फास, कैमो, फेर फॉस, इपिका, क्रियोजो, मैग कार्ब, मर्क, ओलियैंड, फास्फो, पोडो, पल्से, रियूम, साइलि।

आँखों के लक्षणों के साथ - बेल, कैल्के कार्ब, पल्से।

अनिद्रा के साथ—बेल, कैमो, कोफि, साइप्रीपी, क्रियोजो, पासी फ्लो, स्कूटेल टेरेबि।

खाल उधड़ना (Intertigo) के साथ—कॉस्टि, लाइको।

दूध न हजम होने के साथ—इथूजा, कैल्के कार्ब, मैग म्यूर।

लार बहने के साथ—बोरैक्स।

शरीर की खट्टी गन्ध, पीला चेहरा, चिड़चिड़ापन के साथ—क्रियोजो।

कमजोरी, रक्तहीनता, पीलापन, अशान्ति, चंचलता, तेजी से इधर-उधर लिवा जाने की इच्छा—आर्स।

कृमि रोग के साथ—सिना, मर्क, स्टैन।

ठंडे जान पड़ें—काकसिनेला, गैम्बो, फॉस एसिड, रियूम।

ढीले जान पड़ें ऐलूमि, ऐमो कार्ब, आर्न, बिस्म, कैल्के फ्लो, कार्बो वेजि, हायोसि, लाइको, मर्क को, मर्क, नाइट्रि एसिड, प्लैण्टै, रस टॉ, साइलि, जिंक।

सुन्न जान पड़ें—प्लैटिना।

ठंडक, दबाने, स्पर्श से उत्तेजनीयता—ऐकोन, आर्स, बेल, कार्बो वेज, कैमो, कोफि, फ्लो एसिड, जिम्नोक्लै, मर्क, पार्थे, प्लैण्टै, स्टैफि। देखिए दर्द।

अधिक लम्बे जान पड़ें—ब्रायो, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, क्लिमै, लाइको, मैग कार्ब, मर्क, मेजे, पार्थे, प्लैण्टै, रैटानहि, रस टॉ।

गरम लगें—फ्लोर एसिड।

दाँतों का नासूर—कैल्के फ्लो, कॉस्टि, फ्लोर एसिड, नैट्र म्यूर, साइलि, स्टैफि, सल्फर।

दाँत पीसना—एपिस, बेल, कैने इण्डि, साइकू, सिना, हेलेबो, माइगे, फाइजास्टि, प्लैण्टै, पोडो, सैण्टो, स्पाइजे, जिंक।

दाँत दर्द-(Odontalgia) साधारण दवायें—ऐकोन, ऐगैरि, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि पाइरीन, एसिड, आर्स, ऐट्रोपि, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, क्लिमै, कॉकसिनेल, काफि, कोली, फेर मे, जेल्से, ग्लोनो, हेक्ला, इग्नै, कैली कार्ब, क्रिओजो, लैकेसिस; मैग कार्ब; मैग फॉस; मर्क, नक्स वो, ओक्जे ऐसिड, फॉस, फाइटो, प्लैण्टे, पल्से, सीपिया, स्पाइजे, स्टैफि, टेबे; थेरि, थूजा।

कारण—काफी पीना—कैमो; इग्नै।

ठंडे पानी से नहाने से—ऐण्टि क्रू।

दाँत सड़ जाने से—कैमो, क्रियोजो, मर्क; मेजे, स्टैफि।

दाँतों का गूदा सूजा हो—बेल।

बाहरी हवा लगने से या ठडक लगने से—ऐकोन; बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैमो, मर्क, पल्से, रोडो, साइलि।

दाँत उखाड़ने के बाद—आर्न, स्टैफि।

मासिक-धर्म के समय—बैराइटा कार्ब, कैमो; सीपिया; स्टैफि।

स्तन्यकाल में, शिशु को दूध पिलाने से—सिन्को।

गर्भावस्था में—एलूमि, कैल्के कार्ब, कैमो, मैग कार्ब, नक्स मॉ, पल्से, रैटनहि, सीपि, टैबे। देखिये स्त्री-जननेन्द्रिय मण्डल।

चाय से—थूजा।

तम्बाकू पीने से—क्लिमै, इग्ने, प्लैण्टै, स्पाइजे।

कपड़ा धोने से—फॉस।

स्थान—सड़ा हुआ (दाँत का) स्थान—ऐण्टि क्रू, कैमो, क्रियोजो, मैग कार्ब, मर्क मेजे, नक्स वो, स्टैफि, थूजा।

नेत्र दाँत—थेरीडि।

निचला—ऐण्टिपाइरी, कॉस्टि, मर्क, स्टैफि; वरबैस्क।

चबाने वाले दाँत—ऐण्टिपाइरी, ब्रायो, कॉस्टि।

दाँतों की जड़ में—मेफाइटिस, मर्क, स्टैफि।

अच्छे दाँत—आर्जे नाइट्रि, कॉस्टि, कैमो, प्लैटै; स्पाइजे, स्टैफि।

ऊपरी दाँत—बेल, फ्लोर ऐसि।

प्रकार—स्नायुशूल की तरह, प्रदाहित—ऐकोन, ऐरैनि, आर्स, बेल, सेड्रोन; कैमो, कॉफि, डोलिकोस, फेर, पिक्रि, इग्नै, मैग कार्ब, मैग फॉ, मर्क बाइ, प्लैन्टै, स्पाइजे। देखिये दाँत की पीड़ा (Odontalgia)।

वात रोग जैसा—ऐको, ब्रायो, कैमो, चिनि सल्फ, कोल्चि, गुवाइक, मर्क, पल्से, रोडो।

दर्द का प्रकार – टीस—कैमो, क्रिओजो, मर्क, मेजे, स्टैफि।

जलन—आर्स, बेल, साइलि।

खींचन, झटकन, फटन—बेल, कैमो, चिमैफि, कॉफि, साइक्लै, क्रिओजो, मेफा, मर्क, नक्स वॉ, प्रुनस, स्पिनो, पल्से, रोडो, सीपि, स्पाइजे, सल्फर।

कुरतन, छेदन—कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, मेजे, नक्स वो, प्लैंटे, पल्से, साइलि, स्टैफि।

सामयिक—आर्स, चिनि सल्फ, कॉफि।

धक्का जैसा—ऐमो कार्ब, ऐरैनि, नक्स वो।

गोली मारने जैसा—कैल्के कार्ब, कैमो, कैली कार्ब, मैग कार्ब, नक्स वॉ, फॉस, सीपि, साइलि।

चिलकन—ब्रायो, कैमो, नाइट्रि एसिड, पल्से।

टपकन, थरथराहट—ऐकोन, बेल, कॉक्सिनेलि, ग्लोनो, कैली कार्ब; मैग कार्ब, मर्क, साइलि। देखिये दन्तपीड़ा (Odontalgia)।

साथ के लक्षण—मन का घबड़ा उठना—ऐकोन, कैमो।

गरमी, प्यास, गशी आना - कैमो।

पलकों का स्नायुशूल, परावर्तित क्रियायें—प्लैण्टे।

सिर में खून दौड़ना, दाँतों का ढीला जान पड़ना—हायोसि।

दाँतों का चोटीलापन—बेल, मर्क, प्लैटे, जिंक मेटा।

जबड़ों और गालों के आसपास फूलना—बेल, बोरै, कैमो, हेकला, हीपर, लाइको, मर्क, साइलि। देखिये मसूढ़े की फोड़िया—(Gumboil)।

घटना-बढ़ना—आधी रात के बाद—आर्स।

रात में—ऐण्टि क्रू, ऐरैनि, बेल, कॉस्टि, कैमो, क्लिमै, मैग कार्ब, मैग फॉस, मर्क, मेजे, पल्से, सीपि, साइलि, सल्फर।

नाक छींनकने से—कूलेक्स, थूजा।

मौसम बदलने से—ऐरैनि, मर्क, रोडो।

ठण्डे भोजन से, पेय से—कैल्के कार्ब, लैके, मैग फॉस, मर्क, नक्स वॉ, स्टैफि, सल्फर।

ठण्डक से—ऐण्टि क्रू, कैल्के कार्ब, हायोसि, लाइको, मैग कार्ब, मर्क, नक्स वॉ, प्लैण्टै, साइलि, स्पाइजे, सल्फर।

छूने से—बेल, कैल्के फ्लोर, कॉस्टि, सिन्को, कैली कार्ब, मैग म्यूर, मेजे, प्लैण्टै, स्टैफि।

खाने से—एण्टि क्रू, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैमो, चिमैफि, कैली कार्ब, मैग फॉस, मेजे, नक्स वॉ, पल्से, साइलि, स्पाइजे, स्टैफि, जिंक।

मानसिक या शारीरिक परिश्रम से—चिमैफि, नक्स वॉ।

लेटने; आराम करने, शान्त रहने से—ऐरैनि, मैग कार्ब, नैट्र सल्फ, रैटनहि, सीपि।

तीखी आवाज से—थेरिडि।

तम्बाकू पीने से—क्लिमै, इग्नै, स्पाइजे।

गरम भोजन से—बिस्म, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, क्लिमै, कोफि, मर्क, पल्से, साइलि।

दो भोजन करने के बीच वाले समय में—इग्नै।

सुबह को—हायोसि।

निम्न ताप, साधारण तौर पर—कैमो, मर्क, प्रून स्पि, पल्से, सीपि।

अधिक हवा के मौसम से, बिजली तूफान के समय—रोडो।

घटना—ठण्डी हवा से—नैट्र सल्फ, पल्से।

ठण्डी चीज पीने से—बिस्म, ब्रायो, चिमैफि, कोफि, फेर मे, फेर फॉ, नैट्र सल्फ, पल्से।

खाने से—इग्नै, प्लैण्टै, स्पाइजे।

गरम पेय से—मैग फॉ।

लेटने से—स्पाइजे।

मुँह खोलकर हवा खींचने से—मेजे।

बाहरी दाब से—ब्रायो, सिन्को।

दांतों के दाब से—सिन्को, ओलि, ऐनि, स्टैफि।

गाल मलने से—मर्क।

पसीना होने से—कैमो, चेनापो, ग्लॉसि एफिस।

इधर-उधर टहलने से—मैग का, रैटनहिया।

निम्न ताप से—आर्स, सिन्को, लाइको, मैग फॉस, मर्क, नक्स वॉ।

तर अंगुलियों से—कैमो।

रिग साहेब का रोग विशेष—कैल्के रीनै, मर्क, साइलि, मैरि।

पपड़ी या मैल जमा होना—एलैंथस, ऐलूमि, आर्स, बैप्टि, एचिनै, हायोसि, आयोड, कैली फॉ, मर्क कॉ, म्यूर एसिड, फॉस एसिड, प्लैण्टै, रस टॉ।

———

गला

एडिनोयड-ग्रन्थि वृद्धि (Adenoid Vegetations)—एग्रैफिस, वैराइटा का, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, क्रोमि एसिड, आयोड, कैली सल्फ, लोबे सिफिलिटिका मेज, सोरि, सैंग्वि नाइ, सल्फर, थूजा।

झिल्ली का प्रदाह, रोहिणी (Diphtheria)—साधारण औषधियाँ—एलैन्थ, एपिस, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, वैप्टि, बेल, ब्रोमि, कैल्के क्लोर, कैन्थे, कार्बो एसिड, क्राटै, डिफ्थे, एचिने, गुवाइक, कैली बाइक्रो, कैली क्लो, कैली म्यूर, कैली परमैंगे, लैक कैना, लैके, लैक्नैन्थ, लेडम, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मर्क कार, मर्क साइ, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रुबर, म्यूर एसिड, नाजा, नाइट्रि एसिड, फाइटो, रस टॉ, सैंग्वि, सल्फ, टैरैकुबे, विंका, जिंक मेट।

प्रकार गति भङ्ग (Ataxic) आर्स, बेल, लैके, मोस्क, फॉस।

स्वरयन्त्र सम्बन्धी (Laryngeal)—एपिस, ब्रोमि, कैन्थे, क्लोरम, डिफ्थे, हीपर, आयोड, कैली बाइक्रो, लैक कैना, मर्क साइ, पेट्रोलि फॉस, सैम्बु, स्पांजि।

सांघातिक (Malignant)—एलैन्थ, एपिस, आर्स, कार्बो एसिड, जिनि आर्स क्रोटै, डिफ्थे, एचिने, कैली फॉस, लैक कैना, लैके, मर्क साइ, म्यूरि एसिड, पाइरो।

नासिक सम्बन्धी—(Nasal)—ऐमो कार्ब, ऐमो कॉस्टि; कैली बाइ, लाइको, मर्क साइ, नाइट्रि एसिड।

अवस्थाएं—(Conditions)—नीचे की तरफ बढ़े—आयोड, कैली बाइ, लैक कैना, मर्क साइ।

बाईं तरफ से दाहिनी तरफ बढ़े—लैक कैना, लैके, सैबैडि।

दाहिनी तरफ से बाईं तरफ बढ़े—लाइको।

ऊपर की तरफ बढ़े—ब्रोमि।

काली खाँसी (Croup) के साथ—ऐसेटिक एसिड, ब्रोमि, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली म्यूर, लैके, मर्क साइ, फॉस, सैम्बु, स्पांजिया।

लार बहने के साथ (Draling)—लैक कैना, मर्क साइ।

केवल बाहरी लक्षणों के साथ, बिना दर्द के, प्रतिक्रिया की कमी, मूर्च्छा, निद्रा, नशीली अवस्था; नकसीर बहना—डिफ्थे।

झिल्ली प्रदाह अथवा रोहिणी रोग के बाद पक्षाघात के लक्षण—आर्जे नाइट्रि, कॉस्टि, कॉकु, कोनियम, कुरारी, डिफ्थे, जेल्से, कैली फॉस, लैके, ओलियेण्ड, फॉस, प्लम्ब, रस टॉ, सिकेलि।

शुरू से शिथिलता के साथ—एलैन्थ, एपिस, आर्स, बैप्टि, कैन्थे, कार्बो एसिड, क्रोटै; डिफ्थे, कैली परमैं, लैके, मर्क साइ, म्यूर एसिड, फाइटो।

टेंटुआ में झटके के साथ—मॉस्क, सैम्बु।

कम पेशाब के साथ—एपिस, आर्स, कैन्थे, लैक कैना, मर्क साइ, नाजा।

गलनली-अन्ननली (Oesophagus) **जलन, कड़कन**—ऐकोन, ऐमो कॉस्टि, ऐसाफि, आर्स, कैन्थे, कैप्स, कार्बो एसिड, क्रोट टि, जेल्से, आइरिस, मर्क कार, मेजे, ऑक्जे एसिड, फॉस, सैंग्वि, सिनैपि ऐल्बा, स्ट्रिक।

सिकुड़न—एबीज नाइग्रा, ऐलूमि, ऐमो म्यूर, ऐसाफि, बैप्टि, बेल, कैक्ट, कैप्सि, कैजूपु, सिकूटा, कोण्डुरै, जेल्से, हायोसि, इग्ने, लाइसिन, मर्क कार, नाजा, फास, प्लैटि, प्लम्ब, रस टॉ, स्ट्रैमो, वेरेट्र विरि।

सूखापन—एकोन, बेल, कॉक, मेजे, नाजा।

प्रदाह (Esophagitis)—एकोन, ऐलूमि, आर्स, बेल, मर्क कार, नाजा, फॉस, सल्फ एसिड, वेरेट्र ऐल्ब।

दर्द—ऐमो कॉस्टि, कॉकु, जेल्से, फॉस।

आक्षेप, झटका (Esophagismus)—एकोनिटिन, आर्जे साइ; ऐसाफि, बैप्टि, बेगइटा कार्ब, बेल, कैन्थे, सिकू, हायोसि, इग्नै, लैके, लाइसिन, मर्क कार, नाजा, स्ट्रैमो, स्ट्रिक, वेरेट्र विरि। देखिये गलकोष।

मुख गह्वर— **सुन्न होना**—कैली ब्रोमे।

जलन, गरमी—ऐकोन, इस्क्यु, बेल, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो एसिड, जेल्से, फॉस, फाइटो, सिनैपि नाइग्रा, स्टिलि।

सूखापन—ऐकोन, इस्कू, बेल, कैन्थे, कैप्सि, जेल्से, ग्लैंस सिने, नक्स मॉ, फॉस, फाइटो, सैबेडि, सेनेसि।

प्रदाह—एलैन्थ, एपिस, बेल, फेर फॉस, कैली बाइ, मेन्थोल, मर्क आयोड फ्ले, मर्क सल्फ।

सड़न—मर्क साइ।

लाली—बेल, कार्बो ऐसि, फेर फॉस, जिम्नोक्लै, मेन्थोल, मर्क साइ, मर्क आयोड रूबर, मेजे, नाजा, पल्से।

खुरदरापन उत्तेजना—इस्क्यु, कॉकस, ड्रोसेरा, नक्स वॉ, फॉस, फाइटो।

चनचुनाहट—एकोन, एचिनै, फाइटो।

घाव होना—कोरिडैलिस, कैली बाइ, मर्क आयोड रूबर, नाइट्रि एसिड, सैंग्वि। देखिये गलकोष।

गलकोष फोड़ा (Retropharyngeal)—ऐण्टीपाइरीन, बेल, ब्रायो, हीपर, लैके, मर्क, नाइट्रि ऐसि, फॉस, साइलि।

फोड़ा होने की सम्भावना—कैल्कै का, कैल्के आयोड, फेरम फॉस, कैली आयोड, साइलि।

चिपटी हुई खुरंडें—इलैप्स, कैली म्यूर।

सुन्न होना—जेल्से, कैली ब्रोम।

जलन, छरछराहट—एकोन, इस्कू, ऐमो कास्टि, एपिस, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, ऑरम, आर्स, बैराइटा का, बैल, कैम्फो, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो एसिड, कॉस्टि, कोकेन, कोनियम, ग्लीसरीन, ग्वाइकम, हाइड्रै, आइरिस, कैली बाइ, कैली परमैंगे, क्रियोजो, लाइको, मर्क कार, मर्क आयोड फ्लै, मर्क, मेजे, नैट्र आर्स, नाइट्रि एसिड, फॉस, फाइटो, पॉपुलस कैण्डिकैन्स, क्विला, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, सेनेसि, सल्फर, वाइयेथि।

ठण्डापन—सिस्टस।

संकोचन आक्षेप—ऐकोन, इस्कू, ऐगैरि, ऐलूमि, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐरम, ऐसाफि, बैप्टि, बेल, बोथ्रोप्स, कैक्ट, कैल्के का, कैजू पू, कैन्थे, कैप्सि, सिकूटा, कोकेन, क्युप्र मेट, हायोसि, इग्नै, लैके, मर्क कार, मेजे, मॉर्फी, नक्स वॉ, फाइटो, प्लम्ब मेट, पल्से, रैटानहि, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, सैरकोलै ऐसि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक, सुम्बू, वैलेरि।

निगलने में कष्ट (Dysphagia) पीड़ा, साधारण औषधियाँ—एगैरि, एलेन्थ, ऐलूमिना, एमिग पर्सि, ऐनाका, एपिस, आर्स, ऐट्रोपि, बैप्टि, बोथ्राप्स, ब्रायो, कैजूपू, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो एसिड, सिकूटो, कॉकू, कोनियम, कोकेन, कुरारी, डुबो, फ्लोर एसिड, ग्रेटि, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हाइयोसि, इग्नै, आयोड, कैली बाइक्रो, कैलिब्रोमे, कैली कार्ब, कैली क्लोर, कैली म्यूर, कैली परमैंगे, लैक कैना, लाइको, लाइसिन, मर्क कार, मर्क साइ, मर्क आयोड फ्लै, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, मर्क बाइ, नैट्र फॉ, नाइट्रि एसिड, फॉस, फाइटो, पोपू कैन, सोरि, सैंग्वि नाइट्रि, सेनेसि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक।

केवल पतली चीज निगल सके—बैप्टि, बैराइटा कार्ब, कैमो, नैट्र म्यूर, प्लम्ब, साइलि।

केवल ठोस चीज निगल सके, पतली चीज कठिनाई से नीचे उतरे—ऐलूमेन, बेल, बोथ्राप्स, ब्रायो, कैक्ट, कैन्थे, क्रोटै, जेल्से, हायोसि, इग्नै, लैके, लाइसिन, मर्क कार, साइलि।

खाने, पीने से गला घुटे—एबीज नाइग्रा, ऐनाका, कैजुपू, कैना सैटाइ, ग्लोनो, कावा, मर्क को, म्यूरि एसिड, निकोल, नाइट्रि एसिड, फाइटो, सैण्टो, सुम्बू।

खाना "गलत रास्ते" में उतरे—ऐनाका, कैना सैटाइ, कैली का, मेफाइटिस, नैट्र म्यूर।

खाना नाक के मार्ग में लौट आवे—बेल, डिफ्थे, कैली परमैंगे, लैके, लाइको, मर्क कार, मर्क वाइ।

पतली चीज गड़गड़ाहट की आवाज के साथ नीचे उतरे—आर्स, क्युप्र ऐसेटि, हाइड्रोसि एसिड, लॉरो, थूजा।

खाना, पीना जल्दी ही निगलना—ऐकोना, बेल, ब्रायो, कोफि, हेलेबो, हीपर, ओलियांड, जिंक म्यूर।

जमा होना-झिल्ली का—ऐसे एसिट, एपिस, ब्रोमि, कार्बो एसिड, कैली बाइ, कैली म्यूर, कैली परमैंगे, लैके, मर्क साइ, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, फाइटो। देखिये झिल्ली प्रदाह (डिफ्थीरिया)।

सूखापन—ऐकोन, इस्क्यु, ऐगैरि, ऐलूमि, एसिड, आर्स, एसाफि, एट्रोपिन, बेल, ब्रायो, कैन्थे, कैप्सि, कॉस्टि, सिस्टस, कोकेन, कॉकु, ड्रोसेरा, डुबो, फेर फॉ, गुवाइक, हीपर, हायासि, जस्टीसि, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली फ्लोर, लैके, लेम्ना माइनर, लाइको, मर्क कार, मर्क पेरे, मर्क, मेजे, मोर्फि, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि ऐस, नक्स मॉ, ओनोस्मो, फॉस, फाइटो, पल्से, क्विला, रस टॉ, सैबैडि, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, सार्को ऐसि, सीपि, स्पांजि, स्ट्रिक, सल्फर, वाइयेथि।

शोथ—ऐलै, एपिस, आर्स, कैली परमैंग, लैके, मैगफॉस, म्यूरि एसिड, नैट्र आर्स, फॉस, फाइटो, रस टॉ।

विसर्प रोग—एपिस, बेल, कैन्थे, युफोर्बि, लैके, रस टॉ।

गुल्म वायु (Globus Hystericus)—ऐम्ब्रा, ऐक्लि, एसाफि, बेल, जेल्से, हायोसि, इग्नै, कैली फॉ, लैके, लोबे इन्फ्ला, मैग म्यूर, मैन्सिन, मोस्क, नक्स मॉ, प्लैटि, रैफे, वैले। (देखिये गुल्म वायु—Hysteria)।

खखारना, गला साफ करते रहना—इस्क्यु, ऐलूमि, ऐमो म्यूर, आर्जे मे, आर्जे नाइट्रि, ऐरम, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिस्टस, कॉकु, कॉक्कस, कोनि, कोरैलि, युकैलि, गुवाइक, जिम्नोक्लै, हीपर, हिपैटि, हाइड्रैस्ट, इबेरिस, जस्टीसि, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, कैली म्यूर, लैके, लाइको, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, फाइटो, सोरि, सेलेनि, सीपि, सिलिफ साइ, स्पांजि, स्टैन, सल्फर, टैबे, ट्रिफोलि प्रै, विन्का माइ, वायोला ट्रि, वाइयेथि। देखिये जीर्ण गलकोष प्रदाह (Pharyngitis)।

लेसदार, घृणित ढोंके खखारना – ऐगैरि, कैली बाइ, कैली म्यूर, मैग कार्ब, मर्क आयोड रूबर, सोरि, सिकेल, साइलि। देखिये Follicular Pharyngitis क्षुद्र-गह्वर पूर्ण गलकोष प्रदाह।

घृणित मवाद खँखारना—ऐण्टि-पाइरोन, हीपर, लाइको, साइलि।

चमकीला, चिमड़ा, चिपचिपा, चिकना श्लेष्मा खखारना, कठिनाई से ऊपर आवे—इस्कू, ऐलो, ऐलूमि, ऐमो ब्रो, ऐमो म्यूर, आर्जे नाइट्रि, ऐरम, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिस्टस, कोका, कॉक्कस, युफ्रेसि, हाइड्रै, आइबेरिस, कैली बाइ, कैली कार्ब, लैके, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, माइरि, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फॉस ऐसि, फाइटो, सोरि, रूमेक्स, सैंग्वि, सेलेनि, सीपि, सिलिफ साइ, स्टैन।

खोखलापन मालूम पड़े मानो गलकोष है ही नहीं—लैके, फाइटो।

लगातार निगलने की प्रवृत्ति—इस्कू, ऐसाफि, बेल, कॉस्टि, लैक कैना, लैके, लैक्टि ऐसिड, लाइसिन, मर्क आयोड फ्ले, मर्क, माइरि, फाइटो, सुम्बु, वाइयेथि।

प्रदाह-गलकोष प्रदाह (Pharyngitis)—क्षीणता—(Sicca)—इस्कू, ऐलूमि, ड्रबो, आर्जे नाइट्रि, [illegible] आयोड; कैली बाइ, नक्स वॉ, सैबाल।

प्रदाह, जुकामी तीव्र—ऐकोन, इस्कू, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बेल, ब्रायो, कैन्थे, कैप्सि, कॉस्टि, सिस्टस, युकैलि, फेर फॉस, जेल्से, ग्लौसरीन, गुवाइको, जिम्नोक्लै, हीपर, आयोड, जस्टी, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली म्यूर, लैके; लैकनैन्थि, लेडम, मेन्थोल, मर्क कार, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क, नाजा, नैट्र आर्स, नैट्र आयोड, नक्स वॉ, फाइटो, स्क्विला, सेलि एसिड, सैंग्वि नाइट्रि, सैंग्वि, सिला, वाययेथि।

प्रदाह, तीव्र जुकामी प्रवृत्ति—ऐलूमेन, बैराइटा कार्ब, ग्रेफा, लैके, सल्फर।

प्रदाह; जुकामी, जीर्ण—इस्कू, ऐलूमि, ऐमो ब्रो, ऐमो कास्टि, अर्जे आयोड, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐरम ऑरम, बेराइटा कार्ब, ब्रोमि, कैल्के फॉस, कैने एण्डि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिनैबे, सिस्टस, कॉक्कस, कूबेबा, इलैप्स, फेर फॉस, ग्रेफा, हीपर, हाइड्रै, आयोड, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली क्लोर, लैके, लाइको, मेडो, मर्क को, मर्क आयोड फ्ले, मर्क, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओक्जे एसिड, पेन्थोर, पेट्रोलि, फॉस, रूमेक्स, सैबैडि, सैबाल, सैंग्वि, सिकेल, सेनेगा, सीपि, स्टैन, सुम्बुल, वाइयेथि।

प्रदाह, क्षुद्र—गह्वर पूर्ण (Follicular), तीव्र—इस्कू, एपिस, बेल, कैप्सि, फेर फॉस, आयोड, कैली बाइ, कैली म्यूर, मर्क, फाइटो, सैंग्वि, नाइट्रि, वाइयेथि।

प्रदाह, क्षुद्र गह्वर, पूर्ण जीर्ण, पादरी का गला बैठना—(Clergyman's sore throat)—इस्कू, ऐलूमि, ऐमो ब्रो, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स आयोड, ऐरम, कैल्के फ्लो, कैल्के फॉ, कैप्सि, कॉस्टि, सिनैबे, सिस्टस, ड्रोसे, हीपर, हाइड्रै, इग्नै, कैली बाइ, कैली म्यूर, लैके, मर्क साइ, मर्क आयोड रूबर, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस, फाइटो, सैंग्वि नाइट्रि, स्टिक्टा, स्टिलि, सल्फर, वाइयेथि।

प्रदाह, विसर्पिका, विषयक (Herpetic)—एपिस, आर्स, बोरेक्स, हाइड्रै, जैकैरा, कैली बाइ, कैली क्लोर, लैके, मर्क आयोड फ्ले, नैट्र सल्फ, फाइटो, सैलि एसिड।

प्रदाह, वात सम्बन्धी—ऐकोन, ब्रायो, कोल्चि, गुआइक, फाइटो, रस टॉ।

प्रदाह; दूषित—ऐमो का, हीपर, म्यूर एसिड, साइलि।

प्रदाह, क्षय रोग सम्बन्धी—मर्क आयोड रूबर।

बढ़ना—ठंडक से—सिस्टस, फ्लोरि ऐसि, हीपर, लाइको।

पीने से, गरम या कुनकुनी चीज—लैके, मर्क आयोड फ्ले, फाइटो।

मासिक धर्म से—लैक कैना।

दाब से—लैक, मर्क को।

सीने से—लैके, लाइको।

पैर का पसीना दबने से—बैराइटा का, सोरि, साइलि।

निगलने से, खाली—ऐण्टिपाइ, बैराइटा का, क्रोटै, डोलिकोस, हीपर, जस्टीसिया, लैक कैना, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क, फाइटो, सैवैडि।

निगलने से, पतली चीज—बेल, ब्रायो, इग्नै, लैके।

निगलने से, ठोस चीज—बैप्टि, मर्क, सल्फ, मोर्फी। देखिए निगलना डेग्लूटिशन (Deglutition)।

निगलने से मीठी चीज—स्पांजिया।

निम्न ताप से—क्रोकस, आयोड, लैके, मर्क।

तीसरे पहर—लैके।

बिस्तर में—मर्क आयोड फ्ले, मर्क।

निगलने के सविराम काल में—कैप्सि, इग्नै।

बाईं तरफ—लैके, मर्क आयोड रूबर, सैवैडि।

बाईं तरफ से दाहिनी तरफ—लैक कैना, लैके, सैबैडि।

दाहिनी तरफ—बैराइटा का, बेल, गुआइको, लाइको, मैग फॉस, मर्क आयोड फ्ले, मर्क, निकोल, फाइटो, सैंग्वि, सल्फर।

घटना—ठंडी हवा भीतर खींचने से—सैंग्वि।

निगलने से—जेल्से, इग्नै।

तरल पदार्थ घोंटने से—सिस्टस।

तरल पदार्थ घोंटने से कुछ गरम—ऐलूमि, आर्स, कैल्के फ्लोर, लाइको, मॉर्फि, सैबैडि।

ठोस चीज निगलने से—इग्नै, लैकै।

दाने, छाले—हिपोजी, आयोड। देखिए क्षुद्र गह्वर पूर्ण गलकोष प्रदाह।

पक्षाघात, स्नायु दोष—ऐलूमि, बेराइटा म्यूर, बेल, कॉस्टि, कॉक्., कोनि, कुरारी, जेल्से, हीपर, हायोसि; इग्नै, लैके, लोबे इफ्ला, लाइको, मर्क, मोर्फा, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, प्लम्ब मेट, पोप्यूलस कैण्डि, रस टॉ, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फर।

संवहन क्रिया का विपरीत होना—एम्ब्रा, ऐसाफि।

ढोंके या गुल्लो का संवेदन—ऐलूमि, बैराइटा कार्ब, बेल, कार्बो वेज, ग्रैफा, हीपर, इग्नै, लैके, लोबे इन्फ्ला, मर्क आयोड फ्ले, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ; प्लम्बम ऐसेटि, फाइटो, पल्से, रुमेक्स, सल्फर, वाइयेथि।

फुन्सियाँ—इथूजा। देखिए घाव होना।

कच्चापन, खुरदुरापन, खराश—ऐकोन, इस्कू, ऐलूमि, ऐमो कार्ब, ऐमो कॉस्टि, ऐमो म्यूर, आर्जे नाइट्रि, ऐरम, बेराइटा कार्ब, बेल, ब्रायो, ब्रोमि, कार्बो वेज, कॉस्टि, कॉक्कस, कोनि, कुबेबा, ड्रोसेरा, फैगोपाइरम, जेल्से, हीपर, हिपैटि, हॉमेर, हाइड्रै, आयोड, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, लैक्टि एसिड, मर्क साइ, मर्क, रुमेक्स, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, सीपि, स्टिक्टा, सल्फर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओनोस्मो, पेन्थोर, फॉस्फो, फाइटो, पॉप्यूलस कैण्डि, पल्से।

लाली—ऐकोन, इस्कू, बेल, फेर फॉस, जिन्से, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रुबर, मर्क नाइट्रि, मर्क सैलि एसिड, सल्फर।

लाली, गहुरा रंग, नीलापन, चोट लगने जैसा—एलैन्थ, ऐलूमि, ऐमो कार्ब, ऐमो, कॉस्टि, एमिग पर्सि एपिस, ऐरैगै, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बैप्टि, बेल, कैन्थे, कैप्सि, क्रोटै, डिफ्थे, जिम्नोक्लै, लैके, मर्क कार, म्यूर एसिड, नाजा, नैट्र आर्स, पेन्थोर, फाइटो, पल्से, वाइयेथि, जिंक कार्ब।

लाली, वार्निश जैसा चमकीलापन—ऐलूमि, एपिस, ऐरैगै, बेल, सिस्टस, हाइड्रै, कैली बाइक्रो, लैक कैना, फॉस।

ढीलापन—इस्कू, ऐलूमेन, ऐमो म्यूर, बेराइटा कार्ब, कैल्के फॉस, युकैलिप, पेन्थोर।

उत्तेजनीय, दर्दीलापन, कोमल—एकोन, इस्कू, ऐलैंथ, एपिस, आर्जे मेटा, आर्जे नाइट्रि, आर्नि, ऐरम, एट्रोपि, बेराइटा कार्ब, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के फॉ, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो एसिड, कॉस्टि, डोलिकोस, फैगोपा, फेर फॉ, फ्लोर एसिड, ग्रैफा, जिम्नोक्लै, हीपर, होमै, हाइड्रै, इग्नै, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली आयोड, कैली परमैंग, लैक कैना, लैके, लैकनैन्थ, लेडम, लाइको, मेंथोल, मर्क कार, मर्क साइ, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रुबर, मर्क म्यूरि ऐसि, नाजा, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ,

ओक्जै ऐसि, पेट्रोलि, फॉस, फाइटो, पॉपू, कैन, क्विलाया सैपो, रस टॉ, सैबाडि, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, स्पांजि, सल्फर, ट्रिफोलि, वरबैक्स, वाइयेथि।

दर्दीलापन, उत्तेजनीयता धूम्रपान वालों का—इस्कु, आर्जे नाइट्रि, कैप्सि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ।

आक्षेप: झटके—बेल, कैन्थे, सुम्बुल। देखिए संकुचन।

गड़न, चुभन, खपच्ची जैसा दर्द जो कानों तक बढ़े, निकलने, जम्हाई लेने इत्यादि से अधिक हो—ऐगैरि, ऐलूमि, आर्जें नाइट्र, डोलिकोसि, फेर आयोड, जेल्से, गुवाइक, हीपर, कैली बाइ, कैली कार्ब, लैक कैना, नाइट्रि ऐसि, फाइटो, सोरि, साइलि, स्टैफि।

तनाव कड़ापन—इस्कु, कैली म्यूर, मैग फा, मेजे, नक्स मॉ, फाइटो, रस टॉ। देखिये संकुचन।

फूलन—एकोन, इस्कु, एलैन्थ, एपिस, आर्जे नाइट्रि, ऐरम, बैप्टि, बैराइटा कार्ब, बेल, कैन्थे, कैप्सि, क्रोटै, जिम्नोक्लै, हीपर, कैली बाइ, कैली म्यूर, कैली परमैंगे, लैक कैना, लैके, मर्क का, मर्क साइ, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क, नाजा, नैट्र आर्स, फाइटो, सैबैडि, सैंग्वि, वेस्पा, वाइयेथि। देखिए प्रदाह।

उपदंश—ऑरम, बेल, सिनैबे, फ्लो ऐसि, हाइड्रै, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क कार, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क नाइट्रो, मेजे, नाइट्रि ऐसि, फाइटो, सल्फर।

गुदगुदी, बाल जैसी—इस्कु, ग्लै, ऐलियम सैटि, एब्रो, आर्जे नाइट्रि, कॉस्टि, ड्रोसे, हीपैटि, कैली बाइक्रो, लैके, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, प्यूलेक्स, सैबैडि, सैंग्वि, सल्फर, वैलेरि, युका।

घाव होना—एलैन्थ, एमो का, एपिस, एरैलि, सिनाबै, हाइड्रै, हाइड्रैस्टि म्यूरि, कैली बाइ, कैली म्यूर, लैके, मर्क कार, मर्क साइ, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, फाइटो, सैंग्वि, विन्का माइ।

घाव, कठोर, मुखक्षत रूपी-कैन्थे, यूकैलि, हाइड्रैस्टि म्यूरि, नाइट्रि एसिड।

घाव, गलित, गैंग्रीन वाले—एलैन्थ, ऐमो कार्ब, आर्स, बैप्टि, क्रोटै, एचिनै, कैली क्लोर, कैली परमैंगे कैली नाइट्रि, लैके, मर्क साइ, मर्क, म्यूरि एसिड, साइलि।

घाव, पारा युक्त—हीपर, हाइड्रै, लाइको, नाइट्रि एसिड।

घाव, उपदंशीय—ऑरम म्यूर, कैल्के फ्लो, फ्लोरि एसिड, हिपोजो, जेंका गुवाले, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, लाइको, मर्क को, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोडे रूबर, मर्क, नाइट्रि एसिड, फाइटो, स्टिलि।

शिरायें, सिकुड़ना—इस्कु, ऐलो, बैराइटा म्यूर, हैमे, फाइटो, प.से।

तालुमूल (Tonsils)—फोड़े (Peritonsillar)—कैल्के सल्फ।

जमा होना मलाईदार तालुमूल, काग, कोमल तालु तक फैले—नैट्र फॉस।

गहरे रंग का, सूखा, सिकुड़नदार—आर्स।

गहरे रंग का, सड़नवाला हल्का—बैप्टि।

हल्का भूरा, ला कुचैला, चमड़े जैसा जो तालुमूल, काग, गलकोष तक फैला हो—फाइटो।

हल्का भूरा, मोटा, अंगारे जैसा लाल किनारा—एपिस।

हल्का भूरा, पिछले छेदों तक बढ़े और वायु मार्ग तक, बाद में बैगनी काले रंग का हो जाय—एचिने।

हल्के भूरे रंग का धब्बा, तालुमूल के ऊपर—कैली म्यूर।

हल्का भूरा, मोटा, सुतड़े जसा किनारे, चिपक हों या न चिपके हों—मर्क बाइबस।

हल्का भूरा, सफेद, ग्रन्थियों के गढ़े में—इग्ने।

हल्का भूरा पीला-सा, जो आसानी से उधड़ जाये, बायीं तरफ दूषित—मर्क आयोडे रूबर।

चकत्तेदार दाहिनी तरफ के तालुमूल और प्रदाहित मुख गह्वर में जो आसानी से उधड़ जाये—मर्क आयोडे फ्ले।

खोखले स्थानों में गुल्ली की तरह श्लेष्मा जमा होता रहे—कैल्के फ्लो।

चमकीला, शीशे जैसा, सफेद या पीला धब्बा—लैक कैना।

मोटा, बादामी—पीला, जैसे धोया हुआ चमड़ा हो या कड़ा रेशेदार मोती की की तरह, तालुमूल और कोमल तालु तक फैला हो—कैली बाइक्रो।

मोटा, गहरा, भूरा या बादामी-काला—डिफ्थे।

पतला, नकली, हल्के पीले-लाल तालुमूल और मुखगह्वर पर—मर्क सल्फ।

पतला, बाद में गहरे रंग का, सड़ाइन वाला—मर्क साइ।

अधिक बढ़ जाना—कड़ापन - ऐल्यूमेन, आर्स आयोड, ऑरम, बैसि, बैराइटा का, बैराइटा आयोड, बैराइटा म्यूर, ब्रोमि, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, फेरम फॉ, हीपर, आयोड, कैला बाइ, कैली म्यूर, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोडे रूबर, प्लम्ब आयोड, फाइटो, साइलि, सल्फर, आयोड, थूजा।

अति वृद्धि और साथ में ऊँचा सुनना—बैराइटा का, कैल्के फॉ, हीपर, लाइको, प्लम्ब, सोरि।

प्रदाह (Tonsillitis) तीव्र जुकामी और क्षुद्र गह्वर पूर्ण—ऐकोन, एलैन्थ, ऐमो म्यूर, ऐमिग्डे पर्सि, एपिस, बैप्टि, बैराइटा एसेटि, बैराइटा कार्ब, बेरैटा म्यूर,

बेल, ब्रोमि, कैप्सि, डल्का, युकैलि, फेरम फॉ, जेल्से, जिन्से, गुआइकम, जिम्नोक्लै, हीपर, इग्नै, कैली बाइक्रो, कैली म्यूर, लैक कैना, लैके, बाइक्रो, मर्क आयोडे फ्ले, मर्क आयोडे रूबर, मर्क सल्फ, नाजा, नैट्र सल्फ, फाइटो, रस टॉ, सैबैडि, सैंग्वि, साइलि, सल्फर।

प्रदाह तीव्र विस्फोट सम्बन्धी (Quinsy-तालुमूल प्रदाह)—ऐकोन, एपिस, बैराइटा का, बैराइटा आयोडे, बेला, कैप्सि, सिनैबै, गुयेकम, हीपर, लैक कैना, लैके, लाइको, मर्क आयाडे फ्ले, मर्क आयोडे रूबर, मर्क सल्फ, मर्क वाइवस, फाइटो, सोरि, सैंग्वि नाइट्रि, सैंग्वि, साइलि, टैरैण्टू कूबै, वेस्पा।

प्रदाह जीर्ण होने की सम्भावना—बैराइटा का, कैल्के फॉ, फ्यूकस, हीपर, डिफ्थे, लैके, लाइको, साइलि।

लाली गहरे रंग की—एलैंथ, एमिग्डै एमारा, बैप्टि, ब्रोमि, कैप्सि, जिम्नोक्ले, लैबे, मर्क, फाइटो।

फूलन—ऐकोन, ऐमो म्यूर, एपिस, आर्स आयोड, बैराइटा ऐसेटि, बैराइटा का, बेल, ब्रोमि, कैल्के फॉ, कैप्सि, सिनावे, सिस्टस, डिफ्थे, फेर फॉ, जेल्से, गुयेकम, हीपर, इग्नै आयोडे, कैली बाइक्रो, कैली म्यूर, लैके, लाइको, मर्क कॉर, मर्क आयोडे फ्ले, मर्क आयोडे रूबर, मर्क, फाइटो, सोरि, सैंग्वि नाइ। देखिये तालुमूल प्रदाह (Tonsillitis)।

घाव होना—आर्स, बैराइटा कार्ब, एचिनैसिया, हीपर, इग्नै, कैली बाइक्रो, लैके, लाइको, मर्क कार, मर्क आयोडे फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क पेरे, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, नाट्रि ऐसि, फाइटो, साइलि। देखिए क्षुद्र गह्वर कोषिक तालुमूल प्रदाह।

घाव गलित, (Gangrenous)—ऐमा कार्ब, आर्स, बैप्टि, क्रोटै, लैके, मर्क साइ, म्यूरि ऐसि।

घांटी संकुचित संवेदन—ऐकोन।

शोथमय, थैली की तरह—एपिस, आर्स, कैप्सि, कैली बाइक्रो, म्यूरि ऐसि, नैट्र आर्स, फॉस, फाइटो, रस टॉ।

बढ़ जाना ढीलापन—ऐलुमेन, ऐलुमिना, बैराइटा कार्ब, बेल, कैल्के फ्लोर, कैन्थे, कैप्सि, कॉकसिनेल, क्रोकस, फैगोपा, हीपर, हायोसि, कैली बाइक्रो, मर्क कार, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस, फाइटो, रूमेक्स ऐसेटो, सैबैडि, वाइयेथि।

प्रदाह (Ovulitis)—ऐकोन, ऐमिग्डै, परसि, बेल, कैप्सि, सिस्टस, आयोड, कैली बाइ, कैली परमैंगे, मर्क को, नैट्र सल्फ, नक्स वो, पल्से, सल्फ आयोड।

दर्द—ट्रिफोलि, टुसिलै।

पीछे की तरफ दर्दीला स्थान खाने से कम हो—ऐमो म्यूर।

घाव होना—इण्डियम, कैली बाइ, मर्क कार।
सफेद होना सिकुड़ना—कार्बो एसिड।
सफेद, चिमड़ा, श्लेष्मा—ऐमो कॉस्टि।

आमाशय (Stomach)

भूख-दोषपूर्ण; गायब होना (Anorexia)—एबीज नाइग्रा, ऐसेटि, एल्फा, ऐमो कार्ब, एण्टिम क्रू, आर्न, आर्स, बैप्टि, बिस्म, ब्यूट्रि ऐसि, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कैप्सि, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, कार्डु मैरि, चेलिडो, चिनि आर्स, चियोनैन्थ, सिन्को, कोका, कॉक्कु, कॉफि, कॉल्चि, साइक्लै, डिजि, फेर मेट, जेण्टिया, ग्लीसे, हेलोनि, हाइड्रै, इग्नै, इपिका, आइरिस, कैली बाइक्रो, लेसिथि, लाइको, मर्क डल्सि, माइरि, निकोल, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, प्लेटि, प्रून स्पाइ, प्रून वर्जि, पल्से, रैफै, रस टॉ, सीपिया, स्ट्रिकनि, आर्स, स्ट्रॉन्शिया, स्ट्रिक, फॉस, सल्फर, सिम्फोरि, टैरैक्सै।

भूख बढ़ना, अत्यधिक होना (Bulimy)—एबीज कैने, एब्रो, एगैरि, ऐल्फा, ऐलियम सैटि, ऐनाका, आर्स, आर्स ब्रो, बेल, ब्रैसिका, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के कार्ब, कैलेण्डु, चेलिडो, सिमिसि, सिना, सिन्को, फेरम मे, ग्लिसरी, ग्रैनैट, ग्रैफा, हीपर, इक्थि, इग्नै, आयोड, कैली कार्ब, लैक्टि एसिड, लेपिस एल्ब, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मर्क, नैट्रकार्ब, नैट्र म्यूर, नक्स वो, ओलियैण्ड, ओपि, पेट्रोलि, पेट्रोसे, फॉस, सोरि, रस टॉ, सिकेल, स्टैन, सल्फर, थाइरॉ, युरैनि नाइ, जिंक मे।

भूख बढ़ना, रात में भूख लगना—एबीज नाइग्रा, सिना, सिन्को, इग्नै, लाइको, नैट्र कार्ब, पेट्रोलि, फॉस, सोरि, सेलेनि, सल्फर।

भूख बढ़ना, दोपहर के पहले भूख लगना—हीपर, सल्फर, जिंक मेट।

भूख बढ़ना, खाने के बाद भी भूख लगना—ऐल्फा, कैल्के कार्ब, कैसकेरिला, सिना, आयोड, इण्डोल, लैक कैना, लाइको, मेडो, फॉस, फाइटो, सोरि, स्टैफि, स्ट्रॉन्शियाना, सल्फर, जिंक।

भूख बढ़ना, मगर दुबला होते रहना—एब्रोटै, ऐसेटि एसिड, आयोड, नैट्र म्यूर, सैनिकू, ट्यूबर, युरैनि नाइट्रि।

भूख बढ़ना, मगर जल्द ही थोड़ा खाने पर इच्छा हट जाना—ऐमो कार्ब, आर्न, आर्स, बैराइटा कार्ब, कार्बो वेज, सिन्को, साइक्लै, फेरम, लिथियम का, लाइको, नैट्र म्यूर; नक्स वॉ, पेट्रोसे, पोडो, प्रूनस स्पाइ, सीपिया, सल्फर।

भूख का बिगड़ जाना—घृणा मादक पेय से—इग्नै; साइलि।

बियर से—ऐसाफि, बेल, सिन्को, नक्स वॉ, पल्से।

उबाले हुए भोजन से—कैल्के कार्ब।

ब्रैण्डी से—इग्ने, लोबे, एरिनस।

रोटी से—चेनोपोडो, ग्लॉसी एफिस, साइक्लै, इग्नै, लाइको, नैट्र म्यूर, पल्से, सल्फर।

मक्खन से—साइक्लै, हीपर, पल्से, सैंग्वि।

कॉफी से—कैमो, फ्लोरिक एसिड, नक्स वॉ, सल्फ्यु एसिड।

सभी चीज पीने से—बेल, कैन्थे, कॉकू, इग्नै, कैली बाइक्रो, लोसिन, नक्स वॉ, स्ट्रैमो। देखिये जलान्तक (Hydrophobia)।

पीने से, कुनकुनी या गरम चीज—कैमो, कैली सल्फ, पल्से।

अंडों से—फेरम मेटा।

चर्बीले भोजन से—कैल्के कार्ब, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, साइक्लै, हीपर, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, पल्से, सीपि।

पकाये हुए भोजन से—ग्रैफा, साइलि।

सभी भोजन से—एण्टि क्रू, आर्स; कैन्थे, कॉकू, कोल्चि, डल्का, फेरम मेट, इग्नै, इपिका, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, नक्स वॉ, पोडो, पल्से, रियूम, रस टॉ, सैबैडि, यरबा। देखिये भूख गायब होना (Anorexia)।

भोजन की गन्ध से अथवा केवल देखने से—ऐण्टि क्रू, आर्स, कॉकू, कोल्चि, डिजि, नक्स वॉ, सीपि, साइलि, स्टैन, सिम्फोरि।

भोजन निम्न गरम या गरम—कैल्के कार्ब, इग्नै, लाइको, पेट्रोलि, पल्से, साइलि, वेरेट्र ऐल्ब।

मांस से—एलो, ऐलूमि, आर्न, बेल, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कार्डु मैरि, चिनोपोडि, ग्लोसी एफिस, सिन्को, कोल्चि, क्रोटैल, साइक्लै, फेरम फॉस, ग्रैफाइ, लाइको, मोर्फि, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, पल्से, सीपिया, साइलि, स्ट्रॉन्शिया, सल्फर, थूजा।

दूध से—आर्न, बेल, कार्बो वेज, फेरम फॉ, गुयेकम, नैट्र कार्ब, पैस्टिना, पल्से, सीपि, साइलि, सल्फर।

आलू—ऐलूमि, थूजा।

नमकीन भोजन—ग्रैफा, सेलेनि।

खट्टी चीजें—ड्रोसे, फेरम मेट, सल्फर।

मीठी चीजों से—बैराइटा कार्ब, कॉस्टि, ग्रैफाइ, रेडियम, सल्फर।

तम्बाकू से—आर्न, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कॉकू, लोबे इन्फ्ला, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, प्लैटै।

तम्बाकू की गन्ध से—कैस्केरि, इग्नै, लोबे इन्फ्ला।

मदिरा से—सल्फर।

भूख का बिगड़ जाना, प्रबल इच्छायें (Pica) अम्लयुक्त अचार, खट्टी चीजें—एबीज कैने, ऐलूमि, एमो म्यूर, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, आर्न, आर्स, एरण्डो, कैल्के कार्ब, कार्बो ऐनि, चेलिडो, सिन्को, कोडीन, हीपर, इग्नै, जोनोसिया, कैली बाइक्रो, लैक्टू विरो, मैग कार्ब, माइरि, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, पल्से, सिकेल, सीपिया, थिया, वैरैट्र ऐल्ब।

मद्युक्त पेय—आर्स, ऐसैर, कैल्के आर्स, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सिन्को, कोका, कॉकुल, फेर फॉस, कैली बाइ, लैके, लेसिथि, मेडो, मॉस्क, नक्स वॉ, फॉस, सोरि, पल्से, सेलेनि, स्टैफि, स्ट्रॉन्शि, सल्फर, सल्फ एसिड, सिफिलि, ट्यूबर।

सेब खाने की—ऐलो, ऐण्टि टॉ; गुयेकम, टेलूरि।

बीयर खट्टी—ऐलो, कॉकुल, कैली बाइ, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पल्से।

रोटी—फेर मेट, स्ट्रॉन्शि।

मक्खन—फेर मेट।

मक्खन निकाला दूध—इलैप्स।

कोयला; खड़िया इत्यादि—ऐलूमि, कैल्के कार्ब, साइक्यूटा, इग्नै, नाइट्रिक एसिड, सोरि।

पनीर—आर्जे नाइट्रि, सिस्टस।

काफी—ऐंगश्टियुरा, आर्स, कोनि, लेसिथि, मॉस्क।

ठंडी चीज पीने की—ऐकोन, ऐण्टि टा, एसिमि, आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कॉकुल, क्युप्रम मेट, डल्का, मर्क, नैट्र सल्फ, ओनोस्मो, फॉस, रस टॉ, वेरेट्र एल्ब। देखिये प्यास।

गरम चीज पीने की—ऐंगसटियुरा, कैस्कैरि, कैस्टैनि, चेलिडो, लाइको, मेडो, सैबैडि, स्पाइजे।

झाग उठाने वाले पेय की—कोल्चि।

अण्डों का—कैल्के कार्ब।

चर्बीले भोजन की—कैल्के फॉस, सेबैडि।

चर्बी खाने की—मेजे, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, सल्फर।

मोटा, कच्चा भोजन खाने की—ब्रायो, फॉस, पल्से, साइलि।

मछली खाने की—सल्फ्यु एसिड।

कम या अधिक गरम भोजन की—चेलि, क्युप्रम मेट, सैबैडि।

फल या रसदार चीजें—ऐलो, ऐण्टि टा, सिन्को, मैग कार्ब, मेडो, फॉस, फॉस एसि, वेरेट्र एल्ब ।

सुअर की जाँघ के मांस से—(हैम रिण्ड)—कैल्के फॉ ।

लेमोनेड—एमो म्यूर, साइक्लै, पल्से, सैबाइना, सिकेल ।

मांस की—एबीज कैने, कैल्के, फॉस, लिलि टिग्रि, मैग कार्ब, मेनियैन्थ ।

मांस, नमकीन, भूना हो, आग पर भून दिया गया हो—कैल्के फॉस ।

दूध पीने की—एपिस, आर्स, फॉस ऐसि, रस टॉ, सैबाल, सल्फर ।

घोंघा खाने की—(Oysters)—लैके ।

नमक खाने की—कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कास्टि, कोनियम, मेडो, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, फॉस, सल्फर, वेरेट्र ऐल्ब ।

मसाले की चीजों की—ऐलूमिना, सिन्को, फ्लोरि एसिड, हीपर, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फॉस, सैंग्वि, स्टैफि ।

मिठाई, मिश्री—एल्फा, ऐमो कार्ब, आर्जे नाइट्रि, कैल्के कार्ब, सिना, कोका, कोकेन, कोटे, जोनोसिया, कैली का, लाइको, मैग म्यूर, मेडो, सैबाडि, सल्फर ।

चाय की—ऐलूमि, हीपर ।

तम्बाकू की—ऐसैर, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, कोका, डैफ्ने, स्टैफि ।

टॉनिक की—पल्से ।

कई तरह की चीजों की—ब्रायो, कैमो, सिना, सिन्को, फ्लोरि एसिड, सैंग्वि ।

वनस्पति खाने की—एबीज कैने, मैग कार्ब ।

ठंडे पानी की—एकोन, एगैरि एमेटि, एण्टि टा, एपोसाइ; आर्स, एसिमि, बेल, ब्रायो, कैल्के का, युपेटो पर्फो, ओनोस्मो, ओपि, फॉस, वेरेट्र एल्बम । देखिये प्यास ।

भूख—विपरीत वस्तुयें—बीयर—फेरम मेट, कैली बाइक्रो ।

रोटी—एण्टिम क्रूड, हाइड्रैस्टि, लाइको, नैट्र म्यूर, पल्से ।

मक्खन—कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, नैट्र म्यूर, पल्से ।

बन्द गोभी, करम कल्ला—ब्रायो, कार्बो वेज, कैली कार्ब, लाइको, पेट्रोलि ।

पनीर—कोल्चि ।

कॉफी—कार्बो वेज, लाइको, नक्स वॉ ।

ठंडी चीजें (पीने वाली)—आर्स, कैलैडि, डिजि, इलेप्स, कैली आयोड, वेरेट्र ऐल्ब ।

निम्न गरम-सा, गरम पीने की चीजें—ब्रायो, ग्रैफा, फॉस, पल्से, पाइरो ।

अंडा—कोल्चि ।

चर्बीली चीजें—ऐण्टि क्रू, कैल्के का, कार्बो वेज, साइक्लै, लाइको, पल्से, थूजा।

मछली—कार्बो वेज।

ठंडा भोजन—कैली आयोड।

किसी तरह का भोजन—ऐलेट्रि, ऐमिग्डै पर्सिका, कार्बो वेज, लैके, मॉस्क, नैट्र का।

निम्न गरम भोजन—पल्से।

मांस—आर्स, बोरैक्स, ब्रायो, कार्बो वेज, सिन्को, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, पल्से, सेलेनि, साइलि, वेरेट्र ऐल्ब।

मांस की अधिकता—एलियम सैटा।

फल—आर्स, कार्बो वेज, कॉस्टि, फेरम मेट, कैली बाइ, रूमेक्स।

तरबूज, खरबूजा—जिजि।

दूध—इथूजा, कैल्के का, कार्बो वेज, सिन्को, कैली आयोड, लैक्टू विरो, मैग का, मैग म्यूर, निकोल, ओलियजेको एसेलि, पोडो, रियूम, सीपि, सल्फर।

विषैला कुकुरमुत्ता—कैम्फो।

भोजन की गन्ध से मिचली आवे—आर्स, कॉक्कुल, कोल्चि, डिजि, सीपि।

प्याज—ब्रोमि, लाइको, थूजा।

घोंघा—कार्बो वेज, लाइको।

पैस्ट्री—एण्टि क्रू, लाइको, पल्से।

पोर्क—ऐण्टि क्रू, कार्बो वेज, साइक्लै, पल्से।

आलू—ऐलूमि, सीपिया।

नमकीन भोजन—कार्बो वेज।

मसाला लगा हुआ मांस (सॉसेज)—ऐसेटिक एसिड, आर्स, पल्से।

शोरबा—कैली का।

खट्टा भोजन या पीने की चीज—ऐण्टि क्रू, कार्बो वेज, ड्रोसेरा, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड।

स्टार्च वाला भोजन, श्वेतसार पदार्थ—कार्बो वेज, सिन्को, लाइको, नैट्र कार्ब, नैट्र सल्फ, सल्फर।

स्ट्रॉबेरी, बड़ी मकोय—ऑक्जैलिक एसिड।

मिठाई—आर्जे नाइट्रि, इपिका, लाइको, सल्फर, जिंक।

चाय—सिन्को, डायस्को; फेरम मेट, कैली हाइपो फॉस्फो, सेलेनि, थूजा।

तम्बाकू—इग्नै, कैली बाइ, लोबे इन्फ्ला, लाइको, फॉस, सेलेनि, टैबे।

वनस्पति —हाइड्रै ।
सिरका—ऐसिट ऐ॰, कार्बो वेज ।
पानी—आर्स, चिनि आर्स ।
पानी अशुद्ध—जिंजि ।
मदिरा—ऐसिट ऐ॰, जिंक मेट ।
दौर्बल्य—(Atony) मांशपेशिक दुर्बलता (Myasthenia) बेल, इग्नै, पोडो फाइलिन, स्टिक, फॉस ।

पित्त बाधा (Biliousness)—इस्कू, ऐलो, ऐक्वा मैरि, बैप्टि, बर्बे वल, ब्रायं, कार्डु मैरि, कैमो, चेलि, चिओनैन्थ, सिन्को, क्रोटे, डायस्को, युओनाइम, युपैटो पर्फो, फेरम मे, जेन्शिया, हाइड्रै, आइरिस, कैली कार्ब, लैप्टै, लाइको, मैग म्यूर, मर्क, माइरि, नैट्र सल्फ, नाइट्रो म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, पोडो, टीलिया, पल्से, सीपि, सल्फर, टैरेक्स, ट्रिओस्टि, युका । देखिए लीवर ।

कर्कट—(Cancer)—ऐसेटि एसिड, एमो म्यूर, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, बैराइटा कार्ब, बिस्म, कैडिमि सल्फ, कैल्के फ्लो, कोनडुरैं, कोनि, कार्बो वेज, ग्रैफा, हाइड्रै, कैली बाइ, कैली कार्ब, क्रिओजो, मैग फॉस, नक्स वॉ, ओर्निथो, फॉस, प्लम्ब मेट, सिकेल । देखिए साधारण लक्षण ।

दिल के छेद (Cardiac Orifice)-सिकुड़न —एलूमि, बैराइटा म्यूर, ब्रायो, डैट्रा, फॉस, प्लम्ब मेट ।

दर्द (Cardialgia)—ऐगैरि, आर्जे नाइट्रि, ऐसाफि, बैराइटा कार्ब, बिस्म, कैने इण्डि, कार्बो वेज, कॉलो, क्युप्रम मेट, फेर साइ, फेर टार्ट, फोर्मिका, इग्नै, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओनिस्कस, स्टॉन्शिया, थोया। देखिये दर्द ।

आक्षेपिक सिकुड़न; दर्दीले दिल में झटकन—इथू, एगैरि, एमो कार्ब, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, कैल्के कार्ब, कॉलो, कोनियम, हायोसि, इग्नै, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, रस टॉ, सीपिया, साइलि ।

फैलना (Gastroptosis)—बिस्म, ग्रैफा, हाइड्रैस्टि, म्यूर, कैली बाइ, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, जैन्थोर ।

पेट दर्द (Gastralgia)—देखिये दद ।
आमाशय विकार खुली हवा में अच्छा रहे—ऐडोनिस ।
आमाशय विकार-सिगार पीने वालों को —इग्नै ।
रक्त प्रवाह (Haemorrhage)—ऐसेटिक एसिड, एकोन, आर्न, आर्स, बोथ्रोप्स, कैक्टस; कैन्थे, कार्बो वेज, सिन्को, कोकेन, क्रोटै, क्युप्रम मेट, एरिजि, फेर

फॉस, फिकस, जेरैनि, हेमा, हायोसि, इपिका, क्रियोजो, मैंफिफे इंडि, मिलेफो, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, सिकेल, ट्रिलि, जिंक मेट।

हिचकी (सिगल्टस)—इथूजा, ऐगैरि, ऐमिल, आर्स, बेल, कैजुपू, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, साइक्यूटा, कोकेन, कॉकुल, क्युप्रम मेट, साइक्लै, डायस्को, युपेटो पर्फ, जिन्सेंग, हीपर, हायड्रोसि एसिड, हायोसि, इग्नै, कैली ब्रो, मैग फॉस, मोर्फि, मॉस्क, नैट्र म्यूर, निकोल, निकोटि, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओलिसकिस, रैनै बल, स्ट्रैमो, सल्फ्यु एसिड, टैबे, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र विरिडि, जिंक ऑक्सि, जिंक वे।

धूम्रपान के बाद हिचकी आना—इग्नै, सेलेनियम।

आक्षेप के बाद हिचकी आना—क्युप्रम मेट।

डकार के साथ हिचकी—ऐण्टि क्रू, कैजुपू, साइक्यू, सिन्को, डायोस्को, नक्स वॉ, वाइयेथि।

हिस्टीरिया, स्नायविक लक्षणों के साथ हिचकी—जेल्से, इग्नै, मॉस्क, नक्स मॉ, जिंक वैले।

पीठ में दर्द, खाने के बाद, दूध पिलाने के बाद हिचकी—ट्यूक्रि।

ओकाई और कै के साथ हिचकी—जैट्रोफा, मैग फॉस; मर्क, नक्स वॉ।

गलनली में झटके के साथ हिचकी—वेरेट्र वि।

जम्हाई के साथ हिचकी—ऐमिल, कार्ल्स, कॉकु।

अति अम्लता (Hyperclorhydria)—ऐसेटि ऐसि, ऐनैका, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, ऐट्रोपि, बिस्म, कैफेन, कैल्के का, कैल्के फॉ, कार्बो वेज, कैमो, चिनि आर्स, सिन्को, कोनि, ग्रिन्डे, हाइड्रै, इग्नै, आइरिस, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैग कॉ, म्यूरि एसि, नैट्र कार्ब, नैट्र फॉस, नक्स वॉ, ओरेक्सीन टैन, पेट्रोलि, फॉस, प्रून वर, पल्से, रोबिनि, सल्फर, सल्फ्यु एसिड।

अति संवेदनीयता—आर्जे नाइट्रि, आर्स, बिस्म, चिनि आर्स।

अति क्रमाकुञ्चन क्रिया—आर्स, फेल टौरि, हायोसि, इग्नै, फॉस।

बदहजमी-मन्दाग्नि—साधारण औषधियाँ— एबीज कैने, एबीज नाइग्रा, ऐब्रो, ऐसेटि ऐसि, एस्कू, इथूजा, ऐगैरि, ऐलेट्रि, ऐल्फा, एलियम सैटाइ, ऐलनस, एलो, एलूमि, ऐनैका, ऐण्टि क्रू, एण्टि टा, एपोसाइ, अर्जे नाइ, ऐरिस्टोलो, आर्न, आर्स, ऐट्रोपि, बैप्टि, बैराइटा का, बेल, बिस्म, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के क्लो, कैप्सि, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, कार्डु मैरि, कैस्का सैगे, कैमो, चेलिडो, सिना, सिन्को कोका, कोचिलयेरि, कोल्चि, कोलो, कार्न फ्लो, क्यूप्रम ऐसेटि, साइक्लै, डायोस्को, फेल टौरि, फेरम मेट, जेंटि, ग्रेफा, हीपर, होमैरस, हाइड्रै, इग्नै, आयोड, इपिका, आइरिस, कैली बाइ, कैलि कार्ब, काली म्यूर, लैके, लेप्टे, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मर्क, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपियम, पेट्रोलि, फॉस ऐसि, फॉस,

पिकरिस ऐसि, पोडो, पोपु, ट्रैम्यू, प्रुनस्पि, प्रूनवर्जी, टीलिया, पल्से, रोबिनि, सैल ऐसि, सैंग्वि, सीपिया, स्टैन, स्ट्रिक, फेर सिट, सल्फर, सल्फ्यु एसिड, युरैनि, नाइट्रि, जेरोफाइलम ।

कारण—स्थूल औषधियों का दुरुपयोग—नक्स वॉ ।

अम्लयुक्त पदार्थ—एण्टि क्रू, आर्स, सिंको, नैट्र म्यूर ।

बुढ़ापा कमजोरी—ऐबीज नाइग्रा, आर्स, बैराइटा का, कार्बो वेज, सिन्को, फ्लोरि ऐसिड, हाइड्रै, कैली का ।

बीयर—ऐण्टि टा, बैप्टि, ब्रायो, कैली बाइ, लाइको, नक्स वो ।

रोटी—ऐण्टि क्रू, ब्रायो, लाइको, नैट्र म्यूर ।

ब्राइट्स रोग—मूत्र में एल्बूमेन निकलना—ऐपोसाइ । देखिए पेशाब सम्बन्धी यन्त्र ।

कुटू से बनी हुई केक—पल्से ।

पनीर—आर्स, कार्बो वेज, कोलो, नक्स वो ।

कॉफी—कैमो, कैली का, लाइको, नक्स वो ।

ठंडे पानी से नहाना—ऐन्टि क्रू ।

अति मैथुन का दुष्परिणाम—ऐण्टि टॉ, कार्बो वेज, सिन्को, नेट्र सल्फ, नक्स वॉ ।

सड़ा हुआ मांस, मछली—आर्स, कार्बो वेज ।

खाने-पीने की बदपरहेजी, असावधानी—ऐलियम सैटाइ, ऐण्टि क्रू, ब्रायो, कार्बो वेज, सिन्को, कॉफि, इपिका, लाइको, नैट्र का, नक्स वो, पल्से, जैन्थिक ।

अण्डे की सफेदी एल्बूमेन—नक्स वो ।

अत्यधिक, मैथुन सम्बन्धी—कार्बो वेज, सिन्को, कैली का, नक्स वो ।

चर्बीला भोजन—ऐण्टि क्रू, कैल्के का, कार्बो वेज, साइक्ले, इपिका, कैली म्यूर, पल्स, थूजा ।

थकावट, मानसिक शिथिलता, बच्चों में—कैल्के फ्लो ।

तीव्र ज्वर के आक्रमण के बाद—सिन्को, क्वैसिया ।

बादी करने वाला भोजन—सिन्को, लाइको, पल्से ।

फल—आर्स, सिन्को, इलैप्स, पल्से, वेरेट्र ऐल्ब ।

आमाशय रस की कमी—ऐलनस, ऐलूमि, लाइको ।

गठिया रोग—ऐण्टि टॉ, सिन्को, कोल्चि, नक्स वॉ, थूजा ।

तेजी से भोजन करने या कुछ पीने से—ऐनैका, कॉफि, ओलियैण्ड ।

गरम मौसम—ऐण्टि क्रू, ब्रायो ।

बरफ के पानी से, बरफ से—आर्स, कार्बो वेज, इलैप्स, इपिका, कैली कार्ब, नैट्र कार्ब, पल्से ।

स्तन्य काल—सिन्को, सिनैपि एल्बा ।

मांस खाना—कॉस्टि, इपिका, पल्से, साइलि ।

खरबूजा—आर्स, जिंजि ।

मासिक धर्म—अर्जे नाइट्रि, कोपेवा, सीपि । देखिए स्त्री-जननेन्द्रियमण्डल ।

दूध—इथूजा, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, मैग कार्ब, मैग म्यूर, नाइट्रि एसिड, सल्फ्यूरिक एसिड, सल्फर ।

स्नायविक, दुःखद आवेग के कारण—कैमो, नक्स मॉ, नक्स वॉ ।

रात को पहरा देने में जागने के कारण—नक्स वॉ ।

पैस्ट्री—ऐण्टि क्रू, कार्बो वेज, इपिका, कैली म्यूर, लाइको, पल्से ।

पोर्क का सासेज—सिन्को, पल्से ।

गर्भाधान—सैबैडि, सिनैपि, ऐल्बा, थिया ।

नमक के दुरुपयोग से—फॉस ।

बैठे रहने वाले आलसी जीवन से—नक्स वो ।

मिठाई—ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, इपिका, लाइको, जिंक म्यूर ।

चाय—एबीस नाइग्रा, सिन्को, डायस्को, पल्से, थिया, थूजा ।

तम्बाकू—एबीस नाइग्रा, नक्स वॉ, सीपिया ।

जुलपित्ती—कोपेवा ।

वनस्पति, तम्बाकू—आर्स, ऐसबले, ट्यूबरोसा, नैट्र कार्ब, नक्स वो, सीपि ।

पानी—आर्स ।

मदिरा—ऐण्टि क्रू, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉफि, नैट्र सल्फ, नक्स वो, सल्फर, सल्फ्यु एसिड, जिंक मेट ।

प्रकार—कमजोरी लाने वाला; स्नायविक; तेजाबी—ऐलेट्रिस, ऐल्फा, ऐल्स-टोनि, ऐनाका, ऐंगसटियुरा, आर्जे नाइट्रि, कैल्के कार्ब, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सिन्को, फेरम, ग्रिन्डे, हीपर, इग्नै, जुग्लै सिनै, कैली फास, लोबे इन्फ्ला, लाइको मैग कार्ब, नैट्र कार्ब, नक्स वो, फॉस, टीलिया, क्वासि, रैटानहिया, रोबिनि, सलफ्यु, सल्फर ।

जुकामी—एबीज कैने, एबीज नाइग्रा, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, बेलसैमम, पेरु, कैल्के कार्ब, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सिन्को, कोलिन्सो, कोराइडै, जिरैनि, हाइड्रै, हाइड्रासि एसिड, इलिसि, इपिका, कैली बाई, लाइको, नक्स वो, ओक्जै एसिड, पल्से, सल्फर । देखिये जीर्ण जुकामी आमाशय शोथ ।

दबा हुआ या छिपा हुआ—कैक्ट, कार्बो वेज, सिन्को, हाइड्रोसि एसिड, नैट्र म्यूर, सीपि, स्पाइजे, टैबे ।

लक्षण और अवस्थायें तेजाबीपन—आर्जे नाइट्रि, कैल्के का, कार्बो वेज, इग्नै, लोबे इन्फ्ला, लाइको, नैट्र कार्ब, नक्स वो, पल्से, रोबिनि, सल्फर । देखिए तेजाबी अवस्था का अभाव (Hyperclorhydria) ।

खाँसी—लोबे, सिफि, टैक्सस । देखिये साँस-यन्त्र-मण्डल ।

पाचन शक्ति कमजोर, धीमी (Bradypepsia)—ऐल्सटोनि, एनैका, एण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐसाफि, बिस्म, ब्रायो, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, सिन्को, कॉन्चलियेरि, कोफि, कोल्चि, साइक्लै, डायस्को, युकेलि, ग्रैनेट, ग्रैफा, हाइड्रै, इपिका, कैली बाइ, लाइको, मर्क, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नक्स वो, प्रून वर, पल्से, जिंजि । देखिए अनपच (Indigestion) ।

सरल भोजन से भी कष्ट—एलेट्रि, ऐमिग्डे पर, ऐण्टि क्रू, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, सिंको, डिजि, हीपर, कैली कार्ब, लैके, नैट्र कार्ब, नक्स वॉ, पल्से ।

औंघाई, निद्रालुता—इथूजा, ऐण्टि क्रू, बिस्म, कार्बो वेज, सिन्को, एपिफे, फेल टोरी, ग्रैफा, ग्रैटि, कैली कार्ब, लाइको, नैट्र क्लो, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, नक्स मॉ, फास एसिड, फॉस, सारासी, स्टैफि, सल्फर ।

डकार, पानी ऊपर आना—एबीज नाइग्रा, ऐसेटि ऐसि, ऐगैरि, ऐलूमि, ऐनैका, ऐण्टि क्रू, अर्जे नाइट्रि, आर्न, ऐसाफि, बिस्म, ब्रायो, कैजूपू, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, साइक्लै, डायस्को, फैगोपा, फेर मेट, फेरम फॉस, ग्लीसरी, ग्रैफा, ग्रैटि, हीपर, हाइड्रै, इण्डि, आयोड, इपिका, जुग्लै सिने, कैली बाई, कैली कार्ब, लोबे इफ्ला, लाइको, मैग का, मोस्क, नैट्र कार्ब, नैट्र फॉ, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड; नक्स वॉ, नक्स मॉ, पेट्रोलि, फॉस, पोडो, पल्से; रोबिनी, रुमेक्स, सैलि एसिड, सैंग्वि, सीपिया; साइलि, सलफर, सलफ्यू एसिड, युरेनि, वैलेरि ।

डकार, गंधहीन, निःस्वाद, खाली—ऐगैरि, ऐलो, ऐम्ब्रा, ऐमो म्यूर, ऐनाका, एसैर; बिस्म, कैलैडि, कैल्के आयोड, कोका, कॉकू, हीपर, इग्नै, आयोड, ओलियेण्ड, प्लैटि ।

डकार तीखा, घृणित दुर्गन्धित—आर्न, एसाफि, बिस्म, कैल्के आयोड, कार्बो वेज, कैमो, साइक्लै, डायस्को, ग्रैफा, हाइड्रै, कैली कार्ब, मैग म्यूर, मैग सल्फ, ओर्निथोगै, प्लम्ब, सोरि, पल्से, रेफे, सैंग्वि, सीपिया, सल्फर, थूजा, वैलेरि, जैरोफा ।

डकार से कुछ समय के लिए कम हो—आर्जे नाइट्रि, एसाफि, बैराइटा कार्ब, ब्रायो, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, कैली कार्ब, लैके, मोस्क, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओलि, ऐनि, ओक्जै एसिड, पल्से ।

डकार, खट्टी; जलती, तेजाबी, कड़ी—ऐसेटि एसि, एण्टि क्रू, अर्जे नाइट्रि आयो, कैली कार्ब, कैलके आयोड, कैलके फॉ, कार्बो एसिड, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज कैमो, सिन्को, डायस्को, फेर फॉस, फ्लोर एसिड, ग्रैफा, एपिका, हीपर, हाइडै, कैलि कार्ब, लैक्टि एसिड, लैक्टू वि, लाइको, मैग कार्ब, नैट्र म्यूर, नैट्र नाइट्रि, नैट्र फॉ, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूर एसिड, नक्स वॉ, ओक्जै एसिड, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फॉस, पोडो, पल्से, रैफै, रोबिनि, सैबाल, सैलि एसिड, सेनेसि, सीपिया, साइलि, सिनैपि नाइग्रा, सलफ्यू एसिड, सल्फर, जेरोफाल।

अनपची डकार—एण्टि क्रू, कार्बो वेज, सिन्को, साइक्लै, फेरम, ग्रैफा, पल्से, सीपिया, साइलि, सल्फर।

गशी—आर्स, सिन्को, मॉस्क, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फास्फो एसिड।

पेट की बादी से, ढोलक की तरह फूल जाना—एबीज कैने, एगैरि, एण्टि क्रू, एपोसा, आर्जे नाइट्रि, एसाफि, ब्रायो, ब्यूट्रि एसिड, कैजूपू, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सिन्को, कोलिच, साइक्लै, डायस्को, फेर, मैग्नेट, ग्रैफा, ग्रैटिओला, हाइड्रै, इग्ने, एण्डोल, आयोड, जुग्लैंस, सिनेर, कैली बाइ, कैली कार्ब, लैकेसिस, लाइको, मॉस्कस, नक्स मॉ, नक्स वोमिका, ओक्जे एसिड, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, पोपूलस, ट्रैम्यु, पल्से, साइलि, सलफर, थूजा,। देखिये संवेदन।

सिर दर्द—आर्जे नाइट्रि, ब्रायो, कार्बो वेज, सिन्कोना, साइक्लै, कैली कार्ब, लैकेसिस, लैप्टेण्ड्रा, इग्नै, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, नक्स वॉ, पल्से, रोबिनिया; सैंग्वि, टैरैक्स। देखिये सिर।

गला जलना पाइरोसिस (Pyrosis)—ऐमो का, ऐण्टि क्रू, ऐपोमोर्फिया, अर्जे नाइट्रि, आर्स, बिस्म, ब्रायो, कैजूपू, कैल्के का, कैलेण्डुला, कैप्सिकम, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, चिनि सल्फ, डैटूरा, डायस्कोरिया, फैगोपा, गैलिक एसिड, ग्रैफाइ, आयोड, कैली का, लैके, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैग कार, फॉस्फो एसिड, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, नक्स मॉ, ओक्जै ऐसिड, पल्से, रोबीनिया, सैंग्वि, सिनैपि, सिनैपि नाइग्रा, सलफ्यु एसिड, टैबे।

हिचकी—ब्रायो, हायोसि, इग्नै, नक्स वॉ, पैरिस, सीपिया।

सुस्ती, कमजोरी—ऐक्टि स्पाइ, एण्टि टॉ, आर्स, कैने सैटाइवा, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, सिन्को, ग्रैफा, ग्रैटि, हाइड्रै, लाइको, नक्स वो, फॉस, पल्से, सीपिया।

मानसिक मन्दता, उदासी—एनैका, सिन्को, साइक्लै, हाइड्रै, लाइको, नैट्र का, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पल्से, सीपिया, टैबै। देखिये मन।

मिचली, कै—इथूजा, ऐण्टि क्रू, एंटि टॉ, अर्जे नाइट्रि, आर्स, एट्रोपिन, बिस्मथ, ब्रायो, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, कॉकू, फेरम म्यूर, ग्रैफा, इग्नै, इपिका, कैल बाइ, क्रियोजो, लेप्टेन्ड्रा, लोबे इम्फ्ला, लाइको, नैट्र का, नक्स वो, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, रस टॉ, सैंग्वि, सीपिया, साइलि। देखिये कै।

दर्द—एबीज नाइग्रा, इस्कू, एनिसम, अर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, ब्रायो, कैल्के आयोड, कैल्के म्यूर, कार्बो वेज, सिन्को, कोलो, क्यूप्रेसस, डायस्को, गैम्बोजिया, हीडियोमा, होमोरस, इपिका, कैली म्यूर, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पैरैफिन, फॉस, पल्से, स्कूटेल; सीपि, थूजा। देखिए मन।

खाने के बाद ही दर्द—एबीज नाइग्रा, आर्न, आर्स, कैल्के का, कार्बो वेज, सिन्को, काकु, कैली बाइ, कैली का, लाइको, नक्स मॉ, फाइजॉस्टि।

खाने के कुछ घण्टों के बाद—इस्कू, ऐगैरि, ऐनैका, ब्रायो, कैल्के हाइपो, कोनियम, नक्स वाँ, आक्जै एसिड, पल्से।

दिल धड़कना—एबीज, कैने, आर्जे नाइट्रि, कैक्ट, कार्बो वेज, हाइड्रोसि एसिड, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वाँ, पल्से, सीपिया, स्पाइजे, टैबे। देखिये रक्त संचार।

पत्थर की तरह बोझ- एबीज नाइग्रा, ऐकोन, इस्कू, ऐनैका, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, डिजि, फेरम मेट, ग्रैफा, हीपर, कैली बाई, लोबे इन्फ्ला, लाइको, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, पल्से, रस टॉ, रुमेक्स, सिला, सीपिया, सल्फर।

जोड़ों में टपकन—ऐसाफि, युकाल, हाइड्र, नैट्र म्यूर, पल्से, सैलेनि, सीपि।

मलाशय में टपक—ऐलो।

खावा ऊपर वापस आना—इथूजा, ऐलूमि, ऐमो म्यूर, ऐण्टि क्रू, ऐसाफि, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, फेरम आयोड, फेरम, ग्रैफा, इग्नै, इपिका, मर्क, नैट्र फॉ, नक्स वॉ, फॉस, पल्से; क्वासिया, सल्फर।

लार बहना—साइक्लै, लोबे इन्फ्ला, मर्क, नैट्र म्यूर, पल्से, सैंग्वि, देखिए मुँह।

पसीना होना—कार्बो वेज, नैट्र म्यूर; नाइट्रि एसिड, सीपिया।

दाँतों में दर्द—कैमो; कैली कार्ब; लाइको, नैट्र कार्ब, नाइट्रि एसिड।

चक्कर आना—ब्रायो, कार्बो वेज, सिन्को, साइक्लै, ग्रैटिओला, इग्नै, नक्स वॉ; पल्से, रस टॉ। देखिये सिर।

जल हिचकी—एबीज नाइग्रा, ऐसेटिक एसिड, ऐण्टि क्रू, आर्स, बिस्मथ, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज; डायस्को, फ्रैगोपाइरम, ग्रैफाइटिस, हीपर, हाइड्रै, कैली कार्ब, लैक्टि एसिड, लाइको; मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पोडो, पल्से, सीपिया, सल्फर, सिम्फोरि, वेरेट्र ऐल्बम।

प्रदाह आमाशय प्रदाह (Gastritis) तीव्र—ऐकोन; ऐगैरि, एमेट; ऐण्टि टा, आर्स; बेल, बिस्मथ, ब्रायो; कैन्थे; फेरम फॉस, हिडियोमा, हाइड्रै, हायोसि, इपिका, आइरिस, कैली बाइ, कैली क्लोर; मर्क कार, नक्स वॉ, ऑक्जे एसिड, पल्से, सैण्टोनाइ; सिनैपि ऐल्बा, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक ।

प्रदाह, तीव्र, अति मदपान से—आर्जे नाइट्रि, आर्स, बिस्मथ, क्रोटै, क्युप्रम, गॉल्थेरिया, लैके, नक्स वॉ; फॉस ।

प्रदाह, तीव्र साथ में आँतों का विकार, आमाशयिक-आंत्रिक प्रदाह (Gastro-Enteritis)—ऐलूमेन, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बैप्टि, बिस्मथ, ब्रायो, क्युप्र, मर्क को; मर्क, रस टॉ, सैण्टो, जिंक ।

प्रदाह, जीर्ण, पेट का जुकाम (Catarrh)—ऐलूमि, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टॉ, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बिस्मथ, कैल्के का, कैल्के क्लोर, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सिन्को, कोल्चि, डिजि, ग्रैफा, हाइड्रै, हाइड्रासि ऐसि, इलिसियम, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली का, लाइको, मर्क कार, नक्स वॉ, ओपियम, ऑक्जै ऐसि, फॉस, पोडो, पल्से, रुमेक्स, सैंग्वि, सीपिया, साइलि, सल्फर, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक ।

मिचली—ओकाई—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, ऐपोसाइ, ऐपोमोर्फिया, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, ऐसैर, बेल, बर्बे वल, बिस्मथ, ब्रायो, कैडमि सल्फ, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, काडु मैरि, कैस्कैर, कैमो, चेलिडो, चियोनैन्थ, कॉकू, कोल्चि, क्युप्रम मेट, साइक्ले, डिजि; युजिनिया, जैम्बो, फैगोपा, फेरम मेट, ग्लोनो, हेडियोम, हाइपैरि, इक्थियो, इपिका, आइरस, कैली बाइ, कैली का, कैल्मि, क्रियोजो, लैके, लैक्टिक ऐसि, लोबे इन्फ्ला, मर्क कार, मार्फिनम, मर्क सल्फ, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओस्ट्रिया, पेट्रोलि, पोडो, पल्से, सेबैडि, सैंग्वि, सार्कोलैकटिक ऐसि, सीपि; स्पाइजे, स्ट्रिक, सिम्फोरि, टैबे, थेरीडि, वेरेट्र ऐल्ब; वेरेट्र विरिडि ।

उदर के चीरा के बाद मिचली—स्टैफिसै ।

खाने के बाद मिचली—ऐमो का, ऐसैर, साइक्लै, ग्रैफा, नक्स वॉ, पल्से, साइलि ।

नाश्ते के बाद मिचली—बर्बे वल्गै, गोसीपि, नक्स वॉ, सीपिया ।

बीयर पीने के बाद मिचली—कैली बाइक्रो ।

आँखें बन्द करने पर मिचली—लैके, थेरेडि, थूजा ।

कॉफी पीने से मिचली—कैमो ।

चर्बी से मिचली—नाइट्रि एसिड ।

बरफ, ठंडक से मिचली—आर्स ।

पेसरी लगाने से (वह यंत्र जो योनि के अन्दर गर्भाशय नीचे उतरने को रोकने के लिए लगाया जाता है, उसके प्रयोग से मिचली)—नक्स मॉ ।

चलती-फिरती चीजों को देखने से मिचली—ऐसैर, काकू, इपिका, जैबोरेंडी।
कुनकुने पानी में हाथ डुबाने से मिचली—फॉस।
स्नायविक, आवेगिक उत्तेजना से मिचली—मेन्थोल।

गर्भावस्था में मिचली—कॉकूल, कोनियम, लैक्टिक एसिड, लैकटुका विरोसा, लोबे इन्फ्ला, मैग कार्ब, मैग म्यूर, फॉस एसिड, पिलोका, सीपिया, स्टैफि, स्ट्रिक, सल्फर, । देखिये स्त्रीजननेन्द्रिय।

कार, किश्ती की सवारी से मिचली—आर्न, कॉकुल, लैक डिफ्लो, नक्स वॉ, पेट्रोलि, सैनिक, थेरीडि।

भोजन की गन्ध से या केवल देखने से मिचली—इथूजा, आर्स, कॉकुल, कोल्चि, नक्स वॉ, पल्से, सीपिया, स्टैन, सिम्फो।

धूम्रपान से मिचली—युफ्रैसिया, इग्नै, इपिका, नक्स वॉ, फॉस, टैबे।
मिठाई खाने से मिचली—ग्रैफा।
पानी से मिचली—एपोसाइ, आर्स, वेरेट्र एल्ब।
गैसदार पानी, शैम्पेन से मिचली—डिजिटॉक्सि।
ऐंठन के साथ—ट्रियोस्टियम परफो।
पाखाना लगने के साथ मिचली—डल्का।
दस्त, चिन्ता के साथ मिचली—एण्टि टा।
औंघाई के साथ मिचली—एपोसाइ।

गशी के साथ मिचली—ब्रायो, कॉकुल, कोल्चि, हीपर, नक्स वॉ, प्लैटि, पल्से, टैबे, वैलेरि।

सिर दर्द के साथ मिचली—एलो, फॉर्मिका, पल्से।
भूख लगने के साथ मिचली—बर्बे ऐक्वि, कॉकु, इग्नै, वैलैरि।
मासिक-धर्म के साथ मिचली—कॉकु, क्रोटै, सिम्फोरि।
दर्द, ठंडक के साथ मिचली—कैडमियम सल्फ, हीपर।
पीले, फड़कने वाले चेहरे के साथ, कै से कम न हो—इपिका।
आँतों में नीचे की तरफ धँसन के साथ मिचली—ऐग्नस।
खाने से कम होने वाली मिचली—लैक्टिक एसिड, मेजे, सैण्टो, सीपिया, बाइपेरा।
लेमोनेड पीने से कम होने वाली मिचली—साइक्लै, पल्से।
लेटने से कम होने वाली मिचली—इचिनेसिया, कैली का, पल्से।
धूम्रपान से कम होने वाली मिचली—युजेनिया, जैम्बोस।
ठंडा पानी निगलने से कम होने वाली मिचली—क्युप्रम मेट।
खुली हवा में उदर पर से कपड़ा हटाने से कम होने वाली मिचली—टैबे।

लार बहने के साथ—इपिका, पेट्रोलि, सैंग्वि ।

चक्कर आने के साथ—कॉकुल, डायोसि, लैके, पल्से, टैबे, थैरिडि ।

धुँधला दिखाई देने के साथ—माइगेल ।

कमजोरी चिन्ता के साथ सामयिक आक्रमण—आर्स ।

खाने के बाद अधिक हो—ऐसैर, बर्बे ऐक्वि, डिजि, इपिका, नक्स वॉ, पल्से ।

उठते ही अधिक हो, केवल उठने की हरकत ही से—आर्स, ब्रायो, कॉकुल सिम्फोरि, टैबे, ट्रिओस्टि, वेरेट्रम एल्ब ।

सुबह के समय अधिक हो—ऐनैका, कैल्के का, फैगोपा, कार्बो वेज, ग्रैफा, लैक्टि-एसिड, नैट्र का, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, सीपिया, साइलि, सल्फर ।

स्नायविक विकार—ऐगैरि, बेल, कोलो, मैग फॉ, नक्स वॉ, सैंग्वि । देखिये दर्द ।

दर्द (Gastrodynia)—पाकाशय शूल—प्रकार टीसन—इस्कू, एनैका, हाइड्रै, रूटा ।

जलन, जैसे घाव हो गया हो—ऐसेटि एसिड, ऐगैरि, एमेट, आर्जे नाइ, आर्न, आर्स, एसाफि, बिस्म, कैडिम, ब्रोम, कैन्थे, कार्बो वेज, चिनि आर्स, कोल्चि, कान्डुरै, कोनि, डैटूरा, फॉर्मिका, ग्रैफा, आयोड, आइरिस, कैली आयोड, लैबर्न, लैक्टि एसिड, लेपिस अल्बा, मैंसिने, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओक्जै एसिड, फॉस, रोबीनिया, सीपिया, सल्फर । देखिये संवेदन ।

ऐंठन संकुचित, शूलमय, खींचन—एबीज नाइग्रा, ऐक्ट स्पि, एगैरि फैलो, आर्जे नाइट्रि, बैप्टि, बेल, बिस्म, ब्यूटीरि एसिड, कैक्ट, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कार्बो वेज, कैमो, कोकेन, कॉकु, कोलो, कोनियम, क्युप्रममेट, डैटूरा, ग्रैनैट, ग्रैफा, इग्नै, इपिका, जैट्रोफा, कैली कार्ब, लॉबे इन्फ्ला, मैग फॉ, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फॉस, प्लैटि, टीलिया, सीपिया, वेरेट्र विरि । देखिये संवेदन ।

काटन, कोंचन, फटन, चिलकन, आक्षेपिक, लपकन, चुभन—ऐकोन, ऐक्टि स्पि, आर्जे नाइट्रि, एट्रोपिन, बेल, बिस्म, ब्रायो, कार्बो वेज, काडु मैरि, कॉस्टि, चिनि आर्स, कोलो, कोनियम, क्युप्रेसस, क्युप्रम ऐसेटिकम, क्युप्रम मेट, डायोस्को, हाइड्रै, इग्नै, आइरिस, कैली कार्ब, मैग फॉस, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, रैटानहिया, सीपिया, सल्फर, थैलियम ।

मणिपूर कौड़ी सम्बन्धी (पेट के गड्ढे में)—एबीज कैनै, एबीज नाइग्रा, ऐक्टि स्पि, इथू, ऐलो, ऐमो म्यूर, ऐनैका, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बैराइटा म्यूर, बेल, बिस्म, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सिना, कालोसिं, क्युप्रम, डायोस्को, ग्रैफा, हाइड्रै, जैट्रोफा, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैल्मिया,

लोबे इन्फ्ला, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ऑक्जै ऐसि, पैराफि, फॉस, सीपिया, सैंग्वि, वेरेट्र ऐल्ब।

कुतरन, भूख जैसी—एबीज कैने, ऐब्रो, इस्कू, ऐगैरि, ऐमोम्यूर, ऐनैका, आर्जे नाइट्रि, ऐसैर, सिना, इग्नै, आयोड, लैके, फॉस, पल्से, रूटा, सीपिया, युरैनि। देखिए संवेदन।

स्नायुशूल युक्त (पाकाशय शूल)—एबीज नाइग्रा, ऐसेटि एसिड, इस्कू, एलूमि, ऐनैका, आर्जे बाइट्रि, आर्स, एट्रोपिन, बेल, बिस्म, ब्रायो, कार्बो वे, चेलिडो, कैमो, चिनि आर्स, सिना, कॉक्कु, कोडो, कोल्चि, कोलो, कोण्डुरैंगो, क्युप्रम आर्स, डिजि, डायस्को, फेरम मेट, जेल्से, ग्लोनोइन, ग्रेफा, हाइड्रोसि एसिड, इग्नै, इपिका, कैली कार्ब, लोबे इन्फ्ला, मैग फॉ, मेन्थोल, निकोल, नक्स मो, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, पेट्रोलि, प्लम्ब, टीलिया, पल्से, क्वैसिया, रैमनस कैली, रूटा, स्पाइजे, स्ट्रैन, स्ट्रिक, सल्फ्यु एसिड, टैबे, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक।

पेट दर्द के साथ लक्षण—रक्तहीनता के साथ—फेरम, ग्लोनो, ग्रेफा।

पीठ दर्द, चिन्ता, निराशा, फीके रंग के चेहरे के साथ—नाइट्रि एसिड।

जीर्ण उदर प्रदाह के साथ—ऐलूमि, ऐट्रापीन, बिस्म, लाइको।

जीर्ण घाव के साथ—आर्जे नाइट्रि।

कब्ज के साथ—ब्रायो, ग्रैफा, नक्स वॉ, फाइजॉस्टि, प्लम्ब।

बगल की तरफ और फिर पीठ तक बढ़ने के साथ—कोचलियर।

कन्धों तक बढ़ने के साथ—निकोल।

गठिया के साथ—कोचलि, अर्टिका।

मूर्च्छावायु (Hysteria) के साथ—एसाफि, इग्ने, प्लैटि।

दूध पिलाने के काल में—कार्बो वेज, सिन्को।

मासिक-धर्म के साथ—आर्जे नाइट्रि, कॉकु।

स्नायविक मन्दता के साथ—आर्जे नाइट्रि, गॉल्थेरिया, नक्स वॉ।

बारी-बारी गले और रीढ़ में दर्द के साथ—पैराफिन।

गर्भावस्था के काल में—पेट्रोलि।

बार-बार उभरने के साथ—ग्रेफा।

गर्भाशय विकार के साथ—बोरैक्स।

कष्टप्रद दर्द के साथ—ऑस्ट्रिया वरजि।

दर्द का घटना-बढ़ना—बढ़ना : रात में—ऐनैका, आर्जे नाइट्रि, आर्स, कैमो, कॉकु, इग्नै, कैली बाइ।

बीयर से—बैप्टि, कैली बाइ।

आगे की तरफ झुकने से—कैल्मिया।

कॉफी पीने से—कैन्थे, कैमो, नक्स वॉ, ओक्जै एसिड।
खाली पेट रहने से—ऐनैका, सिना, हाइड्रोसि एसिड, पेट्रोलि।
भोजन से—आर्जे नाइट्रि, बेल, ब्रायो, इग्ने, कैली बाइ, नक्स वॉ।
भोजन से, गरम—बेराइटा कार्ब।
झटका लगने से—ऐलो, बेल, ब्रायो।
दूध पिलाने से—इथूजा।
दाब से—आर्जे नाइट्रि, कैल्के कार्ब, कोचलियर, इग्नै।
छूने से—बेल, इग्नै, नक्स वॉ, आक्जै एसिड।
टहलने से, सीढ़ी से नीचे उतरने से—ब्रायो।
ठंडा पानी से—कैल्के कार्ब।
कीड़ी से, केंचुओं से—सिना, ग्रैनैट।
घटना—सीधे खड़े होकर आगे की तरफ झुकने से—बेल, डायस्को।
ठंडा चीज पीने से—बिस्मथ।
निम्न गरम (कुनकुनी) चीज पीने से—ग्रैफा, वेरेट्र वि।

खाने से—ऐनैका, ब्रोमि, कैल्के का, चेलि, ग्रैफा, हीपर, होमेरस, हाइड्रोसि एसिड, इग्नै, आयोड, क्रियो, लैके, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, पल्से, सीपिया।

मलाई की बरफ से—फॉस।
दाब से—ब्रायो, फ्लो एसिड, प्लम्ब।
सीधे होकर बैठने से—कैल्मिया।
कै करने से—हायोसि, प्लम्ब मेट।

पाकाशय द्वार सिकुड़ जाना—कैनै इण्डि, सिन्को, हीपर, नक्स वॉ, फॉस, ओर्निथॉगै, साइलि।

कड़ापन—बिस्म, कोण्डूरैं, ग्रैफा, फॉस, सीपिया, स्ट्रिक फॉस।

दर्द—कैन्थे, सेपा, हीपर, लाइको, मर्क, ओर्निथोगै, ट्रुसिलै, युरैनि। देखिए सिकुड़न (मलद्वार)।

संवेदन—चिन्ता, उत्सुकता—आर्स, कैली कार्ब, नाइट्रि एसिड, फॉस, वेरेट्र ऐल्ब।

मानो पेट सूखे भोजन से भरा हो—कैलैडि।
मानो पेट रीढ़ की तरफ दबा हो—आर्न।
मानो पेट पानी में तैर रहा हो—ऐब्रो।

जलन वाली गरमी—एब्रोज कैनै, ऐसेटि एसिड, ऐकोन, ऐगैरि, आर्जे नाइट्रि, आर्जे, बिस्मथ, कैलोट्रो, कैन्थे, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉस्टि, कोल्चि, कोलोसिं,

फेरम मेट, ग्लीसरीन, ग्रैफा, हीपर, आइरिस, लैक्टिक ऐसि, मर्क कार, नैट्र म्यूर, फॉस, सैंग्वि, सीपिया, सल्फर, टेरेबि ।

ठंडापन—ऐब्रो, बोविस्टा, कैल्के कार्ब, कैल्के साइलि, कैम्फो, सिन्को, कोल्चि, इलैप्स, हिपोमे, कैली कार्ब, क्रियोजो, मेनियेन्थ, ओलि ऐनि, ऑक्जै ऐसि, पाइरस, सैबैडि, सल्फु ऐसि, टैबै, वेरेट्र ऐल्ब ।

तना हुआ, ढोलक जैसा, कसाव, कड़वा असह्य—एबीज कैन, ऐब्सिन्थि, ऐगैरि, ऐम्ब्रा, ऐनैका, ऐण्टि क्रू, ऐपोसाइ, आर्जे नाइ, आर्स, ऐसाफि, ब्यूट्रि एसिड, कैजूपू, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, कैल्के फॉ, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, चेलिडो, सिन्को, कॉकू, कोल्चि, डायस्को, युओनियम, फेलटौरी, फेरम मेट, ग्रैफा, ग्रैटिओला, इग्नै, कैली का, लैके, लेथिसि, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मर्क कार, मास्कस, नैट्र कोलिन, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओर्निथॉगै, पोपू ट्री, पल्से, सल्फर ।

खालीपन, कार्यहीनता, धँसन, बैठने जैसा संवेदन—एबीज कैनै, ऐनैका, ऐपोसाइ, एसाफि, बैप्टी, बैराइटा म्यूर, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, सिमिसि, कॉकू, डिजि, डायस्को, जेल्से, ग्रैफा, हाइड्रोसि एसिड, इग्नै, कैली का, कैली फॉ, लैक कैना, लैट्रोडे, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मर्क सल्फ, मार्फि, म्यूरेक्स, आर्विथो, टेलूरि, थिया, थूजा, ट्रिलि, वाइब ओपू, पेट्रोलि, फास, टिलि, पल्से, रेडियम, सैंग्वि, सिपिया, स्टैन, सल्फर, टैबे ।

खालीपन, ११ बजे सुबह अधिक हो। खाने के लिए इन्तजार न कर सके—सल्फर, जिंक मेट ।

खालीपन, खाने से कम हो—ऐनैका, चेलिडो, आयोड, नैट्र का, म्यूरेक्स, फॉस, सीपिया, सल्फर ।

खालीपन, लेटने से कम मदिरा से—सीपिया ।

भारीपन, दाब, पत्थर या ढोंका जैसा—एबीज नाइग्रा, एकोना, आर्जे नाइ, आर्न, आर्स, बिस्म, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, कोल्चि, डिजि, फेरम मेट, ग्रैफा, कैली बाइ, कैली का, लोबे इन्फ्ला, लाइको, नक्स वॉ, पासीफ्लो, फॉस, पिलोका, पल्से, रोबीनि, सैंग्वि, सीपिया, स्पाइजे, सल्फर, जेरोफा, जिंजि ।

टपकन, थरथराहट—आर्जे नाइ, एसाफि, कैक्ट, साइक्यूटा, क्रोटे, युकाल, हाइड्रै, आयोड, कैली का, कैली आयोड, लैके, नैट्र म्यूर, ओलियाण्ड, पल्से, रियूम ।

ढीलापन, नीचे को लटकता जान पड़े—एगैरि, हाइड्रै, इग्नै, इपिका, स्टैफि, सल्फ्युरिक एसिड, टैबे ।

स्पर्श, दाब, झटका असह्य—एपिस, आर्जे नाइ, आर्स, बेल, बोविस्टा, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैन्थे, कार्बो वेज, काड्डु मैरि, सिन्को, कॉल्चि, डिजि, कैली बाइ, कैली का, लैके, लेसिथि, लाइको, मर्क कार, मर्क सल्फ, नैट्र कार्ब; नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, सैंग्वि, साइलि, स्पाइजे, स्टैन, सल्फर।

कम्प—आर्जे नाइट्रि, क्रोटे।

मुलायम पड़ना—(Gastro-Malacia)—कैल्के कार्ब, क्रियोजो, मर्क डल।

प्यास—ऐसेटि ऐसिड, एकोन, एल्फा, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, ऐपोसाइ, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, बेल, बर्बे वलगैरिस, बिस्म, ब्रायो, कैम्फो, कैन्थे, कैप्सि, कैमो, चिनि आर्स, सिन्को, कॉकु, कोल्चि, क्रोटै, क्युप्रम आर्स, डल्का, युपेटो पर्फ, हेल्लिबो, हेलोनि, इक्थि, इण्डो, आयोड, कैली ब्रो, लैक्टिक एसिड, लॉरो, लैसिथिन, मैग कार्ब, मैग फॉस, मेडो, मर्क कार, मर्क, मोर्फि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपि, पेट्रोसे, फॉस एसिड, फॉस, पोडो, रस टॉ, रस एरो, सैंग्वि, स्क्विला, सिलामारिटिमा, सिकेल, सीपिया, स्ट्रैमो, सल्फर, टेरेबिं, थूजा, युरेनि नाइट्रि, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र विरिडि।

बराबर ठंडा पानी, थोड़ा-थोड़ा चूसा करे—ऐकोन, ऐण्टि टा, आर्स, हायोसि, ओनोस्मो, सैनिकू।

कभी-कभी पीये, मगर अधिक मात्रा में—ब्रायो, हेल्लिबो, पोडो, सल्फर, वेरेट्र ऐल्ब।

प्यास न लगना—इथूजा, ऐण्टि टा, एपिस, बर्बे वल्गै, सिन्को, कोफि, साइक्लै, जेल्से, हेल्लिबो, मेनिएन्थ, नक्स मॉ, पल्से, सैबेडि, सार्सा।

पेट का घाव—अर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐट्रोपि, बेल, बिस्म, कैल्के आर्स, कोण्डुरै, क्रोटे, फेर ऐसेटि, जिरैनियम, ग्रैफा, ग्रिण्डे, हैमो, हाइड्रै, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली आयोड, क्रियोजो, लाइको, मर्क कार, मर्क, ओपियम, ऑर्निथोगै, पेट्रोलि, फॉस, प्लम्ब एसेटिकम, रैटैनहिया, सिनैपिस ऐल्बा, सिम्फाइटम, युरैनियम।

कै करना—साधारण औषधियाँ—ऐब्रोटे, ऐकोन, इथूजा, एगैरि फै, ऐलमि, ऐमिग परसिका, एण्टि क्रू, ऐण्टि टॉ, ऐपोसाइ, ऐपोमोर्फिया, आर्जे नाइट्रि, आर्स, एट्रोपि, बेल, बिस्म, बोरैक्स, ब्रायो, कैडमि सल्फ, कैल्के कार्ब, कैल्के म्यूर, कैम्फो मोनो ब्रो, कैने इण्डि, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो एसिड, काड्डु मैरि, कस्कैरिला, सेरियम, कैमो, चेलिडो, सिन्को, कॉकू, कोल्चि, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मे, ड्रोसे, युपेटो पर्फ, फेरम म्यूर, फेरममेट, फेरम फॉस, गॉल्थै, जिरेनि, ग्रैनैट, ग्रैफा, आयोड, इपिका, आइरिस, जैट्रोफा, कैली बाइ, काली ओक्से, क्रिओजो, लैके, लैक्टि एसिड, लोबे-इन्फ्ला, मैग कार्ब, मर्क कार, मोर्फि, नैट्र म्यूर, नैट्र फास, नक्स वॉ, ओपि, पेट्रोलि, फॉस, पिक्स लि, प्लम्ब, पल्से, रिसिनस कोमू, सैंग्वि, सार्कोले एसिड, सीपिया, स्टैन, स्ट्रिक एट फेर सिट, सिम्फोरि, टैबे, युरैनि, वैलेरि, वेरेट्र एल्ब, जेरोफि, जिंक।

कारण—दूध पिलाने वाली माताओं में क्रोध; जिससे दूध प्रवाहित हो—वैलेरियाना।

क्रोध, साथ में रुष्ट होना—कैमो, कोलो, स्टैफि।

बीयर—क्युप्रम, इपिका, काली बाइ।

आँतों पर आघात—ओपि, प्लम्ब, पाइरो।

कर्कट (जिगर, पाकाशय, गर्भाशय)—कार्बो एसिड, क्रियोजो।

मस्तिष्क सम्बन्धी—ऐपोमोर्फि, बेल, ग्लोन, प्लम्ब मेट।

सुबह गले से श्लेष्मा खँखारने से—ब्रायो, युफ्रैसि।

वयःसन्धिकालीन—ऐक्विले।

आँखों को बन्द करना—थेरिडि।

सामयिक, बच्चों में—क्युप्रम आर्स, इंग्लु, आइरिस, क्रियोजो, मर्क डल्सिस।

ठंडी चीज पीना, केवल गरम चीज पचा सके—ऐपोसाइ, आर्स, आर्स आयोड, कैलैडि, कैस्कैर, चेलिडो, वेरेट्र ऐल्ब।

किसी चीज के पीने से—ऐकोन, ऐपोसा, एण्टि टॉ, आर्स, बिस्म, कैन्थे, डल्का, युपेटो पर्फ, इपिका, सैनिक, साइलि, वेरेट्र ऐल्ब।

निम्न-गरम-गरम चीज पीने से—ब्रायो, फॉस, पल्से, पाइरो, सैनिकू।

शराब पीने वालों को, सुबह को—ऐण्टि टॉ, आर्स, कार्बो एसिड, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, इपिका, लोबे इंफ्ला, नक्स वॉ।

खाने, पीने से—एसेटिक एसिड, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टॉ, आर्स, बिस्म, ब्रायो, कैल्के म्यूर, सिना, क्रोल्चि, क्रोटै, फेरम मेट, फेरम फॉस, हायोसि, आयोड, इपिका, लाइको, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, साइलि, वेरेट्र एल्ब, वेरैट्र विरि।

चर्म स्फोट फिर से उभरना—क्युप्रम मेट।

पाकाशयिक उत्तेजना—ऐण्टि क्रू, आर्स, बिस्म, फेरम मेट, इपिका, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, वेरेट एल्ब।

हिस्टीरिया के रोगी में—ऐक्विले, इग्नै, क्रियोजो, प्लैटी, वैलेरि।

सिवाय दाहिने के किसी करवट लेटना—ऐण्टि टॉ।

दाहिनी तरफ या चित् लेटना—क्रोटै।

मासिक धर्म के बाद—क्रोटै। देखिये स्त्री-जननेन्द्रिय।

दूध से—इथूजा, आर्स, कैल्के कार्ब, फेरम, क्रियोजो, मैग कार्ब, मर्क म्यूर, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ।

हरकत, हिल जाना—ब्रायो, कॉकू, कोल्चि, डिजि, नक्स वॉ, टैबे, थैरिडि, वेरैट्र एल्ब।

क्षय रोग, तपेदिक—कैली ब्रो, क्रियोजो ।

चीरा लगाने के बाद (Laparotomy)—इथूजा, बिस्म, सेपा, नक्स वॉ, फॉस, स्टैफि, स्ट्रिक ।

गर्भावस्था—एसेटिक एसिड, एलेट्रि, ऐमिग्डै पर्सि, एण्टि टा, ऐपोमो, आर्स, विस्म, कार्बो एसिड, सेरियस, कोकेन, कॉकू, कोडि, क्युकर्ब, क्युप्रम ऐसेटि, फेरम मेट, गोसिपि, ग्रैफा, इग्नै, इनग्लु, इपिका, आइरिस, क्रियोजो, लैक डिने, लैक्टि एसिड, लोबे इन्फ्ला, मैग का, नक्स वो, पेट्रोलि, फॉस, सारि, पल्से, सोपि, स्ट्रॉन्शि ब्रो, स्ट्रिकनि, सिम्फोरिकार्पस, टैवे ।

रीढ़ और गरदन के आस-पास दाब जैसा—सिमिसि ।

सिर उठाने से—एपोमोर्फि, ब्रायो, स्ट्रैमो ।

परावर्तित—एपोमोर्फि, सेरियनम, कॉकू, इपिका, क्रियोजो, वैलेरि ।

गुर्दों की खराबी के कारण से—क्रियोजो, नक्स वॉ ।

कार की सवारी से—आर्न, कॉकू, इपिका, क्रियोजो, नक्स वॉ, पेट्रोलि, सैनिकू, साइलि ।

तरुण ज्वर—एलैन्थ, बेल ।

समुद्री रोग, कार की सवारी से बीमारी—एपोमोर्फि, आर्स, बोरै, कार्बो एसि, एरियम, कॉकू, कोफि, ग्लोनो, इपिका, क्रियोजो, निकोटि, नक्स वॉ, ओपि, पेट्रोलि, सीपिया, स्टैफि, टैबै, थेरिडियन ।

पानी देखना; नहाते समय आँखें बन्द कर लेना—लाइसिन, फॉस ।

प्रकार तेजाबी, खट्टी—ऐण्टि क्रू, आर्स, ब्रायो, कैलैडि, कैल्के का, काडु मैरि, कैमो, फेरम मेटा, फेरम फॉस, आयोड, आइरिस, कैली का, लैकडि, लैक्टिक एसिड, लाइको, मैग का, नैट्र फास, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, पल्से, रोबीनिया, सल्फर, सल्फ एसिड ।

पित्तमय (हरी, पीली)—एकोन, इथूजा, एण्टिम क्रू, ऐण्टि टा । आर्स, बेल, ब्रायो, कार्बो एसिड, काडु मैरि, कैमो, चेलिडो, क्रोटै, युपेटो ऐरोमै, युपेटा पर्फ, ग्रैटिओला, इपिका, आइरिस, कैली का, लेप्टैंड्रा, नक्स वॉ, निक्टैन्थेस, पेट्रोलि, पोडो, पल्से, रोबीनिया, सैंग्वि, सीपिया, टार्ट एसिड ।

काली—आर्स, कैडमि सल्फ, क्रोटै, मैन्सिन, पिक्स लिक्विडा ।

खूनी—ऐकोन, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बोथ्रोप्स, कैडमि सल्फ, कैन्थे, क्रोटै, फेरम मेट, फेरम फॉस, फिकस, जिरैनियम, हैमे, इपिका, आइरिस, मेजे, फॉस, सिकेल । देखिये खून की कै, (Haematemesis) ।

बुकी हुई कॉफी की तरह—आर्स, कैडमि सल्फ, क्रोटै, लैके, मर्क कार, ऑर्निथागै, पाइरो, सिकेल ।

मल युक्त—ओपि, प्लम्ब, पाइरो, रैफेनस ।

भोजन अनपचा—ऐण्टि क्रू, ऐपोस, ऐट्रोपि, बाल्सैम पेरु वि, बिस्म, ब्रायो, सेरियम, सिन्को, कोल्चि, क्युप्रम, फेरम मेट, फेरम म्यूर, फेरम फॉस, ग्रैफा, इपिका, आइरिस, क्रियोजो, लैक कैना, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, सैंग्वि, स्ट्रिक फेर सिट, वेरेट्र एल्ब ।

फटा हुआ दूध, थक्केदार—इथूजा, ऐण्टि क्रू, कैल्के का, इपिका, मैग का, मैग म्यूर, मर्क डल्सि, मर्क, पोडो, सैनिकू, वैले ।

चिकना, गाढ़ा श्लेष्मा—इथूजा, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बाल्सैम पेरु वि, कैडमि सल्फ, कार्बो वेज, कोल्चि, इपिका, आइरिस, जेट्रोफा, कैली बाइ, कैली म्यूर, क्रियोजो, मर्क कार, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, पेट्रोलि, पल्से, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक ।

पानी-सा—ऐब्रो, आर्स, बिस्म, ब्रायो, युफोर्बिया, युफोर्बि कोरो, आयोड, आइरिस, क्रियोजो, लैक कैना, मैग कार्ब, ओलियाण्डर, वेरेट्र एल्ब ।

खमीर की तरह—नैट्र कार्ब, नैट्र सल्फ ।

साथ के लक्षण—आमाशय में गड़गड़ाहट के साथ—पोडो ।

भूख लगने के साथ—आयोड, लोबे इन्फ्ला ।

आँतों के रुकने के साथ आघातिक—ओपियम, प्लम्ब, पाइरो ।

कम्प के साथ—आर्स, डल्का, पल्से, टैबे ।

हैजे के साथ—आर्स, कैम्फो । देखिए उदर ।

जीर्ण होने की प्रवृत्ति—लोबे इन्फ्ला ।

भूख असामयिक, अस्थिर, लार बहना, अधिक मात्रा में नीबू के रंग का मूत्र—इग्नै ।

शूल ऐंठन, मरोड़ के साथ—बिस्म, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, ओपि, प्लम्ब, पिक्स लिक्वि, सारासीनि, वेरेट्र एल्ब । देखिए उदर ।

पतनावस्था, कमजोरी के साथ—इथूजा, ऐण्टि टा, आर्स, कैडमि सल्फ, क्रोटैल, युफोर्बिया कोरोलाटा, लोबे इन्फ्ला, टैबै, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र विरि ।

कब्ज के साथ—नक्स वॉ, ओपियम, प्लम्ब ।

उदासी के साथ, मन गिरा रहे—नक्स वॉ ।

दस्त के साथ—आर्स, बिस्म, कैल्के कार्ब, कैमो, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, इपिका, आइरिस, क्रियोजो, मर्क कार, फॉस, पल्से, पुलेक्स, रेसार्सिन, वेरेट्र एल्बम । देखिए उदर ।

औंघाई के साथ—इथूजा, ऐण्टि टा, इपिका, मैग कार्ब ।

भय, गरमी, प्यास अधिक मूत्र और पसीने के साथ—ऐकोन।
असफल, उत्सुक ओकाई के साथ—आर्स, बिस्म, क्युप्रम, पोडो।
सिर दर्द के साथ—ऐपोमोर्फिया, आइरिस, पेट्रोलि। देखिए सिर।
दिल की कमजोरी के साथ—आर्स, कैम्फो, डिजि।
कई-कई दिनों के बाद हमला होने के साथ—बिस्म।

आधी रात को हमला हो, पेट खाली होने के बाद, तुरन्त खाने की इच्छा होने के साथ—फेरम मेट।

मिचली के साथ—इथूजा, एमिग्डै परसि, ऐण्टि टा, ब्रायो, इपिका, आइरिस, लोबे इन्फ्ला, नक्स वॉ, पेट्रोलि, पल्से, सैंग्वि, सिम्फो, वेरेट्र एल्ब। देखिए मिचली।

अन्य लक्षणों के कम होने के साथ—ऐण्टि टा, पल्से।
खाने; पीने आराम होने के साथ—ऐनैका, टैबे।
ठण्डी चीज से कम होने के साथ—क्युप्रम, फॉस, पल्से।
गरम चीज पीने से कम होने के साथ—आर्स, चेलिडो।
लेटने से कम होने के साथ—ब्रायो, कोल्चि, नक्स वॉ, सिम्फो।
दाहिनी करवट लेटने से कम होने के साथ—ऐण्टि टा।
पेट पर से कपड़ा हटाने से, खुली हवा में कम होने के साथ—टैबेकम।

लार बहने के साथ—ग्रैफा, इग्नै, इपिका, आइरिस, क्रियोजो, लैक्टिक एसिड, लोबेलिया, पल्से, टैबे।

अकड़न, आक्षेप के साथ, झटका—क्युप्रम मेट, हायोसि, ओपियम।
साफ जबान के साथ—सिना, डिजि, इपिका।
चक्कर आने के साथ—कॉकुल, इग्नै, नक्स वॉ, टैबे।

उदर (Abdomen)

अपेण्डिसाइटिस—देखिए टिफ्लाइटिस।

जलन, गरमी—एबीज कैने, ऐकोन, ऐलो, ऐल्सटान, ऐण्टि क्रूड, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, ब्रायो, कैम्फो, कैन्थे, कार्बो वेज, कोल्चि, क्रोटै, आइरिस, कैली बाइक्रो, लिमुलस, लाइको, मर्क कार, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, फॉस एसिड, फॉस, पोडो, रस टॉ, सैंग्वि, सीकेलि, सीपिया, सल्फर, वेरेट्र एल्ब।

अन्धान्त्र पुच्छ (Caecum) के रोग—आर्स, लैके, रस वेने, वेरेट्र विरि। देखिये ऐपेण्डिसाइटिस, टिफ्लाइटिस।

ठंडापन—इथूजा, ऐम्ब्रा, ऑरम मेट, कैडमि सल्फ, कैल्के कार्ब, कैम्फो, कैप्सि, सिन्को, कोल्चि, इलैप्स, ग्रैटिओ, कैली ब्रो, कैली कार्ब, लैके, मेनियांथ, फिलैण्ड्रियम, फॉस, सिकेलि, सीपिया, टैबे, वेरेट्र एल्ब।

उदर-शूल, वायु गोला—साधारण औषधियाँ—ऐकोन, एड्रने, एलो, एलुमि, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बैराइटा कार्ब, बेल, ब्रायो, कैजूपू, कैल्के का, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, चिनि आर्स, साइक्यू, सिना, सिन्को, कॉकुल, कॉफि, कोलिन्सो, कोल्चि, कोलो, क्रोट टि, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम मेट, साइक्लै, डिजि, डायस्को, इलैटे, फिलिक्स मा, गैम्बो, ग्रैटि, इग्नै, इलिसि, इपिका, आइरिस, टैनै, आइरिस, जैला, लेप्टै, लिमुल, लाइको, मैग कार्ब, मैग फॉस, मेन्था, मर्क का, मर्क, मोर्फि, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओनिस्कस, ओपि, ओक्जै एसिड, पैरैफि, प्लैटो, प्लम्ब एसेटि, प्लम्ब क्रोम, प्लम्ब मेट, पोडो, पोलिगो, पल्से, रैफै, रियूम, रस टॉ, सैबि, सैम्बू, सार्सा, सेना, सीपिया, साइलि, सिनैपि नि, स्टैन, स्टैफि, स्ट्रिक, थूजा, वेरट्र एल्ब, वाँइबर्नम ओपू, जिंक मेट।

कारण और प्रकार—चक्कर के साथ, बारी-बारी—कोलो, स्पाइजे।

शिशु शूल—इथूजा, एसाफि, बेल, कैल्के फॉस, कैटैरिया, सेपा, कैमो, सिना, कोलो, इलिसि, जैलैपा, कैली ब्रो, लाइको, मैग फॉस, मेन्था पिप, नेपेटा, रियूम, सेना, स्टैफि।

पित्त सम्बन्धी, पथरी-शूल—एट्रोपि, बेल, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्डु मैरि, कैमो, चिओनैन्थ, सिन्को, कोलो, डायस्को, इपिका, आइरिस, लाइको, मेन्था, मोर्फि एसेटि, पोडो, रिसिन, टेरेबि, ट्रिओस्ट। देखिये पित्ताशय (Gall Bladder)।

जीर्ण प्रवृत्ति—लाइको, स्टैफि।

अफरा, वायु शूल (Flatulent Colic)—एब्सिन्थि, एगैरि, ऐल्फा, ऐलो, एनिस, आर्जे नाइट्रि, एसाफि, बेल, ब्युटि एसिड, कैजूपू, कैल्के फॉ, कार्बन सल्फ, कार्बो वेज, कैमो, सिना, सिन्को, कॉकू, कोलो, डायस्को, हाइड्रोसि एसिड, इलिसि, इपिका, आइरिस, लाइको, मैग फॉस, मैन्था, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब मे, पोलिगोनम, पल्से, रेडियम, रैफै, रोबिनि, सैंग्वि, सेना, जिंक।

क्रोध से—कैमो, कोलो, स्टैफि।

गाड़ी की सवारी से—कार्बो वेज, कॉकुल।

जुकाम से—ऐकोन, कैप्सि, कैमो, कोलो, नक्स वॉ।

पनीर खाने से—कोलो।

ककड़ी, खीरे का सलाद खाने से—सेपा।

पाकाशय विकार से—कार्बो वेज, सिन्को, कोलो, डायस्को, इपिका, लाइको, नक्स वॉ, पल्से।

मूत्राशय में नश्तर देकर पथरी निकलवाने से, डिम्बाशय को नश्तर देकर निकलवाने से पेट के उस भाग से सम्बन्धित कारणों से—बिस्म, हीपर, नक्स वॉ, रैफेनस, स्टैफि।

कपड़ा हटाने से—नक्स वॉ, रैफैनस, रियूम।

पैर भींगने से—सेपा, कैमो, डोलिकस, डल्का।

कीड़ों, केंचुओं से—आर्टेमी, बिस्म, सिना, फिलिक्स मास, ग्रैनेटम, इण्डिगो, मर्क सल्फ, नैट्र फॉस, सैबैडि, स्पाइजे।

रक्त प्रवाहित बवासीर से—इस्कू, सेपा, कोलो, नक्स वॉ, पल्से, सल्फर।

हिस्टीरिया सम्बन्धी—ऐलेट्रि, एसाफि, कैजूपू, कॉकुल, इग्नै, वैलेरि।

मासिक धर्म सम्बन्धी—बेल, कैस्टर, कैमो; कॉकुल, कोलो, पल्से। देखिए स्त्री-जननेन्द्रिय।

स्नायु शूल, आन्त्र शूल (Enteralgia)—ऐलुमेन, एण्टि टा, आर्स, एट्रोपि, बेल, कैमो, कॉकु, कोलो, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, डायस्को, युफोर्बि, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, कैली कार्ब, मैग फॉस, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब एसेटि, प्लम्ब मैट, सैटानी, टैबे, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक मेट,। देखिए दर्द का रूप।

गुर्दा सम्बन्धी—बर्बे वल, कैल्के कार्ब, डायस्को, एरिंजियम, लाइको, मोर्फि एसेटि, ओसिनम, सार्सा, टैबे, टेरेबि। देखिए मूल-यन्त्र मण्डल।

वात रोग सम्बन्धी—कॉस्टि, कोलो, डायस्को, फाइटो, वेरेट्र एल्ब।

विष सम्बन्धी (सीसा, ताँबा)—एलुमेन, एलुमिना, बेल, फेरम, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपि, प्लैटि, सल्फर, वेरेट्र एल्ब।

स्थान, उदर की पेशियाँ—एकोन, आर्न, बेल, बेलिस, क्युप्रम मेट, हैमे, मैग म्यूर, नैट्र नाइट्रि, प्लम्ब मेट, रस टॉ, स्टिक्टि, सल्फर।

उदर छल्ले में—कॉकू, ग्रैफा, मेजे, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ट्रांशि।

ऊपर जाने वाली बड़ी आँत में—रस टॉ।

पुट्ठों में—एलूमि, ऐमो म्यूर, मर्क कार, पोडो।

कोखों में—कार्बो वेज, सिन्को, डायस्को, नक्स वॉ, पाइरस, सीपिया। देखिए दर्द का प्रकार।

तलपेट (Hypogastrium)—ऐलो, बेल, बिस्म, सेपा, कॉकु, डायस्को, युकेलि, हैमे, कैली कार्ब, लाइको, मैग कार्ब, नक्स वॉ, पैलेडि, पैरैफि, प्लैटि, सैबाडि, सीपि, सल्फर, टॉम्बि, वेरेट्र विरि। देखिये जननेन्द्रिय मण्डल।

क्षुद्रांत्र तथा अंधान्त्र सम्बन्धीय (Ileo-caecal)— ऐलो, बेल, ब्रायो, कोफि, फेरम फॉस, गैम्बोजिया, आइरिस टैने, कैली म्यूर, लिमुलस, मैग कार्ब, मर्क कॉर, मर्क सल्फ, प्लम्ब, रेडियम, रस टॉ। देखिए ऐपेण्डिसाइटिस।

वंक्षणीय (Inguinal)—ऐमो म्यूर, आर्स, कैल्के कार्ब, ग्रैफा, सीपिया।

छोटे स्थानों में—ब्रायो, कोलो, ओक्जै एसिड।

आड़ी मल नली - बेल, कैमो, कोल्चि, मर्क कॉर, रैफेनस।

नाभि प्रदेशीय—ऐलो, बेंजो एसिड, बर्बे वल, बोविस्टा, ब्रायो, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, कैमो, चेलिडो, सिना, कोलो, डायस्को, डल्का, गैम्बोजिया, ग्रैनेटम, हाइपेरि, इण्डिगो, कैली वाइ, इपिका, लेप्टैण्ड्रा, लाइको, नक्स मॉ, नक्स वॉ, पीलियस, प्लैटि, प्लम्ब, पल्से, रैफैनस, रियूम, सेनेसिओ, स्पाइजे, स्टैन, सल्फर, वेरेट्र एल्ब, वरबैस्क।

दर्द का प्रकार—कुचलन—इथूजा, ऐलियम सैटि, एपिस, ऐपोसाइ, आर्न, आर्स, बेलिस, ब्रायो, कार्बो वेज, कोलो, कोनियम, युकैलि, फेरम मेट, हैमे, मर्क को, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फाइटो, पल्से, सल्फर।

मूल ऐंठन, संकुचन, कटन, चमोकन, बींधन—ऐकोन, इस्कु, ऐगैरि, ऐलो, ऐण्टि टॉ, आर्जेमान मेक्सि, आर्जे नाइ, आर्जे नाइट्रि, आर्न, ऐसाफि, बेल, बिस्म, ब्रायो, कैल्के फॉस, कैटैरिया, कैमो, सिना, सिन्को, कॉकु, कोलो, कोल्चि, कोनियम, क्रोटो टिग, क्युप्र आर्स, क्युप्रम मेट, डायस्को, डल्का, इलेटे, युपेटो पर्फ, फिलिक्स मास, गैम्बो, ग्रैटि, हाइपेरि, इग्नै, आयोड, इपिका, आइरिस, जैलापा, जेट्रोफा, कैली बाइ, कैली का, लैकै, लेप्टैण्ड्रा, लाइको, मैग का, मैग फॉस, मर्क कॉर, नैट्र सल्फ, निकोल, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फाइटो, प्लम्ब एसेटि, प्लम्ब क्रीम, पोलिगो, पल्से, रेडियम, रैफेनस, रियूम, सैबाइना, सिंकेलि, सीपिया, स्पाइजे, स्ट्रिक, सल्फर, ट्रोम्बी, वेरेट्र ऐल्ब, वाइबर्न ओपू, जिंक।

गुल्ली की तरह बनाने वाला—ऐलो, ऐलुमिना, ऐनैका, बेल, ब्रायो, कॉकु, डायोसि, कैली का, मेजे, नक्स वो, इनांथे, प्लैटि, प्लम्ब मेट, पल्से, रैनैन स्कले, सैबाइना, सीपिया।

टपकन, बुलबुले फूटने की तरह बुदबुदाहट—इथूजा, ऐलो, बैराइटा म्यूर, बेल, बर्बे वल, कैल्के का, इग्नै, सैंग्वि, सेलेनि, टैरैक्स।

फैलने वाला, चुभन, झपटन, फटन—ऐकोन, आर्जे, मेक्सि, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कैमो, कॉकु, कोचलियर, कोलो, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम आर्स, डायस्को, ग्रैफा, इपिका, कैली का, लाइको, मैग फॉ, मर्क, मोर्फि, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, पैरैफि, प्लैटि, प्लम्ब, पोडो, पल्से, सल्फर। देखिए आन्त्र-शूल (Enteralgia)।

कड़कन—एगैरि, एपिस, आर्न, बेल, ब्रायो, चिनि आर्स, डीपर, कैली का, लैके, स्पाइजे।

साथ के लक्षण— पेट सिकुड़ा हो, जैसे डोरी से खिंचा हो—बेलि, प्लम्ब मेट, पोडो, टैबे।

पेट धँसा हो, कड़ा हो, मूत्र कम, अँगड़ाई लेने की इच्छा—प्लम्ब मेट।

पेट फूला हो, गद्दे की तरह—बेल, रैफेनस।

घबराहट, शीत तलपेट से गालों तक ऊपर चढ़े—कोलो।

जुकाम के साथ बारी-बारी - कैल्के का।

सन्निपात और चुचके अंग में दर्द, बारी-बारी— प्लम्ब मेट।

चक्कर के साथ बारी-बारी—कोलो, स्पाइजे।

पीठ दर्द के साथ—कैमो, लाइको, मॉर्फि, पल्से, सैम्बू।

गाल लाल, गरम पसीना— कैमो।

कम्प—नक्स वॉ, पल्से।

पतनावस्था— इथूजा, कैम्फे, क्युप्रम, वेरेट्रम एल्ब।

कब्ज के साथ—एलियम सैटाइ, ऐलो, ऐलुमिना, कॉकुल, कोलिन, ग्रैफि, लाइको, नक्स वॉ, ओपियम, प्लम्ब ऐसेटि, साइलि।

विक्षेप के साथ अकड़न—बेल, साइक्यूटा।

टखनों में ऐंठन—कोलो, क्युप्रम ऐसेटि, प्लम्ब मेट, पोडो।

सन्निपात बारी-बारी—प्लम्ब मेट।

दस्त के साथ—आर्स, कैमो, कोलो, मैग कार्ब, पोलिगो, पल्से, सैम्बू, वेरेट्र एल्ब।

खालीपन, गरम, गशी जैसा लगना—कॉकुल, हाइड्रै।

हाथ पीले, नीले नाखून—साइलि।

हिचकी, दम घोंटने वाली, सीने और पेट में—वेरेट्र ऐल्ब।

भूख, मगर भोजन का बहिष्कार करे—बैराइटा का।

नाक खुजाये, पीला, हल्का नीले रंग का चेहरा—सिना, फिलि मा।

मिचली, घड़ी-घड़ी, पानीदार, चिकना मल—कैमो, सैम्बू।

जाँघों में दर्द और टीस—कोलो।

बाद में अंगों में दर्दीली सिकुड़न—ऐब्रो।

बँधे समय पर आक्रमण—एरैनि, सिन्को, डायस्को, इलिसि, कैली ब्रो।

पेट की बड़ी धमनी में टपक, तलपेट में सिकुड़न—डिजि।

लाल पेशाब—बोवि, लाइको।

बेचैनी, आराम के लिए फड़का करे और करवटें बदला करे—कोलोसिं।

वायु गड़गड़ाया करे, मिचली, पतला मल—पोलिगो।

थोड़ा मल, हवा खुले मगर उससे आराम न मिले—सिना।

खट्टा मल—रियूम ।

वस्ति गह्वर में ऐंठन—स्टैफि ।

इधर-उधर उछला करे, चिन्ता, हवा खुलने से आराम न मिले—कैमो, मैग फॉस ।

पाखाना मालूम हो—ऐलो, सिन्को, लेप्टैण्ड्रा, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओपियम ।

पेशाब दब गया हो—ऐकोन, प्लम्ब ऐसेटि ।

कै करना—बेल, कैडमि सल्फ, प्लम्ब ऐसेटि ।

कै, हिचकी, डकार, चिल्लाना—हायोस ।

जम्हाई, आक्षेपिक, औंघाई—स्पाईरैन्थेस ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—करीब ५ बजे शाम—कोलो, कैली ब्रो, लाइको ।

आधी रात के बाद—आर्स, कॉकुल ।

रात में भोजन करने के बाद—ग्रैटियोला ।

रात में—कैमो, सिन्को, कॉकुल, सेना, सल्फर ।

झुकने से, खाँसने से—आर्स, बेल, ब्रायो, नैट्र म्यूर ।

आगे की तरफ झुकने से—ऐण्टि टॉ, डायस्को, सिनैपि नाइग्रा ।

आगे की तरफ झुकने, लेटने, दाब से—ऐकोन, डायस्को ।

पीने से—कोलो, सल्फर ।

ठण्डा पानी पीने से—क्युप्रम मेट ।

खाने से—बैराइटा का, कैल्के फॉस, सिन्को, कोलो, कैली बाइक्रो, नक्स वॉ, सोरि, जिंक ।

झटके से, दाब से—ऐकोन, एलो, बेल, प्लम्ब ।

हरकत से, करवट लेटने से आराम मिले—ब्रायो, कॉकु ।

धूम्रपान से—मेनियान्थ ।

मिठाई से—फिलिक्स मास ।

छूने से, दाब, हरकत से—ब्रायो ।

बाँह, टाँग से कपड़ा हटाने से, खड़े होने से—रियूम ।

निम्न ताप से, रात में—कैमो ।

कम होना, घटना—दोहरा होने से—बोवि, सिन्को; कोलो, मैग फॉ, पोडो, सीपिया, स्टैन, सल्फर, वेरेट्र एल्ब ।

खाने से—बोवि, हॉमैरस ।

हवा खुलने से—एलो, कार्बो वेज, सिन्को, कॉकुल, कोलो, नैट्र सल्फ, सल्फर ।

गरम प्रयोग से या सेंकने से—आर्स, कोलो, मैग फॉस, पोडो, पल्से, साइलि ।

घुटना मोड़कर लेटने से—लैके।
दाब से—कोलोसिं, मैग फॉ, नाइट्रि एसिड, प्लम्ब, रस टॉ, स्टैन।
मालिश से—प्लम्ब मेट।
मालिश से, सेंक से—मैग फॉस।
सीधा होकर बैठने से—सिनैपि नाइग्रा।
लेटने, उठने-बैठने से—नक्स वॉ।
मल-त्यागने से—ऐलो, कोलो, टैनेसेटम, वेरेट्र ऐल्ब।
पीछे की तरफ शरीर सीधा करने से या इधर-उधर हिलाने से—डायस्कोरिया।
इधर-उधर टहलने से—सेपा, डायस्को, मैग फॉस, पल्से, रस टॉ, वेरेट्रम एल्ब।
झुककर टहलने से—ऐलो, कोलो, नक्स वॉ, रस टॉ।
गरम शोरबा पीने से—ऐकोन।

अफरा—तनाव भरापन, भारीपन, आध्मान—एबीज नाइग्रा, ऐब्रो, ऐब्सिन्थि, ऐसेटि ऐसिड, ऐकोन, ऐगैरि, ऐल्फा, ऐलो, ऐन्टि क्रू, एपिस, आर्जें नाइट्रि, आर्स, ऐसाफि, बैराइटा कार्ब, बेल, बोवि, कैजुपू, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, चेलिडो, सिना, सिन्को, कॉकल, कोल्चि, कोलिन्सो, कोलो, क्युप्रम मेट, डायस्को, ग्रैफा, इग्नै, इलिसि, इण्डो, आइरिस, कैली कार्ब, लैके, लिमुलस, लाइको, मैग कार्ब, मर्क कार, मैग फॉस, मर्क, मोमोर्डि, मास्कस, म्यूरि एसिड, नैफ्थै, नैट्र कार्ब, नैट्र नाइट्रि, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ, नक्स वो, ओनिस्कस, ओपि, ओपण्टिया, ओर्निथो, फॉस एसिड, पोडो, पोथो, पल्से, रेडियम, रैफैन, रियूम, रोडो, रस ग्लैब्रा, रस टॉ, सार्सा, सेना, सीपिया, साइलि। स्टॉशिया कार्ब, सल्फर, सैम्बू, टैरैक्स, टेरेबि, थीया, थूजा, युरैन नाइ, वैले, जैन्थक, जिंजि।

अफरा, हिस्टीरिया युक्त—ऐलेट्रि, एम्ब्रा, आर्जें नाइट्रि, ऐसाफि, कैजुपू, कैमो, कॉकुल, इग्नै, कैली फॉ, नक्स मॉ, प्लैटी, पोथो, सुम्बु, टैरैक्स, थीया, वैले।

अफरा, मोड़ों में वायु न फँसा हो—ऐमो कार्ब, ऑरम, बेला, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, कॉल्चि, कोलो, ग्रैफा, हीपर, इग्ने, कैली कार्ब, लिमुलस, लाइको, मोमोर्डि, नक्स वॉ, पैलैडि, फॉस, प्लम्ब मेट, पल्से, रैफै, रस ग्लै, रोबिनि, स्टैफि, सल्फर; थूजा।

दुर्गन्धित, घृणित हवा खुलना—ऐलो, आर्न, ब्रायो, कार्बो वेज, फेरम मैग, ग्रैफा, ओलियेण्ड, साइलि।

चीरफाड़ के बाद अफरा, हवा खुलने से आराम न हो—सिन्कोना।

गड़गड़ाहट, घड़घड़ाहट, वायुसंचयता (Borborygmus)—ऐलो, ऐपोसाइ, आर्स, बैप्टि, बेला, कार्बोनि सल्फ्यू, कार्बो वेज, कैमो, सिना, सिन्को,

कॉल्चि, कोलो, कॉनवैले, क्युप्रम आर्स, क्रोटो टिग, डायस्को, गैम्बो, ग्लिसरिन, ग्रैफा, ग्रैटि, हीपर, इपिका, जैट्रोफा, कैर्ला कार्ब, लाइको, मर्क, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओलियेण्ड, फास्फो एसिड, पोडो, पल्से, रिसिन कॉम्पू, रियुमेक्स, सैनिक्यू, सीपिया साइलि, थिया, जेरोफाइ ।

कड़ापन—ऐब्रो, एनैका, बैराइटा कार्ब, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, सिना, सिन्को, क्यूप्रम, ग्रैफा, लाइको, नैट्र कार्ब, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब ऐसेटि, रैफे, साइलि, सल्फर, थूजा ।

जानदार चीजों की तरह कूदते मालूम पड़ना—ऐरण्डो, ब्रैकाइग्लो, ब्रैन्का, क्रोक, साइक्लै, नक्स मॉ, ओपि, सैबाडि, सल्फर, थूजा ।

युवाकाल की लड़कियों के उदर का बढ़ जाना—कैल्के कार्ब, ग्रैफा, लैके, सल्फर ।

स्त्रियों का पेट लटक जाना, बहुत-से बच्चे होने के बाद—ऑरम मेट, ऑरम म्यूर, बेला, फ्रॉक्स एमे, हेलोनि, फॉस, सीपिया ।

घड़े जैसा गोल, ढीला—ऐमो म्यूर, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, मेजे, पोडो, सैनिक्यू, सार्सा, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा ।

उदर कहीं-कहीं उभड़ा हो—क्रोक, नक्स मॉ, सल्फर, थूजा ।

उत्तेजनीय, छूना असह्य या दाब—ऐसेटि एसिड, ऐकोन, ऐलो, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बैप्टि, बेला, बोवि, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कार्डु मै, सिन्को, कॉफि, कोली, कोनियम, क्यूप्रम मेट, युओनाइम, फेरम मेट, गैम्बो, ग्रैफा, हैमे, हेडियोमा, हेल्लिबो, कैलि बाइ, लैके, लाइको, मर्क कार, म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, पॉपुलस, रैनन बल, रस टॉ, सीपि, साइलि, सुम्बु, सल्फ, टेरेबि, वेरेट्रम एल्ब, वाइबर्न ओपू ।

कत्थई चकत्ते—कॉली, लाइको, फॉस, सीपि, थूजा ।

लाल चकत्ते—हायोसि । देखिये चर्म ।

कम्प—लिलि टिग्रि ।

कमजोर, मानो दस्त होगा - ऐलो, ऐण्टि क्रू, एपियम ग्रे, बोरैक्स, क्रोटो टि, युकैलि, फेरम मेट, फार्मिका. नक्स वॉ, ओपण्टिया, रैनन स्केले । देखिये दस्त होना ।

कमजोर, खाला, धँसन, ढीलेपन की संवेदना—ऐब्रो, ऐसेटि एसिड, आर्न, ऐल्सटोट, ऐण्टि क्रू, कैमो, कॉक्कु, युफोर्बि, ग्लिसरीन, हाइड्रै, इग्ने, ओपण्टिया, पेट्रोलि, फाइजॉस्टि, फॉस, प्लम्ब ऐसेटि, पोडो, क्वैसिया, सीपि, स्टैन, स्टैफि, सल्फोने, सल्फ्यु एसिड, वेरेट्र एल्ब ।

गुदा मलाशय—(मलाशय की चारो तरफ वाला)—कैल्के सल्फ, रस टॉ, साइलि।

जलन, कड़कन, गरमी—एबीज कैने, इस्कु, ऐलो, ऐलूमेन, ऐलूमिना, ऐम्ब्रा, ऐमो म्यूर, ऐण्टि क्रू, आर्स, बेला, बर्बे वल, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो वेज, सेपा, चेनापो, ग्लो, कोलिन्सो, कोनियम, युकैलि, युओनाइ, गैम्ब्रा, ग्रैफा, हैमे, हाइड्रै, आइरिस, जुग्लै सिने, जुग्लै रि, कैली कार्ब, मर्क, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, ओलियेण्ड, पियोनिया, प्रून स्पाइ, रेटानहिया, रियूम, सैंग्वि, नाइट्रि, सेना, सल्फर, ट्रॉम्बि।

मलत्याग के पहले और दौरान में जलन—ऐलो, ऐमो म्यूर, आर्स, कोलो, कोनियम, हाइड्रै, आइरिस, जूग्लै सिने, मर्क, ओलि ऐनि, रियूम।

मलत्याग के बाद जलन—इस्कु, ऐलूमेन, ऐमो म्यूर, आर्स, ऑरम, बर्बे वल, कैंथे, कैप्सि, कार्बो वेज, चेनोगे ग्लो, गैम्बो, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, ओलियम ऐसि, पियोनिया, प्रूनस स्पाइ, रैटानहिया, साइलि, स्ट्रॉन्शि, सल्फर।

रक्ताधिक्य—इस्क्यू, ऐलो, ऐलुमिना, कॉलिनसो, हाइपेरि, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसि, सैबाइना, सीपिया, सल्फर।

चर्मभेद, फरन, वृद्धियाँ—कठिन अबुंद का कर्कट रोग, असह्य दर्द—ऐलुमेन, फाइटो, स्पाइजे।

मसा श्लैष्मिक बटी, अबुंद—बेंजो एसिड, कैली ब्रो, नाइट्रि ऐसि, थूजा।

अकौता—(Eczema)—बर्ब वल, ग्रैफा, मर्क प्रे रूबर। देखिये चर्म-रोग।

उभरन, भीतरी भाग में फैले हों—पोलिगो।

दरारें, चिटकन, छिलन, घाव, छरछराहट, कच्चापन—इस्कु, ऐग्नस, ऐलो, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, कैल्के फलो, कार्बो बेज, कॉस्टि, साइमेक्स, कॉण्डुरै, ग्रैफा, हैमे, हाइड्रै, इग्नै, आइरिस, कैलि आयोड, लैके, लीडम, मर्क डल्सि, मर्क, मॉर्फि, म्यूरि एसिड, नेट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूरि ऐसि, पियोनिया, पेट्रोलि, फॉस, फाइटो, प्लैटि, प्लम्ब, रैटानहिया, रस टॉ, सैंग्वि नाइट्रि, सैनिक्यु, लीडम, सीपिया, साइलि, सल्फर, सिफिलि, थूजा, वाइब ओपू।

मलद्वार या गुदा के नासूर—ऑरम म्यूर, बैराइटा म्यूर, बर्बे वल, कैल्के फॉ, कैल्के सल्फ, कार्बो वेज, कास्टि, फ्लोरि एसिड, ग्रैफा, हाइड्रै, लैकै, माइरिस्टिका, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पियोनिया, फॉस, क्वेरकस, रैटानहिया, साइलि, सल्फर, थूजा।

गुदा का नासूर और सीने में रोग, बारी-बारी—बर्बेवल, कैल्के फॉस, साइलि।

थैलियाँ पाकेट बनाना—पोलिगोन।

फरन, चटक लाल बच्चों में—मेडोरि।

आँतों में रक्तस्राव (Enterrhagia) **आँतों से खून बहना**—एकालाइफा, एसेटि ऐसि, इस्कू, ऐलो, ऐलुमेन, ऐलुमिना, आर्न, कैक्ट, कार्बो वेज, कैस्कारा, सिन्को, सिनामो, कोबाल्टम, कोकेन, क्रॉटै, एरिजे, हैमै, इग्ने, इपिका, कैलि कार्ब, लैके, लाइकोपो, मैंगि इण्डि, मर्क साइ, मिलेफो, म्यूरि एसिड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, फॉस ऐसि, फॉस, सेडम, सीपिया, सल्फ्यू एसिड, सल्फर, टेरेबि, थूजा।

रक्त-स्राव, मलत्याग काल में—एलुमेन, ऐलुमिना, कार्बो वेज, इग्ने, आयोड, इपिका, कैलि कार्ब, फॉस, सोरि, सीपिया।

प्रदाह (Proctitis)—इस्कू, ऐलो, ऐलुमिना, ऐम्ब्रा, ऐण्टि क्रू, कोल्चि, कॉलिन्सो, मर्क कार, मर्क, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, फॉस, पोडो, रिसिन, सैबाल, जिंजि।

प्रदाह, उपदंशीय—बेला, मर्क, नाइट्रि एसिड, सल्फर।

जलाना (Pruritus)—ऐकोन, इस्कू, ऐलो, ऐलुमिना, ऐम्ब्रा, एनाका, ऐण्टि क्रू, बैराइटा कार्ब, बोविस्टा, कैडमि आयोड, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कैस्कारा, कॉस्टि, सिना, कोलिन्सो, कोपे, फेरम आयोड, फेरम मेट, ग्रैनेट, ग्रैफा, होमेर, इग्ने, ऐण्डिगो, लाइको, मेडोरि, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, पेट्रोलि, फॉस, पाइनस सिलवे, प्लैटि, पोलिगो, रेडियम, रैटानहिया, र्‍युमेक्स, सैबाडि, सैक्रर ऑफि, सैंग्वि नाइट्रि, सीपिया, स्पाइजे, स्टैफि, सल्फर, टेलुरि, टेरेबि, ट्युक्रि, युरैनि, जिंक।

नमी—ऐलो, ऐमो म्यूर, ऐनाका, ऐण्टि क्रू, बैराइटा का, कैल्के का, कार्बो वेज, कॉस्टि, ग्रैफा, हीपर, मेडोरि, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूर एसिड, पियोनिया, फॉस, रैटानहिया, सीपिया, साइलि, सल्फ्यू एसिड।

चीरफाड़ कराने से पहले—कोलिन्सोनिया।

दर्द, टीसन, मीठा दर्द—इस्कू, एलेट्रि, ऐलुमेन, कोलिन्सो, ग्रैफा, लाइको, रैटानहिया।

धँसन, दाब—ऐलो, ऐलुमिना, आर्स, कैक्ट, सियानोथस, चेनोपो ग्लो, युफ्रै, हाइपेरि, कैलि कार्ब, लैके, लिलि टि, मेडो, ओपि, प्रून स्पाइ, सीपिया, सल्फर, सल्फ्यू एसिड, जेरोफाइलम।

सिकुड़न आक्षेपिक—इस्कू, ग्लैब्रा, इसक्यूहियो, ऐनाका, आर्जे नाइट्रि, बेला, कैक्ट, कॉस्टि, कोलिन्सो, फेरम मेट, ग्रैटि, हाइड्रै, इग्ने, लैके, लाइको, मेडोरि, मेलि, मर्क, मेजे, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसिड, नाइट्रो म्यूर एसिड, नक्स वॉ, प्लम्ब ऐसेटि, रैटानहिया, सैनिकू, सेडम, सीपिया, सिफिलि, टैबे, वरबैस्क।

कोंचन मुलायम मल के बाद भी—ऐलूमेन, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, रैटानहिया।

देर तक रहे मल त्यागने के बाद—इस्कू, ऐलो, ऐलुमेन, ऐमो म्यूर, ग्रैफा, हाइड्रै, इग्ने, मर्क साइ, म्यूरि एसिड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, रैटानहिया, सेडम, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा, वाइब ओपू।

स्नायुशूल (Proctalgia)—ऐट्रोपि, बैराइटा म्यूर, बेला, कॉल्चि, क्रोट टिग, इग्ने, कैलि का, लैके, लाइको, ऑक्जे एसिड, फॉस, प्लम्ब, स्ट्रिक, टैरेन हिस्पा।

खपच्ची की तरह, चुभन, गड़न, कटन, चमकन—ऐकोना, इस्कू, एलुमि, ऐमो म्यूर, बेला, कॉस्टि, सेपा, कोलिन्सो, इग्ने, कैली का, लैके, लाइको, मर्क, मेजे, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, प्लैटि, रैटानहिया, रूटा, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा।

थरथराहट, टपकन—ऐलो, बेला, कैप्सि, हैमे, लैके, मेलि, मर्क, नैट्र म्यूर।

हल्का लकवा-आक्रमण (Paretic) मलाशय और संकुचन पेशियों में—ऐलो, ऐलूमि, कॉस्टि, एरिजे, जेल्से, ग्रैफा, हायोस, म्यूरि एसिड, ओपि, ऑक्सि टॉ, फॉस ऐसिड, फॉस, प्लम्ब मेट, साइलि, सल्फोना, टैबे।

मलाशय की आंशिक पक्षाघातिक अवस्था, गुल्ली ठुकी जान पड़े—ऐलो, ऐनाका, कैना इण्डि, कैलि-बाइ, मेडारि, प्लैटि, प्लम्ब मेट, सीपि, सलफ्यू एसिड।

मलाशय की आंशिक पक्षाघातिक अवस्था, संकुचन पेशियों की कार्यक्षमता अविश्वसनीय—ऐलो, ऐलूमि, एपोसा, एरिजे, फेरम मेट, नक्स वॉ, सैनिकु, सिके।

मलद्वार फैला हुआ—एपिस, फॉस, सिके, सोलेन ट्यूबे।

मलद्वार का बाहर निकलना (काँच निकलना)—इस्कू, ग्लै, इस्कू, एलो, एण्टि क्रू, ऐरैलि, आर्न, बेल, कार्बो वेज, कॉस्टि, कॉल्चि, फेरम मेट, फेरम फॉस, गैम्बो, हैमे, हाइड्रै, इग्ने, कैलि का, मैग फॉ, म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, प्लम्ब, पोडो, पोलिपोर, रूटा, सीपि, सोलेन, ट्यूबे सल्फर, टैबे, ट्रांबि।

काँच निकलना, प्रसव के बाद झुकने से—पोडो, रूटा।

काँच निकलना कमजोरी से—पोडो।

काँच निकलना छींकने से—पोडो।

कांच निकलना जोर पड़ने से, भारी बोझ उठाने से—इग्ने, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पोडो, रूटा।

काँच निकलना पेशाब करते समय—म्यूरियेटिक एसिड।

काँच निकलना बच्चों में—बेला, फेरम मेट, फेरम फॉस, इग्नै, म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, पोडो।

काँच निकलना दस्त के साथ, मलत्याग के समय—इस्कू, ऐलो, कार्बो वेज, कॉल्चि, क्रोटन टि, फ्लोरि एसि, गैम्बो, हैमे, इग्ने, कैलि कार्ब, म्यूरि एसिड, पोडो, फॉस, रूटा, सल्फर।

बवासीर के साथ काँच निकलना मदपान वालों में, बैठे रहने वालों में—— इस्कू, ग्लै ।

मलत्याग के साथ काँच निकलना, आमाशय में झटका—इग्ने ।

लाली, चारो तरफ—कैमो, मर्क साइ, पियोनिया, सल्फर, जिंजि । देखिये मलांत्र प्रदाह (Proctitis) ।

संकोचन, सिकुड़न का बन्द होना—बेला, कॉफिया, हाइड्रै, इग्ने, नाइट्रि एसिड, फॉस, साइलि, टैबे, थियोसिन । देखिये दर्द ।

फटना, खून निकलना, मलत्याग के बाद—लैक डिफ्लोरे, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड । देखिये दरारें ।

जुकाम, स्राविक प्रवाह पाकाशयिक-आमाशयिक गैस्ट्रोड्यूओडेनल—काडुं-मैरि, सिन्को, हाइड्रै, सैंग्वि । देखिये पेट ।

हैजा एसियाटिका—ऐकोना, ऐगैरि, फैलॉप, आर्स, बेल, ब्रायो, कैम्फो, कैन्थे, कार्बो वेज, चिनि सल्फ, साइक्यूटा, कॉल्चि, क्युप्रम एसिड, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, डिजि, युफोर्बि-कोरोला, गुयेको, हाइड्रोसि एसिड, इपिका, जैट्रोफा, कैलि बाइ, लैके, मर्क कार, नाजा, नक्स वॉ, ओपि, फॉस एसिड, फॉस, क्वैसिया, रस टॉ, सिके, सल्फर, टैबे, टैरेबि, वेरेट्रम एल्बम, जिंक मेट ।

हैजा शिशु—गरमी के मौसम का रोग—ऐकोन, इथूजा, ऐण्टि टॉ, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेला, बिस्म, ब्रायो, कैडमि सल्फ, कैल्के ऐसेटि, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैम्फो मोनो, कैन्थ, कैमो, सिन्को, कोलो, क्रोट टि, क्युफिया, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, ऐलाटो, युफोर्बि, फेरम फॉस, ग्रैफा, हाइड्रोसि एसि, इण्डोल, आइडो का, इपिकॉ, आइरिस, कैलि ब्रो, क्रियोजो, लारोसे, मर्क, नैट्र म्यूर, ओक्जि ऐसि, पैसिफ्लो, फॉस, फाइटो, पोडो, सोरि, रेसोसिन, सिकेलि, सीपि, साइलि, सल्फर, टैबे, वेरेट्रम ऐल्ब, जिंक मेट ।

हैजा मॉबर्स—ऐण्टि टा, आर्स, बिस्म, कैम्फो, क्लोरेल, कॉल्चि, कोलो, क्रोट टिग, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, इलैटे, ग्रैटि, हाइड्रोसि एसिड, इपिका, आइरिस, ओपरकु, ओपि, पोडो, सिकेल, वेरेट्रम एल्बम ।

गुम हैजा; कॉलेरिन—ऐण्टि क्रू, आर्स, क्रोट टिग, क्युप्रम आर्स, डायस्को, इलैटे, युफोर्बि, कोरोला, ग्रैटि, इपिका, आइरिस, जैट्रोफा, नूफरलुटियम, फॉस एसिड, सिकेल, वेरैट्र एल्ब ।

कब्ज—साधारण औषधियाँ—एबीज नाइ, ऐकोना, इस्क, इग्नै, इस्कू, ऐगैरि, ऐलेट्रि, एलो, ऐलुमेन, ऐलुमिना, ऐमो कार्ब, ऐमो म्यूर, ऐनाका, एपिस, आर्न, ऐसेरै, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, कार्बो एसिड, कैस्के सैगे, कॉस्टि,

चेलि, चिओनैन्थ, सिन्को, कोका, कोलिन्सो, क्रोकस, डोलिकोस, यूजी, जैम्बो, युओनाइ, युफ्रै शिया, फेल टोरी, फेर मेट, जेल्से, ग्लिसरीन, ग्रैफा, ग्रैटिओ, गुयेक, हीपर, हाइड्रै, इग्ने, आइरिस, कैलि बाइ, कैलि कार्ब, कैलि म्यूर, लैक डी, लैके, लैक्टिक एसिड, लाइको, मैग म्यूर, मेजे, मॉर्फि, नैबेल, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, निक्टैन्थ, ओपि, पैरैफि, फॉस, फाइजॉस्टि, फाइटो, प्लैटि, प्लम्ब ऐसेटि, प्लम्ब, पोडो, सोरि, पाइरो, रैटानहिया, रहेम कैलिफो, सैनिकू, सेलेनि, सेना, सीपिया, साइलि, साइलि मैगि, स्पाइजे, स्ट्रैमि, स्ट्रिक, सल्फर, सिम्फोरि, सिफिलि, टैबे, टैनि एसिड, ट्यूबर, वेरेट्र एल्ब, जिंक मेट, जिंक म्यूर ।

कारण और प्रकार—एनिमा का दुरुपयोग—ओपियम ।

प्रसव के बाद जिगर और गर्भाशय की कार्यहीनता—मेले ।

दस्त के साथ बारी-बारी—ऐम्ब्रा, ऐमो म्यूर, ऐण्टि क्रू, ब्रायो, कैल्के क्लोरे, कार्डु मै, कैल्के, चेलिडो, कोलिन्सो, फेरम साइ, हाइड्रै, आयोड, नक्स वॉ, पोडो, टीलि, रेडियम, रूटा, सल्फर, वेरेट्रम एल्ब ।

जुलाब के दुरुपयोग से—एलो, हाइड्रै, नक्स वॉ, सल्फर ।

पनीर खाने से—कोलो ।

पाकाशयिक विकार से—ब्रायो, हाइड्रै, नक्स वॉ, पल्से ।

समुद्र यात्रा से—ब्रायो, लाइको ।

गठिया की अम्लता से—ग्रैटियोला ।

बवासीर से—इस्कू ग्लैब्रा, इस्कू, कॉस्टि, कोलिन्सो, हाइड्रै, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पोडो, सल्फर । देखिये बवासीर (Piles) ।

धक्का आघात से—प्लम्ब मेट, पाइरो, सेलेन ।

सीसे के जहर से—ओपी, प्लैटि ।

चोट लगने से—आर्न, रूटा ।

मानसिक धक्के से, स्नायु पर जोर पड़ने से—मैग कार्ब ।

धमन क्रिया की क्रमबद्धता के कारण—एनाका, नक्स वॉ ।

यात्रा से, देश छोड़ने वालों में—प्लैटि ।

मलाशय की कार्यहीनता से—ऐलो, इलुमिना, ऐनाका, कॉस्टि, सिन्को, लैके, लाइको, नैट्र म्यूर, ओपि, सोरि, सेलेनि, सीपिया, सिलि, वेरेट्रम एल्ब ।

आँतों की कर्महीनता, सूखापन—इस्कू, इथू, ऐलेट्रिस, इलुमेन, इलुमिना, ब्रायो, कैफेन, कोलिन्सो, फेरम मेट, हाइड्रै, लाइको, मेलिलो, मेजे, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपि, फाइजॉस्टि, प्लैटि, प्लम्ब, एसेटि, पाइरो, रूटा, सैनिकू, सल्फर, वेरेट्रम एल्ब ।

बोतल से या नकली आहार वाले बच्चों का—एलुमि, नक्स वॉ, ओपि।

शिशु बच्चों का अतिसार—इस्कू, एलूमि, एपिस, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कास्टि, कोलिन्सो, क्रोक, हाइड्रै, लाइको, मैग म्यूर, नक्स वॉ, निकटैन्थस आर्बोर ट्रिस्टिस, पैराफि, पोडो, सोरि, सैनिकू, सीपि, सल्फर, वेरेट्रम एल्बम।

बुड्ढे लोगों में—ऐलूमिना, ऐण्टि क्रू, हाइड्रै, लाइको, ओपि, फाइटो, सेलेनि, सल्फर।

वात पीड़ित व्यक्तियों में, उदर वायु, अनपच—मैग फॉस।

स्त्रियों में इस्कू, एलेट्रिस, एलुमिना, ऐम्ब्रा, एनाका, आर्न, एसाफि, ब्रायो, कैल्के का, कोलिन्सो, कोनियम, ग्रैफा, हाइड्रै, इग्ने, लैके, लाइको, मेजे, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपियम, प्लैटिना, प्लम्ब, पोडो, पल्से, सीपिया, सिलिनिया, सल्फर।

मल का प्रकार—सूखा, गुदा के मुँह पर, आकर बिखर जाये—ऐमो म्यूर, मैग म्यूर, सैनिकू, जिंक।

सूखा, कठिन, थोड़ा, गठीली, गोल या लीद की तरह लेंडी—इस्कू, ग्लै, इस्कू, ऐलूमिना, ऐस्टेरि, बैराइटा कार्ब, काडूं मैरि, कॉस्टि, चेलिडो, कोलिन्सो, ग्लीसरिन, ग्रैफा, इण्डोल, लाइको, मैग म्यूर, मॉर्फि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपि, पेट्रोलि, प्लैटि, प्लम्ब, पाइरो, सैनिकू, सीपि, सल्फर, थूजा, वेरेट्रम एल्ब, वरबैस्क, जैरोफाइल, जिंक।

सूखा, बहुत दर्द से हो—इस्कू, ऐलेट्रि, ऐलो, ऐलुमिना, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, ग्लिसरिन, ग्रैफा, कैलि कार्ब, लैके, डिफला, मेलि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपि, पाइरो, सैनिकू, सेलेनि, सीपि, सल्फर, वेरेट्र एल्बस, वाइबर्न ओपू।

सूखा, बाहरी प्रयोग से निकालना आवश्यक—ऐलो, एलूमिना, ब्रायो, कैल्के कार्ब, इण्डोल, ओपियम, प्लम्ब, रूटा, सैनिकू, सेलेनि, सीपि, साइलि, वेरेट्रम एल्बम।

सूखा, बार-बार मालूम हो, मल त्यागने की इच्छा हो—एलुमेन, एनाका, ऐस्टेरि, कार्बो वेज, कॉस्टि, कोनियम, फेरम मेट, ग्लिसरिन, ग्रैनेट, इग्ने, अ योड, लैक डिफलो, लाइको, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, पैराफि, प्लैटि, फॉस, पोडो, रोबिनिया, रूटा, साइलि, सीपि, स्पाइजे, सल्फर।

सूखा, थोड़ा बाहर आकर फिर पीछे सरक जाये—ओपि, सैनिकू, साइलि, थूजा।

घड़ी-घड़ी मालूम हो, मगर सफल न हो—ऐम्ब्रा, एनाका, कॉस्टि, फेरम मेट, ग्रैफा, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, प्लैटि, सल्फर।

कड़ा मल—इस्कू, ऐलो, ऐमो म्यूर, ऐण्टि क्रू, बैराइटा कार्ब, ब्रायो, कैल्के कार्ब, चेलिडो, कोनियम, ग्लीसरीन, इण्डोल, आयोड, लैक डिफलो, लाइको, मैग म्यूर, नैट्रम म्यूर, ओपि, फॉस, प्लम्ब, रैटानहिया, सैनिकू, सेलेनि, सल्फर।

कड़ा मल श्लेष्मा से ढँका हो—एलूमिना, ऐमो म्यूर, कैस्कैरा, कॉस्टि, कोलिन्सो, कोपे, ग्रैफा, हाइड्रै, नक्स वॉ, सीपि।

पहले कड़ा फिर लेईदार पतला—कैल्के कार्ब, लाइको।

बड़ा, काला मल—पाइरो।

हलका रंग भूरा, खड़िया की तरह—एकोना, एलुमिना, कैल्के कार्ब, चेलिडो, चिओनैन्थ, सिन्को, कोलिन्सो, डिजि, डोलिकस, हीपर, हाइड्रै, इवेरिस, इण्डोल, कैलि म्यूर, मर्क डल, पोडो, सैनिकू, स्टेलेरिया।

इच्छा न हो, न लगे—एलुमिना, ब्रायो, ग्रैफा, हाइड्रै, ओपि।

लेईदार, चिमड़ा, गुदा से लगा रहे—एलुमि, चेलि, चियोनैन्थ, प्लैटि।

पतला, महीन, सींक की तरह—आर्न, फास, कास्टि, स्टैफि।

मुलायम मल भी कठिनाई से निकले—ऐगनस, एलुमि, एनाका, चेलि, चियोनैन्थ, प्लैटि, रैटानहिया, साइलि।

साथ के लक्षण—पेट की कमजोरी, कम्प—प्लैटि।

गुदा बहुत दर्द करे—ग्रैफा, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, साइलि।

पीठ दर्द—इस्कू, युयोनाइम, फेरम, कैलि बाई, सल्फर। देखिये पीठ।

खून बहाना—एलुमि, एमो म्यूर, एनाका, कैल्के फा, कोलिन्सो, लैक डिफ्लो, लेमियम, मार्फि, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फास, सोरि, सीपि, वाईबर्न ओपू।

शूल ऐंठन—कोलिन्सो, क्युप्रम, ग्लोनो, ओपि, प्लम्ब एसेटि।

आक्षेपिक सिकुड़न गुदा में—कास्टि, लैके, लाइको, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, प्लम्ब मेट, साइलि। देखिये मलाशय।

बहुमूत्र—कॉस्टि।

गशी—वेरेट्रम एल्ब।

बदबू निकलना—कार्बो एसिड, ओपि, सोरि।

पथरी, कामला रोग—चियोनैन्थ। देखिये पित्ताशय।

सिर दर्द—ब्रायो, जेल्से, हाइड्रै, आइरिस, नक्स वा, सोपि, वेरेट्र एल्ब। देखिये सिर दर्द।

दिल कमजोर—फाइटो, स्पाइजे।

नाभि में आंत उतरना—कॉकू, नक्स वा।

दूसरों का पास रहना असह्य, दाई का भी—ऐम्ब्रा।

दर्द जिससे बच्चा जोर न लगा सके—इग्ने, लाइको, सल्फर, थूजा।

बहुत पीछे की तरफ झुकने पर आसानी से मल निकले—मेडो।

खड़े होने से मल आसानी से निकले—कॉस्टि।

बवासीर—इस्क्यू, ऐलो, एलूमेन, कैल्के फ्लोर, कास्टि, कोलिन्सो, युओनाइम, ग्लोनो, ग्रैफा, कैलि सल्फ, लाइको, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पैराफि, रैटानहिया, साइलि, सल्फर, बायेथिया। देखिये खूनी बवासीर।

काँच निकलना—इस्कू, एलुमि, फेरम मेट, इग्ने, लाइको, मेडो, पोडो, रूटा, सीपिया, सल्फर। देखिये मलाशय।

गर्भाशय का बाहर निकलना—स्टैन।

मूत्राशय-ग्रन्थियों का रस बहना—आर्न, साइलि। देखिये पुरुष जननेन्द्रिय।

मूत्राशय-ग्रन्थि-रस का निकलना—एलुमि, हीपर।

मलाशय में लगातार पीड़ा—इस्कू, ऐलो, एलुमेन, कॉस्टि, हाइड्रैस्टि, इग्ने, लाइको, म्यूरि एसिड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, रैटानहिया, सापि, सल्फर, थूजा। देखिये मलाशय।

सिर में हल्कापन मालूम देना—इण्डोल।

कुछ भाग बाकी रह जाने का संवेदन—ऐलो, एलुमिना, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, सीपि, साइलि, सल्फर।

मल त्यागने की इच्छा न हो—एलुमिना, ब्रायो, ग्रैफा, हाइड्रै, इण्डोल, ओपि, सैनिकू, सल्फर, वेरेट्र ऐल्ब।

निचले उदर भाग में मल त्यागने की इच्छा मालूम दे—ऐलो। देखिये बार-बार मल-त्याग की इच्छा।

ऊपरी उदर भाग में मल त्यागने की इच्छा होना—एनाका, इग्ने, वेरेट्र एल्ब।

मध्यच्छद डायाफ्राम वह मेहराबदार पेशियों का ढँकना जो दिल इत्यादि को पेट और निचले भाग से अलग करता है, प्रदाह (Diaphragmitis)—एट्रोपि, बेल, बिस्म, ब्रायो, कैक्टस, क्युप्रम, हीपर, हायोस, इग्ने, नक्स वॉ, रेनन बल्बो, स्ट्रैमो, वेरेट्र विरि।

दर्द—एसाफि, बिस्म, ब्रायो, कैक्ट, सिमिसि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, सिके, स्पाइजे, स्टैन, स्टिक्टा, स्ट्रिक्नि, वेरेट्र एल्ब, जिंक ऑक्सै।

वात रोग—ब्रायो, कैक्ट, सिमिसि, स्पाइजे, स्टिक्टा।

दस्त होना (Enteritis) तीव्र—एकालाइ, एसेटि एसिड, ऐकोन, इथूजा, एगैरि फैलॉयडस, एलो, एलस्टोनि, इण्ड्रोसा, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, एपिस, एपोसाइ, आर्जेनाइट्रि, आर्न, आर्स, आर्से आयोड, ऐसाफि, बैप्टि, बेल, बेंजो एसिड, बिस्म, बोविस्टा, ब्रायो, कैडमि सल्फ, कैल्के कार्ब, कैल्के एसेटि, कैल्के फॉस, कैम्फो, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, चेलिडो, चिनि आर्स, सिना, सिन्को, कॉल्चि, कोलिन्सो, कोलो, कार्न, आर्सि, क्रोट टिग, कॉफिया, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम आर्स,

साइक्लै, डल्का, एचिनी, ऐलैटे, एपिलॉप, युकैलि, युकॉर्बि कोरो, फेरम मेट, फेरम फॉस, फ्लोरिक एसिड, फोर्मिका, गैम्बो, जेल्से, ग्रैटिओ, हेलेबो, हीपर; हायोसि, आयोड, इपिका, आइरिस, जैलापा, जैट्रोफा, कैलि बाइ, कैली क्लो, कैलि फॉ, लप्टै, मैग कार्ब, मर्क डल्सि, मर्कसल्फ, मर्क वाइ, मोर्फि, म्यूरि एसिड, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नूफर, नक्स वॉ, ओलियेण्ड, ओपि, ओपण्टिया, ओरिओ डैफ, पियो-निया, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फॉस, फाइजॉस्टि, पोडो, पोलिगो, प्रून स्पाइ, सोरि, पल्स, रियूम, रस टॉ, रस वेने, रिसिन, कॉम्यू. रूमेक्स, सैण्टो, सिकेल, सीपि, साइलि, सल्फर, सल्फू एसिड, टैबे, टेरेबिं, थूजा, वैलेरि, वेरेट्र एल्ब, जिंक, जिंजि।

जीर्ण—एसेटि एसिड, ऐलियम सैटाइ, एलो, ऐग्सट्र, एण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्से, आर्से आयोड, बैप्टि, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, सेट्रैरिया चैपैरो, सिन्को, कोटो, क्रोट टिग, क्युप्रम आर्स, इलेप्स, फेरम मेट, गैम्बो, ग्रैफा, हीपर, आयोड, आयोडो फॉ, इपिका, कैलि बाइ. लैके, लैक्टिक एसिड, लियाट्रिस, लाइको, मैग म्यूर, मर्क, नैबेलूस, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, ओलियैण्ड, फॉस एसिड, फॉस, पोडो, सोरि, पल्स, रस ऐरो, रूमेक्स, स्ट्रिक, आर्स, सल्फर, थूजा, ट्यूबर, अर्टिका।

कारण—आक्रमण—सिरदर्द के साथ बारी-बारी—ऐलो, पोडो।

तेजाबी चीजों से—एलो, एण्टि क्रू, फॉस एसिड, सल्फर।

तीव्र रोगों के कारण से—कार्बो वेज, सिन्को, सोरि। देखिये टायफायड ज्वर।

अधिक मदपान से—आर्से, लैके, नक्स वॉ।

क्रोध के कारण से—कैमो, कोलो, स्टैफि।

नहाने से—ऐण्टि क्रू, पोडो।

बीयर पीने से—एलो, सिन्को, इपिका, कैलि बाइ, म्यूरि एसिड, सल्फर।

गाँठ गोभी, सॉरकॉट खाने से—ब्रायो, पेट्रोलि।

खेमे में रहने से—ऐल्सटोनि, जुग्लै सि, पोडो।

वायुनलिकाओं के जुकाम के दबने से—सैंग्वि।

मौसम बदलने से, बाहरी हवा लगने से—ऐकोन, ब्रायो, कैल्के सल्फ, कैप्सि, कॉल्चि, डल्का, इपिका, मर्क, नैट्र सल्फ, सोरि, रस टॉ, साइलि।

बहुत ठण्डी चीज पीने से, बरफ से—ऐकोन, एग्रैफि, आर्स, बेला, ब्रायो, कैम्फो, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, ग्रैटिओ, नक्स मॉ, पल्से, स्टैफि।

कॉफी पीने से—सिस्टस, साइक्लै, ऑक्जै एसिड, थूजा।

नाक बहना बन्द होने के बाद—सैंग्वि।

शारीरिक क्रम-भ्रष्टता से—आर्से।

अण्डों से—चिनि आर्से।

उत्तेजना, आवेग, जोश, भय से—ऐकोन, आर्जे नाइट्रि, जेल्से, हायोसि, इग्ने, कैलि फॉस, ओपि, फॉस ऐसिड, पल्से, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक ।

चर्म स्फोट दबने से—ऐण्टि टा, एपिस, ब्रायो, डल्का, पेट्रोलि, सोरि, सल्फर ।

चर्बी खाने से—साइक्ले, कैलि म्यूर, पल्से, थूजा ।

मोटे भोजन से, जो पका न हो—कैमो ।

फल खाने से—आर्से, ब्रायो, कैल्के फॉ, सिन्को, सिस्टस, कोलो, क्रोटो टिग, इपिका, पोडो, पल्से, वेरट्र ऐल्ब, जिंजि ।

पित्त विकार से—एण्टि क्रू, ब्रायो, सिन्को, कोलो, इपिका, लाइको, नक्स वॉ, पल्से ।

ऊँचे शिकार से—क्रोटे, पाइरो ।

गरम मौसम से—ऐकोन, ऐलो, एम्ब्रोसिया, ऐण्टि क्रू, आर्से, ब्रायो, कैम्फो, कैप्सि, कैमो, सिन्को, क्रोटो टिग, कॉफिया, फेरम फॉ, गैम्बो, इपिका, आइरिस, मर्क, नक्स मॉ, पोडो, साइलि, वेरैट्र एल्ब ।

तीव्र मस्तिष्क जल-संचयता से—हेलेबो ।

अधिक अम्लता से—कैमो, रियूम, रोबिनिया ।

आँतों की कमजोरी से, क्रम-भ्रष्टता से—आर्जे नाइट्रि, कैप्सि, सिन्को, फेरम, इनैन्थि, ओरियोडैफ, सिकेल ।

कामला रोग से—चिओनैन्थ, डिजि, नक्स वॉ ।

सड़े मांस से—आर्से, क्रोटे ।

दूध से—इथूजा, कैल्के कार्ब, सिन्को, लाइको, मैग कार्ब, मैग म्यूर, नैट्र कार्ब, निकोल, सीपि, सल्फर, वैलेरि ।

उबाले दूध से—नक्स मॉ ।

हरकत से—एपिस, ब्रायो, सिन्को, कॉल्चि, नैट्र सल्फ ।

नीचे की तरफ उतरने से—बोरैक्स, कैमो, सैनिक्यू ।

गुर्दा-प्रदाह से—टेरेबि ।

घृणित गन्ध से—बैप्टि, कार्बो एसिड, क्रोटे ।

प्याज खाने से—थूजा ।

घोंघा से—ब्रोमि, लाइको, सल्फ्यू एसिड ।

पसीना रुकने से—एकोन, कैमो, फेरम फॉस ।

पोर्क खाने से—ऐकोन, लाइको, पल्से ।

मिठाई खाने से—आर्जे नाइट्रि, कैल्के सल्फ, क्रोट टिग, गैम्बो, मर्क वाइवस ।

तम्बाकू से—कैमो, टैबे ।

तपेदिक से—एसेटिक एसिड, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्से, आर्से आयोड, बैप्टि, बिस्म, सिन्को, क्रोट, क्युप्रम आर्स, इलैप्सि, फेरम मेट, आयोड, आयडोफॉ, फॉस एसिड, फास, पल्से, रूमेक्स। देखिए तपेदिक।

टायफॉयड ज्वर से—आर्से, बैप्टि, एचिने, एपिलोबि, युकेलि, हायोस, लैके, म्यूरि एसिड, नूफर, ओपि, फॉस एसिड, रस टॉ, स्ट्रैमो। देखिये टायफॉयड ज्वर।

आँतों के घाव से—कैलि बाइ, मर्क कार।

पेशाब करने से—एलो, एलुमिना, एपिस।

टीका लगवाने से - साइलि, थूजा।

बछड़े के मांस से—कैलि नाइट्रि।

सब्जी, वनस्पति, खरबूजा खाने से—आर्से, ब्रायो, पेट्रोलि, जिंजि।

गन्दे पानी से—एल्स्टोनिया, कैम्फो, जिंजि।

शिशु बच्चों में—ऐकोन, इथूजा, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्से, एरण्डो, बैप्टि, बेला, बेंजो एसिड, बिस्म, बोरै, कैल्के एसेटि, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कैम्फो, कैमो, सिन्को, सिना, कोलो, कोलोस्ट्रम, क्रोटो टिग, डल्का, फेरम, ग्रैटि, हेलेबो, हीपर, इपिका, जैला, कैलि ब्रोमे, क्रियोजो, लॉरोसे, लाइको, लाइसिन, मैग का, मर्क कार, मर्क डल, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पॉलिनिया, फॉस एसिड, फॉस, सोरि, रियूम, सैबाडि, सीपि, सल्फर, वैलेरि, वेरेट्र एल्ब।

शिशु-दाँत निकलने के समय—एसेटि एसिड, ऐकोन, इथूजा, एरण्डो, बेला, बेंजो एसि, बोरैक्स, कैल्के एसिटे, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैमो, इपिका, जैला, क्रिओजो, मैग कार्ब, मर्क वाइवस, नक्स मॉ, ओलिथेण्ड, फाइटो, पोडो, सोरि, रियूम, साइलि।

बुड्ढे लोगों में—ऐण्टि क्रू, बोवि, कार्बो वेज, सिन्को, गैम्बो, ओपि, फॉस, सल्फर।

स्त्रियों में, मासिक धर्म के पहले और दौरान—ऐमो कार्ब, ऐमो म्यूर, बोवि, वेरेट्र ऐल्ब। देखिये स्त्रीजननेन्द्रिय मण्डल।

स्त्रियों में, प्रसव काल में—कैमो, हायोस, सोरि, सिकेलि, स्ट्रैमो।

मल का प्रकार तेजाबी, तीखा, छीलन पैदा करनेवाला, जलनवाला—आर्स, ब्रायो, कार्बो वेज, कैमो, क्यूफिया, ग्रैफा, आइरिस, क्रिओजो, मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, मर्क बाइ, पोडो, सल्फ, टेरेबि।

पित्त का—ऐण्टि टा, ब्रायो, काडु मैरि, कैमो, सिन्को, कार्न सर्सि, क्रोट टिग, फ्लोरिक ऐसि, गैम्बो, इपिका, आइरिस, जुग्लै सिने, लेप्टै, लाइको, मर्क डल्सि, मर्क, नैट्र सल्फ, निक्टैन्थ, पोडो, सैंग्वि, टैरैक्स, यूका।

काला—आर्स, ब्रोमि, कैम्फो, कैप्सि, कार्बो ऐसि, सिन्को, क्रोटै, एचिने, लेप्टै, मार्फि, ओपि, सोरि, पाइरो, सिला, स्ट्रैमो, सल्फ्यू एसिड, वेरेट्र ऐल्ब।

खून की लकीरों वाला चिकना मल—ऐगैरि, ऐलो, आर्जे नाइट्रि, आर्न, बेला, कैन्थे, कैप्सि, कोलो, क्यूप्रम आर्स, युफोर्बि, इपिका, लिलि टिग्रि, क्रियोजो, मैग का, मर्क कार, मर्क डल, मर्क वाइवस, नक्स वॉ, पोडो, सोरि, रस टॉ, सल्फर, ट्रिलि। देखिये पेचिश।

खूनी—इथूजा, एलैन्थ, ऐलो, ऐमो म्यूर, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बैप्टि, बोथ्रोप्स, कैडमि सल्फ, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो ऐसि, कॉल्चि, कोलो, क्रोटै, क्यूप्रम आर्स, डल्का, फेर फॉ, हैमे, इपिका, कैलि बाइ, क्रियोजो, लैके, मर्क कार, मर्क डल, मर्क वाइवस, नक्स वॉ, फॉस, पोडो, सिकेलि, सेनेसि, सल्फर, टेरेबि, ट्रॉम्बि, वैले।

गहरा कत्थई रंग—एपिस, आर्न, आर्स, एसाफि, बैप्टि, ब्रायो, सिन्को, कोलो, क्यूप्रम ऐसेटि, क्यूप्रम आर्स, फेरम म्यूर, ग्रैफा, कैलि बाइ, क्रियोजो, लैप्टै, म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, पोडो, सोरि, पाइरो, रैफ, रियूम, रियुमेक्स, सिला, सिकेल, सेनेसि; सल्फर, ट्यूबर।

बदलने वाला—ऐमो म्यूर, कैमा, यूयोनाइम, मर्क वाइवस, पोडो, पल्से, सैनिक्यू, साइलि, सल्फर।

मिट्टी के रंग का, खड़िया जैसा, हल्के रंग का—ऐलो, बेला, बेंजो एसिड, बर्बे वल, कैल्के का, चेलिडो, डिजि, युफोर्बिया, जेल्से, हीपर, कैलि का, मर्क डल्सि, मर्क वाइवस, माइर्ट, फॉस एसिड, फॉस, पोडो, सीपि।

बूकी हुई कॉफी की तरह मैदे जैसा—क्रोटै, डिजि, लैके, पोडो, टार्ट ऐसिड।

कमजोरी लानेवाला, अधिक मात्रा में—ऐसेटिक एसिड, ऐंगोफो, ऐरिस्टो, आर्स, सिन्को, कॉल्चि, कोटो, क्यूप्रम आर्स, डायस्को, इलैप्स, कैलि फॉस, फेलाण्ड्रि, फॉस, सिकेल, सीपि, टैबे, टार्ट एसिड, उपास, वेरेट्र एल्ब।

चर्बीला, तेल जैसा—कॉस्टि, आयोड, आइरिस, फॉस।

तूफानमय, वायुयुक्त, आवाज करने वाला, छरछराकर निकले, तेज—एकालिफा, एगैरि, सल्फा, एलो, एपोसाइ, आर्जे साइ, आर्न, बेंजो एसिड, बोरै, कैल्के फॉ, कैमो, सिन्को, कोलो, कार्न सरसि, क्रोट टिग, इलाटि, गैम्बो, ग्रैफा, ग्रैटि, गमी, आयोड, इपिका, जेट्रोफा, कैलि बाइ, मैग का, नैट्र सल्फ्युरोस, नैट्र सल्फ, ओपि, फॉस ऐसिड, फॉस, पोडो, पल्से, रियूम, रस टॉ, सैनिक्यू, सिकेल, स्टिक्टा, सल्फर, थूजा, ट्रिऑस्टि, वेरेट्र एल्ब, यूका।

घड़ी-घड़ी—एसेटि एसिड, ऐकोन, एलो, आर्स, कैल्के, एसेटि, कैप्सि, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, क्रोट टिग, क्यूफिया, क्यूप्रम आर्स, ऐलाटि, इपिका, मैग का,

मर्क कार, मर्क वाइवस, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस एसिड, पोडो, रियूम, रस टॉ, साइलि, सल्फर, टेरेबि, वेरेट्र एल्ब ।

मेढक के अण्डों की तरह या काई की तरह—हेलेबो, मैग का, फॉस, सैनिक्यू।

जिलैटिन, श्लेष्मा, जेली की तरह—एलो, कैडमि सल्फ, कॉल्चि, कोलो, यूफोर्बिया, हेलेबो, कैलि बाइ, ऑक्सिट्रो, फॉस, पोडो, रस टॉ ।

हरे रंग का—एकोन, इथू, एण्टि टा, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेला, बोरैक्स, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैल्के ऐसेटि, कैल्के फॉस, कैमो, कोलो, क्रोट टिग, डल्का, इलाटि, गैम्बो, जेल्से, ग्रैटि, गमी, हीपर, आयोडोफॉ, इपिका, आइरिस, क्रियोजो, लॉरो, मैग कार्ब, मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क वाइवस, मेजे, कालि फॉस, पोडो, पल्से, सैकेल एसिड, सैनिकू, सिकेलि, सल्फर, टैबे, वैलेरि, वेरेट्र एल्ब ।

हरा, मगर आसमानी हो जाये—कैल्के फॉ, फॉस ।

गुड़गुड़ाहट, फलक कर निकलना—एलो, एपिस, क्रोट टिग, इलाटि, गैम्बो, ग्रैटियो, गमी, जैट्रोफा, कैलि बाइक्रो, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, पेट्रोलि, फॉस, पोडो, सैंग्वि, सिकेल, थूजा, ट्यूबर, वेरेट्र एल्ब । देखिये उफान वाला ।

गरम—कैल्के का, कैमो, डायस्को, फेरम, मर्क कार, मर्क सल्फ, पोडो, सल्फर । देखिये तेजाबी, तीखा ।

अनिच्छित—एलो, एपिस, एपोसाइ, आर्स, आर्न, बैप्टि, कैम्फो, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, जेल्से, हेलेबो, हायोसि, ओपि, फॉस एसिड, फॉस, पोडो, सोरि, पाइरो, रस टॉ, सिकेल, स्ट्रिक, सल्फर, वेरेट्र एल्ब, जिंक ।

अनिच्छित मानों मलद्वार खुला और फैला है—एपिस, एपोसाइ, फॉस, सिकेल, ट्रॉम्बि ।

अनिच्छित, वायु निकलते समय—एलो, कैल्के कार्ब, आयोड, म्यूरि एसिड, नैट्रम म्यूर, नैट्र सल्फ, ओलियैण्डर, फॉस्फो एसि, पोडोफ इ, पाइरो, सैनिक्यू ।

अनिच्छित, पेशाब करते समय—एलो, ऐलुमिना, एपिस, साइक्यूटा, हायोसि, म्यूर एसिड, सिला, सल्फर, वेरेट्र एल्ब ।

ढोंकेदार, कूड़ा—एलो, ऐण्टि क्रू, बैराइटा कार्ब, बेला, ब्रायो, कैमो, सिना, कोनि, क्यूबेबा, ग्लोनो, ग्रैफा, मैग कार्ब, पेट्रोलि, फॉस, पोडो, सेनेसियो, ट्रॉम्बि ।

श्लेष्मा, चिकना—एलो, एमो म्यूर, ऐण्टि क्रू, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेला, बोरैक्स, कैल्के एसेटि, कैल्के फॉस, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, सिना, सिन्को, कॉकु, कॉल्चि, कोलो, कोपे, डल्का, फेरम, ग्रैफा, गमी, हेल्लिबो, हीपर, इपिका, कैलि म्यूर, लॉरो, मैग का, मर्क कॉर, मर्कडल, मर्क सल्फ, मर्क वाइव, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, पोडो, प्रूनस स्पाइ, पल्से, रियूम, रिसिन,

कॉक्यू, रस टॉ, रूटा, सीपि, स्पाइजे, सल्फर, टैबे, टेरेबि, अर्टिका । देखिये पेचिश ।

कमजोरी न पैदा करनेवाला—कैल्के कार्ब, ग्रेफा, फॉस एसिड, पल्से ।

घृणित, सड़ा—एलैन्थ, एण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, एसाफि, ऐस-क्लिपि टिब, बैप्टि, बेंजो एसिड, विस्म, बोरै, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फास, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, कोलो, कोर्नस सर्सि, कोटै, ग्रेफा, हीपर, कैलि फॉस, क्रियोजो, लैके, लेप्टै, मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क वाइवस, म्यूर एसिड, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, ओपि, पेट्रोलि, फॉस ऐसिड, फॉस, पोडो, सोरि, प्यूलेक्स, पाइरो, रियूम, रस टॉ, रियुमेक्स, सैनिक्यू, सिला, सिकेल, साइलि, सल्फ एसिड, स्ट्रैमो, सल्फर, टेरेबि, ट्यूबर ।

बिना दर्द के—ऐल्फा, ऐल्सटोनि, ऐमानिटा, एपिस, आर्स, बैप्टि, बेलिस, बिस्म, बॉरेक्स, चैपैरो, सिन्को, कॉल्च, क्रोट टिग, डल्का, फेरम मेट, जेल्से, ग्रेफा, ग्रैटियो, हीपर, हायोसि, इपिका, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फॉस, पोडो, सोरि, पल्से, पाइरो, रस टॉ, रिसिन, रियुमेक्स, सिलो, सिकेल, साइलि, सल्फर ।

लेई की तरह—इस्क्यु. ऐल्फा, एलो, आर्स, बिस्म, बोरैक्स, ब्रायो, चेलिडो, सिन्को, कोलो, साइक्लै, गैम्बो, जेल्से, ग्रेफा, लेप्टै, मैग का, मर्क डल्सि, मर्क, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, पोडो, रियूम, सीपि, साइलि, सल्फर, वैलेरि, जिंक मेट ।

अधिक मात्रा में—एसेटिक एसिड, एण्टि क्रू, एसाफि, बेंजो एसिड, बिस्म, ब्रायो, कैल्के ऐसेटि, कैल्के कार्ब, चेलिडो, सिन्को, कोलो, क्रोट टिग, इलाटि, इयो-नाइमस, यूफॉर्बि, कोरो, गैम्बो, जैट्रोफा, लेप्टै, मर्क, नैट्र नाइट्रि, ओपरकु, पॉलिनि, फॉस, पोडो, सोरि, रस टॉ, सिकेल, स्टिक्टा, टेरेबि, थूजा, वेरेट्र एल्ब ।

मवादी—एपिस, आर्न, कैल्के सल्फ, हीपर, मर्क, फॉस, साइलि ।

चावल के पानी जैसा—आर्स, कैम्फो, जैट्रोफा, कैलि फॉ, मर्क सल्फ, रिसिन कॉम्यू, वेरेट्र एल्ब ।

साग या मोम के टुकड़े मिलें—फॉस ।

थोड़ी मात्रा में—एकोन, एलो, आर्स, बेला, कैम्फो, कैन्थे, कैप्सि, कोल्चि, कोलो, मर्क को, मर्क डल्सि, मर्क वाइवस, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, सल्फर । देखिये पेचिश ।

सुतड़ेदार, तागे की तरह झिल्ली युक्त, आँतों की छिलन की तरह—एलो, आर्जे नाइ, आर्स, ऐसेर, बोलेटस, कैन्थे, कार्बो एसिड, कॉल्चि, कैलि बाइ, कैलि नाइ, मर्क कॉ, मर्क, म्यूर एसिड, नाइट्रि एसिड, पोडो, सल्फ एसिड ।

खट्टा—कैल्के ऐसेटि, कैल्के का, कॉल्चि, कोलो, कोलोस्ट्र, ग्रेफा, हीपर, जैला, मैग का, मर्क वाइवस, नाइट्रि एसिड, पोडो, रियूम, रोबिनि, सल्फर ।

पालक के कतरन की तरह—एकोन, आर्ज नाइ, कैमो।

एकाएक तेज इच्छा, इन्तजार न कर सके, न रुके—एलो, सिन्को, सिस्टस; क्रोट टिग, गैम्बो, लिलि टिग, नैट्र का, पियोनि, पोडो, सोरि, रियुमेक्स, सल्फर, टैबे, ट्राम्बि, ट्यूबर, वेरेट्रम एल्ब।

चिमड़ा, चमकीला—एसैर, कैप्सि, क्रोट टिग, हेलेबो, कैलि बाइ। देखिये श्लेष्मा।

अनपचा अतिसार—ऐब्रो, इथूजा, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइ, आर्स, एसेरमा, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फॉ, कैमो, सिन्को, क्रोट टिग, फेरम ऐसेटि, फेरम मेट, फेरम फॉस, ग्रैफा, हीपर, आयोडोफॉ, मैग का, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, फास एसिड, फॉस, पोडो, सोरि, पल्से, सल्फर, वैले।

पानी-सा; मांस के धोवन की तरह—कैन्थे, फॉस, रस टॉ।

पानी-सा पतला—ऐसेटिक एसिड, ऐकोन, इथूजा, एलो, एल्स्टो, एण्टि क्रू, एण्टि टा, एपिस, एपोसाइ, आर्स, एसाफि, बैप्टि, बेंजो एसिड, बिस्म, बोरै, ब्रायो, कैल्के एसेटि, कैल्के का, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, कैमो, चेलिडो, सिन्को, कॉल्चि, कोलो, क्रोटै, क्रोट टिग, क्युफिया, क्युप्रम आर्स, साइक्लै, इलाटि, फेरम मेट, गैम्बो, ग्रैफा, ग्रेटियो, हीपर, हायोसि, आयोड, आयोडोफॉ, इपिका, आइरिस, जैलापा, जैट्रोफा, कैलि बाइ, कैलि नाइ, लॉरोसि, मैग का, म्यूर एसिड, नैट्र सल्फ, ओलियैण्ड, ओपेरकु, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फॉस, पोडो, सोरि, पल्से, रियुम, रस टॉ, रियुमेक्स, सिकेल, सेनेसि, सल्फर, टैबे, टेरेबिं, थूजा, ट्रॉम्बि, वेरेट्र एल्ब, जिंक।

सफेद—ऐकोन, ऐण्टि क्रू, बेला, बेंजो ऐसि, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, कैमो, चेलि, सिना, कॉकु, कॉल्चि, क्रोटै, क्युबेबा, डिजि, डल्का, हेलेबो, हीपर, आयोड, इपिका, कैलि म्यूर, मैग का; मर्क डल्सि, मर्क, मेजे, नक्स मॉ, फॉस एसि, फॉस, पोडो, पल्से, ट्राम्बि।

पीला—इथूजा, ऐगैरि, एल्फा, एलो, एपिस, आर्स, ऐसैर, बोरै, कैल्के कार्ब, कार्डु मैरि, कैमो, चेलिडो, सिन्को, कोलो, क्रोट टिग, साइक्ले, डल्का, गैम्बो, जेल्से, ग्रैटि, गमी, हीपर, हायोसि, इपिका, मर्क, नैट्र कार्ब, नैट्र सल्फ, नूफर, नक्स मॉ, पेट्रोलि, फॉस ऐस, पोडो, पल्से, रियूम, रस टॉ, सेना, सीपि, सल्फर, टैबे, थूजा।

साथ के लक्षण—मलत्याग के पहिले : शीत—आर्स, कैम्फो, इलाटि, मर्क वाइवस, फॉस, वेरेट्र एल्ब।

शूल, ऐंठन—इथूजा, एलो, ऐल्स्टो, बेला, बोरै, कैस्कारा, कैमो, सिना, सिन्को, कोलो, क्रोट टिग, क्यूप्रम आर्स, डायस्को, डल्का, इलाटि, गैम्बो, गमी, इपिका,

आइरिस, लेप्टै, मैग कार्ब, मर्क कॉर, मर्क डल्सि, नक्स वॉ, रियूम, सेना, सल्फर, ट्रॉम्बि, वेरेट्रम एल्ब। देखिये वायुगोला शूल-कॉलिक।

वायु की गुड़गुड़ाहट—एलो, एसाफि, कार्बो वेज, कॉल्चि, कोलो, गैम्बो, कैलि कार्ब, नैट्र सल्फ, ओलियैण्ड, पोडो, पल्से।

मिचली—ब्रायो, क्रोमि ऐसि, कॉल्चि, इपिका, मर्क वाइवस, रस टॉ, सीपिया।

दर्द के साथ मल त्यागने की इच्छा—एलो, आर्स, बेला, कैम्फो, सिस्टस, कोलो, कोनि, क्रोट टिग, फॉर्मिका, गैम्बो, ग्रैटि, हीपर, इग्ने, कैलि बाइ, लेप्टै, मर्क कॉर, मर्क डल्सि, मर्क वाइव, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, फॉस; पोडो, रियूम, साइलि, स्ट्रॉन्शिया, सल्फर, वेरेट्रम एल्ब।

मलत्याग काल में—पीठ दर्द—इस्क्यु, कैप्सि, कॉल्चि, नक्स वॉ, पल्से।

मलद्वार में जलन—एलो, आर्स, कैन्थे, कार्बो वेज, चेनोपो ग्लॉ, कोनि, आइरिस, जुग्लै सिने, मर्क डल्सि; म्यूरि ऐसि, पोडो, प्रूनस स्पाइ, रैटानहिया, रियूम, टेरेबि, ट्राम्बि, वेरेट्रम एल्ब। देखिए मलद्वार (ऐनस)।

शीत—आर्स, बेला, कॉल्चि, इपिका, जैट्रोफा, मर्क वाइवस, रियूम, रिसिन कॉम्य, सिकेल, ट्राम्बि, वेरेट्र एल्ब।

शूल, एंठन—एलो, ऐल्स्टोनिया, आर्स, ब्रायो, कैम्फो, कैन्थे, कैप्सि, सियानोथ, कैमो, सिन्को, कोलो, क्रोट टिग, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, डल्का, इलाटि, गैम्बो, इपिका, आइरिस, जैट्रोफा, लेप्टै, मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क वाइवस, पोडो, रियूम, रिसिन, कॉम्यू, सिकेलि, साइलि, सल्फर, ट्रिऑस्टि, ट्रॉम्बि, वेरेट्र एल्ब, जिंजि। देखिये वायुगोला (कॉलिक) कोलिक।

मूर्च्छा—एलो, आर्स, क्रोटै, मर्क वाइवस, नक्स मॉ, सल्फर।

घृणित दुर्गन्ध का वायु निकलना—एगैरि, एलो, आर्जे नाइट्रि, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, सिन्को, इग्नै, जैट्रोफा, नैट्र सल्फ, फॉस एसिड, पोडो, थूजा।

भूख लगना—एलो, फेरम मेट, सिकैल।

मिचली, कै—इथूजा, एण्टि टॉ, आर्स, बिस्म, कैम्फो, कार्बो एसिड, क्रोमि एसिड, कॉल्चि, क्रोट टिग, क्युप्रम, फिलिक्स मास, इपिका, आइरिस, जैट्रोफा, मर्क, ओपण्टिया, फॉस, पोडो, टैबे, ट्रिऑस्टि, वेरेट्रम एल्ब।

दर्द पिछले अंगों को फाड़ता हो—रसटॉक्स।

चुभन दर्द—कैप्सि।

मूत्राशय में कुन्थन—कैन्थे, लिलि टिग्रि, मर्क कॉर।

कुन्थन, मल त्यागने की प्रबल इच्छा, वेदनापूर्ण—एकोन, एलो, ऐगोफो, आर्न, आर्स, बेला, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो एसिड, कॉल्चि, कोलो, क्रोट टिग,

क्यूफिया, क्यूप्रम एसेटि, क्युप्रम आर्स, हीपर, इग्ने, इपिका, कैलि बाइक्रो, कैलि नाइट्रि, लियाट्रिस, मैग कार्ब; मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, मर्क वाइवस, मॉर्फि, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ; ओपि, फॉस, प्लम्ब एसेटि, पोडो, रियूम, रस टॉ, सेनेसि, सिलि, सल्फर, टैबे, ट्रॉम्बि, वेरेट्र एल्ब।

कै, हिचकी, दम घुटन, पेट और सीने में—वेरेट्र एल्ब।

मलत्याग के बाद—गुदा में जलन—एलो, एपोसाइ, आर्स, ब्रायो, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो वेज, कोलो, गैम्बो, ग्रेटियोला, आइरिस, कैली कार्ब, मर्क कार, मर्क सल्फ, मर्क वाइवस, नाइट्रि एसिड, ओलियैण्ड, प्रुन स्पाइ, रैटानहिया, सल्फर, ट्रॉम्बि, वेरेट्र एल्ब। देखिये मलद्वार।

ठण्डापन—एलो, आर्स, कैम्फो, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो वेज, फॉर्मिका, इपिका, मर्क वाइवस, सिकेलि, टैबे, वेरेट्र एल्ब।

कमजोरी, शिथिलता—एसेटि एसिड, इथूजा, ऐलैन्थ, एलो, एमानिटा, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बिस्म, कैम्फो, सिन्को, कॉल्चि, कोनियम, क्रोट टिग, क्युप्रम मेट, इलाटि, फेरम मेट, आइरिस, जैट्रोफा, कैलि फास, मैग कार्ब, नाइट्रि एसिड, फॉस, पोडो, रस टॉ, सिके, सीपि, सल्फ्यू एसिड, टैबे, टेरेबि, ट्रॉम्बि, ट्यूबर, उपास, वेरेट्र एल्ब।

मूर्च्छा—एलो, आर्स, कोनियम, क्रोट टिग, मर्क, नक्स मॉ, पियोनिया, सारसा, टेरेबि, वेरेट्र एल्ब।

खूनी बवासीर—एलो, हैमे, म्यूरि एसिड, सल्फर। देखिये खूनी बवासीर।

आमाशय में लगातार पीड़ा—एलो, कोलो, क्रोट टिग, डायस्को, गैम्बो, ग्रैटि, मर्क कार, मर्क वाइवस, रियूम, ट्रॉम्बि, वेरेट्र एल्ब।

धड़कन, अंगों में कम्पन—आर्स।

काँच निकलना—एलो, एलुमि, कैल्के एसेटि, कार्बो वेज, हैमे, इग्ने, मर्क वाइवस, नाइट्रि एसिड, पोडो, सल्फर, ट्रॉम्बि। देखिये मलाशय।

कुन्थन बन्द होते ही सो जाना—कॉल्चि, सल्फ।

शाम को प्राकृतिक मल—एलो, पोडो।

पसीना—एसेटि एसिड, एलो, एण्टि टा, आर्स, फॉस एसिड, टैबे, ट्यूबर, वेरेट्र एल्ब।

कुन्थन, कभी सन्तुष्टि न हो, पाखाना मालूम होता रहे—इथूजा, एलो, आर्स, बेला, कैन्थे, कैप्सि, कॉल्चि, गैम्बो, इग्ने, इपिका, कैलि बाइ, मैग कार्ब, मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, मर्क वाइ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पोडो, रियूम, सेना, साइलि, सल्फर, ट्रॉम्बि।

प्यास—एसेटिक एसिड, कैप्सि, डल्का।

कै होना—आर्जे नाइट्रि, कॉल्चि, क्यूप्रम, इपिका, आइरिस, नक्स वॉ, वेरेट्र एल्ब।

पेट और गुदा में कमजोरी—पोडो।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—खाने-पीने से—एलो, एल्स्टोनि, एपिस, एपोसी, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ब्रायो, कैन्थे, सिन्को, कोलो, क्रोट टिग, फेरम मेट, कैलि फॉस, लाइको, नक्स वॉ, फॉस, पोडो, पल्से, रियूम, सैनिक्यू, सल्फर, टैनेसे, थूजा, ट्रॉम्बि, वेरेट्र एल्ब।

हरकत से—एलो, एपिस, ब्रायो, सिन्को, कॉल्चि, क्रोट टिग, नैट्र सल्फ, रियूम, वेरेट्र एल्ब।

सूरज डूबने से सूरज निकलने तक—कॉल्चि।

तीसरे पहर—बेल, कैल्के कार्ब, सिन्को, कॉर्नस सर्सि, लाइको।

शरदकाल में (सितम्बर, अक्तूबर, नवम्बर)—सिन्को, कॉल्चि, मर्क, नक्स मॉ, वेरेट्र एल्ब।

दिन ही में—हीपर, पेट्रोलि, पिलोका।

शाम को, रात में—आर्स, बेलिस, बोवि, कैल्के कार्ब, चेलिडो, सिन्को, डल्का, फेरम मेट, आइरिस, मर्क, नैट्र नाइट्रि, नक्स मॉ, पोडो, पल्से, सोरि, रस टॉ, स्ट्रॉन्शियाना, सल्फर, वायेथिया।

केवल बहुत सुबह को, प्रातःकालीन—एसेटि एसिड, एलो, इक्थि, आइरिस, लिलि टिग्रि, मेडो, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नूफर, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फॉस, पोडो, सोरि, रस वेने, रियुमेक्स, स्टिक्टा, सल्फर, थूजा, ट्राम्बि, ट्युबर।

सुबह को—एलो, एपिस, बोवि, ब्रायो, कैक्ट, सिस्टस, क्रोट टिग, फेरम मेट, ग्रैफा, कैलि बाइ, लिलि टिग्रि, लाइको, नक्स वॉ।

सामयिक आक्रमण—एपिस, आर्स, सिन्को, युफॉर्बिया कोरो, कैलि बाइ, आइरिस, मैग कार्ब, थूजा।

पक्वाशय (Duodenum)—छोटी आँत का पहला अंश (केवल १२ अंगुल लम्बा जुकामी प्रदाह) डुओडेनाइटिस—आर्स, ऑरम, बर्बे वल, कैमो, चेलिडो, सिन्को, हाइड्रै, कैलि बाइ, लाइको, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, पोडो, रिसिन, कॉम्यु, सैंग्वि।

घाव होने पर—कैलि बाइ, सिम्फाइटम, युरैनि।

पेचिश—एकोन, एलो, एल्स्टोनि, ऐम्ब्रोसि, ऐण्टि टा, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, ऐसक्लिसियस टियुबरोसा, बैप्टि, बेला, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो

एसिड, कार्बो वेज, चैपैरो, सिन्को, कॉल्चि, कॉलिन्सो, कोलो, क्युफिया, क्युप्रम आर्स, डल्का, एसेटिन, एरिंजे, युकैलि, फेरम फॉ, गैम्बो, हैमे, हीपर, इपिका, आइरिस, कैलिबाइ, कैलि क्लो, कैलि म्यूर, कैलि फास, लैके, लियोन्यूर, लैप्टै, लिलि टिग्रि, लाइको, मैग कार्ब, मर्क डल्सि, मर्क कार, मर्क सल्फ, मर्क वाइवस, नाइट्रि एसि, नक्स वॉ, ऑपर क्यूलिना, ओपियम, फॉस एसि, फॉस, प्लम्ब एसेटि, पोडो, पल्से; रियूम, रस टॉ, सिकेल, सिल्फियम, सल्फर, टैनैसेटम, ट्रिलि, ट्रॉम्ब, जैन्थकजाइलम, वैक्सिनाइ, वेरेट्र एल्ब, जिंक सल्फ।

स्थानीय चिकित्सा का दुरुपयोग; झिल्ली प्रदाह के रूप की—नाइट्रि एसि।

जीर्ण, जल्दी अच्छी न होने वाली पेचिश—एलो, आर्जे नाइट्रि, आर्स, सिन्को, कोपे, डल्का, हीपर, मर्क कार, नाइट्रि एसि, नक्स वॉ, फॉस एसि, पोडो, रस, आर्स, सल्फर।

बवासीर—एलो, कोलिन्सो, हैमामे।

बुड्ढे लोगों की – बैप्टि।

मन्द स्नायविक, उत्तेजनीय, वय:सन्धिकालीन स्त्रियों में—लिलियम टिग्रि।

काँखने की पीड़ा से मिचली के साथ, कम प्यास—इपिका।

आक्रमणों के बीच में बहुत दिन गुजर जाये—आर्न, सिन्को।

हर वसन्त के मौसम में या गरमी के शुरू में आक्रमण हो—कैलि बाइ।

सारे शरीर में वात-पीड़ा के साथ—ऐक्लिपियस टियुबरोसा।

जाँघों के नीचे तक फटन—रस टॉ।

शरदकाल में अधिक होना—एकोन, कॉल्चि, डल्का, इपिका, मर्क कार, मर्क वाइवस, सल्फर। देखिये दस्त।

आन्त्र-प्रदाह (Enteritis)—देखिये दस्त।

आन्त्र-शूल (Entero-Colitis)—देखिये दस्त।

पित्ताशय, पित्त-कोष, पित्त-पथरी (Biliary Calculi-cholelithiasis)—ऑरम, बैप्टि, बर्बे वल, बोल्डो; ब्रायो, कैल्कै कार्ब, कार्डु मैरि, चेलिडो, चिओनैन्थ; कोलेस्टेरि, सिन्को, डायस्को, फेलटौरि, फेरम सल्फ, जेल्से, हाइड्रै, जुग्लैंस, सिनेरिया, लैके, लेप्टैण्ड्रा, माइटंस, नक्स वॉ, पिचि, पोडो, टिलिया, टैरेक्स।

पित्त-शूल (बिलियरी कॉलिक)—आर्स, एट्रोपि, सल्फ, बेला, बर्बे वल, कैल्के का, कार्डु मैरि, कैमो, चेलिडो, चिओनैन्थ, सिन्को, कोलो, डिजि, डायस्को, जेल्से, हाइड्रै, इपिका, लाइको, मॉर्फि एसेटि, नक्क वॉ, ओपियम, टेरेबि।

बवासीर (खूनी या वादी) साधारण औषधियाँ—ऐब्रो, एकोन, इसक्यु, ग्लै, एस्कू, एलो, ऐमो का, म्यूर, एपिस, आर्स, ऑरम मेट, बैराइटा का, बेला, ब्रोमि,

कैल्के फ्लो, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, काडु मैरि, कॉस्टि, कैमो, क्रोमि एसिड, कोलिन्सो, कोपेवा, डायस्को, फेरम फॉ, फ्लो एसिड, ग्रैटियोला, हैमे, हीपर, हाइड्रै, हाइपेरिक, इग्ने, कैलि म्यूर, कैलि सल्फ, लैके, लाइको, मैग म्यूर, मिलेफो, म्युकुना, म्यूरि एसिड, नेगन्डो, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पियोनिया, पाइनस सिलवैस्ट्रिस, पोडो, पोलिगो, पल्से, रेडियम, रैटानहिया, सैबाइना, स्क्रोफ्युलेरिया, सेडम, सीपिया, सेम्पर विवम टेक्टोरम, सल्फर, सल्फ एसिड, थूजा, वरवक्स, वायेथिया, जिंज।

खूनी—एकोन, इसक्यु, एलो, एमो का, बेला, कैल्के फ्लो, कैप्सि, काडु मैरि, क्रोमि एसिड, कोलिन्सो, एरिजे, फेरम फॉ, फिकस, हैमे, हाइड्रै, हाइपेरि, कैलि म्यूर, लैप्टै, लाइको पस, मिलेफो, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपरक्युलिना, सैबाइना, फॉस, स्क्रोफ्यूल, सीपिया, सल्फर, थ्लैस्पि।

खूनी, गहरे रंग का शिरारक्त—एलो, हैमे, हाइड्रै, कैलिम्यूर, सल्फर।

वादी बिना खून के—इसक्यु, कैल्के फ्लो, कोलिन्सो, इग्ने, म्युकुना, नक्स वॉ पल्से, सल्फर, वायोथिया।

हल्के नीले बैंगनी रंग का—इस्क्यु, ग्लै, एलो, आर्स, कैप्सि, कार्बो वेज, हैमे, लैके, लाइको, म्यूरि एसिड।

जलन, कड़कन—इसक्यु, एलो, एमो म्यूर, आर्स, कैल्के का, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कॉस्टि, फ्लोरि एसिड, ग्रैफा, इग्ने, मैग म्यूर, म्युकुना, निगण्डो, नक्स वॉ, सोरि, रैटानहिया, सल्फर, सलफ्यु एसिड।

सूजी प्रदाहिक—एकोन, इसक्यु, ऐलो, बेला, कॉस्टि, कोपेवा, फेरम फॉ, म्युरि एसिड, वरबैस्क। देखिये सम्वेदनीय।

खुजाना—इस्कियु, एलो, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, कोपेवा, ग्लोनो, हैमे, म्युरि एसिड, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पेट्रासे, पल्से, सल्फर।

श्लैष्मिक, बवासीर बराबर पसीजा करे—एलो, एमो म्यूर, ऐण्टि क्रू, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, पल्स, सीपिया, सलफ्यु एसिड, सल्फर।

बाहर निकली, अंगूर के गुच्छों की तरह फूली—इस्क्यु, एलो, एमो कार्ब, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, कालिन्सो, डायस्को, ग्रैफा, हैमे, कैली कार्ब, म्यूरि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, रैटानहिया, स्क्रोफ्यु, सीपिया, सल्फर, थूजा।

पेशाब करते समय बाहर निकले—बैराइटा का, म्युरि एसिड।

उत्तेजनीय बहुत दर्द वाली—इस्क्यू ग्लै, इस्क्यू, एलो, आर्स, बेला, कैक्टस, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, कोलिन्सो, फेरम फॉ, ग्रैफा, हैमे, हाइपेरि, कैलि कार्ब, लैके, लाइको, मैग म्युर, म्यूरि एसिड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, प्लैण्टै, पल्से, रैटानहिया, स्क्रोफ्युले, सेडम, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा, वरबैस्क, जिंजि।

सफेद बवासीर—कार्बो वेज।

साथ के लक्षण—उदर में रक्ताधिक्य के साथ—इस्क्यु, एलो, कोलिन्सो, हैमे, नेगण्डो, नक्स वॉ, सीपिया, सल्फर।

पीठ दर्द के साथ—इस्कियु ग्लै, इस्कियु, बेला, कैल्के फ्लो, क्रोमि एसिड, युओनाइमस, हैमे, इग्ने, नक्स वॉ, सल्फर। देखिये पीठ।

कब्ज के साथ—इस्कियु ग्लै, इस्कियु, एमो म्यूर, एनाका, कोलिन्सो, युओनाइमस, कैलि सल्फ, नक्स वॉ, पैराफि, साइलि, सल्फर, वरबैस्क।

कमजोरी के साथ—आर्स, जिंको, हैमे, हाइड्रै, म्यूरि एसिड।

नकसीर बहने के साथ—कार्बो वेज।

दरारें, गुदा में दर्द के साथ—कैप्सि, कैमो, नाइट्रि एसिड, रैटानहिया, सेडम।

दिल की बीमारी के साथ—कैक्टस, कोलिन्सो, डिजि।

व्याधि-शंका के साथ—इस्कियु, ग्रैटिओला, नक्स वॉ।

वस्ति-गह्वर में रक्ताधिक्य के साथ—एलो, कोलिन्सो, हैमे, हीपर, म्युकुना, पोडो, नक्स वॉ, सीपिआ, सल्फर।

गुदा और गर्भाशय के बाहर निकलने के साथ—पोडो।

गुदा संकुचन पेशी के झटका के साथ—लैके, साइलि।

खाँसने के समय मलाशय में कड़कन के साथ—इग्ने, कैलि कार्ब, लैके, नाइट्रि एसिड।

सूखा रोग वाले बच्चों में एकाएक उन्नति के साथ—म्यूरि एसिड।

कूँथन, गुदा और आंत्र में दस्त के साथ—कैप्सि।

कूँथन, संकुचन, कोंचन दर्द के साथ—नक्स वॉ।

कूँथन पेचिशी मल के साथ—एलो, सल्फर।

गर्भिणी स्त्रियों में कूँथन के साथ—कोलिन्सो।

असामयिक रक्त-प्रवाह के साथ—हैमे, मिलेफो।

बढ़ना—प्रसव के बाद—एलो, एपिस। देखिये स्त्री-जननेन्द्रिय-मण्डल।

मल-त्याग के बाद घण्टों तक—इस्कियु, एमो म्यूर, इग्ने, रैटानहिया, सल्फर।

ज्यों-ज्यों वात के लक्षण कम होते जायें—ऐब्रोटैनम।

वयःसन्धिकाल में—इस्कियु, लैके। देखिये स्त्री-जननेन्द्रिय-मण्डल।

मासिक-धर्म के समय—एमो कार्ब, लैके।

बैठने के समय—ग्रैफा, इग्ने, थूजा।

अधिक बैठे रहनेवाले व्यक्तियों में मदपान की अति से—इस्कियु ग्लै, नक्स वॉ।

खाँसने, छींकने से—कॉस्टि, कैलि कार्ब, लैके ।

प्रदर-स्राव के दबने से—एमो म्यूर ।

बात-चीत करने से, उन पर विचार करने से—कॉस्टि ।

टहलने से—कॉस्टि, सीपिया ।

कम होना ठण्डे पानी से—एलो, नक्स वॉ, रैटानहिया ।

गरम पानी से—आर्स, म्यूरि एसिड ।

लेट जाने से - एमो कार्ब ।

टहलने से—इग्ने ।

आँत उतरना—इस्कियु, एलूमिना, एमो कार्ब, ऑरम, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कॉकु, कॉफिया, आइरिस, फैक्टि, लाइको, मैग कार्ब, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, पेट्रोलि, फॉस, पिक्रोट, साइलि, सलफ्यु एसिड, वेरेट्र एल्ब, जिंक ।

आँतों का गड़ना—लोबे इन्फ्ला, मिलेफो, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब ।

बच्चों में—कैल्के कार्ब, लाइको, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, साइलि, सल्फ ।

अण्डकोष में पैदाइशी—मैग म्यूर ।

संकुचित, छल्ले का सिकुड़ जाना जिससे आँतें ऊपर न चढ़ें—एकोन, बेला, लाइको, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब ।

नाभि प्रदेश में आँतों का उतरना—कैल्के कार्ब, कॉकु, नक्स वॉ, प्लम्ब मेट ।

आँतें—एक आँत का सिरा दूसरे आँत में घुस जाना, रुकना—एकोन, ऐट्रोपि, बेला, कॉल्चि, कोलो, मर्क कार, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब, थूजा, वेरेट्र एल्ब ।

रुकना, चीरा लगवाने के बाद—एकोन, आर्न, बेला, मर्क कार ।

लकवा—एसेर सैल, प्लम्ब एसेटि ।

घाव होना—आर्जे नाइट्रि, क्युप्रम, कैलि बाइ, मर्क कार, सल्फ्यु एसिड, सल्फर, टेरेबि, युरैनि ।

कामला रोग—एकोन, एलो, एमोन म्यूर, आर्जे नाइट्रि, ऐस्टैक्स, आर्स, ऑरम म्यूरि नेट्रो, ऑरम, बर्बे वल, ब्रायो, कार्डु मैरि, कैस्केरा सैग्रे, सियानोथ, कैमो, चेलिडो, चेलोन, चियोनैन्थ, कोलेस्टो, सिन्को, कॉरनस सरसि, कोटे, डिजि, डोलिकोस, युपैटो पर्फ, हीपर, हाइड्रै, आयोड, जुग्लैन्स, सिने, कैलि बाइ, कैलि कार्ब, कैलि पिक्रि, लैके, लैप्टैण्ड्रा, लाइको, मर्क कॉर, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, माइर, नैट्रम्यूर, नैट्र फॉस, नेट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ऑसट्रिया, फॉस, पिक्रिक एसिड, प्लम्ब, पोडो, टीलिया, रियुमेक्स, रूटा, सीपिया, स्टिलि, सल्फर, टैरेक्स, युका, वेरोन, वाइपेरा ।

रक्तहीनः, मस्तिष्क रोग; गर्भावस्था—फॉस,

जीर्ण—ऑरम, चेलिडो, कोनियम, आयोड, फॉस ।

जुकामी अवस्था का बढ़ना—एमो म्यूर, चेलिडो, चियोनैन्थ, सिन्को, डिजि, हाइड्रै, लोबे इन्फ्ला, मर्क, नक्स वॉ, पोडो ।

मानसिक आवेग से—ब्रायो, कैमो, लैके, नक्स वॉ, वाइपेरा ।

शिशु, छोटे बच्चों का—कैमो, ल्युपुल, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, माइर ।

कठिन घातक—एकोन, आर्स, क्रोटे, लैके, मर्क, फॉस ।

आमाशयिक प्रदेश, कोख—बायीं तरफ दर्द—एलुमि, एमोन म्यूर, आर्जे नाइ, बैप्टि, कॉनफ्युसि, कार्बो वेज, सियानोथ, सिमिसि, कोनियम, डिजि, ग्रिण्डे, कैलि का, लाइको, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, ऑक्जे एसिड, पार्थे, पोलिगोनम, पल्से, क्वेरकंस, सिला, सोपिया, अर्टिका । देखिए तिल्ली ।

दाहिनी तरफ दर्द—इस्क्यु, एलो, ऑरम, बैप्टि, बर्बे वल, बोलेट, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, चेलि, सिन्को, कोनियम, डायस्को, जिन्सै, जैकारा, जैट्रोफा, कैलि बाइ, कैलि कार, लिम्युल, लाइको, मर्क, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओलि जेको एसे, फाइटो, पोडो, टोलिया, रनेसि, रैननक्यु स्केलेरै, सल्फर, वायेथि । देखिये जिगर ।

जिगर फोड़ा—आर्स, बेला, बोल्डो ब्रायो, चिनि आर्स, हीपर, लैके, मर्क, फॉस, रैफे, रस टॉ, सिलि, वाइपेरा ।

साधारण रोग—ऐबीज कैना, इस्क्यु, एलो, एमोन म्यूरि, आर्स आयोड, ऐस्टैकस, ऑरम म्यूर, आरम म्यूर नैट्रो, बर्बे वल, बैन्सिका, ब्रायो, कैल्के का, कार्डु मैरि, पियोनोथ, कैमो, चेलिडा, चेक्रोन, चेनोपो, चियोनैन्थ, कोलेस्टे, सिन्को, कोबाल्ट, कोनियम, कॉर्नस सरसि, क्रोकस, क्रोटै, डायस्को, डोलिकोस, युपेटो पर्फ, युओनाइम, फेरम पिक्रि, हीपर, हाइड्रै आयोड, आयोडोफॉ, आइरिस, कैलि कार्ब, कैलि आयोड, लैके, लेप्टैण्ड्रा, लाइको, मैग म्यूर, मैग सल्फ, मैरूब, मर्क सल्फ्यु, माइर, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, फॉस, पिचि, प्लम्ब, पोडो, टीलिया, पल्से, क्वेरक, रैफे, सेलेनि, सीपिया, स्टैले, सल्फर, टैरेक्स, थ्लैस्पि युरैनि, बैनैडि बैरोन ।

क्षीणता, तीव्र, पीली—डिजि, फॉस, पोडो ।

क्षीणता, (सिकुड़ जाना, सुर्ख हो जाना)—एबीज कैना, एपोसाइ, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम मेट, आरम म्यूर, कैल्के आर्स, कार्डु मैरि, कैस्करा सैग्रे, सिन्को, फेल टौरि, फ्लोरि एसिड, ग्रैफा, हाइड्रै, आयोड, कैलि बाइ, कैलि आयोड, लाइको, मर्क डल्सि, मर्क, नैस्टर, नैट्र क्लोरे, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, प्लम्ब, पोडो, क्वैसिया, सिनेसियो ।

कर्कट रोग—आर्स, चेलि, कोलेस्टे, कोनियम, हाइड्रै, लैके, नाइट्रि एसिड, फॉस ।

रक्त संचय—एबीज कैना, इस्क्यु ग्लै, इस्कियु, एगैरि, एलो, आर्स, बर्बे ऐक्क, बर्ब वल, ब्रेसिका, ब्रायो, काडु मैरि, कैमो, चेलिडो, चेलोन, चिनि सल्फ, सिन्को, क्रोकस, डिलि, युपेटो पर्फ, युओनाइम, हीपर, हाइड्रै, आइरिस, कैलि बाइ, कैलि म्यूर, लैके, लेप्टै, लाइको, मैग म्यूर, मर्क डल्सि, मर्क, म्युकुना, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूर एसिड, नक्स वॉ, फॉस, पिकरिक एसिड, पोडो, क्वासिया, सेना, सीपिया, स्टेलैरि स्टिलिंजिया, सल्फर, ट्रॉम्बि, वाइपेरा।

जीर्ण रक्त-संचय—एमोन म्यूर, कोलेस्टे, सिन्को, कोनियम, हीपर, हाइड्रै, आयोड, कैलि का, लेप्टै, लाइको, मैग म्यूर, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, पोडो, सेलैनि, सल्फर, वाइपेरा।

बढ़ जाना, ढीला पड़कर अधिक बड़ा हो जाना—इस्क्यु, एगैरि, आर्स, कैल्के आर्स, काडु मैरि, चेलिडो, चिनि आर्स, चियोनैन्थ, सिन्को, कोलो, कोनियम, डिजि, फेरम आर्स, फेरम आयोड, ग्लिसरीन, ग्रैफा, आयोड, कैलिकार्ब, मैग म्यूर, मैंगेनम एसेटि, मर्क डल्सि, मर्क, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, पोडो, सिकेल, सेलेनि, स्टेलर, टैरैक्से, वाइपेरा, जिंक। देखिये रक्त संचयता।

मद्यपान करने वालों का जिगर बढ़ जाना—ऐब्सिन्थि, एमो म्यूर, आर्स, फ्लोरि एसिड, लैके, नक्स वॉ, सल्फर।

चर्बी आना—ऑरम म्यूर, चेलि, कैलि बाइ, फ्लोर, फॉस, पिकरिक एसिड, वेनैडि।

कड़ापन—एबीज कैना, आर्स, ऑरम, सिन्को, कोनियम, फ्लो एसिड, ग्रैफा, लाइको, मैग म्यूर, मर्क; नक्स वॉ, साइलि, टैरैक्से, जिंक। देखिये क्षीणता (सिरोसिस)।

यकृत-प्रदाह—एकोन, ऐक्टिया स्पाइ, आर्स, ऑरम, ब्रायो, कैमो, चेलिडो, कॉनेस सर्सिनाटा, हीपर, आयोड, कैली आयोड, लैके, मर्क डल्सि, मर्क, नैट्र सल्फ, फॉस, सोरिन, साइलि, स्टेलैरिया, सल्फर।

दर्द, जिगर—शूल (हिपेटेल्जिया)—एकोन, इस्कियु, एलो, एमो कार्ब, एमो म्यूर, आर्स, बेला, बर्बे वल, बोल्डो, ब्रायो, कैल्के सल्फ, कार्बो वेज, काडु मैरि, चियानेन्थ, चेलिडो, चेलोन, कोलेस्टे, सिन्को, कोबा, कोनियम, क्रोटै, डिजि, डायस्को, जैट्रोफा, कैली कार्ब, लैके, लेप्टै, लाइको, मैग म्यूर, मर्क, मर्क डल्सि माइट, नक्स वॉ, ओलि जैको एसे, पार्थ, पोडो, टीलिया, रैन बल, रैन स्केले, सैंग्वि, सेले, सीपिया, स्टैन, सल्फर, टैराक्से, यूका।

दर्द, खींच, बायीं तरफ मुड़ने पर—ब्रायो, टीलि।

दर्द, दबाने वाला—एनाका, कार्बो ऐनि, सिन्को, कैली कार्ब, लाइको, मैग म्यूर, मर्क।

दर्द, कड़कन, फटन—एकोन, एगारि, एमो म्यूर, बेला, बेंजा एसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कार्बो वेज, चेलिडो, सिन्को, डायस्को, हीपर, जुग्लैंस सिने, कैली बाइ, कैलि का, मर्क कोरो, मर्क, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, क्वैसिया, रैन बल, सीपिया, स्टेलैरिया, सल्फर।

दर्द, दर्दवाले करवट लेटने से कम हो—ब्रायो, टीलिया, सीपिया।

दर्द, मालिश और जिगर प्रदेश को हिलाने से कम हो—पोडो।

दर्द, बायीं करवट लेटने से बढ़े—ब्रायो, नैट्र सल्फ, टीलिया।

दर्द, दाहिनी करवट लेटने से बढ़े—चेलिडो, डायस्को, कैली कार्ब, मैग म्यूर, मर्क।

रंजक पित्त का भ्रष्ट होना—आर्जे नाइट्रि।

छूना असह्य—इस्कियु, एलो, बैप्टि, बेला, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्डु-मैरि, चैपारो, चेलिडो, चेलोन, चियोनैन्थ, सिन्को, डिजि, युपेटो पर्फ, फ्लोरि एसिड, ग्रैफा, हाइड्रै, आयोड, आइरिस, कैली कार्ब, लैके, लेप्टै, लाइको, मैग म्यूर, मर्क डल्सि, मर्क, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, निकटैन्थ, फॉस, पोडो, टीलिया, रैन बलबो, सैनिक्यू, सेना, सीपिया, स्टेलैरिया, सल्फर, टैराक्सेकम, जिंक।

उपदंश—ऑरम म्यूर, कैली आयोड, मर्क आयोड रूबर। देखिये पुरुष-जननेन्द्रिय।

मोमी यकृत—कैल्के कार्ब, कैली आयोड, फॉस, साइलि।

क्लोम ग्रन्थियाँ साधारण रोग—आर्स, ऐट्रलापि, बैराइटा म्यूर, बेला, कैल्के आर्स, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, चियोनैन्थ, आयोड, आइरिस, जैबोरै, कैली आयोड, मर्क, नक्स वॉ, पैन्क्रियैट, फॉस, पाइलोका, पल्से।

मूलाधार, विटप—आर्स, एसाफि, बेला, बोवि, कैना इण्डि, कार्बो वेज, चिमाफि, साइक्लै, कैली बाइ, लाइको, मेलैस्टोमा, मर्क, ऑलि ऐनि, पियोनिया, सैनिक्यू, सैण्टैरि, सेलेनि, टेलूरि।

अन्त्रावरण झिल्ली-प्रदाह (Peritonitis)—एकोन, एपिस, आर्न, आर्स, एट्रोप, बेल, ब्रायो, कैल्के, कार्बो, कैन्थे, कार्बो वेज, कैमो, सिमिसि, सिन्को, कोलोसि, क्रोटै, फेरम फॉ, हीपर, इपिका, कैली क्लोर, लैके, लाइको, मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क, रस टॉ, सैंग्वि नाइ, सिनैपिस नाइग्रा, सोलेनम नाइग्रम, सल्फर, टेरेबि, वेरेट्रम विरि, वायेथिया।

जीर्ण—एपिस, लाइको, मर्क डल्सि, सल्फर।

कृत्रिम-अन्त्रावरण झिल्ली प्रदाह, हिस्टीरिया युक्त—बेला, कोलो, वेरेट्रम एल्ब।

क्षय-रोग सम्बन्धी—ऐब्रो, आर्स, आर्स आयोड, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, सिन्को, आयोड, सोरि, सल्फर, ट्युबर ।

अन्धांत्र-आवरण झिल्ली का प्रदाह (Perityphlitis)—आर्स, बेला, आइरिस माइना, आइरिस टेनाक्स, लैके, मर्क कार, रस टॉ ।

तिल्ली-क्षीणता कड़ापन—ऐग्नस, युकैलि, आयोड, फॉस ।

घरेलू, पालतू जानवरों में व्यापक रोग—ऐन्थ्रासिनम ।

बढ़ जाना—एगैरि, ऐग्नस, एरैनि, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम म्यूर, बेलिस, कैल्के आर्स, कैप्सि, काडुंमैरि, सियानोथ, सीड्रन, चियोनैन्थ, चिनि सल्फ, सिन्को, फेरम एसेटि, फेरम आर्स, फेरम आयोड, ग्रिण्डे, हेलियैन्थ, आयोड, मैग म्यूर, मैलेरि, मर्क आयोड रुबर, नैट्र म्यूर, पर्सिकेरिया, फॉस एसिड, फॉस, पौलिम्निया, क्वेरकस, सक्सिन, सलफ्यू एसिड, अर्टिका ।

तिल्ली-प्रदाह—आर्न, एरैनि, आयोड, सियानोथ, चिनि सल्फ, सिन्को, फेरम फॉ, आयोड, प्लम्ब आयोड, ओलिम्निया, सक्सिन, वेरेट्रम विरि, । देखिये बढ़ जाना ।

दर्द—एगैरि, ऐग्नस, ऐमो म्यूर, आर्न, आर्स, आर्स मेट, कैप्सि, सियानोथ, सिमिसि, सिन्को, कोबाल्ट, डायस्को, ग्रिण्डे, हेलियैन्थ, हेलोनि, इलेक्स, आयोड, कैलि आयोड, लोबे सेरुलेटा, नैट्र म्यूर, पार्थ, प्लम्ब, पोलिग्नि, नोयेड, टीलि, क्वैसिया, क्वेरकस, रैन बाल्बो, रस टॉ, सिला, सल्फर, अर्टिका ।

दर्द कड़कन—एगैरि, एलस्टो, एमो म्यूर, बेलिस, बर्बे वल, कार्बो वेज; सियानोथ, चेलिडो, सिन्को, कोनि; कैलि बाइ, नैट्र म्यूर, रैन बल, रोडो, सल्फर, टैराक्सेकम, थेरिडि ।

उपान्त्र प्रदाह (**एपेण्डिसाइटिस**)—एकोन, आर्न, आर्स, बैप्टि, बेला, ब्रायो, कैन्थे, काडुंमैरि, कॉल्चि, कोलिन्सो, कालो, क्रोटै, डायस्को, एचिने, फेरम फॉ, जिन्से, हीपर, आइरिस टेना, कैलि म्यूर, लैके; लाइको, मर्क कार, मर्क, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब रैमनस, रस टॉ, सिलि, सल्फर, वेरेट्रम एल्ब ।

नाभि—नवजात शिशु में, खून बहना—ऐब्रोटै, कैल्के फॉ ।

बुदबुदाना—बर्बे वल ।

जलन—एकोन, आर्स ।

अकौता—मर्क प्रे रुबर ।

दर्द, नाभि के आस-पास दर्द—इस्क्यू, एलो, ऐनाका, बेन्जो एसिड, बोवि, ब्रायो, कैल्के फॉ, कार्बो वेज, कास्टि, कैमो, चेलिडो, चियोनैन्थ, सिना, कॉकु, कोलो, कोनियम, क्रोट टिग, डल्का, युयोनाइम, गैम्बो, ग्रैनेट, हाइपेरि, इपिक, लेप्टै, लाइको,

नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, ऑक्जै एसिड, पैराफि; फॉस एसिड, प्लैटिना, प्लम्ब मेट, रैन स्क्ले, रैफे, रियूम, सिनैसि, साइलि, स्पाइजे, स्टैन, सल्फर ट्रैक्सस, वरबैस्क, वेरेट्रम एल्ब, जिंक।

भीतर सिकुड़ना—कैल्के फॉ, प्लम्ब, पोडो।

आस-पास घाव—आर्स।

पेशाब टपकना—हायोसि।

केंचुए की साधारण औषधियाँ—इस्कियु, एब्रोस, एपोसाइ, ऐण्ड्रो, आर्स, बैप्टि, बेला, कैलेडि, कैल्के कार्ब, चेलोन, साइक्यू, सिना, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम, ऑक्सि, फेरम म्यूर, फेरम सल्फ, फिलिक्स मास, ग्रैनेटम, इग्ने, इण्डिगो, इपिका, कैलि म्यूर, क्रियुओसो, लाइको, मर्क कॉ, नैफ्थे, नैट्र फॉ, पैसिफ्लो, पल्से, क्वैसिया, रैटानहिया, सैबाडि, सैण्टो, साइलि, स्पाइजे, स्टैन, सल्फर, सुम्बु, टैरेबि, टियुक्रि, वेरेट्रम एल्ब, वायोला ओडो।

गोल केंचुए (Ascaris lumbricoides) - एब्रोटै, इस्कियु, एण्टि क्रू, कैल्के कार्ब, चेलोन, सिना, फेरम मे, ग्रैनेट, हेल्मिनटोच, इग्ने, इण्डिगो, कैलि क्लोर, लाइको, मर्क डल्सि, नैफ्थे, पाइनस साइलि, सैबाडि, सेण्टो, स्पाइजे, स्टैन, सल्फर, टेरेबि, टियुक्रि, अर्टि।

महीन कृमि की एक जात—ऑक्सियूरिस वरमिक्युलैरिस—आर्स, बैप्टि, चेलोन, सिना, इग्ने, इण्डिगो, लाइको, मर्क डल्सि, नैट्र फॉस, रैटानहिया, सैण्टो, साइलि, सिनापि नाइग्रा, स्पाइग्रा, ट्युक्रि, वैले।

लम्बे कृमि—आर्जेमो मेक्सि, कार्बो वेज, कुकुर-बिटा, क्युप्र ऐसेटि, क्युप्रम ऑक्सि, फिलिक्स मास, ग्रैनेट, ग्रैफा, कैलि आयोड, कैमाला कुऑसो, मैग म्यूर, रैलेटीरिन, फॉस, पल्से, सैबाडि, सैण्टो, स्टैन, सल्फर, टेरेबि, वैलेरि।

उदर-कृमि (Trichirae)—आर्स, बैप्टि, क्युप्रम ऑक्सि।

मूत्र-यन्त्र

वृद्ध लोगों की, मूत्र सम्बन्धी बाधाएँ—ऐल्फा, एलो, कोपेवा, हीपर, फॉस, पोपु ट्रे, स्टैफि, सल्फर। देखिये कमजोरी।

मूत्राशय—कमजोर—आर्स, हल्का, हीपर, ओपि, प्लम्ब, रस एरो, रस टॉ, सिला, टेरेबि। देखिये पक्षाघात।

मूत्राशय का बढ़ जाना—स्टैफि।

बहुमूत्र—पेशाब का न रुकना—साधारण औषधियाँ—एकोन, ऐगारि, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, एट्रोपि, बेला, बेञ्जो एसिड, कैल्के का, कैन्थे, कॉस्टि, साइक्यूटा, सिमिसि, सिना, कोनियम, डल्का, इक्विसे, इरिंजिऐक्वेटि, इयुपेटो पर्फ, इयुपेटो पर्प्यु, फेरम मेट, फेरम फॉ, जेल्से, हाइड्रैंजिया, हायोसि, कैलि ब्रोम, कैलि नाइट्रि, कैली फॉस, क्रियोजो, लिनैरिया, ल्युपुल, लाइको, मैग फॉ, मेडो, नक्स वॉ, ओपि, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फाइसैलिस, प्लैण्टै, पल्से, रस एरो, रस टॉ, सैबाल, सैनिक्यू, सैण्टो, सिकेल, सेनेगा, सीपिया, साइलि, स्ट्रेमो, सल्फर, टेरेबि, थाइरॉयडिन, थूजा, ट्रिटिकम, ट्यूबर, युरैनियम, वरबैस्क, जिंक मेट। देखिए बहाव।

प्रकार : आक्रमण—दिन ही में—आर्जे नाइट्रि, बेला, कॉस्टि, इक्विसे, फेरम मेट, फेरम फॉस, सिकेल।

बुड्ढे लोगों में—एलो, ऐमो बेंजो, आर्जे नाइट्रि, बेंजो एसिड, कैन्थे, इक्विसे, जेल्से, नाइट्रि एसिड, रस ऐरो, सिकेल, सेनेगा, टरनेरा।

रात के समय—एमो कार्ब, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेला, बेंजो एसिड, कैल्के का, कॉस्टि, सिना, कोका, इक्विसे, इयुपेटो पर्प्यु, फेरम आयोड, फेरम फॉस, जेल्से, हीपर, इग्ने, कैलि ब्रोमे, मैग फॉस, मेडो, फाइसैलिस, प्लैण्टे, पल्से, क्वैसिया, रस ऐरो, सैण्टो, सिकेल, साइलि, सल्फर, थूजा, थाइरॉयडिन, युरैनिय, वरबैस्क।

कारण—कैथेटर लगाकर पेशाब निकलवाने के बाद—मैग फॉ।

पाचन विकार से—बेंजो एसिड, नक्स वॉ, पल्से।

पहली नींद में, बच्चा कठिनाई से जागे—कॉस्टिकम, योजो, क्रिसीपि।

पूर्णिमा पर, जल्दी ठीक न हो, अकौता के उत्पन्न होने और दब जाने का इतिहास हो—सोरिन।

केवल आदत हो एक कारण मालूम हो, अन्य कोई कारण रोग का पता न चलता हो—इक्विसेटम।

प्रमेह विष का इतिहास हो—मेडो।

हिस्टीरिया—इग्ने, वैले।

कमजोर या आंशिक पक्षाघातिक संकुचन पेशियों के कारण से—एपोसाइ, बेला, कॉस्टि, कोनियम, फेरम फॉस, जेल्से, नक्स वॉ, रस ऐरो, सैबाल, सिकेल, स्ट्रिक्नि। देखिए पक्षाघात।

कृमि रोग के कारण से—सिना, सैण्टो, सल्फर।

संवेदन—मानो मूत्राशय में गेंद या गुल्ली कसी हो—एनाका, कैलि ब्रोमे, लैकै, सैण्टैल।

मानो पीठ से या पीठ तक सनसनी दौड़ रही हो—सारसा।

मानो तन गया हो—ऐन्थेमिस, एपोसाइ, आर्स, बर्बे वल, कोनियम, कॉनवैलेरिया, डिजि, इक्विसे, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, हायोसि, मेल कम सेल, पेरीरा, पल्से, रूटा, सैण्टो, सारसा, सीपिया, स्टैफि, सल्फर, युवा ।

रक्तप्रवाह—ऐमिग्डै परसि, कैक्ट, कार्बो वेज, इरिजेरन, हैमे, मिलेफो, नाइट्रि एसिड, रस ऐरो, सिकेल, थ्लैस्पि । देखिए खून पेशाब में (Haematuria) जाना ।

दिल की दीवारों का मोटी होकर बढ़ जाना—पिची ।

मूत्राशय प्रदाह—तीव्र—एकोन, एण्टि टा, एपिस, आर्स, ऐस्पैरे, बेला, बेंजो एसिड, बर्बे वल, कैम्फो, एसिड, कैना से, कैन्थे, कैप्सि, चिमाफि, कोनियम, कोपेवा, क्युप्रम, डिजि, डल्का, इलाट, इक्विसे, एरिंजे, यूकैलि, युपेटो पर्प्यु, फेरम एसेटि, फेरम फॉस, जेल्से, हेलेबो, हाइड्रैसि, हायोसि, लैके, मर्क कार, मेथिलिन ब्लू, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओलि सैण्टे, पैरीरा, पेट्रोसे, फैबिआना इम्ब्रिकेटा (पिचि), पाइपर मेथाइस्टि, पॉपु, प्रूनस स्पाइ, पल्से, सैबाल, सैबाइना, सारसा, सॉरुरसइ, सीपिया, स्टिग्मा, सल्फर, टेरेबि, ट्रिटिकम, युवा, वेसिक्यु ।

कैन्थरिस के अति दुरुपयोग से—एपिस, कैम्फो ।

सुजाक से—बेल, बेन्जो एसिड, कैन्थे, कोपेवा, कुबेला, मर्क वा, कोरो, पल्से सैबाल ।

चीरा लगवाने से और गर्भावस्था में—पॉपुलस ट्रे ।

ज्वर से पेशाब रुकवा—एकोन, बेला, कैन्थे, जेल्से, हाइड्रैंजि, स्टिग्मा ।

प्रदाह, जीर्ण—आर्स, बैल्से पेरु, बैरोस्मा, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, बुचु, कैना से, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, चिमाफि, कॉक्कस, कोलो, कोपेवा, कुबेबा, डल्का, इपिजि, एरिंजि, ऐक्वे, युकैलि, युपेटो पर्प्यु, फैबियाना, ग्रिण्डे, हाइड्रै, आयोड, जुनिपे, कावा, लिथि कार्ब, लाइको, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, पैरीरा, पिची, पाइपर मेथिस्टि, पॉपु ट्रे, प्रूनस स्पाइ, पल्से, रस ऐरो, सैबाल, सैण्टो, सेनेगा, सीपिया, सिल्फि, स्टिग्मा, टेरेबि, थ्लैस्पि, थूजा, ट्रिटिकम, ट्युबर, युवा, वेसिक्यु, थीया ।

उत्तेजना-मूत्राशय की गरदन में—एकोन, एल्फा, एलो, एपिस, बैरोस्मा, बेला, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, बुचू, कैल्के कार्ब, कैम्फो, कैना सैटा, कैन्थे, कैप्सि, कॉस्टि, कोपेबा, कुबेबा, डिजि, इक्विसे, एरिजेरन, एरिंजि एक्वे, इयुपेटो पर्प्यु, फेरम ऐसेटि, फेरम मेट, फेरम फॉस, गुवायेक, हायोसि, कैली ब्रोमे, मिचेला, नाइट्रो म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, आक्सि ट्रॉ, पैरीरा, पेट्रोसे, प्रूनस स्पाइ, रस एरो, सैबाल, सेनेसि, सेनेगा, सीपिया, स्टैफिसे, स्टिग्मा, टेरेबि, थूजा, ट्रिटिक, वेसिक्यु ।

उत्तेजना स्त्रियों में—बर्बे वल, कोपे, क्यूबे, इयुपे पर्प्यु, जेल्से, हेडिओमा, क्रियोजो, सेनेसि, सीपिया, स्टैफि ।

दर्द—एकोन, ऐम्ब्रा बेला, बर्बे वल, कैम्फो, कार्बो वेज, कॉलो, कॉस्टि, कॉक्कस, कैपे, डिजि, डल्का, इक्विसे, इरिजे, इरिजि, इग्ने, लैके, लाइको, नैफ्थे, नाइट्रि एसि, ओपि, पैरीरा, फैबिआना इम्ब्रिकेटा (पिचि), पाइलोका, पॉपु ट्रे, प्रून स्पाइ, प्यूलेक्स, पल्से, रस ऐरो, स्टैफि, स्टिग्मा, स्ट्रिक्नि, टेरेबि, थूजा, ट्रिटिक, युरेनि नाइट्रि, युवा । देखिये मूत्राशय-प्रदाह ।

प्रकार भेद—टीस— बर्बे वल, कॉनवै, इक्विसे, युपेटो पर्प्यु, पापु ट्रे, सीपिया, स्टिक्टा, थूजा, टेरेबि ।

जलन—एकोन, आर्स, बैरोस्मा, बर्बे वल, कैम्फो, कैन्थे, कोपे, फेरम पिक्रि, स्टैफि, टेरेबि, युवा ।

ऐंठन की तरह संकुचन—बेला, बर्बे वल, कैक्ट, कैना सै, कैन्थे, कैप्सि, लाइको, ओपि, पोलिगो, प्रून स्पाई, सारसा पै, टेरेबिन्थि ।

कटन, कड़कन—ऐकोन, इथूजा, बेला, बर्बे वल, कैन्थे, कॉक्कस, कैप्सि, लाइको, टेरेबिन्थि ।

स्नायविक ऐंठन—कॉलो, लिथि कार्ब, लाइको, मर्क कार, पैरीरा, पल्से, स्टैफि, युवा ।

दाब वाला—एलो, ब्रैकिग्लो, कैक्ट, कार्बो वेज, कॉक्कस, कोनि, डिजि, डल्का, इक्विसे, लैके, लिलि टिग्रि, लाइको, मेल कम सेल, पॉपु ट्रै, प्यूलेक्स, पल्से, रूटा, सीपि, स्टैफि, सल्फर, टेरेबि, वरबैस्कम ।

शुक्ररज्जु की तरह फैलने वाला—क्लिमै, लिथि कार्ब, पल्से, स्पांजिया ।

घटना-बढ़ना—बढ़ना पेशाब करने बाद—कैन्थे, कॉस्टि, एपिजिया, इक्विसे, फैबिआना इम्ब्रिकैटा (पिचि), रूटा । देखिये पेशाब करना ।

पानी पीने से—कैन्थे ।

मूत्राशय में नश्तर लगवा कर पथरी निकलवाने के बाद—स्टैफि ।

टहलने से—कोनियम, प्रून स्पाइ ।

घटना—आराम से—कोनियम ।

पेशाब करने से—कॉक्कस, हेडोयोमा ।

टहलने से—इग्ने, टेरेबि ।

पक्षाघात, लकवा—ऐलुमिना, एपोसाइ, आर्न, आर्स, ऑरम, कैक्ट, कैम्फो, कैना इण्डि, कैन्थे, कॉस्टि, कोनि, डिजि, डल्का, इयुकैलि, इक्विसे, फेरम मेट, फेरम फॉ, जेल्से, हेबो, हायोसि, लैके, मार्फि, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब मे, सोरि, पल्से, सिकेल, स्ट्रिक्नि, थूजा ।

संकोचन पेशी का पक्षाघात—आर्स, बेला, कॉस्टि, साइक्यूटा, डल्का, हायोसि, इग्ने, लैके, लॉरोसि, नैट्रम्यूर, ओपि, सल्फर, थूजा, जिंक।

अर्बुद चुचुकाकार— आर्स, कैल्के कार्ब, थूजा।

बाहर निकलना—हायोस, पाइरस, स्टैफि।

उत्तेजना, कोमलता, मूत्राशय प्रदेशीय—एकोन, बेला, बर्बे वल, कैन्थे, कॉक्कस, इक्विसे, इयुपेटो पर्प्यु, मर्क कॉ, सारसा, स्टिक्टा, टेरेबि। देखिए दर्द।

आक्षेप, झटकन मूत्राशयिक—कैन्थे, जेल्से, हायोसि, नक्स वॉ, पल्से।

मुख-गह्वर में नश्तर लगवाने के बाद आक्षेप—बेला, कोलो, हाइपेरि।

कूँथन मूत्राशयिक—एकोन, एपिस, आर्न, बेला, बेंजो एसिड, कैम्फो, कैना सैटा, कैन्थे, कैप्सि, कैमो, चिमाफि, कॉक्कस, कोलो, कोपेवा, क्युबेबा, एपिजिया, इक्विसे, एरिंजि, इयुपेटो पर्प्यु, फेर फॉ, हाइड्रैंजि, हायोसि, इपिका, लिलि टिग्रि, लिथिक, लाइको, मेडो; मर्क कार, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओनिस्कस, फैबिआना इम्ब्रिकेटा (पिचि), प्लम्ब मेट, पॉपु ट्रे, प्रून स्पाइ, पल्से, रैम का, रस टॉ, सैबाल, सारसा, सेनेसि, स्टैफि, स्टिग्मा, टेरेबि, वेसिक्यु।

कमजोरी, पेशाब न रोक सके, टपका करे—एलो, एनान्थिरम, एपोसाइ, बेला, बेंजो एसि, ब्रेकिग्लो, कैम्फो, कैना इण्डि, कास्टि, क्लिमै, कोनि, इक्विसे, एरिजे, युफ्रेसि, जेल्से, हीपर, नक्स वॉ, पेट्रोलि, पिकरिक एसिड, प्युलेक्स, पल्से, रस ऐरो, सैण्टो, सैबाल, सार्सा, सेलेनि, सोलेन, लाइको, स्टैफि, टेरेबि, थाइमॉल, ट्रिबुल, युवा, वरबैस्क, वेसिक्यु, जेरोफाइल।

कमजोरी, वृद्ध लोगों में—ऐलुमि, बेंजो एसि, कार्बो एसिड, क्लिमे, कोनि, पॉपू ट्रे, सेलेनि, स्टैफि। देखिये पक्षाघात।

गर्दे—फोड़ा—आर्न, बेला, हीपर, मर्क, वेरेट्र वि।

रेत आना (नेफ्रोलिथियासिस) शूल—आर्जे नाइ, बेला, बेंजो एसिड, बर्बे वल, बुचु, कैल्के का, कैल्के रैनै, कैन्थे, कैमो, चिनि सल्फ, कॉक्कस, कोलो, डायस्को, एपिजि, एरिजे, ऐरिंजि, इयुपेटो पर्प्यु, हेडिओ, हीपर, हाइड्रैंजि, आइपोमिया, लाइको, मेडो, नाइट्रि एसि, नक्स वॉ, ओसिमम, ओनिस्कस, ओपि, ऑक्सिडेन, पैरीरा, फैबिआ इम्ब्रि (पिचि), पिपेराज, पोलिगो, सारसा, सीपि, सोलिडै, स्ट्रिग्मा, टैबे, थ्लैस्पि, आर्टिका, युवा, वेसिक्यु।

शूल, बाईं तरफ अधिक—बर्बे वल, कैन्थे, टैबे।

शूल दाहिनी तरफ अधिक—लाइको, नक्स वॉ, ओपियम, सारसा।

दो आक्रमणों के बीच वाले काल की औषधियाँ—बर्बे वल, कैल्के कार्ब, चिनि सल्फ, हाइड्रैंजि, लाइको, नक्स वॉ, सीपिया, अर्टिका।

रक्ताधिक्य, तीव्र—एकोन, आर्जे नाइट्रि, आर्न, ऑरम, बेला, बेंजो एसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कैम्फा, कैन्थे, डिजि, डल्का, इयुकैलि, एरिञ्जि ऐक्वे, हेलेबो, हेलोनि, हाइड्रोसि एसिड, जुनिपेर, कैली बाइ, मर्क कार, ओलियम सैनटे, ओपियम, रस टॉ, सेनेसि, सोलिडै, टेरेबि, वेरेट्र विरि। देखिए गुर्दा-प्रदाह (नेफ्राइटिस)।

रक्ताधिक्य जीर्ण (मन्द) (दिल या गुर्दा की बीमारी से)—एकोन, आर्न, बेला, कैफीन, कॉन वै, डिजि, ग्लोनो, फॉस, स्ट्रोफै, स्ट्रिक्नि, वेरेट्र विरि। देखिये दिल।

अपकर्ष—तीव्र श्वेतक्षारीय, चर्बीला—ऐपिस, आर्स, ऑरम म्यूर, बेला, साइक्यू, क्युप्रम एसेटि, फेरम म्यूर, हाइड्रोसि एसिड, कैल आयोड, लाइको, नाइट एसिड, फॉस एसिड, फॉस, रस टॉ, टेरेबि। देखिये गुर्दा-प्रदाह।

तैरते गुर्दे (नेक्रोटोसिस) परावर्तित (प्रतिक्षिप्त) लक्षण—बेला, कैमो, कोलो, जेल्से, इग्ने, लैके, पल्से, स्ट्रिक, आर्स, सल्फर, जिंक।

प्रदाह नेफ्राइटिस—ब्राइट्स रोग।

तीव्र और मन्द—तीव्र कोरण्डयुक्त गर्दा-प्रदाह (पैरेन्काइमेटस नेफ्राइटिस)—एकोन, ऐण्टि टॉ, एपिस, एपोसाइ, आर्स, ऑरम म्यूर, बेला, बर्बे वल, कैना सै, कैन्थे, चेलि, चिमाफि, चिनि सल्फ, कॉल्चि, कॉनवै, क्युप्रम आर्स, डिजि, डल्का, इयुकैलि, इयुपेटो पर्फ, फेरम आयोड, फ्युशिना, ग्लोनो, हेलेबो, हेलोनि, हीपर, हाइड्रो कोटा, इरिडि, जुनिपेर, कैली बाइ, कैली क्लोरि, कैली साइट्रि, कैलिकार्बो; काँच का लिम्फ, लैके, मर्क सल्फ, मिथिलि ब्लू, नाइट्रि एसिड; ओलि सैण्टे, फॉस एसिड, फॉस, फैब्रिआ इम्ब्रि (पिचि), पिकरि एसिड, प्लम्ब एसेटि, पोलिगोन, रस टॉ, सैबाइन, सैम्बु, सिबिला, सिकेल, सेनेसि, सीरम ऐंग्विलर, टेरेबि, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्रम वि, जिंजि।

कारण—सर्दी या ठंड लगने से—एकोन, ऐण्टि टॉ, एपिस, कैन्थे, डल्का, रस टॉ, टेरेबि।

इन्फ्लुएञ्जा से—इयुकैलि।

मलेरिया से—आर्स, इयुपेटो पर्फ, टेरेबि।

गर्भावस्था से—एपिस, एपोसाइ, क्युप्रम आर्स, हेलोनि, कैल्मि, मर्क कार, सैबाइना। देखिये स्त्री-जननेन्द्रिय मण्डल।

अरुण ज्वर डिपथेरिया से—एकोन, एपिस, आर्स, बेला, कैन्थे, कॉनवै, कोपेवा, डिजि, फेरम आयोड, हेलेबो, हीपर, कैल्मि, लैके, मर्क कार, मिथिलि ब्लू, नैट्र सल्फ, नाइट्रि स्पि डल्सि, रस टॉ, सिकेल, टेरेबि।

मवाद बनने, पकने की क्रिया से—एपोसाइ, चिनि सल्फ, हीपर, फॉस, प्लम्ब क्रो, साइलि, टेरेबि।

साथ के लक्षणः शोथ—एकोना, एडोनि, वरनै, ऐण्टि टॉ, एपोसाइ, आर्स, ऑरम म्यूर, कैन्थे, कॉल्चि, कोपेवा, डिजि, हेलेबो, मर्क कार, पिलोका, सैम्बु, सिला, सेनेसि, टेरेबि। देखिये शोथ (ड्रॉप्सी)—साधारण लक्षणों में।

दिल की गति बन्द होना—एडोनि वरनै, आर्स, कैफीन, डिजि, ग्लोनो, स्पार्टि, स्ट्रोफै, वेरेट्र विरि।

निमोनिया—चेलिडो, फॉस।

मूत्र-विकार के लक्षण—इथूजा, एमो का, आर्स, बेला, कैना इण्डि, कार्बोलि एसि, साइक्यूटा, क्युप्रम आर्स, हेलेबो, हायोसि, मॉर्फि, ओपि, पिलोका, स्ट्रामो, युरिया।

तीव्र मवादी पकने वाला गुर्दा प्रदाह—एकोन, आर्न, बेला, कैम्फो, कैल्के सल्फ, कैना सैटि, कैन्थे, चिनी सल्फ, इयुकैल, हेक्ला, हीपर, कैली नाइट्रि, मर्क कार, नेफ्थे, साइलि, वेरेट्र विरि।

जीर्ण सांतर गुर्दा-प्रदाह—(Interstitial Nephritis)—एपिस, आर्स, ऑरम म्यूर, ऑरम म्यूरि नैट्रो, कैक्ट, चिनि सल्फ, काल्चि, कानवै, डिजि, फेरम मेट, फेरम म्यूर, ग्लोनो, आयोड, कैलि कार्बो, कैलि आयोड, कॉच लिम्फ, लिथि ऐसिड, लिथि बेन्जो, लिथि कार्बो, मर्क कार, मर्क डल्सि, नैट्र आयोड, नाइट्रि एसि, नक्स वॉ, ओपियम. फॉस एसिड, फॉस, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब को, प्लम्ब मेट, सैंग्वि, जिंक, पिकरि। देखिये धमनी प्राचीर का कड़ा पड़ना, रक्त वाहन मण्डल।

जीर्ण कोरण्ड-युक्त गुर्दा-प्रदाह—एमो बेन्जो, एपिस, आर्स, आरम म्यूर, ऑरम म्यूर नैट्रो, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, ब्रैकिग्लो, कैल्के आर्स, कैल्के फॉस, कैनाइण्डि, कैन्थे, चिनि आर्स, कॉनवै, डिजि, इयुपेटो पर्प्यु, इयुओनाइम, फेरम आर्स फेरम साइट्रि, फेरम म्यूर, फेरम फॉ, फॉर्मि एसिड, ग्लोनो, हेलोनि, हाइड्रोसि एसिड, जुनिपेर, कैलि आर्स, कैली क्लोरि, कैली साइट्रि, कैली आयोड, कैलि म्यूर, कैल्मि, कोच, लिम्फ, लोनिसे, लाइको, मर्क कार, नैट्र क्लोर, नाइट्रि एसिड, पिलोका, प्लम्ब, सेनेसि, सोलैनिया, सोलिडै, स्पार्टि, टेरेबि, युरिया, वेसिक्यु।

लक्षणः मूत्रक्षार विकार—साधारण तौर पर—एमो कार्ब, एपिस, एपोसाइ, आर्स, ऐसक्लिपि; मर्क कॉर, बेला, कैना इंडि, कैन्थे, कार्बो एसि, साक्यूटा, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम आर्स, ग्लोनो, हेलेबो, हाइड्रोसि एसि, हायोसि, कैली ब्रो, मॉर्फि, ओपि, फॉस, पिकरिक एसिड, पिलोका, क्वब्रैको, सीरम ऐंग्वि, स्ट्रैमो, टेरेबि, युरिया, अर्टिका, वेरेट्र वि।

गशी—एमो कार्ब, बेला, ब्रायो, कार्बो एसिड, क्युप्रम आर्स, हेलेबो, मर्क कार, मार्फि, ओपि, वेरेट्र विरि।

आक्षेप—बेला, कार्बो एसिड, क्लोरल, साइक्यू, क्युप्रम एसे, क्युप्रम आर्स, ग्लोनो, हाइड्रोसि एसिड, कैली ब्रो, मर्क कार, ओपि, पिलोका; प्लम्ब, वेरेट्र विरि। देखिये आक्षेप (स्नायुमण्डल)।

सिर दर्द—आर्न, केना इण्डि, कार्बो एसिड, क्युप्रम आर्स, ग्लोनो, सैंग्वि, जिंक पिकरिक। देखिये सिर।

कै होना—आर्स आयोड, क्रियोज्ञो; नक्स वॉ, देखिये पेट।

गुर्दा प्रदेश में दर्द, जलन—एकोन, आर्स, ऑरम, बर्बे वल, ब्यूट्रि एसिड, कैन्थे, हेडियोमा, हेलोनि, कैलि आयोड, लैके, लाइको, मर्क कार, फॉस, सैबाइ, सल्फर, टेरेबि। देखिये पीठ।

कटन, खादन, छेदन होने जैसा—आर्न, बर्बे वल, कैन्थे, इयुपेटो पर्फ, इपिका, लाइको, रस टॉ, टेरेबि।

खींच, तनाव वाला—बर्बे वल, कैना सैटाई, कैन्थे, चेलिडो, कॉक्कस, कॉल्चि, डल्का, लैके, लाइको, नाइट्रि एसिड, सोलिडै, टेरेबि।

स्नायुशूल, फने वाला, फटन, कोंचन—आर्जे नाइट्रि, आर्न, बेला, बर्बे वल, कैल्के कार्ब, कैन्थे, चेलि, चिनि सल्फ, कॉक्सिनेलि, कॉक्कस, डायस्को, एरिजि, एक्वै, फेरम म्यूर, हेडिओमा, हाइड्रैंजि, लैके, लाइको, कैलि आयोड, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओसिमम, आक्सि ट्रो, पैरीरा, फॉस, सैबाइना, सारसा, स्क्रोफूल, सोलिडै, टैबे, टेरेबि, थ्लैस्पि, वेस्पा। देखिए मूत्र पथरी, (नेफ्रोलिथियेसिस)।

दबाने वाला—आर्जे नाइट्रि, आर्न, ऑरम म्यूर, बर्बे वल, कैन्थे, चिनि सल्फ, लाइको, नाइट्रि एसिड, ओसिमम, पेट्रोलि, फॉस एसिड, सीपि, टेरेबि, युवा, जेरोफाइल।

सड़क—बर्बे वल, कैन्थे, कॉल्चि, कैली कार्ब, पैरीरा।

थरथराहट—ऐक्टि स्पाइ, बर्बे वल, चिमाफि, मेडो, सैबाइना।

थकावट, टीस, लँगड़ापन—एकोन, एलुमि, एमो ब्रो, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बेंजो एसिड, बर्बे वल, कैना इण्डि, कैन्थे, चेलिडो, सिना, कॉनवै, कोपेवा, इयुपेटो पर्प्यु, हेडिओमा हेलोनि, हाइड्रैन्जि, जुनिपे, कैली बाइक्रो, नैट्र क्लोर, नक्स वॉ, ओलि सैण्टे, फाइटो, पिकरिक एसिड, पाइनस साइल, सैबाइ, सीपि, सोलिडै, स्टैलै टेरेबि, अस्टिलै, युवा, वेस्पा। देखिये पीठ।

घटना-बढ़ना—२ बजे तीसरे पहर—कैल्मि।

एकाएक कोई भारी चीज उठाने से—कैल्के फा।

लेटने से—कॉनवै।

हरकत से—बर्बे वल, कैन्थे, चेलिडो, कैलि आयोड।

दाब से—बर्बे वल, कैन्थे, कॉल्चि, सोलिडै।
बैठने से—बर्बे वल, फेरम म्यूर।
झुकने से, लेटने पर—बर्बे वल।
टाँग फैलाने से—कॉल्चि।
शराब—बेन्जो एसिड।
बाईं तरफ—इस्क्यु, बर्बे वल, हेडिओमा, हाइड्रैंजि, टैबे, थूजा।
दाहिनी तरफ—एमोबेंजो, कैना इण्डि, चेलि, इक्विसे, लिथिका, लाइको, ओसिमम, फाइटो, पिकरि एसिड, सारसा, टेरेबि।
कम होना; घटना—पीठ के बल लेटने से—कैह्निका।
पीठ के बल, पैर सिकोड़ कर लेटने से—कॉल्चि।
खड़े होने से—बर्बे वल।
पेशाब करने से—लाइको, मेडो।
टहलने से—फेरम म्यूर।
वृक्क के समीपवर्ती तन्तुओं का प्रदाह—एकोना, ब्रायो, चिनि सल्फ, हीपर, मर्क, साइलि।

गुर्दों के चारों तरफ की झिल्ली का प्रदाह-पाइलाइटिस, मूत्रपिण्ड आवरण का प्रदाह—तीव्र, एकोन, आर्स, ऑरम, बेला, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कैना सै, कैन्थे; सिन्को, कोपे, क्युप्रम आर्स, एपिजि, फेरम म्यूर, हेक्ला, हीपर, कैली बाइ, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, पल्से, रस टॉ, स्टिग्मा, टेरेबि, थूजा, ट्रिरिक, युवा, वेरेट्र विरि।

पथरी—हीपर, हाइड्रैन्जि, लाइको, पाइपेराज, साइलि, युवा। देखिये नेफ्रोलीथियेसिस।

जीर्ण—आर्स, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, बुचु, चिमाफि, चिनि सल्फ, सिन्को, कोपेवा, हीपर, हाइड्रैस्टि म्यूर, हाइड्रैस्टिन सल्फ, जूनिपेर, कैली बाइ, ओल सैण्टै, पैरीरा, पल्से, सीपिया, साइलि, सल्फर, स्टिग्मा, युवा।

उत्तेजना; कोमलता—एकोन, एपिस, बर्बे वल, कैल्के आर्स, कैना सैटाइ, कैन्थे, इक्विसे, हेलोनि, फाइटो, सोलिडै, टेरेबि। देखिए दर्द।

उपदंश—ऑरम, कैलि आयोड, मर्क कॉर। देखिये पुरुष जननेन्द्रिय मण्डल।
आघात की वजह से—एकोन, आर्न, बेला, वेरेट्र विरि।
क्षयरोग : ट्युबरकुलोसिस—आर्स आयोड, बैसि, कैल्के कार्ब, कैल्के हाइपोफॉ; कैल्के आयोड, चिनि आर्स, चिनि सल्फ, हेक्ला, कैलि आयोड, क्रियोजो। देखिये क्षय रोग तपेदिक (साँस-यन्त्र-मण्डल)।

मूत्रमार्ग—जलन, कड़कन, गरमी—एकोन, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बर्बे वल, कैहिन्का, कैल्के कार्ब, केना इण्डि, कैनासै, कैन्थे, कैप्सि, चिमाफि, क्लिमे, कोनियम, कोपेवा, डिजि, जेल्से, हाइड्रैन्जि, मर्क कार, मर्क, मेजे, नेट्र कार्ब, नाइट्रो म्यूरि ऐसि, ओनिस्कस, पेट्रोलि, पेट्रोसे, फॉस, सेलेनि, स्टैफि, सल्फर, टेरेबि, थूजा, युरैनि, जिन्जि।

पेशाब करने के बीच वाले काल में जलन—बर्बे वल, कैना सै, स्टैफि।

मांस का लटकता भाग (कैरुन्कल)—कैना सै, इयुकैलि, ट्युक्रि, थूजा।

श्लैष्मिक स्राव—हीपर, मर्क कार, नैट्र म्यूर।

रक्तस्राव—कैल्के कार्ब, लाइको।

मूत्रनली प्रदाह—एकोन, एपिस, आर्जे नाइट्रि, कैम्फो, कैना सै, कैन्थे, कैप्सि, कॉस्टि, कोपे, क्युबेबा, डोराइफो, जेल्से, कैलि बाइ, कैलि आयोड, मर्क का, नक्स वॉ, पेट्रोलि, सैबाइ, सल्फर, थूजा, योहिम्बि। देखिये पुरुष जननेन्द्रियमण्डल।

खुजाना—एकोन, ऐलुमि, ऐम्ब्रा, आर्जे नाइट्रि, कैन्थे, कॉस्टि, कोलो, फेरम आयोड, फेरम मेट, जिन्सेंग, लाइको, मर्क, मेजे, नाइट्रि एसिड, ओलि ऐनि, पैरीरा, पेट्रोसे, स्टैफि, सल्फर, थूजा, टुसिलै।

मूत्रमार्ग का मुँह—जलन—एकोन, ऐम्ब्रा, बारै, कैना से, कैन्थे, कैप्सि, क्लिमै, जेल्से, मेन्थॉल, पेट्रोसे, सेलेनि, सल्फर, जिंजि।

चारों तरफ दाने—कैप्सि।

खुजाना—ऐलुमि, ऐम्ब्रा, कॉस्टि, कोलो, जिंसेंग, पेट्रोसे।

चारों तरफ घाव होना—इयुकैलि।

फूलना—एकोन, आर्जे नाइट्रि, कैना सै, कैन्थे, कोपेवा, जेल्से, मर्क, ओलि सैण्टै, सल्फर। देखिये मूत्र-मार्ग-प्रदाह।

मूत्राशय-ग्रंथि का झिल्ली रोग ग्रस्त होना—सैबाल।

मूत्रमार्ग में दर्द—संकुचन दर्द—आर्जे नाइट्रि, कैना सै, कैप्सि, क्लिमे, फेरम आयोड, ओलि सैण्टे, पेट्रोसे।

कटन—एलुमि, ऐण्टि क्रू, बर्बे वल, कैन्थे, नैट्र म्यूर, ओनिस्कस, पेट्रोसे।

दर्द कोमलता, उत्तेजना—ऐग्नस, एनागै, आर्जे नाइट्रि, बर्बे वल, ब्रैकीग्लो, कैना सै, कैन्थे, कॉस्टि, क्लिमे, कोपेवा, क्यूप्र, फेरम पिक्रि, जेल्से, कैलि आयोड, टुसिलै।

कड़कन, चुभन—एगारि, एपिस, आर्जे नाइट्रि, ऐस्पैरै, बर्बे वल, कैना इण्डि, कैना सै, कैप्सि, कार्बो वेज, क्लिमे, मर्क कार, मर्क, नाइट्रि एसिड, पेट्रोसे, थूजा।

संवेदना—कम होना—कैलि बा।

रुकावट - यान्त्रिक—एकोन, आर्जे नाइ, आर्न, कैल्के आयोड, कैन्थे, क्लिमे, युकैलि, लोबे इन्फ्ला, फॉस, पल्से, साइलि, सल्फ आयोड ।

रुकावट आक्षेपिक—एकान, बेला, कैम्फ, कैन्थे, एरिन्जि, हाइड्रैन्जि, नक्स वॉ, पेट्रोसे ।

मूत्रस्राव-इच्छा-लगातार इच्छा बनी रहे—एब्सिन्थि, एकोन, एनांथि, बेला, बर्बे वल, कैक्ट, कैना सै, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, सियानोथ, कॉक्कस, कोपेवा, डिजि, डल्का, इक्विसे, युपेटो पर्प्यु, फेरम म्यूर, जेल्से, गुयेकम, क्रियोजो, लिलि टिग्रि, लाइसिन, म्युरेक्स, ओपि, पैरीरा, रुटा, सैबाल, सेनेसि, सीपिया, स्टैफि, सल्फोनै, सल्फर, थूजा ट्रिटिक, जिंजि, । देखिये मूत्राशय प्रदाह (सिस्टाइटिस) ।

मेहनत के बाद लगातार—ओपि, स्टैफि ।

रात में लगातार—डिजि, सैबाल ।

गर्भाशय के बाहर निकलने के बाद लगातार—लिलि टिग्रि ।

बहते पानी को देखने से लगातार—कैन्थे, लाइसिन, सल्फर ।

बहुमूत्र, मूत्रमेह : डायाबिटीज इनसिपिडस—बहुत अधिक मात्रा में अनेक बार रात्रि में अधिक—एसेटिक एसि, एकोन, ऐल्फा, एमो एसेटि, एपोसाइ, आर्जे म्यूर, आर्जे मेट, आर्स, ऑरम म्यूर, बेला, ब्रायो, कैहिन्का, कैना इण्डि, कॉस्टि, सेपा, चिनि सल्फ, चियोनैन्थ, सिना, कोडि, कॉनवै, डल्का, इक्विसे, इयुपेटो पर्प्यु, फेरम म्यूर, फेरम नाइ, जेल्से, ग्लीसरीन, ग्लोनो, नैफे, गुवाको, हेलेबो, इग्नै, इण्डोल, कैलि कार्ब, कैलि आयोड, कैलि नाइट्रि, क्रियोजो, लैक्टि एसिड, लीडम, लिलि टिग्रि, लिथि कार्ब, लाइको, मैग फॉस, मर्क कार, मॉस्कस, म्यूरेक्स, नैट्र-म्यूर, निकोल सल्फ, नाइट्रि एसि, नक्स वॉ, ओलि ऐनि, ऑक्सीट्रो, फॉस एसि, फॉस, फाइसैलि, पिकरि एसिड, प्लैटि म्यूर नैट्र, पल्से; क्वेसि, रस ऐरो, सैम्बु, सैंग्वि, सैण्टोनाइ, सारसा, सिला, सिनैपि नाइग्रा स्पार्टि; स्टैफि, स्ट्रोफै, सल्फ, टैराक्से, टेरेबि, थाइमॉल थाइराय, युरैनि, वरबैस्क, वेरेट्र विरि । देखिये डायाबिटीज ।

रात में अधिक मात्रा में—ऐम्ब्रा, कैलि आयोड, लाइको, म्यूरेक्स, पेट्रोलि, फॉस एसिड, क्वैसिया, सिला ।

मूत्रकृच्छ्र (डाइस्यूरिया)—एकोन, ऐलुमिना; एण्टि टा, एपिस, एपोसाइ, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेला, बेन्जो एसिड, कैम्फो; कैना इण्डि, कैना सै, कैन्थे, कैप्सि; कैस्कारा, कॉस्टि, चिमाफि, क्लिमे, कॉक्कस, कोनि; कोपेवा, कुकर्बि साइट्र, डिजि, डल्का, एपिजिया, इक्विसे, इयुपेटो पर्प्यु; फैबियाना, फेरम फॉ, हापर, हाइड्रैन्जि, हाइपेरि, हायोसि, क्रियोजो; लिथि कार्ब, लाइको, मेडो, मर्क कार, मार्फि; म्यूरि एसिड; नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओसिमम, ओलि सैण्टे, ओपि, पैरीरा,

पेट्रोसे, पिच्चि, प्लम्ब, पॉपु; ट्रे, पल्से, रस टॉ, रूटा; सैबाल; सैण्टोना, सारसा, सेलेनि, सीपि, सालिडै, स्टैफि, स्टिमा, टैक्टस, थ्लैस्पि, ट्रिटिक; युवा, वरबैस्क, वाइबर्न ओपू, जिंक। देखिये थोड़ी मात्रा।

कठिन, गर्भावस्था में और प्रसव के बाद—इक्विसे।

कठिन, दूसरों की उपस्थिति में—ऐम्ब्रा, हीपर, म्यूर एसिड, नैट्र म्यूर।

कठिन युवा, विवाहिता स्त्रियों में—स्ट्रैफि।

कठिन, लेट जाना आवश्यक—क्रियोजो।

कठिन, पीछे की तरफ शरीर झुका कर बैठना आवश्यक—जिंक।

कठिन, टाँगों को फैला कर और आगे की तरफ झुककर खड़ा होना आवश्यक—चिमाफि।

कठिन, काँखना पड़े—एकोन, ऐलुमि, कैना इण्डि, चिमाफि, इक्विसे, हायोसि, कैलि कार्ब, क्रियोजो, लाइको, मैग म्यूर, नक्स वॉ, ओपि, पैयोनोया, पैरीरा, प्रूनस स्पाइ, सैबाल, जिंक। देखिये मूत्राशय।

कठिन, काँच निकालने के साथ—म्यूरि एसिड।

कठिन, मूत्राशय मुखग्रन्थि या गर्भाशय रोग के साथ—कोनि, स्टैफि।

धार फटी हो—एनागै, आर्जे नाइट्रि, कैना से, कैन्थे।

धार मन्द धीमी—कैमो, क्लिमे; हेल्लिबो, हीपर; मर्क, सारसा।

घड़ी-घड़ी इच्छा—एकोन, एगारि, ऐग्ने, ऐल्फा, एलो, ऐलुमि, एण्टि क्रू, एपिस, आर्जे नाइट्रि, एस्पैरे, ऑरम म्यूर, बैराइटा कार्ब, बेला, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, बोरिक एसिड, कैल्के आर्स, कैल्के कार्ब, कैना सै, कैन्थे, कैप्सि, काल्स, कॉस्टि, चिमाफि, क्लिमै, कॉक्कस, कॉल्चि, कोलो, कॉनवै, क्यूबेबा, डिजि, इक्विसे, फेरम फास, फेरम पिक्रि, फॉर्मिका, जेल्से, ग्लिसरीन, हेल्लिबो, हेलोनि, हाइड्रैन्जि; इग्ने, इण्डोल, जैट्रोफा, कैलि कार्ब, कैल्मि, क्रियाजो, लैक्टिक एसिड, लिलि टिग्रि, लिथि बेन्जो, लिथि कार्ब, लाइको, मर्क कार, मर्क वाइ, नैट्र कार्ब, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओसिमम, ओलि सैन्टे, ऑक्जे एसिड, फॉस एसिड, पिलोका, प्लम्ब; प्रूनस स्पाइ, प्यूलेक्स; पल्से, सैबाल, सैबाइना, सैम्बु, सैण्टोनाइ, सारसा, सिला, सिकेलि, सीपिया, साइलि, स्टैफि, सल्फर, ट्रिटिक, युवा, वेस्पा, जिंजि।

रात में घड़ी-घड़ी पेशाब लगना—एलूमि, ऑरम म्यूर, बोरै; कैल्के कार्ब, कार्बो एसिड, कास्टि, कॉक्कस, कोनि, फेरम, फेरम पिक्रि, ग्लिसरीन, ग्रैफा, कैलि कार्ब, क्रियोजो, म्यूरेक्स, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, फाइसैलि, पिक्रि एसिड, पल्से, सैंग्वि, सारसा, सिला, सीपि, सोलेमन, लाइको, सल्फर, टेरेबि, थूजा, जेरोफाइल।

एकाएक, बहुत तेज रोका न जा सके—एकोन, एगारि, एलो, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बोरै, कैना सै, कैन्थे, कार्ल्स, इक्विसे, हेडिओमा, इग्ने, क्रियोजो, लैथाइर, मर्क कार, म्यूरेक्स, नैफ्थे, ओलि ऐनि, पैरीरा, पेट्रोसे, पॉपू ट्रे, प्रून स्पाइ, पल्से, क्वैसि, रूटा, सैण्टोनाइ, स्कूटेल, सल्फर, थूजा।

रुक-रुक कर निकालना—एगारि, कैना इण्डि, कैप्सि, क्लिमे, कोनि, जेल्से, हीपर, मैग सल्फ, प्यूलेक्स, पल्से, सैबाल, सारसा, सेडम, थूजा, जिंक मेट।

अनिच्छित—एलुमि, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेला, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सिना, डल्का; एचिने, इक्विसे, फेरम मेट, जेल्से, हायोसि, कैलि ब्रो, क्रियोजो, ओपि, पेट्रोलि, पल्से, रस एरो, रस टॉ, रूटा, सैबाल, सैपोनिन, सारासा, सेलेनि, सेनेगा, साइलि, सोलेन, लाइको, सल्फर, युवा, जेरोफाइल। देखिये मूत्राशय।

अनिच्छित, रात में—आर्स, बेला, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सिना, कैलि ब्रो, क्रियोजो, प्लैण्टै, पल्से, रस टॉ, सेनेगा, सीपिया, साइलि, सल्फर, युवा। देखिये बहु-मूत्र (इन्यूरेसिस)।

अनिच्छित पहली नींद में—क्रियोजो; सीपि।

अनिच्छित खाँसने, छींकने, टहलने हँसने से—बेला, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कैप्सि, कॉस्टि, फेरम मेट, फेरम म्यूर, फेरम फॉस, इग्ने, कैलि कार्ब, नैट्र, म्यूर, पल्से, सिला, सेलेनि, सल्फर, वाइबर्न ओपि, जेरोफाइल, जिंक।

अनिच्छित, क्रिया का स्वप्न देखने के समय—इक्विसे, क्रियोजो।

अनिच्छित बिना जाने पेशाब होना—एपोसाइ, आर्जे नाइट्रि, कॉस्टि, सारसा।

मूत्ररोध—एकोन, एपिस, ऐपियम ग्रै, आर्न, आर्स, बेला, कैम्फा, कैनाइण्डि, कैना सैटाइ, कैन्थ, कॉस्टि, चिमाफि, साइक्यूटा, कोपेवा, डल्का, इक्विसे; इयुपेटो पर्प्यु, हायोसि, इग्ने, लाइको, मर्क कार, मॉर्फि, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब मेट, पल्स, रस टॉ, सारसा, स्टिग्मा; स्ट्रिक्नि, सल्फर, टेरेबि, जिंक मेट।

मूत्राशय के तल देश (पर्दे) की कमजोरी से—टेरेबि।

ठंडक या नमी के प्रभाव से—एकोन, डल्का, जेल्से, रस टॉ।

ज्वर या दूसरे तीव्ररोग से—फेरम फॉस, ओपि।

भयाक्रमण से—एकोन, ओपि।

हिस्टीरिया से—इग्ने, जिंक।

प्रदाह की वजह से—एकोन, कैना इण्डि, कैन्थे, नक्स वॉ, पल्से।

अधिक परिश्रम से—आर्न।

पक्षाघात लकवा से—कॉस्टि, डल्का, हायोसि, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब मेट, स्ट्रिक्नि।

प्रसव से—हायोसि, ओपि ।

मूत्राशय-मुख ग्रंथि पेशियों के ढीलेपन से—चिमाफि, डिजि, मार्फि, जिंक। देखिये पुरुष-जननेन्द्रिय ।

मूत्राशय की गरदन झटके के साथ सिकुड़ने से—बेला, कैक्ट, कैम्फो, कैन्थे, हायोसि, लाइको, नक्स वॉ, ओपि, पल्से, रस टॉ, स्टैमो, थ्लैस्पि ।

स्राव या चर्म रोग के दबने से—कैम्फो ।

नश्तर लगवाने के बाद—कॉस्टि ।

बहाव कम—एकोन, एडेनि वरनै, ऐल्फा, एपिस, एपोसाइ, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऑरम म्यूर, बेला, बेंजो एसिड, वर्बे वल, ब्रायो, कैम्फो, कैना सै, कैन्थे, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, चिमाफि, क्लिमै, कॉल्चि, कोला, कॉनवे, क्युप्रम आर्स, डिजि, डल्का, इक्विसे, इयुपेटो पर्प्युं, क्लोरि एसिड, ग्रैफा, हेलेबो, जुनिपेर, कैलि बाइ, कैलि क्लोरि, कैलि आयोड, क्रियोजो, लैके, लैसिथि, लिलि टिग्रि, लिथि कार्ब, लाइको, लाइसिन, मेन्थॉल, मर्क कार, मर्क साइ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपि, फॉस, पिक एसिड, पिलाका, प्लम्ब, प्रूनस स्पाइ, प्यूलेक्स, पल्से, रूटा, सैबाडि, सारसा, सिला, सेलेनि, सेनेसियो, सेनेगा, सोपि, सीरम ऐंगु, सालिडे; स्ट्रोफै, सल्फर, सल्फ एसिड, सल्फोना, टैरेबि, युवा, जिंजी ।

कम बूँद-बूँद—एकोन, इस्क्यु, एपिस, आर्न, बेला, बोरैक्स, कैन्थे, कैप्सि, कॉस्टि, क्लिमे, कॉल्चि, कोपेवा, डिजि, ऐक्विसे, इन्यूला, लाइको, मर्क कार, मर्क, नक्स वॉ, प्लम्ब, पल्से, रस टॉ, सैबाल, स्टैफि, सल्फर ।

रुक जाना—एकोन, ऐण्टि टॉ, एपिस, एपोसाइ, आर्स, बेला, कैम्फे, कैना सै, कैन्थे, कैप्सि, कोलोसि, कोनि, कोपे, डल्का, इरिन्जि, इयुरैटो पर्प्यु, हाइड्रैन्जि, जन्कस, जुनिपेर, जुनिविर, लाइको, मर्क कार, मॉर्फि, नक्स मॉ, नक्स वॉ, पैरीरा, पेट्रासे, प्रूनस स्पाइ, पल्से, सैबाइना, सारसा, सेना, स्टिग्मा, टेरेबि, थ्लैस्पि, ट्रिटिक, अर्टिका, वरबैस्क, जिंजि ।

बच्चों में—बोरै, लाइको, सारसा ।

स्त्रियों में—ऐपिस, कैप्सि, कोपे, डिजि, इयुपेटो पर्प्यु, लिलि टिग्रि, सैबाइ, स्टैफि, वेरेट्र विरि, वाईवर्न ओपू ।

स्नायविक—एपिस, बेला, कैप्सि, इरिन्जि, मॉर्फि, पेट्रोसे ।

दब जाना (एन्यूरिया)—एकोन, ऐग्रैफि, ऐल्फा, एपिस, एपोसाइ, आर्स, आर्स हाइड्रै, बेला, ब्रायो, कैम्फो, कैन्थे, कॉफि, कॉल्चि, क्युप्रम एसेटि, डिजि, फॉरमै, हेल्लिबो, जुनिपेर, कैली बाइ, कैली क्लोर, लाइको, मर्क कार, मर्क साइ,

नाइट्रि एसिड, ओपियम, ऑक्सिडेन, पेट्रोलि, फाइटो, पिक एसिड, पल्से, सिकेलि, सोलिडै, स्टिग्मा, स्ट्रैमो, टेरेबि, वेरेट्र एल्ब, जिंजि ।

पेशाब करना, पेशाब करने से पहले के लक्षण—चिन्ता—कष्ट— एकोन, बोरै, कैन्थे, फॉस एसिड ।

जलन—आर्स, बर्बे वल, बोरै, कैम्फो, कैना से, कैन्थे, कोचलियर, कोपे । देखिये मूत्रमार्ग ।

पीला प्रदर—क्रियोजो ।

दर्द—एकोन, बर्बे वल, बोरै, कैन्थे, कैना सै, एरिजे; केलि कार्ब, लिथि का, लाइको, पिलोका, रस ऐरो, सैनिक्यू, सारसा, सेनेगा, सीपि । देखिये दर्द (मूत्राशय, गुर्दा, मूत्रमार्ग) ।

पेशाब करते समय के लक्षण - जलन, सड़क—एकोन, ऐम्ब्रा, एनाका, एनागै, एपिस, एपोसाइ, आर्जें नाइट्रि, आर्स, बर्बे वल, बोरिक एसि, बोरैक्स, कैम्फो, कैना इण्डि, कैनाबिसै, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो वेज, सेपा, चिमाफि, कोपै, क्यूबेबा, डिजि, एपिजि, इक्विसे, इरिजिं, ऐक्वो, इयुपेटो पर्प्यु, जेल्से, ग्लिसरीन, हेलेबो, क्रियाजो, लाइको, मर्क कार, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओसिमम, ओलि सैण्टे, ऑक्जे एसिड, पैरीरा, फॉस, पल्से, रस एरो, सीपिया, स्टैफि, सल्फर, टेरेबि, थूजा, युवा, वरबैस्क, वेस्पा ।

शीत—एकोन, सारसा, सीपिया ।

मूत्रमार्ग के छिद्र का चिपकना—एनागै, कैना सै ।

मूत्रमार्ग के छिद्र में जलन, लिंगमुण्ड में भी—कैलेडि, कैल्के का, कैना सै, जेल्से, मेन्थॉल, मर्क कार, पल्से ।

मूत्रमार्ग के छिद्र का खुजाना—ऐम्ब्रा, कोपे, लाइको, नक्स वॉ ।

दर्द, साधारण—एकोन, एपिस, आर्जें नाइट्रि, बर्बे वल, ब्लाटा, बर्बेऐक्वि एमे, बोरिक एसिड, कैम्फो, कैना सै, कैन्थे, कैप्सि, चिमाफि, कोलो, डिजि, डोरिफो, इक्विसे, एरिंजे, ग्रैफा, हेडिओमा, लिथि कार्ब, लाइको, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पैरीरा, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, रस ऐरो, सैबाल, सारसा, सीपिया ।

कटन, चुभन, बींधन, कड़कन—एकोन, ऐण्टि क्रू, एपिस, बर्बे ऐक्वि, बर्बे वल, बोरै, कैम्फो, कैना सै, कैन्थे, कोचलियर, कोलो, कोनि, हाइड्रैंज, नक्स वॉ, पैरीरा, पल्से ।

खींचन, योनि ओष्ठ तक फैले—इयुपियन ।

खींचन, सीने और कन्धों तक फैले—ग्लिसरीन ।

खींचन, मूलाधार तक फैले—लाइको, सीपि ।

खींचन, पिठासे, त्रिकास्थि तक फैले—ग्रैफा ।

खींचन, अण्डकोष तक फैले—बर्बे वल, कैन्हीका, एरिजे ।

खींचन, जाँघों तक फैले—बर्बे वल, पैरीरा ।

दाब वाला—कैम्फो, कोपै, लाइको, सीपिया ।

दाब दिल में—लिथि का ।

पेशाब के अन्तिम काल में आपेक्षिक संवेदन—आर्जे नाइ, बोरिक एसिड, पल्से ।

मलत्याग, अनिच्छित स्खलन—सल्फर ।

पसीना होना—मर्क कॉर ।

पेशाब करने के बाद लक्षण—जलन, कड़कन—एकोन, एनाका, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बेला, बर्बे वल, कैम्फो, कैना से, कैन्थे, कैप्सि, चिमाफि, कोचलियर, क्यूबेबा, क्रियोजो, लाइको, मैग सल्फ, मर्क कॉर, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, फैबियाना इम्ब्रि (पिचि), पल्से, रस टॉ, सेनेगा, स्टैफि, सल्फर, थूजा, युवा ।

बूँद-बूँद टपकना—आर्जे नाइट्रि, बेन्जो एसिड, कैल्के का, कैम्फो, कैना इण्डि, कॉस्टि, क्लिमे, कोनि, लाइको, पैरीरा, सेलेनि, थूजा, जिंजि । देखिए मूत्राशय ।

धातु निकलना—कैलेडि, हीपर, फॉस एसिड ।

शिथिलता, थकान—आर्स, बर्बे वल ।

खूनी बवासीर—बैराइटा का ।

मूत्र-मार्ग के मुँह और मूत्र-मार्ग में चुनचुनाहट—क्लिमे, थूजा ।

मूत्र-मार्ग के मुँह में जलन—कैप्सि, पल्से ।

दर्द-टीसन, कुचलन—बर्बे वल, इक्विसे, सल्फर ।

कटन, फटन, कड़कन—बर्बे वल, बोवि, कैम्फो, कैना से, कैन्थे, कैप्सि, कोचलियर, क्यूबेबा, गुयेक, मैगसल्फ, मर्क एसेटि, नैट्र म्यूर, नक्स वा, पेट्रोसे, प्रूनस स्पाइ, सारसा, थूजा, युवा ।

मूलाधार में दाब वाला—एमो म्यूर, लाइको ।

संवेदन : मानो पेशाब का कुछ अंश निकलने से बच रहा है—ऐलूमि, बर्बे वल, डिजि, इयुपेटो पर्प्यु, इरिन्जि ऐक्वे, जेल्से, हीपर, कैलि बाइ, रूटा, सिकेलि, साइलि, स्टैफि, थूजा ।

अन्त होते ही और बाद में तीव्र दर्द—एपिस, बर्बे वल, कैन्थे, एचिने, इक्विसे, लिथि का, मेडो, मर्क एसेटि, नैट्र म्यूर, पेट्रोसे, पल्से, रूटा, सारसा, स्टैफि, थूजा ।

आक्षेपिक—नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पल्से ।

पसीना बहना—मर्क कॉर ।

कूँथन, धँसन, प्रबल आवेग—आर्जें नाइट्रि, कैम्फो, कैन्थ, चिमाफि, इपिजि, इक्विसे, इरिंजि ऐक्वे, लिथि का, नाइट्रि एसि, फैबिया इम्ब्रि (पिचि), पॉपु ट्रे, पल्से, रूटा, सैबाल, सारसा, स्टेफि, स्टिग्मा, सल्फर।

पेशाब : प्रकार—तेजाबी—एकोन, बेन्जो एसि, कैन्थे, चिनि सल्फ, इयुओनाइम, लिथि का, लाइको, मर्क कॉर, म्यूरि एसि, नाइट्रि एसि, नाइट्रो म्यूरि एसि, नक्स वॉ, ओसिमम, पल्से, सारसा, सीपिया, सल्फर, युवा। देखिये जलन।

एलब्यूमिन मिला हुआ—एसिटैनि, एडोनि वर, एमोबेंजो, ऐण्टि टा, एपिस, आर्स, ऑरम म्यूर, बेला, बर्बे वल, कैल्के आर्स, कैना से, कैन्थे, कार्बो एसि, चिनि सल्फ, कॉल्चि, कॉनवे, कोपे, क्यूप्रम एसेटि, क्यूप्रम आर्स, डिजि, इक्विसे, इयुओनाइम, इयुपेटो पर्प्यु, फेरम आर्स, फेरम म्यूर, फेरम पिक्रि, फॉर्मिका, फ्यूशिना, ग्लोनो, हेल्लिबो, हेलोनि, कैलि क्लोर, कैल्मिया, लैके, लेसिथि, लिथि का, लाइको, मर्क कॉर, मर्क साइ, मीथिलि ब्लू, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, ओसिमम, ओलि सैण्टे, ओस्मि, फॉस एसिड, फॉस, प्लम्ब, क्रोमि, प्लम्ब मे. रेडियम, सैबाइना, सिला, सिकेलि, साइलि, सोलिडै, स्ट्रोफै, टेरेबि, थाइरॉ, युरेनियम नाइ, विस्कम एल्ब।

क्षारीय, ऐल्केलाइन—एमो का, बेन्जो एसिड, कैलि एसेटि, मैग फॉस, मेडो, फॉस एसिड। देखिये गुर्दा प्रदाह (नेफ्राइटिस)।

खूनी (हेमैचूरिया)—एकोन, ऐण्टि टॉ, एपिस, आर्न, आर्स, आर्स हाइड्रोजे, बेला, बर्बे वल, कैक्ट, कैम्फो, कैना सैटाइ, कैन्थे, कार्बो एसिड, चिनि सल्फ, सिना, सिन्को, कॉक्कस, कॉल्चि, कोपे, क्रोटे, डल्का, एपिजि, इक्विसे, एरिजे, इयुकैलि, फेरम फॉस, फिकस, गैलि एसिड, जेरैनि, हैमे, हीपर, इपिका, कैलि क्लोर, क्रियोजो, लैके, लाइको, मैगिफे इण्डि, मर्क कार, मर्क, मिलिफो, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओसिमम, ओलि सैण्टे, पैरीरा, फॉस, फैबिआना, इम्ब्रि (पिचि), पिक्रि एसिड, प्लम्ब, रस ऐरो, सैबाइ, सैण्टोनि, सारसा, सिला, सिकेलि; सेनेसि, साइडै, स्टिग्मा, टेरेबि, थ्लैस्पि, युवा।

जलन पैदा करने वाला, फफोला पड़े, गरम हो—एकोन, एपिस, बेला, बेन्जो एसिड, बोरै, कैम्फो, कैना सै, कैन्थे, कॉक्कस, कॉनवै, हीपर, कैलि बाइ, कैल्मिया, लाइको, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, फॉस, फैबि इम्ब्रि (पिचि), पोपू ट्रे, सारसा, सल्फर। देखिये तेजाब।

ठण्डापन—नाइट्रि एसिड।

भारीपन—थ्लैस्पि।

तेल को तरह बूँदें मिला—एडोनि वर, क्रोट टिग, हीपर, लाइको, आयोड, पैट्रोलि, फॉस, सुम्बुल।

गाढ़ा, चिकना, चमकीला—कोलो, पैरीरा, फॉस एसिड। देखिये तलछट।

रंग-रूप काला—स्याही की तरह—एपिस, आर्न, बेन्जिन डिनाइ, बेन्जो एसिड, कैन्थे, कार्बो एसिड, कॉल्चि, डिजि, हेलो, क्रियोजो, लैके, मर्क कार, नैफ्थे, नाइट्रि एसिड, पैरीरा, टेरेबि।

गाढ़ा कत्थई रंग—एपिस, एपोसाइ, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेला, बेन्जो एसिड, ब्रायो, कैन्थे, कार्बो एसिड, कार्बोवेज, चेलि, चिनि सल्फ, कॉक्कस, कॉल्चि, क्रोटे. डिजि, फ्लोरिक एसिड, हेलेबो, कैलि कार्ब, क्लोर, लैके, लाइको, मर्क कॉर, माइर, नैट्र कार्ब, नैट्र क्लोर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉफ एसिड, फॉस, फाइटो, पिकरि एसिड, प्लम्ब, प्रुन स्पाइ, रस टॉ, सीपिया, सोलिडै, स्टैफि, सल्फोना, टेरेबि।

बादल की तरह धुँधला—ऐम्ब्रा, ऐमो कार्ब, एपोसाइ, आर्जे मेट, आर्स, ऑरम म्यूर, बेल, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, कैम्फो, कैना सै, कैन्थे, कार्डु मै, कॉस्टि, चिमाफि, चेलि, चिनि सल्फ, सिना, कॉल्चि, कोलो, कोनि, कोपे, क्रोट टिग, डेफ्ने, डिजि, डल्का, ग्रैफा, हेल्लिबो, हेलोनि, हीपर, कैली कार्ब, क्रियोजो, लिथि कार्ब, लाइको, लाइसिन, नाइट्रि एसिड, नाइट्रि म्यूर, नाइट्रो म्यूर एसिड, ओसिमम, पेट्रोलि, फॉस, एसिड फॉस, प्लम्ब, पल्से, रैफे, रस टॉ, सारसा, सीपि, सोलिडै, सल्फर, टेरेबि, थूजा, जिंजि।

गहरे रंग का—बेला, कैल्के कार्ब, डिजि, हेल्लिबो, लैके, लाइको, मर्क, नाइट्रि एसिड, सीपि।

झागदार—एपिस, बर्बे वल, कोपेवा, क्रोट टिग, क्यूबेबा, लैके, माइर, रैफे, सारसा।

हरा—आर्स, बर्बे वल, कैम्फो, कैना इण्डि, कार्बो एसिड, सिओनैथ, चिमाफि, कोपेवा, लैबर्न, मैग सल्फ, ओलि एनि, रूटा, सैण्टो, यूवा।

दूधिया—चेलिडो, सिना, कोलो, कोनि, डल्का, इयुपेटो पर्प्यु, आयोड, लिलि टिग्रि, मर्क, फॉस एसिड, फॉस, रैफै, स्टिलिंजि, युवा, वायोला ओडो।

हल्के पीले रंग का बहुत साफ, बिल्लौरी—ऐसेटि एसिड, बर्बे वल, कॉस्टि, क्रोट टिग, इक्विसे, जेल्से, हेलोनि, इग्ने, क्रियोजो, लाइको, मैग म्यूर, मॉस्क, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, पल्से, स्टैफि, सल्फर। देखिये पोलियूरिया।

गुलाबी—सल्फोनाल।

लाल, गहरा—एकोन, एपिस, बेला, बेन्जो एसिड, ब्रायो, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉक्कस, क्युप्रम एसेटि, डिजि, हीपर, कैलि बाइ, लोबे इन्फ्ला, मर्क कॉर, मर्क डल्सि, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फाइटो, सिला, सेलेनि, सोलिडै।

लाल अंगारे जैसा, गहरे रंग का—एकोन, एण्टि क्रू, एपिस, एपोसाइ, आर्जें नाइट्रि, आर्स, बेला, बेन्जो एसि, बर्बे वल, ब्रायो, कैम्फो, कैना से, कैन्थे, कार्बो एसिड, सेपा, चेलि, चिमाफि, क्यूप्रम एसेटि, इक्विसे, इयुओनाइम, ग्लोनो, हेल्लिबो, हीपर, कैलि बाइ, लिथि कार्ब, लाइको, मर्क डल्सि, माइर, नाइट्रि एसि, ओसिमम, फाइटो, पिक्रि एसि, पल्से, रियूम, रस टॉ, सैबाइ, सारसा, सेलेनि, सेनेसि, सल्फर, टेरेबिन्थि, थूजा, युवा, वेरेट्र वि ।

धुएँ के रंग का—एमो बेन्जो, बेन्जो एसिड, हेल्लिबो, टेरेबि । देखिये खूनी ।

गाढ़ा—एमो बेन्जो, एनान्थि, बेन्जो एसिड, कैम्फो, सिना, कॉक्कस, कोलोसिं, कोनि, डैफ्ने, डिजि, डल्का, हीपर, आयोड, मर्क कार, ओसिमम, फॉस, स्टिलिन्जिया, सीपिया, जिंजि ।

पीला—ऐब्सिन्थि, बेला, बर्बे वल, कार्डु मैरि, सियानोथ, सिन्को, डैफ्ने, हाइड्रै, इग्ने, कैलिम, लैक्टि एसिड, ओसिमम, प्लम्ब मेट, सोलिडै, युवा ।

पीला, गहरा—बोवि, ब्रायो, कैम्फो, चेलि, चेनापो; क्रोट टिग, आयोड, कैलि फॉस, माइर, पेट्रोलि, पिकरि एसिड, पोडो ।

गन्ध-दुर्गन्धित—एमो बेन्जो, एमो कार्ब, एपिस, आर्स, एस्पैरै, बैप्टि, बेंजो एसि, बर्बे वल, कैल्के कार्ब, कैम्फो, कार्बो एनि, चिमाफि, कोलो, कॉनवै, क्युप्रम आर्स, डैफ्ने, डल्का, ग्रैफा; हाइड्रै, इण्डियम, कैलि बाइ, क्रियोजो, लैके, लाइको, मर्क, नैफ्थे, नाइट्रि एसिड, ओसिमम, पेट्रोलि, फॉस, फाइसैलि, प्यूलेक्स, सीपिया, सोलिडै, स्ट्रांशि ब्रो, सल्फर, ट्रोपिओल, युरैनि नाइट्रि ।

मछली की तरह—युरैनि नाइट्रि ।

लहसुन की तरह—क्युप्रम आर्स ।

कस्तूरी की तरह—ओसिमम ।

तीखी एमोनिया गैस की तरह तेज—बोरै, कैन्हिका, डिजि, नैफ्थे, नाइट्रि, एसिड, पैरीरा, पेट्रोलि, सोलिडै, स्टिग्मा ।

तेज, बहुत तीखी—ऐब्सिन्थि, एमो बेन्जो, आर्जें नाइट्रि, बेन्जो एसिड, बोरै, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, चिनि सल्फ, एरिजे, पिकरि एसि, पाइन साइल, सल्फर, वायोला ओडो, जिंजि ।

तेज—बिल्ली के पेशाब की तरह—कैजुपू, वायोला ट्रि ।

तेज, घोड़े के पेशाब की तरह—बेन्जो एसि, नाइट्रि एसिड ।

खट्टी गन्ध—कैल्के कार्ब, ग्रैफा, नैट्र का, पेट्रोलि, सीपि, सोलिडै ।

मीठी, बनफशे की तरह—आर्जें म्यूर, कोपे, क्युबेबा, इयुकैलि, फेरम आयोड, इन्यूला, जुनिपेर, फॉस, प्रिमूला, टेरेबि, थाइरॉ ।

वैलेरियन की तरह—म्यूरेक्स ।

तलछट-प्रकार—एसिटोन—आर्स, ऑरम म्यूर, कैल्के म्यूर, कार्बो एसि, कॉस्टि, कॉल्चि, क्युप्रम आर्स, इयुओनाइम, नैट्र सैलिसाइलि, फॉस, सेना ।

पित्त—सियानोथ, चिओनैन्थ, चेलिडो, कैलि क्लोर, माइर, नैट्र सल्फ, सीपिया । देखिए जिगर ।

खून—आर्स, बर्बे वल, कैक्ट, कैना से, कैन्थे, कार्बो एसिड, कॉल्चि, डल्का, हैमे; हीपर, लाइको, नाइट्रि एसिड, पैरीरा, फॉस, टेरेबि । देखिए खूनी ।

थक्के—एपिस, आर्स, ऑरम म्यूर, ब्रैकिग्लो, कैन्थे, कार्बो एसिड; चेलिडो, क्रोटे, कैलि क्लोर, मर्क कार, नैट्र क्लोर, फॉस, पिक्रि एसि; पिचि, प्लम्ब, रेडियम, सल्फो, टेरेबि । देखिये गुर्दा-प्रदाह, (नेफ्राइटिस) ।

कोष : रोगग्रस्त तन्तु—आर्जे नाइ, आर्स; बर्बे वल, ब्रैकिग्लो, कैक्ट, कैन्थे, कार्बो एसिड, चेलिडो, क्रोटे, हीपर, कैलि बाइ, मर्क कार, फॉस, पिक्रि एसि, सोलिडै, टेरेबि । देखिये गुर्दा-प्रदाह (नेफ्राइटिस) ।

क्लोराइड की कमी—बैराइटा म्यूर, चेलिडो, कोलासिं ।

क्लोराइड की अधिकता—चिनि सल्फ, रेडियम, सेना ।

दुग्ध-मूत्र—कोलो, आयोड, कैलि बाइ, फॉस एसिड, युवा । देखिये दूधिये की तरह पेशाब ।

पीसी कॉफी की तरह—डिजि, हेल्लिबो, टेरेबि ।

गुफ्फेदार, रूई के गोले की तरह—बर्बे वल, कॉस्टि, फॉस, सारसा ।

श्लेष्मीय, लेई की तरह, चिमड़ा-गाढ़ा—बर्बे वल, सिना; कोलोसिं, ओसिमम, फॉस एसिड, पल्से । देखिये श्लेष्मा ।

भूरापन लिए सफेद, दानेदार—बर्बे वल, कैल्के का, कैन्थे, ग्रैफा, सारसा, सीपिया ।

रक्तमय मत्र—सल्फोना, ट्रिओना ।

रक्तरंजकमय मूत्र—आर्स हाइड्रोजे, कार्बो एसि, चिनि आर्स, चिनि सल्फ, फेरम फॉस, कैलि क्लो, कैलि बाइ, नैट्र नाइट्रि, फॉस, पिकरिक एसिड, सैण्टोनाइ ।

नील के पेड़ के लेसदार रस की मिलावट—एल्का, इण्डोल, नक्स मॉ, पिकरिक एसिड ।

लिथिक एसिड, यूरिक एसिड, पथरी, ईंट की बुकनी—आर्जे नाइ, आर्न, ऐस्पैरे, बैरोस, बैराइटा म्यूर, बेला, बेन्जो ऐसिड, बर्बे वल, कैल्के का, कैल्के रेनै, कैना सै, कैन्थे, कॉस्टि, चेलि, चिनि सल्फ, सिन्को, कोसिनेला, सेप्टे, कोचलियर, कॉक्कस, कॉल्चि, कोलोसिं, डिजि, डायस्को, एपिजिमा, इयूपेटो, ऐरो, इयुपेटो पर्प्यु,

एरिन्जि, फेरम म्यूर, गैलियम, ग्रैफा, हेडिओमा, हाइड्रैंजि, कैलि का, कैलि आयोड, क्रियोजो, लिथि, बेन्जो, लिथि का, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मर्क कार, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूरि एसि, नक्स वॉ, ओसिमम, पैरीरा, पैरि टेरि, फॉस, एसि फॉस, फाइसैलि, पिचि, पिपेराज, प्लम्ब आयोड, पल्से, सारसा; सेलेनि, सेना, सीपिया, स्कूकमचक, सोलिडै, स्टिग्मा, थ्लैप्सि, ट्रिटिक, अर्टि वैसिके। देखिये पथरी (कैल्कुलाइ)।

श्लेष्मा चिकना, गाढ़ा रस—एपोसाइ, आर्स, ऐस्पैरे, बालसेम पेरू, बैरोस्मा, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, ब्रैकिग्लो, कैल्के का, कैना सै, कैन्थे, चिमाफि, चिनि सल्फ, सिना, क्यूबेबा, डल्का, एपिजि, इक्विसे, इयुपेटो पर्प्यु, हीपर, हाइड्रैंजि, कैलि बाइ, लाइको, मेन्थॉल, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पैरीरा, पिचि, पॉपू ट्रे, पल्से, सारसा, सेनेगा, सीपिया, सोलिडै; स्टिग्मा, सल्फर, ट्रिटिक, युवा। देखिये मूत्राशय-प्रदाह।

आक्जैलेट—बर्बे वल, ब्रैकिग्लो, कैलि सल्फ, लाइसिडिज, नैट्र फॉस, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूर एसिड, ऑक्जै एसिड, सेना।

फास्फेट—ऐल्फा, आर्स, ऐवेना, बेला, बेन्जो एसिड, ब्रैकिग्लो, कैल्के का, कैल्के फॉ, कैना सै, चेलिडो, चिनि सल्फ; ग्रैफा, गुवाको, गुयेकम, हेलोनि, हाइड्रैंजि, कैलि क्लो, लेसिथिन, नाइट्रि एसिड, फॉस्फो एसिड; पिक्रि एसिड, सैंग्वि, सेना, सोलिडै, थ्लैप्सि, युरैनि नाइट्रि।

(पंब पाइयूरिया)—आर्स, ऐस्पैरे, बैरोस्मा, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैना सै, कैन्थे, चिमाफि, कोपेवा, डल्का, एपिजिया, इयुकैलि, हीपर, हायोसि, कैलि बाइ, लिथि कार्ब, लाइको, मर्क कॉर; नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओसिमम, फॉस, पिचि, पॉपू ट्रे, सारसा, सीपि, स्टिग्मा, सल्फर, टेरेबि, थ्लैस्पि, ट्रिटिक, युवा।

गुलाबी रंग—एमो फॉस।

मधुमेह—चीनी—एसेटि एसिड, ऐड्रैनै, एमो एसेटि, आर्जे नाइट्रि, आर्जे मेट, ऐरिस्टोल, आर्न, आर्स ब्रो, आर्स आयोड, आर्स, एस्क्लेपि विन्से, ऑरम, ऑरम म्यूर, बेला, बोरि एसिड, बोवि, ब्रायो, कैप्सि, कार्बो एसिड, सियानोथ, कैमो, चेलिडो, चिमाफि, चिओनैन्थ, कोका, कोडी, कॉल्चि, क्रोटे, क्युप्रम आर्स, कुरारी, इयुपेटो पर्प्यु, फेल टोरी, फेरम आयोड, फेरम म्यूर, फ्लोर एसिड, ग्लोनो, ग्लीसरीन, ग्रिण्डे, हेल्लिबो, हेलोनि, आयोड, आइरिस, कैलि एसेटि, कैलि ब्रो, क्रियोजो, लैके, लैक्टि एसिड, लेसिथि, लाइको, लाइकोपस, लाइसिन, मॉर्फि, मॉस्क, म्यूरेक्स, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपि, पैनक्रिया, फैसिओल, फॉस एसिड, फॉस,

फ्लोराइड, पिक्रि एसिड, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब, पोडो, रस ऐरो, सिला, सिकेलि, साइलि, सिजिजि, स्ट्रिक्नि, आर्स, सल्फर, टैरैण्ट हिस्पा; टैरैक्स, टेरेबि, युरैनि नाइट्रि, युरिया वैनेडि।

पाचन, ग्रहण क्रिया की खराबी—युरैनि नाइट्रि।

पाकाशय, जिगर की खराबी से—आर्स आयोड, आर्स, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैमो, चेलिडो, क्रियोजो, लैक्टि एसिड, लैप्टे, लाइको, नक्स वॉ, युरैनि नाइ।

स्नायविक विकार—आर्स, ऑरम म्यूर, कैल्के का; इग्ने, फॉस एसिड, स्ट्रिक आर्स।

क्लोम बाधा से—आइरिस, पैन्क्रिया, फॉस।

कमजोरी के साथ—ऐसेटि एसिड, ओपियम।

गलित घाव, फोड़े जहरबाद, दस्त—आर्स।

गठिया के लक्षणों के साथ—लैक्टि एसिड, नैट्र सल्फ।

नपुंसकता के साथ—कोका, मॉस्कस।

शोकग्रस्त, दुबलापन; प्यास, बेचैनी के साथ—हेलोनि।

चालन क्रिया को पक्षाघात बाधा—कुरारी।

तेजी से बढ़ना—कुरारी, मॉर्फि।

घाव के साथ—सिजीजि।

पुरुष-जननेन्द्रिय

आतशक की गाँठ (बाघी)—एकोन, ऐंगस्टू, एपिस, ऑरम म्यूर, बैडि, बेला, कैलेण्डु, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिनाबे, हीपर, जैकैर, कैलि आयोड, मर्क आयोड रूबर, मर्क प्रे रूबर, मर्क सल्फ्यू, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फाइटो, साइलि, सल्फर, सिफिलि, टैरेण्टू क्यूबे।

बाघी, उपदंशीय घाव युक्त—आर्स आयोड, मर्क कार, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ्यू, साइलि; सल्फर।

बाघी, कड़ी—ऐलूमि, बैडिया, कार्बो ऐनि, मर्क सल्फ।

बाघी, सड़ने वाली—आर्स, ग्रैफा, हाइड्रै, कैलि आयोड, लैके, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ्यू, नाइट्रि एसिड, साइलि सल्फर।

उपदंशीय घाव—कोरैलि, जैकैरै, कैलि बाइ, मर्क प्रे रूबर, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, थूजा।

उपदंशीय क्षय के दोष—आर्स, हेक्ला, हीपर, लैके, साइलि, सल्फर, थूजा।

मैथुन से घृणा—आर्न, ग्रैफा, लाइको। देखिये इच्छा।
मैथुन के बाद पीठ में दर्द—कैना इन्डि, कैलि कार्ब।
मैथुन के बाद चिड़चिड़ापन—सेलेनियम।
मैथुन के बाद मिचली, कै—मॉस्कस।
मैथुन के बाद मूलाधार में दर्द—एलुमिना।
मैथुन के बाद मूत्रमार्ग में पीड़ा—कैन्थे।
मैथुन के बाद शिथिलता—एगारि; कैल्के कार्ब, सिन्को, कोनि, डिजि, कैलि कार्ब; कैलि फॉ, नैट्र कार्ब, सेलेनि, थैस्पियम। देखिये नपुंसकता।
मैथुन के बाद धातुक्षीणता, इच्छा बढ़ना—नैट्र म्यूर, फॉस एसिड।
मैथुन के बाद दाँत में दर्द—डैफ्ने।
मैथुन के बाद पेशाब करने की इच्छा—स्टैफि।
मैथुन के बाद चक्कर—बोविस्टा; सीपिया।
मैथुन के बाद कै होना—मॉस्कस।
मैथुन के बाद आँखों में कमजोरी—कैलि कार्ब।
मैथुन में पीड़ा—आर्जे नाइट्रि, कैल्के कार्ब, सैबाल। देखिये नपुंसकता।
आतशकी मस्से—ऑरम म्यूर, सिनाबे, यूफ्रैशि, कैलि आयोड, लाइको, मर्क, नैट्र सल्फ्यू, नाइट्रि एसिड, सैबाइना, स्टैफि, थूजा। देखिये उपदंश।
छिलन, कचट—जननेन्द्रिय में—आर्न, कोनियम।
इच्छा कम होना, मिट जाना—ऐग्नस, आर्जे नाइट्रि, बैराइटा का, बर्बे वल, कैल्के कार्ब, कैप्सि, कोनियम, हीपर, इग्ने, आयोड, कैलि ब्रो, कैलि कार्ब, लेसिथि, लाइको, नाइट्रि एसिड, नूफर, ओनोस्मो, ऑक्सिट्रो, फॉस एसिड, सैबाल, सेलैनि, साइलि, सल्फर, एक्सरे। देखिये नपुंसकता।
इच्छा बढ़ जाना—ऐलुमिना, ऐनाका, बोवि, कैलेडि, कैम्फो, कैना इण्डि, कैना सै, कैन्थे, डल्का, कैल्के फ्लोर, फ्लोर ऐसिड, जिन्सेंग, ग्रैफा, हिपोमे, हायोसि, इग्ने, कैलि ब्रो, लैके, लाइको, लाइसिन, मॉस्कस, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओलि ऐनि, ओनोस्मो, ओरिंगे, फॉस, पिकरिक एसिड, प्लैटि, सैबाइना, सैलिक्स ना, स्ट्रैमो, टैरेण्टु हिस्पै, थैस्पियम, थाइमोल, उपास, वेरेट्रम एल्ब, जिंक फॉ।
वृद्ध लोगों में इच्छा अधिक, मगर कार्यहीनता—लाइको, सेलेनियम।
इच्छा की निकृष्टता—ऐग्नस, नक्स वॉ, प्लैटि, स्टैफि।
इच्छा दबाने के बुरे असर—कोनियम।
जननेन्द्रिय जलना, गरमी—स्पॉन्जि, साइलि। देखिये सूजाक।
जननेन्द्रिय, खुजली—ऐगैरि, ऐम्ब्रा, ऐनैका, कैलेडि, क्रोटोन टिग, फैगोपा, रस डाई, रस टॉ, सीपि, सल्फर, टैरैण्टु क्यु। देखिये चर्म।

जननेन्द्रिय, ढीली, थुलथुली, कमजोर—ऐब्सिन्थि, ऐग्नस, कैलेडि, कैप्सि, सिन्को, कोनि, डायस्को, जेल्से, हैमे, लाइको, नूफर, फॉस एसिड, फॉस, सेलेनि, सीपि, स्टैफि, सल्फर, युरैनि। देखिये नपुसकता।

सुजाक, साधारण औषधियाँ—एकोन, ऐग्नस, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बैरोस्मा, बेन्जो एसिड, कैम्फो, कैना सै, कैन्थे, कैप्सि, क्लिमै, कोपेवा, क्यूप्रम, डिजि, डोरिफो, एचिने, इक्विसे, एरिजे, यूकैलि, यूफार्बि, पिल्यू, फैबियाना, फेरम, जेल्से, हीपर, हाइड्रै, इक्थियो, जैकैरे, कैली बाइ, कैली सल्फ, क्रियोजो, मेडो, मर्क को, मर्क प्रे रूबर, मर्क सल्फ, मर्क वि, मिथिल ब्लु, नैफ्थे, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसि, नक्स वॉ, ओलि सैण्टे, पैरीरा, पेट्रोसे, पिन्चि, पाइनस कैने, पल्से, सैबाल, सैबाइना, सैलिक्स नाइ, सीपिया, साइलि, स्टिग्मा, सल्फर, टेरेबि, थूजा, ट्रिटिक, टुसिलै, जिंजि।

तीव्र प्रादाहिक अवस्था—एकोन, आर्जे नाइट्रि, ऐट्रोपि, कैना सैटाइ, कैन्थे, कैप्सि, जेल्से, पेट्रोसे।

लसिकावाहिनी ग्रंथि प्रदाह—एकोन, ऐपिस, बेला, हीपर, मर्क।

सुजाक का बाँकपन—एकोन, एगेव, ऐनाका, आर्जे नाइट्रि, बेला, बर्बे वल, कैम्फो मोनो ब्रो, कैने इण्डि, कैने सै, कैन्थे, कैप्सि, क्लिमै, कोपेवा, जेल्से, हायोसि, जैकैरे, कैली ब्रो, लुपुल, मर्क, एनैन्थि, ओलि सैण्टै, फॉस, पिकरिक एसिड, पाइपर, मेथि, सैलिक्स नाइ, टेरेबि, टुसिसै, योहिम्बे, जिंक पिक्रि।

जीर्ण निम्न तीव्र अवस्था—आर्जे नाइट्रि, केने सै, कोपेवा, एरिजे, हीपर, हाइड्रै, कैली सल्फ, मर्क को, मर्क आयोड रूबर, मर्क, नैफ्थे, नैट्र सल्फ, ओलि सैण्टे, पिनस कैने, सोरी, पल्से, रोडो, सैबाल, सीपिया, साइलि, स्टिग्मा, सल्फर, थूजा। देखिये ग्लीट।

काउपर ग्रंथि प्रदाह—एकोन, कैने सैटि, जेल्से, हीपर, मर्क को, पेट्रोसे, पिन्चि, सैबाल, साइलि। देखिये मूत्राशय।

स्राव तेजाबी; तीखा, छिलन पैदा करने वाला—कोपेवा, जेल्से, हाइड्रै, मर्क को, थूजा।

खूनी—आर्जे नाइट्रि, कैन्थे, कोपेवा, मर्क को, मिलिफो।

दूध की तरह चमकीला श्लेष्मा—कैने इण्डि, कैने सै, कोपेवा, क्यूप्रम आर्स, ग्रैफा, हाइड्रै, कैलि बाइक्रो, नैट्र म्यूर, पेट्रोसे, पल्से, सीपिया, देखिये ग्लीट।

श्लैष्मिक पीप, हल्का, पीला, हरा—ऐग्नस, ऐलुमि, आर्जे नाइट्रि, बैरोस्मा, कैने सै, कैन्थे, कैप्सि, कोबै, कुबेवा, कोपेवा, डिजि, हीपर, हाइड्रै, कैरै, कैलि आयोड, कैली सल्फ, मर्क को, मर्क सल्फ, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, ओलि सैण्टे, पल्से, सैबाइना, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा, टुसिलै, जिंजि। देखिये ग्लीट।

पानी-सा—कैने सै, फ्लोर एसिड, मेजे, मिलेफो, नैट्र म्यूर, सीपिया, सल्फर, थूजा।

फफोलेदार प्रदाह—कैप्सि, हीपर, मर्क सल्फ, सीपिया, साइलि।

पुराना सूजाक—एबीज कैने, ऐग्नस, आर्जे नाइट्रि, कैलैडि, कैल्के फॉस, कैने सै; कैन्थे, कैप्सि, चिमैफि, सिनैबै, क्लिमै, कुबेबा, एरिजे; टोरिफो, ग्रैफा, हाइड्रै, कैली बाइ, कैली आयोड, कैली सल्फ, मैटिको, मेडो, मर्क, नैफ्थे, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओलि सैण्टै, पेट्रोसि, पिपर मेथि, पोपूलस ट्रे, पल्सै, सैबैल, सेलेनि, सीपिया, साइलि, थूजा, जिंक म्यूर।

आँख उठना—एकोन, एपिस, आर्जे नाइ, बेला, इपिका, मर्क कार।

अण्डकोष प्रदाह—ऑरम म्यूर, क्लिमै, जेल्से, हैमै, पल्से, रोडो, स्पांजि।

मूत्राशय ग्रन्थि भी रोगग्रस्त हो—कैप्सि, कुबेबा, पैरीरा, थूजा। देखिये मूत्राशय ग्रन्थि प्रदाह, प्रोस्टैटाइटिस।

वात रोग—ऐकोन, आर्जे नाइ, क्लिमै, कोपेवा, डैफ्ने, जेल्से, गुवाइक, आयोड, आइरिस, कैली आयोड, मेडो, मर्क, नैट्र सल्फ, फाइटो, पल्से, सारसा, सल्फर, थूजा।

यांत्रिक विकारीय, मूत्रमार्ग का रुक जाना—एको, आर्जे नाइ, कैल्के आयोड, कैन्थे, कैप्सि, क्लिमै, कोपेवा, फ्लो एसिड, आयोड, कैली आयोड, मर्क प्रे रूबर, मर्क, नक्स वॉ, ओलि सैण्टे, पैरीरा, पेट्रोसे, पल्से, सीरि, साइलि, सल्फर, सल्फ आयोड, थिओसिन, थूजा।

दब जाने का बुरा प्रभाव—ऐग्नस, ऐण्टि टॉ, बेंजो एसिड, क्लिमै, कैली आयोड, मेडा, नैट्र सल्फ, पल्से, सारसा, थूजा, एक्स-रे।

नपुंसकता—ऐग्नस, ऐनेका, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, ऐवेना, बैराइटा का, बर्बे वल, कैलेडि, कैल्के का, कैम्फो, कार्बन सल्फ, चिनि सल्फ, सिन्को, कोपेवा, कोनि, डैमियाना, डिजि, डायस्को, जेल्से, ग्लीसरीन, ग्रैफा, हाइपेरि, इग्नै, आयोड, कैली ब्रोमे, कैली आयोड, लेसिथि, लाइको; नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नूफार, नक्स वॉ; ओनोस्मो, फॉस एसिड, फॉस, पिक्रि एसिड, प्लम्ब मेट, सेबैल, सैलिक्स नाइ, सेलेनि; सीपिया, साइली, स्टैफि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, थूजा, ट्रिबुल, योहिम्ब, जिंक, जिंक फॉ। देखिये धातुक्षीणता।

हस्तमैथुन, बुरा प्रभाव—ऐग्नस, ऐनैका, एपिस, आर्जे मेट, बेलिस, कैलेडि, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, सिन्को, कोनियम, डायस्को, जेल्से, ग्रैफा, ग्रैटिओ, सैलिक्स नाइ, प्लैटिना, स्टैफि, स्टिलि, सल्फर, टैबे, थूजा, ट्रिबुल, अस्टिलै, जिंक मेट, जिन्क ओक्सि।

लिंगक्षीणता—ऐण्टि क्रू, आर्जे मेट, स्टैफि।

लिंगमुण्ड का फूल जाना, एपिथेलियोमा—आर्जे नाइट्रि, आर्स, कोनि, थूजा।

सड़न, गलित अवस्था—कैन्थे, लैके।

खुजाना—एकोन, आर्स, बेल, कैलैडि; कैन्थे, कैप्सि, सिन्को, सिनाबे, कॉक्कस, कोमि, कोपेवा, कोरैलि, क्रोट टिग, ग्रैफा, हैमे, हीपर, इग्नै, कैली बाइ, लाइको, मर्क, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पल्से, सेलेनि, सीपिया, स्टैफि, सल्फर, थूजा, वायोला ट्रि।

दर्द—जलन—ऐनैका, आर्स, बेल, कैने सै, कैन्थे, कैप्सि, सिन्को, सिनाबे, कोनि, कोपेवा, कोरैलि, क्रोट टिग, जेल्से, इग्नै, लाइको, मर्क को, नाइट्रि एसिड, नूफर, नक्स वॉ, पल्से, रस टॉ, सीपि, सल्फर, थूजा, वायोला ट्रि।

कटन, अकड़न, फटन—एकोन, एपिस, आर्जे नाइट्रि, कैलैडि, कैने सै, कैन्थे, कैप्सि, कोनि, हीपर, लाइको, नैफ्थे, नैट्र म्यूर; नाइट्रि एसिड, पैपेया, पैरीरा, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फाइटो, प्रूनस स्पि, सारसा, स्टैफि, सल्फर।

दाब, बींधन—कैन्थे, कैप्सि, ग्रैफा, कैली बाइ, नाइट्रि एसिड, पल्से, रोडो।

थरथराहट, टपकन—कॉक्कस, हैमे, लिथि कार्ब, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड।

प्रियापिज्म, अनैच्छिक उत्तेजना—देखिये कोर्डी।

मवादी दाने—आर्स हाइड्रो, कॉक्कस, हीपर, कैली बाइ, मर्क।

दाने, चकत्ते—ऐण्टि पाइरी, बेल, ब्रायो, कैलैडि, कैनैसै, कॉस्टि, सिनैबे, जेल्से, लैके, मर्क, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, रस टॉ, सीपि, सल्फर, थूजा।

फूल आना लिंगमुण्ड का—ऐकोन, ऐण्टिपाइरी, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, कैलैडि, कैने सै, कैन्थे, कोपेबा, कोरैलि, कुबेबा, डिजि, जेल्से, हैमे, मर्क कार, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, रस टॉ, सारसा, थूजा। देखिये सुजाक।

घाव, खाल उधड़ना—आर्स, कैने सै, कॉस्टि, कोपे, कोरैलि, क्रोटो टि, हीपर, मर्क कार, मेजे, नाइट्रि एसिड, ओस्मि, सीपि, थूजा।

लिंग पटल सिकुड़न (पैराफाइमोसिस, फाइमोसिस)—एकोन, एपिस, आर्न, बेल, कैने सै, कैन्थे, कैप्सि, डिजि, युफ्रैसि, हैमे, मर्क कार, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, ओलि सैण्टै, फॉस एसिड, रस टॉ, सैबाइ, सल्फर, थूजा।

दाद होना, हरपीज—आर्स, कार्बो वेज, कॉस्टि, क्रोटो टि, ग्रैफा, हीपर, जुग्लै रे, मर्क, मेजे, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, फॉस एसिड, रस टॉ, सारसा, थूजा।

सूजन प्रदाह, (बैलैनाइटिस, बैलॅनी-प्रोस्टाइटिस)—ऐकोन, एपिस, कैलैडि, कैने सै, कैन्थे, सिनैबे, कॉक्कस, कोनि, क्रोटो टि, डिजि, जेल्से, जैकेर, लाइको, मर्क कार, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, ओलि सैण्टे, रस टॉ, सल्फर, थूजा, वायोला ट्रि।

खाज, खुजली, खुजाना—आर्स, कैन्थे, कैप्सि, सिनैबे, कोनि, ग्रैफा, इग्नै, लाइको, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पल्से, रस टॉ, साइलि, सल्फर, थूजा, जिंजि।

दर्द—ऐकोन, बेल, बर्बे वल, कैलैडि, कैने सैटि, कैन्थे, सिनैबे, कॉक्कस, कोनि, कोपेवा, कोरैलि, इग्ने, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, रस टॉ, सीपि, सल्फर, थूजा ।

घाव, खाल उखड़ना, छिलना—आर्स, कैने सै, कॉस्टि, कोपेवा, कोरैलि, हीपर, इग्ने, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस एसि, फाइटो, सीपि, साइलि, थूजा ।

नसों का सिकुड़ना, वेरिसेस—हैमे, लैके ।

मस्से, गुल्थियाँ, कॉनडाइलोमेटा—एपिस, सिनैबे, हीपर, क्रियोजो, लाइको, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, सैबाइना, सीपिया, स्टैफि, थूजा ।

प्रोस्टेट ग्लेण्ड : (मूत्राशय मुखशायी ग्रन्थि) साधारण रोग—इस्कू, ऐलो, चैरोस्मा, कॉस्टि, फेरम पिक्रि, हीपर, हाइड्रैंजि, आयोड, कैली आयोड, मेलैस्ट, मर्क सल्फ, पैरीरा, फाइटो, पिचि, पिक्रि एसिड, पॉपू ट्रे, सैबाल, सोलिडै, स्टैफि, सल्फ आयोड, थूजा, टरनेरा ।

रक्ताधिक्य—ऐकोन, ऐलो, आर्न, बेला, कैन्थे, कोनि, कोपेवा, क्युबेबा, फेरम फॉस, जेल्से, कैली ब्रो, कैली आयोड, लिथि कार्ब, ओलि सैण्टै, पल्से, सैबाडिला, थूजा ।

बहुत बढ़ जाना—ऐल्फा, ऐलो, ऐमो म्यूर, आर्जे नाइट्रि, बैराइटा कार्ब, बेन्जो एसि, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, चिमाफि, क्रोमि सल्फ, सिमि, कोनि, इयुपेटो पर्प्यू, फेरम पिक्रि, जेल्से, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रैस्टि, इक्षुगन्ध, आयोड, कैली बाइ, कैली ब्रो, लाइको, मेडो, ओलियम सैण्टे, ऑक्सिडेन, पैरीरा, पिक्रि एसिड, पिपर मे, पॉपू ट्रे, पल्से, रस ऐरो, सैबाल, सारसा, सेनेसि, सालिडै, स्टैफि, सल्फर, थियोडिन, थूजा, थाइरॉ, ट्रिटिक ।

सूजन, प्रदाह (प्रोस्टैटाइटिस) तीव्र—ऐकोन, इस्कू, ऐलो, एपिस, बेल, ब्रायो, कैन्थे, चिमैफि, कोल्चि, कोपेवा, क्यूबेबा, डिजि, फेरम फॉस, जेल्से, हीपर, आयोड, कैली ब्रो, कैली आयोड, मर्क को, डल, नाइट्रि एसिड, नाइट्रम, ओलि सैण्टै, पिचि, पिक्रि एसिड, पल्से, सैबाल, सैबैडि, सैलिक्स नाइग्रा, सेलेनि, साइलि, सोलिडै, स्टैफि, थूजा, ट्रिटिक, वेरेट्र वि, वेसिके ।

प्रदाह, जीर्ण—ऐलुमि, ऑरम, बैराइटा कार्ब, ब्रैकिग्लो, कैलेडि, कार्बन सल्फ, कॉस्टि, क्लिमै, कोनि, फेरम पिक्रि, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रो कोटा, आयोड, लाइको, मर्क को, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फाइटो, पल्से, सैबैडि, सैबाल, सेलेनि, सीपि, साइलि, सोलिडै, स्टैफि, सल्फर, थूजा, ट्रिबाल । देखिये प्रोस्टैटाइटिस ।

कमजोरी, (प्रोस्टेटोरिया)—मलत्याग या पेशाब करने में, जोर करने से स्राव हो—एसेटिक एसिड, इस्कू, ऐग्नस, ऐलुमि, ऐनेका, आर्जे नाइट्रि, कैने सै, कॉल्चि, चिमैफि, कोनि, कुबेबा, एरिञ्ज, हीपर, जुनिपेर, कैली बाइ, लाइको, नाइट्रि

एसिड, नूफर, नक्स वॉ, पैट्रोलि, फॉस एसिड, फॉस, पल्से, सैबैल, सेलेनि, साइली, सल्फर, टेरेबि, थूजा, थाइमोल, टरनेरा, जिंक मेट ।

विटप-केश झड़ना—मर्क, नाइट्रि एसिड, सेलेनि, जिंक ।

अण्डकोष, ककँट फूलना—आर्से, फुलिगो, थूजा ।

ठण्डा, ढीला—ऐग्नस, कैलेडि, कैल्के कार्ब, कैप्सि, जेल्से, लाइको, मर्क, फॉस एसिड, सीपि, स्टैफि, सल्फर । देखिये नपुंसकता ।

ऐक्जीमा—(अकौता)—ऐलुमेन; ऐण्टि क्रू, कैन्थे, क्रोटो टि, ग्रैफा, हीपर, ओलियाण्ड, पेट्रोलि, फॉस एसिड, रस टॉ, सैनिक्यू, सल्फर ।

हाइड्रोसील (पानी उतरना)—ऐब्रटैनम, ऐम्पेलो, एपिस, आर्स, ऑरम, ब्रायो, कैलेडि, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लोर, कैल्के फॉ, कैन्थे, चेलिडो, सिन्को, कोनियम, डिजि, डल्का, फ्लोर ऐसि, ग्रैफा, हेल्लिबो, आयोड, कैली आयोड, मर्क, पल्से, रोडो, रस टॉ, सैम्बू, सिला, सैलेनि, साइलि, स्पाइन्ज । सल्फर ।

कड़ापन—कैलेडि, रस टॉ ।

प्रदाह सूजन—एपिस, आर्स, क्रोट टि, यूफोर्बि, हैमे, रस टॉ, वेरेट्र विरि ।

खुजाना—ऐम्बा, कार्बो वेज, कॉस्टि, क्रोट टिग, युफोर्बि, ग्रैफा, हीपर, नाइट्रि, ऐसि, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फॉस ऐसि, रस टॉ, सारसा, सेलेनि, साइलि, थूजा, आर्टिका । देखिये चर्म ।

खून उतरना तीव्र—ऐकोन, आर्न, कोनि, एरिजे, हैमे, नक्स वॉ, पल्से, सल्फर ।

खून उतरना जीर्ण—आयोड, कैली आयोड, सल्फर ।

गुठलियाँ कड़ी, पकने वाली—नाइट्रि ऐसि । देखिये चर्म ।

सुन्नपन—ऐम्ब्रा, ऐमो का, सीपि । देखिये खुजाना ।

दर्द—ऐमो का, बर्बे वल, क्लिमै, आयोड, कैली का, मर्क, नक्स वॉ, थूजा । देखिये प्रदाह ।

खुजली—ऐण्टि क्रू, ऑरम, ग्रैफा, म्यूर ऐसि, नैट्र सल्फ, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, रस टॉ, स्टैफि ।

सिकुड़ जाना—प्लम्ब मेट ।

कत्थई धब्बे—कोनियम ।

पसीना—बेल, कैलेडि, कैल्के का, कोरैलि, क्युप्रम आर्स, डायोस्को, फैगोप, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा, युरैनि नाइट्रि ।

फूलना—एपिस, आर्स, बेल, ब्रोमि, कैन्थे, क्लिमे, कोनि, इग्ने, नाइट्रि एसि, पल्से, रस टॉ, सीपि । देखिये प्रदाह ।

ट्यूबरकिल होना—कोनि, आयोड, साइलि, सल्फर, ट्युक्रि।

अंडकोष में नसों का उतर आना—एकोन, आर्न, फेरम फा, हैमे, लैके, नक्स वॉ, प्लम्ब, पल्से, रूटा, सल्फ।

वीर्य-कोष प्रदाह, तीव्र—ऐकोन, एस्कू, ऐलो, बेल, कैन्थे, कुबेवा, फेरम फॉ, हीपर, कैली ब्रोमे, मर्क, फाइटो, पल्से, सेलेनि, साइलि, वेरेट्र विरि।

जीर्ण—ऐग्नस, आर्जे नाइट्रि, ऑरम, बैराइटा कार्ब, कैलैडि, कैने सै, सिन्को, क्लिमै, कोनि, कुबेवा, फेरम पिक्रि, ग्रैफा, हीपर, आयोड, कैली ब्रोमे, लाइको; मर्क, नक्स वॉ, ऑक्जै एसिड, फॉस एसिड, फाइटो, पल्से, सेलेनि, सीपिया, साइलि, स्टैफि, सल्फर, ट्रिबुल, जिंक। देखिये प्रोस्टैटाइटिस।

अति मैथुन बुरा प्रभाव—ऐगैरि, ऐनैका, ऐग्नस, ऐवेना, कैलैडि, कैल्के कार्ब, सिन्को; कोनि, डिजिटैलिन, जेल्से, ग्रैफा, कैली ब्रो, कैली फॉस, लाइको, लाइसिन, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, सैम्बु, सेलेनि, साइलि, स्टैफि, ट्रिबुल। देखिये नपुंसकता, धातु क्षीणता।

शुक्र-रज्जु सम्बन्धी-पीड़ा—ऐन्थेमि, आर्जे नाइट्रि, ऐरेण्डो, ऑरम, बेल, बर्बे बल, कैल्के कार्ब, कैहिन्का, कैने सैटि, कैप्सि, क्लिमै, सिन्को, कोनियम, डायस्को, हैमे, इण्डियम, कैली कार्ब, लिथि कार्ब, मर्क आयोड रूबर; मोर्फि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओलि ऐनि, ओस्मि, ऑक्जे एसिड, ओक्सि टॉ, फाइटो, पिक्रि एसिड, पल्से, सारसा, सेनैसि, साइलि, स्पांजि, स्टैफि, सल्फर, थ्लैस्पि, थूजा, टुसिलै, वेरेट्रम विरि।

खींचन—कैहिन्का, कैल्के कार्ब, क्लिमै, कोनियम, हैमे, इण्डियम, ओलि ऐनि, पल्से, रोडो, सेनेसि, स्टैफि, जिंक मेट।

स्नायुशूल—आर्जे नाइट्रि, ऑरम, बेल, बर्बे वल, क्लिमै, हैमे, मेन्थोल, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, आक्जे एसिड, फाइटो, स्पॉन्जिया।

फूलना—ऐन्थेमि, कैने सै, सिन्को, हैमे, कैली कार्ब, पल्से, स्पॉन्जिया।

कोमलता—बेल, क्लिमै, हैमै, मर्क आयोड रूबर, ऑक्जै एसिड, फाइटो, रोडो, स्पॉन्जि, टुसिलै।

धातुक्षीणता शक्ति में कमी, रात में वीर्य स्खलन हो—ऐबसिन्थ, ऐग्नस, ऐनेका, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, ऑरम, ऐवेना, बैराइटा कार्ब, कैलेडि, कैल्कै कार्ब, कैल्के फॉ, कैम्फा मोनो ब्रो, कैने इण्डि, कैन्थे, कार्बन सल्फ, कार्बो वेज, क्लोरम, सिमि, सिन्को, कोबैल्ट, कोका, कोकस, कोनि, क्युप्रम मेट, डिजि, डिजिटैलिन, डायस्को, एरिजि, फेरम ब्रो, फोर्मिका, जेल्से, जिन्से, ग्रैफा, हाइपेरि, इग्नु, आयो, आइरिस, कैलि ब्रो, कैली कार्ब, कैलि फॉस, लाइको, लाइसिन, लुपुल, मेडा,

मोस्क, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नूफर, नक्स वॉ, ओनोस्मो, आर्किटि, फॉस एसिड, फॉस, पिक्रि एसिड, प्लम्ब, सैबेल, सैलिक्स नाइग्रा, स्कुटेल, सेलेनि, सीपिया, साइलि, स्टैफि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, सल्फ एसिड, सम्बू, थूजा; थाइमोल, ट्रिटैन, टरनेरा, उपास, अस्टिलै, योहिम्ब, जिन्क, पिक्रि, वायोला ट्रि।

मानसिक दुर्बलता के साथ—फॉस एसिड।

कमजोरी, पीठ-दर्द, टाँगों की कमजोरी—ऑरम, कैल्के, कार्ब, कैल्के फॉस, सिन्को, कोबैल्ट, कोनियम, क्युप्रम मेट, डिजि, डायस्को, एरिञ्जि, फार्मिका, जेल्से, कैली कार्ब, लाइको, मेडो, नैट्र फॉस, नक्स वॉ, फॉस एसिड, पिक्रि एसिड, सारसा, सेलेनि, स्टैफि, सल्फर, टरनेरा, जिंक मेट।

बिला स्वप्न के—ऐनाका, आर्जे नाइट्रि, डिजि, जेल्से, हीपर, नैट्र फॉस, पिक्रि एसिड, देखिये निद्रा।

कामातुर स्वप्न के साथ—ऐम्ब्रा, कैलैडि, कैनै इण्डि, कोबैल्ट, कोनि, डायस्को, लाइको, नक्स वॉ, फॉस, सारसा, सेलेनि, सेनेसि, स्टैफि, थाइमोल, अस्टिलै, वायोला ट्रि। देखिये निद्रा।

बिना कामोत्तेजना के वीर्यस्खलन—कैलैडि, कैल्के कार्ब, सेलेनि।

खूनी पदार्थ का स्खलन होना—ऐम्ब्रा, कैन्थे, लिडम, मर्क कार, पेट्रोलि, सारसा।

मलत्याग के समय जोर देने से, दिन में वीर्य निकले—ऐलुमिना, कैन्थे, सिमिसि, सिन्को, डिजिटैलिन, जेल्से, कैली ब्रोमे, नूफर, फास एसिड, फॉस, पिक्रि एसिड, सेलेनि, ट्रिबुलस। देखिये प्रोस्टेटोरिया (मूत्राशय-ग्रन्थि स्राव)।

शीघ्र पतन—ऐग्नस, बैराइटा कार्ब, कैलैडि, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, सिन्को, कोबै, कोनि, ग्रैफा, लाइको, ओलि ऐनि, ओनोस्मो, फॉस एसिड, फॉस, सेलेनि, सीपि, सल्फर, टिटैनि, जिंक मेट।

मैथुन के बाद अधिक मात्रा में घड़ी-घड़ी वीर्य-स्खलन हो—फॉस एसिड।

वीर्य स्खलन बहुत समय बाद; देर में हो—कैल्के कार्ब, लाइको, नैट्र म्यूर, जिंक मेट।

लिंगोत्तेजना मन्द—ऐगैरि, ऐग्नस, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, कैलेडि, कैल्के का, कॉस्टि, कोनि, ग्रैफा, हीपर, कैली का, लाइको, मैग का, नाइट्रि एसि, नूफर, फॉस एसिड; फॉस, सेलैनि, सल्फर, जिंक मेट।

पीड़ामय लिंगोत्तेजना—कैनै इण्डि, कैन्थे, इग्नै, मर्क, मॉस्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पिक्रि एसि, पल्से, सैबैडि, थूजा।

चिड़चिड़ापन, उदासी, निराशा के साथ—ऑरम, कैल्के का; कैलैडि, सिमिसि, सिन्को, कोनियम, डायस्को, कैली ब्रो, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, सेलेनि, स्टैफि।

हस्तमैथुन की प्रवृत्ति के साथ—अस्टिलैगो।

वात, पीड़ा के साथ—जिन्सैंग।

आँखों की कमजोरी के साथ—कैली का।

अण्डकोष की क्षीणता के साथ—आयोड, सैबैल।

उपदंश : गर्मी साधारण औषधियाँ—एथिओप्स, ऐलनस, एनैका, एण्टि क्रू, आर्स, आर्जे आयोड, आर्स ब्रो, आस आयोड, आर्जे मेट, आर्स सल्फ फ्ले, ऐसैफे, ऑरम आर्स, ऑरम आयोड, ऑरम, ऑरम म्यूर नैट्रो, बैडियागा, बैप्टि, बर्बे ऐक्वि, कैल्के फ्लो, कैलोट्रो, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कॉस्टि, चिनि आर्स, सिनैबै, कोण्डु, कोरिडै, एचिने, फ्लो एसिड, फ्रैन्सिस्का, जेल्से, ग्रैफा, गुवाइक, गुवाइको, हेक्ला, हीपर, हिपोजे, हाइड्रोको आयोड, जैकारे, कैलीबाई, कैली आयोड, कैली म्यूर, क्रियोजो, लैके, लोनिसे, लाइको, मर्क ऑर, मर्क ब्रो, मर्क कार, मर्क डल्सि, आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क नाइट्रि, मर्क प्रे रूबर, मर्क सल्फ, मर्क टैन, मर्क वि, मेजे, नाइट्रि एसिड, ओस्मियम, फॉस एसिड, फॉस, फाइटो, प्लैटि, प्लैटि म्यूर, सोरि, रस ग्लै, सारसा, स्टैफि, सल्फ, सिफिलि, थूजा।

पारे के दुर्व्यवहार के कारण—ऐंगस्टूरा, आरम, कैलोट्रो, कार्बो ऐनि, फ्लोर एसिड, हीपर, कैली आयोड, नाइट्रि एसिड, रस ग्लै, सल्फर।

ग्रंथि रोग—बैडि, कार्बो ऐनि, ग्रैफा, हीपर, आयोड, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, फाइटो। देखिये ग्रंथि-विकार (साधारण लक्षणों में)।

बाल झड़ना—आर्स, ऑरम, कार्बो वेज, सिनाबे, फ्लोर एसिड, ग्रैफा, हीपर, कैली आयोड, लाइको, मर्क आयोड फ्ले, मर्क वि, नाइट्रि एसिड, फॉस, सल्फर। देखिये सिर की खाल।

हड्डियों और बन्धनियों के रोग—आर्जे मेट, ऐसैफे, ऑरम, ऑरम म्यूर, कैल्के फ्लो, कार्बो वेज, फ्लोरिक एसिड, हीपर, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, मर्क, मेजे, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फॉस, फाइटो, सारसा, साइलि, स्टैफि, स्टिलि, सल्फर। देखिये हड्डियाँ (साधारण लक्षणों से)।

पोषण विकार, रक्तहीनता, दुबलापन—आर्स, ऑरम, कैलोट्रो, कार्बो ऐन, कार्बो वेज, फेरम आयोग, फेरम लैक्टे, आयोड, मर्क, सारसा।

उपदंशीय घाव, आरम्भिक विकार—एनैन्थे, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐसैफे, सिनैबे, कोरैलि, हीपर, जैकैरै, कैली बाइ, कैली आयोड, लाइको, मर्क कार, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, मर्क वाइ, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फॉस, प्लैटि म्यूर, साइली, सल्फर।

उपदंशीय घाव गलित, ग्रैंग्रीन—आर्स, लैके ।

कड़े उपदंशीय घाव, हार्ड शैंकर—कार्बो ऐनि, कैली आयोड, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ ।

आतशक—घाव, फूले, कड़े, चर्बीला तल, गहरा, गोल छेद करने वाला, दर्दीला, खून बहना, कच्चापन, किनारे बाहर की तरफ मुड़े हों—मर्क सल्फ ।

आतशक –घाव, सड़ने और तेजी से फैलने वाले—आर्स, सिनैबे, हाइड्रै, लैके, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, साइली ।

आतशक—कोमल मुलायम—कोरैलि, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, थूजा ।

मस्से, अर्बुद गुठलियाँ—ऑरम म्यूर सिनैबे, युफ्रेसिया, कैली आयोड, मर्करी के सभी योग, प्लैटि म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, सैबाइना, स्टैफि, थूजा ।

पैदाइशी, छोटे बच्चों में—एथिओप्स, आर्स आयोड, आर्ज मेट, ऑरम, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, कोरैलि, कैली आयोड, क्रियोजो, मर्क डल्सि, मर्क सल्फ, मर्क वाइ, नाइट्रि एसिड, सोरि, सिफिलि ।

अस्थि वृद्धि—कैल्के फ्लो, फ्लोर एसिड, हेक्ला, मर्क फॉ, फॉस । देखिये हड्डियाँ ।

ज्वर—बैप्टि, चिनि सल्फ, सिन्को, जेल्से, मर्क, फाइटो ।

अस्थि-गुल्म, गुठलियाँ—ऐसाफि, ऑरम, बर्बे ऐक्वी, कैल्के फ्लो, कार्बो ऐनि, कोण्डुरै, कोरिडे, फ्लोर एसिड, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क, मेजे, नाइट्रि एसिड, फाइटो, साइली, स्टैफि, स्टिलि, सल्फर, थूजा ।

सिर दर्द—कैली आयोड, मर्क, सारसा, स्टिलि, सिफिलि, । देखिये सिर ।

श्लैष्मिक चकत्ते—ऐसाफि, ऑरम, कैल्के फ्लो, कैलोट्रो, सिनैबे, फ्लोर एसिड, कोण्डूरै, हीपर आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, कैली म्यूर, मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क नाइट्रि, मर्क प्रे रूबर, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, फाइटो, सैंग्वि, स्टिलि, थूजा ।

नाखून की जड़ में सूजन—ऐण्टि क्रू, आर्स, ग्रैफा, कैली आयोड, मर्करी के सभी योग । देखिये गल्का । (चर्म रोग में) ।

पीनस रोग, ओजीना—ऑरम, कैली बाइ, स्टिलि । देखिये नाक ।

स्नायविक बाधायें—ऐनैका, ऐसाफि, ऑरम, आयोड, कैली आयोड, लाइको, मर्क नाइट्रि, मर्क फॉस, मेजे, फॉस ।

रात में दर्द—ऐसाफि, ऑरम, कैल्के फ्लो, सिनाबे, कोराइडै, युपेटो पर्फ, फ्लो एसिड, हीपर, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, लैके, लाइको, मर्क, मेजे, फॉस, फाइटो, सारसा, स्टिलिन्जिया ।

वात रोग—गुवाइक, हेक्ला, हीपर, कैली बाइक्रो, कैलो आयोड, मर्क, नाइट्रो म्यूर एसिड, फाइटो, स्टिलिन्जि। देखिये चालन-यन्त्र-मण्डल।

द्वितीय चरण—ऑरम, बर्बे एक्वि, कैलोट्रो, सिनेबै, फ्लोर एसिड, ग्रेफा, गुवाइक, आयोड, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, लाइको, मर्क ब्रा, मर्क कॉर, मर्क आयोड फ्लेः; मर्क आयोड रूबर; मर्क सल्फ, मर्क वाइ, नाइट्रि एसि, ओस्मि, फॉस, फाइटो, रस ग्लै, सारसा, स्टिलिञ्जि, थूजा।

पेट दर्द, पारा सम्बन्धी—नाइट्रि एसिड।

उपदंशीय विस्फोट—अंडाकार—कैली आयोड, सिफिलि।

अकौता की तरह—आर्स, ग्रेफा, क्रियोजो, मर्क सल्फ, पेट्रोलि, फाइटो, सारसा। देखिये चर्म रोग।

मासांकुरीय, नोकीले दाने, पैपुलर—कैलोट्रो, कैली आयोड, लैके, मर्क कार, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ।

रंजकीय—कैल्के सल्फ, नाइट्रि एसिड।

अपरस—ऐसैफे, ग्रेफा, कैली बाइ, नाइट्रि एसिड, फॉस।

मवादी फुन्सियाँ, दाने, पस्टूलर—ऐण्टि टॉ, एसैफे, कैलोट्रो, फ्लोर ऐसिड, हीपर, इग्नै, कैली बाइ, कैलि आयोड, लैके, मर्क नाइट्रि, मेजे, नाइट्रि एसिड।

गुलाबी लाल छत्ते, रोजियोला—कैली आयोड, मर्क कार, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, फॉस, फाइटो।

कल्किका, उपदंशीय चर्म रोग विशेष—आर्स, बर्बे एक्वि, कैली आयोड, मर्क, नाइट्रि एसिड, फाइटो, सिफिलि।

ताँबे के रंग के चकत्ते—कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कोरैलि, कैली आयोड, मर्क, नाइट्रि एसिड, सल्फर।

पपड़ी, भूसी, पतले छिल्केदार चर्म रोग—आर्स, आर्स आयोड, आर्स सल्फ फ्ले, बोरै, सिनैबे, फ्लोर एसिड, कैली आयोड, मर्क कार, मर्क आयोड फ्ले, मर्क नाइट्रो, मर्क प्रे रूबर, मर्क सल्फ, मर्क टैन, नाइट्रि एसिड, फॉस, फाइटो, सारसा, सल्फर।

क्षयाणु-पुटित गुटिका; अर्बुद ट्यूबरकुलर—आर्स, ऑरम, कार्बो ऐनि, फ्लोर एसिड, हाइड्रोकोटा, कैली आयोड, मर्क आयोड रूबर, स्टिलिञ्जि, थूजा।

घाव होना—आर्स, ऐसैफे, ऑरम, ऑरम म्यूर, कार्बो वेज, सिनैबे, सिस्टस, कोण्डुरै, कोरैलि, फ्लोर एसिड, ग्रेफा, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, लाइको, मर्क साइ, मर्क डल्सि, मर्क कार, मर्क प्रे रूबर, मर्क वाइवस, मेजे,

नाइट्रि एसिड, फाइटो, साइली, स्टैफि, स्टिलिन्जि, सल्फर, थूजा। देखिए श्लैष्मिक चकत्ते।

फफोलेदार, जल भरे दाने—सिनाबे, मर्क कार, मर्क आयोड रूबर, थूजा।

तीसरा चरण—आर्स आयोड; ऑरम, ऑरम म्यूर, कैल्केरिया के सभी योग, कार्बो वेज, सिनैबे, फ्लोर एसिड, ग्रैफा, गुयेका, होआंगनैन, आयोड, कैली बाइ; कैली आयोड, लाइको, मरकरी के सभी योग, मेजे, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फॉस, फाइटो, सोरि, स्टैफि, सल्फर, थूजा।

गले के रोग—बोरै, कैल्के फ्लो, सिनैबे, फ्लोर एसिड, कैली बाइ, लाइको, मर्क कार, मर्क डल्सि, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क, नाइट्रि एसिड, फॉइटो, स्टिलिञ्जी।

उदर के लक्षणों के साथ—आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, सियानोथ, हीपर, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क ऑर, मर्क कार, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, मर्क टैन, नक्स वॉ।

अंडकोष—फोड़ा—हीपर, मर्क-स्टिलिञ्ज।

सिकुड़ना क्षीण होना—ऐग्नस, ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, ऑरम, कैप्सि, कार्बन सल्फ, सेरियस सर्फ, आयो कैली, ब्रो, लाइसिन, रोडो, सैबैल।

ठंडापन—ऐग्नस, बर्बे वल, डायस्को, मर्क, साइलि। देखिये नपुंसकता।

थैलियाँ, कोष (सिस्ट)—एपिस, कोनि, ग्रैफा, सीपि, सल्फर।

आँत उतरना, हार्नियाँ—आर्स, बैराइटा का, कैल्के का, कार्बो वेज, हीपर, मर्क, नाइट्रि एसि, साइलि, थूजा।

ढीलापन बैराइटा का, बर्बे वल, सिनाबे, कोनि, हैमे, आयोड, मर्क आयोड रूबर, मर्क, पल्से, स्टिग्मा। देखिये प्रादाहिक।

कड़ा होना—ऐकोन, ऐग्नस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, ऑरम, बैराइटा का, बेल, ब्रोमि, कैल्के फ्लोर, कार्बो वेज, क्लिमै, कोनि, कोपेवा, आयोड, कैली कार्ब, मर्क, ऑक्जै एसि, फाइटो, प्लम्ब, रोडो, साइलि, स्पाञ्जि। देखिये प्रदाह।

ऊपरी खाल की सूजन—ऐकोन, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बेल, कैने सैटि, सिन्को, क्लिमै, जेल्से, हैमे, मर्क, फाइटो, पल्से, रोडो, सैबैल, स्पॉन्जि, सल्फर, ट्युक्रि, स्कोर, थूजा।

अंड-प्रदाह तीव्र—ऐकोन, एण्टि टा, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, बेल, ब्रोमि, कैमो, चिनि सल्फ, सिन्को, क्लिमै, कुबेवा, जेल्से, हैमे, कैली सल्फ, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फाइटो, पोलिगो, पल्से, रोडो, स्पॉन्जि, ट्युक्रि, स्कोर, वेरेट्र विरि।

अंड-प्रदाह जीर्ण—ऐग्नस, ऑरम, बैराइटा का, कैल्के आयोड, सिन्को, क्लिमै, कोनि, जेल्से, हीपर, हाइपेरि, आयोड, कैली आयोड, लाइको, मर्क, नाइट्रि एसिड, फाइटो, पल्से, रोडो, रस टॉ, स्पॉञ्जि, सल्फर ।

स्थान : विकल्पीय प्रदाह—पल्से, स्टैफि ।

उपदंशीय प्रदाह—ऑरम, कैली आयोड, मर्क आयोड रुबर ।

दर्द—साधारण—ऐकोन, ऐग्नस, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्जेमेट, ऑरम, बेल, बर्बे वल, ब्रोमि, कैहिन्का, कैने सैटि, कैप्सि, सोरियस बोन, कैमो, क्लिमै, कोनि, ऐरिओडि, जिन्से, हैमे, हाइड्रै, इग्ने, आयोड, कैली का, लाइको, लाइकोपस, मर्क आयोड रुबर, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ऑक्जे ऐसि, ओक्सिट्रो, पैपेया, फॉस एसि, पिक्रि एसि, पल्से, रोडो, सैलिक्स नाइग्रा, सीपिया, स्पॉन्जि, स्टैफि, सल्फर, थूजा ।

टीस, खींच, ढीलापन—ऐपिस, ऑरम, कैने सै, क्लिमै, कोनि, आयोड, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस एसिड, पल्से, स्पॉन्जि, स्टैफि, सल्फर, थूजा ।

कुचलन, छिलन, चुभन, संकुचन दर्द—ऐकोन, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, ऑरम, कार्बो वेज, क्लिमै, कोनि, जिंसेंग, हैमे, कैली कार्ब, नाइट्रि एसिड, ओलि ऐन, ऑक्जै एसिड, पल्से, रोडो, सीपिया, स्पॉञ्जि, स्टैफि ।

स्नायुशूल—आर्जे नाइट्रि, ऑरम, बेल, बर्बे वल, क्लिमै, कोलो, कोनियम, युफ्रै सिया, हैमै, इग्नै; मैग फॉस, मर्क, नक्स वॉ, ओलि ऐन, ऑक्जै एसिड, ऑक्सि ट्रो, पल्से, स्पॉन्जि, वेरेट्र विरि, जिंक मेट ।

उत्तेजनीय कोमल—ऐकोन, एपिस, बेल, बर्बे वल, ब्रोमि, क्लिमै, कोनि, कोपेवा, हैमे, इण्डियम, मर्क आयोड रूबर, फॉस एसिड, पल्से; रोडो, सीपि, स्पांजि, स्टैफि ।

ऊपर चढ़ जाना, सिकुड़ना—आर्जे नाइट्रि, ऑरम, बेल, ब्रोमि, कैम्फो, सिन्को, क्लिमै, कोलो, युफ्रै सि, नाइट्रि एसिड, ओलि ऐन, पल्से, रोडो, जिंक ।

फूलना—ऐकोन, ऐग्नस, ऐपिस, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि; आर्न, आर्स, ऑरम, ऑरम म्यूर नैट्रो, बेल, ब्रोमि, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, क्लिमै, कोनि, कोपेवा, डिजि, ग्रैफा, हैमे, आयोड, कैली कार्ब, लाइको, मर्क को, मर्क, मिलिफो, ओसिमम, फॉस एसिड, पल्से, रोडो, स्पॉन्जि, स्टैफि, ट्रुसिलै, वेरेट्र वि, जिंक । देखिये प्रदाह ।

क्षय रोग—ऑरम, बैसि, टेस्टो, मर्क, स्क्रोफुल, स्पॉन्जि, ट्युक्रि, स्कोर ।

क्षय रोग की तरह लक्षण अवास्तविक—ऑरम, कैल्के कार्ब, हीपर, मर्क आयोड रूबर, साइलि, स्पॉन्जि, सल्फर ।

अर्बुद ट्यूमर (सारकोसील)—ऑरम, कैल्के कार्ब, क्लिमै, मर्क आयोड रूबर, पल्से, रोडो, साइलि, स्पॉन्जि, ट्यूबर । देखिये ढीलापन ।

बच्चों में अंड का नीचे अपने कोष में न उतरना—थाइरॉ ।

स्त्री-जननेन्द्रिय

मैथुन—मैथुन के समय गशी आना—म्यूरेक्स, ओरिगै, प्लैटि।

मैथुन के बाद रक्तस्राव—आर्जे नाइट्रि, क्रियोजो, नाइट्रि एसिड, सीपि।

मैथुन के समय पीड़ा—एपिस, आर्जे नाइट्रि, बेल, बर्बे वल, फेरम, क्रियोजो, लाइको, लाइसिन, प्लैटिना, सीपि, स्टैफि, थूजा। देखिये योनिशूल, आक्षेप।

गर्भधारण-कठिन (बाँझपन)—ऐग्नस, ऐलेट्रि, ऐमो कार्ब, ऑरम मेट, बैराइटा म्यूर, बोरै, कैल्के कार्ब, कैने इण्डि, कोलो, कोनि, युपेटि पर्प्यु, गोसिपी, ग्रैफा, हेलोनि, आयोड, लेसिथि, मेडो, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नैट्र फॉ, फॉस, प्लैटि, सैबैल।

सरल गर्भधारण—मर्क, नैट्र म्यूर।

इच्छा—कम होना या बिल्कुल गायब होना—ऐग्नस, एमो कार्ब, बर्बे वल, कॉस्टि, फेरम म्यूर, ग्रैफा, हेलोनि, इग्ने, नैट्र म्यूर, ओनोस्मो, प्लम्ब, सीपिया।

अधिक होना—ऐम्ब्रा, ऐस्टेरि ऐरण्डो, ब्यूफो, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कैम्फो, कैन्थे, सिमि, सिन्को, कोका, डल्का, फेरूला, ग्रैटिओ, हायोसि, कैलीब्रो, कैली फॉस, क्रियोजो, लैके, मोस्क, म्युरेक्स, नक्स वॉ, ओरिगै, फॉस, पिक्रि एसिड, प्लैटि, रैफै, रोबिनी, सैबाइना, साइली, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्न, टैरै हिंस्पै, वेरेट्र ऐल्ब, जेरोफाइल, जिंक।

इच्छा बढ़े, दबाने के लिये कुछ न कुछ किया करे—लिलि टिग्रि।

इच्छा दबाने का बुरा प्रभाव—कोनि, सैबाल।

सुजाक—ऐकोन, ऐलुमेन, एपिस, आर्जे नाइट्रि, कैने सै, कैन्थे, कोपेवा, कुबेवा, जैकैरे, क्रियोजो, मेडो, मर्क को, मर्क, ओलि सैन्टे, पेट्रोसे, पल्से, सीपि, सल्फर, थूजा। देखिये प्रदर, योनिशूल, योनि घुण्डी प्रदाह।

प्रदर रोग, साधारण औषधियाँ—एगैरि, ऐग्नस, एलेट्रि, ऐलनस, एलुमिना, ऐम्ब्रा, ऐमो कार्ब, ऐमो म्यूर, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐसाफि, ऑरम म्यूर, ऑरम म्यूर नैट्रो, बैरोस्मा, बैराइटा म्यूर, बेल, बोरैक्स, बोविस्टा, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉलो, कॉस्टि, कैलो, सिमि, सिन्को, कोकस, कोनि, कोपेवा, डिक्टैम, युकैलि, युपियन, फेरम आयोड, फ्रैक्सी ऐम, जेल्से, ग्रैफा, हेडेओमा, हेलोनि, हेलोनिन, हीपर, हाइड्रै, हाइड्रोकोट, इग्ने, आयोड, जैकैरै, जोनोसिया, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली म्यूर, कैली सल्फ, क्रियोजो, लिलि टिग्रि, लाइको, मैग कार्ब, मैग म्यूर, मर्क प्रे रूबर, मर्क, मेजे, म्युरेक्स, नाजा, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओरिगै, ओवा टे, पैलै, पिक्रि एसिड, सोरि, पुलेक्स, पल्से, सैबाइना,

सिकेलि, साइलि, स्पिरैन्थ, स्टैन, सल्फर, सल्फ एसिड, थ्लैस्पि, थूजा, टिलिया, ट्रिलि, वाइबर्न ओपू, जैन्थ, जिंक मेट ।

प्रकार—जलन वाला, तेजाबी, छिलने वाला—इस्कू, एलुमिना, ऐमो कार्ब, पेरैलि, आर्स, आयोड, ऑरम, ऑरम म्यूर, बॉरै, बोविस्टा, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कार्बो एसिड, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कॉलो, कैमो, कोनि, कोपेवा, युकैलि, फेरम ब्रो, ग्रेफाइटिस, गुवाको, हेलोलिन, हीपर, हाइड्रै, इग्नै, आयोड, क्रियोजो, लैके, लिलि टिग्रि, लाइको, मेडो, मर्क, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, फॉस, पल्से, सैबाइना, सीपिया, साइलि, सल्फर, सल्फ एसिड, थ्लैस्पि ।

एल्बुमिन की तरह, चिकना, श्लैष्मिक—ऐग्नस, ऐलुमिना, ऐम्ब्रो, ऐमो म्यूर, बर्बे वल, बोरेक्स; बोविस्टा, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, फेरम आयोड, ग्रैफा, हेमोटॉक्स, हाइड्रै, इनुला, आयोड, कैली म्यूर, कैली सल्फ, क्रियोजो, मैग कार्ब, मेजे, प्लैटि, पल्से, सल्फ एसिड, थूजा, टिलिया ।

कालापन लिये—सिन्को; थ्लैस्पि ।

सादा, सरल—बोरैक्स, कैल्के फॉस, युपियन, फ्रैक्स ऐमे, कैली म्यूर, पल्से, स्टैन ।

खूनी—आर्जे नाइट्रि, आर्स, ब्यूफो, कैल्के आर्स, कार्बो वेज, सिन्को, कोकस, कोनि, क्रियोजो; मर्क को, मर्क, म्युरेक्स, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, सिपि, स्पिरैंथ, सल्फ एसिड, थ्लैस्पि ।

बादामी, भूरा, कत्थई—इस्कू, ऐमो म्यूर, क्रियोजो, लिलि टिग्रि, नाइट्रि एसिड, सिकेलि, सापिया ।

माँस के रंग का, मांस के धोवन की तरह, बदबू न हो—नाइट्रि ऐसिड ।

हल्के हरे रंग का—बोविस्टा, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कैली सल्फ, लैके, मर्क, म्यूरेक्स, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, फॉस, पुलेक्स, पल्से, सिकेलि, सीपिया, सल्फर, थूजा ।

फलक के निकले—कोकस, युपियन, ग्रैफा, सीपि । देखिये अधिक ।

रुक-रुक कर—कोनि, सल्फर ।

खुजलाना—ऐम्ब्रा, ऐनाका, कैल्के कार, कैल्के आयोड, कार्बो एसिड, सिन्को, इंडेओमा, हेलोनिन, हाइड्रै, क्रियोजो, मर्क, सीपिया । देखिये योनि खाज, प्रुराइटिस ।

ढोंकेदार—ऐण्टि क्रू, हाइड्रै, सोरी ।

दूध ऐसा सफेद—ऑरम, बेल, बोरै, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कैल्के फॉ, कैन्थे, कार्बो वेज, कोनियम, कोपेवा, फेरम मेट, ग्रैफा, हैमैटोक्सि, आयोड, कैली म्यूर, नाजा, ओवा टैस्टा, पैरैफि, पल्से, सीपिया, साइलि, स्टैन, सल्फर ।

घृणित—एरैलि, आर्स, ब्यूफो, कार्बो एसिड, सिन्को, युकैलि, गुवाको, हेलोनि, हीपर, क्रियोजो, मर्क, मेडो, नैट्र कार्ब, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, सोरी, पुलेक्स, सैबाइना, रोबीनी, सैंग्वि, सैनिकू, सिकेलि, सीपिया, थ्लैस्पि, अस्टिलै।

पीड़ामय—मैग म्यूर, सिली, सल्फर। देखिये साथ के लक्षण।

बिना दर्द—ऐमो म्यूर, पल्से।

अधिक मात्रा में—एलूमिना, ऐम्ब्रा, ऐमो कार्ब, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऑरम, बोरैक्स, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कार्बो एसिड, कॉलो, कॉस्टि, कोनि, फ्लो एसिड, ग्रैफा, गुवाको, हेलोनिन, हाइड्रै, हाइड्रो कोटा, आयोड, क्रियोजो, लैके, लिलि टि, मैग सल्फ, मर्क, नैट्र म्यूर, ओवा, टेसुफॉस, पुलेक्स, पल्से, सीपि, साइलि, स्टैन, सिफ्ली, थूजा, टिलिया, ट्रिलि।

मवादी, दाग डालने वाला, पीला—इस्कू, ऐग्नस, ऐलुमेन, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऑरम म्यूर, बोवि, कैल्के कार्ब, कैने सै, कार्बो ऐनि, सियानोथ, कैमो, सिन्को, युपियन, फैगोपा, हेलोनिन, हाइड्रै, इग्नै, आयोड, कैली बाइ, कैली सल्फ, क्रियोजो, लैकै, लिलि टि, लाइको, मर्क आयोड फ्ले, मर्क, नैट्र सल्फ, पुलेक्स, पल्से, सीपि, स्टैन, सल्फर, ट्रिली, आस्टिलै।

गाढ़ा—इस्कू, ऑरम, बोवि, कैन्थे, कार्बो वेज, कोनि, हेलोनि, हाइड्रै, आयोड, कैली म्यूर, क्रियोजो, मैग सल्फ, मर्क, म्युरेक्स, नाइट्रि एसिड, पल्से, सैबाइना, सीपिया, थूजा।

पतला पानी सा—ऐमो कार्ब, आर्स, बेल, ब्यूफो, कैमो, फ्रैक्सि ऐमे, ग्रैफा, कैली सल्फ, क्रियोजो, लिलि टिग, मर्क कार, नैट्र म्यूर, नाजा, नाइट्रि एसिड, प्लैटि, पल्से, सीपि, सिफ्ली, सल्फर।

तारदार, लसीला—इस्कू, ऐलुमिना, ऐसैर, बोवि, डिक्टैल, फेरम ब्रो, ग्रैफा, हाइड्रै, आइरिस, कैली बाइ, कैली म्यूर, नाइट्रि एसिड, पैले, फाइटो, सैबाइना, ट्रिलि।

आक्रमण, घटना-बढ़ना—मैथुन के बाद—नैट्र कार्ब।

मासिक धर्म के बाद और दो मासिक धर्म के बीच वाले समय में—इस्कू, एलुमि, बोरै, बोवि, कैल्के कार्ब, कोकस, कोनि, युपियन, ग्रैफा, हाइड्रै, आयोड, कैलिम, क्रियोजो, नाइट्रि एसि, फॉस एसिड, पल्से, सैबा, सीपिया, थ्लैस्पी, जैन्थ।

मलत्याग के बाद—मैग म्यूर।

मूत्रत्याग के बाद—ऐमो म्यूर, कोनि, क्रियोजो, मैग म्यूर, निकोल, प्लैटि, सीपि, साइलि।

रोग के चरम सीमा काल में—सोरि, सैंग्वि।

रात के समय—ऐम्ब्रा, कॉस्टि, मर्क, नाइट्रि एसिड ।

मासिक धर्म के पहले—ऐलुम, बैराइटा का, बोरैक्स, बोवि, कैल्के का, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, कोनि, ग्रैफा, क्रियोजो, पिक्रि ऐसि, पल्से, सीपि, थ्लैस्पि ।

ठण्डे पानी से नहाने से कम हो—एलम ।

हरकत से—आराम में—बोवि, कार्बो ऐनि, युफोर्बि पिलू, ग्रैफा, हेलोनिन, मैग म्यूर, टिलिया ।

आराम से—फैगोप ।

बैठने से, टहलने से कम हो—कैक्ट, कोकस, साइक्लै ।

मूत्र स्पर्श से—क्रियोजो, मर्क, सल्फर ।

दिन के समय—ऐलम, प्लैटी ।

छोटी लड़कियों में, शिशुकालीन—ऐस्पेरूला, कैल्के का, कैने सै, कार्बो एसि, कॉलो, सिना, कुबेबा, हाइड्रै, मर्क आयोड, मर्क, मिलिफोलि, पल्से, सीपिया, सिफ्ली ।

बूढी, कमजोर स्त्रियों में—आर्स, हेलोनि, नाइट्रि एसिड, सिकेलि ।

मासिक-धर्म के बदले—सॉकु, ग्रैफा, आयोड, नक्स मॉ, फॉस, पल्से, सेनिसि, जैन्थक ।

गर्भवती स्त्रियों में—कॉकु, कैली का, सीपिया ।

साथ के लक्षण—उदर पीड़ा, स्राव काल में और पहले शूल हो—एमो म्यूर, ऐरैलि, आर्स, बेल, कैल्के का, कोनि, ग्रैफा, हैमे, हैमेटोक्स, इग्नै, लाइको, मैग म्यूर, नैट्र का, सीपिया, साइलि, सल्फर, सिफ्ली ।

पीठ, पीड़ा और कमजोरी, पहिले और साथ में—इस्कु, युपियन, ग्रैफा, हेलोनि, कैली बाइ, क्रियोजो, मैग सल्फ, म्युरेक्स, नैट्र क्लो, नैट्र म्यूर, ओवाटो, सोरी, स्टैन ।

ग्रीवा छीलने वाला रक्त-प्रवाह सरल—ऐलुमि, ऐल्नस, आर्जे नाइट्रि, डिक्टैम, हाइड्रै, हाइड्रोकोटा, कैली बाइ ।

कमजोरी—ऐलैट्रि, ऐलुमि, कैल्के कार्ब, कार्बो ऐनि, कॉलो, कॉस्टि, सिन्को, कॉकु, कोनि, गुवाको, हेलोनि; हेलोनिन, हाइड्रै, क्रियोजो, ओनोस्मो, फॉस, सोरी, पल्से, सीपि, स्टैन ।

दस्त—पल्से ।

गरम पानी निकलता जान पड़े—बोरैक्स ।

भरापन, गरमी मालूम हो, ठंडे पानी से कम हो—एकोन ।

रक्त-प्रवाह कठोर सविरामिक—क्रियोजो ।

जिगर-विकार, कब्जियत—हाइड्रै ।

गर्भपात का इतिहास—ऐलेट्रि, कॉलो, सैबाइ, सीपि।

गर्भाशय और उदर में आक्षेपिक हिस्टीरिया युक्त झटके—मैग म्यूर।

मानसिक लक्षण—म्युरेक्स।

माथे पर लक्षण काँटे जैसे चकत्ते—कॉलो, सीपिया।

बाद में गर्भाशय में रक्त बहे—मैग म्यूर।

योनि घुण्डो की अति खाज—ऐगैरि, ऐलुमि, ऐम्ब्रा, ऐनाका, कैल्के कार्ब, फैगोप, हेलोनि, हाइड्र, क्रियोजो, मर्क, सीपिया, सल्फर।

जननेन्द्रिय के ढीलापन के साथ—ऐग्नस, कॉलो, सिकेलि, सीपि।

योनि का आक्षेपिक—ऑरम म्यूर नैट्रो।

मूत्र मार्ग की उत्तेजना—बर्बे वल, एरिजे, क्रियोजो, सीपि।

स्तन—फोड़े—ब्रायो, क्रोटो टिग, ग्रैफा, हीपर, फॉस, फाइटो, साइलि, सल्फर। देखिए मैस्टाइटिस, स्तन-प्रदाह।

क्षीणता, सिकुड़ जाना—चिमैफि, कोनि, आयोड, कैली आयोड, नाइट्रि एसिड, ओनोस्मो, सैबाल।

कर्कट—आर्जे नाइट्रि, आर्स आयोड, ऐस्टेरि, बैडि, बैप्टी, बैराइटा आयोड, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के आयोड, कार्बो ऐनि, कैरसिनोसि, साइक्यू, क्लिमै, कोण्डुरै, कोनि, गैलियम, ग्रैफा, हीपर, होआंग नैन, हाइड्र, कैली आयोड, क्रियोजो, लैके, फॉस, प्लम्ब आयोड, सोरि, सैंग्वि, स्किरिनम, सेम्पवि टेक्टो, साइलि, सल्फर, टेरैण्टु कुबै, थूजा। देखिए ट्यूमर, (अर्बुद)।

कर्कट, खून बहे—होआंग नैन, क्रियोजो, लैके, फॉस, सैंग्वि, थूजा।

कर्कट, कठिन अर्बुद के साथ—आर्स, कार्बो ऐनि, कोण्डुरै, कोनियम, हाइड्र, क्रियोजो, लैपिस ऐल्ब, फाइटो, स्किरिनम, साइलि।

कड़ापन—ऐलुमेन, ऐनैन्थे, ऐस्टेरि, बैराइटा आयोड, बेल, ब्रायो, ब्यूफो, कैल्के फ्लो, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कैमो, सिस्टस, क्लिमै, कोनियम, ग्रैफा, आयोड, क्रियोजो, लैक कैने, लैपिस एल्ब, मर्क, नाइट्रि एसिड, फाइटो, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब मेट।

प्रदाह सूजन—ऐकोन, ऐण्टि टा, एपिस, आर्स, आर्न, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैमो, सिस्टस, कोनि, क्रोटो टिग, फेरम फॉ, गैलेगा, ग्रैफा, हीपर, लैक कैने, लैकेसि, मर्क, फेलैण्ड्र, फॉस, फाइटो, प्लैण्टै, पल्से, सैबैडि, साइलि, सल्फर। देखिये दर्द, सूजन।

घुण्डियाँ—जलन, खाज—एगैरि, ऐरण्डो, आर्स, कैस्टोरि, क्रोटो टिग, लाइको, ओनोस्मो, ओरिगै, पेट्रोलि, पल्से, सली, सल्फर।

चिटक, दरारे घाव—ऐनैन्थे, आर्न, आर्स, ऑरम सल्फ, कैल्के, ऑक्जै, कैलेण्डु, कार्बो वेज़, कैस्टोरि, कॉस्टि, कोण्डुरै, कोनि, क्रोटो टिग, युपेटो ऐरो, गैलियम, जिरैनि, ग्रैफा, हैमे, हीपर, हिपोमै, मर्क, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, फैले, फॉस, फाइटो, रैटानहिया, सीपिया, साइलि, सल्फर। देखिये दर्दीलापन।

प्रादाहिक छूने में कोमल—कैमो, हेलोनि, फाइटो।

भीतर को सिकुड़ जाना—कार्बो ऐन, हाइड्रै, लैपिस ऐल्बा, नक्स मॉ, सारसा, साइलि।

कोमल—एपियम ग्रै, आर्न, बोरै, कैलेण्डू, कैस्टोरि, कैमो, सिस्टस, कोनियम, क्रोटो टिग, युपेटो ऐरो, ग्रैफा, हैमे, हेलोनि, हीपर, हाइड्रै, लैक कैना, मेडो, ओसिमम, ओरिगे, पैरैफि, फेलै, फॉस, फाइटो, रैटानहिया, सैंग्वि, साइलि, सल्फर, जिंक।

स्तनों में पीड़ा—एकोन, एलियम सैटि, एपिस, आर्जे नाइट्रि, ऐस्टेरि, ऑरम सल्फ, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो ऐनि, कैमो, चिमैफि, सिमिसि, कोनियम, कोटाइलेड, क्रोक, क्रोटो टिग, हीपर, हाइड्रै, हाइपेरि, लैक कैने, लैके, लैक्टि एसिड, लैपिस ऐल्बा, लेपिडि, मेड्रो, मर्क पेर, मर्क, म्युरेक्स, नैट्र म्यूर, ओनोस्मो, पैलैडि, फेलै, फॉस, फाइटो, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब मेट, पोलिगो, प्रून स्पाइ, सोरि, पल्से, सैंग्वि, साइलि, सुम्बू, जिंक।

प्रादाहिक दर्द—सिमि, पल्से, रैन बल, रैफै, सुम्बू, अस्टिलै, जिंक मेट।

भारी स्तनों को सहारा देने से दर्द कम हो—ब्रायो, लैक कैना, फाइटो।

ठेस लगने से, शाम के लगभग दर्द बढ़े—लैक कैना।

फूलन—ऐलियम सैटि, एनान्थे, ऐसाफि, ऐस्टैरि, ऑरम, सल्फ, बेल, बेलिस, ब्रायो, कैस्टोरि, डल्का, ग्रैफा, हेलोनि, लैक कैना, मर्क पेर, मर्क, ओनोस्मो, फॉस, फाइटो, सोरी, पल्से, सोलेन, ओल, अर्टिका। देखिये प्रदाह मैस्टाइटिस।

कोमल दर्द—आर्जे नाइ, ऐस्टेरि, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो ऐन, कैमो, क्लिमै, कोनि, डल्का, हेलोनि, हीपर, आयोड, कैली म्यूर, लैक कैना, लैके, मेडो, मर्क, ओनोस्मो, फाइटो, प्लम्ब, रेडियम, सैबैल, सिफिलि, देखिये दर्द।

अर्बुद गाँठें गुठलियाँ—आर्स आयोड, ऐस्टेरि, बेल, बर्बे, ऐकिव, ब्रोमि, ब्रायो, कैलेण्डू, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, कार्बो ऐनि, कैमो, चिमैफि, क्लिमै, कोण्डुरै, कोनि, फेरम, कैल्के आयोड, नैफे, ग्रैफा, हेक्ला, हाइड्रै, आयोड, लैके, लेपिस एल्बो, लाइको, मर्क आयोड फ्ले, म्युरेक्स, नाइट्र ऐसिड, फॉस, फाइटो, प्लम्ब आयोड, सोरी, पल्से, सैबाइ, सैंग्वि, स्किरिन, स्क्रोफुले, साइलि, थूजा, थाइरॉ, ट्यूबर। देखिये कर्कट फूलन प्रदाह।

घाव होना—ऐस्टरि, कैलेण्डु, क्लिमै, हीपर, मर्क, पियोनिया, फॉस, फाइटो, साइलि।

हस्तमैथुन बच्चों में, योनिघुण्डी की खुजली के कारण—कैलेडि, जिंक मेट ।

मासिक धर्म से छुटकारा—वय:सन्धिकाल जीवन-परिवर्तन साधारण औषधियाँ—एकोन, एगैरि, एलेट्रि, ऐमिल, एक्विले, आर्जे नाइट्रि, बेला, बेलिस, बोरिक एसिड, कैक्ट, कैल्के आर्स, कैल्के काब, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉलो, सिमि, कॉकु, काफि, कोनि, साइक्लै, फेरम, जेल्से, ग्लोनो, ग्रेफा, हेलोनि, इग्नै, जैबोरै, कैली ब्रा, कैली कार्ब, क्रियोजो, लैके, मैग कार्ब, मैन्सि, म्युरेक्स, नक्स मो, नक्स वो, ऊफोरि, प्लम्ब, पल्से, सैंग्वि, सेम्पर्वि, सीपि, सल्फर, सल्फ एसिड, थेरिडि, अस्टिलै, वैले, वाइपेरा, विस्कम, जिंक, बैल ।

चिन्ता, आकुलता—एको, ऐमिल, सीपिया ।

स्तन बड़े दर्दीले—सैंग्वि ।

चाँद पर जलन—लैके, नक्स वॉ, सैंग्वि, सल्फर ।

हथेली और तलवों की जलन—सैंग्वि, सल्फर ।

रक्ताधिक्य—ऐकोन, ऐमिल, कैल्के कार्ब, ग्लोनो, लैके सैंग्वि, सीपिया, सल्फर, अस्टिलै ।

खाँसी, सीने में जलन, सामयिक स्नायुशूल—सैंग्वि ।

कान पीड़ा—सैंग्वि ।

गशी के हमले—सिमि, क्रोटेल, फेर, ग्लोनो, लैके, सैंग्वि, सीपिया, सल्फर, ट्रिलि ।

बाल झड़ना—सीपिया ।

थकावट, लगातार थकान, गर्भाशय सुन्न—बेलिस ।

थकावट बिना कारण, चालन शक्ति दौर्बल्य, सर्दी—कैल्के कार्ब ।

रक्तप्रवाह, बाढ़ की तरह—एलो, ऐमिल, एपोसा, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, ऑरम म्यूर, कैल्के कार्ब, कैप्सि, सिमि, सिन्को, फेरम, हाइड्रैस्टिनिन, कैली ब्रो, लैके, मेडो, नाइट्रि एसिड, प्लम्ब, सैबाइना, सैंग्वसोर्बा, सेडम, सीपिया, श्लैस्पी, ट्रिलि, अस्टिलै, विन्का । देखिये जरायु रक्त प्रवाह, (मेट्रोरेजिया) ।

फलक के तेजी से, अधिक मात्रा में—एकोन, एमाइल, बेल; बोरिक एसिड, कैल्के कार्ब, सिमिसि, क्रोटैल, डिजि, फेरम, ग्लोनो, इग्नै, जैबोरै, कैली ब्रो, कैली कार्ब, लैके, मैगे ऐसेटि, निकोल सल्फ, नक्स वॉ, ऊफोरि, फॉस्फो एसिड, पिलोका, सैंग्वि, सेडम, सीपिया, स्ट्रान्शि, सल्फर, सल्फ एसिड, सुम्बुल, ट्यूबर, अस्टिलै, वैलेरि, वेरेट्र विरि, वेस्पा, जिंक वैले ।

गुल्म वायु—ऐमिल, लैके, वैले, जिंक वैले ।

सिर दर्द—ऐमिल, कैक्ट, सिमिसि, सिन्को, क्रोकस, साइप्रिपे, फेरम, ग्लोनो, इग्नै, लैके, सैंग्वि, सीपिया, स्ट्रान्शि कार्ब ।

हिस्टीरिया की सम्भावना—इग्ने, वैलेरि, जिक वैले।

प्रदाहित दर्द—सिमिसि।

जिगर की खराबी—कार्डु मैरि।

उदासी मानसिक चिन्ता विड़विड़ापन—सिमिसि, इग्ने, कैली ब्रो, लैके, मैन्सिन, सोरी, वैले, जिंक वैले।

स्नायविक उत्त जना—ऐबसिन्थि, आर्जे नाइट्रि, सिमि, कॉफि, डिजि, इग्नै, कैली ब्रो, लैके, ऊफोरि, थेरीडि, वैले, जिंक वैले।

गर्भाशय में दर्द—एगैरि, सिमिसि, कॉकु, लैके, पल्से, सीपि।

दिल धड़कन—एमाइल, कैल्के आर्स, फेरम, ग्लोनो, कैली ब्रो, लैके, सीपि, ट्रिलि, वैले।

पसीना अधिक—ऐमाइल, बेल, क्रोटैल, हीपर, जैबोरै, लैके, नक्स वॉ, सीपि, टिलिया, वैले।

अति खाज—कैलेडि।

लार बहना—जैबोरै।

कामोत्तेजना—मैन्सिन, म्यूरेक्स।

पेट में घँसन संवेदन—सिमिसि, क्रोटैल, डिजि, हाइड्रोसि एसिड, इग्नै, सीपिया, ट्रिलि।

निचले अंगों पर छिछले घाव—पोलिगो।

चक्कर, कम्पन—ग्लोनो, लैक, ट्रिलि, अस्टिलै।

कमजोरी—डिजि, हेलोनि, लैके, सीपि।

मासिक-धर्म प्रकार—रुक जाना (बिना समय के, अप्राकृतिक) साधारण औषधियाँ—एकोन, एलेट्रि, इग्नस, ऐपिस, एपोसाइ, आर्स, ऐवेना, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैने सै, कॉलो, कॉस्टि, सिमिसि, कोनियम, साइक्लै, डल्का, युफ्रैसि, फैरम आर्स, फेरम मेट, फेरम आयोड, जेल्से, ग्लोनो, ग्रैफा, हेडेओमा, हेलेबो, हेलोनि, जोनोसिया, कैली कार्ब, कैली परमैंगे, लिलि टिग्रि, मैंगै एसेडि, मर्क पेरे, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपियम, रमैंगे, ओवा टो, पार्थे, फॉस एसिड, पाइनस, लैम्बर, प्लैटि, प्लम्ब, पोलिगो, पल्से, सिकेलि, सेनेसि, सीपि, स्पॉन्जि, सल्फर, टैनेसे, थाइरो, अस्टिलै, जैन्थो।

उचित अवस्था से पहले—कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कार्बो वेज, सिन्को, कॉकु, सैबै, साइलि, वेरेट्र एल्ब।

देर में पहला मासिक-धर्म—कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, फेरम, ग्रैफा, कैली कार्ब, कैली पर, पोलिगो, पल्से, सेनेसि, सीपि, टरनेरा।

देर में धीरे धीरे बहना—ऐकोन, एलैट्रि, कॉस्ट, सिमिसि, कोनि, क्युप्रम मेट, डल्का, युफ्रैशि, फेरम सिटि, स्ट्रिक, जेल्से, ग्लोनो, गोसिपो, ग्रेफा, हेलेबो, आयोड, जोनोसि, कैली कार्ब, कैली म्यूर, कैली फॉ, कैली सल्फ, लैक डि, मैग कार्ब, नैट्र म्यूर, नक्स मो, फॉस, प्युलेक्स, पल्से, रेडियम, सैबेडि, सेनैसि, सीपि, सल्फर, थ्लैस्पि, वैलै, वाइबर्नम ओपू, जिंक।

रुक-रुक कर—क्रोकस, फेरम मेट, क्रियोजो, लैक कैने, मैग सल्फ, मेलि, म्युरेक्स, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, सैबैडि, सीपिया, सल्फर, जैन्थ।

क्रम-भ्रष्ट—ऐम्ब्रा, कॉलो, सिमि, कॉकु, साइक्लै, ग्रैफा, आयोड, जोनोसिया, लिलि टिग्रि, नक्स मॉ, फॉस, पिसिडिया, पल्से, रेडियम, सिकेलि, सेनेसियो, सीपिया, सल्फर।

देर तक जारी रहे—ऐकोन, कैल्के सल्फ, कास्टि, कोनियम, क्रोटै, क्यूप्रम मेट, फेरम, ग्रैफा, आयोड, क्रियाजो, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फॉस, रस टॉ।

कम बहना—ऐलेट्रि, ऐलम, एपिस, बर्बे वल, बोरै, कैन्थे, कॉलो, कॉस्टि, सिमिसि, कोकु, कोनियम, साइक्लै, डल्का, युफ्रैशिया, फेरम सिट स्ट्रिक, जेल्से, ग्रैफा, इग्नै, कैली कार्ब, कैलि फॉस, कैली सल्फ, लैके, लैमिना, लिलि टिग्रि, मैग कार्ब, मैगे ऐसेटि, मेलिलो, मर्क पर, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओलि ऐनि, फॉस, प्लैटि, पल्से, सैंग्वि, सेनेसि, सीपिया, साइलि, सल्फ, वैलै, वाइबर्न ओपू, जैन्थो। देखिये कष्टदायक मासिक धर्म।

दब जाना—ऐकोन, एपिस, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, सियोनोथ, कैमो, चिओनैन्थ, सिमिसि, कोनि, क्रोकस, क्युप्रम, साइक्लै, डल्का, फेरम फॉ, जेल्से, ग्लोनो, ग्रैफा, हेलोनि, इग्नै, कैली कार्ब, कैली म्यूर, लैके, लिओनोरस, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, ओपियम, पोडो, पल्से, पल्से नटा, सेनेसि, सीपि, सल्फर, टैनैसे, टैक्सस, ट्यूबर, वेरेट्र विरि, जिंक।

रक्तहीनता के कारण दब गये हों—आर्स आयोड, आर्स, कॉस्ट, फेरम आर्स, फेरम सिट स्ट्रिक, फेर आयोड, ग्रैफा, कैली कार्ब, कैली परमैंगे, कैली फॉ, मैग ऐसेटि, नैट्र म्यूर, ओवा टोस्टा, पल्से, सेनेसि।

क्रोध और घृणात्मक कोप के कारण से मासिक-धर्म का दब जाना—कैमो, कोडोनम, स्टैफि।

ठण्डे पानी से; ठण्डक लगने, शीत आने से दब जाना—ऐकोन, एण्टि क्रू, बेल, कैल्के कार्ब, कैमो, सिमिसि, कोनि, डल्का, ग्रैफा, लैक कैने, लैक डि, फॉस, पल्से, रस टॉ, सल्फर, वेरेट्र विरि, जैन्थ।

प्रेमोल्लंघन के कारण दब जाना – हेलेबो।

डर जाने से, चिढ़ने से दब जाना—ऐक्वि हिप, ऐकोन, सिमिसि, कैलो, लाइको, ओपि, वेरेट्र ऐल्ब।

क्षणित, स्थानीय, गर्भाशयिक, प्रदाह व रक्त सञ्चयता, बाद में जीर्ण रक्तहीनता की अवस्था के कारण दब जाना—सैबाल।

विदेश की यात्रा या अपना देश छोड़ कर अन्य देश को जाने वालों में दब जाना—ब्रायो, प्लैटि।

दमा रोग के साथ दब जाना—स्पॉञ्जि।

मस्तिष्क प्रदाह के साथ दब जाना—ऐकोन, एपिस, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, सिमिसि, जेल्से, ग्लोनो, लैके, सोरी, सीपिया, सल्फर, वेरेट्र विरि।

सीने में रक्ताधिक्यता के साथ दब जाना—ऐकोन, कैल्के, कार्ब, सीपिया।

सीने तक ऐंठन के साथ दब जाना—क्युप्रम मेट।

सन्निपात, उन्माद के साथ दब जाना—स्ट्रैमो।

निद्रालुता, गशी, औंघाई के साथ दब जाना—कैली कार्ब, नक्स मॉ, ओपि।

शोथ के साथ दब जाना—एपिस, एपोसाइ, कैली कार्ब।

पेट दर्द या आक्षेप के साथ दब जाना—कॉकु।

कामला रोग के साथ दब जाना—चिओनैन्थ।

सिर और चेहरे में स्नायुशूल के साथ दब जाना—जेल्से।

चक्षु-प्रदाह के साथ दब जाना—पल्से।

डिम्बाशय प्रदाह शूल के साथ दब जाना—ऐकोन, सिमिसि।

विटप दाब और डिम्बाशय कोमलता के साथ दब जाना—ऐण्टि क्रू, बेल।

पिटपीय कूथन के साथ दब जाना—पोडो।

वात पीड़ा के साथ दब जाना—ब्रायो, सिमिसि, रस टॉ।

असामयिक रक्तस्राव के साथ दब जाना—ब्रायो, क्रोट, डिजि, एरिजे, युपियन, फेरम, हैमे, इपिका, कैली कार्ब, लैके, मिलिफो, नैट्र सल्फ, फॉस, पल्से, सैबेड, सैंग्वि, सेनेसि, साइलि, सल्फर, ट्रिलि, अस्टिलै।

पीड़ामय मासिक-धर्म—साधारण औषधियाँ—ऐसिटान, ऐकोन, ऐमो एसेटि, एपिओलिन, एपिस, एपियम ग्रै, इक्विसे, ऐट्रोपि, ऐवेना, बेल, बोरैक्स, बोविस्टा, ब्रोमि, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कैस्टोरियम, कॉलो, कैमो, सिमिसि, कॉक्स, कॉफिया, कोलिन्सो, कोलो, क्रोकस, क्युप्रम मेट, डल्का, एपिफे, फेरम, फेरम फॉस, जेल्से, ग्लानो, नैफेलि, गोसिपि, ग्रैफा, गुवाइक, हैमे, हेलोनि। हायोस, इग्ने, कैली परमैं, लैके, लिलि टिग्रि, मैक्रोटिन, मैग कार्ब, मैगम्यूर, मैग फॉस, मर्क, मिलिफो,

मोर्फि, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपियम, प्लैटि, पल्से, रस टॉ, सैबाइना, सैंग्वि, सैण्टो-नाइ, सिकेलि, सेनेसि, सिपि, स्ट्रैमो, थाइरॉय, ट्युबर, अस्टिलै, वेरेट्र ऐल्ब, वेरेट्र विरि, वाइबर्न ओपू, वाइबर्न प्र, जैन्थ, जिंक।

प्रकार—क्रम-भ्रष्ट हर दो हफ्ते पर या उसके लगभग—बोरैक्स, बोविष्टा, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, क्रोक, फेरम फॉस, हेलोनि, इग्नै, मैग सल्फ, मेजे, म्यूरेक्स, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, फाइटो, सैबाइना, सिकेलि, थ्लैस्पि, ट्रिलि, अस्टिलै।

क्रम-भ्रष्ट—ऐमो कार्ब, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कालो, सिमि, कॉकु, फाइजॉस्टि, पल्से, सिकेलि, सेनेसि, सीपिया। देखिये रुकना।

झिल्लीदार—आर्स, बेल, बोरैक्स, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के एसेटि, कैल्के कार्ब, कैमो, कोलिन्सो, कोनि, साइक्लै, गुवाइक, हलियोट्री, लैक कैन, मैग फॉ, मर्क, रस टॉ, सल्फर, अस्टिलै, वाइबर्न ओपू।

बिना रुकावट, डिम्बाशय की उत्तेजना के कारण—एपिस, बेल, हैमो, जैंथक।

बिना रुकावट, गर्भाशयिक उत्तेजना के कारण—कैमो, कॉफिया, नाइट्रि एसिड, जैन्थो।

नियत काल के पहले—एमो कार्ब, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, कॉकु, कोनि, साइक्ले, इग्नै, कैली कार्ब, लैमिना, लिलि टिग्रि, मैग फॉस, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओलि ऐन फॉस, सैबाइना, सीपिया, सिनापि नाइ, साइलि, सल्फर, जैन्थो। देखिये क्रम भ्रष्ट।

वात रोग सम्बन्धी—कॉलो, कॉस्टि, सिमिसि, कॉकु, गुवाइक, रैमनस, कैलि।

आक्षेपिक स्नायुशूल-ऐकोन, ऐगैरि, बेल, कॉलो, कैमो, सिमिसि, कोफि, कोलिन्सो, जेल्से, ग्लोनो, नैफै, मैग म्यूर, मैग फॉस, नक्स वॉ, पल्से, सैबाइ, सैण्टो, सिकेलि, सेनेसि, सीपिया, वेरेट्र विरि, वाइबर्न ओपू, जैन्थो।

आक्षेपिक, गर्भाशय रक्ताधिक्य—ऐकोन, बेल, सिमिसि, कोलिन्सो, जेल्से, पल्से, सैबाइना, सीपिया, वेरेट्र विरि।

अधिक मासिक-धर्म प्रवाह (मात्रा में अधिक, समय से पहिले)—साधारण औषधियाँ—ऐचिल, ऐगैरि, ऐलेट्रि, ऐलो, ऐम्ब्रा, ऐमो कार्ब, ऐपीसाइ, ऐरैन, आर्न, आर्स, बेल, बोरै, बोवि, ब्रायो, कैल्के, फेल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैमे इण्डि, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉलो, सियानोथ, कैमो, चिनि सल्फ, सिमिसि, सिन्को, सिनाको, कोलिन्सो, कोलो, क्रोकस, साइक्लै, डिजि, एरिजे, फेरम मेट, फेरम फॉ, फेरम आयोड, फिकस, जेरैनि, ग्लीस, हैमे, हेलोन, हाइड्रै, इग्नै, जोनोसि, कैली कार्ब, कैली म्यूर, क्रियोजो, लैके कैने, लैके, लेडम, लिलि टिग्रि, मैग का, मेजै, लिलेफो,

म्यूरेक्स, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पैले, पैरैफि, फॉस एसि, फॉस, फाइटो, प्लैटि, प्लम्ब, रूटा, सैबाइ, सिके, सेडम, सीपि, साइलि, स्टैन, सल्फ ऐस, सल्फर, थ्लैस्पि, ट्रिलि, अस्टिलै, विन्का, जैन्थ।

गर्भपात के बाद, प्रसव के बाद—एपिस, सिमि, सिन्को, हेलोन, कैली का, नाइट्रि एसिड, सैबाइना, सीपि, सल्फर, थ्लैस्पि, अस्टिलै, वाइबर्न ओपू।

अन्तर देकर अधिक प्रवाह—थ्लैस्पि।

देर तक जारी रहे समय से पहले अधिक मात्रा में—एलो, ऐसेर, बेल, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कार्बो ऐन, सिनामो, कोफि, फेरम ऐसटि, फेरम मेट, फ्लोर ऐस, ग्लीसरीन, गैटिओ, इग्नै, क्रियोजो, मिलेफो, म्युरेक्स, नक्स वॉ, ओनोस्मो, प्लैटि, रैफे, रस टॉ, सैबाइना, सैंग्वि, सोर्बा, सिकेलि, सल्फ, थ्लैस्पी, ट्रिली, ट्यूबर, जैन्थो।

खून का विवरण तेजाबी—छिलब पैदा करने वाला—ऐमो, कार्ब, कैली का, लैके, मैग का, नैट्र सल्फ, नाइट्रि ऐसि, रस टॉ, सैबाइ, साइलि, सल्फर।

गहरा लाल—ऐकोन, बेल, ब्रोमि, कैल्के फॉ, सिनामो, ऐरिजे, ग्लसरीन, फेरम फॉस, इपिका, लैक, कैने, मिलेफो, सैबाई, सैंग्वि, ट्रिलि, अस्टिलै।

बदलने वाला—पल्से।

जमा हुआ थक्केदार—ऐमो म्यूर, बेल, बोवि, कैमो, सिमि, सिन्को, कॉकु, कॉक्कस, कोफि, क्रोक, साइक्लै, ग्लीस, हेलोनि, जुग्लैंरे, कैली म्यूर, लिलि टिग, मैग म्यूर, मेडो, म्युरेक्स, नक्स वॉ, प्लैटि, प्लम्ब, पल्से, सैबाइ, सैंग्वि, सल्फर, थ्लैस्पी, ट्रिलि अस्टिलै।

गहरे रंग का कालापन—एपिस, ऐसैरि, बोवि, कैल्के फॉ, कैन्थे, कॉलो, कैमो, सिमि, सिन्को, कॉकु, कॉक्कस, कॉफि, क्रोक, साइक्लै, इलैप्स, हैमे, हेलोन, इग्नै, कैली म्यूर, कैली नाइट्रि, क्रियोजो, लैके, लिलि टि, मैग कार्ब, मैग म्यूर, मैग फॉ, मेडो, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, प्लैटि, प्लम्ब, पल्से, सैबाइ, सिकेलि, सीपि, थ्लैस्पी, ट्रिलि, आस्टिलै, जैन्थो।

गरम—बेल।

झिल्लीदार, मांस के धोवन की तरह—ब्रोमि, साइक्लै, फेरम मेट, नैट्र कार्ब, नाइट्रि एसिड। देखिये थक्केदार।

घृणित—बेल, कार्बो वेज, सिमि, कोपेवा, हेलोनि, कैली कार्ब, कैली फॉस, लिलि टि, मैग कार्ब, मेडो, प्लैटि, सोरी, पाइरो, सैबाइ, सैंग्वि, सिकेल, वाइबर्न ओपू।

हल्का पीला—ऐलम, आर्स, कार्बो वेज, फेरम मेट, ग्रैफा, कैली कार्ब, नैट्र फॉस, पल्से, सल्फर। देखिये पानी-सा।

कुछ भाग पतला, कुछ भाग थक्केदार—फेरम, हैमा, प्लम्ब, सैबाइ, सिकेलि।

पिच की तरह—कैक्ट, कॉकु, क्रोक, कैली म्यूर, मैग कार्ब, मेडो, प्लैटि।

तारदार, चमकीला गाढ़ा—आर्जे नाइट्रि, कॉक्कस, क्रोक, कैली म्यूर, क्रियोजो, लैक कैना, मैग कार्ब, मैग फॉस, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, प्लैटि, पल्से, सल्फ, ट्रिलि, अस्टिलै, जैन्थो।

पानी-सा पतला—इथू, एलुमेन, युपियन, फेरम ऐसेटि, फेरम मेट, गोसिपि, कैली फॉ, नैट्र फॉस, सैबाइ, सिकेलि।

शुरू होने के पहले और दौरान के लक्षण—पेट तना हो—ऐपोसाइ, एरैनि, कैमो, सिन्को, कॉक्कु, कैली कार्ब, क्रियोजो, नक्स वो। देखिये पेट, उदर।

उदर में चोटीलापन, दर्दीला—हैमे, सीपिया। देखिये उदर।

उदर में बोझ—एको, बेल, ग्लिसरीन, कैली सल्फ, पल्से, सीपिया।

गुदा में दर्द—आर्स, म्यूरि एसिड। देखिये गुदा।

स्वर-लोप, स्वर भंग—जेल्से, ग्रैफा।

दमा के आक्रमण से सोते से जाग जाये—क्युप्रम, आयोड, लैके, स्पॉन्जि।

काँख, कच्छ में खाज—सैंग्वि।

पीठ दर्द, बीमारी जैसी तबीयत—कैली कार्ब।

अन्धापन—साइक्ले, पल्से।

स्तन बरफ जैसे ठण्डे—मेडो।

मासिक धर्म की जगह, स्तनों में दूध हो—मर्क बाइ।

स्तन फूले हुए, कोमल—ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कोनि, ग्रैफा, हेलोनि, कैली कार्ब, लैके कैने, मैग कार्ब, म्युरेक्स, फाइटो, पल्से, सैंग्वि।

हाथों और तलवों में जलन—कार्बो वेज।

कड़ापन, अकड़न—मॉस्कस।

शीत कम्प—ऐमो कार्ब, एपिस, कैल्के कार्ब, कैमो, ग्लीस, ग्रैफा, नक्स वॉ, प्लैटि, पल्से, सिकेलि, सीपि, साइलि, वेरेट्र एल्ब।

हैजे की तरह लक्षण—एमो कार्ब, बोवि, वेरेट्र ऐल्ब।

जुकाम, सर्दी—मैग कार्ब, सीपिया।

कब्ज—एमो कार्ब, कोलिन्सो, ग्रैफा, नैट्र म्यूर, नक्स वो, प्लैटि, प्लम्ब, सीपिया, साइलि, सल्फर।

खाँसी—ग्रैफा, लैक कैने, सल्फर।

बहरापन, टनटनाहट—क्रियोजो।

दस्त—एमो कार्ब, एमो म्यूर, आर्स, बोवि, कैमो, क्रियोजो, फॉस, पल्से, वेरेट्र एल्ब।

नकसीर—एकोन, ब्रायो, डिजि, जेल्से, नैट्र सल्फ, सीपिया, सल्फर ।

स्फोट—ऐलियम सैटाइ, बेल, बेलिस, कैल्के कार्ब, सिमि, कोनि, डल्का, युजी, जैम, ग्रैफा, कैली आर्स, कैली कार्ब, मैग म्यूर, मैंगे ऐसेटि, मेडो, सोरि, सैंग्वि, सारसा, साइलि, थूजा, वेरेट्र एल्ब ।

अन्धापन या जलते चक्रत्ते दिखाई देना—साइक्लै, सीपि ।

आँखों से जलन—निकोल ।

द्वि-दृष्टि—जेल्से ।

चक्षु-प्रदाह, आँख उठना—पल्से ।

चेहरा भरभराया, सुर्ख—बेल, कैल्के फॉस, फेरम मेट, फेरम फॉस, जेल्से, सैंग्वि ।

चेहरा पीला, हल्का, रक्तहीन, आँखें बैठी, धँसी हुई—साइक्लै, इपिक, वेरेट्र एल्ब ।

पैर और गाल फूले हुए—एपिस, ग्रैफा ।

पैर ठण्डे, तर नम—कैल्के कार्ब ।

पैरों में दर्द—एमो म्यूर ।

पैर फूले हुए—ग्रैफा, लाइको, पल्से ।

गरम लहरें—फेरम, ग्लोनो, लैके, सैंग्वि, सल्फर ।

घबराहट, आवेग—एकोन ।

जननेन्द्रिय उत्तेजनीय—एमो कार्ब, कॉकु, लैके, कैली कार्ब, प्लेटि । देखिये योनि का कष्टपूर्ण आक्षेप, (वेजाइनिसमस) ।

सिर दर्द, रक्ताधिक्य के लक्षण—ऐस्टेरि, बेल, ब्रायो, सिमिसि, कॉकु, साइक्लै, फेरम मे, फेरम फॉ, जेल्से, ग्लोनो, ग्रैफा, कैली फॉस, क्रियोजो, लैक कैना, लैके, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पल्से, सैंग्वि, सीपि, सल्फर, अस्टिलै, वेरेट्र वि, जैन्थो ।

दिल में दर्द, धड़कन इत्यादि—कैक्ट, क्रोटे, युपियन, लैके, लिथिका, सीपि, स्पॉन्जिया ।

आवाज भारी होना, जुकाम, पसीना—ग्रैफा ।

भूख—स्पान्जिया ।

हिस्टीरिया के लक्षण—कॉलो, सिमिसि, जेल्से, इग्नै, मैग म्यूर, नक्स वॉ, प्लैटि, पल्से, सेनैसि, वाइबर्न ओपू ।

गला, सीना, मूत्राशय प्रदाह—सेनेसियो ।

अनिद्रा - एगारिकस, सेनेसिओ।

चिड़चिड़ापन—कैमो, कॉकु, युप्रियन, क्रियोजो, लिलि टि, लाइको, मैग म्यूर, नक्स वॉ।

जोड़ों में दर्द—कॉलो, सैबाइना।

भगोष्ठों में जलन—कैल्के कार्ब।

आँखों से पानी बहना, आँख-नाक की जुकामी स्राविक अवस्था—युफ्रैसि।

प्रदर—बैराइटा का, बोरै, कैल्के का, कार्बो वेज, कॉस्टि, ग्रैफा, आयोड, नैट्र म्यूर, पल्से।

प्रदर, तेजाबी, तीखा—लैके, सीपि।

उन्माद ताण्डव रोग—सिमिसि।

उन्माद कामात्मक—कैने इण्डि, डल्का, प्लैटि, स्ट्रैमो, वेरेट्र एल्ब।

प्रातःकालीन रोग मिचली, कै इत्यादि—एमो म्यूर, बोरै, कॉकु, साइक्लै, ग्रैफा, इक्थियो, इपिका, क्रियोजो, मेलिलो, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पल्से, सीपि, थ्लैस्पि, वेरेट्र एल्ब।

मुँह दर्दीला, मसूढ़े सूजे, कान फूले, घाव में से खून बहे—फॉस।

मुँह, जबान, गला सूखा, खासकर सोने में—नक्स मॉ, टैरे हिस्पा।

स्नायविक बाधायें बेचैनी—एकोन, कैमो, कॉलो, सिमिसि, इग्ने, क्रियोजो, लैके, मैग म्यूर, मैग फॉस, नाइट्रि एसिड, पल्से, सैलिक्स नाइग्रा, सेनेसि, सीपिया, ट्रिलि, वाइबर्न ओपू, जैन्थॉक।

स्तन और स्तन-घुण्डी बरफ की तरह ठंडी—मेडो।

पुराने लक्षण बढ़ जायें—नक्स वॉ।

हरकत से बायें डिम्बाशय प्रदेश की जलन और पीड़ा अधिक हो—क्रोकस, थूजा, अस्टिलै।

दर्द शूल जैसा, प्रसव जैसा, आक्षेपिक—एलेट्रि, एलो, एमो का, एमो म्यूर, एपिस, बेल, बोरै, ब्रोमि, कैल्के का, कालो, कैमो, सिमिसि, सिन्को, कॉकु, कॉफि, कोलो, क्युप्रम मेट, साइक्लै, फेरम मेट, फेरम फॉस, जेल्से, ग्रैफा, हेलोनि, हीमेटॉक्स, इग्नै, जानोसिया, कैली का, क्रियाजो, लिलि टिग्रि, मैग का, मैग म्यूर, मैग फॉ, मेडो, मेलिलो, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, प्लैटि, पल्से, सैबाइ, सिकेलि, सीपिया, स्टैन, थ्लैस्पि, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र विरि, वेस्पा, वाइबर्न ओपू, जैन्थॉक।

दर्द, वस्तिगह्वर के चारों तरफ बढ़े, पिठासे से पेडू तक—प्लैटि, पल्से, सीपिया, वाइबर्न ओपू।

दर्द, कटि प्रदेश, जाँघों; टाँगों तक बढ़े--एमो म्यूर, बर्बे वल, ब्रायो, कैस्टोरि, कॉलो, कैमो, सिमिसि, कॉफि, कोलो, कोनि, जेल्से, ग्रैफा, लिलि टिग्रि, मैग का, मैग म्यूर, नाइट्रि एसिड, प्लैटि, सीपि, वाइबर्न ओपू, जैन्थॉक।

दर्द, वस्तिगह्वर के आरपार भीतर से बाहर की तरफ या एक तरफ से दूसरी तरफ बढ़े बेल।

दर्द, पीठ, त्रिकास्थि, रीढ़ की अन्तिम अस्थि तक बढ़े—एमो कार्ब, एमो म्यूर, एसैर, बेल, बोरै, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कॉस्टि, कैमो, साइक्यूटा, सिमिसि, क्युप्रम मेट, साइक्लै, जेल्से, ग्रैफा, हेलोनि, कैली, कार्ब, क्रियोजो, मैग म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, प्लैटि, पोडो, पल्से, रेडियम, सैबाइ, सैनेसि, सीपि, स्पॉन्जि, वाइबर्न ओपू, जैन्थॉक।

दर्द, सीने तक बढ़े—कॉलो, कैमो, सिमिसि, क्युप्रम मेट।

दर्द, पुट्ठों तक बढ़े—बोरै, कॉलो, कैली कार्ब, लिलि टिग्रि, प्लैटि, टैनेसे, अस्टिलै।

दर्द, जिगर तक बढ़े—फॉस एसिड।

दर्द, विटप देश तक बढ़े—एलनस, बोवि, कॉलो, साइक्लै, रेडियम, सैबाइना, सीपिया, वाइबर्न ओपू।

दर्द, मलाशय तक बढ़े—एलो, जेरोफाइल।

दर्द, पैरों में—एमो म्यूर।

दर्द, जबड़ों की हड्डी में—स्टैन।

दर्द, डिम्बाशय में—एपिस, बेल, ब्रायो, कैक्ट, कैन्थे, सिमिसि, कोलो, हैमे, आयोड, जोनोसि, कैलीनाइ, लैके, लिलि टिग्रि, पिक्रि एसिड, सैलिक्सनाइ, टैरे हि, थूजा, वाइबर्न ओपू।

तीव्र खुजली—कैल्के कार्ब, ग्रैफा, हीपर, इनूला, कैली कार्ब, साइलि, सल्फ।

गुदा और मूत्राशय में उत्तेजना—सैबाइना।

उदासी शोकग्रस्त—एमो कार्ब, ऑरम, ब्रोमि, कॉस्टि, सिमिसि, कॉक्कु, फेरम, हेलेबो, हेलोनि, इग्नै, लाइको, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, फॉस, प्लैटि, पल्से, सीपिया, स्टैन, वेस्पा।

लार बहना—प्यूलेक्स।

कामातुर—प्लैटि।

गल-क्षत—कैन्थे, लैक कैना, मैग कार्ब।

आक्षेप, झटके—आर्टीमिसि, ब्यूफो, कैल्के सल्फ, कॉलो, सिमिसि, क्युप्रम मेट, जेल्से, हायोस, इग्ने, कैली ब्रो, लैके, मैग म्यूर, एनैन्थी, प्लैटि, टैरे हि।

पेट में गड़बड़ी—आर्जे मेट, आर्स, ब्रायो, कैली का, लैके, लाइको, नक्स मॉ, नक्स वॉ, पल्से, सीपि, सल्फर ।

अँगड़ाई लेना, जम्हाई आना—एमो कार्ब, पल्से ।

मूर्च्छा—आर्स, सिन्को, इग्नै, मॉस्कस, नक्स मॉ, नक्स वॉ, वेरेट्र एल्ब ।

कानों में टनटनाहट—फेरम, क्रियोजो ।

दाँत दर्द—एमो कार्ब, कैल्के कार्ब, कैमो, मैग कार्ब, पल्स, सीपि ।

मूत्र सम्बन्धी लक्षण—कैल्के फॉ, कैन्थे, कॉक्कस, जेल्से, हायोस, मैग फॉस, मेडो, नक्स वॉ, प्लैटि, प्यूलेक्स, पल्से, सेनेसि, सीपिया, वेरेट्र वि, वाइबर्न ओपू ।

चक्कर—कैल्के कार्ब, साइक्लै, नक्स वॉ ।

कमजोरी—एल्यूमि, एमो कार्ब, कार्बो ऐनि, सिन्को, कॉकु, फेरम मेट, ग्लीसरीन, ग्रैफा, हेलोनि, हेमाटॉक्स, इग्नै, आयोड, निकोल, पल्से, वेरेट्र एल्ब ।

मासिक-धर्म के बाद वाले लक्षण—दस्त ग्रैफा, पल्से ।

स्नायु को अति उत्तेजना, स्नायुशूल, प्रदाह, पीड़ा, अनिद्रा—सिमिसि ।

चर्मोद्भेद - क्रियोजो ।

सिर दर्द—क्रोकस, लैके, लिलि टिग्रि, पल्से, सीपि ।

सिर दर्द, थरथराहट, टपकन, आँखें दर्दीली, प्रदाहग्रस्त - नैट्र म्यूर ।

बवासीर – कॉकुलस ।

हिस्टीरिया के लक्षण—फेरम मेट ।

प्रदर—इस्कियू, एलुमिना, ग्रैफा, क्रियोजो, नाइट्रि एसिड । देखिये प्रदर ।

स्तन फूले हुए दूध जैसा स्राव—साइक्लै ।

पुराने लक्षण बढ़े—नक्स वॉ ।

डिम्बाशय में पीड़ा– जिंक मेट ।

दर्द, दो मासिक काल के बीच वाले समय में—ब्रायो, हैमे, आयोड, क्रियोजो, सीपिया ।

अति खाज - कोनियम, लाइको, टैरे हिस्पे ।

कभी-कभी कुछ दिनों के बाद दिखाई दिया करे—बोरै, बोवि ।

कै होना—क्रोटे ।

घोर कमजोरी—एलुमि, एमो कार्ब, एमो म्यूर, आर्स, कैल्के कार्ब, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, सिमिसि, सिन्को, कॉकु, फेरम, ग्लीसरीन, ग्रैफा, आयोड, इपिका, कैली कार्ब, मैग कार्ब, फॉस, थ्लैस्पि, ट्रिलि, वेरेट्र एल्ब, विन्का ।

घटना-बढ़ना : बढ़ना रात में—ऐमो का, ऐमो म्यूर, बोटै, बोवि, कॉक्कस, मैग कार्ब, मैग म्यूर, जिंक ।

बहाव के समय—सिमिसि, हैमे, क्रियोजो, पल्से, ट्युबर।

उत्तेजना से—कैल्के कार्ब, सल्फर, ट्युबर।

लेटने से, आराम से—ऐमो कार्ब, ऐमो म्यूर, बोवि, साइक्लै, क्रियोजो, मैग कार्ब, जिंक।

हरकत से—बोवि, ब्रायो, कैन्थे, कॉस्टि, एरिजे, लिलि टि, मैग फॉ, सैबाइ, सिकेलि, थ्लैस्पि, ट्रिलि।

सोने से—मैग कार्ब।

सुबह को, दिन में—बोरै, कैक्ट, कार्बो एसिड, कॉस्टि, साइक्लै, लिलि टि, पल्से, सीपिया।

कम होना, घटना—बहाव शुरू होने से—एस्टेरि, सेरियन ऑक्नै, साइक्लै, यूपियन, लैके, मैग फॉस, सेनेसि, जिंक।

ठण्डी चीज पीने से—क्रियोजो।

गरम प्रयोग से—मैग फॉस।

लेटने से- बोवि, कैक्ट, कॉस्टि, लिलि टिग्रि।

हरकत से—एमो म्यूर, साइक्ले, क्रियोजो, मैग कार्ब, सैबाइना।

कामोन्माद—ऐम्ब्रा, ऐस्टेरि, बैराइटा म्यूर, कैल्के फॉ, कैम्फो, कैन्थे, कोका, डल्का, फेरुलासि, ग्लॉक्रा, क्लोरिक एसिड, ग्रैटि, हायोस, कैली ब्रो, लैके, लिलि टि, म्यूरेक्स, ओरिजे, फॉस, प्लैटी, रैफै, रोबीनि, सैलिक्स नाइग्रा, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्न, टैरे हिस्पै, वैलै, वेरेट्रम एल्ब।

डिम्बाशय—फोड़ा—सिन्को, हीपर, लैके, मर्क, फॉस एसिड, पाइरो, साइलि।

क्षीणता—आयोड, ऊफोरि, ऑर्किट।

डिम्बाशय में नश्तर लगवाने के समय या बाद के लक्षण—आर्स, बेले, ब्रायो, सिन्को, कॉफि, कोलो, हाइपेरि, इपिका, लाइको, नाजा, नक्स वॉ, ऊफोर, आर्किट, स्टैफि।

रक्ताधिक्य—एकोन, इस्कियु, एलो, एमो ब्रो, एपिस, आर्जे नाइट्रि, बेल, ब्रायो, कैन्थे, सिनिसि, कोलो, कोनि, जेल्से, हैमे, आयोड, लिलि टि, मर्क, नाजा, नैट्र क्लोर, सीपि, टैरे हिस्पै, अस्टिलै, वाइबर्न ओपू। देखिये प्रदाह।

मूत्राशय में जल सञ्चित होना, शोथ (Dropsy)—एपिस, एपोसाइ, आर्न, आर्स, ऑरम आयोड, ऑरम म्यूर नैट्रो, बेल, बोविस्टा, ब्रायो, सिन्को, कोलो, कोनि, फेरम आयोड, ग्रैफा, आयोड, कैली ब्रो, लैके, लिलि टिग्रि, लाइको, मेडो, ऊफोरि, रोडो, सैबाइना, टैरैबि, जिंक।

कड़ापन—ऑरम, ऑरम म्यूर नैट्रो, कार्बो ऐनि, कोनि, ग्रैफा, आयोड, लैके, पैलै, प्लैटि, अस्टिलै।

प्रदाह तीव्र—एकोन, ऐमो ब्रो, एपिस, बेल, ब्रायो, कैक्ट, कैन्थे, सिमिसि, कोलो, कोनि, फेरम फॉ, गुवाइक, हैमे, आयोड, लैके, लिलि टिग्रि, मर्क कार, मर्क, फॉस एसिड, प्लैटि, पल्से, सैबाइना, थूजा, विस्कम।

तीव्र, साथ में अन्त्रावरक कला बाधा—ऐकोन, एपिस, आर्स, बेल, ब्रायो, कैन्थे, चिनि सिल्फ, सिन्को, कोलोसि, हीपर, मर्क कार, साइलि।

प्रदाह, जीर्ण साथ में कड़ापन—कोनि, ग्रेफा, आयोड, लैके, पैलेडि, प्लैटि, सैबाल, सीपि, थूजा।

दर्द—छेदन—कोलो, जिंक मेट।

जलन—एपिस, आर्स, ब्यूफो, कैन्थे, कोनि, इयुपियन, फैग.पाइ, कैली नाइट्रि, लिलि टिग्रि, प्लैटि, थूजा, अस्टिलै, जिंक वैले।

ऐंठन वाला, सिकुड़न वाला—कैक्ट, कोलो, नाजा।

कटन, चुभन, फटन—ऐबसिन्थि, एकोन, बेल, ब्रायो, कैप्सि, कोलो, कोनि, क्रोकस, लिलि टि, नाजा, पल्से।

कटन, जाँघों और टाँगों तक बढ़े—ब्रायो, सिमिसि, क्रोकस, लिलि टि, फॉस, पोडो, वायेथि, जैन्थो, जिंक वैले।

धीमा, लगातार—ऑरम ब्रो, हाइड्रोको, निकोल, सीपि।

धीमा, सुन्नपन, टीस—पोडो।

धीमा, गर्भाशय में गुल्ली जैसा मालूम दे—आयोड।

स्नायुशूल—एमो ब्रो, एपिस, ऐपियम ग्रै, ऐट्रोपि, बेल, बर्बे वल, ब्रायो, कैक्ट, कैन्थे, कॉलोफाइ, सिमिसि, कोलोसि, कोनि, फेरम, फेरम फॉस, जेल्से, गॉसिपि, ग्रेफा, हैमे, हाइपेरि, कैली ब्रो, लैके, लिलि टि, मैग फॉस, मेलिलो, मर्क कार, मर्क, नाजा, फाइटो, प्लैटि, पोडो, पल्से, सैबाल, सैलिक्स नाइ, सुम्बुल, स्टैफि, थीया, अस्टिलै, वाइबर्न ओपू, जैन्थो, जिंक वैले।

स्नायुशूल रह-रह कर—गॉसीप, थैस्पियम, जिजिया।

बीधन—एपिस, कैन्थे, कोनि, लिलि टि, मर्क।

थरथराहट, टपक—बेल, ब्रैकिग्लो, ब्रैन्का, कैक्ट, हीपर।

बायें डिम्बाशय में दर्द—एमो ब्रो, एपिस, एपियम ग्रै, आर्जे मेट, कैप्सि, कार्बो एसिड, सिमिसि, कोलोसि, एरिजे, इयुपेटो पर्प्यु, फ्रैक्सि ऐमे, ग्रेफा, आयोड, लैके, लिलि टि, मेडो, म्युरेक्स, नाजा, ओवि गैलि पेलि, फॉस, पिक्रि एसिड, थैस्पियम, थीया, थूजा, अस्टिलै, वेस्पा, वायेथि, जैन्थो, जिंक।

दाहिने डिम्बाशय में दर्द—ऐब्सिन्थि, एपिस, आर्स, बेल, ब्रैन्का, ब्रायो, कोलो, इयुपियन, फैगोपाइ, ग्रैफा, आयोड, लैके, लिलि टि, लाइको, पैले, फाइटो, पोडो, अस्टिलै।

दर्द, गहरा साँस लेने से बढ़े—ब्रायो।

दर्द, टहलने, घुड़सवारी से बढ़े, लेट जाने से कम—कार्बो एसिड, पोडो, सीपि, थूजा, अस्टिलै।

दर्द, बार-बार पेशाब होने के साथ—वेस्पा।

दर्द, सुन्नपन, ऊपर जानेवाली मोटी आँत में दौड़े—पोडो।

दर्द, टाँगों को सिकोड़ने से कम—एपियम ग्रे, कोलो।

दर्द, बहाव जारी होने से कम—लैके, जिंक मेट।

दर्द, दाब से, या कसकर बाँधने से कम हो—कोलो।

दर्द, बेचैनी के साथ शान्त न बैठ न सके—कैली ब्रो, वाइबर्न ओपू, जिंक।

दर्द, साथ में दिल से भी सम्बन्धित लक्षण—सिमिसि, लिलि टि, नाजा।

फूलन—एमो ब्रो, एपिस, बेल, ब्रामि, ग्रैफा, हैमे, लैके, पैले, टैरे हिस्पै, अस्टिलै। देखिये रक्ताधिक्य, प्रदाह।

असह्य, छूना, हिलना—ऐण्टि क्रू, एपिस, बेल, ब्रायो, कैन्थे, कार्बो ऐन, सिमिसि, हैमे, हीपर, आयोड, लैके, लिलि टि, प्लैटि, सैबाल, टेरे हि, थीया, थूजा, अस्टिलै, जिंक वैले।

आघात की अवस्था—आर्न, हैमे, सांरि।

अर्बुद—एपिस, ऑरम म्यूर नैट्रो, बोवि, कोलो, कोनि, ग्रैफा, आयोड, कैली ब्रो, लैके, ऊफोरि, पोडो, सिकेल। देखिये थैली, सिस्ट, (मूत्राशय)।

वस्तिगह्वर सम्बन्धी-फोड़ा—एपिस, कैल्के कार्ब, हीपर, मर्क को, पैलै, साइलि।

कौषिक प्रदाह—एकोन, एपिस, आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैन्थे, सिमिसि, हीपर, मेडो, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, पाइरो, रस टॉ, साइलि, टेरेबिं, टिलिया, वेरेट्र ऐल्ब।

वस्तिगह्वरीय रक्तार्बुद—एकोन, एपिस, आर्न, आर्स, बेल, कैन्थे, सिन्को, कोलो, डिजि, फेरम, हैमे; इपिका, कैली आयोड, लैके, मर्क, मिलेफो, नाइट्रि एसिड, फॉस, सैबाइ, सिकेलि, सल्फर, टेरेबि, थ्लैस्पि।

वस्तिगह्वरीय अन्त्रावरण झिल्ली प्रदाह—एकोन, एपिस, आर्न, आर्स, बेल, ब्रायो, कैन्थे, चिनि सल्फ, सिमिसि, सिन्को, कोलो, जेल्से, हीपर, हायोसि, लैके, मर्क कार, ओपि, पैले, रस टॉ, सैबाइ, सिकेलि, साइलि, टेरेबिं, वेरेट्र विरि। देखिये कौषिक झिल्ली प्रदाह, जरायु-प्रदाह।

वस्तिगह्वरीय अन्त्रावरक प्रदाह, साथ में अति मासिक प्रवाह—आर्स, हैमे, सैबाइना, थ्लैस्पी।

गर्भावस्था, प्रसव-गर्भपात, साधारण औषधियाँ एकोन, एलेट्रि, आर्न, बेल, कैल्के फ्लोर, कॉलो, कैमो, सिमिसि, सिनामो, सिन्को, कॉफि, क्रोक, गॉसिपि, हेलोनि, हायोसि, इपिका, कैली कार्ब, मिलेफो, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपि, पाइनस लैम्ब, पाइरो, रस टॉ, सैबाइ, सिकेलि, सीपिया, टैनेसे, थ्लैस्पि, ट्रिलि, वाइबर्न ओपू।

गर्भपात कमजोरी से—ऐलेट्रि, कॉलो, चिनि सल्फ, सिन्को, हेलोनि, सीकेल।

आँवलनाल के चर्बीलापन की वजह से गर्भपात होना—फॉस।

भयाक्रमण, आवेग की वजह से गर्भपात होना—एकोन, कैमो, सिमिसि, ओपि।

मानसिक उदासी, मानसिक धक्का, मन्द ज्वर, चिन्ता की वजह से—बैप्टि।

डिम्बाशय की बीमारी से—एपिस।

उपदंश विष के अंश की वजह से—ऑरम, कैली आयोड, मर्क कार।

आघात की वजह से—आर्न, सिनामो।

गहरे रंग के खून या तरल पदार्थ से, सुरसुरी से—सिकेलि।

खून के साथ, रुक-रुककर बहे, दर्द, आक्षेप, दम घुटे, गशी, ताजा हवा की इच्छा हो—पल्से।

खून पतला, हल्के रंग का, बिना दर्द—मिलेफो।

खून बहना, लगातार नाइट्रि एसिड, थ्लैस्पि।

दर्द, घड़ी-घड़ी प्रसव की तरह, बिना स्राव—सिकेलि।

दर्द, पिठासे से शुरू होकर उदर के चारों तरफ घूमे, और अन्त में ऐंठन, दबोचन, धँसन, फटन, जाँघों के नीचे तक जाये—वाइबर्न ओपू।

दर्द, पिठासे से, विटप देश तक, हरकत से बढ़े, खून में थक्कों का अंश—सैबाइना।

दर्द, पिठासे से जाँघों तक, पीठ में कमजोरी, हरकत से दर्द बढ़े, बाद में कमजोरी और पसीना भी—कैली कार्ब।

दर्द, उदर के आरपार धमके, दोहरा कर दे, गनगनी, स्तनों में चुभन, कमर में दर्द—सिमिसि।

दर्द, क्रमभ्रष्ट, मन्द, घोर कष्टप्रद, स्राव कम या देर तक जारी रहे, धीरे-धीरे निकले, पीठ दर्द, कमजोरी, आन्तरिक कम्प—कॉलो।

प्रसवान्तर रुका हो—सिन्को, पाइरो।

विषैलापन के साथ—पाइरो।

बाद की रोगी अवस्था—कैली कार्ब, सैबाइ, सल्फर।

गर्भपात की वृत्ति के साथ—ऐलट्रि, एपिस, ऑरम बैसि, कैल्के कार्ब, कॉलो, सिमिसि, हेलोनि, कैली कार्ब, कैली आयोड, मर्क कार, मर्क, प्लम्ब, पल्से, सैबाइ, सिकेलि, सीपि, साइलि, सल्फर, सिफिलि, वाइबर्न ओपू, वाइबर्न प्रू, जिंक मेट।

दूसरे या तीसरे महीने गर्भपात की प्रवृत्ति—सिमिसि, कैली कार्ब, सैबाइ, सिकेल, वाइबर्न ओपु।

गर्भपात का भय, सम्भावना—एकोन, आर्न, बैप्टि, बेल, कॉलो, कैमो, सिमिसि, सिन्को, कॉफि, क्रोकस, इयुपेटो पर्प्यु, फेरम मेट, हेलोनि, मिलेफो, प्लम्ब मेट, पल्से, सैबाइ, सिकेलि, ट्रिलि, वाइबर्न ओपू, वाइबर्न प्र ।

गर्भावस्था के रोग—आरम्भिक महीना में पेट के बल लेटना आवश्यक—एसेटि एसिड, पोडो।

मुँहासे—बेल, सैबाइना, सीपि। देखिये चर्म।

एल्बूमेन की मात्रा मूत्र में अधिक होना एपिस, आर्स, ऑरम म्यूर, क्युप्रम आर्स, जेल्से, ग्लोनो, हेलोनि, इन्डियम, कैलि फ्लोर, कैल्मिया, मर्क कार, फॉस, सैबाइ, थ्लैस्पि, थाइरॉ; वेरेट्र विरि। देखिये गुर्दा (मूत्रयंत्र मण्डल)।

बाँहें गरम, दर्दीला चोटीली—जिंजि।

पीठ दर्द—इस्कियु, कैली कार्ब। देखिये चालन-यन्त्रमण्डल।

पित्त-विकार—चेल।

मूत्राशय की गड़बड़ी, कूँथन—बेल, कैन्थे, कॉस्टि, इक्विसे, फेरम, नक्स वॉ, पॉपू ट्रे, पल्से, स्टैफि।

स्तन, प्रदाहित—बेल, ब्रायो।

स्तन, दर्दीले, स्नायुशूल—कोनि, पल्से।

मस्तिष्क में रक्ताधिक्य—ग्लोनो। देखिये सिर।

कब्ज—एलुमि, कोलिन्सो, लाइको, नक्स वॉ, ओपि, प्लैटि, प्लम्ब, सीपि। देखिये उदर।

आक्षेप, झटके एमाइ, क्युप्रम मेट, ग्लोनो, हायोसि, लाइसिन, एनैन्थे। देखिये स्नायुमण्डल।

खाँसी—एकोन, ऐपोसाइ, बेल, ब्रायो, कैमो, कॉस्टि, कोनि, कोरैलि, ड्रोसे, ग्लोनो, हायोसि, कैली ब्रो, इपिका, नक्स वॉ, वाइबर्न ओपू।

पिण्डली में ऐंठन—कैमो, क्युप्रम, मैग फॉस; नक्स वॉ, वेरेट्र एल्ब।

असाधारण इच्छायें—एलुमि, कैल्के का, कार्बो वेज, सीपि। देखिये पेट।

दस्त होना—फेरम मेट, हेलेबो, नक्स मॉ, पेट्रोलि, फॉस ऐसि, पल्से, सीकेलि, सल्फर।

खूनी स्राव—एरिजै, कैली का, फॉस, रस टॉ। देखिये गर्भपात।

बदहजमी (गला जलना, तेजाबी हालत)—एसेटि ऐसि, ऐनैका, कैल्के का, कैन्थे, कैप्सि, डायस्को, नक्स वॉ, पल्से। देखिये पेट।

कष्टदायक साँस—ऐपोसाइ, लाइको, नक्स वो, पल्से, वायोला ओडो। देखिये साँस-यन्त्रमण्डल।

झूठी गर्भावस्था—कॉलो, क्रोक, नक्स वॉ, थूजा।

पेट दर्द—पेट्रोलि।

घेघा—हाइड्रै।

बवासीर—कोलिन्सो, पोडो, सल्फर। देखिये उदर।

दाद—सीपिया।

हिचकी—साइक्ले। देखिये पेट।

उन्माद—हायोस। देखिए मन।

मानसिक लक्षण—एकोन, कैमो, सिमि, पल्से। देखिए मन।

जरायु से रक्तस्राव—सिन्को, सिनामो, इपिका, नाइट्रि एसिड, सिकेलि, ट्रिलि। देखिए गर्भाशय, जरायु।

गर्भावस्था की मिचली और कै—ऐसेटिक एसिड, ऐकोन, ऐलेट्रि, एमिगडै-परसि, ऐनैका, ऐण्टि टॉ, एपोमॉर्फ, आर्जे नाइ, आर्स, ब्रायो, कार्बो एसिड, सेरियम, ऑक्जै, सिमिसि, कॉकु, कोल्चि, क्युकर्बि, क्युप्र ऐसेटि, साइक्लै, नैफे, गोसिपी, इनग्लु, इपिका, आइरिस, कैली म्यूर, क्रियोजो, लैकडे, लैक्टिक एसिड, लोबे इन्फ्ला, मैग का, मर्क, नैट्र फॉस, नक्स मॉ, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फॉस, पिलोका, सोरि, पल्से, सीपि, स्टैफि, सिम्फोरि, टैबे, थेरीडि, थाइरॉ, देखिए पेट।

मुख क्षत—हाइड्रे, सिनैपि ऐल्बा। देखिए मुँह।

अति स्नायविक उत्तेजना—एकोन, ऐसैर, सिमिसि, थेरीडि।

अवास्तविक प्रसव वेदना—कॉलो, कैमो, सिमि, जेल्से, पल्से, सिकेलि।

उदर की बाईं तरफ खींचने जैसा दर्द—ऐसो म्यूर।

कटि प्रदेश में दर्द, खींचने जैसा कष्टदायक—आर्न, बेल, कैली का, नक्स वॉ, पल्से, रस टॉ।

वात पीड़ा—एकोन, ऐलेट्रि, सिमिसि, ओपि, रस टॉ।

सुस्ती—एकोन।

योनि और उसकी घुण्डी की प्रबल खुजली—एकोन, ऐम्ब्रा, ऐण्टि क्रू, बोरै, कैलेडि, कोलिन्सो, इक्थिया, सीपि, टैबे। देखिए योनि घुण्डी।

नेत्र-प्रदाह (रेटिनाइटिस)—जेल्से।

लार बहना—ऐसेटिक एसिड, आर्स आयोड, जैबोरै, क्रियोजो, लैक्टिक एसिड, मर्क सल्फ, नैट्र म्यूर, पिलोका, सल्फर।

कामोत्तेजना—प्लैटिना। देखिए कामोन्माद।

अनिद्रा—एकोन, सिमिसि, कॉफि, नक्स वॉ, पल्से, सल्फर।

दाँत दर्द—एकोन, बेल, कैल्के फ्लो, कैमो, कॉफि, क्रियोजो, मैग का, नक्स वॉ, रैटानहिया, सीपि, टैबे।

दूषित अवस्था कैली क्लोर।

गर्भाशय और उदर की कोमलता—हैमे, पल्से।

शिराओं का सिकुड़ना, फूलना—आर्न, बेलिस, कैल्के का, कार्बो वेज, हैमे, लाइको, मिलेफो, सल्फर, जिंक मेट।

चक्कर—बेल, कॉकु, नक्स वो।

अंगों में थकावट, टहल न सके—बेलिस।

प्रसव, जनन क्रिया, विक्षेप—एकोन, इथूजा, ऐमिल, आर्न, बेल, कैन्थे, कैमो, क्लोरेल, साइक्यू, सिमिसि, कॉफि। क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, जेल्से, ग्लोनो, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, इग्नै, इपिका, कैली ब्रो; मर्क को, मर्क डल्सि, एनैन्थे, ओपि, पिलोका, प्लैटि, सोलेन नाइ, स्पाइरिया, ट्रैस्मो, वेरेट्र विरि, जिंक मेट।

दर्द—तीव्र पीठ पीड़ा, दबवाना चाहे—कॉस्टि, कैली कार्ब।

अधिक पीड़ा—बेल, कॉफि।

अवास्तविक प्रसव वेदना—बेल, कैमो, कॉलो, सिमिसि, जेल्से, नक्स वॉ, पल्से, सिकेल, वाइबर्न ओपू।

एक-एक घण्टे पर सिकुड़न—बेल, सिकेल।

प्रसव में देर लगना—कैली कॉस, पिटुइट्रिन।

प्रसव, समय से पहले—सैबाइना।

गर्भाशय की ग्रीवा में सूई जैसा चुभन—कॉलो।

जगह बदलने वाला, उदर के आरपार, दोहरा कर दे, स्तनों में चुभन, पहली अवस्था में गनगनी—सिमिसि।

सारी जगह चलता, फिरता रहे, शिथिलता, अशान्ति कम—कॉलो।

जगह बदले, पीठ से गुदा तक, पाखाना मालूम हो या पेशाब लगे—नक्स वॉ।

जगह बदले कमर से टाँगों के नीचे तक—ऐलो, ब्यूफो, कार्बो वेज, कॉलो, कैमो, नक्स वॉ।

जगह बदले, ऊपर की तरफ—कैमो, जेल्से।

आक्षेपिक, क्रमभ्रष्ट, सविराम, निष्फल, लपकने वाला—आर्न, आरटेमि, बेल, बोरै, कॉलो, कॉस्टि, कैमो, क्लोरेल, सिमिसि, सिनामो, सिन्को, कॉफि, जेल्से, कैली कार्ब, कैली फॉ, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपि, पिटुइट्रिन, पल्से, सैकैरम ऑफि, सिकेल।

सीने के निचले भाग को सिकोड़कर दर्द रोकने से दम घुटने के साथ—लोबे इन्फ्ला।

दर्द की अति संवेदनीयता और उत्तेजना—एकोन, बेल, कॉलो, कॉस्टि, कैमो, सिमि, सिन्को, कॉफि, जेल्से, हायोसि, इग्नै, नक्स वॉ, पल्से।

पीठ पर दाब देने से आराम मिले—कॉस्टि, कैली का।

मूर्च्छा के साथ—सिमिसि, नक्स वॉ, पल्से, सिकेल।

खेड़ी (आँवलनाल) रुक जाना—आर्न, कैन्थे, कॉलो, सिमिसि, सिन्को, एरगोटिन, गॉसिपि, हाइड्रै, इग्ने, पल्से, सैबाइ, सिकेल, विस्कम।

गर्भाशय के मुँह का कड़ापन—एकोन, बेल, कॉलो, कैमो, सिमि, जेल्से, लोबे इन्फ्ला, वेरेट्र वि।

प्रसूतावस्था, जननकाल—प्रसवान्तक वेदना—एकोन, एमिल, आर्न, बेल, कैल्के कार्ब, कॉलो, कार्बो वेज, कैमो, सिमिसि, कॉकु, कॉफि, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, जेल्से, इग्नै, कैली कार्ब, लैके, नक्स वॉ, पल्स, पाइरो, रस टॉ, सैबाइ, सिकेलि, सीपिया, वाइबर्न ओपू, वाइबर्न प्रू, जैन्थो।

प्रसवान्तक वेदना, निचले उदर के आर-पार पुट्ठों में उतरे—कॉलो, सिमिसि।

प्रसवान्तक वेदना, नड़हर की हड्डियों में बढ़े—कार्बो वेज, कॉकु।

प्रसवान्तक वेदना, तीव्र कष्टदायक, पिंडली और तलवों में—क्युप्रम मेट।

पीठ दर्द, कमजोरी, पसीना—कैली कार्ब।

प्रसवान्तक गड़बड़ी को रोकने के लिए—आर्स, कैलेण्डु।

कब्ज—ब्रायो, कोलिन्सो, नक्स वॉ, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक मेट।

दस्त—कैमो, हायोसि, पल्से।

प्रसवान्तक रक्तस्राव - ऐसेटिक एसिड, ऐमो म्यूर, ऐमिल, आर्न, आर्स, बेल, कॉलो, कैमो, सिन्को, सिनामो, क्रोक, साइक्लै, फेरम, जिरैनि, हैमे, हायोसि, इग्नै, इपिका, कैली का, मिलेफो, नाइट्रि एसिड, पल्से, सैबाइ, सिकेल, ट्रिल, अस्टिलै।

चमकदार स्राव, तरल पदार्थ, बिना दर्द बहे—मिलेफो।

चमकदार लाल, गरम, अधिक मात्रा में, फलक कर निकले —बेल।

चमकदार लाल, गरम, अधिक मात्रा में पतनावस्था लक्षणों के साथ—इपिका।

शूल जैसा, धँसन दर्द, खून फलक कर निकालने से कम हो—साइक्लै।

गहरे रंग का गाढ़ा, आक्षेपिक बहाव, कमजोरी —सिन्को।

आदत पड़ने की सम्भावना, अधिक गहरे रंग का थक्केदार—ट्रिलि।

दर्द के साथ, पीठ से विटप तक, गहरे रंग का, थक्केदार, बिना दर्द सैबाइना।

मन्द, गहरे रंग का पतला खून, हिलने से बढ़े, पतली स्त्रियाँ, ढीला गर्भाशय, सुरसुरी - सीकेल ।

गर्भाशय की कार्यहीनता के साथ—ऐमो म्यूर, कॉलो, पल्से, सिके ।

बवासीर—ऐकोन, ऐलो, बेल, इग्नै, पल्से ।

प्रसवान्त स्राव, तीखा—बैप्टि, क्रियोजो, नाइट्रि एसिड, पाइरो ।

प्रसवान्त स्राव, खूनी—क्रोमि ऐसिड, ट्रिलि ।

प्रसवान्त स्राव, गहरे रंग का —कॉलो, कैमो, क्रियोजो, नाइट्रि एसिड, पाइरो, सिकेल ।

प्रसवान्त स्राव खूनी, फलक कर निकले, हरकत से बढ़े — एरिजे ।

प्रसवान्त स्राव, गरम, थोड़ा —बेल ।

प्रसवान्त स्राव, रुक-रुक कर—कोनि, क्रियोजो, पाइरो, रस टॉ, सल्फर ।

प्रसवान्त स्राव, घृणित—बैप्टि, बेल, कार्बो एसिड, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, क्रोमि एसिड, क्रोटा टि, एरिजे, क्रियोजो, नाइट्रि एसिड, पाइरो, रस टॉ, सीकेल, सीपि, सल्फर ।

प्रसवान्त स्राव; देर तक जारी रहे—कैल्के कार्ब, कॉलो, सिन्को, हेलोनि, मिलेफो, रस टॉ, सैबाइ, सिकेल, ट्रिलि, अस्टिलै ।

प्रसवान्त स्राव, कम मात्रा में, थोड़ा—बेल, कैमो, पल्से ।

प्रसवान्त स्राव, दबा हो—ऐकोन, ऐरैलि, बेल, ब्रायो, कैमो, एन्चिने, हायोसि, लियोनोरस, ओपि, पल्से, पाइरो, सिकेल, सल्फर, जिंक ।

कामोन्माद—सिन्को, प्लैटि, वेरेट्र ऐल्ब ।

अंगुलबेड़ा ह्विटलो – सेपा ।

काँच निकलना—रूटा । देखिए उदर ।

प्रसव सम्बन्धी कौषिक तन्तु प्रदाह—हीपर, रस टॉ, वेरेट्र विरि ।

प्रसव ज्वर (दुग्ध-ज्वर)—ऐकोन, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैमो ।

प्रसव ज्वर, विषैला—ऐकोन, ऐलैन्थ, आर्न, आर्स, बैप्टि, बेल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो एसिड, कैन्थे, कैमो, चिनि सल्फ, सिमिसि, क्रोटै, एचिने, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, कैली कार्ब, कैली फॉ, लैके, लाइको, मर्क कार, मर्क सल्फ, नक्स वॉ, पल्से, पाइरो, रस टॉ, सिकेल, सीपिया, टेरैबि, वेरेट्र विरि । देखिये रक्त विषाक्त दोष, पाइमिया, साधारण लक्षण ।

प्रसवोन्माद – बेल, कैने इण्डि, सिमि, हायोसि, प्लैटि, सेनेसि, स्ट्रमो, वेरेट्र विरि, जिंक । देखिये मन ।

प्रसवकालीन उदास, शोकग्रस्त—ऐग्न, ऑरम, सिमिसि, प्लैटि, पल्से। देखिये मन।

प्रसवकालीन जरायु-प्रदाह -बेल, कैन्थे, लैके, नक्स वॉ, टिलिया। देखिये गर्भाशय।

प्रसवकालीन आन्त्रावरण झिल्ली प्रदाह—ऐकोन, बेल, ब्रायो, मर्ककार, पाइरो, सल्फर, टेरेबि। देखिये उदर।

प्रसवकालीन शिरा-प्रदाह, सँड़सी से बच्चा पैदा कराने के बाद—सेपा।

प्रसवकालीन, कान में पर्दे का प्रदाह—टेरेबि।

पसीना होना—कैमो, सैम्बू, स्ट्रैमो।

पेशाब का रुकना—आर्न, वेल, कॉस्टि, हायोसि, ट्रिलि।

पेशाब का रुकना, दबना—एकोन, आर्न, बेल, इक्विसे, हायोसि, ओपि, स्टैफि, स्ट्रैमो।

प्रसव के बाद के रोग-ठुड्डी पर मुँहासे—सीपिया।

कब्ज—लिलि टि, लाइको, मेजे, वेरेट्र ऐल्ब। देखिये उदर।

बाल गिरना—कार्बोवेज, नैट्र म्यूर, सीपि।

बवासीर—हैमो। देखिये उदर।

स्तन्यकाल क्रिया-योनि से स्तन्यकाल में खूनी स्राव—साइलि।

स्तन्यक्रिया के समय कामोत्तेजना—कैल्के फॉ।

स्तन्यकाल में मासिक धर्म—कैल्के कार्ब; पैले।

दूध का अभाव, कम निकलना, धीरे-धीरे उतरना (ऐगेलैक्टिया)—एकोन, ऐग्नस, ऐसाफि, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, कैमो, चेलि, फार्मिका, फ्रैंगैरि, लैक कैने, लैक डि, फॉस एसिड, फॉस, फाइटो, पिलोका, पल्से, रिसिनस, सीकेलि, साइलि, स्टिक्टा, थाइरॉ, अर्टिका, एक्स-रे।

खूनी दूध आना—ब्यूफो।

दूध हल्के नीले रंग का, बिल्लौरी, खट्टा, अपौष्टिक, दूषित, इस कारण बच्चा न पीये - ऐसेटिक एसिड, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, मर्क, फॉस एसिड, सैबाल, साइलि, सल्फर।

दूध का दब जाना—ऐकोन, ऐग्नस, बेल, ब्रायो, कैम्फो मोनो-ब्रो, कैमो, फाइटो, पल्से, सिकेल, जिंक मेट।

दूध अत्यधिक—बेल, ब्रायो; कैल्के कार्ब, कैमो, चिमाफि, कोनि, एरिजे, आयोड, लैक कैने, लैक्टु विरो, मेडुसा, पार्थे, फॉस, फाइटो, पाइप मेथाइ, रियूम, रिसिनस, सैबाल, सैल्विया, सीकेलि, सोलेन ओले, स्पिरैन्थ, अस्टिलै।

दूध की मात्रा स्तन्यकाल में अत्यधिक सुखाने के लिए—इस।फि ब्रायो, कैल्के का, कोनियम, लैक कैने, पल्से, अर्टिका ।

स्तन्यकाल में स्तन-घुण्डी से खींचन दर्द, सारे शरीर में—फाइटो, पल्से, साइलि ।

स्तन्यकाल से, स्तन-घुण्डी से होकर पीठ तक, घुण्डियाँ बहुत दर्दीली—क्रोटो टिग ।

स्तन्यकाल में असह्य पीड़ा—फेलैण्ड्रि ।

जिस स्तन का बच्चा दूध पीये उसके दूसरे स्तन में पीड़ा—बोरै ।

दीर्घ काल तक दूध पिलाते रहना, रक्तहीनता, दुर्बलता के साथ—एसेटि एसिड, कैल्के कॉस, कार्बो ऐनि, सिन्को, फॉस एसिड ।

अत्यधिक मासिक स्राव—कैल्के का, फॉस, साइलि ।

पैर फूलना, (मिल्क लेग, फ्लेगमैंसिया ऐल्बा डोलेन्स)—एकोन, एपिस, आर्स, बेल, बिस्म, ब्रायो, ब्यूफो, क्रोटै, हैमे, लैके, पल्से, रस टॉ, सल्फर, अर्टिका ।

दूध पिलाने से घुण्डियों में दरारें पड़ जायें—ग्रैफा, रैटनहिया, सीपि ।

गर्भाशय का बाहर निकलना—पोडो । देखिये गर्भाशय ।

मुख क्षत—हाइड्रै, सिनैपि अल्बा ।

गर्भाशय का उलट जाना—ऑरम म्यूर नैट्रो, कैल्के का, कॉलो, सिमि, क्राकस, एपिफे, फेरम आयोड, फ्रैक्सि ऐमे, हेलोनि, हाइड्रै, कैली ब्रो, लिलि टि, मर्क कम सेल, नैट्र हाइपो कि, पोडो, सिकेलि, सीपिया, अस्टिलै ।

कमजोरी—चिनि सल्फ, सिन्को, कैली का ।

दूध छुड़ाने का बुरा प्रभाव—ब्रायो, साइक्लै, फ्रैगैरि, पल्से ।

विटप के बालों का झड़ना—नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, जिंक मेट ।

डिम्ब-प्रणाली-प्रदाह (सैल्पिन्जाइटिस)—ऐकोन, ऐपिस, आर्स, ब्रायो, कैन्थे, चिनि सल्फ, कोलोसिं, युपिअन, हीपर, मर्क कार, सेबैल । देखिये गर्भाशय प्रदाह आन्त्रावरण झिल्ली प्रदाह ।

गर्भाशय—पेशिक दौर्बल्य, कमजोरी ढीलापन—एबीज कैने, ऐलेट्रि; ऐलो, ऐल्सटन, ऐलुमि, बेलिस, कॉलो, सिन्को, फेरम आयोड, हेलोनि, आर्क लप्पा, लिलि टिग्रि, पल्से, रु ऐरो, सैबाइ, सिकेल, सीपि, ट्रिलि, आस्टिलै । देखिये खसक जाना ।

जरायु-ग्रीवा गर्भाशय की गरदन—गरदन और मुँह का कड़ा होना—ऐलुमेन; ऑरम मेट, ऑरम म्यूर, ऑरम म्यूर नैट्रो, कार्बो ऐनि, कोनि, हेलोनि, कैलि साइ, आयोड, कैल्मि, मैग म्यूर, नैट्र कार्ब, प्लैटि, सीपिया ।

जरायु-ग्रीवा का प्रदाह—एण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्स, वेल, कैलेण्डुला, हाइड्रै, लाइको, मर्क कार, मर्क, नाइट्रि एसिड, सीपि। देखिये घाव होना।

जरायु-ग्रीवा की लाली—हाइड्रोकोटा, मिचेला।

जरायु-ग्रीवा का फूलना, कठिन अर्बुद की तरह—ऐनैन्थे।

जरायु-ग्रीवा का फूलना, मूत्र बाधा के साथ—कैन्थे।

जरायु-ग्रीवा में कूँथन—बेल, फेरम मेट।

जरायु-ग्रीवा का अर्बुद, कर्कटीय—कार्बो ऐन, आयोड, क्रियोजो, थूजा।

जरायु-ग्रीवा में घाव हो जाना—ऐल्नस, आर्जे नाइट्रि, आर्जे मेट, आर्स, ऑरम म्यूर, ब्यूफो, कार्बो एसिड, फ्लोर एसिड, हाइड्रै, हाइड्रोकोटा, कैली आर्स, क्रियोजो, लाइको, मर्क कार, मर्क, म्यूरेक्स, फाइटो, सीपि, सल्फ एसिड, थूजा, अस्टिलै, वेस्पा।

जरायु ग्रीवा का घाव, खून बहना सरलता से—ऐल्नस, आर्जे नाइट्रि, कार्बो ऐनि, क्रियोजो।

जरायु-ग्रीवा का घाव, गहरा—मर्क कार।

जरायु-ग्रीवा का घाव, वृद्धावस्था में—सल्फ एसिड।

जरायु-ग्रीवा का घाव, स्पंज की तरह—आर्जे नाइट्रि, क्रियोजो।

जरायु-ग्रीवा का घाव, छिछला—हाइड्रै, मर्क।

जरायु-ग्रीवा का घाव, घृणित, तीखा स्राव—आर्स, कार्बो एसिड।

जरायु-ग्रीवा का घाव, घृणित, खूनी दुर्गन्धित स्राव—कार्बो ऐनि, क्रियोजो।

रक्ताधिक्य—ऐकोन, ऐलो, ऑरम, बेल, वेलिस, कॉलो, सिमिसि, कोलिन्सो, क्रोकस, फ्रैंक्सि ऐमे, जेल्से, आयोड, लिलि टिग्रि, मैग फॉ, मिचेला, म्यूरेक्स, पल्से, सैबैल, सैबाइना, सीपिया, स्ट्रोफै, सल्फर, टैरै हि, वेरेट्र विरि। देखिये प्रदाह।

रक्ताधिक्य, जीर्ण या मन्द—इस्कियु, ऑरम, कैल्के कार्ब, सिमिसि, कोलिन्सो, हेलोनि, लैकै, पोलिग्निया; सीपि, स्टैन, सल्फर, अस्टिलै।

गर्भाशय की चेतना, बहुत कोमल हिलते ही जान पड़े कि कोई वस्तु है—हेलोनि, लाइको, लाइसिन, मेडो, म्यूरेक्स।

गर्भाशय रोग, प्रतिक्षिप्त हृदय-लक्षणों के साथ—सिमिसि, लिलि टि।

गर्भाशय रोग, साथ में दाँत में दर्द, सिर दर्द, लार बहना, स्नायुशूल—सीपि।

जगह से खसक जाना (झुक जाना उलट जाना)—एबीज कैने, इस्कियु, बेल, कार्बो ऐसिड, युपियोन, फेरम आयोड, फेरम मेट, फ्रैंक्सि ऐमे, हेलियोट्रो, हेलोनि, लैप्पा, लिलि टिग्रि, मेल कम सेल, म्यूरेक्स, पैले, पल्से, सैबाल, सीकेल, सेनेसि, सीपि, स्टैन।

खसक जाना, बाहर निकलना—एबीज कैने, इस्कियु, एगैरि, ऐलेट्रि, ऐलो, आर्जे मेट, ऐस्पेरुला, ऑरम म्यूर नाइट्रो, बेल, बेन्जो एसिड, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कैल्के सिलि, कॉलो, कोलिन्सो, कोनि, फेरम ब्रो, फेरम आयोड, फेरम मेट, फ्रैक्सि ऐमे, ग्रैफा, हेलोनि, इग्नै, कैली बाइ, क्रियोजो, लैके, लिलि टिग्रि, लाइसिन, मेल कम सेल, म्यूरेक्स, नैट्र क्लो, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, पैले, प्लैटि, पोडो, पल्से, रस टॉ, सिकेल, सेनेसियो, सीपिया, स्टैन, स्टैफि, टिलिया, ट्रिलि, जिंक वैले।

रक्त-प्रवाह (गर्भाशय से बहुत खून जाना)—साधारण औषधियाँ—ऐसेटिक एसिड, ऐचिल, ऐगैरि, ऐम्ब्रा, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्जे ओक्सि, आर्न, आर्स, ऑरम म्यूर केली, बेल; बोविस्टा, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कॉलोसि, कैमो, सिमिसि, सिना, सिन्को, सिनामो, कोलिन्सो, क्रोकस, क्रोटै कैस्कै, क्रोटै, डिक्टै, इलैप्स, एरिजे, फेरम एसिड, फेरम मेट, फेरम फॉस, फ्युलिगो, हैमे, हेलोनि, हाइड्रैस्ट, आयोड, इपिका, जोसिया, जुनिपविर, कैली नाइट्रि, क्रियोजो, लैके, लिलि टिग्रि, मैग म्यूर, मैंगिफेइण्डि, मिलिफो, मिचेला, नैट्र क्लोर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, प्लैटि, प्लम्ब, पल्से, पाइरो, रस ऐरो, रोबिनी, सैबाइ, सिकेल, सीपि, सल्फ एसिड, सल्फर, स्ट्रैमो, टेरेबि, थ्लैस्पि, ट्रिलि, अस्टिलै, विन्का, विस्कम, जैन्थो।

रक्तहीनता से वयःसन्धिकाल में, जरायु-कर्कट रोग से—मेडो, फॉस, थ्लैस्पी, अस्टि।

जरायु निकलवाने से—नाइट्रि एसिड।

बसार्बुद फाइब्रोइड से—कैल्के कार्ब, नाइट्रि एसिड, फॉस, सैबाइ, सिकेल, सल्फ एसिड, थ्लैस्पी, ट्रिली, विन्का।

आघात; जोर पाने से—ऐम्ब्रा, आर्न, सिनामो, हैमे।

प्रसव से, गर्भपात से—कॉलो, कैमो, सिन्को, क्रोकस, इपिका, मिलिफो, नाइट्रि एसिड, सैबाइना, सिकेल, थ्लैस्पी। देखिये गर्भावस्था।

आँवलनाल के रुकने से—सैबाइना, सिकेल, स्ट्रैमो।

गर्भाशय के ढीलापन, कमजोरी से, मलेरिया के रोगों में—सिन्को।

दो मासिक कालों के बीच में—ऐम्ब्रा, आर्जे नाइ, ब्रोवि, कैल्के कार्ब, कैमो, इलैप्स, हैमे, इपिका, मैग सल्फ, फॉस, रस टॉ, रोबिनी, सैबाइना, विन्का।

पीठ दर्द के साथ, बैठने से कम हो—कैली कार्ब।

खून के साथ काला—कॉलो, क्रोक, इलैप्स, मैग कार्ब, प्लैटि।

खून के साथ चमकदार लाल अधिक फलक कर निकले, जरा-सा हिलने से बढ़े—ऐकालि, बेला, बोवि, कैमो, एरिजे, इपिका, मेडो, मिलिफो, मिचेला, फॉस, सैबाइना, सिकेल, ट्रिलि, अस्टिलै, विस्कम।

खून के साथ थक्केदार या कुछ भाग थक्केदार—ऐकालि, बेल, कैमो, सिन्को, कॉकु, क्रोक, साइक्लै, एरिजे, इपिका, कैली कार्ब, लैके, प्लैटि, प्लम्ब, पल्से, रस टॉ, सैबाइ, थ्लैस्पि, ट्रिलि, अस्टिलै, विस्कम।

खून थक्केदार या पतला, रह-रह कर या बराबर बहे, मिचली कै, धड़कन, नाड़ी तेज, हिलने से धीमी, जीवन मन्दता, मूर्छा जो सिर को तकिये पर उठाने से आवे—एपोसाइ।

खून, गहरे रंग का पतला, घृणित—क्रोटे।

खून, अधिक, बिना दर्द—मिलेफो, नाइट्रि एसिड।

खून, अधिक बिना दर्द, गहरे रंग का, शिराओं से निकला हुआ—हैमे, मैंगिफे इण्डि।

खून, अधिक, मंद बहाव, कठोर—कॉलो, सिनामो।

खून, अधिक, मद बहाव, पतला, दुर्गन्धित, रक्तहीन स्त्रियों में—सिकेलि।

खून अधिक, बहुत गहरे रंग का, गाढ़ा, तारकोल जैसा, नीचे की तरफ खिचाव, वस्तिगह्वर प्रदेश में दाब, पुट्ठों में दाब, बाद में तीव्र पीड़ा, अप्राकृतिक जननेंद्रिय संवेदना और उत्तेजना—प्लैटि।

खून पतला, बिना दर्द के बहे—कार्बो ऐनि, सिन्को, सिकेल।

रक्ताधिक्य का सिर दर्द—बेल, ग्लोनो।

मूर्च्छा के साथ—एपिस, सिन्को, फेरम मेट, ट्रिलि।

पेट में मूर्च्छा के साथ—क्रोटे, ट्रिलि।

ऐसे संवेदन के साथ मानो पीठ और कटि टुकड़े-टुकड़े होकर गिर जायेंगे जो बाँधने से कम हो, मूर्च्छा—ट्रिलि।

सिर के बड़ा जान पड़ने के साथ—बैडियागा।

रुक-रुक कर तेजी से खून बहने के साथ, चमकदार लाल, जोड़ों में दर्द—सैबाइ।

रुक-रुक कर तेजी से खून बहने के साथ, पतला हल्के रंग का खून, कड़े थक्के, तीव्र प्रसव की तरह दर्द—कैमो।

उदर के भारीपन, मूर्च्छा चुभन दर्द के साथ—एपिस।

हिस्टीरिया के साथ—कॉलोनि, सिमिसि, मैग म्यूर।

प्रसव की तरह दर्द के साथ—कॉलो, कैमो, सिमिसि, हैमे, सैबाइना, सिकेल, इलैप्सि, विस्कम।

मिचली के साथ—ऐपोसाइ, कैप्सि, इपिका।

रजोनिवृत्ति काल में अधिक स्नायविक उत्तेजना के साथ—आर्जे नाइ, लैके।

पेशाब करने के समय दर्द के साथ, शरीर फीका, मलाशय, मूत्राशय में तीव्र उत्तेजना, बाहर निकलना—एरिजे।

दर्द का नाभि तक बढ़ने के साथ, साँस कष्ट—इपिका।

दर्द का वस्तिगह्वर की चारों तरफ बढ़ने के साथ, त्रिकास्थि से पुट्ठों तक—पल्से, सीपिया।

दर्द का त्रिकास्थि से विटप देश तक बढ़ने के साथ—सैबाइ।

दर्द के साथ जो वस्ति-गह्वर में होकर बाहर से भीतर या आर-पार जाये—बेल।

पकन, विषाक्त, ज्वर के साथ—पाइरो।

कामोत्तेजना के साथ—ऐम्ब्रा, प्लैटि, सैबाइ।

गर्भाशय के रक्ताधिक्य, प्रदाह के साथ—सैबाइ।

दुर्बल दिल के साथ—ऐमो म्यूर, डिजि।

जरायु-शोथ, गर्भाशय में पानी या किसी दूसरे तरल पदार्थ का जमा होना—नैट्र हाइपोक्लोर, सीपिया।

कड़ापन—ऑरम, ऑरम म्यूर कैली, ऑरम म्यूर नैट्रो, कार्बो ऐन, कोनि, ग्रैफा, आयोड, कैल्मिया, क्रियोजो, मैग म्यूर, प्लैटि, सीपि।

प्रदाह (जरायु)—तीव्र—एकोन, एण्टि आयोड, एपिस, आर्न, आर्स, बेल, ब्रायो, कैन्थे, कैमो, सिमिसि, सिन्को, कोनि, जेल्से, हीपर, हायोस, आयोड, कैली का, कैली आयोड, लैके, लिलि टि, मेल कम सेल, मर्क को, नक्स वॉ, ओपि, फॉस एसिड, प्लैटि, पल्से, रस टॉ; सैबाइ, सिकेलि, सीपिया, साइली, स्ट्रैमो, सल्फर, टेरेबिं, टिलिया, वेरेट्र विरि।

प्रदाह जीर्ण—ऐलेट्रि, एलो, आर्स, ऑरम म्यूर, ऑरम म्यूर, नैट्रो, बोरै, कैल्के कार्ब, कार्बो ऐसि, कॉलो, चिनि आर्स, सिमिसि, कोनि, ग्रैफा, हेलोनि, हाइड्रै, हाइड्रोकोटा, इनूला, आयोड, कैलि बाइक्रो, कैलि कार्ब, कैली सल्फ, क्रियोजो, लैके, मैग म्यूर, मेल कम सेल, मर्क म्यूरेक्स, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, फॉस ऐसि, फॉस, प्लम्ब, पल्से, रस टॉ, सैबाइ, सिकेल, सीपि, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फर।

प्रदाह जीर्ण, क्षुद्र-गह्वरपूर्ण—हाइड्रै, हाइड्रोकोटा, आयोड, मर्क।

प्रदाह जीर्ण, धमनी में रक्ताधिक्य के साथ—बेल, लिलि टिग्रि, सैबाइ।

प्रदाह जीर्ण, शिराओं में रक्ताधिक्य के साथ—ऐलो, कोलिन्सो, मैग म्यूर, म्यूरेक्स, सीपि।

प्रदाह रक्तस्राव—आर्स, हैमे, लेडम, फॉस, सिकेलि, थ्लैस्पि।

प्रदाह, जरायु-प्रदाह से सम्बन्धित—ऐकोन, बेल, कैन्थे, कोलोन्सि, हीपर, मर्क कार, साइलि।

उत्तेजनीय गर्भाशय—बेल, कॉलो, सिमिसि, इग्नै, लिलि टिग, मैग म्यूर, म्यूरेक्स, टैरे हि। देखिये दर्द।

गुल्म, मस्से इत्यादि को बाहर निकालने के लिये—कैन्थे, सैबाइ।

दर्द—वस्तिगह्वर अस्थि में कुचलन, टूटापन—इस्क्यू, आर्न, बेलिस, लैप्पा, ट्रिलि।

जलन—एकोन, आर्स, बेल, ब्यूफो, कैल्के आर्स, कैन्थे, कार्बो ऐनि, कोनियम, हीपर, क्रियोजो, लेपिस ऐल्बा, म्यूरेक्स, पैले, सिकेल, टेरेबि, जैन्थो।

शूल, ऐंठन, प्रसव की तरह, नीचे को धँसन—ऐगैरि, एपिस, आर्जे मेट, कैलेडि, कैल्के कार्ब, कैने इण्डि, कॉलो, कॉस्टि, कैमो, सिमि, कॉकु, कोलोसिं, कोनि, क्युप्रम, डायस्को, फेरम आयोड, फेरम, जेल्से, गासिपि, हेडिओमा, इग्ने, इनूला, इपिका, लैके, मैग फॉ, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओनोस्मो, ओपि, प्लैटि, पल्से, सैबाइ, सिकेल, साइलि, प्लैस्पी, टिलिया, वाइबर्न ओपू, जैन्थो। देखिये प्रसव।

संकुचित, चुभन, निचोड़ने वाला, कसकर दबाने की तरह—बेलिस, कैक्ट, कैमो, सिन्को, जेल्से, मैग फॉस, नक्स वो, पोलिगोन, सीपि, अस्टिलै।

स्नायुशूल, कोंचने वाला, आपेक्षिक फटन, चमकन, कटन, चिलकन—एकोन, एगैरि, एपिस, ऐरानि, बेल, ब्रायो, ब्यूफो, कैले कार्ब, सिमि, सिन्को, कोलोसिं, कोनि, कोडै कैल्के, क्युप्रम आर्स, डायस्को, फेरम, ग्रैफा, कैली फॉस, लैके, लिलि टिग्रि, मैग म्यूर, मैग फॉस, मर्क, म्यूरेक्स, ओपि, प्लैटि, पल्से, सिकेल, टैरे हिं, वाइबर्न ओपू, वाइस्कम। देखिये कष्टदायक मासिक धर्म।

स्नायुशूल, पीठ से उठे, शरीर का चक्कर लगाये—प्लैटि, सीपि।

स्नायुशूल, पीठ से उदर तक—सीपि, विस्कम।

स्नायुशूल, पीठ से विटप तक—बेल, सैबाइ।

स्नायुशूल, पीठ से जाँघों, टाँग तक—ब्यूफो, कार्बो एसिड, कैमो, सिमिसि, पल्से, सैबाइ।

स्नायुशूल, एक कूल्हे से दूसरे तक—बेल, कैल्के कार्ब, सिमिसि, सिन्को, कोलो, कैलेडि।

स्नायुशूल, नाभि से गर्भाशय तक—इपिका।

स्नायुशूल, सीने तक फैले—लैके; म्यूरेक्स, वेस्पा।

स्नायुशूल, दाहिनी तरफ ऊपर को आरपार फैले फिर बाईं तरफ के स्तन में जाये—म्यूरेक्स।

दाबवाला, मानो आँतें योनि के रास्ते बाहर को निकल जायेंगी—ऐगैरि, बेल, सिमिसि, सिनामो, क्रोटै, फेरम आयोड, फेरम मेट, फ्रैक्सि ऐमे, गोसिपि, हेलिओट्रो, कैली फेरोसाइ, क्रियोजो, लैक कैने, लिलि टिग्रि, लाइको, मॉस्क, म्युरेक्स, नैट्र कार्ब, नैट्र क्लोर, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओनोस्मो, ओबि गैलि पे, पैले; पोडो, पल्से, सैनिकू, सीपि, स्टैन, सल्फर, टिलिया, ट्रिलि, वाइबर्न ओपू, जैन्थो, जेरोफाइ।

दाबवाला, भारीपन, भरापन वस्तिह्वर में धँसन, खोंचन—ऐगैरि, ऐलेट्रि, ऐलो, एण्टिम क्रू, ऑरम म्यूर नैट्रो, बेल, कैल्के कार्ब, कैलेण्डु, कार्बो एसिड, सिमिसि, सिन्को, कॉकु, कोलिन्सो, कोनि, फेरम ब्रो, फ्रैक्सि ऐमे, ग्लीसरीन, नैफे, गोसिपि, हेलोनि, कैली बाइ, लैप्पा, लिलि टिग्रि, मैग कार्ब, मैग म्यूर, मर्क, म्यूरेक्स, नैट्र कार्ब, नैट्र क्लोर, नक्स वॉ, प्लैटि, प्लम्ब, पोडो, पोलिगो, सीपि, सल्फर, ट्रिलि, वायेथि, जिंक वैले।

पीठ में दाब—ऐगैरि, बेला, कार्बो एसिड, कैमो, सिमिसि, जेल्से, गोसिपि, हैडिओमा, हैलोनि, इनूला, कैली का, क्रियोजो, नैट्र म्यूर, ओनोस्मो, ट्रिलि, बेस्पा, वाइबर्न ओपू।

टपकन, थरथराहट—इस्कियु, बेल, कैक्ट, हीपर, म्युरेक्स।

टहलते या घोड़े की सवारी के समय खपची की तरह जान पड़े—आर्जे नाइ।

टहलने या बैठने के समय गुदा और मूलाधार के बीच में घाव जैसा जान पड़े—साइक्लै।

हाइसोमेट्रा—बेल, ब्रायो, ब्रोमि, लैक कैने, लाइको, नक्स वॉ, फॉस एसिड, सैंगिव।

गर्भाशय की कोमलता—एबीज कैने, ऐकोन, एपिस, आर्जे मेट, आर्न, बेल, बेलिस, ब्रायो, सिमिसि, कॉनवै, हेलोनि, क्रियोजो, लैके, लैप्पा, लिलि टिग्रि, लाइसिन, मैग म्यूर, मेल कम सेल, मर्क, म्यूरेक्स, प्लैटि, सैनिक्यु, सीपि, थ्लैस्पि, टिलिया।

अर्बुद गुल्म-कर्कट कठोर, घातक रोग—आर्जे मेट, आर्स आयोड, आर्स, आरम म्यूर नैट्रो, बेल, बोवि, कैल्के आर्स, कैल्के सल्फ, कैन्था, कार्बो ऐन, कार्सिनोसिन, कैमो, सिन्को, कोनि, ग्रैफा, हाइड्रै, आयोड, इरिडि, कैली बाइक्रो, कैली फॉस, कैली सल्फ, क्रियोजो, लैके, लेपिस एल्बा, मैग फॉ, मेडो, म्यूरेक्स, ओवा टो, फॉस, फाइटो, रस टॉ, सिकेल, सिपि, साइलि, स्टैफि, सल्फ, टैरे क्यू, थ्लैस्पी, थूजा, ट्रिलि, जिंक मेट।

कर्कट, रक्तस्राव—बेल, क्रोटेल, क्रियोजो, लैके, सैबाइ, थ्लैस्पी, अस्टिलै।

सौत्रिक अर्बुद बहुपक्षीय—ऑरम आयोड, ऑरम म्यूर, बेल, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के फॉ, कैलैण्डु, सिन्को, कोनि, इरोडि, फेरम, फ्रैक्सि ऐम, हैमे, हाइड्रै,

हाइड्रोकोटा, आयोड, इपिका, कैली आयोड, लैके; लेडम, लाइको, मर्क कार, मर्क आयोड रुबर, नाइट्रि एसिड, फॉस, थ्लैटि, प्लम्ब, पल्से, सैबैल, सैबाइ, सैंग्वि, सिकेल, सीपिया, साइलि, सोलिडै, स्टैफि, सल्फर, थ्लैस्पी, थूजा, थाइरॉ, ट्रिलि।

योनि—मुखक्षत, चकत्ते, घाव—ऐलूमैन, आर्ज नाइ, कार्बो वेज, कॉलो, ग्रैफा, हेलोनि, हाइड्रै, इग्नै, क्रियोजो, लाइको, लाइसिन, मर्क, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, रस टॉ; रोबिनिया, सीपि, थूजा।

जलन, गरमी—ऐकोन, एलुमि, इण्टिपाइ, ऑरम म्यूर, बेल, बर्बे वल, बोवि, कैन्थे, कार्बो ऐन, कार्बो वेज, फेरम फॉस, हाइड्रोकोटा, कैली बाइ, कैली का, क्रियोजो, लाइको, लाइसिन, मर्क कार, मर्क, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, पॉपू कैन, प्यूलेक्स, सीपि, स्पिरैन्थ, सल्फर।

मैथुन के बाद जलन, गरमी—लाइको, लाइसिन।

ठण्डापन—बोरिक ऐसि।

थैलियाँ पड़ना—लाइको, पल्से, रोडो, साइली।

सूखापन—ऐकोन, एपिस, बेल, फेरम फॉ, लाइको, लाइसिन, नैट्र म्यूर, स्पिरैन्थ। देखिये प्रदाह।

वायु-स्खलन—ब्रोमि, लैके कैने, लाइको, नक्स मॉ, सैंग्वि।

प्रदाह (वैजाइनाइटिस) तीव्र—ऐकोन, एपिस, आर्न, बेल, आर्स, कैने सैट; कैन्थे, सिमिसि, कोनियम, क्रोटो टिग, जेल्से, हेलोनि, हाइड्रै, कैली का, कैली म्यूर, क्रियोजो, मर्क कार, रस टॉ, सीपि, सल्फर, थूजा।

प्रदाह जीर्ण—आर्स, बोरै, कैल्के का, ग्रिण्डे, हाइड्रै, आयोड, क्रियोजो, कैली म्यूर, मर्क, नाइट्रि एसि, पल्से, सीपि, सल्फर। देखिये योनि-द्वार-प्रदाह, भग-प्रदाह, (वलवाइटिस)।

खुजली—ऐण्टीपाइरि, एरण्डो, ऑरम म्यूर, कैलैडि, कैन्थे, कोनि, हेलोनि, हाइड्रोकोटा, हाइड्रै, क्रियोजो, मर्क, स्क्रोफुला, सीपि, साइलि, सल्फर। देखिये योनि-खाज।

दाब वाला दर्द—बेल, कैल्के कार्ब, चिमाफि, सिनाबे, फेरम आयोड, स्टैन।

दर्द, बींधन, कड़कन, चमकन, फटन—एपिस, साइमेक्स, सिमी, कोलोसि, क्रियोजो, रस टॉ, सैबाइना, सीपिया।

दर्द, थरथराहट—बेल।

योनि का बाहर निकलना—एलुमि, बेल, फेरम, ग्रैनैट, क्रियोजो, लैके, लैप्पा, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओसिमम, सीपिया, स्टैन, स्टैफि, सल्फ एसि।

आक्षेप (वैजाइनिसमस)—एकोन, ऑरम, बेल, बर्बे वल, कैक्ट, कॉलो, कॉस्ट, कार्बो वेज, सिमिसि, कॉकु, कॉफि, कोनि, फेरम आयोड, फेरम मेट, फेरम फा, जेल्से, हैमे, इग्नै, क्रियोजो, लैक कैने, लाइसिन, मैग फॉस, म्यूरेक्स, म्यूरि ऐसि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, औरिगै, प्लैटि, प्लम्ब, साइलि, स्टैफि, टैरैण्टू हिस्पै, थूजा।

योनि-अग्रभाग और ओष्ठ—(फोड़ा वल्वो वैजाइनल)—एपिस, बेल, बोरै, हीपर, क्रियोजो, आयोड, लैके, मर्क, पल्से, रस टॉ, सीपि, साइलि, सल्फर।

जलन—एकोन, ऐमो का, ऑरम, बोविस्टा, कैन्थे, कार्बो वेज, ग्रैफा, हेलोनि, क्रियोजो, लाइको, मर्क, पल्से, रस टॉ, सीपि, साइलि, सल्फर, थूजा। देखिये दर्द।

कर्कट—आर्स, कोनियम, थूजा।

सूखापन—ऐकोन, बेल, कैल्के का, लाइको, टैरेण्टू हिस्पै। देखिए भग-प्रदाह, (वलवाइटिस)।

अकौता—रस टॉ।

शोक के साथ विसर्प रोग—एपिस।

बाल झड़ना—मर्क, नाइट्रि एसिड।

अति संवेदना उत्तेजना—ऐकोन, बेल, सिमि, कॉकु, कॉफि, फेरम आयोड, जेल्से, हीपर, इग्नै, कैली ब्रोम, क्रियोजो, मैग फॉस, मर्क, म्यूरेक्स, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पेट्रोलि, प्लैटि सीपिया, सल्फर, थूजा, टिलिया, जिंक मेट।

प्रदाह (वलवाइटिस)—ऐकोन, ऐम्ब्रा; एपिस, आर्स, बेल, ब्रोमि, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कार्बो वेज, चिमाफि, कॉक्कस, कोलिन्सो, कोपेवा, युपियन, गोसिपि, ग्रैफा, हैमे, हेलोनि, हाइड्रै, क्रियोजो, लाइको, मैग फॉ, मर्क कार, मर्क ओसिमम, प्लैटि, पल्से, रस डाइवर, रस टॉ, सीपि, साइलि, सल्फर, थूजा।

भग प्रदाह (वलवाइटिस) शोषमय दाद की तरह—आर्स, क्रोटो टिग, डल्का, मर्क, नैट्र म्यूर, रोबीनि, सीपि, स्पिरैन्थ, थूजा, जेरोफाइ।

खाज (प्रूराइटिस)—एगैरि, ऐम्ब्रा, एपिस, आर्स, ऐरण्डो, बर्बे वल, बोवि, कैलैडि, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉस्टि, कॉफि, कोलिन्सो, कोनियम, कॉनवै, कोपेवा, क्रोटो टिग, डल्का, फैगोपि, फेरम आयोड, ग्रैफा, ग्रिण्डे, गुवाको, हेलोनि, हाइड्रै, कैली बाइ, कैली ब्रा, कैली का, क्रियोजो, लिलि टिग्रि, लाइको, मर्क, मेजे, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसिड, ओरिजे, पेट्रोलि, पिक एसिड, प्लैटि, रेडियम, रस डिव, रस टॉ, रस वेने, स्क्रोफुले, सीपि, स्पिरेन्थ, स्टैफि, सल्फर, टैरेण्टू क्यूबे, टैरेण्टू हिस्पै, थूजा, आर्टिका, जेरोफाइ, जिंक मेट।

दर्द—एपिस, आर्स, बेल, बर्बे वल, कैल्के कार्ब, कैने सै, कोनि, फेरम, कैली कार्ब, क्रियोजो, लाइको, मेलिलो, मर्क कार, फॉस, प्लैटि, सैबाइ, सीपिया, सल्फर। देखिये वलवाइटिस।

दाने, फुन्सियाँ—कार्बो, एपिस, ग्रैफा, सीपि, सल्फर ।

अर्बुद, गुल्म, पोलिपस—वेल, कैल्के कार्ब, फॉस, ट्युक्रि, थूजा ।

नम संवेदन—युपेटो पर्प्यु, पेट्रोलि ।

दर्दीलापन, कोमलपन—ऐकोन, ऐम्ब्रा, बेल, कॉस्टि, कॉनवे, ग्रैफा, हेलोनि, हीपर, क्रियोजो, ओवा गै पे, प्लैटि, सीपि, सल्फर, टैरेण्टू हिस्पै, अर्टिका ।

घाव के साथ कोमलता—आर्जे नाइट्रि, हीपर, मर्क, नाइट्रि एसिड, थूजा ।

दुर्गन्धित पसीना—कैल्के, फैगोपि, लाइको, मर्क, पेट्रोलि, सल्फर, थूजा ।

घाव होना—आर्स, ऑरम म्यूर नैट्रो, ग्रैफा, म्यूर एसिड, नाइट्रि एसिड, सीपि, सिफिलिनम ।

नसों का मोटा पड़ना, सिकुड़न-वैरिकोज—कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, लाइको ।

मस्से—ऑरम म्यूर, मेडो, थूजा ।

—: o :—

रक्त-संचार

धमनी बड़ी, धमनी-मुख्य धमनी—प्रदाहित तीव्र—एकोन, एपिस, ग्लोनो, ट्यूबर ।

बड़ी धमनी, प्रदाहित जीर्ण रूप से—ऐडोनि वर, एडीने, आर्टीमि । आर्स, आर्स आयोड, ऑरम आर्स, ऑरम कैक्ट, चिनि सल्फ, क्रैटे, क्युप्र, ग्लोनो, कैली आयोड, लाइको, नैट्र आयोड, स्पाइजे, स्ट्रोफै ।

मुख्य धमनी प्रदाह, घाव के साथ—ऐकोन, आर्स, चिनि सल्फ ।

मुख्य धमनी पीड़ा—ऐड्रीने, स्ट्रिक्नि । देखिये हृदयशूल ।

धमनी प्रदाह—आर्स, कार्बो वेज, एचिने, कैली आयोड, लैके, नैट्र आयोड, सीकेल ।

धमनी में मेदमय अर्बुद होना—ऐड्रीने, ऐसि आयोड, ऐमो वैनेड, ऐण्टि आर्स, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम आयोड, ऑरम, ऑरम म्यूर नैट्रो, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, कैक्ट, कैल्के फ्लो, चिनि सल्फ, कोनि, क्रेटीगस, एर्गोटिन, ग्लोनो, आयोड, थाइरी, कैली आयोड, कैली सॉल, लैके, लिथि का, नैट्र आयोड, फॉस, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब मेट, पोलिगो एवि, सिकेल, स्ट्रोन्शि का, स्ट्रोन्शि आयोड, स्ट्रोफै, सुम्बु, वैसॉड । देखिये शीतर, गुर्दा-प्रदाह ।

गरदन की धमनी की टपक—ऐकोन, ऐनाइ, वेल, कैक्ट, सिन्को, फैगोपाइ, ग्लोनो, लिलि टिग्रि, सैंबाइ, वेरेट्र विरि । देखिये नाड़ी ।

रक्तसंचार मन्द—इथूजा, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, सिमिसि, सिनामो, फेरम फॉ, जेल्से, लीडम, नैट्र म्यूर, रस टॉ, साइलि। देखिये हृदय।

रक्ताधिक्य (स्थानीय)—एकोन, इस्कियु, ऐम्ब्रा, ऐमाइल, ऑरम, वेल, कैक्ट, कैल्के का, सेण्टॉर, क्युप्रम मेट, फेरम मेट, फेरम फॉ, गैडस मोर, ग्लोनो, कैली आयोड, लिलि टिग्रि, लोनिसे, मेलिलो, मिलिफो, फॉस, सैंग्वि, सीपि, साइली, स्पॉन्जि, स्टेलैरि, वेरेट्र विरि।

वसामय क्षीणता—फॉस, देखिये हृदय।

फैलना, धमनी अर्बुद ऐन्युरिज्म—ऐकोन, आर्स आयोड, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, कैक्क, कैल्के फ्लोर, कैल्के फॉस, ग्लोनो, आयोड, कैली आयोड, थेलियम, लैकैल, के, लिथिका, लाइको, लाइकोपस, मॉर्फि, नैट्र आयोड, प्लम्ब, पल्स, स्पाइजे, स्पॉन्जि, वेरेट्र विरि।

धमनी अर्बुद क्षुद्र धमनियों का फैलना—कैल्के फ्लोर, फ्लोर एसिड, ट्यूबर।

धमनी अर्बुद पीड़ामय फैलना—कैक्ट। देखिये हृदय शूल (एनजाइना पेक्टोरिस)।

धमनी का फट जाना—एकोन, एपिस, आर्स ऐस्टेरि, बैराइटा का, वेल, कैक्ट, कैम्फो, कॉस्टि, चेनोपो, सिन्को, क्रोकस, क्रोटै, क्युप्रम मेट, फॉर्मिका, ग्लोनो, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, जुनिपविर, कैली ब्रोमे, कैली आयोड, लैके, लॉरो, नक्स वॉ, ओपि, फॉस, सीपि, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्र ऐल्ब, वैरेट्र विरि।

धमनी का फटना, अर्ध-पक्षाघातिक आक्रमण के साथ—आर्न, आर्स, बैराइटा का, बेल, बोथ्रोप्स, कॉस्टि, कॉकु, क्युप्रम मेट, कुरारी, लैके, नक्स वॉ, फॉस, प्लम्ब, रस टॉ, वाइपेरा, जिंक मेट।

धमनी के फटने की प्रवृत्ति या सम्भावना—ऐकोन, आर्न, आर्स, बैराइटा का, बेल, कैल्के फ्लो, जेल्से, ग्लोनो, गुवाको, हायोसि, लैके, लॉरोस, नक्स वॉ, ओपि, फॉस, स्ट्रॉन्शि कार्ब।

हृदय, दिल कोलाहल पूर्ण प्रचण्ड, परिश्रमिक गति—एबीज, कैने, ऐबसिन्थ, ऐकोन, इस्कियु, ऐगैरि, ऐमोनि, ऐमाइल, आर्स, ऑरम, बेल, ब्रायो, कैक्ट, कार्बो एसिड, सिमिसि, कॉल्चि, कॉनवै, एफेड्रा; जेल्से, ग्लोनो, हेलोड, आइबेरिस, कैल्मि, लिलि टिग्रि, लाइकोपस, नैट्र म्यूर, फाइसोजॉस्टि, प्रुन स्पि, पाइरो, स्पाइजे, स्पॉञ्जि, वेरेट्रम, विरि। देखिए नाड़ी।

साधारण रोग—ऐकोन, ऐडोनि वरने, ऐमो कार्ब, ऐमो म्यूर, ऐमाइल, ऐपोसाइ, आर्न, आर्स आयोड, आर्स, ऑरम म्यूर, ऑरम मेट, बैराइटा कार्ब, बेल, बेन्जो

एसिड; ब्रायो, कैक्ट, कैल्के आर्स, कैल्के फ्लो, कार्बो वेज, सिमिसि, सिन्को, कोका, कॉल्चि, कोलिन्सो, कोनवै, कोरोनिला, क्रैटै, क्रोटै, डिजिटैलीन, डिजि, फेरम मेट, फेरम फॉ, जेल्से, ग्लोनो, ग्रिण्डे, हाइड्रोसि एसिड, आइबेरिस, इग्नै, आयोड, कैली कार्ब, कैली क्लोर, कैल्मि, लैके, लॉरो, लेपिडि, लिलि टिग्रि, लिथि कार्ब, लाइकोपस, मर्क कार, मॉस्कस, नाजा, नैट्र आयोड, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ऑक्जै एसिड, फैसिओल, फॉस, पिलोका, सिला, स्पार्टि, स्पाइजे, स्पॉन्जि, स्ट्रोफै, स्टिक्नि, सुम्बुल, थाइरॉ, वैले, वेरेट्र विरि। देखिये हृदय के अलग-अलग रोग।

वात बाधार्य—एकोन, ऑरम, बेन्जो एसिड, ब्रायो, कैक्ट, कॉस्टि, सिमिसि, कॉल्चि, इग्ने, कैल्मि, लीडम, लिथि कार्ब, लाइकोपस, नाजा, फाइटो, रस टॉ, स्पाइजे, वेरेट्र विरि।

बवासीर के साथ बाधार्य—कैक्ट, कोलिन्सो, डिजि।

नीला रोग (साइनोसिस)—एेसिटैनि, एेमो कार्ब, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टा, आर्स, बेन्जो नाइट्रि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, क्रोटै, क्युप्रम, डिजि, हाइड्रोसि एसिड, लैके, लॉरो, लाइकोप, मर्क साइ, नैट्र नाइट्रि, फॉस, पिलोका, सोरि, रस टॉ, सैम्बू, टैबे, जिंक मेट।

दुर्बलता कमजोरी—एेसिटैनि, ऐसेटिक एसिड, ऐडोनि वर, ऐड्रोने, ऐमो कार्ब, ऐमो म्यूर, ऐण्टि आर्स, आर्स आयोड, आरम, कैक्ट, कै॰के आर्स, कैम्फो, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, चिनि आर्स, सिन्को, कॉनवै, क्रैटैगस, डिजि, डायको, ईल सीरम, युफोर्बिया, फेरम, ग्रिण्डे, हेलोनि, हाइड्रोसि एसिड, आइबेरिस, कैली का, कैल्मि, लैके, लिलि टिग्रि, लाइकोप, मोर्फि, मॉस्कस, नेरियम, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, फैसिओल, प्लम्ब, प्रून स्पि, सोरी, पाइरो, सैर्कोले एसिड, सिला, स्पार्टि, स्पाइजे, स्ट्रोफै, टैबे, थाइरॉ, वेरेट्र ऐल्ब।

दुर्बलता कमजोरी पैशिक दौर्बल्य, "हृदय क्रियावरोध"—ऐडोनि वर, ऐड्रीने, ऐगैरिसिन, ऐल्कोहल, ऐमिल, ऐण्टि टा, ऐट्रोपि, कोफीन, कैम्फोरेटेड ऑयल, कोकेन, कॉनवै, क्रैटेगस, डिजिटैलीन, डिजि, ईथर, ग्लोनो, ऑक्सिजन का साँस लेना, सैकेरम, नपथूफि, सैलाइन, इन्फूजन, सीरम, ऐग्वि, स्पार्टि, स्ट्रोफै, स्ट्रिक्नि सल्फ, वेरेट्र ऐल्ब।

दुर्बलता कमजोरी, स्नायविक—ऐड्रीने कैक्ट, आइबेरिस, इग्नै, लिलि टिग्रि, लिथि कॉ, मॉस्कस, नाजा, पिलोका, प्रूनविर, स्पार्टि, स्पाइजे, टैबे, वैले।

दुर्बलता, कमजोरी, शोथ के साथ ऐसिटैनि, ऐडोनि वर, ऐपोसाइ, आर्स आयोड, आर्स, एस्क्लेप, सिरियाका, कैक्ट, कोफेन, कोलिन्सो, कानवै, डिजि, आइबेरिस, लैके, लाइकोपस, ओलियण्ड, स्विसि, स्पार्टि, स्ट्रोफै। देखिए साधारण लक्षणों की सूची।

अवकृष्टता, वसामयी—ऐडोनि ईस्ट; ऐडेनि वर, आर्न, आर्स आयोड, आर्स, आरम, बैराइटा का, सिमिसि, क्रैटै, क्युप्रम ऐसि, फ्यूकस, कैली का, कैली फेरोसाइ, कैल्मि, फॉस एसिड, फॉस, फाइजॉस्टि, फाइटो, सैकै, ऑफि, स्ट्रोफै, स्ट्रिक्नि फॉस, वैनैडि।

फैल जाना—ऐडोनि वर, ऐमो का, आर्स आयोड, आर्स, बैराइटा का, कैक्ट, सिमिसि, कॉनवै, क्रैटै, डिजि, जेल्से, आइबेरिस, नाजा, फैसिओ, फॉस, फाइजॉस्टि, प्रून स्पि, स्पार्टि स्को, स्पाइजे, स्ट्रोफै, टैबै, वेरेट्र विरि। देखिए दुर्बलता, पैशिक।

साँस कष्ट—एकोन फेरो, एकोन, एडोनि वर, ऐड्रैन, एमो का, एपिस, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम मेट, कैक्ट, कैल्के आर्स, कार्बो वेज, चिनि आर्स, सिमिसि, कोलिन्सो, कानवै, डिजि, ग्लोनो, आइबेरिस, कैली नाइ, कैल्मि, लैके, लॉरो, लाइको, मैग्नोलि, नाजा, ऑक्जै एसिड, ओपि, क्वेबैरैको, स्पाइजे, स्पांजिया, स्टोफै, स्ट्रिक्नि आर्स, सुम्बु, विस्कम। देखिये साँस यन्त्र।

हृदय में जल संचय—एपिस, एपोसाइ, ऐण्टि आर्स, आर्स आयोड, लैके।

बढ़ जाना—ऐकोन, आर्न, आर्स, ऑरम, बेल, ब्रोमि, कैक्ट, कैफीन, कॉस्टि, सेरियस, कॉनवै, क्रैटेग, डिजि, ग्लोनो, आइबेरिस, आयोड, कैल्मि, लिलि टिग्रि, लाइकोपस, नाजा, फॉस, फाइटो, रस टॉ, स्पाइजे, स्पॉन्जि, स्ट्रोफै, स्ट्रिक्नि, आर्स, वेरेट्र विरि, विस्कम।

ढीलापन, बिना अन्य बाधाओं के, खिलाड़ी लोगों का—आर्न, ब्रोमि, कॉस्टि, रस टॉ।

प्रदाह (हृदय की झिल्लियों का) तीव्र—एकोन, आर्स, बेल, कैक्ट, कॉल्चि, कॉनवै, डिजि, लैके, मैग्नोले, नाजा, फॉस, स्पाइजे, स्पॉन्जि, टैबे, वेरेट्र विरि। देखिये हृदयवेष्ट का प्रदाह।

हृदय की झिल्लियों का प्रदाह-घातक—ऐकोन, आर्स, चिनि-सल्फ, क्रोटे, लैके, वाइपेरा।

हृदयावरण झिल्ली का प्रदाह-वात सम्बन्धी—ऐकोन, एडोनि वर, बेल, ब्रायो, कोल्चि, कैली का, कैल्मि, रस टॉ, स्पाइजे।

दिल की पेशियों का प्रदाह—एकोन, एडोनि वर, आर्स आयोड, ऑरम म्यूर, कैक्ट, चिनि आर्स, क्रैटे, डिजि, गैलैन्थ, आयोड, लैके, फॉस, स्ट्राफै, वाइपेरा। देखिये कमजोरी अपकर्षता।

पेरिकारडाइटिस—दिल की चारों तरफ की झिल्ली का प्रदाह—तीव्र—एकोन, एडोनि वर, एण्टि आर्स, एपिस, आर्स, एसक्लेपि ट्यूब, बेल, ब्रायो, कैक्ट,

कैन सै, कैन्थे, काल्चि, डिजि, आयोड, कैली का, कैली आयोड, कैल्मि, मैग्नोलि, मर्क कार, मर्क, नाजा, नैट्र म्यूर, फैसिओल, सिला, स्पाइजे, स्पॉन्जि, सल्फर, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र विरि।

पेरिकार्डाइटिस, जीर्ण—एपिस, ऑरम आयोड, कैल्के फ्लो, कैली का, सिला, स्पाइजे, सल्फर।

पेरिकार्डाइटिस वात सम्बन्धी—एकोन, एनाका, ब्रायो, कॉल्चि, सिना, कॉल्चि, क्रैटे, कैल्मि, रस टॉ, स्पाइजे।

स्नायविक व्याधि—एकोन, एड्रैनै, कैक्ट, कैमो, सिन्को, कॉफि, फेरम, जेल्से, आइबेरिस, इग्नै, लैके, लिलि टिग्रि, लाइकोपस, मॉस्कस, नक्स वॉ, मून विर, स्कुटेल, सीपि, स्पाइजे, टैबे, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक मेट।

स्नायु-व्याधि, इन्फ्लुएन्जा के कारण उत्तेजना—आइबेरिस, स्पॉर्टि, स्को।

स्नायु-रोग, उत्तेजनीयता, चाय, कॉफी इत्यादि से—एगैरिसिन।

स्नायु-रोग, तम्बाकू के सेवन करने से उत्तेजना—ऐगैरिसिन, ऐग्नस, आर्स, कैलैडि, कॉनवे, डिजि, कैल्मि, लोइकोपस, नक्स वॉ, फॉस, स्पाइजे, स्टैफि, टैबै, स्टोफै, वेरेट्र एल्ब।

स्नायु-रोग, बवासीर के दबने से उत्तेजनीयता—कोलिन्सो।

स्नायु-रोग, गर्भाशय—डिम्बाशय रोग के कारणों से उत्तेजनीयता—सिमिसि, लिलि टिग्रि।

स्नायु-रोग, उत्तेजनीय कम्पन, अरुण—ज्वर के कारणों से—लैके।

दर्द—एब्रोज नाइ, एकोन, एडोनि वर, ऐमिल, ऐपिस, आर्न, आर्स, ऐस्टेरि, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के फ्लो, कैन्थे, सीरियस, सेरियस सर्प, सिमिसि, कॉफि, कॉल्चि, कॉनवे, क्रैटे, डैफ्ने, डिजि, डायस्को, फेरम टार्ट, हैमेटोक्स, हाइड्रोसि एसिड, आइबेरिस, कैल्मि, लैके, लैट्रोड, लेपिडि, लिलि टिग्रि, लिथि कार्ब, लोबे इन्फ्ला, लाइकोपस, मैग्नोलि, मेडो, नाजा, ओनोस्मो, ऑक्जे एसिड, ऑवि गै पे, पियोनिया, पाइपर नाइथ, टेलि, स्पाइजे, स्पांजि, स्ट्रोफै, सिफ्ली, टैबे, थेरेडि, थॉइरॉय, वेरेट्र विरि, जिंक वै।

सिर में दर्द—लिलि टिग्रि।

तल भाग में दर्द—लोबे इन्फ्ला।

संकुचन दर्द; मानो बाँक में जकड़ रहा हो—एकोन, ऐडोनि वर, एमाइल, आर्न, आर्स, कैक्ट, कैडमि सल्फ, कैल्के आर्स, कॉक्कस, कोल्चि, आयोडोफो, आयोड, कैली कार्ब, लैके, लारो, लिलि टिग्रि, लाइकोपस, मैग फॉस, मैग्नोलि, नक्स मॉ, टीलि, स्पान्जि, थाइरो।

स्नायुशूल हृदय सम्बन्धी (ऐन्जाइना पेक्टोरिस)—ऐकोन, ऐड्रोन ऐमाइल, आर्जे साइ, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स आयोड, ऑर्स, ऑरम म्यूर, बिस्मथ, कैक्ट, कैम्फो, सेरियस, चिनि आर्स, सिमिसि, कोकेन, कॉनवै, क्रैटै, कोटै, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रममेट, डिजि, डायस्को, ग्लोनो, हेमैटोक्स, हाइड्रोसि एसिड, कैली काब, कैली आयोड, कैल्मि, लैट्रोड, लिलि टिग्रि, लिथि कार्ब, लोबे इन्फ्ला, मैग फॉ, मैग्नोलि, मोर्फि, नाजा, नैट्र आयोड, नेट्र नाइट्रि, नक्स वॉ, ओलियैंड, आक्जै एसिड, फॉस, फाइटो, पाइपर नाइग्र, प्रून स्पाइ, सैम्बु, स्पाटि, स्पाइजे, स्पान्जि, स्टैफि, स्ट्रोण्शि, कार्ब, स्ट्रोन्शि आयोड, टैबे, थाइरॉय, वेरेट्र विरि, जिंक वै।

कॉफी के अति व्यवहार से—कॉफि।

उत्तेजक वस्तुओं के अति व्यवहार से—नक्स वॉ, स्पाइजे।

पैशिक विकार से—क्युप्रम, हाइड्रोसि एसिड।

हृदय के यांत्रिक विकार से—आर्स आयोड, कैक्ट, कैल्के फ्लो, क्रैटेगस, कैल्मि, नैट्र आयोड, स्ट्रोन्शि आयोड, टैबे।

वात रोग से—सिमिसि, लिथि का।

बहुत जोर पड़ने से, भारी बोझ उठाने से—आर्न, कार्बो ऐन, कॉस्टि।

तम्बाकू के व्यवहार से—कैल्मि, लिलि टिग, नक्स वॉ, स्पाइजे, स्टैफि, टैबे।

अवास्तविक हृदय शूल—एकोनिटीन, कैक्ट, लिलि टिग्रि, मॉस्कस, नक्स वॉ, टैरै हिस्पै। देखिये दर्द।

हृदय-क्षेत्र में दाब, भारीपन, चिन्ता—एकोन, एडोनि वर, ऐड्रोनै, इस्कियु, ऐगैरि, एमो का, एमाइल, एपिस, आर्स; आर्स आयोड, एस्पै, ऑरम, ब्रोमि, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैम्फो, कार्बो वेज, सेरियस, सिमिसि, कोल्चि, कोलिन्सो, कोलेटाइड, क्रैटेग, क्युप्रम, डिजि, डायस्को, फेर, ग्लोनो, हेमेटॉक्स, हाइड्रोसि एसिड, आइबेरिस, इग्ने, आयोड, इपिका, कैल्मि, लैके, लैट्रोड, लॉरो से, लिलि टिग्रि, लिथि का, लाइकोपस, मैग्नो, मेनियान्थ, नाजा, नैट्र आर्स, प्रिमुला वे, पल्से, सैपानै, स्पाइजे, स्पॉजि, टैबे, थिया, थाइरॉय, वैनडि, वेरेट्र वि।

बायें कन्धे के नीचे तक, बाँह से अँगुली तक चुभन—एकोन, आर्न, ऐस्पेरे, बिस्मथ, कैक्ट, सिमिसि, क्रोटै, कैल्मि, लैट्रोड, लेपिडि, नाजा, ऑक्जै एसिड, रस टॉ, स्पाइजे, टैबे।

सिर के तल तक चमकन—मेडो।

तलवे के सिरे तक रात में चमकन—सिफिलि।

पीठ से कन्धे तक चमके—स्पाइजे।

चमकन, कोंचन, फटन—आर्स, बेल, कैक्ट, सेरियस, सिमिसि, कोल्चि, डैफ्ने, ग्लोनो, आइबेरिस, कैल्मि, लैट्रोड, लिलि टि, लिथि का, मैग्नोलि, मेन्थोल, ऑक्जै एसिड, पियोनि, फाइटो, स्पाइजे, सिफिलि, टैबे। देखिये स्नायुशूल।

चिलिकन, कटन—एबीज नाइ, एकोन, एनाका, आर्स, ऐसक्लीपि ट्यूब, ब्रायो, कैक्ट, कैने इण्डि, कॉस्टि, सेरियस, डिजि, आइबेरिस, कैली का, कैली नाइट्रि, लिथि का, नाजा, स्पाइजे।

धड़कन—एबीज कैने, एकोन, ऐड्रोनि वर, ऐगैरि, ऐगैरिसिन, एमाइल, एपिस, आर्जें नाइ, आर्स, ऐसैफे, आरम मेट, आरम म्यूर, बैराइटा का, बेल, कैक्ट, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैम्फो, कैन्थे, कैने इण्डि, कार्बो वेज, चिनि आर्स, सिना, सिन्को, कोका, कॉकु, कॉफि, कोचि कोनि, कॉनवे, क्रैटेगस, क्युप्रम; डिजिटैलीन, डिजि, फैगोपा, फेरम, फेरम फॉ, जेल्से, ग्लोनो, हाइड्रै, आइड्रोसि ऐसि, आइबेरिस, इग्नै, आयोड, कैली का, कैलि फेरो साइ, कैल्मि, लैक, लारो, लिलि टिग्रि, लोबे इन्फ्ला, लाइकोपस, मॉस्कस, नाजा, नैट्र म्यूर, नेरियम, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओलियैंड, ओलि जैको ऐसे, आक्जै ऐसि, फेसिओल, फॉस ऐसि, फॉस, प्लैटि, पल्से, पाइरो; सिकेलि, सीपिया, स्पाइजे, स्पांजि, सल्फर, सुम्बुल, टैबे, थीया, थाइरॉय, वैलेरि, वेरेट्र विरि, जिंक।

कारण—रक्त हीनता, जीवन रस निकल जाना—आर्स, सिन्को, डिजि, फेरम आयोड, कैली का, कैली फेरेसाइ, नैट्र म्यूर, फॉस ऐसि, फास, पल्से, स्पाइजे, वेरेट्र एल्ब।

तेजी से बढ़ने वाले बच्चों में—फास एसिड।

मन्दाग्नि—एबीज कैने, एबीज नाइग्रा, आर्ज नाइट्रि, कैक्ट, कार्बो वेज, सिन्को, कोका, कॉफि, कोलिन्सो, डायस्को, हाइड्रोसि ऐसि, लाइको, नक्स वॉ, पल्से, प्रून विर, सीपि, स्पाइजे, टैबै।

आवेगिक कारण—ऐकोन, ऐम्ब्रा, ऐमो वेले, एनैका, कैक्ट, कैल्के आर्स, कैमो, कोफि, जेल्से, हाइड्रो एसिड, इग्नै, आयोड, लैके, लिथि का, मॉस्कस, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपि, प्लैटि, सीपि, टेरै हि।

चर्म रोग के दब जाने से—कैल्के का।

जरा-सा जोर पड़ने से—बेल, ब्रोमि, सिमिसि, कोका, कोनवै, डिजि, आइबेरिस, आयोड, नैट्र म्यूर, सार्को एसिड, थाइरॉय।

शोक से—इग्नै, फॉस एसिड।

दिल पर जोर पड़ने से—आर्न, बोरै, कॉस्टि, कोका।

स्नायविक उत्तेजना—ऐट्रोपि, कैक्ट, कॉफि, ग्लोना, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, इग्नै, कैली का, कैली फॉस, लिलि टिग्रि, लाइकोपस, मैग फॉस, हायोसि, मॉस्कस, नाजा, सीपिया, स्पाइजे, सुम्बुल।

देर तक दिमागी काम करने से, अधिक मैथुन से—कोका।

चाय पीने से—सिन्को।

तम्बाकू व्यवहार करने से—एगैरि, आर्स, कैक्ट, जेल्से, नक्स वो, स्ट्रोफै।

गर्भाशयिक रोग से—कॉनवै, लिलि टिग्रि।

केंचुओं के कारण से—स्पाइजे।

साथ के लक्षण—घबराहट, बेचैनी के साथ—एकोन, इथूजा, आर्स, कैल्के कार्ब, कॉफिया, इग्नै, लैके, नैट्र म्यूर, फैसिओल, फॉस, पल्से, सैपोने, स्पाइजे, स्पान्जि, वेरेट्र एल्ब, जिंक मेट।

दिल के पास जलन के साथ—कैली का।

गले में रुकने जैसा संवेदन के साथ—आइवेरिस, लैके, नाजा।

धुँधलापन के साथ—पल्से।

साँस-कष्ट के साथ—ऐमो का, कैक्ट, डिजि, ग्लोनो, ग्लीसरीन, लैके, ओलियैण्ड, नाजा, ऑक्जै एसिड, फॉस, स्पाइजे, स्पॉन्जि, वेरेट्र एल्ब, जिंक मेट।

चेहरे की लाली के साथ—ऐगैरि, ऑरम, बेल, ग्लोनो।

गशी के साथ—एकोन, कैमो, लैके, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, पेट्रोलि, टैबै।

मुह से दुर्गन्ध के साथ—स्पाइजे।

बादी, अफरा के साथ—आर्जे नाइ, कैक्ट, कार्बो वेज, नक्स वॉ।

सिर दर्द के साथ—इथूजा, बेल, लिथि का।

दिल की गति परिश्रमिक और उसकी धमक सिर में लगे—ऑरम, बेल, ग्लोनो, स्पाइजे, स्पॉन्जि।

दिल की दुर्बलता के साथ—कोका, डिजि।

गरम लगने, असुविधा के साथ—ऐण्टि टॉ, कैल्के का, कैली का, पेट्रोलि।

दिल के ऊपरी सीने के भाग में दर्द के साथ—ऐकोन, आर्स, कैक्ट, कैमो, कॉस्टि, कॉफि, हाइड्रो एसिड, लारो, मैग म्यूर, नाजा, स्पाइजे, स्पॉन्जि।

बवासीर के साथ या बवासीर के समय मासिक धर्म रुकने के साथ—कोलिन्सो।

अनिद्रा के साथ—सिमिसि, कोका, इग्नै, स्पाइजे।

पेट में भारीपन के साथ—उपास।

पेट में धँसन के साथ—सिमिसि।

कर्णनाद, उदासी, क्षुधाहीनता, सीने में दाब के साथ—कोका।

कम्प के साथ—ऐसाफि, लैके, रस टॉ, सल्फ्यू एसिड।

अधिक मूत्र स्खलन के साथ - कॉफि।

गर्भाशय के दर्दीलापन के साथ —कॉनवै।

चक्कर आने के साथ—एडोनि वर, इथूजा, कैक्ट, कोरोनिला, आइबेरिस, स्पाइजे।

कमजोरी के साथ, सीने में खालीपन के साथ—ओलियैण्ड।

बढ़ना—खाने के बाद—कैल्के कार्ब, लिलि टिग्रि, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पल्से।

मासिक धर्म निकट आने के समय—कैक्ट, क्रोटै, स्पॉञ्जि।

रात में—आर्स, कैक्ट, कैल्के कार्ब, आइबेरिस, इग्नै, लिलि टिग्रि, नैट्र म्यूर, फॉस, टैबे।

सोते में—ऐलस्टोनि, एमो कार्ब, कैने इण्डि, आइबेरिस, फॉस एसिड, स्पॉञ्जि।

जरा-सी हरकत से—ऐकोन, बेल, कैक्ट, कैल्के आर्स, सिमिसि, डिजि, फेरम, आइबेरिस, लिलि टिग्रि, नैट्र म्यूर, स्पाइजे।

लेटने से—आर्स, कैली कार्ब, लैके, लिलि टिग्रि, नैट्र म्यूर; नक्स वॉ, सीपिया, स्पाइजे, थाइरो।

बायीं करवट लेटने से—बैराइटा कार्ब, कैक्ट, लैक कैना, लैक, लाइको, नैट्र म्यूर, फॉस, पल्से, टैबे, थीया।

दाहिनी करवट लेटने से—ऐलुमेन, आर्जे नाइ।

दिमागी जोर पड़ने के बाद—कैल्के आर्स।

उठने के बाद—कैक्ट।

बैठने से—मैग म्यूर, फॉस, रस टॉ।

आगे झुककर बैठने से—कैल्मि।

आगे झुकने से—स्पाइजे।

रोग पर सोचने से—बैराइटा कार्ब, जेल्से, आक्जै एसिड।

सुबह के समय, टहलने से—कैली कार्ब, नक्स वॉ।

घटना—दाहिनी करवट लेटने पर—लैके कैना, टैबे।

हरकत से—फेरम मेट, जेल्से, मैग म्यूर।

नाड़ी—भरी, पूरी उछलती हुई, मजबूत; सभी जगह मालूम हो—एकोन, इस्क्यू, ऐमो म्यूर, ऐमाइल, ऐपिस्टपाइरि, आर्न, ऑरम, बैराइटा कार्ब, बेल, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कॉफि, क्युप्रम, फेगोपि, फेरम मेट, ग्लोनो, आयोड, लिलि

टिग्रि, लाइकोपस, ओनोस्मो, ओपि, फाइजॉस्टि, पिलोका, पोथ, पल्से, सैबाइ, स्पाइजे, स्पॉञ्जि, वेरेट्र विरि।

रुक-रुक कर एकोन, एपोसाइ, बैप्टि, कैक्ट, कार्बो वेज, सिन्को, कोल्चि, कोनवै, क्रैटे, डिजि, फेरम म्यूर, आइबेरिस, इग्नै, कैली कार्ब, कैल्सि, लिलि टिग्रि, लाइकोपस, मर्क का, मर्क साइ, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, फॉस एसिड, पाइपर नाइग्र, रस टॉ, सिकेलि, सीपिया, स्पाइजे, स्ट्रोफै, टैबे, टेरेबि, थीया, वेरेट्र ऐल्ब, वेरेट्र वि, जिंक मेट।

रुक-रुक कर, हरएक तीसरे से सातवीं चोट पर—डिजि, म्यूरि एसिड।

क्रम भ्रष्ट—ऐसिटैनि, एकोन, ऐडोनि वर, ऐड्रैनै, ऐगैरिसिन, ऐण्टिपाइरिन, ऐपोसाइ, आर्न, आर्स आयोड, ऑरम, बेल, कैक्ट, कैफीन, कैमफो, सिमिसि, सिन्को, कोनवै, क्रैटे, डिजि, ईल सीरम, फेरम मेट, जेल्से, ग्लोनो, हाइड्रोसि एसिड, आइबेरिस, इग्नै, कैली कार्ब, कैल्मि, लैके, लारो, लिलि टिग्रि, लाइपो, म्यूरि ऐसिड, नाजा, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, फैसिओल, फॉस एसिड, पिलोका, पल्से, रस टॉ, सैंग्वि, सिकिल, साइम ऐंग्वि, स्पार्टि, स्पाइजे, स्ट्रोफै, स्ट्रिक्नि आर्स, स्ट्रिक्नि फॉस, सुम्बु, टैबे, थीया, वेरेट्रम एल्ब, वेरेट्र विरि, जिंक मेट।

तीव्र गति (टैकीकार्डिया)—एबीज नाइ, ऐकोन, ऐड्रोनि वर, एड्रीन, ऐग्नस, ऐमो बैल, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टॉ, ऐण्टि पाइरि, ऐपोसाइ, आर्न, आर्स आयोड, बेल, ब्रायो, कैक्ट, कैन्थे, कार्बो वेज; कॉफि, कोल्चि, कोलिन्सो, कोनवै, क्रैटे, डिजि, डिफ्थे, ईलि सीर, फेरम फॉस, जेल्से, ग्लोनो, आइबेरिस, कैल्मि, कैली क्लोर, लैके, लैट्रोड, लीडम, लिलि टिग्रि, लाइकोपस, मर्क को, मोर्फि, म्यूर एसिड, नाजा, नैट्र म्यूर, फैसिओल, फॉस, फाइटो, पिलोका, पाइरो, राडो, रस टॉ, सिकेलि, सीपिया, स्पॉञ्जि, स्ट्रोफै, स्ट्रिक्नि फॉस, टैबे, टेरेबि, थीया, थाइरॉय, वेरेट्र एल्ब, विरि। देखिये कमजोर।

सुबह को तेज—आर्स, सल्फर।

तापमान के अनुपात से कहीं अधिक तेज गति—लिलि टिग्रि, पाइरो।

मन्द गति—(ब्रैकीकार्डिया)—एबीज नाइ, ऐडोनि वर, ऐड्रैनै, इस्कियु, एपोसाइ, कैक्ट, कैम्फो; कैने इण्ड, कैन्थे, कास्टि, कोल्चि, क्युप्रम, डिजि, ऐसेरीन, जेल्स, हेलोड, हेलेबो, कैल्मि, लैट्रोड, लुपुल, लाइकोपस, मोर्फि, माइर, नाजा, ओपि, पाइपर नाइग्र, रस टॉ, स्पाइजे, टैबे, वेरेट्र ऐल्ब, वेरेट्र विरि। देखिये कमजोर।

धीमी और तेज गति बारी-बारी—सिन्को, डिजि, जेल्से, आयोड, मोर्फि।

मुलायम, दबने वाली—ऐकैलाइ, आर्स, बैप्टि, कैफीन, कोनवै, फेरम मेट, फेरम फॉ, जेल्से, कैली कार्ब, फॉस, प्लम्ब, वेरेट्र ऐल्ब, वेरेट्र विरि। देखिये कमजोर।

कमजोर, फड़फड़ाती, लगभग बेमालूम—ऐसिटैनि, ऐकोन, एडोनिवर, ऐड्रीनै, एथूजा, एगैरिसिन, एलैन्थस, एमो म्यूर, एण्टि आर्स, एण्टि टा, एपिस, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, ऐस्पैरै, बैराइटा म्यूर, कैक्ट, कैफीन, कैम्फो, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सिमिसि, कोल्चि, कोलिन्सो, कोनवै, क्रैटे, क्रोटै, क्रोटो, डिजि, डिफ्थे, ईल सीरम, फेरम मेट, जेल्से, हाइड्रोसि एसिड, हायोसिन, हाइड्रो ब्रो, आयोड, कैली का, कैली क्लो, कैली नाइट्रि, कैल्मि, लैके, लैट्रोड, लॉरो, लाइकोपस, मर्क को, मर्क साइ, मोर्फि, म्यूरि एसिड, नाजा, ओपि, ऑक्जै एसिड, फेसिओल, फॉस एसिड, फास, फाइजॉस्टि, प्लम्ब, पाइरो, रस टॉ, सैंग्वि, सैपोनि, सिकेलि, स्पार्टि, स्पाइजे, सल्फर, टैबै, टेरेबि, थाइरॉ, वेरेट्र एल्ब, विरि, विस्कम, जिंक मेट।

संवेदना – मानो दिल से बूँदें गिर रही हों – कैनै से।

मानो दिल जल रहा हो—कैली का, ओपि, टैरै हि।

मानो दिल की गति बन्द हो रही हो—ऐण्टिपाइरी, चिनि आर्स, सिमिसि, क्रैटे, डिजि, लोवे इन्फ्ला फ्रैसिओल, ट्रिफोलि।

मानो दिल की गति बन्द होकर फिर एकाएक चल पड़ी हो—ऑरम, कॉनवै, लिलि टिग्रि, सीपि।

मानो चलने-फिरने पर, दिल की गति बन्द हो रही है, इसलिए स्थिर रहना चाहिए—कोकेन, डिजि।

मानो आराम करने से या स्थिर रहने से दिल की गति बन्द हो रही है, चलना-फिरना, हिलते रहना आवश्यक है—जेल्से, ट्रिफोलि।

मानो दिल ठण्डा हो—कैल्के का, कार्बो ऐन, ग्रैफाइ, हेलोड, कैली बाइ; कैली म्यूर, कैली नाइट्रि, लिलि टिग्रि, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि।

मानो दिल फड़फड़ा रहा है—एब्सिन्थ, एकोन, एमाइल, एपोसाइ, एसैफे, कैक्ट; सिमिसि, कॉनवै, क्रोटै, फेरम, ग्लोनो, आइबेरिस, कैल्मि, लैके, लिलि टिग्रि, लिथि का, मॉस्कस, नाजा, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, फैसिओल, फॉस एसिड, फाइजॉस्टि, पाइरो, स्पाइजे, सलफ्यू एसिड, थीया। देखिये धड़कन।

मानो दिल खरखर कर रहा हो—पाइरो, स्पाइजे।

मानो दिल लोहे के तारों से दबोचा या निचोड़ा जा रहा है – आर्न, क्रैक्ट, आयोड, लिलि टिग्रि, सल्फर, वैनैडि, विस्कम।

मानो दिल धागे से लटक रहा है—कैली का, लैके।

मानो दिल बहुत भरा हो, फट रहा हो—इस्कियु, एमाइल, ऑरम मेट, बेल, ब्यूफे, सेन्क्रिस, कोलिन्सो, कोनवे, ग्लोनो, ग्लीसरीन, आइबेरिस, लैक्टू, लिलि टिग्रि, पाइरो, स्पाइजे, स्ट्रोफै; सल्फर, वैनैडि।

मानो दिल थक गया हो—पाइरो।

मानो दिल मरोड़ा जा रहा हो—लैके, टैरेण्टुला हि।

दिल का दर्दीलापन, कचट जैसा कोमलपन—आर्न, कैक्ट, कैम्फो, जेल्से, हेमैटोक्स, लिथि का, लाइकोपस, नाजा, सीकेल, स्पाइजे।

मूर्च्छा (साइनकोप)—ऐसिटैनि, ऐसेटि ऐसि, ऐकोन, ऐलेट्रि एमाइल, एपिस, आर्स, कैक्ट, कैन्थे, कार्बो वेज, कैमो, सिमिसि, सिन्को, कोलिन्सो, क्रोक, क्युप्रम, डिजि, फेरम, ग्लोनो, इग्नै, इपिका, लैके, लिलि टिग्रि, लिनेरि, मैग म्यूर, मैगनोल, मॉस्कस, नक्स मॉस, नक्स वॉ, ओपि, फेसिओल, फॉस ऐस, फॉस, पल्से, सीपि, स्पाइजे, स्पॉन्जि, सल्फर, सुम्बुल, टैबे, थाइराय, ट्रिलि, वेरेट्र एल्ब, जिंक।

मूर्च्छा, गन्ध से, सुबह के समय, खाने के बाद—नक्स वॉ।

मूर्च्छा, मूर्च्छा हिस्टीरिया युक्त—एकोन, ऐपियम वाइ, ऐसैफे, कैमो, कॉकु, क्युप्रम, इग्ने, लैके, मॉस्कस, नक्स मॉ।

कपाट के रोग—ऐकोन; एडोनि वर, ऐपोसाइ, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम ब्रो, ऑरम आयोड, ऑरम मेट, कैक्ट, कैल्के फ्लो, कैम्फो, कॉनवै, क्रैटै, डिजि, फेरम, गैलैन्थ, ग्लोनो, आयोड, कैल्मि, लैके, लॉरो, लिथि का, लाइकोपस, नाजा, ऑक्जै एसि, फॉस, प्लम्बम, रस टॉ, सैंग्वि, सीरम, ऐंग्वि, स्पाइजे, स्पॉन्जि, स्टिग्मा, स्ट्रोफै, पाइरो, विस्कम।

शिरायें—रक्ताधिक्य, फैलना (प्लेथीरा)—ऐडोनि वर, इस्कियु, ऐलो, आर्न, आर्स, ऑरम, बेलिस, कैल्के का, कैल्के हाइपोफॉस, कैम्फो, कार्बो ऐन, कार्बो वेज, चिनि सल्फ, कोलिन्सो, कॉनवै, डिजि, फ्लो एसि, हैमे, लेप्टै, लाइको, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब, पोडो, पल्से, सीपि, स्पॉन्जि, स्टेलै, सल्फर; वरबै।

शिरा में रक्ताधिक्य (वस्तुगह्वरीय)—एलो, कोलिन्सो, सीपि, सल्फर।

शिरा में रक्ताधिक्य (यकृत-शिरायें)—इस्कियु, एलो, कोलिन्सो, लेप्टै, लाइको, नक्स वॉ, सल्फर।

शिरा प्रदाह (फ्लेबाइटिस)—ऐकोन, ऐगैरि, एपिस, आर्न, आर्स, बेल, क्रोटै, हैमे, कैली का, लैके, लाइको, मर्क, फॉस, पल्से, स्ट्रॉन्शि कार्ब, वाइपेरा।

शिरा प्रदाह, जीर्ण - आर्न, मर्क, पल्से, रूटा।

शिरायें, गाँठ सिकुड़ी हुई—ऐसेटिक एसिड, इस्कियु, ऐलुमेन, एपिस, आर्स, बेलिस, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लोर, कैल्के आयोड, कार्बो वेज, कार्डु मैरि, कास्टि, कोलिन्सो, फेरम फॉ, फ्लोरिक एसिड, ग्रैफा, हैमे, कैली आर्स, लैके, लाइको, मैग्नि-फेरा, म्युरि एसिड, नैट्र म्यूर, पियोनिया, प्लम्ब, पौलिगो, पल्से, रैने स्क्ले, रूटा, स्किरिन; सीपि, स्टैफि, स्ट्रॉन्शि कार्ब, सल्फर, सलफ्यु एसिड, वाइपेरा, जिंक मेट।

हाथ-पैर

कक्षा : बगल—फोड़ा—हीपर, इरिडि, जुग्लैंरे ।

दानें निकलना—कार्बो वेज।

अकौता—इलैप्स, नैट्र म्यूर ।

विसर्पिका– कार्बो ऐन ।

दाहिनी तरफ के कुच में पैशिक पीड़ा—प्रिम्युला ।

दर्द, सूजन के साथ या बिना सूजन के—जुग्लै सि ।

पसीना, अधिक, घृणित—बोवि, कैल्के कार्ब, हीपर, कैली कार्ब, लाइको, नाइट्रि एसिड, ओस्मो, पट्रोलि, सीपि, साइलि, स्ट्रिक्नि फॉ, सल्फर, टेलूरि, थूजा ।

पीठ—धनुष की तरह झुकी हो, बहिरायाम—ऐंग्सट्यू, साइक्यूटा, नैट्र सल्फ, निकोटि, ओपि, फाइटो, स्ट्रिक्नि । देखिये विक्षेप (स्नायुमण्डल) ।

स्कंधास्थि के बीच में जलन– ग्लोनो, लाइको, फॉस; सल्फर ।

जलन– ऐलुमि, आर्स, ऑरम म्यूर, बर्बे वल, कैल्के फ्लो, कार्बो ऐन, हेलोड, हेलोनि, कैलि फॉ, लाइको, मेडो, नाइट्रि एसिड, फॉस, पिक्रि एसिड, सीपि, टेरेबि, अस्टिलै, जेरोफाइ ।

छोटे स्थानों में जलन—ऐगैरि, फॉस, रैन वल, सल्फर ।

स्कंधास्थि के बीच में ठंडापन—एबीज कैने, एमो म्यूर, हेलोड, लैक, कैन्थ, सीपि ।

ठण्डापन—एबीज कैने, ऐकोन, आर्स, बेन्जो एसिड, जेल्से, जिनसेंग, क्वैसि, रैफे, सीपि, स्ट्रिक्नि, वेरेट्र एल्ब ।

टेढ़ापन, वक्र मेरुदण्ड, स्कोलिओसिस—बैराइटा कार्ब, कैल्के कार्ब, फॉस एसिड, फॉस, साइलि, सल्फर ।

स्फोट फटना—सीपिया ।

लँगड़ापन, तनाव, कड़ापन—एब्रोटै, एकोन, इस्कियु, ऐगैरि, ऐमो म्यूर, बेल, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैम्फो, सोनोब्रो, कॉस्टि, सिमिसि, क्युप्रम आर्स, डायस्को, डल्का, गेटिसबर्ग वाटर, जिन्स, हेलोनि, हाइपेरि, कैली कार्ब, कैली फॉ, कैल्मि, लैकनैन्थ, लीडम, लाइको, निकोटि, फाइजॉस्टि, फाइटो, रस टॉ, रूटा, सैर्कोल एसिड, सीपि, स्पॉन्जि, स्टैफि, स्ट्रिक्नि, सल्फ एसिड, सल्फर, जिंजि ।

सुन्न होना—ऐकोन, बर्बे वल, कैल्के फॉ, आक्जै एसिड, ऑक्सिट्रो, सिकेलि, साइलि ।

दर्द साधारण—ऐब्रोटै; ऐकोन, ईस्कयु, ऐगैरि, एलुमि, ऐमो कार्ब, ऐंगस्टू, ...िट टा; एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्जे मेट, आर्न, बैराइटा कार्ब, बेल, बर्बे वल, ब्रायो,

कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैना इण्डि, कार्बो एसिड, कॉलोफाइ, कॉस्टि, कैमो, चिनि आर्स, साइक्यूटा, सिमिसि, सिन्को, कोबै, कॉकु, कोल्चि, कोलो, डल्का, युपेटो पर्फ, ग्रैफा, गुवाको, हैमे, हेलोनि, होमेरस, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली म्यूर, लैके, लिलि टिग्रि, लाइको, मैग म्यूर, मैग सल्फ, मेडो, मर्क, मेजे, मोर मॉर्डि, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, आक्जे एसिड, पैरेफि, पेट्रोलि, फॉस एसिड, पिक्रि एसिड, पल्से, रेडियम, रैनन ऐक्रिस, रोडो, रस टॉ, रूटा, सैबाइ, सैंग्वि, सारासी, स्कलोपे, सिकेलि, सेलेनि, सीपिया, साइलि, स्टैफि, स्टेले, स्ट्रिक्नि, सल्फर, टैरै हि, टेलूरि, थेरी, ट्रिऑस्टि, उपास, वैरियोला, वायेथि, जेरोफाइल, जिंक मेट।

टीस, मानो पीठ टूट जायगी और अलग होकर गिर जायगी—इस्कयु, इथूजा, ऐमो म्यूर, बेल, कैने इण्डि, कैमो, चेलि, डल्का, युपेटो पर्फ, युपियन, ग्रैफा, हैमे, कैली बाइ, कैल्मि, क्रियोजो, नैट्र म्यूर, ओलि ऐन, ओवा टो, फॉस, प्लैटी, पल्से, रस टॉ, सार्कोलै एसिड, सैनिकू, सेनेगा, साइलि, ट्रिलि।

टीस, मन्द (लगातार)—एबीज कैने, इस्कियु, ऐगैरि, ऐलो म्यूर, ऐण्टि टा, ऐपोसा, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, आर्न, बैप्टि, बेलिस, बर्बे वल, ब्यूट्रि एसिड, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, कैन्थे, सिमिसि, कोबै, कोसिनेल, कॉकु, कोल्चि, कोनियम, कोनवै, क्युप्रम आर्स, डल्का, युओनाइम, युपिऑन, फेरम फॉ, जेल्से, ग्लीसरिन, हेलोनि, हाइपेरि, इनूला, इपोमाइया, कैली कार्ब, कैली आयोड, कैल्मि, क्रियोजो, लैके, लिथि बेंजो, लाइकोपस, लाइको, मोर्फि, नैट्र म्यूर, नक्स वो, ओलि ऐनि, ओलि जेको ऐसे, पैले, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फाइटो, पिक्रि एसिड, पिसिकडिया, पुलेक्स, पल्से, रेडियम, रस टॉ, रूटा, सैबाइ, सैपिना, सेनेसि, सीपि, सोलेन, लाइको, सोलिडै, स्टैफि, स्टिलि-सैबैलज, सल्फर, सिम्फाइट, टेरेबि, उपास, वारबर्न ओप, विस्कम, जिंक मेट।

कंधास्थि के बीच में—ऐकोन, ऐपामोर्फ, ऐस्कलै टुबे, बैराइटा कार्ब, कैल्के कार्ब, कैनै इण्डि, कोनियम, गुवाको, गुवाइकम, जुग्लैन्स सिने, कैली कार्ब, मेडो, पोडो, रेडियम, रस टा, सीपिया, सल्फर, जिंक मेट।

कुचलन—ऐकोन, इस्कियु, एगैरि, ऐण्टि टा, आर्न, बैराइटा कार्ब, बर्बे वल, ब्रायो, सिना, डल्का, जिन्से, ग्रैफा, हैमे, मैग सल्फ, मर्क, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फाइटो, रस टॉ, रूटा, साइलि, सल्फर, टेलूरि।

ऐंठन—बेल, सिमिसि, सिन्को, कोलो, ग्रैफा, आइरिस, मैग फॉस, ओवा टोस्टा, सीपिया।

खोद, कटन—सीपिया।

खींच—ऐनैका, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैली कार्ब, लाइको, नक्स वॉ, रस टॉ, सैबाइ, सल्फर।

अलग-अलग होकर गिर जायगी, ऐसी संवेदना, जिसमें पिठासा, मेरुदण्ड की अन्तिम अस्थि भी सम्मिलित हो, कस कर बाँधने से कम हो—ट्रिलि।

भारीपन, नीचे की तरफ खींच, बझ जैसा—इस्कियु, एलो, एमो म्यूर, एनाका, ऐण्टि क्रू, बेञ्जो एसिड, बर्बे वल, बोवि, कोल्चि, युपेटो पर्प्यु, हेलोनि, हाइड्रै, कैली कार्ब, क्रियोजो, लिलि टिग्रि, नैट्र सल्फ, पिक्र एसिड, सीपिया। देखिये स्त्री-जननेंद्रिय मण्डल।

कोंचन, खींच, फटन—ऐलूमि, ऐस्कले टुबे, बर्बे वल, कोल्चि, कोलोसिं, कैली म्यूर, लाइको, मिमोसा, नक्स वॉ, स्कोलोपे, सीपिया, साइलि, स्टैले, स्ट्रिक्नि।

कोंचन, जाँघों और टाँगों के नीचे तक उतरे—इस्कियु, ऑरम म्यूर, बैप्टि, बर्बे वल, कार्बो एसिड, कॉकु, कोलो, कुरारी, हैमे, हेलोनि, कैली कार्ब, कैली म्यूर, लैक कैना, ऑक्जै एसिड, फाइटो, स्कोलोपे, स्टेलैरि, टैलूरि, जेरोफाइलि।

कोंचन, वस्तिगह्वर प्रदेश तक पहुँचे - आर्जे नाइट्रि, ऑरम म्यूर, बर्बे वल, कैमो, सिमिसि, युपिओन, हैमे, साइलि, वेरेयोलाइ, विस्कम।

कोंचन, विटप क्षेत्र तक पहुँचे—सैबाइ, वाइबर्न ओपू, जैन्थो।

कोंचन, ऊपर की तरफ बढ़े—एस्पैरै, जेल्से।

पक्षाघातिक—कॉक्कु, कैली फॉ, नैट्र म्यूर, साइलि।

दाब गुल्फों की तरफ—इस्कियु, एगैरि, एनैका, ऑरम म्यूर, बेञ्जो एसिड, बर्बे वल, कोल्चि, हाइपेरि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, सीपि, टेलूरि।

त्रिकास्थि की अधिक उत्तेजना—लोबे इन्फ्ला।

फटन, गोदन, चुभन - एगैरि, एलो, एलुमि, एपिस, बर्बे वल, ब्रायो, गुवाइक, हाइपेरि, कैली का, मर्क, नैट्र सल्फ, सल्फर, टेलूरि, थेरिडियन।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—वीर्यपात के बाद—कोबे।

हस्तमैथुन के बाद—नक्स वॉ, फॉस एसिड, स्टैफि।

रात के समय—एलो, कैल्के का, लाइको, मर्क, मेजे, नैट्र म्यूर, स्टैफि, विस्कम।

ठण्ढ लगने से—एकोन, ब्रायो, रोडो, सल्फर।

नमी लगने से—डल्का, फाइटो, रस टॉ।

खाने से - कैली का।

जोर पड़ने से—एगैरि, बर्बे वल, कॉकु, हाइपेरि, कैली का, आक्जै एसिड, सल्फर। देखिये हरकत।

झटका लगने से, छूने से—ऐकोन, बर्बे वल, ब्रायो, कैली बाइ, लोबे इंफ्ला, मेजे, साइलि, टेलूरि।

लेटने से—बेल, बर्बे वल, निकोल सल्फ, नक्स वॉ, रस टॉ।

हरकत शुरू होते ही—लैक कैना, रस टॉ ।

हरकत से, टहलने में—इस्कियु, एलो, ऐण्टि टा, बेल, ब्रायो, कॉस्टि, चेलिडो, सिन्को, कोल्चि, कैली बाइक्रो, कैली का, मेजे, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, पैरैफि, पेट्रोलि, फाइटो, रैनन, एक्रिस, सल्फर, एक्रिस, सल्फर, सीपि ।

आराम से बैठने पर—एगैरि, एलुमि, ऐण्टि टा, बेल, बर्बे वल, कैने इण्डि, कोबै, फेरम फ्यूर, कैली फॉस, क्रियोजो, लैक कैना, मर्क, नक्स वॉ, पल्से, रस टॉ, सीपि; सल्फर, जिंक मेट ।

खड़े होने से - इस्कियु, बेल, नक्स वॉ, सेरकोल एसिड, सीपि ।

झुकने से—इस्कियु, बर्बे वल, डायस्को; गुवाको, टेलूरि ।

निम्न ताप से—कैली सल्फ, पल्से, सल्फर ।

सुबह के समय—ऐगैरि, बर्बे वल, ब्रायो, कोनवै, कैली का, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फाइटो, रूटा, सेलेनि, स्टैफि ।

बैठने की जगह पर से उठते ही—इस्कियु, आर्जे नाइट्रि, बर्बे वल, कॉस्टि, कैली फॉ, लैके, साइलि, सल्फर, टेलूरि ।

घटना—उठने के बाद—कैली का, रूटा, स्टैफि ।

पीछे की तरफ झुकने पर—रस टॉ ।

आगे की तरफ झुकने पर लोबे इन्फ्ला ।

वीर्य स्खलन से जिंक मेट ।

पेट के बल लेटने से—एसेटि एसिड ।

पीठ के बल लेटने से—इस्कियु, कोबै, नैफे, नैट्र म्यूर, रस टॉ, रूटा ।

किसी कड़ी चीज पर लेटने से—या कड़ी चीज के सहारे से—युपिओन, नैट्र म्यूर, रस टॉ, सीपि ।

लेटने से, बैठने से —सीपिया ।

हरकत से, टहलने से—आर्जे नाइट्रि, बेल, कॉस्टि, कोबै, फेरम म्यूर, हेलोनि, कैली म्यूर, क्रियोजो, मर्क, पल्से, रेडियम, रस टॉ, सीपि, स्टैफि, सल्फर, जिंक मेट ।

आराम से—इस्कियु, कोल्चि, नक्स वॉ, साइलि ।

बैठने से—बेल ।

खड़े होने से—आर्जे नाइट्रि, कास्टि, सल्फर ।

पेशाब करने से—लाइको, मेडो ।

कमजोरी—पीठ की—ऐम्ब्रा, इस्कियु, एलुमिना, एण्टि टा, आर्स, बर्बे वल, ब्यूट्रिक एसिड, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, सिन्को, कॉकु, ग्लीस, ग्रैफा, गुवाको, हेलोनि, इग्नै, इरिडि, जैकैरै, कैली कार्ब, मर्क; नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ऑक्जै एसिड, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फास, पिक्रि ऐसि, पोडो, सारासी, सीपिया, सिलि, स्टैफि, जिंक मेट ।

शरीर-कुचलन, चोटीलापन, पूरे शरीर में—ऐब्रोटै, ऐम्पेलो, एपिस, आर्न, बैप्टि, बेलिस, कॉस्टि, साइक्यू, सिमिसि, सिन्को, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, हैमे, हीपर, आइबेरिस, लिलि टिग्रि, मैगे ऐसे, मेडो, मोर्फि, नक्स मॉ; फाइटो, सोरि, पाइरो, रेडियम, रस टॉ, रूटा; सैरकोल एसिड, सोलैन, लाइको, स्टैफि, टेलूरि, थूजा, वायेथी।

जलन, कई जगह में—एकोन, एगैरि, एपिस, आर्स, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो ऐन, फॉस ऐसिड, फॉस, सल्फर।

ठंडापन—ऐकोन, इथूजा, ऐण्टि टॉ, आर्स, एथैमे, बैराइटा म्यूर, बोरिक एसिड, कैडमि सल्फ, कैम्फो मोनो ब्रो, क्लोरल, क्युप्रम, हेलोड, जैट्रोफा, लैक नैन्थ, लैफ्फा, सिकेलि, टेबे, वेरेट्र एल्ब, जिंक मेट।

संकुचन, पिंजरे में बन्द जैसी—कैक्ट, मेडो।

सुन्न होना—ऐकोन, आर्स, साइक्यू, कोनि, ऑक्जै ऐसिड, फॉस, प्लम्ब मेट, सिकेलि।

फूलन—ऐपिस, डोरिफो, फ्रैगे। देखिये शोथ (साधारण)।

कम्पन—ऐगैरि, कोडोनम, कोनियम, जेल्से, हायोसे, आइबेरिस, लोनिसे माइगेल, फॉस, सारकोलै एसिड।

त्रिकास्थि, गुदास्थि—छूने से जलन हो—कार्बो ऐन।

खाज—बोवि, ग्रैफा।

स्नायुशूल, बैठने के बाद उठते समय—लैके।

सुन्न होना—प्लैटि।

दर्द (कॉक्सिगोडाइनिया त्रिकास्थि-प्रदाह)—ऐण्टि टॉ, आर्न, ब्रायो, कैल्के कॉस्ट, कैस्टोरिया, कॉस्ट, साइक्यू, सिमिसि, सिस्टस, कोनि, फेरम फॉस, फ्लो ऐसिड, ग्रैफा, हाइपेरि, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली आयाड, क्रियोजो, लैक कैना, लैके, लोबे इंफ्ला, मैग कार्ब, मैग फॉस, मर्क, पैरिस, पेट्रोलि, फॉस, रस टॉ, साइलि, टैरे हि, टेट्राडिम, जैन्थो, जिंक मेट।

कुचलन—ऐमो म्यूर, आर्न, कॉस्टि, रूटा, सल्फर।

चोट लगने से कुचल जाना—हाइपेरि।

खींच, नीचे को खींचना—ऐण्टि टॉ, कॉस्ट, ग्रैफा, क्रियोजो।

फटन, छेदन—बेल, कैन्थे, साइक्यूटा, कैली बाइ, मैग फॉस, मर्क।

घाव होना—पियोनिया।

अंग—ठंडापन—एकोन, ऐगैरि, एगैरि फै, बेल, कैल्के का, कैल्के हाइपो, कैल्के फॉ, कैम्फो, कार्सिनेलि, ग्रैट, डल्का, फेरम मेट, हेडेओमा, हेलाड, हाइड्रोसि एसिड, इग्नै, कैल्मि, लोलि टेमु, लोनिसे, मेलिलो, मर्क, म्यूर एसिड, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ,

ओलियांड, अ.पि, फाइटो, क्वोस, सैंग्व, सिकेलि, सल्फोनाल, ट्रिली, वेरेट्र ऐल्ब, जिंक मेट ।

खुजाना—ऐरण्ड, कैली कार्ब, लाइको, पैलै, फॉस, प्रून विर, वैले ।

लँगड़ापन, तनाव—ऐगैरि, ऐगैरिसिन, ऐलो, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, कॉकुलस, युकैलि, जिन्से, इपिका, कैली फॉस, लिथि का, रस टॉ, ट्रिओस्टि, जेरोफाइल जिंक मेट ।

सुन्न होना, चुनचुनाहट, सो जाना—ऐब्सिन्थि, ऐकोन, ऐलुमि, ऐरैनि, आर्जे नाइ, एवेना, बैराइटा का, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैम्फो, कार्बो वेज, कॉस्ट, कैमो, साइक्यू, सिन्को, कॉकु, जेल्से, हेलोड, कैली का, कैल्मि, लोनिसे, मोर्फि, नैट्र म्यूर, ओनोस्मो, ओपि, आक्जे ऐसि, फॉस, पिक्रि ऐसि, प्लैटो, प्लम्ब मेट, सिकेलि, साइलि, सोलेन नाइ, सल्फर, थेलि, वेरेट्र एल्ब, जिंक मेट ।

दर्द-टीस—इस्क्यू, एपिस, आर्न, आर्स, ऐजाडिरै, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, कॉस्टि, सेपा, सिमिसि, सिंको, कोनि, कुरारी, साइक्लै; एचिने, युकैलि, जेल्से, हेडे-ओमा, कैल्मि, मर्क, माइर, पाइरो, क्वेसि, रेडियम, रैनन, एस्क्ले, रोडो, रस टॉ, सिकेलि, साइलि, स्टैफि, स्टेलैरि, स्ट्रिक्नि फॉ, थाइरो ।

अस्थि पीड़ा—ऐरैनि, ऑरम, कैल्के फॉ, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, कैली वाइ, कैली आयोड, मैग म्यूर, मैंगे एसेटि, मर्क, मेजे, फॉस ऐसि, रैनन स्केले, रस वेने, रूटा, सैंग्वि, सारसा, स्टिलि, स्ट्रॉन्शि का, ट्रिआस्टि ।

ऐंठन की तरह सिकुड़न—ऐब्रो, ऐलुमेन, ऐण्टि टॉ, ऐण्टिपाइरि, ऐसाफि, कैन्के का, कैन्थे, कार्बन सल्फ, फोकु, कोलो, क्रोक, कुप्रम मेट, जिंसे, मैग फॉ, मैनि-यन्थि, प्लैटी, सिकेलि, साइलि, स्ट्रिक्न, वेरेट्र एल्ब ।

खींच—कैम्फो कॉस्ट, ग्रेफा, हीपर, कैल्मि का, लाइको, नैट्र म्यूर, रस टॉ ।

चञ्चल, अस्थिर, उड़ता हुआ, इधर-उधर फड़फड़ाता हुआ—कॉलो, आइरिस, कैली बाइ, कैली सल्फ, कैल्मि, लैके कैना, मैग्नोल, मैगे ऐसिटिकम, फाइटो, पल्से, रोडो, सल्फ ऐसि, स्टेलैरि ।

बढ़ता हुआ दर्द—एपियम ग्रे, कैल्के फॉ, गुवाइक, हिपामे, फॉस ऐसि । देखिये अस्थि (साधारण) ।

हिस्टीरिया सिकुड़न—बेल, कॉकु, क्युप्रम, हायोस, इग्नै, लाइको, मर्क, नक्स वो, स्ट्रैमो, जिंक मेट ।

स्नायुशूल, कोंचन, फाड़ने, गोली लगने की तरह लगना—ऐबसि, ऐकोन, ऐलुमि, बेल, ब्रैन्का, कार्बन सल्फ, कॉलो, कैमो, डैफ्ने, इलैटे, युकेलि, जेल्से, गुवाइक, कैली का, कैल्मि, लाइको, मैग फॉस, मैग्नोल, मिमोसा, नाइट्रि ऐसि, आक्जै ऐसि, फॉस, फाइटो, रोडो, रस टॉ, सारसा, साइलि, स्ट्रिक्नि ।

वात ग्रस्त (गठिया) सम्बन्धी—ऐकोन, ऐनैगै, ऐण्टि टा, एपिस, आर्न, ऐस्पेरै, बेल, ब्रैंका, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फॉस, कालो, कॉस्टि, कैमो, कोल्चि, डल्का, युकैलि, गुवाइक, आयोड, कैली का, कैल्मि, लैक कैना, लाइको, मर्क प्रन विर, रेडियम, रोडो, रस टॉ, सैंग्वि, स्टेलैरि, स्टिक्टा ।

धक्के की तरह; पक्षाघात—सिना, कोल्चि, फाइटो, थैलि, वेरैट्रिन, वेरेट्र विरि, जैन्थो ।

मोच जैसी, उखड़ जाने जैसी संवेदना—आर्न, बेलिस, कैल्के का, कार्बो वेज, सिन्को, रस टॉ, रूटा, । देखिये जोड़ ।

पक्षाघात—एकोन, ऐलुमि, बैराइटा ऐसेट, कॉस्टि, कॉकु, कोनि, कुरारी, डुबो, डल्का, हेडेओमा, कैल्मि, लोलि टेमू, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, ओपि, फॉस, पिक्रि ऐसि, रस टॉ, सिकेलि, साइलि । देखिये स्नायु मण्डल ।

मोच पुरानी—ग्रैफा, पेट्रोलि, स्ट्रॉशि का । देखिये साधारण लक्षण ।

लगातार खिंचाव—ऐलुमि, ऐमाइल, ऐंगस्टू, आर्स, सिन्को, क्वैसि, सीपिया ।

कम्प, फड़कन, झटक—ऐकोन, ऐगैरि, ऐलुमि, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आस, बेल, कैल्के का; कार्बो वेज, कॉस्टि, सिमिसि; सिन्को, सिना, कॉकु, कोनि, क्युप्रम मे, जेल्से, हेलोड, हाइपेरि, हायोस, इग्नै, कैली का, लैके, लोलि टेमू, लोनिस, लाइको, मैग फॉस, मर्क, मोर्फि, माइगे, ओपि, फॉस एसिड, फॉस, फाइजॉस्टि, रस टॉ, सिके, सीपिया, साइलि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, सल्फो, सल्फर, टैरैंब, थैलि, वैलेरि, वायोला ओडो, जेरोफाल, जिंक मेट, जिंक सल्फ । देखिये कमजोरी ।

कमजोरी—इथूजा, एगैरि, ऐलुमि, ऐमो कास्ट, ऐमो म्यूर, एनैका, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, एसैर, बेलिस, बिस्म, कैल्के का, कॉस्ट, सिन्को, कॉकु, कोनि, क्युप्रम मेट, कुरारी, साइप्रिपे, डिजि, युकैलि, जेल्से, जिन्से, हेलोनि, हिपोमे, कैली बाइ, कैल्मि, लेसिथि, लाइको, मैग फॉ, मेडो, मर्क, म्यूर ऐसि, माइर, नैट्र का, नैट्र म्यूर, निकोल सल्फ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, ऑक्जे एसि, फॉस ऐसिड, फॉस, पिक्रि एसिड, प्लैटी; प्रिमू वे, पल्से, सार्कोलै एसिड, स्कूटिलै, सेलेनि, सीपि, साइलि, स्टैन, स्ट्रिक्नि फॉस, सल्फोनॉल, थेलियम, थूजा, वेरेट्र एल्ब, जिंक मेट । देखिये स्नायुदौर्बल्य, (स्नायु-मण्डल) ।

ऊपरी अंग—बाँह—साधारण अंग लक्षण ।

ठंडापन—एपिस, कार्बो वेज, रैफै, वेरेट्र एल्ब ।

दाने उभरने, स्फोट—ऐरण्डो, कॉस्ट, फॉस एसिड, सल्फर ।

गलित घाव—रैनन फ्लैमू ।

भारीपन—ऐकोन, ऐलुमि, कैने इण्डि, सिमिसि, कुरारी, हैमे, हीपर, लैट्रोड, लाइको, नैट्र म्यूर, वेरेट्र एल्ब ।

चारों तरफ फीता असह्य—ओवि गैलि पेलि।

खुजाना फैगोपा।

झटका, अनिश्चित, हरकत—ऐगैरि, ऐण्टि क्रू, साइक्यू, सिना, कॉकु, इपिका, लैक्टू वि, लाइको, ओपि, टैरै हि, थ्लैस्पि।

झटकन अनिश्चित, हरकत एक बाँह और एक टाँग में—ऐपोसाइ, ब्रायो, हेल्लिबो, माइगे, जिंक मेट।

लँगड़ापन तनाव—ऐकोन, ऐमो का, बैप्टि, कैने इन्डि, कॉस्टि, पैरिस, रस वेने, थ्लैस्पी, वेरेट्र विरि।

गुठलियाँ—हिपोजे।

सुन्न होना, सो जाना—ऐकोन, ऐम्ब्रा, एरैनि, ऐस्टैरि, बेराइ का, कैक्ट, कैमो, सिमिसि, कॉकु, डिजि, ग्रैफा, आइबेरिस, इग्नै, कैली कार्ब, लैट्रोड, लिलि टिग्रि, लाइको, मैग म्यूर, मैंगनोल, नक्स वॉ, पैरिस, फॉस, रस टॉ, सीपि, साइलि, जैन्थो।

सुन्न पड़ना, बायीं बाँह—एकोन, डिजि, कैल्मि, पल्से, रस टॉ, सुम्बु।

सुन्न पड़ना दाहिनी बाँह—फाइटो।

दर्द—इस्कियू, ऐलुमि, एनागै, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सेपा, साइक्यू, सिनैबे, इयुपेटो पर्फ, फेरम पिक्रि, जेल्से, गुवाइको, गुवाइकम, इण्डियम, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, फॉस, फाइटो, रस टॉ, सैंग्वि, सोलेनम, लाइको, स्टैलैरि, स्टिक्टा, सल्फर, वायेथि, जिंक मेट।

बायीं बाँह में दर्द—ऐकोन, ऐगैरि, ऐस्टेरि, कैक्ट, सिमिसि, कोल्चि, क्रोटै, आइबेरिस, कैल्मि, लैट्रोड, मैग्नोल, मैग सल्फ, रस टॉ, स्पाइजे, टैबे, जैम्बो।

दाहिनो बाँह में दर्द—फेरम म्यूर, फेरम पिक्र, पाइप मेथी, रस वे, सैंग्वि, सोलेन, लाइको, वायोला ओडो, वायेथि।

टीस - बैप्टि, बर्बे वल, कॉस्टि, जेल्से, जैलापा, लिथि कार्ब, नैट्र आर्स, ओलि जै ऐसे, सारा सीनि।

टीस, कमजोरी, गाने से या और तरह से आवाज पर जोर देने से—स्टैन।

कुचलन, ऐंठन की तरह—एकोन, आर्जे नाइट्रि, कॉकु, क्युप्रम मेट, ओलियैण्ड, फॉस एसिड, साकेलि, सल्फ एसिड, वेरैट्र विरि, जिंक सल्फ।

खोंच—कैल्के कार्ब, कॉस्ट, लाइको, मैग म्यूर, म्यूर एसिड, ओलियैण्ड, सीपि, साइलि, जिंक मेट।

स्वायुशूल (बाँह)—ऐकोन रैड, एलुमि, ब्रायो, हाइपेरि, कैलि कार्ब, कैल्मि, लाइको, मर्क, नक्स वॉ, पाइपर मेथि, पल्से, रस टॉ, स्कुटेलै, सल्फर, ट्युक्रि, वेरेट्र एल्ब, विस्कम।

पक्षाघात—कॉकु, फेरम, जेल्से, नक्स वॉ, रस टॉ।

संवेदनीयता की कमी होना—कार्बन सल्फ, फॉस।

फटन, चिटकन—कैल्के कार्ब, फेरम, हीपर, फॉस, सीपि, साइलि।

कम्प—कोडी, कॉकु, जेल्से, कैली ब्रो, फॉस, साइलि। देखिये कमजोरी।

कमजोरी—ऐलुमेन, ऐनैका, कुरारी, डिजि, आयोड, कैली का, लैके, लाइको, मैग फॉ, मेडो, नैट्र म्यूर, सैर्कोल एसिड, सीपि, साइलि, स्टैन, सल्फर।

अगली बाँह—देखिये अंग।

ठंडापन—आर्न, ब्रोमि, मेडो।

दर्द—ऐनैका, सिनैबे, इयुपेटो पर्फ, फेरम म्यूर, फेरम पिक्रि, जेल्से, गुवाको, हाइपेरि, कैली कार्ब, कैल्मि, फाइटो, रस टॉ, सीपि, स्टैन।

पक्षाघात—आर्जे नाइट्रि, नक्स वॉ, प्लम्ब, साइलि। देखिये स्नायुमण्डल।

अन्तर्मणिबंध पेशी में दर्द—ब्रैकिग्लो।

अगला बाँह और हाथ का स्थिर न होना—कॉस्ट।

हाथ--हाथ और सिर का अनैच्छिक हिलते रहना—ऐपोसाइन, ब्रायो, पेलेबो, जिंक मेट।

नीलापन शिराओं का फूलना, तनना—ऐम्रो कार्ब, ऐमाइल, ऐण्टि टॉ, कार्बो ऐन, डिजि, इलैप्स, लॉरो, नाइट्रि एसिड, ओलियैण्ड, सैम्बू, स्ट्रॉन्शि का, वेरेट्र अल्ब। देखिये नीला रोग (साइनोसिस) रक्त संचार यन्त्र-मण्डल।

जलन, गरमी—ऐकोन, ऐगैरि, कार्बो वेज, कॉकु, लैके, लाइको, मेडो, ओलि जै ऐसे, फॉस, सैंग्वि, साइलि।

खाल चिटकना, दरारें—ऐलुमि, कैल्के का, कैस्टोरिया, सिस्टस, ग्रैफा, लाइको, मैग का, नैट्र आर्स, नैट्र का, पेट्रोलि, सारसा, सल्फ्यूरिक ऐसि।

ठंडापन—एब्रीज कैने, एकोन, ऐण्टि टॉ, एपिस, आर्स, कैक्ट, कैल्के का, कैम्फो, कार्बन ऑक्जे, साइक्यू, सिन्को, कोनि, क्युप्रम, डिजि, आयोड, मेनियान्थ, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, सिला, टैबे, थूजा, ट्रिफो, वेरेट्र अल्ब।

एक हाथ ठंडा, दूसरा गरम—सिन्को, डिजि, इपिका, पल्से।

ऐंठन—बेल, कैल्के का, सिकेलि, साइलि।

ऐंठन—(लेखक की) पियानों या वायोलिन बजाने वालों का, टाइप करने वालों का—एम्ब्रा, आर्जे मेट, आर्जे नाइ, ब्रैकिग्लो, कॉस्टि, सिमिसि, क्युप्रम, साइक्लै, जेल्से, ग्रैफा, हीपर, मैग फॉ, रूटा, स्टैन, सल्फ ऐसि, सल्फर। देखिये स्नायुमण्डल।

सूखापन लाइको, जिंक मेट।

बड़ा जान पड़ना—ऐरैनि, कॉस्ट, कॉकु, जिंसे, कैली नाइ ।

दाने निकलना—बोरै, सिस्टस, पेडिकू, पिक्स लि । देखिये चर्म ।

अशान्त – कैली ब्रोम, माइगे, टैरै हि, जिंक मेट ।

हाइपोथेनर उभरन चटक लाल—ऐकोन ।

खुजाना—ऐगैरि, टेलूरि ।

पीछे के उठे हुए भाग पर गुठलियाँ, कड़े गुल्म—ऐमो फॉ, युकैलि, मेडो । देखिये अंगुलियाँ ।

सुन्न होना, सो जाना—ऐकोन, आर्जे नाइ, आर्स, बोरै, कैने इण्डि, कॉस्टि, कोडि, कोल्चि, ग्रैफा, हाइपेरि, आइबेरि, लैबर्न, लैक, लिलि टिग्रि, लाइको, मैग फॉस, नैट्र का, नक्स वॉ, फॉस, फाइजॉस्टि, पाइरो, रैफै, सीकेलि, टेला ऐरा ।

दर्द—कुलबुल—रूटा, वेरेट्र एल्ब ।

कोचन, गोदन, भोंकन—सेपा, लैप्पा, सेलैनि, सल्फर ।

वात रोग, सम्बन्धी—ऐम्ब्रा, बर्बे वल, कालो, कॉस्टि, चेली, गुवाइक, लीडम, पल्से, रस टॉ, रूटा, सोलेनम लाइ ।

पक्षाघात—फेरम, लैबर्न, मर्क, प्लम्ब एसेटि, रूटा, साइलि ।

हथेली—फफोले पड़ना—ब्यूफो ।

जलन—एजैडिरै, बोलेट, फेरम मेट, फेरम फॉ, गैडस, लैके, लैकनैन्थ, लिमुल, नैट्र म्यूर, ओलि जै ऐसे, पेट्रोलि, फॉस, प्रिमु वे, पल्से नट, सैंग्वि, सीपि, सल्फर ।

चिटकन, दरारे—कैल्के फ्लो, रैने वल ।

ऐंठन – क्युप्रम मेट, स्क्रोफूलै, जिंजि ।

खाल उधड़ना—इलैप्स ।

दाने सूखी भूसी छूटना, खुजाना—ऐनैगे, आर्स, ऐक्स-रे ।

चोट लगना, असह्य पीड़ा – हाइपेरि ।

खुजाना – ऐण्टि सल्फ आर, फैगोपा, ग्रैनैट, लिमुलस, रैनन वल, टरनेरा ।

दर्द—एजैडिरै, ट्रिफोल ।

लिखते समय हाथों का कड़ा पड़ जाना – कैली म्यूर ।

पसीना निकलना—कैल्के का, कॉकु, कोनि, डल्का, फैगोपा, फ्लोर एसि, नैट्र म्यूर, पिक्रि ऐसि, सीपि, साइलि, स्ट्रिक्नि फॉ, सल्फर, वायेथि ।

फूलना—इस्कियू, ऐमैरि, ऐपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, एरण्डो, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के कार्ब, क्रोटै, इलेप्स, फेरम फॉ, नैट्र क्लो, रस डाइवर्सि । देखिये शोथ (साधारण लक्षणों में) ।

फड़कन, कम्पन, कमजोरी – ऐक्टि स्पाइ, एनैका, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टॉ, आर्जे नाइट्रि, आर्न, ऐवेना, कैल्के का, साइक्यू, सिना, कॉकु, कोनि, कुरारी, जेल्से, हिपोमे, लैके, लैक्टू वि, लोलि, टेमू, मैग फॉ, मर्क, फॉस, सारसा, सार कोलै ऐसि, साइलि, स्टैन, स्ट्रैमो, सल्फर, टैबे, जिंक मेट।

मस्से—एनैका, ऐण्टि क्रू, कैल्के का, डल्का, फेरम मैग, फेरम पिक, नैट्र म्यूर, रूटा।

पीला रंग – चेलि, सीपि। देखिए चर्म।

अगुलियाँ नीलापन, ठंडापन—चेलि, क्रैटे, क्युप्रम मेट, वेरेट्र ऐल्ब। देखिये हाथ।

नीली, सुन्न, चुचुकी, अलग-अलग फैली हुई या पीछे की तरफ झुकी हुई—सीकेलि।

जलन हो—ऐजैडिरै, जिन्से, ओलियैण्ड, सारसा, सल्फर।

खुरखुरे सिरे, दरारें चिटकन—एलुमि, ग्रैफा, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, रैनन बल, सैनिकू, सारसा।

ऐंठन की तरह, सिकुड़ी, मुट्ठी बँधी—इथू, ऐम्ब्रा, ऐनैगै, आर्जे नाइट्रि, बिस्म, ब्रैकीग्ला, कैने सै, कॉस्टि, साइक्यूटा, सिना, कॉकु, कोल्चिसीन, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम मेट, साइक्लै, डायस्का, हेलेबा, कैली बाइ, लॉरो, लाइको, पैरिस, रूटा, सिकेलि ट्यूब, स्टैन, सल्फ एसिड।

टेढ़ापन—कैली कार्ब, लाइको।

कुचले, चोटीले सिरे—हाइपेरि।

दाने निकलना, फटना—ऐल्नस, ऐनैका, बोवि, ग्रैफा, लिमुल, लोबे, एरि, नैट्र कार्ब, नाइट्र एसिड, पेट्रोलि, प्रिमू फारि, रस टॉ, सारसा, सेलीनि, वरनाल। देखिये चर्म रोग।

अस्थि-गुल्म या वृद्धि—कैल्के फ्लो, हैक्ला।

अशान्त, बराबर, हिलाता रहे—कैली ब्रो।

फूलना ढीलापन—आरम म्यूर।

कैंची पकड़ने से गहरा निशान पड़े—बोवि।

बीच में खुजाना—फॉस एसिड। देखिये चर्म रोग।

कलम पकड़ने से झटका आये—कास्टि, सिना, साइक्लै, कैली कार्ब, स्टैन, सल्फर।

जोड़ सूजे हुए, दर्द करें—बेन्जो एसिड, बर्बे बल, ब्रायो, फ्लोर एसिड, लाइको, मेडो, नैट्र फॉ, पाइपर मेथाइ, पाइ साइल, पल्स, रस टॉ, स्टैफि, स्टेलैरि। देखिये वात रोग।

जोड़ों पर अस्थि गुल्म—ऐमो फॉ, बेन्जो एसिड, बेन्जोइन, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, कॉलो, कोल्चि, ग्रैफा, लीडम, लिथि कार्ब, लाइको, मेडो, स्टैफि, स्टेलैरि। देखिये जोड़।

जोड़ों में दर्द—ब्रायो, ग्रैफा, लिडम, लाइको, साइलि, सल्फ।

जोड़ कड़े, तनाव—कार्बो वेज, कॉली, लाइको, प्राइम साइलि, पल्से। देखिये जोड़।

अंगुलियों का सुन्न होना, चनचुनाना—ऐकोन, इस्कियु, ऐम्ब्रा, एपिस, आर्स, ऐस्टेरि, बैराइटा का, कैल्के का, कोकेन, कोनि, डिजि, लैथाइरस, लाइको, मैग फॉ, मैग सल्फ, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, आक्जै एसिड, पैरिस, फॉस, प्रोपाइलै, सारकोलै, एसिड, सिकेलि, साइलि, थैलि, थूजा, उपास, वर वैस्क, जिंक मेट।

नाखूनों की जड़ में दर्द—बर्बे वल, बिस्म, सेपा, माइरिस्टिका सेबि।

दर्द साधारण—ऐब्रोटै, ऐजैडिरै, लिलि टिग्रि, सिकेलि।

गाँठों में दर्द—ऐमो म्यूर, बोरै, चेलि, हाइपेरि, कैली का, सिकेलि, साइलि, ट्यूक्रि।

वात दर्द—ऐक्टि स्पाइ, एण्टि क्रू, बर्बे वल, कॉलो, कोल्चि, फैगोपाई, ग्रैनैट, ग्रैफा, गुवाको, हाइपेरि, लैप्पा, लीडम, लिथि का, लाइको, मेडो, पियोनि, पल्से, रैनन स्केले, रस टॉ। देखिये वात रोग।

फटन दर्द—ऐक्टि स्पाइ, ऐमो म्यूर, कॉलो, कॉस्टि, सेडम, लीडम, लाइको, पल्से, रस टॉ।

टपकन, थरथराहट दर्द—ऐमाइल, बोरै।

अंगुलबेड़ा, गल्का—ऐलुमि, एमो का, डायस्को, माइरिस्टि सेबि, साइलि।

संवेदनीयता की कमी—कार्बन सल्फा, पॉपु कैने, सिके।

ठंडक से उत्तेजनीय—सिस्टस, हीपर।

चमड़ी सूखी चुचकी—इथू। देखिए चर्म।

चमड़ी उधड़े—इलैप्स। देखिए चर्म।

बीच में छरछराहट, दर्द—नैट्र आर्स। देखिए चर्म।

कड़ापन, तनाव—एमो का, कार्बन सल्फ, कालो, कॉकु, लाइको; ओलियाण्ड, पल्से, साइलि। देखिये जोड़।

फूलन—ऐमो का, ब्रायो, कार्बन सल्फ, सिनामो, हीपर, कैली म्यूर, लिथि का, मैंगे, ओलियाण्ड, पल्से, थूजा।

मोटी काँटेदार बुण्डियाँ—ऐण्टि क्रू, पॉपू कैन।

कम्पन—ब्रायो, आयोड, कैली ब्रो, लीलियम, मर्क, ओलियाण्ड, रस टॉ, जिंक मेट।

घाव होना—ऐलुमि, ऐरण्डो, आर्स, बोरै, सीपि ।
थकावट—बोवि, कैल्के का, कूरारी, जेल्से, हिपोमै, फॉस, साइलि । देखिए हाथ ।
निचले अंग, नितम्ब ठण्डा जान पड़ना—डैफने ।
ठण्डापन, सुन्न होना—कैल्के फॉस ।
ऐंठन—ग्रैफा ।
दुबलापन—लैथाइरस ।
कमर, कूल्हा, पिठासे तक दर्द—स्टैफि ।
बींधन—गुवाइक ।
फूलन—फॉस एसिड ।

कटिवात—ऐकोन, ऐक्टि स्पाइ, इस्कियु, ऐगैरि, ऐलो, ऐण्टि टा, आर्न, बेल, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के फ्लोर, कैल्के फॉ, कार्बो ऐसि, कार्बन सल्फ, कॉलो, कैमो, चेली, सिमि, सिना, कोल्चि, कोलो, डायस्को, डल्का, इयुपेटो पर्फ, फेरम मेट, जिन्से, नैफे, गुवाइक, हाइड्रै, हाइमोसा, इपोमिया, कैली बाइ, कैली का, कैली आयोड, कैलीओक्स, लैथाइरस, लीडम, लिथि, बेन्जो, लाइको, मैक्रोटि, मर्क सल्फ, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पैमपिन, पिक ऐसि, फाइटो, पल्से, रेडियम, रैम का, रोडो, रस टॉ, रूटा, सैबैल, सेनेसि, सीपि, स्पिरैंथ, सल्फर, टेरेबि, वाइबर्न ओपू ।

सिर दर्द बवासीर के साथ बारी-बारी—एलो ।
खुली हवा में अधिक हो—ऐगैरि ।
हिलते ही बढ़े—ऐनैका, कोनियम, ग्लीसरीन, रस टॉ ।
हिलते ही बढ़े, चलते-फिरते रहने से कम हो जाये—कैल्के फ्लोर, रस टॉ ।
जोर देने से बढ़े, दिन में बैठे रहने से बढ़े—ऐगैरि ।

लेटने से बढ़े—बेल, म्यूरेक्स ।
जीर्ण होने की सम्भावना—इस्कियु, बर्बे वल, कैल्के फ्लो, रस टॉ, साइलि ।
हस्तमैथुन का दुष्परिणाम, दौर्बल्य—नक्स वॉ ।

पीठ के पिछले भाग में सुन्न होना, बस्तिगह्वर में बोझ जैसा—नैफे ।
लेट जाने से कम होना—युओनाइम, सीपि ।
धीरे-धीरे चलने से कम होना—फेरम मेट ।

ओकाई के साथ ठण्डा, चिपचिपा पसीना, जरा-सा हिलने से हो—लैथाइ ।
गृध्रसी दर्द के साथ—रस टॉ ।
जाँघें, टाँगें—लटके रहने से नीलापन, दर्द, फूल आना—लैथाइर ।

जलन—आर्स, ऐरण्डो, बैराइटा का, कैली का, लेडम, लाइको, मैजे, स्टिलि ।

ठंडापन—एकोन, एलुमि, एस्ट्रैगे, बर्बे वल, बिस्म, कैल्के का, कैल्के फॉ, कार्बो ऐन, कार्बो वेज, कोल्चि, क्रोटै, लैक्टि एसिड, लैक्टू विरो, लॉरो, लाइको, मर्क, मेजे, नैट्र म्यूर, नाइट्र एसिड, ऑक्जै, सीपि, साइली, टैबे, वेरेट्र अल्ब, जिंक मेट।

नसों, बन्धनियों का तनाव, सिकुड़न—ऐमो म्यूर, कॉस्टि, सिमेक्स, कोलो, ग्रैफा, गुवाइक, लैके, मेडो, नैट्र म्यूर, रूटा, सल्फर।

अंगों का टेढ़ापन, न सीधा हो सके और सीधा होने पर सिकुड़ न सके—साइक्यू।

दुबलापन, चुचुकना—एब्रोटे, एसेटिक एसिड, कैली आयोड, लैथाइर, पाइनस साइलवेस्ट।

अस्थिविकार, बच्चों की जाँघ की हड्डी का बढ़ जाना—कैल्के फ्लो।

दानें निकलना, अन्य प्रकार के स्फोट—कैल्के कार्ब, क्राइसेरी, जिन्सें, ग्रैफा, मैग कार्ब, पेट्रोलि, सल्फर। देखिये चर्म रोग।

विसर्प रोग—सल्फर। देखिये चर्म रोग।

जाँघ की बड़ी हड्डी (टिबिया) के ऊपरी भाग की खाल उधड़ना और खुजाना—बिस्म।

भारीपन—ऐलुमि, ब्रायो, केल्के कार्ब, कैने इण्डि, सिमिसि, कोनियम, जिन्से, गुवाको, हेलेबो, मेडो, नक्स वॉ, पैलैडि, पिक एसिड, सीपिया, सल्फोना, वरबैस्क, वाइबर्न ओपू।

खुजाना—बेलिस, बोवि, फैगोपा, नाइट्रि एसिड, रियुमेक्स, स्टेलैरि।

अनैच्छिक हरकत—ब्रायो; हेलेबो, लाइको, माइगे, टैरै हिस्पै। देखिये कम्पन।

सुन्न होना, सुरसुरी, चुनचुनाहट, झुनझुनाहट, सो जाना—एगैरि, ऐलुमि, ऐरैनि, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कॉस्ट, कार्बन सल्फ, कॉकु, कोलो, क्रोटै, नैफै, ग्रेफा, कैली कार्ब, कैली आयोड, लैक्ट वि, मेजे, नक्स वॉ, ओनस्मो, फॉस, रस टॉ, सार्कोले, एसिड, सिकेलि, सीपि, सल्फ, टैरै हि, टेला ऐरा, ट्रिओस्टि, जिंक मेट।

दर्द, साधारण—ऐगैरि, कैने इण्डि, कैप्सि, कार्बन सल्फ, कार्बो एनि, चेलिडो, साइक्यू, डियाडेमा, डायस्को, इयुफॉर्बि, फेरम मेट, जेल्से, नैफे, हेलोड, इलियक, इण्डिगो, आयोड, इरिडि, कैली कार्ब, कैल्मिया, लैके, मैग म्यूर, मैगे एसेटि, मैग ऑक्सि, मेनिसप, म्यूरेक्स, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, पिकरिक एसिड, प्लम्ब मेट, पल्से, रस टॉ, सैबाइ, साइलि, टोंगो, ट्रिफोल, वाइबर्न ओपू, विपेरा।

टीस, कुचलन—आर्जे नाइट्रि, आर्न, बैप्टी, कैल्के का, सिमिसि, कॉकु, कोल्चि, डायस्को, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, गुवाइक, लॉरो, लिलि टिग्रि, मैग का, मैडो, फॉस

एसिड, पाइरो, सैबाइ, सार्कोलै एसिड, सीपि, सोलेनम, लाइको, स्टैफि, अलनस, वैरिओलि।

ऐंठन, सिकुड़न—ऐब्रो, इस्कियु ग्लै, एगैरि, ऐम्ब्रा, ऐमो ब्रो, ऐमो म्यूर, एनैका, आर्न, बैप्टि, बैराइटा का, कैल्के का, कैम्फो, कार्बो एसिड, कार्बो ऐन, कार्बो वेज, कॉस्ट, कोलस टेराफि, सिमेक्स, सिमिसि, सिन्को, कॉकु, कोल्चि, कोलो, कोनि-यम, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, इयुपि, फेरम मेट, जेल्से, हाइपेरी, हायोसि, इरिडि, जैट्रेफा, लैथाइरस, लोलि टेमू, लाइको, मैग फॉ, मेडो, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, पाइन, साइलि, प्लम्ब मैट, पल्से, रस टॉ, सैरकोले एसिड, सिकेलि, सीपि, साइलि, सोलेन टु, सल्फर, अस्टिलै, वेरेट्र ऐल्ब, वाइपेरा, जिंक सल्फ।

ऐंठन (दर्जी की)—ऐनैका, एनैगै, मैग फॉ।

जाँघ की बड़ी हड्डी में दर्द—आर्स, बैडि, कार्बो ऐन, डल्का, फेरम मेट, कैली बाइ, लैके, मैगे ऑक्सि, मैंजे, लॉस, सीपि।

फाड़ने, फटने, कोंचन – ऐमो म्यूर, आर्स, बैप्टि, बैराइटा। एमेटि, बेल, बेलिस कोलो, कोबै, डायस्को, हाइपेरि, कैली बाइ, कैली का, कैल्मि, लाइको, नाइट्रि एसिड, प्लम्ब मैट, पल्से, रस टॉ, सीपि, सल्फर, ट्यूक्रि, विस्कम।

वात सम्बन्धी—बर्बे वल, ब्रायो, चेलि, कोल्चि, डैफ्ने, डल्का, लीडम, फाइटो, मर्क, रस टॉ, सैंग्वि, स्टेलै, वेले। देखिये वात रोग।

पक्षाघात - ऐगैरि, ऐलुम, ब्रायो, कैने इण्डि, चेलि, कॉक् क्रोटै, डल्का, जेल्से, गुवाको, कैली आयोड, कैली टार्ट, लैथाइर, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, प्लम्ब मैट, रस टॉ, सिकेलि, सल्फोना, टैबै, थैलि, वेरैट्र ऐल्ब, जिंक मेट। देखिये स्नायु मण्डल।

बेचैन, अशान्त—आर्स, कार्बो वेज, कॉस्ट, सिमिसि, सिन्को, कोनि, क्रॉटै, ग्रैफा, कैली ब्रो, लिलि टिग्रि, लाइको, मेडो, मेनियान्थ, मर्क कार, माइगे, नाइट्रि ऐसि, फास, रस टॉ, रूटा, स्कूटेलै, सीपि, सल्फोना, टैरे हि, टैरैक्से, थ्लैस्पि, जिंक मेट, जिंक वै।

कड़ापन, तनाव, लँगड़ापन—ऐलुमि, ऐंगस्टूरा, आर्जे नाइ, बैप्टि, बैराइटा म्यूर, कैल्के का, साइक्यू, कोल्चि, कोनि, डायस्को, इयुपेटो पर्फ, गुवाइक, लैथाइर, फाइजॉस्ट, प्लैटी; रस टॉ, सेर्कोले ऐसि, सीपिया, स्ट्रिकिन, जोरोफाइ।

संवेदनीयता की कमी—ऑक्जै एसि, फॉस। देखिये स्नायु मण्डल।

संवेदनीयता की अधिकता—लैके, लैथार। देखिये स्नायु मण्डल।

लाल चकत्ते पड़ना—कैल्के का, सल्फर।

फैलना—एमो का, एमिल, हेलेबो, हेलोड। देखिये ज्वर।

दोपहर के बाद ठण्डा चिपचिपा पसीना कैल्के का, मर्क।

दोपहर के पहले घुटनों के नीचे तक पसीना उतरे—सल्फर।

दोपहर बाद जांघों पर त्रस्त करने वाला पसीना—कार्बो ऐनि।

फूलना—ऐसेटिक ऐसि, ऐपिस, आर्स, ऑरम, कैक्ट, चेलि, कोल्चि, डिजी, युपेटो पर्फ, फेरम मेट, फ्लोर ऐसि, ग्रैफा, कैली का, लैथियाइर, लाइको, मर्क, फॉस, रस टॉ, सैम्बू, स्ट्रोशि का, स्ट्रोफै, सल्फर, थाइरो, विस्कम। देखिए शोथ (साधारण की सूची में)।

कम्पन—इस्कयुग्लै, आर्जे मे, कोबै, कॉकु, काल्चि, कोनि, कुरारी, डोरिफ, जेल्से, लोलि टेमु, मिमोसा, नाइट्रि ऐसि, फॉस एसि, फॉस, टैबे, जिंक मेट।

पानी की बूंद गिरने जैसी गुदगुदी—ऐकोन।

घाव होना—आर्स, कैल्के का, कार्बो वैज, सिस्टस, एलिनै, लाइको, फॉस एसिड, रस टॉ, सैक्रम ऑफि, ट्रिफोल, साइलि। देखिये साधारण सूची।

थकावट जल्दी आना, कमजोरी—इस्कियु, एलुमेन, ऐलुमि, एमो का, आर्जे नाइ, आर्जे मेट, बैराइटा म्यूर, बर्बे वल, कैल्के फॉस, कैने इण्डि, सिमिसि, कोबै, कॉकु, कोल्चि, कोनि, क्युप्रम मेट, कुरारी, डिजि, फेरम मेट, फार्मिका, जेल्से, हैमै, कैली का, कैल्मि, लैके, मेडो, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, ओनोस्मो, पियोनिया, फैले, फॉस एसि, पिक एसिड, रस टॉ, रूटा, सारासी, सार्कोलै एसिड, साइलि, स्टैन, सल्फर, वाइबर्न ओपू।

पैर—अंगूठे की गद्दी और उसके ऊपरी उभरे भाग के रोग—कैने से।

घट्ठा पड़ना—ऐगैरि, बेन्जो ऐसि, हाइपेरि, कैली आयोड, रोडो, साइलि, वेरेट्र वि। देखिये चर्म रोग।

जलन होना—ऐगैरि, ऐगो का, एपिस, ऐजेडिरै, ब्रै न्का, बोरै, ग्रैफा, हैलोड, कैली का, लैके, लीडम, मेडो, नैट्र म्यूर, फॉस ऐसि, फॉस, पल्से, सीकेलि, सीपि, साइली, सल्फर।

बेवाई फटना, शीतो-स्फोट—ऐब्रोटै, ऐगैरि, पेट्रोलि, सल्फर, टैमस, जिंक मेट। देखिये चर्म रोग।

ठण्डापन—एकोन, एलुमि, आर्स, कैल्के का, कैम्फो, कार्बो ऐन, कार्बो वेज, कॉस्ट, चेलि, सिस्टस, कोनि, डिजि, डल्का, इलेप्स, हैलोड, कैली का, लैके, लाइको, मेनियान्थ, म्यूर ऐसि, ओलियैण्ड, पेट्रोलि, पिक ऐसि, प्लैटो, पल्से, सैम्बु, सिला, सिकेल; सीपि, साइलि, सल्फ ऐसि, सल्फर, ट्रिफोल, वेरट्रम एल्ब।

ठण्डापन : लसीला, मृतक जैसा—बैराइटा का, कैल्के का, लॉरो, सीपि, स्ट्रिक फॉ।

ठण्डापन : दिन में, रात में तलवे जलें—सल्फर।

ठण्डापन एक पैर में, दूसरे का गरम रहना—चेलि, सिन्को, डिजि, इपिका, लाइको ।

बड़ा जान पड़ना—एपिस ।

दाने उभरना—बिस्म, इलैप्स, ग्रैफा, पेट्रोलि । देखिये चर्म ।

अशान्त हिलते रहना—सिना, कैली फॉस, मेडो, सल्फर, टैरै हि, जिंक मेट, जिंक वैले ।

खाज, खुजाने से अधिक हो, बिस्तर की गरमी से बढ़े—लीडम, पल्से, रस टॉ ।

बायें पैर का अनैच्छिक आक्षेपमय चालन—सिना ।

दूकान वाली लड़कियों के पैर में कोमलपन—सिला ।

एड़ी-छाले पड़ना—सिला ।

जलन साइक्लै, ग्रैफा । देखिये पैर ।

सुन्न होना—ऐलुमि, इग्नै ।

एड़ी की हड्डी के सिरे में दर्द होना—एरैनि ।

झुनझुनाहट दाहिने अंगूठे तक बढ़े—एस्ट्रैगै ।

दर्द साधारण—एगैरि, ऐमो का, ऐमो म्यूर, ब्रोमि, कैल्के कास्ट, कॉलो, कोल्चि, साइक्लै, फेरम मेट, ग्रैफा, कैली आयोड, लीड, मैगे एसिड, नैट्र आर्स, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फाइटो, रैनन बल, रस टॉ, सैबाइ, सीपि, साइलि, टेट्राडिन, थूजा, उपार, वेले, जिंक मेट ।

टीस : कुचलन जैसी—एगैरि, आर्न, लॉरो, लीडम, फाइटो, रस टॉ ।

कोमलपन—एगैरि, ऐण्टि क्रूड, कॉस्ट, सेपा, साइक्लै, जैला, कैली बाइ, मेडो, फॉस एसिड, फाइटो, वैले ।

कंकड़ों पर चलने जैसी कचट मालूम हो—हीपर, लाइको ।

घोड़ानस में दर्द होना—एरिस्टोल, बेन्जो एसिड, कैल्के कॉस्ट, कॉस्ट, सिमिसि, इग्ने, मेडो, म्यूर एसिड, नैट्र आर्स, रूटा, टेट्राडिन, थूजा, उपास, वैले ।

घाव होना—ऐमो म्यूर, बर्बे वल, फॉस एसिड, पल्से, रैनन वल ।

एड़ी पर घाव—आर्स, ऐरेण्डो, सेपा, लैमियम ।

पैरों का खुजलाना—ऐगैरि, ऐमो म्यूर, ऐण्टि सल्फ ऑर, बोवि, कॉस्ट मैग्नोल, नैट्र सल्फ, सल्फर, टेलूरि ।

खुजलाना, खुजलाने से बढ़े : बिस्तर की गरमी से बढ़े—लीडम, पल्से ।

जोड़ों का गठिया के कारण बढ़ जाना—युकैलि, पल्से, न्यूटालि, टैरे क्यूबे, जिंक मेट । देखिए जोड़ ।

सुन्न होना, सुरसुराना, सो जाना—इथूजा, एमो म्यूर, ऑर्स, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कोबा, कॉकु, कोडि, कॉल्चि, कोनि, फैगोपा, जेल्से, हाइपेरि, लैक्टू वि, मैग सल्फ, मेजे, नक्स वो, ओनोस्मो, फाइजास्टि, फॉस, पाइरो, सीकेलि, साइलि, अलनस, उपास, वायोला ओडो, जिंक मेट।

दर्द, टीसन, कुचलन—ऐमो म्यूर, आर्न, ऐजैडिरे, ब्रोमि, ड्रोसे, इयुओनाइम, प्रून, स्पाइ, वेरेट्र एल्ब।

एँठन—बिस्म, कोलेस टरि, सिन्को, कॉल्चि, क्यूप्रम मेट, फ्रैंक्सि ऐमे, जैट्रोफा, लाइको, नैट्र कार्ब, सीकेलि, सीपि, वरबैस्क, जिंक मेट।

कोंचन—एब्रोटै, ऐक्टि स्पाइ, एपिस, सीड्रन, लीडम, लाइको, नैट्र कार्ब, सीपिया।

वात रोग सम्बन्धी—ऐक्टि स्पाइ, एपिस, बर्बे वल, कॉलो, कॉस्टि, काल्चि, ग्रैफा, लीडम, लिथि का, मैंगे एसे, माइर, फाइटो, पल्से, रैनन वल, रस टॉ, रूटा।

संवेदनीयता की कमी - कार्बन सल्फ।

तलवे—छाले पड़ना—ब्यूफो, कैल्के का, सेपा।

जलन—ऐनैका, एपोसा, ऐरण्डो, कैल्के का, कैल्के सल्फ, कैन्थे, कैमो, क्युप्रम, फेरम मेट, ग्रैफा, इग्नै, क्रियोजो, लैके, लैकनैन्थ, लिमुल, लाइको, मैंगे, मेडो, निकोल सल्फ, पेट्रोलि, फॉस, एसिड, पल्से, सैंग्वि, सैनिकू, सल्फर।

घट्ठे पड़ना—एनैका ऑक्सि, ऐण्टि क्रू, लाइको, रैनन वल, साइलि। देखिए चर्म।

चोट लगना, असह्य पीड़ा—हाइपेरि।

खुजाना—ऐगैरि, ऐनैन्थि, ऐन्थीमि, कैल्के सल्फ, हाइड्रोकोट, इण्डियम, नैट्र सल्फ, साइलि।

सुन्न होना—कॉकु, लिम्यूल, रैफे, सीपि।

दर्द—साधारण—एपोसाइ, एण्ड्रो, बोरै, कैना इण्डि, फेर, गुवाको, कैली आयोड, लीडम, लिम्यूल, म्यूरि एसिड, नैट्र का, पेट्रोलि, फॉस ऐसि, पल्से, वरवैस्क।

टीस—लिम्यूल, पल्से।

एँठन—एगैरि, ऐमो का, एपोसाइ, ऐण्ड्रो, कार्बो वेज, कॉल्चि, क्यूप्रम, मेडो, नक्स वॉ, स्ट्रोन्शि, सल्फर, वरबैस्क, जिंक।

दोपहर के बाद एँठन बढ़े—क्यूप्रम, इयुजीनि, जैम्बो, जिंजि।

टहलते समय पीड़ा—एलो, कॉस्टि, ग्रैफा, लाइको, म्यूरि एसिड, पेट्रोलि, फॉस एसिड।

कच्चापन, दर्दीलापन, कचट, कोमलपन—इस्कियु, एल्युमि, ऐण्टि क्रू, आर्न, बैराइटा का, कैल्के का, ग्रैफा, मेडो, कैली का, लीडम, लाइको, नैट्र का, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, फॉस एसिड, रूटा, सैनिकू, साइलि।

फूलना—ऐगैरि, एल्यूमि, एरण्डो, कैल्के का, लीडम, लाइको, पेट्रोलि। देखिए पैर।

घाव—आर्स।

कमजोरी—हिपोमे। देखिए पैर।

पसीना, पैरों पर—एल्यूमि, एमो का, एमो म्यूर, ऐनैन्थि, ऐपोसाइ, ऐण्ड्रो, एरण्डो, बैराइटा, बैराइटा ऐसेटि, कैल्के का, कार्बो वेज, कोबे, ग्रैफा, आयोड, लैक्टि एसिड, लाइको, मैंग म्यूर, नाइट्रि एसिड, आक्जै एसिड, पेट्रोलि, फॉस एसिड, सोरि, रस टॉ, सैलिसिलि एसिड, सैनिक, सीपि, साइलि, सल्फर, टेलूरि, थूजा, जिंक मेट।

दुर्गन्धित पसीना—एलुमि, एमो म्यूर, बैराइटा का, ब्यूट्रि एसिड, कैल्के का, ग्रैफा, कैली का, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, सोरि, सैनिकू, साइलि, जिंक मेट।

पसीना रुकना, दब जाना—क्यूप्रम, सीपि, सल्फर, जिंक मेट।

पसीना, दबना, फिर गले के रोग—बैराइटा का, ग्रैफा, सोरि, सैनिकू, साइलि।

दबना और अँगुलियों में छरछराहट, दर्दीलापन—बैराइटा का, आयोड, लाइको। नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, सैनिकू, साइलि, जिंक मेट।

फूलना—एसेटि एसिड, इस्कियु, ऐमो का, एपिस, आर्स, एरण्डो, ब्रायो, कैक्ट, कॉस्टि, सिन्को, कॉल्चि, डिजि, फेरम, ग्रैफा, हैमे, हेलोड, लीडम, लाइको, मर्क को, मर्क, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, फॉस एसिड; प्लम्ब मेट, प्रून स्पाइ, पल्से, सैकेर ऑफि, सैम्बु, सीपि, साइलि, स्ट्रोफै, वेरैट्र एल्ब। देखिये शोथ (ड्राप्सी) साधारण सूची में।

कोमलपन—ऐण्टि क्रू, आर्स, बैराइटा का, सेपा, लीडम, पेट्रोलि, फॉस एसिड, साइलि, जिंक। देखिये दर्द।

कम्प—जेल्से, फॉस, सारसा, सीपि, स्ट्रैमो।

घाव होना—बैराइटा का।

नसों का सिकुड़न—फेरम ऐसेटि, हैमे। देखिये साधारण सूची।

कमजोरी—एकोन, इस्कियू, एण्टि क्रू, आर्स, बोवि, कैना से; जेल्से, हिपोमे, इग्नै, लाइको, मैग का, रैनन रेपे।

पैर की अँगुलियाँ—अँगूठे पर घट्ठे—ऐगैरि, बेन्जो एसिड, बोरै, हाइपेरि, आयोड, कैली आयोड, रोडो, सैंग्वि, सारसा, साइलि, वेरैट्र विरि। देखिये चर्म रोग।

जलन—एलुमि, सारसा।

खाल का जगह-जगह कड़ापन—ऐसेटिक एसिड, ऐण्टि क्रू, कैल्के का, कुरारी, फेरम पिक्रि, ग्रैफा, हाइपेरि, लाइको, नाइट्रि ऐसि, रैनन बल, रैनन ऐकर, सेम्पर्वि टेक्टोरि, सीपि, साइलि, सल्फ एसिड। देखिये चर्म।

बेवाई फटना—नाइट्रि एसिड, सैलिसि एसिड। देखिये चर्म।

ठण्डापन—सल्फर।

दरारें पड़ना, चिटकना—इयूजीनि, जैम्बो, ग्रैफा, पेट्रोलि, सैबाडि, सारसा।

टेढ़ापन—ग्रैफा।

कुचलन, असह्य पीड़ा—हाइपेरिकम।

पकना, घाव होना—ग्रैफा।

खुजाना—एगैरि, कैली का, मेर्लिण्ड।

जोड़ों की सूजन—एमो का, बेन्जो एसिड, बोरैक्स, बोथ्रोप्स, कार्बो वेज, कॉल्चि, डैफ्ने, लीडम, रोडो, ट्युक्रि। देखिये जोड़।

नाखूनों का ठेढ़ा पड़ना, मोटा होना—ऐण्टि क्रू, ग्रैफा, साइलि।

नाखूनों का सूजना—सैबाडि।

नाखूनों का भीतर की तरफ बढ़ना—कॉस्टि, ग्रैफा, हीपर, मैग फॉ, मैग पॉ, आस्ट, नाइट्रि ऐसि, साइलि, स्टैफि, ट्युक्रि, थूजा।

नाखूनों के चारों तरफ दर्द—ऐण्ट्रि क्रू, फ्लो ऐसि, हीपर, नाइट्रि एसिड, ट्युक्रि।

सुन्न होना—कोनि, नैट्र म्यूर, फॉस, साइलि, सल्फर, थैली।

दर्द—पैर के अँगूठे में—एमो का, आर्स, बैराइटा का, कैल्के का, इलाटि, युपेटो पर्फ, कैली का, लीडम, प्लम्ब मेट, प्रिमू वै, सीपि, साइलि।

ऐंठन—क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम मेट, डिजि, डायस्को, हायोस, लाइको, रस टॉ, सीकेलि, सीपि, सल्फर।

वात रोग सम्बन्धी—एक्टि स्पाइ, एपोसाइ, एण्ड्रो, बेन्जो ऐसि, बोरै, बोथ्रोप्स, कॉली, कॉस्टि, कोल्चि, डैफ्नै, नैफेलि, हाइपेरि, कैली का, लीडम, लिथि का, नाइट्रि एसिड, पियोनि, फॉस एसिड, पल्से, सैबाइ, साइलि। देखिये गठिया वात रोग।

वात रोग सम्बन्धी, अँगूठे में—एमो बेन्जो, आर्न, बेन्जो ऐसि, बोरै, बोथ्रोप्स, कॉल्चि, कॉनवै, नैफेलि, कैली का, लीडम, रोडो, साइलि।

वात रोग सम्बन्धी, अंगुलियों के सिरों में—एमो म्यूर, हाइपेरि, कैली का, साइलि, सिफिलि।

फटन—ऐण्टि स्पाइ, एमो म्यूर, बेन्जो एसिड, ब्रोमि, कॉलो, कोल्चि, पैले, साइलि, सिफिलि।

असहनशील—बैराइटा कार्ब, ब्रोमि, नैट्र आर्स, फॉस एसिड। देखिये पैर।
कड़ा पड़ना, तनाव—कॉलो, ग्रैफा, लीडम, सिकेलि। देखिये जोड़।
अँगूठे का पकना, घाव होना—साइलि।
अंडाकार स्फोटक घाव—आर्स, ग्रैफा, पेट्रोलि, सीपि।
छीलन, चकत्ते—सल्फर।
चाल—कॉफि।

लड़खड़ाना, क्रम भ्रष्ट—आर्जे, नाइट्रि, बेल, हेलोड, इग्नै, नक्स वॉ, सिकेलि, सल्फोना। देखिये चालन क्रियाहीनता (स्नायुमण्डल)।

धीमी, धीरे धीरे—जेल्से, फॉस एसिड, फॉस।
घसीटते हुए, घुटनों का आपस में टकराना—लैथाइरस।

लड़खड़ाना, असावधान, कठिनता से चलना—ऐकोन, ऐगैरि, ऐग्रोस्टे, ऐंगस्टु, आर्जे नाइ, ऐसैरि, ऐस्टेरि, एस्ट्रैगे, बेल, कैल्के फॉ, कार्बन सल्फ, कॉस्टि, कॉकु, कोल्चि, कोनि, डुबो, जेल्से, हेलोड, इग्नै, लैक्टि एसिड, लैथाइर, लिलि टिग्रि, लोलि, मैगे ऐसेटि, मर्क, मोर्फि, म्यूर एसिड, माइगे, मैग कार्ब, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, ऑक्सिट्रो, पियोनि, फॉस एसिड, फॉस, रस टॉ, सिकेलि, सीपिया, स्ट्रैमो, सल्फोना, टैबै, ट्रिओन, जिंक मेट।

लड़खड़ाना, असावधान, जब कोई देखता न हो—आर्जे नाइट्रि।

लड़खड़ाना, असावधान, अन्धेरे में या आँखें बन्द करके चलने में—एलुमि, आर्जेनाइ, कार्बन ड्युबोई, जेल्से, आइडोफॉ, स्ट्रैमो।

लड़खड़ाना, असावधान, पैशिक असहयोग के कारण—ऐलुमि, ऐरैगे, आर्जे नाइट्रि, ऐस्टेरि, ऐस्ट्रैगै, बैराइटा म्यूर, बेल, कॉकु, जेल्से, कैली ब्रो, मेडो, ओनोस्मो, फॉस एसिड, फाइजॉस्टि, पिक्रि एसिड, प्लम्ब, सिकेलि, साइलि, ट्रिओन, जिंक मेट।

पीछे की तरफ चलना—ओक्सिट्रो।

पीछे की तरफ चलना, पंजे के बल पर—मैंगे ऐसेटि।

चलना, सीखना, बच्चों का देर में—बैराइटा कार्ब, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कॉस्टि, नैट्र म्यूर, साइलि।

चलते समय पैर घसीटे—माइगे, नक्स वॉ, टैबे।

चलते समय पैर आगे को झटके या घूम जाये—ऐकोन।

चलते समय एड़ी जमीन पर न पड़े—लैथाइ।

चलते समय जोड़ों में दर्द, मानो घोड़ासन छोटी हो गई है—एमो म्यूर, कॉस्टि, सिमेक्स।

चलते समय टाँगों में सीसे जैसा भारीपन—मेडो।

चलते समय टाँगें लकड़ी या सीसे की बनी जान पड़ें—थूजा।

चलते समय टाँगें बिना चाहे आगे को झटकें—मर्क।

चलते समय पैरों को आवश्यकता से अधिक ऊँचा उठाये और फिर जोर से पटके—हैलोड।

चलते समय कुछ लँगड़ाकर चले—बेल।

चलते समय झुककर चलना—आर्न, लैथाइर, मैंगे ऐसेटि, फॉस, सल्फर।

असम भूमि पर चलना कठिन—लिलि टिग्रि।

चलते या खड़े होते समय एकाएक गिर पड़े—मैग का।

चलते समय हवा में कदम पड़ता जान पड़े—डियुबो, लेक कैना।

चलते समय लड़खड़ा जाये, गलत कदम पड़े—ऐगैरि, फॉस एसिड।

चलते समय, आगे गिरने की सम्भावना, पीछे चलते ही गिर पड़े—मैंगे एसेटि।

चलते समय लड़खड़ा कर गिर जाये—लैक्टि एसिड।

जोड़—जलन—एपिस, आर्से, कॉस्टि, कोल्चि, मैंगे एसेटि, मर्क, रस टॉ, सल्फर।

गाँठें पड़ना—बेन्जो एसिड, कैली म्यूर, रूटा, साइलि।

सिकुड़न, दर्द नसों और बन्धनियों में—ऐब्रोटै, ऐमो म्यूर, कॉस्टि, सिमेक्स, कोली, फॉर्मिका, गुवाइक, कैली आयोड, नैट्र म्यूर, टेलूरि।

हिलने से चुरचुराना—ऐकोन, ऐंगस्टू, बेन्जो एसिड, कैल्के फ्लो, कैम्फो, कॉस्टि, कॉकु, जिन्से, ग्रैफा, कैली बाइ, कैली म्यूर, लीडम, नैट्र म्यूर, नैट्र फॉ, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, थूजा, जिंक मेट।

शोथ—एपिस, बोवि, कैन्थ, चिनि सल्फ, सिन्को, आयोड।

हिस्टीरिया युक्त जोड़—आर्जे नाइट्रि, कैमो, कोटाइलेड, हॉइपेरि, इग्नै, जिंक मेट।

प्रदाह, सन्धि-प्रदाह—तीव्र—ऐब्रो, ऐकोन, आरव्यूट, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कॉस्टि, सिमिसि, सिन्को, कोल्चि, नैफे, गुवाइक, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, कैल्मि, लीडम, लिलि टिग्रि, लिथि का, मैंगे ऐसेटि, मर्क, नैट्र साइलि, नाइट्रि एसिड, फाइटो, पल्से, रेडियम, रोडो, रस टॉ, सैबाइना, सैलि एसिड, सालिडै, स्टेलै, सल टेरेबि, वायोला ट्रि। देखिये वात-रोग।

प्रदाह, जीर्ण—ऐमो फॉ, ऐण्टि क्रू, आरब्यूट, आर्न, आर्स, बेन्जो एसिड, कैल्के का, कैल्के रेनै, कॉलो, कॉस्टि, सिमिसि, सिन्को, कोल्चि, काल्चिसीन, फेरम आयोड, फेरम पिक्रि, गुवाइक, आयोड, कैली ब्रो, कैली आयोड, लैक्टि एसिड, लीडम, लाइको,

मर्क कॉ, नैट्र ब्रो, नैट्र फॉस, नैट्र सल्फ, पिपेराज, पल्से, रेडियम, सैबाइ, सैलि एसिड, सीपि, सल्फर, टेरेबि, थाइरी।

प्रदाह गठिया—एब्रो, एकोना, एमो बेन्जो, एपिस, आर्स, आर्न, ऑरम म्यूर, ऑरम म्यूर नैट्रो, बेल, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कैजुपू, कैल्के का, कार्ल्स, कैमो, चिनि सल्फ, सिन्को कोल्चि; कोल्चिसीन, क्युप्रम हैफनै, डल्का, फेरम पिक्रि, फॉर्मिका, गुवाइक, इरिडि, जैबोरै, कैली बाइ, कैली आयोड, कैल्मि, लीडम, लिलि का, लाइको, मैगे एसेटि, मेडो, मर्क सल्फ, नैट्र लैक्ट, नैट्र म्यूर, नैट्र सैल, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, पैन्क्रिएट, फॉइटो, पल्से, ब्वेर्क, रोडो, रस टॉ, सैबाइ, साइलि, स्पाइजे, स्टेलै, सल्फर, टैक्सस, यूरिक एसिड, अर्टिका।

आक्रमण के बाद कमजोरी—बेलिस, साइप्रिपी।
गठिया सीने की—कॉल्चि।
गठिया, आँखों की—नक्स वॉ।
गठिया, हाथ-पैर की फूलन कम, मंद गति—लीडम।
गठिया, हृदय की—ऑरम म्यूर, कैक्ट, कॉनवै, क्युप्रम मे, कैल्मि।
गठिया स्नायु की (स्नायुशूल)—कोल्चि, कोलो, सल्फर।
गठिया पेट की—हाइड्रोसि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, पल्से।
गठिया गले की—कोल्चि, मर्क सल्फ।
हृदय में स्थान विकल्प—कोल्चि, कैल्मिया।
पेट में स्थान विकल्प—एण्टि क्रू, नक्स वॉ।
स्नायविक अशान्ति—इग्नै।
दबा हुआ या पीछे हटा हुआ कैजुपु, नैट्र म्यूर, ऑक्जै एसिड, रस टॉ।
निम्न तीव्र—गुवाइक, लीडम पल्से।
गर्भाशय का विकार—सैबाइना।

प्रदाह—साइनोवाइटिस (झिल्ली, जिसमें से जोड़ों को चिकना रखने वाला तरल पदार्थ छनता है। उसी झिल्ली की सूजन तीव्र)—एकोन, एपिस, आर्न, बेल, बर्बे वल, ब्रायो, कैन्थे, फ्लोर एसिड, हीपर, आयोड, लीडम, पल्से, रस टॉ, रूटा, सैबाइ, साइलि, स्लैग, स्टिक्टा।

प्रदाह जीर्ण—ऐमो फॉस, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, कैल्के फॉस, कॉस्टि, हीपर, आयोड, कैली आयोड, मर्क सल्फ, फाइटो, पल्से, रस टॉ, रूटा, साइलि, स्टैफि, स्टेलै, सल्फर, ट्युबर।

जोड़ों के जोड़ में खुजाना—फॉस एसिड।
लंगड़ापन—एब्रोटै, सेपा, रस टॉ, रूटा, सल्फर। देखिये कड़ापन।

हड्डियों के सिरों पर गुठलियाँ—ऐग्नस, ऐमो बेन्जो, एमो फॉस, ऐण्टि क्रू, ऑरम, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, कैल्के कार्ब, कैल्के रेन, कॉलो, कॉस्टि, सिमिसि, कोल्चि, इलाटि, युकैलि, युपेटो पर्फ, फॉर्मिका, ग्रैफा, गुवाइक, हेक्ला, आयोड, कैली आर्स, कैली आयोड, कैली साइलि, लीडम, लिथि कार्ब, लाइको, मेडो, नैट्र लैक्ट, नैट्र युरियैट, विपेराज, रोडो, रूटा, सैबाइ, स्टैफि, सल्फर, युरिया, युरिक एसिड।

दर्द—साधारण—एमो कार्ब, ऐमो म्यूर, आर्जे म्यूर, बैराइटा कार्ब, ब्रायो, कैल्के फॉस, सीड्रन, डायस्को, ड्रोसेरा, युओनाइम, आयोग, क्रियो ज़ो, लैपा, मैंगे, साइलि, सल्फर, जिंक मेट।

कुचलन—आर्न, ब्रायो, हाइपेरि, कैल्मि, मेजे, रस टॉ, रूटा।

कटन—एकोन, ब्रायो, कॉलो, सिमिसि, कैल्मि।

दोपहर के बाद खोजने जैसा दर्द—कैली आयोड, मैंगे एसेटि, मर्क सल्फ।

खींच, तनाव—ऐलो, ऐमो कार्ब, ऐमो म्यूर, ऐपोसाई, ऐण्ड्रो, कास्टि, सिमेक्स, सिन्को, कोल्चि, जिन्से, मेजे, पल्से, रस टॉ, सल्फर।

स्नायुशूल—आर्जे मेट, सीड्रन, कालो, प्लम्ब, जिन्क मेट।

वात संबंधी—ऐब्रोटै, एकोन, ऐसक्लिपि ट्यूब, बेन्जो ऐसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कालो, कॉस्टि, सिमिसि, सिन्को, कोल्चि, डिजि, डायस्को, फेरम, फोर्मिका, गुवाइक, आयोड, कैली बाइ, कैल्मि, लैक्टि एसिड, लीडम, मर्क सल्फ, पानस साइल, पल्से, रेडियम, रैम कैलि, रोडो, रस टॉ, रूटा, सैबाइ, सैलोल, स्टैफि, स्ट्रोन्शिया। देखिये वात रोग।

कोमलता—ऐकोन, ऐमो म्यूर, एपिस, आर्न, बेल, बेलिस, ब्रायो, कोल्चि, गुवाइक, हैमे, हीपर, कैल्मि, लीडम, लिथि का, मेलि, फाइटो, पल्से, रस टॉ, सैबाइ, स्टिक्टा, वेरेट्र एल्ब, बरवैस्क।

कड़कने, फटने, जगह बदलने वाले चंचल—एपिस, बेन्जो ऐसि, ब्रायो, कॉस्टि, सिमिसि, सिन्को, कोल्चि, गुवाइक, कैली आयोड, कैल्मि, लीडम, लिथि का, मैग्नोल, मर्क सल्फ, फॉस एसिड, पल्से, रस टॉ, सल्फर, वेरेट्र वि।

कड़ापन—ऐब्रोटै, ऐंगस्ट्र, एपिस, एपोसाइ, ऐण्ड्रो, आर्न, ऐस्क्लेपि ट्यूब, बैराइटा म्यूर, ब्रायो, कॉलो, कॉस्टि, कोल्चि, कोलो, डायस्को, फोर्मिका, जिन्से, गुवाइक, आयोड, कैली आयोड, लाइको, मैग्नोल, मेडो, मर्क सल्फ, मेजे, नक्स वॉ, ओलि जैके एसे, पेट्रोलि, फाइटो, पाइनस साइल, रस टॉ, सीपि, स्टेलै, स्ट्रिक्नि, सल्फर, थियोसिन, ट्रियोस्ट, वरवैस्क।

फूलना—ऐब्रो, ऐकोन, एक्टि स्पाइ, एनागै, एपिस, आर्स, बेल, बेन्जो एसिड, ब्रायो, कॉस्टि, सिन्को, कोल्चि, डिजि, गुवाइक, आयोड, कैली म्यूर, कैल्मि, लीडम,

लिथि का, मैगे एसेटि, मेडो, मर्क सल्फ, फाइटा, पल्से, रैम कैलि, रोडो, रस टॉ, सैबाइ, स्टेलै, स्टिक्टा।

फूलना गहरा लाल—ब्रायो, कैल्मि, रस टॉ।

फूलना—पीला, सफेद—एपिस, ऑरम, ब्रायो, कैल्के कार, कैल्के फॉ, सिस्टस, कोल्चि, कोनि, डिजि, आयोड, लाडम, मर्क को, मर्क सल्फ, फॉस एसिड, फॉस, पल्से, रोडो, साइलि, सल्फर, सिमफाइट, ट्यूबर। देखिये घुटने।

फूलना, चमकीला—एकोन, एपिस, बेल, ब्रायो, डिजि, मैगे एसेटि, सैबाइ।

उपस्थि का पकना-मर्क को।

कमजोरी—ऐकोन, बैराइटा म्यूर, बोवि, कार्बो एनि, कॉस्टि, सिन्को, इयुफोर्बि, हिपोमे, लीडम, फॉस, सोरो, मेजे, रस टॉ, जिन्जि।

कमजोरी, जल्दी मोच खा जाना—कार्बो एनि, हीपर, लीडम।

टखना गुल्म—खुजाना—पल्से, रस टॉ, सेलैनि।

खजाना, खजाने से या बिस्तर की गरमी से खुजली अधिक हो·लीडम।

दर्द, साधारण—ऐब्रोटै, ऐलुमि, एमो का, ब्यूटरिक एसिड, कॉस्टि, ज़ुओनाइम, लैप्पा, लैथाइर, नैट्र म्यूर, साइलि, टेट्राडाइन, वरबैस्क, विस्कम।

कुचलन, मोच, जगह से हट जाने की तरह संवेदन—ब्रायो, लीडम, प्रून स्पाइ, रूटा, साइलि, सल्फर।

वात रोगग्रस्त—ऐब्रो, ऐक्टि स्पाइ, कॉलो, कॉस्टि, कोल्चि, गुवाइक, लीडम, मैगै ऐसेटि मैगै म्यूर, मेडो, प्रोफाइल, पल्से, रेडियम, रोडो, रूटा, साइलि, स्टेलैरि, सल्फर, आर्टिका।

मोच खाना—कार्बो ऐनि, लीडम, नैट्र आर्स, नैट्र का, रूटा, स्ट्रान्सि का।

जीर्ण मोच—ब्रोवि, स्ट्रॉन्सि का।

कड़ापन, तनाव—कैली का, मेडो, सिपि, सल्फर, जिंक मेट।

फूलना—एपिस, आर्जे नाइ, फेरम, हैमे, लीडम, लाइको, मेडो, मिमोसा, प्लम्ब, स्टैन, स्ट्रोन्सि का। देखिये शोथ।

घाव खुजाना—सल्फर।

कमजोरी, पैर नीचे की तरफ मुड़ जाया करे—कैल्के कार्ब, कैल्के फॉ, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, कैमो, हैमे, लीडम, मैगै एसेटि, मैगै म्यूर, मेडो, नैट्र आर्स, नैट्र का, नैट्र म्यूर, फॉस, पाइनस साइल, रूटा, साइलि, सल्फर।

केहुनी सुन्न होना—पल्से।

दर्द—ऐण्ट क्रू, आर्जे मेट, आर्स, कॉस्टि, सिनाबे, कोल्चि, फेरम म्यूर, गुवाको, कैली का, कैल्मि, लाइको, मेनिस्पर, ओलि जै ऐसे, फॉस, सोलेन, लाइको, सल्फर, विस्कम, जिंक, ऑक्सि।

नितम्ब—रोग—ऐकोन, आर्स म्यूर, आर्स, आर्स आयोड, कैल्के का, कैल्के हाइपोफॉस, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, कॉस्टि, सिन्को, सिस्टस, कोको, फेरम मेट, फेरम फॉस, फ्लोरि एसिड, हीपर, हिपोजे, हाइपेरि, आयोड, कैली का, कैली आयोड, मर्क आयोड रुबर, मर्क, फॉस एसिड, फॉस, रस टॉ, साइलि, स्टैफि, स्टिलिन्जि, सल्फर, ट्यूबर। देखिये कॉक्सैलजिया।

उखड़ना—कोलो।

दर्द—इस्किंयु, ऐलियम सैटाइ, आर्जे मेट, आर्स, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फॉ, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, कैमो, चेलि, सिस्टस, कोल्चि, कोलो, कोनि, ड्रोसे, इलाटि, फेरम मेट, फार्मिका, जेल्से, ग्लीसरीन, गुआइको, हाइपेरि कैली का, कैली आयोड, लीडम, लिलि टिग्रि, लिमूल, लाइको, मैग म्यूर, मेजे, म्यूरेक्स, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ, पल्से, रेडियम, सोलेन नाइ, स्ट्रैमो, थूज, टोंगो, ट्राम्बि।

टूट जाने जैसा दर्द, मानो वस्तिगह्वर अलग-अलग होकर गिर जायेगा—इस्किंयु, ट्रिलि।

मोच खाने जैसा दर्द—इस्कियु, ऐमो म्यूर; कैल्के फॉस, कॉस्टि, कोलो, लॉरो, नैट्र म्यूर, पल्से, रस टॉ, सारोसीनि।

बायीं कटि में दर्द—ऐमो म्यूर, कोलो, इरिडि, ओवि गैपै, सैंग्वि, सोलेन नाइ, स्ट्रैमो।

दाहिनी कटि में दर्द—एगैरि, एण्टि टा, चेलि, ग्रैफा, कैली का, लीडम, लिलि टि, लिमुल, नक्स मॉ, पैले, स्ट्रैमो।

घुटने—ठण्डापन—ऐग्नस, एपिस, कैल्के का, कार्बो वेज, नैट्र का। देखिये अङ्ग।

हरकत से चुरचुराना—बेन्जो एसिड, कॉस्टि, कॉकु, क्रोकु, डायस्को, नैट्र आर्स, नक्स वॉ।

ऊपर चढ़ने से घुटने की टोपी का अपनी जगह से खसक जाना—कैना सै।

शोथ—कॉस्टि, सीड्रन, आयोड।

भैंसिया दाद, विसर्प कार्बो वेज, ग्रैफा, पेट्रोलि।

घुटने की टोपी पर रक्ताम्बु स्रावी कोष—ऑर्न, कैल्के फॉस, आयोड।

प्रदाह (साइनोवाइटिस, बरसाइटिस, हाउसमेड्सनी)—तीव्र—एकोन, ऐपिस, आर्न, बेल, ब्रायो, कैन्थे, सिस्टिस, हेलेबो, हीपर, आयोड, कैली का, कैली आयोड, फॉस, पल्से, रस टॉ, रूटा, साइलि, स्लैग, स्टिक्टा, सल्फर। देखिये फूलन।

प्रदाह, जीर्ण—ऐण्टि टा, बेन्जो, एसिड, बर्बे वल, कैल्के फ्लो, कैल्के फॉस, हीपर, आयोड, कैली आयोड, मर्क सल्फ, फाइटो, रस टॉ, रूटा, साइलि, ट्यूब।

सुन्न होना - कार्बो वेज, मेलिलो ।

सुन्न होना, जो अण्डकोष तक बढ़े, बैठने से कम हो—बैराइटा का ।

दर्द—साधारण—ऐंगस्टूरा, एपिस, बेल, बेन्जा एसिड, बर्ब वल, कैल्के का, कैना इण्ड, डायस्को, इलैप्स, कैली आयोड, क्रियोजो, लैप्पा, मैग म्यूर, मेलि, मेजे, म्यूरि एसिड, फॉस, सल्फर, जेरोफाइल ।

टीस—ऐनेका, कोनि, लीडम, मेलिलो, ओलि जैको ऐसे ।

छेदन, दर्द, टहलने से कम हो—इण्डिगो ।

कुचलन दर्द—आर्न, बर्ब वल, ब्रायो, सारासी ।

बायें घुटने में खोदने-सा दर्द—ऑरम, कॉस्टि, कोलो, रस टॉ, स्पाइजे, टेराक्से ।

खींचन—कैल्के का, मैग म्यूर, म्यूरि ऐसि, फॉस, सल्फर ।

वातरोग सम्बन्धी—आर्जे मेट, बेन्जो एसिड, बर्ब वल, ब्रायो, सिन्को, कोपेवा, डैफ्ने, इलैप्स, डायस्को, डल्का, गुवाइक, जैकारै, कैली का, कैली आयोड, लैक्टि, मेलिलो, एसिड, लीडम, मैगे एसेटि, मर्क, नैट्र फास, पल्से, पल्से न्यूटै, रेडियम, सैबाइ, स्टिक्टा, विस्कम ।

फटन—कैल्के का, कॉस्टि, कोलो, ग्रैनेट, लाइको, मर्क, पेट्रोलि, स्टिक्टा, टैराक्से, टोंगो, वेरेट्र विरि ।

तनाव, ऐंठन—एनाका, कैप्सि, लैथाई, पियानिया, पल्से, साइलि, वरबैस्क ।

घुटने के पिछले भाग में खुजाना—लाइको, सीपिया ।

घुटने के पिछले भाग में दर्द—कॉस्टि, लाइको, फाइजॉस्टि, रेडियम ।

घुटने के पिछले भाग में खाज, प्रूराइगो—आर्स ।

परावर्तित क्रिया - कम होना, गायब होना—कुरारी, ओक्सिट्रो, प्लम्ब मेट, सीकेलि, सल्फोना ।

अधिक होना—ऐन्हेलो, कैना इण्डि, लेथाइ, मैंगे एसेटि । देखिये स्नायु-मण्डल ।

घुटनों का तनाव—बर्ब वल, ब्रायो, लाइको, मिमोसा, पेट्रोलि, सीपि, सल्फर ।

फूलना—एपिस, आर्न, बेल, बेन्जो एसिड, बर्ब वल, ब्रायो, कैल्के का, सिन्को, कॉकु, कैली आयोड, लाइको, मैग का, रोडो, सैलिसि एसिड, साइलि ।

सफेद सूजन—ऐकोन, एपिस, आर्न, कैल्के का, कैल्के फॉस, सिस्टस, केली आयोड, लीडम, फॉस ऐसि, फॉस, पल्से, रस टॉ, साइलि, स्लैग, स्टिक्टा, सल्फर, ट्यूबर ।

कोमल—एपिस, बर्ब वल, ब्रायो, सिन्को, रस टॉ । देखिये जोड़ ।

उपास्थि का पकना—मर्क डल्सिस ।

कमजोरी—ऐकोन, ऐनैका, ऑरम, कोबा, कॉकु, डायस्को, हिपोमे, लैक्टि ऐसि, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, सल्फर ।

कंधों के डैने—त्रिकास्थि, दर्द वात रोग—फेरम फॉ, ग्लीसरीन, लाइकोपस, मेडो, नक्स मॉ, ऑक्जै एसिड, रस टॉ, सैंग्वि, स्टिक्टा, सिफिलि, अर्टिका, वायोला ओडो, जिंक ऑक्सि, जिंजि ।

दर्द—साधारण—एलुमि, ऐमो फॉस, एनैगै, आर्न, ऐजाडिरै, बैराइटा का, कैना इण्डि, चेलि, कॉकु, कोनि, फैगोपा, जुग्लै रेजि, क्रियोजो, लाइको, सेन्सिप, माइर, नैट्र आर्स, नैट्र का, नाइट्रि ऐसि, रैनन बल, सीपि, वेरेट्र एल्ब, विस्कम ।

डैनों के बीच में दर्द—इस्कियु, आर्स, ब्रायो, कैम्फो, चेनोपो, युओनाइम, ग्रैनेट, गुवाइक, मैग सल्फ ।

जलन, दर्द छोटी जगहों में—ऐगैरि, फॉस, रैनन बल, सल्फर ।

खींचन दर्द—आर्स, बर्बे वल, कैमो, कोलो, सल्फर ।

बायें डैने में दर्द—ऐकोन, इस्कियु, ऐगैरि, एण्टि टॉ, ऐस्पैरै, कैमो, चेनोपो ग्लॉ एफिस, कोलो, युपेटो पर्फ, फेरम मेट, लीडम, लोबे, सिफिलि, नक्स मॉ, ओनोस्मो, रेडियम, स्ट्रैमो, सल्फ ।

बाईं तरफ के डैने के निचले कोण में दर्द—चेनोपो, ग्लॉ एफिस, क्युप्रम आर्स, रैनन वल ।

दाहिने डैने में दर्द—एबीज कैने, ऐमो म्यूर, ब्रायो, चेलि, चेनोपो ग्लॉ, कोलो, फेरम फॉ, फेरम म्यूर, गुवाको, इक्वि, इपोमो, जुग्ले सिने, कैली का, कैल्मि, मैग का, पैलै, फाइटो, पल्से न्यूटै, रैनन बल, सैंग्वि, सोलेनम, लाइको, स्टिक्टा, स्ट्रान्शि, अर्टिका ।

दाहिने डैने के निचले कोण में दर्द—चेलो, चेनोपो, ऐनन्थे, कैली का, मर्क, पोडो ।

वात सम्बन्धी दर्द—ऐकोन, ऐमो, कॉस्टि, बर्बे वल, ब्रायो, कोल्चि, फेरम म्यूर, फेरम फॉस, गुवाइक, हैमे, कैली का, कैल्मि, लैक्टे एसि, लीडम, लिथि का, लिथि लैक्टि, मेडो, ओलि, ऐनि, पैलै, फाइटो, प्रिमुला, रेडियम, रैनन बल, रोडो, रस टॉ, सैंग्वि, स्टेलैरि, स्टिक्टा, स्ट्रोन्शि, सल्फर, सिफिलि, अर्टिका, वायोला ओडो ।

गाने या और तरह की आवाज पर जोर पड़ने से दर्द बढ़े—स्टैन ।

कड़कन, फटन—एमो म्यूर, ब्रायो; हाइपेरि, कैली का, लाइको, मैग का, नाइट्रि एसिड ।

तनाव—कॉकु, डल्का, ग्रैनैट, इण्डियम, फाइटो, प्रियु वे, सैंग्वि, सैनेसि, जैको ।

कलाई के पीछे की तरफ हड्डी की गुठलियाँ—बेन्जो ऐसि, कैल्के फ्लो, फॉस, रस टॉ, रूटा, साइलि, थूजा ।

गठिया सम्बन्धी आक्षेप —कैल्के कार्ब, रूटा ।

दर्द— साधारण—ऐब्रोटै, ऐक्टि स्पाइ, ऐमो कार्ब, बिस्म, कार्बो ऐनि, कॉलो, चेलि, हीपोमे, कैली कार्ब, नैट्र फॉस, पियोनिया, प्रोफाइलै, रोडो, रूटा, सीपि, सल्फर, साइलि, अर्टिका, वायोला ओडो ।

ऐंठन, झटकन, दर्द, (लेखकों की ऐंठन)—आर्जे मेट, आर्न, बेल, बेलिस कॉस्टि, कोनियम, क्युप्रम, साइक्लै, फेर आयोड, जेल्से, मैग फॉ, नक्स वॉ, पिक्रि एसिड, रैनन बल, रूटा, सिकेलि, साइलि, स्टैन, स्टैफि, स्ट्रिक्नि, सल्फ एसिड, वायोला ओडो, जिंक मेट ।

वात रोग सम्बन्धी—ऐब्रोटै, ऐक्टि स्पाइ, बेन्जो एसिड, कैल्के कार्ब, कॉलो, कॉस्टि, कोल्चि, हिपोमे, लैक्टि एसिड, लाइको, प्रोफाइलै, रोडो, रस टॉ, रस वेने रूटा, सैबाई, सीपि, सोलेन, लाइको, स्टेलै, अलनस, वैरिलि, वालोला ओडो, वायेथि ।

मोच जैसा, उखड़ा संवेदन—ब्रायो, सिस्टस, युपेटा पर्फ, हिपोमे, ऑक्जै एसिड, रस टॉ, रूटा, अलनस ।

पक्षाघात, लकवा—कॉनि, कुरारी, हिपोमे, प्लम्ब ऐसेटि, प्लम्ब मेट, पिक्रि, एसिड, रूटा, स्टैने । देखिये स्नायु मण्डल ।

गरदन—जलन—गुलाको ।

हरकत से गरदन के जोड़ की हड्डी में अकड़न हो—ऐलो, कॉकु, नैट्र कार्ब, निकोल, ओलि ऐनि, थूजा ।

पतलापन—नैट्र म्यूर । देखिये साधारण सूची ।

भरापन, कालर ढीला करना पड़े—एमाइ, फेलटौरी, ग्लोनो, लैके, पाइरो, सीपि ।

दाने अधिक निकलना—एनाका, क्लिमै, लाइको, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, सीपि ।

खुजाना —पल्सि क्रू ।

पेशियाँ गरदन की सिकुड़ जायें, कड़ी हो जायें—साइक्यूटा, सिमिसि, निकोटी, स्ट्रिक्नि ।

पेशियों में चमकन —सल्फ्यु एसिड ।

पेशियों में फड़कन - ग्रैफैरि ।

सिर घुमाने वाली पेशियों के रोग—जेल्से, टैराक्सै, ड्रिफोलि । देखिये ग्रीवा-स्तम्भ ।

गरदन की जड़—दर्द—साधारण—एकोन, इस्कियु, ऐमो का, बेल, चिनि आर्स, सिमिसि, कोलो, फेलटौरी, फेरम पिक्रि, जेल्सै, ग्रैफा, हाइपेरि, जुग्लै सिने, लाइको, माइर; नैट्र कोलीन, नैट्र सल्फ, पैरिस, वेरेट्र एल्ब, बाइबर्न ओपू, एक्स, रे, जिंक वै।

टीस—ऐडोनि वर, इस्कियु, ऐगस्टू, बैप्टि, कास्टि, कोनि, जेल्से, गुवाइक, पैरिस, रेडियम, वैरेट्र एल्ब, जिंक मेट।

उखड़न, कुचलन, संवेदन—बेल, फैगोपा, लैक्नैन्थ।

वात रोग सम्बन्धी—ऐकोन, ब्रायो, कैल्के फास, कॉस्टि, सिमिसि, कोल्चि, डल्का, गुवाइक, आयोड, कैली आयोड, लैक्नैन्थ, पेट्रोलि, पल्से, रेडियम, रोडो, रस टॉ, सैंग्वि, स्टेलैरि, स्टिक्टा।

फटन, चमकन, कड़कन—ऐकोन, ऐसैरम, बैडि, बैराइटा का, बेल, बर्बे वल, ब्रायो, चिनि आर्स, कोल्चि, फेरम पिक्रि, मैग फॉस, नक्स वॉ, स्ट्रिक्न, जैन्थो।

तनाव—कोनियम, सीपिया, सल्फर, ट्यूबर।

तनावमय सुन्नपन—प्लैटि।

कड़ापन—एलोन, ऐण्टि टा, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के, कॉस्टि, कैल्के फॉस, कॉस्टि, कैमो, चेलि, सिमिसि, कॉकु, कोल्चि, डल्का, फेर फॉस, जेल्से, गुवाइक, हाइपेरि, जुग्नै सिने, कैली का, लैक कैना, लैकनैन्थ, लाइको, मैग का, मेडो, मेंथोल, मर्क आयोड, रूबर, निकोटि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पैम्पिन, पेट्रोलि, फॉस, फाइटो, पल्से, रेडियम, रेडियम रोडो, रस वेने, सीपि, स्टेलैरि, स्टिक्निया, सल्फर, ट्रिफोलि, विन्का, माइनर, एक्स-रे।

फूलना—कैल्के का, आयोड, लाइको, फास, साइलि।

कोमल—एमिल, ब्रायो, सिमिसि, कैली परमैगे, लैके टैराक्से।

चर्बीला अर्बुद—बैराइटा का।

शिराओं का फूलना—ओपियम।

कमजोरी, सिर सीधा न उठा सके—एब्रोटे, इथुजा, कोल्चि, फैगोपा, कैली का, साइलि। देखिये सिर।

झुकी हुई गरदन, ग्रीवास्तम्भ (टॉरटिकोलिस)—एकोन, एगैरि, एट्रोपि, बेल, ब्रायो, सिमिसि, कोल्चि, गुवाइक, हायोस, इग्ने, लैक्नैन्थ, लाइको, मैग फॉ, माइगे, नक्स वॉ, स्ट्रिक्नि, थूजा।

वात रोग—प्रकार—जोड़ों का तीव्र, वात ज्वर—एकोन, एगैरि, एमो बेन्जो, ऐमो कॉस्टि, ऐण्टि टॉ, एपिस, आर्न, आर्स, बेल, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैम्फो, कैरकेरा, कैमो, चिनिसल्फ, सिमिसि, सिन्को,

क्लिमै, कोल्चि, कोल्चिसिन, कोलो, डल्का, इयुपेटो पर्फ, फेरम फॉस, फॉर्मिका, फ्रैन्किस्किया, गॉल्थे, जेल्से, जिन्से, गुवाइक, हैमे, हाइमोसा, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली आयोड, कैली म्यूर, कैल्मि, लीडम, लाइको, मैक्रोटि, मर्क सल्फ, वाइवस, मेथिलि सैल, नैट्र लैक्टि, नैट्र सैलि, नक्स वॉ, निक्टैथ, ऑक्जे एसिड, पेट्रोलि, फाइटो, प्रोपाइले, पल्से, रैनन बल, रैम, कैलि कार्ब, रोडो, रस टॉ, रूटा, सैलिसि एसिड, सैंग्वि, स्पाइजे, स्टेलै, स्टिक्टा, स्टिलि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, सिफिलि, थूजा, टिलिया, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र वि, वायोला ओडो।

ऊपर की तरफ चढ़ने वाला दर्द—आर्न, लीडम।

नीचे की तरफ उतरने वाला दर्द—कैक्ट, कैल्मि।

चञ्चल घूमने-फिरने वाला, जगह बदलने वाला दर्द—ऐपोसाइ, ऐण्ड्रो, कॉलो, सिमिसि, कोल्चि, कैली बाइ, कैल्मि, कैली सल्फ, लैक कैना, मैगे, फाइटो, पल्से, न्यूटैलि, रोडो, स्टैलै, सल्फर।

सौत्रिक तन्तुओं का वात दर्द—(आवरण बँधनियों में)—आर्न, फॉर्मिक एसिड, गेटिसबर्ग वाटर, फाइटो, रोडो, रस टॉ।

बड़े जोड़ों में—एकोन, आरब्यूटस, आर्जे मेट, ऐस्क्लिपि साइरि, ब्रायो, ड्रोसे, मर्क, मिमोसा, रस टॉ, स्टिक्टा, वेरेट्र वि।

छोटे जोड़ों में—ऐक्टि स्पाइ, बेन्जो एसिड, ब्रायो, कॉलो, कोल्चि, कैली बाइ, लैक्टि एसिड, लीडम, लिथि कार्ब, लिथि लैक्टि, पल्से, रोडो, रूटा, सैबाइ, वायोला ओडो।

एक-सन्धि सम्बन्धी—ऐकोन, एपिस, ब्रायो, कॉस्टि, सिन्को, कोपेवा, मर्क। देखिये जोड़।

बहु-सन्धि सम्बन्धी—आएमो, ब्रायो, गुवाइक, पल्से। देखिये चंचल पीड़ा।

साथ के लक्षण—वस्ति, पेचिश के साथ बारी-बारी—ऐब्रो, डल्का, नैफै, कैली बाइ।

बदहजमी के साथ बारी-बारी—कैली बाइ।

जुल्पित्ती के साथ बारी-बारी—अर्टिका।

बाद में जोड़ों में सरसराहट—ङ्किजि।

कमजोरी—आर्न, कैल्के फॉ, चिनि सल्फ, सिन्को, कॉल्चि, फेरम कार्ब, सल्फर।

कमजोरी लाने वाला ज्वर—ब्रायो, रस टॉ।

स्वल्प-विराम ज्वर के साथ—चिनि सल्फ।

मस्तिष्क पर असर करे—बेल, ओपि।

दिल पर असर करे—एडोनि वरनैलिस, एवेना, कैक्ट, कैल्मि, लिथि का, प्रोपाइलै, स्पाइजे।

स्नायविक लोगों में मन्द आक्रमण—वायोल ओडो।

स्नायविक उत्तेजना, तीव्र पीड़ा—कैमो, कॉफि, रस टॉ।

सुन्न होना—एकोन, कैमो, लीडम, रस टॉ।

बेचैनी—एकोन, कॉस्टि, सिमिसि, पल्से, रस टॉ।

स्राव का रुक जाना—एब्रोटै।

ठण्डक से उत्तेजनीयता—लीडम, मर्क।

अनिद्रा—बेल, कैल्के का, कॉफि, इग्ने।

चर्म रोग, तीव्र बाद में—डल्का।

पसीना होना—कैल्के का, हीपर, लैक्टि एसिड, मर्क, रैम कैलि, सैलिसि एसिड, टिलिया।

जुलपित्ती उभरना - अर्टिका।

बढ़ना—रात में - एकोन, आर्न, कैमो, सिमिसि, कोल्चि, युकैलि, कैली आयोड, कैली म्यूर, कैल्मि, लैक्टि एसिड, लीडम, मर्क, फाइटो, पल्से, रोडो, रस टॉ, सारसा, साइलि सल्फर।

आँधी के पहले—पल्से, रोडो, रस टॉ।

कॉल्चिकम के दुर्व्यवहार से—लीडम।

आड़ी चाल, एक तरफ से दूसरी तरफ—लैक कैना।

एक दिन का नागा देकर—सिन्को।

ठंडा, सूखा मौसम से—एकोन, ब्रायो, कॉस्टि, नक्स मॉ, रोडो।

नम मौसम से—आर्न आर्स, कैल्के फॉस, सिमिसि, कोल्चि, डल्का, कैली आयोड, मर्क, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ, फाइटो, रैनन वल, रोडो, रस टॉ, सारसा, वेरेट्र अल्ब।

बरफ गलने के समय—कैल्के फॉस।

हरकत से—ऐक्टि स्पाइ, एपिस, आर्न, ब्रायो, कैल्के कार्ब, सिमिसि, क्लिमै, सिंको, कोल्चि, फॉर्मिका, गेटिस वर्गवाटर, गुवाइक, आयोड, कैली म्यूर, कैल्मि, लैक कैना, लीडम, मर्क, नक्स वॉ, फाइटो, रैनन वल, सैलिसि ऐसि, स्टेलै।

आराम करने से—इयुफॉर्बि, पल्से, रोडो, रस टॉ।

पसीना होने से—हीपर, मर्क, टिलिया।

छूने से—ऐक्टि स्पाइ, ऐकोन, एपिस, आर्न, ब्रायो, सिंको, कोल्चि, आयोड, लैक कैना, रैनन वल, रस टॉ, सैलि ऐसि।

सेंकने से—कैमो, कैली म्यूर, लीडम, मर्क, पल्से ।

कम होना, घटना हरकत से, टहलने से—कैमो, सिंको, डल्का, फेरम मे, लाइको, पल्से, रोडो, रस टॉ, वेरेट्र एल्ब ।

दाब से—ब्रायो, फॉर्मिका ।

आराम से—ब्रायो, गेंटिसबर्ग, वाटर ।

निम्न ताप से—आर्स, ब्रायो, कॉस्टि, कैली बाइ, नक्स मॉ, रस टॉ, साइलि ।

पानी से, पैर में ठंडक से—लीडम, सीकेलि ।

तर मौसम में—कॉस्टि ।

खुली हवा में—कैली म्यूर, पल्से ।

जोड़ों का, जीर्ण—ऐमो फॉस, ऐण्टि क्रू, ऐन्थ्रेको, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फास्ट; कार्बन सल्फ, कॉलो, कॉस्टि, सिमिसि, कॉल्चि, डल्का, युओनाइम, फेरम, गुवाइक, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली का, कैली आयोड, लीडम, लिथि कार्ब, लाइको, मेडो, मर्क, मेजे, ऑल जै ऐरो, पेट्रोलि, फाइटो, पल्से, रोडो, रस टॉ, रूटा, साइलि, स्टेलैरि, स्टिलि, सल्फ, टेरेबि, टैक्सस । देखिये जोड़ ।

सन्धिवात, सन्धि की असाधारण वृद्धि—कॉस्टि, सिमिसि, कॉल्चि, कॉल्चिसिन, डल्का, लैक्टि एसिड, लीडम, लाइको, मैंगे एसेटि, मेथिलिनब्लू, सैलिसि एसि, सीपि, सल्फ, सल्फ टेरेबि, थाइमस एक्सट्रै थाइरॉय, आरब्यूटस, आर्न, आर्स, बेन्जो एसि, कैल्के का, कैप्सि, कॉलो, फेरम आयोड, फेर पिक्रि, गुवाइक, आयोड, कैलि का, कैलि आयोड, मर्क का, नेट्र फॉ, पाइपर मेथिस्टि, पल्से, रोडो, सैबाइ ।

जीर्ण, गर्भाशयिक विकार सम्बन्धी—कॉलो, सिमिसि, पल्से, सैबाइना ।

सुजाकी—ऐकोन, आर्जे मे, आर्न, ब्रायो, कॉस्टि, सिमिसि, क्लिमै, कोपेवा, डेफ्ने, गुवाइक, आयोड, आइरिसिन, जैकैरै, कैली बाइ, कैली आयोड, कैल्मि, मेडो, मर्क, नेट्र सल्फ, फाइटो, पल्से, रस टॉ, सारसा, सल्फर, थूजा ।

पसलियों के बीच की—आर्न, सिमिसि, फाइटो, रैनन वल, रस टॉ ।

पेशीघात—ऐकोन, ऐन्टि टा, एपिस, आर्न, ब्रायो, कैल्के का, कैस्कारा, कॉस्टि, चिनि सल्फ, सिमिसि, सिंकोना, कॉल्चि, डल्का, फेरम, जेल्से, ग्लीसरीन, नैफै, हैमे, हाइपेरि, जैकारै, लाइको, मैक्रोट, मर्क, फॉस, फाइटो, रैनन वल, रोडो, रस टॉ, सैंग्वि, साइलि, सल्फर, सिफालि, वेरेट्र व ।

पक्षाघातक—कॉस्टि, लैथाइ, फॉस । देखिये जीर्ण ।

अस्थि-आवरण सम्बन्धी—बेल, कैमो, कौल्च, साइक्लै, गुवाइक, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क, मेजे, फॉस, फाइटो, सारसा, साइलि ।

निम्न तीव्र—डल्का, लीडम, मर्क, पल्स, रस टॉ ।

उपदंशीय—देखिये अस्थि-आवरण सम्बन्धी ।

श्वास-यन्त्र मण्डल

श्वास-नलिका समूह-दमा-साधारण औषधियाँ—ऐकोन, ऐलुमेन, एम्ब्रो, एमाइल, ऐण्टि आर्स, एण्टि टा, एपिस, ऐरैलिया, आर्स, आर्स आयोड, एट्रोपिन, बैसि, बेल, ब्लाटा, ओरियण्टै, ब्रोमि, ब्रायो, सिन्को, कॉफि, कार्बोवेज, चिनि आर्स, क्लोरम, साइक्यूटा, कोका, कोकेन, क्रोटि टि, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम एसेटि, ड्रोसेरा, डल्का, एग वैक्सिन, ग्लोनो, ग्रिण्डे, हीपर, हाइड्रोसी एसिड, इलिसि, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली फ्लोर, कैली आयोड, कैली नाइ, कैली फॉस, लैके, लीडम, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैग्नोलिया, मेफाइटिस, मोर्फि, नाजा, नैफ्थे, नैट्र सल्फर, नक्स वॉ, पैसिफ्लो, पोथोस, सोरि, टीलि, प.से, क्वेब्रेको, सैबैडि, सैम्बू, सैंग्वि, सिला, स्क्रोफुले, सिफिलि, स्टरकुल, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, सल्फर, सिफिलि, टैबै, टेला ऐरा, थूजा, ट्यूमर, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र विरि, विस्कम, जिंक मे, जिंजि।

प्रकार—आक्रमण—चर्म स्फोट के साथ बारी-बारी—कैलैडि, कॉस्टि, रस टॉ, सल्फर।

खाज दानों के साथ बारी-बारी—कैलैडि।

आक्षेपिक कै के साथ बारी-बारी—क्युप्रम मेट, इपिका।

क्रोध से उत्पन्न हो—कैमो, नक्स वॉ।

हृदय सम्बन्धी—कैक्ट, डिजिटेलीन, ग्रिण्डे स्क्वै, स्ट्रॉफै। देखिये हृदय।

स्वरयन्त्र कपाट में झटके या कमजोरी—मेडो।

चर्म-रोग दब जाने से—आर्स, हीपर, सोरि, सल्फर।

पैर-पसीना दब जाने—ओलि ऐन।

फ्लू, दमा—ऐरैलि, आर्क, आर्स आयोड, चिनि आर्स, इपिका, लोबे इन्फ्ला, नैफ्थे, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, सैबैडि, सैंग्वि, स्टिक्टा, सल्फ, आयोड। देखिये नाक की श्लैष्मिक झिल्ली का प्रदाह, (राइनाइटिस)।

साप्ताहिक—सिंको, इग्नै।

तर, नम—ऐकोन, ऐण्टि आयोड, आर्स, बैसिलि, ब्रायो, कैने इण्डि, कोच्लियर, क्युप्रम, डल्का, युकैलि, युफोर्बिया, पिलू, ग्रिण्डे, हाइपेरि, आयोड, कैली बाइ, नैट्र सल्फ, पल्मो, बल, सैबाल, सेनेगा, स्टैन, सल्फर, थूजा।

तर बच्चों में—नैट्र सल्फ, सैम्बु, थूजा।

आक्षेपिक—आरम ड्रैको, ऐरण्डो, कोरैलि, क्युप्रम, गुवाइरिया, हीपर, इपिका, लैके, लोबे इन्फ्ला, मॉस्कस, पोथो, सैम्बू। देखिये लैरिंजिसमस स्ट्रिडुलस, बच्चों का स्वर-नली आक्षेप।

खान में काम करने वालों का—काडु मै, नैट्र आर्स।

स्नायविक—ऐकोन, ऐम्ब्रा ऐम्ब्राइ, ऐसाफि, चिनि सल्फ, सिना, कॉफि, क्युप्रम, ग्रिण्डे, हाइड्रोसि एसिड, इपिका, कैली फॉस, लोबे इन्फ्ला, मॉस्कस, नक्स मॉ, नक्स वॉ, सुम्बुल, टेला, ऐरानिया, थाइमस, वैलेरि, वेरैट्र एल्ब।

सामयिक—आर्स, चिनि आर्स; सिन्को, इपिका।

पहले जुकाम होना—ऐरैलि, नाजा, नक्स वॉ।

पहले सुरसुरी होना—सिस्टस, लोबे इन्फ्ला।

पहिले गुलाबी जुकाम—सैंग्वि।

हाल का, बिना दूसरी खराबी के—हाइड्रोसि एसिड।

नाविकों का समुद्र के किनारे पर—ब्रोमि।

वृद्धा अवस्था में—बैराइटा म्यूर।

आक्रमण होने पर दाद कम हो—सल्फर।

साथ के लक्षण—श्वास-नलिका के जुकाम के साथ—ऐकोन, एण्टि टा, आर्स, ब्लाटा ऐमे, ब्रायो, क्युप्रम ऐसेटि, एरियोडि, यूकैलि, ग्रिण्डे, इपिका, कैलि आयोड, लोबे इन्फ्ला, नैट्र सल्फ, ओनिस्कस, सैबैल, सल्फर। देखिये तर, नम।

सीने और गले में जलन के साथ—ऐरैलि।

गले में संकोच के साथ—कैमो, ड्रोस, हाइड्रोसि ऐसि, लोबे इन्फ्ला, मॉस्कस।

ऐंठन, कई स्थानों में झटके के साथ—क्युप्रम मेट।

नील रोग के साथ—आर्स, क्युप्रम, सैम्बू।

आशाहीनता के साथ, सोचता है कि वह मर जायगा—आर्स, सोरि।

बाद में दस्त के साथ—नैट्र सल्फ।

रात में मूत्रकृच्छ्र के साथ—सोलिडै।

प्रत्येक नये सर्दी जुकाम होने से हो—नैट्र सल्फ।

पक्वाशयिक विकार के साथ—आर्जे नाइट्रि, ब्रायो, कार्बो वेज, इपिका, कैली म्यूर, लोबे इन्फ्ला, लाइको, नक्स वॉ, पल्से, सैंग्वि, वेरैट्रि विरि, जिंजि।

गठिया, वात रोग के साथ—लीडम, सल्फर, विस्कम।

बवासीर के साथ—जन्कस, नक्स वॉ।

वक्षोदक रोग के साथ—कोल्चि।

अनिद्रा के साथ—क्लोरेल, टेला ऐरानि।

मिचली; दिल की कमजोरी, चक्कर, कै, पेट की कमजोरी, ठण्डे घुटनों के साथ—लोबे इन्फ्ला।

धड़कन के साथ—आर्स, कैक्ट, युकैलि, पल्से।

प्यास, मिचली, सीने में धड़कन, जलन के साथ—कैली नाइट्रि।

अधिक ठोस पदार्थ मिश्रित पेशाब के साथ—नैट्र नाइट्रि।

घटना-बढ़ना—बढ़ना सोने के बाद—ऐरालि, ग्रिण्डे, लैके, सैम्बू।

रात में, लेटने पर—ऐरालि, आर्स, सिस्टस, कोनि, फेरम एसेटि, ग्रिण्डे, लैके, मर्क प्रे रुबर, नाजा, पल्से, सैम्बू, सल्फर।

ठंडे, तर मौसम से—आर्स, डल्का, नैट्र सल्फ। देखिये तर, नम।

ठंडे, सूखे मौसम से—ऐकोन, कॉस्टि, हीपर।

नींद आ जाने के बाद—ऐमो का, ग्रिण्डे, लैके कैना, लैके, मर्क प्रे रुबर, ओपि।

भोजन से—कैली फॉस, नक्स वॉ, पल्से।

धूल नाक में जाने से—इपिका, कैली का, पोथोस।

गंध से—सैंग्वि।

उठ बैठने से—फेरम ऐसेटिकम, लॉरो, सोरी।

बातचीत करने से—ड्रोसे, मेफाइ।

बहुत तड़के—ऐमो का, ऐण्टि टॉ, आर्स, ग्रिण्डे, कैली बाइ, कैली कार्ब, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, जिंजि।

वसन्त ऋतु में—एरालि।

गरमी के मौसम में—सिफिलि।

घटना : कम होना—समुद्र तट पर—ब्रोमि।

आगे झुकने से, झूलने से—कैली का।

डकार आने से—कार्बो वेज, नक्स वॉ।

बलगम जाने से—ऐरालि, इरिओडि, ग्रिण्डे, हाइपेरि, इपिका, कैली बाइ, जिंक मेट।

बाहें फैलाकर लेटने से—सोरी।

चेहरे के बल लेटने से, जबान बाहर निकालने से—मेडो।

हरकत से—फेरम मेट, लोबे इन्फ्ला।

उठ बैठने से—आर्स, कैली का, मर्क प्रे रुबर, नक्स वॉ, पल्से।

सिर आगे झुकाकर उठ बैठने से—हीपर।

मल त्यागने से—पोथोस।

कै करने से—क्युप्रम मेट।

तर मौसम में—कॉस्टि, हीपर।

खुली हवा में—नैफ्थै।

वायु नली का प्रसारण, वायु-पथ से बहुत बलगम निकलना—फैलना अधिक दुर्गन्धित मवादी बलगम के साथ—ऐसेटिक ऐसि, ऐलियम सैटाइवम, ऐलुमेन,

एण्टि टा, बैसि, बैल्से पीरू, बेन्जो ऐसि, कैल्के का, युकैलि, फेरम आयोड, ग्रिण्डे, हीपर, इक्थियो, कैली बाइ, कैली का, क्रियो, लाइको, सायोसो, माइर चेकै, पल्से, सैंग्वि, साइली, स्टैन, सल्फर, ट्यूबर। देखिये जीर्ण वायु-नलिका-प्रदाह।

वायु नलिका प्रदाह—तीव्र प्रदाह—एकोन, एमो का, एमो आयोड, एमो फॉस, एण्टि आर्स, एण्टि आयोड, ऐण्टि टा, आर्स आयोड, आर्स, ऐस्क्ले ट्यूब, एबियारे, बेल, ब्लाटा ओरि, ब्रोमि, ब्रायो, कॉस्टि, कैमो, सिन्को, फोलिच, कोपे, डल्का, युपेटो पर्फ, युफ्रैसि, फेरम फॉस, जेल्से, ग्रिण्डे, हीपर, हायोसि, इपिका, कैली बाइ, लोबे इन्फ्ला, मैंगे एसेटि, मर्क सल्फ, नैफथै, नेट्र आर्स, नाइट्रि एसिड, फॉस, पिलोका, पल्से, रस टॉ, रियुमेक्स, सैंग्व, सैंग्वि नाइ, साइलि, सोलिडै, स्पॉन्जि, स्टिक्टा, सल्फर, सल्फ्यू एसिड, थूजा, ट्यूब, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र वि, जिंक मेट।

कोशिकाओं सम्बन्धी—ऐमो का, ऐमो आयोड, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टा, आर्स, बैसि, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कैम्फो, कार्बो वेज, चेलि, क्युप्रम ऐसेटि, फेरम फॉ, इपिका, कैली का, कैली आयोड, काओलिन, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फॉस, सेनेगा, सोलानाइन, सल्फर, टैरेबि, वेरैट्र एल्ब।

जीर्ण—(जाड़े के दिनों का प्रदाह)—ऐलुमेन, ऐलुमि, ऐमोन, ऐमो का, ऐमो कॉस्ट, ऐमो आयोड, ऐमो म्यूर, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि आयोड, एण्टि सल्फ, ऑरे ऐण्टि टॉ, आर्स आयोड, आर्स, बैसि, बाल्सम पेरू, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के साइलि, कैन्थे, कार्बो ऐन, कार्बो वेज, सिओनोथ, चेलि, सिन्को, कॉक्कस, कोनि, कोपे, कुबे. डिजि, ड्रोसे, डल्का, एरिओडि, युकैलि, ग्रिण्डे, हीपर, हाइड्रै, हायोसि, इक्थि, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली हाइपोफॉ, कैली आयोड, कैली सल्फ, क्रियोजो, लैके, लाइको, मर्क सल्फ, मायोस, माइर चेकै, नैट्रम म्यूर, नेट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, पिक्स लि, पल्से, रूमेक्स, सैबैल, सैंग्वि, सिला, सिके, सेनगा, सांकलि, सीपि, साइलि, सिफिलि, स्पॉन्जि, स्टैन, स्ट्रिक्नि, सल्फर, टेक्सस, टेरेबि, ट्यूबर, वेरेट्र।

सौत्रिक—कैल्के एसेटि, ब्रायो, ब्रोमि, कैली बाइ, फॉस।

दूषित—एमो का, एण्टि टा, ब्रायो, कॉल्चि, डिफ्थेरोटॉक्स, मर्क को।

नलियों की उत्तेजना—ऐसे एसिड, ऐकोन, एलुमेन, एम्ब्रोसि, ब्रोमि, ब्रायो, क्लोरम, फेरम फॉस, हीपर, फॉस, पिलोका, रूमेक्स, सैंग्वि नाइ, स्पॉन्जि। देखिये वायु-नलिका-प्रदाह।

ठण्डी हवा से उत्तेजना—एपियम ग्रै, ऐरालि, बैसि, कैल्के सिलि, कैमो, सिन्को, कोरैलि, डल्का, हीपर, आयोड, कैली का, मैंगे ऐसेटिकम, मर्क सल्फ, नाजा, सोरी, साइलि, ट्यूबर।

सीना—मानसिक धुँधलापन के बाद रोग—फॉस एसिड।

नासूर के नश्तर के बाद, रोग—बर्बे वल, कैल्के फॉस, साइली।

वक्षोदक रोग, फुफ्फुसावरण में मवाद पैदा होने के बाद नश्तर लगवाने के बाद, रोग—ऐब्रोटै।

चर्म रोग के दबने के बाद, रोग—हीपर।

प्रदाह के बाद घिरे हुए स्थानों में रोग, जो जल्द ठीक न हो—सेनेगा।

पत्थर काटने वालों में दुर्बलता के साथ रोग—साइली।

जलन—ऐसेटि ऐसे, ऐकोन, ऐमो का, ऐमो म्यूर, ऐण्टि टा, एपिस, ऐरैलि, आर्स, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, साइक्यूटा, युफोर्बि, क्रियोजो, लाइको, मैग म्यूर, मैंगे ऐसेटि, मर्क सल्फ, मेजे, माइर्टिस, ओलि जै ऐसे, ओपि, फॉस, प्रिमुला, रैनन, सैंग्वि, सैंग्वि नाइ, स्पॉन्जि, सल्फर, वाइथि, जिंक मेट।

ठण्डापन—एबीज कैने, ऐमो म्यूर, ब्रोमि, कार्बो ऐन, सिस्टस; कोरैलि, इलैप्स, हेलोड, कैली फा, लिथि का।

सीने पर दाने निकलना—ऐरण्डो, जुग्लैं सि, कैली ब्रो, लाइको, पेट्रोलि।

लेटना असम्भव—ऐकोन, फेरो, आर्स, कोनवै, डिजि, ग्रिंडे, लैके, मैग फॉ, पल्से, विस्कम। देखिये श्वास क्रिया।

बायीं करवट लेटना असम्भव—फॉस, पल्से।

दाहिनी करवट लेटना असम्भव—मर्क।

क्षयरोग के बाद की खराबी—मिलेफो, रूटा।

खुजली नाक के नथुनों तक बढ़े—क्रोकस, कोनि, आयोड, इपिका, पल्से।

हल्कापन, खालीपन, आँतें पेट फाड़कर बाहर निकलता मालूम पड़ें—कॉकु, नैट्र सल्फ, फॉस, स्टैन।

दर्द साधारण—ऐब्रो, एकालिफा, एकोन, ऐपिस, आर्जे नाइ, आर्न, आर्स, बेल, बोरै, ब्रोम, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के का, कॉलो, कॉस्टि, चेलि, सिमिसि, कोलिन्सो, कोमोक्लै, क्रोटो टि, डिजि, इलैप्स, एरिओडि, गैडूस, हाइड्रोसि एसि, जुग्लै सिनेरि, कैली का, कैली नाइ, क्रियोजो, मेडो, मॉर्फि, माइर्टिस, ऑक्जै एसिड, फॉस, पोथोस, सोरि, पल्से, रैनन बल, रियुमेक्स, सैंग्वि, सोलेन लाइ, स्टिक्टा, स्ट्रिक्नि, फॉस, सेक्सिन, सल्फर।

कुचलन, पकन—ऐम्पेलो, आर्न, कैल्के का, युपेटो पर्फ, क्रियोजो, लाइको, फैसिओल, सोरी, पल्से, रैनन वल, एस्केले, सैंग्वि।

संकुचन, अक्सर गहरी साँस लेता रहे ताकि फुफ्फुस बढ़ा रहे—एडोनिस वर, ऐसाफि, ब्रायो, डिजि, इग्नै, आयोड, लैके, मेलिलो, मिलेफो, मॉस्कस, नैट्र सल्फ, फॉस, साइलि, जेन्थो।

संकुचन, झटके के साथ, कसापन, भरापन, दाब—एबीज नाइग्रा, एकोन, एंड्रोने, ऐम्ब्रो, एमो का, एण्टिमटार्ट, एपिस, ऐपोसाइ ग्रै, ऐरैलि, आर्जे नाइ, आर्स, एसाफि, बैसि, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के आर्स, कैल्के कार्ब, कैप्सि, कार्बो वेज, कैमो, क्लोरम, साइक्यूटा, कोका, कॉकु, कॉफि, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम मेट, डिजि, डायस्को, डल्का, फेरम मेट, फेरम फॉस, ग्लोनो, ग्लीसरीन, ग्रिण्डे, हेमैटॉक्स, हीपर, हाइड्रोसि ऐसि, इपिका, जस्टीसिया, कैली बाइ, कैली का, कैली नाइट्रि, क्रियोजो, लैके, लैक्टू वि; लॉरो, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैग्नोल, मेडो, मार्फि, मॉस्कस, नाजा, नैफ्थे, नैट्र आर्स, नैट्र सल्फ, नाइट्रि स्पि डलसिस, नक्स वॉ, ऑर्नी थोगै, ऑक्जै एसिड, फॉस, पल्से, रैनन बल, रूटा, सैम्बु, सैंग्वि, सेनेगा, सीपि, साइलि, सिफिलि, सोलेन नि, स्पाइजे, स्पॉन्जि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, सल्फ एसिड, सल्फर, वेरेट्र विरि।

फटन—ब्रायो, कैली का, कैली नाइ, सल्फर, जिंक मेट।

दाब, भारीपन, बोझ—एब्रीज नाइ, ऐंब्रा, ऐकोन, ऐमो का, ऐनैका, आर्जे नाइ, आर्न, आर्स, आरम, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के का, कैमो, चेलि, फेरम आयोड, हीमाटोक्स, इपिका, कैली नाइ, क्रियाजो, लिलि टिग्रि, लोबेलि इन्फ्ला, लाइको, फॉस एसिड, फास प्रून पैड, टीलि, पल्से, रैनन बल, रूटा, सैम्बू, सैंग्वि नाइ, सेनेगा, साइलि, स्पांजि, सल्फर, वेरेट्र विरि।

कड़कन, फटन, चिलकन, चमकन—एकोन, ऐगैरि, एलियम सै, ऐमो का, ऐण्टि टा, एपियम ग्रैवी, आर्स, एसिक्लिपट्यूब, बेल, बर्बे वल, बोरै, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कैन्थै, कैप्सि, बार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कॉस्ट, चेलि, सिमिसि, सिन्को, कॉक्कस, कोल्चि, क्रोटन टिग, इलैप्स, फॉर्मिका, गुवाइक, हिमाटोक्स, इनुला, कैली का, कैली आयोड, कैल्मि, लोबेलिकार्डि, लाइको, मेन्थॉल, मर्क को, मर्क, माइर्टिस, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वो, ओलिनि, ओलि जेको, ऐसे, पियोनिया, फैले, फॉस, रैनन बल, रोडो, रस टॉ, रस रैडि, रूमेक्स, सैंग्वि, सिला, सीपि, साइलि, स्पाइ, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फर, थैरडि, थूजा, ट्रिलि, जिंजि।

स्थान—**उपास्थि, उपशुका, उपास्थि वेष्ट-प्रदाह**—आर्जे मेट, बेल, कैमो, सिमिसि, गुवाइकम, ऑलियेण्ड, प्लम्ब, रूटा।

स्तनों के नीचे की ग्रन्थियों में—सिमिसि, पल्से, रैनन बल, अस्टिलै। देखिये स्त्री जननेन्द्रिय-यन्त्र-मण्डल।

पसलियों के बीच के भाग में (पार्श्व वेदना)—एकोन, ऐमो का, ऐरिस्टोलो आर्न, आर्स, एस्किलपि ट्यूबरो, ऐग्नाडिरै, बोरै, ब्रायो, कॉस्टि, चेलि, सिमिसि, कोल्चि, एचिनै, गॉल्थे, गुवाइक, कैली का, नक्स वो, ऑक्जे एसिड, फॉस, पल्से, रैनन वल, रैम कै, रोडो, रस टॉ, रस रैडि, रूमेक्स, सेनेगा, सिनैपि नाइ, सल्फ एसिड।

बायें फुफ्फुस में—चोटी और बिचले भाग में—ऐकोने, ऐमो का, ऐनिसम, एन्टिमो सल्फ आरे, क्रोटो टिग, इलिसियम, लोबेलि कार्ड, माइटिस, पिओनि, फॉस, पिक्स लि, पल्से, रैनन बल, रूमेक्स, साइलि, स्पाइजे, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फर, थेरिडि, ट्यूबर, अस्टिलै।

निचला भाग—ऐगैरि, ऐम्पेल, एस्क्लिपि ट्यूबरो, कैल्के फॉस, सिमिसि, लोबेलि सिफ, लाइको, माथोस, नैट्र सल्फ, ऑक्जै एसिड, रूमेक्स, सिला, साइलि।

दाहिने फुफ्फुस में, चोटी और मध्य भाग में—एब्रीज कैने, आर्स योरे, कैल्के का, कोमोक्लै, क्रोटो टिग, इलैप्स, एरिओड, इलिसि, आयोडो फॉ, फैली, सैंग्वि, उपास।

निचले भाग में—एमो म्यूर, बर्बे वल, ब्रायो, कैक्ट, कार्डु मै, चेलि, डायस्को, कैली का, लाइको, मर्क।

वक्षास्थि के निचले भाग में—एपिस्म ग्रै, आर्स, एसक्लिपिट्यूबरो, ऐस्टेरि, ऑरम, ऐजाडिरै, ब्रायो, कार्डु मै, कॉस्टि, चेलिडो, कोनि, डायस्को, जुग्लै रे, कैली नाइट्रि, कैल्मि, क्रियोजो, लैक्टू वि, मोर्फि, नाइट्रि एसिड, नाइट्रि स्पि डल्सिस, ओस्मि, फेलैण्ड्रियम, फॉस एसिड, फॉस, सोरि, पल्से, रैनन बल, रैनन स्केलै, रूमेक्स, रूटा, सैम्बू, सैंग्वि, सैंग्वि नि, सीपि, साइलि, स्पाइजे, सल्फर, ट्रिलि।

घटना-बढ़ना—बढ़ना ऊपर चढ़ने से—आर्स, सीपि।

आगे झुकने से—सल्फर।

साँस लेने से, खाँसने से—ऐमो म्यूर, आर्न, ब्रायो, कोल्चि, मैंथोल, नैट्र म्यूर, फॉस, रैनन बल, सेनेगा, सीपिया, साइलि, सल्फर।

ठण्डी चीज पीने से—थूजा।

ठण्डे मौसम से—पेट्रोलि, फॉस।

तर मौसम से—रैनन बल, रस टॉ, स्पाइजे।

रात में लेटने से—कैल्के का, सीपि।

रोगी के करवट लेटने से—नक्स वो, फॉस, स्टैन।

बाईं करवट लेटने से—फॉस।

दाहिनी करवट लेटने से—कैली का, मर्क।

हरकत से—आर्न, आर्स, ब्रायो, कैल्के का, कार्डु मै, जुग्लै रे, कैली का, मैग का, फॉस, रैनन वल, सेनेगा, सीपि, स्पाइजे, सल्फर।

दाब से—आर्न, आर्स, ब्रायो, कोल्चि, नक्स वो, फॉस, रैनन बल।

रीढ़ की उत्तेजना से—ऐगैरि, रैनन वल।

बातचीत करने से—एल्यूमि, हीपर, स्टैन।

काम करने से—एमो म्यूर, लाइको, सीपि ।

घुटना—आगे झुकाने से—एस्किलपि ट्यूबरो, हायोस ।

डकार आने से—बैराइटा का ।

लेटने से—सोरी ।

रोगी करवट लेटने से—ब्रायो, पल्स ।

हरकत से—इग्नै, पल्से ।

तेज चलने से—लोबेलि इन्फ्ला ।

आराम से—ब्रायो ।

खुली हवा में—ऐनाका, पल्से ।

सीने की उत्तेजना, कोमलपन, कच्चापन—ऐण्टि टा, एरैलि, आर्न, आर्स, एस्किलपि ट्यूबरो ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैल्के सिलि, कार्बोवेज, कॉस्टि, साइलि, कुरारी, युपेटो पर्फ, फेरम फॉ, हैमे, आयोड, कैली का, काओलिन, मर्क, नैफ्थे, नैट्र सल्फ, नाइट्र एसिड, ओलि जै एसे, फॉस, पोपू कैने, पल्से, रैनन बल, रैनन स्केले, रूमेक्स, सैंग्वि, सेनेगा, सीपि, स्पांजिया, स्टैन, सल्फर ।

सीने पर बादामी चकत्ते—सीपिया ।

सीने पर पीले चकत्ते—फॉस ।

कमजोरी, जरा-सा जोर पड़ने से यहाँ तक कि बात करने, हँसने, गाने से—ऐलुमेन, ऐमो का, आर्ज मेट, कैल्के का, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉकु, डिजि, आयोड, कैली का, लोबेलि इन्फ्ला, फॉस ऐसि, सोरी, रैनन स्केले, रस टॉ, रूटा, स्पॉञ्जि, स्टैन, सल्फर ।

खाँसी—साधारण औषधियाँ—ऐकालिफा, ऐसेटिक ऐसि, ऐकोन, एलियम सैटि, ऐल्यूमि, ऐम्ब्रा, एमो ब्रो, एमोका, एमो कास्टि, एमो म्यूर, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि सल्फ ऑर, एण्टि टॉ, एरालि, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, ऐस्कले ट्यू, बाल्सम पेरू, बेल, बिस्म, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सेपा, कैमो, चेलिडो, सिमिसि, सिना, कॉक्कस, कोडी, कोनि, कोरैलि, क्रोटै, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम मेट, ड्रोसे, डल्का, युपेटो पर्फ, युफ्रै, फेरम फॉ, हीपर, हायोसि ऐसि, हाइड्रोसि, हाइड्रोब्रो, इग्नै, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली फ्लोर, लैके, लैक्ट्र वि, लॉरोसे, लोबेलि इन्फ्ला, लाइको, मैग फॉ, मैंगे एसेटि, मेन्था, मेफाइटिस, मर्क सल्फ, मर्क बाइ, माइटिस, नाजा, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स वो, ओपि, ओस्मि, फेलै, फॉस, पोपू कैने, पल्से, रस टॉ, रूमेक्स, सैम्बू, सैंग्वि, सैण्टोनि, सिला, सेनेगा, साइली, स्पांजि, स्टैन आयोड, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फर, ट्रिफोलि, ट्यूबर, वरबैस्क, वायोला ओडो, वायेथि ।

कारण, आक्रमण, अधिक होना—उदर से खाँसी की उत्तेजना उठे—सीपिया ।

बच्चों में क्रोध करने के बाद—ऐनैका, ऐण्टि टा।

क्रोध, चिढ़न दाँत साफ करने के बाद—स्टैफि।

दस्त के बाद—ऐब्रो।

सो जाने के बाद, खासकर बच्चों में, बराबर गुदगुदी वाली खाँसी, बिना जागे—ऐकोन, ऐगैरि, ऐरालि, कैमो, साइक्लै, लैके, नाइट्रि एसिड, सल्फर, ट्यूबर, वरबैस्क। देखिये शाम।

सोने के बाद—ब्रोमि, लैके, स्पाइजे।

तीसरे पहर—ऐमो म्यूर, लाइको, थूजा।

गरम हवा में—कैली सल्फ।

संखिया लगे दीवार के कागजों से—कैल्के का।

ऊपर चढ़ने से—ऐमो का।

नहाने से—नक्स मॉ।

जुकाम से—ऐमो म्यूर, कॉस्टि, इपिका, क्रियोजो, सिला, स्टिक्टा।

नाक के पिछले भाग का जुकाम, बड़ों और बच्चों में—हाइड्रै, पोपू कैने, स्पाइजे।

सीने में ढोंके जैसे संवेदन के साथ—एबीज नाइ।

ठंडी हवा से—ऐकोन, ऐलुमि, ऐमो का, आर्स, बैराइटा का, ब्रोमि, कैल्के साइलि, कार्बो वेज, सेपा, हीपर, लैके, मेन्था, नाइट्रि एसिड, फॉस; रस टॉ, रूमेक्स, सिला, सेनेगा, स्पॉन्जि, ट्रिफोलि।

ठंडी हवा से गरम हवा में जाने से—ऐण्टि क्रू, ब्रायो, इपिका, नैट्र कार, सिला, वेरेट्र एल्ब।

मसाले की चीजें सिरका, मदिरा से—एलुमिना।

तरी से—ऐण्टि टॉ, कैल्के कार्ब, डल्का, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ।

केवल दिन ही में—इयुफ्रेसिया, फेरम, नैट्र म्यूर, स्टैन, स्टैफि, वायोला ओडो।

पीने से—आर्स, ब्रायो, कार्बो वेज, ड्रोसे, हायोसि, लाइको, फॉस, स्टैफि।

ठंडी चीज पीने से—कार्बो वेज, हीपर, मर्क, रस टॉ, सिला, साइलि, स्पॉन्जि, वेरेट्र एल्ब।

खाने से—ऐनैका, ऐण्टि आर्स; ऐण्टि टॉ, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, सिन्को, हायोसि, कैली बाइ, लैके, मेजे, मायोसोटिस, नक्स वॉ, फॉस, स्टैफि, टैक्सस, जिंक मेट।

खुजली या अकौता के दब जाने से—सोरि।

गरम कमरे में जाने से—ऐकोन, ऐण्टि क्रू, ऐन्थेमि, ब्रायो, कॉस्टि, कैमो, मर्क, नैट्र का, पल्से, रैनन बल, वेरेट्र एल्ब।

शाम के समय रात में—एकालि, ऐकोन, एमो ब्रो, ऐमो का, एण्टि टॉ, आर्न, आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिमिसि, कोल्चि, कोनि, ड्रोसे, युपेटो पर्फ, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, कैली ब्रो, इग्नै, लारो, लाइको, मेन्था, मैफाइटिस, मर्क, नाइट्रि एसिड, ओपि, पैसिफ्लोरा, फॉस, प्रूनस विर, सोरी पल्से, रस टॉ, रूमेक्स, सैम्बू, सैंग्वि, सैनिकू, सैण्टोनि, सीपि, साइली, स्पॉन्जि, स्टैन, टिक्टा, सल्फर, ट्यूबर, वरबैस्कम।

आधी रात के बाद, बहुत तड़के—एकोन, ऐमो ब्रो, एमो का, आर्स, क्युप्रम मेट, ड्रोसे, हीपर, कैली का, नक्स वॉ, फले, रस टॉ।

आधी रात के पहले—ऐरालि, बेल, कार्बो वेज, मैग म्यूर, फॉस, सैम्बू, स्पॉन्जि, स्टैन।

स्वर-नली; कंठ-नली में संकुचन संवेदना—इग्नै।

उत्तेजनीयता—ऐम्ब्रा, कोरैलि, इग्नै, स्पॉन्जि, टैरे हिस्पै। देखिये स्नायविक।

साँस बाहर करने से—ऐकोन, कॉस्टि, नक्स वॉ।

ओढ़ने में से हाथ तक बाहर करने से—बैराइटा का, हीपर, रस टॉ।

दिल की बीमारी से—आर्न, हाइड्रोसि एसिड, लैके, लॉरो, लाइकोपस, नाजा, स्पॉन्जि।

इन्फ्लुएन्जा - सेपा, एरिओडि, हायोसि, कैली बाइ, कैली सल्फ, क्रियोजो, पिक्स लि, सैंग्वि, सेनेगा, स्टैन, स्ट्रिक्नि।

चोट इत्यादि से—आर्न, मिलेफो।

साँस भीतर खींचने से—ऐसेटि एसिड, ऐकोन, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, सिना, आयोड, इपिका, कैली बाइको, लैके, मेन्था, नैट्र म्यूर, फॉस, रूमेक्स, सिला, स्पॉन्जि, स्टिक्टा।

रुक-रुक कर दबी हुई—युपेटो पर्फ।

जिगर रोग—एमो म्यूर।

लेटने से—ऐण्टि आर्स, ऐरालि, आर्स, बेल, ब्रायो, कॉस्टि, कोचलियर, कोनियम, क्रोक, कोटो टिग, ड्रोसे, डल्का, हायोस, इग्नै, इनूला, लिथि का, मेफाइटिस, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फॉस, प्रूनविर, सोरी, पल्से, रूमेक्स, सैबैडि, सैंग्वि, साइली, स्टिक्टा, ट्यूबर, वरबैस्क।

पीठ के बल चित्त लेटने से—ऐमो म्यूर, आर्स आयोड, नक्स वॉ, फॉस।

बायीं करवट लेटने से—ड्रोसे, फॉस, प्लैटि, रूमेक्स, स्टैन।

दाहिनी करवट लेटने से—ऐमो म्यूर, बेन्जो एसिड, मर्क।

सिर नीचा करके लेटने से—एमो म्यूर, स्पॉन्जि।

छोटी माता निकलने से—ड्रोसेरा, डल्का, युपेटो पर्फ, युफ्रैसि, इपिका, कैली बाइ, पल्से, सैंग्वि, सिला, स्टिक्टा। देखिये चर्म।

मासिक धर्म या बवासीर दबने से—मिलेफो।

मानसिक जोर पड़ने से—नक्स वॉ।

सुबह के समय—ऐकालि, एलियम सैटिवम, ऐलूमि, ऐम्ब्रा, कैल्के का, सिना, कॉक्कस, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, कैली नाइ, लाइको, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, पल्से, रस टॉ, सेलेनि, सीपिया, स्टिक्टा, साइलि, टैबे।

बहुत तड़के—ऐमो ब्रो, ऐमो का, आर्स, कॉस्टि, क्युप्रम मेट, हीपर, कैली कॉ, नक्स वॉ, कैफेला, पल्से, सल्फर।

सुबह जागते ही—एलुमि, ऐम्ब्रा, ब्रायो, कॉक्कस, कैली बाइ, सोरि, रस टॉ।

हरकत से, हिलने से—आर्स, बेल, ब्रायो, सिना, हीपर, आयोड, इपिका, नक्स वॉ, पल्से, सेनेगा, स्पॉन्जि, वेरेट्र एल्ब।

कड़ी गन्ध से, अपरिचित लोगों की अनुपस्थिति में—फॉस।

वृद्धा अवस्था में—ऐण्टि आयोड, ऐण्टि टॉ, बैराइटा का, बैराइटा आयोड, बैराइटा म्यूर, कार्बो वेज, हायोसि, क्रियोजो, माइर्टिस, रस टॉ, सेनेगा, साइली, स्टिक्टा।

भगन्दर के या नासूर के नश्तर के बाद—बर्बे वल, कैल्के फॉ, साइलि।

सामयिक प्रति वसन्त और जाड़े के पहिले वाले मौसम में—सिना।

जरा-सी ठण्डक लगने से, कुकुर खाँसी के बाद—कॉस्टि, सैंग्वि।

शारीरिक शिथिलता, थकावट के बाद—सिला, स्टिक्टा।

गर्भावस्था—एपोसाइ, ब्रायो, कॉस्टि, कोनि, कैली ब्रो, नक्स मॉ, वाइबर्न ओपु।

जोर से पढ़ने से, हँसने से, गाने से, बात करने से—ऐलूमि, ऐम्ब्रा, एनैका, आर्जं मेट, आर्जं नाइ, फेरम, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिमिसि, कोलिन्सो, कोनियम, ड्रोसे, हीपर, हायोसि, इरिडि, लैके, मैंगे ऐसेटि, मेन्था, नक्स वॉ, फॉस, रूमेक्स, साइलि, स्पॉन्जि, स्टैन, सल्फर।

पारावर्तित—ऐम्ब्रा, एपिस, फॉस।

गरमी के दिनों में, जांघिक स्नायुशूल के साथ बारी-बारी—स्टैफि।

टहलते समय खड़े होने से, रुक जाने से—ऐस्टैक, इग्नै।

पेट से उत्तेजना के कारण—बिस्म, ब्रायो, कैलैडि, सीरियम ऑक्जै, कैली म्यूर, लोबे इन्फ्ला, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, फास सैंग्वि, सीपि, सल्फर, वेरेट्र एल्ब।

निगलने से—स्पॉन्जिया ।

मिठाई खाने से—मेडो, स्पॉन्जि, जिंक मेट ।

गर्द या पर जैसी गुदगुदी के साथ—एमो का, आर्स, बेल, कैल्के का, कैप्सि, कॉस्टि, कार्बो वेज, सिना, ड्रोसे, युफोर्बि डैथ, इग्नै, लैक कैना, लैके, लैक्टू वि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पैरिस, फॉस, रूमेक्स, सीपि ।

सीने में गुदगुदी (वक्षास्थि के निचले भाग में और ऊपरी भाग में)- ऐम्ब्रा, ऐमो ब्रो, ऐण्टि क्रू, एपिस, आर्न, आर्स, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, कॉक्कस, कोनियम, फेरम ऐसेटि, इग्नै, आयोड, इपिका, कैली बाइ, क्रियोजो, लैके, मेन्था, माइर्टिस, नक्स वॉ, ओसिमम, पैरिस, फॉस ऐसि, फॉस, पल्से, रेडियम, रस टॉ, रूमेक्स, सैंग्वि, सीपि, साइलि, स्पॉन्जि, स्टैन, सल्फर, वेरेट्र एल्ब ।

स्वरयन्त्र में गुदगुदी—एलूमि, आर्जे मेट, बेल, ब्रोमि, कैल्के का, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सेपा, कोचलियर, कॉक्कस, कोनियम, क्रोटै, ड्रोसे, डल्का, एरिन्जि, हीपर, इग्नै, आयोड, इपिका, क्रियोजो, लैके, मेन्थोल, नाइट्रि ऐसि, फॉस, पल्से, रूमेक्स, सैंग्वि, साइलि, स्पॉन्जि, सल्फर ।

गले में गुदगुदी—ऐलुमि, ऐम्ब्रा, ऐमो ब्रो, ऐमो का, ऐरैलि, आर्जे नाइ, बेल, कैल्के का, कैप्सि, कैमो, सिमिसि, सिना, कोनियम, ड्रोसे, हीपर, हिपैटि, हायोसि, इग्नै, आयोड, कैली का, लैक्टू वि, लोवे इन्फ्ला, मेलिलो, मेन्थोल, नक्स वॉ, फॉस, रूमेक्स, स्टैन आयोड, सल्फर, वायेथि ।

तम्बाकू के धूएँ से—मेन्था, मर्क, स्पॉन्जि, स्टैफि ।

तालुमूल के बढ़ने से—बैराइटा का, लैके ।

स्पर्श से, दाब से—लैके, रूमेक्स ।

कपड़ा उतारते समय, कपड़ा हटाते समय—बैराइटा का, हीपर, कैली बाइ, रस टॉ, रूमेक्स ।

काग ढीला होने से—बैराइटा का, हायोस, कैली का, मर्क आयोड रूबर ।

निम्न ताप से—ऐण्टि क्रू, ब्रायो, कॉस्टि, ड्रोसे, डल्का, इपिका, मर्क, नैट्र का, नक्स मॉ, पल्से, सिला ।

रोने से—आर्न ।

जाड़े में—ऐलो, ऐण्टि सल, ऑरि, ब्रायो, कैमो, इपिका, क्रियोजो, सीपिया, सोरि । देखिये जीर्ण वायु-नलिका प्रदाह ।

कौड़ी केंचुओं के कारण से—सिना, टेरेबि ।

युवक, क्षय रोगी में लगातार, कष्टदायक, रात्रि-खाँसी—ड्रोसे ।

प्रकार काली-खाँसी—ऐकोन, ऐम्ब्रा, बैल, कोरैलि, ड्रोसे, हीपर, आयोड, कैली बाइ, फॉस, सैम्बु, सिनैपि नाइ, स्पॉन्जि, वेरेट्र एल्ब। देखिये सूखी, फटी आक्षेपिक।

जीर्ण (क्षय संबंधी)—ऐलियम सैटि, ऐण्टि टा, आर्स आयोड, बैराइटा का, ब्रायो, कैल्के आयोड, कैल्के फॉ, कैमो, कोडी, क्रोटै, ड्रोसे, डल्का, इयुपेटो पर्फ, हायोसि, हाइड्रो ब्रो, क्रियोजो, लॉरो, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैंगे, मर्क, नाजा, नाइट्रि एसिड, फेला, फॉस, सोरि, पल्से, रूमेक्स, सैंग्वि, सिला, साइलि, स्पॉन्जिया, स्टिक्टा, सल्फर। देखिये क्षय रोग।

काली खाँसी की तरह—ऐकोन, ब्रोमि, जेल्से, हीपर, आयोड, कैली बाइ, नाइट्रि एसिड, फॉस, स्पॉन्जि, स्टैफि। देखिये काली खाँसी।

सूखी, कड़ी पीड़ादायक, छोटी, कसी, गुदगुदी के साथ—ऐकालि, ऐकोन, ऐलुमेन, ऐलुमि, ऐमो ब्रो, ऐमो का, ऐण्टि सल ऑरि, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, एस्क्लेपि टू, ऐवियारे, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैंथे, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉस्टि, सेपा, कैमो, सिमिसि, सिना, कोलचियर, कोडी, कॉफि, कोनि, कोरैलि, डिजि, ड्रोसे, युफ्रेसि, फेरम फॉ, ग्लीसरीन, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हायोसा, हायोसा, हाइड्रो ब्रो, इग्नै, आयोड, जस्टीसि, कैली बाइ, कैली ब्रो, कैली का, कैली म्यूर, क्रियोजो, लैके, लॉरो, लोबेलि इन्फ्ला, लाइकोपस, सोलैनम, लाइको, लाइकोपर्सिकम, मैंगे, मैडो, मेंथा, मेंथॉल, मर्क, मॉर्फि, नाजा, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओलि जै ऐसे, ओनोस्मो, ओपि, ओस्मि, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, रस टॉ, रूमेक्स, सैल्विया, सैम्बू, सैंग्वि नाइ, सिला, सेनेगा, सीपि, साइली, स्पॉन्जि, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फर, सल्फर एसिड, टेला एरानिया, ट्यूबर, वैनैडि; वेरेट्र अल्ब, वरबैस्क, वायेथि।

विस्फोटिक, तेज आवाज वाली—कैप्सि, ड्रोसे, ओस्मि, सोलेन, लाइको, स्ट्रिक्नि। देखिये आक्षेपिक।

थकावट लाने वाली, उत्तेजित करने वाली—एकोन, एमो का, ऐण्टि आयोड, आर्स एरम, एवियारे, बैलसेमम पेरू, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कॉस्टि, कैमो, चेलि, कोडी, कोलिन्सो, कोनि, कोरैलि, ड्रोसे, युकेलि, हीपर, हायोसा, हाइड्रोसि एसिड, इग्ने, आयोड, इपिका, कैली ब्रो, क्रियोजो, लैक्टू विरो, लॉरो, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मेंथा, मेंथोल, मर्क, माइर्टिस, नाजा, नाइट्रि एसिड, ओपि, फेलै, फॉस; सोरि, रूमेक्स ऐसे, रूमेक्स सैंग्वि, सिला, सेनेगा, सीपि, साइलि, सिल्फि साइरे, स्टिक्नि, टेला एरानि। देखिये आक्षेपिक।

फटी, खोखली, गहरी, टनटनाती—एकोन, ऐम्ब्रा, एमो फॉस, एण्टि टा, एपोसाइ, आर्स आयोड, फेरम, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिना, ड्रोसे,

डल्का, युफोर्बि, युफ्रैसि, हीपर, इग्ने, इरिडि, आयोड, कैली बाइ, सिपिया, लाइको, मैग, मेडो, मेफा, माइर्टिस, नाइट्रि एसिड, फॉस, सैम्बू, स्पॉन्जि, स्टैन, वेरेट्र एल्ब, वरबैस्क । देखिये आक्षेपिक ।

स्वर यन्त्र से उठे, स्नायविक—एकोन, ऐम्ब्रा, एसैर, बेल, ब्रोमि, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिना, कोरैलि, क्युप्रम, ड्रोसे, जेल्से, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हायोसा, इग्नै, इपिका, कैली ब्रोमे, कैली म्यूर, लैके, मेडो, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, रूमेक्स, सैंटोनाइ, स्पॉन्जि, सल्फर, टैरै हिस्पै, टैरैबीन, वेरेट्र अल्ब, वायोला ओडो ।

ढीली खरखराती, गला घोंटने वाली, साँस रोकने वाली—गलगलाती—ऐमो ब्रो, ऐमो म्यूर, ऐण्टि सल्फ, ऐण्टि टा, आर्स, एस्क्ले ट्यूब, बैल्से पेरू, ब्रोमि, कैल्के एसेटि, कैल्के का, चेलिडो, सिना, कॉक्कस, क्युप्रम मेट, ड्रोसे, डल्का, इयुपेटो पर्फ, हीपर, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली म्यूर, कैली सल्फ, लाइको, मर्क, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, फॉस, पल्से, रस टॉक्स, सैम्बु, सैंग्वि, सिना, सेनिसियो, सेनेगा, सीपिया, साइलि, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फ, टेरेबि, वेरेट्र एल्ब ।

आक्षेपिक दौरे के साथ, स्नायविक, तेज, दम घोंटे—ऐकोन, ऐगैरि, ऐम्ब्रा, ऐमो ब्रो, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टा, ऐरैलि, आर्न, आर्स, ऐसैर, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, चेलि, सिना, कॉक्कस, कोनि, कोरैलि, क्रोटो टिग, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम मेट, ड्रोसे, डल्का, जेल्से, ग्लीसरीन, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हायोसा, इग्ने, आयोड, इपिका, जस्टीसिया, कैली ब्रो, कैली का, क्रियोजो, लैके, लैक्टूसा वि, लॉरो, लीडम, लाइको, मैग फॉ, मेफा, मर्क, नैप्थे, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपि, ओस्मियम, परटुसिन, फॉस, रेडियम, रूमेक्स, सैम्बु, सैंग्वि, सेण्टोनी, सिला, सीपि, साइलि, स्पॉन्जि, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फर, ट्रिफोलि, वेरेट्र एल्ब, वायोला ओडो ।

दो झटके या दौरे पास-पास—मर्क, पल्से ।

तीन दौरे या झटके पास-पास—क्युप्रम मेट, स्टैन ।

सायँ-सायँ की आवाज, दमा जैसी—ऐम्ब्रोसि, ऐण्टि टा, आर्स, बेन्जो ऐसिड, क्रोक, हीपर, आयोड, इपिका, कैली बाइ, लोबे इफ्ला, मेफा, नाइट्रि एसिड, रोडियम, सैम्बू, सैंग्वि, स्पॉन्जिया, स्पाइजे । देखिये आक्षेपिक ।

कुक्कुर-खाँसी—ऐकोन, ऐलुमेन, ऐम्ब्रा, ऐम्ब्रोसि, ऐमो ब्रो, ऐमो म्यूर, ऐमो पिक, ऐण्ट क्रू, ऐण्टि टा, आर्न, बैडि, बेल, ब्रायो, ब्रोमि, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैस्टानियाँ, सेरियम आक्जे, चेलिडो, सिना, सिन्को, कोकेन, कॉक्कस, कोनि, कोरैलि, कोक्केल, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम मेट, ड्रोसेरा, डल्का,

प्रकार काली-खाँसी—ऐकोन, ऐम्ब्रा, वैल, कोरैलि, ड्रोसे, हीपर, आयोड, कैली बाइ, फॉस, सैम्बु, सिनैपि नाइ, स्पॉन्जि, वेरेट्र एल्ब । देखिये सूखी, फटी आक्षेपिक ।

जीर्ण (क्षय संबंधी)—ऐलियम सैटि, ऐण्टि टा, आर्स आयोड, बैराइटा का, ब्रायो, कैल्के आयोड, कैल्के फॉ, कैमो, कोडी, क्रोटै, ड्रोसे, डल्का, इयुपेटो पर्फ, हायोसि, हाइड्रो ब्रो, क्रियोजो, लॉरो, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैंगे, मर्क, नाजा, नाइट्रि एसिड, फेला, फॉस, सोरि, पल्से, रूमेक्स, सैंग्वि, सिला, साइलि, स्पॉन्जिया, स्टिक्टा, सल्फर । देखिये क्षय रोग ।

काली खाँसी की तरह—ऐकोन, ब्रोमि, जेल्से, हीपर, आयोड, कैली बाइ, नाइट्रि एसिड, फॉस, स्पॉन्जि, स्टैफि । देखिये काली खाँसी ।

सूखी, कड़ी पीड़ादायक, छोटी, कसी, गुदगुदी के साथ—ऐकालि, ऐकोन, ऐलुमेन, ऐलुमि, ऐमो ब्रो, ऐमो का, ऐण्टि सल ऑरि, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, एस्क्लेपि टू, ऐवियारे, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैंथे, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉस्टि, सेपा, कैमो, सिमिसि, सिना, कोलचियर, कोडी, कॉफि, कोनि, कोरैलि, डिजि, ड्रोसे, युफ्रैसि, फेरम फॉ, ग्लीसरीन, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हायोसा, हायोसा, हाइड्रो ब्रो, इग्नै, आयोड, जस्टीसि, कैली बाइ, कैली ब्रो, कैली का, कैली म्यूर, क्रियोजो, लैके, लॉरो, लोबेलि इन्फ्ला, लाइकोपस, सोलैनम, लाइको, लाइकोपर्सिकम, मैंगे, मैडो, मेंथा, मेंथोल, मर्क, मॉर्फि, नाजा, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओलि जै ऐसे, ओनोस्मो, ओपि, ओस्मि, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, रस टॉ, रूमेक्स, सैल्विया, सैम्बू, सैंग्वि नाइ, सिला, सेनेगा, सीपि, साइली, स्पॉन्जि, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फर, सल्फर एसिड, टेला एरानिया, ट्यूबर, वैनैडि; वेरेट्र अल्ब, वरबैस्क, वायेथि ।

विस्फोटिक, तेज आवाज वाली—कैप्सि, ड्रोसे, ओस्मि, सोलेन, लाइको, स्ट्रिक्नि । देखिये आक्षेपिक ।

थकावट लाने वाली, उत्तेजित करने वाली—एकोन, एमो का, ऐण्टि आयोड, आर्स एरम, एवियारे, बैलसेमम पेरू, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कॉस्टि, कैमो, चेलि, कोडी, कोलिन्सो, कोनि, कोरैलि, ड्रोसे, युकेलि, हीपर, हायोसा, हाइड्रोसि एसिड, इग्ने, आयोड, इपिका, कैली ब्रो, क्रियोजो, लैक्टू विरो, लॉरो, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मेंथा, मेंथोल, मर्क, माइर्टिस, नाजा, नाइट्रि एसिड, ओपि, फेलै, फॉस; सोरि, रूमेक्स ऐसे, रूमेक्स सैंग्वि, सिला, सेनेगा, सीपि, साइलि, सिल्फि साइरे, स्टिक्नि, टेला एरानि । देखिये आक्षेपिक ।

फटी, खोखली, गहरी, टनटनाती—एकोन, ऐम्ब्रा, एमो फॉस, एण्टि टा, एपोसाइ, आर्स आयोड, फेरम, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिना, ड्रोसे,

डल्का, युफोर्बि, युफ्रैसि, हीपर, इग्ने, इरिडि, आयोड, कैली बाइ, सिपिया, लाइको, मैग, मेडो, मेफा, माइर्टिस, नाइट्रि एसिड, फॉस, सैम्बू, स्पॉन्जि, स्टैन, वेरेट्र एल्ब, वरबैस्क । देखिये आक्षेपिक ।

स्वर यन्त्र से उठे, स्नायविक—एकोन, ऐम्ब्रा, एसैर, वेल, ब्रोमि, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिना, कोरैलि, क्युप्रम, ड्रोसे, जेल्से, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हायोसा, इग्नै, इपिका, कैली ब्रोमे, कैली म्यूर, लैके, मेडो, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, रूमेक्स, सैंटोनाइ, स्पॉन्जि, सल्फर, टैरै हिस्पै, टैरैबीन, वेरेट्र अल्ब, वायोला ओडो ।

ढीली खरखराती, गला घोंटने वाली, साँस रोकने वाली—गलगलाती—ऐमो ब्रो, ऐमो म्यूर, ऐण्टि सल्फ, ऐण्टि टा, आर्स, एस्क्ले ट्यूब, बैल्से पेरू, ब्रोमि, कैल्के एसेटि, कैल्के का, चेलिडो, सिना, कॉक्कस, क्युप्रम मेट, ड्रोसे, डल्का, इयुपेटो पर्फ, हीपर, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली म्यूर, कैली सल्फ, लाइको, मर्क, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, फॉस, पल्से, रस टॉक्स, सैम्बु, सैंग्वि, सिना, सेनिसियो, सेनेगा, सीपिया, साइलि, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फ, टेरेबि, वेरेट्र एल्ब ।

आक्षेपिक दौरे के साथ, स्नायविक, तेज, दम घोंटे - ऐकोन, ऐगैरि, ऐम्ब्रा, ऐमो ब्रो, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टा, ऐरैलि, आर्न, आर्स, ऐसैर, वेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, चेलि, सिना, कॉक्कस, कोनि, कोरैलि, क्रोटो टिग, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम मेट, ड्रोसे, डल्का, जेल्से, ग्लीसरीन, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हायोसा, इग्ने, आयोड, इपिका, जस्टीसिया, कैली ब्रो, कैली का, क्रियोजो, लैके, लैक्टूका वि, लॉरो, लीडम, लाइको, मैग फॉ, मेफा, मर्क, नैप्थे, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपि, ओस्मियम, परटुसिन, फॉस, रेडियम, रूमेक्स, सैम्बु, सैंग्वि, सेण्टोनी, सिला, सीपि, साइलि, स्पॉन्जि, स्टैन, स्टिक्टा, सल्फर, ट्रिफोलि, वेरेट्र एल्ब, वायोला ओडो ।

दो झटके या दौरे पास-पास—मर्क, पल्से ।

तीन दौरे या झटके पास-पास—क्युप्रम मेट, स्टैन ।

सायँ-सायँ की आवाज, दमा जैसी—ऐम्ब्रोसि, ऐण्टि टा, आर्स, बेन्जो ऐसिड, क्रोक, हीपर, आयोड, इपिका, कैली बाइ, लोबे इफला, मेफा, नाइट्रि एसिड, रोडियम, सैम्बू, सैंग्वि, स्पॉन्जिया, स्पाइजे । देखिये आक्षेपिक ।

कुकुर-खाँसी—ऐकोन, ऐलुमेन, ऐम्ब्रा, ऐम्ब्रोसि, ऐमो ब्रो, ऐमो म्यूर, ऐमो पिक, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, आर्न, बैडि, बेल, ब्रायो, ब्रोमि, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैस्टानियाँ, सेरियम आक्जै, चेलिडो, सिना, सिन्को, कोकेन, कॉक्कस, कोनि, कोरैलि, कोक्बेल, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम मेट, ड्रोसेरा, डल्का,

युकैलि, युफोर्बि, लैथाइ, युफ्रैसि, फारमैलिन, ग्रिण्डे, हीपर, हाइड्रोसि ऐसि, हायोसि, इपिका, जस्टीसिया, कैली बाइ, कैली ब्रो, कैली का, कैली म्यूर, कैली फॉ, कैली सल्फ, लीडम, लोबे इन्फ्ला, लोबे पर, मैग फॉ, मेफा, मर्क, नैफ्थे, नाइट्रि एसि, ओलि जैको ऐसे, ओपि, पैसिफ्लो, परटुसिन, फॉस, पोडो, पल्से सैम्बू, सैंग्वि नाइ, सीपि, साइलि, सोलैन कैरो, स्टिक्टा, सल्फर, थाइमस, टोंगो, ट्रिफोलि, वेरेट्र एल्ब, वायोला ओडो। देखिये आक्षेपिक।

रात में खाँसी, दिन में खाँसी के मारे साँस न ले सके—कोरैलि।

हूप के विक्षेप—बेल, सिना, क्युप्रम ऐसे, क्युप्रम मेट, हाइड्रोसि ऐसि, हायोसि, कैली ब्रो, मैग फॉस, नैर्सिसस, सोलेन कैरो।

हूप खाँसी की आरम्भिक अवस्था (आक्षेपिक)—ऐकोन, बेल, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, कैस्टेनिया, चेलि, सिना, कॉक्कस, कोरैलियम, क्युप्रम, ड्रोसे, हायोसि, इपिका, मैग फॉस, मेफा, नैफ्थे, नैर्सिसस, सैम्बू, स्टैन, थाइमस।

हूप खाँसी रक्तस्राव—आर्न, सेरियम, ऑक्जै, कोरैलि, क्युप्रम, ड्रोसे, इण्ड, इपिका, मर्क।

हूप-खाँसी बाद की अवस्था (जुकामी स्राविक)—ऐण्टि टा, सिन्को, हीपर, इपिका, पल्से।

हूप खाँसी, कै होना—ऐण्टि टा, बेल, कार्बो वेज, सेरियम ऑक्जै, कॉक्कस, क्युप्रम मेट, ड्रोसे, इपिका, लोबे इंफ्ला, वेरेट्र एल्ब।

हूप खाँसी—साथ के लक्षण : शरीर कड़ा, तना, नीलापन - ऐमो का, ऐण्टि टा, कार्बो वेज, सिना, कोरैलि, कुप्रम ऐसे, क्युप्रम मेट, आयोड, इपिका, मैग फॉस, मेफा, ओपि, सैम्बू, वेरेट्र एल्ब।

जुकाम—ऐलूमि, लाइको, नैट्र का।

साँस भीतर खींचने में कौवे की सी आवाज हो—ऐम्ब्रा।

चिल्लाना—आर्न, कैप्सि, सैम्बू।

दस्त होना—ऐण्टि टा, क्युप्रम आर्स, युफोर्बि, लैथाइ, इपिका, रूमेक्स, वेरैट एल्ब।

साँस कष्ट—ऐम्ब्रा, ऐमो का, ऐण्टि टा, बेल, ब्रोमि, कार्बो वेज, सिना, कोरैलि, क्युप्रम मेट, ड्रोसे, युफोर्बि, हीपर हिपोडे, आयोड, इपिका, कैली बाइ, लोबे इन्फ्ला, मेफा, नैफ्थे, ओपि, सैम्बू, सैनेसि, वेरेट्र एल्ब, वायोला ओडो। देखिये साँस लेना।

नकसीर, रक्तस्राव—आर्न, बेल, सेरियम ऑक्जे, कोरैलि, क्युप्रम, ड्रोसे, इण्डि, आयोड, इपिका, मर्क।

दौरे तेज और एक के बाद दूसरे जल्दी-जल्दी आवें—ड्रोसे।

दौरे बच्चे को ६-७ बजे सबेरे जगा दें, तारदार बलगम की कै हो—कॉक्कस।

दौरों के साथ आँख से पानी बहे—नैट्र म्यूर।

गलकोष में झटका—क्युप्रम, मेफा, मॉस्क।

जबान के निचले भाग में घाव होना—नाइट्रि एसिड।

बेहोशी दूर होने पर ठोस भोजन की कै करना—क्युप्रम मेट।

प्रत्येक जुकाम के बाद तीव्र खाँसी उठे—सैंग्वि।

बलगम प्रकार—तेजाबी—कार्बो ऐनि, नाइट्रि एसिड, पल्से।

ऐल्ब्युमिन युक्त, साफ रंग का सफेद—आर्जे मेट, आर्स, ब्रायो, कॉक्कस, युकैलि, कैली म्यूर, सिला, सेलेनि, सल्फर।

कडुवा—ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैमो, ड्रासे, कैली नाइट्रि, नाइट्रि एसिड, पल्से।

खूनी, खून की धारियाँ—ऐकोन, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्न, ब्रायो, कैल्के का, कैने सैटाइ, कैन्थे, सैटरैरिया, कोरैलि, क्रोटै, डिजि, ड्रोसे, डल्का, इलैप्स, फेरम फॉस, हीपर, हायोसि, आयोड, इपिका, कैली का, कैली नाइट्रि, लॉरो, लीडम, लाइको, मर्क कार, मर्क, मिलेफो, नाइट्रि एसिड, नाइट्रस, नक्स वॉ, ओपि, फॉस, पल्से, रस टॉ, सेलेनि, सिलि, सल्फर, ट्रिलि।

थक्के—कैल्के ऐसेटिका, कैली बाइको।

दिन में—ऐम्ब्रा, ब्रायो, कैल्के का, हायोसि, स्टैन।

सरलता से ऊपर आवे—आर्जे मेट, कार्बो वेज, डल्का, एरिओड, कैली सल्फ, नैट्र सल्फ, पल्से, स्टैन, ट्यूबर।

घृणित, दुर्गन्धित—आर्स, बोरै, कैल्के कार्ब, कैप्सि, कार्बो वेज, कोपेवा, युफ्रैशि, कैली का, कैली हाइपोफॉस्फेट, लाइको, नाइट्रि एसिड, फेलैण्ड्रि, फॉस एसिड, पिक्स लिक्विडा, सोरि, सैंग्वि, सीपिया, साइलि, स्टैन, सल्फर।

गोली जैसे ढोंकेदार—ऐगैरि, आर्जें मेट, ऐमो म्यूर, ऐण्टि टॉ, बैडि, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, चेलि, कैली कार्ब, मैंगेनैट्र, सेलेनि, रस टॉ, साइलि।

भूरा, हरियालीदार श्लेष्मा—ऐमो फॉ, एण्टि सल्फ ऑरे, आर्स, बेन्जो एसिड, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कैल्के फॉ, कैलेण्डु, कैना सैटाइवा, कार्बो वेज, कोपेवा, ड्रोसेरा, डल्का, फेर ऐसेटि, कैली आयोड, कैली म्यूर, कैली सल्फ, काओलिन, लाइको, नैट्र कार्ब, नैट्र सल्फ, पैरिस, फॉस, सोरि, पल्से, सेनेगा, सीपिया, सिलिफ, स्पॉन्जि, स्टैनम, सल्फर, थूजा।

वानस्पतिक स्वाद—बोरैक्स।

जिगर के रंग का—ग्रैफा, लाइको, पल्से, सीपिया, स्टैनम।

अधिक मात्रा में—एलियम सैटि, ऐमोन, ऐमो म्यूर, एण्टि आर्स, एण्टि आयोड, ऐण्टि टॉ, आर्जे मेट, आर्स आयोड, ऐस्क्लैपि ट्यूबरो, बैल्से पेरू, कैल्के कार्ब, कैल्के साइलि, कैन्थे, कार्बो वेज, सियानोथस, चेलिडो, सिन्को, कॉक्कस, कोपेवा, ड्रोसेरा, डल्का, युकैलि, ग्रिण्डे, हीपर, हिपैटि, हाइड्रै, इपिका, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली आयोड, क्रियोजो, लॉरो, लाइको, मायोसोटिस, माइर्टिस चेकेन, नैट्र आर्स, नैट्र सल्फ, फेलाण्ड्रि, फॉस एसिड, पिलोका, पल्से, रूटा, सैंग्वि, सिला, सेनेगा, सीपिया, साइलि, सिल्फि, स्टैनम, सल्फर, टेरेबि, ट्रिलि, जिंजि ।

मवादी, श्लेष्मामय पीब—ऐमोन, ऐण्टि आयोड, आर्स आयोड, ऐस्क्लैपि ट्यूबरो, बैसिलि बैल्से पेरू, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैल्के सिलि, कैल्के सल्फ, कार्बो वेज, सिन्को, कोपेवा, ड्रोसेरा, युकैलि एरिंजियम, हीपर, हिपैटि, हाइड्रै, आयोड, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली आयोड, कैली फॉस, कैली सल्फ, क्रियोजो, लॉरो, लाइको, मर्क, मायोसोटिस, माइर्टिस, चेकेन, नैट्र कार्ब, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फॉस, पिक्स लि, सोरि, रूटा, सैंग्वि नाइट्रि, सैंग्वि, सिला, सीपि, साइलि, सोलेन नाइग्र, स्टैनम, सल्फर, टेरेबि, टेरेबि स्कोर, ट्रिली ।

मोर्चे के रंग का—ब्रायो, फेरम फॉ, रस टॉ, सैंग्वि ।

नमकीन—ऐम्ब्रा, आर्स, कैल्के कार्ब, कैली आयोड, लाइको, मैग कार्ब, नैट्र म्यूर, नैट्र का, फॉस एसिड, फॉस, सोरि, पल्से, सिला, सीपिया, साइलि, स्टैनम ।

थोड़ी मात्रा में—ऐलुमि, ऐमो म्यूर, ऐण्टि टा, आर्स, एस्केले ट्यू, ब्रोमि, ब्रायो, कॉस्टिकम, सिम्सि, कैली का, कैली हाइपोफॉस्फेट, इग्नै, लैके, मोर्फि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस, रूमेक्स, सैंग्वि, सिला; स्पॉन्जि, जिंक मेट । देखिये गाढ़ा, चिमड़ा ।

पनीला झागदार, पानी मिला—ऐकोन, ऐमो का, ऐण्टिम आर्स, आर्स, ब्रायो, कार्बो वेज, क्रोकस, फेरम फॉ, ग्रिण्डे, कैली आयोड, लैके, मर्क, नैट्र म्यूर, एनैन्थे, फॉस, पिलोका, सिफिलि, टैनेसै ।

नीचे सरक जाये, या निगलना आवश्यक—आर्न, कॉस्टि, कोनि, आयोड, कैली का, लैके, नक्स मॉ, स्पॉन्जि ।

साबुन की तरह—कॉस्टि ।

खट्टा—कैल्के का, आइरिस, लैके, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, स्टैन, जिंकम ।

मीठा (हल्का)—हिपैटि, फॉस, सैंग्वि नाइ, स्टैनम, सल्फर ।

गाढ़ा, लसीला, चिकना, चिमड़ा, कठिनाई से ऊपर आवे—एलियम सैटि, ऐलुमि, ऐमोन, ऐमो का, ऐमो म्यूर, ऐण्टि आयोड, ऐण्टि सल्फ ऑरे, ऐण्टि टा,

ऐरैलिया, आर्स, एस्कले ट्यूबरो, बैल्सेम पेरू, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, बेल, बोविस्टा, ब्रायो, कैल्के का, कैनाबिस सैटाइ, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, चेलि, सिन्को, कॉक्कस, क्युप्रम मेट, डल्का, युकैलि, ग्रिंडे, हाइड्रै, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली हाइपोफॉस, कैली म्यूर, लैके, लॉरो, लाइको, मैंगे एसैटि, मर्क, मोर्फि, माइरिस, नैफ्थे, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओस्मि, पैरिस, फॉस, सोरि, क्विलाया, रूमेक्स, सैंग्वि नाइट्रि, सिला, सेनेगा, सीपिया, साइलि, सिल्फियम, सल्फर, स्टैन।

सीने में खालीपन —गशी—फॉस एसिड, स्टैनम।

डकार—ऐम्ब्रा, कैप्सि।

गशी—सीपिया।

बारी-बारी खाँसी और मुँह फैलना—एण्टि टॉ।

लिंग पकड़े — जिंक मेट।

गला पकड़े—एकोन, सेपा, आयोड, लोबेलिया इनफ्लाटा।

गड़गड़ाहट, गले से पेट तक—सिना।

चेहरे पर दाद—आर्न। देखिये चर्म।

हिचकी—टैबेकम।

आवाज फटना—ऐम्ब्रा, ऐमो का, ब्रोमि, कैल्के का, कैलेण्डु, कार्बो वेज, कॉस्टि, ड्रोसेरा, युपेटो पर्फ, हीपर आयोड, लैके, मैफाइटिस, मर्क, फॉस, साइलि, स्पॉन्जिया; सल्फर।

श्लेष्मिक झिल्ली की अति संवेदनीयता—बेल, कोनियम, हायोसि, लैके, फॉस, रुमेक्स, स्टिक्टा।

नेत्र जलस्राव —कैप्सि, सेपा, सिना, युफ्रेसिया, नैट्र म्यूर, साइलि।

सीने की बायीं तरफ ठंडा मालूम हो -- नैट्र का।

दर्द सीना—एलीज नाइ, आर्स, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, चेलिडो, सिन्को, सिना, कोमोक्ले, ड्रोसेरा, डल्का, इलेप्स, इयुपेटो पर्फ, युफोर्बिया, इग्ने, आयोड, जस्टीसिया, कैली बाइ, कैली का, कैलि आयोड, कैली नाइट्रि, क्रियोजो, लैक्टू वि, लाइको, मेफाइटिस, मर्क, माइर्टिस, नैट्र का, नैट्र सल्फ, निक्कोल, नक्स वॉ, फलैण्ड्रि, फॉस, फाइटो, रूमेक्स, सेनेगा, स्पॉन्जिया, स्टिक्टा, सल्फर, थैस्पियम।

दूर के भागों में—एगैरि, ऐमो का, बेल, ब्रायो, कैप्सि, कॉस्टि, चेलिडो, लैके, नैट्र म्यूर, सेनेगा।

सिर—इथूजा, एनैका, ऐस्क्ले हू, बेल, ब्रायो, कार्बो वेज, युपेटो पर्फ, फेरम मेट, फार्मिका, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, सीपि, सल्फर।

सिर पर हाथ लगावे - ब्रायो, कैप्सि, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ।

स्वर-यन्त्र—ऐकोन, ऐण्टि टॉ, आर्जे मेट, ऐरम, ऐस्क्लेपि टू, बेल, कास्टि, कैप्सि, हीपर, इनूला, आयोड, नाइट्रि एसिड, फॉस, रूमेक्स, स्पॉन्जिया।

उदर—ऐस्क्लेपि टू, ब्रायो, कैल्के फा, नक्स वॉ, पल्से, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा।

गला—बेल, लैके, मर्क आयोड रूबर, साइलि।

अनेक बार—मूत्रस्खलन—सिक्वला।

शिथिलता—ऐमो का, ऐण्टि टॉ, आर्स, कोरैलि, क्युप्रम मेट, कुरारी, हीपर, आयोड, इपिका, मेफाइटिस, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, रूमेक्स, वेरेट्र एल्ब।

सीने में कच्चापन—एमाइगडै ऐमारा, एण्टि सल्फ ऑरि, आर्स, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, कॉस्टि, कोरैलि, डिजि, इयुपेटो पर्फ, फेरम फॉस, जेल्से, ग्रैफा, मैग म्यूर, मेफा, मर्क, फॉस, रस टॉ, रूमैक्स, सेलेनि, सेनेगा, स्टैनम।

मुट्ठी से चेहरे रगड़े – सिला।

दो आक्रमणों के बीच वाले काल में निद्रालुता—इयुफोर्बि, लैथाइ।

बाद में छींकें आना—ऐगैरि, बेल, सिना, ड्रोसे, जस्टीसिया, सिला, सेनेगा।

आक्षेप—बेल, सिना, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम मेट, हाइड्रोसि एसिड, एनैन्थे, सोलेन कैरो।

सीने का आक्षेप—सैम्बू।

सीने में चनचुनाहट –ऐकोन।

मूत्र, अनैच्छिक, छरछराकर निकले—ऐलुमि, कैप्सि, कॉस्टि, कोल्चि, फेरम, फेरम म्यूर, फेरम फॉस, नैट्र म्यूर, पल्से, रूमेक्स, सिला, वेरेट्र एल्ब, वरबैस्कम, एग्रॉ, जिंक मेट।

कै करना, ओकाई, गलगलाना—ऐलुमेन, ऐनैका, ऐण्टि टॉ, ब्रायो, कार्बो वेज, कॉक्कस, क्युप्रम ऐसेटिकम, क्युप्रम मेट, कुरारी, ड्रोसेरा, युफोर्बिया, लैथा, युफ्रैसिया, फेरम मेट, हीपर, इपिका, कैली कार्ब, क्रियोजो, मेफाइटिस, मायो सोटिसै, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, सीपिया, साइलि, वेरेट्र एल्ब।

कम होना; ठण्डी चीज पीने से—कॉस्टि, क्युप्रम मेट, फॉस, टैबे।

गरम चीज पीने से—स्पॉन्जि।

खाने से—ऐनैका, बिस्म, फेरम, स्पॉन्जि।

डकार से—ऐम्ब्रा, ऐंग्स्टूरा, सैंग्वि।

बलगम निकलने से—जिंक मेट।

लेटने से—कैल्के फॉ, फेरम मेट, मैंगेनम एसेटिकम, सिनैपिस।

दाहिनी करवट लेटने से—ऐण्टि टा।

पेट के बल लेटने से—मेडो।

सीने पर हाथ रखने से – ब्रायो, कैप्सिकम, सिना, ड्रोसेरा, इयुपेटो, पर्फ, लैक्टूसा विरोसा, नैट्र सल्फ।

खाँसी को दबाने की दृढ़ इच्छा —इग्नै।

हाथों और पैरों के बल आराम करने से—इयुपेटो पर्फ।

हाथों को जाँघों पर रखकर आराम करने से —निकोल।

उठ बैठने से—ब्रायो, कोटि टि, ड्रोसेरा, हीपर, हायोसि, नैट्र सल्फ, फलैण्ड्रियम, पल्से, सैंग्वि।

चादर से सिर ढँककर हवा गरम करने से—हीपर, रस टॉ, रूमेक्स।

निम्न ताप से—वैडियागा।

स्वर-यन्त्र (लैरिंग्स)—सुन्न होना, असंवेदनीयता—कैली ब्रो।

जलन—ऐमो कॉस्टि, ऐमो म्यूर, आर्जे मेट, आर्स, कैन्थे, मैंगे, मर्क, मेजे, पैरिस, फॉ, रूमेक्स, सैंग्वि, स्पॉन्जि, जिंजि। देखिये दर्द।

कर्कट—नाइट्रि एसिड, थूजा।

ठण्डापन—ब्रोमि, रस टॉ, सल्फर।

संकुचित संवेदन—एकोन, बेल, ब्रोमि, कैलैडि, क्लोरम, क्युप्रम, ड्रोसेरा, गुवाको, हाइड्रोसि एसिड, आयोड, मैंगे ऐसेटि, मेडो, मॉस्कस, नाजा, ऑक्जै एसिड, फॉस, स्पॉन्जिया, स्टिलिन्जिया, वेरेट्र एल्ब। देखिये आक्षेप।

सूखापन—आर्स, बेल, कार्बो वेज, कास्टि, ड्रोसे, डुबो, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, लेम्ना, मैंगे ऐसेटिकम, मेजे, फॉस, पॉपुलस कैन, सैंग्वि, सेनेगा, स्पॉन्जि। देखिये प्रदाह।

गलकोष का शोथ—एपिस, आर्स, बेल, चिनि आर्स, क्लोरम, कैली आयोड, लैके, मर्क, पिलोका, सैंग्वि, स्ट्रैमो, वाइपेरा।

गल-कोष के रंग—सेपा, क्लोरम, हिपैटि, वायेथिया।

प्रदाह—स्वरयंत्र प्रदाह लेरिन्जाइटिस—तीव्र नजला ऐकोन, इस्कियुलस, एण्टि टा, एपिस, आर्जे मेट, आर्स आयोड, ऐरम, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, सेपा, कुबेबा, ड्रोसेरा, डल्का, इयुपेटो पर्फ, फेरम फॉस, गुवाइकम, हीपर, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क, मेन्थोल, ओस्मि, फॉस, रस टॉ, रूमेक्स, सैम्बू, सैंग्वि, स्पॉन्जि, स्टिकटा, सल्फर।

प्रदाह क्षीणताजनित - ऐमो म्यूर, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, मैंगे ऐसेटि, फॉस, सैंग्वि।

प्रदाह जीर्ण, जुकाम—एमो ब्रो, ऐमो आयोड, एण्टि सल्फ, ऑरे, एण्टि टा, आर्जें मेट, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, कैल्के का, कैल्के आयोड, कार्बो वेज, कॉस्टि, कॉक्कस, कोटाइलेड, ड्रोसेरा, हीपर, आयोड, इरिडि, कैली बाइ, कैली का, कैली आयोड, लैके, मैंगे ऐसेटि, मर्क को, मक, नैट्र म्यूर, नैट्र सेलेनि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पैरिस, फॉस, पल्से, रस टॉ, सैंग्वि नाइट्रि, सेलेनि, सेनेगा, स्टैनम, स्टिलिन्जिया, सल्फर, थूजा।

प्रदाह, कौशिक—आर्जें नाइट्रि, हीपर, आयोड, कैली आयोड, सेलेनि, सल्फर।

प्रदाह, झिल्लीयुक्त स्राव, मेम्ब्रेनस क्रूप—ऐसेटिक एसिड, ऐकोन, ऐमोन, ऐमो कॉस्टि, ऐण्टि टा, आर्स, आर्स आयोड, बेल, ब्रोमि, कैल्के आयोड, कोनियम, ड्रोसेरा, फेरम फॉस, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली क्लो, कैली म्यूर, कैली नाइट्रि, काओलिन, लैके, मर्क साइ, मर्क फॉस, सैम्बू, सैंग्वि, स्पॉन्जिया। देखिये डिफ्थीरिया (गला)।

प्रदाह—आक्षेपिक क्रूप स्पाज्मोडिक क्रूप—ऐकोन, ऐण्टि टा, आर्स, बेल, बेन्जोइन, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, क्लोरम, क्युप्रम, इयुफोर्बिया, फेरम फॉस, हीपर, इग्नै, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली ब्रो, कैली नाइट्रि, काओलिन, लैके, मेफाइ, मर्क आयोड फ्ले, मॉस्कस, नाजा, पेट्रोलि, फॉस, पोथोस, सैम्बू, सैंग्वि, स्पॉन्जिया, वेरेट्र विरिडि।

प्रदाह, उपदंशीय द्वितीय चरण से सम्बन्धित हो—मर्क कार, मर्क सल्फ, नाइट्रि, एसिड।

प्रदाह उपदंशीय, तृतीय (अस्थि रोग) चरण से सम्बन्धित हो—ऑरम, सिनाबे, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, मर्क का, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मेजे, नाइट्रि एसिड, सैंग्वि, थूजा। देखिये उपदंश (पुरुष जननेन्द्रिय मण्डल)।

प्रदाह उपदंशीय वंशजात—आरम, फ्लोरि एसिड, हीपर, क्रियोजो, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क, नाइट्रि ऐसिड, फाइटो, सल्फर, थूजा।

प्रदाह, क्षयरोग सम्बन्धी—आर्जें नाइट, आर्स, आर्स आयोड, ऐट्रॉपि, बैप्टि, ब्रोमि, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, क्रोमि, सिस्टसि; ड्रोसेरा, फेरम फॉस, हीपर, आयोड, इपिका, जैबोरै, कैली का, कैली म्यूर, क्रियोजो, लाइको, मैंगे एसेटिक, मर्क नाइट्रि, नाजा, नैट्र, सेलेनि, नाइट्रि एसिड, फॉस, स्पॉन्जिया, स्टैनम, सल्फर।

उत्तेजना—आर्जें मेट, बैराइटा का, कॉस्टि, क्लोरम, हीपर, कैली बाइ, कैली आयोड, कैली पर्मे, लैके, मैंगे एसेटि, नक्स वॉ, फॉस। देखिये कच्चापन।

ऊपर और नीचे घोर हरकत—सल्फ्यूरिक एसिड ।

श्लेष्मा—ऐण्टि टा, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, ब्रोमि, ब्रायो, कैन्थे, ड्रोसेरा, हीपर, कैली बाइ, कैली का, लैके, मैंगे एसेटि, ऑक्जै एसिड, पैरिस, फॉस, रूमेक्स, सैम्बू, सैंग्वि, सेलेनि, स्टैनम । देखिये प्रदाह ।

दर्द—ऐकोन, ऐलुमि, आर्जे नाइ, एरम, बेल, ब्रायो, सेपा, हीपर, आयोड, जस्टीसिया, क्रियोजो, लैके, मैंगे एसेटि, मेडो, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, ओस्मि, फॉस, सैंग्वि, स्पॉन्जि । देखिये प्रदाह ।

अर्बुद—बर्बे वल, सोरि, सैंग्वि, सैंग्वि नाइ, ट्युक्रियम, थूजा ।

कच्चापन खुरदुरापन, उत्तेजना ऐकोन, एलुमि, ऐमो कॉस्ट, आर्जे मेट, आर्न, ऐरम, बैराइटा का, बेल, बैन्जोइन, ब्रोमि, ब्रायो, कॉस्टि, कैमो, सिस्टस, ड्रोसेरा, इयुपेटो, पर्फ, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, कैली पर, काओलिन, लैके, लाइको; मैग फॉ, मैंगे ऐसेटि, मेडो, मर्क, नक्स वॉ, ओस्मि, फॉस ऐसि, फॉस, पल्से, रस टॉ, रूमैक्स, सैंग्व, स्पॉन्जि, सल्फर, जिंक मेट ।

आक्षेप (लैरिन्जिसमस स्ट्रिडुलस) - ऐकोन, ऐगैरिकस, ऐमो कॉस्टि, आर्स आयोड, एरम, बेल, ब्रोमि, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, चेलिडो, क्लोरम, ग्रैनैटम, इग्नै, आयोड, इपिका, कैली ब्रो, लैके, क्लोरल, साइक्यू, सिन्को, कोरैलि, क्युप्रम ऐसेटि, क्युप्रम मेट, फार्मेलिना, जेल्स, मेफाइटिस, मॉस्कस, फॉस, सैम्बू, स्पॉन्जि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्निया, वेस्पा, जिंक मेट ।

दम घोंटने वाला जुकाम - ऐम्ब्रा, आर्स, कैल्के का, कॉफिया, सैंग्वि, स्पॉन्जिया ।

गुदगुदी - ऐलुमि, ऐम्ब्रा, ऐसिड सल्फ ऑरे, बेल, कैल्के का, कैप्सि, कार्बो वेज, सेपा, कॉक्कस, कोपैवा. ड्रोसेरा, इल्का, आयोड, कैली बाइक्रो, फॉस । देखिये खाँसी ।

अर्बुद मंद—कॉस्टि, कैली बाइ, सैंग्वि, थूजा ।

अर्बुद, घातक, कठोर— आर्स, आर्स आयोड, बेल, कार्बो ऐनि, क्लिमैटिस, कोनियम, हाइड्रै, आयोड, क्रियोजोट, लैके, मोर्फि, फाइटो, सैंग्वि, थूजा ।

स्वरयन्त्र के घाव—ऑरम आयोड, आयोड, लाइको, मर्क नाइट्रि ।

स्वर-यन्त्र की कमजोरी—कार्बो वेज, कॉस्टि, कोका, ड्रोसे, ग्रैफा, पेन्थो रम, फॉस । देखिये आवाज ।

आवाज—गहरी, मोटी—ब्रोमि, कैम्फोरा, कार्बो वेज, कॉस्टि, ड्रोसे, फॉस, पॉपुलस कैण्डि, सैंग्वि नाइट्रि, स्टैनम, सल्फर, वरबैस्क ।

तेज महीन पाइप की तरह—बेल ।

स्वरभंग—ऐकोन, ऐलुमेन, ऐलुमि, ऐमो कार्ब, ऐमो कॉस्ट, ऐमो म्यूर, ऐण्टि कू, ऐण्टि पाइरि, आर्जे आयोड, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स आयोड, ऐरम, ऐस्कले

ट्यूबरो, बैराइटा कार्ब, बेल, बेंजोइन, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के कार्ब, कैल्के कॉस्टि, कैम्फोरा, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, क्लोरम, सिना, कोका, कोचलियर, कॉक्कस, कुबेवा, ड्रोसेरा, डुबो, डल्का, इयुपेटो पर्फ, फेरम फॉस, जेल्से, ग्रैफा, हीपर, हायोसि, इग्नै, आयोड, इपिका, जस्टीसिया, कैली बाइक्रो, कैली कार्ब, कैली क्रोम, क्रियोजो, मैग फॉस, मैंगे ऐसेटि, मर्क, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपियम, ओस्मि, आक्जै एसिड, पैरिस, पैन्थोरम, पेट्रोलि, फॉस, प्लैटिना, पॉपुलस, कैण्डि, पल्से, रस टॉ, रूमेक्स, सैम्बू, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, सेलेनि, सेनेगा, सीपिया, साइलि, स्पॉन्जि, स्टैनम, स्टिक्टा, स्टिलिन्जि, सल्फर, थूजा, वेरेट्र विरि, वरबैस्कम, वायोला ओडो।

फटी आवाज चंचल—हीपर, पल्से।

आवाज फटना, जीर्ण—ऐम्गीलॉप, आर्जे नाइट्रि, बैराइटा कार्ब, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, कॉस्टि, ग्रैफा, मैंगे ऐसेटि, फॉस, सल्फर।

आवाज फटी, क्रूप सम्बन्धी, काली खाँसी सम्बन्धी—ऐकोन, ऐलैन्थस, ब्रोमि, कॉस्टि, सेपा, हीपर, कैली सल्फ, स्पॉन्जिया।

आवाज फटना, ठंडे मौसम से—कार्बो वेज, कॉस्टि, रुमेक्स, सल्फर।

आवाज फटना, अधिक गरम होने से - ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, ब्रोमि।

आवाज फटना, अधिक जोर देने से, खासकर व्याख्यान देने, गाने वालों की - ऐलूमि, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, आर्न, ऐरम, कार्बो वेज, कॉस्टि, कोका, फेरम फॉस, फेरम पिक्रि, हीपर, आयोड, मैंगे ऐसेटि, मेडो, मर्क साइ, मर्क सल्फ, नैट्र सेलेनि, फॉस, रस टॉ, सेलेनि, स्पॉन्जिया, स्टिलिन्जिया, सल्फर, टैबे, टेरेबीन।

आवाज फटना हिस्टीरिया सम्बन्धी—कॉकुलस, जेल्से, इग्नै, नक्स मॉ, प्लैटिना।

आवाज फटना बिना दर्द — बेल, कैल्के कार्ब, कार्बो वेज, पैरिस।

आवाज फटी आक्षेपिक पक्षाघात सम्बन्धी—ऐमो कॉस्टि, बेल, कॉस्टि, जेल्से, लैके, आक्जै एसेडि, फास, रूमेक्स, साइलि।

आवाज फटने में खाँसने या बलगम निकलने से कुछ समय के लिए कमी—स्टैनम।

आवाज फटना, जुकाम कम होने के समय अधिक हो—इपिका।

आवाज फटना, दोपहर से पहिले अधिक हो—ऐरम, बेन्जो एसिड, कैल्के का, कॉस्टि, इयुपेटो पर्फ, हीपर, मैंगे, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, सल्फर।

आवाज फटना, दोपहर के बाद अधिक हो—कार्बो वेज, कैली बाइ, फॉस, रूमेक्स।

आवाज फटना, तर मौसम में अधिक हो—कार्बो वेज।

आवाज फटना, बात करने से, गाने, निगलने से अधिक हो – स्पॉन्जिया।

आवाज फटना, हवा के विरुद्ध चलने से अधिक हो—ऐकोन, ऐरम, युफ्रैसिया, हीपर, नक्स मॉ।

आवाज फटना, रोते समय अधिक हो—ऐकोन, बेल, फॉस, स्पॉन्जिया।

मासिक धर्म सम्बन्धी आवाज फटना – जेल्से।

स्नायविक स्वर-लोप, साथ में हृदय-रोग—कोका, हाइड्रोसि एसिड, नक्स मॉ, ऑक्जे एसिड।

स्वर लगातार परिवर्तनशील—एण्टि क्रू, आर्जे मेट, ऐरम, बेल, कार्बो वेज, कॉस्टि, ड्रोसेरा, लैके, रूमेक्स।

एकाएक आवाज निकल पड़ना—ऐरम, कॉस्टि, कोका, फेरम फॉस, पॉपुलस कैण्डि।

आवाज धीमी, स्वरहीन, कम मात्रा में—मैंगे ऐसेटि, मैंगे ऑक्सि।

फुसफुसाती दुर्बल आवाज—आर्जे मेट, कैम्फोरा, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, ड्यूबोइ, फॉस, पॉपुलस कैण्डि, प्रिमुला, पल्से, वेरेट्र अल्ब।

फुफ्फुस—फोड़ा—एकोन, आर्स आयोड, बेल, कैप्सि, चिनि आर्स, सिन्को, हीपर, आयोड, कैली का, मर्क, साइलि।

रक्ताधिक्य - ऐकोन, ऐड्रिनै, आर्स आयोड, बेल, बोथ्रोप्स, कैक्ट, कॉनवै, फेरम फॉस, आयोड, कैली नाइट्रि, लाइको, नक्स वॉ, ओपि, फॉस, स्ट्रोफै, सल्फोना, उपास, वेरेट्र विरिडी। देखिये प्रदाह।

मन्द रक्ताधिक्य— कार्बो वेज, डिजि, फेरम मेट, हाइड्रोसि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, उल्फर।

कोषों (सेलों) का फैलना (स्फाइसेमा)—ऐमो का, एण्टि आर्स, एण्टि टॉ, आर्स, आरम म्यूर, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फॉ, कार्बो वेज, चिनि आर्स, सिन्को, डिजि, ड्रोसेरा, युकैलि, ग्लोनो, ग्रिण्डे, हीपर, इपिका, कैली का, लोबे इन्फ्ला, लाइको, माइर्टिस, नैफ्थे, नक्स वॉ, फेलैण्ड्रि, फॉस, पल्से, सीपिया, स्पॉन्जि, स्ट्रिक्नि, सल्फर। देखिये दमा।

तनाव का संवेदन—टेरेबि।

जल शोथ—एमो का, एमो आयोड, एण्टि टा, एपिस, आर्स, कोचलियर, कैली का, कैली आयोड, लैके, फॉस, पिलोका, पल्मो वल, सैंग्वि, सेनेलिओ, स्ट्रोफै, ट्यूबर।

गलन, सड़न, गैंग्रीन—आर्न, आर्स, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, क्रोटे, युकैलि, इल्का, हीपर, क्रियोजो, लैके, लाइको, सीकेलि, साइलि।

फुफ्फुस से रक्त थूकना—ऐफालिका, ऐसेटिक एसिड, ऐचिलिया, ऐकोन, ऐलियम सै, आर्न, कैक्टस, कार्बो वेज, चिनि आर्स, सिन्को, सिनेमो, डिजि, एरेक्टि, एर्गाट, ऐरिजे, फेरम, ऐसेटिकम, फेरम मेट, फेरम फॉस, जिलैटिन, जिरेनियम, हैमामेलिस, हेलिक्सटोस्टा, हाइड्रैस्टिनम म्यूर, इपिका, कैली का, क्रियोजो, लैमिना, लीडम, मैंगिफरा इण्डिका, मेलिलो, मिलेफो, नैट्र नाइट्रि, फॉस, रस टॉ, सैंग्वि, स्ट्रोफै, सलफ्यूरिक एसिड, टेरेबि, ट्रिलि, वेरेट्र विरि।

रक्त थूक, चमकीला लाल खून—ऐकालि, ऐकोन, ऐरेनि, कैक्टस, फेरम ऐसेटि, फेरम फॉस, जिरैनि, लीडम, मिलेफो, नाइट्रि एसिड, रस टॉ, ट्रिलियम।

रक्त थूक, काला, थक्केदार खून—आर्न, क्रोटै, इलैप्स, फेरम म्यूर, हैमे, सल्फ्यूरि एसिड।

रक्त थूक, रजोनिवृत्तिकालीन—लैके।

रक्त थूक, बवासीरी—मेजे, नक्स वॉ।

रक्त थूक, मदिरा पीने वालों में—हायोसि, लीडम, नक्स वॉ, ओपियम।

रक्त थूक, सामयिक हमले—क्रियोजो।

रक्त थूक, प्रसव-ज्वर में—हैमेमैलिस।

रक्त थूक, आघात सम्बन्धी—मिलेफोलियम।

रक्त थूक, क्षयरोग सम्बन्धी—ऐकालिफा, फेरम फॉस, मिलेफो, नक्स वॉ, ट्रिलियम।

रक्त थूक, असामयिक—ब्रायो, हैमे, फॉस।

रक्त थूक, खाँसी के साथ—ऐकोन, ऐकालि, फेरम ऐसेटिकम, फेरम फॉस, इपिका, लीडम, फॉस। देखिए खाँसी।

रक्त थूक, बिना खाँसी या जोर पड़ने से—ऐकोन, हैमे, मिलेफो, सलफ्यूरि एसिड।

रक्त थूक, हृदय-पट रोग के साथ—कैक्ट, लाइकोप।

गरमी लगना—ऐकोन। देखिये रक्ताधिक्य।

प्रदाह: ब्रोंको न्यूमोनिया—ऐकोन, ऐमो आयोड, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टा, आर्स आयोड, बेल, ब्रायो, चेलिडो, फेरम फॉस, ग्लीसरीन, आयोड, इपिका, कैली का, कोश साहेब का लिम्फ, फॉस, पल्से, सिला, सोलैनिया, टैबे।

प्रदाह-क्रूपस न्यूमोनिया—ऐकोन, ऐगैरिकस, ऐमो, आयोड, ऐन्टि आर्स, ऐण्टि आयोड, ऐण्टि सलफ्यूरे ऑरे, ऐण्टि टॉ, ऐपोमोर्फिया, आर्न, आर्स, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैफिन, कैम्फोरा, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, चेलिडो, सिन्को, डिजि, फेरम फॉस, जेल्से, हीपर, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली आयोड, लैके,

लाइको, मर्क, मिलेफो, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, ओपियम, ऑक्जै एसिड, फॉस, न्यूमोकासन, न्यूमोटाक्सिन, पाइरो, रैनन बल्बो, रस टॉ, सैंग्वि, सिला, सेनेगा, स्ट्रिक्निन, सल्फर, ट्यूबर, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र वि ।

न्यूमोनिया के चरण-प्रदाह रक्ताधिक्य—एकोन, इस्कियु, बेल, ब्रायो, फेरम फॉस, सैंग्वि, वेरेट्र वि ।

कड़ापन आ जाना—ऐण्टि टॉ, ब्रायो, आयोड, कैली आयोड, कैली म्यूर, फॉस, सैंग्वि, सल्फर ।

प्रदाह का छिन्न होना विश्लेषीकरण—ऐन्टि टा, एन्टिम सल्फ ऑरे, आर्स, आर्स आयोड, कार्बो वेज, हीपर, आयोड, कैली आयोड, कैली सल्फ, लाइको, नैट्र सल्फ, फॉस, सैंग्वि, साइलि, स्टैन आयोड, सल्फर ।

जाति : प्रकार पित्तमय—ऐण्टि टा, चेलिडो, लेप्टैन्ड्रा, मर्क, फॉस, पोडोफाइलम ।

अप्रत्यक्ष—चेलिडो, फॉस, सल्फर ।

जब कोई चिकित्सा न हुई हो और रोग बिना देख-भाल के चलता रहा हो—ऐमोन का, ऐण्टि आयोड, ऐण्टि सल्फ ऑरे, ऐण्टि टॉ, आर्स आयोड, ब्रायो, कार्बो वेज, सिन्को, हीपर, कैली आयोड, लैके, लाइको, फॉस, प्लम्बम, सल्फर ।

द्वितीय चरण—ऐण्टि आर्स, एण्टि टॉ, फेरम फॉस, फॉस ।

वृद्धावस्था—ऐन्टि आर्स, ऐण्टि टा, डिजि, फेरम फॉस ।

प्रमेह—नैट्र सल्फ ।

आन्त्र-ज्वर सम्बन्धी—हायोसि, लैके, लॉरो, मर्क साइ, ओलियम, फॉस, रस टॉ, सैंग्वि, सल्फर ।

फुफ्फुस का पक्षाघात—ऐमो का, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टॉ, आर्न, बैसिलि, कार्बो वेज, क्रुगारी, डिफ्थेरोटॉक्स, डल्का, ग्रिंडेलिया, हाइड्रोसि एसिड, इपिका, लैके, लॉरो, लोबे पर्प, लाइको, मर्क साइ, मोर्फि, मॉस्कस, फॉस, सोलैनिया ।

थकावट मालूम होना—एलैन्थस, ऐरम ।

क्षय रोग; तपेदिक—(थाइसिस पल्मोनेलिस)—ऐकालिफा; ऐकोन, एगैरिसिन, एलियम सै, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि आयोड, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम आर्स, ऐट्रोपिन, ऐवियारे, वैसिलिनम, बालसे पेरूवि, बैप्टि, बेल, ब्लाटा ओरि, ब्रायो, कैल्के आर्स, कैल्के कार्ब, कैल्के क्लोर, कैल्के हाइपोफॉस, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, कैल्ट्रोपिस, कैना सैटाइ, सेट्रेरिया, चिनि आर्स, सिमिसि, कॉक्कस, कोडीनम, क्रोटैलस, क्युप्रम आर्स, ड्रासेरा, डल्कामारा, इरिओडिक्टियॉन, फेरम ऐसेटि, फेरम आर्स, फेरम आयोड, फेरम मेट, फेरम फॉस, फॉर्मिका ऐसिड, फॉर्मिका, गैलिक एसिड, गुवाइ-

कोल, गुवाइकम, हैमे, हीपर, हेलिक्स, हिपोजे, हाइड्रै, हायोसि, हाइड्रो ब्रो, हिस्टीरियोन, इक्थियया, आयोड, आइडोफोर्म, इपिका, कैलेगुवा, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली नाइट्रि, क्रियोजो, लैके, लैक्नैन्थेस, लैक्टि एसिड, लॉरो, लेसिथि, लाइको, मैंगे ऐसेटि, मेडो, मिलेफो, मायोसो, माइर्टिस, नैफ्थे, नैट्र कैकोडाइल, नैट्र सेलेनि, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ऑक्जै एसिड, फेलैण्ड्रियम, फॉस एसिड, फॉस, पिलोका, पीनियल ग्लैण्ड एक्स, पोलिगोनम ऐवि, पल्से, रूमेक्स, रूटा, सैल्विया, सैंग्वि, सीपिया, साइलि, सिल्फि साइरे, स्पॉन्जि, स्टैन, आयोड, स्टैन, स्टिक्टा, सक्सिनम, ट्युक्रि स्को, थीया, थेरिडि, ट्यूबर, यूरिया, वैनैडि, येरबा।

तीव्र (थाइसिस फ्लोरिडा)—ऐण्टि टॉ, आर्स, कैल्के का, कैल्के आयोड, फेरम ऐसेटि, फेरम मेट, फेरम म्यूर, आयोड, फॉस, पिलोका म्यूर, सैंग्वि, थेरिडि, ट्यूबर।

खाँसी—एलियम सैटि, आर्स, आर्स आयोड, ऐवियारे, बैप्टि, बेल, कैल्के कार्ब, कॉस्टि, सिन्को, कोडीनम, कोनियम, कोरैलियम, क्रोटै, ड्रोसेरा, फेरम ऐसेटि, हीपर, हायोसि, इपिका, कैली कार्ब, लैके, लॉरो सेरैसम, लोबे इन्फ्ला, मायोसोटिस, नाइट्रि एसिड, फॉस, रूमेक्स, सैंग्वि, साइलि, सिल्फि साइ, स्पॉन्जि, स्टैनम, स्टिक्टा।

कमजोरी—ऐकालिफा, आर्स, आर्स आयोड, एवियारे, चिनि आर्स, फॉस, साइलि। देखिये स्नायु-मण्डल।

दस्त—ऐसेटिक एसिड, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, कैल्के का, सिन्को, क्रोटो, आयोड, आयोडोफॉ, फॉस एसिड, फॉस, साइलि। देखिये उदर।

पाचन में गड़बड़ी—आर्स, एवियारे, कैल्के का, कार्बो वेज, क्युप्रम आर्स, फेरम ऐसेटि, फेरम आर्स, गैलिक एसिड, हाइड्रै, क्रियोजो, नक्स वॉ, स्ट्रिक्नि। देखिये पेट।

साँस-कष्ट—कार्बो वेज, इपिका, फॉस।

दुबलापन—एलियम सैटि, आर्स, आर्स आयोड, कैल्के फॉस, इरिओडिक्टिऑन, आयोड, मायोसो, फॉस, साइलि, सिल्फि, साइ, ट्यूबर। देखिये साधारण लक्षण।

ज्वर—एकोन, एलियम सैटि, आर्स, आर्स आयोड, बैप्टि, कैल्के आयोड, चिनि आर्स, चिनि सल्फ, सिन्को, फेरम फॉस, आयोड, लाइको, नाइट्रि एसिड, फॉस, सैंग्वि, टिलि, स्टैनम।

सूत्रवत् (फाइब्रॉयड)—ब्रायो, कैल्के का, सैंग्वि, साइलि।

रक्त थूकना—ऐकालिफा, एचिलिया, ऐकोन, कैल्के आर्स, फेरम ऐसेटिकम, फेरम मेट, फेरम फॉस, हैमे, इपिका, मिलेफो, नाइट्रि ऐसि, फॉस, पिलोका म्यूर, ट्रिलि। देखिये रक्त थूकना।

आरम्भिक—एकालिफा, ऐगेरि, आर्स आयोड, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, ड्रोसेरा, फेरम फॉस, आयोड, कैली का, कैली आयोड, लैक्नैन्थ, मैंगे ऐसेटि, मेडो, माइर्टिस, ओलि जैको ऐसे, फॉस, पोलिगोनम, पल्से, सैंग्वि, सीकेल, सक्सिनम, सल्फर, ट्रिलियम, ट्यूबर, वैनैडि।

अनिद्रा—एलियम सैटिवम, कॉफिया, डिजि, साइलि। देखिये स्नायुमण्डल।

जिगर विकार—चेलिडो।

चोट इत्यादि लगने के बाद—मिलेफो, रूटा।

रात-पसीना—ऐसेटिं ऐसि, ऐगैरिसिन, आर्स, आर्स आयोड, ऐट्रोपिन, सिन्को, इरिओडि, गैलिक एसिड, हीपर, जैबोरै, कैली आयोड, लाइको, मायोसो, फॉस ऐसि, फॉस, पिलोका, पिलोका म्यूर, सेल्विया, सैम्बू, सीकेल, साइलि, सिलिक, साइरे, स्टैनम, फर्बा। देखिये ज्वर।

सीने में दर्द—ऐकोन, ब्रायो, कैल्के का, सिमिसि, गुवाइकम, कैली का, माइर्टिस, फॉस, पिक्स लिक्वि। देखिये सीना।

मुख-क्षत—लैके।

पीब युक्त फुप्फुसावरण झिल्ली-प्रदाह—आर्न, आर्स, कैल्के का, कैल्के सल्फ, सिन्को, एचिनेसिया, फेरम मेट, हीपर, इपिका, कैली का, मर्क, नैट्र सल्फ फॉस, साइलि।

प्लुरिसी (उरोस्तोय)—ऐडोनिस बर्नेलिस, ऐण्टि टा, एपिस, एपोसाइनम, आर्स, आर्स आयोड, कैन्थे, कार्बो वेज, सिन्को, कोल्चि, डिजि, फ्लोरिक एसिड, हेलेबो, आयोड, कैली का, कैली आयोड, लेक्टू वि, लाइको, मर्क सल्फ, फैसिओल, फॉस, पिलोका, रैनन बल, सिला, सेनेगा, सल्फर।

फुप्फुसावरण झिल्ली प्रदाह—एब्रो, एकोन, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टा, एपिस, आर्न, आर्स, ऐस्क्लेपियस ट्यूबरोसा, बेल, बोरैक्स, ब्रायो, कैन्थे, कार्बो ऐनि, सिन्को, डिजि, इरिओडिक्टियॉन, फेरम म्यूर, फेरम फॉस, फार्मिका, गुवाइकम, हीपर, आयोड, कैली का, कैली आयोड, लीडम, लोबे कार्ड, मर्क, नैट्र सल्फ, ओपियम, फॉस, रैनन बल, रस टॉ, सैबैडि, साइलि, सेनेगा, सीपि, साइलि स्पाइजे, सल्फर, ट्यूबर।

चिपकना—ऐब्रो, कार्बो ऐनि, हीपर, रैनन बल, सल्फर।

जीर्ण—आर्स आयोड, हीपर, आयोड, कैली आयोड, सिला, सल्फर।

वक्षोदर मध्यस्थ-पेशी सम्बन्धी—ऐकोन, ब्रायो, कैक्टस, क्युप्रम, मॉस्कस रैनन बल।

वात रोग सम्बन्धी—ऐकोन, आर्स, ब्रायो, रैनन बल, रोडो, रस टॉ।

क्षय रोग सम्बन्धी—आर्स आयोड, ब्रायो, हीपर, आयोड, आइडोफॉ, कैली का।

ब्राइटस (वृक्क-प्रदाह) रोग के साथ—आर्स, मर्क का। देखिये मूत्र, यन्त्र-मण्डल।

श्वास-क्रिया रुकी हुई स्थगित (क्षणिक, अस्थायी)—आर्स, बोवि, कैम्फो, हाइड्रोसि एसिड, लैट्रोडे, लाइसन, उपास।

सो जाने में रुक जाना—ऐमो का, डिजि, ग्रिण्डेलिया, लैके, लैक कैना, मर्क प्रे प्रेरुब, ओपियम, सैम्बू।

हृत्पेशी विकार जनित दमा—ऐकोन फेरो, ऐण्टिपाइरी, ऐट्रोमि, बेल, कार्बो वेज, कोकेन, ग्रिण्डेलिया, कैली साइ, मॉर्फिनम, ओपियम, स्पार्टीन सल्फ।

साँस-कष्ट—(कठिन, संकुचित रुक-रुककर उत्सुक (चिन्तामय)—ऐसेटिक एसिड, एकोन फेरो, ऐकोन, एड्रैनै, एमो का, ऐमाइल, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि आयोड, ऐण्टि टा, एपिस, ऐपोना, एरालि, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, बैसिलि, बेल, ब्लाटा ओलि, ब्रोमि, ब्रायो, कैक्टस, कैजूपू, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सेपा, कैनो, चेलिडो, क्लोरम, सिन्को, कोका, कोलिन्सो, कॉनवे, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम मेट, कुरारी, डिजि, डायस्को, ड्रोसेरा, फेरम मेट, फेरम फॉस, फ्लोरिक ऐसि, फार्मेलिन, ग्लोनो, ग्रिण्डे, हीपर, हाइड्रोसि एसि, इग्नै, आयोड, इपिका, जस्टीसिया, कैली बाइ, कैली का, कैली नाइट्रि, लैके, लॉरोसि, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मर्क को, मर्क सल्फ, मॉस्कस, नैफ्थे, नैट्र आर्स, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस, फाइटो, पोथोस, पल्से, पल्मो वल, क्वैबैको, रैनन वल, रूटा, सैम्बू, सैंग्वि, सिला, सेनेसिओ, सेनेगा, सेरम ऐंग्विले, साइलि, स्पाइजे, स्पॉन्जि, स्टैनम, स्ट्राफै, स्ट्रिक्निन, सल्फर, टैबे, वेरैट्र एल्ब, वि, वायोला ओडो, जिंक मेट। देखिये दमा रोग।

साँस-कष्ट दोपहर के बाद अधिक हो—ऐक्टिया स्पाइके काटा, आर्स, आरम, कैन्थ्रिका, कैल्के का, कार्बो वेज, डिजि, फॉस, पल्से, सैम्बू, सीपिया, सल्फर, ट्रिफोलियम।

साँस-कष्ट तर, बादल वाले मौसम में अधिक हो—नैट्र सल्फ।

साँस-कष्ट, सीढ़ी चढ़ने से अधिक हो—ऐमो का, आर्स; बोरैक्स, कैल्के का, चिनि आर्स, आयोड, इपिका, लोबे इन्फ्ला, नैट्र म्यूर, सीपिया।

साँस-कष्ट, ठण्डी हवा लगने से अधिक हो—ऐक्टिया स्पाइके, लोबेलिया, इन्फ्लाटा।

साँस-कष्ट, बाहरी चीजों के आघात या शरीर-प्रवेश से अधिक हो—ऐण्टि टा, साइलि।

साँस-कष्ट, कोई भी छोटी चीज मुँह या नाक के निकट आने से अधिक हो—लैके।

साँस-कष्ट लेटने से अधिक हो—एबीज नाइ, ऐक्टि स्पाइ, ऐरैलिया, आर्स, कैन्हिका, डिजि, ग्रिण्डे, लैके, मर्क सल्फ, पल्से, सापिया, स्ट्रिक्नि, आर्स, सल्फर।

साँस-कष्ट, बाईं करवट लेटने से अधिक हो - नाजा, स्पाइजे, टैबे, विस्कम।

साँस-कष्ट, दाहिनी करवट लेटने से अधिक हो—विस्कम।

साँस-कष्ट, सिर नीचा करके लेटने से अधिक हो—सिन्को, नाइट्रम, स्पॉन्जिया।

साँस-कष्ट, हृत्पिण्ड मांस पैशिक तन्तु—विषयक रोग—सार्कोलैक्टिक एसिड।

साँस-कष्ट, स्नायविक विकारी—ऐम्ब्रा, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐसाफि, कैजूपू, मॉस्कस, नक्स मॉ, पल्से, वैलेरि, वायोला ओडो।

साँस-कष्ट, आराम से अधिक हो—साइलि।

साँस-कष्ट, उदर में धँसना संवेदन से अधिक हो—ऐसेटिक एसिड।

साँस-कष्ट, उठ बैठने से अधिक हो—कार्बो वेज, फॉरो, सीरि, सीपिया।

साँस-कष्ट, सोने से अधिक हो—डिजि, लैके, सैम्बू, सीपिया, स्पॉन्जिया।

साँस-कष्ट, सोने से, घर के अन्दर बैठने से अधिक हो, तेज हरकत से कम हो—सिपिया।

साँस-कष्ट, झुकने से अधिक हो—कैल्के कार्ब, साइलि।

साँस-कष्ट, टहलने से अधिक हो—एकोन, ऐमो कार्ब, कार्बो वेज, कोनियम, इपिका, कैली का, नैट्र म्यूर, सीपि, साइलि।

साँस-कष्ट, काम करने से अधिक हो—ऐमो म्यूर, कैल्के का, लाइको, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, सीपिया, सुम्बुल।

साँस-कष्ट, वृद्धों में, मदपान वालों में, कसरती लोगों में अधिक—कोका।

साँस-कष्ट, बच्चों में अधिक हो—लाइको, सैम्बू।

साँस-कष्ट, निचले सीने में अधिक—लोबे सिफ, नक्स वॉ।

साँस-कष्ट, सुबह को अधिक हो—ऐण्टि टा, कोनियम, कैली बाइ, कैली का, नैट्र सल्फ।

साँस-कष्ट, गरम कमरे में अधिक हो—ऐमो का, पल्से, सीपिया।

साँस-कष्ट, आगे झुकने से कम हो—आर्स, कैली का।

साँस-कष्ट, कन्धों को पीछे की तरफ झुकाने से कम हो—कैल्के का।

साँस-कष्ट, डकार लेने से कम हो—एम्ब्रा, ऐण्टि टा।

साँस-कष्ट, बलगम निकलने से कम हो—ऐण्टि टा, आर्स, कैली बाइ, जिंकम मेट।

साँस-कष्ट, तेजी से पंखा झलने से कम हो—कार्बो वेज।

साँस-कष्ट, धीरे-धीरे दूर से पंखा झलने से कम हो—लैके।

साँस कष्ट, लेटने से कम हो कैली बाइ, सोरि।

साँस-कष्ट, दाहिनी करवट लेटने से कम हो—ऐण्टि टा।

साँस कष्ट, दाहिनी करवट, सिर ऊँचा करके लेटने से कम हो—कैक्ट, स्पाइजे, स्पॉन्जिया।

साँस-कष्ट, हरकत से कम हो—लोबेलिया इन्फ्ला, सीपिया।

साँस-कष्ट, उठ बैठने से कम हो—ऐकोन फेरा, ऐण्टि टा, आर्स, डिजि, लॉरोसे, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, सैम्बू, सल्फर, टेरेबि।

साँस कष्ट, खड़े होने से कम हो—कैना सै।

साँस-कष्ट, बाँहों को दोनों तरफ फैलाने से कम हो—सोरि।

साँस-कष्ट, खुली हवा में कम हो—कैल्के का, कैल्के सल्फर।

हाँफना—ब्रोमि, हाइड्रोसि एसिड, इपिका, फॉस, सैम्बू।

फटी आवाज, सिसकारी लेना—एसेटिक एसिड।

कठिन साँस—ब्रोमि, कैक्ट, चेलिडो, आयोड, निकोटन, ऑक्जैलिक एसिड। देखिये साँस-कष्ट।

साँस भीतर खींचना सरल, बाहर निकलने में रुकावट—क्लोरम, मेडो, मेफाइ, सैम्बू।

अक्रमिक बराबर न हो—एलैन्थस, ऐण्टि टा, बेल, डिजि, क्रैटेगस, हेलेबो, हिपोजी, हाइड्रोसि एसिड, ओपियन, ट्रिलि।

तेज, छोटा, छिछिला—ऐकोन फेरो, ऐकोन, ऐमो का, ऐण्टि टा, एपिस, एपोसाइ, ऐरैलिया, आर्स, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, क्युप्रम एसेटि, क्युप्रम, कुरारी, फेरम फॉ, हिपोजी, कैली बाइ, लैके, लोबे, पर्प, लाइको, मैग फॉस, मर्क साइ, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ऑक्जै एसिड, फॉस एसिड, फॉस, प्रूनस स्पाइ, सेनेगा, साइलि, स्पान्जिया, स्टैनम, सल्फ एसिड।

खड़खड़ाती हुई—एलियम सै, ऐमोन, ऐमो का, ऐमो कॉस्ट, ऐमो म्यूर, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टा, बालसे पेरू, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, ब्रोमि, कैल्के एसेटिका, कैल्के का, कार्बो वेज, कैमो, चेलिडो, क्लोरम, सिन्को, क्युप्रम मेट, डल्का, फेरम फॉस, ग्रिण्डे, हीपर, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली म्यूर, कैली नाइट्रि, कैली सल्फ, लाइको, मेफाइ, नैट्र सल्फ, ऐनैन्थे, ओपियम, फॉस, पिक्स लि, पल्से, सिला, सेनैगा, साइलि; स्टैनम, सल्फर, वेरेट्र एल्ब।

आरा चलाने जैसी आवाज होना—ब्रोमि, आयोड, सैम्बू, स्पॉन्जिया।

आहें भरने जैसी आवाज होना—एलैन्थस, ऐपोसाइ, कैक्टस, कैल्के फॉस, कार्बो एसिड, सेरियस बोन, डिजि, जेल्से, ग्रैने, हेलेबो, इग्ने, लैके, लीडम, नैफ्थे, नैट्र फॉ, ओपियम, फैसिओल; पिलोका, सैम्बू, सिकेलि, सल्फोनाल।

धीमी, गहरी—ऐमो का, ऑरम, बेन्जिन डिनाइ, कैक्टस, कैना इण्डि, सिन्को, डिजि, गैडस, जेल्स, हेलेबो, हाइड्रोसि एसिड, लॉरो, लोबे पर्प, ओपियम, फेसिओल, पिलोका, वेरेट्र एल्बम।

खर्राटा भरने जैसी आवाज के साथ पारिश्रमिक गति—एकोन, एमो का, आर्न, बेल, ब्रायो, कैना इण्डि, सिंको, युफोर्बिया, लैबाइ, हेलेबो, हिपोजी, हाइड्रोसि एसिड, लोबे पर्प, नाजा, नैट्र सैल, एनैन्थे, ओपियम, फैसिओल, फॉस, पिलोका, सीकेल, सल्फोनाल, टैनैसेटम, ट्रिओनाल, वेरेट्र वि, विस्कम।

दम घुटना—एकोन फेरोक्स, ऐण्टि टा, एपिस, आर्न, बेल, ब्रोमि, कैक्टस, कैल्के का, कैम्फो, क्लोरम, सिन्को, कॉरैलियम, क्युप्रम मेट, डिजि; ग्रैफा, ग्रिण्डे, गुवाइक, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, लैट्रोडे, लीडम, लिलि टि, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मेलिलो, मेफा, मर्क साइ, मर्क प्रे रूबर, मोर्फि, मॉस्कस, नाजा, पल्से, सैम्बू, स्पॉन्जिया, सल्फर, ट्यूबर, ट्रिफो, वेरेट्र ऐल्बम, विस्कम।

सायँ-सायँ की आवाज होना—एलुमि, ऐमो का, ऐण्टि टा, एण्टिम आयोड, एरैलिया, आर्स, कैना सैटाइ, कार्बो वेज, कार्डु मैरि, इरिओड, ग्रिण्डे, हीपर, आयोड, आयोडोफॉ, ऐपिका, जस्टीसिया, कैली बाइ, कैली का, लोबे इन्फ्ला, लाइ कोप, नक्स वॉ, प्रूनस स्पाइ, सैम्बू, सेनेगा, स्पॉन्जिया। देखिये दमा।

सीटी बजने जैसी आवाज—आर्स, इपिका, सैम्बुकस।

कंठ, टेंटुवा—जलन—आर्स, कैली बाइ, सैंग्वि। देखिये उत्तेजना।

जुकाम—ऐलुमि, ऐण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ब्रायो, कैल्के का, कैना सै, कार्बो वेज, कॉस्टि, कॉक्कस, कॉनवे, कोटाइलेड, फेरम आयोड, हीपर, आइबेरिस, इलिसियम, कैली बाइ, मैंगे, मक, नैफ्थे, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पैरिस, रूमेक्स, साइलि, स्टैनम, स्टिक्टा, सल्फर, टैबे।

सिकुड़न संवेदना—ब्रोमि, सिस्टस, गुवाको, मॉस्कस, नक्स वॉ, जेरोफाइल।

सूखापन—आर्स, बेल, कार्बो वेज, रूमेक्स, सैंग्वि, स्पॉन्जिया। देखिये उत्तेजना।

उत्तेजना, कच्चापन अति संवेदना—ऐसेटिक एसिड, इस्क्यु, ऐम्ब्रो सिया, एपिस, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि आर्स, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैने सै, कार्बो ऐन, कार्बो

वेज, कॉस्टि, फेरम फॉस, हायोसि, कैली बाइ, कोआलिन, लैके, मैंथा, ओस्मि, फॉस, रूमेक्स, सैंग्वि, स्टैनम, स्टिलि, सल्फर, सिम्फि, जेरोफाइल।

गुदगुदी—ऐम्ब्रोसिया, ब्रोमि, कैल्के का, कैप्सि, कार्बो वेज, कोपेबा, इपिका, लैके, नक्स वॉ, फॉस, रुमेक्स। देखिये खाँसी।

चर्म-रोग

मुँहासे (गुलाबी दाने) ऐक्ने रोसेइया—(Acne Rosacea)—एगैरिकस, आर्स, आर्स ब्रो, आर्स आयोड, बेल, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, काइसैर, इयुजो जैम्बोस, हाइड्रोको, कैली ब्रो, कैली आयोड, क्रियोजो, नक्स वॉ, ऊफोरियो, पेट्रोलि, सोरि, रेडियम, रस टॉ, रस रेडि, सीपिया, सल्फर, सल्फर आयोडो, सल्फ्यूरस एसिड।

मुँहासे (सादे)—(Acne Simplex)—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि सल्फ ऑरे, ऐण्टि टा, आर्स, आर्स ब्रो, आर्स आयोड, आर्स सल्फ रूबर, ऐसिमिना, ऐस्टेरियस, बेल, बेलिस, बर्बे ऐक्वि, बोवि, कैल्के पिक, कैल्के साइलि, कैल्के सल्फ, कार्बो एसिड, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, साइक्यूटा, सिमिसि, कोबैल्टम, एचिने, इयुजि, जैम्बोस, ग्रैनैटम, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रो, जुग्लैसि, जुग्लै रेजिया, कैली ब्रो, कैली बाइ, कैली आयोड, कैली म्यूर, लैप्पा, लीडम, लाइको, नैबल से, नैट्र ब्रो, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, ओलियैंड, फॉस ऐसि, सोरि, पल्से, रेडियम, सेलेनि, सीपिया, साइलि, स्टैफि, सल्फर, सल्फर आयोड, सुम्बुल, थूजा।

के आई (KI) के दुरुपयोग से—ऑरम।

पारा के दुरुपयोग से—कैली आयोड, मेजे, नाइट्रि ऐसि।

पनीर से—नक्स वॉ।

शृङ्गार प्रसाधनों के व्यवहार से—बोवि।

उपदंश से—ऑरम, कैली आयोड, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि। देखिये पुरुष-जननेन्द्रिय मण्डल।

यौवनारम्भ के समय, रक्तहीन लड़कियों में, हाथ में, सिर की चाँद पर दर्द, अफरा, अजीर्ण, खाने से कम हो—कैल्के फॉस।

मद्यपान करने वालों में—ऐण्टि क्रू, बैराइटा का, लीडम, नक्स वॉ, रस टॉ।

मोटे नवयुवकों में, भद्दी आदत वाले, चेहरे, सीने और कन्धों पर हल्के नीले लाल रंग के दाने—कैली ब्रो।

कण्ठमालिक व्यक्तियों में—बैराइटा का, ब्रोमि, कैल्के का, कैल्के फॉस, कोनियम, आयोड, मर्क सल्फ, मेजे, साइलि, सल्फर।

कण्ठमालीय बच्चों में—ट्यूबर ।

क्षीणता के साथ—आर्स, कार्बो वेज, नैट्र म्यूर, साइलि ।

पाकाशय विकार के साथ—ऐण्टि क्रू, कार्बो वेज, सिमि, लाइको, नक्स वॉ, पल्से, रोबिनिया ।

ग्रन्थि फूलने के बाद—ब्रोमि, कैल्के सल्फ, मर्क सल्फ ।

कड़े दानों के साथ—ऐगैरिकस, आर्न, आर्स आयोड, बर्बे वल, बोवि, ब्रोमि, कार्बो ऐनि, कोबा, कोनियम, इयुजी जै, आयोड, कैली ब्रो, कैली आयोड, नैट्र ब्रो, नाइट्रि ऐसि, रोबिनिया, सल्फर, थूजा ।

मासिक धर्म की गड़बड़ी के साथ—ऑरम म्यूर नैट्रो, बेल, बेलिस, बर्बे ऐक्वि, बर्बे वल, कैल्के का, सिमि, कोइनियम, इयुजी जै, ग्रैफा, कैली ब्रो, कैली का, क्रियोजो, नैट्र म्यूर, सारि, पल्स, सैंग्वि, सारसा, थूजा, वेरेट्र एल्बम ।

गर्भावस्था के साथ—बेल, सैबाइना, सारसा, सीपिया ।

वात रोग के साथ—लीडम, रस टॉ ।

असाधारण मैथुन के साथ—ऑरम, कैल्के का, कैली ब्रो, फॉस ऐसि, रस टॉ, सीपिया, थूजा ।

कुरूप, घाव-चिह्न के साथ—कार्बो ऐन, कैली ब्रो ।

दोनों तरफ एक ही स्थान पर हो—आर्न ।

मुँह और जबड़ों के कठिन फोड़े (Actinomycosis)—हेक्ला, हिपोजो, कैली आयोड, नाइट्रि एसिड ।

बाल झड़ना (Alopecia)—ऐलूमि, ऐन्थ्रैकोकाली, आर्स, कैल्के सल्फ, फ्लोरिक एसिड, मैन्सिनैलिया, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, फॉस, पिलोक, पिक्स लिक्विडा, सेलेनियम, सीपिया, ट्यूबर, विन्का । देखिये ऊपरी खाल (सिर) ।

पसीने की कमी या पसीना न होना, चर्म का सूखापन (Antidross)—ऐसेटि ऐसि, ऐकोन, इथूजा, ऐलूमि, ऐपोसाइ, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, बर्बे ऐक्वि, क्रोटो टिग, ग्रैफा, आयोड, कैली आर्स, कैली का, कैली आयोड, लैके, मैग का, मैलैण्ड्रिनम, नैट्र का, नक्स मॉ, ओपियम, पेट्रोलि, फॉस, प्लम्ब मेट, सोरि, सैनिकूला, सारसा, सिकेलि, सल्फर, थाइरॉ ।

विष व्रण, जहरबाद सांघातिक स्फोट (Anthrax)—एकोन, ऐन्थ्रैसिनम, एपिस, आर्कटियम लप्पा, आर्न, आर्स, बेला, बोथ्रोप्स, ब्रायो, ब्यूफो, कैल्के फ्लोर, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सिन्को, क्रोटै, क्यूप्रम आर्स, एकोन, इयुफोर्बिया, हीपर, हिपोजा, लैके, लीडम, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, फाइटो, पाइरो, रस टॉ, स्कोलोपे, सीकेलि, साइलि, सल्फ एसिड, टैरेण्टुला, क्यूबे ।

चर्मक्षीणता (Atrophy) —आर्स, कॉकु, ग्रैफा, सैबे, सल्फर।

छाले—छोटे—एपिस, कैन्थे, नैट्र म्यूर, रस टॉ, सीकेल।

रक्त फुड़िया—(Blood Boils)—ऐन्थ्रैसिनम, आर्न, आर्स, क्रोटै, लैके, फॉस एसिड, पाइरो, सीकेल।

नीलापन—सुर्ख—ऐगैरि, एलैन्थस, ऐण्टि टा, आर्न, आर्स, कैडमि सल्फ, कैम्फो, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, सिन्को, क्रैटै, क्रोटै, क्युप्रम, डिजि, हेलेबो, इपिका, कैली आयोग, लैके, लॉरो, मॉर्फि, म्यूरि एसिड, सीकेलि, सलफ्यू एसिड, टैरेण्टु क्युबे, वेरेट्र एल्बम, वाइपेरा। देखिये चेहरा।

दुर्गन्धित पसीना (Bromidresis)—आर्टेमेसिया वल, बैप्टि, ब्रायो, कार्बो ऐनि, सिन्को, कोनियम, ग्रैफा, हीपर, लाइको, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, ओस्मियम, पेट्रोलि, फॉस, सोरि, प्यूलेक्स, सीपिया, साइलि, स्टैनम, स्टैफि, सल्फर, टेलूरियम, थूजा, वैरिओला।

दुर्गन्धित पसीना, शरीर से खट्टी गन्ध निकलना—कैल्के का, कैमो, कोलोस्ट, ग्रैफा, हीपर, क्रियोजो, लैक डिफ्लो, मैग का, रियूम, सल्फ एसिड, सल्फर।

जलन—ऐसेटिक एसिड, एकोन, एगैरि, एनैका, एविन, आर्स, बैप्टि, बेल, ब्रायो, कैन्थे, कैप्सि, कॉस्टि, डल्का, इयुफोर्बि, फॉर्मिका, ग्रिण्डे, कैली का, क्रियोजो, मेडूसा, नक्स वॉ फॉस, रेडियम, रैनन बल, रस टॉ, सैंग्वि, सीकेलि, सल्फर, वेस्पा। देखिये अति खाज (प्रूराइस)।

मस्से निकलना मांसाकुर (Callosities)—ऐण्टि क्रू, इलायेस, फेरम पिक, ग्रैफा, हाइड्रै, लाइको, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, रैनन वल, रस टॉ, सल्फ्यू एसिड, सारसा, सीपिया, साइलि, थूजा। देखिये पैर (चालन-यन्त्र-मण्डल)।

बेवाई फटना (Chilblains)—एग्रो, एगैरि, एपिस, आर्स, बोरेक्स, कैल्के का, कैलेण्डुला, कैन्थे, कार्बो ऐनि, क्रोटो टिग, साइक्लै, फेरम फॉस, फ्रैगेरिया, हैमे, हीपर, लैके, लीडम, मर्क, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, प्लैण्टै, पल्से, रस टॉ, साइलि, सल्फ्यू एसिड, सल्फर, टैमस, टैरेबि, थाइरॉ, वेरेट्र वि, जिंक मेट।

चकत्ते, ददोरे, जिगर विकारी धब्बे पड़ना, जन्तु बीधन ददोरे (Chloasma)—आर्जे नाइ, ऑरम, कैडमियम सल्फ, काडुमे, कॉलो, कोबा, कुरारी, गुवारिया, लॉरो, लाइको, नैट्र हाइपोसल्फ, पॉलिनिया, पेट्रोलि, प्लम्ब मेट, सीपिया, सल्फर, थूजा। देखिये धब्बे, तांबे के रंग के।

पुराने घाव के निशान के रोग—कॉस्टि, फ्लोरिक एसिड, ग्रैफा, आयोड, नाइट्रि एसिड, फाइटो, साइलि, सल्फ्यूरिक एसिड, थियोसिन।

ठण्डापन—एबीज कैने, एसेटिक एसिड, ऐकोन, ऐगैरि, एलैन्थस, ऐण्टि क्लोर, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, आर्स, बोथ्रोप्स, कैल्के का, कैम्फो, कार्बो वेज, चेलिडो, चिनि

आर्स, सिन्को, क्रैटेगस, क्रोटैलस, डिजि, इपिका, जैट्रोफा, लैके, लैट्रोडै, लॉरोसे, मेडो, पाइरो, रस टॉ, सीकेलि, टैबे, वेरेट्र एल्बम। देखिये पतनावस्था, स्नायुमन्डल। ठंडापन (ज्वर)।

काले मस्से या तिल (Comedo)—ऐब्रोटै, बैराइटा का, बेल, कैल्के साइलि, साइक्यूटॉ, डिजि, इयुजि जैम्बो, मेजे, नाइट्रि एसि, सैबाइना, सेलेनियम, सीपिया, सल्फर, सुम्बुल।

बिस्तर-घाव (Decubitus-Bedsores)—आर्जे नाइट्रि, आर्न, बैप्टी, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, सिन्को, एकिने, फ्लो ऐसि, हिपोजी, लैके, म्यूरि ऐसि, नक्स मॉ, पियोनिया, पेट्रोलि, पाइरो, साइलि, सल्फ्यूरि ऐसि, वाइपेरा। देखिये घाव।

चर्म सम्बन्धी (Dermal) पोषण विकार चकत्ते (Trophic Lesions)—थैलियम।

चर्म-पीड़ा (Dermatalgia) दर्द, उत्तेजनीय कोमलता—ऐगैरि, एपिस, आर्स, बैडियागा, बेल, बेलिस, बोविस्टा, चिनि सल्फ, सिन्को, कोनियम, क्रोटो टिग, डोलिकोस, इयुफोर्बिया, फैगोपाइरम, हीपर, कैली का, लैके, लाइको, नक्स मॉ, ओलियैण्डर, ओस्मि, पियोनिया, पेट्रोलि, फॉस्फोरस, सोरिनम, रैनन स्कले, रस डाइबर्सि, रस टॉ, रुमेक्स, सेम्परवि टैक्टोर, सीपिया, साइलि, सल्फर, टैरेण्टुला क्यूबे, थेरिडि, विन्का, जैरोफाइलम।

सूखा—ऐकोन, ऐलुमि, आर्स, बेल, कैल्के का, ग्रैफाइटिस, हाइड्रोकोटा, आयोड, लाइको, नैट्र का, नाइट्रि ऐसि, नक्स मॉ, पिलोका, प्लम्बम, सोरि, सैबाडि, सारसा, सीकेलि।

सूखे, नीले लाल चकत्ते (Ecchymoses)—इथूजा, आर्न, आर्स, बेलिस, बोथ्रोप्स, कार्बो वेज, क्लोरल, क्रोटैलस, हैमै, क्रियोजो, फॉस्फोरस टॉ, सीकेलि, सल्फ्यू ऐसि, सुपरारेनल एक्सट्रैक्ट, टेरेबि।

प्रदाह व्रण या फुन्सियाँ (Echthyma)—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, आर्स, बेल, साइक्यूटा, सिस्टस, क्रोटो टिग, हाइड्रैस्टिस, जुग्लै सिने, जुग्लै रेजिया, कैली बाइ, क्रियोजो, लैके, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि, पेट्रोलि, रस टॉ, सीकेल, साइलि, सल्फर, थूजा।

अकौता (एक्जीमा)—इथिओप्स, ऐलनस, ऐलूमि, ऐनैका, ऐनथ्राकोलि, ऐण्टि क्रू, आरब्यूटस, आर्स, आर्स आयोड, बर्बे ऐक्वि, बर्बे वल, बोरैक्स, बोविस्टा, कैल्के का, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, कैस्टर इक्वि, कॉस्टि, क्राइसैरो, साइक्यूटा, क्लिमैटिस, कोमोक्लैडियो, कोनियम, क्रोटो टिग, डल्का, युफोर्बिया, फ्लोरिक एसिड, फ्रैक्सि ऐमे, फुलिगो, ग्रैफा, हीपर, हिपोजी, हाइड्रोकोटा, जुग्लै सि, कैली आर्स, कैली

म्यूर, क्रियोजो, लाइको, मैंगे एसेटिकम, मर्क को, मर्क डल, मर्क प्रे रुबर, मर्क सल्फ, मेजे, म्यूरि एसिड, नैट्र आर्स, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, पर्सिकेरिया, पेट्रोलि, पिलोका, प्लम्ब, पोडो, प्रिमुलावे, सोरि, रस टॉ, रस वेने, सारसा, सीपिया, स्कूकम चक, सल्फर, सल्फर आयोड, थूजा, ट्यूबर, अस्टिलै, विन्का, वायोला ट्राइकलर, जेरोफाइल, एक्स-रे ।

तीव्र रूप का—एकोन, ऐनैका, बेल, कैन्थे, चिनि सल्फ, क्रोटो टिग, मेजे, रस टॉ, सीपिया ।

अकौता, कानों के पीछे—आर्स, एरण्डो, बोविस्टा; क्राइसैरोबिनम, ग्रैफा, हीपर, जुग्लै रेजिया, कैली म्यूर, लाइको, मेजे, ओलियैण्डर, पेट्रोलियम, सोरि, रस टॉ, सैनिकूला, स्क्रोफुलेरिया, सीपिया, स्टैफि, ट्युबर । देखिये कान ।

अकौता चेहरे का—ऐनेका, ऐण्टि क्रू, बैसिली, कैल्के का, कार्बो एसि, साइक्यूटा, कोलोसि, कॉर्नससर्सिनेटा, क्रोटो टिग, हाइपेरिकम, कैली आर्स, लीडम, मर्क प्रे रुबर, सोरिनम, रस टॉ, सीपिया, स्टैफि, सल्फर, सल्फ आयोड, विन्का । देखिये चेहरा ।

अकौता, जोड़ों के मोड़ में—इथूजा, ऐमो का, कॉस्टि, ग्रैफा, हीपर, कैली आर्स, लाइको, मैंगे ऐसेटि, नैट्र म्यूर, सोरि, सीपिया, सल्फर ।

अकौता, हाथों पर—ऐनैगैलिस, बैराइटा का, बर्ब वल, बोविस्टा, कैल्के का, ग्रैफा, हीपर, हाइपेरिकम, जुग्लै सि, क्रियोजो, मैलैण्ड्रिनम योजो, पेट्रोलि, पिक्स लि, प्लम्बम, रस वेने, सैनिक्यूला, सेलेनियम, सीपिया, स्टिलि । देखिये हाथ (चालन-यन्त्र-मण्डल) ।

अकौता, स्नायुविकारी लोगों का—ऐनैका, आर्स, फॉस, स्ट्रिक्निन आर्स, स्ट्रिक्निन फॉस, वायोला ट्रि, जिंकम फॉस ।

अकौता, योनि के बाह्य भाग का—ऐमो का, ऐण्टि क्रू, आर्स, कैन्थे, क्रोटो टिग, हीपर, प्लम्बम मेट, रस टॉ, सैनिकू, सीपिया । देखिये स्त्री जननेन्द्रिय मण्डल ।

अकौता, वात-गठिया रोगी का—ऐलूमि, आरब्यूट, लैक्टिक एसिड, रस टॉ, यूरिक एसिड, यूरिया ।

अकौता, सिर की खाल का—ऐस्टे, बर्बे ऐक्वि, कैल्के का, साइक्यूटा, क्लिमैटिस, फ्लोरिक एसिड, हीपर, कैली म्यूर, लाइको, मेजे, नैट्र म्यूर, ओलियैण्डर, पेट्रोलियम, सोरिनम, सीपिया, सेलेनियम, स्टैफि, सल्फर, ट्यूबर, विन्का, वायोला ओडो । देखिये सिर ।

अकौता, कण्ठमालिक रोगियों में—इथिओप्स, आर्स आयोड, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, कॉस्टि, सिस्टस, क्रोटो टिग, हीपर, मर्क को, मर्क सल्फ, रूमेक्स, सीपिया, साइलि, ट्यूबर ।

अकौता सारे शरीर का—क्रोटो टिग, रस टॉ।

अकौता (Madidans) मैडीडैन्स—साइक्यूटा, कोनियम, डल्का, ग्रैफा, हीपर, कैली म्यूर, मर्क को, मर्क प्रे रुबर, मेजे, सीपिया, स्टैफि, ट्यूबर, वायोला ट्रि।

अकौता, बाद में घेरेदार स्थानों का बदरंग होना—बर्बे वल।

अकौता, साथ में मूत्र सम्बन्धी, पक्वाशय या जिगर विकार हो—लाइको।

अकौता, चेचक का टीका छपाने से बढ़े—मेजे।

अकौता, मासिक काल, रजोनिवृत्ति काल में बढ़े—मैंगे ऐसेटि।

अकौता, समुद्र तट पर, समुद्र-यात्रा में, अधिक नमक खाने से बढ़े—नैट्र म्यूर।

फीलपाँव—ऐनैका ओरि, आर्स, कैलोट्रोपिस, कार्डु मैरि, इलेइस, ग्रैफा, हैमामेलिस, हाइड्रोकोटाइल, आयोड, लाइको, माइरिस्टिका सेबिफेरा, साइलि।

धूप लगने के चकत्ते (Sunburn-Ephelis)—ब्यूफो, कैन्थे, कैली का, रोबिनिया, वेरैट्र एल्बम।

उपत्वक (कैन्सर) प्रदाह (Epithelioma)—एसेटिक एसिड, ऐलुमेन, आर्स, आर्स आयोड, साइक्यू, कॉन्डुरैंगो, कोनियम, युफोर्बिया, फुलिगो, होआँग-नैन, हाइड्रै, जेक्विरिट्री, कैली आर्स, कैली सल्फ, लेपिस ऐल्बम, लोबे एरिनस, लाइको, नेट कैकोडिल, रेडियम, स्क्रोफुलेरिया, सीपिया, साइलि, थूजा। देखिये चेहरा।

चर्मोद्‌भेद (Eruptions)—ताँबे के रंग के—आर्स, कैल्के आयोड, कार्बो ऐनि, क्रियोजो, नाइट्रि एसिड।

चर्मोद्‌भेद, सूखे पपड़ीदार—ऐलुमेन, ऐनैगै, ऐण्टि क्रू, आर्स, आर्स आयोड, बर्बे ऐक्वि, बोविस्टा, कैडमि सल्फ, कैन्थे, कोरिडैल, युफोर्बिया, लैथाइ, ग्रैफा, हाइड्रोकोटा, आयोड, कैली आर्स, कैली म्यूर, कैली सल्फ, लिथि का, लाइको, मैलैण्ड्रि, मर्क सल्फ, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, फॉस, फाइटो, पाइपर मेंथा, पिक्स लि, सोरि, सारसा, सेलेनि, सीपिया, सल्फर, ट्यूबर, जेरोफाइल।

चर्मोद्‌भेद, नम, तर—इथिओप्स, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, बैराइटा का, बोविस्टा, कास्टि, क्रोटैलोवि, क्लिमै, क्रोटोन टिग, डल्का, ग्रैफा, हीपर, लाइको, मैन्सिन, मर्क सल्फ, मेजे, नैट्र म्यूर, ओलियेण्ड, पेट्रोलि, सोरि, रस टॉ, सीपि, स्टैफि, स्ट्रान्शिया, वेरियोलि, वायोला ट्रि।

चर्मोद्‌भेद, मवादी दाने—ऐलनस, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, बर्बे वल, ब्यूफो, चेलि, साइक्यूटा, क्रोटोन टिग, एचिने, यूफोर्बि, हीपर, हिपोजी, आइरिस, जुग्लै रेजिया, कैली बाइ, कैली आयोड, क्रियोजो, लैके, मर्क कार, मर्क सल्फ, नाइट्र ऐसि, फाइटो, सोरि, रैनन वल, रस वे, सीलि, साइलि, सल्फर आयोड, सल्फर, टेक्सस, वेरियोलि।

चर्मोद्‌भेद, पपड़ीदार—ऐण्टि क्रू, आर्स, कैल्के का, क्राइसैरोबि, साइक्यू, डल्का, ग्रैफा, हीपर, लाइको, मर्क, मेजे, म्यूर ऐसि, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, स्टैफि, सल्फर, वायोला ट्रि, विंका।

चर्मोद्‌भेद जाड़े में ठीक रहे—कैली बाइ, सारसा।

चर्मोद्‌भेद वसन्त में बढ़े—नैट्र सल्फ, सोरि, सैंग्वि, सारसा।

चर्मोद्‌भेद जाड़े में बढ़े—ऐलो, एलूमि, आर्स, पेट्रोलि, सोरि, सैबाडि।

विसर्प रोग (Erysipeles)—ऐकोन, ऐनाका, ऑक्सि, ऐनैंथे, एपिस, आर्न, आर्स, ऐट्रोपि, ऑरम, बेल, कैम्फोरा, कैन्थे, कार्बो ऐसि, कार्बो वेज, सिन्को, कोमोक्ले, कोपेवा, क्रोटेल, क्रोटोटि, एन्चिने, इयुफोर्बि, ग्रैफा, हीपर, जुगले रे, लैके, लीडम, नैट्र सल्फ, नैट्र म्यूर, प्रिमु ओब, रैनन स्केले, रस टॉ, रस वे, सैम्बू, सल्फर, टैक्सस, वेरैट्र वि, जेरोफाइल।

बिना ज्वर के—ग्रैफा, हीपर, लाइको।

पित्तमय, जुकामी, आन्त्रिक लक्षण—हाइड्रै।

शारीरिक प्रवृत्ति - कैलेण्डु, ग्रैफा, लैके, सोरि, सल्फर।

शोथ, जल्दी ठीक न हो—एपिस, आर्स, ऑरम, ग्रैफा, हीपर, लाइको, सल्फर।

चेहरे पर—एपिस, आर्न, बेल, बोरै, कैन्थे, कार्बो ऐनि, युफोर्बिया, ग्रैफा, हीपर, रस टॉ, सोलेनमनाइग्रम, सल्फर।

टाँगों का घुटनों के नीचे के भाग में—सल्फर।

स्तनों का—कार्बो वेज, सल्फर।

नवजात शिशु का—बेल, कैम्फोरा।

अतस्त्वक संयोजक तन्तु—प्रदाह—ऐकोन, ऐन्थ्रासिनम, आर्न, आर्स बेल, बोथ्रोप्स, क्रोटै, फेरम फॉस, ग्रैफा, हीपर, हिपोजी, लैके, मर्क, रस टॉ, साइलि, टैरे क्यु, वेरैट्र वि।

बार-बार और जीर्ण - फेरम फॉस, ग्रैफा, नैट्र म्यूर, रस टॉ, सल्फर।

शोथ प्रतिक्रिया सम्बन्धी—क्युप्रम ऐसेटि।

वृद्धावस्था सम्बन्धी—ऐमो का, कार्बो ऐनि।

फूलन स्पष्ट, जलन, खाज, चुभन—रस टॉ।

आघात सम्बन्धी—कैलेण्डुला, सोरि।

आघात सम्बन्धी, नवजात शिशु की नाभि सम्बन्धी—एपिस।

छालेदार—एनैका ऑक्सि, आर्न, कैन्थे, कार्बो एसिड, कॉस्टि, क्रोटो टिग, युफोर्बिया, मेजे, रस टॉ, रस वेनै, टेरेबि, अर्टि, वरबैस्क, वेरैट्र वि।

जगह बदलने वाला—एपिस, आर्स, सिन्को, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रै, पल्से, सल्फर।

अयनिका (Erythen a) खाल उधड़ा (Intertrigo) छिलना—इथूजा, ऐग्नस, आर्स, बेल, बोरैक्स, कैल्के का, कॉस्टि, कैमो, फैगोपा, ग्रैफा, जुग्लै रे, कैली ब्रो, लाइको, मर्क सल्फ, मेजे, ओलियैण्डर, ऑक्जै एसिड, पेट्रोलि, सोरि, सल्फर, एसिड सल्फ, ट्युबर।

अयनिका, अनेक रूपी—एण्टिपाइरि, बोरि एसिड, कोपेवा, वेस्पा।

अयनि, अस्थि-गुल्मीय—एकोन, एँटि क्रू, एपिस, आर्न, आर्स, चिनि आर्स, चिनि सल्फ, सिंको, फेरम, लीडम, नैट्र का, टीलिया, रस टॉ, रस वे।

अयनिका, साधारण (Simplex)—ऐकोन, ऐण्टिपाइरि, एपिस, आर्न, आर्स आयोड, बेल, ब्यूफो, कैन्थ, क्लोरेल, एचिने, इयुफोर्बिया, लैथाइ, गॉल्थे, ग्रिण्डे, कैली कार्ब, लैक्टि एसिड, मर्क, मेजे, नैर्किसस, नक्स वॉ, प्लम्ब क्रोम, रस टॉ, रोबिनी, टेरेबि, अर्टिका, अस्टिलैगो, वेरेट्र वि, जेरोफाइलम।

सूत्रमय अर्बुद (Fibroma)—कैल्के आर्स, कोनियम, आयोड, कैली ब्रो, लाइको, सीकेल, थूजा।

दरारें, फटाव (Fissures, Rhagades, Chaps)—ऐलुमि, ऐन्थ्रांको, आर्स सल्फ फ्ले, बैडियागा, बैराइटा का, कैल्के फ्लो, सिस्टस, कॉण्डयूरै, युजीनिया जैम्बोस, ग्रैफा, हीपर, कैली आर्स, लीडम, लाइको, मैलैन्ड्रिनम, मैंगे ऐसे, मर्क आयोड रूबर, मर्क प्रे रूबर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, ओलियैण्डर, पेट्रोलि, पिक्स लि, रैनन बल, रैटानह्यिा, रट टॉ, सार्सा, साइलि, सल्फर, जेरोफाइलम, एक्स-रे।

ढीलापन (Flabbiness) दौर्बल्यता (Non-tonicity)—ऐब्रोटै, एस्टैरि, बैराइटा का, आर्स, कैल्के का, चेलिडो, हीपर, इपिका, मर्कवाइ, मोर्फि, ओपियम, नैट्र म्यूर, सैनिक्यू, सार्सा, सैल्विया, थाइरॉ, वेरैट्र एल्बम।

बाहरी वस्तुयें—मछली के काँटे, खपाची, सूई इत्यादि को बाहर निकालने के लिए ऐनैगे, हीपर, साइलि।

सुरसुरी (Formication) झुनझुनी, सुन्न होना—ऐकोन, ऐम्ब्रा, एपियम ग्रै, ऐरण्डो, कैलेण्डुला, कोकेन, कोडी, मेड्यूसा, मेजे, मोर्फि, ओलियैण्डर, फॉस एसिड, प्लैटि, रूमेक्स, सीकेलि, सेलेनियम, साइलि, स्टैफि, सल्फ एसिड, वेलेरियाना, जिंकम मेट।

क्षत्रिका-रक्तमय (Fungus Hematodes)—आर्स, लैके, लाइको, मैसिनेला, फॉस, थूजा।

फुड़िया (Furuncle-Boil)—ऐब्रो, इथूजा, ऐनैन्थे, ऐन्थ्रैसि, ऐण्टि क्रू, आर्न, आर्स, बेलाडो, बेलिस, कैल्के, हाइपोफॉस, कैल्के पिक, कैल्के सल्फ, कार्बो वेज, एचिने, फेरम आयोड, जेल्से, हीपर, हिपोजी, इक्थियो, लैके, लाइको, मेडो, मर्क

सल्फ, ओलियम माइरि, ओपेरक्यू लेना, फॉस एसिड, फाइटो, पिक एसिड, रस वे, सीकेल, साइलि, सल्फर, सल्फ आयाड, सल्फ एसिड, टैरैन क्यू, ट्यूबर, जिंक ऑक्सि।

फुड़िया, बार-बार निकलने की प्रवृत्ति—आर्न, आर्स, बर्बे वल, कैल्के का, कैल्के म्यूर, कैल्के फॉस, कैल्के पिक, एचिने, हीपर, ट्यूबर।

गला सड़ा घाव (Gangrene)—एलैन्थस, ऐन्थ्रैसि, एण्टि क्रू, एपिस, आर्स, बोथ्राप्स, ब्रासिका, ब्रोमि, कैलेण्डु, कैन्थे, कार्बो एसिड, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, क्लोरम, क्रोमि ऑक्सि, सिन्को, क्राटै, क्युप्रम आर्स, एचिने, इयुफोर्बि, फेरम फॉस, कैली क्लोर, कैली फॉस, क्रियोजो, लैकेसिस, पोलिगोन पर्सि, रैननक्यु ऐक्रिस, सैलिसि एसिड, सिकेल, सैलक्यू एसिड, टैरेक्यू।

गला-सड़ा घाव, वृद्धावस्था का—एमो का, आर्स, सेपा, सीके, सल्फ्यू एसिड।

गला-सड़ा घाव, आघात सम्बन्धी—आर्न, लैकेसिस, सल्फ एसिड।

विसर्पिका, दाद (Herpes Tetter)—ऐकोन, इथि ओप्स, ऐल्नस, ऐनैका, ऐनैन्थे, ऐंथ्रैको, एपिस, आर्न, आर्स, बैराइटा का, बोरै, ब्रायो, ब्यूफो, कैल्के कार्ब, कैन्थे, कार्बो एसिड, कॉस्टि, क्राइसैबि, सिस्टस, क्लिमै, कोमोक्लै, क्रोटोन टिग, डल्का, इयुकैलि, ग्रैफा, कैली बाइ, लिथि का, मर्क सल्फ, मेजे, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, फॉस एसिड, सोरि, रैनन बल, रैनन स्केले, रस टॉ, सारसा, सीपि, साइलि, सल्फर, टेल्यूरि, वैरियोलि, जेरोफाइलम।

विसर्पिका, अंगुलियों के बीच में—नाइट्रि एसिड।

विसर्पिका, जीर्ण—ऐल्नस।

विसर्पिका, सिर की खाल पर, चक्राकार (Circinatus Tonsurans)—आर्स सल्फ फ्लै, बैराइटा का, कैल्के ऐसेटि, कैल्के का, क्राइसैरो, इक्विमे आर, हीपर, नैट्र का, नैट्र म्यूर, सीपिया, टेल्यूरि, ट्यूबर। देखिये ट्राइकोफाइटोसिस, दाद (Ringworm)।

विसर्पिका, चक्राकार (Circinatus), अलग-अलग—सीपिया।

विसर्पिका, चक्राकार, एक चक्र दूसरे को काटते हुए—टेल्यूरियम।

विसर्पिका, सूखा—बोविस्टा, फ्लोरिक एसिड, मैंगे, सीपिया, साइलि।

विसर्पिका, सीने पर, गर्दन की जड़ पर—नैट्र म्यूर, पेट्रोलि।

विसर्पिका ठुड्डी पर—आर्स, कॉस्टि, ग्रैफा, मेजे, साइलि।

विसर्पिका, चेहरे पर—एपिस, आर्स, कैल्के फ्लोर, कैप्सि, कॉस्टि, क्लिमैटिस, कोनियम, लैके, लिमुलस, नैट्र म्यूर, रैनन बल, रस टॉ, सीपिया, सल्फर। देखिये चेहरा।

विसर्पिका, घुटनों के मोड़ में—ग्रैफा, हीपर, नैट्र म्यूर, सीपिया, जेरोफाइलम।

विसर्पिका जननेन्द्रिय पर—ऑरम म्यूर, कैल्के का, कॉस्टि, क्रोटोन टिग, डल्का, हीपर, जुग्लै रेजिया, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, फॉस एसिड, सारसा, टेरेबि। देखिये पुरुष जननेन्द्रिय मण्डल।

विसर्पिका, हाथों पर—सिस्टस, डल्का, लिमुलस, लिथि का, नाइट्रि एसिड।

विसर्पिका, घुटनों पर—कार्बो वेज, पेट्रोलि।

विसर्पिका, जाँघों पर—ग्रैफा, पेट्रोलि।

विसर्पिका के बाद स्नायुशूल—काली म्यूर, मेजे; रैनै बल, स्टिलिन्जिया, वेरिओल।

विसर्पिका, ग्रन्थि-सूजन के साथ—डल्का।

विसर्पिका, सूखे या रस भरे दाने चारों तरफ, एक दूसरे से मिल कर फैलें—हीपर।

वर्त्तुलाकार विसर्पिका (Herpes Zoster) कमरबन्द की तरह दाद (Zona) वर्त्तुलाकार विसर्पिका (Shingles)—एपिस, आर्जे नाइ, आर्स, ऐस्टेरि, कैन्थे, कार्बोनि ऑक्सिजेनि, कॉस्टि, सीड्रनी, सिस्टस, कोमोक्लेडिया, क्रोटोन टिग, डोलिकोस, डल्का, ग्रैफा, ग्रिण्डे, हाइपेरि, आइरिस, कैली आर्स, कैली म्यूर, कैल्मिया, मर्क सल्फ, मेजे, मॉर्फि, पाइपर मेथाइ, प्रून स्पाइ, रैनन बल, रैनन स्केले, रस टॉ, सैलिसि एसिड, सेम्पर्वि, टेक्टोरि, स्टैफि, स्ट्रिक आर्स, सल्फर, थूजा, वैरिओलि, जिंक फॉ, जिंक वे।

जीर्ण—आर्स, सेम्पर्वि टेक्टोरि।

स्नायुशूल, बराबर रहा करे—आर्स, डोलिकोस, कैल्मि, मेजे, रैनन बल, स्टिलिन्जिया, जिंक मेट।

फुन्सी, छाला मुहासा (Hydroa)—कैली आयोड, क्रियोजो, मैग का, नैट्र म्यूर, रस वे। देखिये विसर्पिका।

अधिक पसीना (Hyperidrosis)—ऐसेटिक ऐसि, इथूजा, एगैरिसिन, ऐमो का, एण्टि टा, आर्स आयोड, बैप्टीसिया, बेला, बालेटस, कैल्के का, कैमो, सिन्को, ऐसेरीन, फेरम, ग्रैफा, जेबोरैण्डी, लैक्टिक ऐसि, मर्क सल्फ, नैट्र का, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस ऐसि, फॉस, पिलोका, सैम्बू, सैनिकू, सेलेनि, सीपिया, साइलि, सल्फ्यूरिक ऐसि, सल्फर, थूजा, वेरैट्र ऐल्बम। देखिये ज्वर।

मछली की खाल की तरह चर्म रोग, (कुष्ठ का) एक भेद (Ichthyosis)—आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, क्लिमैटिस, ग्रैफा, हाइड्रोकोटा, आयोड, कैली आयोड,

मर्क सल्फ, नैट्र का, ऐनैन्थे, फॉस, प्लैटेनस, प्लम्बम मेट, सिफिलि, सल्फर, थूजा, थाइरॉ।

प्रदाहिक खुजलीदार फुन्सियाँ (Impetigo)—ऐलनस, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि सल्फ ऑरे, ऐण्टि टार्ट, आर्स, ऐरम, कैल्के म्यूर, साइक्यूटा, बिलमै, डल्का, इयुफोर्बि, ग्रैफा, हीपर, आइरिस, जुग्लै सि, कैली बाइ, कैली नाइट्रि, लाइको, मेजे, रस टॉ, रस वे, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा, वायोला ट्रि।

कोर्म अर्बुद (Keloid)—फ्लोर एसिड, ग्रैफा, नाइट्रि एसिड, सेबाइना, साइलि।

स्वच्छ छोटे बदरंग चकत्ते (Lentigo freckles)—ऐमो का, बैडियागा, कैल्के का, ग्रैफा, कैली का, लाइको, म्यूरि एसिड, नैट्र का, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, फॉस, सीपिया, सल्फर, टैबे।

कुष्ठ (Ledra-Leprosy)—ऐनैका, आर्स, बैडियागा, कैलोट्रोपिस, कार्बो एसिड, चालमूग्रा, कोमोक्ले, क्युप्रम ऐसे, कुरारी, डिप्टेरोकार्पस, इलेइस, ग्रैफा, गुआनो, गाइनोकार्डिया, होआंग नान, हुरा, हाइड्रोकोटा, जैट्रोफा, फॉस, लैके, मर्क सल्फ, एनैन्थे, कॉस, पाइपर, मेथि, सीकेल, सीपिया, साइलि, थाइरॉ।

श्वेत कुष्ठ (Leucoderma)—आर्स, सल्फ फ्लै, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, सुम्बुल, जिंके फॉस। देखिये चेहरा पीला।

घमौरी विशेष (Lichen planus)—ऐगैरि, ऐनैका, ऐण्टि क्रू, ऐपिस, आर्स, आर्स आयोड, चिनि आर्स, आयोड, जुग्लैन्स सि, कैली बाइ, कैली आयोड, लीडम, मर्क, आर्स, स्टैफि, सल्फर आयोड।

घमौरी साधारण (Lichen simplex)—ऐलूमि, ऐमो म्यूर, ऐनैन्थे, ऐण्टि क्रू, एपिस, आर्स, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैलैडि, कैस्टेनिया, डल्का, जुग्लैन्स सि, कैली आर्स, क्रियोजो, लीडम, लाइको, मर्क सल्फ, नैबुलस, सल्फ; नैट्र का, प्लैण्टै, फाइटो, रूमेक्स, सीपिया, सल्फर, सल्फर आयोड, टिलिया। देखिये मुहासे। (Acne)।

चर्म क्षय-अयनिका युक्त (Lupus erythematosum)—एपिस, सिस्टस गुवाराना, हाइड्रोकोट, आयोड, कैली बाइ, फॉस, सीपिया, थाइरॉ।

चर्म क्षय साधारण—एपिस, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम आर्स, ऑरम आयोड, ऑरम म्यूर, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के सल्फ, सिस्टस, कोण्डूरे, फेरम पिक, फॉर्मिका ऐसि, फार्मिका, ग्रैफा, गुवाराना, हीपर, हाइड्रै, हाइड्रोकोटा, इरिडि, जेक्विरिटी, कैली बाइ, कैली आयोड, लाइको, नाइट्रि एसिड, फाइटो, स्टैफि, सल्फर, थियोसि, थूजा, ट्यूबर, युरिया, एक्स-रे।

घमौरी (Miliaria) गरमी से चर्म पर छोटे खाज वाले दाने—ऐकोन, ऐमो म्यूर, आर्स, ब्रायो, कैक्ट, सेण्टारिया, हूरा, जैबोरै, लीडम, रैफे, सिजीजियम, अर्टि।

महीन छोटी फुन्सियाँ सफेद या पीले रंग की (Milium)—कैल्के आयोड, स्टैफि, टैबे। देखिये मुहासे।

कमल गोल अर्बुद (Molluscum)—ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैली आयाड, लाइको, मर्क सल्फ, नैट्र म्यूर, साइलि, सल्फर, ट्यूक्रि।

घातक अत्यधिक पसीना (Morbus sudatorius)—ऐकोन, आर्स, कार्बो वेज, जैबोरै, मर्क।

चर्म काठिन्य (Morphaea)—आर्स, फॉस, साइलि। देखिये जीर्णचर्म काठिन्य रोग।

जन्म-दाग, तिल—(Naevus)—ऐसेटिक एसिड, कैल्के का, कार्बो वेज, कोण्डुरै, फ्लोरि ऐसि, लाइको, फॉस, रेडियम, थूजा।

नाखून (Nails), साधारण रोग—ऐलूमि, ऐण्टि क्रू, कैस्टर इक्वि, ग्रेफा, हाइपेरि, नाइट्रि एसिड, साइलि, उपास, एक्स-रे।

गुर्दे के रोग, नाखून पीछे हटे, कच्चा स्थान बन जाये—सीकेल।

क्षीणता—साइलि।

नाखून दाँतों से काटते रहना—ऐमो ब्रो, ऐरम।

नीलापन—डिजि, ऑक्जै एसिड। देखिये नीला रोग (रक्त संचार)।

टेढ़े-मेढ़े कुरकुरे, मोटे (Onchogryposi)—ऐलूमि, ऐनैन्थे, एण्टि क्रू, आर्स, कास्टि, डायस्को, फ्लोरि एसिड, ग्रेफा, मर्क, नैट्र म्यूर, सैबाडि, सीकेल, सेनेसि, सीपिया, साइलि, थूजा, एक्स-रे।

नाखून के चारों तरफ दाने—ग्रेफा, सोरि, स्टैनम म्यूर।

झड़ना—ब्रासिका, ब्यूट्रिक एसिड, हेलेबो फाटि, हेल्लिबोरस।

नाखून का लटकना—नैट्र म्यूर, सल्फर, उपास।

अति ढीलापन के साथ बढ़ना (Onychauxis)—ग्रेफा।

जड़ के चारों तरफ सूजन (Paronychia)—ऐलूमि, ब्यूफो, कैल्के सल्फ, डायस्को, ग्रेफा, हीपर, नैट्र सल्फ। देखिये गल्का, अंगुलबेड़ा।

गुर्दे की सूजन (Onychia)—आर्न, कैलेण्डू, फ्लोरि ऐसि, ग्रेफा, फॉस, सोरि, सार्सा, साइलि, उपास।

परों के नाखूनों के नीचे सूजन—सैबाडि।

पैरों के नाखूनों का भीतर की तरफ बढ़ना—कॉस्टि, मैग्नेट, आस्टै, नाइट्रि एसिड, साइलि, स्टैफि, ट्यूक्रि, टेट्राडाइन।

साँचे में आघात, चोट—हाइपेरि।

हाथों के नाखूनों के नीचे उत्तेजना, उनकी दाँतों से काटते रहने से कम रहे - ऐमो ब्रो।

नाखूनों के ऊपरी भाग की खुजली—उपास।

नाखूनों के नीचे जलन —सारसा।

हाथों की अंगुलियों के नीचे कुतरन जैसा जान पड़े—ऐलूमि, सारसा, सीपिया।

हाथों के नाखूनों के नीचे स्नायुशूल —बर्बे वल।

स्नायुशूल पीड़ा - ऐलुमि, सेपा, कोल्चि।

जड़ों में गड़न, तीव्र चिलिक—सल्फर।

पैरों के नाखूनों के नीचे खपची गड़ने जैसा संवेदन—फ्लोरि एसिड।

पैरों के नाखूनों के नीचे पकने जैसा दर्द—एण्टि क्रू, ग्रैफा, ट्यूक्रि।

चारों तरफ का चर्म सूखा, चिटका—ग्रैफा, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि।

चारों तरफ का चर्म बदरंग—नैफ्थे।

मुलायम हो जाना—प्लम्ब, थूजा।

नाखूनों पर सफेद चित्तियाँ - ऐलूमि, नाइट्रि एसिड।

पोषण परिवर्त्तन—रेडियम।

पकना, घाव होना—ऐलूमि, ग्रैफा, मर्क, फॉस, सैंग्वि, सारसा, सिला, ट्यूक्रि, टेट्राडाइन।

पीले रंग का होना—कोनियम।

शोथ, फूलन—ऐकालिफा, ऐसेटिक एसिड, ऐकोन, ऐगैरिकस, ऐनैका, एपिस, आर्स, बेल, बेलिस, बोथ्रोप्स, ब्रायो, डिजि, इलैटि, इयुफोर्बि, फेरम मेट, हेलोबो, हिपोजी, लैके, लाइको, नैट्र कै, नैट्र सैलि, ओलियैण्डर, प्रिमुला ओब, प्रूनस स्पाइ, रस टॉ, सैम्बू थाइरॉ।

शोथ हृदय-स्नायु दौर्बल्य सम्बन्धी—ऐगैरि, ऐण्टिपाइरि, हेलेबो।

तेल पुता जैसा—ब्रायो, मर्क, नैट्र म्यूर, प्लम्ब मेट, सोरी, रैफैनस, सैनिकूला। देखिये (Seborrhoea)—खोपड़ी की तर दाद। तैलाक्त भूँसी छूटना।

रौद्रत्वक (Pellagra)—आर्स, आर्स सल्फ रूबर, बोविस्टा, सिन्को।

रौद्रत्वक, धातु विकारी—आर्स, सीकेल।

रौद्रत्वक, दरारें, खाल उघाड़ना, चर्मोद्भेद—ग्रैफा, हीपर, इग्नै, फॉस, पल्से, सीपिया।

बिम्बिका रोग (Pemphigus)—ऐनाका, ऐंटिपाइरीन, आर्स, ऐरम ट्रि, ब्यूफो, कैन्था, कैन्थे, कार्बोनि ऑक्सिजे, कॉस्टि, डल्का, जुग्लै सिनेरिया, लैके, मैंसीने, मर्क कार, मर्क प्रे रूबर, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, नैट्र सैलि, फॉस ऐसि, फॉस, रैनन बल, रैनन स्केले, रैफे, रस टॉ, सीपिया, थूजा।

रक्ताधिक्य या रक्तनिःसरण के कारण काले दाग पड़ना (Petichiae)—आर्न, आर्स, कैल्के का, कुरारी, म्यूर ऐसि, फॉस, सीकेल, सल्फ एसि। देखिये काले दाग (Ecchymosis)।

जूँ के कारण चर्म प्रदाह (Phthiriasis) – बैसिलि, कॉकु, मर्क, नैट्र म्यूर, ओलियेण्डर, सोरी, सैबैडि, स्टैफि।

रूसी छूटना—Pityriasis (Dermatitis exfoliativa)—आर्स, आर्स आयोड, साइलि, बर्बे ऐक्वी, कैल्के का, कार्बो ऐसि, क्लिमै, कोल्चि, फ्लोरि एसि, ग्रैफा, कैली आर्स, मैंगे एसेटि, मर्क प्रे रूब, मेजे, नैट्र आर्स, फॉस, पाइपर मेथि, सीपिया, स्टैफि, सल्फर, सल्फ आयोड, सल्फ एसेटि, टेलूरि, टेरेबि, थाइरो।

प्रेयरी इच (Prairie Itch)—लीडम, रस टॉ, रूमेक्स, सल्फर।

खुजली (Prurigo)—ऐकोन, एल्नस, ऐम्ब्रा, ऐन्थ्रांको, आर्स, आर्स आयोड, आर्स सल्फ, कार्बो ऐसि, क्लोरल, डोलिको, डायस्को, कैली बाइ, लाइको, मर्क, मेजे, नाइट्रि ऐसि, ओलियैण्डर, ऊफोरिनम, पेडिकू, रस टॉ, रस वे, रूमेक्स, साइलि, सल्फर, टेरेबि।)

तीव्र खाज (Pruritus)—ऐकोन, ऐगैरि, एलूमि, ऐम्ब्रा, ऐनैका, ओक्सि, ऐनैका, ऐनैगै, ऐण्टिपाइरीन, एपिस, आर्स, कैलेडि, कैल्के का, कैन्थे, कार्बो ऐसि, क्लोरल, क्राइसैरो, क्लिमै, क्रोटोन टिग, डोलिको, डल्का, इलाइस, फ्रैगोपा, फ्लोर ऐसि, फार्मिका, ग्लोनो, ग्रैफा, ग्रैनेटम, ग्रिण्डे, गुवानो, हीपर, हाइड्रांको, हाइपेरि, इक्थि, इग्नै, लाइको क्रियोजो, मैग का, मैलैण्डि, मैंगै एसेटिकम, मेडो, मर्क, मेजे, मोर्फि, निकोल, नक्स वॉ, ओलिपैण्डर, ओपि, पेट्रोलि, पिक्स लि, प्रिमु ओब, सोरी, पुलेक्स, रेडियम, रैनन बल, रस टॉ, रस वे, रूमेक्स, सीपिया, स्टैफि, सल्फर, सल्फ्यूरि एसिड, सीजिजियम, टैरैण्ट यु, अर्टिका, वेस्पा, जेरोफाइलम।

अति खुजली, वृद्ध लोगों की —बैराइटा का।
अति खुजली, टखनों की—नैट्र फास, सेलेनि, सीपिया।
अति खुजली, केहुनी, घुटनों के मोड़ों की—सेलेनि, सीपिया।
अति खुजली, सीने की, ऊपरी अंगों की—ऐरण्डो।
अति खुजली, कान, नाक, बाँह, मूत्र-मार्ग की—सल्फ आयोड।
अति खुजली, चेहरे, हाथों, सिर की खाल की –क्लिमैटिस।

अति खुजली, चेहरे, कंधों, सीने पर—कैली ब्रोमे।

अति खुजली, पैरों, टखनों पर—लीडम।

अति खुजली, पैरों, टाँगों पर—बोविस्टा।

अति खुजली, पैरों के तलवों पर—ऐनैन्थे, हाइड्रोकोटा।

अति खुजली, जननेन्द्रिय पर—ऐम्ब्रा, आर्स आयोड, बोरैक्स, कैलैडियम, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कोल्चि, कोलिन्सो, क्रोटो टिग, डल्का, फुलिगो, गुवानो, हेलोनि, क्रियोजो, मेजे, नाइट्रि एसिड, रस टॉ, रस वेने, सीपिया, साइली, टैरै क्यू। देखिये स्त्री जननेन्द्रिय मण्डल।

अति खुजली, हाथों, बाहों पर—पाइपरे मे, सेलैनि।

अति खुजली, जोड़ों, उदर पर—पाइनस साइलवे।

अति खुजली, घुटनों, केहुनी, बाल वाले स्थानों पर—डोलिको, फैगोपा।

अति खुजली, नाक पर—मोर्फि, स्ट्रिक।

अति खुजली, शरीर के छिद्रों पर—फ्लोरि एसिड।

अति खुजली, जाँघों, घुटनों के मोड़ों पर- जिंक मेट।

अति खुजली, अंगुलियों की जड़ों में, जोड़ों के मोड़ में—हीपर, सोरी, सेलेनि, सीपिया।

अति खुजली, ठंडक से कम हो—बर्बे वल, फैगोपाइरम, ग्रैफा, मेजेरियम।

अति खुजली, गरम पानी से कम हो—रस वेने।

अति खुजली, खुजाने से कम हो—क्रोटो टिग।

अति खुजली, खुजाने से कम हो—एसार्फि, कैडमि सल्फ, मैंगे ऐसेटि, मर्क सलफ्युरि, ओलियेण्डर, रस टॉ।

अति खुजली, गरमाहट से कम हो—आर्स. पेट्रोलि, रूमेक्स।

अति खुजली, बाद में खून बहे, पीड़ा हो और जलन —ऐलूमि, आर्स, क्रोटोन टिग, म्यूरेक्स, पिक्स लि, सोरि, सीपिया, सल्फर, टिलिया।

अति खुजली, बाद में खुजली का स्थान बदल जाये - मेजे, स्टैफि।

अति खुजली, बिना चर्मोद्भेद के —डोलिकोस।

अति खुजली, ठंडे स्पर्श से अधिक हो—रैनन बल।

अति खुजली, बाहरी हवा लगने से बढ़े, ठंडी हवा—डल्का, हीपर, नैट्र सल्फ, ओलियैण्डर, पेट्रोलि, रस टॉ, रूमेक्स।

अति खुजली, खुजाने से बढ़े—आर्स, बर्बे वल, क्रोटन टिग, लीडम, मेजे, सीपिया, सल्फर।

अति खुजली, कपड़ा उतारने से बढ़े, बिस्तर की गरमी में दोपहर के बाद — ऐलुमि, ऐण्टि क्रू, आर्स, ऐसिमिना, बेलिस, बोविस्टा, कार्बो वेज, काडु मैरि, सिस्टस,

डल्का, जुग्लै सिने, कैली आर्स, क्रियोजो, लीडम, लाइको, मेनिसपर्मम, मर्क, मर्क आयोड फ्ले, मेजे, नैट्र सल्फ, ओलियैण्डर, सोरी, पल्से, रस टॉ, रूमेक्स, सैंग्विने, सीपिया, ट्यूबर।

अति खुजली, ठंडे पानी से बढ़े क्लिमै, ट्यूबर।

विचर्चिका, चम्बल रोग, अपरस (Psoriasis)—ऐण्टि टा, आर्स, आर्स आयोड, ऐस्टेरि, ऑरम म्यूर नैट्रो, बर्बे ऐक्वि, बोरै, कार्बो ऐसि, क्राइसैरो, साइक्यूटा, कोरैलि, क्युप्रम ऐसे, फ्लोरिक ऐसि, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रोकोटा, आइरिस, कैली आर्स, कैली ब्रो, कैली सल्फ, लाइको, मैंगे ऐसे, मर्क ऑरे, मर्क सल्फ, म्यूरि ऐसि, नैफ्थे, नैट्र म्यूर, नैट्र आर्स, नाइट्रि ऐसि, नाइट्रो म्यूरि ऐसि, पेट्रोलि, फॉस, प्लैटैनस, सीपिया, स्ट्रिक्नि फॉस, स्टेलैरिया, सल्फर, टेरेबि, थूजा, थाइरॉ, ट्यूबर, आस्टिलैगो।

हथेलियों पर विचर्चिका—कैल्के का, कोरैलि, ग्रैफा, हीपर, लाइको, मेडो, पेट्रोलि, फॉस, सेलेनि।

लिंगाग्र-चर्म, नाखूनों का अपरस - ग्रैफा, सीपिया।

जबान पर विचर्चिका, अपरस—ग्रैफा, म्यूरि ऐसि, सीपिया। देखिये जबान (मुँह)।

धूम्र रोग, शीताद (Purpura)—ऐकोन, आर्न, आर्स, बैप्टि, बेल, ब्रायोनिया, कार्बो वेज, चिनि सल्फ, क्लोरल, क्रोटैलस, हैमामेलिस, जुग्लैन्स रेजिया, कैली आयोड, लैके, मर्क सल्फ, फॉस एसिड, फॉस, रस टॉ, रस वेने, सैलि एसिड, सीकेल, सलफ्यूरिक एसिड, सल्फोनॉल, टेरेबि, वेरैट्र वि।

आन्त्र-शूल के साथ—बोविस्टा, कोलो, क्युप्रम, मर्क को, थूजा।

कमजोरी के साथ—आर्न, आर्स, कार्बो वेज, लैके, मर्क सल्फ, सलफ्यूरिक एसिड।

रक्तप्रवाह वाला धूम्र रोग (Purpura Haemorrhagica —एलनस, आर्न, आर्स, बोथ्रोप्स, ब्रायो, क्रोटै, फेरम पिक, हैमे, आयोड, इपिका, लैके, लीडम, मर्क को, मर्क सल्फ, मिलिफो, नाजा, नैट्र नाइट्रि, फॉस एसिड, फॉस, रस वेने, सीकेल, सलफ्यूरिक एसिड, टेरेबि, थ्लैस्पी।

वातरोगिक धूम्र रोग (Purpura Rheumatica)—ऐकोन, आर्स, ब्रायो, मर्क सल्फ, रस टॉ, रस वेने।

रेनॉड-रोग—देखिये गला सड़ा घाव—(Gangrene)—विगलन।

चर्म तथा नाक की श्लैष्मिक झिल्ली का पथरीला कड़ापन (Rhinoscleroma)—ऑरम म्यूर नैट्रो, कैल्के फॉस, गुवागाना, रस रैडि।

गुलाबी लाल क्षत (Roseola, Rose-Rash)—ऐकोन, बेल, क्युबेबा।

कल्किका (उपदंश रोग के तीसरे चरण का चर्म-रोग विशेष (Rupia)—इथिओप्स, ऐण्टि टॉ, आर्स, बर्बे एक्वि, क्लिमै, ग्रैफा, हाइड्रै, कैली आयोड, लैके, मर्क आयोड रूबर, नाइट्रि एसिड, फाइटो, सीकेल, सिफिलि, थाइरॉ। देखिये उपदंश रोग। (पुरुष जननेन्द्रिय मण्डल)।

मांसार्बुद (Sarcoma cutis)—कैल्के फॉस, कांडुरैंगो, नाइट्रि एसिड, साइलि।

सूखी खुजली (Scabies)—एलो, एन्थ्रोको, कास्टि, क्रोटो टिग, हीपर, लाइको, मर्क, नक्स वॉ, सोरी, रस वेने, सेलेनि, सीपिया, सल्फर।

जीर्ण चर्म काठिन्य रोग—(Sclerodarma-Scleriasis)—(सूखे चमड़े से बँधा हुआ चर्म जान पड़े)—एलुमि, एण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बर्बे एक्वि, ब्रायोनिया, कॉस्ट, क्रोटो टिग, एचिने, एलाइस, हाइड्रोकोटाइल, लाइको, पेट्रोलि, फॉस, रैनन बल, रस रैडि, सारसा, साइलि, स्टिलिंजिया, सल्फर, थियोसिन, थाइरॉ।

कण्ठमालिक चर्म रोग (Scrofulo lerma)—कैल्के आयोड, कैल्के सल्फ, पेट्रोलि, स्क्रोफुले, थेरिडि। देखिये पृथक् रोग सूची।

चर्बीली, थैलियाँ पड़ जाना, वसार्बुद (Sebaceous cysts wens)—बैराइटा का, बेन्जो एसिड, ब्रोमि, कैल्के सिलिके, कोनियम, ग्रैफा, हीपर, कैली ब्रो, कैली आयोड, नाइट्रि एसिड, फाइटो, थूजा। देखिये खाल (सिर की)।

खोपड़ी की तर दाद (Seborrhoea)—ऐमो म्यूर, आर्स, ब्रायोनिया, ब्यूफो, कैल्के का, सिन्को, ग्रैफा, आयोड, कैली ब्रो, कैली का, कैली सल्फ, लाइको, मर्क सल्फ, मेजे, नैट्र म्यूर, फॉस, प्लम्ब मेट, सोरि, रैफै, रस टॉ, सारसा, सेलेनि, सीपिया, स्टैफि, सल्फर, थूजा, विन्का। देखिये खाल (सिर की)।

उत्तेजना, चर्म की–कम हो या गायब हो (Analgesia, Anaesthesia)-ऐसेटिक एसिड, एकोन, आर्स, ऑरम, ब्यूफो, कैना इण्डि, कार्बोनि ऑक्सि, कार्बोनि सलफ्यू इलेइस, हायोस, इग्नै, कैली ब्रो, मर्क, नक्स वॉ, प्लम्ब मेट, पॉपुलस कैण्डि, सिकेलि, जिंक मेट।

चर्म की उत्तेजना, मौसम के परिवर्त्तन से अधिक हो डल्का, हीपर, कैली का, सोरि, सल्फर।

चकत्ते, दाग—नीले—आर्स, लीडम, सल्फ्यू एसिड।

चकत्ते, कत्थई—बैसिलिन, मैरि काडु, कोनियम, आयोड, फॉस, सीपिया, थूजा।

चकत्ते, घेरेदार, बदरंग, जो अकौता प्रदाह के बाद हो जायें—बर्बे वल, लैके, लाइको, मेडो, मर्क डल्सिस, मर्क, नाइट्रि एसिड, सिलि, सल्फर, अस्टिलैगो।

चकत्ते, ताँबे के रंग के—कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कोरैलि, सिफिलि।

चकत्ते, रक्तमय, लाल—ऐगैव, एलैन्थ, बैप्टि, बोथ्रॉप्स, मार्फि, ऑक्जे एसिड, सीकेल, सलफ्यूरि एसिड।

चकत्ते, लाल—ऐगैरि, बेल, कैल्के का, कोनियम, कैली का, सल्फर, वेरोनाल।

चकत्ते, सफेद—ग्रैफा, सल्फर।

चकत्ते, पीले—नैट्र फॉस, फॉस, प्लम्ब मेट, सीपिया, सल्फर।

चकत्ते; पीले जो हरे रंग के हो जायें—कोनियम।

अजगल्लिका (Strophulus Tooth rash)—एपिस, बोरैक्स, कैल्के का, कैमो, साइक्यूटा, लीडम, रस टॉ, स्पिरैन्थ, सुम्बुल।

अमौरी (Sudaminae)—ऐमो म्यूर, ब्रायो, अर्टिका।

साइकोसिस केश-गर्भ का जीर्ण प्रदाह (Sycosis Barber's Itch)—ऐन्थ्रोको, ऐण्टि टॉ, आर्स, ऑरम मेट, कैल्के का, कैल्के सल्फ, क्राइसैरोबिनम, साइक्यूटा, सिनाबेरिस, कॉकु, साइप्रेसक, ग्रैफा, कैली बाइ, कैली म्यूर, लिथिका, लाइको, मेडो, मर्क प्रे रूबर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि ऐसि, पेट्रोलि, प्लैण्टै, सैबाइना, सीपिया, सिलि, स्टैफि, स्ट्रॉन्शिया का, सल्फर, सल्फर आयोड, टेलूरियम, थूजा।

औपदंशिक—चर्म रोग (Syphilidae)—देखिये उपदंश रोग (पुरुष जननेन्द्रिय)।

मधुचक्र : दद्रु (Tinea favosa) Favus—ऐगैरिकस, आर्स, आयोड, ब्रोमि, कैल्के का, डल्का, ग्रैफा, हीपर, जुग्लैन्स रेजिया, कैली का, लैप्पा, लाइको, मेडो, मेजे, ओलियैण्ड, फॉस, सीपिया, सलफ्यूरि ऐसि, सल्फर, अस्टिलैगो, विन्का, वायोला ट्रि। देखिये खाल (सिर की)।

बहुरंगी दाद—(Chromophytosis)—बैसिलिनम, क्राइसैरो, मेजे, नैट्र आर्स, सीपिया, सल्फर, टेलूरियम।

दाद (Trichophytosis-Ringworm)—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टॉ, आर्स, बैसिलि, कैल्के का, कैल्के आयोड, क्राइसैरो, ग्रैफा, हीपर, जुग्लैन्स सिने, जुग्लैन्स रेजिया, कैली सल्फ, लाइको, मेजि, सोरि, रस टॉ, सेम्पर्वि, सीपिया, सल्फर, टेल्यूरियम, ट्यूबर, वायोला ट्रि। देखिये खाल (सिर की)।

दाद, जिसके चक्र एक-दूसरे को काटते हुए हों और शरीर के बड़े भाग पर फैले हों, साथ में ज्वर और अन्य धातु विकार—टेल्यूरियम।

दाद, जिसके चक्र अलग-अलग शरीर के ऊपरी भाग पर हों—सीपिया।

घाव (Ulcers)—ऐनैका ऑक्सि, एनैन्थे, ऐन्थ्रासि, आर्न, आर्स, ऐस्टेरि, बाल्सम पेरू, बेल, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैल्के सिलि, कैल्के सल्फ, कैलेण्डु,

कार्बो ऐसि, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कार्बन सल्फ, कॉस्टि, सिस्टस, क्लिमै, कोमोक्ले, कोनियम, क्रोटै, क्युप्रम आर्स, एचिने, फ्लोरिक ऐसि, गैलियम ऐपै, जिरैनियम, ग्रैफा, हैमे. हीपर, हिपोजी, हाइड्रै, आयोड, जुग्लै रेजिया, कैली आर्स, कैली बाइ; कैली आयोड, लैके, मर्क कार, मर्क सल्फ, मेजे, नैट्र सल्फ, नाइट्रि ऐसि, पियोनिया, पेट्रोलि, फॉस ऐसि, फॉस, फाइटो, सोरी, रेडियम, रैनन ऐक्वि, स्क्रोफु, सीपिया, सिली, सल्फ्यूरि एसिड, सल्फर, सिमिसि, टैरैण्टु क्यु, थूजा, ट्राइक्नोस ।

छूने से जल्दी खून बहे—आर्स, कार्बो वेज, हीपर, क्रियोजो, डल्का, लैके, मर्क, मेजे, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, फॉस ।

जलन हो—ऐलुमेन, ऐन्थ्रेसि, आर्स, कार्बो वेज, हीपर, क्रियोजो, मैगे, थूजा ।

कर्कटीय घातक—ऐन्थ्रैसि, आर्स, ऐस्टेरि, कार्बो ऐनि, चिमाफिला, क्लिमै; कॉण्डुरैं, फुलिगो, गैलियम ऐपा, हाइड्रै, क्रियोजो, लैके; टैरैण्टु क्यू, थूजा ।

गहरे—ऐसाफि, कोमोक्ले, कैली बाइ, कैली आयोड, म्यूर एसिड, नाइट्रि एसिड ।

काटने वाले, चेहरे के—कोनियम ।

नासूरी—कैल्के फ्लोर, कैलेण्डु, कैली आयोड, नाइट्रि एसिड, फाइटो, साइलि, थूजा ।

सुस्त मन्द—एनागैलिस, ऐस्टेरि, बैराइटा का, कैल्के फ्लोर, कैल्के आयोड, कैल्के फॉ, कार्बो वेज, चेलिडो, कोनियम, क्युप्रम, युकैलि, युफोर्बि, फ्लोरिक एसिड, फुलिगो, जिरैनि, ग्रैफा, हाइड्रै, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, लाइको, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, फाइटो, सोरि, पाइरो, साइलि, सल्फर, सिफिलि, सिजीजियम ।

प्रदाहिक—आर्स, बेल, कैलेण्डु, कार्बो ऐनि, फाइटो । देखिये उत्तेजनीय ।

सड़ने वाले और फैलने वाले—आर्स, कार्बो वेज, क्रोटै, कैली आर्स, मर्क को, मर्क डल्सिस, मर्क, नाइट्रि एसिड । देखिये सड़न ।

कण्ठमालिक विकारी—कैल्केरिया के योग, सिन्को, हीपर, आयोडाइड के योग, मरक्युरी के योग, नाइट्रि एसिड, साइलि, सल्फर ।

उत्तेजनीय—ऐगंस्टूरा, आर्न, आर्स, ऐसाफि, कैलेण्डु, डल्का, ग्रैफा, हीपर, लैके, मेजे, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, साइलि, टैरे क्यू ।

चिकने, हल्के पीले, छिछले सिर की खाल और लिंग पर—मर्क ।

छिछले सतह पर; चिटके—आर्स, कोरैलि, लैके, नाइट्रि एसिड, थूजा ।

सतह पर, दाद की तरह—चेलिडो, मर्क कार, मर्क सल्फ, फॉस एसिड ।

उपदंशीय—आर्स, ऐसाफि, कार्बो वेज, सिनाबेरिस, सिस्टस, कोरैलियम, फ्लोर एसिड, ग्रैफा, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, लाइको, मर्क कार, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, फाइटो, सार्सा, स्टिलि।

आघात के कारण—आर्न, कोनियम।

नसों की गाँठ वात (Varicose)—कैल्के फ्लोर, कैलेण्डु, काडु' मैरि, कार्बो वेज, क्लिमै विटै, कोण्डुरै, युकैलि, फ्लोर एसिड, हैमे, लैके, फाइटो, सोरि, पाइरो, सिकेलि।

मस्सेदार घाव, गालों पर—आर्स।

पैर की अंगुलियों पर छाले के घाव जिनके किनारे पर्के हों और—जिनकी सतह तर, लाल और चपटी हो—पेट्रोलि।

अरुण ज्वर के घाव—कैमोमिला।

घाव, जिनका तल भाग नीला या काला हो—आर्स, कैल्के फ्लो, कार्बो ऐनि, लैकेसिस; म्यूर एसिड, टैरे क्यू।

जिनका तल भाग सूखा, चर्बीला हो—फाइटो।

जिनका तल भाग कड़ा हो—एल्यूमेन, कैल्के फ्लोर, कोमिक्लै, कोनियम।

जिनका तल भाग चर्बीला हो और चारों तरफ गहरे रंग का चक्र हो, गन्दा, अस्वस्थ दिखाई दे, चिपकने की प्रवृत्ति—मर्क बाइ।

जिनका तल भाग कच्चे मांस जैसा हो—आर्स, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड।

जिनका स्राव घृणित, मवादी, चर्बीला हो—एनैन्थ, ऐन्थ्रैमि, आर्स, एसाफि, बैप्टि, कैल्के फ्लो, कैलेण्डु, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कोनियम, क्रोटो टिग, एचिने, युकैली, फ्लो एसिड, जेल्से, जिरैनियम, हीपर, लैके, मर्क कार, मर्क सल्फ, मेजे, म्यूरि ऐसि, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, फॉस एसिड, सोरि, पाइरो, पल्से, साइलि, सल्फर, थूजा।

जिनका स्राव चमकीला, चिकना हो—ग्रैफा, कैली बाइ।

जिनका स्राव खूनी हो—ऐस्टेरियम, कार्बो वेज, कार्बो एसिड, कोरैलि, मेजे।

जिनका स्राव पतला तीखा; घृणित हो—आर्स, ऐसाफि, कैली आयोड, नाइट्रि एसिड।

जिनका किनारा गहरा, बराबर सामान्य हो, पंच किया हुआ मालूम हो—कैली बाइ फॉस।

जिनका किनारा अकौतायुक्त हो, ताँबे से रंग का—कैली बाइ।

जिनका किनारा गलित हो—ऐन्थ्रैसि, आर्स, कार्बो वेज, क्रियोजो, लैके, नाइट्रि एसिड, सिकेल, सल्फ्यूरि एसिड, टैरेण्टु क्यू।

जिनका किनारा कड़ा हो—कैल्के फ्लोर, कार्बो ऐनि, कोमोक्ले, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, फॉस एसिड ।

जिनका किनारा टेढ़ा-मेढ़ा, क्रमभ्रष्ट हो—मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड ।

जिनका किनारा उभरा हो—आर्स, कैलेण्डु, नाइट्रि ऐसि, फॉस ऐसि, साइलि । देखिये मांसांकुर होना ।

जिनमें स्पंज जैसा मधुरिका हो—म्यूरि एसिड ।

जो चमकीले,चिकने दिखाई दें- लैक कैना ।

जिनमें अधिक मात्रा में मांसांकुर हो - एपियम ग्रे, अ र्स, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, फ्लोरिक एसिड, नाइट्रि एसिड, पेट्रोलि, फॉस ऐसि, एसि सिलि, थूजा ।

जिनमें खुजली हो—मेजे, फॉस एसिड, साइलि ।

बिना दर्द या लाली, खुरखुरा तल भाग; मैला मवाद—फॉस एसिड ।

दर्द के साथ छोटी जगहों में, बिजली के धक्कों की तरह, गरमी से अधिक हो - फ्लोरि एसिड ।

दर्द के साथ खपच्ची की तरह गड़न—हैमे, हीपर, नाइट्रि एसिड ।

जिनके चारों तरफ छोटे दाने हों—ग्रिण्डे, हीपर, लैके, मर्क सॉल ।

जिनके चारों तरफ छोटे छोटे घाव हों—फॉस, सिलि ।

साथ में गशी, नशीली अवस्था, मन्द सन्निपात, शिथिलता हो—बैप्टी ।

जिनके चारों तरफ छोटे छाले हों, लाल चमकीला घेरा हो - फ्लोरि एसिड, हीपर, मेजे ।

अस्वस्थ चर्म—जरा-सी छिलन पके, या कठिनाई से अच्छी हो—बोरै, ब्यूफो, कैल्के का, कै के सल्फ, कैलेण्डु, कार्बन सल्फ, कैमो, ग्रैफा, हीपर, हाइड्रो, लाइको, मर्क सल्फ, पेट्रोलि, पाइप, मेथाइ, सोरि, पाइरो, साइलि, सल्फर ।

छत्ते, जुलपुत्ती, शीतलपित्त—(Urticaria, Hives, Nettle Rash)—एकोन, एनैका, एन्थ्रोको, ऐण्टि क्रू, ऐण्टिपाइरिन, एपियम ग्रै, एपिस, आर्स, ऐस्टैकस, बर्बे वल, बॉम्बाइज, बोविस्टा, कैल्के का, कैम्फो, चिनिसल्फ, क्लोरेल, सिमिसिफ्यूगा, सिना, कॉण्डुरै, कोनियम, कोपेवा, क्रोटो टिग, डल्का, पैगोना, फ्रैगैरिया, हीपर, इक्थि, इग्नै, इपिका, कैली का, कैली क्लो, मेडूसा, नैट्र म्यूर, नेट्र फॉस, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पेट्रोलि, पल्से, रस टॉ, रस वेने, रोबीनिया, सैनिकू, सीपिय, स्ट्रैन, स्ट्रोफै, स्ट्रिक्नि फॉ, सल्फर, टेरेबि, टेट्राडाइन, ट्रिऔस्टि, अर्टिका, अस्टिलैगो, वेस्पा ।

जीर्ण—ऐनैका, ऐण्टि क्रू, ऐण्टिपाइ, आर्स, ऐस्टैकस, बोविस्टा, कैल्के का, क्लोरेल, कोण्डुरै, कोपेवा, डल्का, हीपर, इक्थियो, लाइको, नैट्र म्यूर, रस टॉ, सीपिया, स्ट्रोफै, सल्फर, अर्टिका ।

अस्थि गुल्मीय—बोविस्टा, अर्टिका।

ग्रन्थि गुल्मीय—एनैका, बोलेटस ल्यूरि।

कारण—साथ के लक्षण—आवेग के आक्रमण से—ऐनैका, बोविस्टा, इग्नै, कैली ब्रोमे।

अति परिश्रम से - कोनियम, नैट्र म्यूर।

बाहरी ठण्डक लगने से—क्लोरेल, डल्का, रस टॉ।

पाकाशयिक विकार से—ऐण्टि क्रू, आर्स, कार्बो वेज, कोपेवा, डल्का, नक्स वॉ, पल्से, रोबीनिया, ट्रियोस्टियम।

मासिक-धर्म की अवस्थाओं से—बेल, सिमिसि, डल्का, कैली का, मैग का, पल्से, अस्टिले।

घोंघा मछली के कारण से (Shell Fish)—कैम्फोरा।

मलेरिया ज्वर दब जाने से—इलैटी।

पसीना से—एपिस।

जुकाम के साथ—सेगा, डल्का।

सविराम ज्वर की सर्दी के साथ—इग्नै, नैट्र म्यूर।

ज्वर और कब्ज के साथ—कोपेवा।

बारी-बारी काली खाँसी आने के साथ—आर्स।

दस्त के साथ—एपिस, बोविस्टा, पल्से।

शोथ के साथ—एपिस, वेरा।

पैर की अँगुलियाँ घिसने के साथ—सल्फर।

खुजलाने के बाद खुजली, जलन के साथ, बिना ज्वर के—डल्का।

जिगर विकार के साथ—एस्कैकस फ्लूवियें।

काली लकीरों के छोटे दाग के साथ या विसर्प स्फोट के साथ—फ्रैगेरिया।

वात रोग का लँगड़ापन, धड़कन, दस्त के साथ - बोवि, डल्का।

बारी-बारी वात रोग के साथ—अर्टिका।

छपी के दब जाने के साथ—एपिस, अर्टिका।

एकाएक आक्रमण होने और गायब हो जाने के साथ—ऐण्टि पाइरीन।

एकाएक घोर आक्रमण के साथ, गर्मी—कैम्फोरा।

घटना-बढ़ना—बढ़ना—वसःसन्धिकाल में—मोर्फि, अस्टिलैगो।

मासिक-धर्म के समय—ऐण्टि क्रू, आर्स।

रात के समय—ऐण्टि क्रू, आर्स।

स्नान करने से, सुबह टहलने से—बोविस्टा।

ठण्डक से—आर्स, डल्का, रस टॉ, रूमेक्स, सीपिया।

परिश्रम से; व्यायाम से—एपिस, कैल्के का, हीपर, नैट्र म्यूर, सोरीनम, सैनिकू, अर्टिका।

फल, सूअर-मांस से—पल्से।

खुली हवा से—नाइट्रि एसिड, सीपिया।

मदयुक्त पेय से—क्लोरेल।

हल्की गरमी मे—एपिस, डल्का, कैली का, लाइको, सल्फर।

बच्चों में—कोपेवा।

सामयिक, प्रति वर्ष—अर्टिका।

घटना—ठण्डे पानी में—एपिस, डल्का।

गरम चीज पीने से—क्लोरेल।

खुली हवा से—कैल्के का।

हल्की गरमी से—आर्स, क्लोरेल, सीपिया।

गो-चेचक रोग—(Vaccinia)—ऐकोन, ऐण्टि टा, एपिस, बेल, मर्क सल्फ, फॉस, सिली, सल्फर, थूजा, वैक्सि।

मांसांकुर : मांस के दाने—Verucca (Warts)—ऐसेटिक एसिड, ऐमो का, ऐनैका ऑक्सि, ऐनैगै, ऐण्टि टा, ऐण्टि क्रू, आर्स ब्रो, ऑरम म्यूर नैट्रो, बैराइटा का, कैल्के का, कैस्टोरिया, कैस्ट इक्वि, कॉस्टि, क्रोमि ऑक्सि, सिनाबे, डल्का, फेरम पिक, कैली म्यूर, कैली परमै, लाइको, मैग सल्फ, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, रैनन वल, सेम्पर्विटेक्टार, सीपिया, साइलि, स्टैफि, सल्फर, सल्फ्यूरिक एसिड, थूजा, एक्स-रे।

खून सरलता से बहे—सिनाबेरिस।

खुरखुरे, बड़े, खून जल्दी बहे—कॉस्टि, नाइट्रि एसिड।

गुच्छेदार, अंजीरी मस्से (Condylomata)—कैल्के का, सिनाबे, युफ्रेसिया, कैली आयोड, लाइको, मेडो, मर्क को, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, सैबाइना, सीपिया, साइलि, स्टैफि, थूजा।

दरारेदार, खुरखुरे, चारों तरफ भूसीदार—लाइको।

चिपटे, चिकने, दर्दीले—रूटा।

कांटेदार चौड़े—रस टॉ।

बड़े, घिसे हुए—थूजा।

बड़े, चिकने, मांसदार, हाथों के पिछले भाग पर—डल्का।

चर्म क्षय सम्बन्धी—(Lupoid)—फेरम पिकरिक।

तर, खुजली वाले, चिपटे, चौड़े—थूजा।

तर, पसीजते—नाइट्रि एसिड।

दर्दीले, कड़े,तनाव वाले, चमकीले—साइलि।

दर्दीले, गड़न वाले—नाइट्रि एसिड, स्टैफि, थूजा।

वृन्तपूर्ण—कॉस्टि, लाइको, नाइट्रि एसिड, सैबाइना, स्टैफि, थूजा।

शरीर के किसी भी भाग पर—नैट्र सल्फ, सीपिया।

स्तनों पर—कैस्टोरियम।

चेहरे और हाथों पर—कैल्के का, कॉस्टि, कार्बो ऐनि, डल्का, कैली का।

माथे पर—कैस्टोरिया।

जननेन्द्रिय-मलाशय क्षेत्र पर—नाइट्रि एसिड, थूजा।

हाथों पर—एनैका, ब्यूफो, फेरस मैग्नेट, कैली म्यूर, लैके, नैट्र का, नैट्र म्यूर, रस टॉ, रूटा।

गर्दन, बाहों, हाथों पर, मुलायम, चिकने—ऐण्टि क्रू।

नाक पर, अंगुलियों के सिरों व भौंहों पर—कॉस्टि।

लिंग पटल पर—सिनाबे, फॉस एसिड, सैबाइना।

छोटे, सारे शरीर पर—कॉस्टिकम।

चिकने कैल्के का, रूटा।

प्रमेह से उपदंशीय—नाइट्रि एसिड।

अंगुलबेड़ा, गल्का—(Whitlow-Felon-Panaritium)—ऐलूमि, ऐमो का, ऐन्थ्रेसि, एपिस, बेल, ब्रायो, ब्यूफो, कैल्के फ्लो, कैल्के सल्फ, कैलेण्डु, सेपा, क्रोटै, डायस्को, फ्लोरि एसिड, हीपर, हाइपेरि, लीडम, मर्क सल्फ, माइरिस्टिका सेबि, नैट्र सल्फ, ओलि माइरिस्ट, फॉस, साइलि, टैरैण्टु क्यू।

दूषित प्रवृत्ति—ऐन्थ्रासि, आर्स, कार्बो ऐसिड, लैकेसिस।

उत्पन्न होने की सम्भावना—डायस्को, हीपर।

बार-बार होना—साइलीशिया।

आघात, चोट के कारण से—लीडम।

ज्वर

ठण्डक—एबीज कैना, ऐकोन, एथूजा, ऐगैरि, ऐलूमि, ऐण्टि टा, एपिस, ऐरानिया, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, एसारम, ऐस्टैकस, बैप्टि, बर्बे वल, ब्रायो, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैल्के सिलि, कैलेण्डु, कैम्फोरा, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो वेज, कैस्टोरियम,

कॉस्टिकम, सीड्रन, साइमेक्स, कोकेन, कोल्चि, कोर्नस फ्लोरिडा, क्रैटेगस, डल्का, एचिने, इयुरेटो पर्प्यु, फेरम मेट, जेल्से, ग्रैफ, हेलोडर्मा, हीपर, इपिका, जेट्रोफा, कैली का, लैक डिफ्लो, लॉरा, लीडम, लोबे पर्प्यु, लाइको, मैग फॉस, मेनियान्थे, मर्क सल्फ, मोर्फि, मॉस्कस, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस, पिप्सिन, प्लैटि, पल्से, वाइरस, रेडियम, सैबै ड, साइलि, सिफि, सल्फर, टैबेकम, लाला एरानिया, बैले, वेरेट्र ऐल्बम।

ठंडक, मृगी के आक्रमण के बाद—क्यूप्रम मेट।

ठण्डक, उदर में, टाँगों में—मेनियान्थे।

ठण्डक, बाहों में—रेफै।

ठण्डक, पीठ और पैरों में—बेल, कैन्थे।

ठंडक, पीठ में, कन्धों के डैनों में—ऐमो म्यूर, कैस्टोरिकम, लैक्नैन्थ, पाइरो, ट्यूबर।

ठंडक, पीठ में, कमर से टाँगों तक—हैमे।

ठंडक, शरीर और पैरों में, सिर और चेहरा गरम—आर्न।

ठंडक, शरीर में, चेहरे और सांस में गरमी के साथ—कैमो।

ठंडक, हड्डियों में, अंगों में तीव्र, विस्तृत—पाइरो।

ठंडक, सीने में खुली हवा में टहलने पर—रैनन बल।

ठंडक, अगली बाहों में—कार्बो वेज, मेडो।

ठंडक, हाथों में—ड्रोसेरा।

ठंडक, हाथों और पीठ में—कैक्टस।

ठंडक, हाथों में, पीठ, पैर और घुटनों में—बेन्जो एसिड, चिनि आर्स।

ठंडक, हाथों में, शरीर गरम—टैबे।

ठंडक, सिर में, और हाथ-पैर में—कैल्के का, फेरम मेट।

ठंडक, घुटनों में—कार्बो वेज, साइमेक्स, फॉस।

ठंडक, निचले अंगों में—कैल्के का, कॉकु।

ठंडक, कटि-प्रदेश में—एगैरिकस।

ठंडक, किसी एक भाग में—ऐगैरम, कैलेडियम, कैल्के का, कैली बाइ, पेरिस, पल्से।

ठंडक, लहर के साथ रीढ़ में—एबीज कैने, ऐकोन, इस्कियु, आर्स, बोलेटस, कैलेण्डु, कॉनवे, डल्का, एचिनै, फ्रैक्सि ऐमे, जेल्से, हेलोडर्मा, मैग फॉ, मेडो, रैफे, स्ट्रिक्नि, ट्यूबर, जिंक मेट।

ठंडक, साथ में, कन्धों, जोड़ों और पिठासों में टीस, जम्हाई लेना, अँगड़ाई—बोलेटस।

ठंडक, साथ में स्राविक जुकाम—मर्क सल्फ।

ठंडक, साथ में खाँसी, सूखी, थकावट वाली—रस टॉ।

ठंडक, जीवन ताप की कमी—ऐलूमि, बैराइटा का, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैल्के, साइलि, लीडम, लाइको, सोरि, सीपिया, स्टैफि, थूजा, वेरेट्रम एल्बम।

ठंडक, साथ में पेट से कपड़ा हटाना चाहे—टैबे।

ठंडक, साथ में शाम के समय किसी भी तरह का दर्द हो, गरम कमरे में—पल्से।

ठंडक, साथ में चेहरा, सिर, हथेली गरम—फेरम मेट।

ठंडक, साथ में चेहरा गरम—ड्रोसेरा, इग्नै।

ठंडक, साथ में वादी-शूल, मिचली, चक्कर, गरम चर्म, पसीना, सिर में गरमी—कॉकुलस।

ठंडक, साथ में सिर दर्द—कॉनवै।

ठंडक, साथ में सिर दर्द जो बीच वाले भाग तक बढ़े, आँखें लाल—सीड्रन।

ठंडक, साथ में गरमी और अँगड़ाई लेने की इच्छा—रस टॉ।

ठंडक और गरमी बारी-बारी—एबीज एनाइ, कोनि, एपिस, आर्स, बैप्टी, बेल, बोलेटस, ब्रायो, कैमो; डिजि, लॉरो, मैग सल्फ, मर्क को, मर्क सल्फ, फाइटो, पल्से, सालैनम नाइ, सोलिडैगो।

ठंडक, साथ में बदमिजाजी—कैप्सिकम।

ठंडक, साथ में बकवादीपन—पोडो।

ठंडक, साथ में मिचली—ऐचिनेसिया, इपिका।

ठंडक, साथ में स्नायविकता—ऐसैरम, सिमिसि, क्रोकस, जेल्से, गॉसिपियम, नैट्र म्यूर।

ठंडक, जब गरमाहट से कोई आराम न मिले—ऐरैनिया, कैडमियम सल्फ, कॉस्टि, चिनि सल्फ, ड्रोसेरा, लॉरो, मैग फॉस, मर्क सल्फ, पुलेक्स, पल्से, साइलि।

ठंडक, साथ में दर्द—काफि, डल्का, पल्से, सिली।

ठंडक, साथ में दर्द अंगों में अकड़न, व्याकुलता—आर्स।

ठंडक, फीके चेहरे के साथ—कोकेन।

ठंडक, साथ में अति खाज—मेजे।

ठंडक, साथ में वात दर्द, चोटीलापन—बैप्टीसिया, होमेरस, रस टॉ।

ठंडक, साथ में विषैले लक्षण—पाइरोजेन, टैरेन्टू क्यू।

ठंडक, साथ में दम घुटने का संवेदन—आर्जे नाइट्रि, मैग फॉस।

ठंडक, साथ में प्यास—ऐकोन, आर्स, कैप्सिकम, कार्बो वेज, कॉनवै, डल्का, इग्नै, सिकेल, सीपिया, वेरैट्र एल्बम।

ठंडक, बिना प्यास के—ड्रोसेरा, जेल्से, नक्स मॉ, पल्से।

ठंडक, क्रोध के बाद अधिक हो—ऑरम, ब्रायो, कैमो।

ठंडक, दिन के भोजन के बाद अधिक हो—मैग फॉस।

ठंडक, पीने के बाद अधिक हो—कैप्सिकम।

ठण्डक, दोपहर के पहले खाने के बाद अधिक हो—पल्से।

ठण्डक, तरी, पानी बरसने से अधिक हो, निम्न ताप से कम न हो—ऐरानिया।

ठण्डक, जरा-सी बाहरी हवा से अधिक हो, हवा शरीर के भीतर घुसे—ऐकोन, ऐगैरि, ऐग्रैफिस, ऐमो फॉस, आर्जे नाइट्रि, आस, आर्स आयोड, ऐस्टेकस, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैलेण्डुला, कैन्चाला, कैप्सि, सिंकोना, हीपर, कैली का, मर्क को, मर्क सल्फ, मेजे, नक्स वॉ, सोरी, सीपिया, साइलि; ट्यूबर।

ठण्डक, जरा-सी हरकत से अधिक हो—आर्स, नक्स वॉ, स्पाइजे।

ठण्डक, स्पर्श से अधिक हो—ऐकोन, कैली का, साइलि, स्पाइजे।

ठण्डक, निम्न ताप से, कपड़ा ओढ़ने से अधिक हो—कैम्फोरा, हीपर, मेडो, सैनिक्यूला, सिकेल, सल्फर।

ठण्डक, सुबह को अधिक हो—कैल्के का।

ठण्डक, शाम और रात के लगभग अधिक हो—ऐकोन, ऐलूमि, ऐमो का, आर्स, सीड्रन, डल्का, मैग का, मैग फॉस, मेन्थोल, मर्क सल्फ, ओलियम जेको ऐसे, फॉस, पल्से, सीपिया।

ज्वर : ताप—एब्रीज नाइ, ऐसेटिक एसिड, एकोन, इस्क्यु, इथूजा, ऐगैरिकस, ऐग्रोस्टिस, एलियम सैटाइवम, ऐण्टि क्रू, आर्न, बैप्टि, बेल, ब्रायो, कैलोट्रो, कैम्फो, कैन्थे, कार्बो वेज, कैमो, चिनि-आर्स, सिमिसि, सिन्कोनो, डल्का, युकैलि, फेरम फॉस, जेल्से, ग्लोनॉ, इग्नै, आयोड; मर्क, मिलेफो, मोर्फि, नाइट्रि एसिड, नक्स मो, नक्स वो, ओपियम, फाइटो, पुलेक्स, पल्से, रस टॉ, सैम्बू, सीपिया, साइलि, स्पाइरिया, स्पाइरैन्थस, स्ट्रैमो, टेरेबि, थूजा, वैले, वेरैट्र वि।

ज्वर-ताप, पेडू क्षेत्र से ऊपर उठे—सीपिया।

ज्वर ताप, क्रोध से—कैमो, कॉकु, सीपिया।

ज्वर, ताप, शाम में, ताप-काल में सो जाय, तापांत पर जागे—कैलैडि।

ज्वर-ताप लहरों में उबाल—ऐसेटिक ऐसि, ऐमिल, ऐण्टिपाइरी, आर्स, आर्स आयोड, बोलेटस, कैल्के क, कार्ल्स, चिमैफि, डिजि, एरेक्टा, फेरम आयोड, फ्रैक्सि ऐमे, हीपर, इग्नै, इण्डिगो, आयोड, जैबोरै, कैली का, लैके, लाइको, मेडो, मर्क सल्फ, निकोल, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, सैंग्वि, सीपि, सल्फर, सल्यूरिक एसिड, अर्टिका, वैले, विस्कम, योहिम्बि।

ज्वर ताप, पीठ के निचले भाग से नितम्ब, जाँघों में—बर्बे वल।

ज्वर-ताप, हथेलियों में – चेनोपो ग्लॉ।

ज्वर-ताप, पैरों के तलवे में—कैन्थे।

ज्वर-ताप, लघु स्थानों में—ऐगैरि, एपिस।

ज्वर-ताप, सारे शरीर में, चेहरा लाल, गरम, तब भी जरा-से हिलने से, कपड़ा हटाने से शीत आये—नक्स वॉ।

ज्वर ताप, ठण्डक की प्रधानता—ब्रायो।

ज्वर ताप, शूल के साथ—वेरैट्र एल्बम।

ज्वर-ताप, सुबह के लगभग कम होता जाये, बिना पसीना—जेल्से।

ज्वर-ताप, सन्निपात के साथ, सिर दर्द—ऐगैरि, बेल।

ज्वर-ताप, साथ में कड़ी औंघाई, बुद्धि मन्द, पीड़ा जनक, करवटें बदलना किसी ठण्डी जगह की खोज, कपड़ा हटवाना चाहे, कै, दस्त विक्षेप—ओपियम।

ज्वर-ताप, साथ में सूखापन, सोते में या सोते ही गहरी नींद, सूखी खाँसी—सैम्बू।

ज्वर-ताप, साथ में सूखापन, बिना पसीना—ऐलूमि, नक्स मॉ।

ज्वर-ताप, उत्तेजना, स्नायविक कुतूहल के साथ—एकोन, टेला, ऐरानिया।

ज्वर-ताप, बाहरी ठण्डक के साथ—आर्स, कैन्थे।

ज्वर-ताप, साथ में गशी, पसीना—डिजि; सीपिया, सल्फर, सल्यूरिक एसिड।

ज्वर-ताप, साथ में वादी, मल त्यागना—रेडियम।

ज्वर-ताप, साथ में सिर दर्द—ऐस्टैकस।

ज्वर-ताप, साथ में सिर दर्द, मानों हजारों हथौड़े लग रहे हों—नैट्रम म्यूर।

ज्वर-ताप, साथ में चेहरा गरम, पीठ ठिठुरी, पैर ठण्डे—पल्से।

ज्वर-ताप, साथ में चेहरा गरम, हाथ-पैर ठण्डे—स्ट्रैमो।

ज्वर-ताप, साथ में चेहरा गरम, शरीर ठण्डा, शिथिलता की अवस्था—आर्न, फाइटो।

ज्वर-ताप, साथ में चेहरा गरम, प्रचण्ड प्यास, पित्त-स्वाद, मिचली, चिन्ता, बेचैनी, सूखी जबान, क्रोध के बाद—कैमो।

ज्वर-ताप, साथ में कई दिनों पहले से भूख बढ़ जाये—स्टैफि।

ज्वर-ताप, साथ में आँखों में खुजली, अंगों में फटन, शरीर में सुन्नता, सिर-दर्द—सीड्रन।

ज्वर-ताप, साथ में सुस्ती, तीसरे पहर, सारे शरीर में थरथराहट—लिलि टिग्रि।

ज्वर-ताप, रात में पसीना—एसेटिक एसिड, हीपर।

ज्वर-ताप, साथ में धड़कन, हृदय कष्ट—कैल्के का।

ज्वर-ताप, साथ में शिथिलता—ऐण्टि टा, चिनि आर्स, फाइटो।

ज्वर-ताप, साथ में टपकन—बेल, लिलि टिग्रि, पल्से, थूजा।

ज्वर-ताप, साथ में टपकन और शिराओं में तनाव—पल्से, थूजा।

ज्वर-ताप, साथ में बायें गाल पर लाल चकत्ते—ऐसेटिक एसिड।

ज्वर-ताप, साथ में बेचैनी, गाल लाल, संवेदन-मन्दता—आयोड।

ज्वर ताप, साथ में अशान्त अनिद्रा—कैल्के का।

ज्वर-ताप, साथ में चर्म सूखा, चेहरा लाल या लाल और पीला बारी-बारी, धमनियों में उत्तेजना, कष्ट बेचैनी करवटें बदला करे—ऐकोन।

ज्वर-ताप, साथ में सूखा चर्म, तीखी गन्ध, धमनी उत्तेजना, सतह पर की रक्त नलिकाएँ तनी हुई—बेल।

ज्वर-ताप, साथ में धीमी, टिकाऊ गति, स्नायविकता, चक्कर—कॉकुलस।

ज्वर-ताप, साथ में कपड़ा ओढ़ने से दम घुटने का संवेदन—आर्जे नाइट्रि।

ज्वर-ताप, साथ में शरीर भर में दर्दीलापन—आर्न, फ्रैंनिसिसि, फाइटो, रस टॉ।

ज्वर-ताप, साथ में विक्षेप—ऐसिटैनिलिड, बेल।

ज्वर-ताप, साथ में अंगों में अँगड़ाई—रस टॉ।

ज्वर-ताप, एकाएक आक्रमण, सूखा, जलता चर्म, तेज छोटी, तनी नाड़ी—पाइरो।

ज्वर-ताप, कपड़ा ओढ़ने की प्रवृत्ति के साथ—इग्नै, नक्स वॉ, सैम्बु, स्टैन।

ज्वर-ताप, प्यास के साथ—ऐकोन, ऐण्टि क्रू, ब्रायो, लॉरो, पल्से, टेरेबि।

ज्वर-ताप, बिना प्यास—ऐसेटिक एसिड, इथूजा, बेल, जेल्से, इग्नै, म्यूरि एसिड, नक्स मॉ, पल्से, सैम्बु।

ज्वर-ताप, रात में अधिक हो—ऐकोन, इस्क्यु, ऐण्टि क्रू, आर्स, बेल, कैलेडि, कैल्के का, जेल्से, हीपर, कैली सल्फ, मैग का, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, साइलि, स्टैन, अर्टिका।

ज्वर-ताप, मासिककाल में अधिक हो—कैल्के का, थूजा।

ज्वर-ताप, सोते में अधिक हो—ऐकोन, कैलेडि, सैम्बू।

ज्वर-ताप, कपड़ा ओढ़ने से अधिक हो—इग्नै।

ज्वर-ताप, हरकत से अधिक हो, फिर शीत—नक्स वॉ।

ज्वर-ताप, ओढ़ना हटाने से अधिक हो—मर्क सल्फ, नक्स वॉ, सैम्बु, स्ट्रॉन्शिया।

ज्वर-ताप, तीसरे पहर अधिक हो—ऐजैडिरै, बेल, फेरम।

ज्वर-ताप, सुबह बिस्तर में अधिक हो—कैली का।

ज्वर-ताप, जागने पर अधिक हो—लॉरोसिरेसस।

ज्वर-ताप, बैठते समय, खुली हवा में टहलने से अधिक हो—सीपिया।

पसीना : प्रकार—खूनी—क्रोटै, लैके, लाइको, नक्स वॉ।

ठण्डा, लसीला—एबीज कैने, ऐसेटिक एसिड, इथूजा, ऐमाइल, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि टॉ, आर्स, बेन्जो एसिड, कैक्ट, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैम्फो, कैन्थे, कार्बो वेज, सिन्को, कॉर्नस फ्लो, क्रोटै, क्युप्रम आर्स, डिजि, डल्का, इलैप्स, इयुफोर्बि, फॉर्मेलीन, इग्नै, इपिका, लैके, लॉरो, लोबे इन्फ्ला, ल्युपुल, लाइको, मेडोरि, मर्क कार, मर्क साइ, मर्क सल्फ, नैट्र का, पाइरो, सैनिक्यू, सीकेलि, सल्फ्यूरि एसिड, टैबेकम, टेला ऐरा, टेरेबि, वेरेट्र एल्ब, वेरेट्र वि।

चिकना, तेल जैसा—ब्रायो, कार्बो वेज, सिन्को, ल्यूपुल, मैग का, मर्क सल्फ।

गरम—इस्कियु, कार्बो वेज, कैमो, चेनोपो ग्लै, लैके, ओपियम, टिलिया, वेरैट्रि वि।

स्थान : अनिश्चित स्थान में—ब्रायोनिया, कैल्के का, सिन्को, फ्लोरि एसिड, हीपर, पेट्रोलि, फॉस, प्लेकट्रैन्थस, पल्से, सेलेनि, साइलि, सल्फर।

स्थान : शरीर के अगले भाग में—सेलेनियम।

स्थान : काँखों में—कैल्के का, नाइट्रि एसिड, ओस्मि, पेट्रोलि, सीपिया, साइलि। देखिये चालन-यन्त्रमंडल।

स्थान : सीने पर—कैल्के का, कॉक्कु, युफ्रैसिया, फॉस, स्टैनम, स्ट्रिक्नि।

स्थान : ढँके हुए भागों पर—बेल।

स्थान : अंगों पर, ऊपरी, दाहिनी तरफ के—फार्मेलिन।

स्थान : चेहरे पर, माथे में—ऐसेटिक एसिड, बेन्जो एसि, कैल्के का, सिना, इयुफोर्बि लैसि, लोवे इन्फ्ला, फॉस, रियूम, सिनापिस, स्टैनम, सल्फर, वैले, वेरैट्र एल्बम।

स्थान : परों पर—कैल्के का, ग्रैफा, लैक्टिक एसिड, मर्क सल्फ, पेट्रोलि, फॉस, सीपिया, साइलि। देखिये पैर (चालन-यन्त्रमंडल)।

स्थान : जननेन्द्रिय पर—कैल्के का, पेट्रोलि, फॉस एसिड, थूजा। देखिये पुरुष जननेन्द्रिय मंडल।

स्थान : हाथों पर—कैल्के का, सिना, कोनि, फ्लोरि एसिड, एसि फॉस, साइलि। देखिये चालन यन्त्र-मण्डल।

स्थान : सिर पर, गरदन की जड़ में—बेल, कैल्के का, फॉस, पल्से, रियूम, सैम्बू, सैनिकू, साइलि, स्टैनम, स्ट्रिक्निन, वेरैट्र एल्बम।

स्थान : निचले भाग पर—क्रोकस, रैनन ऐक्रिस, सैनिकू।

स्थान : जिन भागों की करवट लेटे—ऐकोन।

स्थान : उन भागों पर जो एक दूसरे के स्पर्श में हों—निकोल सल्फ।

स्थान : शरीर के पिछले भागों पर—सीपिया।

स्थान : उस करवट जिधर लेटा न हो—बेन्जो, थूजा।

स्थान : उन भागों पर जो ढँके न हों—थूजा।

स्थान : ऊपरी भागों पर—ऐजैडि, कैल्के का, कैमो, कैली का, नक्स वॉ, साइलि।

स्थान : एक ही तरफ—जैबोरै, नक्स वॉ, पल्से।

गन्ध घृणित, तीव्र—आर्टी वल, बैप्टी, ब्यूट्रिक एसिड, कैल्के का, कार्बो ऐनि, साइमेक्स, कोनि, डैफ्ने, फ्लोरि एसिड, हीपर, कैली आयोड, ल'इको, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, ओलि ऐनि, ओस्मि, पेट्रोलि, फॉस, सोरि, पल्से, सीपिया, साइलि, सोलेमन ट्यूबरो, स्टैनम, स्टैफि, सल्फर, टैक्सस, थूजा, वैरियो। देखिये दुर्गन्धित पसीना, Bromidrosis (Skin-चर्म)।

गन्ध, अप्रिय—स्टैनम।

गन्ध खट्टी, तीखी, तेजाबी—आर्न, ब्रायो, कैल्के का, कैमो, फ्लोरिक एसिड, ग्रैफा, हीपर, क्रियोजो, लैक डिफ्लो, मैग का, मर्क, नक्स वॉ, पाइरो, रियूम, रोबिनिया, सैनिकू, सीपिया, साइलि, सल्फ्यू एसिड, थूजा।

गन्ध, मीठी—कैलैडि, थूजा।

गन्ध, पेशाबी—इरिजियम एक्वेटि, नाइट्रि एसिड।

अत्यधिक पसीना (Hyperidrosis)—ऐसेटिक एसिड, ऐकोन, इस्क्यु, एगैरिसिन, ऐमो ऐसेटि, ऐण्टि टा, आर्स, आर्स आयोड, बैप्टी, बेल, बोलेटस, ब्रायो, कैल्के का, कैन्थे, कैमो, सिन्को, कॉकु, कोनि, क्रोक, ऐसेरि, फेरम आयोड, फेरम मेट, फ्लोरि एसिड, ग्रैफा, हीपर, हाइपेरिकम, आयोड, जेबोरै, कैली का, लैक्टिक एसिड, लोबे इन्फ्ला, मर्क सल्फ, मोर्फि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस एसिड, फॉस, पिलोका, पॉलिपो, सोरि, पल्से, सैलिसि एसिड, सैम्बू,

सैनिकू, सेलेनि, सीपि, साइलि, स्टैनम, सल्फर, सल्फ्यू एसिड, थूजा, टीलिया, वेरैट्र ऐल्बम, जिंकम मेट ।

अत्यधिक कमजोरी पैदा करने वाला (Colliquative)—ऐसेटि एसिड, कैम्फोरा, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कैस्टोरि, क्राइसैन्थ, सिन्को, इयुपेटो पर्फ, फेरम मेट, जेल्से, मर्क वाइवस, नाइट्रि एसिड, नाइट्रम, ओपियम, फेलाण्ड्रि, फॉस एसिड, फॉस, पाइरो, रस ग्लै, सैल्विया, सैम्बू, स्टैनम, सल्फ्यू एसिड ।

थोड़ा— एपिस, कॉनवै, लैके, नक्स मॉ ।

लसीला—ऐबीज कैने, फ्लोरि एसिड, हीपर, लाइको, मर्क सल्फ, फॉस ।

पीला दाग पड़े—आर्स, कार्बो ऐनि. लैके, लाइको, मर्क सल्फ ।

उत्पन्न काल—तीव्र रोग के बाद—सोरि ।

खाने, पीने के बाद कार्बो वे, कैमो, कैली का ।

ज्वर के बाद या केवल नींद के शुरू में—आर्स ।

वयःसन्धिकाल में—हीपर, जैबोरे, टिलिया । देखिये स्त्री जननेन्द्रिय मंडल ।

चलने-फिरने से, हरकत से या जोर देने से—ऐसैर, ब्यूट्रि एसिड, कैल्के का, कार्बो ऐनि, सिन्को, इयुपेटो पर्फ्यु, इयुपियन, ग्रैफा, हीपर, आयोड, कैली का, लाइको, मर्क को, मर्क सल्फ, नैट्र का, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, सोरि, सीपिया, साइलि, सल्फर ।

सुबह के समय, दिन में—ब्रायो, कार्बो एनि, कार्बो वेज, हीपर, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस, सीपिया, साइलि, सल्फर, जिंक मेट ।

बहुत सबेरे—स्टैनम ।

सोते में (रात में पसीना)—ऐसेटिक एसिड, एगैरि, ऐगैरिसिन, ऐरैलि, आर्स आयोड, बैराइटा का, बेलाडोना, बोलेटस, कैल्के कार, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कैमो, क्राइसैन्थ, सिन्कोना, कोनियम, कॉरनस फ्लोरिडा, युफ्रैसिया, फेरम फॉ, हीपर, आयोड, इपिका, जैबोरै, कैली का, काली आयोड, लाइको, मर्क सल्फ, मायोसोटिस, नैट्र टेल्यु, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओपि, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फॉस, फाइटो, पिक्रोटो, पिलोका, पापू ट्रे, सोरि, सैल्विया, सैंग्विने, सैनिकू, सीपिया, साइलि, स्टैनम, स्टैफि, स्ट्रॉन्शिया का, सल्फर, टैरैक्स, थैलियम, थूजा, टिलिया, जिंक मेट ।

जागृत काल में—कोनियम, हीपर, मर्क, फॉस एसिड, फॉस, सैम्बू ।

स्नायविक मन्दता के कारण से, क्षय रोग, तीव्र रोग के आक्रमण के बाद स्वस्थ होने के काल में—जैबोरै ।

स्नायविक आघात, चुपचाप बैठने के कारण—ऐनैका, सीपिया ।

पसीना कोई आराम न दे या कष्ट और बढ़ा दे—ऐण्टि टा, बेल, बोलेटस, चिनि सल्फ, फेरम मेट, फॉर्मिका, हीपर, मर्क सल्फ, फॉस एसिड, पाइरो, सीपिया; स्ट्रैमो।

पसीना आराम दे, लक्षण कम हों—ऐकोन, आर्स, कैलेडि, क्युप्रम मेट, इयुपेटो पर्फ, फ्रैन्सिसिया, नैट्र म्यूर, सोरी, सेनेगा, वेरेट्र एल्बम।

ज्वर का भेद, पित्त—बैप्टी, ब्रायो, कैमो, सिन्को, कोलो, क्रोटै, इयोनाइम, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, इपिका, लेप्टै, मर्क कार, मर्क सल्फ, नक्स वॉ, निक्टे, पोडो, रस टॉ, टैरैक्स।

मूत्र उतारने की शलाका का (कैथेटर) ज्वर—एकोन, कैम्फ एसिड, पेट्रोसेलि।

डेंगू ज्वर-हड्डीतोड़-ज्वर—एकोन, आर्स, बेल, ब्रायो, कैन्थे, सिन्को, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, इपिका, नक्स वॉ, रस टॉ, रस वे।

पेचिश का ज्वर—नक्स वॉ।

आन्त्र सम्बन्धी टायफायड ज्वर—ऐगैरिकस, ऐगैरिसिन, एलैन्थस, एपिस, आर्जे नाइट, आर्न, आर्स, ऐरम ट्रि, बैप्टी, बेलाडोना, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, सिना, सिन्को, कोल्चि, क्रोटै, क्युप्रम आर्स, एचिनेसिया, युकेलि, जेल्से, ग्लोनो, हेलेबो, हाइड्रै, हायोसि, हाइड्रोब्रोम, आयोड, इपिका, कैली फॉस, लैके, लॉरो, लाइको; मर्क साइ, मर्क सल्फ, मेथिलिन ब्लू, मस्कस, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, ओपियम, फॉस एसिड, फॉस, पाइरो, रस टॉ, सेलेनि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, सलफ्यूरिक एसिड, सुम्बुल, टेरेबि, वैक्सिनाइ, माइर्ट, वैले, वेरेट्र एल्बम, जेरोफाइलम, जिंकम मेट।

साथ के लक्षण—पित्त विकार, पित्ताधिक्य—ब्रायो, चेलिडो, हाइड्रै, लेप्टै, मर्क सल्फ, नक्स वॉ।

रोग वाहक, ऐण्टि-टायफायड सीरम का टीका लगवाने के बाद—बैप्टि।

कब्ज—ब्रायो, हाइड्रै, नक्स वॉ, ओपियम।

शय्याक्षत—आर्न, आर्स, बैप्टि, कार्बो वेज, लैकै, म्यूरि एसिड, पाइरो, सिकेलि।

सन्निपात—ऐगैरिकस, ऐगैरिसिन, आर्स, बैप्टि, बेलाडोना, कैना इंडि, हायोसि, हाइड्रै, लैकै, मेथिलिन ब्लू, ओपियम, फॉस एसिड, फॉस, रस टॉ, स्ट्रैमो, टेरेबि, वैले।

दस्त—आर्नि, आर्स, बैप्टि, क्रोटै, क्युप्रम आर्स, एपिलोबि, लैके, मर्क कार, फॉस एसिड, रस टॉ।

दस्त अनैच्छिक—एपिस, आर्स, आर्न, हायोसि, म्यूरि एसिड, फॉस एसिड।

काले दाग—आर्न, आर्स, कार्बो वेज, म्यूरि एसिड ।

नकसीर—ऐकोन, ब्रायो, कॉकस, हैमे, इपिका, मोलिलो, फॉस एसिड, रस टॉ ।

ज्वर—आर्स, बैप्टि, बेलाडोना, जेल्से, मेथिली ब्लू, रस टॉ, स्ट्रैमो ।

पाकाशयिक लक्षण—ब्रायो, कैन्थे, कार्बो वेज, हाइड्रै, मर्क सल्फ, नक्स वॉ, पल्से ।

सिर दर्द—ऐसेटैनिलिड, बेल, ब्रायो, जेल्से, हायोसि, नक्स वॉ, रस टॉ ।

रक्त-स्राव—ऐलुमेन, एलूमि, आर्स, बैप्टि, कार्बो वेज, सिन्को, क्रटै, इलैप्स, हैमे, हाइड्रै स्टैन सल्फ, इपी, क्रियोजो, लैकै, मिलेफो, म्यूरि एसि, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, फॉस एसिड, सिकेलि, टेरेब ।

अनिद्रा—बेल, कॉफि, जेल्से, हायोसि, हाइड्रो ब्रो, हायोसि, ओपियम, रस टॉ ।

स्वर-यन्त्र के रोग—एपिस, मर्क को ।

एक के बाद दूसरे फोड़ों का सिलसिला—आर्स, हीपर, साइलि ।

हृत्पिण्ड-शोथ—पीनियल ग्लैण्ड एक्सट्रैक्ट ।

स्नायविक लक्षण, जीवन-शक्ति हीनता—ऐगैरि, ऐगैरिसिन, एपिस, आर्स, बैप्टि, बेलाडो, ब्रायो, कॉकु, कोल्चि, जेल्से, हेलेबो, हायोसि, हायोसि हाइड्रोब्रो, इग्नै, लैके, लाइको, म्यूरि, एसिड, फॉस एसिड, फॉस, रस टॉ, स्ट्रैमो, सुम्बू, वैलेरि, जिंकम मेट ।

स्नायविक लक्षण, पतनावस्था—आर्स, कैम्फोरा, कार्बो वेज, सिन्को, हायोसि हाइड्रोब्रो, लॉरोसे, म्यूरि एसिड, सिकेलि, वेरैट्र एल्बम ।

उदर-झिल्ली-प्रदाह—आर्स, बेलाडो, कार्बो वेज, कालो, मर्क को, रस टॉ, टेरेबि ।

न्यूमोनिया वायुनलिका के लक्षण—एण्टि टॉ, आर्स, बेल, ब्रायो, हायोसि, इपिका, लैके, फॉस, पल्से, रस टॉ, सैंग्वि, सल्फर, टेरेबि ।

क्षययुक्त फुफ्फुस प्रदाह—आर्स, म्यूरि एसिड ।

पैशिक दर्द—आर्न, बैप्टि, ब्रायो, जेल्से, रस टॉ ।

स्वस्थ होने का काल—आर्स आयोड, कार्बो वेज, सिन्को, कॉकु, हाइड्रै, कैली फॉस, नक्स वॉ, सोरि, सल्फर, टेरैक्स ।

कान के परदा की सूजन (टिम्पेनाइटिस)—ऐसाफीटि, आर्स, बैप्टी, कार्बो वेज, सिन्को, कॉकु, कोल्चि, लाइको, मेथिली ब्लू, मिलेफो, म्यूरि एसिड, नक्स मॉ, फॉस एसिड, रस टॉ, टेरेबि ।

चक्षुपटीय घाव—एपिस, इपिका ।

अधिक मूत्र-स्राव—जेल्से, म्यूरि एसिड, फॉस एसिड ।

मूत्र-स्राव कम, पीड़ाजनक—एपिस, आर्स, कैन्थे।

किसी साधारण रोग के उपसर्ग रूप में उत्पन्न चर्मोद्भेद, गोटियाँ चर्म-पुष्पिका—ऐकोन, बेलाडो, कोपेवा। देखिये चेचक (Rubeola) (Measles)।

चेचक (Rubeola-Measles)—एकोन, एलैन्थस, ऐण्टि टॉ, आर्स, आर्स आयोड, बेलाडो, ब्रायो, कैम्फोरा, कोफि, डल्का, इयुपेटो पर्फ, युफ्रैसिया, फेरम फॉस, जेल्से, इपिका, कैली बाइ, कैली म्यूर, लैके, मर्क कार, मर्क प्रे रूब्र, मर्क सल्फ, ओपि, पल्से, रस टॉ, सिला, स्पॉन्जिया, स्टिक्टा, स्ट्रैमो, सल्फर; वेरेट्र वि, वायोला ओडो।

साथ के लक्षण—ग्रन्थि प्रदाह—(Adenitis)—कैली बाइ, मर्क आयोड रूब्र।

वायु-नलिका समूह और फुपफुस के लक्षण—ऐण्टि टॉ, बेल, ब्रायो, चेलिडो, फेरम फॉस, इपिका, कैली बाइ, फॉस, रूमेक्स, स्टिक्टा, वेरेट्र वि, वायोला ओडो।

वायु नलिका समूह और फुपफुसीय लक्षण जल्दी अच्छे न हों—कैल्के का, आयोड, कैली का, साइलि; सल्फर।

जुकामी लक्षण - आर्स, सेपा, डल्का, इयुफ्रैसिया, जेल्से; कैली बाइ, मर्क सल्फ, पल्से, सैबैडि, स्टिक्टा।

मस्तिष्कीय और आक्षेपिक लक्षण—इथूजा, एपिस, बेलाडो, कैम्फो, कॉफिया, क्युप्रम ऐसे, स्ट्रैमो, वेरैट्र वि, वायोला ओडो, जिंक मेट।

काली खाँसी—ऐकोन, कॉफि, ड्रोसेरा, इयुफ्रैसिया, जेल्से, हीपर, कैली बाइ, स्पांजिया, स्टिक्टा।

दस्त—आर्स, सिन्को, इपिका, मर्क सल्फ, पल्से, वेरेट्र एल्बम।

डिफ्थीरिया के लक्षण—लैके, मर्क साइ।

नक्सीर बहना—ऐकोन, ब्रायो, इपिका।

आँख के लक्षण—आर्स, युफ्रैसिया, कैली बाइ, पल्से।

मुँह और कान का गलना, सड़ना—आर्स, कैली फ्लोर, लैके।

अनिद्रा खाँसी—कैल्के का, कॉफिया।

स्वरयंत्र-प्रदाह—ड्रोसेरा, जेल्से, कैली बाइ, वायोला ओडो।

मंद ज्वर, विषैली अवस्था—एलैन्थस, आर्स, बैप्टो, कार्बो वेज, क्रोटै, लैके, म्यूरि एसिड, रस टॉ, सल्फर।

घातक जाति का (काला या संक्रामक)—एलैन्थस, आर्स, क्रोटै, लैके।

कर्णशूल-वात रोग के लक्षण—पल्से।

चर्मोद्भेद दब गये या कम निकले हों—ऐण्टि टॉ, एपिस, ब्रायो, कैम्फोरा, क्युप्रम ऐसेटिकम, इपिका, स्ट्रैमो।

घर्मोद्भेद मन्द—ऐण्टि टा, एपिस, ब्रायो, क्युप्रम मेट, डल्का, जेल्से, इपिका, स्ट्रैमो, सल्फर, ट्यूबर, वैरेट्र वि, जिंकम मेट।

अन्य रोग का परिणाम—ऐमो का, आर्स, ब्रायो, कैम्फोरा, कॉफिया, क्युप्रम ऐसे, ड्रोसेरा, कैली का, मर्क को, मर्क सल्फ, ओपियम, पल्से, सैंग्वि, स्टिक्टा, सल्फर, ट्यूबर, जिंकम मेट।

अरुण-ज्वर—(Scarlet Fever)—ऐकोन, एलैन्थस, ऐमो का, एपिस, आर्स, ऐरम, एसिमिना, बेलाडो, ब्रायो, कैन्थे, कार्बो एसिड, चिनि आर्स, कोमोक्लै, क्रोटै, क्युप्रम ऐसे, क्युप्रम मेट, ड्यूबो, एचिने, इयुकैली, जेल्से, हीपर, हायोसि, इपिका, कैली फ्लोर, कैली सल्फ, लैक केना, लैके, लाइको, मर्क सल्फ, मर्क आयोड रूबर, म्यूरि ऐसि, ओपियम, फाइटो, रस टॉ, सैंग्वि, साइलि, सोलेनम नाइ, स्पाइजे, स्ट्रैमो, टेरेबि, जिंकम मेट।

साथ के लक्षण—ग्रन्थि प्रदाह ग्रीवा सम्बन्धी—ऐलन्थस, एमो का, ऐसिमिना, बेलाडो, कार्बो एसिड, क्रोटै, हीपर, लैके, मर्क आयोड रूब, मर्क सल्फ, रस टॉ।

ग्रन्थि-प्रदाह कर्णशूल—ऐमो का, फाइटो, रस टॉ।

एल्ब्यूमेन वाला मूत्र और शोथ—ऐकोन, ऐमो का, एपेस, एपोसा, आर्स, कैन्थे, कोल्चि, डिजि, हेलेबो, हीपर, कैली फ्लोर, लैके, नैट्र सल्फ, टेरेबि। देखिये वृक्क-प्रदाह (मूत्रयंत्र मण्डल)।

गलरोध : गलक्षत Anginosa (Sore throat)—ऐकोन, एलैंथस, एपिस, आर्स, एसिमिना, बैराइटा का, बेलाडो, ब्रोमि, कैली परमै, लैक कैना, लैके, मर्क, म्यूरि एसिड, फाइटो रस टॉ।

गलरोध घावयुक्त—ऐमो का, एपिस, आर्स, ऐरम, बैराइटा का, क्रोटै, हीपर, लैके, मर्क साइ, मर्क आयोड रूबर, म्यूरि एसिड, नाइट्रि एसिड।

कौशिक-तन्तु प्रदाह—एलैन्थस, ऐमो का, एपिस, लैके, रस टॉ।

जीर्ण प्रवृत्तियाँ जाग उठें—कैल्के का, हीपर, रस टॉ।

दस्त एलैन्थस, आर्स, एसेमिना, फॉस, रस टॉ।

टेंटुआ शोथ—एपिस, एपियम ग्रेवियो, चिनि सल्फ, मर्क कार।

फुफ्फुस-शोथ—ऐण्टि टॉ, कैना सै, फॉस, सिला।

ज्वर—ऐकोन, एपिस, ऐसिमिना, बैप्टी, बेलाडो, जेल्से, रस टॉ।

स्वरयन्त्र-प्रदाह—ब्रोमि, स्पांजिया।

घातक प्रवृत्ति, जीवन-शक्ति क्षीणता—एलैन्थस, ऐलो का, एपिस, आर्स, ऐरम, बैप्टी, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, क्रोटै, क्युप्रम ऐसे, एचिने, हाइड्रोसिया एसिड, लैके, मर्क साइ, म्यूरि एसिड, फॉस, रस टॉ, टैबे, जिंक मेट।

घमौरी की तरह दाने—ऐकोन, एलैन्थस, ऐमो का, एपिस, आर्स, ब्रायो, कॉफिया, कैली आर्स, लैके, रस टॉ।

स्नायविक; आक्षेपिक, मस्तिष्क के लक्षण—इथूजा, एलैन्थस, ऐमो का, एपिस, आर्स, बेलाडो, कैम्फोरा, क्युप्रम एसे, क्युप्रम मेट, हायोसि, रस टॉ, स्ट्रैमो, सल्फर, जिंक मेट।

दाने, देर में उभरें—एपिस, आर्स, ब्रायो, लैके, रस टॉ, जिंक मेट।

दाने, उभरने में रक्त-स्राव—क्रोटै, लैके, म्यूरि एसिड, फॉस।

दाने, सुर्ख—एलैन्थस, लैके, म्यूरि एसिड, सोलेन ना।

दाने, सुर्ख, कहीं-कहीं, चकत्ता से—एलैन्थस।

दाने दब गये हों, मस्तिष्क पक्षाघात का भय हो—एलैन्थस, ऐमो का, क्युप्रम ऐसे, सल्फर, ट्यूबर, जिंकम मेट।

दाने, कुछ उभर कर फिर दब जायें—एमो का, एपिस, आर्स, ब्रायो, कैल्के का, कैम्फोरा, क्युप्रम ऐसे, क्युप्रम मेट, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरेट्र एल्बम, जिंकम मेट।

कच्चे, खूनी, खुजलीदार स्थान, खुजाना और नाखून गड़ाना आवश्यक—ऐरम।

वात रोग के लक्षण—ब्रायो, रस टॉ, स्पाइजे।

रोग का परिणाम, अन्य बाधाएँ बाद में उपस्थित हो जायें ग्रन्थि-प्रदाह—ब्रोमि, हीपर, लैके, मर्क आयोड रूबर, फाइटो।

बहरापन, नाक, दर्द करे, खून बहे—म्यूर एसिड।

कई बार भूसी छूटना, बड़े-बड़े चकत्तों में—ऐरम।

कान के रोग उत्पन्न होना—बेलाडो, कार्बो ऐसि, जेल्से, कार्बो वे, हीपर, मर्क सल्फ, साइलि, सल्फर।

गुर्दा-प्रदाह—(अरुण-ज्वर के बाद वाला)—एपिस, आर्स, ऐरम, कैन्थे, हेलेबो। देखिये मूत्र-यन्त्र मण्डल।

नाक के रोग—एरम, ऑरम म्यूर, म्यूर एसिड, सल्फर।

मुख-प्रदाह, स्रावयुक्त—ऐरम, म्यूरि एसिड।

आंत्र-ज्वरीय लक्षण—एलैन्थस, ऐरम, हायोसि, लैके, रस टॉ, स्ट्रैमो। देखिये घातक।

कै होना—एलैन्थस, ऐसिमिना, बेलाडो, क्युप्रम मेट।

छोटी चेचक—(Varicela-Chickenpox)—ऐकोन, ऐण्टि टॉ, एपिस, ब्रायो, डल्का, कैली म्यूर, लीडम, मर्क सल्फ, रस वा वर, रस टॉ, अर्टिका, वैरियोलाइनम।

चेचक माता—(Variola-Smallpox)—ऐकोन, ऐमो का, ऐनैका, ऐण्टि टॉ, एपिस, आर्स, बैप्टि, ब्रायो, कार्बो एसिड, चिनि सल्फ, सिमिसि, क्रोटै, क्युप्रम ऐसे, जेल्से, हीपर, हाइड्रै, कैली बाइ, लैके, मर्क सल्फ, मिलेफो, ओपियम, फॉस, रस टॉ, सारासि, सिनैपि, सल्फर, थूजा, वैरियोलाइ, वेरेट्र वि ।

जाति-भेद—मिले-जुले दाने—आर्स, हिपोजी, मर्क सल्फ, फॉस, सल्फर, वैरियोलाइ ।

अलग-अलग दाने—ऐण्टि टॉ, बैप्टी, बेलाडो, जेल्से, सल्फर ।

रक्त-स्राव—आर्स, क्रोटे, हैमे, लैके, फॉस, नैट्र नाइट्रि, सिकेलि, सल्फर ।

सांघातिक—ऐमो का, एण्टि टा, आर्स, बैप्टी, कार्बो ऐसि, क्रोटै, लैके, म्यूरि ऐसि, फॉस ऐसि, फॉस, रस टॉ, सिकेलि, सल्फर, वैरियो ।

जटिल उपसर्ग—ग्रन्थि-प्रदाह—मर्क आयोड रूबर, रस टॉ ।

फोड़िया निकलना—हीपर, फॉस, सल्फर ।

पतनावस्था के लक्षण—आर्स, कार्बो वेज, लैके, म्यूरि ऐसि, फॉस एसिड ।

सन्निपात—बेलाडो, स्ट्रैमो, वेरैट्र वि ।

शोथ—एपिस, आर्स, कैन्थे ।

आरम्भिक ज्वर—ऐकोन, ऐण्टि टॉ, बैप्टी, बेलाडो, जेल्से, वैरियो, वेरैट्र वि ।

पीत ज्वर—ऐकोन, बेलाडो, मर्क, रस टॉ ।

चक्षु-प्रदाह—मर्क, सल्फर ।

फुफ्फुसीय लक्षण—ऐकोन, ऐण्टि टा, ब्रायो, फॉस, सल्फर, वेरैट्र वि ।

दानों का दबना—आर्स, कैम्फो, क्युप्रम मेट, सल्फर, जिंकम मेट ।

धीमा बुखार (सरल लगातार ज्वर)—ऐकोन, आर्न, आर्स, बैप्टी, बेलाडो, ब्रायो, कैम्फोरा, फेरम फॉस, जेल्से, इपिका, कैल्मिया, मर्क सल्फ, नक्स वॉ, पल्से, रस टॉ ।

पाकाशयिक—ऐकोन, ऐण्टि क्रू, आर्स, बैप्टी, ब्रायो, कैल्के का, सिन्को, हाइड्रै, इपिका, मर्क सल्फ, नक्स वो, फॉस ऐसि, पल्से, रस टॉ ।

यक्ष्मा ज्वर—ऐब्रो, ऐसेटि ऐसि, ऐकोन, आर्जे म्यूर, आर्स, आर्स आयोड, बैल्सैम पेरू, बैप्टी, कैल्के का, कैल्के आयोड, कैल्के सल्फ, कार्बो वेज, चिनि आर्स, सिन्कोना, फेरम मेट, जेल्से, हीपर, आयोड, लाइको, मेडो, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि, ओलियम जैको ऐसे, फेलै, फॉस ऐसि, फॉस, पाइरो, सैंग्विने, साइलि, स्टैनम, सल्फर ।

प्रादाहिक—ऐकोन, बेल, ब्रायो ।

इन्फ्लुएन्जा—(Grippe)—एकोन, इस्क्यु, ऐण्टि आर्स, ऐण्टि आयोड, ऐण्टि टा, आर्स, आर्न, आर्स आयोड, आर्स सल्फ रूब, एस्क्लेपियस ट्यूबरो, बैप्टी, बेलाडो, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कैम्फोरा, कैनचाला, कार्बो एसिड, कॉडु मे, कॉस्टि, सेपा, चिनि सल्फ, सिन्को, क्युप्रम आर्स, साइक्ले, ड्रोसेरा, डल्का, इरिन्जि, इयु-कैलि, इयुपेटो पर्फ, युफोर्बिया, इयुफ्रैसिया, फेरम फॉस, जेल्से, ग्लोनो, ग्लीसरीन, जाइम्नोक्ले, इन्फ्लुएनजिन, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली आयोड, कैली सल्फ, लैके, लोबेसेरु, लोबे, पर्प्युरै, लाइको, मर्क सल्फ, नैट्र सल्फ, नक्स वो, फॉस, फाइजॉस्टि, पोडो, सोरि, पल्से, पाइरो, रस टॉ, रस रैडि, रूमेक्स, सैबैडि; सैलि एसिड, सैंग्वि, सैंग्वि नाइट्रि, सार्को एसिड, सेनेगा, सिलिफ, स्पाइजे, स्पॉन्जिया, स्टिक्टा, सल्फर, सल्फरूब, ट्रिओस्ट, वेरैट्र एल्ब ।

इन्फ्लुएन्जा की कमजोरी—ऐब्रो, ऐडोनि वर, आर्स आयोड, ऐवेना, कार्बो एसिड, चिनि आर्स, चिनि सल्फ, सिन्को, कोनियम, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, आइबेरिस, लैक कैना, लैथाइरस, फॉस, सोरि, सैलि एसिड, सार्को एसिड ।

इन्फ्लुएंजा के बाद दर्द रह जाये—लाइकोपर्सिकम ।

सविराम ज्वर—(Intermittent Fever-Ague, Malarial)—ऐकोन, ऐल्सटोन; ऐमो म्यूर, ऐमो पिक, ऐमिल, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टॉ, एपिस, ऐरानि, आर्न, आर्स, आर्स ब्रो; ऐजैडि, नाजा, बैप्टी, बेलाडो, बोलेटस, ब्रायो, कैक्टस, कैम्फा मोनो ब्रो, कैनचालागु, कैप्सि, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, सियानोथ, सीड्रन, सेण्टॉरिया, चिनि आर्स, चिनि म्यूर, चिनि सल्फ, चियोनैंथ, साइमेक्स, सिना, सिन्को, कॉर्न फ्लो, क्रोटे, एचिने, इलैटे, इयुकैलि, इयुपेटो पर्फ, इयुपेटो पर्प्यु, फेरम मेट, फेरम फॉस, जेल्से, हेलियान्थ, हीपर, हाइड्रै; इग्नै, इपिका, लैके, लॉरो, लाइको, मैलैण्ड्रि, मेनि-यान्थेस, मेथिली ब्लू, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रम, नक्स वॉ, ओपियम, ऑस्ट्रिया, पैम्बोट पार्थेसियम, पेट्रोसे, फेलैण्ड्रि, फॉस एसिड, पोडो, पोलिपो, पल्से, रस टॉ, सैबैडि सल्फर, टैरैक्स, टेला ऐरानिया, थूजा, अर्टिका, वरबैस, वेरैट्र एल्बम, वेरैट्र वि ।

जाति भेद, प्रकार—कुनैन के दुर्व्यवहार से—(Cachexia)—ऐमो म्यूर, ऐरैनिया, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, कैली आर्स, कार्बो वेज, सियानोथस, चेलोन, चिनि आर्स, इयुकैली, इयुपेटो पर्फ, फेरम मेट, हाइड्रै, इपिका, लैके, मैलेरिया ऑफिसि, मैलैण्ड्रि, नैट्र म्यूर, पोलिमिया, पल्से, सल्फर; वेरैट्र एल्ब ।

जीर्ण, जल्दी अच्छा न हो—एबीज नाइ, ऐमो म्यूरि, ऐरैनि, आर्स, आर्स ब्रो, कैल्के आर्स, कैनचालागुआ, कार्बो वेज, कार्नस सर्सिनाटा, कार्नस, फ्लो, हेलियान्थस, इग्नै, नैट्र म्यूर, पल्से, पाइरो, क्वेरकस, टेला ऐरानिया । देखिये क्विनीन का दुरुपयोग ।

प्रादाहिक—कैम्फो, ओपियम, वेरैट्र ऐल्बम।

शीत, कम्पविहीन मलेरिया—आर्स, सीड्रन, चेलोन, चिनि सल्फ, जेल्से, इपिका, मैलैण्ड्रि, नक्स वॉ।

मिश्रित जाति का ज्वर, जहाँ मलेरिया का क्षेत्र न हो इपिका, नक्स वॉ।

स्नायविक, गुल्म वायु वाले रोगी—एरेनि, कॉकु, इग्नै, टेरै हिस्पै।

कठोर अवस्थायें—आर्स, कैम्फो, चिनि हाइड्रो, चिनि सल्फ, क्रोटै, वेरेट्र एल्ब।

हाल के रोगी—एकोन, एरैनि, आर्स, चिनि सल्फ, सिन्को, इपिका, टरैण्टू हि।

आंशिक क्रम-भ्रष्ट चरण—एरानिया, आर्स, कैक्टस, कार्बो वेज, इयुपेटो पर्फ, इयुपेटो पर्प्यु, इपिका, नैट्र म्यूर।

क्रमयुक्त चरण, स्पष्ट—चिनि सल्फ, सिन्कोना।

शीत के आक्रमण विशेषत:—तीसरे पहर, प्रतिदिन १ बजे—फेरम फॉस।

तीसरे पहर, २ बजे—कैल्के का, लैके।

तीसरे पहर, ३ बजे—एपिस, चिनि सल्फ।

तीसरे पहर, ३-४ बजे—लाइको, थूजा।

तीसरे पहर, ४-८ बजे—लाइको।

तीसरे पहर, ४ बजे—इस्कियु।

तीसरे पहर, ५ बजे—सिन्कोना।

तीसरे पहर, बाद में शाम को रात में—एरानिया, बोलेटस, सीड्रन, इपिका, पेट्रोलि, टैरै हि।

सम्भावित—चिनि सल्फ, सिन्को, नक्स वॉ।

दोपहर से पहले—सिन्को, फार्मेलिन, नक्स वॉ।

साप्ताहिक—सिन्को।

दोपहर के समय—जेल्से।

आधी रात के समय—आर्स, नक्स वॉ।

गरमी से मिली हुई—एण्टि टॉ, एपिस, आर्स, सिन्को, नक्स वॉ, टेरैण्टू हि, वेरैट्र एल्बम। देखिये शीत।

सुबह के समय—चिनि सल्फ।

सुबह, १-२ बजे भोर में, सूर्योदय के पहले—आर्स।

सुबह, ३ बजे—थूजा।

सुबह, ४ बजे—फेरम मेट।

सुबह, ५ बजे - सिन्को।

सुबह, ६-७ बजे - पोडो।

सुबह, ७-९ बजे, दूसरे दिन दोपहर में —इयुपेटो पर्फो।

सुबह, ९-११ बजे—बैप्टी, बोलेटस, मैग सल्फ, नैट्र म्यूर, बायेथि।

सुबह, ११ बजे और रात में ११ बजे—कैक्ट।

सामयिक -ऐरानिया, आर्स, बोलेट, कैक्ट, सीड्रन, चिनि सल्फ, सिना, सिन्कोना, इयुकैली, इपिका।

सामयिक प्रति ७ या १४ दिन पर रात में कभी नहीं—सिन्कोना।

सामयिक हर बसन्त ऋतु में—कार्बो वेज, लैके, सल्फर।

देर तक ठहरने वाली—ऐरानिया, बोलेटस, कैक्ट, कैनचालागु, कैप्सि, चिनि सल्फ, इयुपेटा पर्प्यु, इपिका, मेनियान्थ, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, प्लम्ब, पोडो, पल्से, पाइरो, सैबाडि, वेरैट्र एल्बम, वेरैट्र वि।

हर चौथे दिन आक्रमण हो—नाजा, चिनि सल्फ, सिन्कोना, हेलेबो।

प्रतिदिन आक्रमण हो—आर्स, बोलेटस, चिनि सल्फ, इग्ने, लोबे इन्फ्ला, नाइट्रम, नक्स वॉ, प्लम्ब, टेरैण्टू हि।

धीमी हरारत —आर्स, ऐजैडि, कार्बो वेज, सिना, सिन्कोना, इयुपेटो पर्फो, इयुपेटो पर्प्यु, इपिका।

हर तीसरे दिन आक्रमण हो—कैल्के का, चिनि सल्फ, सिन्को, इपिका, लाइको।

स्थान भेद—उदर—एपिस, कैल्के का, मेनियान्थस।

पीठ—एपिस, बोलेटस, कॉनवैले, डल्का, इयुपेटो पर्प्यु, जेल्से, लैके, मैग सल्फ, नैट्र म्यूर, पाइरो।

पीठ में, कन्धों के डैनों के बीच में —ऐमो म्यूरि, कैप्सि, पाइरो, सीपिया।

पीठ में, रीढ़ के उभरे भाग में—इयुपेटो पर्फो, लैके।

पीठ में, कटिक्षेत्र में—इयुपेटो पर्फो, नैट्र म्यूर।

सीने में—सिन्कोना।

पैरों में—जेल्से, लैके, नैट्र म्यूर, सैबैडि।

बायें हाथ में—कार्बो वेज, नक्स मॉ।

नाक के सिरे में—मेनियान्थस।

जाँघों में—रस टॉ, थूजा।

साथ के लक्षण—चिन्ता, शिथिलता, उदासी, दुःखमयी मानसिक गड़बड़ा, चक्कर पेट में, अफरा, सेंकने से आराम न मिले—नक्स वॉ।

चिन्ता, धड़कन, मिचली, कुकुर भूख तलपेट में दाब, दर्द, प्रदाहित, सिर दर्द; तनी, दर्दीली शिरायें —चिनि सल्फ, सिन्को।

नीले होंठ, नाखून—इयुपेटो पर्फो, इयुपेटो पर्प्यु, मेनियान्थ, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, नक्स वॉ, वेरेट्र एल्बम।

हृदय क्षेत्र में दर्द—कैक्ट, टैरै हि।

पतनावस्था के लक्षण, चर्म, बर्फीला, ठंडा रक्तहीन, हल्के रंग का चेहरा, माथे पर ठंडा पसीना—वेरेट्र एल्बम।

खाँसी, सूखी कष्टदायक—रस टॉ।

दस्त कैप्सिकम, इलैटि, वेरेट्र एल्बम।

चेहरा और हाथ फूला हुआ—लाइको।

चेहरा लाल—फेरम मेट, इग्नै, नक्स वॉ।

माथे पर ठंडा पसीना —इपिका, वेरेट्र एल्बम।

पाकाशयिक लक्षण—ऐण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बोलेटस, कैनचालागु, इयुपेटो पर्फो, इपिका, लाइको, नक्स वॉ, पल्से।

हाथों में मुर्दापन मालूम हो —एपिस, नक्स वॉ।

सिर दर्द—बोलेटस, चिनि सल्फ, सिन्को, कॉनवै, इयुपेटो पर्फो, इयुपेटो पर्प्यु, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ।

सिर दर्द, जम्हाई, चक्कर, अंगड़ाई लेना, सर्व-शारीरिक असुविधा—आर्स।

हृदय के लक्षण, शूल, मरोड़—कैक्टस।

रक्त बवासीर लक्षण कैप्सिकम।

अति स्नायविक उत्तेजना—इग्नै।

मेरुदण्ड की अति उत्तेजना—चिनि सल्फ।

बकवादीपन—पोडो।

शीत से पहिले मिचली—इपिका।

परिवर्तनशील गनगनी—पल्से।

हड्डियों में और अंगों मे दर्द, जैसे चोट पड़ी हो—ऐरानिया, बोलेटस, कैन्चालागु, कैप्सि, चिनि सल्फ, सिन्को, इयुपेटो पर्फो, इयुपेटो पर्प्यु, फार्मेली, जेल्से, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फेलै।

जोड़ों में दर्द—सिन्को।

घुटनों, अंगों, कलाई, तलपेट में दर्द—पोडो।

बेचैनी —आर्स, युपेटो पर्फ, रस टॉ।

आहें भरना—इग्नै।

प्यास—एपिस, आर्स, कैप्सि, कार्बो वेज, सिना, सिंको, कोनवै, डल्का, इयुपेटो पर्फ, इग्नै, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, निक्टैन्थ, वेरेट्र एल्बम, वाइथिया।

शीत के बाद प्यास—आर्स।

शीत के पहले प्यास—चिनि सल्फ, सिन्को, इयुपेटो पर्फो, जेल्से, मेनियान्थ, निक्टैन्थ।

बिना प्यास—चिनि सल्फ, साइमेक्स, सिन्को, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, नैट्र म्यूर।

शीत के पहले क्रोध—साइमेक्स।

पित्त की कै—इयुपेटो पर्फ, इपिका, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, निक्टैन्थ।

जम्हाई, औंघाई तेज साँस—नैट्र म्यूर।

जम्हाई, अँगड़ाई—आर्स, इलाटिरियम, लाइको, नक्स वॉ।

घटना-बढ़ना—तेजाबी वस्तुओं से बढ़ना—लैके।

पीने से बढ़ना—कैप्सि।

बाहरी हवा, ठंडक इत्यादि से बढ़ना—नक्स वॉ।

बाहरी हवा, ठंडक, लेट जाने से बढ़ना—साइमेक्स।

हरकत से बढ़ना—एपिस।

निम्न ताप से बढ़ना—एपिस, कैंचालागुआ, चिनि-सल्फ, सिन्को, नक्स वॉ।

निम्न ताप से घटना—कैप्सि, इग्नै।

ज्वर का तीव्र आक्रमण—तीसरे पहर, जलती गरमी, चेहरे, हाथों, पैरों में—ऐजाडिरै।

व्याकुलता, बेचैनी, चिन्ता, दबाव—आर्स।

शीत गरमी से मिला-जुला—आर्स, चिनि-सल्फ, सिन्को, नक्स वॉ, टैरैण्टु हिस्पै।

पीठ दर्द—युपेटो पर्फो, नैट्र म्यूर।

चेहरे पर गरमी आने के बाद शीत—कैल्के का।

सिर में रक्ताधिक्य औंघाई, कब्ज, मलाशय और आंत्र में मरोड़, कपड़ा हटाने पर शीत—नक्स वॉ।

सन्निपात—आर्स, पोडो, सैबाडि।

कपड़ा ओढ़ कर रहने की इच्छा—नक्स वॉ।

कपड़ा हटा कर रहने की इच्छा—इग्नै, इपिका।

दस्त—ऐण्टि क्रू, इपिका, वेरेट्र एल्बम।

साँस कष्ट—एपिस, आर्स, कॉनवे, इपिका।

चेहरा गरम, पैर ठंडे—सिन्को, पेट्रोलि।

चेहरा पीला, अनिद्रा—ऐण्टि टॉ।

पाकाशय के लक्षण—आर्स, इयुपेटो पर्फो, इपिका, नक्स वॉ, पल्से।

हाथ गरम, चेहरा ठण्डा—सिना।

सिर दर्द—एपिस, आर्स; बेलाडो, सीड्रन, सिन्को, इयुपेटो पर्फो, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, वायेथिया।

सिर दर्द, पीली जबान, मिचली, तलपेट में दुर्बलता, कब्ज - पोली पोरस।

जलन, गरमी—एपिस, आर्स, कैप्सि, इयुपेटो पर्फो, फॉर्मेलिन, इपिका, लैके, नक्स वॉ।

भूख - सिना; सिन्को।

आँखों से पानी बहना—सैब्राडि।

बकवादीपन—पोडो।

मानसिक गड़बड़ी—फार्मेलिन।

जुलपित्ती—एपिस, इग्नै, रस टॉ।

रात में—आर्स।

शूल—सिना।

सिर, पीठ, अंगों में दर्द—नक्स वॉ।

मेरुदण्ड के कशेरुकाओं के उभरे भाग में दर्द—चिनि-सल्फ।

दर्द, झटका, पक्षाघात—आर्स।

हमले अक्सर, मगर अल्पकालीन—कार्बो वेज।

देर तक टिकने वाली गरमी—आर्स, बोलेटस, इग्नै।

शिथिलता, गशी, ठण्डा पसीना— वेरेट्र एल्बम।

पुतली चढ़ी हुई, उदर में पीड़ा, मूर्च्छा, सारे शरीर में तनाव—ओपि।

आहें भरना—इग्नै।

अनिद्रा—ऐण्टि टा, एपिस, कॉर्न फ्लो, जेल्से, ओपि।

प्यास—आर्स, चिनि सल्फ, सिन्को, इयुपेटो पर्फ, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, निक्टैन्थ, ओपि; वेरेट्र एल्बम।

प्यास का अभाव—एपिस, कैप्सि, चिनि सल्फ, साइमेक्स, सिन्को, इग्नै, नैट्र म्यूर, पल्से, वाथेथिया।

जबान साफ—आर्स, सिना।

अंगों में कम्प, नाड़ी धीमी—चिनि सल्फ, ओपि।

अचेतनता – नैट्र म्यूर।

कै करना—आर्स, सिमिसि, सिना, इयुपेटो पर्फो, इपिका, वेरैट्र एल्बम।

पसीना निकलना—ऐण्टि क्रू, ऐरैनि, एजाडिरै, बोलेट, ब्रायो, चिनिसल्फ, साइमेक्स, सिना, सिन्को, कानवै, इयुपेटो पर्फो, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस एसिड, वेरैट्र ऐल्बम, वायोथिया। देखिये पसीना।

पसीना, कम या गायब एपिस, आर्स, कार्बो वेज, इयुपेटो पर्फो, नक्स वॉ।

पसीना, साथ में ठंडापन—एल्बम।

पसीना, कपड़ा ओढ़े रहना चाहे –सिन्को, ईपर।

पसीना, दर्द में कमी के साथ नैट्र म्यूर।

पसीना, नींद के साथ—सिन्को, कोनियम, पोडो, थूजा।

पसीना, प्यास के साथ—आर्स, चिनि सल्फ, नक्स वॉ।

विज्वर-अवस्था—जीवन-ताप की कमी, पाकाशयिक-आंत्रिक पीड़ा, फीका चेहरा, जल शोथ, फूलन, जिगर और तिल्ली बढ़ी, बेचैनी, अनिद्रा, आक्षेप, दस्त, सांडलाल मूत्र रोग—आर्स।

अति दौर्बल्य, अति जलमिश्रित रक्त, हरित् पांडु रोग—सिन्कोना, पल्से।

अति दौर्बल्य, सुबह सिर दर्द उदासी, कब्ज, मासिकधर्म की बीमारी की वजह से रुक जाना, जिगर बढ़ना, शान्त चुपचाप रहने की इच्छा, फीके रंग का चेहरा—नैट्र म्यूर।

पाकाशयिक—आंत्रिक लक्षण—सिन्को, हाइड्रै, इपिका, नक्स वॉ, पल्से।

कामला रोग—आर्स, बोलेट, कार्डु मैरि, नक्स वॉ, पोडो।

स्नायविक लक्षण—जेल्से।

दर्द—लीडम।

बदपरहेजी के कारण ज्वर का दोहराना—इपिका।

तिल्ली का बढ़ना—आर्स, सियानोथ, चिनि-सल्फ, सिन्को, फेरस मेट, नैट्र म्यूर।

प्यास—आर्स, साइमेक्स, इग्नै।

कै होना—इपिका।

कै होना, उदर में चुभन, पीठ, कमर में दर्द—वेरेट्र एल्बम।

मन्द ज्वर—ऐलैन्थ, आर्न, आर्स, बैप्टि, कैम्फोरा, कॉकु, क्रोटै, इयुपेटो, ऐरोमे, लैके, म्यूरि ऐसि, नाइट्रि स्पि डल्सि, फॉस्फो ऐसि, फास्फो, पाइरो, रस टॉ, टेरेबि, अर्टिका। देखिये टाइफस ज्वर।

भूमध्य-सागरीय ज्वर—बैप्टि, ब्रायो, कॉल्चि, मर्क सल्फ, रस टॉ।

प्रसूति ज्वर—ऐकोन, पाइरो, वेरैट्र ऐल्बम। देखिये स्त्री-जननेन्द्रिय-मण्डल।

परावर्तित ज्वर अन्य स्थान की उत्तेजना के कारण से—कैमो, सिना, जेल्से, इग्नै, इपिका, मर्क, नक्स वॉ, सैंग्वि, सल्फर, वेरैट्र वि।

दोहराने वाला (रिलैप्सिंग ज्वर)—ऐकोन, आर्स, बैप्टि, ब्रायो, चिमिसि, युकैली, इयुपेटो पर्फो, रस टॉ।

स्वल्प-विराम ज्वर, रेमिटेण्ट ज्वर—ऐकोन, ऐण्टि क्रू, आर्स, बेलाडो, ब्रायो, चिनि-सल्फ, सिना, सिन्को, क्रोटै, जेल्से, हायोस, इपिका, मर्क सल्फ, नाइट्रि ऐसि, नक्स वॉ, निक्टैन्थस, पल्से, रस टॉ, सल्फर।

स्वल्प-विराम पित्त ज्वर, मन्द ज्वर—ब्रायो, क्रोटै, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, इपिका, मर्क डल्सि, निक्टैन्थस, पोडो।

स्वल्प विराम ज्वर, बच्चों में—ऐण्टि क्रू, सिना, जेल्से, लेप्टै, पल्से; सैण्टोनाइ।

रक्त-विकार जनित ज्वर—एलैन्थ, ऐन्थ्रासि, आर्स, क्रोटै, एचिने, पाइरो, वेरैट्र वि। देखिये विष विस्फोट—Pyemia (Generalities)।

अविराम ज्वर (Synochal Fever)—ऐकोन, बैप्टि, बेलाडो।

आघात सम्बन्धी ज्वर—ऐकोन, आर्स, आर्न, सिन्को, लैके। देखिये चोट, आघात (Generalities)।

मोह ज्वर (Typhus)—ऐसेटिक ऐसि, ऐगैरि, एलैन्थ, एपिस, आर्स, ऐरम, बैप्टि, बेल, कैल्के का, कैम्फो, चिनि सल्फ, सिन्को, क्रोटै, हेलेबो, हायोसि, क्रियोजो, लैके, मर्क आयोड रूब, मर्क सल्फ, मर्क वाइवस, म्यूरि ऐसि, नाइट्रि ऐसि, ओपियम, फॉस एसिड, फॉस, पाइरो, रस टॉ, स्ट्रैमो, वेरैट्र ऐल्ब।

कोषिक तन्तु का प्रदाह, ग्रन्थि प्रदाह (लार ग्रन्थियाँ)—बेलाडो, चिनि सल्फ, मर्क आयोड रूबर।

स्नायविक लक्षण—ऐगैरि, बेलाडो, हायोसि, लैके, ओपि, फॉस एसिड, फॉस, स्ट्रैमो।

दूषित रक्तदोष—आर्स, म्यूरि एसिड, पाइरो, रस टॉ। देखिये आंत्रिक ज्वर।

मूत्रमार्गीय ज्वर—ऐकोन, आर्स, चिनि आर्स, सिन्को, जेल्से, हीपर, लैके, फॉस, रस टॉ, साइलि।

कृमि ज्वर—बेलाडो, सिना, मर्क सल्फ, सैण्टोनि, साइलि, स्पाइजे, स्टैनम।

पीला ज्वर—ऐकोन, ऐण्टि टा, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेलाडो, ब्रायो, कैडमियम सल्फ, कैम्फो, कैन्थे, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, चिनि सल्फ, सिन्को, कॉफि, क्रोटै, कैस्के, क्रोटै, क्युप्रम, जेल्से, गुवाको, हायोसि, इपिका, लैके, मर्क, ओपि, फॉस, प्लम्बम, सैबाइ, सलफ्यू एसिड, टेरेबि, वेरैट्र ऐल्बम ।

— —

स्नायविक लक्षण

बड़ी मिर्गी (Grand Mal)—ऐब्सिन्थि, इथूजा, ऐगैरि, ऐमो ब्रो, ऐमाइल, आर्जे नाइट्रि, अर्टीवल, आर्स, ऐस्टेरि, ऐट्रोपि, ऑरम ब्रो, ऐवेना, बेलाडो, बोरैक्स, ब्यूफो, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैम्फो, कैना इण्डि, कॉस्टि, साइक्यूटा-मैक्यू, साइक्यूटा, ग्लोनो, सिमिसि, कॉकुलस, कोनियम, क्यूप्रम एसे, क्यूप्रम मेट, फेरम साइ, फेर फॉस, जेल्से, हीपर, हाइड्रोसि एसिड, हायोसा, इग्नै, इलिसि, इण्डि, इरिडि, कैली ब्रोमे, कैली साइ, कैली म्यूर, कैली फॉस, लैके, मैग का, मैग फॉस, मेलिलो, मेथिली ब्लू, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, एनैन्थे, ओपि, एस्ट्रस, पैसिफ्लो, फॉस, पिक्रोटो, प्लम्ब मेट, सोरि, सैलेमे, सैण्टोनि, सिकेलि, साइलि, सोलेनम कैरो, स्पाइरिया, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नी, सैलोल, सुम्बुल, टैरेन्टिस्पै, ट्यूबर, वैले, वरबैस्कम, विस्कम, जिंक साइ, जिंक वैले, जिजिया ।

कारण, साथ के लक्षण—आरम्भिक न हो—जिंकम वैले ।

सुरसुरी गायब, कई दौरे एक के बाद दूसरे, जल्दी-जल्दी—आर्टीमिवल ।

सुरसुरी शुरू हो, दर्दीली जगह जैसी, कन्धों के बीच में या चक्कर, गरमी की लहरें उदर से सिर तक—इण्डिगो ।

सुरसुरी शुरू हो, अङ्गों पर से ऊपर की तरफ चूहों के दौड़ने की तरह, पेट में से गरमी, देखने या सुनने में गड़बड़ी—बेलाडो, कैल्के का, सल्फर ।

सुरसुरी, शुरू हो, मस्तिष्क में लहर की तरह—सिमिसि ।

सुरसुरी, घुटनों से शुरू होकर तलपेट तक चढ़े—क्यूप्रम मेट ।

सुरसुरी, बाईं बाँह में शुरू हो—साइलि ।

सुरसुरी, स्नायुवत्तुल या कड़ा में शुरू हो—ब्यूफो, कैल्के का, नक्स वॉ, साइलि ।

सुरसुरी, पेट या जननेन्द्रिय में शुरू हो—ब्यूफो ।

सुरसुरी, ऊपर या निचले अङ्गों में शुरू हो—लाइको ।

सुरसुरी, नीचे उतरे—कैल्के का ।

सुरसुरी, हृदय क्षेत्र में मालूम हो—कैल्के आर्स ।

पूर्णिमा पर रात में—कैल्के का।

अमावस्या पर, रात में—कॉस्टि, क्युप्रम मेट, कैली ब्रोमे, साइलि।

सोते में आक्रमण हो—ब्युफो, क्युप्रम, लैकै, ओपियम, साइलि।

आक्रमण के बाद गहरी नींद—इथूजा, हायोसि, कैली ब्रोमे, लैके, ओपियम।

आक्रमण के बाद हिचकी—साइक्यूटा।

आक्रमण के बाद मिचली कै—बेलाडो।

आक्रमण के बाद शिथिलता—इथूजा, चिनि आर्स, साइक्यूटा, हाइड्रोसि एसिड, सिकेलि, साइलि, स्ट्रिक्नि, सल्फर।

आक्रमण के बाद क्रोध, अनैच्छिक आवेग—ओपियम।

आक्रमण के बाद बेचैनी—क्यूप्रम मेट।

आक्रमण के बाद अर्बुद—आर्जे नाइट्रि, साइक्यूटा।

चर्मोद्भेद के दब जाने के कारण से—ऐगैरि, कैल्के का, क्यूप्रम मेट, सोरि, सल्फर।

भयाक्रमण से, अन्य आवेगिक कारणों से—आर्जे नाइट्रि, आर्टी वल, ब्यूफो, कैल्के का, कैमो, हायोसि, साइलि, स्ट्रैमो।

हिस्टीरिया से—ऐसाफी, कॉकु, क्यूप्रम मेट, हायोसि, इग्ने, मॉस्क, एनैन्थे, सोलेनम, कैरो, सुम्बुल, टैरे हिस्पै, जिंकम बैलेरि।

आघात, चोट से—कोनियम, क्यूप्रम मेट, मेलिलो, नैट्र सल्फ।

डाह करने से—लैके।

मासिक-धर्म की गड़बड़ी से—आर्जे नाइट्रि, ब्यूफो, कॉलोफा, कॉस्टि, सीड्रन, सिमिसि, क्यूप्रम मेट, कैली ब्रोमे, मिलेफो, एनैन्थे, पल्से, सोलैनम कैरो।

गर्भावस्था की वजह से—ऐनैन्थे।

संयोजक-तन्तु काठिन्य से, मस्तिष्कार्बुद—प्लम्ब मेट।

कामोत्तेजन की गड़बड़ी से—आर्टीमि वल, ब्यूफो, कैल्के का, प्लैटिना, स्टैनम, सल्फर।

क्षय, रोगिक उपदंश के कारण से—कैली ब्रोमे।

जुकाम होने से, रात्रि आक्रमण, दाहिनी तरफ अधिक—कॉस्टि।

हृदय-कपाट के रोग के कारण—कैल्के आर्स।

जीवन-रस की क्षीणता से, हस्तमैथुन—लैके।

भींगने से—क्यूप्रम मेट।

कृमि की उपस्थिति के कारण—साइक्यूटा, सिना, इंडिगो, सैण्टो, साइलि, स्टैनम, सल्फर, टयूक्रियम।

बच्चों में—इथूजा, आर्टी वल, बेलाडो, ब्यूफो, कैल्के का, कैमो, क्यूप्रम मेट, इग्नै, साइलि, सल्फर।

सामयिक आक्रमण—आर्स, क्यूप्रम मेट।

आक्रमण के पहले, शरीर का बायाँ भाग ठण्डा हो—साइलि।

आक्रमण के पहले, पुतलियाँ फैली हों—आर्जे नाइट्रि।

आक्रमण के पहले, उदर-वायु अधिक हों—आर्जे नाइट्रि, नक्स वॉ, सोरि, सल्फ।

आक्रमण के पहले, चिड़चिड़ापन, बकवादीपन—ब्यूफो।

आक्रमण के पहले, बेचैनी—साइक्यूटा।

आक्रमण के पहले, स्मरण शक्ति की गड़बड़ी—लैके।

आक्रमण के पहले, धड़कन, चक्कर—लैके।

आक्रमण के पहले, चिल्ला उठे—क्यूप्रम मेट, हाइड्रोसि ऐसि।

आक्रमण के पहले, कम्प, फड़कन—ऐब्सिन्थि, ऐस्टेरि।

आक्रमण के पहले, रस भरे दाने—साइक्यूटा।

हाल के रोग—बेलाडो, कॉस्टि, क्यूप्रम मेट, हाइड्रोसि, एसिड, इग्नै, ओपियम, प्लम्बम मेट, स्ट्रैमो।

दिन में कई बार हमला हो—आर्टी वल, साइक्यूटा।

लगातार, एक के बाद दूसरे हमले—ऐकोन, इथूजा, बेलाडो, कॉक्कु, एनैन्थे, प्लम्बम, जिंकम मेट।

चेतना के साथ—इग्नै।

साथ में चेहरा लाल, अंगूठे भीतर को मुड़े, जबड़े अकड़े हुए, मुँह से झाग, आँखें नीचे की तरफ मुड़ी हुईं, पुतलियाँ स्थिर, फैली हुई नाड़ी छोटी, कड़ी तेज—इथूजा।

बाद में पक्षाघात—प्लम्बम मेट, सिकेल।

साथ में फूला हुआ, चिल्लाना, अचेतनता, दाँत लगाना, अंग-वक्रता, रात में कई बार, दोहराने की प्रवृत्ति—साइक्यूटा।

साथ में चक्कर आना (मिरगी रोग का चक्कर विशेष)—आर्जे नाइट्रि, बेलाडो, कैल्के का, कॉस्टि, कॉक्कु, क्यूप्रम, हाइड्रोसि एसिड, नाइट्रि एसिड, ओपियम, साइलि, स्ट्रैमो।

पक्षाघात, लकवा, साधारण औषधियाँ—ऐब्सिन्थि, ऐकोन, ऐगैरि, ऐलूमि, ऐंगस्टू, ऐरैनैलस, आर्जे आयोड, आर्जे नाइट्रि, आर्स आयोड, ऐसाफी, ऐस्ट्रैगै, आरम, बैराइटा ऐसे, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, बेलाडो, कैल्के कॉस्ट, कैलेण्डु, कैना इण्डि,

कार्बोनि ऑक्सिजे, कार्बोनि सल्फ, कॉस्टि, चिनि-सल्फ, साइक्यूटा, कॉकू, कोल्चि, कोनियम, क्युप्रम मेट, डल्का, जेल्से, ग्रैफा, ग्रिण्डे, गुवाको, हेलोड, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, हाइपेरि, इग्नै, आइरिस, फ्लो, कैली ब्रोमे, कैली का, कैली आयोड, कैली फॉस, लैके, लैट्रोडे हैसे, लोलि टेमू, मर्क कार, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओलियैण्डर, ओपियम, ऑक्जे एसिड, ओक्सिट्रो, फॉस, फाइसैलिस, फाइजॉस्टि, पिक एसिड, प्लैटि, प्लैक्ट्रै, प्लम्बम ऐसे, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब मेट, रस टॉ, स्टैनम, स्टैफि, सिकेल, स्ट्रिक फेर सिट, सल्फ, टैबे, थैलियम, वेरैट्र एल्बम, जैन्थो, जिंकम मेट, जिंकम फॉस।

जाति-भेद कम्प—ऐगैरि, आर्स, ऑरम सल्फ, ऐवेना, ब्यूफो, कैम्फो मोनो ब्रो, कैना इण्डि, कोकेन, कॉकू, कोनियम, ड्यूबो, जेल्से, हेलोड, हायोसि, हाइड्रो ब्रो, कैली ब्रो, लैथिरस, लोलियम, मैग फॉस, मैगे ऐसे, मर्क सल्फ, मर्क, निकोटीन, फॉस, फाइजॉस्टि, प्लम्बम, स्कूटेलि, टैबै; टैरे हिस्पै, जिंकम साइ, जिंक पिक्रि।

मेरुदण्डीय, ऊपर को चढ़े—एलूमि, बैराइटा ऐसै, कोनि, जेल्से, लैथाइरस, लीडम, ऑक्जे एसिड, फॉस, पिक्रि एसिड, सिकेल। देखिये मेरुदण्ड।

गोलाकार, गुल्मीय—गुवाको, मैगै ऑक्सि, प्लम्ब मेट।

उन्मत्त का साधारण पक्षाघात—ऐण्टि क्रू, आर्स, ऑरम, बेलाडो, कैना इण्ड्र, कॉस्टि, हायोसि, कैली ब्रो, कैली आयोड, मर्क कार, नैट्र आयोड, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस, फाइजॉस्टि, प्लम्बम, स्ट्रैमो, सल्फर, वेरैट्र एल्बम।

धीरे-धीरे जाहिर हो कॉस्टिकम।

अर्द्धांग पक्षाघात—एम्ब्रा, आर्न, आर्स, ऑरम मेट, बैप्टि, बैराइटा का, बोथ्रोप्स, कार्बोनि, सल्फ, कॉस्टि, चेनापो, कॉकु, कुरारी, इलैप्स, हाइड्रोसि ऐस, इरिडि, लैके, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, फॉस, फाइजॉस्टि, पिक एसिड, रस टॉ, सीकेल, स्टैनम, स्ट्रिक्नि, वेरैट्र वि, पाइपेरा, जैन्थो।

बाईं तरफ का अर्द्धांग पक्षाघात—ऐम्ब्रा, आर्न, बैप्टि, बेलाडोना, कॉकु, क्युप्रम आर्स, लैके, लाइको, फाइजॉस्टि, वेरैट्र वि, जैन्थॉ।

दाहिनी तरफ का अर्द्धांग पक्षाघात—बेलाडो, कॉस्टि, चेनेपो, कुरारी, इलैप्स, इरिडि।

हिस्टीरिया युक्त पक्षाघात—ऐकोन, आर्जे नाइट्रि, ऐसाफी, कॉकू, इग्नै, फॉसफो, टैरेण्टु हिस्पै।

शिशु पक्षाघात (Poliomyelitis Anterior)—ऐकोन, इथूजा, बेलाडो, कैल्के का, कॉस्टि, क्रोमि सल्फ, जेल्से, लैथाइरस, नक्स वॉ, फॉस, प्लम्बम मेट, रस टॉ, सीकेल, सल्फर। देखिये मेरुदण्ड।

जिह्वोष्ठ तथा गलकोष विषयक—ऐनैका, बैराइटा का, बेलाडो, कॉस्टि, कॉकु, कोनियम, जेल्से, मैंगे विनोक्स, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, प्लम्बम।

लैंडी-पक्षाघात—एकोनिटिन, कोनियम, लालसिन।

सीसा विष से आया पक्षाघात—ऐलुमेन, कॉस्टि, क्यूप्रम, कैली आयोड, नक्स वॉ, ओपियम, प्लम्बम, सल्फ्यू एसिड।

स्थानिक, टखनों में, तीसरे पहर—कैमो।

स्थानिक, बाहों में, हाथों में,—क्यूप्रम मेट, थाइरॉ।

स्थानिक, मूत्राशय में—कॉस्टि, नक्स वॉ।

स्थानिक, सीने में—जेल्से।

स्थानिक, नेत्र-पेशियों में—कॉस्टि, कोनियम, जेल्से, फॉस, फाइजॉस्टि, रस टॉ।

स्थानिक चेहरे में (बेल्स-पैल्सी)—ऐकोन, ऐमो फॉस, बैराइटा का, बेलाडो, कॉस्टि, कुरारी, जेल्से, ग्रैफा, कैली क्लोर, नैट्र म्यूर, रस टॉ, सोलेनम वेसि, जिंक पिक्रि।

स्थानिक, रात के समय पैरों में—कैमो।

स्थानिक, अगली बाहों में, कलाई का लटक जाना—कुरारी, फेरम ऐसे, प्लम्बम ऐसे, प्लम्बम मेट, रूटा, साइलि।

स्थानिक, चालक नाड़ियों में—कुरारी सिस्टिसिन, जेल्से, ऑक्जे एसिड, फॉस, फाइजॉस्टि, जैन्थॉ।

स्थानिक, गरदन में—कॉकु।

स्थानिक, संवेदन नाड़ियों में—कोकेन, लैबर्न, प्लैटिना।

स्थानिक, संकोचक पेशियों में—आर्स, कॉस्टि, जेल्से, नाजा, नक्स वॉ, फॉस, फाइजॉस्टि।

स्थानिक गले में, स्वरयन्त्रों में—बेलाडो, बोथ्रोप्स, कैन्थे, कॉस्टिकम, कोकेन, कॉकुलस, जेल्से, कैली फॉस, ऑक्जै एसिड, प्लम्बम।

निचले अंगों का पक्षाघात—(Paraplegia)—ऐकोन, ऐलूमि, ऐन्हैलो, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेलाडो, कॉलो, कॉस्टि, कॉकु, कोनि, क्यूप्रम मेट, कुरारी, डल्का, फॉर्मिका, जेल्से, हाइपेरि, कैली आयोड, कैली टॉर्ट, कैल्मिया, लैके, लैथाइ, लैट्रोटे हैमे, मैंगे ऐसे, मर्क कार, नक्स वॉ, ऑक्जैऐसि, फॉस, फाइजॉस्टि, पिक ऐसि, प्लम्बम ऐसे, रस टॉ, सीकेल, स्ट्रिक्नि, थैलि, थाइरॉ।

हिस्टीरिया युक्त निचले अंगों का पक्षाघात—कॉकु, कोनि, क्युप्रम, नक्स वॉ, प्लम्बम, टैरे, हिस्पे।

निचले अंगों का आक्षेपिक पक्षाघात—जेल्से, हाइपेरि, लैथाइर, नक्स वॉ, प्लेक्ट्रैन्थ, सीकेल । देखिये मेरुदण्ड का कड़ापन–Sclerosis (Spine) ।

डिफ्थेरिया का अन्त होने पर—(Post-Diphtheritic)—आर्जे नाइट्रि, ऑरम मेट, ऐवेना, बोटुलिनम, कॉस्टि, कॉकु, कोनि, हिफ्डे, जेल्से, कैली आयोड, लैके, नेट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस, फाइटो, प्लम्बम ऐरे, प्लम्बम मेट, रोडो, रस टॉ, सीकेल ।

रोगग्रस्त अंग की कृत्रिम अतिवृद्धि—(Pseudo-Hypertrophic)—कुरारी, फॉस; थाइरॉ ।

वात सम्बन्धीय—कॉस्टि, डल्का, लैथाइर, फॉस, रस टॉ, सल्फर ।

मेरुदण्ड से शुरू हो—ऐलूमि, बेलाडो, कैना, इण्डि, कोनियम, इरिडि, लैथाइर, फॉस, फाइजॉस्टि, पिक ऐसि, प्लम्बम, जैन्थॉ ।

लघु मिरगी—(Petit Mal)—आर्टी वल, बेलाडो, कॉस्टि, फॉस, जिंकम साइ ।

नींद, औंघाई—इथूजा, ऐमो का, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, एपिस, ऐपोसाइ, आर्न, ऑरम, ऑरम म्यूर, बैप्टि, बैराइटा म्यूर, कैना इण्डि, कार्बोनि, ऑक्सिजे, कार्बोनि सल्फ्यू, कॉस्टि, सिन्को, क्लिमै, कोका, कॉकु, कॉर्नस फ्लो, साइक्लै, ड्यूबो, फेरम फॉस, जेल्से, हेलेबो, हेलोनि, हाइड्रोसि एसिड, हाइपेरि, इण्डोल, कैली ब्रो, कैली का, लैबर्नम, लैथाइरस, लिनैरिया, लोबे पर्यु, ल्यूपुल मॉर्फि, नाजा, नक्स मॉ, ओपियम, फॉस एसिड, फॉस, पाइरो, रस टॉ, रोसमैरिनस, सार्कोलै एसिड, स्क्रोफुले, सेलेनि, सेनेसि, सल्फ सार्कोलै, थीया, जिंकम मेट ।

औंघाई, भोजन करने के बाद—बिस्मथ, सिन्को, ग्रैफा, कैली का, लाइको, नक्स मॉ, नक्स वॉ, पॉलि, फॉस, पल्से, स्क्रोफु । देखिये अनपच (पेट) ।

औंघाई, दिन में—ऐगैरि, ऐलूमि, ऐमो का, ऐनैका, ऐण्टि क्रू, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैना सैटाइ, कार्बो वेज, सिंको, सिनाबे, कोल्चि, युफ्रेसिया, ग्रैफा, इण्डोल, कैली का, लुपुलस, लाइको, मैग म्यूर, मर्क कार, मर्क, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नक्स मॉ, ओपियम, फॉस, सीपिया, साइलि, स्ट्रॉन्शिया, स्टैफि, सल्फर, ट्यूबर ।

औंघाई, दिन में, रात में जागना—एबीज नाइग्रा, सिनाबे, कोल्चि, ग्रैफा, लैके, लाइको, मर्क, फॉस एसिड, साइलि, स्टैफि, थीया । देखिये अनिद्रा ।

औंघाई, सुबह को, दोपहर से पहले—ऐलूमि, ऐनैका, ऐमो का, बिस्मथ, कार्बो वेज, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, पेट्रोलि, जिंकम मेट ।

औंघाई, शाम के शुरू में—कैल्के, मैगे ऐसे, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, सीपिया, सल्फर ।

औंघाई, शाम को, बैठ कर पढ़ते समय—नक्स वॉ ।

औंघाई, मगर नींद न आए—ऐम्ब्रा, एपिस, बेलाडो, कैना इण्डि, कॉस्टि, कैमो, कोका, कॉफि, क्युप्रम मेट, फेरम मेट, जेल्से, लैके, मॉर्फि, ओपियम, साइलि, स्ट्रैमो ।

भयानक स्वप्न : (Incudus-Nightmare)—ऐकोन, ऐमो का, आर्न, ऑरम ब्रोमे, बैप्टी, कैना इण्डि, क्लोरेल, सिना, साइप्रिपी, डैफने, कैली ब्रो, कैली फॉस, ओपियम, नक्स वॉ, नाइट्रि एसिड, पियोनिया, पैरिटेरिया, फॉस, टीलिया, स्कुटिलेरिया, सोलेनम नाइ, सल्फर ।

अनिद्रा (Sleeplessness) साधारण औषधियाँ—ऐब्सिन्थि, ऐकोन, ऐगैरि, ऐल्फा, ऐलूमि, ऐम्ब्रा, ऐमो का, ऐनैका, ऐण्टि क्रू, एपिस, ऐपोमॉर्फि, ऐक्विले, आर्न, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऑरम, ऐवेना, बैप्टि, बेलाडो, ब्यूट्रि एसिड, कैक्ट, कैफेन, कैल्के का, कैम्फो, मोनोब्रो, कैना इण्डि, कॉलो, कैमो, चिनि सल्फ, क्लोरेल, क्राइसेन्थ, सिमिसि, सिको, कोका, कोकेन, कॉकुलस, कॉफि, कोलो, साइप्रिपी, डैफने, डिपॉ, जेल्से, हायोसि, हायोसि हाइड्रोब्रो, इग्नै, आयोड, कैली ब्रो, कैली फॉस, लेसिथिन, लिलिटिग्रि, लुपुल, लाइसिन, मैग फा, मर्क, नक्स वॉ, ओपियम, पैसिफ्लो, फॉस, पिक एसिड, पल्से, सेलेनि, स्कुटेल, स्टैनम, स्टैफि, सस्फो, सल्फर, सैम्बू, स्ट्रैमो, टेला एरा, थीया, वैले, जैन्थो, योहिम्बि, जिंकम फॉस, जिंकम वैले ।

कारण—आक्रमण उदर विकार—ऐण्टि टा, क्युप्रम मेट ।

हड्डियों में टीस—डैफने ।

टाँगों में टीस, मगर शान्त न रख सके—मेडो ।

पेशियों में टीस, घोर थकावट—हेलो ।

मदिरा पीने की आदत—आर्स, ऐवेना, कैना इण्डि, सिमिसि, जेल्से, हायोसि, नक्स वॉ, ओपियम, सिकेलि, स्ट्रैमो, सुम्बुल ।

चिन्ता, आकुलता, बिस्तर छोड़ दे, आधी रात के बाद अधिक हो—आर्स ।

हृदय की मुख्य धमनी का विकार—क्रैटेगस ।

धमनियों में टपकन—ऐकोन, बेलाडो, कैक्टस, ग्लोना, सिकेलि, सेलेनि, सल्फर, थीया ।

देर तक दावतें खाने के बाद—पल्से ।

बिस्तर कड़ा जान पड़े, उस पर लेट न सके—आर्न, ब्रायो, पाइरो ।

बिस्तर गरम जान पड़े, उस पर लेट न सके—ओपियम ।

सीने में दाब—फाइसैलिस ।

निकोटिन की पुरानी आदत—प्लैण्टैगो ।

कॉफी का दुरुपयोग—कैमो, नक्स वॉ।

शरीर ठण्डा—ऐकोन, ऐम्ब्रा, कैम्फोरा, कार्बो वेज, सिस्टस, वेरैट्र एल्बम।

घुटने ठण्डे—एपिस, कार्बो वेज।

ऐंठन—आर्जे मेट, कोलो, क्युप्रम मेट।

सन्निपात—ऐकोन, बेलाडो, कैक्टस, कैल्के का, कैना इण्डि, जेल्से, हायोसि, कैली ब्रो, फॉस, स्ट्रैमो, वेरैट्र एल्बम। देखिये मन।

दाँत निकलना—बेलाडो, बोरैक्स, कैमो, कॉफिया, साइप्रिपी देखिये दाँत।

रजोनिवृत्ति, स्त्रियाँ जिनका गर्भाशय खसक कर बाहर आ जाये या उसमें उत्तेजना हो—सेनेसियो।

मुँह और गले का दर्दीलापन—ऐरम, मर्क।

अनेक सन्धि-प्रदाह—कोनियम।

बच्चे का दूध छोड़ने के काल में—बेलाडो।

स्वप्न-दुर्घटना, ऊँचाई से गिरना इत्यादि—आर्न, बेलाडो, कैल्के का, डिजि, लाइको, नाइट्रि एसिड, साइलि, वेरेट्र एल्बम।

जानवरों, साँपों का—आर्जे नाइट्रि, डैफ्ने, लैक कैना, ओपियम, रैनन स्केले।

आकुल, घबराहट का, चिन्ता का—एबीज नाइ, ऐकोन, ऐम्ब्रा, ऐनैका, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेलाडो, ब्रायो, कैल्के का, कॉस्टि, कैना इण्डि, कैन्थ, कैमो, सिको, इयुफॉर्बिया, लैथाइ, फेरम फॉस, ग्रैफा, इग्नै, कैली का, लाइको, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओक्सिट्रो, पल्से, रस टॉ, सिकेलि, सीपि, साइलि, स्टैफि, सल्फर, जिंकम मेट।

दिन के भूले हुए व्यावसायिक मामलों का स्वप्न देखना—सेलेनियम।

गिचपिचे—ऐलूमि, सिन्को, ग्लोनो, हेलेबो, हाइड्रोसि एसिड, फॉस।

कुछ जागने पर भी स्वप्न का सिलसिला जारी रहे—कैल्के का, सिन्को, नैट्र म्यूर।

मृत्यु या मरे हुए व्यक्तियों का—आर्न, आर्स, कैल्के का, कैन इण्डि, क्रोटे, कैस्के, क्रोटे, इलैप्स, लैके, नाइट्रि एसिड, रैनन स्केले।

स्वप्नों की भरमार—ऐलूमि, ब्रोमि, कोनियम, हायोसि, इग्नै, लाइको, नाइट्रि एसिड, फॉस, सीपिया।

पीने के स्वप्न—आर्स, मेडो, नैट्र म्यूर, फॉस।

शारीरिक परिश्रम, मेहनत काम-धंधों के स्वप्न—एपिस, आर्स; बैप्टि, ब्रायो, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, रस टॉ, सेलैनि, स्टैफि।

अनोखे सुहावने—ओपियम।

आग, लपट, बिजली—बेलाडो, इयुफ्रैसिया, लैके, फॉस ।

हवा में उड़ने के—एपिस, रस ग्लै, स्टिक्टा ।

भूले हुए मामलों के—सेलेनि ।

प्रसन्नता के स्वप्न—सल्फर ।

रक्तस्राव के स्वप्न—फॉस ।

भयानक स्वप्न—एडोनिस वर, आर्जे नाइ, ऑरम, बैप्टी, बेलाडो, कैक्टस, कैल्के का, कैने इण्डि, कैस्टोरि, कैमो, सिन्को, कोल्चि, इयुपिऑन, ग्रैफा, हायोसि, कैली ब्रो, कैली का, लिलि टिग्रि, लाइको, मर्क का, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस, सोरी, पल्से, रैनन स्केले, रस टॉ, सिकेल, स्ट्रैमो, सल्फर, सीपिया, थीया, जिंकम मेट ।

चकितकारी आभायें विचित्र रूप—बेलाडो, हायोसि ।

कामातुर—आर्जे नाइ, कैने इण्डि, कैन्थे, कोबे, डायस्को; हैमे, हायोसि, इग्ने, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, ओपियम, फॉस ऐसि, फॉस, साइलि, स्टैफि, थूजा, अस्टिलै, वेरेट्र विरि । देखिये धातु-क्षीणता; (पुरुष कामेन्द्रिय मण्डल) ।

हँसने का स्वप्न—ऐलूमि, कॉस्टि, हायोसि, लाइको ।

डाकुओं का स्वप्न देखना—बेलाडो, नैट्र म्यूर, सोरी, वेरेट्र एल्बम ।

स्पष्ट स्वप्न देखना—ऐगैरि, आर्जे नाइट्रि, ब्रोमि, कैने इण्डि, सेन्क्रिस, कैमो, कॉफि, डैफ्ने, डायस्को, हाइड्रोसि ऐसि, हायोसि, इण्डोल, आयोड, मैगे ऐसे, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, फॉस, पल्से, पाइरो, सल्फर, ट्यूबर, वेरेट्र विरि । देखिये आकुल स्वप्न ।

सूखा मुँह—एपिस, कैल्के का, कॉस्टि, लैके, नक्स वॉ, पेरिस, पल्से, टैरे हिस्पै ।

आवेग के कारण से (शोक, चिन्ता, उत्तेजना स्नायविकता)—ऐब्सिन्थि, ऐकोन, ऐल्फा, ऐम्ब्रा, ऐमो वैले, आरम, ब्रायो, कैने इण्डि, कैमो, चिनि आर्स, क्लोरल; सिमिसि, कोका; कॉफि, कोलो, जेल्से, हायोसि, हायोसि हाइड्रोब्रोम, इग्नै, कैली ब्रो, मॉस्कस, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपियम, पैसिफ्लो, फॉस ऐसि, सेनेसि, सीपिया, स्ट्रैमो, सल्फर, थीया, वैले, जिंकम वैलै ।

शिथिलता, दौर्बल्य, मानसिक या शारीरिक परिश्रम के कारण—आर्न, आर्स, ऐवेना, कैनाबिस इण्डि, चिनि-सल्फ, क्लोरेल, सिमिसि, सिन्को, कोका, कॉकु, कोल्चि, डिपोड, जेल्से, हायोसि, कैली ब्रो, नक्स वॉ, पैसि फ्लो, पिसिडिया, फॉस ।

आँखें आधी खुली हों, स्वप्न देखते समय—बेलाडो, कैमो, हायोसि, इपिका, ओपियम, पोडो, जिंकम मेट । देखिये आँखें ।

हर दूसरी रात में—सिन्को, लैके ।

जागने पर मानसिक और शारीरिक शिथिलता का भय—लैके, सिकेलि।

पिण्डली और पैरों में सुरसुरी— सल्फर।

दाँत पीसना—बेलाडो, साइक्यूटा, सिना, हेलेबो, कैली ब्रो, पोडो, सैण्टोना, स्पाइजे, जिंकम मेट।

सर्वांगीय गरमी—ऐकोन, आर्स, बैराइटा का, बेलाडो, बोरै, कास्टि, कैमो, हीपर, केलि ब्रो, मैग म्यूर, मेफाइटिस, ओपियम, सैनिकू, साइली, सल्फर।

भूख लगना—ऐबीज नाइग्रा, एपियम ग्रै, सिना, इग्ने, लाइको, सोरी, सल्फर।

इन्द्रियों की अति उत्तेजना—ऐसैरम, बेलाडो, कैलेडि, कैल्के ब्रो, कैमो, कॉकू, कॉफिया, इग्नै, नक्स वॉ, ओपियम, टैरे हिस्पै, वैले, जिंकट वैले।

वृद्ध लोगों में—ऐकोन, आर्स, ओपियम, पैसिफ्लोरा, फॉस।

बच्चों में—ऐब्सिन्थि, ऐकोन, आर्स, बेलाडो, कैल्के ब्रो, कैमो, सिना, साइप्रिपी, हायोसि, कैली ब्रो, पैसिफ्लोरा, फॉस, पल्से, सल्फर।

खुजली होना—एकोन, एगैरि, ऐलूमि, सोरी, ट्यूकि, सल्फर, वैले।

गुदा को खुजली – एलो, ऐलूमि, कॉफि, इग्ने, इण्डिगो।

अण्डकोष पर खुजली—अर्टिका।

मानसिक सक्रियता, प्रवाह, विचारधारा —एकोन, एपियम ग्रै, एपिस, ब्रायो, कैल्के का, सिन्को, कॉकु, कॉफिया, जेल्से, हीपर, हायोसि, लाइको, मेफा, नक्स वॉ, बेल्से, सीपिया, वेरैट एल्बम, योहिम्बि।

स्वप्न देखते समय कराहना, सिसकना—एण्टि टॉ, आर्न, आर्स, ऑरम, बैप्टी, बेलाडो, कार्बो वेज, कैमो, साइक्यूटा, क्यूप्रम ऐसे, जेल्से, हेलेबो, हायोसि, कैली ब्रो, लैके, लाइको, म्यूरि, एसिड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, ओपियम, पोडो, पल्से, रस टॉ, वेरेट्र एल्बम।

मुँह खुला हो—मर्क, रस टॉ, सैम्बू।

नाक बन्द हो, मुँह से साँस लेना पड़े—ऐमो का, लाइको, नक्स वॉ, सैम्बु।

दर्द होना—आर्न, कैना इण्डि, कैमो, कोलो, मैग म्यूर, मर्क, पैसिफ्लो, पल्से, सिनेपि नाइ।

निद्रा में बिछावन की चादर कुरेदना—ओपियम।

दिल धड़कना—एकोन, ऐलूमि, एमो का, कैक्ट, आयोड, लिलि टिग्रि, लाइको, रस टॉ, सीपिया।

आसन—उकड़ूँ होकर घुटनों और सीने के बल सोना आवश्यक—मेडो।

जाँघों को पेट से लगाकर चित् लेटना आवश्यक, हाथों को सिर पर रखकर और शरीर के निचले भाग से कपड़ा हटाकर— प्लैटिना।

चित् लेटना आवश्यक—ऐमो का, आर्स, सिना।

पेट के बल लेटना आवश्यक—ऐसेटिक एसिड, ऐमो का।

हाथों और घुटनों के बल लेटना आवश्यक—सिना।

हाथों को सिर के ऊपर रखकर लेटना आवश्यक—आर्स, नक्स वॉ, प्लैटिना, पल्से, सल्फर, वेरैट्र एल्ब।

हाथों को सिर के नीचे रखकर लेटना आवश्यक—एकोन, आर्स, बेल, सिन्को, कोलो, प्लैटि।

टाँगों को अलग-अलग फैलाकर लेटना आवश्यक—कैमो, प्लैटि।

टाँगों को एक पर एक कैंची बनाकर लेटना आवश्यक—रोडो।

एक टाँग फैलाकर और दूसरी मोड़ कर लेटना आवश्यक—स्टैनम।

पैरों को बराबर हिलाता रहे—जिंकम मेट।

घण्टों तक झटके से, अंगड़ाई लेता रहे—ऐमाइल, प्लम्ब मेट।

बेचैनी—बार बार जाग पड़े, झपकी (Catnaps)—बैराइटा, कैल्के का, डिजि, फेरम मेट, इग्नै, लाइको, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, प्लैटिना, सार्कोलै एसिड, सेलेनि, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फर।

बेचैनी, सोते में—एकोन, ऐगैरि, ऐलूमि, ऐम्ब्रा, एपिस, एपोसाइ, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बैप्टी, बेलाडो, ब्रायो, कैल्के का, कैना इण्डि, कैस्टोरियम, कॉस्टि, कैमो, सिना, सिमिसि, सिन्को, कोका, कोकैन, कॉफि, इयुपेटो पर्फ, जेल्से, ग्लोनो, ग्रैफा, हायोसि, इग्नै, जैलापा, कैली ब्रो, लैक डिफ्लो, लाइको, मेन्थोल, नाइट्रि ऐसिड, एपिस, नक्स वॉ, पैसिफ्लो, सोरि, टीलिया, पल्से, रेडियम, रस टॉ, रूटा, सैण्टोनि, सार्को एसिड, स्कुटेलै, स्ट्रैमो, स्ट्रॉन्शियया का, सल्फोनाल, सल्फर, टैरेण्टु हिस्पै, थीया, जिंकम मेट।

बेचैनी, पैरों से कपड़ा उतार दे, किक कर दे—हीपर, ओपि, सैनिकू, सल्फर।

बेचैनी, सिर को अगल-बगल घुमाये—एपिस, बेलाडो, हेलेबो, पोडो, जिंकम मेट।

ऐन्द्रिक सम्बन्धी कारण—कैने इण्डि, कैन्थे, कैली ब्रो, रैफे। देखिये जननेन्द्रिय मण्डल।

सोने में बिजली के धक्कों जैसा संवेदन—ऐण्टि टॉ, क्यूप्रम मेट, इग्नै, इपिका।

चीखना, चिल्लाना, भयभीत होकर जाग पड़ना—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा; एपिस, ऑरम, बेलाडो, बोरैक्स; ब्रायो, कैमो, साइक्यूटा, सिना, सिन्को, क्यूप्रम ऐसे, साइप्रिम, डिजि, हेलेबो, हायोसि, इग्नै, आयोडोफॉ, कैली ब्रो, लाइको, नक्स मॉ, फॉस, सोरि, पल्से, स्पॉन्जि, स्ट्रैमो, ट्यूबर, जिंकम मेट।

सोते में गाना—बेलाडो, क्रोकस, फॉस एसिड ।

जागने पर गाना—सल्फर ।

सूखा चर्म—थीया ।

शाम के समय, आधी रात के पहले नींद आना—आर्स, लैके, लिलि टिग्रि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, पल्से, रस टॉ, सेलेनि, थूजा ।

२–३ बजे भोर के बाद नींद न आना—एपियम ग्रै, बैप्टी, बेलिस, ब्रायो, कैल्के का, सिन्को, कॉफिया, जेल्से, कैली का, कैल्मिया, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, सेलेनि, सीपिया ।

सोते में खुर्राटे भरना—सिन्को, लॉरोसे, ओपियम, साइलि, स्ट्रैमो, ट्यूबर, जिंकम मेट ।

गशी जैसी; गहरी, भारी नींद—ऐमो का, ऐण्टि क्रू, एपिस, आर्न, सिन्को, क्यूप्रम मेट, हेलेबो, हायोसि, कैली ब्रो, लैक्टूका विरो, लॉरोसे, लोनिसैरा, लुपुलस, मॉर्फिनम, नाजा, नक्स मॉ, ओपियम, फॉस एसिड, पिसिडिया, पोडो, रस टॉ, सीकेल, स्ट्रैमो, सल्फर ।

नींद में आक्षेपिक लक्षण, (झटका आना, फड़कना चिहुँकना)—ऐकोन, इथूजा, ऐगैरि, ऐम्ब्रा, ऐण्टि क्रू, एपिस, आर्स, बेलाडो, बोरे, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, कैस्टो, कॉस्टि, कैमो, सिना, सिन्को, क्यूप्रम ऐसे, डैफ्ने, हेलेबो, हायोसि, इग्नै, कैली का, लाइको, मॉर्फि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पैसिफ्लोरा, फॉस, सैम्बु, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फर, टेरै हिस्पै, वैले, जिंकम मेट, जिजिया ।

एकाएक पूरी तौर पर जाग पड़े—सल्फर ।

सो जाने पर दम घुटे, सांस रुके—ऐमो का, आर्स, कुरारी, ग्रैफा, ग्रिण्डे, कैली आयोड, लैके, लैक कैना, मर्क प्रे रूबर, मॉर्फि, नाजा, ओपियम, सैम्बु, स्पॉन्जि, स्ट्रोन्शिया का, सल्फर, ट्यूक्रि ।

सोते में पसीना होना—इथूजा, कैल्के का, कैमो, सिन्को, ओपियम, फॉस ऐसि, सोरि, साइलि, वेरैट्र एल्बम । देखिये रात—पसीना (ज्वर) ।

सोते में बात करना—बैराइटा का, बेलाडो, ब्रायो, कार्बो वेज, सिना, ग्रैफा, हेलेबो, हायोसि, कैली का, लाइको, सीपिया, साइलि, सल्फर, जिंकम मेट ।

चाय के दुरुपयोग—कैम्फो मोनो ब्रो, सिन्को, नक्स वॉ, पल्से ।

तम्बाकू से—जेल्से ।

अप्रफुल्लित, जागने पर दुःखी, उदास—ऐलूमि, एण्टि क्रू, एपियम ग्रै, आर्स, ब्रोमि, ब्रायो, सिन्को, कोबैल्ट, कोनियम, डिजि, फेरम मेट, ग्रैफा, हीपर, लैके, लिलि टि, लाइको, मैग का, मर्क कार, माइर्ट, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस, थूजा, टीलिया,

पल्से, रस टॉ, सार्कोले ऐसि, सिपिया, सल्फर, सिफिलि, थूजा, थाइमॉल, ट्यूबर, जिंकम मेट।

सोते में उठकर टहलना (Somnabulism)—आर्टीमि वल, ब्रायो, कैली ब्रो, पियोनिया, साइलि। देखिये मन।

जम्हाई लेना, अंगड़ाई लेना—एकोन, एगैरि, माइल, ऐण्टि टा; आर्न, ऐसेरम, कैल्के का, कार्ल्स बाड, कैस्टोरि, सेपा, चेलिडो, सिना, सिन्को, कोका, क्रोटै, क्यूप्रम ऐसे, इलाटो, युफ्रैसिया, जेल्से, हीपर, हाइड्रोसि ऐसि, इग्ने, कैली का, लाइको, मैंगे, मोर्फि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, प्लम्ब मेट, रस टॉ, सीकेलि, साइलि, सल्फर।

सर्वांग लक्षण, साधारण—सर्वांग दौर्बल्य कमजोरी—(Adynamia)—एबीज कैने, एसेटिक एसिड, ऐड्रेनै, इथूजा, एलैन्थ, ऐलेट्रि, एल्सटोनि, ऐम्ब्रा, एमो को, ऐनैका, ऐण्टि टॉ, एण्टि पाइरीन, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स आयोड, आर्स, एसाफी, ऑरम, आरम म्यूर, ऐवेना, बैल्सेम पेरू, बैराइटा का, बेलिस, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के हाइपोफॉस्फोरो, कैल्के फॉस, कैम्फो, कैना से, कैन्थे, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कॉलो, कॉस्टि, चिनि आर्स, चिनि सल्फ, सिन्को, कोका, कॉकु, कोल्चि, कोनियम, क्रैटे, क्रोटै, क्यूप्रम मेट, कुरारी, डिजि, डिपोडि, डिफथे, डल्का, एचिने, फेरम सिट एट चिन, फेरम मेट, फेरम म्यूर, फेरम फॉस, फेरम पिक्रि, जेल्से, हेलेबो, हेलोनि, हीपर, हाइड्रै, हायोसि, इग्नै, आयोड, इपिका, इरिडि, आइरिस, कैली ब्रो, कैली का, कैली आयोड, कैली फॉस, लैक कैने, लैके, लैक्टिक एसिड, लिलि टि, लिथि का, लिथि फ्लोर, लोबे परप्यू, लाइको, मैग म्यूर, मैग फॉस, सेलि, मर्क को, मर्क साइ, मर्क आयोड रूबर, मर्क, म्युरेक्स, म्यूरि एसिड, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नैट्र सैलि, एसिड, नक्स वॉ, ओपियम, ओनिथॉगे, आक्जै एसिड, फॉस एसिड, फॉस, फाइ-जॉस्टि, फाइटो, पिक्र एसिड, प्लम्ब मेट, सोरी, रस टॉ, रूटा, सैंग्वि, सार्को एसिड, सिकेलि, सेलेनि, सीपिया, साइलि, सोलिडै, स्पॉन्जिया, स्टैनम, स्ट्रोफैं, स्ट्रिक्नि, सल्फोनाल, सल्फ्यू एसिड, सल्फर, टैबैकम, टैनैसे, टेरेबि, थीया, थूजा, ट्यूबर, युरैनि नाइ, वैले, वेरेट्र ऐल्बम, जिंकम, आर्स, जिंकम पिक।

दौर्बल्य पतनावस्था—ऐसि टैनि, एकोन, एण्टि का, आर्न, आर्स, कैम्फो, कार्बो एसिड, कार्बो वेज, कोल्चि, क्रैटै, क्रोटै, क्यूप्रम ऐसे, डिजि, डिफथे, हाइड्रोसि एसिड, लॉरो, लोबे इन्फ्ला, लोबे पर्प्यु, मेडो, मर्क साइ, मॉर्फि, म्यूरि एसिड, निकोटि, ओपियम, पेलियस, फॉस, सीकेल, सलफ्यू एसिड, टैबै, वेरेट्र एल्बम, जिंकम मेट।

दौर्बल्य, ज्वर रहित—आर्स, बैप्टी, कार्बो वेज, सिन्को।

दौर्बल्य, तीव्र रोगाक्रमण के कारण मानसिक जोर पड़ने से—ऐब्रोटै, ऐलेट्रि, ऐल्सटो, ऐनैका, ऐवेना, कैल्के फॉस, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, चिनि आर्स, सिन्को,

कोका, कॉकू, कोल्चि, क्यूप्रम मेट, कुरारी, डिजि, फ्लोरिक एसिड, जेल्से, हेलोनि, इरिडि, कैली फेरो साइ, कैली फॉस, लैथाइरस, लोबे, पर्प्यु, मैक्रोजे, नैट्र सैलि, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस, पिक एसिड, सोरी, सेलेनि, साइलि, स्टैफि, स्ट्रिक्निया फॉस, सलफ्यू एसिड, जिंकम आर्स।

दौर्बल्य, बेहोशी की दवा के कारण, चीर-फाड़ से धक्का लगना—ऐसेटिक एसिड, हाइपेरिकम।

दौर्बल्य, शोकातुर आवेगों के कारण से—कैल्के फॉस, इग्ने, फॉस एसिड।

दौर्बल्य, डिफ्थीरिया से मूर्च्छा-निद्रा, ठण्डे अंग, मन्द ताप, तीव्र नाड़ी, कमजोरी—जिपथे।

दौर्बल्य, अधिक औषधि प्रयोग के कारण—कार्बो वेज, हेलोनियस, नक्स वॉ।

दौर्बल्य, अति मैथुन से, शरीर रस की क्षीणता के कारण—एगैरि, ऐनाका, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, कॉस्टि, चिनिसल्फ, सिन्को, कॉर्न फ्लोरि, कुरारी, जिन्सेंग, कैली का, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, फॉस, सेलेनि, स्ट्रोफे।

दौर्बल्य, ग्रीष्म के मौसम की गरमी से—ऐण्टि क्रू, जेल्से, लैके, नैट्र का, सेलेनि।

दौर्बल्य, बदपरहेजी से मियादी ज्वर में—इयुपेटो पर्फ।

दौर्बल्य, आघात, चोट इत्यादि से—ऐसेटिक एसिड, आर्न, कैलैण्डु, कार्बो ऐनि।

दौर्बल्य, कामला रोग के कारण—फेरम पिक, एसिड, टैरैक्स।

दौर्बल्य, नींद न आने से—कॉकु, कोल्चि, नक्स वॉ।

दौर्बल्य, मासिक-धर्म से, बात करने से भी थकावट आये—एलुमि।

दौर्बल्य, गर्भाशय के बाहर निकलने से, बहुत दिनों तक बीमार रहने से, पोषण विकार से—ऐलेट्रिस, हेलोनि।

दौर्बल्य, किसी गहराई तक के रक्त-विकार अथवा शरीर विकार के कारण—ऐम्ब्रो, इयुपेटो पर्फ, हाइड्रै, आयोड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, सोरी, सलफ्यू एसिड, सल्फर, ट्यूबर, जिंकम मेट।

दौर्बल्य, हिस्टीरियायुक्त—नैट्र म्यूर।

दौर्बल्य, वृद्ध लोगों में—बैराइटा का, कार्बो वेज, कोनि, कुरारी, इयुपेटो पर्फ, ग्लीसरीन, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, फॉस, सेलेनि।

दौर्बल्य, स्नायविक—ऐम्ब्रा, एनैका, कुरारी, जेल्से, कैली ब्रो, फॉस एसिड फॉस, रस टॉ, साइलि, स्टैफि, जिंक मेट।

दौर्बल्य, अत्यधिक स्नायविक उत्तेजना के साथ—आर्स, सिन्को, साइली।

दौर्बल्य साथ में दिन के समय कई बार गशी के हमले—म्यूरेक्स, नक्स मॉ, सीपिया, सल्फर, जिंक मेट ।

दौर्बल्य, स्नायविक उत्तेजना न हो—फॉस एसिड ।

दौर्बल्य, किसी यान्त्रिक विकार के कारण न हो—सोरी ।

दौर्बल्य, ऊपर चढ़ने में अधिक हो—कैल्के का, आयोड, सेकॉ एसिड ।

दौर्बल्य, नीचे उतरने से—स्टैनम ।

बढ़े दौर्बल्य, शारीरिक जोर पड़ने से, टहलने से, बढ़े—आर्स, ब्रायो, कैल्के का, कॉस्टि, साइक्लै, लैक डि, फेरम मेट, मर्क, वाइ, नैट्र का, नक्स मॉ, फॉस एसिड, पिक एसिड, सेकॉ एसिड, सीपि, रस रैडि, स्टैनम, थीया, वेरेट्र एल्बम ।

दौर्बल्य, दोपहर के पहिले अधिक हो—एकालि, बैराइटा म्यूर, ब्रायो, कैल्के का, कोनियम, कार्नस सर्सी, लैक कैना, लैके, लाइको, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, फॉस, सोरी, सीपिया, स्टैनम, सल्फर, ट्यूबर ।

दौर्बल्य, स्त्रियों में अधिक जो अधिक परिश्रम से या मानसिक और शारीरिक जोर पड़ने से या अधिक आराम के जीवन में रहती हों—हेलोनि ।

मदपान की आदत—एकोन, ऐगैरि, ऐण्टि टा, एपोसाइ, एपोमॉर्फि, आर्स, ऐसैरम, ऑरम, ऐवेना, बेलाडो, बिस्मथ, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैन इण्डि, कैप्सि, चिमैफि, सिमिसि, सिन्को, रूब कॉकु कोटै, क्युप्रम आर्स, जेल्से, हाइड्रै, हायोसि, इक्थि, कैली आयोड, लैके, लीडम, लोबे इन्फ्ला, लुपुल, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस, सोरि, क्वेरकस, रैनन बल, स्टरकूलिया, स्ट्रैमो, स्ट्रोफे, स्ट्रिक्नि नाइट, सल्फ्यू एसिड, सल्फर, सिफिलि, ट्यूबर, जिंकम मेट । देखिये जीर्ण उदर शूल (पेट) ।

मदपान की आदत, पैदाइशी झुकाव—ऐसैरम, सोरि, सल्फर, सल्फ एसिड, सिफिलि, ट्यूबर ।

मदपान की आदत दूर करने के लिए—ऐन्जैल, ब्यूफो, सिन्को रूबर, क्वेरकस, स्टरकुलि, सल्फ्यु एसिड, सल्फर ।

ऐथेटोसेस – लैथाइर, स्ट्रिक्नी ।

बेरी बेरी—इलैटी, लैथाइर, रस टॉ ।

ताण्डवरोग (Chorea, St. Vitus dance)—ऐब्सिन्थि, ऐगैरि, ऐगैरिसिन, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्टे बुल, ऐसाफि, एस्टेरि, ऐवेन, बेलाडो, ब्यूफो, कैल्के फॉस, कॉस्टि, कैमो क्लोरस, साइक्यू, सिमिसि, सिना, कोकेन, कॉकु, कोनियम, क्रोकस, क्यूप्रम ऐसे, क्यूप्रम मेट, इयुपेटी एरो, फेरम साइ, फेरम आयोड, हिपोमे, हायोसि, इग्नै, आयोड, कैली ब्रोमे, लेटोड, मैग फॉस, माइगे, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस, फाइजॉस्टि, पिक्ट्रॉक्सिन, सोरि, पल्से सैण्टोनि, स्कुटेलै, सीपिया, सोलेन,

स्पाइजे, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, स्ट्रिक्नि फॉस, सल्फोनाल, सल्फर, सुम्बुल टैनेस, टैरे हिस्पै, थैस्पि, थूजा, वेरैट्र वि, विस्कम, जिंकम आर्स, जिंकम ब्रो, जिंकम साइने, जिंकम मेट, जिंकम वे।

कारण-आक्रमण—रक्तहीनता—आर्स, सिन्को, फेरम आयोड, हायोसि।

अत्यधिक नाचने से—बेल, हायोसि, स्ट्रैमो।

चर्मोद्भेद के दबने से—जिंकम मेट।

भयाक्रमण—कैल्के का, सिमिसि, क्युप्रम, इग्नै, लॉरो; नैट्र म्यूर, स्ट्रैमो, टैरे हिस्पै, जिंकम मेट।

स्नायविक गड़बड़ी—ऐसाफि, बेलाडो, सिमिसि, कॉकू, क्रोकस, जेल्से, हायोसि, इग्नै, कैली ब्रो, ओपियम, स्टिक्टा, स्ट्रैमो।

हस्तमैथुन—ऐगैरि, कैल्के का, सिन्को।

युवाकालीन - ऐसाफि, कॉलो, सिमिसि, इग्नै, पल्से।

दाँत निकलने और गर्भावस्था के समय की परिवर्तित क्रिया के कारण—बेल।

संगीत तेज, चटक रंग से आराम मिले—टैरै हिस्पै।

सोने से आराम मिले—ऐगैरि, क्युप्रम मेट।

वात-रोग सम्बन्धी—कॉस्टि, सिमिसि, स्पाइजे।

कालबद्ध बालक—एगैरि, कॉस्टि, कैमो, सिमिसि, लाइको, टैरे हिस्पै।

कंठमालिक, क्षयरोग सम्बन्धी—कैल्के का, फॉस, कॉस्टि, आयोड, फॉस, सोरि।

कृमि सम्बन्धी—एसाफि, कैल्के का, सिना, सेण्टो, स्पाइजे।

तूफान आने के पहले अधिक हो—ऐगैरि।

सोते में अधिक हो—टैरे हिस्पै, जिंजिया।

चेहरे में अधिक हो—कॉस्टि, साइक्यूटा, क्युप्रम, हायोसि, माइगेल, नैट्र म्यूर, जिंकम मेट।

ठण्डक, आवाज, प्रकाश, आवेग से अधिक हो—इग्नै।

झटकों के साथ आंशिक, परिवर्तनशीलता में अधिक हो—स्ट्रैमो।

बायीं बाँह और दाहिनी टाँग में अधिक—एगैरि, सिमिसि।

दाहिनी बाँह और बायीं टाँग में अधिक हो—टैरै हिस्पै।

दाहिनी तरफ अधिक, जीभ अक्रमिक, बोली लड़खड़ाती—कॉस्टि।

एक ही तरफ अधिक हो—कैल्के का।

आक्षेप—(कन्वल्शन)—साधारण औषधियाँ—ऐब्सिन्थि, ऐकोन, इथूजा, ऐगैरि, ऐलूमि, साइलि, ऐण्टिपाइरी, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्ट्रे वल, ऐट्रोपि, बेलाडो, कैम्फो, कैने इंडि, कैन्थे, कार्बो एसिड, कैस्टोरि, कैमो, क्लोरोफॉ, साइक्यूटा, मैकू, साइक्यू, सिमिसि, सिना, कॉकू, क्युप्रम ऐसे, क्युप्रम मेट, क्युप्रम आर्स, डल्का, युओनाइ, जेल्से, ग्लोनो, हेल्लिबो, हाइड्रोसि एसिड, हाइपेरि, हायोसि, इग्ने, इलिसि, कैली ब्रो, लैबर्नम लॉरो, लोनिसे लाइसिन, मैग फॉस, मॉर्फि, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, एनैन्थे, ओपियम, ऑक्जै एसिड, पैसोफ्लो, फॉस, फाइजॉस्टि, प्लैटिना, प्लम्ब, क्रोमे, प्लम्ब, सैण्टोनि, साइली, सोलैन कैरो, सोलैन नि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, सल्फर, उपास आइरिक्लो, उपास टीण्टी, वेरैट्र एल्बम, वेरैट्र विरि, वरबेना, जिंकम मेट, जिंकम ओबिस, जिंकम सल्फ।

कारण और प्रकार—क्रोध में माँ के दूध में परिवर्तन होने के कारण से—कैमो, नक्स वॉ।

संन्यास रोग सम्बन्धी, शराब पीने वाले लोगों में जिनमें रक्तस्राव की प्रवृत्ति हो या शरीर जर्जर हो गया हो– क्रोटैलस।

निस्पन्द वायु सम्बन्धी—मॉस्कस, साइक्यूटा।

अस्थि-विकृति –क्यूप्रम ऐसे, इग्नै।

मस्तिष्क में कड़ापन या अर्बुद—प्लम्बम मेट।

शिशु में दाँत निकलने की परावर्तित क्रिया—ऐब्सिन्थि, ऐकोन, इथूजा, आर्टी वल, बेलाडो, कैल्के का, कैम्फो मोनीब्रो, कॉस्टि, कैमो, क्लोरल, साइक्युटा, सिना, कॉकू, क्युप्रम मेट, साइप्रिपी, ग्लोनो, हेल्लिबो, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, इग्नै, कैली ब्रो, क्रियोजो, लॉरो, मैग फॉस, मेलिलो, मास्कस, नक्स वॉ, एनैन्थे, ओपियम, सैण्टोनि, स्कुटेल, स्टैनम, स्ट्रैमो, जिंकम मेट, जिंक सल्फ। देखिये कृमि, केंचुआ।

क्षणिक सिकुड़न और ढीलापन—ऐण्टिपाइरी, एपिस, बेल, कैम्फो, कार्बो एसिड, सिना, क्युप्रममेट, जेल्से; हायोसि, इग्नै, निकोटि, प्लम्ब मेट, उपास ऐण्टि।

अपरिचित लोगों के पास आने पर रोना—ओपियम।

किसी साधारण रोग के उपसर्ग-रूप में उत्पन्न चर्मोद्भेद—एकोन, बेलाडो, ग्लोनो, थीया, वेरैट्र विरि।

किसी साधारण रोग के उपसर्ग रूप में उत्पन्न चर्मोद्भेद का दब जाना—एपिस, आर्स, क्युप्रम मेट, ओपियम, स्ट्रैमो, जिंकम मेट, जिंकम सल्फ।

पैर के पसीने के दब जाने के कारण से—साइलि।

भयाक्रमण—ऐकोन, क्युप्रम मेट, हायोसि, इग्ने, ओपियम, स्ट्रैमो।

स्नायविक, मोटे अधिक रक्त वाले लोगों में भयाक्रमण क्रोध अथवा आवेगों की गड़बड़ी से--कैली ब्रो।

शोक अथवा अन्य आवेगिक उत्तेजना के कारण--इग्नै।

व्याधि-शंका वाले लोगों में--मॉस्कस, स्टैनम।

हिस्टीरिया वाले व्यक्ति में-ऐब्सिन्थी, ऐसाफि, ऐसैरम, कैस्टो, कॉलो, सिमिसि, कॉकु, जेल्से, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, इग्नै, कैली फॉस, मॉस्कस, नक्स मॉ, प्लैटिना, स्टैरैण्ट हिस्पै।

आघात, चोट लगना--साइक्यूटा, हाइपेरि।

अलग अलग पेशी समूहों में--ऐकोन, साइक्यूटा, सिना, क्युप्रम, इग्नै, नक्स वॉ, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि।

प्रसव सम्बन्धी--ऐको, बेलाडो, साइक्यूटा, क्यूप्रम मेट, ग्लोनो, हायोसि, इग्नै, कैली ब्रोमे, एनैन्थे, स्ट्रैमो, वैरेट्र विरिडि। देखिये स्त्री जननेन्द्रिय मंडल।

भोजन करने के बाद कै, चिल्लाना आक्षेप--हायोसि।

मासिक धर्म के दब जाने से--जेल्से, मिलिफो। देखिये स्त्री जननेन्द्रिय मण्डल।

शरीर के अन्य यन्त्रों का रोग स्थान-विकल्प होना--एपिस, क्यूप्रम, जिंक मेट।

रोगाक्रमण सूचक--एकोन, बेलाडो, कैमो, इपिका, ओपियम।

पानी, आइने इत्यादि का प्रतिबिम्ब-प्रकाश--बेलाडो, लाइसिन, स्ट्रैमो।

नींद के अभाव में--कॉकुलस।

मेरुदण्ड से आरम्भ हो एकोन, साइक्यूटा, सिमिसि, हाइड्रोसि, एसिड, हाइपेरि, इग्नै, नक्स वॉ, एनैन्थे, फाइजॉस्टि।

अन्तिम चरण--ओपियम, प्लम्बम, जिंकम मेट।

बलवत् संकोचन, पीछे की ओर वक्रता--एपिस, साइक्यूटा; सिना, क्युप्रम मेट, क्यूप्रम ऐसे, हाइड्रोसि एसिड, इग्नै, इपिका, मैग फॉस, मॉस्कस, निकोटि, नक्स वॉ, फाइजॉस्टि, प्लैटि, प्लम्बम मेट, सोलेन कैरो, सोलेन नाइ, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्न, उपास, वेरैट्र एल्बम।

मूत्र क्षय विकार सम्बन्धी--कार्बोलि एसिड, साइक्यूटा, क्यूप्रम, आर्स, ग्लोना, हेल्लिबो, हाइड्रोसि एसिड, कैली ब्रोमि, मर्क कार, एनैन्थे, ओपियम, प्लम्ब, पिलोका, अर्टिका। देखिये मूत्र यन्त्र मण्डल।

गर्भाशय रोग - सिमिसि।

चेचक का टीका-- साइलि, थूजा।

कुकुर खाँसी--क्युप्रममेट, कैली ब्रो।

केंचुए कृमि—साइक्यूटा, सिना, हायोसि, इण्डिगो, कैली ब्रोमि, सैबैडि, सैण्टोनी, स्पाइजे, टैनैसे ।

साथ के लक्षण, चेहरे से शुरू हो; एक तरफ का, छिछली साँस—सिना ।

अंगुलियों से शुरू हो, पैर की अंगुलियों से भी शुरू हो, फिर सारे शरीर में फैले—क्युप्रम मेट ।

मूत्राशय भीना, आँतें, समरेखा पूर्ण पेशियाँ रोगग्रस्त हों, औंघाई, अंग कड़े हों, एकाएक हमला हो, सिर गरम, पैर ठन्डे—बेलाडो ।

टांगों की पिंडलियाँ, अंगूठे, भीतर को जकड़े हों, शरीर नीला क्यूप्रम मेट ।

तांडव रोग की तरह—स्टिक्टा ।

आक्षेपिक, अंगों और सिर में—क्यूफो, कैमो, साइक्यूटा, हायोसि ।

नील रोग—क्यूप्रम ऐसेटि, हाइड्रोसि एसिड ।

हाथ-पैर ठण्डे—बेलाडो, हेल्लिबो, हाइड्रोसि एसिड, निकोटी, एनैन्थे ।

आँखें आधी खुली, ऊपर की तरफ मुड़ी हुई, साँस गहरा, श्रमित आवाज के साथ—ओपियम ।

आँखें नीचे की तरफ झुकी हों—इथूजा ।

ज्वर, शरीर चर्म गरम, सूखा, बच्चा बेचैन, चिल्लाता चीखता है, मुट्ठी कुतुरता है, किसी एक पेशी में फड़कन—ऐकोन ।

बाद में गहरी नींद—क्यूप्रम ऐसे, ओपियम, जिंकम मेट ।

बाद में हलका, आंशिक पक्षाघात—ऐकोन, इलैप्स, लोनिसेरा, प्लम्ब मेट ।

बाद में बेचैनी—क्युप्रम मेट ।

मस्तिष्क में रक्ताधिक्य न हो—इग्नै ।

ज्वर न हो—इग्नै, मैग फॉस, जिंकम मेट ।

चेहरा पीला, आँखें इधर-उधर ढुलकाना, दाँत कटकटाना—जिंकम मेट ।

आक्रमणके पहिले पाकाशयिक आंशिक लक्षण उपस्थित हों—इथूजा, क्यूप्रम आर्से ।

आक्रमण के पहिले बेचैनी—आर्जे नाइट्रि, हायोसि ।

पहिले और दौरान में चीखना—एपिस, सिना, क्युप्रम मेट, हेल्लिबो, ओपियम ।

प्रचण्ड पीड़ा—प्लम्बम क्रोम ।

कम्प, टेंटुए में आक्षेप, ज्वर की लहरें—इग्ने ।

फड़कन, ऐंठन पाकाशयिक - आंत्रिक लक्षण—नक्स वोम ।

फड़कन, किसी एक पेशी में या पेशी समूह में, खासकर शरीर के ऊपरी भाग में—स्ट्रैमो ।

पूरे शरीर में फड़कन—साइक्यूटा, हायोसि।

फड़कन, शरीर के ऊपरी भाग में अधिक, प्रसव के बाद तक जारी रहे—साइक्यूटा।

प्रचण्ड के—इथूजा, उपास।

चेतनावस्था के साथ—सिना, नक्स वो, प्लैटिना, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि।

चेतना-लोप के साथ—बेलाडो, कैल्के कार्ब, साइक्यूटा, क्यूप्रमो ऐसेटिकम, क्युप्रम आर्स, क्युप्रम मेट, ग्लोनो, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, मॉस्कस, एनैन्थे, ओपियम, स्ट्रैमो।

स्पर्श, हरकत, आवाज से अधिक हो—साइक्यूटा, इग्नै, लाइसिन, नक्स वॉ, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्न।

प्रतिक्रिया मन्द—ऐम्ब्रा, ऐमो कार्ब, कैल्के का, कैम्फोरा, कैप्सिकम, कार्बो वेज, कार्बोनि सल्फ, कॉस्टि, साइक्यूटा, क्यूप्रम मेट, हेलेबो, आयोडि, लॉरोसे, नैट्र आर्स, नैट्र सल्फ, ओपियम, सोरी, रेडियम, सल्फर, ट्यूबर, बैले, एक्सरे, जिंकम मेट।

वहिः निस्सृत चक्षु गोलक तथा हृदयस्पन्दन के साथ गलगण्ड—(Exophthalmic Goitre) (Basedow's Disease)—ऐमाइल, ऐण्टिपाइरीन, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, बेलाडो, ब्रोमियम, कैक्टस, कैल्के कार्ब, कोल्चि, एफेड्रा, फेरम आयोड, फेरम मेट, फेरम फॉस, फ्यूकस, ग्लोनॉ, आयोड, लाइको, नैट्र म्यूर, पिलोका, पिनियल ग्लैण्ड एक्सट्रैक्ट, स्पार्ट सल्फ, थाइरो, स्पॉन्जिया।

समुद्र-यात्रा के समय वमन व मिचली—इत्यादि रोग विशेष—ऐमाइल, ऐपोमोर्फिया, ऐक्वा मैरीन, आर्न, सेरियम ऑक्जेलिकम, क्लोरेल, कॉकुलस, क्युकरबिटा, ग्लोनो, कैली ब्रो, कैली फॉस, मोर्फिनम, निकोटिनम, नक्स वा, पेट्रोलियम, स्टैफि, टैबेकम, थीया, थेरोडि। देखिये कै होना (पेट)।

मॉर्फिया की आदत—ऐपोमोर्फिया, ऐवेना, कैने इण्डि, सिमिसि, इपिका, लोबे इन्फला, मेकोटिन, नैट्र फॉस, पैसिफ्लोरा।

मॉरवैन का रोग—(Morvan's Disease)—ऑरम, ऑरम म्यूर, बैराइटा म्यूर, लैके, सीकेलि, साइलीशिया, थूजा।

स्नायविक रोग—सिगार बनाने वालों के—जेल्से।

स्नायविक रोग, लड़कियों के, युवारंभिक समय—कॉलोफाइ, सिमिसि।

स्नायविक रोग, हस्तमैथुन की आदत वालों के—जेल्से, कैली फॉस।

स्नायविक रोग अति कोमल व्यक्तियों के उत्तेजित इन्द्रियों वालों में—क्यूप्रम।

स्नायविक रोग, तम्बाकू सेवन करने से, अधिक बैठे रहने वाले लोगों के मंदाग्नि रोग वालों के, दाहिनी तरफ के पक्षाघात वालों के—सीपिया।

स्नायविक रोग, केंचुओं के कारण—सिना, सोरी, सेबेडि।

स्नायविकता, साधारण औषधियाँ—एबीज नाइग्रा, ऐब्सिन्थि, एकोन, ऐल्फा, ऐम्ब्रा, एमाइल, ऐनाका, ऐक्विले, आर्न, आर्स, ऐसेरम; एसाफि, ऐबेना, कैम्फोरा, मोनोब्रो, कैमो, सिमिसि, कोका, कोकेन, कॉफिया, क्यूप्रम, साइप्रिपी, इयुपेटो एरो, जेल्से, ग्लीसरीन; गोसिपियम, हायोसि, इग्नै, इण्डोल, कैली ब्रोमे, कैली कार्ब, कैली फॉस, मैग फॉस, निकोलम, नक्स मॉ, नक्स वा, ऊफोरिनम, ओपियम, फास्फोरस, पल्से, सैण्टोनि, सेनेसि, साइलि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, थीया, थेरेडि, ट्रिओस्टियम, वैलेरि, एमो, जैन्थो, जिंकम मेट। देखिये भाव (मन)।

स्नायविक, अति उत्तेजना ऐकोन, ऐम्ब्रा, ऐमो, वेलेरि, ऐगस्टु, ऐण्टि क्रू, एपिस, ऐक्विलेजिया, ऐसाफी, ऐसैरम, आर्न, ऐट्रोपि, ऑरम, बेलाडो, बोरैक्स, ब्रायो, कैलेडियम, कैल्के, साइलि, कैम्फोरा, कैने इण्डि, कैन्थे, कैमो, चिनि म्यूर, क्राइ-सेन्थेमम, सिमिसि, सिन्कोना, कॉक्कु, कॉफिया, कॉल्चिकम, कोनियम, क्यूप्रम, फेरम मेट, ग्लोनी, हीपर, हाइपेरिकम, इग्नै, जस्टीसिया, कैली ब्रोम, कैली कार्ब, कैली फॉस, लैक कैना, लैके, लाइसिन, मैग फॉस, मेडो, मॉर्फीनम, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओपियम, फॉस्फो, फास्फो, हाइड्रोजे, प्लैटिना, पल्से, सीपिया, साइलि, स्पाइजे, स्टैफि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, टैरेण्टू हिस्पै, ट्युक्रि, थेरेडि, जिंकम मेट।

स्नायविकता, बाहरी हवा या ठण्डक से उत्तेजना—ऐसिटैनिलिड एकोन, ऐगैरि, एलियम, सैटी, ऐम्ब्रा, ऐमो कार्ब, एनैका, ऐण्टि क्रू, वैसि, वैडिया, वैराइटा कार्ब, बेलाडो, बोरेक्स, कैल्के कार्ब, कैल्के साइलि, कैलेण्डू, कैम्फो, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, सिन्को, सिस्टस, कोनियम, क्यूप्रम मेट, ग्रैफा, हैमे, हीपर, कैली कार्ब, कैली म्यूर, मैग म्यूर, मर्क, मेजे, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नाइट स्पि डल्सिस, नक्स वॉ, फाइजॉस्टि, सोरी, रैनन बल, रस टॉ, रूमेक्स, सेलेनि, सीपिया, साइलि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, ट्यूबर।

स्नायविकता, जरा सा दर्द भी असह्य—एकोन, आर्न, ऑरम मेट, ऑरम म्यूर, कैक्ट, कैमो, सिन्को, कॉफिया, कोल्चि, हीपर, हाइपेरि, इग्नै, कैली फॉस, लेट्रोडे, मैग फॉस, मेडो, मेलिलो, मेजे, मॉर्फि, मॉस्कस, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फॉस, रैनन स्केले, वैले, जिंकम, वैलेरि।

स्नायविकता, कम्प, गशी—एबीज कैने, एण्टिम टार्ट, ऐक्विले, आर्जे, नाइट्रि, आर्न, आर्स, ऐसैरम, कॉलो, कॉस्टि, सिमिसि, सिन्को, कॉक्कु, जेल्से, हायोसि, लैके,

लैट्रोड, मेडो, मॉस्कस, म्यूरेक्स, नक्स मॉ, नक्स वॉ, पल्से, रैफै, सीपिया, स्ट्रिक्नि, सल्फर, सल्फ्यू एसिड, टैरै हिस्पै, वैलेरि, जिंकम मेट।

स्नायु दौर्बल्य (Neurasthenia) स्नायु की शिथिलता—साधारण—औषधियाँ—ऐग्नस, ऐल्फा, ऐनैका, एन्हैलो, आर्जे नाइट्रि, एसाफी, ऐसैरम, ऐवेना, कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, कैने इण्डि, सिन्कोना, कोबैल्टम, कोका, कॉकू, क्यूप्रम मेट, क्युरारी, फ्लोरिक एसिड, जेल्से, ग्लीसरीन, ग्रैफा, हेलोनि, हाइपेरि, इग्नै, कैली हाइपोफॉस, कैली फॉस, लैके, लैथाइरस, लेसिथि, लोबे, पर्ल्यु, मॉस्कस, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओनोस्मो, ऑक्जे, एसिड, फॉस, फाइजास्टि, पिक एसिड, पाइपर मेथि, प्लम्बम, पल्से, सैकैरम, ऑफि, सार्कोले एसिड, स्कुटेलै, साइलि, स्टैनम, स्टैफि, स्टैफि, स्ट्रिक्निया फॉस, टैरै हिस्पै, ट्यूबर, टरनैरा, बरबेना, जैन्थो, जिंकम मेट, जिंकम फॉस, जिंकम, पिक। देखिये दौर्बल्य (Adynamia)।

मस्तिष्क लक्षण—विचार-शक्ति लोप होना—ऐनैका, ऑरम, कैल्के का, जेल्से, कैली फॉस, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस्फो पिक एसिड, साइलि, स्कुटेलै। देखिये मस्तिष्क शिथिलता (मन)।

बहुत दिनों के इकट्ठा हुए शोक के कारण—इग्नै।

पाकाशय के कारण ऐनैका, जेण्टि, नक्स वॉ, स्ट्रिक्निया फॉस।

व्याधि-शंका की प्रवृत्ति—ऑरम, कोका, कोनियम, कैली ब्रोमे, नैट्र म्यूर, सल्फर।

स्त्रियों में—ऐलेट्रिस, ऐलो, ऐम्ब्रा, आर्स, ऑरम, बेलिस, कैल्के कार्ब, सिन्को, कॉकु, एपिस, फेरम, हेलेनि, हायोसि, इग्नै, आयोड, कैली फॉस, लैके, लाइको, मैग कार्ब, मैग फॉस, फॉस्फो एसिड, पिक एसिड, पल्से, सीपिया, सल्फर, साइलि, जिंकम वैलेरि।

अनिद्रा—एम्ब्रा, आर्स, ऑरम, सिमिसि, कॉफिया, नक्स वॉ, जिंकम फॉस। देखिये नींद।

जननेन्द्रिय सम्बन्धी कारण—ऐगैरि, ऐग्नस, ऐनैका, कैलेडि, सिन्को, कोका, जेल्से, ग्रैफा, लेसिथि, लाइको, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओनोस्मो, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, पिक एसिड, प्लैटिना, सैबाल, सेलेनि, सीपिया, स्टैफि, थाइमाल, टरनेरा, जिंकम पिक। देखिये स्त्री जननेन्द्रिय मंडल।

स्नायु रोग विशेष (Neuroses) बच्चों का—पैसिफ्लोरा।

स्नायु रोग व्यवसायी लोगों का—जेल्से।

कम्प—(Tremors)—फड़कन, कम्पन—ऐब्सिन्थि, एगैरि, ऐगैरिसिन, एनैका, ऐण्टि टॉ, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेलाडो, कैम्फो, कैन्थे, इण्डि, कॉस्टि,

कैमो, साइक्यूटा, सिमिसि, सिन्को, कॉकुलस, कोर्डी, फेरम फॉस, जेल्से, हीपर, हायोसि, हायोसि हाइड्रोब्रो, इग्नै, आयोड, कैली ब्रो, कैली फॉस, लैके, लैट्रोडे, लिथियम, क्लो, लाइको, मेडो, मर्क सल्फ, मॉर्फि, मॉस्कस, नैट्र म्यूर, नक्स वो, ओपियम, आक्सिट्रो, फॉस एसिड, फास्फो, फाइजास्टि, प्लम्बम, रस टॉ, सैबैडि, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फर, टैरैण्टु हिस्पै, ट्यूबर, वैले, वेरैट्रिन; वेरैट्र वि, विस्कम, एल्बम, जिंकम मेट, जिंकम फॉस ।

मादक—ऐण्टि टॉ, कोकेन, कॉकु, नक्स वॉ ।

विस्रित काठिन्य—ऐसेटिक एसिड, आर्स, हायोसि, हाइड्रोब्रोम ।

धूम्रपान से—कैली कार्ब, नाइट्रि एसिड सीपिया ।

वृद्धावस्था का—ऐवेना, कैनं इण्डि, कोकेन, फॉस्फो ।

स्नायु-प्रदाह—(Neuritis)—प्रदाह—ऐकोन, इस्क्युलस, एनैन्थे, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेलाडो, बेलिस, बेनभिन डाइनाइट्रि, बर्बे वल, कार्बोनि सल्फ, कॉस्टि, सीड्रन, सेपा, सिमिसि, कोनियम, फेरम फॉस, जेल्से, हाइपेरि, मर्क, नक्स वो, पैरीरा, फॉस एसिड, फॉस्फो, प्लम्बम, प्लम्बम फॉस, रस टॉ, सैंग्वि, स्टैनम, स्ट्रॉन्शि कार्ब, स्ट्रिक्नि, थैलियम, अर्टिका, जिंकम फॉस ।

जातिभेद : प्रकार—मादक—नक्स वॉ, स्ट्रिक्नि ।

डिफ्थीरिया सम्बन्धीय—जेल्से ।

टाँग के अगले भाग का—पैरीरा ।

मोड़ने वाले भागों का सैंग्व ।

लघु जाँघ स्नायु में—इस्कियु ।

कटि-त्रिकास्थि क्षेत्र में—बर्बे वल ।

पीठ की ऊपरी भाग की जड़ में—एनैन्थे ।

स्नायु के चोट खाने से—बेलिस, हाइपेरि, फॉस एसिड ।

कई स्थानों में—बोविस्टा, कोनियम, मोर्फि, थैलियम ।

गुल्म-स्नायु सम्बन्धी, साथ में एकाएक दृष्टिहीनता—चिनि-सल्फ ।

आघात सम्बन्धी—आर्न, कैलेण्डु, सेपा, हाइपेरि ।

स्नायुशूल—साधारण औषधियाँ—ऐसिटैनि, ऐकोनिटिन, ऐकोन, ऐगैरि, ऐमो पिक, ऐमो वैले, ऐमाइल, एरैनि, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, ऐट्रोपि, बेलाडो, ब्रायो, कैजू पू, कैने इण्डि, कॉस्टि, सेपा, कैमो, चेलिडो, चिनि आर्स, चिनि-सल्फ, सीड्रन, सिमिसि, सिन्कोना, काफिया, कोलो, कोमोक्ले, कोनियम, कोर्नस फ्लो, डायस्को, जेल्से, ग्लोनो, नैफेलियम, हाइपेरि, इग्ने, इपिका, कैली, आर्स, कैली बाइक्रो, कैली फेरोसाइ, कैली आयोड, कैल्मिया, लैके, मैग कार्ब, मैग फॉस, मेनियान्थ, मेजे, मॉर्फि, नैट्र

म्यूर; निकोल सल्फ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, आक्जै एसिड, पैरिस, फॉस्फो, फाइटो, प्लैन्टे, प्लैटीना, प्रूनस स्पाइ, पल्से, रैनन बल, रोडो, साइलि, स्पाइजे, स्टैफि, सल्फर, सुम्बुल, थीपा, थेरिडि, थूजा, ट्यूबर, बैले, वेरैट्र एल्बम, वरबैस्कम, जैन्थो, जिंकम फॉस, जिंकम वैले।

कारण-प्रकार—रक्तहीनता—आर्स, सिन्को, फेरम, कैली फेरोसाइ, पल्से।

जीर्ण अवस्था या वृद्धावस्था का—आर्न, क्रियोजो, फॉस्फो, सल्फर, थूजा।

वय:सन्धिकालीन—लैके।

गठिया, वातरोग सम्बन्धी—सिमिसि, कोल्चि, कोलो, कैल्मिया, फाइटो, रैनन बल, रोडो, रस टॉ, सल्फर।

स्वयम् रोग विशेष—ऐकोन, आर्स।

इन्फ्लुएन्जा का दौर्बल्य—आर्स।

मलेरिया—ऐरैनि, आर्स, सीड्रन, चिनि-सल्फ, सिन्को, मेनियान्थ, नैट्र म्यूर, निकोलम सल्फ, स्टैनम, सल्फर।

हाल के आक्रमण, युवा में—एकोन, बेल, कोलो, जेल्से, कैल्मिया, स्पाइजे।

उपदंशीय—कैली आयोग, मेजे, फाइटो।

आघात सम्बन्धी, अंग कटवाने के बाद—ऐमो म्यूर, आर्न, सेपा, हाइपेरिकम, कैल्मिया, फॉस एसिड, सिम्फाइट।

भैंसिया दाद के बाद—मेजे, मॉर्फि।

स्थान—बाजू व गर्दन सम्बन्धी (Cervico-Brachial)—ऐकोन रै, ब्रायो, सेपा, कैमो, कॉक्कस, कार्न फ्लो, हाइपेरि, कैल्मिया, मर्क, नक्स वॉ, पेरिस, रस टॉ, सल्फर, टेरेबि, वेरैट्र एल्ब।

सिर के पिछले भाग में गर्दन की जड़ में—बेल, ब्रायो, चिनि सल्फ, सिन्को, नक्स वॉ, पल्से, जिंक फॉस।

पलक तथा आँखों में—सिमिसि, जेल्से, मेजे, नैट्र म्यूर, स्पाइजे। देखिये नेत्र-स्नायुशूल (आँखें)।

जंघ-अग्रभागिका—ऐमो म्यूर, कॉफिया, कोलो, जेल्से, नेफै, लिमुल, नैट्र आर्स, एनैन्थे, सोलेन, लाइको, स्पाइजे, स्टैफि, सल्फर, जैन्थो।

आँखों के गढ़ों के निचले भाग का—आर्जे नाइट्रि, बेल, मैग फॉस, मेजे, नक्स वॉ, फॉस्फो। देखिये पंचमी मौखिक नाड़ी।

पञ्जरास्थि के बीच के स्थान का—ऐकोन, ऐरानि, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, ऐस्क्ले ट्यूबरो, ऐस्टेरि बेल, ब्रोमि, ब्रायो, चेलिडो, सिमिसि, गॉल्थे, मैग फॉस,

मेन्थोल, मेजे, मॉर्फि, नक्स वॉ, पैरिस, फॉस्फो, पल्से, रैनन वल, रोडो, सैम्बू, जिंक मेट ।

कटि-आमाशयिक—ऐरानि, बेल, क्लिमै, कोलो, क्युप्रम आर्स, हैमे, मैग फॉस, नक्स वॉ ।

उदर वक्ष-व्यवधायक पेशी (डायाफ्राम) का—बेल ।

गृध्रसी (Sciatica)—एसिटैनि, ऐकोन, ऐमो म्यूर, ऐपोसाई, आर्न, आर्स, आर्स मेट, आर्स सल्फ रूब, बेल, ब्रायो, कैप्सि, कार्बोनि, ऑक्सि, कार्बोनि सल्फ, कैमो, सिन्को, कोलो, कोटाइलेड, डायस्को, गॉल्थे, जेल्से, जिन्से, नैफ, हाइमोसा, हाइपेरि, इग्नै, इण्डिगो, आइरिस, कैली का, कैली आयोड, कैली फॉस, लैक केना, लाइको, मैग फॉस, नैट्र सल्फ, निक्टैन्थ, नक्स वॉ, पैलैडि, फाइटो, प्लम्ब, पॉलिगो, रैनन वल, रस टॉ, रूटा, सैलि एसिड, सीपिया, स्टैफि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, सल्फ रूब, सिफिल, टेल्यूरि, टेरेबि, थीने, थूजा, वैले, वेरेट्र एल्ब, विस्कम, जैन्थो, जिंक वैले ।

गृध्रसी, तीव्र अवस्था—ऐकोन, ब्रायो, कैमो, कोलो, इग्नै ।

गृध्रसी, जीर्ण अवस्था—आर्स, कैल्के का, कैली आयोड, लाइको, फॉस, प्लम्बम, रैनन वल, रस टॉ, सल्फर, जिंक मेट ।

गृध्रसी, गरमी के दिनों में जाड़े में, काली खाँसी हो—स्टैफ ।

गृध्रसी, वातरोगिक—ऐकोन, ब्रायो, सिमिसि, गुवाइकम, हाइमोसा, लीडम, रस टॉ ।

गृध्रसी, उपदंशीय—कैली आयोड, मर्क कार, फाइटो ।

गृध्रसी, गर्भाशयिक—बेल, फेरम, ग्रैफा, मर्क, पल्से, सीपिया, सल्फर ।

गृध्रसी, कशेरुका सम्बन्धी—लैक केना, नेट्र म्यूर, फॉस, साइलि, सल्फर, टेल्यूरि ।

शुक्ररज्जु—क्लिमै, कोलो, हैमे, ओलि ऐनि, ऑक्जै एसिड, रोडो, स्पॉन्जिया । देखिये पुरुष जननेन्द्रिय मण्डल ।

मेरुदण्ड—पैरिस । देखिये मेरुदण्ड रीढ़ ।

आँख के गढ़े के निचले भाग का—कॉस्टि, कोल्चि, कोनि, कैली कार्ब, फॉस । देखिये पंचमी मौखिक नाड़ी ।

आँख के गढ़े के ऊपरी भाग का—आर्जे नाइट्रि, ऐसाफि, सीड्रन, चेलिडो, चिनि सल्फ, सिमिसि, कैली बाइ, मैग फॉस, मॉर्फि, नक्स वॉ, रैनन वल, स्पाइजे, स्टैनम, थीने, टॉंगो, वायोला ओडो । देखिये मुखमण्डल स्नायुशूल (चेहरा) ।

दाँत—क्रियोजो, मर्क, मेजे, प्लैण्टैगो, स्टैफि, वरवैस्क । देखिये दन्तशूल (दाँत) ।

पाँचवाँ स्नायुगुच्छ—ऐकोन, ऐमाइल, ऐरानि, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐरण्डो, बेल, कैक्ट, सीड्रन, सेपा, कैमो, चेलिडो, सिमिसि, सिन्को, कोल्चि, कोलो फेरम, जेल्से, ग्लोनो, कैल्मिया, मैग फॉस, मर्क, मेजे, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, रस टॉ, सैबाल, सैंग्वि, स्पाइजे, स्टैनम, थूजा, टोंगो, वेरैट्र एल्ब, वरवैस्क, जिंकम मेट, जिंकम वैले । देखिये मुखमण्डल स्नायुशूल (चेहरा) ।

अन्तः प्रकोष्ठाथि सम्बन्धी—हाइपेरि, कैल्मिया, लाइकोपस, ऑक्सि ट्रो, रस टॉ ।

दर्द का प्रकार—कुचलन—एपिस, आर्न, बेलिस, कॉर्न फ्लो, फाइटो, रूटा ।

जलन—ऐकोन, ऐन्थ्रासि, एपिस, आर्स, कैप्सि, सेपा, सैलिसि, एसिड, स्पाइजे ।

ऐंठन की तरह, संकोचन—ऐमो म्यूर, कैक्ट, कॉलो, सिमिसि, कोलो, कोनियम, क्यूप्रम मेट, नैफे, आइरिस, मैग फॉस, नक्स वॉ, प्लैटि, प्लम्बम, स्टैनम, सल्फर, थूजा, वरबैस्क ।

खींचन—कैमो, सिन्को कोलो, फॉस एसिड, फॉस, पल्से, स्पाइजे, स्टैनम, सल्फर, वरबैस्क । देखिये फटन ।

सविराम—आर्स, चिनि-सल्फ, सिन्को, कोलो, क्यूप्रम मेट, इग्नै, मैग फॉस, नक्स वॉ, स्पाइजे । देखिये सामयिक ।

कोंचन, बिजली के धक्का जैसा—ऐकोन, बेल, कैक्ट, कॉस्टि, सिमिसि, कोलो, डेफ्नै, जेल्से, मैग कार्ब, मैग फॉस, नक्स वॉ, फाइटो, प्लम्ब, स्ट्रिक्नि; सलफ्यू एसिड, वेरैट्र एल्ब, वरबैस्क, जैन्थॉक, जिंक फॉस ।

छोटे स्थानों में सीमित हो—इग्नै, कैली बाइ, लिलि, टिग्रि, ऑक्जै, एसिड ।

धीरे-धीरे बढ़े और धीरे-धीरे अन्त हो—आर्जे नाइट्रि, प्लैटी, स्टैन, सल्फर, वेरेट्र एल्ब ।

एकाएक बढ़े और एकाएक अन्त हो—बेल, कार्बो एसिड, क्रोमि एसिड, कोलो, कैली बाइ, मैग फॉस, ओविगैलि पेलि, ऑक्सट्रो ।

सामयिक—ऐरानि, आर्स, सीड्रन, चिनि-सल्फ, क्रोमि एसिड, कैली बाइ, निकोल सल्फ, नक्स वॉ, आक्जे एसिड, पार्थेनि, सैलि एसिड, स्पाइजे, सल्फर, टोक्सिकोफिस, वरबैस्क ।

गुल्ली की तरह—ऐनाका ।

प्रचण्ड, पागल बना दे—ऐकोन, आर्जे नाइ, आर्स, बेल, कैमो, कार्बो एसिड, सिन्को, कॉफिया, कॉल्चि, कोलो, क्रियोजो, मैग फॉस, मोर्फि, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, स्पाइजे, वेरैट्र एल्ब ।

खपच्ची की तरह—इग्नै, रस टॉ ।

फटन, जगह बदलने वाली, झपटन, चमकन—इस्कियु, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, ब्रायो, कॉस्टि, कैमो, सिन्को, कोलो, डायस्को, जेल्से, नैफै, इग्नै, कैल्मि, मैग फॉस, मेजे, नक्स वॉ, पैराफि, फॉस, फाइटा, पल्से, रस टॉ, रूटा, सैंग्वि, स्पाइजे, टेरेबि।

फटन, चुभन, बड़ी स्नायु के मार्ग में—जेल्से।

फटन, चुभन, बिजली का-सा एक से एक लगातार मिली हुई चुभने के साथ, फिर अन्त में तेज चुभन - कैक्ट।

फटन, चुभन सीने और धड़ में - कॉर्न फ्लो।

फटन, चुभन हाथ-पाँव के सिरों तक—कोलो, नैफै, ग्रैफा, कैल्मिया, पैले।

फटन, चुभन, चेहरे, कन्धे, विटप प्रदेश में—ऐरण्डो।

फटन, चुभन, ऊपर की तरफ – कैल्मिया।

साथ के लक्षण—बारी-बारी किसी और जगह दर्द गहराई तक न पहुँची अवस्था—इग्नै।

संवेदनहीनता—ऐकोन, आर्स, कैल्मिया।

व्याकुलता, बेचैनी – ऐकोन, आर्स।

बाहें ठण्डी, फूली, बेदम जान पड़ें—वेरैट्र एल्ब।

फुफ्फुस—पाकाशयिक स्नायु विकार के रोग आरम्भ हो –आर्न।

हृदय-व्याकुलता – स्पाइजे।

ठंडापन—ऐगैरि, आर्स, मेनियान्थ, मेजे, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, प्लैटिना, पल्से, रस टॉ, सीपि, स्पाइजे, वेरैट्र एल्बम।

प्रदाहिक लक्षण—ऐकोन, बेल, जेल्से।

डकारें पाकाशयिक लक्षण—वेरैट्र एल्ब, वरबैस्क।

चेहरा पीला, बेचैनी, पसीना—स्पाइजे।

चेहरा लाल—ऐकोन, बेल, कैमो, वरबैस्क।

एकाएक गशी—कैमो, हीपर, मॉर्फि।

एक भाग गरम, दूसरा भाग ठण्डा—पिमेण्टा।

स्नायविक उत्तेजना—वैल, कॉफिया, इग्नै, कैली आयोड, टेरेबि।

आँखों से पानी बहना—चेलि, मेजे, पल्से, रस टॉ।

बाद में उन्माद—सिमिसि।

पेशियों का आक्षेप —ऐसी म्यूर, बेल, जेल्से, मैग फॉ, नक्स वॉ, प्लैटिना, प्लम्ब मेट, जिंक मेट।

स्नायविक कौतूहल—ऐकोन, ऐमो वैले, आर्स, कैमो, कॉफिया, जेल्से, मैग फॉस, स्पाइजे ।

सुन्नपन—एकोन, ऐगैरि, कॉस्टि, कैमो, कोलो, ग्लोना, नैफे, ग्रैफा, कैल्मिया, लैक कैना, लीडम, लिथि, कार्ब, मर्क, मेजे, प्लैटि, रस टॉ, सीपिया, स्पाइजे ।

लार बहना, कड़ी गर्दन—मेजे ।

शरीर की खाल सुकड़ी मालूम पड़े—सल्फ्यू एसिड ।

मन्दता, सुस्ती—प्लैटि ।

कमजोरी—आर्स, सिन्को, कॉल्चि, जेल्से, कैल्मिया, वेरेट्र एल्ब ।

घटना-बढ़ना, पीछे झुकने से—कैप्सि ।

ठण्डक से—आर्स, बेल, कैप्सि, सिन्को, कोलो, कैली बाइ क्रो, मैग फॉस, रूटा, रस टॉ ।

मानसिक परिश्रम से—कैल्मिया ।

झटका, धक्का—बेल, कैप्सि, स्पाइजे, टेल्युरि ।

बायीं तरफ—ऐकोन, आर्स, कॉस्टि, सीड्रन, कॉल्चि, कोलो, आइरिस, कैली बाइक्रो, मैग कार्ब, मेजे, मॉर्फि, नक्स वॉ, रस टॉ, स्पाइजे सुम्बुल ।

लेटने पर—ऐमो म्यूर, नैफे ।

रोगग्रस्त करवट लेटने पर—कोलो, कैली आयोड ।

आधी रात—आर्स, बेल, मेजे, सल्फर ।

सुबह—एकोन, चिनि सल्फ, नक्स वॉ ।

सुबह ९ बजे से ४ बजे तक—वरबैस्क ।

हरकत से—ऐकोन, आर्स, बेल, ब्रायो, सिन्को, कॉफि, कॉल्चि; कोलो नैफे, नक्स वॉ, फाइटो, रैनन वल, स्पाइजे, वरबैस्क ।

रात में—ऐकोन, आर्स, बेल, कैमो, सिमिसि, कॉफि, जिन्सेंग, इग्नै, कैली आयोड, मैग फॉस, मर्क, मेजे, प्लैटि, फाइटो, पल्से, रस टॉ, रूटा, सैलि एसिड, सिफिलि, टैल्यूरि ।

दोपहर (१२–१)—नैट्र म्यूर, सल्फर ।

दाब से—आर्स, जेल्से, प्लम्बम, वरबैस्क, जिंक मेट ।

आराम के बाद हिलते ही—लैके, कैना, रस टॉ ।

आराम, बैठने से—ऐमो, म्यूर, आर्स, मैग कार्ब, रस टॉ वैले ।

दाहिनी तरफ—बेल, चेलिडो, डायस्को, नैफे, कैल्मि, लाइको, मैग फॉस, मॉर्फि, पल्से, रैनन वल, सल्फ्यू एसिड, टेल्यूरि ।

खड़े होने से, पैर को फर्श पर आराम देने या रखने से—बेल, वैले ।

झुकने से या परिश्रम के बाद अंग सीधा करने से—स्पाइजे ।

बात करने से, छींकने से, ताप परिवर्तन से—वरबैस्क ।

छूने से—आर्स, बेल, ब्रायो, सिन्को, कोलो, लैके, मैग फॉस, मेजे, नक्स वॉ, प्लम्ब, स्पाइजे ।

दाँतों को छूने से या बन्द करने से—वरबैस्क ।

निम्न ताप से—कैमो, मेजे, प्लम्ब, पल्से, जैन्थॉ ।

घटना—पीछे की तरफ झुकने से—डायस्को ।

आगे की तरफ झुकने से—कोलो ।

आँखें बन्द करने से—ब्रायो ।

ठण्डक से—आर्स, पल्से ।

सूर्य उदय पर—सिफिलि ।

जाँघों को पेट पर मोड़ने से—नैफे ।

घुटनों के बल होकर सिर को फर्श पर कस कर दबाने से—सैंग्वि ।

चुपचाप लेटने में, आराम से—ऐमो म्यूर, ब्रायो, डायस्को, क्रियोजो, फॉस, नक्स वॉ ।

हरकत से लेटने से—ऐमो म्यूर, आर्स, डायस्को, इग्नै, कैली बाइक्रो, कैली आयोड, मैग कार्ब, ऑक्जै एसिड, पल्से, रस टॉ, सीपिया, सल्फर, वैले ।

दाब से—आर्स, बेल, ब्रायो, कॉफि, कोलो, मैग फॉस, मेनियान्थ, मेजे, नक्स वॉ, प्लम्बम, स्पाइजे ।

मलने से—एकोन ।

बैठने से—बेल, नैफे ।

निम्न ताप से—आर्स, बेल, कोला, मैग फॉस, मॉर्फि, नक्स वॉ, फॉस्फो, रस टॉ ।

निद्रा-रोग—(Sleeping Sickness)—आर्स, ऐटोक्दाइल ।

मेरुदण्ड-रक्तहीनता—ऐगैरि, प्लम्बम, सिकेल, स्ट्रिक्नि, फॉस, टैरे हिस्पै ।

जलन एगैरि, ऐलुमिना, ऐलूमि, साइल, आर्स, बेल, जेल्से, गुवाको, कैली कार्ब, कैली फेरोसाइ, कैली फॉस, मेडो, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फॉस्फो, फॉइजास्टि, पिक एसिड, स्ट्रिकनिया फॉस, सल्फर, जिंक मेट ।

ठंडक—सिमिसि ।

धक्का लगना—आर्न, बेलिस, साइक्यूटा, कोनियम, हाइपेरि, फाइजॉस्टि ।

रक्ताधिक्य—ऐब्सिन्थि, एकोन, एगैरि, आर्न, बेल, जेल्से, हाइपेरि, नक्स वॉ, ओनोस्मो, ऑक्सिट्रो, फॉस्फो, फॉइजॉस्टि, सिकेल, साइलि, स्ट्रिक्नि टैबे, वेरैट्र विरिडी ।

क्षीणता—मुलायम पड़ना, कड़ापन इत्यादि—एलूमिना, ऐलूमि, साइलि, आर्जे नाइट्रि, ऑरम, ऑरम म्यूर, बैराइटा म्यूर, कार्बोनि सल्फ, नाजा, आक्जै एसिड, फाइजॉस्टि, पिक एसिड, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब मेट, जिंक। गतिशक्ति-राहित्य देखिये।

क्षीणता, रेखायुक्त काठिन्य—आर्जे नाइट्रि, क्युप्रम, हाइपेरि, लैथाइरस, प्लम्ब।

क्षीणता, बहु-स्थानीय काठिन्य—आर्जे नाइट्रि, ऐट्रोपि, ऑरम, बैराइटा कार्ब, बेल, कैल्के कॉस्टि, चेलिडो, क्रोटे, जेल्से, लैथाइरस, लाइको, नक्स वॉ, ऑक्जै एसिड, फॉस्फो, फॉइजॉस्टि, प्लम्ब, स्ट्रिक्नि, सल्फर, टैरे हिस्पै, थूजा।

मेरुदण्ड में रक्त-प्रवाह, खून उतरना—ऐकोन, आर्न, बेल, लैके, नक्स वॉ, सिकेल।

अति संवेदनीयता—एब्रोटै, ऐकोन, ऐगैरि, एपिस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बेल, ब्रायो, चिनि-आर्स, चिनि-सल्फ, सिमिसि, कॉकु, क्रोटै, हीपर, हाइपेरि, लैके, लैक कैना, लोबे इन्फ्ला, इग्नै, मेडो, मेनिस्पर, नैट्र म्यूर, ऑक्जै एसिड, फॉस्फो एसिड, फास्फो, फाइजास्टि, पोडो, रैनन बल, रस टॉ, सिकेल, सेनेसियो, जैको, साइलि, स्ट्रिक्नि, फॉस, सल्फर, टैरे हिस्पै, टेल्यूरि, थेरिडि, विस्कम, जिंक मेट।

अति संवेदनीयता, कशेरुकाओं के बीच में—चिनि-सल्फ, नैट्र म्यूर, थेरिडि।

अति संवेदनीयता, सिलाई, टाइप करने, पियानो बजाने में बाँहों के परिश्रम के बाद—ऐगैरि, सिमिसि, रैनन बल।

अति संवेदनीयता, रीढ़ के बिचले भाग में—स्ट्रिक्निया फॉस, टेल्यूरि।

अति संवेदनीयता त्रिकास्थि नेत्र में—लोबे इन्फ्ला।

अति संवेदनीयता, रीढ़ के दाब को बचाने के लिए तिरछे होकर बैठे—चिनि-सल्फ, थेरिडि, जिंक मेट।

अति संवेदनीयता, छूने से सीने और हृदय-क्षेत्र में आक्षेपिक दर्द—टैरे हिस्पै।

अति संवेदनीयता, झटके या आवाज से बढ़े—थेरिडि।

प्रदाह—मस्तिष्क-प्रदाह (Meningitis)—ऐकोन, बेल, ब्रायो, कैली आयोड, मर्क, नैट्र सल्फ, ऑक्जै एसिड, वेरैट्र विरि। देखिये मेरुदण्ड प्रदाह (Myelitis)।

प्रदाह, (मेरुमज्जा-प्रदाह–Myelitis)—ऐकोन, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, बेल, बेलिस, ब्रायो, चेलिडो, साइक्यूटा, कोनियम, क्रोटै, डल्का, जेल्से, हायोसि, हाइपेरि, कैली आयोड, लैके, लैसाइ, मर्क, नाजा, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, आक्जै एसिड, फास्फो, फाइजास्टि, पिक एसिड, प्लम्ब मेट, रस टॉ, सीकेलि, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, वेरैट्र एल्ब, जिंक फॉस।

प्रदाह, जीर्ण मेरुमज्जा-प्रदाह—आर्स, क्रोटै, कैथाइयर, आक्जै एसिड, प्लम्बम मेट, स्ट्रिक्नि, थैलियम।

प्रदाह, आक्षेपिक जाति का—आर्जे नाइट्रि, आर्स, चेलिडो, मर्क, वेरेट्र एल्ब ।

उत्तेजना—ऐगैरि, ऐम्ब्रा, आर्जे नाइट्रि, आर्जे, बेल, बेलिस, चिनि-आर्स, चिनि-सल्फ, सिमिसि, कोबा, कॉकु, क्यूप्रम, जेल्से, गुवाको, हाइपेरि, इग्नै, कैली कार्ब, कैली फॉस, नाजा, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ऑक्जै एसिड, फॉस, फाइजॉस्टि, पिक एसिड, प्लैटि, पल्से, रैनन बल, सिकेलि, सीपिया, साइलि, स्टैफि, स्ट्रिकिन फॉस, सल्फर, टैरे हिस्पै, टेल्यूरि, थेरि, ट्यूबर, जिंक मेट, जिंक वैले । देखिये अति संवेदनीयता ।

उत्तेजना, अति मैथुन के कारण से—ऐगैरि, कैली फॉस, नेट्र म्यूर ।

उरु-स्तम्भ—ऐगैरि, एलुमेन, ऐलूमि क्लोर, ऐलूमि, ऐमो म्यूर, ऐंग्स्टूरा, एरैगै, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्स ब्रो, ऐट्रोपि, ऑरम म्यूर, बेल, कैना इण्डि, कार्बो सल्फ, कार्बो वेज, कॉस्टि, क्रोमि, सल्फ, काण्डुरै, कोनि, कुरारी, ड्यूबो, फेरम पिक, फ्लोरि एसिड, जेल्से, हायोसि, इग्नै, कैली ब्रो, कैली आयोड, लैथाइयर, लाइको, मैग फॉस, मर्क कार, नैट्र आयोड, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओनोस्मा, ऑक्जै एसिड, पेडिक्यू, फॉस्फो, फॉस्फो हाइड्रो, फाइजॉस्टि, पिक एसिड, पिक्रोटो, प्लम्ब मेट, प्लम्ब फॉस, रस टॉ, रूटा, सैबैडि; सिकेल, साइलि, स्ट्रैमो, स्ट्रिकिन, टैरेण्टू हिस्पै, थैलियम, थियोसिन, जिंक फॉस, जिंक सल्फ ।

साथ के लक्षण—आरम्भिक अवस्था—ऐंग्स्टूरा, ऐट्रोपि, बेल, कोनि, इग्नै, नक्स वॉ, सिकेलि, स्ट्रिकिन, टैरे हिस्पे, जिंक मेट, जिंक सल्फ ।

अनेक बार मूत्र-स्खलन और अन्य मूत्र सम्बन्धी लक्षण—बेल, बर्बे वल, इक्विसे, फेरम फॉस । देखिये मूत्र सम्बन्धी लक्षण ।

बिजली की तरह लपकने वाला तीव्र दर्द—एसिटैनि, इस्कियु, एगैरि, ऐलूमि, ऐमो म्यूर, ऐंग्स्टू, आर्जे नाइट्रि, आर्स; आर्स आयोड, ऐट्रोपि, बैराइटा म्यूर, बेल, बर्बे वल, डिजि, फ्लोरिक एसिड, गुवाइक, हायोसि, इग्नै, कैल्मिया, लाइको, मर्क को, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फॉस्फो, फॉइजॉस्टि, पिलोका, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब मेट, सैबैडि, सैण्टोना, सिकेल, साइलि, स्ट्रोन्शि कार्ब, स्ट्रिकिन, थैलियम, थियासिन, जिंक मेट, जिंक फॉस, जिंक सल्फ ।

पाकाशय के लक्षण—आर्जे नाइट्रि, बेल, कार्बो वेज, इग्नै, लाइको, नक्स वॉ, थियोसिन ।

पेशी-दुर्बलता, चर्म और पेशियों की संवेदनहीनता—कैने इण्डि ।

दृष्टि सम्बन्धी लक्षण—बेल, कोनि, फेरम पिक, फॉस्फो । देखिये आँखें ।

कामोत्तेजना—कैली ब्रोमे, पिक एसिड, फॉस्फो ।

उपदंशीय दोषयुक्त—कैली आयोड, मर्क कार, नाइट्रि एसिड, सिकेलि ।

एड़ी के घाव—साइलि।

मूत्राशय और मलाशय के लक्षण—ऐलूमि, फ्लोरिक एसिड, इग्नै, नक्स वॉ, स्ट्रिक्नि, टैरेण्टू हिस्पै, थियोसिन।

मेरुदण्ड के दर्द—ऐब्रोटै, ऐकोन, एडोनिस वर, एगैरि, आर्जे नाइट्रि, कैक्टस, सिमिसि, जेल्से, हाइपेरि, लैक्टू विरो, लोबे सिफ, मेनिस्पे, निकोल सल्फ, ऑक्जै एसिड, पैराफि, फॉइजॉस्टि, स्ट्रिक्नि, सिकेलि, टैरे हिस्पै, थेरिडि, जिंक मेट। देखिये पीठ दर्द, (चालक यन्त्रमण्डल)।

आंशिक पक्षाघात—कॉकु, कोनि, इरिडि, निक्ट्रैन्थ, प्लम्ब आयोड, सीकेल, स्ट्रिक्नि। देखिये पक्षाघात।

अंग अकड़न (Tetany)—ऐकोन, कॉकु, ग्रैफा, लाइको, मर्क, प्लम्ब, सिकेल, सोलेनम नाइग्र।

धनुस्तम्भ रोग (Tetanus)—ऐकोनिटिन, ऐकोन, ऐमाइल, ऐंग्स्टूरा, आर्न, बेल, कैलेण्डु, कैम्फो, कार्बोनि सल्फ, क्लोरेल, साइक्यूटा, कॉकु, कोनियम, क्यूप्रम, कुरारी, जेल्से, हाइड्रोसि एसिड, हायोसि, हाइपेरि, इग्नै, इपिका, कैली ब्रो, लैके, लॉरो, लीडम, लाइसिन, मैग फॉस, मोर्फि; मोस्क, निकोटि, नक्स वॉ, एनैन्थे, ओपि, ऑक्जे एसिड, पैसिफ्लो, फाइजॉस्टि, फाइटो, प्लैटि; स्कॉर्पियो, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, टैबै, टेरेबि, थीबेन, उपास, वेरैट्र एल्ब, जिंक मेट। देखिये विक्षेप (Trismus Face)।

मौखिक नाड़ी आक्षेप—आर्जे नाइट्रि, हायोसि, लॉरो, लाइको, सीपिया; टैरे हिस्पै, जिंकम।

मेरुदण्ड की दुर्बलता—इस्कियू, ऐलूमि, साइलि, आर्जे नाइट्रि, बैराइटा कार्ब, कैल्के फॉस, कॉकु, कोनि, नैट्र म्यूर, फॉस, पिक एसिड, सेलेनि, साइलि, स्ट्रिक्नि, जिंक, जिंक। देखिये पीठ चालक यंत्रमण्डल।

साधारण, सर्वांगिक लक्षण

फोड़ा, तीव्र—ऐकोन, ऐनैन्थे, ऐन्थ्रासि, एपिस, आर्न, आर्स, बेल, कैल्के हाइपोफॉस, कैल्के सल्फ, कैलेण्डु, कार्बो एसिड, चिनि सल्फ, सिन्को, क्रोटै, फ्लोरिक एसिड, हीपर, हिपोजी, लैके, लेपिस एल्ब, लाइको, मर्क सल्फ, माइरिस्ट सेबि, साइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फॉस्फो, रस टॉ, साइलि, सिलिका मैरि, सिफिलि, सल्फर, टेरैण्टु क्युबै, वेस्पा।

हड्डियों के आस-पास—ऐसाफि, ऑरम, कैल्के फ्लोर, कैल्के हाइपोफॉस्फेट, कैल्के फॉस, फ्लोरिक एसिड, मैगे, फॉस्फो, पल्से, साइलि, सिम्फाइटम।

जोड़ों के आस-पास—कैल्के हाइपोफास्फो, साइलि।

जीर्ण—आर्न, कैल्के कार्ब, कैल्के फ्लो, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, कैमो, सिन्को, फ्लोरिक एसिड, ग्रैफा, हीपर, आयोड, आयडोफॉ, कैली आयोड, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, ओलि जैको ऐसे, फॉस्फो, साइलि, सल्फर।

पेशियों का, गहराई तक—कैल्के कार्ब।

कमर के फोड़े—साइलि, सिम्फाइटम।

पकाने के लिए—एपिस, बेल, ब्रायो, हीपर, मर्क सल्फ।

पकाने में शीघ्रता करने के लिए—गुवाइकम, हीपर, लैके, मर्क सल्फ, ओपेरकु, फॉस्फो, फाइटो, साइलि।

एक्रोमेगली (Acromegaly)—एक रोग जिसमें हाथ, पैर और चेहरे की हड्डियाँ और कोमल अंश अस्वाभाविक रूप से बढ़ जाते हैं—पिट्यूट एक्सट्रैक्ट, थाइरॉ।

ऐडिसन्स रोग—उपवृक्क क्षय रोग—ऐड्रैनैलीन, ऐण्टि क्रू, ऐपोमोर्फि, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्स आयोड, बैसि, बेल, कैल्के आर्स, कैल्के क र्ब, हाइड्रोसि एसिड, आयोड, क्रियोजो, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, फास्फो, सिकेल, साइलि, स्पाइजे, सल्फर, सुप्रारीनल, एक्सट्रैक्ट, थूजा, ट्यूबर, बेनैंड।

रक्तहीनता, एनीमिया-पित्त तथा हरित पाण्डु रोग—(Chlorosis)—ऐसेटिक एसिड, ऐलेट्रि, ऐलूमि, आर्जे नाइट्रि, आर्जे ऑक्सि, आर्न, आर्स, ऑरम, आर्स, बिस्म, कैल्के आर्स, कैल्के कार्ब, कैल्के लैक्ट, कैल्के फॉस, फैलोप, कार्बो वेज, चिनि आर्स, चिनि सल्फ, साइक्यूटा, सिन्को, कोनि, क्रैटे, क्रोटे, क्यूप्रम आर्स, क्यूप्रम मेट, साइक्लै, फेरम ऐसेटि, फेरम आर्स, फेरम कार्ब, फेरम एट चिन, फेरम फॉस, फेरम आयोड, फेरम मेट, फेरम म्यूर, फेरम ऑक्सि, फेरम आयोड, गॉसिपि, ग्रैफाइ, हेलोनि, हाइड्रै, आयोड, इरिडि, कैली बाइ, कैली कार्ब, कैली फॉस, लेसिथि, लाइको, मैंगे ऐसेटिकम, मर्क सल्फ, नैट्र कार्ब, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फास, फाइटो, पिक एसिड, प्लैटीना, प्लम्ब, ऐसेटि, पल्से, रुबिया, सैकैर ऑफिसि, सीकेल, सीपिया, साइलि, स्ट्रिक्नि, एट फेर सिट, सल्फर, थाइरॉ, वैनेडि, जिंक आर्स, जिंक म्यूर।

हृदय-रोग के कारण—आर्स, क्रैटे, स्ट्रोफै।

शोक के कारण—नैट्र म्यूर, फॉस एसिड।

मलेरिया से—ऐल्सटो, आर्स, नैट्र म्यूर, ओस्ट्रिया, रोबिनि।

मासिक-धर्म विकार से—आर्जे, आक्सि, आर्स, कैल्के का, कैल्के फॉस, क्रैटे, साइक्लै, फेरम, ग्रैफा, कैली का, मैंगे ऐसे, नैट्र म्यूर, पल्से, सीपिया।

पोषण-विकार से—ऐलेट्रि, ऐलूमि, कैल्के फास, फेरम, हेलोनि, नक्स वॉ ।

ओषजनीकरण की कमी—पिक एसिड ।

उपदंश के कारण—कैलोट्रोपिस ।

जीवन-रस के निकल जाने से दौर्बल्य लाने वाले रोग से—ऐसेटि एसिड, ऐल्सटोनि, कैल्के फास, चिनि सल्फ, सिन्को, फेरम, हेलोनि, कैली का, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, फॉस्फो ।

रक्तस्राव हरित पाण्डु रोग—आर्जे ऑक्सि, आर्स, कैल्के का, क्रोटै, इग्नै, नैट्र ब्रो ।

कठोर रक्तहीनता—आर्स, फॉस, पिक एसिड, थाइरॉ ।

एरिथिस्टिक जाति का, जाड़े के दिनों में अधिक हो—फेरम मेट ।

श्वासरोध—ऐमो का, ऐण्टि टा, हाइड्रोसि एसिड, सल्फ हाइड्रो, उपास ।

श्वासरोध, नवजात शिशु का—ऐण्टि टॉ, लॉरो ।

रक्त ध्वंसीकरण—ऐलैन्थ, ऐमो का, ऐन्थ्रासि, आर्न, आर्स, आर्स हाइड्रो, बैप्टि, कार्बो एसिड, क्रोटै, एचिने, क्रियोजो, लैके, म्यूर एसिड, फॉस्फो, सोरी, पाइरो, रस टॉ, टैरै क्युबै । देखिये रक्त-दोष ।

हड्डियाँ वक्र चरण (Clubfoot)—नक्स वो, फॉस, स्ट्रिक्नि ।

ठण्डापन—जिंक मेट ।

अस्थि गुल्म, अस्थि-संयोजन, फूलन—कॉन्चियोलिन, रस टॉ ।

अस्थि-गुल्म, टाँगों के रोग—कैल्के का, कैल्के फॉस ।

करोटि-अस्थि पतली, मुलायम—कैल्के का, कैल्के फॉस ।

अस्थि-वक्रता—ऐमो का, कैल्के का, कैल्के फॉस, आयोड, साइलि ।

बढ़ना मन्दता—कैल्के का, कैल्के फ्लोर, कैल्के फॉस, साइलि ।

अस्थि-वृद्धि (Acromegaly)—पिट्यूट्रि एक्सट्रैक्ट, थाइरॉ ।

अस्थ्यार्बुद (Exostoses)—आर्जे मेट, ऑरम, कैल्के का, कैल्के फ्लोर, फ्लोरि एसिड, हेक्ला, कैली बाइ, कैली आयोड, लैपिस ऐल्बम, मैलेण्ड्रि, मर्क कार, मर्क फॉस, मर्क सल्फ, मेजे, फास्फो, प्लम्ब ऐसे, रूटा, साइलि, स्टिलिंजिया, सल्फर, जिंक मेट ।

हड्डी टूटने का धक्का—ऐकोन, आर्न ।

हड्डी टूटने पर देर में जुड़े—कैल्के फॉस, कैलेण्डु, आयोड, मैंगे ऐसे, मेजे, फॉस एसिड, रूटा, साइलि, सिम्फाइटम, थाइरॉ ।

अस्थि-प्रदाह—(Osteitis)—ऐसाफि, ऑरम आयोड, ऑरम, कॉन, चियोल, हेक्ला, हीपर, कैली आयोड, मर्क सल्फ, मेजे, नाइट्रि ऐसि, फॉस एसिड, फॉस्फो,

अस्थि-प्रदाह, जीर्ण (Osteitis deformfans —ऑरम, कैल्के फॉ, हेक्ला, नाइट्रि एसिड।

अस्थि-प्रदाह—अस्थि मज्जा का प्रदाह (Osteo-myelitis)—ऐकोन, चिनि सल्फ, गन पाउडर, फॉस्फो।

अस्थि-क्षय (Necrosis)—ऐंग्स्टूरा, आर्जे मेट, आर्स, ऐसाफि, ऑरम आयोड, ऑरम मेट, कैल्के का, कैल्के फ्लोर, कैल्के हाइपोफॉस, कैल्के फॉ, कैल्के साइलि, सिन्को, कोनि, फ्लोर ऐसि, ग्रैफा, हेक्ला, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, लैके, मेडो, मर्क सल्फ, मेजे, नैट्र सिल फ्लो, नाइट्रि एसिड, फॉस एसिड, फॉस्फो, प्लेटीम्यूर, साइलि, स्टैफि, सलफ्यू एसिड, सिम्फाइट, सिफिलि, सल्फर, थीया, थेरि, ट्यूबर, वेरेट्र।

चेहरे की—हीपर, मेजे, साइलि।

अर्वस्थि—स्ट्रोन्शि का।

लम्बी हड्डियाँ—ऐंग्स्टूरा, एसाफि, फ्लोरि एसिड, मेजे, स्ट्रॉन्शिया का।

चुचुकाकार-अस्थि, तालु-अस्थि, करोटि-अस्थि, नासिकास्थि—ऑरम मेट।

चुचुकाकार, कनपटी सम्बन्धी—कैल्के फ्लोर, कैप्सि।

नासिकास्थि ऑरम, कैली बाइ।

खोपड़ी की हड्डी फ्लोरि एसिड।

वक्षास्थि—कोनियम।

प्रपादास्थि—प्लैटि म्यूर।

जंघास्थि—ऐसाफि, कार्बो एसिड, हीपर, लैके, नाइट्रि एसिड, फॉस।

कशेरुकास्थि—कैल्के का, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, साइलि, स्टिक्टा, सिफिलि।

निचली हन्वस्थियाँ—फॉस।

अस्थि-गुल्म (Nodes)—ऐसाफि, ऑरम म्यूर, सिनैबे, फ्लो एसिड, कैली बाइ, कैली आयोड, मर्क, मेजे, नक्स वॉ, साइलि, फाइटो, स्टिलि। देखिये उपदंश (पुरुष जननेन्द्रिय मण्डल)।

दर्द—ऐगैरि, ऐंग्स्टू, ऐसाफि, ऑरम मेट, ऑरम म्यूर, ब्रायो, कैस्टैरि, इक्वि, कॉस्टि, सिन्को, क्रोटै, कैस्कै, इयुपेटो पर्फ, इयुफोर्बि, फ्लोरि एसिड, गुवाइकम, हीपर, आयोड, इपिका, कैली बाइ, कैली आयोड, लाइको, लाइसिन, मैंगे ऐसे, मर्क कार, मर्क सल्फ, मेजे, फॉस एसिड, फॉस्फो, फाइटो, रोडो, रस टॉ, रूटा, साइलि, स्टैफि, सल्फर, सिम्फाइट, सिफिलि, वेरि, विट्रम।

जलन—ऑरम, इयुफोर्बि, फ्लोरि एसिड, कैली आयोड, फॉस एसिड, सल्फर।

कसन, संकुचन, फीते की तरह—एपिस, कार्बो एसिड, हीपर, नाइट्रि एसिड, सल्फर।

खींचन, दाबन, उत्तेजनीयता—नाइट्रि एसिड।

कुतरन, खोदना—ऑरम, कार्बो एसिड, कैली आयोड, मैंगे ऐसे, मर्क, सिम्फाइट।

बढ़ने वाला—गुवाइक, मैंगे ऐसे, फॉस एसिड।

गुदास्थि में—कैस्टर इक्वि।

चेहरे, पैरों में—ऑरम मेट।

नड़हर की हड्डी में—ऐगैरि, असाफि, कैस्टर इक्वि, कार्बो एसिड, डल्का, मेजे, स्टैफि, स्टिलि, सिफिलि।

खोपड़ी की हड्डी में—इयुपेटो पर्फ, कैली बाइ।

कशेरुकाओं में—एगैरि।

इन्फ्लुएन्जा में—इयुपेटो पर्फ।

छोटे स्थानों में सीमित, मौसम परिवर्त्तन से—रोडो।

रात के समय—असाफि, ऑरम, फ्लोरि एसिड, हीपर, आयोड, कैली आयोड, लैके, मैंगे ऐसे, मर्क, मेजे, फॉस एसिड, फाइटो, रोडो, स्टिलि, सिफिली।

चुटकी काटने जैसा, बींधने जैसा—आर्न, सिम्फाइट।

चोटीला, कुचलन, टीसन—सिन्को, कोल्चिओल, इयुपेटो पर्फ, लाइसिन, फाइटो, रूटा।

चोटीला, कुचलन, मानो छिला है इपिका, पैरिस, फॉस एसिड, रस टॉ।

चोटीला, कुचलन, ठंडक से अधिक हो, जगह बदलने वाला—कैली बाइ।

फड़कन, दर्द—कॉस्टि, कोल्चि, फ्लोरि एसिड, फॉस एसिड।

थरथराहट वाला, झटकन, लपकन, खींचन, अति उत्तेजनीय—ऐसाफि।

तर मौसम से अधिक हो—मर्क, मेजे, नाइट्रि एसिड, फाइटो, रस टॉ, स्टिलि, सिफिलि।

अस्थि वेष्ठ का प्रदाह (Periostitis) तथा अन्य अस्थिवेष्ठ के रोग—एपिस, ऐरानिया, ऐसाफि, ऑरम मेट, ऑरम म्यूर, कैल्के कार्ब, सिन्को, क्लिमै, कोल्चि, कोनियम, फेरम आयोड, ग्रैफा, गुवाइक, हेक्ला, आयोड, कैली बाइ, कैली आयोड, मैंगे ऐसे, मर्क सल्फ, मेजे, नाइट्रि एसि, फॉस एसिड, फॉस, फाइटो, प्लैटि म्यूर, रोडो, रस टॉ, रूटा, सारसा, साइलि, स्टिलि, सिम्फाइट।

मुलायम पड़ना—अस्थि कोमल—कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, गुवाइक, आयोड, मर्क सल्फ, फॉस्फो।

मेरुदंडीय—द्विभाजन—ब्रायो, कैल्के, फॉस, सोरि, ट्यूबर।

मेरुदण्ड का सड़ना—Spinal caries (Pott's Disease)—आर्जे मेट, आरम, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, कोनियम, आयोड, कैली आयोड, मर्क आयोड रूबर, फॉस ऐसि, फॉस, पाइरो, साइलि, स्टिलि, सल्फर, सिफिलि, ट्यूबर, विरेट्रम।

मेरुदण्ड वक्रता—कैल्के कार्ब, कैल्के फॉस, फेरम आयोड, फॉस्फो, साइलि, सल्फर, थेरेडि।

चोट का घाव—रूटा, सिम्फाइट।

गिल्टी के साथ प्लेग—ऐन्थ्रैसि, ऐण्टि टॉ, आर्स, बैप्टी, बेल, ब्यूबोनि, कार्बो वेज, सिन्को, क्रॉटै, इग्नै, आयोड, लैके, नाजा, ऑपरकु, फॉस्फो, पाइरो, रस टॉ, टैरेण्टु क्यु।

कर्कट (कैंसर) रोग—साधारण लक्षणों की औषधियाँ—ऐसेटिक ऐसि, ऐनैन्थे, ऐण्टि क्लो, एपिस, आर्स, आर्स ब्रो, आर्स आयोड, ऐस्टेरि, ऑरम आर्स, ऑरम म्यूर, नैट्रो, बैप्टि, बिस्म, ब्रोमि, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, कैल्के, ऑक्सि, कैलैण्डु, कार्बो एसिड, कार्बो ऐनि, कार्बोनि सल्फ, कार्सिनोसिन, कोलीन, साइक्यु, सिनामो, सिस्टस, कोण्डुरै, कोनियम, क्यूप्रम ऐसे, इओसिन, इयुफोर्बि, फार्म एसिड, फार्मिका, फुलिगो, गैलियम ऐपै, गुवाको, ग्रैफा, हैमे, होआंग नै, हाइड्रै, आयोड, कैली आर्स, कैली साइ, कैली आयोड, क्रियोजो, लैके, लेपिस एल्बम, लाइको, मैलेण्ड्रि, मेडो, फॉस्फो, फाइटो, रेडियम, रूमेक्स रिपे, ऐसेटो, सैंग्वि, सेम्पर्वि टेक, स्किरि, सेडम, सीपि, साइलि, सिम्फाइट, सल्फर, टैक्सस, थूजा।

कैन्सर, अस्थिमय गह्वर का—ऑरम, सिम्फाइट।

कैन्सर, अस्थि सम्बन्धी—ऑरम आयोड; फॉस्फो, सिम्फाइट।

कैन्सर, निचली आँतों का—रूटा।

कैन्सर, स्तनों का—आर्स आयोड, बैराइटा आयोड, ब्रोमि, ब्यूफो, कार्बो ऐनि, फार्सिनिसि, काण्डुरै, कोनि, फार्म एसिड, ग्रैफा, हाइड्रै, फाइटो, प्लम्ब आयोड, नैट्र कैकोडाइ, स्किरि। देखिये स्त्री जननेन्द्रिय मण्डल।

कैन्सर, अन्धान्त्र पुच्छ का—आर्निथोगै।

कैन्सर, ग्रंथि संगठन का—होआंग नैन।

कैन्सर, अन्त्रच्छदा कला का—लोबे एरि।

कैन्सर, पेट का—ऐसेटि एसिड, आर्स, बिस्म, कैडमि सल्फ, कोण्डुरै, फार्म एसिड, हाइड्रै, क्रियोजो, ऑर्निथोगै, फास्फो, सिकेलि। देखिये पेट।

कैन्सर, गर्भाशय का—ऑरम म्यूरि नैट्रो, कार्बो ऐनि, कार्सिनोसि, फुलिगो, हाइड्रै, आयोड, लैपिस ऐल्बस, नैट्र कैकोडाइल, नाइट्रि एसिड, सिकेलि। देखिये स्त्री जननेन्द्रिय।

कैन्सर, दर्द निवारण के लिए—एलोज, एपिस, ऐन्थ्रैसि, आर्स, ऐस्टेरि, ब्रायो, कैल्के ऐसे, कैल्के का, कैल्के आक्सि, कार्सिनो, सिड्रोन. सिनामो, कोण्डुरै, कोनि, एचिने, इयुफोर्बि, हाइड्रै, मैग फॉस, मोर्फि, ओपि, ओवा टा, फॉस एसिड, साइलि।

उपस्थि (उपास्थि वेष्ठ प्रदाह) (Pericondritis) प्रदाह—आर्जे मेट, बेल, कैमो, सिमिसि, ओलिएण्ड, प्लम्ब, रूटा।

उपास्थि पीड़ा—आर्जे मेट, रूटा।

उपास्थि घाव—मर्क कार।

सौत्रिक तन्तु—कड़ापन—ऐन्थ्रैसि, कार्बो ऐनि, ग्रैफा, कैली आयोड, क्रियोजो, मर्क, प्लम्ब आयोड, रस टॉ, साइलि।

कौशिक तन्तु प्रदाह—एपिस, आर्न, आर्स, बैप्टि, क्रोटै, लैके, मैंगे ऐसे, मर्क आयोड रूबर, रस टॉ, साइलि, वेस्पा।

बाधायें-दुरुपयोग—मादक पेय के दुरुपयोग से—ऐगैरि, ऐपोमोर्फि, ऐण्टि टॉ, आर्स, ऐसैर, ऑरम, कैल्के आर्स, कार्बो वेज, कार्बोनि सल्फ, कार्डु मैरि, कोका, कॉकु, कोल्चि, इयुपेटो पर्फ, हाइड्रै, इपिका, लैके, लीडम, लोबे इन्फ्ला, लाइको, नक्स वॉ, क्वेरकस, रैनन वल, स्ट्रिक्नि, सल्फ्यू एसिड, सल्फर, वेरैट्र एल्बम। देखिये मद्यपान रोग (स्नायु-मण्डल)।

दुरुपयोग, बच्छनाग विष का—सल्फर।

दुरुपयोग, संखिया विष का—कार्बो वेज, फेरम, हीपर, इपिका, सैम्बू, वेरैट्र एल्बम।

दुरुपयोग, बेलाडोना के विष का—हायोसि, ओपियम।

दुरुपयोग, पोटैशियम ब्रोमाइड का - कैम्फो, हेलोनि, नक्स वॉ, जिंक मेट।

दुरुपयोग, कपूर का—कैन्थे, कॉफिया, ओपियम।

दुरुपयोग, कैन्थरिस का—एपिस, कैम्फोरा।

दुरुपयोग, कैमोमिला का—सिन्को, कॉफिया, इग्नै, नक्स वॉ, पल्से, वैले।

दुरुपयोग, क्लोरेल का—कैने इण्डि।

दुरुपयोग, पोटैशियम क्लोरेट का—हाइड्रै।

दुरुपयोग, कॉडलिवर ऑयल का—हीपर।

दुरुपयोग, कॉफी का—कैमो, गुवारिया, इग्नै, नक्स वॉ।

दुरुपयोग, कॉल्चिकम का—लीडम।

दुरुपयोग, अँचार, चटनी इत्यादि का—नक्स वॉ।

दुरुपयोग, डिजिटैलिस का—सिन्को, नाइट्रि एसिड।

दुरुपयोग, साधारणतया सभी प्रभावकारी औषधियों का—ऐलो, हाइड्रै, नक्स वॉ, ट्युक्रि।

दुरुपयोग, अर्गट का सिन्को, लैके, नक्स वॉ, सीकेल, सोलेन नाइग्रम।

दुरुपयोग, आयोडीन मिश्रित योगों का —आर्स, बेल, हीपर, हाइड्रै, फॉस।

दुरुपयोग, लोहा मिली औषधियों का—सिन्को, हीपर, पल्से।

दुरुपयोग, सीसा (धातु) के योगों का—ऐलुमि, बेल, कार्बोनि सल्फ, कॉस्टि, कोलो, आयोड, कैली ब्रो, कैली आयोड, मर्क, नक्स वॉ, ओपि, पेट्रोलि, प्लैटि, सल्फ्यू एसिड।

दुरुपयोग, मैग्नीशिया का नक्स वॉ, रियूम।

दुरुपयोग, पारा का—ऐंगस्टू, ऐण्टि टार्ट, आर्जे मेट, ऐमाफि, ऑरम, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिन्को, क्लिमै, डल्का, फ्लोरि एसिड, गुवाइक, हीपर, आयोड, कैली आयोड, लैके, मेजे, नाइट्रि एसिड, ओपि, प्लैटि म्यूर, फाइटो, पोडो, पल्से, रस ग्लै, सारसा, सल्फर।

दुरुपयोग, नींद लाने वाली औषधियों का—ऐसेटिक एसिड, एपोमोर्फि, ऐवेना, कैम्फो, कैने इण्डि, कैमो, सिमिसि, इपिका, मैकोटि, म्यूरि एसिड।

दुरुपयोग, सिल्वर नाइट्रेट का—नैट्र म्यूर।

दुरुपयोग, फॉस्फोरस का—लैके, नक्स वॉ।

दुरुपयोग, नमक का—आर्स, बेल, कोलो, कार्बो वेज, इयूकैलि, फेरम, इपिका, लैके, मेनियान्थ, नैट्र म्यूर, पार्थे, पल्से, सेलेनि।

दुरुपयोग, नमक का—आर्स, कार्बो वेज, नैट्र म्यूर, नाइट्रि स्पि डल, फॉस्फो।

दुरुपयोग, स्ट्रैमोनियम का—ऐसेटिक एसिड, नक्स वॉ, टैबे।

दुरुपयोग, स्ट्रिक्निन का—कुरारी, इयुकैलि, कैली ब्रोमि, फाइजॉस्टि।

दुरुपयोग, चीनी का—मर्क वाइवस, नैट्र फॉस।

दुरुपयोग, गन्धक का—पल्से, सेलेनि।

दुरुपयोग, कोलटार के बाहरी स्थानीय प्रयोग का—बोविस्टा।

दुरुपयोग, चाय का—ऐबीज नाइग्रा, सिन्को, डायस्को, फेरम, पल्से, सेलेनि, थूजा।

दुरुपयोग, तम्बाकू का—एबीज नाइग्रा, आर्स, कैलैडि, कैल्के फॉस, कैम्फो, चिनि आर्स, सिन्को, कोका, इग्नै, इपिका, कैल्मि, लाइको, म्यूरि एसिड, नक्स वॉ, फास्फो, प्लैटि, प्लम्ब, सीपिया, स्पाइजै, स्टैफि, टैबे, वेरेट्र एल्ब।

दुरुपयोग, तम्बाकू का लड़कों में—आर्जे नाइट्रि, आर्स, वेरैट्र एल्ब।

दुरुपयोग, टरपेण्टाइन का—नक्स मॉ।

दुरुपयोग, वानस्पतिक औषधियों का—कैम्फोरा, नक्स वॉ।

दुरुपयोग, वेरैट्रम का—कैम्फोरा, कॉफिया।

बेहोशी की दवा के वाष्प का विष मारने के लिए—ऐसेटि ऐसि, ऐमो कॉस्टि, एमाइल, हीपर, फास्फो।

काटना—कीड़ों, साँप, कुत्तों का—ऐसेटिक एसिड, ऐमो का, ऐमो कॉस्टि, ऐन्थ्रेसि, एपिस, आर्न, आर्स; बेल, कैलैडि, कैम्फो, सीड्रन, क्रोटै, एचिने, गोलोण्ड्रिना, ग्रिण्डे, गुवाको, जिम्ने; हाइड्रोसि एसिड, हाइपेरि, कैली परमैंगे, लैके, लीडम, मॉस्क, पाइरा, सैलैनि, सिसिरिन्चियम, पाइरिया, ट्रिक्नोस।

लकड़ी के कोयलों के धुएँ का, रोशनी करने वाले गैस की गन्ध का बुरा असर - ऐसेटिक एसिड, ऐमो कार्ब, आर्न, बेल, बोवि, काफिया, ओपियम।

दबाना : स्राव रोकने का बुरा असर—एब्रोटै, एसाफी, ऑरम म्यूर, बैराइटा का, ब्रायो, ग्रैफा, लैके, लोबे इन्फ्ला, मेडो, मर्क सल्फ, सोरी, सैनिकू, साइलि, स्ट्रैमो, सल्फर, जिंकम मेट।

पैर के पसीने के दब जाने का बुरा असर—बैराइटा का, क्यूप्रम, फॉर्मिका, ग्रैफा, सोरी, सैनिकू, साइलि, जिंक मेट।

सुजाक-स्राव के दब जाने का बुरा असर—ग्रैफा, सोरी, मेडो, थूजा, एक्स-रे।

पसीने के दब जाने का बुरा असर—ऐकोन, बेलिस, डल्का, रस टॉ।

जीर्ण रोगों की चिकित्सा—आरम्भ करने के लिये—कैल्के का, कैल्के फॉस, नक्स वॉ, पल्से, सल्फर।

घाव के निशान के रोग— कैल्के फ्लोर, फ्लोरि एसिड, हाइपेरि, फाइटो, साइलि, थियोसिन।

घाव के निशान, ताजे हों, फिर से खुल जायें—कॉस्टि, फ्लोरि एसिड, ग्रैफा, मैग पोल ऐम, साइलि।

घाव के निशान खुल जायें - फ्लोरि एसिड।

घाव के निशान, मौसम बदलने के समय दर्द करें— नाइट्रि एसिड।

घाव के निशान, हरे हो जायें—लीडम।

घाव के निशान लाल या नीले हो जायें—सल्फ्यू एसिड।

बाधायें : उत्पन्न हों, अनियमित रूप से—मॉस्कस।

बाधायें, उत्पन्न हों, कर्ण रेखावत् दिशा में, ऊपरी बायें भाग से निचले दाहिने भाग तक—ऐगैरि, ऐण्टि टा, स्ट्रैमो।

बाधायें, उत्पन्न हों, कर्ण रेखावत् दिशा में, ऊपरी दाहिने भाग से निचले बायें, भाग तक—ऐम्ब्रा, ब्रोमि, मेडो, फॉस्फा, सल्फ्यू एसिड।

बाधायें; उत्पन्न हों, ऊपर से नीचे को—कैक्टस, कैल्मिया।

बाधायें, उत्पन्न हों, नीचे से ऊपर को—लीडम।

बाधायें, उत्पन्न हों, धीरे-धीरे—कैल्के, साइलि, सिन्को, रेडियम, टेल्यूरि।

बाधायें, उत्पन्न हों, धीरे-धीरे और अन्त हों धीरे-धीरे—आर्जे नाइट्रि, प्लैटिना, स्टैनम, स्ट्रोन्शिया का, सिफिलि।

बाधायें, उत्पन्न हों धीरे-धीरे और अन्त हों, एकाएक—इग्नै, पल्से, सल्फ्यू एसिड।

बाधायें, उत्पन्न हों, छोटे स्थानों में—कॉफिया, इग्नै, कैली बाइ, लिलि टि, ऑक्जै एसिड।

बाधायें, उत्पन्न हों एकाएक और अन्त हों, धीरे-धीरे—पल्से, सल्फ्यू एसिड।

बाधायें, उत्पन्न हों एकाएक और अन्त हो एकाएक—बेल, कैक्ट, कार्बो एसिड, इयुपेटो पर्फ, इयुपेटो पर्प्यु, इग्नै, कैली बाइ, लाइको, मैग फॉस, नाइट्रि एसिड, ऑक्सीटोपिस, पेट्रोलि, पोडोस, स्ट्रिक्नि, ट्यूबर।

बाधायें, उत्पन्न हों एकाएक, तनाव तीव्रता से बढ़े, पहली हरकत पर झटके के साथ अन्त हों—पल्से, रस टॉ।

बाधायें, प्राणघातक, सरल बनाने के लिये—ऐमाइल, एण्टि टा, आर्स, कार्बो वेज, लैके, टैरै हिस्पै।

बाधायें, उत्पन्न हों ठण्डक गनगनी लगने से—ऐकोन, कॉफिया, डल्का, नक्स वॉ, सल्फ।

बाधायें, उत्पन्न हों, पैरों में ठण्डक लगने से—कैल्के का, क्युप्रम मेट।

बाधायें, उत्पन्न हों, ठण्डी, सूखी हवा के असर से—एकोन, ब्रायो, कॉस्टि, हीपर, रोडो।

बाधायें, उत्पन्न हों, ठण्डी तर जगहों में रहने से—ऐण्टि टा, ऐरानि, आर्स, आर्स आयोड, कैल्के का, साइलि, डल्का, नेट्र सल्फ, नक्स मॉ, रस टॉ, टेरेबि।

बाधायें, उत्पन्न हों, शक्ति से अधिक बोझ उठाने से—आर्न, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कैली का, लाइको, नैट्र का, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, रस टॉ, सीपिया, सल्फर।

बाधायें, उत्पन्न हों, गीली मिट्टी में, या ठण्डे पानी में काम करने से—कैल्के का, मैग फॉस।

बाधायें, बराबर घटा और बढ़ा करें—सल्फर।

बाधायें, घटें और उतने पर ही टिकी रहें—कॉस्टि, सोरि, सल्फर।

बाधायें, जो जीवन के सबसे अगले और अन्त के भाग में उत्पन्न हों—ऐण्टि क्रू, बैराइटा का, लाइको, मिलेफो, ओपि, वेरैट्र एल्बम।

बाधायें, जो मोटे लोगों में उत्पन्न हों—एलियम सैटि, ऐमो का, ऐमो म्यूर, ऐण्टिक क्रू, ऑरम म्यूर, बैराइटा का, ब्लाटा ओरि, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैप्सि,

कार्बो वेज, फेरम, ग्रैफा, कैली बाइ, कैली ब्रो, कैली का, लोबे इन्फ्ला, ओपि, फाइटो, पल्से, थूजा। देखिये मोटापन।

बाधायें जो वृद्ध लोगों में उत्पन्न हों—ऐगैरि, ऐलो, ऐलुमेन, ऐलूमिना, ऐम्ब्रा, ऐण्टि का, आर्स, अरैण्टि, ऑरम मेट, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कार्बो; कोल्चि, कोनियम, क्रोटै, फ्लोरि एसिड, हाइड्रै, आयोड, कैली का, लाइको, नाइट्रि एसिड, नक्स मॉ, ओपि, फॉस्फो, सिकेल, सल्फ्यू एसिड, वेरेट्र ऐल्बम।

बाधायें, जो जगह बदला करें, चञ्चल हों, परिवर्तनशील हों—एपिस, बेल, बेन्जो एसिड, बर्बे वल, डायस्को, इग्नै, कैली बाइ, कैली सल्फ, लैक कैना, लिलि टिग्रि, मैग फॉस, मैग्नोलिया; मैंगे ऐसै, फाइटो, पल्से, सैनिकू, सिफिल, ट्यूबर।

बाधायें जिनमें दर्द न हो—ओपियम, स्ट्रैमो।

चर्मोदभेद, चर्म पुष्पिका, दब जाने या कुछ विकल कर रुक जाने का बुरा असर—एपिस, आर्स, ऐसाफि, ब्रायो, कैम्फो, कॉस्टि, साइक्यूटा, क्यूप्रम, हेलेबो, मैग सल्फ, ओपि, सोरि, पल्से, स्ट्रैमो, सल्फर, ट्यूबर, एक्स-रे, जिंक मेट।

स्वरयन्त्र और कण्ठनली में बाहरी वस्तु का अँटकना—इपिका, ऐण्टि टा, साइलि।

अति तेज विकास का बुरा असर—कैल्के का, कैल्के फॉस, फेरम ऐसे, इण्डि, क्रियोजो, फॉस ऐसि, फॉस्फो।

मानसिक परिश्रम से बाधायें उत्पन्न होना—आर्जे नाइट्रि, जेल्से, ग्रैफा, लाइको, नैट्र का, नक्स वॉ, फॉस एसिड, साइलि।

खानों में काम करने का बुरा असर—काडु मैरि, नैट्र आर्स।

पहाड़ की चढ़ाई, हवाई जहाज की यात्रा का बुरा असर—आर्स, कोका।

रात को पहरा देने और जागने से, मानसिक परिश्रम का बुरा असर—बेलिस, कैप्सि, कॉस्टि, कॉकु, कोल्चि, क्युप्रम, डिपोडि, जेल्से, इग्नै, लैक डिफ्लो, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस ऐसि, जिंक ऐसे। देखिये स्नायु दौर्बल्य (स्नायु मण्डल)।

पोषण विकार, मन्द विकास—बैसि, बैराइटा का, कैल्के का, कैल्के फॉस, कॉस्टि, क्रियोजो, लैक डिफ्लो, मेडो, नैट्र म्यूर, पाइनस साइल, साइलि, थाइरॉ।

ओक-विष और रस-टॉक्स विष—ऐमो का, एनाका, एपिस, आर्न, ऐस्टैकस, सिमिसि, क्रोटो टि, साइप्रिपी, एचिने, एरेक्थाइ, इयुफॉर्बिको, ग्रैफा, ग्रिण्डे, हेडिओमा, हाइड्रोफाइलम, लीडम, मेजे, प्लैण्टै, प्रिमुला ओव, रस डाई, रस टॉ, सैंग्वि, सीपिया, टैनैसे, आर्टिका, वैनिलिन, वरबैस्क, जेराफाइल।

सड़े भोजन का विष (Ptomaine) का बुरा असर—ऐब्सिन्थि, ऐसेटि एसिड, आर्स, कैम्फो, कार्बो एनि, कार्बो वेज, सेरा, क्राटै, क्यूप्रम आर्स, गन पाउडर, क्रियोजो, पाइरो, अर्टिका, वेरैट्र एल्बम ।

सड़े भोजन का विष, कुकुरमुत्ता का बुरा असर—ऐगैरि, एट्रोपि, बेल, कैम्फो, पाइरो ।

गंदी नाली के गैस या दूसरी विषैली दुर्गन्ध का बुरा असर—ऐन्थ्रैसि, बैप्टि, फाइटो, पाइरो ।

धूप लगना (Sun-storke) लू लगने (Coup-de-soeil) का बुरा असर—ऐकोन, ऐण्टि क्रू, बेल, ब्रायो, कैक्ट, कैम्फो, जेल्से, ग्लोनो, हाइड्रोसि एसिड, लैके, नैट्र का, ओपि, स्ट्रैमो, अस्निया, वेरैट्र विरि । देखिये पतनावस्था (स्नायुमण्डल), घटना-बढ़ना ।

चेचक के टीके का बुरा असर—ऐकोन, ऐण्टि टा, बेल, क्रोटै, एचिने, मैलेण्ड्रि, मर्क सल्फ, मेजे, सारसा, सीपिया, साइलि, सल्फर, थूजा ।

जीवन रस निकल जाने का बुरा असर—कैल्के फॉस, सिन्को, हैमे, कैली का, कैली फॉस, नैट्र म्यूर, फॉस एसि, फॉस्फो, सोरि, सीपिया, स्टैफि ।

अपकृष्टता (Degeneration)—चर्बीली—आर्स, ऑरम, क्यूप्रम, कैली कार, फॉस्फो, वैनेडि ।

शोथ रोग (Dropsy)—एसिटैनिलिड, ऐसेटि ऐस, ऐडोन, ऐडोनि वर, ऐमेलोप, ऐमो बेन्जो, एपिस, एपोसाइ, आर्जे फॉस, आर्स, आर्स आयोड, ऐस्क्लेपि सिरि, ऐमक्लै विन्से, बेन्जो एसिड, ब्लाटा ऐमे, ब्रासिक, ब्रायो, कैक्ट, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैफेन, कैहिन्का, कार्डु मैरि, सिन्को, कोल्चियर, कोल्चि, कोन्वे, कोपेवा, क्रोटै, डिजि, डल्का, इलैटी, इयुपेटो पर्प्यु, इयुफोर्बि, फेरम, फ्लोरि एसि, गैलियम, हेलेबो, हापर, आयोड, आइरिस, आइरिस वर्स, जैट्रोफा, जुनिपेरस, कैली ऐसे, कैली आर्ज, कैली का, कैली आयोड, कैली नाइट्रि, लैके डिफलो, लैके, लैक्टू विरो, लिया-ट्रिस, लाइको, मर्क डल, नैस्टर्टि, नाइट्रि स्पि डल्सि, ओनिस्कस, ऑक्सिडेण्ड्रन, फैसिओल, फॉस्फो, पिलोका, प्रून स्पाइ, सोरि, क्वेर्कस, रस टॉ, सैम्बू कैन, सैम्बू, सिला, सोलेन नाइ, सॉलिडै, स्ट्रोफै, स्ट्रिक्नि आर्स, टेरेबि, ट्युक्रि स्कार, थ्लैस्पी, टोक्सि कोफिस, युरेनियम, यूरिक एसिड ।

कुनैन के दुरुपयोग से—ऐपोसाइ ।

अति मद्यपान से—आर्स, फ्लोरि एसिड, सल्फर ।

चर्मोद्भेद के दबने से, पसीना रुकने से, वात रोग—डल्का ।

हृदय रोग से—ऐडोनि वर, एपिस, एपोसाइ, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, ऐस्क्ले सिरि, ऑरम मेट, कैक्ट, कैफेन, कोलिन्सो, कोन्वै, क्रैटेग, डिजि, डिजि टैलिन, आयोड, कैल्मि, लियाट्रिस, मर्क डल्सि, स्ट्रोफै। देखिये हृदय।

गुर्दों की बीमारी से—ऐम्फिलॉप्सि, ऐण्टि टा, एपिस, ऐपोसाइ, आर्स, एस्क्ले सिरि, एस्पैरै, चिमैफि, डिजि, डिजिटैलिन, इयुपेटो पर्फ, हेलोनि, लैक डिफ्लो, लियाट्रिस, मर्क कार, मर्क डल्सि, प्लम्ब, टेरेबि, यूरिक ऐसि। देखिये मूत्र-यन्त्र मण्डल।

जिगर के रोग से—ऐपोसाइ, आर्स, ऐस्क्ले सिरि, ऑरम, काडुमैरि, सिआनोथ, चेलिडो, चिमैफि, लैक डिफ्लो, लियाट्रिस, लाइको, म्यूरि एसिड, पोलिनिया। देखिये जिगर रोग (उदर)।

युवारम्भ काल अथवा रजोनिवृत्तिकाल में मासिक-धर्म विकार के कारण—पल्से।

प्लीहा रोग के कारण—सियानोथ, लियाट्रिस, क्वेरकस, सिला। देखिये प्लीहा, तिल्ली रोग (उदर)।

स्वल्प विराम ज्वर के कारण से—हेलेबो।

अरुण ज्वर के कारण से—ऐकोन, एपिस, ऐपोसाइ, आर्स, ऐस्क्ले सिरि, कोल्चि, डिजि, डल्का, हेलेबो, हीपर, जुनिपे, लैके, पिलोका, सिला, टेरेबि।

चर्म पुष्पिका के दबने के कारण—एपिस, हेलेबो, जिंक मेट।

सविराम ज्वरों के दबने के कारण—कार्बो वेज, सिन्को, फेरम मेट, हेलेबो, लैक डिफ्लो।

शोथ रोग, नवजात का—एपिस, कैफेन, कार्बो वेज, डिजि, लैके।

शोथ रोग, दस्त के साथ—ऐसेटिक एसिड।

शोथ रोग, रक्तरस पसीजने के साथ—आर्स, लाइको, रस टॉ।

शोथ रोग, गर्भाशय प्रदेश में दर्द के साथ—कॉन्वे।

शोथ रोग, पेशाब के दबने से, ज्वर दुर्बलता—हेलेबो।

शोथ रोग, प्यास के साथ—ऐसेटिक ऐसि, ऐकोन, ऐपोसाइ, आर्स।

शोथ रोग, बिना प्यास—एपिस, हेलेबो।

स्थान—उदर, जलोदर—ऐसेटिक ऐसि, ऐडोनिस वर, एपिस, ऐपोसाइ, आर्स, ऑरम मेट, ऑरम म्यूर, नाइट्रि, ब्लाटा ऐमे, कैहिन्का, कैन्थे, सिन्को, कोपेवा, डिजि, डिजिटैलिन, फ्लोरि एसिड, हेलेबो, आयोड, कैली का, लैक्टू विरो, लीडम, लाइको, नैट्र फ्लोर, ऑक्सडेण्ड्रन, प्रून स्पाइ, सैम्बू, सेनेसि, सीपिया, टेरेबि, युरैनियम नाइट्रि।

सीना (वक्षोदक रोग)—एपिस, ऐपोसाइ, आर्स, आर्स आयोड, कोल्चि, डिजि, हेलेबो, कैली का, लैके, लैक्टू विरो, मर्क सल्फ, सिला, सल्फर। देखिये सीना।

बायें तरफ के अंगों का—कैक्ट।

सर्वांग शोथ (Anasarca)—ऐसिटैनि, ऐसेटिक एसिड; ऐकोन, इथूजा, एपिस, ऐपोसाइ, आर्न, आर्स, कैन्हिका, सिन्को, कॉन्वै, कोपेवा, क्रैटै, डिजि, डल्का, फेरम मेट, हेलेबो, कैली कार्ब, लियट्रिस, लाइको, मर्क कार, ऑक्सि डेण्ड्रनि, पिक एसिड, प्रून स्पाइ, टेरेबि, युरैनियम नाइट्रि। देखिये शोथ रोग।

शोथ : स्राव का भय-सम्भावना—एपिस, ब्रायो, साइक्यूटा, सिन्को, हेलेबो, आयोडोफो, ओपियम, जिंक मेट।

संक्रामक अश्व रोग (Glanders)—एकोन, आर्स, चिनि सल्फ, क्रोटै, हीपर, हिपोजी, कैली बाइ, लैके, मर्क सल्फ, फॉस्फो, सीपिया, साइलि, थूजा।

ग्रन्थियाँ (Glands) फोड़े—बेल, कैल्के कार्ब, कैल्के आयोड, सिस्टस, हीपर, लेपिस ऐल्बम, मर्क, नाइट्रि एसिड, रस टॉ, साइलि।

आघात सम्बन्धी रोग—ऐस्टेरियस, कॉन्वै।

क्षीणता (Atrophy)—आयोड।

कड़ापन (Induration)—ऐलूमेन, आर्स, आर्स ब्रो, ऐस्टेरियस, ऑरम-म्यूर, बैडियागा, बैराइटा का, बैराइटा आयोड, बैराइटा म्यूर, बेल, बर्बे ऐक्वि, ब्रोमि, कैल्के कार्ब, कैल्के क्लोर, कैल्के फ्लोर, कार्बो ऐनि, सिन्को, सिस्टस, क्लिमै, कोनियम, डल्का, ग्रैफा, हेक्ला, आयोड, कैली आयोड, लैपिस अल्ब, मर्क आयोड रूबर, मर्क आयोड फ्ले, ऑपरकु, फाइटो, रस टॉ, स्पॉन्जि, थाइरॉ, ट्रिफोलि रेपेंस।

ग्रन्थि प्रदाह (Adenitis) तीव्र—एकोन, एलैन्थ, एलूमेन, एनैन्थे, एपिस, आर्स आयोड, बैराइटा कार्ब, बैराइटा आयोड, बेल, सिस्टस, क्लिमै, डल्का, ग्रैफा, हीप , आयोड, आयोडोफॉ, कैली आयोड, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, ऑपरकु, फाइटो, रस टॉ, साइलि, सिलि मैरि।

प्रदाह, जीर्ण, ग्रन्थियों की सूजन, फूलना (Glandular swellings)—एकोन, लाइको, एलैन्थस, ऐलनस, एपिस, आर्स ब्रो, आर्स, आर्स आयोड, ऐरम, एस्टैकस, ऑरम म्यूर, बैडियागा, बैराइटा का, बैराइटा आयोड, बैराइटा म्यूर, ब्रोमियम, कैल्के का, कैल्के फ्लोर, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, कैलेण्डु, कार्बो ऐनि, सिस्टस, क्लिमै, कोनियम, कारिडै, क्राटै, डल्का, फेरम आयोड, फिलिक्स, ग्रैफा, हीपर, आयोड, कैली आयोड, लैके, लेपिस एल्ब, लाइको, मेडो, मर्क साइ, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, फाइटो, सोरि, रस टॉ, रूमेक्स, सैल मैरीनस, स्किरि, स्क्रोफु, साइलि, सिली मैरीना, स्पॉन्जि, सल्फर, टैक्सस, थियोसिन, थूजा, ट्यूबर।

स्थान—ग्रन्थि का रोग—काँखों में—ऐको, लाइको, एस्टेरि, बैराइटा का, बेल, कैल्के का, कार्बो ऐनि, कोनि, इलैप्स, ग्रैफा, हीपर, जुग्लैन्स रीजिया, लैक्टिक एसिड, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, फाइटो, रैफै, रस टॉ, साइलि, सल्फर।

वायुनलिका समूह के क्षेत्र की—बेल, कैल्के का, कैल्के फ्लोर, आयोड, मर्क कार, ट्यूबर।

ग्रीवा सम्बन्धी—ऐकोन, लाइको, ऐमो का, ऐस्टैक, बैसि, बैराइटा का, बैराइटा आयोड, बेल, ब्रोमि, कैल्के का, कैल्के क्लोर, कैल्के फ्लोर, कैल्के आयोड, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, सिस्टस, डल्का, ग्रैफा, हेक्ला, हीपर, आयोड, कैली आयोड, कैली म्यूर, लेपिस ऐल्ब, मैग फॉस, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क, नाइट्रि एसिड, रस टॉ, रस रैडि; रस वेने, सैल मैरीनम साइलि, स्पॉन्जि, स्टिलिन्जिया, सल्फर।

वक्षणीय पुट्ठों की—एपिस, आर्स, ऑरम, बैसिलि, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, बेल, केल्के का, कार्बो ऐनि, क्लिमै, डल्का, ग्रैफा, कैली आयोड, मर्क आयोड फ्ले, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, ओसमम, पेलैडि, पाइनस, साइल, रस टॉ, साइलि, सल्फर, जेरोफाइल।

मध्यान्त्र ग्रन्थि (Mesenteric Gland)—आर्स, आर्स आयोड, बैसिलि, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, कैल्के का, कैल्के फ्लोर, कैल्के आयोड, कोनियम, ग्रैफा, आयोड, आयोडोफॉ, लेपिस एल्बम, मर्क को, मेजे, ट्यूबर। देखिये मध्यान्त्र क्षय रोग।

कर्णमूल-प्रदाह (Parotitis Mumps)—एकोन, एलैन्थ, ऐमो का, ऐन्थ्रै सि, ऐण्टि टा, ऑरम म्यूर, बैराइटा का, बैराइटा म्यूर, बेल, ब्रोमि, कैल्के का, कार्बो ऐनि, कैमो, सिस्टस, डल्का, इयुफ्रै सि, फेरम फॉस, हीपर, कैली बाइ, कैली म्यूर, लैके, मैग फॉस, मर्क को, मर्क साइ, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, फाइटो, पिलोका, पल्से, रस टॉ, साइलि, सल्फर आयोड, ट्रिफोलि, ट्रिफोलि रेपेन्स।

कर्णमूल-प्रदाह, गलित—ऐन्थ्रै सि।

कर्णमूल-प्रदाह, मस्तिष्क तक प्रभावित हो—एपिस, बेल।

कर्णमूल-प्रदाह, स्तन ग्रन्थियों तक स्थान विकल्प हो—कोनियम, जैबोरे, पल्से।

कर्णमूल-प्रदाह, अंडकोष तक स्थान विकल्प हो—ऑरम, क्लिमै, हैमे, पल्से, रस टॉ।

कर्णमूल-प्रदाह, टिकाऊ—बैराइटा ऐसेटि, बैराइटा का, कोनियम, आयोड, साइलि।

वसा स्रावी ग्रन्थि—लाइको, सोरि, रैफेनस, साइलि, सल्फर । देखिये चर्म ।

हन्वधोवर्ती लाला-ग्रन्थि – ऐल्नस, ऐरम, ऐसिमिना, बैराइटा का, ब्रोमि, कैल्के का, कैलैण्डु, कैमो, सिस्टस, क्लिमै, आयोड, कैली बाइ, कैली म्यूर, लाइको, मैग फॉस, मर्क साइ, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, नैट्र म्यूर, पेट्रोलि, फाइनस साइलवे, फाइटो, रस टॉ, साइलि, स्टैफि, सल्फर, ट्रिफोलि, ट्रिफोलि रेपेन्स ।

गल-ग्रन्थि—ऐड्रैनै, ऐमो का, ऐमो म्यूर, एपिस, ऑरम सल्फ, वैडियागा, बैराइटा आयोड, बेल, ब्रोमि, कैल्के का, कैल्के फ्लोर, कैल्के आयोड, कॉस्टि, क्रोमि, सल्फ, सिस्टस, क्रोटै कैल्के, फेरम मेट, फ्लोरि एसि, फ्यूकस, ग्लोनो, हीपर, हाइड्रै, हाइड्रोसि एसिड, आयोड, आयोड थाइरॉ, आइरिस, कैली का, कैली आयोड, लैपिस ऐल्बम, मैगे फॉस, मर्क आयोड फ्ले, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, फाइटो, पीनियल ग्लैण्ड एक्सट्रैक्ट, पल्से, साइलि, स्पॉन्जि, सल्फर, थाइरॉ ।

गल-ग्रन्थि (बहिःनिसृत चक्षु-गोलक तथा हृद्स्पन्दन के साथ गलगण्ड)—ऐमाइल, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम, बैडि, बैराइटा का, बेल, ब्रोमि, कैक्ट, कैल्के का, कैने इण्डि, क्रोमि, सल्फ, कॉल्चि, कोनि, एचिने, एफेड्रा, फेरम आयोड, फेरम मेट, फेरम फॉस, फ्लोर ऐसि, फ्यूकस, ग्लोनो, आयोड, जैबौरै, लाइको, नैट्र म्यूर, पिलोका, स्पार्टि स्कापै, स्पॉन्जि, स्ट्रैमो, थाइरॉ ।

दौरे—कैक्ट, डिजि, ग्लोनो, सैम्बू ।

मांसांकुर बनना—अधिक मात्रा में—कैलेण्डु, नाइट्रि एसिड, सैबाइना, साइलि, थूजा । देखिये घाव ।

चर्बी (Grease) घोड़ों में—थूजा ।

अस्वाभाविक रक्तस्राव की प्रवणता—छोटे घाव, अधिक खून बहे या देर तक खून निकले—एड्रैन, ऐलैन्थ, आर्स बोवि, कैल्के लैक्टि, सिन्को, क्रोटै, फेरम मेट, हेमे, क्रियोजो, लैके, मर्क, मिलेफो, नैट्र साइलि, फॉस्फो, सिके'ल, टेरेबि ।

रक्तस्राव—ऐकालि, ऐसेटि ऐसि, ऐचिलिया, एकोन, ऐड्रीन, ऐलुमेन, ऐलुमिना, ऐन्थ्रैसि, आर्न, आर्स हाइड्रोजै, बेल, बोथ्रोप्स, बोवि, कैक्ट, कैन्थे, कार्बो वेज, चिनि-सल्फ, सिन्को, सिनामो, कोक, क्रोटै, डिजि, इलैप्स, एरेक्थाइ, आर्गोटिन, इरिजे, फेरम मेट, फेरम फॉस, फिकस, गैलिक एसिड, जिलैटि, जिरैनि, हैमे, हाइड्रैस्टिन, इपिका, कैली का, क्रियोजो, लैके, मेलिलो, मर्क साइ, मिलेफो, म्यूरि एसिड, नैट्र साइलि, नाइट्रि एसिड, ओपि, फास्फो, पल्से, सैबाइ, सैंग्वि, सीकेल, सलफ्यू ऐसि, सल्फर, टैरेबि, थ्लैस्पि, टिलिया, ट्रिलि, आस्टिलै, वेरैट्र एल्ब, जैन्थॉ ।

रक्त-स्राव, जीर्ण परिणाम—स्ट्रांशि कार्बो ।

रक्त-स्राव, आघात के कारण से—ऐरानि, आर्न, बोवि, इयुफोर्बिया, पिल्यू, हेमे, मिलेफो, ट्रिलियम ।

रक्त-स्राव, हिस्टीरियायुक्त—बैडि, क्रोकस, हायोसि, इग्नै, कैली आयोड, मर्क सल्फ, स्टिक्टा, सल्फर ।

रक्त-स्राव के पहिले चेहरा चटक लाल—मेलिलो ।

रक्त-स्राव, साथ में गशी का कर्णनाद, दृष्टिहीनता, सर्वांगिक ठंडापन, विक्षेप भी—सिन्को, फेरम मेट, फॉस्फो ।

रक्त-स्राव, साथ में क्षय, सड़न, अंगों में चुनचुनाहट, दुर्बलता—सीकेल ।

रक्त-स्राव, बिना ज्वर या पीड़े के—मिलेफो ।

रक्त, चमकदार लाल—एकोन, बेल, एरेथाइ, इरिजे, फेरम मेट, फेरम फॉस, इपिका, लीडम, मिलेफो, नाइट्रि एसिड, फॉस, सैबाइ, ट्रिलि, अस्टिलै ।

रक्त थक्केदार, कुछ भाग पतला—इरिजे, फेरम, प्लैटि, पल्से, रैटानहिया, सैबाई, अस्टिलै ।

रक्त काला थक्केदार—एलुमि, ऐन्थ्रैसि, सिन्को, क्रोकस, क्रोटै, इलैप्स, मर्क साई, मर्क, म्यूरि एसिड, प्लैटिना, सल्फ्यूरिक ऐसि, टेरेबि, थ्लैस्पि, ट्रिलि ।

रक्त जल्दी सड़ जाये—ऐसेटिक एसिड, ऐमो का, ऐन्थ्रैसि, क्रोटै, लैके, टेरेबि ।

न जमने वाला रुक-रुककर—फॉस्फो ।

न जमने वाला, पतला गहरे रंग का—क्रोटै, इलैप्स, लैके, सीकेल, सल्फ्यू एसिड ।

पतला-हल्का, पीला, पनीला—फेरम, टिलिया ।

शिरा सम्बन्धी काला थक्केदार—हैमे, मैंगिफोरा इण्डि ।

असामयिक, अनिश्चित—एसेटि एसिड, हैमे ।

श्वेत कणों की वृद्धि—ऐकोन, लाइको, आर्स, आर्स आयोड, बैराइटा आयोड, कैल्के फ्लो, फेरम पिक, आयोड, कैली म्यूर, नैट्र म्यूर, फॉस्फो, स्क्रोफुले ।

अंकुश केंचुआ रोग (Hookworm disease)—कार्बोनि टैट्राक्लो, चेनेपो, थाइमॉल ।

प्रदाह—ऐब्रोटै, ऐकोन, ऐग्रोस्टि, एपिस, आर्न, बेल, ब्रायो, कैन्थे, चेलिडो, सिन्को, फेरम फॉस, हीपर, आयोड, कैली बाइ, कैली का, कैली आयोड, कैली म्यूर, कैली सल्फ, नैट्र नाइट्रि, स्पाइरैन्थ, सल्फर, वेरेट्र वि, वाइब ओपू ।

प्रदाह, अकर्मणीय, मन्द—डिजि, जेल्से, पल्से, सल्फर ।

प्रदाह, शल्य सम्बन्धी चीरफाड़ के बाद—एकोन, ऐन्थ्रैसि, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, बेल, बेलिस, कैलेण्डु, कैल्के सल्फ, एचिने, गन पाउडर, हीपर, हाइपेरि, आयोड, मर्क कार, मर्क आयोड रुबर, माइरिस्टि सेबि, पाइरा, रस टॉ, साइलि । देखिये रक्तदोष (पाइमिया) विषैलापन ।

प्रदाह, पचने के लिए—ऐण्टि टा, एपिस, कैली आयोड, कैली म्यूर, लाइको, फास्फो, सल्फर।

आघात, चोट इत्यादि (Traumatisms)—ऐसेटिक एसिड, एकोन, एंग-स्टूरा, आर्न, बेलिस, ब्यूफो, कैलेण्डु, साइक्यूटा, क्रोटो टिग, इयुफ्रैसिया, ग्लोनो, हैमे, हाइपेरि, लीडम, मैग का, मिलेफो, नैट्र सल्फ, फाइजॉस्टि, रस टॉ, रूटा, स्ट्रोन्शि का, सलफ्यू एसिड, वरबैस्कम।

कुचलन, रगड़न, छिलन—ऐसेटिक एसिड, आर्न, बेलिस, कोनि, ऐचिने, इयुफ्रैसि, हैमे, हाइपेरि, लीडम, रस टॉ, रूटा, सलफ्यू एसिड, सिम्फाइट, वर-बैस्कम।

हड्डी का कुचल जाना—आर्न, कैल्के फॉस, रूटा, सिम्फाइट।

छाती का कुचल जाना—बेलिस, कोनि।

आँखों का कुचल जाना—एकोन, आर्न, हैमे, लीडम, सिम्फाइट।

कुचलन, उन भागों की जहाँ संवेदनिक स्नायु अधिक हों—बेलिस, हाइपेरि।

कुचलन, जब नीला दाग अच्छा न हो—आर्न, लीडम, सल्फ ऐसि।

जल जाना, झुलस जाना—ऐसेटिक एसिड, एकोन, आर्न, आर्स, कैल्के सल्फ, कैलेण्डु, कैम्फो, कैन्थे, कार्बो एसिड, कॉस्टि, गॉल्थे, ग्रिण्डे, हैमे, हीपर, जैबोरे, कैली बाइ, क्रियोजो, पेट्रोलि, रस टॉ, टेरेबि, अर्टिका।

जले घाव जल्द अच्छे न हों या उसका बुरा असर—कार्बो एसिड, कॉस्टि।

आघात, चोट का जीर्ण प्रभाव—आर्न, कार्बो वेज, साइक्यूटा, कोनि, ग्लोनो, हैमे, हाइपेरि, लीडम, नैट्र सल्फ, स्ट्रोन्शि कार्बो।

आघात के मानसिक लक्षण—साइक्यूटा, ग्लोना, हाइपेरि, मैग का, नैट्र, सल्फ।

शल्य क्रिया के बाद की बाधायें—ऐसेटि एसिड, एपिस, आर्न, बेलिस, बर्बे वल, कैलेण्डु, कैल्के फ्लोर, कैम्फो, क्रोकस, फेरम फॉस, हाइपेरि, कैली सल्फ, मिलेफो, नाजा, नाइट्रि एसिड, रैफै, रस टॉ, स्टैफि, स्ट्रान्शि, वेरेट्र एल्ब।

आघात के कारण शिथिलता—ऐसेटि ऐसि, कैम्फो, हाइपेरि, सल्फ ऐसि, वेरैट्र एल्ब।

मोच आना—ऐसेटि एसिड, एकोन, एग्नस, आर्न, बेल, बेलिस, कैल्के का, कैल्के फ्लो, कैलेण्डु, कार्बो ऐनि, फॉर्मिका, हाइपेरि, मिलेफो, नक्स वॉ, रोडो, रस टॉ, रूटा, स्ट्रोन्शि, सिम्फाइट।

मोच खाने की प्रवृत्ति—नैट्र का, नैट्र म्यूर, सोरि, साइलि।

अकड़न रोग (टिटेनस) रोकने के लिये—हाइपेरि, फाइजॉस्टि।

कटे घाव में से अधिक खून बहे—आर्न, क्रोटै, हैमे, क्रियोजो, लैके, मिलेफो, फॉस ऐसि।

गिर जाने के घाव में से अधिक खून बहे—आर्न, हैमे, मिलेफो।

घाव हल्के नीले रंग के बदरंग—लैके, लाइसिन।

गोली लगने से घाव—आर्न, कैलेण्डु।

कुचलन घाव—आर्न, हैमे, सल्फ्यु एसिड, सिम्फाइट।

फाड़न घाव, अंग व्यवच्छेदन करने वाले—एन्थ्रैसि, एपिस, आर्स, क्रोटै, एच्चिने, लैके, पाइरो। देखिये रक्त-विष-दोष, पाइमिया।

कटन घाव जो किसी तेज धार वाली चीज से बन गये हों—आर्न, कैलेण्डु, हैमे, हाइपेरि, लीडम, स्टैफि।

घाव जिसमें पेशियाँ, बन्धनियाँ, जोड़ प्रभावित और आघातित हों—कैलेण्डु।

फटे हुए घाव—आर्न, कैलेण्डु, कार्बो एसिड, हैमे, लीडम, हाइपेरि, स्टैफि, सल्फ्यु एसिड, सिम्फाइट।

छेदन घाव, किसी नोकीली चीज से बने घाव—ऐपिस, हाइपेरि, लीडम, फेसिओल।

घाव जिसमें जलन, कटन चिलिकन हो—नैट्र का।

घाव जिनमें सड़न, गलन प्रवृत्ति हो—कैलेण्डू, सैलि एसिड, सलफ्यू एसिड। देखिये फाड़न घाव, व्यवच्छेदित घाव।

श्वेत कणाधिक्य—रक्त में श्वेत कण की अधिकता होना—ऐरानि, आर्स, आर्स आयोड, बैराइटा आयोड, बेन्जोल, ब्रायो, कैल्के का, सियानोथ, चिनि-सल्फ, कोनि, फेरमे पिक, इपिका, मर्क, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स, फॉस्फो, पिक ऐसि, थूजा। देखिये रक्तहीनता, एनीमिया।

श्वेत कणाधिक्य, प्लीहा सम्बन्धी—सियानोथ, नैट्र सल्फ, क्वेरकस, सक्सिन।

लसिका वाहिनियों का प्रदाह—ऐन्थ्रैसि, एपिस, आर्स आयोड, बेल, बोथ्रोप्स, ब्यूफो, क्रोटै, एच्चिने, हिपोजी, लैके, बेट्रोडे, कैलिपो, मर्क आयोड रूबर, मर्क सल्फ, माइगे, पाइरो, रस टॉ।

सुखण्डी रोग, सूखा रोग—दुबलापन चुचुकन क्षीणता—ऐब्रोटै, ऐसेटिक ऐसि, ऐण्टि आयोड, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्स आयोड, बैराइटा का, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैल्के साइलि, फेरम फॉस, फ्लोर एसिड, कार्बो ऐनि, कार्बो वेज, कॉस्टि, सिट्रैर, सिन्को, क्लिमै, फेरम मेट, ग्लीसरीन, हेलोनि, हीपर, हाइड्रै, आयोड, कैली आयोड, कैली फॉस, क्रियोजो, लीडम, लाइको, मैंगे एसेटि, मर्क कार, मर्क सल्फ, नैट्र का, नैट्र म्यूर, ओलि जैको ऐसे, ओपि, फॉस ऐसि, फॉस, फाइटो,

प्लम्ब ऐसे, प्लम्ब आयोड, प्लम्ब मेट, सोरि, रिसिन, रस टॉ, सैम्बू, सैनिक्यू, सारसा, सीकेल, सेलेनि, साइलि, स्टैन, स्टैफि, सल्फर, सिफिलि, टेरेबि, थूजा, ट्यूबर, युरैनि, वैनैडि, वेरैट्र एल्ब, जिंक मेट।

रोगग्रस्त भाग का चुचुक जाना—आर्स, कॉस्टि, ग्रैफा, लीडम, सेलेनि।

बच्चों का सूख जाना—ऐब्रोटै; आर्जे नाइट्रि, आर्स, आर्स सल्फ, बैसिलि, बैराइटा का, कैल्के फास, कैल्के साइलि, आयोड, नैट्र म्यूर, ओलि जैको ऐसे, फॉस्फो, पोडो, सोरि, सैनिकू, सारसा, सल्फर, थाइरॉ ट्यूबर।

क्षीणता, चेहरे हाथ, पैर, टाँगों, व्यक्तिगत अंग का—सेलेनि।

क्षीणता, टाँगों की—ऐब्रोटै, ऐमो म्यूर, आर्जे नाइट्रि, आयोड, पाइनस, साइलि, सैनिकू, ट्यूबर।

क्षीणता, मध्यांत्रत्वक् ग्रन्थि की—(आन्त्रक्षय रोग)—आर्स, बैप्टी, बैराइटा का, कैल्के आर्स, कैल्के का, केल्के क्लोर, कैल्के हाइपोफॉस, कैल्के आयोड, कैल्के फॉस, कोनियम, हीपर, आयोड, मर्क कार, प्लम्ब ऐसेटि, सैकै ऑफि, साइलि।

क्षीणता, गरदन की, थुलथुला; पीला चर्म—ऐब्रोटै, कैल्के फॉस, आयोड, नैट्र म्यूर, सैनिक्यू, सारसा।

क्षीणता, ऊपरी भाग से निचले भाग में—लाइको, नैट्र म्यूर।

क्षीणता, निचले भाग से ऊपरी भाग में—ऐब्रोटै।

क्षीणता, गरदन इतनी कमजोर कि सिर को भी सीधा न रख सके—ऐब्रोटै, इथूजा, कैल्के फॉस।

क्षीणता, उन्नतिशील, पेशिक—आर्स, कार्बोनि सलफ्यूरेटम, हाइपैरि, कैलि हाइपोफॉस, फास्फो, फाइजॉस्टि, प्लम्ब, सीकेल।

तीव्रगामी—आयोड, प्लम्ब मेट, सैम्बू, थूजा, ट्यूबर।

क्षीणता, तीव्रगामी, ठण्डा पसीना और कमजोरी के साथ—आर्स, ट्यूबर, वेरैट्र एल्बम।

क्षीणता, अति भूख के साथ—ऐब्रोटै, ऐसेटिक ऐसि, आर्स आयोड, बैराइटा का, कैल्के का, कोनियम, आयोड, नैट्र म्यूर, सैनिकू, ट्यूबर, थाइरॉ।

क्षीणता, चेहरा चुचुका दिखाई दे—ऐब्रोटै, आर्जे नाइट्रि, फ्लोरि एसिड, क्रियोजो, ओपियम, सैनिकू, सारसा, साइलि, सल्फर।

पेशियाँ प्रदाह : (Myositis)—आर्न, बेल, ब्रायो, हीपर, कैली आयोड, मर्क सल्फ, मेजे, रस टॉ।

पेशियों का दर्द—(Myalgia)—ऐकोन, ऐण्टि टा, आर्न, आर्स, बेल, बेलिस, ब्रायो, कार्बोनि सलफ्यू, कॉस्टि, *सिमिसि*, कॉल्चि, डल्का, जेल्से, लीडम,

मैक्रोटि, मर्क, मोर्फि, नक्स वॉ, रैनन बल, रैम्नस कैलिफो, रस टॉ, रूटा, सैलि एसिड, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, वैलेरि, वेरैट्र एल्ब, वेरैट्र विरि। देखिये वात रोग, (चालन यन्त्र मण्डल)।

पेशियाँ : ऐंठन दर्द—ऐण्टि टा, कोलेसटेरि, सिमिसि, कॉल्चि, कोलो, क्यूप्रम मेट, मैग फॉस, नक्स वॉ, ओपि, प्लम्ब ऐसेटि, सीकेल, सल्फर, सिफिलि, वेरैट्र एल्ब।

पेशियाँ : दर्द, हिस्टीरिया युक्त—इग्नै, नक्स वॉ, प्लम्ब, पल्से।

पेशियाँ : सन्तापपूर्ण कड़ापन—ऐंगस्टू, आर्न, बैडियाग', बैप्टि, बेल, बेलिस, ब्रायो, कॉस्टि, साइक्यूटा, सिमिसि, क्यूप्रम एसेटि, जेल्से, गुवाइक, हैमे, हेलोनि, जैकार, मैग्नोल, मर्क नाइट्रि, फाइटो, पाइरो, रस टॉ, रूटा, सैंग्वि।

पेशियों का फड़कना—ऐकोन, ऐगैरि, ऐंगस्टू, एपिस, आर्स, एसाफि, ऐट्रोपि, बेल, ब्रायो, कॉस्टि, कैमो, साइक्यूटा, सिना, सिमिसि, कॉकु, कोडो, कोलो, क्रोकस, क्यूप्रम मेट, फेरम आयोड, जेल्से, हेलेबो, हायोस इग्नै, कैली ब्रो, कैली फा, लुपुल, मेजे, मॉर्फि, माइगे, नक्स वॉ, ओपि, फॉस, फाइजॉस्टि, प्लम्ब एसेटि, पल्से, सैण्टोनि, सीकेल, स्पाइजे, स्ट्रैमो, स्ट्रिक्नि, टैरे हिस्पै, वेरैट विरि, जिंक मेट, जिजिया।

पेशियों में कमजोरी—ऐसेटि एसिड, ऐलेट्रि, एलुमेन, एलुमिना, एमो कॉस्टि, एन्हैलो, एण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, कॉस्टि, कोल्चि, कोलिन्सो, कोर्नि, जेल्से, हेलेबो, हेलोनि, हीपर, हाइड्रै, इग्नै, कैली का, कैली हाइपोफॉस, कैलीफॉस, कैल्मि, लोबे इन्फला, मैग फास, मर्क वाइ, म्यूरि ऐसि, नक्स वॉ, ओनोस्मो, पैलैडि, फाइजॉस्टि, पिक एसि, प्लम्ब ऐसेटि, रस टॉ, सैबैडि, सार्कोलै एसिड, साइलि, स्ट्रिक्नि, टैबे, वेरैट्र ऐल्ब, वेरैट्र वि, जिंक मेट। देखिये (Adynamia) जीवनशक्ति दौर्बल्य स्नायविक मण्डल।

बच्चों में गूंगापन—ऐग्रैफि।

शोथ रोग—(Myxedema)—आर्स, प्रिमुला ओब, थाइरॉ।

मोटापन (Obesity)—(चर्बी का बढ़ना मोटापन)—ऐमो ब्रो, ऐमो कार्ब, एण्टि क्रू, आर्स, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैलोट्रॉपिस, कैप्सि, कोलो, फ्यूकस, आयोडोथारॉ, कैली ब्रो, कैली का, लैक डिफ्लो, मैग एसेटि, फॉस्फो, सैबाल, फाइटो, ट्रिलैगो फ्रैग।

मोटापन, बच्चों में—ऐण्टि क्रू, बैराइटा कार्ब, कैल्के का, कैप्सि, फेरम मेट, कैली बाइ, सैकैर ऑफ।

लाल कणाधिक्य (Polycythemia)—फॉस्फो।

रोग को दूर करने वाली प्रतिषेधक औषधियाँ (Prophylactics)—मूत्र उतरने की शलाका के प्रयोग से उत्पन्न कैथेटर ज्वर—कैम्फोरिक एसिड ।

हैजा—आर्स, क्युप्रम ऐसेटि, वेरैट्र एल्बम ।

डिफ्थीरिया—एपिस (३०), डिफ्थे (३०) ।

विषर्प रोग —ग्रैफा (३०) ।

फ्लू—आर्स, सोरी ।

जलातंक वह बीमारी जिसमें पानी से डर पैदा होता है। (उन्मत्त हुए जानवर द्वारा काटे जाने से उत्पन्न रोग)—बेल, कैन्थे, हायोसि, स्ट्रैमो ।

सविराम ज्वर—आर्स. चिनि सल्फ ।

चेचक (छोटी) —एकोन, आर्स, पल्से ।

कर्ण-ग्रन्थि प्रदाह (मम्पस् रोग)—ट्रिफोलि रैपे ।

मवादी संक्रमण—आर्न ।

तालुमूल-प्रदाह, (क्विन्सी)—बैराइटा कार्ब (३०) ।

अरुण ज्वर—बेल (३०), इयुकैलिप्टस ।

चेचक (बड़ा)—एण्टि टॉ, हाइड्रै, कैली साइ, मैलैण्ड्रि, थूजा, वेक्सिनाइ, वैरियोलि ।

कुकुर-खाँसी—ड्रोसे, वैक्सिना ।

रक्त-विषाक्त रोग—(Pyemia, Septiceamia)—एकोन, ऐन्थ्रैसि, एपिस्रम, वाइर, आर्न, आर्स, आर्स आयोड, ऐट्रोपि, बैप्टि, बेल, बोथ्रोप्स, ब्रायो, कैलेण्डु, कार्बो एसि, चिनि-आर्स, चिनि-सल्फ, क्रोटै, एचिने, गन पाउडर, हिपोजी, हायोसि, इरिडि, लैके, लैट्रोडे हैसे, मर्क साइ, मर्क सल्फ, मेथिलीन ब्लू, म्यूरि एसिड, नैट्र सल्फ, कार्ब, पाइरो, रस टॉ, सीकेल, सेप्सिन, साइलो, स्ट्रेप्टोकॉक्सिन, टैरे क्युबे, वेरैट्र एल्ब ।

बालास्थि विकृति (Rachitis Rickets)—आर्स, आर्स आयोड, कैल्के ऐसेटि, कैल्के का, कैल्के हाइपोफॉस्फ, कैल्के फॉस, कैल्के साइलि, फेरम फॉस, फ्लोरि एसिड, हेक्ला, हीपर, आयोड, कैली आयोड, मैग म्यूर, मेडो, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, फॉस ऐसि, फास्फो, पाइनस, साइल, सैनिकू, साइलि, सल्फर, सुप्रारेन एक्सट्रैक्ट, थेरिडि, थूजा, थाइरॉ, ट्यूबर । देखिये स्क्रोफुलोसिस ।

कण्ठमाला दोष—(Scrofulosis)—इथिओप्स, ऐलनस, ऐलूमिना, आर्स, आर्स आयोड, ऑरम के सभी रोग, बैसिलि बैड, बैराइटा के सभी योग, ब्रोमि, कैल्केरिया के सभी योग, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, सिनाबे, सिस्टस, क्लिमै, कोनि, डिफ्थे, डल्का, फेरम के सभी योग, फ्लोरि एसिड, ग्रैफा, हैलेबो, हीपर, हाइड्रै,

आयोडीन के सभी योग, आयोडोफॉ, कैली बाइ, कैली आयोड, क्रियोजो, लैपिस एल्बस, लाइको, मैग म्यूर, मर्करी के सभी योग, मेजे, नाइट्रि एसिड, ओलि जैको ऐसे, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फॉस्फो, पानस साइल, प्लम्ब आयोड, सोलि, रूटा, सैम्बू, लिडम, साइलि, साइलि मैरि, स्टिलि, सल्फर, थेरिडि, ट्यूबर, वायोला ट्रि।

शीताद—Scurvy (Scorbutus)—ऐसेटि एसिड, एगैवे, ऐल्नस, आर्स, बोविस्टा, कार्बो वेज, चिनि-सल्फ, फेरम फॉस, गैलियमऐपे, हैमे, कैली क्लोर, कैली फॉस, क्रियोजो, लैके, मर्क सल्फ, म्यूरि एसिड, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नाइट्रो म्यूरि एसिड, फॉस एसिड, फास्फो, रस टॉ, स्टैफि, सलफ्यू एसिड, सल्फर, युरियम।

वृद्धावस्था की क्षीणता—ऐग्नस, आर्जे नाइट्रि, आर्स, बैराइटा का, कैना इंडि, कोनि, फ्लोरि एसिड, आयोड, लाइको, ऊफोरि, फॉस्फो, थियोसिन।

संवेदना-जलन की—ऐकोन, ऐगैरि, ऐग्रोस्ट, ऐन्थैसि, एपिस, आर्स, बेल, कैलेडि, कैन्थे, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, सेपा, कैमो, डोरिफो, इयोसिन, क्रियोजो, ओलि ऐनि, फॉस एसिड, फॉस्फो, पाइप मेथाइ, पॉपु कैन, रस टॉ, सैंग्वि, सीकेल, सल्फर, टैरैण्टू हिस्पै।

संवेदन—संकुचन का—एलुमिना, साइलि, ऐनाका, ऐसैर, कैक्ट, कैप्सि, कार्बो एसिड, कोलो, आयोड, लैके, मैग फॉस, नाजा, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, प्लम्ब मेट, सीकेल, सल्फर।

संवेदन, सुन्नपन की—ऐकोन, ऐगैरि, ऐलुमिना, साइलि, ऐम्ब्रा, आर्स, बोवि, कैल्के फॉस, सीड्रन, कैमो, साइक्यूटा, कोकेन, कोडी, कोनि, हेलोड, इग्नै, इरिडि, कैली ब्रो, नक्स वॉ, ओलियाण्ड, ओनोस्मो, आक्जै एसिड, फॉस्फो, प्लैटिना, प्लम्ब, रैफै, रस टॉ, सीकेल, स्टैनम, थैलियम।

संवेदना सुन्नपन की, दर्द के साथ—ऐकोन, कैना इण्डि, कैमो, सिमिसि, कैल्मिया, प्लैटिना, रस टॉ, स्टैनम, स्टैफि।

संवेदन फटन, कड़कन का—ऐकोन, ऐस्क्लेपि, ब्रायो, कैली का, मैग फॉस, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, रैनन बल, रियुमेक्स, सिला।

अर्बुद—(Tumours)—ऐनैरिथे, ऑरम म्यूरि नैट्रो, बैराइटा का, बैराइटा आयोड, बैराइटा म्यूर, बेलिस, कैल्के आर्स, कैल्के का, कैल्के फ्लो, सिस्टस, कोलो, कोनि, इयुकैलि, फेरम आयोड, फेरम पिक, फार्मिका एसिड, गैलियम ऐपै, ग्रैफा, हेक्ला, हाइड्रै, कैली ब्रो, कैली आयोड, क्रियोजो, लैके, लैपिस एल्बस, लोबे एरिन, लाइको, मैलेण्ड्रि, मैन्सिन, मेडो, मर्क आयोड रूबर, मर्क पेरे, नैट्र, कैकोडिल, नैट्र

साइलि, फॉस, फाइटो, प्लम्ब आयोड, सोरि, सैम्बर्वि, टेक्टो, साइलि, थियोसिन, थूजा, थाइरॉ, युरिक ऐसि। देखिये कर्कट।

कौशिक अर्बुद (Cystic)—एपिस, बैराइटा का, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैल्के सल्फ, आयोड, कैली ब्रोमे, प्लैटेनस, साइलि, स्टैफि। देखिये सिर की खाल (चर्म)।

हड्डी की तरह, उभरन—कैल्के फ्लोर, हेक्ला, लैपिस एल्बस, मैलैड्रिनम, रूटा, साइलि।

उपास्थिमय अर्बुद (Enchondroma)—कैल्के फ्लोर, लैपिस ऐल्बस, साइलि।

बहिर्त्वकीय अर्बुद (Epithelial)—ऐसेटिक एसिड, फेरम पिक। देखिये चर्म।

मसूढ़ों का एक क्षुद्र अर्बुद (Epulis)—कैल्के का, प्लम्ब ऐसेटि, थूजा।

उत्पादक तन्तु का अर्बुद (Erectile)—लाइको, फॉस्फो।

सौत्रिक अर्बुद (Fibroid) कैल्के आयोड, कैल्के सल्फ, क्रोमि सल्फ, ग्रैफा, हाइड्रैस्टिन म्यूरि, कैली आयोड, लैपिस ऐल्ब, सीकेल, साइलि, थोओसि, थाइरॉ। देखिए गर्भाशय।

सौत्रिक अर्बुद का रक्तस्राव (Fibroid, haemorrhage)—हाइड्रैस्टि म्यूरि, लैपिस ऐल्बस, सैबाइना, थ्लैस्पी, ट्रिलि, अस्टिलैगो।

छत्रकाकार अर्बुद—(Fungoid)—क्लिमै, मैन्सिन, फॉस, थूजा।

कंडरा पर होने वाला कोषार्बुद—(Ganglion)—बेंजो एसिड, कैली म्यूर, रूटा, साइलि।

मेदार्बुद (Lipoma)—बैराइटा का, कैल्के आर्स, कैल्के का, लैपिस एल्बस, फाइटो, थूजा, यूरिक एसिड।

बच्चों को दाहिनी कनपटी पर चपटे जन्म दाग होना (Naevus)—फ्लोरि एसिड।

स्नायु का अर्बुद (Neuroma)—कैलेण्डु, सेपा।

जबान पर गुल्ममय अर्बुद—गैलियम।

स्तनवृन्त का अर्बुद—(Papillomata)—ऐण्टि क्रू, नाइट्रि एसिड, स्टैफि, थूजा।

बहुपक्ष—(Polypi)—कैल्के का, सेपा, फार्मिका, कैली बाइ, कैली सल्फ, लेम्ना, नाइट्रि एसिड, फॉस्फो, सोरि, सैंग्वि नाइट्रि, साइलि, ट्युक्रियम, थूजा। देखिये नाक, कान, गर्भाशय।

जीभ के नीचे होनेवाले गूमड़ या तेंदवा (Ranula)—ऐम्ब्रा, थूजा।

अंडकोष की मांसवृद्धि (Sarcocele)—मर्क आयोड रूबर। देखिये पुरुष जननेन्द्रिय मण्डल।

मूत्रमार्ग का अर्बुद—ऐनेलियम।

मूत्रनलिका रक्तबहा नाड़ी सम्बन्धी अर्बुद—कैना सैटाइ, इयुकेलि।

बसार्बुद—(Wens)—बैराइटा का, बेंजो एसिड, कैल्के का, कोनि, डैफ्ने, ग्रैफा, हीपर, कैली का, मेजे।

घटना-बढ़ना

बढ़ना (Aggravation) अम्लमय वस्तुओं से—ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, फेरम मेट, लैके, मर्क कार, नक्स वॉ, फॉस्फो, सीपिया। देखिये पेट।

तीसरे पहर—इस्क्यु, एलुमिना, एमो म्यूर, आर्स, बेल, सेन्क्रिस, कॉकु, कॉक्कस, फैगोपा, कैली बाइक्रो, कैली का, साइ, कैली नाइट्रि, लिलि टिग्रि, लोबे इन्फ्ला, रस टॉ, सीपिया, साइलि, स्टिलि, थूजा, वरबैस्क, जेरोफाइल, एक्स-रे।

तीसरे पहर के कुछ बाद में—एपिस, ऐरानि, कार्बो वेज, काल्चि, कोलो, हेलेबो, लाइको, मैग फॉस, मेडो, मेलि, ओलि ऐनि, पल्से, सैबैडि, जिंक। देखिये शाम का समय।

हवा, ठण्डी सूखी—ऐब्रोटै, ऐकोन, इस्क्यु, ऐगैरि, ऐलुमिना, आर्स, ऐसैरम, ऑरम मेट, बैसिलि, बैराइटा का, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कैम्फा; कैप्सि, कार्बो ऐनि, कॉस्टि, कैमो, सिन्को, सिस्टस, क्युप्रम मेट, कुरारी, इयुफोर्बि, लैथाइ, हीपर, इग्नै, कैली का, मैग फॉस, मेजे, नैट्र का, नक्स वॉ, प्लम्ब, सोरि, रोडो, रूमेक्स, सेलेनि सीपिया, साइलि, स्पॉन्जि, ट्यूबर, अर्टिका, वायोला ओडो, विस्कम।

खुली हवा में—ऐकोन, ऐगैरि, बेन्जो एसिड, ब्रायो, कैडमि सल्फ, कैप्सि, कार्बोनि सल्फ्यू, कैमो, साइक्यू, कॉकु, कॉफि, कोरैलि, क्रोटै, साइक्लै, एपिफे, इयुफ्रै, इग्ने, कैल्मि, क्रियोजो, लिनारिया, मोस्क, नक्स वॉ, लाइको, थीया, एक्स-रे। देखिये ठण्डी हवा।

क्रोध से—ब्रायो, कैमो, कोलो, इग्नै, नक्स वॉ, स्टैफि। देखिये मानसिक आवेग, (मन)।

बाँहों को पीछे हिलाने से—सैनिकू।

सीढ़ी चढ़ने से—ऐमो का, आर्स, ब्यूट्रि एसिड, कैक्ट, कैल्के का, कैना सैटाई, कोका, ग्लोनो, कैली का, मेनियान्थ, स्पॉन्जि।

शरद ऋतु में जब दिन कुछ गरम हो और रातें ठण्डी, तर हों—मर्क वाइ।

नहाने से—ऐण्टि क्रू, बेलिस, कैल्के का, कॉस्टि, फॉर्मिका, मैगफॉ, नक्स मॉ, फाइजॉस्टि, रस टॉ, सीपि, सल्फर। देखिये पानी।

बिस्तर में करवट बदलने से—कोनि; नक्स वॉ, पल्से।

बीयर पीने से—ब्रायो, कैली बाइ, नक्स मॉ।

दोहरा होकर मुड़ने से—डायस्को।

आगे की तरफ झुकने से—बेल, कैलिम, नक्स वॉ।

कस कर काटने से—ऐमो का, वरबैस्कम।

नाश्ता करने के बाद—कैमो, नक्स वॉ, फॉस, थूजा, जिंक मेट। देखिये खाना।

नाश्ते के पहले—क्रोकस।

चमकीली चीज देखने से—बेल, कैन्थे, कॉक्सिनैलिया, लाइसिन, स्ट्रैमो।

दाँतों को ब्रश करने से—कॉक्कस, स्टैफि।

अविवाहित अवस्था—कोनि।

कॉफी पीने से—ऐस्टेरि, कैना इंडि, कैन्थे, कार्बो वेज, कॉस्टि, कैमो, इग्नै, कैलि का, नक्स वॉ, सोरि, थूजा।

मैथुन के बाद—ऐगैरि, कैलेडि, कैल्के सल्फ, सिन्को, कैली का, नक्स वॉ, फॉस्फो एसिड, फॉस्फो, सेलेनि, सीपिया।

ठण्डक से—ऐकोन, ऐगैरि, ऐलुमेन, ऐलुमिना, ऐमो का, ऐण्टि क्रू, आर्स, बैडि, बैराइटा का, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कैम्फो, कैप्स, कॉस्टि, कैमो, कोलिन्सो, कॉकु, कॉफि, कोनि, क्रोटै, कैस्को, डल्का, फॉर्मिका, हीपर, इग्नै, कैली का, कैली फॉस, क्रियोजो, लैके, लोबे इन्फला, मैग फॉस, मर्क, मेजे, मॉस्क, नाइट्रि एसि, नक्स मॉ, नक्स वॉ, रैनन बल, रोडो, रस टॉ, रूमेक्स, रूटा, सैबैडि, सेलेनि, सीपिया, साइलि; स्पाइजे, स्ट्रैमो, स्ट्रोन्जि, सलफ्यू एसिड, टैबै, वेरैट्र एल्बम, जेरोफाइल।

धक्का लगने से—साइक्यूटा। देखिये झटका।

ढाढ़स देने से—कैक्ट, ग्रैफा, हेलेबो, इग्नै, लिलि टिग्रि, नैट्र म्यूर, सैबाल, सीपिया, साइलि।

गरदन के पास कपड़े के स्पर्श से—ग्लोनो, लैके, सीपिया। देखिये छूना।

तरी नमी से—ऐम्फिस, ऐरानि, आर्स आयोड, ऐस्टेरि, बैराइटा का, कैल्के का, कैलेण्डु, कार्बो वेज, चिमाफि, चिनि-सल्फ, सिन्को, कोल्चि, क्रोटै, कुरारी, डल्का, इलैटे, इयुफ्रैसि, फॉर्मिका, जेल्से, कैली आयोड, लैथाइ, लेम्ना, मैग्नॉलि, मेलि, म्यूरि एसिड, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ, पेट्रोलि, फाइटो, रेडियम, रोडो, रस टॉ, रूटा, सीपि, साइलि, स्टिलि, सल्फर, ट्यूबर।

बात-चीत करने से—ऐम्ब्रा, कॉकु, फॉस ऐसि, स्टैन। देखिये बोलने से।

खाँसी से—आर्स, ब्रायो, सिना, हायोसि, फॉस, सीपि, टेल्यूरि। देखिये साँस-यन्त्र।

रहने वाले मकान की नमी, तरी से—ऐण्टि टा, एरानि, आर्स, डल्का, नैट्र सल्फ, टेरेबि।

ठण्डी तरी से—एमोका, ऐण्टि टा, ऐरानि, आर्न, ऐस्क्ले ट्यूबर, ऐस्टैरि, बोरे, कैल्के का, कैल्के फॉस, डल्का, जेल्से, गुवाइक, मैंगे ऐसे, मर्क, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फाइसैलि, फाइटो, रस टॉ, साइलि, थूजा, अर्टिका, वेरेट्र एल्बम।

गरम तरी से—बैप्टि, ब्रोमि, कार्बो वेज, कार्बोनि सलफ्यु, जेल्से, हैमे, फॉस्फो, सीपिया।

अन्धेरे से—आर्स, कैल्के का, कार्बो ऐनि, फास्फो, स्ट्रैमो। देखिये आवेग (मन)।

दिन निकलने से सूरज डूबने तक—मेडो।

मलत्याग के बाद—इस्क्यु। देखिये मल (उदर)।

दाँत निकलने से—इथूजा, बेल, बोरै, कैल्के का, कैल्के फॉस, कैमो, क्रियोजो, फाइटो, पोडो, रियूम, जिंक मेट। देखिये दाँत।

मध्याह्न के भोजन के बाद—आर्स, नक्स वॉ। देखिये पेट।

दिशा, कर्णाकार—ऐगैरि, बोथ्रॉप्स।

दिशा, कर्णाकार ऊपरी बायें से निचले, दाहिनी तरफ—ऐगैरि, ऐण्टि टा, स्ट्रैमो।

दिशा, कर्णाकार, ऊपरी, दाहिनी तरफ से निचली बाईं तरफ—ऐम्ब्रा, ब्रोमि, मेडो, फॉस्फो, सलफ्यू एसिड।

दिशा, नीचे की तरफ—बोरै, कैक्ट, कैल्मिया, लाइको, सैनिकू।

दिशा, बाहर की तरफ—कैली का, सल्फर।

दिशा, ऊपर की तरफ—बेन्जिन, इयुपेटो पर्फ, लीडम।

पीते समय—बेल।

खाने से—एबीज नाइग्रा, इस्क्यु, इथूजा, ऐगैरि, ऐलो, एण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, कॉस्टि, चियोनैन्थ, सिना, सिन्को, कॉकु, कालोसिं, कोनि, क्रोटो टिग, डिजि, ग्रैफा, हायोसि, इग्नै, इपिका, कैली बाइ, कैली का, कैली फॉस, क्रियोजो, लैके, लाइको, मैग म्यूर, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओली ऐनि, पेट्रोलि, फास्फो, पल्से, रियूम, रूमेक्स, सैम्बू, सीपिया, साइलि, स्टैफि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, थीया, जिंक मेट। देखिये अनपच रोग (पेट)।

आवेग सम्बन्धी : उत्तेजना से—ऐकोन, ऐम्ब्रा, आर्जे नाइट्रि, ऑरम, सिन्को, कोब्रा, कॉफि, कोल्चि, कोलिन्सो, कोलो, कोनि, क्युप्रम ऐसेटि, जेल्से, हायोसि, इग्ने,

कैली फॉस, लाइसिन, नाइट्रि सिरइल, नक्स वॉ, पेट्रोलि, फॉस एसिड, फॉस्फो, साइलि, स्टैफि। देखिये मन।

चंचल, जगह बदलने वाले, परिवर्तनशील लक्षण—एपिस, बर्बे वल, इग्नै, कैली बाइ, कैली सल्फ, लैक कैना, लिलि टिग्रि, मैंगे ऐसेटि, पैराफि, फाइटो, पल्से, सैनिकू, ट्यूबर।

शाम के समय—ऐकोन, ऐलफा, ऐम्ब्रा, ऐमो ब्रो, ऐमो म्यूर, एपिस, ऐण्टि टा, आर्न, बेल, ब्रायो, कैजूपू, कार्बो वेज, कॉस्टि, सेपा, कैमो, कॉल्चि, क्रॉटै, साइक्लै, डायस्को, इयुओनाइम, इयुफ्रैसि, फेरम फॉस, हेलेबो, हायोसि, लाइको, कैली सल्फ, मर्क कार, मर्क, मेजे, नाइट्रि ऐसिड, फास्फो, प्लेटि, प्लम्ब, पल्से, रैनन बल, रूमेक्स, रूटा, सीपिया, साइलि, स्टैन, सलफ्यू एसिड, सिफिलि, टैबे, वाइबर्न ओपू, एक्स-रे, जिंक मेट।

आँखें बन्द करने से—ब्रायो, सीपि, थेरिडि।

आँखों की हरकत से—ब्रायो, नक्स वॉ, स्पाइजे।

आँखें खोलने से—टैबे।

व्रत करने से—कोक, आयोड।

चर्बी से—कार्बो वेज, साइक्लै, कैली म्यूर, पल्से, थूजा।

पैरों को ठण्ड पहुँचाने से—कोनि, क्यूप्रम, साइलि।

पैरों को लटकाने से—पल्से।

मछली खाने से—नेट्र सल्फ, अर्टिका।

कोहरे से—बैप्टि, जेल्से, हाइपेरि। देखिये तरी।

फल खाने से—आर्स, ब्रायो, सिन्को, कोलो, इपिका, सैम्बू, वेरैट्र एल्ब।

भयाक्रमण से—ऐकोन, जेल्से, इग्नै, ओपियम, वेरैट्र एल्ब।

गैस का प्रकाश—ग्लोनो, नैट्र का।

शोकाक्रमण से—ऑरम, जेल्से, इग्नै, फॉस एसिड, स्टैफि, वेरैट्र एल्बम। देखिए आवेग (मन)।

बाल कटवाने से—ऐकोन, बेल, ग्लोनो।

सिर पर से कपड़ा हटाने से—बेल, साइलि। देखिए ठण्डी हवा।

ऊँचाई पर—कोका।

गरम चीज पीने से—थियोनैन्थ, लैके, स्टैने।

साँस भीतर खींचने से—ऐकोन, ब्रायो, फॉस, रैनन बल, स्पाइजे। देखिये साँस-यन्त्र-मण्डल।

सविराम रूप से, रुक-रुक कर—एनैका, सिन्को, स्ट्रिक्नि। देखिये सामयिक।

झटका लगने से – आर्न, बेल, बर्बे वल, ब्रायो, साइक्यूटा, क्रोटै, ग्लोनो, इग्नै, नक्स वॉ, स्पाइजे, थेरिडि।

हँसने से—आर्जे मेट, ड्रोसेरा, मैंगे एसेटे, फॉस, स्टैन, टेलूरि।

कपड़ा धोने से—सीपिया।

बाईं तरफ—एगैरि, आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, ऐसाफि, ऐस्टेरि, बेलिस, सियानोथ, चिमैफि, सिमिसि, कोल्चि, क्यूप्रम मेट, इरिजे, लैके, लेपिडि, लिलि टिग्रि, ऑक्जै ऐसि, थेरिडि, प्यूलेक्स, रूमेक्स, सैपोने, सीपि, थूजा, अस्टिलै।

बाईं तरफ फिर दाहिनी तरफ—लैक केना, लैके।

प्रकाश से—एकोन, बेल, कैल्के का, कोका, कोनि, कोल्चि, ग्रैफा, इग्नै, लाइसिन, नक्स वॉ, फॉस्फो, स्पाइजे, स्ट्रैमो।

मदिरा से—ऐगैरि, ऐण्टि क्रू, कैने इण्डि, कार्बो वेज, सिमिसि, लैके, लीडम, नक्स वॉ, रैनन वल, स्ट्रैमो, सलफ्यू ऐसि, जिंकम मेट। देखिये मद्यपान रोग (स्नायु मण्डल)।

सीमित, छोटे स्थान में—कॉफि, इग्नै, कैली बाइ, लिलि टिग्रि, ऑक्जै एसिड।

नीचे की तरफ देखने से—ऐकोन, कैल्मिया, ओलियैण्डर, स्पाइजे, सल्फर।

किसी चीज पर देर तक देखने से—सिना, क्रोक।

ऊपर की तरफ देखने से—बेन्जोइन, कैल्के का, पल्से, सल्फर।

शरीर के निचले आधे भाग में—बैसिलि टेस्टि।

लेटने से—ऐम्ब्रा, एण्टि टॉ, आर्न, ऐरम, ऑरम, बेल, कैना सैटा, कॉस्टि, सेन्क्रिस, कोनि, क्रोकस, डायस्को, ड्रोसेरा, डल्का, ग्लोनो, हायोसि, इबेरिस, इपिका, क्रियोजो, लैके, लाइको, मैनियान्थ, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, प्लैटिना, फॉस्फो, पल्से, रस टॉ, रूमेक्स, रूटा, सैम्बू, साइलि, टैराक्सै, ट्रिफोलि, एक्स-रे।

पीठ के बल, चित् लेटने से—ऐसेटि एसिड, नक्स वॉ, पल्से, रस टॉ।

बाईं तरफ करवट लेटने से—आर्जे नाइट्रि, कैक्ट, कैलैडि, कॉक्कस, आइबेरिस, कैली का, लाइको, मैग्नोलि, फॉस, प्लैटिना, टीलिया, पल्से, स्पाइजै, विस्कम।

रोगी करवट लेटने से—ऐकोन, आर्स, बैराइटा का, कैलेडि, हीपर, आयोड, कैली का, नक्स मॉ, फॉस, रूटा, साइलि, टेलूरि, वाइवर्नम ओपू।

बिना दर्द वाली करवट लेटने से—ब्रायो, कैमो, कोलो, टीलिया, पल्से।

दाहिनी करवट लेटने से—कैना इण्डि, मैग म्यूर, मर्क, रस टॉ, स्क्रोफ्यूले, स्टैनम।

सिर नीचा करके लेटने से—आर्स।

हस्त-मैथुन से—कैल्के का, सिन्को, कोनि, नक्स वॉ, फॉस ऐसि, सीपिया, स्टैफि।

पेटेण्ट दवाइयों से, सुगन्धि से, दस्तावर गोलियों से—नक्स वॉ।

मासिक धर्म के बाद—ऐलुमिना, बोरैक्स, ग्रैफा, क्रियोजो, लिलि टिग्रि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉं, सीपिया, जिंक मेट।

मासिक धर्म के शुरू होने या अन्त होते समय—लैके।

मासिकधर्म से पहले—ऐमो का, बोवि, कैल्के का, कॉकू, कोनि, क्यूप्रम मेट, जेल्से, लैके, लाइको, मैग म्यूर, पल्से, सारसा, सीपिया, वेरैट्र एल्ब, जिंक मेट।

मासिक धर्म के स्राव-काल में—ऐमो का; आर्जे नाइट, बेल, बोवि, कैमो, सिमिसि, कोनि, ग्रैफा, हैमे, हायोसि, कैलि का, मैग का, नक्स वॉ, पल्से, स्ट्रैमिया, साइलि, सल्फर, वेरैट्र एल्ब, वाइबर्न ओपू। देखिये मासिक धर्म, स्त्री जननेन्द्रिय मण्डल।

मानसिक परिश्रम से—ऐगैरि, ऐलो, ऐपाइल, एनैका, आर्जे नाइट्रि, ऑरम मेट, कैल्के का, कैल्के फॉस, सिमि, कॉकु, क्यूप्रम मेट, जेल्से, इग्नै, कैली फॉ, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, फॉस, फॉस एसिड, पिक ऐसि, सैबाडि, सापि, साइलि, थाइमॉ। देखिये मन।

आधी रात के बाद—एपिस, आर्स, बेल, कार्बो ऐनि, ड्रोसेरा, फेरम मेट, कैली का, कैली नाइट्रि, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, फॉस, पोडो, रस टॉ, साइलि, थूजा।

आधी रात को—ऐरानि, आर्स, मेजे।

आधी रात के पहिले—आर्जे नाइट्रि, ब्रोमि, कार्बो वेज, कैमो, कॉफि, लीडम, लाइको, मर्क, म्यूरि एसिड, नाइट्रि ऐसि, फॉस, पल्से, रैन स्क्ले, रस टॉ, रियुमेक्स, स्पॉन्जि, स्टेन।

दूध से—इथूजा, ऐण्टि टा, कैल्के का, कार्बो वेज, सिन्को, होमेरस, मैग का, नाइट्रि एसिड, सीपि, सल्फर।

दूसरों के दुर्व्यवहार से—कॉल्चि, स्टैफि।

पूर्णिमा के समय—एलुमि, कैल्के का, ग्रैफा, सैबाडि, साइलि।

चाँदनी से—ऐण्टि क्रू, थूजा।

आमावस्या को—ऐलुमि, कॉस्टि, क्लिमै, साइलि।

सुबह को—ऐकालि, ऐलुमि, ऐम्ब्रा, एमो म्यूर, आर्जे नाइ, ऑरम, ब्रायो, कैल्के का, कैने इण्डि, क्रोक, क्रोटे, फ्लोरि एसिड, ग्लोनो, इग्नै, कैली बाइ, कैली नाइट्रि, लैक कैना, लैके, लिलि टिग्रि, लिथि का, मैग्नोलि, मेडो, माइगे, नैट्र म्यूर, निकोल, नाइट्रि ऐसि, नूफर, नक्स वॉ, ओनोस्मो, फॉस, फॉस ऐसि, पोडो, पल्से, रस टॉ, रुमेक्स, सीपि, साइलि, स्टेलैरि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, वरबैस्क।

बहुत तड़के (२-५ बजे)—इथूजा, इस्क्यु, एलो, ऐमो का, वैरा, बेल, चेलिडो, सिना, कॉक्कस, कुरारी, कैली बाइ, कैली का, कैली साइ, कैली फास, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, आक्जे एसिड, पोडो, टीलिया, रोडो, रूमेक्स, सल्फर, थूजा, ट्यूबर।

सुबह (१०-११ बजे)—जेल्से, नैट्र म्यूर, सीपिया, सल्फर।

किसी अपराध से पश्चाताप—शौक—कोलोसि, लाइको, स्टैफि।

हरकत से—इस्क्यु, ऐगैरि, ऐलो, ऐमो का, एमाइ, एन्हैलो, एपिस, बेल, बर्बे, विस्म, ब्यूट्रि ऐसि, कैक्ट, कैडमि सल्फ, कैलेडि, कैल्के आर्स, कैम्फो, सियानोथ, सिमिसि, सिन्को, कॉकु, कॉल्चि, क्युप्रम मेट, डिजि, इक्विसे, फेरम फॉस, जेल्से, गैटिसवर्ग वाटर, गुवाइक, हेलोनि, आइ इबेरिस, इपिका, जुग्लै सिने, कैली म्यूर, कैल्मि, लैक केना, लीडम, लिनैरि, लोबे इन्फ्ला, मैग फास, मेडो, मेलिलो, मर्क, मेजे, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्र एसिड, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, पैलैडि, पेट्रोलि, फाइटो, फॉस, पिक एसिड, प्लैटि, प्लम्ब, प्यूलक्स, पल्से न्यूटेलि, रैनन बल, रियूम, रूटा, सैबाइना, सैंग्वि, सिला, सिकैल, सेनेगा, साइलि, सोलेन, लाइको, स्पाइजे, स्टिलि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, टैबे, टैरेण्टु हिस्पै, थीया, थाइरेल, वेरेट्र एल्बम, विस्कम।

हरकत, नीचे की तरफ—बोरे, जेल्से, सैनिकू।

हरकत के शुरू ही में—पल्से, रस टॉ, स्ट्रोन्शि का।

पहाड़ की चढ़ाई से—आर्स, कोका। देखिये ऊपर चढ़ने से।

संगीत से—ऐकोन, ऐम्ब्रा, डिजि, ग्रैफा, नैट्र का, नक्स वॉ, पैलैडि, फॉस एसिड, सैबाइ, सीपि, थूजा।

मादक औषधियों से—बेल, कैमो, कॉफि, लैके, नक्स वॉ, थूजा।

रात के समय—एकोन, ऐण्टि टा, आर्जे नाइट्रि, आर्न, आर्स, ऐस्टेरि, बैसि, बेल, ब्रायो, ब्यूट्रि एसिड, कैजूपु, कैम्फो, कॉस्टि, सेन्क्रिस, कैमो, चियोनैन्थ, सिना, सिन्को, क्लिमै, कॉफि, कोल्चि, कोमोक्लै, कोनि, क्रोटै, कैल्का, क्यूप्रम मेट, साइक्लै, डायस्को, डॉलिको, डल्का, फेरम मेट, फेरम फॉस, गैम्बो, ग्रैफा, गुवाइक, हीपर, हायोसि, आयोड, आइरिस, कैली आयोड, लैके, लिलि टिग्रि, मैग म्यूर, मैग फॉस, मर्क को, मर्क, मेजे, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स मॉ, फॉस, फाइटो, प्लैटि, प्लम्ब, सोरि, पल्से, रस टॉ, रूमेक्स, सीपि, साइलि, सल्फर, सिफिलि, टेल्यूरि, थीया, थूजा, वेरैट्र एल्ब, वाइबर्न ओपू, एक्स-रे, जिंक मेट। देखिये शाम।

शोरगुल, आवाज से—ऐकोन, ऐसैरे, बेल, बोरै, कैलैडि, कैमो, सिन्को, कॉकु, कॉफि, कॉल्चि, फेरम, ग्लोनो, इग्नै, लाइको, मैग म्यूर, मेडो, नक्स मॉ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, फॉस, सोलेन, लाइको, स्पाइजे, टेरेण्टू हिस्पै, थेरिडि।

शरीर का आधा भाग—कैमो, इग्नै, मेजे, पल्से, साइलि, स्पाइजे, थूजा, वैले।

अधिक भोजन करने से—ऐण्टि क्रू, नक्स वॉ, पल्से, देखिये खाना।

अधिक गरम होने से ऐकोन, ऐण्टि क्रू, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, कैल्के का, कार्बो वेज, ग्लोनो, लाइको, नक्स मॉ, नक्स वॉ।

पेस्ट्री, गरिष्ठ भोजन से - कार्बो वेज, कैली म्यूर, पल्से।

रतालू खाने से—सेपा, ग्लोनो।

अन्य लोगों की उपस्थिति में ऐम्ब्रा।

निश्चित समय से—ऐलूमि, ऐरानि, आर्स, आर्स मेट, कैक्ट, कार्ल्स, सीड्रन, क्रोमि एसिड, सिन्को, क्यूप्रम मेट, इयुपेटो पर्फ, इग्नै, इपिका, कैली बाइ, नैट्र म्यूर, निकोल, प्रिमुल ओब, एसिड, रैनन स्केले, सिपि, साइलि, टैरे हिस्पै, टेला ऐरा, थूजा, अर्टिका।

सामयिक, हर दूसरे दिन—ऐलूमि, सिन्को, फ्लो एसिड, नाइट्रि एसिड, ऑक्सिट्रो।

सामयिक, हर हफ्ते पर - निकोलम।

सामयिक, हर २-३ हफ्ते पर -- आर्स मेट।

सामयिक, हर २-४ हफ्ते पर—कार्ल्स, ऑक्जै एसिड, सल्फर।

सामयिक, हर ३ हफ्ते पर—आर्स, मैग का।

सामयिक, हर वर्ष पर --आर्स, कार्बो वेज, क्रोटे, लैके, निकोल, सल्फर, थूजा, अर्टिका।

सामयिक, ४-८ बजे रात में - लाइको, सैबाडि।

सामयिक, पूर्णिमा और अमावस्या पर—ऐलूमि।

पानी के निकट उगने वाली वनस्पति खाने से—नैट्र सल्फ।

आलू से—ऐलुमिना।

दाब से—ऐकोन, ऐगैरि, एपिस, आर्जे मेट, बैराइटा का, बोरैक्स, कैल्के का, सेन्किस, सिना, इक्विसे, गुआइक, हीपर, आयोड, कैली का, लैके, लीडम, लाइको, मर्क कार, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, ओनोस्मो, ओवि गैलि पेलि, फाइटो, रैनन बल, साइलि, थेरि। देखिये छूना, स्पर्श।

आराम से—ऐकोन, आर्न, आर्स, ऐसाफी, ऑरम, कैल्के फ्लो, कैप्सि, क्रोमोक्ले, कोनि, साइक्ले, डल्का, इयुफोर्बि, फेरम मेट, इण्डिगो, आइरिस, कैली का, क्रियोजो, लिथि लैक्टि, लाइको, मैग का, मेनियान्थ, मर्क, ऑलियैण्डि, पल्से, रोडो, रस टॉ, सैबाडि, सैम्बू, सेनेगा, सीपि, स्ट्रोन्शि का, सल्फर, टैरेण्टु हिस्पै, टैराक्स, वैले।

घोड़े की सवारी से—आर्जे मेट, बर्बे वल, कॉस्टि, कॉकु, लाइसिन, नक्स मॉ, पेट्रोलि, सैनिकू, थेरिडि।

दाहिनी तरफ—ऐगैरि, ऐमो का, ऐनैका, एपिस, आर्स, बेल, बोथ्रोप्स, ब्रायो, कॉस्टि, चेलिडो, सिनैबे, कोनि, क्रोटै, कुरारी, डोलिको, इक्विसे, फेरम फॉस, आयोड, कैली का, लिथि का, लाइको, मैग फॉ, मर्क, फाइटो, पोडो, रस टॉ, सैंग्वि, सोलेन, लाइको, टैरेण्टु हिस्पै, वायोला ओडो।

उठते समय—एकोन, ऐमो म्यूर, आर्स, बेल, ब्रायो, कैप्सि, कार्बो वेज, कॉकु, कोनि, डिजि, फेरम, लैके, लाइको, नक्स वॉ, फॉस, फाइटो, पल्से, रेडियम, रस टॉ, सल्फर।

गरम कमरा—ऐकोन, एलुमिना, एण्टि क्रू, एपिस, ऐरानि सिने, बैप्टी, ब्रोमि, ब्यूफो, सेपा, क्रैटे, क्रोक, इयुफ्रैसि, ग्लोनो, हाइपेरि, आयोड; कैली आयोड, कैली सल्फ, लिलि टिग्रि, मर्क, पल्से, सैबाइ, वाइबर्न ओपू। देखिये निम्न ताप।

खुजलाने से—ऐनैका, आर्स, कैप्सि, डोलिको, मर्क, मेजे, पल्से, रस टॉ, स्टैफि, सल्फर।

समुद्र में स्नान करने से—आर्स, लिमुलस, मैग म्यूर।

समुद्र तट पर—एक्वा मैरि, आर्स, ब्रोमि, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, सिफिलि।

निठल्ला जीवन—ऐकोन, एलो, एमो का, एनैका, आर्जे नाइट्रि, ब्रायो, कोकि, नक्स वॉ, सीपि।

दाढ़ी शेव करने के बाद—कैप्सि, कार्बो ऐनि, ऑक्जे एसिड, प्लम्ब।

बैठने से—ऐलुमिना, ब्रायो, कैप्सि, कोनि, साइक्लै, डिजि, डायस्को, डल्का, इक्विसे; इयुफॉर्बि, फेरम, मेट, हाइड्रोकोटा, लाइको, इण्डिगो, कैली का, नैट्र का, नक्स वॉ, फाइटो, प्लैटि, पल्से, रस टॉ, सीपि, सल्फर, टैराक्से; वैले।

ठण्डी सीढ़ियों पर बैठने से—चिमॉफि, नक्स वॉ।

सोने के बाद—एम्ब्रा, एपिस, ब्यूफो, कैडमि, सल्फ, कैल्के का, कॉकु, कॉक्कस, क्रैटै, एपिफे, होमेर, लैके, मर्क कार, मॉर्फि ओपि, पार्थे, पिक एसिड, रस टॉ; सेलैनि, स्पॉन्जि, स्ट्रैमो, सल्फर, सिफिलि, थ्लैस्पि, ट्यूबर, वैले।

धूम्रपान से—एब्रीज नाइ, बॉरै, कैने इण्डि, चिनि-आर्स, साइक्यूटा, कॉकु, जेल्से, इग्नै, कैलिम; लैक्टि ऐसि, लोबे इन्फ्ला, नक्स वॉ, पल्से, सीकेल, स्पाइजे, स्पॉन्जि, स्टैफि, स्टैलेरि।

छींकने से—आर्स, ब्रायो, कैली का, फॉस, सल्फर, वरबैस्क। देखिये झटका।

बर्फ के गलने से—कैल्के फॉस।

बर्फ तूफान—कोनि, फार्मिका, मर्क, सीपि, अर्टिका।

एकान्तवास से—बिस्म, कैली का, लिलि टिग्रि, लाइको, पैलै, स्ट्रैमो। देखिये भय (मन)।

शोर्बा, रसा से—ऐलुमि, कैली का। देखिये चर्बी।

मसालेदार चीजों से—नक्स वॉ, फॉस।

वसन्त ऋतु में—आर्स ब्रो, ऑरम, कैल्के फॉस, सेपा, क्रोटै, डल्का, जेल्से, कैली बाइ, लैके, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नाइट्रि स्पिरि डल, रस टॉ, सारसा।

खड़े होने से—इस्कियु, ऐलो, बर्ले वल, कैल्के का, कोनि, साइक्लै, लिलि टिग्रि, प्लैटि, सल्फर, वैले।

उत्तेजक वस्तुओं से—ऐण्टि क्रू, कैडमि सल्फ, चिओनैंथ, फ्लोरि एसिड, ग्लोनो, इग्नै, लैके, लीडम, नाजा, नक्स वॉ, ओपि, जिंक मेट।

तूफान से पहिले—बेलिस, मेलिलो, नैट्र सल्फ, सोरि, रोडो, रस टॉ।

झुकने से—इस्कियु, ऐमो का, ब्रायो, कैल्के का, ग्लोनो, लाइसिन, मर्क, रैनन वल, स्पाइजे, सल्फर, वैले।

जोर देने से, शक्ति से अधिक बोझ उठाने से—आर्न, कार्बो ऐनि, रस टॉ, रूटा।

शरीर फैलाने, अँगड़ाई लेने से—मेडो, रस टॉ।

धूप से—एण्टि, क्रू, बेला, ब्रायो, कैक्ट, फैगोपा, जेल्से, ग्लोनो, लैके, लाइसिन, नैट्र का, नैट्र म्यूर, पल्से, सेलेनि। देखिये मौसम (गरम)।

धूप लगने का दर्द—ग्लोनो, नैट्र म्यूर, सैंग्वि, स्पाइजे, टैबै।

निगलना—एपिस, बेल, ब्रोमि, ब्रायो, हीपर, हायोसि, लैके, मर्क आयोड फ्ले, मर्क आयोड रूबर, मर्क, नाइट्रि, एसिड, स्ट्रैमो, सल्फर। देखिये निगलन कष्ट (Dysphagia) (गला)।

पसीना होने से—ऐण्टि टा, चिनि-सल्फ; हीपर, मर्क कॉर, मर्क सल्फ, नाइट्रि एसिड, ओपि, फॉस एसिड, सीपि, स्ट्रैमो, वैरैट्र एल्ब।

मिठाई से—एण्टि क्रू, आर्जे नाइट्रि, इग्नै, लाइको, मेडो, सैंग्वि, जिंक मेट।

बातचीत करने से—ऐम्ब्रा, ऐमो का, ऐनै का, आर्जे मेट, ऐरम, कैल्के का, कैना सैटाइ, चिनि-सल्फ, कॉक्कु, मैग म्यूर, मैंगे एसेटि, नैट्रम कार्बो, नैट्र म्यूर, फॉस एसिड, रस टॉ, सेलेनि, स्टैन, सल्फर, वरबैस्क।

चाय से—एबीज नाइग्रा, सिन्को, डायस्को, लोबे इन्फ्ला, नक्स वॉ, पल्से, सेलेनि, थूजा।

अत्यन्त तापमान से—ऐण्टि क्रू, इपिका, लैके।

लक्षणों पर सोचने से—बैराइटा का, कैल्के फॉस, कॉस्टि, जेल्से, हेलोनि, मेडो, नक्स वॉ, ऑक्जे ऐसि, ऑक्सिट्रोपिस, पाइपर मेथि, सैबैडि, स्टैफि।

बिजली-तूफान के पहिले और दौरान में—ऐगैरि, जेल्से, मेडो, मेलिलो, नैट्र का, पेट्रोलि, फॉस, फाइटो, सोरि, सीपि, साइलि।

तम्बाकू चबाने से—आर्स, इग्नै, लाइको, सेलेनि, वेरैट्र एल्ब।

धूम्रपान से—ऐकोन, साइक्यू, कॉकु, इग्नै, स्टैफि। देखिये धूम्रपान।

छूना स्पर्श से—ऐकोन, ऐंगस्टू, एपिस, आर्जे मेट, आर्स, ऐसाफि, बेल, बोरै, ब्रायो, कैल्के का, कैम्फो, कैप्सि, कार्बो ऐनि, कैमो, साइक्यू, सिन्को, कॉकु, कॉल्चि, कोलोसिं, कोमोक्लै, क्यूप्रम ऐसेटि, क्यूप्रम मेट, इक्विसे, इयूफॉर्बि लै, इयुफ्रै सि, फेर फॉस, गुवाइक, हेलोनि, हीपर, हायोसि, इग्नै, कैली का, लैके, लिलि टिग्रि, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैग फॉस, मेजे, म्यूरेक्स, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ, ओलियैण्ड, ऑक्जै एसिड, फॉस, प्लम्ब मेट, पल्से, रैनन वल, रोडो, रस टॉ, सैबाइ, सैंग्वि, सीपि, साइलि, स्पाइजे, स्टैफि, स्ट्रिक्नि, सल्फर, टैरैण्टू हिस्पै, टेल्युरि, थेरिडि, अर्टि, जिंक मेट।

ईंट के स्पर्श से—ग्लोनो।

सफर करने पर—कोका, प्लैटि।

गोधूली से दिन निकलने तक—ऑरम, मर्क, फाइटो, सिफिलि।

कपड़ा हटाने से—आर्स, बेल, बेन्जो एसिड, कैप्सि, ड्रोसे, हेलेबो, हीपर, कैली बाइ, मैग फॉ, नक्स वॉ, रियूम, रस टॉ, रूमेक्स, सैम्बू, साइलि, स्ट्रोन्शि का।

चेचक का टीका लगवाने के बाद—साइलि, थूजा।

बछड़े का मांस खाने से—इपिका, कैली नाइट्रि।

जीवन रसों के निकल जाने से—कैल्के का, कैल्के फॉस, कार्बो वेज, सिन्को, कोनि, कैलि का, कैली फॉस, नक्स वॉ, फॉस, फॉस एसिड, पल्से, सैलैनि, सीपिया, स्टैफि।

आवाज का प्रयोग करने से—आर्जे मेट, आर्जे नाइट्रि, ऐरम, कार्बो वेज, ड्रोसे, मैंगे ऐसेटि, नक्स वॉ, फॉस, सेलेनि, स्टैन, वायेथे।

कै करने से—इथूजा, ऐण्टि टा, आर्स, क्यूप्रम मेट, इपिका, नक्स वॉ, पल्से, साइलि।

जागने से—ऐम्ब्रा; लैके, नाइट्रि एसिड, नक्स वॉ। देखिये नींद।

निम्न ताप, गरमी—ऐकोन, इथूजा, ऐगैरि, ऐलुमि, ऐम्ब्रा, ऐनैका, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा एपिस, आर्जे नाइट्रि, ऐसाफि, बेल, ब्रायो, कैल्के का, कैम्फो, सेपा, कैमो, सिन्को, क्लिमै, कोमोक्लै, कॉन्वै, ड्रोसे, इयुफ्रै, फेरम मेट, फ्लोरि एसिड, जेल्से, ग्लोना, ग्रैफा, गुवाइक, हेलियान्थ, हायोसि, आइबेरिस, आयोड, जुग्लै सिने, जस्टिसि, कैली आयोड, कैली म्यूर, लैके, लीडम, लाइको, मेडो, मर्क, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, नक्स मॉ, ओपि, पल्से, सैबाइना, सीकेल, स्टेलैरि, सल्फर, सलफ्यू ऐसि, टैबे। देखिये मौसम, गरम।

बिस्तर की गरमी से—ऐलुमि, एपिस, बेलिस, कैल्के का, कैमो, क्लिमे, ड्रोसे, लीडम, लाइको, मैग का, मर्क, मेजे, पल्से, सैबाइ, सिके, सल्फर, थूजा, वेरकम।

पानी से नहाने से—ऐमो का, ऐण्टि क्रू, आर्स आयोड, बैराइटा का, बेल, कैल्के का, कैन्थे, कैमो, क्लिमै, क्रोटै कैस्का, फेरम मेट, क्रियोजो, लिलि टिग्रि, मैग फॉस, मर्क, मेजे, नैट्र सल्फ, नाइट्रि ऐसि, रस टॉ, सीपि, साइलि, स्पाइजे, सल्फर, अर्टिका।

ठण्डा पानी पीने से—ऐण्टि क्रू, एपोसाइ, आर्जे नाइट्रि, आर्स, कैल्के का, कैन्थे, क्लिमै, कॉकु, क्रोटो टिग, साइक्लै, ड्रोसे, फेरम मेट, लोबे इन्फ्ला, लाइको, नक्स मा, रस टॉ, सैबैडि, स्पॉन्जि, सल्फर।

निम्न गरम पानी पीने से—ऐम्ब्रा, ब्रायो, लैके, फॉस, पल्से, सीपि, स्टैन।

पानी बहने को आवाज सुनने या बहता पानी देखने से—लाइसिन।

पानी में काम करने से – कैल्के का, मैग फॉस।

मौसम बदलने से—ऐमो का, ब्रायो, कैल्के का, कैल्के फ्लोर, कैल्के फॉस, चेलिडो, सिन्को, डल्का, मैंगे एसेटि, मैग का, मर्क, नैट्र का, नाइट्रि एसि, नक्स मॉ, फॉस, सोरि, रैनन बल, रोडो, रस टॉ, रूटा, स्टिक्टा, स्ट्रोन्शिा का, सल्फर, टैरे हिस्पे। देखिए तरी, नमी।

वसन्त ऋतु में मौसम बदलने से—ऐण्टि टॉ, कैप्सि, जेल्से, कैली सल्फ, नैट्र सल्फ।

मौसम, सूखा, ठण्डा—ऐगैरि, ऐलुमि, ऐपोसाइ, ऐसैर, ऑरम, कॉस्टि, डल्का, इपिका, कैली का, क्रियोजो, नाइट्रि स्पिरि डल, नक्स वॉ, पेट्रोलि, रस टॉ, विरकम। देखिये हवा ठण्डी।

मौसम गरम—ऐकोन, इथूजा, ऐलो, ऐण्टि क्रू, बेल, बोरै, ब्रायो, कोकस, क्रोटै, क्रोटो टिग, जेल्से, ग्लोनो, कैली बाइ, लैके, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नाइट्रि ऐसि, फॉस, पिक ऐसि, पोडो, पल्से, सैबाइ, सेलेनि, सिफिलि। देखिये धूप।

मौसम, तूफानी—नक्स मॉ, सोरि, रैनन बल, रोडो, रस टॉ।

मौसम हवादार सूखा—ऐकोन, ऐरम, कैमो, क्यूप्रम मेट, हीपर, लाइको, मैग का, नक्स वॉ, फॉस, पल्से, रोडो।

मौसम हवादार, तर—सेपा, डल्का, इयुफ्रै सि, इपिका, नक्स मॉ, रोडो।

धोने से—कैमो, नैट्र म्यूर, पल्से, सीपि, स्टैन।

तर, नम प्रयोग से – ऐमो का, ऐण्टि क्रू, कैल्के का, क्लिमै, क्रोटै, मर्क, रस टॉ, सल्फर। देखिये पानी में साफ करने से।

तरी लगने से, शरीर पर नमी के प्रभाव से—ऐमो का, ऐण्टि क्रू, एपिस, ऐराशि, आर्स, कैल्के का, कॉस्टि, सेपा, डल्का, इलैप्स, मेलि, मर्क, नैरासिसस, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ, फाइटो, पिक एसिड, रैनन बल, रोडो, रस टॉ, रूटा, सीपि । देखिये तरी, नमी ।

पैर भींगने से—कैल्के का, सेपा, पल्से, रस टॉ, साइलि ।

मदिरा से—ऐलूमि, ऐण्टि क्रू, आर्न, आर्स, बेन्जो एसिड, कार्बो वेज, कोनि, फ्लोरि एसिड, लीडम, लाइको, नक्स वॉ, ओपि, रैनन बल, सेलेनि, साइलि, जिंक मेट ।

जम्हाई लेने से—सिना, इग्नै, क्रियोजो, नक्स वॉ, रस टॉ, सारसा ।

प्रति वर्ष—लैके, रस रैडि ।

घटना—अम्ल युक्त पदार्थों से—टीलिया, सैंग्वि ।

हवा ठण्डी खुली—ऐकोन, इस्कियु, इथूजा ऐलो, एलुमि, ऐम्ब्रा, ऐमो म्यूर, ऐमाइल, ऐण्टि क्रू, ऐण्टि टा, एपिस, आर्जे नाइट्रि, एसाफी, बैराइटा का, ब्रायो, ब्यूफो, कैक्ट, कैने इण्डि, सेपा, सिन्को, क्लिमै, कोका, कोमोक्लै, कॉनवैं, क्रोटै, क्रोक, डिजि, डायस्को, ड्रोसे, डल्का, इयुओनाइम, इयुफ्रै, जेल्से, ग्लोनो, ग्रैफा, आयोड, कैली आयोड, कैली सल्फ, लिलि टिग्रि, लाइको, मैगे का, मैग म्यूर, मर्क आयोड रूबर, मेजे, मॉस्क, नाजा, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, ओलि ऐनि, फॉस, पिक एसिड, प्लैटि, पल्से, रेडियम, रस टॉ, सैबाडि, सैबाइ, सीके, सीपि, स्टेलै, स्ट्रिक्नि, फॉस, सल्फर, टैबे, टैरे हिस्पे, वाइबर्न, ओपू । देखिये निम्न ताप (बढ़ना) ।

हवा, ठण्डी, खिड़की खोलना आवश्यक—ऐमाइल, आर्जे नाइट्रि, बैप्टि, कैल्के का, लैके, मेडो, पल्से, सल्फर । देखिये दमा रोग (साँस-यन्त्र मण्डल) ।

हवा, सामान्य गरम—ऑरम मेट, कैल्के का, कॉस्टि, लीडम, मैग कार्ब, मर्क, पेट्रोलि, रस टॉ । देखिये निम्न ताप ।

नहाना—एकोन, एपिस, आर्स, ऐसैर, कॉस्टि, इयुफ्रैसि, पल्से, स्पाइजे ।

नहाना, ठण्डे पानी से—एपिस, ऐसैर, ब्यूफो, मेफाइटिस, नैट्र म्यूर, सीपि ।

सिरके से धोना, नहाना—वेस्पा ।

निम्न गरम पानी से नहाना—ऐण्टि क्रू, ब्यूफो, रेडियम, स्ट्रोन्शि, थीया ।

दोहरा होना, उकड़ होना—ऐलो, सिन्को, कोलो, मैग फॉस । देखिये दाब ।

आगे की तरफ झुकने से—जेल्से, कैली का ।

नाक, कान में अंगुली देना—नैट्र का, स्पाइजे ।

जलपान, नाश्ते के बाद—नैट्र सल्फ, स्टैफि । देखिये खाना ।

उठाकर ले जाने से—ऐण्टि टॉ, कैमो ।

चबाने से—ब्रायो, क्युप्रम ऐसेटि ।

कॉफी पीने से—इयुफ्रेसि, फ्लोरि एसिड ।

ठण्डक से—बेलिस, बोरै, ब्रायो, सेपा, फैगोपा, आयोड, लीडम, लाइको, ओनोस्मो, ओपि, फॉस, सीकेल ।

ठण्डे प्रयोग से, धोने से—ऐलुमि, एपिस, आर्जे नाइट्रि, ऐसेरे, बेल, फेरम फॉस, कैली म्यूर, मर्क, फॉस, पल्से, सैबाइ । देखिये नहाना ।

ठण्डे पानी से—ऐगैरि एसेटि, ऐलो, ऐम्ब्रा, ब्रायो, कैम्फो, कैने इण्डि, कॉस्टि, क्युप्रम मेट, फैगोपा, लीडम, फॉस, पिक एसिड, पल्से, सीपि ।

रंग चमकीली चीजें—स्ट्रैमो, टैरे हिस्पै ।

बाल से कंघी करने से—फार्मिका ।

संगत से—इथूजा, बिस्मथ, कैली कार्ब, लिलि टिग्रि, लाइको, स्ट्रैमो ।

ढाढ़स देने से पल्से ।

बात चीत करने से—इयुपेटो पर्फ ।

खाँसने से—एपिस, स्टैन । देखिये साँस-यन्त्र-मण्डल ।

हल्का कपड़ा ओढ़ने से—सीके ।

अंधेरे में—कोका, कोनि, इयुफ्रैसि, ग्रैफा, फॉस, सैंग्वि ।

दिन के समय में कैली का, सिफिलि । देखिये बढ़ना ।

एक दिन का नागा देकर—ऐलुमि ।

सीढ़ी उतरने से—स्पॉन्जि ।

स्राव दिखाई देने से—लैके, मॉस्कस, स्टैन, जिंक मेट ।

अंगों को ऊपर सिकोड़ने से—सीपि, सल्फ, थूजा ।

ठण्डी चीज पीने से—ऐम्ब्रा, क्युप्रम मेट ।

निम्न गरम चीज पीने से—ऐलुमि, आर्स, चेलिडो, लाइको, नक्स वॉ, सैबेडि, स्पॉन्जि । देखिये निम्न गरम ।

खाने से—ऐसेटि एसिड, ऐलुमि, ऐम्ब्रा, ऐनैका, ब्रोमि, कैडमि सल्फ, कैप्सि, चेलिडो, सिमिसि, सिस्टस, कोनि, फेरम ऐसेटि, फेरम मेट, ग्रैफा, हीपर, होमेर, इग्नै, आयोड, कैली फॉस, लैके, लिथि का, नैट्र का, नैट्र म्यूर, अनोस्मो, पेट्रोलि, फॉस, पाइपर नाइग्र, सोरि, रोडो, सीपि, स्पॉन्जि, जिंक मेट ।

डकार आने से—ऐण्टि टॉ, आर्जे नाइट्रि, ब्रायो, कार्बो वेज; डायस्को, ग्रैफा, इग्नै, कैली का, लाइको, मॉस्कस, नक्स वॉ, ओलि ऐनि, सैंग्वि ।

शाम के समय—बोरैक्स, लोबे इन्फ्ला, निकोल, नक्स वॉ, स्टेलैरि ।

आनन्ददायक उत्तेजना से—कैली फॉस, पैले ।

व्यायाम से—ऐलुमेन, ब्रोमि, प्लम्ब मेट, रस टॉ, सीपिया। देखिये टहलना।

बलगम निकलने से—ऐण्टि टॉ, हीपर, स्टैन, जिंक मेट। देखिये साँस-यन्त्र मण्डल।

हवा खुलने से—ऐलो, आर्न, कैल्के फॉस, कॉर्न, सरसि, ग्रैटि, हीपर, आइरिस, कैलि नाइट्रि, मेजे।

हवा कराने से—आर्जे नाइट्रि, कार्बो वेज, सिन्को, लैके, मेडो।

व्रत रखने से—कैमो, कोनि, नैट्र म्यूर।

बर्फ के पानी में पैर रखने से—लीडम, सीके।

ठण्डे भोजन से—ऐम्ब्रा, ब्रायो, लाइको, फॉस, साइलि।

गरम भोजन से—क्रियोजो, लाइको। देखिये बढ़ना।

दोपहर से पहिले—लिलि टिग्रि।

सिर को पीछे को तरफ झुकाने से—हाइपेरि, सेनेगा।

लेटने पर सिर को आगे झुकाने से—कोलोसिं।

सिर को गरम करने से लपेटने पर—हीपर, सोरि, रोडो, साइलि।

सिर ऊपर उठाने पर—आर्स, जेल्से।

गरमी से—आर्स, कैप्सि, जिम्नोक्ल, जेरोफाइल। देखिये निम्न ताप।

मुँह में बर्फ रखने से—कॉफिया।

समुद्र तट से दूर और पहाड़ पर—सिफिलि।

साँस भीतर खींचने से—कॉल्चि, इग्नै, स्पाइजे। देखिये साँस यन्त्र-मण्डल।

लेमोनेड—साइक्लै।

प्रकाश—स्टैमो।

अङ्ग को नीचे लटकाने से—कोनि।

लेटने से—ऐकोन, ऐन्हैलो, आर्न, बेल, बेलिस, ब्रोमि, ब्रायो, कैलैडि, कैल्के का, कॉफिया, कॉल्चि, इक्विसे, फेरम मेट, मैंगे ऐसेटि, नैट्र म्यूर, नक्स वॉ, ओनोस्मो, पिक ऐसि, प्यूलेक्स, पल्से, रेडियम, स्टैन, स्ट्रिक्नि, सिम्फोरि।

कंधों को ऊँचा करके चित्त लेटने से—ऐकोन, आर्स।

बायें करवट लेटने से—इग्नै, म्यूरि ऐसि, नैट्र म्यूर, स्टैन। देखिये बढ़ना।

दर्दीली करवट लेटने से—ऐम्ब्रा, ऐसो का, आर्न, बोरै, ब्रायो, कैल्के का, कोलो, क्यूप्रम ऐसेटि, टीलिया, पल्से, सलफ्यू ऐसि। देखिये दाब।

दाहिनी करवट लेटने पर—एण्टि टॉ, नैट्र म्यूर, फॉस, सल्फर, टैबे। देखिये बढ़ना।

सिर ऊँचा करके दाहिनी करवट लेटने से—आर्स, कैक्ट, स्पाइजे, स्पॉन्जि।

पेट के बल लेटने से—ऐसेटिक ऐसि, ऐमो का, ऐण्टि टॉ, कोलो, मेडो, पोडो, टैबे।

सिर को ऊँचा करके लेटने से—पेट्रोलि, पल्से, स्पॉइजे।

सिर को नीचा करके लेटने से—आर्न, स्पॉन्जि।

शरीर में चुम्बक की शक्ति प्रवेश कराने से—फॉस।

दो मासिक-धर्म के काल में—बेल, बोविस्टा, इलैप्स, हैमे, मैग्नोलि।

मासिक-धर्म के काल में—ऐमो का, साइक्लै, लैके, जिंकम मेट। देखिये स्त्री-जननेन्द्रिय मण्डल।

दिमागी काम करने से—फेरम मेट, कैली ब्रो, हेलोनि, नैट्र का।

आधी रात के बाद—लाइको। देखिये रात।

आधी रात से दोपहर तक—पल्से।

मन को दूसरी तरफ लगाने से—कैल्के फॉस, हेलोनि, ऑक्जे एसिड, पाइपर मेथि, टैरै हिस्पै।

सुबह के समय—एपिस, जुग्लै सिने, स्टिलि, जेरोफाइल।

हरकत—ऐब्रोटै, इस्कियु, ऐलुमि, आर्न, आर्स, ऐसाफी, ऑरम बेल, बेलिस, ब्रोमि, कैप्सि, सिन्को, कोका, कॉक्कस, कोमोक्ले, कोनि, साइक्लै, डायस्को, डल्का, इयुफॉर्बि, फेरम मेट, फ्लोरि ऐसि, जेल्से, हेलोनि, होमेर, इग्नै, इण्डिगो, आइरिस, कैली कार, कैली आयोड, कैली फॉस, क्रियोजो, लिथि का, लिथि लैक्टि, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैग कार, मैग म्यूर, मैग्नोलि, मेनियान्थ, नैट्र कार, ओपि, पार्थे, पाइपर मेथि, प्लैटिना, पल्से, पाइरो, रेडियम, रोडो, रस टॉ, रूटा, सैबाडि, सैम्बू, सीपि, स्टैलैरि, सल्फर, सिफिलि, वैलेरि, वेरैट्र एल्ब, जेरोफाइल, जिंकम मेट।

धीमी हरकत से—ऐगेरि, ऐम्ब्रा, फेर ऐसेटि, फेर मेट, प्लैटि, स्टैन, जिंक मेट।

मुँह को ढँकने से—रियुमेक्स।

संगीत से—टैरि हिस्पै।

रात में—क्यूप्रम ऐसेटि।

तेल के प्रयोग से, तेल लगाने से—इयुफोर्बि लैथि।

आसन बदलने से—एपिस, कॉस्टि, इग्नै, नैट्र सल्फ, फॉस एसिड, रस टॉ, वैलै, जिंकम मेट।

हाथ और पैर का आसन—इयुपेटो पर्फ।

ओठंगने का आसन—ऐण्टि टॉ, एपिस, बेल। देखिये आरम।

दाब—आर्जे नाइट्रि, ऐसाफि, बोरै, ब्रायो, कैप्स, चेलिडो, सिन्को, कोलो, कोनि, क्यूप्रम ऐसेटि, डायस्को, ड्रोसेरा, इयुओनाइम, फॉर्मिका, गुवाइक, इग्नै, इण्डिगो,

लिलि टिग्रि, मैग म्यूर, मैग फॉस, मेनियान्थ, नैट्र का, नैट्र म्यूर, नैट्र सल्फ, नक्स वॉ, पिक एसिड, प्लम्ब मेट, पल्से, रेडियम, सीपिया, साइलि, स्टैन, वेरैट्र एल्ब।

पैरों को कुर्सी पर रखने से—कोनि।

आराम से—इस्कियु, ऐण्टि क्रू, बेल, ब्रायो, कैडमि सल्फ, कैने इण्डि, कॉल्चि, क्रैटे, गेटिस वर्ग वाटर, जिम्नोक्ले, कैली फॉस, मर्क कार, मर्क वाइल, नक्स वॉ, फाइटो, प्यूलेक्स, सिला, स्ट्रैफ, स्ट्रिक्नि फॉस, वाइबर्न ओपू।

गाड़ी की सवारी से—नाइट्रि एसिड।

उठने से—ऐम्ब्रा, ऐमो का, आर्स, कैल्के का, लिथि का, पार्थे, सैम्बू, सीपि।

शरीर को झूले की तरह इधर-उधर हिलाने से—सिना, कैली का।

बन्द कमरे में—इयुफोर्बि, लैथाइ। देखिये निम्न गरम।

मालिश से—एनैका, कैल्के का, कैन्थे, कार्बो एसिड, डायस्को, फॉर्मिका, इण्डिगो, मैग फॉस, नैट्र का, ओलि ऐनि, फॉस, प्लम्ब मेट, पोडो, रस टॉ, सीकेल, टैरे हिस्पै।

नाखून से खरोंचने से—ऐसाफी, कैल्के का, कोमोक्लै, साइक्लै, जुग्लै सिने, म्यूरि एसिड, नैट्र का, फॉस, सल्फर।

समुद्र पर—ब्रोमि।

समुद्र तट पर—मेडो।

दाढ़ी बनाने के बाद—ब्रोमि।

पानी की चुस्की लेने से—कैली नाइट्रि।

सीधा होकर बैठने से—ऐण्टि का, एपिस, बेल।

बिस्तर पर उठ बैठने से—कैली का, सैम्बू।

सोने से—कैलेडि, कॉल्चि, मर्क, माइगे, नक्स वॉ, फॉस, सैंग्वि, सीपि।

धूम्र पान से—ऐरानि, टैरे क्युबै।

सीधा होकर खड़ा होने से—आर्स, बेल, डायस्को, कैली फॉस।

उत्तेजक वस्तुओं से—जेल्से, ग्लोनो।

झुकने से—कॉल्चि।

तूफान के बाद—रोडो।

अंग फैलाने—ऐमाइल, प्लम्ब मेट, रस टॉ, सीकेल, ट्यूक्रि।

गरमी के मौसम में—ऐलुमि, ऑरम मेटे, कैल्के फॉस, फेरम मेट, साइलि। देखिये निम्न ताप।

पसीना आने से—ऐकोन, आर्स, कैलेडि, कैमो, क्यूप्रम मेट, फ्रैन्किस्किया, रस टॉ, वेरैट्र एल्ब। देखिए ज्वर।

पकड़ने से—ऐनैका।

सोचने से—कैम्फो, हेलेबो।

छूने से—ऐसाफी, कैल्के का, साइक्लै, म्यूरि एसिड, टैराक्से, थूजा।

कपड़ा हटाने से—एपिस, कैम्फो, लाइको, ओनोस्मो, सीकेल, टैबे। देखिये बढ़ना।

पेशाब करने से—जेल्से, इग्नै, फॉस एसिड, साइलि।

कै करने से—हेलियान्थ।

निम्न ताप—आर्स, ऑरम मेट, बैडि, बेल, ब्रायो, कैल्के फ्लो, कैम्फो, कॉस्टि, सिमिसि, कोलो, कोलिन्सो, कॉफि, कोरैलि, क्यूप्रम एसेटि, साइक्लै, डल्का, फॉर्मिका, हीपर, इग्नै, कैली बाइ, कैली फॉस, क्रियोजो, लैके, लोबे इन्फ्ला, लाइको, मैग फॉस, नक्स मॉ, नक्स वॉ, फॉस एसिड, फाइटो, सोरि, रोडो, रस टॉ, रियुमेक्स, सैबाडि, सीपि, साइलि, सोलैन, लाइको, स्टैफि, स्ट्रैमो, सलफ्यु एसिड, थीया, वेरैट्र एल्ब।

निम्न ताप के प्रयोग (सेंकने) से—आर्स, ब्रायो, कैल्के फ्लो, लैके, मैग फॉस, नक्स मॉ, रेडियम, रस टॉ, सीपिया।

सिर के निम्न ताप से—बेल, ग्रैफा, हीपर, सोलि, सैनिकु, साइलि।

ठण्डे पानी से—एलो, ब्राइ, कॉस्टि, जेट्रोफा, फॉस, पिकरि एसिड, सीपिया।

तर, नम, मौसम से—ऐलूमि, ऐसैर, कॉस्टि, हीपर, मेडो, म्यूर एसिड, नक्स वॉ।

गर्म पानी से—स्पाइजेलिया।

तर, गरम मौसम से—कैमो, कैली का, साइलि।

सूखे मौसम से—ऐमो का, कैल्के का, कैली का, मैग्नोलि, पेट्रोलि, स्टिलि। देखिये बढ़ना।

सूखा, निम्न गरम मौसम से—ऐलुमि, कैल्के फॉस, नैट्र सल्फ, नक्स मॉ, रस टॉ, सल्फर। देखिये गरमी का मौसम।

मदिरा—कोका।

जाड़े के दिनों में—इलेक्स।

— —

चिकित्सा-संकेत

किसी रोगी के लिए ठीक होमियोपैथिक औषधि का चुनना बिना उसके सभी, सम्पूर्ण लक्षणों पर ध्यान दिये हुए सदा असफल होगा। होमियोपैथिक औषधि का

निर्णय करने में कुछ अनिवार्य और आवश्यक बातों पर ध्यान रखना चाहिए--यानी चिकित्सक को रोगी के व्यक्तिगत, सामूहिक लक्षण-विशेष और प्रकृति को प्रधानता देनी चाहिए जो उसके तत्कालीन रोगी अवस्था और कष्ट से बहुधा स्वतंत्र और पृथक हो।

ये विशेषताएँ मुख्यतः निम्नलिखित बातों में पायी जाती हैं--

१--स्थान भेद अथवा शरीर का वह भाग जो रोगग्रस्त हो।

२--संवेदनाओं में।

३--रोग के घटने-बढ़ने में।

केवल रेपर्टरी के अध्ययन ही से सांकेतिक औषधि मिल जायेगी, लेकिन इस पूरी पुस्तक में अनेक सुझाव दिये गये हैं जो चिकित्सक के अनुभव पर या आंशिक परीक्षणों पर निर्धारित हैं। ये सभी, यदि रोगी की चिकित्सा के समय इनकी पुष्टि करें तो मेटेरिया मेडिका की वृद्धि में बहुमूल्य सिद्ध होंगे। चूँकि इनमें से बहुत-से संकेत हमारी रेपर्टरी में स्थान नहीं रखते, इसलिए हमने इनकी अलग से सूची देना आवश्यक समझा है, ताकि चिकित्सक का ध्यान इस ओर आकर्षित हो और उसके अध्ययन में वृद्धि हो। यह चिकित्सा सूची अधिकांशतः केवल सुझावमात्र है।

गर्भपात का भय --कॉलोफाइ, वाइवर्नम।

फोड़ा--वेलाडो, मर्क, हीपर, साइलि, ऐनैथेर।

अम्लता, तेजाबी अवस्था--कैल्के, रोबिनी, सल्फ्यू एसिड, नक्स।

मुँहासे--कैली बाइक्रो, सिमिसि, बर्बे एक्वि, लीडम, हाइड्रोकोटा, ऐण्टि-मनी, कैली ब्रोमे।

मुँहासे गुलाबी (Rosacea)--ऊफोरि, क्रियोजो, सल्फर, कार्बो एनि, रेडियम।

हाथ, पैर, चेहरे की हड्डियों और कोमल अंगों की अस्वाभाविक वृद्धि (Acromegaly)--थाइरॉयडि, क्राइसेरोबि।

पशु रोग विशेष, जीभ और जबड़ों पर अर्बुद का लोंदा बनना (Actinomycosis)--नाइट्रि एसिड, हिपोजी, हेक्ला।

एडिसन्स रोग--एक प्रकार का रोग, जिसमें शरीर पर पीतल के रंग के दाने निकल आते हैं, साथ में सुस्ती और रक्तहीनता हो जाती है--ऐड्रोनैलिन, आर्स, फॉस, कैल्के आर्स।

ग्रन्थि-प्रदाह--(Adenitis) ऐडेनाइटिस--बेल, मर्क, सिस्ट, आयोड।

ग्रन्थि अर्बुद--(Adenoids) ऐडेनॉयड्स--ऐग्रैफिस, कैल्के आयोड।

चर्बी की वृद्धि (Adiposity) ऐडिपॉसिटी--फाइटोलैक्का, फ्यूकस।

दौर्बल्य, कमजोरी, जीवनशक्तिक्षीणता (Adynamia)—फॉस एसिड, चायना।

प्रसवान्त वेदना (After-pains)—कॉलो, मैग फॉस।

स्तनों में दूध का अभाव (Agalactia)—लैक्टूसा, ऐग्नस, अर्टिका।

जड़ैया (Ague)—नैट्र म्यूर, चाइना, सीड्रन।

पेशाब में अलब्यूमिन की अधिकता (Albuminuria)—आर्स, कैल्मिया, मर्क कॉर।

अधिक शराब पीने की आदत और उससे उत्पन्न हुए रोग–मदात्यय (Alcoholism)—क्वेर्कस, एवेना, कैप्सि, नक्स।

बाल झड़ना (Alopecia)—फ्लोरि एसिड, पिक्स लिक्वि।

मासिक धर्म का अप्राकृतिक रुक जाना (Amenorrhoea)—पल्से, ग्रैफा, नैट्र म्यूर।

सर्वांग शोथ (Anasarca)—ऑक्सिडेण्ड्र, इलाटीरि, लियाट्रिस।

रक्तहीनता (Anaemia)—फेरम सिट, चायना, नैट्र म्यूर, कैल्के फॉस।

घातक रक्तहीनता (Anaemia-Pernicious)–आर्स, टी. एन. टी।

धमनी-अर्बुद (Aneurism)—बैराइटा, लाइकोप।

हृदय-शूल (Angina pectoris)—लैट्रांडे, कैक्ट, ग्लोनो, ब्रायो, हेमैटॉक्स, ऑक्जै एसिड, स्पाइजे।

धमनी-अर्बुद (रक्तार्बुद)—(Angioma)—एब्रोटै।

जोड़ों की अकड़न (Ankylostomiasis)– कार्बु मैरि।

अरुचि (Anorexia)—नक्स वॉ, हाइड्रैस्टि, चायना।

विषव्रण कारबंकल (Anthrax)—एचिनेसिया।

वृहद्धमनी का प्रदाह (Aortitis)—ऑरम, आर्स।

अस्थिमय गह्वरीय विकार (Antrum)—हीपर, नाइट्रि एसिड, कैली बाइ, इयुफोर्बि, ऐमिगडेल।

वाक्-रोध (Aphasia)—बोथ्रोप्स, स्ट्रैमो, कैली ब्रोमे।

स्वर-लोप, स्वर-नाश, स्वर-भंग (Aphonia)—एलुमेन, आर्जे मेट, नाइट्रि एसिड, कॉस्टि, ऑक्जैलिक एसिड, स्पॉन्जि, ऑरम।

मुँह के छाले (Aphthae)—इथूजा, बोरैक्स, मर्क, नाइट्रि एसिड, कैली म्यूर, हाइड्रै म्यूर।

संन्यास रोग (Apoplexy)—ओपि, फॉस, आर्न, बेलाडो।

उपान्त्र-प्रदाह (Appendicitis)—एचिनेसिया, बेलाडो, लैके, आइरिस टेनाक्स।

धमनी-तनाव का कम होना (Arterial tension lowered)—जेल्से ।

धमनी-तनाव का बढ़ना (Arterial tension raised)—वेरेट्र विरि, विस्कम ।

धमनी प्राचीर का कड़ा पड़ना (Arteriosclerosis)—ऐमो आयोड, प्लम्ब आयोड, पोलिगो एविक्यू, बैराइटा, ग्लोनो २ x, ऑरम, काडु, सुम्बुल ।

सन्धि-प्रदाह (Arthritis)—आरब्यूटस, सल्फर, ब्रायो, इलाटोरि ।

गोल और लम्बे कृमि, केंचुआ (Ascarides)—ऐब्रोटै, सैबाडि, सिना, स्पाइजे ।

जलोदर (Ascites)—ऐसेटि एसिड, ऐपोसाइ, हेलेबो, एपिस, आर्स, डिजि ।

दुर्बल, क्षीण या वेदनादायक दृष्टि (Asthenopia)—नैट्र म्यूर, रूटा, क्रोक, सेनेगा ।

दमा रोग (Asthma)—इपिका, आर्स, इयुकैलिप्ट, ऐड्रीनैलीन, नैट्र सल्फ ।

हृदय सम्बन्धी दमा रोग — (Cardiac Asthma)—कॉनवै, आइबेरिस, आर्स आयोड ।

अकेन्द्रित, वक्र (निकट) दृष्टि Astigmatism (Myopic)—लिलियम ।

क्षीणता रोग, सिकुड़ना, (Atrophy)—ओलि जेको, आयोड, आर्स ।

हृत्कोशीय पेशी कम्प (Auricular Fibrillation)—डिजिटै, क्विनाइडिन ।

स्वयं विषाक्रमण (Autointoxication)—स्कैटॉल, इण्डोल, सल्फर ।

मूत्र में यूरिया (मूत्राम्ल) अधिक आना (Azoturia)—कॉस्टि, सेना ।

पीठ-पीड़ा (Backache)—ऑक्जै ऐसि, इस्कियु, रस, पल्से, कैली कार्ब, सिमिसि, नक्स, ऐगिट टा, वेरियोलाइ ।

लिंगाग्र चर्म का प्रदाह (Balonitis)—मर्क ।

दूषित छूरा से उत्पन्न दाढ़ी का खाज (Barber's Itch)—सल्फर, आयोड, थूजा ।

बिस्तर-घाव (Bed-sores)—फ्लोरि ऐसि, आर्न, सलफ्यूरि ऐसि ।

बेल्स पक्षाघात (Bell's Paralysis)—ऐमो फॉस, कॉस्टि, जिंक पिक ।

बेरी-बेरी (Beri-Beri)—इलाटीरि, रस, आर्स ।

बिल्हैर्जिया नामी बैक्टेरिया संक्रमण का एक रोग विशेष (Bilharziasis)—ऐगिट टा ।

पित्त-विकार (Biliousness)—यूका, इयूओनाइम, ब्रायो, पोडो, मर्क, सल्फर, नक्स, निक्टेन्थस चेलिडो ।

मूत्राशय की उत्तेजना—इयुपेटो पर्प्यु, कोपेवा, फेरम, नक्स, एपिस, सारसा।

मूत्राशय से रक्त-प्रवाह—ऐमिग्डै, हैमे, नाइट्रि एसिड।

नेत्रच्छद-प्रदाह, चक्षुपट-प्रदाह (Blepharitis)—पल्से, ग्रैफा, मर्क।

नेत्रच्छदीय आक्षेप, पलकों में झटकन (Blepharospasm)—ऐगैरि, फाइजॉस्टि।

रक्तचाप अधिक—बैराइटा म्यूर, ग्लोनो, ऑरम, विस्कम।

फुड़ियाँ—बेलिस, कैल्के पिक, फेरम आयोड, ओलि, माइर, बेल, साइलि, हीपर, इक्थियॉल।

हड्डियों के रोग (Bone Affection)—ऑरम, कैल्के फॉस, फ्लोरि एसिड, रूटा, मेजे, साइलि, सिम्फाइट।

उदर-वायु की अधिक सञ्चयता (Borborygmi)—हैमेटॉक्सिल।

हृदय-गति मन्द (Bradycardia)—मन्द नाड़ी—एवीज नाइग्रा, डिजिटै, कैल्मिया, ऐपोसाइ कैने।

मस्तिष्क का मुलायम पड़ना—(Brain-Softening)—सेलैमेड, फॉस, बैराइटा।

मस्तिष्क-शिथिलता (Brain fag)—एन्हैलोनि, एनाका, जिंक, फॉस, साइलि।

ब्राइट्-रोग—आर्स, फॉस एसिड, एपिस-मर्क कॉर, टेरेबि, कैली सिट, नैट्र म्यूर।

दुर्गन्धित पसीना निकलना (Bromidrosis)—साइलि, कैल्के, ब्यूटीरिक एसिड।

ब्रोंकाइटिस (Bronchitis)—ऐकोन, ब्रायो, फॉस, टार्ट एमे, फेरम फॉस, सैंग्वि, पिलोकार्प।

ब्रोंकाइटिस (जीर्ण)—ऐमोनियेकम, आर्स, सेनेगा, सल्फ, ऐण्टि आयोड।

ब्रोंको-न्यूमोनिया—कैली बाइ, टार्ट एमे, ट्यूबर, फॉस, स्क्विला।

वायुनलिका समूह का स्राव (Bronchorrhoea)—ऐमोनियेकम, इयुकैलिप, बाल्सै पेरू, स्टैन, बैसलि।

गुल्मीय पक्षाघात (Bulbar Paralysis)—गुवाको, प्लम्ब, ओड्डलिन।

बाघी (Bubo)—मर्क, नाइट्रि एसिड, कार्बो ऐनि, फाइटो।

जल जाना (Burns)—कैंथे, अर्टिका, पिक एसिड।

घट्ठे पड़ना—(Bursae)—बेन्जो एसिड, रूटा, साइलि।

पित्त-पथरी रोग (Calculi Biliary)—चाइना, बर्बे, चेलि।

पथरी गुर्दा सम्बन्धी (Calculi Renal)—बर्बे, पैरीरा, सारसा।

कर्कट (मूत्राशयिक) Cancer (Bladder) - टैराक्से।

कर्कट (ओष्ठ के बाहरी अंश लाल एवं भीतरी झिल्ली का) Cancer (Epithelial)—ऐसेटि एसिड।

कर्कट (पाकाशयिक) Cancer (Gastric)—जिरैनियम।

कर्कट (मलाशयिक) Cancer (Rectal)—रूटा, हाइड्रै, कैली सायेने।

कर्कट (जिह्वा) Cancer (Tongue)—फ्लूलिगो।

कर्कट—सेडरविट, आर्स, हाइड्रै, ऐपिस फ्लोर, गैलियम।

कर्कट (स्तन) Cancer (Mammae)—ऐस्टेरि, कोनि, प्लम्ब आयोड, कार्सिनोसिन।

कर्कट दर्द—एयुफॉर्बि।

मुखगह्वरीय गलित, दुर्गन्धित घाव (Cancrum Oris)—सीकेल, क्रियोजोट, आर्स, बैप्टिसि।

रक्तनलिका काठिन्य तथा बन्द होना (Capillary Stasis)—कैम्फ, एचिने।

विष-व्रण (Carbuncle) - ऐन्थ्रैक्सि, लीडम, टैरे क्यूबे, आर्स, लैके, साइलि।

हृद्शोथ (Cardiac Dropsy)—ऐडोनिस, डिजिटै।

हृद् सम्बन्धी साँस-कष्ट (Cardiac Dyspnoea)—ऐकोन, फेरॉफस, ऐस्पि-डॉसपर्मा।

हृदय-शूल (Cardialgia)—फेर टार्ट।

हृदय-पटीय-आक्षेप (Cardis Vascular Spasm)—एमिल्न; स्पाइजे।

अस्थिक्षत Caries (सड़न)—ऑरम, एसाफीटि, साइलि, फॉस।

मोटरकार की सवारी का रोग विशेष (Car Sickness)—कॉकुलस।

विष-व्रण, मूत्रमार्गीय—थूजा।

आंशिक अथवा पूर्ण शारीरिक कड़ापन (Catalepsy)—कुरारी, हाइड्रोसि एसिड, कैना इण्डि।

मोतियाबिन्द (Cataract)—सिनेरेरिया, फॉस, प्लैटैनस, क्वैसिया, नेफ्थे, कैल्के फ्लोर।

श्लैष्मिक जुकाम (जीर्ण)—Catarrh (Chronic)—ऐनेमॉप्सिस, नेट्र सल्फ, ऑरम, हयुकैलि, कैली बाइ, पल्से, सैंग्वि नाइट्रि, नेट्र कार्ब।

कोषिक-तन्तु-प्रदाह (Cellulitis)—एपिस, रस, वेस्पा।

मस्तिष्क-मेरुमज्जा का प्रदाह (Cerebro-spinal Meningitis)—साइक्यूटा, जिंक सायेनेटम, क्यूप्रम ऐसेटि, हेलेबो ।

उपदंशीय क्षत (Chancre)—मर्क बिन आयोड, मर्क प्रोटो, मर्क सॉल, कैली आयोड ।

स्राव दबना, रुकना—क्यूप्रम, सोरिनम ।

दमा जो हृद्विकार से आये (Cheyne-Stokes Respiration)—ग्रण्डै, मॉर्फिन, पार्थेनि ।

छोटी चेचक (Chicken-pox)—टार्ट ऐमे, रस, कैली म्यूर ।

बेवाई फटना (Chilblains)—ऐब्रोटै, ऐगैरि; टैमस, प्लैण्टैगो ।

चर्म पर पीलापन लिये भूरे रंग के चकत्ते या दाग (Chloasma)—सीपि, पॉलिनिया ।

हरित्पाण्डु रोग—(Chlorosis)—आर्स, फेरम, हेलोनि, क्यूप्रम, पल्से ।

पित्त पथरी निर्माण, प्रतिषेध कर्मा (Chololithiasis)—चियोनैन्थ, हाइड्रैस्टि ।

हैजा (Cholera)—कैम्फो, वेरैट्र, आर्स, क्युप्रम ।

हैजा (शिशु) (Cholera Infantum)—इथूजा, क्युफिया, कैल्के फॉज ।

पीड़ामय, लिंगोत्थान (Chordee)—कैन्थे, सैलिक्स, योहिम्बिनम, ल्यूपुल, ऐगैवे ।

ताण्डव रोग (Chorea)—ऐब्सिन्थि, ऐगैरि, हिपोमे, माइगे, टैनैसे, टैरेण्टू हिस्पै, इग्नै, जिंक, सिमिसि क्यू ।

घाव के निशान (Cicatrices)—थियोसिन, ग्रैफा ।

पलकों का स्नायुशूल (Ciliary Neuralgia)—प्रूनस, स्पाइजे, सैंगोनिन, सिनाबे ।

जिगर का कड़ा पड़ना (Cirrhosis of liver)—नैस्टर्ट, नैट्र क्लो, मर्क ।

वयःसन्धिकालीन मासिक-स्राव का फलकना (Climacteric Flushings)—ऐमाइल नाइट्रो, लैके, सैंग्वि, सिमिसि, सीपिया ।

गुदास्थि पीड़ा (Coccygodynia)—कॉस्ट, साइलि ।

ठण्डे घाव (Cold Sores)—कैम्फो, डल्का ।

उदर-शूल (Colic)—कैमो, मैग फॉस, डायस्को, प्लम्बम ।

शूल, गुर्दा-सम्बन्धी (Colic renal)—एरिंजि, पैरीरा ।

वृहदान्त्र का प्रदाह (Colitis)—मर्क डल्सि, ऐलो, एलियम सैटि ।

पतनावस्था (Collapse)—कैम्फो, मॉर्फि, वेरेट्र, आर्स ।

रंगों से अन्धापन (Colour blindness)—बेन्जिन, कार्बोनि, सलफ्यू ।

अचेतनता (Coma)—ओपियम, पिलोकार्प, बेल ।

तिल निकलना (Comedones)—ऐब्रोटै, इथिओप्स, बैराइटा ।

श्लैष्मिक वटियाँ (Condylomata)—सिनाबे, नैट्र सल्फ, नाइट्रि एसिड, थूजा ।

नेत्रश्वेत पटल प्रदाह, आँख आना (Conjunctivitis)—एकोन, पल्से, इयुफ्रै, गुवारिया ।

कब्ज (Constipation)—ओपि, हाइड्रै, आइरिस, वेरेट्र, मैग म्यूर, नक्स, पैराफि, लैक डिफ्लो, टैनिक एसि, मैग फॉस, सल्फर, ऐलुमिना, वेरैट्रम ।

कब्ज, बच्चों में (Constipation in Children)—इस्क्यु, कोलिन्सो, ब्रायो, एलुमिना, पैराफि, सोरि ।

विक्षेप (Convulsions)—हाइड्रोसि ऐसि, लैथर्न, क्युप्रम, साइक्यूटा, बेल, इनैन्थि ।

मांसांकुर, घट्टे (Corns)—ऐण्टि क्रू, ग्रैफा, साइलि ।

जुकाम (Coryza)—सेपा, पेन्थोर, नैट्र म्यूर, क्विलाया, जेल्से, इयुफ्रैसि, एकोन, आर्स, कैली हाइड्रि ।

खाँसी—(सूखी)—ऐलुमिना, बेल, हायोसि, लॉरो, कोनि, मेन्थारियुमेक्स, स्पॉन्जि, स्टिक्टा ।

खाँसी (स्वरयंत्रीय)—नाइट्रि ऐसि, ब्रोमि, कैप्सि, कॉस्टि, लैके ।

खाँसी (आवाज फटी)—ब्रायो, हीपर, फॉस, सैम्बू, स्पॉन्जि, वरबैस्क ।

खाँसी (ढीला)—कैली सल्फ, टार्ट एमेटि, इपिका, मर्क, पल्से, स्क्विला, स्टैनम, कॉक्कस, कैक्ट ।

खाँसी (क्षय रोगिक)—ऐलियम सैटि, क्रोटैल, फेलैण्ड्रि, नाजा ।

खाँसी (स्नायविक)—एम्ब्रा, एग्नै, हायोसि, कैली ब्रोमे ।

खाँसी (आक्षेपिक)—कोरैलि, ड्रोसेरा, मेफाइटिस, क्यूप्रम, मैग फॉस, बेल, इपिका, कार्बो वे, कैक्ट ।

होंठ चिटकना—काण्डुरं, ग्रैफा, नेट्र म्यूर ।

काली खाँसी—ऐकोन, हीपर, काओलिन, स्पॉन्जि, ब्रोमे, आयोड, कैली बाइ, सैंग्वि ।

नील-रोग (Cyanosis)—टार्ट एमे, कार्बो, क्यूप्रम, लैके, लॉरोसे, ओपियम ।

मूत्राशय प्रदाह (Cystitis)—एपिजिया, सॉरूर, पॉपूल, कैन्थे, चिमाफि, टैरेबि ।

थैलियाँ पड़ना (Cysts)—आयोड, एपिस ।

रूसी, भूसी छूटना (Dandruff)—कैली सल्फ, आर्स, लाइको, बेडियागा ।

दिन में अन्धापन (Day-blindness)—बोथ्रोप्स ।

बहरापन—कैलेण्डु, पल्से, हाइड्रै, ग्रेफा ।

कमजोरी—चायना, फॉस एसि, आर्स, कुरारी; कैली फॉस, ऐल्फा ।

कमजोरी (गठिया के बाद)—साइप्रिपी ।

सन्निपात (Delirium)—बेल, हायोसि, ऐगैरि ।

दाँत निकलना—बेल, कैल्के फॉस, टेरेबि, कैमो ।

दाँत निकलना (लार टपकना)—ट्रिफोलियम, मर्क ।

मधुमेह, मूत्रमेह (Diabetes)—आर्स ब्रोमे, कोका, कोडी, हेलेबो, सिनीजि, फ्लोरिड, युरैनि नाइट्रि, फॉस्फो, ऑरम ।

वक्षोदर-मध्यस्थ पेशी का प्रदाह (Diaphragmitis)—कैक्ट, नक्स ।

दस्त होना—कैम्फो, वेरेट्र, इपिका, चाइना, पल्से, फॉस एसिड, मर्क, मैन-जैनिटा, नैट्रम सल्फ, सल्फर, पोडो ।

दस्त (जीर्ण)—लियाट्रिस, चैपैरो, क्रोटो, नैट्रम सल्फ, सल्फर, कैल्के ।

दस्त (दाँत निकलने के समय)—ऐरण्डो, कैमो, कैल्के फॉस ।

झिल्ली-प्रदाह, डिफ्थेरिया—लैके, मर्क साइने, मर्क बिन-आयोड; फाइटो, कार्बो एसिड, एपिस, किन्का, नाइट्रि एसिड, एकिनेसिया ।

झिल्ली प्रदाह, नासिका सम्बन्धी—ऐमो कॉस्टि, कैली बाइ ।

द्विदृष्टि (Diplopia)—बेल, जेल्से, ऑलियेण्ड, हायोसि ।

पिपासोन्माद (Dipsomania)—कैप्सिकम ।

अवच्छेदन घाव (Dissecting Wounds)—क्रोटे, आर्स, एकिने ।

शोथ (Dropsy)—एपिस, एपोसाइ, कैने, कैन्थिका, सैम्बू, कैने ऑक्सिडेन, हेलेबो, डिजि, आर्स ।

ड्यू प्युइट्रेन्स-संकोचन (Dupuytren's Contraction)—जेल्से, सिमोसि ।

पेचिस—ऐस्पलै, ड्यूल्को, ऐलो, इपिका, मर्क कॉरो, ट्रॉम्बि, कोलो; कॉल्चि, आर्न, कैन्थे ।

कष्टदायक मासिक स्राव (Dysmenorrhoea)—एपियोल, पल्से, कालो-फाइ, वाइबर्न, मैग फॉस, ऐक्विलेजिया ।

कष्टदायक मासिक-स्राव (झिल्लीदार)—कैल्के ऐसेटि, बोरैक्स ।

अनपच रोग, मन्दाग्नि—नक्स, हाइड्रै, ग्रैफाइ, पेट्रोलि; ऐनैका, पल्से, लाइकोपस, होमेरस, कार्बो।

अनपच (अम्लयुक्त)—रोबिनिया।

अनपच (कमजोरी लाने वाला)—हाइड्रैस्टिस।

अनपच (उफानीय)—सैलसिलिक एसिड।

,, (स्नायविक)—इग्नै, एनैका।

निगलने में कष्ट (Dysphagia)—बेल, लैके, मर्क, कैजुपुट, कुरारी, एपिलोबियम।

साँस लेने में कष्ट (Dyspnoea)—एपिस, आर्स, इपिका, क्वेब्रैको, स्पॉन्जि।

मूत्रकृच्छ्र (Dysuria)—ट्रिटिक, फेबियाना, कैन्थे, एपिस, सारसा, कैम्फोरा, बेल।

कान दर्द—बेल, कैमो, मुलीन ऑयल।

कान (स्राव)—कैली म्यूर।

,, (अति दुर्गन्धित)—इलैप्स।

काले दाग (Ecchymosis)—इथूजा, आर्न, रस, सलफ्यू एसिड।

अकौता (Eczema)—आरब्यूटस, क्रिअै, डल्का, रस, सल्फर, आर्स, बोविस्टा, नैट्र आर्स, ऐनैका, ओलियैण्ड, पेट्रोलि, सोरि, ऐल्नस, ग्रैफा।

फीलपाँव (Elephantiasis)—इलेइस, आर्स, हाइड्रोकोटा, लाइको।

वायुस्फीति (Emphysema)—ऐमो कार्ब, एण्टि, आर्स, लोबेलिया।

फुफ्फुसावरण में पीब पैदा हो जाना (Empyemia)—आर्न।

आंत्र-प्रदाह (तीव्र) (Enteritis)—सिन्को, क्रोटोन, पोडो।

,, (जीर्ण)—आर्स, सल्फर, आर्जे नाइट्रि।

अनैच्छिक, अनजाने में मूत्र-स्राव (Enuresis)—बेन्जो एसिड, कॉस्टि, सल्फर, रस ऐरो, इक्विसे, ल्यूपुल, युरेन, फाइसैलिस, बेल।

शुक्र-रज्जु-क्षय (Epididymitis)—सैबाल, पल्से।

मिरगी रोग (Epilepsy)—एब्सिन्थि, आर्टीमी, साले फैरोलि, फेर सायेने; क्यूप्रम, हाइड्रोसि एसिड, साइलि, कैल्के आर्स, इनैथी।

नकसीर (Epistaxis)—एम्ब्रा, नैट्र नाइट्रि, आर्न, इपिका, ब्रायो, हैमे, फेरम फॉस, नाइट्रि ऐसि, फॉस्फो।

चर्म-कैंसर (Epithelioma)—जैकिरि, आर्स, थूजा, क्रोमि एसि।

प्रेमोन्माद (Erotomania)—ओरिगेनम, फॉस, पिक एसि, स्ट्रैमो, प्लैटि।

विसर्प रोग (Erysipelas)—ऐनेन्थे, बेल, एपिस, कैन्थे, ग्रैफा, रस; वेरेट्र विरि।

अयनिका (Erythema)—बेल, मेजे, एण्टिपाइरिन।

,, (गुल्मीय) (Nedosum)—एपिस, रस।

कम्बुकर्णी नली का बहरापन (Eustachian Deafness)—कैली सल्फ, रोरा, हाइड्रै।

वहि:निःसृत चक्षुगोलक तथा हृदस्पन्दन के साथ गलगण्ड (Exophthalmic Goitre)—लाइकोपस, पिलोका।

अस्थि-वृद्धि (Exostosis)—हेक्ला, कैल्के फ्लोर।

प्लूरिसी पानी वाली (Exudative Pleurisy)—एब्रोटैन।

आँखें (प्रदाह)—ऐकोन, इयुफ्रैसि, रूटा।

आँखें (चक्षु-पट का अलग हो जाना)—नैफ्थेलिन।

ज्वर—ऐकोन, एग्रॉसटिस, स्पिरैन्थ, जेल्से, बैप्टि, वेरेट्र विरि, फेर फॉस।

सूत्रमय अर्बुद (Fibroma)—ट्रिलियम, अर्गट, लैपिस।

पेट का सौत्रिक फोड़ा विशेष (Fibroids)—कैल्के आयोड।

नासूर (Fissures)—लीडम, ग्रैफा, पेट्रोलि।

भगन्दर (Fistula)—फ्लोरि एसिड, नाइट्रि एसिड, साइलि।

बादी, अफरा (Flatulence)—कार्बो वेज, ऐसाफि, नक्स मॉ, मॉस्क, लाइकोप, चाइना, कार्बो एसिड, कैजूपू, आर्जे नाइट्रि।

कंटक-गुटी रोग (Framboesia)—जैट्रोफा, मर्क नाइट्रो।

धब्बे, चकत्ते पड़ना (Freckles)—बैडियागा, सीपिया।

अत्यधिक दुग्ध-स्राव (Gallactorrhoea)—सैल्विया, कैल्के।

पित्त पथरी (Gall-stones)—चायना, कैल्के, बर्बे, चियोनैन्थ, कैल्कुलस ८-१०x विचूर्ण।

कोषार्बुद (Ganglion)—रूटा, बेन्जो एसिड।

विगलन, अस्थिक्षय (Gangrene)—इयुफोर्बि, लैके, सीकेलि, कार्बो।

पेट का दर्द (Gastralgia)—बिस्मथ, कार्बो, कॉकुलस, नक्स, क्यूप्रम आर्स, पेट्रोलि, फॉस्फो।

पेट दर्द बार-बार होना (Gastralgia-Recurring)—ग्रैफा।

आमाशय घाव (Gastric ulcer)—जिरेनि, आर्जे नाइट्रि, आर्स, ऐटोपि, कैली बाइ, युरैनि नाइट्रि।

आमाशय-प्रदाह (Gastritis)—आर्स, नक्स, आक्जै एसिड, फॉस, हाइड्रै।

आमाशय-आंत्र-प्रदाह (Gastro-enteritis)—आर्जे नाइ, आर्स।

संक्रामक अश्व रोग (Glanders)—हिपोजी, मर्क।

ग्रन्थि-सूजन (Glands swollen)—बेल, मर्क आयोड, फाइटो, कैली हाइड्रि, ऐलनस।

जीर्ण सुजाक (Gleet)—थूजा, सीपिया, सैण्टैल, पल्से, एब्रीज कैना।

जिह्वा-प्रदाह (Glossitis)—लैके, म्यूरि एसिड, एपिस।

गुल्म वायु (Globus hysteria)—इग्नै, ऐसाफि।

सुजाक (Gonorrhoea)—कैना सैटाई, जेल्से, ओलि सैण्टे, टुसिलैगो, पेट्रोसे, मर्क।

गठिया छोटे जोड़ों का वात (Gout)—ऐमो बेन्जो, लाइकोप, अर्टिका, फॉर्मिका, कॉल्चि, लीडम, लिथियम, फ्रैंक्सिनस।

गठिया, स्नान विकल्पशील Gout (Retrocedent)—कैजुपु।

शर्कराश्मरी (Gravel)—हाइड्रैन्जि, सोलिडैगो, लाइको, पोडि, बर्बे।

उन्नतिशील पीड़ा (Growing Pains)—फॉस्फो एसिड, गुवाइकम, कैल्के फॉस।

मसूढ़ों का फूलना (Gumboils)—बेल, मर्क, हेक्ला, फॉस्फो।

खून की कै (Haematemesis)—इपिका, हैमे, फॉस, मिलेफो।

खून का पेशाब (Haematuria)—कैन्थे, हैमे, टेरेबिं, नाइट्रि ऐसि।

रक्तरंजक पेशाब का होना (Haemoglobinuria)—पिक ऐसि, फॉस।

रक्तस्राव की अस्वाभाविक प्रवणता (Haemophilia)—नैट्र, साइलि, फॉस।

रक्त-थूकना (Haemoptysis)—ऐकालि, फेरम फॉस, इपिका, मिलेफो, अर्गट, एरिजेरॉ, जिरैनि, हाइड्रै म्यूर, ऐलियम सैटि।

रक्त-स्राव (Haemorrhages)—ऐड्रीनैलीन, हाइड्रै, इपिका, चायना, सैबाइना, हैमे, मिलेफो, क्रोटैल, ट्रिलि।

रक्तस्राव का जीर्ण परिणाम—स्ट्रॉन्शिया।

बवासीर खूनी (Haemorrhoids)—नेगण्डो, स्क्रोफुले, ऐलो, म्यूरि एसिड, हैमे, फ्लोरि एसिड, नक्स, एस्क्यु, कोलिन्सो।

दृष्टि-भ्रम (Hallucinations)—ऐण्टिपाइरि, स्ट्रैमो, बेल।

प्रकाश चक्र (Halophagia)—नाइट्रि स्पि डल्सि, आर्स, फास्फो।

फ्लू (Hey-Fever)—ऐम्ब्रो, ऐरालि, क्यूप्रम ऐसेटि, नैफ्थै, ऐरण्डो, रोसा, सैबाडि, लिनम, फियूम प्रैटेन्स।

सिर-दर्द (रक्तहीनता)--आर्जना, फेरम फॉस।

,, (फटनेवाला)--अर्जिना, ग्लोनोइन।

,, (रक्ताधिक्य)--ऐकोन, बेल, ग्लोनो, लैके, नेट्रमलेको, जेल्से।

,, (स्नायविक)--सिमिसि, इग्नै, कॉफि, गुवारि, कैनेबि, जिंक, निकोल।

,, (पुराना)--आइरिस, सैंग्वि, नक्स, चियोनैन्थ।

हृदय-रोग--ऐकोन, कैक्ट, नाजा, डिजि, क्रैटेग, लाइकोपो, स्पाइजे, स्पॉन्जि, ऐडोनि, कॉन्वैले, फेसिओल।

गला जलन--जिरैनि, कार्बो।

हार्ट फेल होना--(Heart Failure)--स्ट्रिक्नि, सल्फ, ३० --३ ग्रेन, स्पार्टीन सल्फ ३ ग्रेन, ऐगैरिसिन ३० ग्रेन, इंजेक्शन द्वारा अत्यन्तावश्यकता में।

क्षय-ज्वर (Hectic Fever)--बैप्टि, आर्स, निनि आर्स।

अर्द्ध कपाली पीड़ा (Hemicrania)--ओलि ऐने, ओनोस्मो, सीपि, स्टैन, कॉफि।

अर्द्धांग (Hemiplegia)--ओलियैण्ड, कॉकुलस, बोथ्रोप्स।

अर्द्ध-दृष्टि (लम्बरूप) Hemopia (Vertical)--टिटैनि।

जिगर-प्रदाह (Hepatitis)--ब्रायो, मर्क, लैके, नेट्र सल्फ।

भैंसिया दाद चक्राकार Herpes (Circinatus)--टेल्यूरि।

भैंसिया दाद (ओष्ठीय) Herpes (Lebialis)--कैप्सि, नेट्र म्यूर, रस।

भैंसिया दाद (लिंगाग्र भाग) Herpes (Preputialis)--हीपर, नाइट्रि एसिड।

भैंसिया दाद (योनि-अग्रभाग) Herpes (Pudendi) --कैलेडि, नैट्र म्यूर, नाइट्रि एसिड।

भैंसिया दाद मोटा--Herpes (Zoster) --कार्बो ऑक्सिजेनि, मेन्था, रैनन बल, रस।

हिचकी (Hiccough)--जिन्सेंग, रैटैनहिया, नक्स, सल्फ्यू एसिड।

स्वरभंग--ऐकोन, ब्रायो, ड्रोसे, कार्बो, फॉस, कॉस्टि।

हॉजकिन्स रोग--आर्स आयोड, फॉस, आयोड।

परिजनों में लौटने की उत्सुकता--कैप्सि, इग्नै।

आंकुशी-कृमि--चेनोपोडि, इर्मोल।

घुटनों की सूजन (Housemaid's knee)--स्टिक्टा, स्लैग।

दिमाग के पर्दों में पानी आना (Hydrocephalus)--हेलेबो, आयोडो, फॉ जिंक।

अण्डकोष वृद्धि (Hydrocele)—रोडो, ग्रैफा, पल्से ।

जलातंक रोग (Hydrophobia)—जैन्थियम, ऐनागेलिस, कैन्थे ।

छाती में पानी आना (Hydrothorax)—लेक्टू, रैनन बल, कैली कार्ब, मर्क सल्फ, फ्लोरि एसिड, ऐडीनिस ।

पित्ताधिक्य (Hyperchlorhydria)—चिनि-आर्स, रोबि, ओरेक्सीन, आर्जे नाइट्रि, ऐट्रोपि, ऐनाका, आइरिस ।

हिस्टीरिया—ऐक्विली, कैस्टर, मॉस्क, पीथोस, प्लैटि, सुम्बु, वैलेरि, इग्नै, ऐसाफी ।

मूर्च्छायुक्त संधियाँ—कोटाइलेडन ।

मीनत्वक्किका (Ichthyosis)—आर्स आयोड, सिफिलि ।

चर्मदल (Impetigo)—आर्स, टार्ट एमे, मैजे ।

नपुंसकता—ऐग्नस, कैलैड, ओनोस्मो, फॉस्फो एसिड, कोनि, लाइको, सेलेनि, योहिम्बिन ।

सख्ती (Indurations)—कार्बो ऐनि, प्लम्ब आयोड, ऐलुमेन ।

प्रदाह—ऐकोन, बेल, फेरम फॉस, सल्फर ।

इन्फ्लुएंजा—इरिन्जि; बैप्टि, इयुकैलिप, लोबे सेरू, जेल्से, रस, इयुपेटो पर्फ, ब्रायो, आर्स ।

अनिद्रा—कॉफिया, साइप्रिपी, डैफ्ने इण्डि, इग्नै, पैसिफ्लो, ऐक्विली ।

,, मदात्यय—सुम्बु ।

सविराम ज्वर—हेलियान्थ, चाइना, आर्स, इपिका, नैट्र म्यूर, कैप्सि, टेला ऐरानिया ।

उपतारा प्रदाह (Iritis)—बेल; मर्क, क्लिमै, सिफिलि, डियुबोईसिया, सार्को-लैक्टि एसिड ।

कामला रोग (Jaundice)—चियोनैन्थस, कोलेस्टे, ब्रायो, चाइना, माइरिका, पोडो, मर्क, चेलिडो, कैली पिक, नैट्र फॉस ।

कामला रोग (शिशु का)—ल्यूपु, कैमो ।

कामला रोग (विषैला दूषित)—ट्रोटाइल ।

कोर्म अर्बुद (Keloid)—फ्लोरि एसिड ।

गुर्दों का प्रदाह, रक्ताधिक्य—बेल, टेरेबि, कैन्थे ।

आँखें बन्द न कर सकें (Lagophthalimus)—फाइजॉस्टि ।

स्वरयन्त्र का तीव्र प्रदाह (Laryngitis Acute)—ऐकोन, हीपर, स्पॉन्जिया, फॉस, कॉस्टि, ऐरम ।

शय्यातंक (Lectophobia)—कैना सैटाइ ।

कुष्ठ, (Leprosy)—इलेइस, हाइड्रोकोटा, क्रोटैल, पाइरारा ।

रक्त में श्वेत कणों की अधिकता (Leucocythemia)—आर्स, पिक एसिड, थूजा ।

श्वेत कुष्ठ (Leucoderma)—आर्स सल्फ रूब ।

,, (जीर्ण)—ड्रोसे, सेलेनि, मैंगे, आर्जेण्ट ।

प्रदर (Leucorrhoea)—ऐलुमिना, कैल्के, हाइड्रै, सल्फर, पल्से, क्रियोजो, सीपिया, हाइड्रोकोटा, युकैलिप, थूजा ।

प्रदर (छोटी बालिकाओं में)—कैल्के, क्यूबेबा, हाइपेरि, ऐस्पेरूला ।

अश्मरी का निर्माण (Lithiasis)—ऐस्पैरैग, लाइको, सीपिया ।

जिगर (रक्ताधिक्य)—बर्बे, ब्रायो, कार्डु, चेलि, लैप्टै, मर्क, मैग म्यूर, पोडो, सल्फर ।

चेहरे के धब्बे—नैट्र, हाइपो सल्फ ।

उरस्तम्भ (Locomotor Ataxia)—जिंक फॉस, प्लम्बम, आर्जें नाइट्रि, ऑक्जै एसिड, क्रोमियम सल्फ, ऐरैगैलस ।

कटिवात (Lumbago)—गुआइक, हायोसि, रस, टार्ट ऐमे, मैक्रोटि, फाइटोलक्का, कैली ऑक्जैलि ।

फुफ्फुस, रक्ताधिक्य—ऐकोन, वेरैट्र वि, फेरम फॉस ।

,, शोथ—ऐमो का, टार्ट एमे, आर्स ।

चर्म-टीबी (Lupus)—ऐमो आर्स, आर्स, हाइड्रोकोटा, थूजा ।

शोकग्रस्त, अत्यधिक मानसिक अवसाद (Lypothemia)—इग्नै, नक्स मॉ ।

मलेरिया—ऐल्सटोनिया, ऐमोपिक, कोर्नस ।

पोषण-विकार—ऐल्फा, कैल्के फॉस ।

उन्माद (Mania)—बेल, हायोसि, स्ट्रैमो, लैके ।

सूखा रोग (Marasmus)—ऐब्रोटै, आयोड, नैट्र म्यूर, आर्स आयोड ।

स्तन-प्रदाह (Mastitis)—बेल, फाइटो, कोनि ।

चुचुकाकार कोष का प्रदाह—कैप्सि, ओनोस्मो, हाइड्रै ।

छोटी माता (Measles)—जेल्से, पल्से, फेरम फॉस, कैली म्यूर ।

अधकपारी (Megrim)—मेनिसपर, कॉफि, सीपिया, स्टेन ।

कान की खराबी से सिर चकराना (Meniere's Disease)—कार्बोनि सल्फ्यू, चेनोपो, नैट्र, सैलिसि ऐसि, साइलि, पिलोका म्यूर ।

मस्तिष्क-प्रदाह (क्षय)— बैसाइलि, क्यूप्रम सायेनै, आयोडोफॉ ।

अतिरजः—चाइना, सैबाइना, क्रोक, कैल्के, प्लैटि, सेडम, टेल्यूरि, सैंग्वि, सोरबा ।

मासिक धर्म (रुक जाना)—लैके, पल्से, ग्रैफा, सैंग्वि ।

„ (देर लगे)—पल्से, कैल्के फॉस, कॉलो, नैट्र म्यूर ।

„ (पीड़ाजनक)—बेल, वाइबर्न ओपू, मैग फॉस ।

„ (अधिक)—कैमो, इपिका, ट्रिलि, बेल, सैबाइना ।

जरायु-प्रदाह, जीर्ण (Metritis Chronic)—ऑरम म्यूर नैट्रो, मेल कम सेल, मर्क ।

रक्त-संचार में बाधा पड़ने से जंघा प्रदाह (Milk-Leg)—ब्यूफो, आर्स, पल्से, रस, हैमे ।

गर्भपात, बार-बार (Miscarriage Repeated)—सिफिलिन, बैसलि ।

„ (सम्भावित)—सैबाइ, वाइबर्न ओपू ।

गर्भावस्था का वमन—ऐमिग्डैल, नक्स, इपिका, क्यूकर्ब, कॉकुलस, एपोमार्फि, ऐलेट्रिस ।

अफीम की आदत छुड़ाना—ऐवेना ।

मॉर्विस रोग—ऑरम म्यूर, थूजा ।

पहाड़ चढ़ने से चक्कर और मिचली आना—कोका ।

कर्णमूल प्रदाह (Mumps)—बेल, मर्क, पिलोकार्प, रस ।

आँखों के आगे काले धब्बे तैरते दिखाई देना (Muscae Volitantes)—कॉस्टि, साइक्लिपीडि, चाइना ।

कुकुरमुत्ता विषाक्रमण (Mushroom Poisoning)—एब्सिन्थ ।

मांसपेशी का वेदना (Myalgia)—ऐकोन, ब्रायो, मैक्रोटि, रस ।

अस्थि मज्जा का प्रदाह (Myelitis)—आर्स, प्लम्ब, आक्जै एसिड, ऑक्जै, कल्का ।

इंफ्लुएञ्जा के बाद हृत्पिण्ड, मांसपेशी की क्षीणता—नक्स, जेल्से ।

हृत्पेशियों का प्रदाह (Myocarditis)—डिजि, आर्स, आयोड, ऑरम म्यूर ।

पेशी प्रदाह (Myositis)—आर्न, मेजे, रस ।

श्लैष्मिक शोथ (Myxoedema)—थाइरॉयडिनम ।

तिल, जन्म दाग (Naevus)—फ्लो एसिड, थूजा ।

गुर्दा-प्रदाह (Nephritis)—मेथिली ब्लू, कोन-लिथ्म, बर्बे, कैली क्लोर, कैन्थे, मर्क कॉर, फॉस, टेरेबि, एपिस, युकैलिप ।

मूत्र-पथरी (Nephrolithiasis)—पैरीरा, सैनेसि ऑरि ।

स्नायुशूल (Neuralgia)—ऐमो वैले, ऐकोन, बेल, स्पाइजे, कैल्मि, आर्स, कोलो सिं, फॉस, जिंक वैले ।

,, कटि औदरीय (Lumbago Abdominal)—ऐरानि ।

,, सामयिक—निकोलम, सलफ्यूरि, आर्स, सीड्रन ।

,, शुक्र-रज्जु (Spermatic cord)—ओलि ऐनि, ऑक्जै ऐसि, क्लिमै ।

स्नायविक दौर्बल्य (Neurasthenia)—ऐनाका, जिंक पिक, स्ट्रिक्नि, फॉस, फाइजॉस्टि ।

,, ,, आमाशयिक (Gastric)—जेण्टियाना, एनैका ।

स्नायु प्रदाह (Neuritis)—स्कैटैन, प्लम्ब, हाइपेरि, थैलियम, आर्स ।

रतौंधी, दिनौंधी (Nictalopia)—बेल, हेलेबो ।

रात्रि पसीना (Night Sweats)—ऐसेटिक एसिड, नेट्र टेल्यूरिक, पॉपूल, ऐगैरिकस, पिक्रोट, सैलिवया, पिलोका ।

स्तन—घुण्डो का घाव स्त्रियों का —कैस्टर, इकि, इयुपेटो ऐरो, रैटानहिया ।

जोड़ों पर अस्थि गुल्मीय वृद्धियाँ—ऐमो फॉस ।

कामोन्माद (Nymphomania) - रोबिनि, कैन्थे, हायोसि, फॉस, म्यूरेक्स ।

मोटापा (Obesity)—ऐमो ब्रोमे, फ्यूकस, कैल्के, फाइटो, थाइरॉय ।

शोथ (Oedema) -एपिस, आर्स, डिजि ।

,, (फुफ्फुसीय)—टार्ट एमेटि ।

,, (पैरों का शोथ)—प्रूनस ।

गलनली के रोग—कैजूपु, कोण्डूरै, बैप्टी ।

नख-शोथ अंगुलबेड़ा (Onychia)—साइलि, सोरि ।

अण्डकोष-प्रदाह (Orchitis)—पल्से, बेल, रोडो, स्पॉन्जि, ऑरम ।

अस्थि-प्रदाह (Osteitis) - कॉन्चियोलिन ।

अस्थि-कोमलता (Osteomalacia)—फॉस एसिड ।

मध्यकर्णी-प्रदाह (जीर्ण) (Oritis Media)—चेनोपो, कैप्सि, बेल, मर्क, पल्से, कैल्के ।

कर्ण स्राव (Otorrhoea)—किनो, मर्क, कैल्के, पल्से, सल्फ, हाइड्रै, टेल्यूरि ।

डिम्बाशय-शूल (Ovaralgia)—जिंक, वैले, एपिस, लैके ।

डिम्बाशय की रसोली (Ovarian Cyst)—ऊफोरि, कैली ब्रोमि, एपिस ।

डिम्बाशय-प्रदाह (Ovaritis)—एपिस, लैके, प्लैटिना, कोलो, सीपि, जैन्थॉक्जाइलम।

मूत्र में आक्जेलेट की अधिकता (Oxaluria)—सेना, नाइट्रि, म्यूरि एसिड।

जीर्ण पीनस रोग (Ozaena)—ऐलुमिना, हिपोजी, ऑरम, नाइट्रि एसिड, मर्क, हाइड्रै, कैडमियम, सल्फर।

अंगुलबेड़ा (Penaritium)—ऐमो कार्ब, फ्लोर एसिड, साइलि।

क्लोमग्रन्थियों के रोग आइरिस।

कम्प वात (हाथ-पैर का स्वतः काँपना) (Paralysis agitans)—ऑरम सल्फ, हायोसि, हाइड्रोब्रो, मर्क।

पक्षाघात (डिपथीरिया के बाद)—जेल्से, कॉकुलस, लैके, ऑरम म्यूर, आर्जे नाइट्रि।

निचले अंगों का पक्षाघात (Paraplegia)—मैंगे आक्सिडैं, कैली टार्ट, लैथाइर, थैलियम, हाइपेरि, एन्हैलो।

आंशिक पक्षाघात (Paresis) - इस्कियु ग्लै, बैडियागा।

,, (फुपफुस-पाकाशयिक)—ग्रिण्डे।

,, (साँस-यन्त्र का)—लोबे पर्प्यु।

,, (वृद्धावस्था का)—ऑरम आयोड, फॉस।

आंशिक पक्षाघात (मेरुदण्डीय)—इरिडि।

,, ,, (टाइप करने वालों का)—स्टैनम।

रौद्रत्वक (Pellagra)—बोविस्टा।

विम्बिका रोग (Pemphigus)—कैल्था, मैन्सिनेला, रैनन स्केले।

हृदवेष्ट का प्रदाह (Pericarditis)—ऐण्टि आर्स, ब्रायो, कॉल्चि, स्पाइजै, डिजि।

अस्थिवेष्ट का प्रदाह (Peritasitis)—ऐसाफी, ऑरम, कैली बाइक्रो, मर्क, फॉस, मेजे, साइलि, एपिस।

आन्त्रावरण झिल्ली का प्रदाह (Peritonitis)—एपिस, बेल, ब्रायो, कोलो, मर्क कॉर, सिनेपि, सैंग्वि नाइट्रि, वायेथि।

गलकोष प्रदाह (क्षुद्रगह्वरपूर्ण) Pharyngitis (Follicular)—इक्स्युलस, हिपो, हाइड्रै, सैंग्वि, वायेथि।

गलकोष-प्रदाह (सूखा)—डियुबोइसि।

लिंगाग्र-चर्म रोग (Phimosis)—मर्क, गुवाइक।

शिरा प्रदाह (Phlebitis)—हैमे, पल्से।

क्षय रोग (Phthisis)—ऐकालिफा, गैलिक एसिड, नैट्र कैकोडाइल, पोलिगो ऐविक्यू, सिल्फियम, कैल्के आर्स, क्रियोजो।

क्षय रोग स्वरयान्त्रिक (Phthisis-Laryngeal)—ड्रोसे, स्टैन, सेलेनि, नैट्र सेलेनि।

प्लेग—इग्नै, ऑपरक्यूलिना।

फुफ्फुसावरण झिल्ली प्रदाह (Pleurisy)—ऐकोन, ब्रायो, स्क्विला, ऐस्क्लेपि, कैली कार।

फुफ्फुसावरण झिल्ली प्रदाह (स्राविक अवस्था)—एपिस, कैन्थे, आर्स, सल्फर।

पार्श्व वेदना (Pleurodynia)—ब्रायो, सिमिसि, रैनन बल।

केशों का उलझना और रक्तस्राव (Plica Polonica)—विन्का, लाइको।

फुफ्फुस-प्रदाह—न्यूमोनिया—ब्रायो, फॉस, सैंग्वि, आयोड, चेलिडो, लाइको, न्यूमो कॉक्सिन।

ओक विषाक्रमण—ऐनैका, जेरोफाइलम, ग्रिण्डे, साइप्रिपी, रस, क्रोटो, ग्रैफा, एरेक्थाइ।

अनेक स्थानीय अस्थि मज्जा प्रदाह (Poliomyelitis)—लैथाइरस; वेगेरिस, कैली फॉस।

बहुरंगीय चक्र (Polychrome Spectra)—ऐन्हैलो।

बहुपक्ष—फॉस, कैल्के, सैंग्वि, थूजा।

नासाबुर्द—लेम्ना, कैल्के, टयूक्रि।

बहुमूत्र (Polyuria)—आर्जे, फॉस एसिड, म्यूरेक्स, स्क्विला, युरेनि, रस ऐरो मेट।

सिर का गंज (Porrigo capitis)—कैल्के म्यूर।

शिराओं में रक्ताधिक्य—हास्कयुल ग्लै।

अनैच्छिक लिंगोत्थान (Priapism)—पिक एसिड, कैन्थे।

सरलांत्र-प्रदाह (Proctitis)—ऐण्टि क्रू, कोलिन्सो, एलो, पांडो।

मुखमण्डल स्नायुशूल (Prospalgia)—कैक्टस, वरबैस्कम, कैल्मिया, पल्से।

मुखशायी (Prostate Gland) ग्रंथियों का प्रदाह—फेरम पिक, थूजा।

मुखशायी (Prostate Gland) ग्रंथियों का प्रदाह—मर्क डल्सिस, सैबाल, पिक एसिड, थूजा, ट्रिटिक, स्टैफि।

तीव्र खुजली (योनि इत्यादि की) (Pruritus)—ऐण्टिपाइरि, कार्बो एसिड, डोलिको, फैगोपा, सल्फर, रस, प्यूलेक्स, रेडियम।

मुँह का घाव (Psilosis)—फ्रैगारिया।

अपरस, चम्बल रोग-विचर्चिका (Psoriasis)—कैली आर्स, कैली ब्रोमे, थाइरॉयडि, आर्स, ग्रैफा, बोरैक्स, सल्फर, एमेटिन ½ ग्रेन।

अनुपक्ष, नाखून, जफरा (Pterygium)—जिंक, रैटानहिया, सल्फर।

गन्दी नाली का विष दोष—आर्स, क्रियोजो, पाइरोजे।

अत्यधिक लार बहना - मर्क, आइरिस, आयोड, ट्रिफोलि।

धूम्र रोग, शीताद (Purpura)—क्रोटेल, फॉस्फो, आर्स, हैमे, नाजा।

रक्त का विषैला होना (Pyaemia)—आर्स आयोड, चिनि, लैके, पाइरोजेन।

मूत्र-पिण्ड-आवरण का प्रदाह (Pyelitis)—मर्क कॉर, हीपर, टेरेबि, क्यूप्रम आर्स, एपिजिया, जुनिपेर।

मसूढ़ों का पकना—ऐमेटिन, स्ट्रैफिसे, प्लैण्टै।

मुँह में पानी आना, गला जलना—गैलिक एसिड, बिस्मथ, कैप्सि।

बालास्थि विकृति, कशेरुका का प्रदाह (Rachitis)—कैल्के, आइरिस, फॉस, साइलि।

जीभ के नीचे का अर्बुद (Ranula)—थूजा, कैल्के, फ्लोर एसिड।

अंगुलहाड़ा—आर्स, सिकेल, कैक्कस का आरिस्ट।

गुदा में थैलियाँ पड़ना—पोलीगोन।

प्रश्वास—ऐण्टिपाइरिन।

वात रोग—कॉल्चि, प्रोपाइलैमिन, ऐकोन, ब्रायो, डल्का, मर्क, रस, सिमिसि।

वात रोग (जीर्ण)—स्टेलैरिया, ओलि जेको, सल्फर, विस्कम।

वात रोग (सुजाकी)—आइरिसिन, सारसापै, थूजा।

नाक की श्लैष्मिक झिल्ली की क्षीणता के साथ जुकाम—Rhinitis (Atrophic)—लेम्ना।

रिग्स रोग—कैल्के रेनैलिस।

दाद (Ringworm)—सीपिया, टेल्यूरि, आर्स, बेसिलिन।

अरुण ज्वर (Scarlatina)—बेल, रस, स्ट्रैमो।

अरुण ज्वर (घातक)—ऐमो का, म्यूरि एसिड, लैके, एलैन्थ, क्रोटेल, बैप्टी, नाइट्रि ए.स।

गृध्रसी (Sciatica)—कोटाइलै, विस्कम, कोलो, रस, नैफेलियम।

शरीर के अनेक संयोजक तन्तुओं का कड़ा हो जाना (Sclerosis, Multiple)—ऑरम म्यूर।

काठिन्य अपकृष्टता—बैराइटा म्यूर, प्लम्ब, ऑरम म्यूर।

गण्डमाला रोग (Scrofula)—एथियोप्स, फेरम आयोड, सिस्टस, मर्क, कैल्के, सल्फर, थेरेडि ।

शीताद (Scurvy)—ऐसेटिक ऐसि, ऐगैवे, फॉस, मर्क ।

समुद्री यात्रा का वमन (Seasickness)—ऐपोमॉर्फिया, पेट्रोलि, कॉकुलस, नक्स, टैबेकम ।

सिर की तर दाद (Seborrhoea)—हेरैक्लियम, आर्स, ग्रैफा, विन्का, नैट्र म्यूर ।

वृद्धावस्था की क्षीणता— ऊफोरिन, बैराइटा ।

सड़न अवस्था (Sepsis)—क्रोटै, बैप्टि, एचिने, आर्स, लैके ।

निद्रा रोग (Sleeping Sickness)— नक्स मॉस, ओपियम, जेल्से, ऐटोक्सिल ।

अनिद्रा—टेला एरानि, कॉफिया, इग्नै, सिमिसि, जेल्से, ओपियम (ऊँची शक्ति), डैफ्नै, हायोसि हाइड्रोब्रोमाइ ।

सर्प विष शामक—गोलोन्ड्रिना, सीड्रन, जिम्नोक्लै; सिसाइरि; गुवाको, सेलेंजिने ।

निद्रा-भ्रमण (Somnambulism)—कैली फॉस, कैली ब्रोमे ।

धातुक्षीणता—सैलिक्स, चाइना, फॉस एसि, स्टैफिसे ।

तिल्ली के रोग—सियानोथ, क्वेरकस, हेलियान्थ, नैट्र म्यूर, पोलिम्निया ।

बाँझपन—ऐग्नस, नैट्र म्यूर, बोरैक्स ।

पेट का फैलना—हाइड्रैस्टि म्यूर ।

मुख-प्रदाह—बोरैक्स, आर्जे नाइट्रि, कैली म्यूर, नाइट्रि ऐसि ।

जरायु की अल्पवृद्धि (Subinvolution)—फ्रैक्सिनस, ऑरम म्यूर नैट्रो, एपिफेगस ।

सूजाक विष दोष (Sycosis)—ऐस्टेरियस, थूजा, नैट्र सल्फ, ऑरम म्यूर ।

स्नैहिक कला का प्रदाह (Synovitis)—एपिस, ब्रायो, कैल्के फ्लोर ।

औपदर्शक चर्म रोग (Syphilides)—आर्स सल्फ फ्ले, कैली हाइड्र, नाइट्रि एसिड ।

उपदंश रोग (Syphilis)—कैलोट्रो, कोराइलै, प्लैटि म्यूर, मर्क, कैली हाइड्रि, ऑरम ।

उपदंश दबा हुआ (Latent)—आर्स मेट, सिफिलि ।

उपदंशीय गाँठें (Nodes)—कोराइडै, स्टिलिन्जि, कैली हाइड्रियो ।

तीव्र धड़कन (Tachycardia)—ऐबीज नाइग्रा, ऐग्नस ।

लम्बे केंचुए (Tape-worm)—फिलिक्स, सिना, आयोडुरेटेड, पोटै, आयोड ।

धनुष्टंकार (Tetanus)—स्ट्रिक्नि, उपास, पैसिफ्लो, फाइजॉस्टि ।

खून के छिछड़े बनना (Thrombosis)—बोथ्रोप्स, लैके ।

कर्णनाद (Tinnitus)—ऐण्टिपाइरि, कैनेबि इण्डि, कार्बोनि सल्फ, सैलिसि एसिड ।

तम्बाकू पीने की प्रबल इच्छा—डैफने इण्डि ।

तालुमूल-प्रदाह (Tonsillitis)—एमो म्यूर, गुवाइक, बैराइटा ऐसेटि, बेल, मर्क, फाइटो ।

दाँत-दर्द —प्लैण्टैगो, मैग का, बेल, कैमो ।

ग्रीवा-स्तम्भ (Torticollis)—लैकनैन्थिस ।

आघात —आर्न, बेलिस ।

दाँती लगना (Trismus)—लिनम ।

क्षय रोग—आर्स आयोड, फेलाण्ड्रि, ट्यूबरकुलिन, कैल्के ।

अर्बुद (ट्युमर)—कैल्के फ्लोर, कोनियम, बैराइटा म्यूर, थूजा, मर्क आयोड रूबर, हाइड्रैस्टि, फाइटो, प्लम्ब आयोड ।

कर्ण पटल प्रदाह (Tympanitis)—लाइको, टेरेबिं, ऐसाफि, इरिजेरन ।

टायफायड, आंत्रिक ज्वर—बैप्टि, म्यूरि एसिड, आर्स, फॉस एसिड, ब्रायो ।

टायफायड का दस्त—एपिलोबियम ।

घाव —नाइट्रि एसिड, साइलि, आर्स, कोमोक्लै, कैली हाइड्रियो, लैके, पियोनि, कैलेण्डु ।

मूत्र नाश विकार (Uremia)—ऐमो का, क्यूप्रम आर्स, मॉर्फि ।

मूत्रमार्गीय, लघु बतौड़ियाँ (Urethral Caruncle)—कैने सैटि, युकैलिप ।

मूत्रमार्गीय प्रदाह (Urethritis)—ऐकोन, एपिस, कैन्थे ।

मूत्रमार्गीय प्रदाह, बच्चों में —डोरिफो ।

मूत्राम्ल की अधिकता—हेडियोमा, ओसिम ।

जुलपित्ती (Urticaria)—ऐण्टि क्रू, ऐण्टिपाइरि, एपिस, एस्टेकस, बोम्बिक्स, कोपेवा, फ्रैगैरिया, नैट्र म्यूर ।

गर्भाशय का अपनी जगह से हटना—ऐबीज कैनाडे, इयुपिऑन, हेलिओट, सीपि, पल्से, फ्रैक्सिन, फेरम आयोड ।

गर्भाशय का कड़ा हो जाना—ऑरम म्यूर, कैल्मि ।

गर्भाशय का अर्बुद—ऑरम म्यूर नैट्र ।

योनि का कष्टपूर्ण आक्षेप (Vaginismus)—कैक्ट, प्लम्ब, बेल ।

शिरा-प्रसारण, गाँठें पड़ना—कैल्के फ्लोर, हैमे, पल्से ।

चेचक (Variola)—ऐण्टि टार्ट, सारासीनि ।

चेचक, (रक्तस्राव)- क्रोटै, फॉस, आर्स ।

रक्तवहा नाड़ी का तनाव— ऐकोन, वेल, वेरैट्र विरिडि ।

रक्तवहा नाड़ी का तनाव, साथ में धमनी की बाधाएँ—एड्रोनै, बैराइट म्यूर, टैबै, प्लम्ब ।

रक्तवहा नाड़ी के तनाव को शीघ्र कम करने के लिये—ग्लोनो, ऐमाइल, नैट्र नाइट्रि, ट्राइनाइटिन ।

चक्कर—जेल्से, ग्रैनैट, फॉस, कॉकुलस, कोनि ।

शिराओं में रक्तरोध—इस्कियु हिपो ।

मस्से निकलना—ऐण्टि क्रू, कॉस्टि, नाइट्रि एसिड, थूजा, सैलिसि एसिड ।

बसाबुँद—थूजा, बेन्जो एसिड, बैसिलि ।

कुकुर खाँसी; हूप-खाँसी—कैस्टेनिया, ड्रोसे, क्यूप्रम, मैग फॉस, परट्युसिन ।

केंचुएँ, कृमि—कैल्के, सिना, सैण्टोनाइ, स्पाइजे, ट्युक्रि, नैफ्थे ।

कलाई का वात रोग—ऐक्टिया स्पाइ, वायोला ओडो ।

लेखक के हाथ की ऐंठन—आर्जें मेट, सल्फ्यू एसिड ।

संक्रामक कामला रोग—चेलिडो, फॉस्फो ।

पीला ज्वर—कैडमियम, आर्स, क्रॉटैलस ।

मेडिकल पुस्तक भवन द्वारा प्रकाशित
चिकित्सा सम्बन्धी उत्कृष्ट पुस्तकें

एलोपैथिक पुस्तकें

डॉ० सुरेशप्रसाद शर्मा द्वारा लिखित :—

१—इन्जेक्शन—इसमें सुई लगाने के तरीके और इसके सम्बन्ध में जानने योग्य सभी बातों के अतिरिक्त सभी प्रकार के इन्जेक्शनों जैसे पेनिसिलीन, स्ट्रेप्टोमाइसिन, औरियोमाइसिन, डाइक्रिस्टेसिन आदि सभी दवाओं का वर्णन और प्रयोग सरल ढंग से दिया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक न केवल विद्यार्थियों, प्रारम्भिक चिकित्सकों मात्र के लिए उपयोगी है, वरन् निपुण एवं प्रतिष्ठित चिकित्सकों के लिए भी निर्देशन का कार्य करेगी, क्योंकि इस प्रकार सर्वांगपूर्ण संग्रहीत विषय एक जगह उन्हें भी प्राप्त नहीं होता। सुन्दर छपाई, ग्लेज कागज एवं १०० चित्रों से परिपूर्ण।

२—एलोपैथिक चिकित्सा—पुस्तक नौ अध्यायों में लिखी गई है। प्रथम चार अध्यायों में 'विषय-प्रवेश', 'शरीर-विज्ञान', रोग निदान सम्बन्धी आवश्यक बातों और नवीनतम आविष्कृत औषधियों का वर्णन क्रमशः दिया गया है। अन्य अध्यायों में प्रचलित सभी रोगों का वर्णन और उनकी चिकित्सा बृहद् रूप से दी गई है। उ० प्र० सरकार से पुरस्कृत।

३—मिक्श्चर—मिक्श्चर बनाने की विधि और १८५ रोगों पर परीक्षित २५० नुस्खों का वर्णन दिया गया है। साथ ही साथ पेटेण्ट दवाओं और उन रोगों पर चलने वाले इन्जेक्शनों का नाम भी दिया गया है।

४—एलोपैथिक पाकेट गाइड—इस पुस्तक में आधुनिक वैज्ञानिक एवं प्रचलित चमत्कारिक औषधियों के नुस्खे, प्रमुख रोगों का संक्षिप्त परिचय एवं निदान दिया गया है।

डॉ० शिवदयाल गुप्त, ए० एम० एस० द्वारा लिखित पुस्तकें—

५—एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—हिन्दी और देशी भाषाओं में सर्वप्रथम प्रामाणिक पुस्तक। सुदीर्घ पाँच खण्डों में एलोपैथी का सारा विज्ञान पढ़िये। ६—कम्पाउण्डरी शिक्षा एवं चिकित्सा प्रवेश।

७—सचित्र नेत्र रोग विज्ञान (एलोपैथिक)। ८—एलोपैथिक सफल औषधियाँ—इस पुस्तक में सल्फा ग्रूप की सभी औषधियों, काला-जारनाशक, मलेरियानाशक, कुष्ठनाशक, कृमिनाशक आदि औषधियों का प्रयोग तथा पी. ए. एस. वेसीट्रेसोन, आयलोटायसिन और अब तक की निकली हुई जीवाणुरोधक औषधियों का बृहद् वर्णन सरल ढङ्ग से दिया गया है।

९—मल-मूत्र रक्तादि परीक्षा (एलोपैथिक)—मल-मूत्र, स्राव, प्रलेप, थूक, वीर्य आदि परीक्षाओं की विधि सरल ढङ्ग से दी गयी है।

१०—धात्री विज्ञान—इस पुस्तक के लेखक चिकित्सा जगत में चिरपरिचित एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका के प्रणेता डॉ० शिवदयाल गुप्त, ए.एम.एस. हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि धात्री विज्ञान विषय पर सम्पूर्ण चिकित्सा के अनुसार अधिकृत रूप में अभी तक कोई पुस्तक नहीं मिलती थी। डॉ० गुप्त ने इस विषय को अधिकृत रूप में सामने रखकर गृहस्थ समाज के एक अभाव की पूर्ति की है। विशेषतः ग्रामीण जनता के लिए यह अति अलभ्य पुस्तक है।

११—सामान्य शल्य चिकित्सा (सर्जरी)—हिन्दी में सर्जरी की यह पुस्तक सर्वोत्तम है। सैकड़ों चित्र, कपड़े की जिल्द।

१२—एलोपैथिक पेटेण्ट मेडिसिन्स—ले०—डॉ० अ० ना० पाण्डेय—इस पुस्तक में एलोपैथी की प्रायः सभी दवाओं का वर्णन, उनका मिश्रण, प्रयोग विधि, मात्रा, किन-किन रोगों में उनके प्रयोग से लाभ होता है, किन कम्पनियों द्वारा तैयार की गयी हैं आदि बातें सरल ढङ्ग से बतलायी गयी हैं।

१३—एलोपैथिक पेटेण्ट चिकित्सा—ले० डॉ० अ० ना० पाण्डेय—केवल पेटेण्ट दवाओं से चिकित्सा-विधि बतायी गयी है।

१४—ज्वर चिकित्सा—ले०—डॉ०अ०ना०पाण्डेय—प्रायः सभी प्रकार के ज्वरों की चिकित्सा कई पैथियों द्वारा बतायी गयी है।

१५—माडर्न एलोपैथिक मेटेरिया मेडिका—(ले०—डॉ० रामनारायण सक्सेना, प्रोफेसर—बुन्देलखण्ड आयुर्वेदिक कालेज, झाँसी)—यह एलोपैथिक ज्ञान की मूल पुस्तक है।

१६—अभिनव शवच्छेद विज्ञान—प्रोफेसर श्री हरस्वरूप कुलश्रेष्ठ द्वारा लिखित। शरीर रचना का ज्ञान शवच्छेदन से ही होता है।

१७—स्त्रियों के रोग और उनकी आधुनिक चिकित्सा—

लेखक—आचार्य रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी (B. A., A. M. S.)

आचार्य त्रिवेदी की अन्य पुस्तकों की शृङ्खला में यह उनकी नवीनतम और

सर्वांगपूर्ण विशाल कृति है। इसके निर्माण में उनका गत ६ वर्ष का परिश्रम मूर्त्त हो उठा है। भाषा सरल, वैज्ञानिक, विवेचनात्मक और भावबोधिनी है।

यह ग्रन्थ स्त्रियों के रोगों पर विस्तृत प्रकाश डालता है और उनकी सांगोपांग मेडिकल और सर्जिकल चिकित्सा को इस प्रकार स्पष्ट करता है कि एक एम० बी० बी० एस० एवं बी० एम० एस० का छात्र तथा गायनोकोलाजिस्ट पूरा-पूरा मार्गदर्शन पा सकता है।

इस एक पुस्तक के पढ़ने के बाद किसी भी अन्य गायनोकोलोजी विषय की अंग्रेजी पुस्तक के पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती।

जो चिकित्सक स्त्री-रोगों के इलाज (चिकित्सा) में विशेषज्ञता प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

१८—शरीर रचना एवं क्रिया-विज्ञान—शरीर रचना एवं क्रिया-विज्ञान चिकित्सा-शास्त्र का एक मुख्य आधार है। इसका पूर्ण ज्ञान न होने से चिकित्सा का पूर्ण ज्ञान होना ही असम्भव है। शरीर के अंगों में विकृति आ जाने पर उनकी स्वाभाविक क्रियाओं का समुचित ज्ञान हुए बिना उस विकृति का अनुमान ही नहीं किया जा सकता।

प्रस्तुत पुस्तक में मानव-शरीर के हर अङ्ग के चित्र के साथ उसकी रचना एवं क्रिया को बहुत ही सरल हिन्दी में समझाया गया है ताकि पाठकगण को समझने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो। पुस्तक बहुत ही उपयोगी एवं लाभदायक है।

१९—वृद्धों के रोग और उनका प्रतिकार—चिकित्सा वाङ्मय के भारतप्रसिद्ध लेखक आचार्य त्रिवेदी की वरद लेखनी से प्रसूत यह नवीनतम कृति है। इसमें वृद्धावस्था क्यों होती है और उसे किस प्रकार रोका जा सकता है इसपर व्यापक प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में वृद्धों के रोगों का सविस्तार वर्णन किया गया है। सामान्य व्यक्तियों और वृद्धों के रोगों की व्यवस्था और उपचार पर आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने जो उन्नति की है उन सबका समावेश इसमें किया गया है।

हिन्दी भाषा में इतनी आकर्षक और आधिकारिक पुस्तक यह पहली ही है जिसमें नवीन और प्राचीन दोनों ज्ञान-विज्ञान का समन्वय किया गया है।

प्रत्येक चिकित्सक और चिकित्सा के विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक मार्ग-दर्शिका सिद्ध होगी।

बुढ़ापे से बचने के लिए प्रत्येक नवयुवक को तथा वृद्धावस्था में सुख-पूर्वक जीने के लिए प्रत्येक प्रौढ़ और वृद्ध पुरुष और स्त्री को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए।

२०—विटामिन—(लेखक—डॉ० प्रियकुमार चौबे) प्रस्तुत पुस्तक में विटामिन के आविष्कार का इतिहास, विटामिन के भेद, किसी बीमारी में कौन विटामिन उपयुक्त होगा आदि बातें लिखी गयी हैं। एलोपैथिक कम्पनियों द्वारा आविष्कृत सभी विटामिनों का परिचय एवं उनके प्रयोग, खाद्य-पदार्थों में विटामिन पाये जाने की तालिका आदि का विस्तृत विवेचन है। पुस्तक अपने विषय की नई एवं निराली है।

२१—मासिक विकार। २२—सन्तति निरोध।

२३—जननेन्द्रिय रोग चिकित्सा—इसमें पुरुषों एवं स्त्रियों के समस्त गुप्त रोगों का वर्णन एवं चिकित्सा है।

२४—सल्फोनामायड एवं एण्टीबायोटिक्स—इस पुस्तक में एलो-पैथी की समस्त सल्फाग्रूप एवं एण्टीबायोटिक्स की चमत्कारिक औषधियों का वर्णन है।

२५—नासा, कर्ण एवं गले के रोग—नाक, कान एवं गले के समस्त रोगों की अचूक चिकित्सा।

२६—बाल रोग चिकित्सा—लेखक—डॉ० रमानाथ द्विवेदी एम० ए०, एम० एम० एस०, प्रोफेसर आयुर्वेदिक कॉलेज, काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय, उच्च कोटि के विद्वान् होने के साथ-साथ प्रतिष्ठित एवं अनुभवी चिकित्सक भी हैं। यह पुस्तक एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक दोनों मतों से लिखी गयी है। इस पुस्तक में बच्चों को होने वाले सभी रोगों का विवेचन है। रोगोत्पत्ति, उनके कारण तथा उनकी चिकित्सा एलोपैथिक एवं आयु-र्वेदिक दोनों मतों से बतायी गई है।

डॉ० केशवानन्द नौटियाल ए० एम० एस० (काशी हिन्दूविश्वविद्यालय) द्वारा लिखित पुस्तकें—

२७—**मॉडर्न सिलेक्टेड मेडिसिन**। २८—**मॉडर्न डायग्नोसिस**।

२९—**मॉडर्न ट्रीटमेण्ट**—चिकित्सा की आधुनिक विधि ही इस पुस्तक का विषय है। नवीनतम खोजों और अनुभव के आधार पर जिन विधियों और औषधियों को उत्तम पाया गया है उनका इसमें सविस्तार वर्णन है। सिद्धान्तहीन चिकित्सा का पूर्णतः निषेध किया गया है। चिकित्सा से रोगी पर होने वाले परिणामों और उनमें से रोगी के सुखद जीवन वृद्धि का निर्देश पुस्तक की विशेषता है। इसे पढ़कर कोई भी सफल डाक्टर बन सकता है। प्रथम भाग तथा द्वितीय भाग।

३०—**ब्लड प्रेशर**—व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं और मशीनों के साथ स्वयं मशीन बन जाने से मनुष्यों का ब्लड-प्रेशर बढ़ता जा रहा है। इस पुस्तक से ब्लड-प्रेशर का कारण जानें और उसके दुष्प्रभाव से स्वयं को बचाना सीखें। रोग के सम्बन्ध में सभी जानकारी प्राप्त कर डाक्टर के पास जाने से बचें और यदि आप डाक्टर हैं तो इस पुस्तक में दी गयी आधुनिकतम जानकारी प्राप्त कर अपने हताश रोगियों को जीवन प्रदान करें।

३१—**स्टेस्थोस्कोप परीक्षा**—इस पुस्तक में हृदय तथा फुफ्फुस के रोगों के अतिरिक्त भी जहाँ इस यन्त्र की सहायता ली जा सकती है उनके वर्णन के साथ इससे सुनाई पड़ने वाली ध्वनियों के विषय में भी स्पष्ट ढंग से बताया गया है। भाषा बहुत ही सरल एवं सुबोध है।

३२—**चर्मरोग-चिकित्सा**—(लेखक — डॉ० प्रियकुमार चौबे) हिन्दी में चर्मरोग पर यह पुस्तक अत्यन्त सांगोपांग ढंग से प्रस्तुत की गयी है। अनेक लब्ध-प्रतिष्ठ चिकित्सकों ने इस पुस्तक की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। इसमें चर्म-संरचना पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। त्वचा के कार्य और उसके महत्त्व तथा त्वचा में सम्भावित रोगों का सकारण वर्णन इस पुस्तक में आपको उपलब्ध होगा। चर्म पर होने वाली विभिन्न बीमारियों की चिकित्सा एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक दोनों ही

पद्धतियों से बतायी गयी है। अम्हौरी से लेकर एक्जिमा तक एवं कुष्ठ रोग जैसी बीमारियों की प्रभावकारी चिकित्सा तथा एहतियात का वर्णन आपको इसमें मिलेगा। इसमें सामान्य तथा विशिष्ट-चिकित्सा-विधियों के साथ-साथ औपचारिक चिकित्सा पर भी लिखा गया है। चर्मरोग का निदान एवं नामकरण एक बड़ी समस्या है। इस पुस्तक की सहायता से विशिष्ट चर्मरोगों की पहचान आप सहज ही कर सकेंगे। चर्मरोगों पर अनेक पेटेण्ट औषधियाँ भी बतायी गयी हैं। पुस्तक में यथास्थान चित्र भी दिये गये हैं। कागज, छपाई एवं साज-सज्जा की दृष्टि से पुस्तक बेजोड़ है।

३३—सरल दन्त विज्ञान—(लेखक—डा० केवलवीर) मानव शरीर में दाँतों की कितनी प्रधानता है इससे सभी लोग भली भाँति परिचित हैं या यों कहिए कि मनुष्य तभी स्वस्थ रहता है जब उसके दाँत स्वस्थ एवं सक्षम हों। चिकित्सा क्षेत्र में दन्त विशेषज्ञ का एक विशिष्ट स्थान होता है जिसका ज्ञान प्रस्तुत पुस्तक के अध्ययन से होगा।

३४—डायबिटीज (मधुमेह)—इस पुस्तक में मधुमेह की सांगोपांग चिकित्सा विस्तार से और सरल शब्दों में लिखी गयी है। मधुमेही किस प्रकार अपनी दिनचर्या रखे, क्या खाये, कितना परिश्रम करे, कितनी दवा खाये, कितनी सुई लगाये कि दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन प्राप्त हो आदि बातें इसमें बताई गयी हैं। अनेक मधुमेही बिना दवा के ही ठीक हो सकते हैं। यदि आप मधुमेही हैं तो आपको ये सभी बातें जानना नितान्त आवश्यक है और यदि डाक्टर हैं तो इसकी सहायता से यश के भागी बनें।

होमियोपैथिक पुस्तकें :—

१—होमियो मेटेरिया मेडिका (रेपर्टरी सहित)—रचयिता डॉ० विलियम बोरिक। प्रस्तुत पुस्तक डॉ० विलियम बोरिक की मूल अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। २—फैरिङ्गटन की तुलनामूलक मेटेरिया मेडिका।

३—बायोकेमिक चिकित्सा—टीशू रेमिडीज की कुल १२ औषधियों का पूरा वर्णन और उनसे चिकित्सा दी गई है। उ० प्र० सरकार से पुरस्कृत।

४–आर्गेनन–महात्मा हैनिमेन कृत आर्गेनन का अविकल हिंदी अनुवाद और परीक्षित अनुभवपूर्ण व्याख्या। उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत।

५—स्त्री रोग चिकित्सा (सचित्र)—इस पुस्तक में तमाम स्त्री अवयवों का वर्णन, उनको होनेवाले रोगों के कारण, परिचय, निदान एवं उनकी समुचित चिकित्सा विधि होमियोपैथिक दवाओं द्वारा दी गई है।

६—होमियो पारिवारिक चिकित्सा। ७—होमियो भेषज सार। ८—रोगी की सेवा और पथ्य। ९—होमियो इन्जेक्शन चिकित्सा। १०—भारतीय औषधावली तथा होमियो पेटेण्ट मेडिसिन। ११–होमियो पाकेट गाइड। १२—बायोकेमिक पाकेट गाइड। १३—होमियो गृह चिकित्सा। १४–जल चिकित्सा विधान। १५—होमियो पशु चिकित्सा। १६—बायोकेमिक रहस्य। १७—पुरानी बीमारियाँ। १८—नैश रीजनल लीडर्स। १९—होमियो टायफायड चिकित्सा। २०—होमियो न्यूमोनिया चिकित्सा। २१—होमियो थाइसिस चिकित्सा। २२—थर्मामीटर। २३—एनीमा और कैथेटर। २४— रोग लक्षण संग्रह। २५—होमियो लेबुल बुक।

२६—एलेन्स की नोट्स—मूल लेखक—डा० एच० सी० एलेन, एम० डी०। औषधि तत्व की प्रधान औषधियों के मूल सूत्र तथा तुलनात्मक अध्ययन, साथ में अन्य औषधियाँ तथा नोसोड्स। प्रस्तुत पुस्तक डॉ० एलेन के "औषधि मूल सूत्र" नामक ग्रन्थ का अविकल एवं बोधगम्य सरल हिन्दी रूपान्तर है। २७—लीडर्स इन होमियोपैथिक थेराप्युटिक्स। २८—मेडिकल सर्टिफिकेट हिन्दी-अंग्रेजी।

२९—पीयर्स की कम्परेटिव मेटेरिया मेडिका—प्रसिद्ध होमियोपैथ डॉ० पीयर्स द्वारा लिखित यह मेटेरिया मेडिका अनेक अर्थों में अन्य मेटेरिया मेडिकाओं से विशिष्ट है। लेखक की पुस्तक "टान आन मेटेरिया मेडिका विथ कम्पैरिजन" का अविकल हिन्दी अनुवाद है। यह पुस्तक होमियोपैथ चिकित्सकों के चिकित्सा कार्य में अत्यन्त सहायक होगी। ३०—होमियो मेटेरिया मेडिका। ३१—होमियोपैथिक रिपर्टरी। ३२—बायो० रिपर्टरी। ३३—होमियो

भेषज सम्बन्ध एवं क्रिया स्थितिकाल। ३४—तुलनात्मक होमियोपैथी औषधि चुनाव एवं डायलुशन। ३५—चार फोर्टी ईयर प्रैक्टिस।

३६—शुशलर की बारह तन्तु औषधियाँ—मूल लेखक—विलियम बोरिक, एम० डी० और विलिस ए० डेवी०, एम० डी०। प्रस्तुत पुस्तक उपरोक्त लेखकों की अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर है। भाषा बहुत ही सरल एवं सुबोध है।

आयुर्वेदिक पुस्तकें—

१—आयुर्वेद विज्ञान—ले०—डॉ० कमलाप्रसाद मिश्र। आयुर्वेदिक की अपूर्व चिकित्सा पुस्तक। २—नाड़ी रहस्य—नाड़ी विज्ञान के लिए। ३—आधुनिक आहार-विहार, द्रव्य गुण-विज्ञान एवं चिकित्सा।

ग्रामसोरीज प्रकाशन—

१—नीम चिकित्सा विधान। २—तुलसी चिकित्सा विधान। ३—आयुर्वेदिक घरेलू चिकित्सा। ४—बबूल चिकित्सा विधान। ५—मधु चिकित्सा विधान। ६—कब्ज या कोष्ठबद्धता। ७—वृक्ष चिकित्सा विधान। ८—मवेशियों की घरेलू चिकित्सा। ९—जन स्वास्थ्य विज्ञान। १०—छाछ चिकित्सा विधान। ११—अजवायन और उसके सौ उपयोग। १२—लहसुन और उसके सौ उपयोग। १३—गाजर और उसके सौ उपयोग। १४—प्याज और उसके सौ उपयोग। १५—केला और उसके सौ उपयोग। १६—ढाक और उसके सौ उपयोग। १७—एरण्ड और उसके सौ उपयोग। १८—स्वप्नदोष चिकित्सा।